भारत सरकार द्वारा पंजि न० 32207/73 पंजि० नं० P/RTK 49

सृष्टि संवत् १,९६,०८,



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभा मन्त्री

सह-सम्पादक डा० यशवीर

वर्ष १४, अङ्क २ २८ नवम्बर, १९८६ वार्षिक शुल्क २०) आजीवन शुल्क २०१) विदेश में ७ पौंड एक प्रति ५० पैसे

धर्म क्या है ?

अध्यात्म पथ:—

—स्वर्गीय स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती

सूर्य उदय हुआ है या नहीं, यह बात कह कर बतानी नहीं पड़ती। प्रकाश और गर्मी स्वयं इस बात का परिचय देते हैं कि सूर्योदय हो गया। इसी प्रकार यदि कोई मनुष्य धर्मात्मा हो तो उसका परिचय यह कह कर नहीं दिया जा सकता कि यह मनुष्य धर्मात्मा है, क्योंकि उसने सौ बार नाम का जाप किया है, हजार बार गायत्री जपी है, एवं वह नित्य धर्म-पुस्तक का पाठ करता है। कोई मनुष्य सचमुच धर्मात्मा है या नहीं, इसका पता इस बात से लगता है कि उसके चारों ओर रहने वालों पर उसके व्यवहार से कोई सुखदायक प्रभाव पड़ता है या नहीं। अपने चारों ओर की अवस्थाओं में परिवर्तन धर्मात्मा रूपी सूर्य की धूप है। बस, यदि हम यह जानना चाहें कि हम धर्मात्मा हैं या नहीं, तो इसे हम अपने चारों ओर होने वाले परिवर्तन से जान सकते हैं। लैंप में प्रकाश है या नहीं, इसे हम इस बात से नहीं नाप सकते कि उसमें पूरा तेल भरा है या नहीं। लैम्प के प्रकाश का नाप केवल इस बात से हो सकता है कि उसके चारों ओर का अन्धकार दूर हुआ है या नहीं। सूर्य बिना तेल बत्ती के प्रकाशमान है। एवं बुझा हुआ दीपक तेल बत्ती के होते हुए भी प्रकाशहीन है। इसी प्रकार कई मनुष्य पूजा-पाठ करते रहने पर भी धर्महीन हैं। वे पाखण्डी हैं। परन्तु साधारण मनुष्यों में लैम्प के समान प्रकाश उत्पन्न करने के लिए पूजा-पाठ रूपी तेल-बत्ती की आवश्यकता रहती है। जो मनुष्य साधारण होते हुए भी पूजा-पाठ से तथा सत्संग से हीन हैं उनका दिया भी बुझा रहता है। यह बात दूसरी है कि उनके दिए बुझने का कारण पाखण्ड का धूआं नहीं, अभिमान की आंधी है। दीया धूएं से बुझे चाहे आंधी से इससे उसके प्रकाशहीन होने में कुछ अन्तर नहीं आता। जिस मुहल्ले में तुम रहते हो यदि उसकी नालियां दुर्गन्ध-युक्त हैं और चारों ओर कीचड़ सड़ रहा है, मच्छरों की बस्तियां बस रही हैं, लोग मैले-कुचैले अनपढ़, रोगों के मारे और निर्धनता के सताये हैं, और तुम इन अवस्थाओं में परिवर्तन करने के लिए कुछ नहीं कर रहे हो तो मत समझो तुम धर्मात्मा हो। चाहे तुम कितनी लम्बी समाधि भी लगाते हो, कितना भजन कीर्तन करते हो, कितने घड़ियाल बजाते हो, और कितनी भी सामग्री फूंक देते हो, तो भी धर्मात्मा नहीं हो। यदि तुम्हारे मन्दिर की आरती ने, तुम्हारी लम्बी सन्ध्याओं ने और तुम्हारी पांच नमाजों ने तुम्हारी आंखों को गरीबों का दुःख देखने के लिए, तुम्हारे कानों को उनकी दर्द-भरी आहें सुनने के लिए और तुम्हारे हाथों को उनके कष्ट निवारण के लिए विवश नहीं किया, तो तुम आंखें रखते भी अन्धे हो, कान रखते भी बहरे हो, हाथ रखते भी लूले हो। संसार में आज तक जितने भी महात्मा धर्म प्रचार करने आये, वह इस ही सवेदना की भावना का प्रकाश तुम्हारे दिए-बत्ती में जलाने आये थे। पादरी लोग जब कहते हैं कि मसीह ने अन्धों को आंखें दीं, बहरों को कान दिये, लूले लंगड़ों को हाथ-पैर दिये। पर इस अभागे ससार ने काम, क्रोध, मोह, लोभ, आलस्य, प्रमाद आदि के घोर विष से अपने-आपको अन्धा, बहरा, लूला, लगड़ा बना डाला।

जिस समय महात्मा पुरुषों की प्रेरणा से जागृत हुई संवेदना की भावना हमें अपने चारों ओर फैली हुई बिगड़ी अवस्था का परिवतन करके, इस धरती को साफ-सुथरी और आनन्दभरी बनाने के लिए कटिबद्ध करती है, उस समय हमारी खोई हुई आंखे वापिस मिल जाती हैं, हमारे बहरे कान सुनने लगते हैं, और हमारे कटे हुए हाथ-पैर फिर हरे हो जाते हैं। बस, जहां यह अपने चारों ओर की अवस्था को सुखमय दशा में परिवर्तन करने की प्रबल भावना जीती है, वही धर्म है। यही धर्म का स्वरूप है।

नहला व क्लर भैंणी में आर्यसमाज का प्रचार

दिनांक ११ से १६ नवम्बर १९८६ तक सार्वदेशिक आर्य वीर दल द्वारा गांव में प्रचार करवाया गया जिसमें स्वामी रामानन्द जी सरस्वती व श्री चन्द्रभान जी भजनोपदेशक द्वारा लोगों को आर्यसमाज के बारे में समझाया गया अन्धविश्वास व पाखण्ड से बचाने के लिये विज्ञान के आधार पर वैदिक सिद्धान्त समझाये।

सत्यकाम आर्य जिला-संचालक
सार्वदेशिक आर्य वीरदल
बाल समन्द रोड, हिसार

शतपथब्राह्मण के अनुवादक जूलियस एगलिंग की बुद्धि का चमत्कार, अंसल का अर्थ कोमल(Tender)

लेखक—आचार्य वेदपाल एम. ए., पी-एच. डी. शोध सहायक दयानन्द पीठ, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

शतपथ ब्राह्मण के तृतीय काण्ड में एक सन्दर्भ आता है। उस सन्दर्भ को यूरोप तथा भारत के अनेक विद्वान् अपने लेखों में प्राय: मांसभक्षण के पक्ष में प्रस्तुत करते हैं। शतपथ का वह सन्दर्भ इस प्रकार है—

अथेनं शाला प्रपादयति। स धेन्वै चानडुहश्च नाश्नीयात्।
तदु होवाच याज्ञवल्क्य—अश्नाम्येवाहमंसलं चेद् भवति॥
श० ३।१।२।२१

शतपथ का यह सन्दर्भ अग्निष्टोमयाग के दीक्षा प्रकरण का है। दीक्षार्थी को स्नान के पश्चात् शाला में प्रवेश कराते हैं। शाला प्रवेश के पश्चात् भोजनवेला आने पर वह दीक्षार्थी क्या न खाये यह विचार प्रारम्भ होता है। इस प्रसग में ब्राह्मणकार ने प्रथम सामान्य रूप से याज्ञिकों द्वारा स्वीकृत यह नियम प्रस्तुत किया कि दीक्षार्थी गौ तथा बैल का न खाये परन्तु महर्षि याज्ञवल्क्य ने कहा कि मैं तो खा लेता हूं यदि गौ तथा बैल का शरीर असल हृष्टपुष्ट और बलवान् हो तो।

इस प्रसग में मांस शब्द कहीं आस-पास भी पठित नहीं है। परन्तु जिन लोगों के दिमाग में मांस खाने के ही संस्कार भरे थे उनकी बुद्धि में गाय के दूध तथा बैल द्वारा उत्पादित अन्न के स्थान पर गाय तथा बैल के मांस का ग्रहण ही संगत लगा। तद् यथा यूरोप के प्रख्यात स्कालर जिसको मैक्समूलर ने शतपथब्राह्मण का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद करने की सलाह दी और जिसके अनुवाद का अनुसरण पाश्चात्य एवं पौरस्त्य तथाकथित वैदिक विद्वान् अन्धे होकर करते हैं, उसने अपने अनुवाद में लिखा—Let him not let (the flesh) of be ther the cow of the ox.

जूलियस के अनुवाद को पढकर सहसा महाभाष्यकार पतंजलि की आम्रबुद्धि प्रसक्ता वाली उक्ति याद आजाती है। जूलियस के देश में क्योंकि गोमांस भक्षण का बोलबाला था अत: उनके मस्तिष्क में गाय के दूध आदि के भक्षण का विचार आया ही नहीं। यद्यपि जूलियस ने अपना अनुवाद सायणभाष्य के सहाय से सम्पन्न किया था। परन्तु इस प्रसंग मे उसके मांसभक्षण के संस्कारों ने सायण व्याख्यान को भी अनदेखा कर दिया। आचार्य सायण ने प्रस्तुत सन्दर्भ के व्याख्यान में स्पष्ट रूप से केवल गाय के दूध तथा बैल द्वारा उत्पादित अन्न का ही ग्रहण किया है सायण भाष्य इस प्रकार है—

धेनो: क्षीरादिकम्, अनडुह: सम्बन्धि कर्षणसाध्यमित्यर्थ:।

प्रबुद्ध पाठक स्वय निर्णय करें, कि जूलियस शतपथ को अधिक समझता था या सायण। इस प्रसंग में हम पाठकगण का ध्यान उस याजुष तथा शातपथ निर्देश की ओर भी दिलाना चाहते हैं। जहां गौ को सर्वथा अहिंस्य कहा है। तद्यथा अथ गौ। इम मा हिंसी: साहस्र शतधारमुत्सम् (यजु० १३।४९) साहस्रो वा एष शतधार उत्स यद् गो: ······ एषु लोकेष्वेनं मा हिंसीरित्येतत्। शत० ७।५।२।३४ इसी प्रकार यजुर्वेद के १३-४३ मन्त्र में भी स्पष्ट शब्दों में निर्देश दिया है कि—

गां मा हिंसीरदिति विराजम्
मन्त्र के शतपथ व्याख्यान को भी देखिये—

विराड् वै गौ:। अन्नं विराट्। अन्नमु गौ:। शत० ७।५।२।१९

"अन्नमु गौ." का अर्थ यह नहीं है कि अन्न ही गौ है। अथवा गौ अन्न है यहा निमित्तोपादान लक्षणा है, अत: "अन्नमु गौ:" का अर्थ है गौ ही अन्न का निमित्तभूत है गौ के बिना अन्नोत्पादन सम्भव नहीं इसीलिए आचार्य सायण ने भी लिखा—अदितिम् अखण्डनीयं विराजम् अन्न साधन "गां मा हिंसीरित्यर्थ:" जब गोजाति अहिंस्य है उनके मांस खाने का तो प्रश्न भी उपस्थित नहीं होता। इसलिए गाय तथा बैल का नहीं खाना चाहिए। इस शतपथ विधान का ब्राह्मणानुकूल भाव यही है कि गाय के दूध तथा बैल द्वारा उत्पादित अन्न का अशन दीक्षार्थी पुरुष को उस दिन नहीं करना चाहिये। परन्तु याज्ञवल्क्य इस विधान को नहीं मानते इसलिये वे कहते हैं—

अश्नाम्येवाहमंसलं चेद्, भवतीति।

अर्थात् मैं तो खा लेता हूं यदि गाय तथा बैल का शरीर असल हो तो। एगलिंग की बुद्धि का चमत्कार देखिये वह अपने अनुवाद में लिखता है—

Never the less yegoyavalkya says I for one eat it provided that it is tender

जूलियस के अनुवाद का भाव यह है कि-याज्ञवल्क्य कहता है मैं उनका मांस खा लेता हूं यदि वह कोमल हो तो। यद्यपि जूलियस ने संस्कृत का अध्ययन पर्याप्त किया था। पर उसके मांसभक्षण के प्रबल संस्कार उसकी बुद्धि पर छाये हुये थे। इसलिये बिना कुछ विचार किये उसने अंसल का अर्थ कोमल कर दिया जबकि अंसल शब्द का अर्थ कोमल संस्कृत वाङ्मय में कहीं भी दृष्टिगोचर नहीं होता। वास्तविकता तो यह है अंसल शब्द का अर्थ हृष्टपुष्ट या बलवान् ही होता है। कोशकार अमरसिंह ने भी लिखा है—

बलवान् मांसलांसल: २-६-४४ वामन शिवराम आप्टे ने अंसल शब्द के अर्थ Strong, Lusty, Powerful आदि किये हैं। शब्दशास्त्र के महान् आचार्य पाणिनि ने भी अपनी अष्टाध्यायी में "वत्सांसाभ्यां कामबले" (५-२-९८) इस सूत्र से अंस शब्द से बल अर्थ में तद्धित लच् प्रत्यय का विधान किया। पाणिनि सूत्रों के व्याख्याकार वामन जयादित्य ने काशिका में अंसल शब्द का अर्थ इस प्रकार दिया है—

अंसल इति चोपचितमांसो बलवानुच्यते।

अर्थात् प्रवृद्धमांस वाले बलवान् प्राणी को अंसल कहा जाता है। अत: पूर्ण दृढता के साथ कहा जा सकता है कि अंसल का अर्थ Tender करना जूलियस की मांसभक्षिता का परिणाम है। जब शतपथ के अनुवादक जूलियस एगलिंग ने प्रस्तुत सन्दर्भ का अर्थ इस प्रकार खींचतान करके मांसपरक कर दिया तो अन्य पाश्चात्य विद्वानों ने भी इस सन्दर्भ को नि:संकोच भाव से गोमांसभक्षण के पक्ष में प्रस्तुत कर दिया। और सर्वत्र प्रचार होगया कि वैदिक ऋषि याज्ञवल्क्य भी गोमांस के भक्षी थे। हृदय को तब और अधिक वेदना होती है जब गुरुकुलों के स्नातक (जिनको आर्यसमाज ने इसलिए पढ़ाया था कि वे इस प्रकार के मिथ्या अर्थों का निराकरण करेंगे) भी आंख मूंदकर अन्धानुकरण करने में गौरवानुभूति करते हैं। सम्पूर्ण शतपथ ब्राह्मण का आर्यभाषा में अनुवाद का श्रेय उपाध्याय पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय ने प्राप्त किया जो आर्यसमाज के प्रख्यात विद्वान् थे। उनके अनुवाद के पढ़ने से लगता है उनको शतपथ का अनुवाद करने की धुन चढ़ी थी पर शतपथ जैसे महाकाय दुरूह ग्रन्थ का अनुवाद कोई आसान काम नहीं था। बस उन्होंने भी जूलियस का अन्धानुकरण करके अपना शतपथ अनुवाद पूरा कर दिया और जो अनर्थ गोमांसभक्षी जूलियस ने किया था वहीं पण्डित जी भी कर गये। वे प्रकृत सन्दर्भ के अनुवाद में लिखते हैं—

"·········इसलिये गाय और बैल का मांस न खाये, परन्तु याज्ञवल्क्य कहते हैं मैं तो खा लेता हूं अगर नर्म (अंसल) हो तो"

हा हन्त! यदि पण्डित जी अनुवाद करने से पूर्व सायणभाष्य को

(शेष पृष्ठ ५ पर)

सम्पादकीय—

क्या भारत स्वतन्त्र है ?

विगत ३९ वर्षों से हम सुनते और पढ़ते आरहे है कि १५ अगस्त १९४७ को भारतवर्ष स्वतन्त्र होगया था। पहले पराधीन था और अंग्रेजों का यहा राज्य था। अब भारत स्वतन्त्र और प्रभुसत्ता सम्पन्न राष्ट्र है। कोई साधारण राष्ट्र नही अपितु सारे ससार में जनसख्या की दृष्टि से जिसका दूसरा स्थान है।

कल २५ नवम्बर को हमारे देश की राजधानी दिल्ली मे रूस के महान् नेता ई० एम० मिखाइल गोर्बाचोव पधारे। उनका पूरी तैयारी के साथ स्वागत किया गया। सायंकाल दूरदर्शन पर उसके समाचार प्रसारित हुये। हमारे प्रधानमन्त्री श्री राजीव गान्धी ने उनके स्वागत में जो कुछ कहा वह सब अंग्रेजी मे। इतना ही नही रूसी नेता गोर्बाचोव ने अपने देश की भाषा में भाषण दिया उसका साथ-साथ जो अनुवाद किया गया वह भी किसी भारतीय भाषा मे न करके अंग्रेजी में ही किया गया। इसे देख और सुनकर ऐसा प्रतीत हो रहा था कि यह समारोह भारत का राजधानी दिल्ली में न होकर इगलेड के किसी नगर में हो रहा है।

रूस के नेता गोर्बाचोव ने अपने देश की भाषा में ही भाषण देने में अपना गौरव समझा, भले ही उसके समझने वाले यहां नगण्य ही क्यो न हों। दूसरी ओर हमारे प्रधानमन्त्री श्री राजीव गान्धी ने अपनी राष्ट्र-भाषा हिन्दी में बोलने में हीनता अनुभव की और विदेशी भाषा अथवा दासता की निशानी अंग्रेजी में ही बोलने में गौरव अनुभव किया। यदि वे चाहते तो राष्ट्रभाषा हिन्दी में भाषण कर सकते थे। उन्हें हिन्दी में बोलना आता है और यदा कदा बोलते भी हैं।

७२ करोड़ भारत निवासियों में दो प्रतिशत अर्थात् डेढ़ करोड़ भारतीय साधारण अंग्रेजी जानते वा समझते हैं। शेष साढे सत्तर करोड़ (९८ प्रतिशत) भारतवासी न अंग्रेजी समझते हैं और न ही बोल सकते हैं। ऐसी स्थिति मे हमारे प्रधानमन्त्री अंग्रेजी भाषा मे स्वागत भाषण करके किसको सुना रहे थे? रूस के लोग भी सुना है अंग्रेजी भाषा को पसन्द नही करते।

हमारी अपनी भाषा नहीं, हम भाषा की दृष्टि से आज भी अंग्रेजी के गुलाम है। हम अपनी वेशभूषा नही अपना रहे। हमारा सविधान भी विदेशीय सविधानों की नकल है। ऐसी स्थिति मे भारत को स्वतन्त्र कहना वैसा ही है जैसा किसी गरीब या भिखारी को धनीराम या करोड़ीमल कहना।

१९४७ से पूर्व भारत में शासक अंग्रेजो के प्रति, उनकी भाषा और वेशभूषा के प्रति भी राष्ट्रवादी भारतीयो में विरोध की भावना थी। उसी के परिणामस्वरूप महात्मा गान्धी के नेतृत्व में अंग्रेजो! 'भारत छोड़ो' आन्दोलन चला और विदेशी वस्त्रों को होली जलाई गई थी।

स्वामी दर्शनानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द आदि महापुरुषों ने गुरुकुलों की स्थापना करके उनमे सस्कृत हिन्दी-माध्यम से उच्च शिक्षा प्रदान करके राष्ट्रवादी देशभक्त तैयार किये। आज उन्ही गुरुकुलों में प्रथम श्रेणी से अंग्रेजी पढाने की व्यवस्था की जा रही है। महर्षि दयानन्द द्वारा प्रदर्शित गुरुकुलीय पाठविधि को तिलांजलि देकर गुरुकुलों को मिडल स्कूल और हाई स्कूल बनाया जा रहा है और भावना है यदि कुछ साधन जुट जावें तो इन्हें कालेज बना दिया जावे।

ऐसा किया जाने का कारण पूछने पर ज्ञात हुआ कि छात्रों के अभिभावक कहते हैं कि गुरुकुलों में 'मोडे' बनाये जाते हैं। अत: यहां कोई धनी व्यक्ति अपने बच्चों को नहीं भेजता। जब से प्रथम श्रेणी से अंग्रेजी प्रारम्भ की है तब से कुछ सम्पन्न घरानों के छात्र भी आने लगे हैं।

प्रथम युग के आर्य ने जिन्होंने अंग्रेजों के साम्राज्य में सब कुछ किया और कष्ट सहे। विदेशियों की भी यह धारणा थी "जहां-जहां आर्यसमाज है वहां-वहां क्रान्ति है।" आज दूसरी शताब्दी के आर्य-समाजी इतने कायर कमजोर नपुसक अथवा हीजड़े हो चुके हैं जो अपने पूर्वजो द्वारा सस्थापित आर्य संस्थाओं को चलाने में भी असमर्थ हैं। उनके लिये सरकारी सहायता प्राप्त करने के लिये अपने वास्तविक स्वरूप और सिद्धान्तों को भूलते जारहे हैं।

२२ नवम्बर को साकेत (दिल्ली) में एक मीटिग में हमारे सहयोगी आर्य उद्योगपति श्री लछमनदास जी के विचार सुनकर मुझे कुछ सन्तोष हुआ। उनका विचार था जिस प्रकार अंग्रेजो 'भारत छोडो' आन्दोलन चलाया गया था उसी प्रकार आज "अंग्रेजी हटाओ, भारतीय भाषा अपनाओ" आन्दोलन चलाना चाहिये। जब तक ऐसा देशव्यापी प्रवल आन्दोलन नहीं चलेगा तब तक हम भारतवासी अंग्रेजीतन्त्र से स्वतन्त्र नही हो सकते।

—वेदव्रत शास्त्री

सभा के कोषाध्यक्ष मा० बद्रीप्रसाद आर्य का संक्षिप्त परिचय



जन्म—१५ सितम्बर, १९१३ ग्राम—कैमथल, जि० अलीगढ़ उत्तरप्रदेश। हाल जीन्द, हरयाणा

शिक्षा—पंजाब यूनिवर्सिटी अन्तर्गत टीचर्स ट्रेनिंग, प्रेस वेटेरियन ट्रेनिंग स्कूल-मोगा (पंजाब) द्वारा

कार्यक्षेत्र—आर्यसमाज जीन्द के मन्त्री से लेकर संरक्षक तक। १९४२ से अब तक।

जाट हाई स्कूल जीन्द की स्थापना में.—

(१) चौ० बलदेवसिंह B A.,L.L B.,B T के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य किया जो अब महाविद्यालय बन गया है।

(२) पब्लिक कालेज जीन्द जो अब राजकीय पोस्ट ग्रेजुएट कालेज बन गया है, उसके सस्थापकों में अग्रणी रहे।

(३) हिन्दू कन्या महाविद्यालय जीन्द के संस्थापक मण्डल में बतौर सीनियर सहायक महामन्त्री तथा कोषाध्यक्ष के पद पर तब तक रहे, जब तक कि महाविद्यालय का भवन निर्माणकार्य पूर्ण हुआ और उसमें विशेष धन राशि दान स्वरूप दी।

आजीवन सदस्य— (१) वार्ष्णेय महाविद्यालय अलीगढ (२) डी० ए० वी० इण्टर कालेज (अलीगढ) (३) हीरालाल बारह सैनी इण्टर कालेज (अलीगढ) (४) आदर्श लगसमा इण्टर कालेज कैमथल (अलीगढ) (५) हि० क० म० विद्यालय जीन्द (५) सीनियर उप-प्रधान गोपाल विद्या मन्दिर (जीन्द) (७) सदस्य भूतेश्वर मन्दिर (जीन्द) (८) जिला जीन्द की शान्ति सभा के सदस्य। ये उपरोक्त दोनों ही उपायुक्त महोदय जिला जीन्द की प्रधानता के अन्तर्गत।

(४) अध्यक्ष वेदप्रचार मण्डल जिला जीन्द। अब आप इस समय हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष के पद पर सर्वसम्मति से चुने गए है।

—रामचन्द्र गुप्ता हैडमास्टर
राजकीय उच्च विद्यालय
रधाना (जीन्द)

अखिल भारतीय गोरक्षा सम्मेलन फिरोजपुर झिरका (मेवात)

जब सूर्य अपनी लाल-आंखें खोलता है गोतम, कपिल, कणाद, पुरुषोतम श्रीराम, गोपाल श्री कृष्ण की पवित्र भूमि पर हजारों गोमाताओं और उसके अमर सपूतों का वध कर दिया जाता है एक धर्मान्ध मुसलिम सम्प्रदाय द्वारा हाय कितना बड़ा घोर अन्याय अपने ही बिछड़े भाइयों द्वारा, जो गोमाता के हत्यारे हो नहीं समस्त मानवता के हत्यारे के रूप में आज हमें दिखाई दे रहे हैं यह घोर कोई नहीं ये सन् १६०० ई० से पूर्व हमारे अभिन्न भाई थे, औरंगजेब के प्रलोभनों, अत्याचारों और धमकियों से इन लाखों गो भक्तों ने धर्म परिवर्तन कर लिया और आज वह गोमांस से अपनी भूख बुझाते हैं। कौन समझाए इस बात को इन्हें। आज आर्यों के सामने यह प्रश्न है आखिर यह हत्यायें कब तक ? क्या सरकार इसे रोक पायेगी ? परन्तु सरकार अपनी सुरक्षा करने में भी सक्षम नहीं है तो भला वह किस को रक्षा करेगी।

इन्हीं प्रश्नों के मध्य में सन् १९६३ में आर्य वेद प्रचार मण्डल की स्थापना हुई जो मेव बाहुल्य मेवात क्षेत्र (गुडगावा, फरीदाबाद, मथुरा, अलवर, महेन्द्रगढ़, भरतपुर) के अल्पसंख्यक हिन्दुओं के हितों की सुरक्षा, उनमें आत्मविश्वास भरते हुए उनके धार्मिक एवं सामाजिक मूल्यों का संरक्षण करने के लिये कृतसंकल्प हुआ।

खुले आम गोवध, ग्रामीण हिन्दुओं के प्रताडन, धर्म प्रचारकों को धमकी देने, धार्मिक सभाओं में विद्रोह करने, बसों में विद्यार्थियों द्वारा हिन्दू अध्यापिका के साथ अभद्र व्यवहार करने जैसी घृणित गम्भीर समस्याओं की रोकथाम आर्यों को स्वयं करनी होगी। इसी वास्तविकता के आधार पर ५ मई १९८५ को महर्षि दयानन्द वैदिक आश्रम भादस में हिन्दू-मेव पंचायत चौ० सोहनलाल जेलदार की अध्यक्षता में हुई जिसमें राधाकृष्ण बजाज जैसे गो भक्तों ने भी भाग लिया था। मगर अजमत खां विधायक ने चाणक्य नीति से पुनः पंचायत बुलाने की जिम्मेवारी ली और १० जुलाई १९८५ की ता० भी निश्चित कर दी मगर सभी मेव लीडर धर्मान्धता में बोखला गये और अजमत खां को पंचायत न बुलाने के लिये बाध्य किया, दुर्भाग्य से उसी दोरान ३० जुलाई १९८५ को नूह के पास एक भयकर गोवध काण्ड हुआ जिसमें ३५ कटी हुई गोओं को पुलिस ने रंगे हाथों पकड़ा किन्तु बाद में मेव सांसद और विधायकों के दबाव से अपराधियों को छोड़ना चाहा जिस पर आर्य वेद प्रचार मण्डल ने हंगामा मचाना शुरु किया तो पुलिस को कार्यवाही करने पर बाध्य होना पड़ा। किन्तु स्थानीय विधायक एव सांसद यह सब नहीं देख सकते थे। अतः उन्होंने गोहत्यारों को सरंक्षण देने के लिए एवं पुलिस गतिविधि को दबाने के लिये १४ दिसम्बर १९८५ को नूह में मेवों का विशाल सम्मेलन किया जिसमें अनेकों मेव वक्ताओं ने आर्य वेद प्रचार मण्डल मेवात तथा पुलिस को खूब कोसा, कबीर खां ने तो ऐसे वाक्यों का प्रयोग भी किया जो भारतीय संविधान की धज्जियां उड़ाते थे। और अन्त में रहीम खां तथा शकरुल्ला खां जो क्रमशः सांसद एवं मंत्री, हरयाणा सरकार थे ने डी० एस० पी० नूह को ससपेंड करा दिया एव एस० एच० ओ० का स्थानान्तरण करा दिया। इन सारी घटनाओं का विवरण लेकर आर्य वेद प्रचार मण्डल मेवात का एक प्रतिनिधि मण्डल निवर्तमान मुख्यमन्त्री चौ० भजनलाल से हरयाणा भवन दिल्ली में मिला किन्तु दुर्भाग्य यह कि मुख्यमन्त्री महोदय ने मधुर मुस्कान के साथ प्रतिनिधि मण्डल का उपहास उड़ाया। आर्य वेद प्रचार मण्डल मेवात ने असन्तुष्ट होकर प्रधान मन्त्री, भारत सरकार से मिलना चाहा किन्तु प्रधान मंत्री विदेशी मामलों में इतने व्यस्त हैं कि अपने देश की समस्याओं को सुलझाने एवं ऐसे स्वदेशी व्यक्तियों से मिलने का उनके पास समय नहीं है।

आर्य वेद प्रचार मण्डल मेवात ने अपने जीवन में क्या कुछ किया यह एक लम्बी दास्तान है। गोहत्यारों से संघर्ष हो या नगीना साम्प्रदायिक विप्लव, आर्य वेद प्रचार मण्डल ने हर स्थान पर अपनी भूमिका वीरों के अन्दाज में निभाई है। इसका अनुशासन, आर्यत्व तथा नवयुवकों से कार्य कराने का ढंग मेवात के अल्पसंख्यक हिन्दुओं में नवजीवन तथा उत्साह को भरता गया। मण्डल के लिये यह गौरव की बात है कि आज भी इसे श्री पद्मचन्द आर्य, सत्यपाल आर्य तथा शिवचरण आर्य जैसे कर्मठ कार्यकर्ता मिले हुए हैं जिन्हें रात-दिन मेवात के अल्प संख्यकों की सुरक्षा एवं गोमाता की रक्षा के अतिरिक्त और कुछ नहीं सुहाता। इन्हीं सब गम्भीर समस्याओं को लेकर

अखिल भारतीय गोरक्षा सम्मेलन आप सभी लोगों के सहयोग से आर्य वेद प्रचार मण्डल मेवात ने ७ दिसम्बर १९८६ रविवार प्रातः १० बजे से फिरोजपुर झिरका में रखा है जिसमें भारत वर्ष के तपे हुए संन्यासी, वक्तागण एवं सामाजिक और राजनीतिक नेता अपने गम्भीर विचार देंगे। गो मां के भक्तो आओ। अपने सभी आवश्यक कार्यों को छोड़कर ७ दिसम्बर को माता की असहनीय पुकार को सुनने के लिये एवं हिन्दू संगठन का परिचय देने के लिये फिरोजपुर पहुंचिये। इस अवसर पर सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी आदि आर्यनेता भी पधारेंगे।

सत्येन्द्र प्रकाश शास्त्री
मण्डलपति सार्वदेशिक आर्यवीर दल हरयाणा गुड़गावां मण्डल

ग्राम चमारखेड़ा एवं दौलतपुर (हिसार) में वेद एवं शराबबन्दी प्रचार

दिनांक १४-११-८६ को सांय-काल ८ बजे ग्राम चमारखेड़ा की चौपाड़ में श्री गणपतराय सरपंच को अध्यक्षता में एक सभा का आयोजन किया गया। जिसमें सैकड़ों लोगों ने भाग लिया। सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी एवं महाशय संग्रामसिंह आर्य ने आर्यसमाज क्या है, क्या चाहाता है, विशेषकर शराबबन्दी एवं दहेज बारे विचार रखे। सरपंच साहब के नेतृत्व में अक्तूबर मास से पंचायत शराब बन्दी बारे पहले ही सक्रिय है। गांव में जब भी ठेकेदार अवैध तरीके से कट्टे डालने आता है बोतल फोड़ दी जाती हैं। दो बार पंचायत D.C. एवं S.P. से भी मिल चुकी है। गांव में शराब बेचने वाले पर ५०० रु० दण्ड तथा बताने वाले को १०० रु० इनाम दिया जाता है। इस समय गांव में शराब बन्दी प्रोग्राम जोरों पर है। सारे पंच चन्दगीराम बासेड़ा इन्द्राज पच, हनुमान आर्य का विशेष सहयोग है।

प्रातःकाल १५-११-८६ को क्रान्तिकारी जी ने सामूहिक जगह पर यज्ञ किया। जिसमें २,३ खुलार शराबियों ने शराब छोड़ी, २ ने हुक्का बीड़ी न पीने का व्रत लिया।

दिनांक १६-११-८६ को ग्राम दौलतपुर में भी क्रान्तिकारी एवं महाशय संग्रामसिंह आदि ने शराब बन्दी बारे प्रचार किया, प्रातःकाल सुबेदार रणधीरसिंह राव के घर हवन किया। जिसमें लोगों ने श्रद्धा से भाग लिया। कुल मिला कर दोनों गांवों में आर्यसमाज एवं शराब बन्दी प्रचार प्रभावशाली रहा।

हनुमान आर्य
ग्राम चमार खेड़ा हिसार

शोक सूचना

आचार्य सुरेन्द्रकुमार जी के सुपुत्र श्री संजीव एम० एस-सी० ग्राम लूखी (महेन्द्रगढ़) का ट्रक और स्कूटर के टकराने से १६-११-८६ को स्वर्गवास हो गया। यह नवयुवक पं० सोहनलाल जी का पौत्र था। एक बहुत ही अच्छा खिलाड़ी भी था। ऐसी उच्च आत्मा के लिए हम भगवान् से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान हो, उनके दुःख से दुःखित जनों को धैर्य मिले।

स्वामी व्रतानन्द
वैदिक आश्रम गुगोढ़ जि० रोहतक

महर्षि का अन्तिम आदेश

जनं बिभ्रति बहुधा विवाचसं नाना धर्माणं पृथ्वी यथौकसम् ।
सहस्रधारा द्रविणस्य मे दुहां ध्रुवेव धेनु रनपस्फुरंति ॥ (अथर्व)
विविध वेशभाषओं से है शोभित देश हमारा,
नानाविधधर्मों विश्वासों से बहती है धारा
सब काम पूरे करती है काम धेनु सी माता,
वसुधा का हर पुत्र इसी से है मुंहमांगा वर पाता ।
(अनु० सत्यकाम विद्यालंकार)

महिमाशाली महर्षि ने इस देश की अन्तिम यात्रा में इतने ही शब्द कहे 'कमरे के सब द्वार खोल दो सब लोग मेरे पीछे आ जाओ जो दिव्यता पूर्ण, वाक्य चन्द थे, बन्द थे, पर सारगर्भित थे ।

अन्धकार की अपनी शक्ति है अमावस्या की रात्रि, अन्धकार की मूर्ति, काल चक्र का प्रमाण पत्र, मानी जानी रीति नीति है । अन्धकार डरावना भी होता है, रस्सी का सांप, झाड़ी का भूत बन कर खड़ा होता है । भयकरता भी सता लेती है, वस्तु भेद भी दुर्लभ होता है, पर प्रकाश की एक लौ का भी स्वागत हो जाता है दीपक छोटा ही सही, अल्पमूल्य ही सही, पर अन्धकार को चुनौती होती है । निराशा को निस्तेज करता, उत्साह को मुस्कान भरता, शान्ति का दामन भरता, ज्योति की शान लेता है । इसी को कहते नेतृत्व ।

महर्षि परलोक गमन कर रहे थे, देश भर का अन्धकार उनको भुला न था, पर प्रकाशमयी वेदमयी लौ भी उन्हें याद थी, जहां जाते-जाते अपनी महक छोड़ी, जाते-जाते भी प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो की दिव्यनाद निचोड़ी, एक नए समाज, एक नए जगत् की दिशा मोड़ी, भावी संतति की राह जोड़ी, नेतृत्व की आभा/पतवार की ललक फोड़ी, यह स्मरण करने का सौभाग्य है, वरदान है, बुद्धिजीवियों के लिए एक सुरम्य सुरपान है । 'सब द्वार खोल दो' एक आदेश, अपने विस्तार ज्ञान अनुभव का परिमाण, प्रमाण भी था निरपेक्षवाद का एक अनुवाद भी था, नए युग को चैलेंज भी था, 'जो करके दिखा सके' का एक साक्षीकरण भी था, उत्साह व निरर्भीकता का दहकता वस्तुकरण भी था, आस्तिकता का वरदान भी था, लक्ष्यपूर्ति का उदाहरण भी था, अमर हो जाने का विधि विधान भी था । सब मतमतन्तरों को नमूना पेश करने का खुला आमंत्रण भी था । 'जो मैंने कहा वह किया है' समर्पण कर देने का मान भी था । अपूर्व अवसर तथा पक्षियान भी था, यात्रा समाप्ति का एक अभियान भी था । सदा बाहर हो जाने का गरेबान भी था, गौरव भी था, एक विशाल सत्य को जागरण करने का निशान भी था । 'सब अच्छा किया था' अभिमान भी था, सारे जहां से अच्छा कीर्तिमान भी था । जो भी कह दो थोड़ा रहेगा, पर सनातन सत्य को आलोकित करने का कारवां भी था । कमरे के सारे द्वार खोलकर आकाश व अंतरिक्ष का मिलान भी था, वास्तविकता का जी जान भी था, कोई न तो फिक्र, कोई न तो जिकर, ईश्वर स्तुति का स्वरगान भी था, कोई समझे, दिव्यता के लोक का प्रस्थान भी था, आगमन भी था, आवागमन का निर्माण भी, निर्वाण भी था तथा महिमाशाली महिमा का बखान भी था ।

'सब लोग मेरे पीछे चले आओ' वाह रे नेता, क्या सुन्दर दिशा, क्या चिरस्थायी वेद विद्या की निशा, क्या खौलती ज्वाला की भिक्षा-शिक्षा, राए सुझाव, अनुमति, सुमति, सैनिकी आज्ञा की अनुगति, भीतर की उगलती प्रतिभा की भवभूति निष्ठा, सफल जीवन की रीति नीति बतलाते गए, जाते-जाते भी दिए जलाते गए, कहीं अन्धकार मेरे देश वासियों को डस न ले, एक हुकार छोड़ते गए, मरा कैसे जाता है, शरीर कैसे छोड़ा जाता है, नया रिश्ता कैसे जोड़ा जाता है, शान में ध्यान कैसे किया जाता है, जान बूझ से भी प्राण क्योंकर छोड़ा जाता है, अमर पथ कैसे मोड़ा जाता है, [illegible] का भांडा कैसे फोड़ा जाता है, संसार को एक नया पाठ पढ़ा गए सारी आयु [illegible] थी, आखरी दम भी खाली न गए, एक जीता जागता नवीन दृष्टान्त, नवीन प्रयोग, नवीन घोष, नवीन संयोग, नवीन [illegible], नवीन [illegible] का रास्ता [illegible] बता गए । आत्मविश्वास इतना था कि [illegible] कि संदेश दे गए, राह दे गए, चाह दे गए, प्रवाह दे गए, [illegible] होने का उपहार दे गए, [illegible] दे गए । ऐसे [illegible] को कोटिशः प्रणाम ।

[illegible]

आर्य वीर दल जीन्द द्वारा वीर-पर्व (विजयदशमी) का अयोजन

जीन्द १२ अक्तूबर आर्य वीर दल जीन्द के उत्साही आर्य वीरों ने आर्यसमाज रामनगर रोहतक रोड जीन्द में वीर-पर्व का सुबह ८ से ११ तक सफल आयोजन किया । इस अवसर पर जीन्द के लोकप्रिय विद्वान् उप-मण्डल अधिकारी (ना) एवं प्रशासक डा० रामभक्त लांगायन मुख्य अतिथि थे तथा श्री प्रतापसिंह जी अहलावत सहायक आबकारी एवं कराधान अधिकारी सभाध्यक्ष के पद पर आसीन थे । हरयाणा प्रांतीय आर्यवीर दल के उप संचालक उत्साही युवक नेता श्री उमेद शर्मा मुख्य वक्ता थे जिन्होंने अपने ओजस्वी भाषण में भगवान् राम के जीवन पर प्रकाश डाला और आर्य वीरों को प्रेरणा दी कि वे भी राष्ट्रहित में संगठित होकर अन्याय से लड़ें । महर्षि के मिशन को आगे बढ़ायें । श्री इन्द्रसिंह जी शास्त्री, स्वामी धर्मानन्द जी के व्याख्यान भी हुये । डा० लांगायन तथा श्री अहलावत ने अपने व्याख्यानों में जोर दिया कि हमारा राष्ट्रीय चरित्र भगवान् राम की तरह ऊँचा तथा स्वच्छ हो । हम वेदों से बहुत कुछ सीख सकते हैं । हमें राम के गुण अपनाने चाहियें और रावण जैसा निन्दनीय आचरण नहीं करना चाहिये । पं० चन्द्रभान जी के भजन भी हुये । बड़ी संख्या में श्रोता उपस्थित थे । आर्यवीर दल के अनुरोध पर प्रो० ओमकुमार आर्य ने सभा-कार्य का संचालन किया ।

—सुभाषचन्द्र आर्य
मन्त्री आर्यवीर दल जीन्द

आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज सिरसा—

प्रधान—डा० रणधीरसिंह सांगवान, उपप्रधान—श्री रामजीलाल एडवोकेट, श्री बलदेवसिंह आर्य, मन्त्री—श्री सत्यपाल सेवानिवृत्त इंजिनियर, उपमन्त्री—श्री राजकुमार पी टी आई, कोषाध्यक्ष—श्री मोहनलाल वर्मा, प्रचार-मन्त्री—श्री सुरेन्द्र नेहरा, सहायक प्रचार मंत्री—श्री रामचन्द्र आर्य, वेद-प्रचाराधिष्ठाता—प्रिंसिपल नित्यानन्द, पुस्तकाध्यक्ष—श्री सुभाष मिगलानी, लेखानिरीक्षक—श्री रामशरण दास, सहायक लेखानिरीक्षक—श्री हुकमचन्द मलिक ।

वार्षिक चुनाव आर्यसमाज

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द भवन सैक्टर १९ फरीदाबाद

प्रधान—श्री नारायण प्रसाद, उप-प्रधान—श्री दीपचन्द, मन्त्री—श्री नकुलदेव चौधरी, उप-मन्त्री श्री दिनेशचन्द्र आर्य, प्रचार मन्त्री—श्री पन्नालाल शर्मा, कोषाध्यक्ष—श्री महेशचन्द्र आर्य, सचालक आर्य वीरदल—श्री देवेन्द्र आर्य ।

(पृष्ठ २ का शेष)

देख लेते तो यह अनर्थ कदापि न करते । सायण ने स्पष्ट शब्दों में लिखा है—

तयोरन्नमश्नामीत्यर्थः ।

अर्थात् याज्ञवल्क्य कहता है मैं तो हृष्ट-पुष्ट बलवान् शरीर वाले गाय तथा बैल द्वारा उत्पन्न दूध एवं अन्न को खा लेता हूं ।

मैं वैदिक वाङ्मय पर कार्य करने वाले विद्वानों से सविनय कहना चाहूंगा कि वे इस अनुकरण की गर्हित मनोवृत्ति को छोड़कर मूलग्रन्थ का अनुशीलन पूर्ण मनोयोग से करने की कृपा करें जिससे ग्रन्थकर्त्ता के सही भावों का अधिगमन हो सके ।

माता पिता की सेवा

—हरद्वारी सिंह अहलावत

जबसे सृष्टि बनी है माता पिता का आदर सत्कार एवं सेवा जिंदगी का सर्वोत्तम सिद्धांत माना गया है। जिन महापुरुषों ने इस धार्मिक कर्त्तव्य की पूर्ति का मार्ग अपनाया और इसके लिए त्याग और बलिदान किया उन्हें समाज में सदा के लिए आदर और सम्मान का स्थान प्राप्त है। उदाहरणार्थ रामचन्द्र जी ने अपने पिता जी की आज्ञा का पालन करने के लिए प्रसन्नतापूर्वक चौदह वर्ष का बनवास स्वीकार किया। राणा सांगा से महाराणाप्रताप तक के सभी उदयपुर के महाराजा मुगलों के विरुद्ध जी जान से संघर्षरत रहे ताकि उनके बुजुर्गों की मर्यादा कि उदयपुर के राजपूत शासन का बोलबाला चारों दिशाओं में हो, पूरी हो सके। श्रवण का वह चित्र जिसमें वह अपने अन्धे माता-पिता को लकड़ी की बनी बहंगी में कन्धे पर लिए दिखाया गया है घर घर में देखने को मिलता है। माता-पिता के प्रति श्रवण की आदर्श श्रद्धा भक्ति का दर्जा रखती है। इस दृश्य से हर व्यक्ति को अपने माता पिता की सेवा और आदर करने की प्रेरणा मिलती है। जो व्यक्ति यह तरीका अपनाते हैं वे जीवन में इज्जत पाते हैं क्योंकि मां बाप की सेवा जीवन के अनेक आदर्शों में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है।

यह एक वास्तविकता है कि हमारा भला चाहने वाला मां बाप से बढ़ कर और कोई नहीं हो सकता। वे सदा यही चाहेंगे कि हम दिन दुगुनी और रात चौगुनी उन्नति करें और उनका नाम रोशन करें। माता पिता को जो प्रसन्नता अपनी सन्तान की सफलता देखकर होती है वह और कहीं नहीं हो सकती। माता पिता को सन्तान से एक प्राकृतिक लगाव होता है और आखिरी दम तक उन्हें इसका अहसास और ध्यान रहता है। महाभारत का युद्ध समाप्त होने के बाद की बात है कि पाण्डव और भगवान् श्रीकृष्ण जी पश्चात्ताप के लिए धृतराष्ट्र के पास गए और उससे क्षमा चाही। अन्धे बुजुर्ग बारी बारी पाण्डवों से गले मिल रहे थे, भीम का जब नम्बर आया तो भगवान् श्रीकृष्ण ने एक लोहे का भीम आगे कर दिया। भीम ने धृतराष्ट्र के सारे लड़के मारे थे, यह याद करके उसे उनकी ममता उमड़ आई और क्रोध से बेबस होकर उसने लोहे के भीम को इतने जोर से दबोचा कि वह टुकड़े टुकड़े हो गया। इसके पश्चात् धृतराष्ट्र बड़ा दुःखी हुआ कि गुस्से की हालत में उसने भीम को जान से मार डाला। परन्तु भगवान् श्रीकृष्ण तो योगी थे उनको धृतराष्ट्र की मानसिक स्थिति का पहले से ही अनुमान था। उन्होंने बताया कि भीम सुरक्षित है और धृतराष्ट्र ने लोहे के भीम को चकनाचूर किया है। इस उदाहरण से स्पष्ट है कि माता पिता अपनी सन्तान के नुकसान को कभी भूल नहीं सकते और उन्हें नुकसान पहुंचाने वाले को कभी माफ नहीं कर सकते।

बचपन और जवानी के बाद बुढ़ापे से हर व्यक्ति को दो चार होना पड़ता है। हजरत दाग ने ठीक ही कहा है :—

"फलक देता है जिनको ऐश उनको ग़म भी देता है,
जहां बजते हैं नक्कारे वहां मातम भी होता है।"

उम्र की एक विशेष हालात में शरीर काम करना छोड़ देता है और आदमी अधिक परिश्रम, उन्नति और परिवर्तन के योग्य नहीं रहता। यही एक समय होता है जब माता पिता को सेवा और देखरेख की सन्तान से अपेक्षा होती है।

हमारे समाज में यह बात सूर्य की भांति सत्य है और हर समझदार व्यक्ति इस वास्तविकता को स्वीकार करता है कि लड़कियां सारी उम्र मां बाप के लिए श्रद्धा रखती हैं। माता पिता को एक जरा सा कांटा भी लग जाए तो लड़कियां खून बहाने के लिए तयार मिलेंगी। सारी उम्र उनकी श्रद्धा और सेवा में रत्ती भर भी अन्तर नहीं आता। निस्सन्देह बहुत से माता पिता लड़कियों की अपेक्षा अपने लड़कों पर अधिक ध्यान देते हैं। परन्तु लड़कियां हर चीज के मुकाबले माता पिता को ही प्राथमिकता देती हैं लड़कियों के दिल में माता पिता के लिए अटूट प्रेम भाव और श्रद्धा कायम रहती है और उनकी नजर में मां बाप से बढ़ कर दुनियां में कोई नहीं। इस प्राकृतिक प्रेम और सम्मान भाव के लिए लड़कियों की जितनी भी प्रशंसा की जावे कम होगी। लड़कों की स्थिति आजकल इसके बिल्कुल विपरीत पायी जाती है। इस युग में ऐसे लड़के जो माता पिता को खुश करें बहुत कम हैं। यह ठीक है कि वह जैसा करते हैं वैसा ही फल समय आने पर उनको भी मिलता है। अकबर के पुत्र सलीम ने जोकि बाद में जहांगीर के नाम से जाना गया, अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह कर दिया था। इसके एवज में सलीम को भी अपने पुत्र शाहजहां की बगावत से दो चार होना पड़ा। शाहजहां का हम सब को मालुम ही है, उसे अपने पुत्र औरंगजेब के हाथों कैद होकर कई सालों तक जेल यातनाएं झेलनी पड़ी। इसके परिणामस्वरूप औरंगजेब को इस हद तक शक्की और खतरनाक रवैया अपनाना पड़ा कि वह अपने लड़कों के बच्चों को जमानत के रूप में अपने पास रखता था ताकि अपने विरुद्ध पुत्रों के विद्रोह को रोक सके। पांच चीजें कभी वापिस नहीं आती। मुंह से निकली हुई बात, कमान से निकला तीर, जिन्दगी का बीता हुआ समय, खोई हुई प्रतिष्ठा और खोया हुआ अवसर। इसलिए हमें इस विषय में विशेष रूप से सावधान रहना चाहिए कि माता पिता की सेवा का अवसर न बीत जाए।

स्वतन्त्रता सेनानी का देहान्त

महाशय वेगराज आर्य के पूज्य गुरु एवं मेरे पूज्य चाचा महाशय जबरसिंह जी का गत शुक्रवार २१-११-८६ को दयालपुर गांव में स्वर्गवास हो गया है। वे पिछले कुछ वर्षों से हुड्डा थोक दयालपुर में रह रहे थे। महाशय जबरसिंह जी पिछले ६० वर्ष से आर्यजगत् के प्रत्येक कार्य एवं आंदोलनों में अग्रणी रहे। चाहे स्वामी श्रद्धानन्द का शुद्धि आन्दोलन रहा हो, चाहे हैदराबाद का सत्याग्रह हो या १९५७ का हिन्दी आन्दोलन। हैदराबाद के सत्याग्रह में महाशय जबरसिंह जी जेल में गए स्वतन्त्रता सेनानी थे। शुद्धि आन्दोलन के संदर्भ में आज भी सहारनपुर के मूला जाटों के गांव उनके ऋणी रहेंगे जिन्हें उन्होंने मुस्लिम धर्म से वापिस हिन्दू-धर्म में दीक्षित किया था। सर छोटूराम जी की किसान समर्थक नीतियों के वे बड़े प्रचारक रहे।

महाशय जबरसिंह जी चौ० गुलाबसिंह जी के पौत्र थे जो जिले के बड़े जमींदार थे, जिन्हें (चौ० गुलाबसिंह जी को) अंग्रेज के खिलाफ १८५७ में (महाराजा नाहरसिंह के साथ मिलकर) बगावत करने पर फांसी की सजा दी थी। महाराजा नाहरसिंह को लालकिले में एवं चौ० गुलाबसिंह को बल्लबगढ़ के वर्तमान नाहरसिंह पार्क की जगह पर फांसी दी गई थी एवं उनकी दो हजार एकड़ जमीन तथा मकान जब्त कर लिये थे।

शहीद चौ० गुलाबसिंह के पुत्र चौ० कल्लूसिंह, चौ० कल्लूसिंह के पुत्र हरबससिंह, फूड़ेसिंह, भरतसिंह एवं जबरसिंह थे। जबरसिंह एक क्रान्तिकारी अंग्रेज विरोधी प्रचारक थे। पं० शिवलाल के शिष्य थे। महाशय जबरसिंह के सुयोग्य शिष्य महाशय वेगराज आर्य एवं उनके शिष्य सुखबीरसिंह आर्य, आर्यसमाज एवं देश की अमूल्य धरोहर हैं। महाशय जी कुछ अरसे से दयालपुर में ही रह रहे थे जहां उनका स्वर्गवास हुआ। दयालपुर में ही ३०-११-८६ को उनकी स्मृति में शोक सभा होगी।

सुखबीरसिंह आर्य

इन्सान ....'नाज़' सोनीपती

कैसा है यह इन्सान, समझ में नहीं आता ।
क्योंकर करें पहचान, समझ में नहीं आता ॥१॥
दाना है, कि नादान, समझ में नहीं आता ।
इन्सां है, कि शैतान, समझ में नहीं आता ॥२॥
इस खाक के पुतले की औकात भी क्या है ।
जांदार है बेजान, समझ में नहीं आता ॥३॥
मैं कौन हूं, और क्या हूं, मुझे कोई बताए ।
अनजान हूं, अनजान, समझ में नहीं आता ॥४॥
इस वक्त जिसे रहता है दौलत का अभिमान ।
दो दिन का यह मेहमान, समझ में नहीं आता ॥५॥
खुद को तो ज़रा 'नाज़' नहीं समझा है अब तक ।
फिर कहता है भगवान्, समझ में नहीं आता ॥६॥

हरयाणा रक्षा वाहिनी बैठक १६-११-८६
के प्रस्ताव

यदि हम मैथ्यू तथा वेंकटरमैया आयोगों की रिपोर्ट एक साथ रख कर पढ़ें, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि तथाकथित पंजाब समझौते की धारा ७-२ के अनुसार चण्डीगढ़ के बदले हरयाणा को देने के लिये फाजिल्का अबोहर क्षेत्र के इलावा और कोई क्षेत्र उपयुक्त नहीं हो सकता। मैथ्यू आयोग ने अपने प्रतिवेदन में स्पष्ट कहा है कि दूसरे इलाके तो धारा ७-४ के अनुसार ही हरयाणा को दिये जा सकते हैं। ४५००० एकड़ क्षेत्र के लगभग ३९ गांव हिन्दी भाषी घोषित करते हुए वेंकटरमैया ने कहा कि ये गांव हरयाणा को चण्डीगढ़ के बदले में नही दिये जा सकते। ये गांव तो हर हालत में हरयाणा को धारा ७ ४ के अनुसार मिलेंगे ही। धारा ७ २ के अन्तिम वाक्य में यह स्पष्ट उल्लेख है कि चण्डीगढ़ के बदले में दिये जाने वाले गांव धारा ७ ४ के अनुसार सीमा समायोजन के लिये दिये जाने वाले गांवों से बिल्कुल अलग होंगे। मैथ्यू आयोग द्वारा घोषित ८५ हिन्दी भाषी गांव सीमा समायोजन के सिलसिले में दिये जाने वाले गांवों से उसी हालत में अलग कहे जा सकते हैं जबकि वे हरयाणा की सीमा से जुड़े हुए न हों। कन्दूखेड़ा पजाबी भाषी होने से वे गांव हरयाणा की सीमा से न जुड़ने के कारण ही अलग श्रेणी में आ जाते हैं, और इसीलिये चण्डीगढ़ के बदले में दिये जाने के लिये सब प्रकार से उपयुक्त हैं तथा समझौते की भाषा और भावना के पूर्णतया अनुकूल हैं। इसलिये हरयाणा रक्षा वाहिनी की यह बैठक मांग करती है कि समझौते को ईमानदारी से लागू करने के लिये फाजिल्का अबोहर के हिन्दी भाषी गाव तुरन्त चण्डीगढ के बदले में हरयाणा राज्य में शामिल कर दिये जायें।

अकालियों ने अपना आन्दोलन उस दिन प्रारम्भ किया था जब श्रीमती इन्दिरा गान्धी ने सतलुज यमुना जोड़ नहर के निर्माण का कार्य अप्रैल १९८२ में आरम्भ किया था। यह स्पष्ट है कि अकाली सरकार इस नहर को बनाने का काम कभी पूरा नहीं करेगी। इसलिये भारत सरकार से अनुरोध है कि वह इस नहर का काम अपने हाथ में तुरन्त लेकर इस काम को शीघ्रातिशीघ्र पूरा करे। इराडी न्यायाधिकरण का फैसला तभी लागू हो सकेगा और हरयाणा को रावी-ब्यास के पानी का अपना हिस्सा तभी मिलेगा जब नहर के निर्माण का काम पूरा हो जाये।

हरयाणा संघर्ष समिति की यह बैठक नहर का काम पंजाब सरकार द्वारा चलाये जाने की चाल की घोर निन्दा करती है और हरयाणा की जनता से अपील करती है कि वे एकजुट होकर भारत सरकार से जोरदार मांग करे कि वह इस काम को अपने हाथ में लेकर जल्दी से जल्दी पूरा करे।

भारत विरोधी शक्तियाँ जो भारत को खण्डित और अस्थिर करने के षड्यन्त्र के लिये पाकिस्तानी घुसपैठियों, आतंकवादियों, तस्करों और समाजविरोधी तत्त्वों को अपने धन और हथियारों के बल पर इस्तेमाल कर रही हैं, उनके इस षड्यन्त्र को पूर्णतया विफल करना चाहिये। इन शक्तियों द्वारा किये गये आक्रमण का मुकाबिला करने के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि भारत की पश्चिमी सीमाओं के साथ सुरक्षा पट्टी बनाई जाये। सुरक्षा पट्टी बनाये जाने और राज्य सभा द्वारा पारित प्रस्ताव पर अमल को रोकने के लिये पजाब की अकाली सरकार हिरबे इस्तेमाल कर रही है। इसलिये देश की सुरक्षा एकता के लिये यह जरूरी है कि उस सरकार को तुरन्त बर्खास्त कर दिया जायें।

आर्यसमाज पंचकूला जि० अम्बाला का चुनाव

प्रधान—श्री रणवीर पसरीचा, मन्त्री—श्री जयदेव आहूजा, कोषाध्यक्ष—श्री जागीरीलाल शर्मा

आर्यसमाज रिढाणा जि० सोनीपत का चुनाव

प्रधान—वैद्य धर्मसिंह, उपप्रधान—पूर्ण पुत्र हरिराम, मन्त्री—चौ० मौजीराम, उपमन्त्री—रामस्वरूप स्वर्णकार, कोषाध्यक्ष—चौ० सूर्यसिंह, उप-कोषाध्यक्ष—ताराचन्द नम्बदार।

आर्य वेदप्रचार मण्डल मेवात गुड़गांव का चुनाव

१--प्रधान—श्री सत्यपाल जी आर्य गुड़गावां।
2--उपप्रधान—श्री किशोरसिंह जी मीतरौल औरंगाबाद।
,, श्री श्यामलाल जी आर्य गुडगावां।
,, मा० ओम्प्रकाश जी फिरोजपुर।
,, श्री मेघराज जी सोहना।
३--मन्त्री—पद्मचन्द जी आर्य नगीना।
४--उपमन्त्री—मा० सुगनचन्द जी पूनाहाना।
५-- ,, श्री रेवती प्रसाद जो पिनगवा।
६--कोषा०—श्री शिवचरण जी फिरोजपुर।
७--निरीक्षक—ला० भजनलाल जी।
८--संरक्षक—श्री बाल दिवाकर जी हंस, स्वा० प्रेमानन्द जी, आ० सत्यप्रिय जी, म० धर्मपाल जी दिल्ली।

आर्यसमाज माडल टाउन सोनीपत

१-प्रधान—श्री पी० एन कपूर।
२-उ०प०—एच० सी० बत्रा।
३- ,, टी० के० सरधान।
४-मन्त्री—किशोरीलाल।
५-उ०मं०—वैजनाथ जी।
६-कोषा०—आर० पी० खन्ना।
,, जंगबहादुर।
७-लेखा निरीक्षक—ठाकुरदास मदान।

आर्यसमाज बलियानां (रोहतक)

प्रधान—श्री दयाराम जी, उपप्रधान—प्रभुदयाल जी,
मन्त्री—केहरसिंह जी। उपमन्त्री—श्री जगदीश जी शास्त्री।
उप म०—नफेसिंह जी। कोषाध्यक्ष—कप्तान दीवानसिंह जी
पुस्तका०—किशनचन्द जी। प्रचार म० भगवानसिंह जी।
उप प्र०—श्री कुलबीरसिंह जी आर्य।

आर्यसमाज चिड़िया (भिवानी)

१- सरक्षक—मा० सन्तराम आर्य। २-प्रधान—डा० बनीसिंह आर्य ३-उ०प्र०—श्री राजबीर शास्त्री। ४-मन्त्री—श्री कृष्णकुमार आर्य। ५-कोषा०—श्री धूपसिंह आर्य।

आर्यसमाज जगाधरी (अम्बाला)

१-प्रधान—श्री सुभाषचन्द्र पाहूजा। २-उ०प्र० श्री सुन्दरलाल जी। ३-उ०प्र० श्री केशोराम जी। ४-मन्त्री—श्रीबैजनाथ दुग्गल। ५-उ०म०—श्री रत्नलाल जी। ६-कोषा०—श्री देशपाल अरोड़ा। ७-प्र०म०—श्री जगदीश मदान ८-पुस्तका०—श्री त्रिलोकचन्द रहेजा। ९-लेखानि०—श्री वेदप्रकाश गुलाटी।

आर्यसमाज आदर्शनगर दिल्ली

१-प्रधान—अर्जुनदेव सोनी। २—उ०प्र०—शिवदयाल।
३-मन्त्री—धर्मचन्द बत्रा। ४-उ०म०—रत्नलाल चुघ।
५-कोषा०—अजुनदेव श्रीधर। ६-पुस्तका०-देवेन्द्रकुमार।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 रजि० नं० P/I



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभा मन्त्री

सह-सम्पादक—डा० यशवीर

वर्ष १४, अङ्क ३   ७ दिसम्बर, १९८६   वार्षिक शुल्क २०) आजीवन शुल्क २०१) विदेश में ७ पोंड एक प्रति ५० पैसे

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा के महत्वपूर्ण निश्चय

आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापना शताब्दी समारोह की तिथियां २२ से २४ मई निश्चित

१९ से २३ दिसम्बर तक हरयाणा में नशाबन्दी सप्ताह मनाने की तैयारी आरम्भ

३० नवम्बर, १९८६ को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की एक आवश्यक बैठक प्रधान प्रो० शेरसिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इसमें हरयाणाभर से सभा के अन्तरंग सदस्यों तथा आर्यसमाजों के अधिकारियों ने भाग लिया। बैठक में निम्नलिखित निश्चय सर्वसम्मति से किये गये।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की स्थापना सन् १८८६ में लाहौर में की गई थी, उस समय हरयाणा पंजाब का ही भाग था और हरयाणा में आर्यसमाजों की स्थापना पंजाब सभा के निर्देशन में ही हुई थी। पंजाब में उग्रवादियों द्वारा हिंसक आंदोलन के कारण वहां सभा स्थापना शताब्दी समारोह करना कठिन है। हरयाणा के प्रमुख आर्यसमाज बाबरा मोहल्ला रोहतक, आर्यसमाज रेवाड़ी जि० महेन्द्रगढ़, आर्यसमाज पानीपत, आर्यसमाज होली मोहल्ला करनाल, आर्यसमाज अम्बाला छावनी आदि को भी स्थापित हुए १०० वर्ष हो गये हैं। अत: आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापना समारोह हरयाणा, पंजाब एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभाओं के सहयोग से रामलीला मैदान रोहतक में २२-२३-२४ मई १९८७ को धूमधाम से करने का निश्चय किया गया है। समारोह का संयोजक डॉ० रघुवीरसिंह को मनोनीत किया गया है। समारोह की तैयारी करने के लिए अन्नसंग्रह, धनसंग्रह, ऋषिलंगर (भोजन), पण्डाल, पानी, आवास, शोभायात्रा, प्रचार, स्मारिका, यज्ञ तथा स्वागत समिति आदि उप-समितियां प्रमुख तथा अनुभवी आर्य कार्यकर्ताओं के संयोजन में गठित की गई हैं।

समारोह को मनाने के लिये हरयाणा से पधारे सभी सदस्यों ने तन, मन तथा धन से पूर्ण सहयोग देने का संकल्प करते हुए तैयारी के लिए ५ लाख रुपये संग्रह करने का निश्चय किया। सभा के अन्तरंग सदस्यों तथा आर्यसमाज के अधिकारियों ने सभा प्रधान जी को विश्वास दिलाया कि वे अपने-अपने नगरों तथा ग्रामों के निकट १०० नवीन आर्य समाज स्थापित करने में सभा के उपदेशकों को पूर्ण सहयोग देंगे तथा शिथिल हुए आर्यसमाजों में प्रचार करवाकर जागृति लाने का प्रयत्न करेंगे।

शीघ्र ही विभिन्न उपसमितियों की बैठकें आयोजित करके समारोह की तैयारी पूरी शक्ति के साथ आरम्भ करदी जायेगी। श्री सभा प्रधान जी ने हरयाणा के सभी आर्यसमाजों तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं से अनुरोध किया है कि वे अपने साप्ताहिक सत्संगों में समारोह की सूचना देकर प्रचार-कार्य आरम्भ कर देवें। सभा की ओर से शीघ्र ही धनसंग्रह के लिए ५०१, २५१ तथा १०१ रुपयों के कूपन छपवाकर स्वागत समिति के सदस्य और प्रतिनिधि बनाये जायेंगे। सम्मेलन के अवसर पर एक भव्य स्मारिका का भी प्रकाशन किया जायेगा, जिसमें आर्यसमाजों तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं का संक्षिप्त परिचय तथा आर्यसमाजों की स्थापना करनेवाले प्रमुख नेताओं का विवरण दिया जायेगा।

इस समारोह के अवसर पर शुद्धि समारोह करने का निश्चय किया गया है। शताब्दी समारोह को सफल करने की योजना तैयार करने के लिए हरयाणा, पंजाब तथा दिल्ली की आर्य प्रतिनिधि सभाओं की एक सम्मिलित बैठक शीघ्र बुलाई जायेगी।

नशाबन्दी सप्ताह मनाने की तैयारी

१९ दिसम्बर को अमर शहीद श्री रामप्रसाद बिस्मिल तथा २३ दिसम्बर को श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस पर नशाबन्दी सप्ताह के रूप में मनाये जाने का निश्चय किया गया है।

हरयाणा विधानसभा के शीतकालीन अधिवेशन में अनेक विधायकों ने हरयाणा प्रदेश में पूर्ण नशाबन्दी करने की मांग की है। स्मरण रहे अक्तूबर मास में सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी ने भी हरयाणा के मुख्य मन्त्री को एक पत्र लिखकर हरयाणा में नशाबन्दी करने की आवश्यकता पर जोर दिया था। मुख्यमन्त्री महोदय से १६ नवम्बर की झज्जर की जनसभा में भी नशाबन्दी करने की सार्वजनिक रूप से मांग की थी। वे समय-समय पर हरयाणा के अन्य विधायकों से भी नशाबन्दी कराने का अनुरोध करते रहते हैं। उन्होंने सरकार को चेतावनी दी है कि यदि हरयाणा प्रदेश में शीघ्र नशाबन्दी लागू न की गई तो ग्रामीण किसान मजदूर शराब का सेवन करने के कारण बर्बाद तथा शराब ठेकेदार मालामाल होकर भ्रष्टाचार फैलाकर हरयाणा की संस्कृति तथा समृद्धि को समाप्त कर देंगे।

अतः अन्तरंग सभा ने सर्वसम्मति से १९ से २३ दिसम्बर तक सारे हरयाणा में नशाबन्दी सप्ताह मनाने के लिए आर्यसमाज नरवाना, आर्यसमाज रामनगर रोहतक रोड जींद, आर्यसमाज माडल टाउन सोनीपत, आर्य केन्द्रीय सभा गुडगांव, आर्यसमाज फरीदाबाद, आर्य केन्द्रीय सभा रोहतक, आर्यसमाज गढी बोहर जि० रोहतक, वैदिक सत्संग सभा हिसार, आर्य केन्द्रीय सभा करनाल, आर्यसमाज अम्बाला छावनी, आर्यसमाज नारनौल, आर्यसमाज सिरसा, आर्यसमाज थानेसर, आर्यसमाज भिवानी आदि स्थानों पर नशाबन्दी सम्मेलनों का आयोजन किया गया है। इन सम्मेलनों में आर्य विद्वान् एवं अधिकारी, उपदेशक तथा भजनमण्डलियों के कार्यक्रम बनाये जा रहे हैं। इन सभी आर्यसमाजों से निवेदन किया गया है कि वे अपनी-अपनी सुविधा अनुसार तिथि निश्चित करके सभा को पत्र लिखकर सभा अधिकारियों तथा उपदेशकों भजनमण्डलियों को आमन्त्रित करें। इन अवसरों पर स्थानीय वक्ता से सम्पर्क करके सम्मेलनों को सफल करने का पूरा प्रयत्न करें।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

दिसम्बर १९२८ में बलिदान हुए—

काकोरी के शहीदों को श्रद्धांजलि

ले०—सुखदेव शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

९ अगस्त, १९२५ को उत्तरप्रदेश के एक छोटे-से ग्राम काकोरी के समीप चलती हुई रेलगाड़ी को लूट लिया गया, रेल लूटकर उन रुपयों से हथियार खरीद कर अत्याचारी अंग्रेज का मुकाबला करने के लिए क्रांतिकारियों की योजना थी। इस योजना में वैसे तो चन्द्रशेखर आजाद के समेत दस क्रांतिकारी सम्मिलित थे, किन्तु इनके गिरफ्तार होने के बाद चार को फांसी हुई। शेष को कालेपानी की सजा तथा कई २ वर्षों की जेल होने के बाद छोड़ दिये गये। जिन्हें इस केश में फांसी हुई वे थे—ब्रह्मचारी रामप्रसाद "बिस्मिल", श्री राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी, श्री रोशनसिंह, श्री अशफाक उल्ला खां।

१—ब्रह्मचारी पं० रामप्रसाद बिस्मिल के पूर्वज ग्वालियर राज्य के रहने वाले थे, किन्तु कई कारणों से वे वहां से आकर उत्तरप्रदेश के शाहजहांपुर में बस गये थे। बिस्मिल का जन्म ज्येष्ठ शुक्ला ११ सम्वत् १९५४ को हुआ था। बचपन में मिडल कक्षा में पढ़ते हुए बिस्मिल व्यसनों में पड़ गये थे। बीड़ी शराब आदि भी पीने लग गये थे। एक दिन शाहजहांपुर के आर्यसमाज में स्वामी सोमदेव का ब्रह्मचर्य के सम्बन्ध में व्याख्यान सुना। जिससे इन्हें ब्रह्मचर्य सदाचार का ज्ञान होगया, तब वे आर्यसमाज के सत्संग में निरन्तर आने लगे। उनके सब दुर्व्यसन दूर होगये, उनका कायाकल्प होगया। वे भारत को स्वतन्त्र कराने के लिए क्रांतिकारियों की गतिविधियों में सम्मिलित होगये। देशसेवा का व्रत आर्यसमाज में आने के कारण लिया, शरीर को सुदृढ़ बनाया, व्यायाम नियम से करने लगे, प्रतिदिन यज्ञ करते थे। यहां तक कि जिस दिन फांसी हुई उससे कुछ समय पहले हवन किया, व्यायाम किया, तैयार हो गये। जब फांसी पर ले जाने वाले आये तो "वन्दे मातरम्" और भारत माता की जय कहते हुए तुरन्त उठकर चल दिये। चलते समय बिस्मिल ने कहा था—

मालिक तेरी रजा रहे और तूही तू रहे।
बाकी न मैं रहूं न मेरी आरजू रहे॥
जब तक तन में जान, रगों में लहू रहे।
तेरा ही जिक्र या, तेरी ही जुस्तजू रहे॥

अपने आखिरी अरमानों को यों कहते चले—

"इलाही वो भी दिन होगा,
जब अपना राज देखेंगे।
अपनी जमीं होगी,
अपना आस्मां होगा।

किसी ने पूछा कि फांसी के बाद आपकी स्मृति में कोई यादगार बनवादें, बिस्मिल ने उत्तर देते हुए कहा था—

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर वर्ष मेले।
वतन पर मरनेवालों का यही बाकी निशां होगा॥

जब फांसी के निकट पहुंचे तो मजिस्ट्रेट ने उनसे उनकी अन्तिम इच्छा के विषय में पूछा—बिस्मिल ने कहा था—

I wish downfall British Empire.

"मैं ब्रिटिश साम्राज्य का विनाश चाहता हूं"।

इसके बाद फांसी के तख्ते पर खड़े होकर "विश्वानि देव आदि वैदिक मन्त्रों का जाप करते हुए १९ दिसम्बर, १९२८ को गोरखपुर जेल में वे फन्दे पर झूल गये"।

२—राजेन्द्र लाहिड़ी को फांसी

काकोरी के शहीदों में राजेन्द्र लाहिड़ी को सबसे पहले १७ दिसम्बर १९२८ को गोंडा जेल में फांसी दी गई थी। फांसी पर चढ़ने से पहले जेलर ने लाहिड़ी से पूछा था कि—तुम अब कैसा महसूस कर रहे हो? लाहिड़ी ने उत्तर देते हुए कहा था—भारत को स्वतन्त्र कराने के लिए बलिवेदी पर हमारे खून की आवश्यकता है। मृत्यु क्या है? जीवन की दूसरी दिशा के अतिरिक्त कुछ नहीं। इसलिये मनुष्य मृत्यु से भय क्यों माने। वह तो अनिवार्य आनी है, आज नहीं तो कल। मेरे लिए तो यह स्वतन्त्रता का पवित्र पर्व है। मैं खुशी के साथ जारहा हूं। हमारा बलिदान व्यर्थ न जायेगा। मेरा अन्तिम नमस्कार।

फांसी पर चढ़ते हुए उसने कहा था—

चाह रहा था जीवन में मैं, फांसी का वरदान यही।
जन्मूंगा फिर भी भारत में, होता उर में मान यही॥
हम सरेदार बसर शौक जो घर करते हैं,
ऊंचा सर कौम का हो नजर यह सर करते हैं।
सूख जाये न कहीं पौदा यह आजादी का,
खून से अपने इसे इसलिए तर करते हैं॥ —अ
इस गुलामी में तो कोई न खुशी आई नजर,
खुश रहो अहले वतन हम तो सफर करते हैं।
सर तन से जुदा करदो ये है हाथ तुम्हारे,
पर रूह से जजबाते जुदा नहीं कर सकते॥

३—अशफाक उल्ला खां

अशफाक उल्ला खां का जन्म शाहजहांपुर में हुआ था। ये रामप्रसाद बिस्मिल के शिष्य व मित्र थे। बिस्मिल से अत्यन्त प्रेम करते थे। उनके बिना रह नहीं सकते थे। बिस्मिल आर्यसमाजी थे और अशफाक मुसलमान। कैसा सुन्दर समन्वय था दोनों का। हिन्दू मुस्लिम एकता का ऐतिहासिक प्रत्यक्ष प्रमाण था। ये भी काकोरी केस में पकड़े गये थे। १९ दिसम्बर, १९२८ को फैजाबाद जेल में फांसी पर चढ़े। वे बहुत खुशी के साथ कुरान शरीफ का बस्ता कन्धे से टांगे हाजियों की भांति "लवेक" कहते और कलमा पढ़ते फांसी के तख्ते के पास गये। उन्होंने तख्ते को चूमा और गले में फन्दा डाला और मातृवेदी पर बलिदान होगये। मरने से पहले बहुत हो हिम्मत हौंसले के साथ जोर से अशफाक ने कहा था—

बुजदिलों को ही सदा मौत से डरते देखा,
गो कि सौ बार उन्हें रोज ही मरते देखा।
मौत से वीर को हमने नहीं डरते देखा,
तख्तये मौत पे भी खेल ही करते देखा॥
मौत एक बार जब आनी है तो डरना क्या है,
हम सदा खेल ही समझा किए मरना क्या है।
वतन हमेशा शाद रहे और कौम आजाद,
हमारा क्या है अगर हम रहे न रहे॥

४—रोशनसिंह को फांसी

१९ दिसम्बर, १९२८ को रोशनसिंह को भी काकोरी केस में फांसी हुई थी। फांसी के दिन रोशनसिंह पहले से ही स्नान ध्यान करके फांसी पर चढ़ने के लिए तैयार बैठे थे। ज्यों ही इलाहाबाद जेल के जेलर का बुलावा आया, आप गीता हाथ में लिए हुए, मुस्कराते हुए चल पड़े। फांसी पर चढ़ते हुए उन्होंने जोर से "वन्दे मातरम्" भारत माता की जय कहा और ओ३म् का स्मरण करते हुए फांसी पर लटक गये।

फांसी पर चढ़ने से पहले रोशनसिंह ने कहा था—

जिन्दगी जिन्दादिली का नाम है रोशन,
मुर्दादिल क्या खाक जिया करते हैं।
जिन्दगी जिन्दादिली को जान ऐ रोशन,
वरना कितने मरे और पैदा होते आते हैं।

आज सारा ही देश नतमस्तक होकर इन शहीदों को श्रद्धांजलि समर्पित करता है।

सम्पादकीय

अब तो पानी सिर से गुजर गया है

जो आशा ही नहीं लगाये बैठे थे, बल्कि प्रतिदिन कहते रहते थे कि आतंकवाद अब पंजाब में अन्तिम सांस ले रहा है, जिला होशियारपुर में एक ही वर्ग के बस यात्रियों की बर्बरतापूर्ण हत्या ने उन सबकी आंखें खोल दी हैं। इस पैशाचिक घटना ने यह भी प्रमाणित कर दिया है कि पाकिस्तान से लगी हमारी सीमा पार करके ही घुसपैठिये और आतंकवादी पंजाब के सीमावर्ती तथा उनसे लगते हुए इलाकों में एक के बाद एक भीषण से भीषणतर वार कर रहे हैं। निर्दोष नागरिकों की निर्मम हत्याओं की संख्या इकाइयों से बढ़कर अब दर्जनों में जा चुकी है। यह स्पष्ट है कि अब पानी सिर से गुजर चुका है।

आश्चर्यचकित करनेवाली बात तो यह है कि आज भी कुछ लोग यह कहे जारहे हैं कि आतंकवादियों का ही वह गुट जो दूसरों से अलग थलग पड़ चुका है, अपनी हस्ती बनाये रखने के लिए हताश होकर यह सब कुछ कर रहा है। कुछ ऐसे लोग भी हैं जिनमें श्री बरनाला का गुट भी शामिल है कि आतंकवादी गतिविधियां इसलिये काबू में नहीं आरही क्योंकि तथाकथित पंजाब समझौते पर अमल नहीं किया जारहा और उसके लिये भारत सरकार जिम्मेदार है।

जो लोग आतंकवादियों के उपेक्षित गुट की हताशा को इन हत्याओं के लिए जिम्मेदार ठहरा रहे हैं और जिनको आतंकवाद की समाप्ति निकट आगई लग रही है, जैसा कि वे कह रहे हैं, यह समझ लेना चाहिए कि वे लोग या तो स्वप्न लोक में विचर रहे हैं या उनकी नीयत खराब है। यह तथ्य सामने आचुका है कि हताश होकर पागलपन में हाथ पैर चलाने की बात नहीं है, यह सब कुछ एक सुनियोजित चाल और जाल है जिसमें सिखों को दिल्ली की सिखों पर अत्याचार करने वाली सरकार से बचाने के लिए मरजीवड़े धर्मयुद्ध लड़ रहे हैं, यह भावना फैलाने की योजना है और कत्लेआम की प्रतिक्रिया में हिन्दुओं में सिखों के प्रति बदले की भावना पैदा करने का षड्यन्त्र है। जो भाई वर्तमान नीति को चालू रखकर इस खेल को इसी रूप में चलते देखना चाहते हैं वे परोक्ष रूप से देशद्रोही तत्त्वों से मिले हुए हैं। इस प्रकार की बात करनेवाले लोग भोले-भाले ग्रामीण लोग नहीं हैं, अपने आपको बुद्धिजीवी और राष्ट्रप्रेमी कहते हैं और इस लबादे को ओढ़कर अपना खेल खेल रहे हैं। यह तथ्य अब भारत की प्रभुसत्ता सम्पन्न लोकसभा के दोनों पक्षों के सदस्यों के सामने आगये हैं। इसलिये यह सर्वसम्मत मांग लोकसभा और राज्यसभा की ओर से की गई है कि अब न बातों से काम चलेगा और न ढीली नीतियों से, चाहे संविधान द्वारा प्रदत्त अधिकारों और वर्तमान कानूनों को अमल में लाकर मजबूत कदम उठाया जाये, नहीं तो संविधान को बदल कर या नये कानून बनाकर। कुछ विरोधी दलों के सदस्य भारत सरकार को राज्यों में हस्तक्षेप करने से तो रोकते हैं परन्तु मजबूत कदम उठाने की बात करते हैं। इस प्रकार की दोगली बातों से निश्चय ही देशद्रोही शक्तियों को प्रोत्साहन मिलता है।

सत्ता दल के लोग संविधान बदलना अनिवार्य हो तो उसे बदल कर भी राष्ट्र की एकता और अखण्डता को बचाने के लिए कड़े से कड़े कदम उठाने की बात खुलकर कर रहे हैं। भारत सरकार उलझनों से उबरने का मनोबल नहीं जुटा पारही है। वह कड़े कदम भी उठाना चाहती है, विरोधीदलों को पूरी तरह साथ भी लेना चाहती है और बरनाला सरकार जो अन्दर से टूटी हुई तथा विचारों से साम्प्रदायिक है, को बैसाखी लगाकर उसी के द्वारा आतंकवाद से दो-दो हाथ भी करवाना चाहती है। यह जाहिर है कि विरोधीदल सरकार की कमजोरियों के लिये उसकी पिटाई भी जरूर करेंगे और मजबूती से निबटने के लिये सरकार को अपेक्षित अधिकार और शक्ति भी नहीं देना चाहेंगे।

यह ठीक है कि जहां तक सम्भव हो सके विरोधीदलों को साथ लेकर चलना प्रजातन्त्र में आवश्यक है परन्तु वे अड़चन बनकर खड़े हो जायें और जो सरकार से करवाना चाहते हैं उसके लिए उसके हाथ भी नहीं खोलना चाहते, उस अवस्था में यदि अकेले भी चलना पड़े तो चलना चाहिए, अपनी जिम्मेदारी को ईमानदारी से निभाने के लिये।

रही बरनाला सरकार के द्वारा आतंकवाद और अलगाववाद को समाप्त करवाने की। १३ महीने से अधिक समय बीतने पर भी पंजाब में साम्प्रदायिकता तथा कतल और लूटमार की वारदातें बढ़ी हैं, कम नहीं हुईं। अब तो पानी सिर से गुजर चुका है, इसलिये कांग्रेस तथा कुछ विरोधीदलों की ओर से खुलकर मांग की जारही है। मजे की बात यह है कि जो बरनाला लोकसभा में अकाली गुट को पीट गया, गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के चुनाव में पिट गया और १८ दिसम्बर को पेश होने वाले अविश्वास प्रस्ताव से बच पायेगा कि नहीं। उसको बैसाखी लगाकर भारत सरकार और कांग्रेस दल जीवित रखे हुए हैं, परन्तु बरनाला साहब पंजाब की सारी स्थिति की जिम्मेदारी भारत सरकार पर लादने से नहीं चूकते। वे बार-बार कहते रहते हैं कि पंजाब समझौते पर भारत सरकार अमल नहीं कर रही, इसलिये स्थिति बिगड़ती जारही है।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

पंजाब के सीमावर्ती जिले अशांत क्षेत्र घोषित
भारत सरकार के कदम की सराहना

नई दिल्ली ३-१२-१९८६

परसों प्रधानमन्त्री ने संसद में घोषणा की थी कि वे एक-दो दिन में महत्त्वपूर्ण निर्णय की घोषणा करेंगे। आज पंजाब के सीमावर्ती जिलों को अशांत क्षेत्र घोषित करके उन्होंने अपना वचन तो पूरा किया ही, हमारी पुरानी मांग को भी राष्ट्रहित में स्वीकार कर लिया। इस निर्णय के अनुसार अब सेना इन जिलों के प्रशासन के काम में राज्य सरकार को मदद देगी। इसका अर्थ यही है कि ये जिले एक प्रकार से सेना के सुपुर्द कर दिये गये है परन्तु यदि बरनाला सरकार बनी रहती है तो उसके कुछ मन्त्री और पुलिस सेना के काम में रुकावट ही नहीं डालेंगे, उसे भ्रमित करके जनसाधारण में उसकी छवि बिगाड़ने की भी कोशिश करेंगे। इसलिये बरनाला सरकार को हटाना भी अनिवार्य होगया है, ताकि सेना पाकिस्तानी घुसपैठियों, खालिस्तानी आतंकवादियों, तस्करों तथा समाज विरोधी तत्त्वों के मिलेजुले षड्यन्त्र को पूर्ण रूप से विफल कर सके। हमें आशा है कि भारत सरकार शीघ्र ही अगला कदम भी उठायेगी। ——प्रो० शेरसिंह

आर्यसमाज हरयाणा में नशाबन्दी लागू करवाने में सहयोग करें

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से गत ४ वर्षों से प्रदेश में नशाबन्दी अभियान चलाया जारहा है। ग्रामों की पंचायतो से प्रेरणा करके वहा से शराबबन्दी के प्रस्ताव बरवाकर हरयाणा सरकार को भिजवाये जाते हैं। शराब के ठेकों पर शांतिपूर्ण धरणों का आयोजन करके शराब के विरुद्ध प्रचार किया जाता है। पुरुषों के साथ ग्रामीण महिलाये भी धरणो पर बैठती हैं। शराब के ठेकों की नीलामो के अवसर पर आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं की ओर से प्रदर्शन किये जाते हैं। इसके परिणामस्वरूप गतवर्ष हरयाणा सरकार को ६५ ग्रामों में लोगों की मांग पर शराब के ठेके बन्द करने पडे।

हरयाणा विधानसभा में २८ नवम्बर को विधायको की माग पर श्री कटारसिंह वित्तमन्त्री ने कहा है कि जो ग्रामीण पचायते दिसम्बर के अन्त तक सरकार को नशाबन्दी प्रस्ताव भेज देंगी, उन ग्रामो मे शराब के ठेको की नीलामो नही की जायेगी।

अतः आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने १९ से २३ दिसम्बर तक सारे हरयाणा प्रदेश में नशाबन्दी सम्मेलन आयोजित करने का आर्यसमाजों को निर्देश दिया है। अतः जो आर्यसमाज अपने यहां नशाबन्दी सम्मेलन करना चाहते हैं वे तुरन्त सभा को पत्र लिखकर तिथि निश्चित करवाकर उपदेशकों तथा भजनमण्डलियों के कार्यक्रम बनवा लेवे। इन सम्मेलनों पर अपने यहां नशाबन्दी प्रस्ताव पास करें तथा अपने समीप के ग्रामों से भी प्रस्ताव पास करवाकर ३१ दिसम्बर से पूर्व हरयाणा सरकार को रजिस्ट्री ए-डी (पावती) द्वारा भेज देवें।

आशा है आर्यसमाज इस महत्वपूर्ण रचनात्मक कार्य में समर्थन देते हुए तन, मन तथा धन से पूर्ण सहयोग करेंगे। इसी उद्देश्य से नशाबन्दी प्रस्ताव का प्रारूप प्रकाशित किया जारहा है। ये प्रस्ताव प्रपत्र सभा के उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों को भी दे दिये हैं।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

नशाबन्दी प्रस्ताव का प्रारूप—

॥ ओ३म् ॥

नशाबन्दी प्रस्ताव

माननीय मुख्यमन्त्री जी,

हरयाणा, चण्डीगढ।

हमारे ग्राम .... जिला .... ग्रामसभा (पंचायत) ने अपनी बैठक दिनांक में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया है—

"यह ग्रामसभा (पंचायत) शराब पीने की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को ग्राम्य जीवन के लिए बहुत घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। गांव में अनाचार, अशांति और अपराध फैलते हैं। धन का भी भारी विनाश होता है। ऐसी अवस्था में हरयाणा सरकार की शराबबन्दी नीति का स्वागत करते हुए यह पंचायत मांग करती है कि हमारे क्षेत्र में चालू शराब की दुकान तुरन्त बन्द करदी जाये और भविष्य में कदापि यहां शराब का ठेका खोलने की अनुमति न दी जाये ताकि उक्त बुराइयों से ग्राम्य जीवन की रक्षा हो सके।"

आशा है आप पंचायत की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यहां की शराब की दुकान को बन्द करने के लिए आवश्यक पग शीघ्र उठाने की कृपा करेंगे।

सधन्यवाद !

ता० ....

विनीत
ग्रामसभा (पंचायत)

प्रतिनिधि :—

१. प्रधानमन्त्री, भारत सरकार, नई दिल्ली।
२. मन्त्री आबकारी एवं कराधान हरयाणा, चण्डीगढ़।
३. आबकारी एवं कराधान आयुक्त हरयाणा, चण्डीगढ़।
४. उप आबकारी एवं कराधान आयुक्त जिला ....
५. जिलाधीश ....
६. मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक।

हस्ताक्षर

हरयाणा से गउओं का ले जाना जारी

पानीपत, ३० नवम्बर : (अशोक) हरयाणा सरकार ने गऊ सुरक्षा अभियान चलाया था व दावा किया था कि हरयाणा से यू० पी० को ले जानेवाले वे सभी मार्ग सील कर दिये हैं जहां से गउओं और बछड़ों को तस्करी कर यू० पी० ले जाया जाता था, मगर वह सभी दावे खोखले साबित हो रहे हैं व प्रतिदिन प्रातःकाल ट्रकों द्वारा हरयाणा से यू० पी० ले जाया जारहा है।

यहां से १५ कि०मी० दूर यमुना किनारे बसे गांव बबैल निवासियों ने बताया कि हर रोज सुबह ५ से ६ बजे के बीच दो-दो ट्रक निकलते हैं जिनमें गउवें भरी होती हैं। गांववासियों ने इस बात की पुलिस को सूचना दे दी है। गत दिवस गांव वाले दो ट्रकों के पीछे दौड़े भी मगर वह भाग निकले।

गांव के युवा समाजसेवी श्री उमेदसिंह अहलावत एडवोकेट ने आज एक भेंट में बताया कि हरयाणा पुलिस व हरयाणा सरकार जान बूझकर लापरवाही बरत रही है। श्री उमेदसिंह ने बताया कि यह गउओं से लदे ट्रक करनाल वाया घरोंडा से घूमते हुए देहातों से निकलते हुए यमुना पार कर जाते हैं। उन्होंने मांग की कि यदि हरयाणा पुलिस व हरयाणा सरकार स्वयं इन लोगों को नहीं पकड़ सकती तो गांववासियों को पावर दे दे। उनका कहना है कि अब सरकार इस कार्य में सहायता करे तो गांव वाले मदद के लिए तैयार हैं।

(वीर प्रताप जालन्धर दिनांक १-१२-८६ से)

हरयाणा में पूर्ण नशाबन्दी की मांग

स्वतन्त्र सक्सेना द्वारा

चण्डीगढ़ २८ नवम्बर। हरयाणा विधानसभा में आज पूर्ण नशाबन्दी की जोरदार मांग की गयी। इस मुद्दे पर बोलते हुए प्रायः प्रत्येक सदस्य का कहना था कि सरकार को कुछ करोड़ रुपये की आय का लालच त्याग कर शराबखोरी की लत से बढ़ रहे अपराधों तथा टूट रहे परिवारों की दशा को अधिक गम्भीरता से लेना चाहिए।

दूसरी ओर सरकार का यह मत था कि अकेले हरयाणा में पूर्ण नशाबन्दी लागू करने से समस्या समाप्त होने के स्थान पर और बढ जायेगी। लोग दूसरे राज्यों से चोरी छिपे शराब लायेंगे, जहरीली शराब पीकर जान का जोखिम उठायेंगे आदि। सरकार का कहना है कि इस सम्बन्ध में जब तक राष्ट्रीयस्तर पर कोई नीति निर्धारित नहीं की जाती है तब तक राज्यों में नशाबन्दी का कोई अर्थ नहीं है।

शून्य काल के दौरान यह मुद्दा उठाते हुए श्री ओमप्रकाश महाजन ने कहा कि शराब ने हजारों घर बरबाद किये हैं और समाज में जहर की तरह फैल रही है। डा० ओमप्रकाश (जगाधरी) का विचार था कि आबकारी आय से अधिक महत्त्वपूर्ण हरयाणा के नागरिकों का चरित्र है। उन्होंने कहा कि मुख्यमन्त्री को तुरन्त नशाबन्दी लागू कर देनी चाहिए तथा आय की होनेवाली हानि अन्य स्रोतों से पूरी की जानी चाहिए। श्री रोशनलाल आर्य का कहना था कि हरयाणा की पावन धरती पर गुजरात की भांति ही नशाबन्दी लागू की जानी चाहिए तथा स्कूलों में योग प्रशिक्षण अनिवार्य कर दिया जाना चाहिए। श्री अमरसिंह धानक का कहना था कि नशाबन्दी के मामले में हरयाणा को अन्य राज्यों से आगे रहना चाहिए। श्री तैयब हुसैन ने कहा कि तमिलनाडू तक में नशाबन्दी है फिर हम क्यों हिचकते हैं।

वित्तमन्त्री कटारसिंह ने चर्चा का उत्तर देते हुए कहा कि शराब बनाना और बेचना सरकार का काम नहीं है, लेकिन फिर भी उसे करना पड़ता है ताकि इच्छुक लोगों को सही चीज मिल सके। उन्होंने कहा कि सरकार की यह नीति रही है कि जिस ग्राम या पंचायत की ओर से ऐतराज आया, वहां से शराब का ठेका उठा दिया गया। उन्होंने कहा कि इस प्रकार से २५ ठेके बन्द किये जा चुके हैं।

उन्होंने कहा कि १९७३ ७४ में राष्ट्रीय नशाबन्दी परिषद् ने फैसला किया था कि मदिरा सेवन करनेवालों की संख्या में चाहे कितनी भी वृद्धि क्यों न हो जाये, उत्पादन का स्तर १९७३ वाला ही रखा जायेगा। लेकिन कई राज्य इस फैसले पर अमल नहीं कर सके और मदिरा का उत्पादन बढ़ गया।

इससे पूर्व एक लिखित उत्तर में आबकारी मन्त्री सेठ श्री किशनदास ने बताया कि राज्य में देसी शराब की ६५६ तथा भारत में निर्मित अंग्रेजी शराब की ३२६ दुकाने हैं। इनसे राज्य सरकार को वर्ष १९८४-८५ में ८४.३५ करोड़ रुपये तथा १९८५-८६ में ९९.२० करोड़ रुपये की आय हुई। चालू वित्त वर्ष के पहले सात महीनों में यह आय ७०.२२ करोड़ रुपये है।

उत्तर में बताया गया कि सरकार का पूर्ण नशाबन्दी का कोई इरादा नहीं है।

सभा के भजनोपदेशक पं० ईश्वरसिंह तूफान द्वारा प्रचार कार्य

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भजनोपदेशक पं० ईश्वरसिंह तूफान ने गतमास आर्यसमाज माजरा दूबलधन जि० रोहतक में ४ दिन वेदप्रचार किया। सभा को ४०४) प्राप्त हुए। आर्यसमाज बिरोधा में ३ दिन प्रचार करके २५१) प्राप्त किये। आर्यसमाज जैतपुर जि० रोहतक में २ दिन प्रचार करके ३०३) प्राप्त किये। आर्यसमाज डोहला जि० जींद में ३ दिन प्रचार करके २५१) प्राप्त किये। आर्यसमाज पायल जि० हिसार में २ दिन प्रचार करके २७१) प्राप्त किये हैं।

आकाशवाणी रोहतक द्वारा भी उन्हें संगीत कलाकार घोषित किया गया है। —सभामन्त्री

रोहतक में वैदिकधर्म प्रचार की धूम

आर्यसमाज प्रधाना मुहल्ला रोहतक में दिनांक १७-१०-१९८६ से चतुर्वेद पारायणयज्ञ पं० सत्यदेव जी के ब्रह्मत्व से प्रारम्भ हुआ तथा दिनांक २-११-८६ से आर्यजगत् के प्रसिद्ध कवि एवं भजनोपदेशक पं० लक्ष्मणसिंह बेमोल तथा पं० राजबल बेढब आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की भजनमण्डली द्वारा निम्नलिखित स्थानों पर बड़ा ही रोचक कार्यक्रम रखा गया।

१—२-११-१९८६ से ६-११-१९८६ तक सैनोपुरा चौपाल में।
२—७-११-१९८६ से १२-११-१९८६ तक नरुला स्कूल में।
३—१३-११-१९८६ से १६-११-१९८६ तक आर्यसमाज प्रधाना मुहल्ला में।

दिनांक १५-११-१९८६ को रात्रि ९ से १० बजे तक पं० लक्ष्मणसिंह 'बेमोल' की अध्यक्षता में आर्य वीरदल के ब्रह्मचारी ओमदर्शन द्वारा योगशक्ति प्रदर्शन किया गया, जिसमें योगासन, गले व आंख से लोहे के सरिये मोडना, हाथ की नाड़ी को रोकना, हथेली पर कांच पीसना, पीतल की थाली को हाथों से फाडना, लोहे की मोटी-जंजीर तोडना, कांच पर लेटकर छाती पर पत्थर तुडवाना आदि मुख्य रहे। युवकों पर शक्ति प्रदर्शन का काफी अच्छा प्रभाव रहा। अन्त में आर्य वीरदल हरयाणा के मन्त्री श्री वेदप्रकाश आर्य ने उपस्थित महानुभावों का आह्वान किया। यदि आप चाहते हैं हमारे बच्चे भी इसी प्रकार अच्छे स्वास्थ्य वाले हों तो उन्हें आप आर्य वीरदल की शाखाओं में भेजें। दिनांक १६-११-१९८६ रविवार को यज्ञ की पूर्ण आहुति के बाद पं० लक्ष्मणसिंह बेमोल, प० राजबल बेढब तथा ब्रह्मचारी ओमदर्शन का फूलों की मालाओं से स्वागत किया गया। कुल मिलाकर कार्यक्रम बहुत प्रभावशाली रहा। गुरुदत्त आर्य

मन्त्री आर्यसमाज प्रधाना मुहल्ला, रोहतक

सार्वदेशिक आर्य वीरदल द्वारा वेदप्रचार

गांव कनोह हिसार में ८-९ नवम्बर को आर्य वीरदल द्वारा चलाये जारहे जनसम्पर्क अभियान के अन्तर्गत प्रचार कार्य बड़े ही उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ, जिसमें ग्रामीणों ने बढ़-चढ़कर आर्यसमाज को समझा। स्वामी रामानन्द जी के प्रवचन व आर्यसमाज के ओजस्वी भजनोपदेशक श्री चन्द्रभान जी के भजन हुए। —सत्यकाम आर्य

आर्य वीरदल प्रगति के पथ पर

आज का आर्ययुवक सिर्फ युवक बनकर ना रहे। उसे आर्यवीर (श्रेष्ठ बहादुर) बनाया जाये। इसी उद्देश्य से आर्य वीरदल हिसार ने श्री सत्यकाम आर्य के नेतृत्व में काफी सफलता प्राप्त की है। अभी पूरे नवम्बर मास मे उपदेशकों व भजनिकों को रखकर नौजवान जागरण मास मनाया। गांव-गांव में प्रचार किया।

इस समय आर्य वीरदल की ७ शाखायें चल रही हैं और नई खोलने के लिये भूमिका तैयार की गई है। एक स्थायी व्यायाम शिक्षक रखकर उन्हे चलाया जायेगा। १९ दिसम्बर, १९८६ को प० रामप्रसाद बिस्मिल के बलिदान दिवस पर आर्य वीरदल एक बहुत बड़ी प्रतियोगिता का आयोजन आर्य पब्लिक स्कूल बालसमन्द रोड हिसार मे करने जारहा है, जिसमें १०० कालेज, स्कूल, गुरुकुल व आर्य वीरदल की शाखाओं को बुलाया गया है, जिसमे भाषण, योगासन, एकांकी, वाद-विवाद व समूह गान प्रतियोगिता होगी। विजेताओं को एक-एक शील्ड के साथ व्यक्तिगत इनाम भी दिये जायेंगे। इस समारोह की अध्यक्षता करने आरहे हैं सार्वदेशिक आर्य वीरदल के प्रधान सेनापति श्री बालदिवाकर जी हंस। इस प्रतियोगिता की तैयारियां बड़े जोरों से हो रही है। नौजवानों में बड़ा उत्साह भरा हुआ है। देश को इन आर्यवीरों पर गर्व है।

सजय मारवाड़ी

मन्त्री सार्वदेशिक आर्य वीरदल बालसमन्द रोड, हिसार

(पृष्ठ १ का शेष)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने भी निर्देश दिया है कि आर्यसमाजो को अपने नगरों में आर्य केन्द्रीय सभाओं का गठन करके इस प्रकार के सम्मेलनो को सभी आर्यसमाज सामूहिक रूप से मनावें, ताकि सभी आर्यसमाजो के योगदान से सम्मेलन प्रभावशाली रहे। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए नगर के सभी आर्यसमाज आगामी रविवार या सुविधा के अनुसार सभी आर्यसमाजों तथा शिक्षण संस्थाओं के कार्यकर्त्ताओं की संयुक्त बैठक बुलाकर तैयारी आरम्भ कर देवें। सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी ने आर्यसमाजो को निर्देश दिया है कि नशाबन्दी सम्मेलन के विज्ञापन छपवाकर इसकी सूचना अधिक से अधिक जनता तक देने का पूरा प्रयत्न करें। सम्मेलन सम्पन्न होने पर इसमे पारित प्रस्तावो की प्रतियां प्रधानमन्त्री भारत सरकार नई दिल्ली, मुख्यमन्त्री हरयाणा सरकार तथा समाचारपत्रों मे प्रकाशनार्थ अवश्य भेजें। सभा के साप्ताहिक पत्र सर्वहितकारी मे इन सम्मेलनो के समाचार विशेष रूप से प्रकाशित किये जायेंगे। इस बार स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान पर नशाबन्दी विशेषांक प्रकाशित किया जायेगा।

—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री

आर्यसमाज के हंसोकड़े भजनीक रामचन्द्र शर्मा का निधन

ग्राम फिरोजपुर बांगर (रोहतक) निकट मोचन्दी बार्डर के निवासी श्री रामचन्द्र शर्मा आर्य भजनीक ७५ वर्ष की आयु में इसी नवम्बर, ८६ के प्रथम सप्ताह मे चलते-चलते हसते हुए अचानक शरीर छोड़ स्वर्गवासी हो गये। आप आर्यसमाज के मस्त प्रचारक, गायक थे। आर्य उत्सवो गुरुकुलो तथा ग्राम प्रचार में रोचक चुटकले सुनाकर जनता को बहुत हसाया करते थे। दादा प. बस्तीराम जी के, पृथ्वीसिंह बेधड़क के, महर्षि दयानन्द के तथा सामाजिक कुरीति निवारण के भजन बहुत झूम-झूम कर गाया करते थे। ग्रामीण जनता पर आपका विशेष प्रभाव था। भारतीय वेशभूषा से सुसज्जित आपका स्वास्थ्य बहुत सुन्दर था। आपने गत दिनों मोचन्दी बार्डर पर शराब का ठेका उठवाने में भी आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अधिकारियों को भी भरपूर सहयोग दिया था। आपके चार सुपुत्र खाते-कमाते सम्पन्न हैं। परमात्मा उनकी दिवंगत आत्मा को शांति तथा शोकातुर परिवार को धैर्य प्रदान करे।

विनीत : निहालसिंह आर्य

(पृष्ठ ३ का शेष)

आतंकवादी खुलेआम कह रहे हैं कि उनका पंजाब समझौते से कोई लेना देना नहीं, उसके तहत कुछ मिले न मिले उनका युद्ध तो जारी रहेगा। दूसरी तरफ समझौते पर अमल करवाने की बात कहने वाले श्री बरनाला जो समझौते में सन्त लोंगोवाल के सलाहकार थे, वचनबद्ध थे कि सतलुज यमुना लिंक नहर का काम १५ अगस्त, १९८६ को पूरा कर दिया जायेगा। आज हरयाणा सघर्ष समिति के भाइयों को खुश करके भेजने में तो चाहे सफल होगये हों, लेकिन क्या वे इस तथ्य से इन्कार कर सकते हैं कि नहर की खुदाई और उसको पक्का करने के पूरे काम का अभी तक कुल मिलाकर एक चौथाई से भी कम काम हुआ है। एक तरफ अपना कर्त्तव्य पूरा नहीं कर रहे और दूसरी तरफ दोनों आयोगों के नतीजों से भाग खड़े हुए। यदि सन्त लोंगोवाल के शब्दों और वायदों का कुछ भी लिहाज उनके मनमें है तो उनको तुरन्त फाजिल्का अबोहर के हिन्दी भाषी इलाके हरयाणा को दे देने चाहियें। भारत सरकार पर यदि कोई दोष लग सकता है तो यही कि वह बरनाला की मनमानियों के सामने झुकती जारही है। यह दोष तो कोई भी निष्पक्ष आदमी नहीं लगा सकता कि वह पंजाब का हक काटकर हरयाणा को देना चाह रही है। वह तो हरयाणा को उसका हक भी नही दिला पारही। यह सब कुछ जानते हुए भी यदि बरनाला साहब हरयाणा को कुछ दिये बगैर चण्डीगढ़ लेने की उतावली कर रहे हैं और नहर का काम लटकाये जा रहे हैं तो केवल इसलिये कि आतकवादियों की देशद्रोही गतिविधियों के दबाव में कुछ नाजायज मांग मनवा लें और अकाली राजनीति में अपना अस्तित्व बनाये रखें। इसी नाम पर कुछ अकाली विधायक मन्त्रीमण्डल तथा कार्पोरेशनों के अध्यक्ष का मजा कुछ दिन तक ले रहे हैं। इसी आश्वासन पर अपने पीछे चलने वाले लोगों को साथ टिकाये हुए हैं। उनका दिल कहां है वह सब जानते हैं। उनमें से कुछ लोग तो आतंकवादियों के बचाव का काम खुलकर कर रहे हैं। अब समय आगया है जब भारत सरकार को यह सोचना पड़ेगा कि श्री बरनाला का अस्तित्व कायम रखते-रखते कहीं राष्ट्र की अस्मिता और एकता ही खतरे में न पड़ जाये।

देश का प्रत्येक विचारशील व्यक्ति अब यह समझ गया है कि बरनाला सरकार को चलाना राष्ट्र की अखण्डता के लिये खतरा मोल लेना है। लोग तो यह खुलकर कह रहे हैं कि ५ हत्याओं के कारण दरबारासिंह सरकार तो तोड़ दी गई। अब १३ महीने में ८०० से ऊपर निर्दोष नागरिक मौत के घाट उतरने के बाद बरनाला सरकार के टिके रहने का क्या औचित्य है। बरनाला सरकार को हटाने और राष्ट्रपति शासन लागू करने मे एक-एक दिन का विलम्ब देश को भारी पड़ रहा है।

देश की सीमाओं को सील किये बिना और सुरक्षापट्टी बनाये बिना पाकिस्तानी घुसपैठियों, खालिस्तानी आतंकवादियों, तस्करों और समाज विरोधी तत्त्वों की चौकड़ी एक से एक बढ़कर गुल खिलाती रहेगी। इस चौकड़ी को तोड़ने के लिए पंचमार्गियों की विस्फोटक कार्यवाहियों से राष्ट्र को पाकिस्तान से छेड़छाड़ होने पर बचाने के लिए सुरक्षापट्टी के निर्माण मे एक दिन का विलम्ब भी देश की सुरक्षा के लिए घातक सिद्ध होगा।

प्रो० शेरसिंह अध्यक्ष हरयाणा रक्षावाहिनी

गांव-गांव में आर्यसमाज की धूम

आर्य वीरदल हिसार द्वारा चलाये जारहे जनसम्पर्क अभियान के अन्तर्गत १७ से २१ नवम्बर तक ग्राम बीतानी, बीठमड़ा व प्रभुवाला में स्वामी रामानन्द जी, श्री चन्द्रभान जी व श्री मांगेराम जी के उपदेशों व भजनों द्वारा लोगों को अन्धविश्वास से हटाकर वास्तविकता की ओर आने के लिये प्रेरित किया। इन गांवों में हर रोज यज्ञ हुये और युवकों ने यज्ञोपवीत धारण किये। बीड़ी, सिग्रेट, शराब न पीने की प्रतिज्ञा की। यह अभियान पूरे नवम्बर चलाकर सैकड़ों युवकों को आर्य वीरदल में व्यसन छुड़ाकर लाया जायेगा।

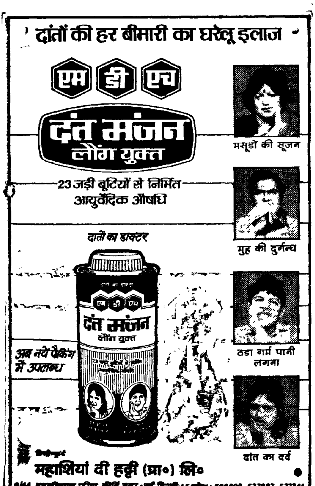
—सत्यकाम आर्य

जिला संचालक सार्वदेशिक आर्य वीरदल

बालसमन्द रोड, हिसार

नामकरण संस्कार

२३ नवम्बर को श्री चौ० रामचन्द्र जी पूर्व विकास अधिकारी के पौत्र का नामकरण संस्कार प्रातः ९ बजे हवन-यज्ञ के बाद आशीर्वाद के साथ श्री सुखदेव जी शास्त्री सभा के महोपदेशक द्वारा कराया गया। सभा को पचास रुपये प्रदान किये तथा अपने दोनों पुत्रों श्री राजबीरसिंह जी बैंक मैनेजर तथा श्री राजेन्द्रसिंह जी तहसीलदार को 'सर्वहितकारी' का ग्राहक बनाया।



हरयाणा के आर्यपुरुष—

राव युधिष्ठिरसिंह रेवाड़ी

ले०—डा० भवानीलाल भारतीय

हरयाणा और राजस्थान का सीमावर्ती रेवाड़ी नगर किसी समय एक छोटी रियासत की राजधानी थी। यहां के शासक अहीर थे, जिनमें राव तुलाराम अत्यन्त पराक्रमी और तेजस्वी थे। राव तुलाराम ने १८५७ के विद्रोह में अंग्रेजों से टक्कर ली थी। इन्हीं के पुत्र राव युधिष्ठिरसिंह ने स्वामी दयानन्द के दर्शन १८७७ के दिल्ली दरबार में किये थे। उसी समय उन्होंने महाराज से अपने नगर में पधारने की प्रार्थना की थी। राव साहब द्वारा निमन्त्रित किये जाने के प्रायः एक वर्ष पश्चात् दिसम्बर १८७८ में स्वामी जी को रेवाड़ी जाने का सुयोग प्राप्त हुआ। वे जयपुर से चलकर २५ दिसम्बर को रेवाड़ी पहुंचे। जब राव साहब को स्वामी जी के कार्यक्रम की सूचना मिली तो उन्होंने नगर से आधा मील दूर एक उद्यान में उनके निवास की व्यवस्था की थी।

स्वामी जी के आदर सत्कार में राव साहब ने किसी प्रकार की कोई कसर नहीं रखी। स्वामी जी के व्याख्यान नगर और रेलवे स्टेशन के बीच पड़ने वाले तालाब और छत्रियों के निकट होते रहे। कुल ग्यारह व्याख्यान हुए, जिनमें स्वामी जी ने मूर्तिपूजा खण्डन, मृतक श्राद्ध प्रतिषेध, वैदिक मुक्ति का स्वरूप, वेदाध्ययन और गायत्री में सब वर्णों का अधिकार, महीधर भाष्य की आलोचना आदि विषयों का विवेचन किया। एक व्याख्यान में गोरक्षा के महत्त्व का निरूपण किया तो एक अन्य प्रसंग में विधवाओं के पुनर्विवाह के न होने से उत्पन्न हानियों का उल्लेख किया। राव साहब इन व्याख्यानों में बराबर सम्मिलित होते थे। व्याख्यानों का लाभ अधिकाधिक लोगों को मिले, इसे ध्यान में रखकर राव युधिष्ठिरसिंह ने अपनी जाति (अहीर) के लोगों को दूर-दूर से आमन्त्रित किया, ताकि वे विद्वान् संन्यासी के उपदेशों को सुनकर जीवन को कृतार्थ करें। एक दिन राव साहब ने स्वामी जी को अत्यन्त सम्मानपूर्वक अपने निवास स्थान पर भी आमन्त्रित किया जो नगर से एक मील दूर था। राव साहब स्वामी जी के विचारों से इतने अधिक प्रभावित थे कि जब उनकी माता की मृत्यु हुई तो उन्होंने मरणोत्तर क्रियायें वैदिकरीति से ही कीं तथा स्वयं का शिरोमुण्डन भी नहीं करवाया। स्वामी दयानन्द के गोरक्षा विषयक उपदेशों को क्रियान्वित करने की दृष्टि से राव युधिष्ठिरसिंह ने सर्वप्रथम रेवाड़ी में ही गोशाला की स्थापना की। यह सम्भवतः भारत की प्रथम गोशाला थी। ९ जनवरी, १८७९ को जब स्वामी जी ने रेवाड़ी से रेल मार्ग से दिल्ली के लिये प्रस्थान किया तो राव साहब ने अत्यन्त आदरपूर्वक उन्हें विदाई दी। राव युधिष्ठिरसिंह का निधन १२ फरवरी, १८८९ को हुआ था।

नया शोधग्रन्थ

डा० भवानीलाल भारतीय का नया शोधपूर्ण ग्रंथ ऋषि दयानन्द के भक्त, प्रशंसक और सत्संगी प्रकाशित होगया है। इसका विमोचन अजमेर में ऋषि मेले के अवसर पर स्वामी सर्वानन्द जी के द्वारा सम्पन्न हुआ। डा० स्वामी सत्यप्रकाश जी ने इस ग्रंथ की प्रशंसा करते हुए इसे डा० भारतीय की एक अनुपम शोधकृति कहा है, जिसमें स्वामी दयानन्द के सम्पर्क में आनेवाले पचास महानुभावों के जीवनवृत्त को संकलित कर महर्षि से उनके सम्बन्ध की विवेचना की है। इसमें स्वामी जी के ईसाई, मुसलमान तथा पौराणिक भक्तों और प्रशंसकों का सचित्र विवरण उपलब्ध किया गया है।

ग्रंथ का मूल्य लागत मात्र २० रुपये है और यह डा० भवानीलाल भारतीय जी-३ पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ से २० रुपये मनिआर्डर द्वारा भेजकर मंगवाया जा सकता है।

शुद्धि-कार्य में सहयोग दें

आर्य समाचार पत्रों को पढ़नेवाले सभी देशभक्त सज्जन श्री स्वामी धर्मानन्द जी आचार्य गुरुकुल आमसेना के शुद्धि कार्य से परिचित होंगे। वे उड़ीसा के अति पिछड़े इलाके में कन्याओं और लड़कों के दो गुरुकुल चला रहे हैं। जहां सैकड़ों बच्चे आर्षपाठविधि से वैदिक साहित्य की शिक्षा पारहे हैं। इसके साथ उन्होंने उड़ीसा में प्रचारार्थ उड़िया भाषा में वैदिक साहित्य भी काफी मात्रा में छापा है।

जैसा सभी जानते हैं उन पिछड़े इलाकों की निर्धनता का लाभ उठाकर विदेशी मिशनरी वहां के वनवासी बन्धुओं को ईसाई बनाने में लगे हैं। उड़ीसा, मध्यप्रदेश, बिहार आदि का बड़ा भाग ईसाई बनाया जा चुका है। इस प्रकार जहां गरीब लोगों की गरीबी का लाभ उठाकर पादरी लोग हमारे भाइयों को धन का लोभ लालच देकर ईसाई बनाते जारहे हैं। उन अपने भाइयों को पुन: वैदिकधर्म की शरण में लाने के लिए श्री स्वामी धर्मानन्द जी व उनके साथी सारे इलाके में घूम-घूमकर बड़ा कार्य कर रहे हैं, परन्तु इधर जाने-आने के साधन बहुत कम हैं। इसलिये उन्हें पहाड़ी एव जगली क्षेत्र में शुद्धि-कार्य करने में बहुत असुविधा होती है। अनेक बार साधनाभाव से समय पर पहुंचना नहीं होता। अतः एक अच्छी हालत की पुरानी डीजल जीप खरीदने के लिए तथा शुद्धि कार्य के निमित्त होनेवाले अन्य व्यय के लिए भी धन की अत्यन्त आवश्यकता है, जिससे वे उस कार्य को ठीक तरह से चला सकें। वे इससे पहले भी कई हजार लोगों को पुन: वैदिकधर्म की शरण में ला चुके हैं। इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए देशभक्त धर्मप्रेमी महानुभावों की सेवा में निवेदन है कि उनकी ज्यादा से ज्यादा धन से सहायता कर पुण्य और यश के भागी बनें। एक मर्दानी, एक जनानी नवीन धोती जोड़ी भी शुद्ध परिवार को देनी होती है। महात्मा प्रेमप्रकाश धुरी इसमें सहयोगी हैं। सहायता श्री स्वामी धर्मानन्द सरस्वती आचार्य गुरुकुल आमसेना, जिला कालाहांडी उड़ीसा के पते पर भेजें। बैंक ड्राफ्ट स्टेट बैंक अथवा सैंट्रल बैंक खरिआर रोड पर उनके नाम से भेजें।

निवेदक :

ओमानन्द सरस्वती, प्रधान, परोपकारिणी सभा, अजमेर
महात्मा दयानन्द वानप्रस्थी, ज्वालापुर, देहरादून
स्वामी सर्वानन्द सरस्वती, प्रधान, वैदिक यतिमण्डल दयानन्दमठ, दीनानगर

हिन्दू शुद्धि संरक्षणीय समिति हरयाणा

कार्यालय आर्यसमाज मन्दिर समालखा (करनाल)

दिनांक १४-११-८६ को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्वावधान में गांव चांग (जिला रोहतक) में यज्ञ, किया गया। सेवानन्द सरस्वती महामन्त्री हिन्दू शुद्धि संरक्षणीय समिति हरयाणा की अध्यक्षता में यवन नटों (बादियों) ने अपनी इच्छा से वैदिक धर्म ग्रहण किया। स्वामी सेवकानन्द ने कहा कि मुसलमानों से सतर्क रहना चाहिए। गांव के लोगों ने बिरादरी में इज्जत दिखाई और रोटी-बेटी का सम्बन्ध किया गया और इसमें मांगेराम उपदेशक आलोट, स्वामी आत्मानन्द जी आर्य समाज ने भाग लिया। इसी प्रकार ग्राम दिनोद (जिला भिवानी) में भी नटों ने वैदिक धर्म ग्रहण किया। —चन्द्रस्वरूप आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस,
रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

[illegible] पंजी० सं० 23 [illegible] नं० P/RTK 49



कृण्वन्तो विश्वम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभा मन्त्री   सह सम्पादक—डा०

वर्ष १४, अङ्क ५ १४ दिसम्बर, १९८६   वार्षिक शुल्क २०) आजीवन शुल्क २०१) विदेश मे ७ पौंड एक [illegible]

संध्या पढने से लाभ नहीं, करने से होता है।

आचार्य वेदभूषण अधिष्ठाता अन्तर्राष्ट्रीय वेदप्रतिष्ठान हैदराबाद-२७

"निःसदेह हम आर्यसमाजी कहानेवाले नास्तिक हो चुके हैं। केवल पांच-दस मिनट आंख बन्द करके संध्या के मन्त्र पढ़ लेने मात्र से संध्या के फल की प्राप्ति नहीं होती। वास्तव में संध्या पढ़ने की वस्तु नहीं है। संध्या करने के कर्म का नाम है। कर्म है इसीलिए यज्ञ है। पंच यज्ञों में ब्रह्म यज्ञ संध्या ही सबका प्रथम कर्तव्य है। आज हमारा आध्यात्मिक अवमूल्यन हो चुका है। यही वास्तव में हमारे पतन और गिरावट का मूलकारण है।"

सन् १९७८ में पूर्वी अफ्रीका के केन्या देश की राजधानी नैरोबी के अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में भाग लेने का सौभाग्य हमें भी उपलब्ध हुआ था। इसी समय हमें मुबासा नामक समुद्रतटीय नगर भी देखने का अवसर मिला।

एक प्रसिद्ध बन्दरगाह के कारण मुबासा एक समृद्ध नगर है। इस नगर में आर्यसमाज का विशाल भवन है। इस आर्यसमाज में एक विद्वान पुरोहित पं० सत्यदेव जी विद्यालंकार के हमें दर्शन हुए। पं० सत्यदेव जी विद्यालंकार उन महापुरुषों में से एक हैं जिन्होंने अफ्रीका मे आर्यसमाज की नींव का कार्य किया है। स्वभाव से सरल व स्वाध्यायशील पं० सत्यदेव जी से हमारा आत्मीयता भरा वार्तालाप हुआ। पं० जी ने इस वार्तालाप के आरम्भ में जो बात कही निश्चय ही वह चौंकाने वाली थी। जितनी वह चौंकानेवाली है उतनी ही यथार्थ और सत्य पर आधारित है।

माननीय पं० जी ने बातचीत आरम्भ करते हुए कहा कि—"मैं आपके समक्ष एक सत्य को प्रस्तुत करना चाहता हूं—मेरे पिता ने मुझे आयु के आठवें वर्ष के आरम्भ में स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की गोद में डाल दिया। गुरुकुल कांगड़ी के [illegible] स्नातकों के दूसरे दल का मैं [illegible] रहा हूं। आज सन् १९७८ में मेरी आयु कोई ८२ वर्ष की होगी। आयु के आठवें वर्ष से जब मैं गुरुकुल में प्रविष्ट हुआ तब से लेकर आज तक मैं नित्य नियमित रूप से संध्या यज्ञ करता हूं। ७४ वर्ष की लम्बी तपस्या के बाद आज मैं आपसे स्पष्ट कहना चाहूंगा कि इतने लम्बे समय तक नियमित संध्या और यज्ञ करने का कोई भी फल मैं अनुभव नहीं करता हूं। ऐसा लगता है कि यह सब व्यर्थ है। एकदम व्यर्थ।"

मैं मानता हूं अनेक पण्डित जी अभी जीवित हैं। और यह एकदम सत्य लगता है। पाठकगण चौंकिये नहीं। पं० जी ने जिस सत्य को सरलता से प्रकट कर दिया है हम में से अधिकांश लोगों की यही स्थिति है। [illegible] संध्या और यज्ञ के मन्त्र पढ़नेवाले बीसियों व्यक्तियों को [illegible] है। उनके जीवन में और दूसरे साधारण लोगों के जीवन में कोई [illegible] अन्तर नहीं झलकता। कितने संन्यासियों को हमने देखा है, [illegible] वेदपाठियों को देखा है [illegible] तो वे विचलित हो उठते हैं। घण्टों आंख बन्द करके अपने आपको समाधिस्थ से दर्शाने वालों के व्यवहार साधारणजनों से भी गए-बीते और क्षुद्र पाये जाते हैं।

पण्डित सत्यदेव जी विद्यालंकार के प्रति हमारे हृदय में आज भी श्रद्धा के भाव हैं। क्योंकि उन्होंने एक सचाई को सरल हृदय से हमारे समक्ष रख दिया।

जीवन में आंख बन्द करके घण्टों बैठना या सध्या के मन्त्रों का पाठ करना कोई मूल्य नहीं रखता है। मूल्य तब बनता है जब हम जीवन को सध्या में ढालने का प्रयत्न करते हैं। हमने बडे विनम्र भाव से कहा पं० जी! हमने सध्या को पढ़ने की वस्तु मान लिया है, जब तक हम सध्या को पढ़ने के साथ-साथ कर्म में नही उतारते तब तक उसके सुफल हम कैसे प्राप्त कर सकते हैं? सध्या को ब्रह्म यज्ञ इसीलिए कहा गया है कि सध्या को कर्म में आचरण में चरितार्थ करना है। पं० जी कहने लगे, आचरित करनेवाली बात को और स्पष्ट करके बतलाइये। विषय को हमने और स्पष्ट करते हुए कहा कि जैसे हम मन्त्र पढते हैं—'ओ३म् भू पुनातु शिरसि' जब हम इसे पढ़ते हैं तब हम क्या सोचते हैं—यही न कि—हे प्राणदाता परमेश्वर आप मेरे सिर को पवित्र कर दीजिए। पाठकगण जरा ध्यान दीजिये कि इस प्रार्थना में और कोई कहे "हे प्रभु आप मुझे रोटी पकाकर खिलाइये" इस प्रार्थना में क्या अन्तर है? जैसे रोटी बनाकर खिलाने की प्रार्थना निष्फल है वैसे ही मेरे सिर को पवित्र करदो की प्रार्थना निष्फल है।

मन्त्र तो एक फार्मूला मात्र है। मन्त्र हमें ज्ञान देता है। क्या केवल ज्ञान मात्र से फल की प्राप्ति सम्भव है? कदापि नहीं। मान लीजिये कि हमने हलवा पकाने की विधि जान ली। क्या विधि के ज्ञान मात्र से हमें हलवे की प्राप्ति हो जायेगी? कदापि नहीं। जब तक हम प्राप्त ज्ञान को आचरण में नहीं उतारते, तब तक फल की प्राप्ति सम्भव नही। ठीक यही बात "भूः पुनातु शिरसि" के बारे में जान लेनी चाहिए।

वास्तव में इस मन्त्र का वास्तविक अर्थ भी हमने नही समझा। ये आर्ष वचन भी बडे अद्भुत हैं। हम ऊपर जो अर्थ कर रहे हैं उसमें हमारे लिए तो किसी भी कर्म का बोध नही होता। वहा तो सिर को पवित्र करने का दायित्व भक्त ने पूरा का पूरा परमात्मा पर डाल दिया है। महर्षि कहते हैं कि प्रार्थना भी यत्नपूर्वक होनी चाहिए। हम स्वय उस दिशा में प्रयत्न करें तभी प्रभु सहायक होते हैं।

हमने कहा पं० जी! वास्तव में "भू पुनातु शिरसि" कहकर सिर पर पानी का छिड़काव किया जाता है। 'अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति' जल से बाह्य शरीर की शुद्धि होती है। दूसरी शुद्धि भीतर की है। भीतर की शुद्धि का उपाय महर्षियो ने इस आर्ष वचन के द्वारा दर्शाया है। वह यह है कि—भू अर्थात् भूमि। नींव। इसे ही मूल या आधार कहते हैं। हमारे शरीर का मूल आधार है, मूलाधार चक्र।

मूलाधार चक्र के शोधन से हमारा सिर भीतर से पवित्र और शुद्ध होता है। हम जानते हैं कि मलबद्धता होने से ही शिरोव्याधियां होती हैं। कहा जाता है कि आ भारी तो माथ भारती। आहार शुद्धि से मल-शुद्धि और मलशुद्धि से ही मूलाधार चक्र भी शुद्ध रहता है और इस मूल के शोधन से शिखर भी, सिर भी शुद्ध रहता है।

"ओइम् भू: पुनातु शिरसि" के इस आशय को ध्यान में रखकर हम सदा मल त्यागने के चक्र को शुद्ध रखे अर्थात् मलबद्धता या रेचकता से बचे, तभी हम मन्त्र द्वारा आचरण कर उसके सुफल को प्राप्त कर सकते हैं। संध्या के करने का वास्तविक रूप उसका क्रिया में परिणयन

ंज सध्या के मन्त्रों के अर्थ भली-भांति जानते थे या नहीं, कह सकते, पर वे सध्या को आचरित करते थे। पूर्वज ारे पिता या प्रपितामह से है। प्राचीन ऋषि महर्षि युग रा अभिप्राय नहीं है।

ं आंखें मूंदकर परमात्मा को खोज रहे हैं और अन्धों के चुके हैं। इसी का नाम है वास्तविक अन्धविश्वास। हम अन्धविश्वास। बनते चले जारहे हैं।

हम अपने उन सभी परमात्मा के भक्तों से, परमयोगियों व योगिराजों से बहुत विनम्रता से कहना चाहेंगे कि—हम प्रभु पिता परमेश्वर को तभी प्राप्त कर सकते हैं, जब हम पूर्णरूप से या सर्वांगीण रूप में पवित्र व सक्षम हो पायेंगे।

यह हमारा विकास तीन स्तर पर होना है। उन्हीं तीनों स्तरों पर उन्नत होना ही संध्या है। मन्त्र पाठ संध्या नहीं है। मन्त्र हमें ज्ञान देता है, आधार देता है, दर्शाता है, उन्नति का मार्ग दिखलाता है। बिना जाने आचरण सम्भव नहीं है। ज्ञान को ही मन्त्र कहते हैं। इसलिए संध्या के लिए, उन्नति के लिए मन्त्र भी अनिवार्य है, पर केवल मन्त्र पाठ तो तोते का अनुकरण ही कहलाता है।

अपने पूर्ण विकास के लिए हमें शारीरिक, मानसिक और आत्मिक स्तर को उन्नत बनाना होगा। इन तीनों के पूर्ण विकास के लिए किया जानेवाला विचारपूर्वक यत्न है, उसी को हम संध्या कहते हैं न कि—केवल मन्त्रपाठ को।

प्रात: ब्राह्म मुहूर्त में उठना, शौच, स्नान से निवृत्त होना, शुद्ध वायु में भ्रमण करना, योगासन, व्यायाम और दौड़ तथा प्राणायाम यही संध्या की प्रथम सोपान है। शारीरिक उन्नति के सर्वांगीण उपाय ही संध्या का प्रथम भाग है।

इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अघमर्षण भी आवश्यक है। प्रदूषण नष्ट करने का ही दूसरा नाम "अघमर्षण" है। शरीर अर्थात् पिण्ड शोधन के लिए मार्जन व प्राणायाम मन्त्र है। अंग स्पर्श भी इसी का अंग है।

शारीरिक उन्नति का दूसरा पूरक उपाय है ब्रह्मांड के अघ का मर्षण। अर्थात् वातावरण का प्रदूषण नष्ट करना। ब्रह्मांड का शोधन।

इन दोनों को मिलाकर संध्या का पहला भाग पूर्ण होता है। अर्थात् स्नान, व्यायाम और प्राणायाम तथा देवयज्ञ (अग्निहोत्र) अघ का मर्षण करना। जो व्यक्ति शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ है वह १/३ एक तृतीयांश सध्या की साधना कर रहा है या उसकी तृतीयांश संध्या सफल है। सफलता का नाम ही सिद्धि है।

संध्या का दूसरा भाग है मन की शुद्धि। जो मनसा परिक्रमा द्वारा होगी। सत्याचरण, द्वेष का नाश और ब्रह्मांड की सूक्ष्म तरंगों के रहस्यों को जान सूक्ष्म मनोमय शरीर का संशोधन करना ही मनसा परिक्रमा है।

यह संध्या का दूसरा भाग है। मानसिक रूपेण स्वस्थ व सक्षम होना। संध्या की तीसरी स्थिति है आत्मा का विकास। उत्तम उत्कृष्ट स्वभावयुक्त होना आत्मिक उन्नति कहाती है।

इन तीनों उन्नतियों के लिए जो यत्नशील है, वही साधक है। वही संध्या करनेवाला है, वही उपासक है। सध्या के इस रहस्य को जानकर जो क्रियात्मिक रूप में यत्नशील है उसके जीवन में और साधारणजनों के आचरण में [illegible]-पाताल का अन्तर होगा।

एक आर्य में और साधारण व्यक्ति में, हर क्षेत्र में एक अन्तर स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होना चाहिए।

एक साधारण दुकानदार में और एक आर्य या प्रभु भक्त दुकानदार में निश्चित रूप से अन्तर होना चाहिए। यदि ऐसा नहीं है तो हम में आर्यत्व का अभाव है। हम संध्या पढ़नेवाले हैं, करनेवाले नहीं हैं। एक अर्थ में हम नास्तिक हैं। क्रियात्मिक संध्या को जीवन में आचरित करने से निश्चय ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि सरलता से सम्भव है। अन्यथा संध्या व्यर्थ और निरर्थक बनकर रह जायेगी।

इसीलिए महर्षि कहते हैं कि ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

यहां शारीरिक आत्मिक का अभिप्राय शरीर से आत्मा तक की उन्नति है अर्थात् शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उन्नति करना है। यही सध्या का उद्देश्य है। यही अष्टांग योग है। यम नियम आसन प्राणायाम शारीरिक उन्नति के सूक्ष्म उपाय हैं। प्रत्याहार एवं धारणा मानसिक उन्नति के उपाय हैं तथा ध्यान व समाधि आत्मिक उन्नति के साधन हैं। देवयज्ञ सामाजिक उन्नति का कारण बनता है।

इस साधना को करना ही संध्या है। संध्या एक अखंण्ड क्रम है, जिस पर आचरण करना प्रतिफल सम्पूर्ण जीवन के लिए अत्यावश्यक है।

नशाबन्दी विशेषांक

सभा की ओर से १९ से २३ दिसम्बर तक नशाबन्दी सम्मेलन मनाया जारहा है। अतः सर्वहितकारी का २१ दिसम्बर का अंक नशाबन्दी विशेषांक प्रकाशित होगा। लेखक तथा कवि महानुभाव अपनी रचनायें तथा आर्यसमाज इस विशेषांक की अधिक से अधिक प्रतियां जनता में प्रचारार्थ मंगाने का आदेश पत्र तुरन्त भेजने का कष्ट करें। एक प्रति का मूल्य एक रु० होगा।

व्यवस्थापक
सर्वहितकारी, सिद्धांती भवन, रोहतक



ऋषि सन्देश

हम केवल यह चाहते हैं कि सब लोग पवित्र वेद की आज्ञा का पालन करें और केवल निराकार अद्वितीय परमेश्वर की उपासना करें, शुभ गुणों को ग्रहण करें और अशुभों को त्याग दें। यह वह शब्द है जो ऋषिवर देव दयानन्द ने उस समय कहे, जब सन् १८७७ में एक अंग्रेज पादरी ने ऋषिवर से शास्त्रार्थ में हार जाने के पश्चात् पूछा कि आप चाहते क्या हैं ? इसी के प्रचार में उन्होंने अपना जीवन लगा दिया और इसी प्रचार के लिये आर्यसमाज की स्थापना की और आर्यसमाज के नियम भी इसी आधार पर बनाये।

वेद की आज्ञा का पालन करना, ईश्वर की आज्ञा का पालन करना ही है।

आर्यसमाज का पहला नियम—

"सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदिमूल परमेश्वर है।" यहां सब सत्यविद्या का अर्थ वेद ही जानना चाहिये, क्योंकि आर्यसमाज का तीसरा नियम स्पष्ट है—

"वेद सब सत्यविद्याओं की पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।

वेदप्रमाण यजुर्वेद (अ० ३१ म० ७)

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥

अर्थ—(तस्मात् यज्ञात्स०) सत् जिसका कभी नाश नहीं होता, चित् जो सदा ज्ञानस्वरूप है, जिसको अज्ञान का लेश भी कभी नहीं होता, आनन्द जो सदा सुखस्वरूप और सबको सुख देनेवाला है, इत्यादि लक्षणों से युक्त पुरुष जो सब जगह में परिपूर्ण हो रहा है, जो सब मनुष्यों को उपासना के योग्य इष्टदेव और सब सामर्थ्य से युक्त है, उसी परब्रह्म से (ऋचः) ऋग्वेद (यजुः) यजुर्वेद (सामानि) सामवेद और (छन्दांसि) इस शब्द से अथर्व भी ये चारों वेद उत्पन्न हुए। इसलिये सब मनुष्यों को उचित है कि वेदों को ग्रहण करें और वेदोक्त रीति से ही चलें। जज्ञिरे और अजायत इन दोनों क्रियाओं के अधिक होने से वेद अनेक क्रियाओं से युक्त हैं, ऐसा जाना जाता है। वैसे ही 'तस्मात्' इन दोनों पदों के अधिक होने से यह निश्चय करके जानना चाहिए कि वेद ईश्वर से ही उत्पन्न हुए हैं, किसी मनुष्य से नहीं। वेदों में सब मन्त्र गायत्र्यादि छन्दों से युक्त है। फिर छन्दांसि इस पद के कहने से चौथा जो अथर्ववेद है उसकी उत्पत्ति का प्रकाश होता है। शतपथ आदि ब्राह्मणों से और वेदमन्त्रों के प्रमाणों से सिद्ध होता है कि यज्ञ शब्द का विष्णु और विष्णु का सर्वव्यापक जो परमेश्वर है उसी का ग्रहण होता है, क्यों कि सब जगत् की उत्पत्ति करना परमेश्वर में ही घटती है, अन्यत्र नहीं।

वेद की आज्ञा पालन में ही कल्याण है, वेद प्रमाण।

यजु अ० १५ म० १३

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्य छाया अमृत यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

अर्थ—जो जगदीश्वर अपनी कृपा से ही अपने आत्मा का विज्ञान देनेवाला है, जो सत्यविद्या और सत्य सुखों की प्राप्ति करानेवाला है, जिसकी उपासना सब विद्वान् लोग करते आये हैं और जिसका अनुशासन जो वेदोक्त शिक्षा है उसको अत्यन्त मान्य से सब शिष्ट लोग स्वीकार करते हैं, जिसका आश्रय करना ही मोक्षसुख का कारण है और जिसकी अकृपा ही जन्ममरण रूप दुःखों को देनेवाली है अर्थात् ईश्वर और उस का उपदेश जो सत्यविद्या, सत्यधर्म और सत्यमोक्ष हैं उनको नहीं मानना और जो वेद से विरुद्ध होके अपनी कपोल कल्पना अर्थात् दुष्ट इच्छा से बुरे कामों में वर्तता है, उस पर ईश्वर की अकृपा होती है, वही सब दुःखों का कारण है और जिसकी आज्ञा पालन ही सब सुखों का मूल है जो सुखस्वरूप और सब प्रजा का पति है, उस परमेश्वर देव की प्राप्ति के लिए सत्य प्रेमभक्ति रूप सामग्री से हम लोग नित्य भजन करें, जिस से हम लोगों को किसी प्रकार का दुःख न हो।

परन्तु खेद तो इस बात पर है कि आजकल केवल तीसरे नियम को ही रट लग रही है और केवल पढ़ने और सुनने मात्र में ही कल्याण समझे बैठे हैं और अगले नियमों (चौथा और पांचवां) सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये और "सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य का विचार करके करने चाहियें।" को न पढ़कर मूक हो जाते हैं। वेद को पढ़ा हो इसीलिए जाता है कि वेद को पढ़कर उसके द्वारा सत्यासत्य को जाना जा सके और फिर जो काम हम करें वे सब सत्य के आधार पर ही हों। क्योंकि जिस धर्म में सत्य नहीं वह धर्म नहीं अधर्म है और जो असत्य से अर्थ कमाया जाता है वह अर्थ नहीं अनर्थ है और जो काम असत्य द्वारा किया जाता है, काम नहीं कुकाम है।

आज आर्यसमाज में ऐसे लोग घुस गये हैं जो केवल वेदऋचाओं का जप करके ही सिद्धियां प्राप्त करना बताते हैं। उनके लिये छान्दोग्य उपनिषद् की कथा लिखता हूँ।

देवताओं को मृत्यु से भय हुआ और वे मृत्यु के भय से त्रयी विद्या में जा छिपे और उन्होंने वेद के छन्दों से अपने को ढाप लिया, देवों ने छन्दों से अपने को आच्छादित कर लिया, इसीलिए छन्दों को छन्द अर्थात् आच्छादित करनेवाले कहा जाता है। जैसे जल में छिपी मछली को कोई देख ले, वैसे ऋक्, यजु, साम में छिपे देवों को मृत्यु ने देख लिया। केवल वेदमन्त्रों के पाठ के सहारे देव मृत्यु से बचना चाहते थे, परन्तु यह उन की भूल थी। यह जानकर कि मृत्यु ने उन्हें देख लिया है। वे ऋक् यजु, साम से ऊपर स्वर में अर्थात् भगवान् के नाम की धुन में प्रविष्ट हो गये, उसमें जा छिपे। तभी तो ऋचाओं के मर्म को पाकर ओ३म् का दीर्घ स्वर से उच्चारण किया जाता है। ओ३म् यही स्वर है जो अक्षर है, अमृत है, अभय है। इसी ओ३म् में लीन होकर देव लोग अभय हो गये, अमृत होगये। उपासक ओ३म् का ही उच्चस्वर से गान करता है और सहाय के लिये परमात्मा से प्रार्थना करता है, परन्तु ध्यान रहे जब उपासना करने की इच्छा हो तो योग द्वारा ही करें अर्थात् पहले अपने चाल-चलन को सुधारे और अपने चित्त को निर्मल बनाये। इसीलिये कहा "योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः योग १-२" अर्थात् चित्त की वृत्तियों को सब बुराइयों से हटाकर, शुभ गुणों में स्थिर करके परमेश्वर के समीप हैं मोक्ष को प्राप्त करने को योग कहते हैं और वियोग उसको कहते हैं कि परमेश्वर और उसकी आज्ञा से विरुद्ध बुराइयों में फंस के उससे दूर हो जाना है।

प्रिय आर्य सज्जनो ! यह सब लिखने का केवल यही उद्देश्य है कि आप ऋषिवर की जय के नारे भले ही न लगावें। आर्यसमाज को भले ही भूल जावें परन्तु ऋषिवर देव दयानन्द की शिक्षा को कभी न भूलें और उपरोक्त शब्दों को सर्वदा याद रखें। उनके कृत ग्रन्थों के आधार पर अपने जीवन को बनायें। पवित्र वेद की आज्ञा का पालन करें, चित्त को बुराइयों को दूर करें, शुभ गुणों को ग्रहण करें और निराकार परमात्मा की उपासना करें। इसी में हम सब का भला है, सारे संसार का कल्याण है, यही ऋषि सन्देश है, इसको अपने जीवन में घटायें।

—देसराज खीरबाट २१० इन्दिरा कालोनी, रोहतक

पं० शांतिप्रकाश जी का अभिनन्दन

श्रीमती परोपकारिणी सभा अजमेर के तत्वावधान में आयोजित ऋषि मेले के अवसर पर ६ नवम्बर को आर्यसमाज फुलेरा की ओर से महोपदेशक प० शांतिप्रकाश जी शास्त्रार्थ महारथी को ११०१) का महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार, उत्तरीय तथा प्रशस्ति-पत्र स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के करकमलों द्वारा प्रदान किया गया तथा अभिनन्दन-पत्र फुलेरा आर्यसमाज के मन्त्री श्री भंवरलाल शर्मा ने समर्पित किया।

श्री गजानन्द आर्य परोपकारिणी सभा के मन्त्री

ऋषिमेला अजमेर के शुभावसर पर दिनांक ९-११-८६ को श्रीमती परोपकारिणी सभा का वार्षिक साधारण अधिवेशन माननीय स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। कुल २३ सदस्यों में से २१ उपस्थित थे। दिवगत सभामन्त्री श्री श्रीकरण जी शारदा के स्थान पर सर्वसम्मति से स्व० यशस्वी दानवीर श्री लालमन जी आर्य के सुपुत्र कलकत्ता निवासी श्री गजानन्द जी आर्य मन्त्री निर्वाचित हुए।

इस निर्णय का न केवल सभी उपस्थित सदस्य महानुभावों ने अपितु ऋषिमेले के अवसर पर समागत विशाल जनसमूह ने हार्दिक स्वागत किया और अनुभव किया कि अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि, अनेक उच्च संस्थाओं के उच्च पदाधिकारी, ट्रस्टी एवं उद्योगपति के रूप में जाने-माने श्री आर्य जी अपनी विद्वत्ता, सरलता, अनुभव तथा कर्मठता के परिप्रेक्ष्य में इस महान् उत्तरदायित्वपूर्ण पद की गरिमा की रक्षा करते हुए श्रीमती परोपकारिणी सभा को निस्सन्देह समृद्धि और प्रगति के पथ पर अग्रसर करने में सक्षम होंगे।

आर्ष कन्या गुरुकुल न्यू राजेन्द्र नगर का १९वां वार्षिकोत्सव सफलता के साथ सम्पन्न

आर्ष कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर का १९वां वार्षिकोत्सव श्रीमती प्रभात शोभा जी की अध्यक्षता में हर्षोल्लास के साथ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। जिसमें राजधानी की प्रमुख आर्यसमाजों की प्रतिनिधि बहनों ने भाग लेकर अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

सर्वप्रथम अथर्ववेद यज्ञ की पूर्णाहुति यज्ञ, प्रार्थना, गीत और आशीर्वाद श्रीमती शांति देवी अग्निहोत्री और आशा ने दिया। ध्वजारोहण श्रीमती रानी दत्ता ने किया और गुरुकुल को १०००) दान दिया। गुरुकुल की छात्राओं का सांस्कृतिक कार्यक्रम अत्यन्त रोचक तथा प्रभावोत्पादक रहा, जिससे प्रभावित होकर बहनों ने भरपूर धनराशि गुरुकुल को भेंट की। आचार्या शांति देवी जी ने वेदिक साहित्य और चन्दन की माला के द्वारा अतिथियों का सत्कार किया। सभा प्रधाना श्रीमती सरला मेहता ने लिखित रूप में स्वागत भाषण पढ़कर सुनाया। मुख्य अतिथि श्रीमती कौशल्या जी मलिक, उपप्रधाना समाज कल्याण सलाहकारी बोर्ड ने अपने समूचे भाषण में बलपूर्वक कहा कि गुरुकुल पद्धति से ही राष्ट्र उन्नति और चरित्र निर्माण हो सकता है और युवापीढ़ी में राष्ट्रीय चेतना को जागृत किया जा सकता है, इसलिए हमें तन, मन, धन से गुरुकुल को अपना सहयोग देना चाहिए।

मान्य बहन विद्यावती जी और ईश्वर देवी जी ने गुरुकुल पद्धति की शिक्षा को प्रशस्त करने पर बल दिया, जिसका समर्थन प्रेमशील ने भी किया। संस्कृत संस्थान के अधिकारी ने अनुदान पर बल दिया, जिसका खण्डन प्रकाश आर्या ने किया कि हमें गुरुकुल को स्वावलम्बी बनाकर ही संचालित रखना है। भाई रामलाल मलिक जी ने गुरुकुल की प्रशंसा करते हुए अपना तन, मन, धन से योगदान देने का आश्वासन दिया। मन्त्रिणी और प्रधाना ने सभी का आभार प्रकट किया। विशेषकर आज की अध्यक्षता शोभा पण्डित जिन्होंने गुरुकुल की पद्धति की गौरव गरिमा पर अपने विचार बहनों को दिये। इस प्रकार उत्सव पूर्ण रूप से सफल रहा।

—प्रकाश आर्या प्रधाना

वेदगोष्ठी

रविवार—दिनांक २१-१२-१९८६

प्रथम सत्र	प्रातः १० बजे से दोपहर १२ बजे
सहभोज एवं लघुविश्राम	दोपहर १२ से १ बजे
द्वितीय सत्र	दोपहर बाद १ बजे से २.३० बजे
समारोप	अध्यक्षीय उद्बोधन २.३० से ३ बजे

स्थान—आर्यसमाज मन्दिर※रामनगर, रोहतक रोड, जींद।

विशेष सूचना—आगत महानुभावों के मार्ग व्यय की व्यवस्था मण्डल द्वारा होगी।

विनीत :

इन्द्रसिंह शास्त्री — संयोजक

बद्रीप्रसाद आर्य — प्रधान

※ प्रमुख बस मार्गों के बस स्टाप एवं मुख्य बस स्टैंड पर रविवार २१-१२-८६ को प्रातः ८ से १० तक आर्यवीर रहेंगे।

आर्यसमाज मालकोष का वार्षिक चुनाव

प्रधान—सर्वश्री कृष्णकुमार पच, उपप्रधान—दयानन्द सांगवाण, मन्त्री—अमरसिंह आर्य, उपमन्त्री—सहदेवसिंह चाहेल, कोषाध्यक्ष—पोहकरसिंह, पुस्तकाध्यक्ष—सेवासिंह जाखड़।

नशाबन्दी सप्ताह के कार्यक्रम

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से १९ से २३ दिसम्बर तक सारे हरयाणा में नशाबन्दी सप्ताह मनाया जारहा है। जहां कार्यक्रम बन चुके हैं वे इस प्रकार हैं—

आर्यसमाज सैक्टर-१८ फरीदाबाद	१३-१४ दिसम्बर
,, अलेवा जि० जींद	१४-१५ ,,
,, बड़ा बाजार पानीपत जि० करनाल	१२-१३-१४ ,,
,, मुलाना जि० अम्बाला	१९ से २१ ,,
,, बिलासपुर जि० अम्बाला	२१ ,,
,, रामनगर रोहतक रोड जींद	२१ ,,
,, जंकमपुरा गुड़गांव	२१ ,,
,, नरवाना जि० जींद	२३ ,,
,, माडल टाउन सोनीपत	२३ ,,
आर्य केन्द्रीय सभा रोहतक	२३ ,,
आर्यसमाज बरौली जि० अम्बाला	२६ से २८ ,,

जो आर्यसमाज दिसम्बर मास में नशाबन्दी दिवस मनाना चाहते हैं, वे शीघ्र सभा को पत्र लिखकर सूचित करें। ताकि उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों के कार्यक्रम बनायें जा सकें।

विटामिन की जानकारी

प्रोटीन—दूध, दही, पनीर, फलियों, दालों, मक्की, मटर, चने में होता है।

लवण—पत्तेदार हरी सब्जियां, दूध, दही, पनीर, फल में।

वसा—मक्खन, घी, तेल और चिकनाइयों में।

कार्बोहाइड्रेट—गेहूं, मक्की, चावल, आलू, बाजरा, गन्ना, गुड़, शकरकंदों में।

विटामिन ए—पत्तेदार हरी सब्जी, दूध, दही, मक्खन, पनीर, गाजर, गोभी, क्रीम, मूली, आम में।

विटामिन बी—पत्तेदार हरी सब्जी, दूध, दही, गाजर, गोभी, फल, गेहूं के चोकर, फलियां दाल, चावल, आलू, खमीर में।

विटामिन सी—पत्तेदार हरी सब्जी, गोभी, निम्बू, आंवला, सन्तरा, अंगूर, टमाटर में।

विटामिन डी—पत्तेदार हरी सब्जी, दूध, दही, मक्खन, पनीर, फल, बादाम में।

विटामिन ई—पत्तेदार हरी सब्जी, गाजर, गोभी, गेहूं, तेल के बीजों में

विटामिन के—गोभी, पालक, गोभी तथा पत्तेदार हरी सब्जियों में।

वतन को रत्न बनाओ

सो जायें हम भी एक दिन वतन की गोद में।
क्योंकि पले हैं हम इसी के आमोद में ॥ टेक

प्रयत्न करें वतन को पतन से बचाने का।
खत्म तम करें प्रयत्न रत्न भारत बनाने का।
मिटाने को दुष्टता अब लग जायें सब खोज में ॥१

क्षणिक नशे को छोड़ देशप्रेम नशे में रहें।
मां का दूध सफल बना क्षणिक नशों को छू ना लें।
सहें कष्ट मरें मगर वतन के आमोद में ॥२

भगत उद्धम चन्द्रशेखर रामप्रसाद से आजाद।
बन आजाद उनकी तरह शत्रु को करदो बर्बाद।
स्वराज का अधूरा स्वप्न पूर्ण करें एक रोज में ॥३

आर्यवीरो आन बान शान पर हो जाओ कुर्बान।
भारत गारत हो रहा दूसरे महाभारत का इन्तजाम।
'बलवन्त' काम देश के आओ क्यों फंसे मोह लोभ में ॥४

—बलवन्तसिंह आर्य
डाकखाना नारायणगढ़, अम्बाला

मेवात में गोरक्षा सम्मेलन

हरयाणा का जिला गुड़गांवा, अलवर, राजस्थान के जिला भरतपुर, अलवर एवं यू०पी० का जिला मथुरा के बीच के क्षेत्र का मेवात कहलाता है। कुछ कस्बों को छोड़कर अधिकतर ग्रामीण गांवों में ८० प्रतिशत मेव मुस्लिम आबाद हैं। इसलिये इस तीन-चार क्षेत्रों से विधान सभा में मुस्लिम एम. एल. ए. एवं एम. पी. भी मुस्लिम चुने जाते हैं। इस क्षेत्र के हिन्दू वोटर को भी इन्हीं मुस्लिम उमीदवारों को ही वोट देना पड़ता है, लेकिन कोई भी विधायक बन जावे पर किसी भी प्रकार से हिन्दुओं का सहयोग नहीं करता है।

इस क्षेत्र के मुस्लिम लोगों की सहानुभूति देश से बाहर के लोगों के साथ है। पिछले दिनों डा० आनन्द सुमन के प्रचार के समय नगीना में झगड़ा करने को तैयार हो गये। लगभग १० हजार मुस्लिम ईर्द-गिर्द के गांवों से आकर नगीना ग्राम को घेर कर झगड़ा करने का प्रयास किया, लेकिन उपायुक्त संजय कोठारी के प्रयत्नों से हिन्दुओं को जीवन दान मिला। हिन्दू दुकानदारों का बायकाट किया गया।

इस क्षेत्र में गोहत्या दिन निकलने से पूर्व हजारों की संख्या में होती है, दूरदराज से हिन्दू लड़के लड़कियों को लाकर धर्मपरिवर्तन किया जाता है। आर्यसमाज के प्रचार में बाधा, उपदेशकों को जान से मारने की धमकी, मन्दिर पर जबरन कब्जा करने का प्रयत्न करना एवं बसों में सफर करनेवाली हिन्दू छात्राओं को परेशान करना यहां की प्रमुख समस्यायें हैं।

इन्हीं समस्याओं से परेशान होकर गांवों से कस्बों में, कस्बों से शहरों में हिन्दुओं ने पलायन प्रारम्भ कर दिया है।

राजनैतिक दृष्टिकोण से एक मुस्लिम मिनिस्टर भी हर समय हरयाणा में रहता है।

दूसरे मुल्कों से तबलीग के द्वारा जमायतें आकर इन लोगों को भड़काने का काम करती हैं।

इन्हीं सारी समस्याओं को उजागर करने एवं रगांला चौक (फिरोजपुर) पर बने बूचड़खाने को हटवाने हेतु एक विशाल गोरक्षा महासम्मेलन सात दिसम्बर रविवार को फिरोजपुर झिरका में करने का निश्चय लिया है, जिसमें स्वामी आनन्दबोध जी, प्रो० शेरसिंह जी, बाबाकिशन बजाज, विजयकुमार मल्होत्रा, राजमाता विजया राजे सिंधिया, प्रो० उत्तमचन्द जी शरर, जगमालसिंह एम० एल० ए० तिजारा, श्री बालदिवाकर जी हंस आदि प्रमुख विद्वान् पधारेंगे। अतः सभी धार्मिक महानुभावों से प्रार्थना है कि ज्यादा से ज्यादा संख्या में पधार कर हम बसे मिनी पाकिस्तान में लोगों से सहानुभूति करते हुए तन, मन, धन से सहयोग करें।

एव इन समस्याओं से निबटने हेतु सुझाव आमन्त्रित हैं। आर्य वेदप्रचार मण्डल मेवात गत २०-२५ वर्षों से प्रचार, पदयात्रा, ग्रामीण क्षेत्रों में उत्सव, आर्य वीरदल के शिविर आदि कार्यक्रमों भजनमण्डली आदि रखकर सेवारत है।

पदमचन्द आर्य मन्त्री

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द भवन सैक्टर-१९ फरीदाबाद का चुनाव

प्रधान-सर्वश्री नारायणप्रसाद आर्य, उपप्रधान-दीपचन्द, मन्त्री-नकुलदेव चौधरी, उपमन्त्री-दिनेशचन्द्र शर्मा, प्रचारमन्त्री-पन्नालाल शर्मा, कोषाध्यक्ष-महेशचन्द्र आर्य, संचालक आर्य वीरदल-देवेन्द्र आर्य

आर्यसमाज पंचकूला सैक्टर-९ पंचकूला

प्रधान-सर्वश्री रणवीर पसरीचा, मन्त्री-जयदेव आहूजा, कोषाध्यक्ष-जागीरीलाल शर्मा।

आर्यसमाज रिढाणा जि० सोनीपत

प्रधान-वैद्य धर्मसिंह, उपप्रधान-पूर्णसिंह सु० हरिराम, मन्त्री-श्रोमीराम, उपमन्त्री-रामस्वरूप स्वर्णकार, कोषाध्यक्ष-चौ० धूपसिंह, उपकोषाध्यक्ष-ताराचन्द।

सम्पादक के नाम पत्र—

संविधान की अवहेलना कब तक जारी रहेगी

श्रीमान् जी,

भारतीय संविधान में हिन्दी को राष्ट्र भाषा माना है। जिसको आज ३६ वर्ष हो चुके हैं। इसमें १५ वर्ष का समय इसलिये दिया था कि जो लोग अच्छी तरह हिन्दी नहीं जानते वे लोग जान लें, परन्तु इसका मतलब यह नहीं था कि जो लोग हिन्दी अच्छी तरह नहीं जानते वे लोग अर्धशताब्दी तक भी हिन्दी नही सीखेंगे। मन्त्री लोग संविधान की कसम खाकर यह घोषणा करते हैं कि वे लोग संविधान पर अमल करने को पाबन्द होंगे, परन्तु ऐसे मन्त्रियों का क्या इलाज किया जाये कि जो कहते फिरते हैं कि हिन्दी किसी पर थोपी नहीं जायेगी। उनके विरुद्ध क्या कार्यवाही हुई, कुछ पता नहीं लगता। प्रधानमन्त्री को चाहिए कि यह कहनेवाले मन्त्रियों को चुप करें या उनके विरुद्ध कड़ी कार्यवाही करें, क्योंकि हिन्दुओं के लिये हिन्दी का राष्ट्रभाषा होना बहुत जरूरी है। इसके इलावा प्राचीनकाल से जो नारा हिन्दू, मुसलमान व ईसाइयों की ओर से लग रहा है वह है हिन्दू हिन्दी हिन्दुस्तान। हिन्दुओं के रहने के लिये सिवाये हिन्दुस्तान के और कोई जगह नहीं है। इसी प्रकार सिवाय राष्ट्रभाषा हिन्दी के हिन्दू और किसी भाषा में काम नहीं कर सकते। इसलिये सब लोग चाहते हैं कि राष्ट्रभाषा हिन्दी जल्दी से जल्दी राष्ट्रभाषा बनादी जाये।

—जयदेव गोयल पत्रकार जींद

आर्यसमाज खानपुर (महेन्द्रगढ़) का वार्षिकोत्सव

८-९ नवम्बर शनिवार, रविवार को बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया, जिसमें आर्यजगत् के प्रसिद्ध उपदेशक डा० विश्वपाल जी वेदालंकार, श्रीमती सुशीला देवी आचार्या कन्या गुरुकुल दाधिया (अलवर), प्रसिद्ध भजनोपदेशक पंडित नरदेव आर्य (भरतपुर) व कवर तेजपाल आर्य भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मधुर उपदेश हुए। इस अवसर पर डा० विश्वपाल जी वेदालंकार की अध्यक्षता में एक विशेष संगोष्ठी की गई जिसका विषय राष्ट्रीय अखण्डता—जो देश की वर्तमान ज्वलन्त समस्या है। इस पर इस क्षेत्र के सभी वर्गों के प्रमुख प्रबुद्ध व्यक्तियों ने भाग लिया तथा अपने विचारों द्वारा उपस्थित जनसमूह ने मतमतांतर, जातपात से ऊंचा उठकर, एकजुट रहकर राष्ट्र की अखण्डता के लिये संकल्प लिया तथा इस संगोष्ठी को राष्ट्रीयस्तर तक पहुंचाने के लिये सर्वसम्मति से इस नवगठित राष्ट्रीय प्रबुद्ध मण्डल का कन्वीनर श्री ओमप्रकाश आर्य को चुना गया तथा जल्दी ही और विस्तृत क्षेत्र के प्रमुख प्रबुद्ध व्यक्तियों की संगोष्ठी के आयोजन का निर्णय लिया गया तथा वार्षिकोत्सव सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

—धर्मपाल आर्य

आर्यसमाज लुहारु जि० भिवानी का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री विजयसिंह, उपप्रधान—मा. हरिसिंह, मा० अमरसिंह, सुलतानसिंह, मन्त्री-रोहताशकुमार आर्य, उपमन्त्री-मा० निहालसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष—भरतसिंह शास्त्री, पुस्तकाध्यक्ष—हरदयाल आर्य, लेखानिरीक्षक—मा० चन्दनसिंह।

ग्राम कलावड़ जि० रोहतक में वेदप्रचार

ग्राम कलावड़ के अन्दर श्री जयपाल जी का प्रचार दिनांक २०-२१ २२ अक्तुबर को श्री दयाचन्द जी मन्त्री आर्यसमाज कलावड़ की अध्यक्षता मे बहुत जोर-शोर से हुआ। लोगो ने बहुत रुचि ली, बड़े प्रभावित हुए और कई लोगों ने यज्ञोपवीत भी उनके करकमलो से लिया। लोगों की रुचि थी कि जल्दी-जल्दी आर्यसमाज का प्रचार करते रहना आपका बार-बार धन्यवाद करते हैं। आपने हमारा दशांश इकट्ठा करने मे भी मदद दी और गाव वालों को अच्छा प्रचार सुनाया। इसके बाद दिनांक ४-११-८६ को महाशय तेजपाल जी का भी प्रचार सुना तथा उनके करकमलो से भी कई लोगो ने यज्ञोपरान्त जनेऊ धारण किया और हुक्का, शराब छोड़ा। उसी दिन जिस दिन महाशय तेजपाल जी का प्रचार हो रहा था, गाव के दूसरी तरफ महाशय जयपाल जी का प्रचार हो रहा था। गांव के लोगों ने दोनो प्रचारको के प्रचार बड़े ध्यान से सुने।

—आपका शुभचिन्तक
दयाचद मन्त्री

सुरक्षापट्टी बनायी जाये

यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि पाकिस्तान हमारे देश में अस्थिरता का वातावरण पैदाकर उसके विकास को अवरुद्ध कर देना चाहता है। कुछ सिरफिरे देशद्रोही आतकवादियों को प्रशिक्षण देकर पाकिस्तान भारत के निर्दोष हिन्दुओं का खून बहवा रहा है। ऐसा करके पाकिस्तान सिखों के लिए अलग राष्ट्र का रास्ता साफ कर, बंगला देश के निर्माण का बदला लेना चाहता है। यह कितना दुर्भाग्यपूण व हास्यास्पद है कि जिन सिखो का निर्माण हमारे धर्म गुरुओ ने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए किया था, उन्हीं में से कुछ लोग महान् गुरुओं के उपदेशों व आदेशों को भूलकर निर्दोष हिन्दुओं की हत्या कर रहे हैं। पाकिस्तान की भारत विरोधी हरकतों को रोकने के लिए भारत पाक सीमा पर सुरक्षापट्टी का निर्माण करना आज एक राष्ट्रीय आवश्यकता है। सीमा सुरक्षापट्टी बनाने से ही पाकिस्तानी गतिविधियों पर प्रतिबन्ध लगाया जा सकता है। बरनाला का उतना ही समर्थन करना चाहिए, जितना राष्ट्रहित में हो। केन्द्रीय सरकार को चाहिए कि वह पंजाब समझौते को ताक पर रखकर सर्वप्रथम शांति एव सुरक्षा की व्यवस्था करें।

राधेश्याम आर्य एडवोकेट
मुसाफिर खाना, सुलतानपुर, उ०प्र०

मेला कपालमोचन में वेदप्रचार की धूम

मेला कपालमोचन में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा वेदप्रचार तथा भण्डारा (ऋषि लगर) का आयोजन सुव्यवस्थित ढग से सम्पन्न हुआ। यह सम्पूर्ण कार्य स्वामी सदानन्द जी की अध्यक्षता में प्रचार एव ऋषि लगर यज्ञ आदि कार्य सुचारु रूपेण सम्पन्न हुआ। इसमें वैद्य सर्वश्री रामलाल, गेन्दाराम, वीरसिह तथा मामचन्द जी का भी विशेष सहयोग रहा है।

सभा की ओर से सर्वश्री पं० बनारसीलाल, प० मुन्शीलाल मण्डली सहित तथा पं० चिरजीलाल जी मण्डली सहित पधारे थे और इनके द्वारा धूमधाम से वेदप्रचार हुआ। जनता पर इसका अच्छा प्रभाव रहा।

सर्वश्री ब्र० अशोककुमार, ब्र० प्रवीणकुमार, ब्र० नरेन्द्रकुमार, ब्र० मोहनलाल, ब्र० सुमितकुमार, ब्र० सुरेशकुमार, सत्यवीर आदि। इसके अतिरिक्त श्रीमद्दयानन्दोपदेशक महाविद्यालय शादीपुर (यमुनानगर) के ब्रह्मचारियों ने यज्ञ तथा ऋषि लगर के कार्य में विशेष भाग लिया।

—सदानन्द सरस्वती

नूरपुर मुगलान का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री कृष्णचन्द, मन्त्री-रणवीरसिह, उपमन्त्री—जीतसिह, कोषाध्यक्ष—ओम्प्रकाश, प्रचारमन्त्री—रामसिह, पुस्तकाध्यक्ष—सतपालसिह आर्य।

नूरपुर मुगलान में तीन दिन तक प्रचार हुआ। सभा को १८१ रु० प्राप्त हुए।

—पं० सुमेरसिह आर्य भजनोपदेशक

कौन आये आज

कौन आये आज भारत को बचाने के लिये।
स्वार्थी दानव फिरे इसको मिटाने के लिये॥

सैक्यूलर सरकार का है राज जब तक देश में।
तब तक यहां पापी फिरेंगे सज्जनों के वेश मे।
दुर्बलों धर्मात्माओं पर जुल्म ढाने के लिये॥१

जल रहा पंजाब और कश्मीर में दुःख छा रहा।
सीमा से हिन्दू दबाया और भगाया जारहा।
पाकिस्तान व खालिस्तान वहां बनाने के लिये॥२

वोट की नीति में फसकर निरपराधी मर रहे।
अल्पसंख्यक लोगों को नेता यहां खुश कर रहे।
जायें बहुसख्यक कहा अब जान बचाने के लिये॥३

नेताओं को चिन्ता अपनी कुर्सियों की है पड़ी।
जान जनता की इधर भारी मुसीबत में बड़ी।
है नही कोई उसे धीरज बन्धाने के लिये॥४

देश की जेलों में विषधर नाग काले पल रहे।
बाहरी शक्ति के दम पर जो कुचालें चल रहे।
देश के गद्दार घूमें उनको छुड़ाने के लिये॥५

ऐ जवानो! जाग जाओ समय को पहचान कर।
लुट चुके हो बहुत क्यों सोते हो लम्बी तानकर।
आर्य जगकर घूमते तुमको जगाने के लिये॥६

बलिदान व्यर्थ न जाय राणा और शिवा दयानन्द का।
वीर बन्दा तेग और गोविन्दसिह गुरुवृन्द का।
जो कि आये हमको सच्चा पथ बताने के लिये॥७

देशहित में लाखों ने यहां पे कटाये अपने सिर।
देखना दुश्मन दुबारा सफल हो जाये न फिर।
हमको 'छाजूराम' गुलामी में फंसाने के लिये॥८

—छाजूराम शर्मा शास्त्री, नई दिल्ली

आर्यसमाज तोताहेड़ी का उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज सिलारपुर तोताहेड़ी का प्रथम आर्य सम्मेलन सम्पन्न हुआ। जिसमें आर्यजगत् के मशहूर संगीताचार्य महाशय बेगराज जी उ०प्र०, म० आशाराम, म० मोहनलाल उ०प्र०, पं० चिरजीलाल जी की भजनमण्डली हरयाणा प्रतिनिधि सभा, म० जयनारायण बेधड़क, म० बुद्धिधर, म० बनवारीलाल हितैषी, म० सूरजभान, म० रामसिह आर्य, प० भोलाराम आर्य, म० दलीपसिंह सरपच आदि के मनोहर भजन उपदेश सुनकर श्रोता मुग्ध हो गये। प० चिरंजीलाल जी का विशेष प्रभाव रहा।

इस सम्मेलन की सफलता के लिए आर्यसमाज नारनौल के सभी अधिकारी धन्यवाद के पात्र हैं। उन्होंने पूरी तरह से सहायता की है। १५२) सभा को दिये हैं।

—म० जगमालसिंह बेधड़क

ग्राम सुलतानपुर, कंवारी, बालावास (हिसार) में वेदप्रचार

वेदप्रचार मण्डल हांसी की तरफ से निम्न ग्रामों में वेदप्रचार किया गया—

सुलतानपुर दिनांक २७-२८ नवम्बर, ८६ को पं० सुमेरसिह व पं० खुशीराम जी की मण्डली द्वारा वेदप्रचार किया गया। प्रातःकाल यज्ञ किया। कंवारी—दिनांक २९-३० नवम्बर को उपरोक्त विद्वानों ने क्रांतिकारियों का इतिहास एवं समाज में फैली कुरीतियों बारे भजनों के माध्यम से विचार रखे। बालावास—१-२ दिसम्बर को ग्राम बालावास में उपरोक्त विद्वानों के अतिरिक्त सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी ने शराब से होनेवाले नुकसान से लोगों को अवगत करवाया तथा लोगों को इस बुराई से सदा-सदा के लिये दूर रहने पर बल दिया, प्रातःकाल यज्ञ किया गया।

—पं० भरतलाल शास्त्री हांसी

मध्यप्रदेश के आदिवासियों की सहायता

वैदिक पारिवारिक सत्संग सभा हिसार की कार्यकारिणी ने एक हजार एक रुपये की खाद्य सामग्री (चावल) खरीद कर मध्यप्रदेश के आदिवासियों व वनवासियों के लिए विश्व हिन्दू परिषद् के तत्वावधान में (स्वामी अवधेश जी महाराज) के द्वारा भेजने का फैसला किया व इसके अतिरिक्त कार्यकर्त्ताओं द्वारा घरों से गर्म व सर्द वस्त्र भी इकट्ठे करके भेजने का आज की बैठक में दृढ़ता से निर्णय लिया और इस अभियान को १५-११-८६ तक पूरी कोशिश के साथ चलाने का संकल्प लिया।

अर्जुनदेव आर्य
महामन्त्री वैदिक पारिवारिक सत्संग सभा हिसार

बहादुरगढ़ में योग साधना प्रशिक्षण शिविर

योगाभ्यास में रुचि रखनेवाले श्रद्धालु, भक्तों, साधकों को यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता होगी कि आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में महर्षि पतंजलि के आधार पर अष्टांगयोग एवं हठयोग की क्रियाओं सहित मौन अभ्यास आदि प्रशिक्षण के लिए २१ दिसम्बर (रविवार) से ३१ दिसम्बर (बुधवार) तक योग साधना प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जारहा है।

इस शुभावसर पर प्रशिक्षणार्थ यौगिक क्षेत्र में सुविख्यात, वेदों में योग विद्या आदि ग्रन्थों के लेखक, योगधाम आश्रम ज्वालापुर हरिद्वार के संचालक श्री स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती एवं तपोनिष्ठ, योगमूर्ति पूज्य श्री स्वामी प्रेमानन्द जी महाराज आचार्य संन्यासाश्रम गाजियाबाद पधार रहे हैं, साथ ही प्रशिक्षण में सहयोगी रहेंगे श्री स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी, योगमार्ग के पथिक, तप त्याग द्वारा जनतासेवा में व्यस्त, आपके सम्पर्क मात्र से जीवन में विशेष परिवर्तन होता है। अतः यौगिक क्षेत्र के पथिकों के लिए सुअवसर प्राप्त है, ऋतु अनुसार बिस्तर, साधना में बैठने के लिए गद्दी, लंगोट, तौलिया, लेखनार्थ कापी, पेन आदि आवश्यक वस्तुयें साथ लेकर २१ दिसम्बर सायं ३ बजे इष्ट मित्रों सहित पधारें। भोजन तथा निवास का प्रबन्ध आश्रम की ओर से होगा।

आवश्यक निवेदन—यदि आपके पास 'योगदर्शन' और वेदों में 'योग विद्या' ग्रंथ हों तो साथ लाने का कष्ट करें, घर या कार्यालय से पूरा अवकाश लेकर आयें। शिविर मध्य छुट्टी नहीं मिलेगी, धूम्रपानादि के व्यसनियों को व्यसन त्याग प्रतिज्ञा करने पर ही प्रवेश मिलेगा। भोजनादि विषय में एवं अन्य व्यवस्था में पूर्ण रूप से अनुशासन में रहना होगा। १५ दिसम्बर तक आपका नाम आश्रम में पहुंच जाना चाहिए अन्यथा इस शुभावसर से वंचित रह जायेंगे। सर्वसामान्यों के लिए प्रातः दैनिक ७ बजे यज्ञ, यज्ञोपरांत योग पर व्याख्यान, सायं ४-३० बजे व्याख्यान।

मांगेराम आर्य प्रचार मन्त्री

बात कर

भारत की नहीं, अपनी कोठियों की बात कर।
रोटी की छोड़, अण्डे बोटियों की बात कर॥
हमने कहा कि आपको जनता ने किया याद।
बोले न यार ऐसे खोटियों की बात कर॥ १
बोतल विदेश की शराब सुन्दरी उठा।
गुजरात के सदस्य जोटियों की बात कर॥ २
गउओं को काटने से कहां काम चलेगा।
सब बैल, भेड़, भैंस, झोटियों की बात कर॥ ३
मिलते हैं मुश्किलों से किसी को ये पांच साल।
जनता की नहीं कोई चोटियों की बात कर॥ ४
महंगाइयों की मार पड़ गई चुनाव में।
डीजल, शराब, झण्डे, सोटियों की बात कर॥५
हम ही तो हैं विजेता वर्तमान के नेता।
क्या पार्टी है छोटो मोटियों की बात कर॥ ६
हम तो बने अंग्रेज के चाचा कवि "व्याकुल"।
मत ब्रह्मचर्य और लंगोटियों की बात कर॥ ७

रचयिता: प्रकाशवीर व्याकुल
आर्यसमाज नया बांस दिल्ली-६

रुदडौल (भिवानी) में वेदप्रचार

स्वामी रुद्रवेश जी ने ग्राम रुदडौल मे वेदप्रचार की धूम मचा दी। उनके प्रभावशाली भजनों ने लोगों को उत्साहित कर दिया तथा नवयुवकों को यज्ञोपवीत भी दिये।

छत्तरसिंह आर्य
मन्त्री आर्यसमाज रुदडौल

अरब देशों द्वारा हिन्दुओं पर जुल्म

(सम्पादक के नाम पत्र)

श्रीमान् जी,

जब से यह सुना है कि एक व्यक्ति राजकुमार भारद्वाज को सत्यार्थप्रकाश रखने के जुल्म में कैद कर लिया गया है जो कि हिन्दुओं पर सरासर जुल्म है। यह भी सुना गया है कि अरब देशों में कोई भी व्यक्ति अपने धर्म का प्रचार नहीं कर सकता। न ही वहां पर कोई गुरुद्वारा बना सकता। जबकि हमारे देशों में मुसलमानों को पूरी आजादी है वे अपने धर्म का प्रचार-प्रसार कर सकते हैं, मस्जिद बना सकते हैं परन्तु जब हम लोगों को अपनी धार्मिक पुस्तक भी पढ़ने की आज्ञा नहीं है तो मुसलमानों को हर प्रकार की सहूलियतें देने की क्या जरूरत है। आजकल के जमाने में इस प्रकार की पाबन्दियां लगाना वाजिब नहीं है। यदि आगे भी ऐसा ही चलता रहा तो मैं सरकार से प्रार्थना करूंगा कि वह इस प्रकार के लोगों को कोई सुविधा प्रदान न करे और इस प्रकार के देशों के विरुद्ध उचित कारवाई करे।

जयदेव गोयल पत्रकार जींद

आर्य सीनियर सैकण्ड्री स्कूल के समाचार

१—हमारे विद्यालय के छात्र संजीवकुमार वर्मा सुपुत्र श्री कृष्ण वर्मा ने अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस सिरसा शाखा द्वारा आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त करके १५१) का नकद पुरस्कार प्राप्त किया।

२—दिनांक २१-११-१९८६ को हमारे विद्यालय में एकता दिवस के उपलक्ष में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महाराजा अग्रसेन स्कूल की मुख्याध्यापिका श्रीमती सुहासिनी गोयल ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। प्रथम एवं तृतीय पुरस्कार आर० एस० डी० हाई स्कूल के छात्रों मनोज कौशिक एवं सुधांशु ने प्राप्त किये। शील्ड भी इसी स्कूल ने प्राप्त की। सभी प्रतियोगियों को आकर्षक पुरस्कार दिये गये। अन्त में प्रिंसिपल श्री द्वारकाप्रसाद जिंदल एवं श्री बलदेवसिंह जी आर्य सदस्य विद्यालय प्रबन्ध समिति ने सबके प्रति आभार प्रकट किया।

द्वारकाप्रसाद जिंदल
प्रिंसिपल आर्य सीनियर सैकण्ड्री स्कूल सिरसा

महात्मा हंसराज दिवस समारोह
१९ अप्रैल, १९८७

आर्यजनता के सूचनार्थ निवेदन है कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी महात्मा हंसराज दिवस समारोह रविवार १९ अप्रैल, १९८७ को समारोहपूर्वक मनाया जायेगा। मेरी समस्त आर्यसमाजों, स्त्री आर्य-समाजों, डी० ए० वी० संस्थाओं एवं अन्य आर्य संस्थाओं से प्रार्थना है कि वे अभी से उक्त तिथि अंकित कर तथा उस दिन कोई अन्य कार्यक्रम न रखकर इस समारोह में अधिक से अधिक संख्या में सम्मिलित होने की कृपा करें। विस्तृत कार्यक्रम प्रकाशित होने पर भिजवा दिया जायेगा।

—रामनाथ सहगल
मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

गोर्बाच्योव के भक्तो गोर्बाच्योव से प्रेरणा लो

प्रा० धर्मदेव विद्यार्थी, अधिष्ठाता सार्वदेशिक आर्य वीरदल हरयाणा

न मे स्तनो जनपदे न च कदर्यो न मद्यपः।
नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुत ॥

भारत (आर्यावर्त्त) के महान् राजा अश्वपति द्वारा कहे गये उपरोक्त शब्द समस्त संसार के लोगों को प्रेरणादायक चेतावनी के रूप में कहे गये कि मेरे राज्य में न कोई चोर है, न ही कोई शराबी है, न ही कोई जुवारी, चरित्रहीन, अविद्वान् है और न ही कोई वेश्या है। वर्तमान युग मे शायद ही किसी आदर्श राज्य की कल्पना की जा सके, जिसके विषय में उपरोक्त पंक्तिया पूर्ण उतरती हों। जिस महान् देश भारत के लिए उपरोक्त पंक्तियां कही गई उसी भारत का कोई भी राजनेता उपरोक्त घोषणा करने का साहस नहीं कर सकता। भारतभर की अदालतो, थानों मे रखे रिकार्ड या आप स्वय भी वर्तमान भारत में शराब, जुआखोरी, वेश्यावृत्ति, भ्रष्टाचार के प्रसार का अनुभव कर सकते हैं। वास्तव में तमाम भ्रष्टाचार की जड़ यह शराब ही होती है। शराबी मास भक्षण कर जुवा खेलना, वेश्या गमन करना अपना अधिकार मानता है, क्योंकि शराब के अन्दर जाते ही अकल बाहर आजाती है। व्यक्ति अच्छे-बुरे का विवेक खो बैठता है और पतित हो जाता है।

व्यक्ति के इस पतन की प्रक्रिया को रूस के महामहिम गोर्वाच्योव ने समझा है वही गोर्वाच्योव ! जिसके भारत आगमन के समय भारतवासियो ने अपनी आखे बिछाकर स्वागत किया। राजनेताओं ने दिल्ली को दुल्हन की तरह सजाकर मेहमान नवाजी कर प्राचीन अतिथि सत्कार की परम्परा को जीवित करने का प्रयास किया, परन्तु रूस के उस महान् नेता ने कदम-कदम पर अपनी गरिमा को बनाये रखा। भले ही भारतीय राजनेता विदेशी भाषा अंग्रेजी बोलकर अपनी मानसिक गुलामी का मूर्खतापूर्ण प्रदर्शन कर परन्तु गोर्वाच्योव ने अपनी मातृभाषा में ही बाते कर, रूस के राष्ट्रीय गौरव की रक्षा की। गोर्वाच्योव सभी व्यसनो मे दूर रहकर अपने देशवासियो को पापों की जननी शराब से दूर रखना चाहते हैं। जब दिल्ली के हैदराबाद हाउस में उनके सम्मान में स्वागत समारोह का आयोजन किया गया तो वहा वोदका या शैम्पन नही बल्कि फ्रूट जूस के गिलास से ही उनके स्वास्थ्य और समृद्धि की कामना की गई। चाहे आइस लैंड हो या रूस जैसे ठण्डे देश, चाहे भारत जैसा गरम देश हो, गोर्वाच्योव ने प्रत्येक स्थान पर शराब का बहिष्कार कर अपने व्यक्तित्व की महानता का परिचय दिया।

उन्होंने इस प्रचार को अपने तक सीमित न रखकर रूस के लोगों में भी शराब विरोधी प्रचार का प्रबन्ध किया है। उन्होने अपनी पार्टी के १५० लाख वर्करों को शराब विरोधी प्रचार मे लगाया है और अधिक शराब पीनेवालो को पार्टी से निकालने तक का प्रावधान लगाकर हमारी नित नये दिन बननेवाली पार्टियों की आचार संहिता पर प्रश्न लगा दिया है। इसके अतिरिक्त उन्होने अपने देश मे शराब की ३० प्रतिशत बिक्री कम करदी है और दुकानो का समय दो बजे से सात बजे तक तथा

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

सम्पादकीय

संयम और साधना

भारतीय संस्कृति में संयम और साधना को सबसे अधिक महत्त्व दिया गया है। मानव जीवन के चार विभाग करके प्रथम ब्रह्मचर्य आश्रम में विद्याध्ययन तपस्या पूर्वक करने का विधान किया है। विद्यार्जन के स्थान, नगर और ग्रामों से दूर जंगलों में होते थे। जहां का जल और वायु प्रदूषण रहित एवं स्वच्छ होता था। विद्याध्ययन से जहां मानसिक विकास होता था वहां साथ-साथ ब्रह्मचर्यपालन पूर्वक व्यायाम आदि साधनों से शारीरिकबल का भी संचय किया जाता था। तदर्थ यम, नियम, आसन प्राणायाम आदि योगांगों का अभ्यास करवाया जाता था। खान-पान शुद्ध और सात्विक होता था। प्रसिद्ध है कि "जैसा अन्न वैसा मन, जैसा पानी वैसी वाणी।"

कुमार कुमारियों के शिक्षण संस्थान भी पृथक्-पृथक् होते थे। वहां शिक्षक भी उत्तमकोटि के सिद्ध एवं साधक पुरुष तथा महिलायें होती थीं। उनके संरक्षण में शिक्षित और दीक्षित कुमार तथा कुमारियां पूर्ण युवावस्था में विवाह करके गृहस्थाश्रम में प्रवेश करते थे। हजारों ऐसे भी उत्तम कोटि के सिद्ध पुरुष होते थे जिनके मनमें विवाह करने का विचार ही नहीं आता था। सम्पूर्ण आयु अपनी साधना और परोपकार में ही व्यतीत कर देते थे। जिनका विचार था "किं प्रजया करिष्यामः" सन्तानोत्पत्ति करके क्या करेंगे। इस संसार के क्षणभंगुर सुखों की प्राप्ति की लालसा को छोड़कर मोक्ष प्राप्ति के लिए सदा प्रयत्न करते रहते थे। महर्षि व्यास ने योगदर्शन के भाष्य में लिखा है—

यच्च कामसुखं लोके यच्च दिव्यं महत् सुखम्।
तृष्णाक्षयसुखस्यैते नार्हतः षोडशीं कलाम्॥

संसार में कामवासनाजन्य जो क्षणिक सुख है वह और अन्य बड़े-बड़े सांसारिक सुख हैं वे सब तृष्णाक्षय से उत्पन्न होनेवाले सुख की सोलहवीं कला के बराबर भी नहीं हैं।

संसार के मोहमाया के चक्कर में आकर मनुष्य अज्ञान के वशीभूत हुआ दिन-रात सुख की खोज में लगा रहता है। सुख के साधन धन-सम्पत्ति स्त्री पुत्र पौत्रादि का संग्रह करता-करता बूढ़ा हो जाता है और एक दिन इन सभी सांसारिक साधनों को छोड़कर चला जाता है। जिन साधनों की प्राप्ति के लिए मानव नानाविध अनुचित उपायों का भी आश्रय लेता है वे सब अन्त समय उसके साथ नहीं जाते। भर्तृहरि ने लिखा है—

धनानि भूमौ पशवश्च गोष्ठे, नारी गृहद्वारे जनाः श्मशाने।
देहश्चितायां परलोकमार्गे, कर्मानुगो गच्छति जीव एकः॥

जब जीवात्मा परलोकगमन करता है तब उसके द्वारा अर्जित समस्त धन-सम्पत्ति, कार, कोठी भूमि पर धरी रह जाती हैं, गाय आदि उत्तम पशु गोशाला में, अर्धांगिनी (नारी) गृहद्वार तक और बन्धु बान्धव प्रिय मित्र श्मशान भूमि तक साथ रहते हैं। यह शरीर जिसके लिये सब कुछ करता है वह भी चिता में भस्म कर दिया जाता है। अपने किये हुए शुभ या अशुभ कर्मों के अनुसार यह जीवात्मा अकेला ही परलोक गमन करता है।

हमारे पूर्वज ऋषि मुनि महाशय इस रहस्य को समझकर सांसारिक सुखोपभोग को अधिक महत्त्व नहीं देते थे। वे अपना अधिक समय परोपकार एवं परमार्थ चिन्तन में ही व्यतीत करते थे। संयम के द्वारा सन्तति-निरोध होता था। परिवार नियोजन के आधुनिक कृत्रिम उपाय अपनाने की आवश्यकता नहीं थी। अधिक व्यक्ति आज की भांति सुरा और सुन्दरी के जाल में फंसे हुए नहीं थे। सुरापान सभ्य समाज में वर्जित था और परस्त्रीगमन महापाप माना जाता था। इस देश के राजा अश्वपति ने कहा था—

न मे स्तेनो जनपदे, न कदर्यो न मद्यपः।
नानाहिताग्निर्नाविद्वान्, न स्वैरी, स्वैरिणी कुतः॥

मेरे राज्य में कोई भी कुत्सितकर्मा नहीं और न ही कोई शराबी है। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जो प्रतिदिन अग्निहोत्र न करता हो, अनपढ़ या मूर्ख भी कोई नहीं है, कोई भी स्वच्छन्दचारी वा व्यभिचारी पुरुष नहीं, फिर स्वैरिणी (वेश्या) तो हो ही कैसे सकती है।

हजारों की संख्या में ऐसे संयमी ऊर्ध्वरेता ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणी हुए हैं जिन्होंने आजीवन घोर तपस्या की है और विवाह नहीं करवाया। वंशपरम्परा चलाने के लिए कुछ व्यक्ति विवाह करते थे, वे भी केवल सीमित सन्तान ही उत्पन्न करते थे। उनकी धारणा थी "मरणं बिन्दुपातेन जीवनं बिन्दुधारणात्" वीर्य की एक बूंद का पतन आयुविनाशक और वीर्य का धारण आयुवर्धक समझते थे।

महाभारत के आदिपर्व में राजा जनमेजय के राज्याभिषेक और विवाह प्रकरण में 'जरत्कारु' मुनि की कथा आती है। संयम और साधना की दृष्टि से उस का उद्धरण यहां सामयिक समझता हूं।

इन्हीं दिनों की बात है, महातपस्वी जरत्कारु मुनि सम्पूर्ण पृथ्वी पर विचरण कर रहे थे। जहाँ सायंकाल हो जाता, वहीं ठहर जाते थे। वे ब्रह्मचर्य आदि कठोर नियमों का पालन करते थे। बहुत बड़ी आयु होने पर भी उन्होंने विवाह करके सन्तति उत्पन्न करने का विचार नहीं किया। इससे उनके पितर परेशान थे कि हमारी वंशपरम्परा का विच्छेद हो जाने से हम नरक में दुःख पायेंगे। पितामह ब्रह्मा जी ने सन्तानोत्पत्ति को परम धर्म कहा है। उन्होंने वेद वेदांग पारंगत जरत्कारु मुनि से विवाह करके सन्तानोत्पत्ति के लिये बार-बार आग्रह किया और यहां तक कहा कि—

तपो वाप्यथवा यज्ञो यच्चान्यत् पावनं महत्।
तत्सर्वमपरं तात न सन्तत्या समं मतम्॥३०॥

हे तात! तपस्या, यज्ञ अथवा अन्य जो महान् एवं पवित्र साधन हैं, वे सब सन्तान के समान नहीं हैं। अतः आप विवाह अवश्य कर लें।

बार-बार पूर्वजों के आग्रह करने पर महातपस्वी ब्रह्मचारी जरत्कारु ने अपने मन की बात कही—

ममायं पितरो नित्यं पद्यर्थः परिवर्तते।
ऊर्ध्वरेता शरीरं वै प्रापेयममुत्र वै ॥१॥
न दारान् करिष्येऽहमिति मे भावितं मनः।

हे पितृगण! मेरे हृदय में यह विचार निरन्तर घूमता रहता है कि मैं ऊर्ध्वरेता (अखण्ड ब्रह्मचारी) होकर इस शरीर को परलोक में पहुंचाऊं, अतः मैंने दृढ़ निश्चय कर लिया है, मैं विवाह नहीं करूंगा।

बन्धु बांधवों के निरन्तर आग्रह को देखते हुए ब्रह्मचारी जरत्कारु ने इस शर्त के साथ विवाह करना स्वीकार किया कि मैं उस कन्या के पालन पोषण का भार वहन नहीं करूंगा और दूसरी शर्त यह है कि यदि वह मेरा अप्रिय कार्य करेगी तो मैं उसे तुरन्त छोड़ दूंगा।

दोनों शर्तें स्वीकार करके नागराज वासुकि ने अपनी बहन का विवाह जरत्कारु मुनि से कर दिया। कुछ काल पश्चात् एक दिन अचानक मुनि जरत्कारु गर्भवती पत्नी को छोड़कर चले गये और पूर्ववत् तपस्या में लीन होगये। उनकी पत्नी अपने भाई नागराज वासुकि के भवन में रही और यथा समय उसके गर्भ से अति तेजस्वी कुमार उत्पन्न हुआ जो "आस्तीक" नाम से विख्यात हुआ और जिसने भृगुकुलोत्पन्न च्यवन मुनि से अंगों सहित वेदों का अध्ययन किया।

इसी प्रकार महाभारत में आरुणि, उपमन्यु, वेद और उतंक आदि की अनेक शिक्षाप्रद कथायें हैं। भारत के प्राचीन इतिहास में जितने महापुरुषों अथवा देवो देवताओं का वर्णन मिलता है उतना मेरे विचार से किसी भी अन्य देश में उपलब्ध नहीं है। इसका मुख्य कारण मैं यहां की वेद वेदांग की संयम तथा सदाचारपूर्ण शिक्षा ही समझता हूं। जब से इस शिक्षा का ह्रास हुआ है और विदेशी शिक्षा एवं संस्कृति का प्रचलन हुआ है तब से हम पतनोन्मुख हैं और निरन्तर नीचे जारहे हैं। आज के मानव के सम्मुख जो विभीषिकायें हैं उनको संयम और साधना के द्वारा ही दूर किया जा सकता है।

—वेदव्रत शास्त्री

आर्य वीरदल की स्थापना

दिनांक १४ दिसम्बर को आर्यसमाज दादरी के रविवारीय सत्संग में ब्रह्मचारी संजयदेव ने वेदोपदेश किया। इस अवसर पर उन्होंने आर्य वीरदल की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। सत्संग के बाद एक बैठक की एवं आर्य वीरदल की स्थापना की घोषणा की। आर्यसमाज दादरी के पदाधिकारियों ने आर्य वीरदल को पूर्ण सहयोग देने का वचन दिया।

संजीवकुमार मिश्र
नगर नायक आर्य वीरदल दादरी शहर (भिवानी)

वैज्ञानिक चिन्तन और नशाबन्दी

प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

जैसे ही व्यसनमुक्ति, नशाबन्दी तथा जीवन में संयम की बात चलती है तो तथाकथित आधुनिक बुद्धिजीवी लोग इन्हें बोसीदा और दकियानूसी बातें कहकर खिल्लो उड़ाने से नहीं चूकते। वे इसे मानव के बुनियादी अधिकारों पर कुठाराघात भी कहते हैं। व्यक्ति क्या खाता-पीता है, कैसा व्यवहार घर में और बाहर करता है, उससे किसी का क्या लेना देना, इस मामले में हर व्यक्ति स्वतन्त्र है और उसकी स्वतन्त्रता पर अंकुश लगाना उसे मानव के बुनियादी अधिकारों से वंचित करना है। सभ्य समाज में यह सब कुछ गलत है, सबको स्वच्छन्द जीवन जीने का हक है। ऐसी बातें करनेवाले सभ्य समाज में बैठने बरतने के तौर तरीकों को जानते ही नहीं। जब श्री मोरार जी देसाई ४ वर्ष में सारे भारत में शराबबन्दी लागू करने की कहते थे तब श्री पीलूमोदी जैसे व्यक्ति बुनियादी हकूक के संरक्षक, आधुनिक बुद्धिजीवी के नाते विरोध करते थे।

ऐसे लोग अपने आपको अति आधुनिक कहते हैं और अपने चिन्तन को वैज्ञानिक चिन्तन कहते हैं परन्तु जब नशों के कारण शारीरिक और मानसिक रोगों से ग्रस्त लोग अपने उपचार के लिये डाक्टरों के पास पहुंचते हैं और उन डाक्टरों में से ही इन बीमारियों और बीमारों की खोजबीन करते हैं और मानव शरीर और मस्तिष्क पर होने वाले कुप्रभावों को गिनाने लगते हैं, तब तथाकथित बुद्धिजीवी और मानव अधिकारों के संरक्षक बगलें झांकने लगते हैं। ऐसी हालत में वे एक ही बात कहकर पीछा छुड़वाने की कोशिश करते हैं कि माना नशों से मनुष्य का शरीर और मन रोगी होते हैं, उसकी उन्नति का मार्ग रुकता है, आर्थिक रूप से वह बर्बाद भी होता है, उसका पारिवारिक जीवन भी नष्ट होता है, परन्तु हम कौन होते हैं किसी को नशे से रोकने वाले, हां व्यक्ति को अपना भला-बुरा देखकर स्वयं ही फैसला करने दो, वह अपनी बर्बादी को देखकर स्वयं उस रास्ते को छोड़ देगा। हम किसी की स्वतन्त्रता पर छापा मारने वाले कौन होते हैं ?

यहां आकर हमारे आधुनिक चिन्तन करने का दावा करनेवाले लोग फंस जाते हैं। जब कोई व्यक्ति अपने काम और व्यवहार से अपने लिये ही नहीं बल्कि दूसरों के लिए, अपने परिवार के लिये और समाज के लिये खतरा बनता है तब शासन को उसे अपराध मानना पड़ता है, उस अपराध को रोकने के लिये कानून बनाना पड़ता है और अपराधी को सजा भी देनी पड़ती है। तथाकथित व्यक्ति की स्वतन्त्रता के पोषकों को अब अपनी दलील में अराजकता की भनक पड़ने लगती है। उनको यह भी सोचना पड़ता है कि क्या दूसरों के अनुभव का लाभ उठाकर उसे उनके द्वारा की गई गलतियों के

अतएव उनको जो हानियां उठानी पड़ीं, क्या हम भी वही गलतियां करके हानि उठायें या उनसे बचें। यदि दूसरों के अनुभवों का लाभ नहीं उठायेंगे तो यही नहीं कि जिन हानियों से बचा जा सकता है, अपनी मूर्खता से उन्हीं के शिकार बनना पड़ेगा। उन्नति और विकास तो तभी सम्भव है कि पुराने लोग अपने अनुभवों और प्रयोगों से जहां तक पहुंच चुके हैं, नये लोग उसको अंगीकार करें और उस से आगे की खोज में लग जायें। विज्ञान की उन्नति का यही तो रहस्य है। दूसरों के अनुभवों से लाभ उठाकर आगे बढ़नेवाला आधुनिक और वैज्ञानिक चिन्तन करनेवाला है या अनुभव की हुई चीजों में ही सिर मारते रहने वाला? दकियानूस वह है जो दूसरों के अनुभवों से नहीं सीखता, आधुनिक और बुद्धिजीवी तथा वैज्ञानिक चिन्तन वाला वह है जो पुरानी उपलब्धियों को आत्मसात् करके उससे आगे बढ़ता है और मानव समाज को नये से नये अनुसंधानों से लाभ पहुंचाता है।

क्या इतिहास में और रोज-रोज के जीवन से ये तथ्य सुस्पष्ट नहीं हो गये कि मादक द्रव्यों का, नशीली वस्तुओं का सेवन करनेवाला, अपना स्वास्थ्य खोता है, मानसिक सतुलन खोता, सयमहीन हो जाता है। अपने बच्चों को तथा परिवार को तहस-नहस करता है, जीवनसंगिनी पर अत्याचार करता है, दुर्घटनाओं से निर्दोष व्यक्तियों की हत्या का कारण बनता है, अपनी उत्पादकता शक्ति का ह्रास करता है, भ्रष्टाचार को पनपाता है, समाज के ढाचे को दूषित करता है, अपने परिवार तथा राष्ट्र की उन्नति में बाधक बनता है। जो इन बातों को समझ कर मादक द्रव्यों का सेवन करने वालों के कारण होनेवाली हानियों को देखकर अपने आपको तथा समाज को इन से बचाने का यत्न करता है, क्या आप उसे दकियानूस कहेंगे या उसको जो सबको बर्बादी के रास्ते पर जाने की छूट की वकालत करता है।

आज विश्व के सभी चिन्तनशील व्यक्ति यह अनुभव करने लगे हैं कि यदि व्यसनों से मुक्त करने का बीड़ा नहीं उठाया तो उनका राष्ट्र यही नहीं कि दूसरे राष्ट्रों से पिछड़ जायेगा, बल्कि उसका उन्नति के मार्ग पर आगे बढ़ना रुक जायेगा। मादक द्रव्यों के तस्करों और व्यापारियों से सब राष्ट्र त्रस्त हैं और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इस प्रकार के कुत्सित व्यापार और अपराध रोकने के प्रयास मिलकर किये जारहे हैं। वैसे तो सभी उन्नत राष्ट्रों में व्यसन मुक्ति का आंदोलन आगे बढ़ रहा है परन्तु रूस ने तो बाकायदा अभियान ही छेड़ दिया है। रूस के महानतम नेता श्री गोर्बाचोफ ने तो अपने मन्त्रीमण्डल से नशा करनेवाले और भ्रष्ट लोगों को निकालना शुरु कर दिया है। वे दूसरे देशों में जाते हैं तब भी फलों का रस या चाय लेते हैं, शराब को पास तक नहीं फटकने देते। विद्यार्थियों और २१ वर्ष तक के सभी नवयुवकों के लिये नशे की वस्तुयें खरीदने पर प्रतिबन्ध लगा दिया है। अमरीका के लोग भी व्यसनों से मुक्ति के प्रयास में लग रहे हैं।

विज्ञान ने आज इतनी तरक्की करली है और कम्प्यूटर और इलेक्ट्रोनिक्स के इस युग में बटन दबाकर ही बड़े से बड़े यन्त्रों, राकेटों, हथियारों, अन्तरिक्ष यानों, मिसाइल्स तथा परमाणु अस्त्रों को चलाया जाता है। एक बटन गलत दबा दिया जाये तो कितना खतरनाक युद्ध छिड़ सकता है और मानव समाज का कितना नुकसान हो सकता है, इसका अनुमान लगाना भी कठिन है। लाठी, भाले,

तलवार, बन्दूकों आदि को लड़ाई में बहुत अधिक सूझ-बूझ, मुस्तैदी चेतनता विवेक आदि की आवश्यकता नहीं थी। शराब पिलाकर हथियार दे देने से दुश्मन के लोगों को पागल होकर मारने के लिये योद्धा पिल पड़ते थे और यदि बेहोशी में अपनों पर भी वार कर जायें तो बहुत थोड़ा नुकसान हो सकता था परन्तु इस विज्ञान के युग में थोड़ी-सी लापरवाही, बेसमझी या नशे की बेहोशी में गलती हो जाये तो राष्ट्र के राष्ट्र ही नहीं पूरा मानवसमाज ही खतरे में पड़ सकता है। इसलिये विज्ञान के इस युग में नशाबन्दी, स्वस्थ चिन्तन और संवेदनशीलता का महत्त्व बहुत अधिक हो गया है। इसीलिये सभी उन्नत राष्ट्रों के नायक तथा चिन्तनशील व्यक्ति मानवसमाज को व्यसनों से मुक्ति दिलाने के लिये गम्भीरता से सोचने लगे हैं और कदम भी उठाने लगे हैं।

शराब एक पैशाचिक जहर है

—के० चातुकुट्टी मास्टर एम०ए०

शराब एक ऐसा मादक एवं पैशाचिक जहर है जो मनुष्य की शारीरिक एवं आर्थिक दशा को पूर्णतया बर्बाद करता है। एक बार शराब पीने में लग गया तो फिर पूर्व स्थिति में अथवा बिना पिये रहने में बहुत मुश्किल है। वह धीरे-धीरे शराब का आदी बन बैठेगा। पीने पर जो मद्यसार (एल्कोहल) नाड़ियों से संचार होकर जरा-सा उल्लास तथा आनन्द शायद प्रदान करेगा, मगर धीरे-धीरे वही आनन्द कम होता जायेगा और पहली दशा हासिल करने के लिये दुबारा शराब पीनी पड़ेगी। शराब ऐसी नशीली एवं खतरनाक चीज है जिसकी आदत हो गयी तो फिर सृष्टिकर्ता भी उसका उद्धार नहीं कर पायेगा।

युगों से हम शराब का दोष देखते आरहे हैं जो असल में पीनेवाले को हड्डियों का बोरा बनाकर छोड़ देता है। न जाने कितने ही परिवारों को शराब ने समूल बर्बाद कर डाला है? बड़े-बड़े महात्माओं ने शराब की बुराई पर जोर से अपनी कलम चलायी थी। लगभग पांच सौ वर्ष पहले महात्मा कबीरदास ने अपने एक दोहे में इस तरह बताया है कि शराब बुरी चीज है। लोग सच्ची बातों को छोड़कर झूठी बातों के पीछे दौड़ते हैं। जैसे—

'गली गली गोरस फिरै, मदिरा बैठि बिकाय।

अर्थात् दूध-दही वगैरह गोरस बेचने के लिये गली-गली घूमना पड़ता है, लेकिन शराब बेचने के लिये इस तरह घूमना नहीं पड़ेगा। सिर्फ एक जगह बैठे-बैठे शराब बेची जाती है। गोरस अच्छे साधन हैं और शराब बुरी चीज है। लोग प्राय: सच्ची बातों को स्वीकार करने में पसन्द नही करते, पर झूठी बातों को जितनी दूर जाना पड़े जाकर स्वीकार करते हैं और उसमें थकावट भी प्रकट नहीं करते।

मद्यपान मुल्क की कमजोरी एवं विपत्ति भी है। पियक्कड़ों की देहशक्ति और बुद्धिशक्ति दोनों नष्ट हो जाती हैं। आखिर बीमारी जब लाइलाज बन जाती है, अस्पतालों की शरण में जाना पड़ता है। अत: देश में तन्दुरुस्त समाज का अभाव होता है।

आजकल समाचारपत्रों में आया है कि सिंगापुर देश का प्रेसिडेण्ट श्री देवन नायर बुरी तरह शराबी होने के कारण प्रेसिडेण्ट का पद स्वयं छोड़कर उच्च चिकित्सा के लिये अमेरिका गये थे। उन्होंने इस्तीफा देकर कहा कि अति मद्यपान से अपना मन काबू नहीं आता। अत: राजकाज करने में मन ठिकाने नहीं आयेगा। श्री देवन नायर केरलीय हैं। प्रेसिडेण्ट का स्थान मिलने पर केरलीय जनता ने उन्हें हार्दिक बधाइयां दी थीं, पर शराब ने उनका सर्वस्व मिट्टी में मिला दिया। मस्ती की

चरम सीमा पर पहुंचे हुए शराबी की मनोदशा का चित्रण कविवर हरवंशराय बच्चन जी ने अपनी 'मधुशाला' में यों गाया है—

मैं मदिरालय के अन्दर हूं मेरे हाथों में प्याला, प्याले में मदिरालय बिंबित करनेवाली है हाला।
इसी उधेड़-बुन में ही मेरा सारा जीवन बीत गया, मैं मधुशाला के अन्दर या मेरे अन्दर मधुशाला।

कहते हैं कि रूस के प्रधानमन्त्री श्री चेरणंकोव की मृत्यु अमित धूम्रपान के कारण हुई है। यद्यपि वे ६८ वर्ष के थे। इस सबसे यह साफ है कि देशों के ऐसे उन्नत व्यक्ति भी शराब व नशीली चीजों के शिकार हो चुके हैं।

आजकल विदेशों में भी नशाबन्दी का आयोजन हो रहा है। चीन में एक गांव पूरी तरह से धूम्र-पान रहित हुआ है जिससे उस गांव का नाम 'नान स्मोकिंग विलेज' रखा गया है। हम भी क्यों ऐसा नहीं कर सकते? चार-पांच वर्ष के निरन्तर प्रयत्न से एक गांव 'नान ड्रिंकिंग विलेज' अथवा 'बेशराबी गांव' बना सकते हैं। आज यूरोप और अमेरिका आदि देशों में नशीली चीजों को दूर करने की कोशिश की जारही है। भारत में भी ऐसी दशा होनी चाहिये। सबसे पहले हमें आनेवाली नयी पीढ़ी को मद्य-पान से पूर्णतया विमुक्त कराना अनिवार्य होगा। फिर सम्पूर्ण मद्यनिषेध का श्रीगणेश होना चाहिये। भारत स्वतन्त्र होने से पहले भी जब अंग्रेजी सरकार यहां थी तब भी महात्मा गांधी जी के आह्वान के आधार पर शराबबन्दी के लिए मधुशालाओं के सामने पिकेटिंग हुआ करती थी। कुछ हद तक वह सफल भी हुआ था। सन् १९३७ में जब भूतपूर्व भारत के प्रथम गवर्नर जनरल श्री राजगोपालाचारी मद्रास के मुख्यमन्त्री बने थे तब से सीलम जिले में सम्पूर्ण मद्यनिषेध का नियम अमल में लाये। इससे वहां की स्त्रियां अत्यन्त सन्तुष्ट हुई थीं। कुछ महीने के बाद राजा जी जिले का दौरा करने निकले तो सड़क के दोनों तरफ भारी भीड़ लगी हुई थी। स्त्रियों ने फूलों की वर्षा की। वे राजा जी की जय बोलने लगी और जय-जयकार से अन्तरिक्ष मुखरित हुआ। राजा जी के यात्रा पथ में लगी हुई भीड़ का चित्र उस समय के समाचारपत्रों में आया था।

(नशाबन्दी सन्देश सितम्बर, ८५ से साभार)

जनता को शराब किस मोड़ पर ले जा रही है

ओम्प्रकाश पारीक

हमारे भारतवर्ष में वैसे तो निहितस्वार्थों के लिए जनस्वास्थ्य के दुश्मनों की कोई कमी नहीं है, बड़े ही दुःख के साथ यह लिखना पड़ता है कि मद्यनिषेध के बढ़ते हुए प्रचार कार्यक्रमों के बावजूद शराब सेवन करनेवालों की संख्या बढ़ती ही जारही है। एक लम्बे अर्से से सारी बुराइयों की खान मानी जानेवाली शराब अब सभ्य समाज की पैंठ से निकल कर गांवों और विशेषकर युवकों व महिलाओं पर भी अपना दुष्प्रभाव छोड़ती जारही है। इस शराब में एक बहुत बड़ा अवगुण है वो है–उजाड़ प्रक्रिया। इस अवगुण से निम्न व मध्य वर्गीय परिवार प्रभावित होने लगे हैं। इस उजाड़ प्रक्रिया के सम्बन्ध में एक दन्तकथा भी कही जाती है—

एक खेत में एक बुढ़िया अपने तीनवर्षीय पोते को खिला रही थी और इसको कुकुर खांसी आरही थी। बच्चा बहुत तंग आगया था, दूसरी तरफ से एक घुड़सवार गुजर रहा था। बुढ़िया ने उसे आवाज देकर रोका और पूछा—

'मेरे पोते को कुकुर खांसी आरही है उसे क्या दूं? तो घुड़सवार ने झट से जवाब दिया—कि इसे शराब पिलाओ। फिर बुढ़िया बोली कि क्या शराब से इस बच्चे की कुकुर खांसी चली जायेगी?

घुड़सवार ने उत्तर दिया कि मेरी दो सौ एकड़ जमीन इस शराब के पीने से चली गई, फिर यह खांसी तो इस शराब के आगे है ही क्या? तो जनाब यह शराब इस प्रकार से उजाड़ प्रक्रिया को जन्म देती है। इस शराब के सेवन करनेवालों की संख्या दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति पर आती जा रही है।

क्या इसके सेवन से यह देश जीवित रह सकेगा? चाहे धार्मिक मान्यतायें हों, चाहे सामाजिक संविधान, मद्यपान को सामाजिक अपराध सभी स्वीकार करते हैं।

हमारे देश में शराब का अन्धा धन्धा बड़े जोरों पर है। इस पर यदि किसी ने कदम उठाया भी था तो अब वे लोग इस हालत में नहीं हैं कि कोई कारगर कदम उठा सकें। जहरीली शराब पी लेने से कुछ विशेष कांड होने पर सरकार ने अपने लड़खड़ते कदमों को सहारा तो जरूर दिया परन्तु जन प्रतिनिधियों व प्रशासनिक अधिकारियों पर नियम लागू करके ही अपने दायित्व से मुक्ति पा ली। यानी केवल राजस्व के चक्कर में यह खमियाजा अपने ही देश की जनता को भुगतना पड़ रहा है। हमारे देश में ५० प्रतिशत शराब के सेवन करनेवाले लोग ऐसे हैं जिन्हें यह नहीं मालूम कि यह शराब केवल क्षणमात्र के लिए एक अलग दुनियां में ले जायेगी, फिर इसी दुनियां में आना है। इस अलग दुनियां के उदाहरण हम रोजाना सुनते हैं। जैसे किसी के घर में मेहमान आये हुए हों और वह शराब में धुत होकर गली के कूड़े-कचरे में लेटते हैं। क्या ये मेहमान वहां पर लेटकर इज्जत पाते हैं? नहीं

ये तो एक अलग दुनियां में पहुंच कर ही अपने आपको इज्जतदार मानते हैं। यदि इनके दो-चार चांटे लगा दिये जायें तो इनकी इज्जत का ढेर हो जाता है।

भारत में शराब की रोक विभिन्न नियमों कानूनों से करने की वकालत की गई थी परन्तु खास बात तो यह रही कि इसकी वकालत करनेवाले कई सज्जन भी इसकी बेड़ियों में जकड़े बिना नहीं रह सके। यह शराब प्रत्येक वर्ग पर अपना दुष्प्रभाव छोड़ती जारही है। कुछ लोग यह कहते सुने गये हैं कि देशी शराब की बजाय विलायती शराब फायदा करती है। ऐसा कभी प्रचार किया गया था जो महज धोखा मात्र था, क्योंकि शराब चाहे देशी हो या विदेशी दोनों में ही अल्कोहल पानी व ईथाइल अवश्य होता है और नुकसान दोनों ही करती हैं।

सारे राज्यों में मद्यनिषेध व समाजोत्थान के लिए विभिन्न विभाग खोले गये हैं, फिर भी शहर के प्रमुख स्थानों पर शराब की सजी धजी आकर्षित दुकानें मिलती हैं। हमारे देश में अपराध करनेवाले अधिकतर शराब के आदी पाये जाते हैं। गत कई वर्षों में शराब के उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। लाखों लोग शराब के उत्पादन में संलग्न हैं। देश में अरबों रुपया आबकारी शुल्क के रूप में वसूल किया जाता है। यह कहना कितना हास्यास्पद लग रहा कि हम खुद शराब के जरिए मिल रही लाखों अरबों रुपये की आमदनी खत्म नहीं करना चाहते। हम सभी इसके दुष्प्रभाव को जानते हैं मगर इन्हें काबू में नहीं कर पारहे हैं।

आखिर यह दानवी शराब हमें किस मोड़ पर ले जायेगी, यह तो आनेवाला कल ही बतायेगा किन्तु हमारे देश के प्रत्येक नागरिक का तो केवल यह कर्त्तव्य जरूर ही बनता है कि वे इस शराब के आदी न हों, इस पर रोक लगाने की जी-जान से कोशिश करें।

(दैनिक भारत जननी से साभार)

धूम्रपान करनेवालों के बच्चे अधिक रोगी होते हैं

नई दिल्ली, १४ दिसम्बर। जिन बच्चों के मां-बाप धूम्रपान करते हैं उन्हें निमोनिया और ब्रोंकाइटिस रोग होने की अधिक सम्भावना होती है।

अमरीकी विज्ञान अकादमी के अनुसार जिस घर में सिगरेट पीनेवालों की संख्या ज्यादा होती है उस घर के बच्चों को सांस से सम्बन्धित बीमारियां तथा खांसी आदि की तकलीफ उतनी ही अधिक होगी। अकादमी ने चेतावनी दी है कि ऐसी स्थिति में यह खतरा ८० प्रतिशत तक बढ़ सकता है, जिस घर में मां धूम्रपान करती हो उसके बच्चे को ये बीमारियां होने की सम्भावना बहुत अधिक हो जाती है। अकादमी का कहना है कि इस बात का प्रमाण है कि सिगरेट के धुयें से बच्चों के विकास पर प्रभाव पड़ता है।

जो लोग सिगरेट नहीं पीते पर किसी प्रकार सिगरेट का धुआं श्वास द्वारा उनके शरीर में जाता है, उनके स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। अनेक देशों में किये गये अध्ययनों से पता चलता है कि जो लोग धूम्रपान करते हैं उन्हें धूम्रपान नहीं करनेवालों की तुलना में कैंसर होने की तीस प्रतिशत अधिक सम्भावना होती है।

गीत–बुरों की भलाई करना आदर्श परोपकार

पृथ्वीसिंह बेधड़क आर्य भजनीक

टेक—बुरों की भलाई करना सबसे अच्छा काम है।
छुड़ादे बुराई उसकी जिससे वह बदनाम है॥

छोड़कर बुराई बुरा अच्छे काम करने लगे।
शायद उसको देख उसका भाई भी सुधरने लगे।
बताओ तो इससे अच्छा और क्या प्रोग्राम है।
छुड़ादे बुराई उसकी जिससे वह बदनाम है॥१

कोई बुरा होता नहीं बुरी हों बुराइयां,
लूटता था रोजाना जो लोग और लुगाइयां।
जिसका आज सिद्ध ऋषि वाल्मीकि नाम है,
छुड़ादे बुराई उसकी जिससे वह बदनाम है॥२

शिक्षा देकर दूर करो अज्ञानी की अज्ञानता,
अगर शिक्षा देने पर भी किसी की नहीं मानता।
फिर तो उस पापी के लिए राम है घनश्याम है,
छुड़ादे बुराई उसकी जिससे वह बदनाम है॥३

मुसलमान ने ही मुसलमान को बर्बाद किया,
भारत ने कुर्बानी करके बंगला को आजाद किया।
पूछो जिया से क्या अब भी खतरे में इस्लाम है,
छुड़ादे बुराई उसकी जिससे वह बदनाम है॥४

बहादुरशाह जफर का बेटा एक रोज मथुरा गया,
दयानन्द के पैर पकड़े पांच गिन्नी देकर कहा।
खुदा के फरिश्ते तुझे शाह का सलाम है,
छुड़ादे बुराई उसकी जिससे वह बदनाम है॥५

स्वामी दयानन्द ने कहा था तहसीलदार को,
छोड़ दो शराब सुनो वेद के प्रचार को।
अमीचन्द तू हीरा है पर वेश्याओं का गुलाम है,
छुड़ादे बुराई उसकी जिससे वह बदनाम है॥६

पिलाया था दूध जहर गेर करके किसी ने;
पांच सौ रुपये दे करके कहा था यह ऋषि ने।
दयानन्द की तरफ से यह आपको इनाम है,
छुड़ादे बुराई उसकी जिससे वह बदनाम है ॥७

ईश्वर की असली भक्ति सत्यार्थप्रकाश मे,
यस्य नाम महद्यशः ग्यारहवें समुल्लास में।
सबसे अच्छा जाप ओ३म् नाम न्याम शाम है,
छुड़ादे बुराई उसकी जिससे वह बदनाम है ॥८

एक डेढ मिनट बाकी रह गया था फांसी का,
कितना अच्छा फिकरा था यह भक्त ईसामसी का।
'गुड बाइ एण्ड फोरगेट' आखिरी कलाम है,
छुड़ादे बुराई उसकी जिससे वह बदनाम है ॥९

कृष्ण जैसी नीति रहे राम-सी मर्याद रहे,
पृथ्वीसिंह बेधड़क कहे शासन प्रजावाद रहे।
जिला मेरठ अन्दर जिसका शिकोहपुर ग्राम है,
छुड़ादे बुराई उसकी जिससे वह बदनाम है ॥१०

टिप्पणी—आर्यसमाज के सुविख्यात आर्य भजन उपदेशक वीर आशु कवि चौधरी पृथ्वीसिंह बेधड़क ने अपने स्वर्गवास से कुछ पहले, दुर्जनों के सुधार तथा उनके दोष निवारणार्थ १० पद्यांशों का यह गीत बनाकर गया था। जैसे साधुओं के सत्संग से रत्नाकर डाकू कवि वाल्मीकि ऋषि बना था। भारत ने बंगला देश स्वतन्त्र कराया। गुरु विरजानन्द की राजनैतिक गुप्त मथुरा पंचायत श्रीकृष्ण जन्माष्टमी सं० १९१३ वि० में दिल्ली नरेश बहादुर शाह का बेटा फिरोजशाह ने गुरु को पांच गिन्नी भेंटकर सम्मान किया तथा अपने पिता का भी सम्मान सन्देश दिया था। वह शाहजहा संग्राम हार के पश्चात् मक्का मदीना जाकर सन् १८९६ ई० में गुजरा था। महर्षि दयानन्द के उपदेश से अमीचन्द आर्य भजनीक बना। विषदाता जगन्नाथ को महर्षि ने पाच सौ रुपये दिये, वह पश्चात्तापपूर्वक दुर्गति सहित मरा। कहा है ईसामसीह ने फांसी के समय भी परोपकार की बात कही थी। ईश्वर भक्ति तथा ओ३म् स्मरण सर्वश्रेष्ठ उपासना है, दुराग्रही दुष्टों के लिए राम कृष्ण का दण्ड चाहिए। चौ० पृथ्वीसिंह का ग्राम शिकोहपुर है।

प्रेषक—निहालसिंह आर्य २५-९-८५

ग्राम गोकल में यज्ञ एवं युवा जागृति

७ दिसम्बर, १९८६ को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के युवा विद्वान् ब्रह्मचारी सजयदेव ने ग्राम गोकल (भिवानी) में यज्ञ करवाया। इस अवसर पर ५ युवकों को यज्ञोपवीत दिया गया। ब्रह्मचारी जी ने अपने व्याख्यान में यज्ञोपवीत के महत्त्व पर बड़े ही भावपूर्ण ढंग से प्रकाश डाला। युवकों ने उनके आह्वान पर अपने जीवन से दुर्गुण छोड़ने का संकल्प लिया।

अहिंसा परमो धर्मः

मनुष्य प्रकृति से शाकाहारी प्राणी है, मांसाहारी नहीं

विश्व के सभी धर्मों के धर्मगुरुओं, देश और विदेश के महान् वैज्ञानिकों ने, डाक्टरों ने यही कहा है कि मनुष्य जीवन के लिये शाकाहार ही श्रेष्ठतम आहार है। किसी भी धर्म में मांस खाना जायज नहीं है। यदि मांस खाना मनुष्य का धर्म होता तो उसके भी दांत और नाखून टेढ़े होते और वह भी चप-चप करके पानी पीता। मनुष्य अपने स्वाद के लिये मासूम और निर्दोष जीवों की हत्या करके खाता है, अपने पेट को कब्र बनाता है।

अण्डों में ६ प्रकार के विष होते हैं

अण्डे ताकत देनेवाले नहीं, बल्कि प्राणघातक हैं। अण्डों में ६ प्रकार के विष होते हैं, जिनसे दिल की बीमारी हाईब्लडप्रेशर, कैंसर, लकवा, आंतों में जख्म आदि भयंकर रोग उत्पन्न होजाते हैं। विश्व के बड़े-बड़े डाक्टरों ने यह सिद्ध कर दिया है कि अण्डा सैंकड़ों रोगों की जड़ है। शाकाहारी अण्डा मिथ्या और भ्रामक प्रचार है। यह मुर्गी का गर्भपात है, अण्डे पेड़ पर पैदा नहीं होते, इसलिये शाकाहार नही हो सकते।

शराब जीवन के लिये अभिशाप है

शराब वह जहरीली नागिन है, जिसका विष प्राणघातक होता है। शराब के कारण घर के घर बर्बाद हो जाते हैं। सभ्य समाज में शराब सभी कुकर्मों की जड़ है। जितना शराब का प्रयोग बढ़ रहा है, उतने ही अपराध बढ़ रहे हैं। शराब से टी० बी०, कैंसर, हार्ट फेल व खून की उल्टी आदि भयंकर रोग हो जाते हैं।

शाकाहार ही सर्वश्रेष्ठ आहार है

शाकाहार में हर प्रकार की प्रोटीन, चिकनाई, खनिज लवण, लोहा, विटामिन आदि जीवन और स्वास्थ्य के लिये सभी आवश्यक तत्त्व मौजूद हैं। आप शाकाहारी बनें।

सामाजिकता, नैतिकता, धार्मिकता और मानवता की दृष्टि से त्याज्य मांस, अण्डे और शराब का प्रयोग न करें।

जैन मिशन समिति,
मोहल्ला पिथवाड़ा, रोहतक (हरयाणा)

गुरुकुल वेद मन्दिर फतेहाबाद द्वारा वेदप्रचार

गुरुकुल वेद मन्दिर की ओर से ग्राम मताना, आर्यों की ढाणी तथा ग्राम धांगड़ में वेदप्रचार किया गया। जिसमें स्वामी सुमेधानन्द जी का उपदेश तथा श्री ब्र० धर्मपाल नैष्ठिक व नौरंगलाल जी आर्य की भजनमण्डली ने भाग लिया। रात्रि को वेदप्रचार तथा प्रातः यज्ञ का आयोजन किया गया। इसी प्रकार सितम्बर के मास में श्री पं० चिरंजीलाल जी द्वारा ग्राम मोड़िया खेड़ा, मानावाली माधोसिंघाणा, चिलकनी, मुन्नावाली, मोगामेड़ी, जांडवाली व सिरसा में प्रचार करवाया गया।

रूस में शराबबन्दी : क्या अब भी हमारी आंखें न खुलेंगी ?

रूस की कम्युनिस्ट पार्टी के महामन्त्री श्री मिखाइल गोर्बाचोफ पिछले सप्ताह भारत के दौरे पर थे।

२७ नवम्बर के पंजाब केसरी में पत्र के दिल्ली संस्करण के सम्पादक श्री अश्विनी मिन्ना ने एक लेख लिखा है। शीर्षक है—गोर्बाचोफ के खुली हवा के झोंके। यह लेख हम भारतीयों की आंखें खोलने वाला है। इसके मुख्य-मुख्य अंश नीचे दिये जारहे हैं—सम्पादक

श्री गोर्बाचोफ शराब नहीं पीते और उन्होंने शराब के विरुद्ध एक जोरदार अभियान भी अपने देश में चला रखा है, क्योंकि सत्ता में आने के बाद उन्होंने यह महसूस किया कि शराब के बढ़ते हुए प्रयोग के कारण रूस के लोगों की उम्र कम होती जारही है, बच्चों में जन्मजात रोग बढ़ रहे हैं और लोगों में लापरवाही और अनुशासनहीनता भी बढ़ रही है। २५ नवम्बर को जो स्वागत समारोह दिल्ली के हैदराबाद हाउस में श्री गोर्बाचोफ के सम्मान में आयोजित किया गया, उसमें भी वोदका नहीं, शेम्पेन नहीं, बल्कि फ्रूट जूस का गिलास उठाकर ही श्री गोर्बाचोफ के स्वास्थ्य सुख और समृद्धि की कामना की गई है।

जो अभियान शराब के विरुद्ध श्री गोर्बाचोफ ने चला रखा है, उसके अन्तर्गत—

❀ शराब की बिक्री कम करदी गई है।

❀ आम सरकारी भोजों में शराब का इस्तेमाल बन्द कर दिया गया है।

❀ शराब पीकर सड़कों पर गिरनेवालों की सजायें सख्त की गई हैं।

❀ पार्टी के १८० लाख कार्यकर्त्ताओं को शराब के विरुद्ध प्रचार करने के काम पर लगाया गया है और यह चेतावनी दी गई है कि जो लोग अधिक शराब पीते हैं, उन्हें पार्टी से निकाल दिया जायेगा।

❀ वोदका (रूसी शराब) की कीमतें बढ़ा दी गई हैं ताकि लोग कम शराब खरीदें।

❀ शराब की दुकानें अब केवल शाम को दो बजे से सात बजे तक खुलती हैं और सप्ताह के अन्तिम दो दिन बन्द रहती हैं।

❀ यह प्रचार बहुत जोर से किया जारहा है कि अमरीका में शराब पीने के कारण ४० हजार लोग हर साल सड़क दुर्घटनाओं में मर जाते हैं। अतः इस अभिशाप से रूसी समाज को मुक्त किया जाना चाहिये।

रूस के लोगों में अब एक आम धारणा यह बनती जारही है कि यदि श्री गोर्बाचोफ का अभियान इसी तरह जारी रहा तो एक दिन वह भी आ जायेगा, जब रूस में शराब का नामोनिशान तक नजर नहीं आयेगा।

सारांश यह कि नशाबन्दी की दिशा में श्री गोर्बाचोफ वही काम कर रहे हैं, जिसका सपना सब से पहले भारत में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने देखा था और जिसे पूरा करने की कोशिश पहले मुख्य मन्त्री के रूप में बम्बई में और फिर प्रधानमन्त्री के रूप में भारत में श्री मोरारजी देसाई ने की थी। मगर दुर्भाग्यवश उस पर पानी फिर कर रह गया और अब इस देश में शराब का प्रयोग बढ गया है।

लोगों को पीने के लिए पानी मिले न मिले, शराब हर जगह मिल जाती है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का युग

लेखक—सहदेव आर्य आदर्श नगर, जींद (हरयाणा)

श्रद्धानन्द स्वामी का युग-युग नाम रहेगा यहां अमर।
प्राण किये उत्सर्जित जिसने देश धर्म व जाति पर॥

श्रद्धा से श्रद्धानन्द बने श्रद्धा से जग में नाम किया।
दयानन्द के शिष्य ने पी देशभक्ति का जाम लिया।
जो शुरु किया पूरा कर छोड़ा ताक में रख आराम दिया।
अंग्रेजी को त्याग संस्कृत का जिसने पैगाम दिया।
वो महातपस्वी सेनानी वो जगद्वंद्य वो विश्वम्भर।
प्राण किये—……

आजादी के लिए क्रांति की ज्योति जगाई इधर-उधर।
सीना ताने खड़े हो गए संगीनों की नोकों पर।
कहा शेर ने—अगर इष्ट है निर्दोषों का ही संहार।
तो सबसे पहले तुम गोली करदो मम सीने से पार।
झुकी बन्दूकें ऐसा कुछ प्रभाव पड़ा उन गोरों पर।
प्राण किये………

मुस्लिम षड्यन्त्र रचते थे हिन्दुओं को बहुत घटाने को।
धर्म भ्रष्ट करके उनका फिर मुस्लिम उन्हें बनाने को।
सबसे पहले श्रद्धानन्द ने रोका उनके जाने को।
फिर शुद्धि का चक्कर चलाया वापस उन्हें लौटाने को।
जामामस्जिद से भी गुंजाया वेदों का दिव्य स्वर।
प्राण किये………

भूखों नंगों का जीवन में श्रद्धा से पोषण भरण किया।
वो श्रद्धानन्द था मौत का भी श्रद्धा से जिसने वरण किया।
वो दिव्य पुरुष जिसके कारण वेदों का प्रबल प्रचार हुआ।
और अन्त में वह इसके कारण धर्मान्धों का शिकार हुआ।
उस दिव्य आत्मा को भारत में फिर से भेजो हे ईश्वर।
प्राण किये………

शराब उत्पादकों व सरकार की देश के प्रति इस घातक व षड्यन्त्रकारी नीयत से आखिर विद्रोह करना ही होगा

महेन्द्र शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

भारतीय संविधान धारा ४७ में लिखा है "राज्य अपनी जनता के पोषक भोजन और जीवनस्तर को ऊंचा करने तथा लोक स्वास्थ्य के सुधार को अपने प्राथमिक कर्त्तव्य में से मानेगा तथा विशेषतया स्वास्थ्य के लिए हानिकारक मादक पेयों और औषधियों के औषधीय प्रयोजनों के अतिरिक्त उपयोग का निषेध करने का प्रयास करेगा।"

क्या भारत सरकार एवं राज्य सरकारें उक्त संविधान की धारा को सम्मान दे पारही हैं? जो जिम्मेदार व्यक्ति भारतीय संविधान के पालन व स्थापना हेतु शपथ खाकर उसका किसी भी प्रकार अपमान करता है तो क्या सख्त दण्ड का भागी नहीं है?

इस धारा से हमारा एक अभीष्ट उद्देश्य था किन्तु हमें यह कहते हुए खेद होता है कि यह कार्य अधूरे मन से और आंशिक ढंग से हुआ और अन्ततोगत्वा इसका परित्याग ही कर दिया गया तथा घातक षड्यन्त्र का शिकार हो गया। इसके लिए जो (शराबबन्दी विरुद्ध) कारण बतलाये गये वे किंचित्मात्र भी तथ्यों पर आधारित नहीं थे। सरकार निर्लज्जता से कह रही है कि शराबबन्दी से अवैध शराब का निर्माण, तस्करी एवं कानून की अवहेलना को बढ़ावा मिलता है। साथ में यह भी कि यह नीति (शराबबन्दी) कहीं सफल नही हुई, भारत में भी नहीं होगी और इतना ही नही अपितु यह भी कहा जाता है कि हम राजस्व के उस समृद्ध स्रोत को कैसे त्याग सकते हैं जो हमारी शिक्षा एवं समाजकल्याण सम्बन्धी योजनाओं को पूर्ण करता है।

मैं सरकार से प्रथम यह पूछना चाहता हूं कि क्या सरकार ने जगह-जगह शराब ठेकों को खोलकर अवैध शराब निकलनी बन्द करवादी है नहीं तो क्यों इस बेढंगे कुतर्क का सहारा ले रखा है। दूसरा इस बात के कहने का भी कोई तुक नहीं बैठता कि यह शराबबन्दी का कार्यक्रम कहीं भी सफल नहीं हुआ, यहां भी नहीं होगा। क्या भारत का सांस्कृतिक परिवेश धरातल अन्य जैसा है, नहीं तो फिर क्या एक देश व समय में किया प्रयोग दूसरे देश व समय में भी सर्वदा असफल ही होता रहेगा, कितनी बड़ी विडम्बना है। तीसरी यह बात तो बिल्कुल ही घातक व प्रवंचना से युक्त है कि शराब के राजस्व से लाभ होकर अच्छे कार्यों पर खर्च होता है। इस बात में तनिक भी सच्चाई नहीं है यह मैं आपको इस लेख में दर्शाने की कोशिश करूंगा।

इस देश में भूतकाल में शराब राजस्व कभी राज्य बजट का विषय नही रहा है। सम्पत्ति पर हमेशा कर लगता रहा है, पर शराब पीने पर नही, यद्यपि इसका प्रचलन था। सबसे पहले ब्रिटेन ने

आबकारी राजस्व को आय के स्रोत के रूप में जारी करने का निर्णय किया। कुछ अंग्रेजों ने निश्चय ही यह अनुभव किया कि इससे समाज के आर्थिक आधार व सामाजिक स्वरूप संकट ग्रस्त हो जावेंगे। इसी के फलस्वरूप नशाबन्दी जारी करने पर १८६० में हाउस आफ कामन्स द्वारा एक प्रस्ताव पारित किया गया। आज शराब के बहीखाते के केवल जमा पक्ष को देखते हैं। घाटे के पक्ष की ओर से तो आंखें बन्द रहती हैं। बदहोशी की हालत में एक व्यक्ति उस पीड़ा का अनुभव करता है जब शराब राजस्व उससे वसूल किया जाता है। यह उस व्यक्ति के समान होता है जिसका रक्त कष्टहर दवाई देने के बाद निकाल लिया जाता है।

इसका शिकार मुख्यतौर से गरीब होता है—

इस टैक्स का मुख्य भाग समाज के निर्धनवर्ग से इकट्ठा किया जाता है। शराब का कर उस समय वसूल माना जाता है कि जब करदाता की मानसिक शक्तियां दुर्बल होती हैं। उसकी निर्णय शक्ति धुंधली होती है और उसकी सोचनशक्ति निम्न स्तर पर होती है। यह अवसर आता है जब राज्य मध्य में आकर उसे पथभ्रष्ट करता है। उसे शराब पीने के लिए फुसलाया व लुभाया जाता है ताकि उससे टैक्स निकाला जा सके। उसके भीतर ऐसी तृष्णा उत्पन्न की जाती है कि वह उसे रोकने में असमर्थ होता है और जब वह इसका शिकार होता है तब राज्य राजस्व एकत्रित करने की खोज के मध्य उपस्थित हो जाता है और उसकी जेब काटता है। तब वह बड़ी मुश्किल से यह जान सकता है कि वह क्या खरीद रहा है और क्या कीमत अदा कर रहा है। ज्यों-ज्यों इस रकम की वसूली बढ़ती जाती है त्यों-त्यों क्रमशः नशे के आदी और शराब पीनेवालों की संख्या में बढोतरी होती रहेगी। अतः वे राष्ट्र पर बोझ बन जावेंगे। करदाता की चिन्तन शक्ति, अर्जन शक्ति और उसके काम करने की इच्छा पर आक्रमण करके यह कर लगाया जाता है। तंगी से जीवनयापन करनेवाले समाज के इस वर्ग में अनवरत बलपूर्वक पैदा की जारही शराब की यह आदत धीरे-धीरे दिवालिया और भिखारी की स्थिति तक पहुंचा देगी।

इसमें सरकार की हिस्सेदारी भी थोड़ी और घाटेवाली—जब राज्य एक रुपया प्राप्त करके सम्पन्न होता है, टैक्स देनेवाले को चार रुपये का घाटा पड़ता है। क्योंकि उसे टैक्स से चार गुणा अधिक देना पड़ता है। टैक्स इकट्ठा करने के रूप में सरकार कुल रकम के केवल २५ प्रतिशत स्वल्प मात्रा की हकदार होती है, बाकी ७५ प्रतिशत बड़े हिस्सेदार शराब उत्पादक व ठेकेदारों के पास जाता है। राजस्व के रूप में राज्य शराबी से एक गुणा वसूल कर चार गुणा दिलवाता है। यह बिक्रीकर सदृश नहीं है। जहां कर देने के बाद ग्राहक के हाथ में ऐसा सामान आता है जो बहुत देर तक मूल्यवान रहता है। इसकी तुलना सम्पत्ति कर से भी नहीं हो सकती, क्योंकि वहां सम्पत्ति का स्वामी ही टैक्स देता है। शराब टैक्स तो अन्यायपूर्ण, पतन को प्राप्त होनेवाला और समाज विरोधी है। शराब से प्राप्त राजस्व जितना राज्य के लिए अनुचित है उतना ही पीनेवाले के लिए भी। लाभ लेनेवाला बिचौलिया है। दरअसल स्थिति यह है कि वह केवल बिचौलिया हिस्सेदार ही नहीं है बल्कि एक ऐसी व्यवस्था है जिसके पीछे शराब पीनेवालों के स्वास्थ्य धन एवं चरित्र को नष्ट करने की अक्षरशः एक षड्यन्त्रभरी योजना है। बिचौलिया शोषक न केवल उपभोक्ता और उसके परिवार के ऊपर फलता-फूलता है बल्कि राज्य के सिर पर अपनी जेब भरता है।

अपराध बढ़ानेवाला राजस्व–

शराब के नशे में होकर जो अपराध किये जाते हैं उनकी जिम्मेदारी सरकार की होती है। घाटे के पक्ष पर विचार करते हुए मुकदमा चलाने पर, अस्पताल में रखे जाने पर, कार्य पर गैरहाजिर हो जाने पर, उसके साथ काम के घण्टों की क्षति, उद्योग के उत्पादन में कमी होना, कार्य करने की क्षमता व इच्छा पर धक्का लगना यह घाटे का दूसरा अंश है। राजस्व का यह नया ढांचा बीमारी, अशक्तता एवं शराबखोरों पर आधारित है। इसी से सम्बन्धित कैलीफोर्निया राज्य का अच्छा खासा उदाहरण है। एक खास साल में शराब कर २५ मिलियन डालर लगभग १७५ करोड़ रुपये जमा हुआ। इसी अवधि में सार्वजनिक स्वास्थ्य के राज्य निदेशक ने बतलाया इस शराब की वजह से चले मुकदमों, जिनमें अदालत, शेरिफ जेल और पागलगृह शामिल हैं, पर १७० मिलियन डालर लगभग १८९० करोड़ रुपया खर्च हुआ।

यह राजस्व भ्रांतिपूर्ण और अपराध बढ़ाने वाला है। सारी दुनियां में यही प्रबन्ध है कि जिनके पास बुनियादी ऐशो इशरत की बहुतायत है उन्हें राज्य को पर्याप्त मात्रा में अपना अंश देना चाहिए, क्योंकि राज्य ने ही उन्हें विशाल धनसंग्रह करने योग्य बनाया है परन्तु कर लगाने के लिए पाप को ऐशोइशरत के समक्ष नहीं रखा जा सकता। इस बात की कोई कल्पना नही कर सकता कि कोई राज्य उस व्यक्ति पर कर लगाये जो हजरत मोहम्मद के आदेश को भंग करता है। कुकर्म की बिक्री करके कोई राज्य धन नहीं इकट्ठा कर सकता। आखिर पाप या कुकर्म को टैक्स लगाकर दूर नहीं किया जा सकता है, उसका तो दमन करना ही पड़ेगा। आप कभी चोरी या व्यभिचार पर कर लगाने की बात सोच भी नहीं सकते। जब कानून एक समय में एक विवाह का आदेश देता है तब एक समय में बहु-विवाह की मंजूरी का निर्णय आप धन लेकर नहीं कर सकते। अपराध व रोगों का प्रचार करने के लिए कर नहीं लगाये जाते।

समाज की क्रयशक्ति के रूप में बिक्री कर एक अच्छा साधन है। क्योंकि इससे जीवनस्तर की उन्नति प्रकट होती है। शराबबन्दी से लोगों की क्रयशक्ति को प्रोत्साहन मिलता है। बचत की भावना को प्रेरणा प्राप्त होती है तथा समृद्धि में सहायता प्राप्त होती है।

कीमती खाद्यान्न शराब के उत्पादन में बर्बाद कर दिया जाता है—

देश में हर समय कहीं-कही अकाल एवं सूखे की स्थिति का मुँह देखना पड़ता है। खाद्यान्न की भारी राशि भूखे लोगों के मुँह से छीनकर शराब के रूप में परिवर्तित की जारही है। जौ, चावल, चीनी, फल और इसी प्रकार के खाद्य व पोषक पदार्थ अगर शराब बनाने में न लगाये जावें तो दुगुने लाभदायक सिद्ध हो सकते हैं। हर माह कितने लाख टन खाद्य पदार्थों को बर्बाद कर राज्य के कम-जोर कानूनों व निकृष्ट अफसरों के सहयोग से यह धन्धा खूब बढ़ रहा है। मृदुभाषी राजनीतिज्ञ अन्न की कमी के क्षेत्रों में अकालग्रस्त लोगों के लिए शुष्क हमदर्दी के घड़यालो आंसू तो बहाते हैं लेकिन इस बात को नहीं कहते कि उनकी छत्रछाया में लाखों टन खाद्यान्न शराब बनाने हेतु भट्टियों में झोंका जारहा है। प्रत्येक राज्य में ये शराब कारखाने और भट्टियां हजारों एकड़ उपजाऊ भूमि की उपज को खपाकर बर्बाद कर रही हैं और ऐसा होने पर भी सरकार अत्यधिक बचत का दम भर रहा है। सरकार का रवैया तो इस प्रकार का है कि एक व्यक्ति २०० रुपये की एक पप्पी (कुतिया) खाता

है और उसके पालने-पोसने पर २००० रुपये लगा देता है तथा उसे ५०० रुपये में बेचकर यह गर्व महसूस करता है कि उसने पशु (कुतिया) को काफी लाभ से बेच दिया है। वह मूर्ख इस बात को क्या नहीं जानता कि उसके रख-रखाव के २००० रुपये क्या आसमान से आ पड़े थे। ठीक यही स्थिति हमारी सरकार की है कि उसे तो २०० क्रय की बजाय ५०० में बेचने से लाभ ही हुआ है।

वस्तु स्थिति—

शराब कर अधिकांश मामलों में उन सीमित साधनों के परिवारों से आता है, जिनका बजट नपा-तुला है परन्तु ६२ प्रतिशत बच्चे इसीलिये गरीब एवं असहाय रहते हैं, क्योंकि उनके माता-पिता शराबी हैं। पारिवारिक बन्धनों के टूटने में ७५ प्रतिशत दायित्व शराब का है। शराब प्रयोग से खून, डाके, घातक हमले, स्त्री सतीत्व भंग के प्रयत्न, बच्चों पर अत्याचार और उनकी उपेक्षा तो होती ही है। सम्पूर्ण व्यवस्था में भ्रामक शराब पीनेवाला केवल आर्थिक हानियां ही नहीं उठाता, उसके मानसिक पतन तथा आध्यात्मिक नाश को पैसों में पूरा नहीं किया जा सकता। पारिवारिक स्नेह, सुख और शांति तथा अनुशासन, स्वास्थ्य, सांसारिक प्राप्ति एवं उपलब्धियां मद्यसारों के इस्तेमाल से नष्ट-भ्रष्ट हो जाती हैं, जीवन व्यर्थ चला जाता है। क्या उन लाखों करोड़ों लोगों के जीवन का मूल्य कुछ रुपयों में आंका जा सकता है। जिनका सार शराब आदि नशीली चीजें हर वर्ष निर्दयता से हर लेती हैं या अपंग कर देती हैं या कठोरता से उनकी हत्या कर देती हैं। अर्थात् शराब जो दु:खद बलिदान मांगती है उसे दृष्टिगत रखते हुए शराब के राजस्व की आड़ लेना अनैतिक ही नहीं बल्कि धूर्ततापूर्ण है।

समय की पुकार—

हम शराबबन्दी के बारे विशेषकर हरयाणा सरकार से यह मांग करते हैं कि इस धोखे से भरी राजस्व की बात को तुरन्त छोड़कर जनभावनाओं का सम्मान करे। अन्यथा समय रहते ऐसा न करने पर जल्दी निकट भविष्य में खामियाजा अवश्य भरना पड़ेगा। अब लोगों से यह भी प्रार्थना है कि इस धर्मयुद्ध (शराबबन्दी आंदोलन) में जो मार्च में नीलामी के समय बड़े जोर-शोर से किया जावेगा। अपना सम्पूर्ण सहयोग देकर हरयाणाभर में लोगों को इस भावी कार्यक्रम से अवगत करायें। इसकी तैयारी अभी से गांव-गांव में करनी प्रारम्भ करदी है।

हैदराबाद के आर्य सत्यग्रहियों के लिये आवश्यक सूचना

आर्यसमाज के नेताओं के अनुरोध पर भारत सरकार ने हैदराबाद के आर्य सत्याग्रहियों को पेन्शन हेतु आवेदन पत्र भेजने की अवधि ३१ दिसम्बर, १९८६ स्वीकार करली है।

अत: जिन सत्याग्रहियों अथवा उनके आश्रितों ने अपने आवेदन-पत्र भारत सरकार तथा हरयाणा सरकार को किसी कारणवश नहीं भेजे हैं वे अपने जेल के प्रमाण-पत्र साथ लेकर सभा कार्यालय दयानन्दमठ, गोहाना मार्ग, रोहतक से तुरन्त सम्पर्क करें।

—प्रो० शेरसिंह
प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

शराब से सर्वनाश

धर्मपाल आर्य नरवाना

शराब पीण की म्हारे देश में फैली किसी बिमारी
पैसे देवें रोग खरीदें, अकल गई न्यू मारी
घर में बच्चे बाट देख रहे बापू आवेगा
तड़कै के हम भूखे बैठे, म्हारी भूख मिटावेगा
शहर में कर रिया मजदूरी भूख मिटावेगा
खेल खेलणे ल्याके म्हारे लाड लडावेगा
घरवाली भी बाट देख री आवेगा घरबारी। पैसे…

तड़कै पहर तैं घर मजदूरी, सांझ नैं पैसे पाके
बुद्धू की फेर चाल बिगड़गी पहुंचा ठेके जाके
पैसे दे के बोतल ले ली पीग्या मुंह के लाके
गिरता पड़ता घर न आया, सारा कुछ लुटाकै
कैसे पेट भरूं बच्चों का, कर रही सोच बिचारी। पैसे…

आटा दाल न कुछ भी ल्याया न्यू घर में तकरार होया
बढ़ते-बढ़ते बात बिगड़गी फिर जूत पजार होया
गुस्सा आया, गला घोट दिया बुद्धू पे खून सवार होया
बीबी मरगी, मियां आज चौपट सब घर बार होया
बच्चे रुलगे, साम्हणियां न होगई हानि भारी। पैसे…

शराब का पीणा बहुत बुरा है, भाई घर के ध्यान सुणो
घर लूट जै बर्बादी होवै, होता है नुकसान सुणो
शराब पीने ते होजा खाली भाई धन की खान सुणो
पाल कह नहीं जग में होता उसका आदर मान सुणो
शराब सभी दुखों की जड़ है सुन लो सब नर-नारी
पैसे देवैं रोग खरीदें अकल गई न्यू मारी

हरयाणा सरकार ठेकेदारों पर अवैध रूप से शराब बेचने पर रोक लगाये

एक तरफ तो जहां देशों में देश हरयाणा, जहां दूध दही का खाना वाली कहावत में प्रसिद्ध था, आजकल हरयाणा सरकार थोड़े से पैसे के लालच में जगह-जगह कदम-कदम पर जबरन शराब के ठेके खोलकर हरयाणा की जनता को बर्बाद करने पर तुली हुई है। यानी शराब की नदियां बहा रही है। ठेकेदार तो और भी आगे बढ़कर अवैध तरीके से शराब की बिक्री कर देहात के गरीब व भोले-भाले लोगों का खून चूस रहे हैं। कहीं राजनैतिक कारणों से, कहीं पुलिस की मिली भगत से दिन-रात ठेकेदार सरेआम जबरन शराब की बिक्री नाजायज ढंग से कर रहे हैं। कोई पूछने वाला नहीं। जिला हिसार में कई गांवों में शराबबन्दी समितियां संघर्षरत हैं। जैसे ग्राम बालसमन्द, बांडाहेड़ी, चमार खेड़ा, दड़ौली, बड़सो, कालीरावन आदि। दड़ौली की समिति एस० एच० ओ०, एस० एस० पी०, एस० डी० एम०, डी० सी० साहब तक मिल चुकी, लेकिन झूठे आश्वासनों के अलावा कार्यवाही कुछ नहीं। सरकार को चाहिए कि जनता की भलाई को मध्य नजर रखते हुए तुरन्त इन शराब के ठेकेदारों को अवैध रूप से देहात के गांवों की बिक्री बन्द करे।

—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी सभा उपदेशक

नशाबन्दी अभियान में सहयोग करने की अपील

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से नशाबन्दी अभियान चलाया जारहा है। गतवर्ष शराब के ठेकों पर धरणे देकर ६-७ स्थानों पर ठेके बन्द करवाये गये और ग्रामीण पंचायतों से शराब बन्द करवाने के प्रस्ताव हरयाणा सरकार को भिजवाये थे। इस प्रकार गतवर्ष हरयाणा सरकार ने ६५ ठेकों की नीलामी बन्द करदी थी।

हरयाणा सरकार के आदेशानुसार ३१ दिसम्बर तक जिन पंचायतों के प्रस्ताव हरयाणा सरकार को पहुंच जायेंगे तो उन ग्रामों में १९८७ के लिये शराब के ठेकों की नीलामी नही की जायेगी।

अत: आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि अपने समीप की पंचायतों से शराबबन्दी के प्रस्ताव करवाकर ३१ दिसम्बर से पूर्व हरयाणा सरकार के पास भिजवाने का प्रयत्न करें।

सभा के उपदेशक तथा भजनोपदेशक भी प्रचार द्वारा पंचायतों को प्रस्ताव कराने की प्रेरणा कर रहे हैं। अत: हरयाणा से शराब की लानत समाप्त कराने के लिए तन, मन तथा धन से सभा को सहयोग प्रदान करें। नशाबन्दी के प्रस्ताव का प्रारूप निम्न प्रकार है—

नशाबन्दी प्रस्ताव का प्रारूप

॥ ओ३म् ॥

नशाबन्दी प्रस्ताव

माननीय मुख्यमन्त्री जी,

हरयाणा, चण्डीगढ़ ।

हमारे ग्राम··········· ··········–····जिला·····–··············ग्रामसभा (पंचायत) ने अपनी बैठक दिनांक में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया है—

"यह ग्रामसभा (पंचायत) शराब पीने की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को ग्राम्य जीवन के लिए बहुत घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। गांव में अनाचार, अशांति और अपराध फैलते हैं। धन का भी भारी विनाश होता है। ऐसी अवस्था में हरयाणा सरकार की शराबबन्दी नीति का स्वागत करते हुए यह पंचायत मांग करती है कि हमारे क्षेत्र में चालू शराब की दुकान तुरन्त बन्द करदी जाये और भविष्य में कदापि यहा शराब का ठेका खोलने की अनुमति न दी जाये ताकि उक्त बुराइयों से ग्राम्य जीवन की रक्षा हो सके।"

आशा है आप पंचायत की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यहां की शराब की दुकान को बन्द करने के लिए आवश्यक पग शीघ्र उठाने की कृपा करेंगे।

सधन्यवाद !

ता॰ ··············—

विनीत

ग्रामसभा (पचायत)

प्रतिलिपि :—

१. प्रधानमन्त्री, भारत सरकार, नई दिल्ली।
२. मन्त्री आबकारी एवं कराधान हरयाणा, चण्डीगढ़।
३. आबकारी एवं कराधान आयुक्त हरयाणा, चण्डीगढ़।
४ उप आबकारी एवं कराधान आयुक्त जिला··········
५. जिलाधीश ··—·········
६. मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक।

हस्ताक्षर

सर्वहितकारी के ग्राहक महानुभावों से निवेदन

सर्वहितकारी के ग्राहक महानुभावों ने समाचारपत्रों में पढा होगा कि डाक विभाग ने डाक से भेजे जानेवाले समाचारपत्रों पर ५ पैसे के स्थान पर १५ पैसे की टिकटे लगाने का निर्णय किया है। इस प्रकार सर्वहितकारी पर भी ५ पैसे के स्थान पर अब १५ पैसे की टिकट प्रति सप्ताह लगानी पड़ेगी। इस प्रकार वर्षभर में ४८ अंकों पर १० पैसे अधिक टिकट लगाने से ४८० पैसे डाक व्यय बढ़ गया है। अत. विवश होकर सर्वहितकारी का वार्षिक शुल्क २०) के स्थान पर आगामी वर्ष १९८७ से २५) करना पड़ा है।

अतः सर्वहितकारी के ग्राहक महानुभावों से निवेदन है कि सर्वहितकारी का वार्षिक शुल्क २५) भेजने की कृपा करें।

– व्यवस्थापक सर्वहितकारी

सजना छोड़ दे प्याली ने, सजना

सत्यवान हुड्डा

सजना छोड़ दे प्याली ने, सजना……
लि मान मेरे भरतार कहु थारी नार हो पिया रहण दे

बात सही ले मान कही तू पढ़ पिछले इतिहास पिया।
राजे रईस नवाबों के छूटगे महल निवास पिया।
बड़े बडेरे बहुतेरों का किया शराब ने नाश पिया।
यादव भी सब लड़के मरगे पड़ी लाश पर लाश पिया।
तोड़—सजना छोड़ दे प्याली ने, सजना……
महाभारत का प्रमाण करो कुछ ध्यान हो पिया राहण दे।

पीकर प्याली अपने मनमं बना फिरे क्यों बड़ा पिया।
कहां बड़ापन रहा पीकर गन्दी नाली में पड़ा पिया।
नहीं जरा-सा होश मूत रहा कुत्ता मुंह में खड़ा पिया।
शराब समझ भर रहा घूंट के नशा कसूता चढ़ा पिया।
तोड़—सजना छोड़ दे प्याली ने, सजना……
हंसे सभी नर-नार आबरू खुवार हो पिया राहण दे।

बुरी नजर से सब कोये देखे बिठावें ना पास पिया।
आन कान कुल मर्यादा का कर दिया पर्दाफास पिया।
कोए भला कहे नशेबाज वे समझें सब बदमाश पिया।
भूखे नंगे मलंगे का फिर कोय न करे विश्वास पिया।
तोड़—सजना छोड़ दे प्याली ने, सजना……
सब बेच दई जादाद हुए बर्बाद हो पिया राहण दे।

बात सही ले मान कही मैं कहरी सू कर जोड़।
रज फिकर में खाक होगई जल भुन मेरी खोड़ पिया।
याणे-याणे बालक तेरे देख तू उनकी ओड़ पिया।
ताराचन्द कह बात भले की नशा कसूता छोड़ पिया।
तोड़—सजना छोड़ दे प्याली ने, सजना……
सुन हरिसिंह का गान कह तूफान हो पिया राहण दे।

शराबबन्दी अभियान सप्ताह पर विशेष लेख—

शराब में डूबा हरयाणा

ले०—सुखदेव शास्त्री महोपदेशक, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

आदि सृष्टि से ही हरयाणा पवित्र प्रदेश माना जाता है। इसकी पवित्रता के कारण ही इसे "ब्रह्मर्षि देश भी कहा जाता था। यहां उत्पन्न हुए हजारों ऋषियों ने संसार को पवित्र वेदों का सन्देश दिया था। सारे संसार में गुणों के कारण प्रसिद्ध होने से ही इसका नाम वेद के अनुसार हरयाणा रखा गया। ऋग्वेद के मन्त्र २८।२१।२२ के अनुसार

"ऋज्रमुक्षण्यायने रजतं हरयाणे। रथं युक्तमसनाम सुषामणि।"

मन्त्र के आधार पर ही इसका नाम "हरयाणा" कहा जाता था। वैसे तो वेदों में किसी देश का इतिहास नहीं है किन्तु मनुस्मृति के अनुसार—

"वेदशब्देभ्य एवादौ पृथक् संस्थाश्च निर्ममे।

वेद शब्दों से ही आदि सृष्टि में गुणों के अनुसार ही नाम रखे जाते थे। इस मन्त्र की व्याख्या महर्षि यास्क ने निरुक्तभाष्य, पूर्वार्द्ध, अध्याय ५, पाद ३, पृष्ठ संख्या ३४६ पर की है। महर्षि लिखते हैं—

हरयाणो हरयाणयान:। "रजतं हरयाणे" इत्यपि निगमो भवति। हरमाणयान: हरयाण:।

अर्थात् हरयाणा—जिसका यान स्वभाव से सुन्दर हो अथवा जो दूर-दूर तक यातायात कर सकता हो वह हरयाणा कहलाता है। इस मन्त्र में "उक्षण्यायने" पद इस बात का द्योतक है कि जहां सांडों से उत्पन्न गौ-बैलों की तथा घृत-दुग्धादि पदार्थों की अधिकता हो उसे हरयाणा कहा जाता है। "उक्षा" शब्द निघण्टु में महद्वाची रूप से पठित है। हरयाणा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रदेश है। इस वेदमन्त्र में कहे गये शब्दों के अनुसार इसका महत्त्व प्रकट होता है। यहां करोड़ों दुधारु गायें दूध देती थीं। शुद्ध सात्त्विक घी, दूध, दही आदि के खाने-पीने से यहां के निवासियों का आचार भी पवित्र था। शारीरिक, आत्मिक, सामाजिक रूप से सब शक्तिशाली होते थे।

शराब मांस का सेवन कोई भी नहीं करता था। इसी कारण यह कहावत प्रचलित थी कि—देशों में देश हरयाणा, जहां दूध दही का खाना। इस बात को लेकर कवि शंकरनाथ ने लिखा था—

"देश अनूप एक हरयाणा, दूध-दधि घृत का जहं खाना।"

दूध, दही, घी का ही यहां भोजन होता था। गोधन को ही यहां धन समझा जाता था। महर्षि व्यास महाभारत में इसकी प्रशंसा में लिखते हैं—

"ततो बहुधान्यं रम्यं गवाढ्यं धनधान्यवत् । कार्त्तिकेयस्य दयितं रोहितकमुपाद्रवत् ।।

रोहतक जो कभी हरयाणा की राजधानी था। शिवजी महाराज के पुत्र कार्त्तिकेय का प्यारा नगर था। वह बहुत अन्नादि से युक्त था, सुन्दर रमणीय था, गायों से भरा हुआ था, धनधान्य से युक्त था। ऐसे रमणीय नगर में महाभारत के युद्ध में पांडव नकुल युद्ध के लिए उपस्थित हुआ था। महर्षि व्यास ने इसके गौरवशाली इतिहास का वर्णन किया है। दूसरे कवि ने इसकी महिमा को सुनकर लिखा—

"देशोऽस्ति हरयाणाख्यः पृथिव्यां स्वर्गसन्निभः।"

पृथिवी पर स्वर्ग के समान हरयाणा नाम का देश स्थित है। इस प्रदेश के एक पवित्र नगर का वर्णन गीता के प्रथम श्लोक में ही किया गया है वहां लिखा है—

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे—अर्थात् धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र कहा गया है। श्रीकृष्ण ने यहीं पर अर्जुन को आत्मा की अमरता का संदेश दिया था। इसके निवासियों का एक सुन्दर चित्र संस्कृत के एक कवि ने यों खींचा है—

यत्र वीरा वृषस्कन्धा भीमार्जुनसमा युधि, तरुण्यः चञ्चलापाङ्गो नृत्यसंगीततत्परा।
कृषिदक्षा धरापुत्राः कुण्डोध्न्यश्च सुधेनवः, पुण्यभूः हरयाणेयं शौर्य-सौन्दर्य-संवृता ।।

मनु के संविधान का जनता अक्षरशः पालन करती थी। मनु का आदेश था—

सुरा वै मलमन्नानां पाप्मा च मलमुच्यते। तस्माद् ब्राह्मणराजन्यौ वैश्यश्च न सुरां पिबेत् ।।

अर्थात् शराब अन्न का मल है। मल—टट्टी को पाप कहा जाता है। मलमूत्र अभक्ष्य पदार्थ है। खाने-पीने की चीज नहीं है। इसलिए ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्रादि कभी भी किसी भी हाल में शराब का सेवन न करें। इस आदेश का इस देश के शासक लोग शक्ति से पालन करते थे। अतः कोई भी शराब मांस का सेवन नहीं कर सकता था। जो कोई इस मर्यादा को भंग करता था, उसे पापी समझ कर जाति बहिष्कृत कर दिया जाता था। उसे राक्षस माना जाता था। महर्षि पतजलि के अनुसार—

यक्षरक्षःपिशाचान्नं मद्यं मासं सुरासवम्।

अर्थात् मद्य, मांस, शराब को यक्षों, राक्षसों तथा पिशाच नीचों का ही भोजन माना गया है। जो इनका सेवन करते थे उन्हें दण्ड देकर समाज से निष्कासित कर दिया जाता था। जैसा कि राजा भोज ने लिखा है—

भ्रष्टस्य नान्या गतिः—अर्थात् पतित भ्रष्ट की ओर क्या गति हो सकती है।

अरबों वर्षों तक इन मर्यादाओं एवं कानूनों का पालन किया गया है। वैदिक व्यवस्थाओं के अनुसार समाज चलता रहा। दण्ड व्यवस्था का भी पूरा प्रचलन रखा गया। दण्ड के कारण जनता स्तर न गिर सका। इसी कारण से यहां का चरित्र ऊंचा रहा।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी सत्यार्थप्रकाश के ११वें समुल्लास में इसकी प्रशंसा में भावविभोर होकर लिखा—

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः। स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ।।

अर्थात् "इसी आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुए ब्राह्मण अर्थात् विद्वानों से भूगोल के मनुष्य ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, दस्यु, म्लेच्छ आदि सब अपने-अपने योग्य विद्या चरित्रों की शिक्षा और विद्याभ्यास करें।"

इन आदेशों के पालन से ही चरित्र तथा ऊंची शिक्षा प्राप्त करके यहां के राजा जनता के बीच में खड़े होकर निःसंकोच घोषणा किया करते थे—

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः। नानाहिताग्निर्नाविद्वान्न स्वैरो स्वैरिणी कुतः ॥

अर्थात् मेरे देश में न कोई चोर, न कोई कंजूस और न कोई शराबी है। न कोई बिना यज्ञ करनेवाला, न कोई अनपढ़, न कोई व्यभिचारी पुरुष है, न कोई व्यभिचारिणी स्त्री है। ऐसा स्वर्ग था यह हरयाणा देश।

महाभारत के युद्ध के बाद इस प्रदेश पर संकटों के बादल छा गये। अनेक प्रकार के मतमतांतर फैले। वाममार्ग जैसे मतों ने खूब मांस, शराब व्यभिचार का प्रचार जनता में किया। शराब के नशे में देश डूबने लगा।

इसके बाद तो मुसलमान शासकों ने सुरा, सुराही, सुन्दरी का खूब प्रचार किया। लोगों ने भी उनके विरुद्ध खूब संघर्ष किया। किन्तु तलवार के बल पर वैदिक संस्कृति को नष्ट करने का भरसक प्रयत्न किया गया। शराब की नदियां इनके बहिश्त तथा जनता में बहने लगी। मुस्लिम साम्राज्य शराब की सुराही में डूब गया।

राजपूत, मरहठे, जाटों का राज्य भी अफीम, शराब के चक्कर में फंसकर नष्ट होगया।

इसके बाद तो अंग्रेजों ने १८५७ में हरयाणा की संस्कृति को ही नहीं बल्कि इसकी भौगोलिक सीमाओं को ही नष्ट-भ्रष्ट कर डाला। इस प्रदेश पर बड़े-बड़े अत्याचार किये गये। अपनी सभ्यता संस्कृति केवलमात्र हरयाणा पर ही नहीं, सारे भारत पर ही लाद दी गई। किन्तु हरयाणा का नाम तो भारत के नक्शे पर से ही मेट दिया गया। शिक्षा में परिवर्तन करके अंग्रेजी भाषा लागू करके देश के चरित्र को पूरी तरह से बिगाड़ कर रख दिया गया। आर्यों के बारे में विदेशों से आये घोषित करके वेदों को गड़रियों के गीत बताया गया। वेदों में सोमरस के नाम से शराब का प्रचार किया गया। यह भी लिखा गया कि प्राचीन आर्य शराब मांस का सेवन करते थे। इस शिक्षा को पाकर भारतीय भी अंग्रेजों की नकल करके पूरी तरह से बिगड़ गये। अंग्रेजों की कुसंगति से ही शराब, मांस, अण्डा, चाय, काफी, सिग्रेट का सेवन करने लगे। अंग्रेजी सभ्यता में पड़कर देश सड़ उठा। देश का सर्वनाश होगया।

इस अंग्रेजी साम्राज्य का, अंग्रेजी सभ्यता संस्कृति का सर्वप्रथम मुकाबला किया महर्षि दयानन्द सरस्वती ने। १८५७ में ही महर्षि के आदेश से ही अनेकों स्वतन्त्रता सेनानियों ने अंग्रेजों का मुकाबला किया। शस्त्र क्रांति असफल होने के बाद महर्षि दयानन्द ने गुरु से दीक्षा लेकर शास्त्र की क्रांति १८७५ में आर्यसमाज की स्थापना करके प्रारम्भ की। महर्षि ने जनता में जागृति लाने के लिए "सत्यार्थ-प्रकाश" अमरग्रन्थ की रचना की। इसमें महर्षि ने ७५ स्थानों पर शराब, मांस की चर्चा की है। दूसरे समुल्लास से लेकर चौदहवें समुल्लास तक शराब, मांस के विषय में महर्षि ने इसके खाने-पीने का जोरदार विरोध किया है।

महर्षि के पश्चात् आर्यसमाज ने भी इनका खूब विरोध किया है। शराबबन्दी सम्मेलन भाग करके भाषणों द्वारा ही इसकी निन्दा की गई है। किन्तु आयसमाज एक आंदोलन है, वह आंदोलन शराब के विरुद्ध अब तक नहीं किया गया है। शराबबन्दी के लिए अनेक शिष्टमण्डल अब तक प्रशासकों से मिलते रहे हैं किन्तु उसका फल कोई नहीं निकला है।

१९६६ में हरयाणा का पुन: नवनिर्माण हुआ। इसके निर्माण में आर्यनेताओं का बहुत बड़ा सहयोग रहा है। हरयाणा बनने के बाद आर्यसमाज के पुन: "मद्यमांस निषेध आंदोलन" आरम्भ करके एक लाख पचास हजार से अधिक व्यक्तियों के हस्ताक्षर करवाकर प्रतिज्ञायें भी करवाई गई कि "हम कभी भी जीवन में अण्डे, मांस, शराब का सेवन नहीं करेंगे"। प्रचार तो हुआ किन्तु बात वहीं पर फिर रह गई। प्रो० शेरसिंह जी ने समय-समय पर इसके विरुद्ध लेख लिखे हैं, अपनी आवाज भी उठाई है।

स्वामी ओमानन्द जी की अध्यक्षता में यह कार्य आरम्भ हुआ। हरयाणा राज्य में शराबबन्दी कानून बनवाने के लिए हरयाणा विधानसभा के सदस्यो के हस्ताक्षर भी करवाये गये। शराबबन्दी के कानून बनाने के पक्ष में हरयाणा के ६२ विधायकों ने हस्ताक्षर भी किये। तत्कालीन मुख्यमन्त्री चौ० बन्सीलाल ने रोहतक जिले में पूर्णरूप से शराबबन्दो लागू करदी और वचन दिया कि धीरे-धीरे सारे हरयाणा में शराबबन्दी कानून बना देंगे, किन्तु वे भी ऐसा न कर सके। पं० भगवतदयाल शर्मा ने मुख्यमन्त्री बनते ही रोहतक जिले में शराबबन्दो कानून हटाकर पुन: शराब की बिक्री करवानी शुरु की। जनताराज में चौ० देवीलाल ने इसके विरुद्ध कोई कदम नहीं उठाया। तब से लेकर शराब जोरों से हरयाणा में चल रही है। दूध की जगह चाय व शराब ने ले ली है। आज हरयाणा के अन्दर शराब की नदियां बहती हैं। भजनलाल सरकार ने इसे बहुत बढ़ावा दिया। अनेकों ठेके खोल दिये गये। अवैध रूप से भी शराब की बिक्री जोरों से हो रही है।

५ जून को पुन: चौ० बन्सीलाल जी मुख्यमन्त्री बने। इस नवम्बर महीने में हुए हरयाणा विधान सभा के अधिवेशन में पुन: कुछ सदस्यों ने शराबबन्दो की मांग की है। सदस्यों ने शराब पीने से होने वाली हानियों की भी चर्चा की है। उनकी इस मांग का उत्तर देते हुए वित्तमन्त्री ने कहा कि हम शराब बन्द नहीं कर सकते, क्योंकि इस शराब से ग्यारह करोड़ रुपये की आय राज्य सरकार को होती है।

वित्तमन्त्री ने साथ ही यह भी कहा कि जिन ग्रामों शहरों की तरफ से अपने यहां शराब के ठेके बन्द करने के आवेदनपत्र आने पर वहां शराब के ठेके बन्द कर दिये जायेंगे। इसका सारा श्रेय चौ० बन्सीलाल जी मुख्यमन्त्री हरयाणा को मिल जायेगा। वे अवश्य शराबबन्दी करेंगे।

वित्तमन्त्री के इस वक्तव्य को लेकर माननीय प्रो० शेरसिंह जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के आदेशानुसार १६ दिसम्बर से २३ दिसम्बर तक शराबबन्दी सप्ताह जनता के जागरण के लिए मनाया जा रहा है। जिससे शराब के विरुद्ध जनमत जागृत हो सके।

आज हरयाणा में प्रत्येक शुभअवसर पर शराब पीने का रिवाज बढ़ता जारहा है। विवाह संस्कार के अवसर पर बाराती, भाती तब नाती प्राय: करके पीने लग गये हैं। सगाई के अवसर पर तो शराब के दौर चलते हैं। बटेऊ का यदि शराब पिलाकर सम्मान न किया जाये तो रिश्तेदारी

संकाम्त होने का खतरा पैदा हो जाता है। बैल बेचने, भैंस के ब्याने की खुशी में भी शराब चलती है। किसानों के अन्दर शराब पूरी तरह से प्रवेश पा गई है। शराब के ठेके पर शराब आसानी से मिल जाती है। चार बोतल तो हरेक ले जा सकता है। न मिलने वाले भी सर्दी-जुकाम के बहाने से पीने लग गये हैं। इसे दवादारु समझ कर पीते हैं। विशेषकर फौजी देहाती तो इसका बड़ा प्रचार करने लगे हैं। शहरों में फौजी कैंटीन पर सस्ती शराब की अनेक बोतलें लाकर ग्राम में मंहगे दामों में बेचने का धन्धा फौजी करने लगे हैं। बच्चों को भी डाक्टर ब्रैंडी पिलाने तथा अण्डों के प्रयोग का प्रचार जोरों पर है। पहले हरयाणा में लोग चाय का भी सेवन न करते थे, यह चाय भी फौजी लोग ही देहातों में लाये थे। दूध की जगह चाय ने ले ली थी, अब तो चाय की जगह शराब लेने लग गई है। पढ़े-लिखे लोगों में इसके सेवन का फैशन बढ़ता जारहा है। हरयाणा का पढ़ा-लिखा व्यक्ति शराब के नशे में शामिल होगया है। आज शराब पीना फैशन-सा होगया है। स्कूलों में अधिकतर अध्यापक सिग्रेट शराब के अभ्यासी होगये हैं। परीक्षा के अवसरों पर तो सभी निरीक्षकों को शराब पिलाकर नकल का धन्धा जोरों पर है। क्लर्कों को शराब पिलाकर बोर्ड की परीक्षा का प्रमाण-पत्र प्राप्त किया जा सकता है। परीक्षा में अंक बढ़ाये जा सकते हैं। शिक्षा क्षेत्र तो इससे सर्वथा दूर था किन्तु आज शराब उनकी सहेली बन गई है। पुलिस के सिपाही से लेकर बड़े-बड़े अफसरों तक शराब का सेवन चलता है। एक बोतल से बहुत सारे काम बन जाते हैं। पटवारी से लेकर खेती-बाड़ी के विभागों के अफसर भी शराब के आदी होगये हैं। दो बोतलों से यहां भी काम करवाया जा सकता है। लोगों का चरित्र स्तर केवल एक ही बोतल का रह गया है। स्कूलों के लड़के भी घर से पैसे चुराकर पव्वा पीने लग गये हैं। ग्रामों की पंचायत, मेम्बर व सरपंच शराबी ही अधिकतर चुने जाते हैं। ब्लाक पंचायत समिति के सदस्य अधिकतर शराब पीते हैं। एम० एल० ए० भी इस व्यसन से बचे हुए नहीं हैं। कई मन्त्री भी इसमें संलिप्त बताये जाते हैं, एम० पी० भी इससे अछूते नहीं हैं। चुनावों के समय शराब खूब चलती है। बहुत से सरपंचों का ग्रामीण शराब के ठेकों में हिस्सा भी पाया गया है। सरपंच शराब के ठेकेदारों के ही सहयोगी बन रहे हैं।

शराब पीने से हरयाणा में यदि कोई बचा है तो वे हैं यहां की देवियां। ये ही बेचारी शराबी पतियों से अधिक दुःखी हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा शराब के ठेकों पर धरना देते समय यहां की देवियों ने धरने पर बैठकर सराहनीय कार्य किये हैं, वे धन्यवाद की पात्र हैं।

अब हरयाणा सभा की ओर से शराब के ठेके बन्द करवाने के लिए फार्म भरे जारहे हैं। हरेक पंचायत को इससे लाभ उठाना चाहिए। शराब का खुला प्रचार सरकार कर रही है। अपराध, हत्या, चोरी, जारी शराब के कारण बढ़ रही है। घरों में स्त्री-पुरुष के झगड़े का कारण शराब बन चुकी है। बच्चे भूखे मरते हैं, उनके तन बदन पर वस्त्र भी नहीं हैं, जमीन गहने धरदी है, छाती फेफड़े गल गये हैं, पेशाब की प्रक्रिया बिगड़ गई है, फिर भी शराब चलती ही है। मजदूर भी दोनों समय शराब पीने लग गये हैं। दो ही वर्ग अपने पैसों से शराब पीते हैं, वे हैं किसान और मजदूर। बाकी वर्ग तो मुफ्त की शराब पीते हैं। इन दोनों ही वर्गों का जीवन दुःखी होता जारहा है। वे दोनों ही आज कर्जदार होगये हैं। शराब से मौतों की संख्या बढ़ गई है। मोटर वाहन दुर्घटनायें बहुत हो रही हैं, सड़कों पर शराबी पड़े नजर आते हैं।

हरयाणा का प्रत्येक वर्ग अब शराब पीने का अभ्यासी बन चुका है। शराब के कारण ही अण्डे

मांस का प्रचार भी जोरों से हो रहा है। अण्डा खाना अब बुरा नहीं समझा जाता। रोग बढ़ते जाते हैं, अनाचार भ्रष्टाचार बढ़ता जाता है। क्योंकि शराब ही सब अनाचारों की जननी है। देश कमजोर होता जारहा है, जनता का सदाचार गिरता जारहा है, अतः शराब को बन्द करना होगा।

रूस जैसे देश में भी अब शराब का पीना सार्वजनिक रूप से बन्द कर दिया गया है। वोदका शराब के ठेके बन्द कर दिये गये हैं। रूस के राष्ट्रपति गोर्बाच्योव अब भारत यात्रा पर आये थे, उन्होंने यहां पार्टियों में शराब का सेवन नहीं किया। अतः रूस से प्रेरणा पाकर भारत से भी शराब को विदा कर देना चाहिए, तभी देश आगे बढ़ेगा।

आर्यसमाज का भी प्रथम कर्त्तव्य है कि वह इस दिशा में शराब के विरुद्ध आंदोलन करे। हरयाणा को बचाये। अगर आंदोलन न किया गया तो सारा हरयाणा ही यादवों की तरह से शराब के समुद्र में डूब मरेगा। हरयाणे को तो शराबबन्दी कानून बनाकर बचाया जा सकता है। कानून बनने पर भी यदि कोई शराब पीये तो उसे सख्त सजा दी जाये। यदि सारे ही भारत में रूस की तरह से शराबबन्दी हो जाये तो राष्ट्र बहुत प्रगति कर सकेगा। एक उर्दू के कवि ने बहुत ही ठीक लिखा—

'गुजर गया जमाना अब वह साकी, कि छिपकर पीते थे पीनेवाले।
अब तो सारा ही जमाना, मयखाना बनेगा।

शराब निषेध

लेo—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती अधिष्ठाता वेदप्रचार

एक बात का निवेदन करता हू मेरे यार।
मानोगे तो पाओगे सुख करिये जरा विचार॥

मानो एक हमारा कहना, इस ह्विस्की से बचकर रहना,
ये बुद्धि पर छा जायेगी, धन-दौलत को खा जायेगी,
मारे-मारे फिरो जगत् में होगी मिट्टी ख्वार॥१

अपने हाथ खोद रहे खाई, कंमे करते नहीं सुनाई,
बीज पाप का जो बोओगे, कभी नहीं सुख से सोओगे,
पत्थर की किस्ती सागर से हो नहीं सकती पार॥२

झूठ और चोरी सिखलाती, पैसे-पैसे को तरसाती,
तन में बढ़ जाये बिमारी, रोगी ऋणी बने व्यभिचारी,
बर्तन भांडे जर जेवर तन के दे वस्त्र उतार॥३

जिसने इससे प्रीति जोड़ी, उसकी लाज शर्म ना छोड़ी,
राजा महाराजा को चुनती, तेरी पगले क्या है गिनती,
अब भी सम्भल और से सुनिये 'राघव' का प्रचार॥४

एक बात का निवेदन करता हू मेरे यार।
मानोगे तो पाओगे सुख करिये जरा विचार।

वेदोपदेशक आचार्य विष्णु मित्र जी दिवंगत

आचार्य श्री विष्णुमित्र जी उपकुलपति कन्या गुरुकुल खानपुरा कलां तथा गुरुकुल भैंसवाल कलां, जिला सोनीपत का अकस्मात् हृदयगति रुक जाने के कारण दिनांक १७ दिसम्बर, १९८६ को प्रातः ४ बजे देहांत होगया। आचार्य जी गुरुकुल भैंसवाल के स्नातक थे। वे वेदों, दर्शनों, उपनिषदों तथा इतिहास के उच्चकोटि के विद्वान् थे। वे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अन्तरंग सदस्य थे। आचार्य जी को शिक्षा के क्षेत्र में सेवाओं के कारण भारत के राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित किये गये थे। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की सर्वोच्च उपाधि "विद्यामार्तण्ड" भी उनके साहित्य लेखन के कारण उन्हें प्रदान की गई थी। हरयाणा शिक्षा विभाग की ओर से भी हरयाणा के राज्यपाल द्वारा उन्हें सम्मानित किया गया था। वे बड़े सुशील, सौम्य स्वभाव के व्यक्ति थे। बड़ी से बड़ी आपत्ति में भी वे हंसते रहते थे। वे भक्त फूलसिंह जी के अनन्य भक्त थे। अनेकों पुस्तकों के लेखक थे। महाभारत, महाग्रन्थ का उन्होंने अभी-अभी हिन्दी में अनुवाद किया था। उपनिषदों का भी हिन्दी में अनुवाद किया था। वे साधारण भाषा में लिखते थे। उन्होंने भक्त फूलसिंह जी का जीवन चरित्र भी लिखा था। वे "समाज सन्देश" अखबार के सम्पादक थे। हरयाणा साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित समारोहों में उनके उच्चकोटि के निबन्ध पढ़े जाते थे।

आचार्य जी के देहावसान से आर्यसमाज को बड़ी क्षति पहुंची है। हरयाणा के आर्यों की ओर से उन्हें सादर श्रद्धांजलि समर्पित है। उनके परिवारजनों को ईश्वर धैर्य प्रदान करे, यही प्रभु से प्रार्थना है।

सभा के उपप्रधान म० भरतसिंह जी मन्त्री वेदव्रत जी शास्त्री तथा सभा के कर्मचारी श्री केदारसिंह जी, सुखदेव शास्त्री अन्त्येष्टि संस्कार में उपस्थित थे। उनकी स्मृति सभा २९ दिसम्बर, ८६ को प्रातः ११ बजे कन्या गुरुकुल खानपुर, जिला सोनीपत में होगी।

—सुखदेव शास्त्री सभा महोपदेशक

चौ० मेहरसिंह जी की पुण्य स्मृति पर यज्ञ

दिनांक १५ दिसम्बर, ८६ को श्री चौधरी मेहरसिंह जी सुपुत्र श्री दीपचन्द जी आसन जिला रोहतक निवासी की पुण्य स्मृति मनाई गई। उनकी स्मृति में प्रातः ८ बजे श्री सुखदेव शास्त्री महोपदेशक सभा द्वारा यज्ञ करवाया गया। यज्ञोपवीत भी दिये गये। नौजवानों ने शराब न पीने की प्रतिज्ञा कराई गई। श्री जयपाल जी सुपुत्र श्री मेहरसिंह जी द्वारा भजनों के माध्यम से प्रचार किया गया। आर्यसमाज आसन के मन्त्री श्री जयदेव जी व प्रधान चौ० धारासिंह जी भी उपस्थित रहे। अन्य अनेक सज्जन व देवियां भी यज्ञ की वेदी पर उपस्थित थी। उनके पोते रामकरण, जयवीरसिंह व सत्यवीरसिंह ने प्रीतिभोज का आयोजन किया। हजारों ग्रामीणों ने साथ बैठकर प्रीतिभोज किया। सभा को दक्षिणा रूप में १४१) प्रदान किये गये।

विद्यार्थी के विद्यालय व घर के नियम

१. हमेशा समय पर स्कूल जाओ।
२. सदा अपने गुरु की आज्ञा का पालन करो।
३. कभी चोरी न करो।
४. कभी झूठ न बोलो।
५. हमेशा स्कूल में यथा उचित वर्दी डालकर जाओ।
६. स्कूल को गन्दा न करो।
७. कभी स्कूल का अनुशासन भंग करने की चेष्टा न करो।
८. सूर्योदय से पूर्व उठना चाहिये।
९. ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिये।
१०. नित्य स्नान करना चाहिये।
११. बड़ों का आदर करना चाहिये।
१२. घर के कार्यों में सहयोग देना चाहिये।
१३. सदा सत्य बोलना चाहिये।
१४. जिद्द नहीं करनी चाहिये।
१५. समय पालन तथा दैनिक कार्य करने की आदत डालनी चाहियें।
१६. विद्यालय के वातावरण को स्वच्छ तथा शुद्ध बनाने में सहयोग देना चाहिये।
१७. अनुशासन में रहना चाहिये।
१८. धार्मिक ग्रन्थ व क्रांतिकारियों व देशभक्तों का इतिहास अवश्य पढ़ना चाहिये।
१९. माता-पिता व गुरु का आदर करना चाहिये।
२०. सादा जीवन उच्च विचार रखने चाहियें।
२१ कभी भी शराब, बीड़ी, हुक्का, सिगरेट, सुलफा, भांग, मांस, अण्डों का सेवन नहीं करना चाहिये।
२२. लक्ष्य प्राप्ति के लिए तत्पर रहना चाहिये।

—अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी सभा उपदेशक

श्री दलीपसिंह आर्य की धर्मपत्नी का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के पूर्व प्रधान श्री दलीपसिंह जी आर्य पानीपत निवासी की धर्मपत्नी का १५ दिसम्बर की सायंकाल को निधन होगया। उनकी आयु ७० वर्ष के लगभग थी। इन्होंने सदा ही आर्यसमाज तथा सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लिया। अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के अनुसार सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर नगर के गणमान्य नर-नारी भारी संख्या में उपस्थित थे। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा उनके वियोग में दुःखी उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

(टाइटल २ का शेष)

सप्ताह के अन्तिम दो दिन शराब की बिक्री बन्द करदी है, यह नहीं यदि कोई शराब पीकर सड़क पर गिरता है तो उसके लिए सख्त सजा का प्रावधान किया गया है। संक्षेप में संसार के इस महान् नेता ने अपने देश को शराब से मुक्त करने का बीड़ा उठाकर एक नये आदश की स्थापना की है और उसमें सफलता प्राप्त की है। प्रश्न उठता है कि जब रूस जैसा ठण्डा देश शराब के बगैर रह सकता है तो भारत जैसे गरम देश में शराब का क्या प्रयोजन है?

हमने गोर्वाच्योव का स्वागत सत्कार कर अपनी मित्र भक्ति का परिचय देने में कोई कसर नहीं उठा रखी, लेकिन उनके जीवन से कोई प्रेरणा लेने का प्रयास भी सम्भवतः हमने नही किया। जिस देश का सर्वोच्च नेता अपने देश की आन और शान बनाकर चलता है वह देश वास्तव में महान् बनता है। जो लोग शराब पीने में बड़प्पन मानते हैं। जो शराब बिक्री राजस्व के लिए अनिवार्य मानते हैं तथा जो शराबबन्दी असम्भव मानते हैं, क्या वो गोर्वाच्योव के इस साहसिक कार्य की प्रशसा नही करेंगे? यदि हा। तो क्या अपने देश में गार्वाच्योव के शराबबन्दी के लिए उठाये कदमों का अनुसरण कर सकेंगे। इन नेताओं को याद रखना चाहिए कि भारत के गरीब शराब सेवन से स्वास्थ्य और मानसिक स्तर पर और गरीब होते जारहे है। न जाने कितने परिवार शराब सेवन से उजड़ गये और कितने वश शराब के दरिया में समाप्त होगये। यह सत्य है कि शराब भारत के लिए एक बड़ा अभिशाप बन रही है। अगर इसे न रोका गया तो इसका बुरे से बुरा परिणाम भी निकल सकता है।

भारत के तमाम कर्णधार राजनेताओ से हमारा निवेदन है कि अगर गोर्वाच्योव से दोस्ती करना चाहते हो तो गोर्वाच्योव से प्रेरणा लेकर राष्ट्र में नशाबन्दी लागू करो। प्रसन्नता का विषय है कि इन्ही बातों को समझ कर हरयाणा विधान सभा में भी नशाबन्दी लागू करने की मांग उठाई गई है। पिछले कुछ समय से हरयाणाभर में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो॰ शेरसिंह के नेतृत्व में श्री अतरसिंह क्रांतिकारी तथा श्री महेन्द्र शास्त्री ने अनेकों शराब के ठेके बन्द कराकर नैतिक जिम्मेदारी निभाई है। यह भी सत्य है कि शराब छोड़कर लोग महान् बन सकते हैं। इतिहास ऐसे महान् व्यक्तियों से भरा पडा है। अत: शराब पीनेवालो शराब पीनी छोड़ दो। भारत की दो महान् आत्माओं को श्रद्धांजलि देने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा ने १६ दिसम्बर से २३ दिसम्बर तक राज्यभर में नशाबन्दी सप्ताह मनाने का सकल्प किया है। आओ इस अवधि में लोगों के नशे विषय छुड़ाकर शराबबन्दी के प्रस्ताव पास करवाकर सरकार से नशाबन्दी लागू करायें और उजड़ते परिवार, देश, समाज को बचाये।

पारावारिक यज्ञ

दिनांक १४ १२-८६ रविवार को करनाल में चौ॰ आजादसिह लेबर इन्स्पेक्टर के घर सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी ने यज्ञ किया। इन्स्पेक्टर के जेष्ठ पुत्र श्री सन्दीप मोहन ने यजमान का पद ग्रहण किया। क्रांतिकारी जी ने पंच महायज्ञ, सत्सग तथा अभिवादन के लिए नमस्ते पर विस्तार से विचार रखे। स्कूलो बच्चों को माता-पिता को ममी डेडी नहीं माता जी, पिता जी कहना चाहिए की प्रेरणा दी। सभा को ५१) दान दिया तथा साथ में ५ सर्वहितकारी के सदस्य भी बनाये।

—सन्दीपसिह आर्य करनाल

भारत सरकार द्वारा पंजीकृत 23207/73 रजि० नं० P/R 5 फोन ४८१२ सृष्टि संवत् १,९६,०८,५३,०८७

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्



सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभा मन्त्री सह-सम्पादक—डा० यशवीर

वर्ष १४, अङ्क ६ २८ दिसम्बर, १९८६ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५०) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

सम्पूर्ण हरयाणा में १९ से २३ दिसम्बर तक पं० रामप्रसाद बिस्मिल एवं स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस को शराबबन्दी सप्ताह सम्मेलन के रूप में मनाया गया. हरयाणा के आर्यसमाजों में सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह का तूफानी दौरा

पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने सम्पूर्ण हरयाणा में शराबबन्दी कार्यक्रम को रचनात्मक रूप देने के लिए आर्यवीर क्रांतिकारी अमर बलिदानी प० रामप्रसाद बिस्मिल व अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के बलिदान दिवसों को १९ से २३ दिसम्बर तक शराबबन्दी सम्मेलन मनाया गया।

दिनांक १९ दिसम्बर को हिसार में आचार्य सत्यप्रिय जी शास्त्री दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय व श्री सीताराम जी आर्य द्वारा शराबबन्दी सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें श्री पं० बालदिवाकर जी हंस, प्रा० धर्मदेव जी विद्यार्थी, पं० हरिश्चन्द्र जी सभा भजनोपदेशक व अन्य सुविज्ञ स्थानीय कार्यकर्त्ता विद्वानों ने अपने विचार प्रकट कर सम्पूर्ण हरयाणा से शराबबन्दी की मांग की।

२० दिसम्बर को कैथल आर्यसमाज में प्रो शेरसिह जी सभा प्रधान जी की अध्यक्षता में श्री उमेद शर्मा उपाध्यक्ष आर्य वीरदल हरयाणा, अधिष्ठाता श्री धर्मदेव जी विद्यार्थी व अन्य स्थानीय अधिकारियों के भाषण हुए, जिसमें इस बात से सब एक मत थे कि आज इस भयंकर व्यसन से लोगों को संघर्ष के रास्ते पर चलकर ही बचाना ही होगा।

२१ दिसम्बर को नरवाना माडल टाउन गुड़गांव, रामनगर जींद, दयानन्द मोहल्ला रोहतक, गुरुकुल कुरुक्षेत्र आदि में शहर की केन्द्रीय आर्यसभाओं ने बड़े जोश-खरोश के वातावरण में शराबबन्दी सम्मेलन को सफल बनाया।

नरवाना में प्रांतीय नशाबन्दी सम्मेलन

आर्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालय नरवाना में एक हरयाणा स्तर का नशाबन्दी सम्मेलन हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी, हरयाणा के मुख्यमन्त्री चौ० बन्सीलाल जी, चौ० शमशेरसिंह सुरजेवाला, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के महोपदेशक ब्र० महेन्द्र शास्त्री तथा प्रा० धर्मदेव जी विद्यार्थी आदि वक्ताओं ने जन-सभा को सम्बोधित किया। इस अवसर पर मुख्यमन्त्री चौ० बन्सीलाल ने आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं को यह पूर्णरूपेण आश्वासित किया कि एक मुख्यमन्त्री के नाते आपकी जितनी भी शराबबन्दी में मदद हो सकती है की जावेगी तथा मैं आपसे भी अनुरोध करूंगा कि आप जन-जन तक पहुंचकर इस कार्यक्रम को सफल बनायें। श्री शमशेरसिंह सुरजेवाला सिंचाई व बिजली मन्त्री ने कहा कि जिस प्रकार आजादी की लड़ाई में आर्यसमाज का योगदान इतिहास में भुलाया नहीं जा सकता उसी प्रकार मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आर्यसमाज शराबबन्दी आंदोलन की कसौटी पर भी खरा उतरेगा। अपने अध्यक्षीय भाषण में सभा प्रधान प्रो० शेरसिह जी ने कहा कि सरकार को हम यह तो नहीं कह सकते कि एक बार या वर्ष में ही शराबबन्दी कर देवे। लेकिन सरकार इस प्रकार तो कर ही सकती है कि दो या तीन वर्ष में किस्तों के अन्दर शराबबन्दी कर देवे। प्रधान जी ने कहा कि आज भारत ही नहीं बल्कि सारा ससार इस समस्या से परेशान है एवं लोग भी इस बात को अनुभव करने लगे हैं कि अब समस्या के समाधान का समय आगया है। जिस प्रकार हरयाणा बिजली, नहर आदि प्रांतों में पहल करता आया है उसी प्रकार हरयाणा सरकार को शराबबन्दी में पहल करके अन्य प्रांतों का मार्गदर्शन करना चाहिए। ब्र० महेन्द्रसिह शास्त्री ने कहा कि जिस प्रकार सरकार कभी भी चोरी व दुराचार को कानून द्वारा टैक्स लगाकर खुली छूट नही दे सकती है, क्योंकि इससे सम्पूर्ण मानवसमाज की अस्मिता ही खतरे में पड़ जायेगी। अत शराब जो सब पापों की जड है, इन्सान की इन्सानियत को धूमिल कर देती है, सरकार उसको आर्थिक मुद्दा बनाकर लोगों की इज्जत पर हाथ डालकर खिलवाड़ न करे तथा साथ यह भी कहा कि सरकार का यह कहना धोखे से युक्त है कि पहले लोगों में प्रचार करो फिर शराब के ठेके बन्द कर देंगे। तो क्या सरकार निकलवाती व बेचती रहे और बन्दी हेतु लोग प्रचार करते रहें। जब कारण रूपी शराब के अड्डे ही नहीं रहेंगे तो कार्यरूपी बदमाशी कहां रहेगी? यहां पर पूरे हरयाणा से प्रतिनिधि आये हुए थे। सभा आयोजन प्रा० धर्मदेव जी विद्यार्थी तथा स्थानीय आर्यसमाज नरवाना के प्रयत्नों से सफल हुआ।

२३ दिसम्बर को आर्यसमाज माडल टाउन सोनीपत, पानीपत, नारनौल, सिरसा, चढी बोहर जि० रोहतक, फरीदाबाद, भिवानी, दादरी आदि स्थानों पर भी शराबबन्दी सम्मेलन सफल हुए, जिनमें विशेषकर प्रो० शेरसिह जी सभा प्रधान; ब्र० संजयदेव, ब्र० आर्य नरेश जी, पं० कुलवन्तराय आर्य, सुखदेव शास्त्री, सुरेश शास्त्री, पं० ईश्वरसिह आर्य भजनोपदेशक, पं० हरिश्चन्द्र, पं० मुरारीलाल, पं० मुन्शीलाल, पं० चिरंजीलाल आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने सम्बोधित किया। सम्पूर्ण हरयाणा में सभा उपदेशक व आर्य कार्यकर्त्ता गावों से शराबबन्दी के प्रस्ताव करवाने में लगे हुए हैं। आर्य वेदप्रचार मण्डल पाकस्मा जि० रोहतक के प्रधान वानप्रस्थी महावीर जी ने २५ से २८ दिसम्बर को आर्यसमाज बलियाना जि० रोहतक में यज्ञ तथा शराबबन्दी सम्मेलन का आयोजन किया है। श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती तथा सभा के महोपदेशक पं० सुखदेव शास्त्री तथा पं. ईश्वरसिह तूफान आदि भी पधार रहे हैं। इस अवसर पर शराबन्दी प्रस्ताव भी पंचायतों से करवाये जायेंगे।

—केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष

'अग्निहोत्र' पहले से अधिक उपयोगी

—वीरेन्द्र मिश्र

जैसे-जैसे हम वैज्ञानिक तथ्यों मे डूबते गए, अपनी वैदिक परम्पराओं को भूलते गए। अतिवृष्टि, भूकम्प, मृत्यु, बीमारियां, तेजाबी वर्षा व दुर्घटनायें बढ़ती गयीं। इन सब के मूल में है 'प्रदूषण' जिसने वायु और जल को ही नहीं, बल्कि समूचे वातावरण को प्रदूषित कर दिया है। इससे बचने के लिए वैज्ञानिक दिन-रात खोज कर रहे हैं। अब तो ज्यादातर वैज्ञानिक प्रदूषण से मुक्ति पाने के लिए 'अग्निहोत्र' की भी शरण ले रहे हैं।

पूना विश्वविद्यालय में 'अग्निहोत्र' पर शोध कर रहे अमरीकी मनोवैज्ञानिक बेरी रेथनर का कहना है कि अग्निहोत्र से वातावरण का प्रदूषण दूर होता है और प्रभावकारी तत्त्व लहराने लगता है। यही नही, मानव मस्तिष्क पर अग्निहोत्र से निकलने वाला सुगन्धयुक्त धुआं अपना सकारात्मक प्रभाव डालता है जो कि 'जनपदोध्वंस' कहलाता है। इसका तात्पर्य यह है कि जब गहन आबादी वाले क्षेत्र में रोगों का आक्रमण होता है, खास कर जब श्वास नलिका प्रभावित होती है तो 'अग्नि' में अग्निहोत्री कुछ विशेष प्रकार की आयुर्वेदिक औषधियों की 'हवि' देता है, जिससे औषधियुक्त धुआं निकलता है, जो वातावरण में मौजूद विषाणुओं का नाश करके, फेफड़ों में मौजूद बीमारियों के कीटाणुओं को नष्ट कर डालता है। इस प्रकार 'अग्निहोत्र' में उठनेवाला धुआं आयुर्वेदिक औषधि भी है।

वेदों में मुख्य रूप से अग्निहोत्र की चर्चा की गई है। कात्यायनादि श्रौत सूत्र के अनुसार 'अग्निहोत्र' में हवन करने पर उठनेवाला धुआं जितनी दूर जाता है, वहां का वातावरण प्रदूषण मुक्त हो जाता है। यह वेद प्रमाण है और वैज्ञानिकों ने इसे माना है।

भारतीय शिक्षाविद् प्रो० के० पी० नारायणन ने अपनी एक रिपोर्ट में लिखा है कि हमें अपने को ही नहीं, बल्कि अपने परिवार, कुटुम्ब और राष्ट्र को प्रदूषण से बचाने के लिए प्रयास करना चाहिए। वातावरण को प्रदूषणमुक्त रखनेवाली वैदिक विद्या 'अग्निहोत्र' को लोग अपनी ही धरती पर भुला बैठे हैं किन्तु यही विदेशों में भी प्रदूषण से मुक्ति पाने के लिए एक मुख्य साधन बन गया है। हालांकि 'अग्निहोत्र' करनेवाले अग्निहोत्रियों की सख्या अभी नहीं के बराबर है। विशेष रूप से भारत में ऋषिकेश और दक्षिण भारत के कुछ क्षेत्रों में ही 'अग्निहोत्री' पाये जाते हैं। ऐसा माना जाता है कि केदारनाथ में 'हवन-कुण्ड' में जो अग्नि जल रही है, वह भगवान् शकर और शक्ति के विवाह के समय की है। राजस्थान के शाजापुर में महर्षि दयानन्द के आश्रम में ३० वर्ष पहले 'अग्निहोत्र' के लिए जो अग्नि प्रज्वलित की गई थी, वह आज भी सुरक्षित है और लोग उसका उपयोग करते रहते हैं। नोएडा स्थित महर्षि महेशयोगी के आश्रम में 'महर्षि वेदविज्ञान विद्यापीठ' है जहां १५ अग्निहोत्री हैं जो विद्यापीठ के दो हजार विद्यार्थियो को 'अग्निहोत्र' में दक्ष बना रहे हैं। यहा के अग्निहोत्री राधेश्याम भार्गव अरणी मथन और मन्त्रोच्चार से अग्नि प्रज्वलित कर लेते हैं।

चार देशों अमरीका, चिली, पोलेंड और पश्चिम जर्मनी में वातावरण को प्रदूषणमुक्त करने के लिए 'अग्निहोत्र' का प्रयोग होता है। अमरीका के पूर्वी और पश्चिमी भागों में 'अग्निहोत्री' बनने के प्रति काफी दिलचस्पी बढी है। वहां करीब ६० 'अग्निहोत्री' जगह-जगह नियमित 'अग्निहोत्र' करा रहे हैं। ६ सितम्बर, १९७८ से व्हाईट हाउस के पास मेरी लैन्ड और मल्टिमोर में 'अग्निहोत्र' करने के लिए हवन-कुण्ड बने हैं। कभी अमरीका का वर्जीनिया सबसे ज्यादा प्रदूषण से प्रभावित था, वहां २२ सितम्बर सन् १९७३ को एक वैदिक 'हवन-कुण्ड' बनाया गया और नियमित रूप से 'अग्निहोत्र' आरम्भ हुआ। आज वहां के वातावरण में ५० प्रतिशत तक प्रदूषण में कमी बताई जाती है। इसी प्रकार अमरीका के चारों कोनों पर अग्निहोत्र के लिए 'हवन-कुण्ड' बने हैं वहां सूर्य निकलने और डूबने पर अग्निहोत्र किया जाता है। हालांकि पुजारी वहाँ पर नहीं है, इसलिए पूजा नहीं होती।

पोलैंड में वैज्ञानिकों की काफी संख्या है। फिर भी ज्यादातर लोग वहां घरेलू उपचार पर विश्वास करते हैं। समूचे देश में १७ स्थानों पर हवन कुण्ड में नियमित रूप से होम किया जाता है। सबसे पहले यहां जब 'अग्निहोत्र' का सूत्रपात हुआ तो इसमें शरीक होने के लिए ज्यादातर लोगों ने रुचि जाहिर की। पहले दिन ही 'अग्निहोत्र' के बारे में जानकारी हासिल करनेवाले लोगों में २०० से भी अधिक वैज्ञानिक शरीक हुए थे।

अमरीका के बाद पश्चिम जर्मनी में सबसे ज्यादा 'अग्निहोत्र' होता है। वहां तो 'अग्निहोत्र' का शुभारम्भ जहां जब से हुआ है आज तक अग्नि उसी प्रकार से प्रज्वलित है बुझी नहीं है। इसके प्रभाव से तो वहाँ की दर्जनों बीमारियां अब समाप्त हो गई हैं। यह 'अग्निहोत्र' के धुयें के प्रभाव से ही सम्भव हो सका है। ऐसा वैज्ञानिक मानते हैं।

"जंगल की मौत" नामक एक प्रकार की बीमारी यहां हुई थी। जिससे जंगल के जंगल सूख कर नष्ट होने लगे थे। उन जंगलों के पास के क्षेत्रों में लगातार तीन माह तक 'अग्निहोत्र' कराया गया, जिसके प्रभाव से सन् १९८४ में तो पतझड़ के मसौम के बाद ही हरियाली आनी शुरु हुई और सन् १९८५ के मध्य तक ज्यादातर पेड़ हरे-भरे होगये। आज वहाँ बड़ा ही रमणीक वातावरण बना है। यह सब 'अग्निहोम' में नियमित 'हवि' से उठने वाले धुयें के प्रभाव से ही हुआ है। इसे वैज्ञानिक ने प्रयोग करके भी देखा है।

'अग्निहोत्र' करने के लिए भारतीय वैदिक पद्धति के अनुसार तांबे के पिरामिड आकार के बर्तन में बिनौले कंडे, शुद्ध घी, चावल और काला तिल की हवि की जाती है। कंडों में 'एटोसैप्टिक' गुण होता है। तांबे के बर्तन में पानी भी रखा जाता है। इसके लिए उगते सूर्य और डूबते सूर्य का समय ही ठीक माना गया है। क्योंकि सुबह और शाम को सूर्य की सुनहरी किरणें तिरछी पड़ती हैं, जिनमें अनेक औषधि के गुण मौजूद रहते हैं।

इन दिनों भोपाल में अग्निहोत्र का चलन बढ़ा है। श्री वसंत परांजपे सन १९७८ से अग्निहोम कर रहे हैं और घरेलू उपचार के लिए बेरी रथनर के साथ 'अग्निहोम' कर रहे हैं। हमें अपनी पुरानी वैदिक संस्कृति को जीवन्त कर इसकी खोई प्रतिष्ठा को पुनर्जागृत करना है।

(दैनिक हिन्दुस्तान से साभार)

आर्यसमाज तोताहेड़ी जि० महेन्द्रगढ़ का चुनाव

प्रधान—महाशय जगमालसिंह, मन्त्री—सत्यनारायण आर्य, कोषाध्यक्ष—मनोहरलाल आर्य, प्रतिनिधि सदस्य—जगपालसिंह।

सम्पादकीय

पुस्तक-समीक्षा

पुस्तकनाम—वेदमाता
लेखक—स्वामी विद्यानन्द विदेह
सम्पादक—अभयदेव, एम० ए०, पीएच० डी०
प्रकाशक—वेद संस्थान, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली
पुस्तकाकार—२०×३०/१६ पृष्ठसंख्या ४६।।
मूल्य तीन रुपये।

प्रातःकाल स्नान सन्ध्यादि के पश्चात् आज (२२-१२-८६) इसी वेदमाता पुस्तक का श्रद्धापूर्वक आद्यन्त अध्ययन किया। विदेह जी के जन्मशताब्दी के उपलक्ष्य में उनके वेदपरक चुनींदा ही उद्गारों का संकलन इसमें किया है ऐसी सम्पादक की मान्यता है। विदेह जी के ये उद्गार किन वेदमन्त्रों की व्याख्या से चुने गये हैं अथवा उनके किन ग्रंथों या भाषणों से लिये गये हैं, यह इस पुस्तक में अंकित नहीं किया गया। वेद की व्याख्या के सम्बन्ध में लेखक के कुछ उद्गार उपादेय हैं किन्तु अधिकतर अनुपादेय, सिद्धांत विरुद्ध और परस्पर विरुद्ध हैं, जिन्हें वदतोव्याघात भी कहा जा सकता है। तद्यथा—

पृष्ठ ५ "वेद सृष्टि का, दैवी कृति का दवी ज्ञान है।"

पृष्ठ २ "लोक में जिन्हें जड़ पदार्थ कहते हैं, वेद की दृष्टि में वे सब सजीव हैं।

पृष्ठ २ "वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना प्रत्येक स्त्री-पुरुष का परमधर्म है।"

पृष्ठ ४ "वेद धर्म नहीं है, सत्य है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना धर्म नहीं है, एक कृत्य है।"

पृष्ठ ४ "धारित सत्य धर्म है। अधारित सत्य अधर्म है।"

पृष्ठ ६ "प्रतिदिन वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना अपना परम धर्म समझिये।"

पृष्ठ ६ "ईश्वरीयज्ञान होने से वेदवित् अथवा वेद का ज्ञाता स्वयं ब्रह्म ही है।"

पृष्ठ १२ "जिस विद्वान् ने ऋग्वेद के प्रथम सूक्त से विनाशक बम बनाने की शिक्षा का प्रतिपादन किया है उसने वेद की भारी कुसेवा की है।"

पृष्ठ १३ "पाण्डित्य ने वेदों में ग्रन्थियां लगादी हैं।"

पृष्ठ १४ "सहस्राब्दियों से वेद के विद्वान् वेद को जटिल बनाने में ही वेद का तथा अपना गौरव समझते चले आरहे हैं।"

पृष्ठ २७ "वेद का सतत स्वाध्याय करते रहने से षडंगों का ज्ञान स्वयम् एव हो जाता है।"

पृष्ठ २३ "बिना संस्कृत पढ़े भी सरसता और सफलता के साथ वेद का अध्ययन तथा मनन कराया जा सकता है। "हमने अनेक साधारण नागरी जाननेवाले स्त्री-पुरुषों को सीधा वेद में प्रवेश कराया है।"

"व्याकरण वेदप्रसार तथा वेदप्रचार में भी बाधक हुआ है।…… वेद का व्याकरण से कोई वास्ता नहीं।"

पण्डितों, वैयाकरणों और भाषावैज्ञानिकों की इस पुस्तक में अत्यधिक कटु आलोचना की गई है और उन्हें लानत दी गई है।

पृष्ठ २७ पर आप मानते हैं यदि वेद अशुद्ध भी पढ़ा जाये तो कोई पाप नहीं लगता, न ही कोई अनिष्ट होता है। किन्तु पृष्ठ ३८-४१ पर सुलेख और सही उच्चारण की वकालत करते हुए सनातनधर्मी और आर्यसमाजियों की आलोचना करते हैं। किन्तु यह भूल जाते हैं कि इस अशुद्धोच्चारण का मूलकारण व्याकरण तथा भाषाज्ञान की न्यूनता ही है। किसी भी भाषा का ज्ञान बिना व्याकरणज्ञान के पूरा नहीं हो सकता।

संस्कृत व्याकरण की अवधि गत तीन हजार वर्षों के भीतर-भीतर मानना भी विदेह जी की शास्त्रज्ञानशून्यता का द्योतक है। व्याकरण शास्त्र के इतिहासलेखक वर्तमान प्रचलित पाणिनीय व्याकरण को भी तीन हजार वर्षों से अधिक प्राचीन मानते हैं। स्वयं पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी में अपने से पूर्व के दर्जनों वैयाकरणों का उल्लेख किया है।

विदेह के इन उद्गारों में पदे-पदे पाणिनि, पतंजलि, यास्क और दयानन्द के सिद्धांतों और मान्यताओं की अवहेलना की गई है। महर्षि दयानन्द ने संस्कारविधि में ब्रह्मचारी के लिए साङ्गोपांग वेद अध्ययन के लिये १२ वर्ष की अवधि का उल्लेख किया है। विदेह जी इसे बीते युग की बातें कहते हैं और फरमाते हैं कि जिन बातों के अध्ययन के लिए पहले बीस वर्षों की आवश्यकता होती थी उनका अध्ययन अब एक वर्ष में किया जा सकता है। पारिवारिक और सामाजिक अतिव्यस्तता के होते हुए भी एक घण्टा रोज वेदाध्ययन के लिए दिया जा सके तो अधिक से अधिक पांच वर्षों में चारों वेदों का सामान्य अध्ययन किया जा सकता है।

विदेह जी में अहंकार की पराकाष्ठा है। वे अपने आपको जन्मना और कर्मणा भी ब्राह्मण मानते हैं (पृष्ठ ३२)। साथ ही यह भी घोषणा करते हैं कि भगवान् ने मुझे वेदव्याख्या का सुमहान् कार्य सौंपा, वह कार्य आज तक उसने किसी को नहीं सौंपा था (पृष्ठ ३२)। वेद की विश्वव्याप्ति मेरी ही व्याख्यापद्धति से होगी और हो रही है। (पृष्ठ २८)

स्थालीपुलाक न्याय से विदेह जी की योग्यता और विद्वत्ता का अनुमान ऊपर उद्धृत उनके परस्परविरोधी और वैदिक सिद्धांतविरोधी उद्गारों से लगाया जा सकता है। जो सज्जन अधिक गहराई में जाना चाहें वे उनके वेदव्याख्या पुस्तकों को देख सकते हैं। विदेह जी की वेदव्याख्या से न तो वैदिक मान्यताओं का पोषण या प्रसार होता है और न ही वेद के प्रति विशेष आस्था। उनकी वाणी मधुर थी, व्याख्यान शैली प्रभावोत्पादक थी। देश विदेश से धनसंग्रह करके वेदसंस्थान बना दिया। उनके भक्तों ने एक गुरुडम-सा बना रखा है जिसके माध्यम से विदेह जी की विचारधारा का प्रचार किया जाता है वेद के नाम पर। साधारणजन तो साधारण ही होते हैं किन्तु कभी-कभी विशिष्ट व्यक्ति भी सामयिक प्रवाह में बह जाते हैं। १५ नवम्बर, ८६ के विदेह जन्मोत्सव पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने भी वेद संस्थान में जाकर विदेह जी की प्रशंसा में कोई कंजूसी नहीं बरती। ये वे ही प्रधान जी हैं जिन्होंने अपनी प्रधानता में विद्यानन्द विदेह के लिये आर्यसमाज की वेदी बन्द करवाई थी।

प्राचीन ऋषि-मुनियों द्वारा प्रदर्शित पढ़ने-पढ़ाने के मार्ग को छोड़कर प्रथम श्रेणी के विद्यार्थियों को ही वेदाभ्यास करवाने से वेद के अङ्ग उपाङ्गों का स्वयमेव ज्ञान हो जायेगा, यह सम्भव नहीं है। वेद की और लोक की संस्कृत भाषा में कुछ अन्तर है, इसीलिये संस्कृत व्याकरणाध्ययन के पश्चात् भी निरुक्त, प्रातिशाख्य, ब्राह्मण ग्रन्थों का अध्ययन वेदार्थ में सहायक माना जाता है। जिस व्यक्ति को संस्कृत भाषा का सम्यक् ज्ञान नहीं वह वेद के गूढ रहस्यों को समझ नहीं सकता। एक ही धातु का उपसर्ग और प्रत्यय के भेद से अर्थभेद हो जाता है।

बड़े-बड़े शास्त्री और आचार्यों के उच्चारण की आलोचना में पृष्ठ ४० पर लिखते हैं "विद्वत्ता का यह कैसा दयनीय दृश्य है"। जहां तक मेरी बुद्धि कार्य करती है, यह 'दृष्य' शब्द अशुद्ध है। दृश् धातु से क्यप् प्रत्यय करने पर 'दृश्य' शब्द बनता है। किसी भी संस्कृत अथवा हिन्दी के प्रामाणिक कोष में मुझे दृष्य शब्द नहीं मिला और न ही धातुपाठ में मूर्धन्यान्त दृष् धातु ही दृग्गोचर हुआ। उच्चारण की दृष्टि से भी तालव्य 'य' के साथ तालुस्थानीय श् ही होना चाहिये, मूर्धास्थानीय षकार नहीं। यदि विदेह जी और उनके अनुगामी व्याकरणादि शास्त्रों का अध्ययन करते तो ऐसी भूल न करते। इसी प्रकार पृष्ठ १० पर "ब्रह्म और वेद, दोनों ही उपसर्कण करते हैं" वाक्य में 'उपसर्कण' शब्द अपनी समझ से बाहर है।

विदेह जी तो अब नहीं रहे। उनके शिष्यों और भक्तों से मेरा नम्र निवेदन है कि आधुनिक युग के सर्वोत्कृष्ट वेदार्थज्ञाता महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्दिष्ट आर्ष पथ का अनुसरण करें। देवनागरी वर्णमाला सीखकर एकदम सीधा ही वेदाभ्यास का मार्ग छोड़कर वेद के अङ्ग उपाङ्गों, ब्राह्मण ग्रन्थ, प्रातिशाख्य, पदपाठ आदि वेदार्थ में सहायक ग्रन्थों का अध्ययन करने के उपरांत साधनापूर्वक वेदार्थ को समझने का प्रयत्न करें।

—वेदव्रत शास्त्री

शराब और मानव जीवन

वीरेन्द्रसिंह दहिया, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

जब तक राज्य शराबी को शराब पीने की इजाजत ही नहीं बल्कि सुविधा भी देता रहेगा, तब तक सुधारकों को सफलता मिलना लगभग असम्भव है।

ऋषिकल्प उक्त सूत्र आज की विशेष रूप से बदलती दिशाहीन युगधारा को अभियन्त्रण करने हेतु देश के अगुवाओं को क्या अब भी नहीं झकझोरेगा। देश की विराट् अजस्र मानसिक और कार्मिक ऊर्जा अधोगामी हो व्यर्थ नष्ट हो रही है। दंगों, फसादों, विध्वंसों, अनाचारों, बलात्कारों, छीना-झपटी, धन की लुटाई, चरित्र का पतन मर्यादाओं की होली, परिवार का बिखराव, फूल जैसे बच्चों को अनाथों जैसा जीवन, महिलाओं की दुर्गति आदि नाना प्रकार की अनैतिकताओं में देश नीचे बढ़ता जा रहा है। एक ओर आर्थिक, नैतिक, सांस्कृतिक सुधार के लिए देश का करोड़ों रुपया व्यय हो रहा है। अनेक सरकारी, गैर सरकारी संस्थायें सुधार में नियमित जुटी हुई हैं। परन्तु दूसरी ओर सरकार की दोहरी नीति दिखाई दे रही है जिससे सरकार को काफी आमदनी होती है। २३ मार्च, १९८६ को आबकारी विभाग के अधिकारी श्री ओ० पी० श्योरान ने बताया कि १९८६ के साल में १३ शराब के ठेके बन्द होने पर भी सरकार को पिछले साल के मुकाबले इस वर्ष ८४ लाख रुपये अधिक ठेकों से आय बढ़ी है। इसके अन्दर अधिकतर धन किसान और मजदूर का प्रयोग होता है। वे ही अधिकतर शराब पीते हैं और अपने नैतिक पतन से गिरते जारहे हैं। उनके शराब पीने से उनके बच्चे पिछड़ते जा रहे हैं. उनको समय पर खाना नहीं मिलता, वे शिक्षा में पिछड़ गये हैं। इतने पिछड़ गये हैं कि अगर उनके पिता शराब पीते रहे तो वो कभी नहीं उभर सकेंगे। शराब के कारण ही अखबारों में दिन प्रतिदिन देखने को मिलता है कि अमुक लड़की ने अपने शराबी पति से तंग आकर आत्महत्या करली।

जब हम उक्त कथानुसार शराब पीने की इजाजत और सुविधाओं को रोक नहीं पारहे हैं। बढ़ती आमदनी का हमारा सर्वग्राही लोभ महर्षि दयानन्द जयन्तियों पर कहीं हमारे चिन्तन के स्तर को कालांतर में इतना गिरा दे कि उनकी जयन्तियां मनाना तो दूर कहीं महर्षि दयानन्द को ही सुगम रूप से नकारने न लग जायें। क्योंकि शराब जैसे पदार्थों के कारण नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों में तेजी से हो रहा ह्रास हमें सामाजिक मूल्यहीनता की ओर धकेल रहा है।

जो मदिरा रोग से बचना चाहते हैं वे शराब को छोड़कर सन्तुलित और सात्त्विक भोजन खायें। अपनी थकावट को आराम करके, दूध का गिलास पीकर दूर करें। अपना समय भले लोगों की संगति में बितावें और ईश्वर को हर समय याद रखें। यह सब कुछ तभी सम्भव है जब हरयाणा में पूर्ण रूप से कानूनी तौर पर शराब बन्द हो जायेगी। हरयाणा की प्रगति का एकमात्र रास्ता शराब के बन्द होने से खुल जायेगा।

तलाव ग्राम में आर्यसमाज की स्थापना

आप सबको सूचित किया जाता है कि श्री फतेहसिंह जी भण्डारी के पुरुषार्थ से गांव तलाव, त० झज्जर, रोहतक में आर्यसमाज की पुनः स्थापना हो गई है। दिनांक २९-३० नवम्बर को रात्रि में श्री ईश्वरसिंह जी 'तूफान' की भजनमण्डली द्वारा बड़ी धूमधाम से वेदप्रचार किया गया। जिसका बहुत ही अच्छा प्रभाव रहा। एक दिसम्बर सोमोती (सोमवती) अमावस्या के दिन गुरुकुल के महर्षि के वीर सैनिक, श्री प्रदीप-कुमार जी शास्त्री और ब्र० यज्ञवीर एवं भण्डारी जी द्वारा हर्षोल्लास के साथ बड़ा यज्ञ रचाया गया। जिसमें लोगों ने श्रद्धा और प्रेम से भाग लिया। बहुत से लोगों ने यज्ञोपवीत धारण किया। सबने श्रद्धापूर्वक आहुतियां देकर सौभाग्य मनाया। पर्याप्त दान-दक्षिणा देकर हर्ष मनाया और आगे भी बुलाया। आर्यसमाज तलाव की ओर से १०१) वेदप्रचार के लिए दान दिया और ५१) दशांश भी सभा को दिया। आर्यसमाज को दोबारा चलाने में श्री प० देवसिंह जी और महाशय करतारसिंह जी का बहुत बड़ा योगदान रहा। वेदप्रचार में ढोलक मास्टर और चिमटा मास्टर का बड़ा प्रशसनीय सहयोग रहा।

अकेला गया और दुल्हन ले आया

बहादुरगढ़, २३ दिसम्बर (निस)। जनवादी विचारधारा वाले एक नवयुवक श्री रणवीरसिंह ने २७३ रुपये में अपनी शादी सम्पन्न करके दहेज जैसी सामाजिक बुराई को खत्म करके एक उदाहरण पेश किया है।

एक अच्छी सरकारी नौकरी में कार्यरत यह नवयुवक यहां महावीर पार्क में रहता है, जिसने अपनी शादी में सारी सामाजिक बुराइयों को त्याग कर यह आदर्श विवाह किया है। इस नवयुवक के कई रिश्ते आये परन्तु उसकी सिर्फ यह मांग थी कि वह अकेले ही शादी करने आयेगा और केवल जयमाला डलवाकर शादी करेगा।

शादी में किसी प्रकार की न तो कोई रस्म होगी और न ही प्रीति-भोज। उसकी इस मांग के आगे कोई भी नहीं ठहर पाया, परन्तु यहीं के निकटवर्ती गांव खरमान के एक किसान परिवार को उसकी यह मांग अच्छी लगी और उन्होंने अपनी लड़की का हाथ इस नवयुवक के हाथ में थमा दिया। इस आदर्श विवाह की शहर में काफी चर्चा है।

जय-जय हे बलिदानी

राधेश्याम आर्य एडवोकेट, मुसाफिर खाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

ऋषिवर दयानन्द के सच्चे अनुयायी थे, वीर सिपाही।
वैदिकधर्म बढ़े जिससे भू पर, वह शक्ति स्वतः अवगाही।
सत्य-धर्म की बलिवेदी पर, तुमने आहुति दी लासानी।
जय-जय हे बलिदानी॥

स्वतन्त्रता हित मातृभूमि की, तुमने किया सतत संघर्ष।
क्रांति जयी पथ आलोकित था, स्वतन्त्र होगया भारतवर्ष।
सीना तान दिया अरि सम्मुख, हार नहीं रिपु दल से मानी।
जय-जय हे बलिदानी॥

शुद्धि-यज्ञ का सूत्रपात कर, एक नया इतिहास बनाया।
प्राण निछावर कर तुमने ही, जन-जन जीवन ज्योति जगाया।
नवल चेतना जाग्रत करके, बने अजेय अभय अभियानी।
जय-जय हे बलिदानी॥

गुरुकुल के तुम बड़े प्रणेता, तुम थे भारत के अभिमान।
साहस शौर्य-शक्ति से अपनी, बने अभय हो युग प्रतिमान।
'स्वामी श्रद्धानन्द' तुम्हीं थे, अपराजेय-यती-अभिमानी।
जय-जय हे बलिदानी॥

महर्षि दयानन्दमठ चम्बा (हि०प्र०) का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

३ नवम्बर से ६ नवम्बर तक यजुर्वेद पारायणयज्ञ तथा महात्माओं व विद्वानों के प्रवचन होते रहे। कन्या गुरुकुल चम्बा की ब्रह्मचारिणियों तथा दयानन्दमठ के ब्रह्मचारियों का सस्वर वेदपाठ रावी नदी की कल-कल ध्वनि को चार चांद लगा रहा था।

स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती ने उद्घोषणा की कि हिमालय की चोटियों पर वैदिक अनुसंधान केन्द्र तथा पुत्रेष्टि व वृष्टि यज्ञ शोध संस्थानों की शीघ्र ही स्थापना की जायेगी।

इस शुभ अवसर पर सर्वश्री स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, स्वामी ब्रह्मानन्द अधिष्ठाता वेदप्रचार (हि०प्र०), पं० ब्रह्मप्रकाश शास्त्री विद्या-कुलपति दिल्ली, पं० निरंजनदेव तीर्थ खतौली, पं० चन्द्रसेन वैदिक मिशनरी सोनीपत, पं० हरिश्चन्द्र संगीतरत्न आ० प्र० नि० सभा (हि०प्र०), पं० गोपाल भिक्षु, ज्ञान भिक्षु जम्मू पं० देवीदास, कालीदास भजनमण्डली ऊधमपुर आदि महानुभावों ने अमृत वर्षा की। इसके अतिरिक्त सर्वश्री वीरेन्द्र सम्पादक वीर प्रताप, बहिन कमला आर्या, ब्रह्मदत्त शर्मा मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, कृष्णलाल आर्य प्रधान प्र० नि० सभा हि०प्र०, प० भगवान् चैतन्य जी आ० प्र० नि० सभा (हि०प्र०) के भाषणों से सभा में विशेष उत्साह का वातावरण बनाया।

स्वामी सुमेधानन्द दयानन्दमठ, चम्बा (हि०प्र०)

रोहतक में स्वामी श्रद्धानन्द जी का ६०वां बलिदान दिवस समारोह सम्पन्न

आर्य वीरदल रोहतक के तत्वाधान में अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का ६०वां बलिदान आर्यनगर के पार्क में दिनांक १४-१२-८६ को बड़े समारोह के साथ मनाया गया, जिसमें आर्य वीरदल हरयाणा के संचालक प्रो० उत्तमचन्द जी शरर तथा आर्यजगत् के ओजस्वी वक्ता श्री चन्द्रप्रकाश जी सत्यार्थी ने स्वामी जी के जीवन की प्रमुख घटनाओं पर प्रकाश डाला तथा उनके दिखाये मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। यह कार्यवाही २.३० बजे यज्ञ के साथ प्रारम्भ हुई तथा उपदेश, भजन तथा शांतिपाठ के साथ ५.३० बजे समाप्त हुई।

—मुलकराज आर्य

हिसार में नशाबन्दी दिवस

हिसार १६ नवम्बर, सार्वदेशिक आर्य वीरदल हिसार द्वारा आर्य पब्लिक स्कूल बालसमन्द रोड, हिसार में आज सांस्कृतिक प्रतियोगिता सम्पन्न हुई। जिसमें सर्वश्रेष्ठ टीम इस प्रकार रही—

योगासन प्रतियोगिता (स्कूल स्तर), आर्य पब्लिक स्कूल हिसार (कालेज स्तर), गुरुकुल आर्यनगर भाषण (स्कूल स्तर), आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय नरवाना (कालेज स्तर), दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार। प्रतियोगिता के पश्चात् नशाबन्दी सम्मेलन श्री भक्त रामेश्वरदास जी की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें सार्वदेशिक आर्य वीरदल के प्रधान श्री बालदिवाकर हंस जी मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर जिला संचालक श्री सत्यकाम आर्य ने हरयाणा में पूर्ण नशाबन्दी के लिये मांग की तथा वहां उपस्थित श्रोताओं ने इसका पूर्णतया समर्थन किया।

सत्यकाम आर्य
जिला संचालक सार्वदेशिक आर्य वीरदल
बालसमन्द रोड हिसार

आर्यसमाज पंचकूला सैक्टर ६, पंचकूला का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री रणवीर पसरीचा, मन्त्री—जयदेव आहूजा, कोषाध्यक्ष - जागीरीलाल शर्मा।

ग्राम दड़ौली (हिसार) में शराबबन्दी सम्मेलन सम्पन्न

दिनांक ७-१२-८६ को दिन के १२ बजे शराबबन्दी समिति दड़ौली की तरफ से शराबबन्दी सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता श्री मादरसिंह ठाकुर ने की, जिसमें सैंकड़ों नर-नारियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। सभा उपदेशक एवं शराबबन्दी समिति हिसार के अध्यक्ष श्री अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी, सामाजिक विकास समिति हिसार के अध्यक्ष प्रो० आर० एस० गुप्त, प्रो० पी० के० सक्सेना तथा श्री संग्रामसिंह आर्य ने शराब से होनेवाली बुराई, दहेजबन्दी, छुवाछात, राष्ट्ररक्षा तथा धूम्रपान निषेध पर विस्तार से अपने विचार रखे। श्री रामसिंह गोदारा के नेतृत्व में अगस्त मास से पहले से ही सक्रिय है। संग्रामसिंह आर्य ने समिति के कार्य पर विचार रखते हुए बताया कि अब तक हम एस० एच० ओ० साहब, एस० एस० पी० साहब, एस० डी० एम० साहब से कई बार मिल चुके हैं। लेकिन पुलिस की तरफ से कार्यवाही अब तक नाममात्र भी नहीं हुई है। अब समिति के अधिकारी २५-११-८६ को डी० सी० साहब से मिले हैं। उन्होंने आश्वासन दिया है कि आपकी इस कार्य में पूरी मदद की जायेगी। गांव में ५ ६ घरों में आदमपुर व भट्टूकलां के ठेकेदार अवैध तरीके से कट्टे डालते हैं। समिति ठेकेदार को कई बार चेतावनी दे चुकी है। लेकिन राजनैतिक कारणों व पुलिस की उपेक्षाकृत कार्यवाही से ठेकेदार बाज नहीं आता। इस संघर्ष से पहले गांव में शराबी तत्वों ने आतंक फैला रखा था।

इस सम्मेलन को सफल करने में श्री हरदत्तसिंह, केहरसिंह, बलवन्तसिंह, बलवीरसिंह शर्मा, बन्सीलाल शर्मा, कनेन्द्रसिंह, धर्मपाल वर्मा, सरपंच हरचन्द, कप्तान फूलसिंह, सूबेदार शिवराम आदि का विशेष सहयोग रहा। वक्ताओं के विचारों से प्रभावित होकर सभा के आखिर में खड़े होकर ३ खुंखार शराबियों ने शराब न पीने की प्रतिज्ञा की। सम्मेलन में स्कूल की लड़कियों का, क्रांतिकारी भजनों का कार्य भी सराहनीय रहा। इस कार्यक्रम का गांव के लोगों पर अच्छा असर पड़ा। श्री संग्रामसिंह आर्य ने इस सारे कार्यक्रम का विधिवत् संयोजन किया।

धर्मपाल वर्मा ग्राम दड़ौली (हिसार)

इराडी न्यायाधिकरण की रिपोर्ट इसी माह

चण्डीगढ़ २४ दिसम्बर (वार्ता)। हरयाणा के सिंचाई तथा बिजली मन्त्री शमशेरसिंह सुरजेवाला ने कहा है कि इराडी न्यायाधिकरण द्वारा इस माह अपनी रिपोर्ट सरकार को पेश किये जाने की सम्भावना है।

आज यहां संवाददाताओं से बातचीत करते हुए श्री सुरजेवाला ने कहा कि पंजाब, हरयाणा, राजस्थान और दिल्ली न्यायाधिकरण के समक्ष अपने लिखित दावे दाखिल कर चुके हैं।

रावी व्यास नदी का पानी पंजाब, हरयाणा और राजस्थान में बंटवारा तय करने के लिए पंजाब समझौते के बाद इस आयोग का गठन किया गया था। दो अक्तूबर को इसका छह माह का निर्धारित कार्यकाल समाप्त होनेवाला था, लेकिन इसकी कार्य अवधि बढ़ाकर दो जनवरी तक करदी गई थी।

सभा शताब्दी की धन, अन्न एवं स्मारिका उपसमितियों की बैठक

आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना शताब्दी समारोह की तैयारी के लिए अन्तरंग सभा द्वारा गठित धन, अन्न तथा स्मारिका उपसमिति की एक आवश्यक बैठक सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी की अध्यक्षता में सभा कार्यालय सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक में ३ जनवरी, १९८७ को प्रातः ११ बजे होनी निश्चित हुई है।

अतः सभी सदस्यों से अनुरोध है कि सभा शताब्दी समारोह को सफल करने के लिए समय पर पधार कर अपने सुझाव तथा सहयोग देने की कृपा करें। —वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

नशाबन्दी अभियान में सहयोग करने की अपील

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से नशाबन्दी अभियान चलाया जा रहा है। गतवर्ष शराब के ठेकों पर धरणे देकर ६-७ स्थानों पर ठेके बन्द करवाये गये और ग्रामीण पंचायतों से शराब बन्द करवाने के प्रस्ताव हरयाणा सरकार को भिजवाये थे। इस प्रकार गतवर्ष हरयाणा सरकार ने ६५ ठेकों की नीलामी बन्द करदी थी।

हरयाणा सरकार के आदेशानुसार ३१ दिसम्बर तक जिन पंचायतों के प्रस्ताव हरयाणा सरकार को पहुंच जायेंगे तो उन ग्रामों में १९८७ के लिये शराब के ठेकों की नीलामी नहीं की जायेगी।

अतः आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि अपने समीप की पंचायतों से शराबबन्दी के प्रस्ताव करवाकर ३१ दिसम्बर से पूर्व हरयाणा सरकार के पास भिजवाने का प्रयत्न करें।

सभा के उपदेशक तथा भजनोपदेशक भी प्रचार द्वारा पंचायतों को प्रस्ताव कराने की प्रेरणा कर रहे हैं। अतः हरयाणा से शराब की सामग्र समाप्त कराने के लिए तन, मन तथा धन से सभा को सहयोग प्रदान करें। नशाबन्दी के प्रस्ताव का प्रारूप निम्न प्रकार है—

नशाबन्दी प्रस्ताव का प्रारूप

॥ ओ३म् ॥

नशाबन्दी प्रस्ताव

माननीय मुख्यमन्त्री जी,
हरयाणा, चण्डीगढ़।

हमारे ग्राम.................................जिला...ग्रामसभा (पंचायत) ने अपनी बैठक दिनांक में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया है—

"यह ग्रामसभा (पंचायत) शराब पीने की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को ग्राम्य जीवन के लिए बहुत घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। गांव में अनाचार, अशांति और अपराध फैलते हैं। धन का भी भारी विनाश होता है। ऐसी अवस्था में हरयाणा सरकार की शराबबन्दी नीति का स्वागत करते हुए यह पंचायत मांग करती है कि हमारे क्षेत्र में चालू शराब की दुकान तुरन्त बन्द करदी जाये और भविष्य में कदापि यहां शराब का ठेका खोलने की अनुमति न दी जाये ताकि उक्त बुराइयों से ग्राम्य जीवन की रक्षा हो सके।"

आशा है आप पंचायत की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यहां की शराब की दुकान को बन्द करने के लिए आवश्यक पग शीघ्र उठाने की कृपा करेंगे।

सधन्यवाद!

ता०..................

विनीत
ग्रामसभा (पंचायत)

प्रतिलिपि :—

१. प्रधानमन्त्री, भारत सरकार, नई दिल्ली।
२. मन्त्री आबकारी एवं कराधान हरयाणा, चण्डीगढ़।
३. आबकारी एवं कराधान आयुक्त हरयाणा, चण्डीगढ़।
४. उप आबकारी एवं कराधान आयुक्त जिला..........
५. जिलाधीश.........
६. मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक।

हस्ताक्षर

भगवान् इन नेताओं को सद्बुद्धि ऐसी दीजिए

ब्रह्मप्रकाश शास्त्री विद्यावाचस्पति

हे देश के नर-नारियों गौरव को अपने जान लो।
सब मान मर्यादा गई इस बात को पहचान लो॥

परतन्त्रता की बेड़ियां काटी थी तुमने आर्यो।
स्वाधीन होकर भी दुःखी मां भारती है आर्यो॥

राम राज्य होगा देश में गांधी का यह फरमान था।
कुर्बानियां जो दे गये उनका यही अरमान था॥

चालीस वर्षों में हुआ क्या स्वप्न वह साकार है।
नर्तक बनी है संस्कृति कैसा हुआ आकार है॥

राष्ट्रभाषा का हमारी हो रहा अपमान है।
राजर्षि टंडन का हुआ सब धूलिधूसर मान है॥

गांधी तेरे इस देश में क्या बात है यह हो रही।
स्वाधीन भारत में तेरे ओमाद है जो रो रही॥

मुख में सारी बुराई है सुरा के पान में।
ध्यान में आता नहीं नेताजिरी की शान में॥

शिक्षा कुशिक्षा हो रही चारित्र्य की क्या बात है।
दूरदर्शन की लगी कैसी अनोखी बात है॥

हे आर्यो कब तक रहोगे देखते इस कृत्य को।
जिससे मनुजता घट रही ऐसे घिनौने दृश्य को॥

भगवान् इन नेताओं को सद्बुद्धि ऐसी दीजिए।
वैदिक सुधा के पान से कल्याण इनका कीजिए॥

शास्त्री सदन ११/१२४ पश्चिमी आजाद नगर, दिल्ली-५१

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज पानीपत की यह असाधारण बैठक आर्यसमाज के प्रतिष्ठित सदस्य श्री दलीपसिंह जी आर्य की धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मी देवी जी के आकस्मिक निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान कर समस्त परिवारजनों को यह महान् दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

कुलभूषण मन्त्री आर्यसमाज, पानीपत

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का

बिक्री हेतु वैदिक साहित्य

क्र०	पुस्तकों का नाम	मूल्य
१.	दी वेदाज (अंग्रेजीभाषा में)—स्वामी भूमानन्द जी	१-००
२.	दी प्रिंसिपल्ज आफ आर्यसमाज —पं० चमूपति एम०ए०	१-५०
३.	जीवन ज्योति (वेदमन्त्रों की व्याख्या)—पं० चमूपति एम०ए०	३-००
४.	निहारिकावाद और उपनिषद्—पं० चमूपति एम०ए०	०-५०
५.	आर्यसमाज की विचारमाला—पं० क्षितीशकुमार वेदालंकार	१-००
६.	निजाम की जेल में—लेखक पं० क्षितीश	२०-००
७.	ईसाइयों की प्रचार प्रणाली—पं० जगत्कुमार शास्त्री	००-१०
८.	आर्यसमाज और अस्पृश्यता निवारण—पं. ओम्प्रकाश त्यागी	००-५०
९.	बलिदान जयन्ती स्मृति ग्रंथ (आर्य शहीदों का परिचय)	४-५०
१०.	ईश्वर की सत्ता—डा० रणजीतसिंह	१-००
११.	हरयाणा के आर्यसमाज का इतिहास—डा० रणजीतसिंह	५-००
१२	धर्म-प्रवेशिका —डा० रणजीतसिंह	३-००
१३.	धर्म-भूषण ,,	५-००
१४.	पंजाब का आर्यसमाज —प्रि० रामचन्द्र जावेद	२-००
१५.	आदर्श धातु रूपावली —महावीर आजाद शास्त्री	२-००
१६.	वैदिक उपासना पद्धति—डा० सुदर्शनदेव आचार्य	३-००
१७.	स्मारिका (हरयाणा प्रांतीय आर्यसमाज शताब्दी समारोह)	१-००
१८.	मूर्तिपूजा —सम्पादक पं० जगदेवसिंह सिद्धांती	००-५०
१९.	वेदस्वरूप निर्णय ,,	००-७५
२०.	वेदाविर्भाव ,,	१-००
२१.	वेदभाष्य पद्धति ,,	१-००
२२	ईसाई पादरियों की आर्यसमाज को चुनौती—स्वा० दर्शनानन्द	०-१०
२३.	गोकरुणानिधि—स्वामी दयानन्द सरस्वती	०-२०
२४.	सत्यार्थप्रकाश ,,	६-००
२५.	महर्षि दयानन्द आत्मकथा ,,	०-५०
२६.	हमारा फाजिल्का —योगेन्द्रपाल	१-००
२७.	बड़ —स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती	१-५०
२८.	वीर हेमू ,,	००-७५
२९.	पीपल ,,	१-५०
३०.	मिर्च ,,	१-५०
३१	श्लीपद वा हाथीपांव की चिकित्सा ,,	०-२०
३२.	बिच्छू विष चिकित्सा ,,	०-५०
३३.	लवण ,,	१-२५
३४.	विदेशों में मैंने क्या देखा ,,	२-५०
३५.	नैरोबी यात्रा ,,	१-५०
३६.	ब्रह्मचर्य साधन ६-११ ,,	१०-००
३७.	,, १-२ ,,	१-००
३८.	,, ३ ,,	१-००
३९.	,, ४ ,,	२-५०
४०.	,, ५ ,,	२-००
४१.	,, ६ ,,	३-००
४२.	,, ७-८ ,,	२-००
४३.	,, ९ ,,	३-००
४४.	,, १० ,,	१-५०
४५.	,, ११ ,,	२-००
४६.	हल्दी ,,	१-५०
४७.	नीम ,,	१-२५
४८.	पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय—प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु	१-५०
४९.	नास्तिक मत समीक्षा—पं० हरिदेव सर्राफ	००-१५
५०.	विश्व को आर्यसमाज का सन्देश—महात्मा वेदभिक्षु जी	००-२५

प्राप्ति स्थान
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

हैदराबाद के आर्य सत्यग्रहियों के लिये

आवश्यक सूचना

आर्यसमाज के नेताओं के अनुरोध पर भारत सरकार ने हैदराबाद के आर्य सत्याग्रहियों को पेन्शन हेतु आवेदन-पत्र भेजने की अवधि ३१ जनवरी, १९८७ स्वीकार करली है।

अत. जिन सत्याग्रहियो अथवा उनके आश्रितों ने अपने आवेदन-पत्र भारत सरकार तथा हरयाणा सरकार को किसी कारणवश नहीं भेजे हैं वे अपने जेल के प्रमाण-पत्र साथ लेकर सभा कार्यालय दयानन्दमठ, गोहाना मार्ग, रोहतक मे तुरन्त सम्पर्क करे।

—प्रो० शेरसिंह
प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

सर्वहितकारी के ग्राहक महानुभावों से निवेदन

सर्वहितकारी के ग्राहक महानुभावों ने समाचारपत्रों में पढ़ा होगा कि डाक विभाग ने डाक से भेजे जानेवाले समाचारपत्रो पर ५ पंसे के स्थान पर १५ पैसे को टिकटे लगाने का निर्णय किया है। इस प्रकार सर्वहितकारी पर भी ५ पसे के स्थान पर अब १५ पैसे को टिकट प्रति सप्ताह लगानी पड़ेगी। इस प्रकार वर्षभर में ४८ अंकों पर १० पैसे अधिक टिकट लगाने से ४८० पैसे डाक व्यय बढ गया है। अत विवश होकर सर्वहितकारी का वार्षिक शुल्क २०) के स्थान पर आगामी वर्ष १९८७ से २५) करना पडा है।

अत: सर्वहितकारी के ग्राहक महानुभावों से निवेदन है कि सर्वहितकारी का वार्षिक शुल्क २५) भेजने की कृपा करें।

—व्यवस्थापक सर्वहितकारी



ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका पर भाष्य

सन १९८३ में अजमेर में महर्षि की निर्वाण शताब्दी मनाई गई। सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान स्वामी विद्यानन्द सरस्वती अजमेर नहीं गये। परन्तु महर्षि की वसीयत के अनुसार उनकी इच्छापूर्ति करने का सकल्प करके उसी दिन से महर्षि कृत ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका पर भाष्य लिखने में जुट गये।

आचार्य उदयवीर शास्त्री, प० युधिष्ठिर मीमांसक, डा० रामप्रसाद वेदालंकार आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री आदि आर्यजगत् के १५ विद्वानों के सहयोग से निरन्तर तीन वर्ष की साधना के फलस्वरूप स्वामी जी अपना सकल्प पूरा करने में सफल होगये हैं। बड़े आकार (२०×३०) के लगभग १४०० पृष्ठों का दो जिल्दो के प्रकाशित होनेवाला "भूमिका भास्कर" नामक यह ग्रन्थ अभूतपूर्व होगा। प्रत्येक आर्यसमाज सभा, गुरुकुल कालेज, पुस्तकालय तथा आर्य पुरुष के पास यह ग्रन्थ अवश्य होना चाहिये। महर्षि दयानन्द के प्रति यह वास्तविक श्रद्धांजलि होगी। यह ग्रंथ 'इण्टर नेशनल आर्यन फाउण्डेशन बम्बई की ओर से प्रकाशित किया जारहा है।

छपने पर इसका मूल्य ३०० रुपये से कम नहीं होगा। परन्तु छपने से पूर्व मूल्य भेजकर आर्डर देनेवालों को यह केवल २०० रुपये में मिलेगा। पहले आर्डर देनेवाले सज्जन न केवल कम मूल्य में पुस्तक ले सकेंगे, वे ग्रन्थ के प्रकाशन में आर्थिक सहयोग देकर यश के भागी भी होंगे।

मैनेजिंग ट्रस्टी
इण्टर नेशनल आर्यन फाउण्डेशन
...
मिलिन्द मेरी रोड ... बम्बई ४०...

आर्यसमाज कोटला खास जि० अम्बाला का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री मेहरसिंह, उपप्रधान—हरिचन्द, मन्त्री—सतपाल आर्य, उपमन्त्री—वेदप्रकाश, कोषाध्यक्ष—रामकिशन, प्रचार मंत्री—महेन्द्रपाल, पुस्तकाध्यक्ष—रणवीरसिंह।

सतपाल आर्य प्रबन्धक

आर्यसमाज लोहारू का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री विजयसिंह, उपप्रधान—मा० हरिसिंह, मा० अमरसिंह, सुलतानसिंह, मन्त्री—रोहताशकुमार, उपमन्त्री—मा० विहारीसिंह, कोषाध्यक्ष—धरतसिंह शास्त्री, पुस्तकाध्यक्ष—सुरेशपाल आर्य, लेखानिरीक्षक—मा० चन्दनसिंह।

आर्य पुरोहित सभा दिल्ली (पजी) का वार्षिक चुनाव

प्रधान—प० प्रेमपाल शास्त्री, उपप्रधान—प० यशपाल सुधांशु, प० विक्रम शास्त्री, मन्त्री—प० मेघश्याम वेदालकार, उपमन्त्री—डा० रूपकिशोर शास्त्री, प० शिवराज शास्त्री, कोषाध्यक्ष—प० विद्याप्रसाद मिश्र लेखानिरीक्षक—प० भारद्वाज पांडेय।

... मुद्रक और प्रकाशक ... द्वारा ... प्रिंटिंग प्रेस, ... से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 रजिस्टर्ड

फोन ४८१२



ओ३म् कृण्वन्तो विश्व

सर्वहितकारी

रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभा मन्त्री

सह-सम्पादक—डा० यज्ञवीर

वर्ष १४, अङ्क ७ ३ जनवरी, १९८७ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

वेदोपदेश—

ओ३म् क्रतो स्मर

पद्मजा शांतिप्रकाश आर्योपदेशक शास्त्रार्थ महारथी,
४५३ बरकत नगर, जयपुर

वेद भगवान् की आज्ञा है कि हे यज्ञशील मनुष्य तू यज्ञसिद्धि के लिये ओ३म् का स्मरण कर।

यज्ञ शब्द के धात्वर्थ देवपूजा, संगतिकरण और दान के हैं। देवपूजा में सब दिव्य पदार्थों की शुद्धि और उनका यथायोग्य प्रयोग करना भी है तथा यह कार्य त्यागपूर्वक हो, तभी वह यज्ञीय कर्म होगा।

यज्ञ वह शुभ कर्म हैं जिनके फल की इच्छा स्वयं के लिए न होकर प्राणिमात्र के भले के लिए, सुखसमृद्धि के लिए किये जाते हैं, उन श्रेष्ठ कर्मों का नाम यज्ञ है। शुभकर्म किये जाये, जिनमें त्याग की भावना रहे और वह शुभ हों, उन कर्मों को वेद में यज्ञ कहा गया है। इन शुभ कर्मों के मूल में कोई स्वार्थ का भाव न हो, तभी उन शुभकर्मों का नाम यज्ञ होगा।

कर्म तीन प्रकार के हैं—सकाम, दुष्काम, निष्काम। इन तीन प्रकार के कर्मों में दुष्काम कर्म करना पाप है, इसीलिए उनका निषेध है। सकाम शुभकर्मों में अपने लाभ की भावना भी मनमें विद्यमान रहती है किन्तु निष्काम कर्म तो परहितार्थ किये जाते हैं। जिनमें स्वार्थ का भाव लेशमात्र भी न हो और वह शुभ भी हों। ऐसे जन्मजन्मांतरों के शुभनिष्काम कर्म मोक्षप्रापक होते हैं। फल की लालसा न होने के कारण वह निष्काम कर्म सांसारिक सुखों के जनक न होकर केवल मोक्ष फलदायक ही होते हैं।

जन्मजन्मांतरों के निष्काम कर्मों की फलदायक निष्पत्ति मुक्ति के लिए ही होती है। इन कर्मों के संस्कार बीजरूप से जन्मजन्मांतरों के एकत्र होकर परमात्मा के ज्ञान में सुरक्षित रहते हैं और मन निर्मल होता चला जाता है।

सम्यग्ज्ञानाधिगमाद् धर्मादीनामकारणप्राप्तौ।
तिष्ठति संस्कारवशाच्चक्रभ्रमिवद् धृतशरीरः॥

सम्यक् ज्ञानप्राप्ति से धर्म, ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य की पूर्णता होने की अवस्था तक संस्कारवशात् कुलालचक्र की गति की भांति कर्मों में प्रवृत्त रहकर आप्तकाम होने की अवस्था में परमात्मानन्द में डुबकी लगाये रहकर मुक्तात्मा कहलाता है और त्रिविध बन्धों से छूट जाता है।

पुनरावृत्ति

मुक्ति से सबका पुनरावर्तन अवश्य होता है। उसी के संस्कार जीव में बने रहते हैं, तभी संस्कारवशात् उसकी प्राप्ति की इच्छा भी जीवमात्र में बनी रहती है।

अन्यथा मुक्त होते-होते जीवमात्र के मुक्त हो जाने की अवस्था में संसार का अत्यन्त उच्छेद हो जाता, किन्तु ऐसा किसी समय भी कदापि न होने से मुक्ति से लौटना सिद्ध है।

फतेहाबाद के शास्त्रार्थ में मैंने पादरी से पूछा कि आपको मुक्ति प्राप्ति की इच्छा है? उसके हां करने पर मैंने कहा कि अनदेखी या कभी अनुभव में न आई किसी बात की इच्छा जीवमात्र में कदापि नहीं होती। जीवमात्र में इच्छाभाव बने रहने का अभिप्राय स्पष्ट है कि सब जीवमात्र अनादि काल से कई-कई बार मुक्त होकर लौटे हुए हैं और आगे भी मुक्त होकर फलसमाप्ति की अवधि पर लौटते रहेंगे। अतः नियम यही है कि हर समय मुक्ति में जीव रहते हैं।

ते परान्तकाले परामृता परिमुच्यन्ति सर्वे।

मोक्ष की अवधि परांतकाल तक है। इतने महाचिरकाल तक मुक्ति में परमात्मानन्द में रमण करके पुनः कर्मक्षेत्र में लौटकर नव शरीर की प्राप्ति करते हैं। इसी को मुक्ति से पुनरावृत्ति का सिद्धांत कहा जाता है। "न च पुनरावर्तते" का अभिप्राय केवल यह है कि मुक्ति की अवधि समाप्ति से पूर्व नहीं लौटते हैं किन्तु मुक्ति फलभोगानन्तर तो लौट आना ही पड़ता है। अन्यथा यदि हम मुक्ति से लौटे न होते या मुक्ति का आनन्द हमने भोगा न होता तो मुक्ति के संस्कार शेष न होने के कारण किसी भी जीवधारी को मुक्त होने की कदापि इच्छा ही न होती।

मुक्ति का बहुमूल्य हीरा हमें प्राप्त था। हम कभी उसमें रमण करते और आनन्दमग्न रहते थे। वह अवस्था हमारे से पृथक् हो जाने या मुक्ति से लौट आने के कारण आत्मा में उसकी प्राप्ति की इच्छा बनी रहती है। अतः लौटकर कर्मक्षेत्र में आते रहते हैं। भिन्न-भिन्न जीवों की गणना में यह मुक्तिप्राप्ति और मुक्ति से पुनरावृत्ति का क्रम जारी रहता है। न इसका आदि और न इसका अन्त है।

ईश्वर, जीव, प्रकृति नित्य होने के कारण उनका अत्यन्त उच्छेद कभी नहीं होता।

सांख्यकार महर्षि कपिलमुनि ने भी इसी वैदिक सिद्धांत को स्वीकारा है कि—

इदानीमिव सर्वत्र नात्यन्तोच्छेदः।

जैसे संसार अब चल रहा है, आगे भी इसी प्रकार चलता रहेगा। सृष्टि और प्रलय तथा जीवों का मुक्त होना और मुक्ति से लौटकर कर्मक्षेत्र में प्रवृत्त होना आदि अब की भांति सदैव से सदैव होता रहता है। अनादि पदार्थों के लिए न उनका आदि है और न अन्त। केवल अपने गुण कर्म स्वभाव के अनुसार सदा वर्तमान रहते हैं। इसी का नाम वैदिक त्रित्वदर्शन या त्रित्ववाद का सिद्धांत है। बाइबल और कुरान में भी इस सिद्धांत=त्रित्ववाद का बीज देखा जा सकता है। ❀

महात्मा बुद्ध की अमर वाणी

मनुष्यो!

तुम सिंह के सामने जाते समय भयभीत न होना,
वह पराक्रम की परीक्षा है।
तुम तलवार के नीचे सिर झुकाने से भयभीत न होना,
वह बलिदान की कसौटी है।
तुम पर्वत शिखर से पाताल में कूद पड़ना,
वह तप की साधना है।
तुम बढ़ती हुई ज्वालाओं से विचलित न होना,
वह स्वर्ण-परीक्षा है।
पर शराब से सदा भयभीत रहना, क्योंकि
यह पाप और अनाचार की जननी है।

सभा स्थापना शताब्दी समारोह को सफल करने के लिए आर्यनेताओं की अपील

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की स्थापना सन् १८८६ में अमृतसर में हुई थी। उस समय पंजाब, हरयाणा, दिल्ली, हिमाचल तथा जम्मू काश्मीर राज्यों में इसी सभा के माध्यम से आर्यसमाज तथा समाज-सुधार के कार्य और प्रचार होता था। गत १०० वर्षों में आर्यसमाज ने हैदराबाद आर्य सत्याग्रह, शुद्धि आंदोलन, हिन्दी रक्षा आंदोलन, गोरक्षा आंदोलन समालखा तथा कुण्डली में गोहत्या उन्मूलन आदि आंदोलन चलाये हैं, जिनसे आर्यसमाज का प्रभाव जन-जन पर पड़ा है।

इन सभी सामाजिक कार्यों में हरयाणा की जनता ने बढ़-चढ़कर भाग लिया है। इस समय प्रदेश में ५० के लगभग गुरुकुल, आर्य विद्यालय तथा अन्य आर्य संस्थायें आर्यसमाज के कार्य में रत हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से गत ३ वर्ष से शराब तथा दहेज आदि सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध एक अभियान चलाया जारहा है।

हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से पंजाब, हिमाचल, जम्मू काश्मीर तथा दिल्ली की आर्य प्रतिनिधि सभाओं के सहयोग से २२ से २४ मई तक रोहतक में सभा स्थापना शताब्दी समारोह धूमधाम से मनाया जारहा है। इसमें भारत के प्रमुख आर्यनेताओं तथा विद्वानों को आमन्त्रित किया गया है। इस अवसर पर गत १०० वर्षों के कार्यों का सिंहावलोकन तथा आगामी १०० वर्षों के लिए भावी कार्यक्रम की योजना बनाई जायेगी। आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के लिए अनेक सम्मेलन आयोजित किये जायेंगे। एक भव्य स्मारिका में सभा का संक्षिप्त इतिहास प्रकाशित किया जायेगा। प्रदेश में १०० नवीन आर्यसमाज स्थापित किये जायेंगे।

इन सभी योजनाओं को सफल करने के लिए सभा ने ७ लाख रुपये की आर्यजनता से अपील की है। इस उद्देश्य के लिए ५, १०, ५०, १००, २५०, ५०० तथा १००० रु० की रसीदें छपवाई जारही हैं। अतः आर्यसमाजों, आर्यसंस्थाओं तथा दानी महानुभावों से हमारा अनुरोध है कि वे सभा कार्यालय से धनसंग्रह करने के लिए अधिक से अधिक रसीद बुके मंगवाकर अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें।

सभा के अधिकारी सारे हरयाणा का भ्रमण करके आर्य कार्यकर्त्ताओं की बैठकों में सम्मिलित होकर जनसम्पर्क करेंगे। अतः सभी आर्यसमाज तहसील तथा जिलास्तर की बैठकों का आयोजन अपनी सुविधानुसार करके सभा को सूचित करें और शताब्दी समारोह को सफल करने के लिए तन, मन तथा धन से सहयोग करके सभा के संघटन को सुदृढ़ करें, जिससे आगामी १०० वर्षों में वेद तथा ऋषि दयानन्द का दिव्य सन्देश जन-जन तक पहुंचाया जा सके।

निवेदक

ओमानन्द सरस्वती	प्रो० शेरसिंह	बद्रीप्रसाद आर्य
प्रधान	प्रधान	कोषाध्यक्ष
परोपकारिणी सभा	आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा	
वेदव्रत शास्त्री		रघुवीरसिंह
मन्त्री		संयोजक
		शताब्दी समारोह

सोनीपत तथा पानीपत में आर्य कार्यकर्त्ताओं की बैठकें

आर्यसमाज सोनीपत नगर में जिला सोनीपत के कार्यकर्त्ताओं की ११ जनवरी रविवार को प्रातः १०-३० बजे तथा आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत में ११ जनवरी को ही दोपहर बाद १-३० बजे तहसील पानीपत के आर्य कार्यकर्त्ताओं की बैठक हो रही है। इनमें सभा के अधिकारी आर्य कार्यकर्त्ताओं से विचार विमर्श करेंगे।

अतः सम्बन्धित आर्यसमाज के अधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं से अनुरोध है कि वे इन बैठकों में पधार कर अपने सुझाव तथा सहयोग प्रदान करें। —वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री



नशाबन्दी कार्यकर्त्ता सम्मेलन में चौ० बन्सीलाल जी मुख्यमन्त्री, स० हरपालसिंह जी एम० पी०, सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी, बिजली सिंचाई मन्त्री चौ० शमशेरसिंह जी तथा ला० इन्द्रजीत जी आर्यसमाज नरवाना के प्रधान।



चौ० बन्सीलाल मुख्यमन्त्री हरयाणा को महर्षि दयानन्द का चित्र भेंट करते हुए, आर्य वीरदल के अधिष्ठाता धर्मदेव विद्यार्थी तथा प्रधान इन्द्रजीत जी। मंच पर स० हरपालसिंह एम० पी०, सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी, बिजली सिंचाई मन्त्री चौ० शमशेरसिंह सुरजेवाला, पीछे खड़े हैं आर्यसमाज नरवाना के मन्त्री श्री रामकुमार जी आर्य।

तहसील बल्लबगढ़ में वेदप्रचार

दिसम्बर १९८६ में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की भजनमण्डली पं० मुरारीलाल बेचैन व सहयोगी धर्मपाल अम्बावता द्वारा निम्नलिखित ग्रामों में शराबबन्दी तथा आर्यसमाज के सिद्धांतों का ठोस प्रचार हुआ। ग्राम दीग, फतेहपुर, फरीदाबाद शास्त्री कालोनी, ऐतमादपुर बल्लभी नगर, कुटालीपुर, रसूलपुर, फुलवाडी रोनीजा, मीआपुर, तिगांव, दयालपुर तथा ऊंचा गांव, साऊपुरा, पन्हेड़ा और सामपुर में लोग बड़े प्रभावित हुए और आर्यसमाज के नियम पालन करने का व्रत लिया।

आकाशवाणी के रोहतक केन्द्र से

सुखदेव शास्त्री महोपदेशक सभा का भाषण सुनिये

१३ जनवरी सायं ७ बजे।

विषय है—संक्रांति पर्व का महत्त्व।

शराब मानव-समाज की शत्रु है इससे अवश्य बचें।

सम्पादकीय

बादल बरनाला की होड़ और हरयाणा

जब से पंजाब में अकाली सरकार बनी, उसी समय से भारत सरकार और विरोधीदलों के कुछ नेता और उनके विचारों से प्रभावित बहुत से लोग इस खुशफहमी के शिकार हैं कि अकालीदल और अकाली सरकार आतंकवाद और अलगाववाद का कामयाबी से मुकाबला कर लेगी। पाकिस्तानी घुसपैठियों, पाकिस्तान में प्रशिक्षित आतंकवादियों, तस्करों और समाजविरोधी तत्वों की गतिविधियां बढ़ने, निर्दोष व्यक्तियों की हत्याओं में वृद्धि, बैंकों आदि की लूट में बढ़त के बावजूद अभी तक खुशफहमी पूरी तरह समाप्त नहीं हो पाई है।

खुशफहमी के चश्मे चढ़ने के कारण ही कुछ तथ्यों की अनदेखी होती रही है। अपराधों या उनके सन्देह में पकड़े गये नवयुवकों, जोधपुर की जेल में नजरबन्द अतिवादियों तथा उग्रवादियों और फौजी भगोड़ों को छोड़कर उनको नौकरी देने से वे सब लोग राष्ट्र की मुख्य धारा में शामिल हो जायगे, इससे बड़ी अदूरदर्शिता और नासमझी की कोई बात नहीं हो सकती। नौकरी में लगा देने से ही लोगों की कायापलट हो जाती है और दिमागों की सफाई हो जाती है, यदि यह बात सत्य है तो पंजाब के सभी सिख कर्मचारी राष्ट्र की मुख्यधारा का अभिन्न अंग ही नहीं होते बल्कि आतंकवाद और अलगाववाद को समाप्त करने में जी-जान से जुटे हुए होने चाहिये थे। लेकिन यह तथ्य अब किसी से छिपा नहीं है कि पंजाब पुलिस के कर्मचारियों का काफी बड़ा प्रतिशत आतंकवादियों का हिमायती है। पुलिस के कर्मचारियों का करदार तो जनता की आंखों के सामने हिंसक घटनाओं के माध्यम से आजाता है परन्तु दूसरे विभागों के कर्मचारियों का चिट्ठा सामने नहीं आ पाता है। राज्य की सेवाओं में तथाकथित भटके हुए जवानों को लेने से आतंकवादियों के हिमायतियों का प्रतिशत बढ़ेगा यह तथ्य स्पष्ट है। जेलों से छोड़कर सरकारी नौकरी में लिये गये उन जवानों के लिए स्वयं बरनाला सरकार मानती है कि ९० प्रतिशत लोग मुख्यधारा से जुड़ गये हैं, केवल १० प्रतिशत से भी कम नहीं जुड़ पाये हैं। बरनाला सरकार अपने कदम का औचित्य ठहराव के लिए बेशक कहती रहे, वह भी जानती है कि बहुत कम लोग मुख्यधारा से जुड़ पाये हैं। फौजी भगोड़ों की आम माफी की वकालत करनेवाले लोग क्या नहीं देख पाये कि आज भी ५० फौजी भगोड़े देशद्रोही गतिविधियों में जम्मू क्षेत्र में पकड़े गये हैं। यही हालत जोधपुर में कैद नजरबन्दों की है। पंजाब समझौते में ऐसे लोगों को रियायत देने या छोड़ने की बात जिस आशा से की गई थी, क्या आज उसका आधार बचा है?

यह बात सब लोग जानते हैं कि पंजाब समझौते के अमल और अलगाववादी तथा आतंकवादी गतिविधियों का आपस में कोई सम्बन्ध नहीं है। यह बात आतंकवादी बार-बार कहते रहे हैं। समझौते के दूसरे हिस्सों में उनकी कोई दिलचस्पी नहीं है, हां अपने साथियों को छुड़वाने में उनकी बेहद दिलचस्पी है। स्वायत्तता भी जितनी मिले, उस एक सीढ़ी पार करने को वे अपने उद्देश्य की प्राप्ति की दिशा में बढ़े हुए एक कदम के रूप में सहर्ष स्वीकार करेंगे। बरनाला और बादल की बेचैनियों और चुनौतियों से उनको आम सिख जनता को नरम से उग्र और उग्र से उग्रतर बनाने का भी मौका मिलता है। उधर बरनाला और बादल आतंकवादियों के दबाव से भारत सरकार से अपनी नाजायज (अनुचित) मांगें भी मनवाने का प्रयत्न करते रहते हैं। बादल क्योंकि सरकार से बाहर हैं, इसलिये उनकी भाषा में उग्रता होती है और जितनी उनकी सरकार बनाने की आशा कम होगी, उतनी ही उनकी उग्रता बढ़ जाती है। देश की एकता, अखण्डता और संविधान की बात दोनों ही कहते रहते हैं, परन्तु उससे बढ़कर उनके लिये अकालीदल का नेतृत्व हाथ में रखने और सुरक्षा करने का महत्त्व कहीं अधिक है। बरनाला जी तो कुछ-कुछ लोंगोवाल की बात का पास रखते हैं, आतंकवाद का विरोध भी करते हैं परन्तु उनका साथी बलवन्तसिंह महत्त्वाकांक्षी है और चाहे टिक न पाये परन्तु एक बार पंजाब का मुख्यमन्त्री बनने के लिये लालायित है। वह दबी जबान में वही बात कहता है जो बादल कहता है, वह तो भारत के सभी अल्पसंख्यकों को एक मंच पर लाने के स्वप्न भी देखता है। बरनाला सरकार के कई दूसरे मन्त्री तो पहिले ही उग्रवादी हैं और आतंकवादियों के हिमायती हैं। इन सबके दबाव में बरनाला भी लोंगोवाल के वचनों से फिरने के लिए मजबूर होते जारहे हैं। जिसकी बैसाखियों पर चल रहे हैं उसी को चुनौती देने के लिए बाध्य हो रहे हैं।

एक तथ्य और है जिसको खुशफहमी के शिकार स्पष्ट देखते हुए भी देखने से इन्कार कर रहे हैं। प्रधानमन्त्री ने तो प्रेस प्रतिनिधियों के सामने उसको मान भी लिया है। वह तथ्य यह है कि जिस तथाकथित पंजाब समझौते के अमल की दुहाई बरनाला और बादल देते रहते हैं, उसके अमल में सबसे बड़े बाधक वही दोनों हैं। पंजाब समझौते पर अकालीदल की ओर से हस्ताक्षर करनेवाले सन्त हरचन्दसिंह लोंगोवाल ने फिरोजपुर की बार एसोशियशन को सम्बोधित करते हुए १४ अगस्त, १९८५ को कहा था कि अबोहर के आस-पास के ५५ गांव हरयाणा को देने पड़ेंगे। यह बात अगले दिन समाचारपत्रों में छपी और उसका उन्होंने खण्डन नहीं किया। वास्तव में चण्डीगढ़ के बदले में फाजिल्का अबोहर क्षेत्र ही दिये जा सकते हैं, इसे वे जानते और मानते थे। समझौते में भी यह स्पष्ट लिखा है कि क्षेत्रीय विवाद के लिये दो आयोग बनेंगे। एक चण्डीगढ़ के बदले में हरयाणा को दिये जानेवाले क्षेत्रों की पहचान के लिये और दूसरा हरयाणा और पंजाब की सीमाओं के समायोजन के लिये। इन दोनों आयोगों द्वारा दिये जानेवाले क्षेत्र बिल्कुल अलग-अलग होंगे, यह भी समझौते की धारा ७-२ का अन्तिम वाक्य है। जो गांव सीमा से जुड़े हुए हैं उनका फैसला सीमा समायोजन के लिये गठित आयोग करेगा, (धारा ७-४ के आधीन)। चण्डीगढ के बदले में दिये जानेवाले गांव हरयाणा की सीमा से जुड़े हुए नहीं होने चाहियें, यदि ऐसा हुआ तो वे ७-४ के आधीन गठित आयोग के अधिकार क्षेत्र में चले जायेंगे। इसलिये समझौते की भाषा और भावना के अनुसार फाजिल्का अबोहर क्षेत्र के मैथ्यू आयोग द्वारा घोषित हिन्दी-भाषी गांव ही हरयाणा को दिये जा सकते हैं, क्योंकि कन्दूखेड़ा पंजाबी भाषी होने के कारण वे गांव हरयाणा की सीमा से जुड़े हुए नहीं हैं। यदि वे जुड़े हुए होते तो वेंकटरमैया आयोग के अनुसार चण्डीगढ के बदले में नहीं दिये जा सकते थे, वे सीमा समायोजन के तहत वैसे ही हरयाणा को मिल जाते। न्यायमूर्ति वेंकटरमैया ने ऐसे ३१ गांवों की पहचान की है (जिनका क्षेत्रफल ४५,००० एकड़ बनता है) जो दोनों १९६१ और १९८१ की जनगणना के अनुसार हिन्दी-भाषी हैं। परन्तु क्योंकि ये गांव हरयाणा की सीमा से जुड़े हुए हैं, इसलिये वेंकटरमैया आयोग ने चण्डीगढ के बदले इन गांवों को देना स्वीकार नहीं किया। उन्होंने कहा है कि ये गांव तो धारा ७-४ के आधीन गठित आयोग द्वारा वैसे ही हरयाणा को मिल जायेंगे। उन्होंने इन गांवों के अतिरिक्त ७०,००० एकड़ क्षेत्रफल के गांव उनमें से चाहे कुछ पंजाबी भाषी भी हों, हरयाणा को दिये जाने की सिफारिश की है। बरनाला साहब जब ४५,००० एकड़ क्षेत्रफल के गांव हरयाणा को देने की बात करते हैं तो लोगों को भ्रम में डालने की बात करते हैं। वे गांव तो हर हालत में हरयाणा में आयेंगे ही, उन्हें कोई नहीं रोक सकता। परन्तु वेंकटरमैया आयोग के अनुसार ७०,००० एकड़ के दूसरे गांव हरयाणा को देने होंगे।

अकालीदल, बरनाला और बादल न तो मैथ्यू आयोग का फैसला मानते हैं और न ही वेंकटरमैया आयोग का, जबकि उनके प्रतिनिधि संत लोंगोवाल ने यह लिखित रूप में माना था कि सभी पक्षों को आयोगों का फैसला वैसे का वैसा मानना पड़ेगा। हरयाणा न माने तो समझ में आता है, क्योंकि हरयाणा के तो किसी प्रतिनिधि के समझौते पर हस्ताक्षर नहीं हैं। यही नहीं, पंजाब समझौते में यह भी लिखा है कि सतलुज यमुना लिंक नहर का काम १५ अगस्त, १९८६ तक पूरा कर दिया

जायेगा। उसमें यह भी लिखा था कि रावी व्यास के पानी के फैसले के लिये गठित न्यायाधिकरण भी अपना फैसला ६ महीने में दे देगा। उसके पीछे भावना यही थी कि जिस समय चण्डीगढ़ पंजाब को सौंपा जाये, तब रावी व्यास के पानी के बटवारे का भी फैसला हो चुका हो और क्योंकि यह सम्भव नही जान पडा कि नहर का काम ६ महीने में समाप्त हो सकेगा, इसलिये उसके लिये ६ महीने का समय और दे दिया गया था। पंजाब में अकाली सरकार बन गई, इसलिये पंजाब सरकार और अकालीदल दोनों की यह जिम्मेदारी हो गई कि सतलुज यमुना लिंक नहर का काम १५ अगस्त, १९८६ तक पूरा करें।

क्या अकालियों और उनकी सरकार ने अपनी समझौते के अन्तर्गत ली गई जिम्मेदारी का एहसास किया? क्या उन्होंने इसे निभाने के लिये कोई ठोस प्रयास किया? यह सर्वविदित है कि यही नही कि उन्होंने प्रयास नही किया बल्कि उन्होंने लिंक नहर के बनने में रुकावटे डालीं। ४ महीने तो उन्होंने पंजाब के ही इन्जीनियरों द्वारा निर्धारित लाइन को बदलने के लिये गठित इन्जीनियरों की रिपोट लेने में लगाये। फिर बादल ने किसान यूनियन द्वारा आंदोलन करवाकर काम रुकवाये रखा। कुछ काम शुरू किया, थोडे दिन बाद ही अचानक बरनाला ने विधान सभा में कह दिया कि पंजाब के पास तो फालतू पानी ही हरयाणा को देने के लिये नही है और इसलिये नहर बनाना ही बेकार है। बादल के साथियो ने खुदी हुई नहर में मिट्टी डालकर भरने के लिए कारसेवा की घोषणा भी करदी। यह स्पष्ट है कि अकालियों और उनकी सरकार की नीयत नहर बनाने की नही है। इसीलिये हरयाणा की यह माग है कि भारत सरकार इस काम को अपने हाथ में ले और दिन-रात काम करके उसे बनाये।

उधर रावी व्यास के पानी के बटवारे के लिये इराडी न्यायाधिकरण बनाने में ८ महीने लगाये और उसकी रिपोर्ट ६ महीने की बजाये ९ महीने में आरही है। जो काम ६ महीने में होना चाहिये था वह १८ महीने में होगा। समझौते के इस भाग पर अमल करने के लिए कोई न भारत सरकार को दोष देता है और न पंजाब सरकार और अकालियों को। प्रधानमन्त्री ने अब जरूर कहा कि अकाली सरकार ने १५ अगस्त, १९८६ तक जोड़ नहर बनाने के अपने वचन को पूरा नहीं किया।

ये सभी तथ्य जनता के सामने हैं। समझौते पर अमल करने से यदि कोई भाग खड़ा हुआ है तो वह अकाली और उनकी सरकार है। यहा तो "उल्टा चोर कोतवाल को डाटे" वाली बात हो रही है। अकालियो ने कभी न किसी समझौते को माना है और न वे कभी अपने वचन पर जमे रहे हैं। वे अकाल तख्त पर किये हुए समझौते से, सन्त फतहसिंह द्वारा किये हुए समझौते से फिरे और अब सन्त लोंगोवाल के समझोते से भी मुकर रहे हैं। दोनों आयागो के फैसलों को आज अकाली नही मान रहे। आंदोलन की धमकिया, अब इराडी न्यायाधिकरण के फैसले से भागने की तैयारी है।

अकाली और उनकी सरकार को देश की सुरक्षा की कोई चिन्ता नही है, इसलिये पाकिस्तानी घुसपैठियों, आतंकवादियो, तस्करों और समाजविरोधी तत्त्वों की चौकड़ी की देशद्रोही गतिविधियों को रोकने के लिये बनाई जानेवाली सुरक्षापट्टी के निर्माण में वे बाधा बनकर खड़े हैं। अकाली सरकार चाहे आतकवाद से निबटने के गीत गाती रहे, परन्तु उनके रवैये से आतंकवाद को बढ़ावा मिला है और देशद्रोही शक्तियां अधिक मजबूत हुई हैं, पंजाब समझौते के अमल में भी वे कदम-कदम पर रुकावट डालती रही हैं और अब भारत सरकार का सामना करने की चुनौती देने लगी है। अब बरनाला सरकार को एक दिन भी बनाये रखना देश की सुरक्षा, एकता और अखण्डता के लिए घातक सिद्ध होगा। ऐसी सरकार को सहारा देना अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारने के समान है।

समय आगया है जब भारत सरकार देश को खतरों से बचाने के लिए पंजाब सरकार को छुट्टी करें और राष्ट्रपति शासन लागू करे। पाकिस्तान से जुडी सीमाओं के साथ सुरक्षापट्टी बनाये तथा पंजाब समझौते की भाषा और भावना के अनुसार अकालियों के विरोध की परवाह किये बगैर अमल करे। सतलुज यमुना लिंक नहर का काम हाथ में लेकर शीघ्र उसे पूरा करके हरयाणा के हिस्से का रावी व्यास का पानी उपलब्ध करायें और चण्डीगढ़ के बदले में फाजिल्का अबोहर का क्षेत्र हरयाणा को दे। —प्रो० शेरसिंह अध्यक्ष हरयाणा रक्षावाहिनी

बराड़ा में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

आर्यसमाज बराड़ा जि० अम्बाला में दिनांक २२-२३ दिसम्बर, १९८६ को बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया। इस शुभावसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रसिद्ध भजनोपदेशक प. चिरंजीलाल रामायणी के शराबविरोधी तथा स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर बड़े मधुर भजन हुए। इसके अतिरिक्त पं० वचनपाल विद्यावाचस्पति का स्वामी जी के जीवन पर बड़ा मार्मिक प्रवचन हुआ।

दिनांक २३-१२-१९८६ को साय चार बजे आर्य वीरदल हरयाणा के ब्रह्मचारी ओमदर्शन योगाचार्य द्वारा योगशक्ति का प्रचण्ड प्रदर्शन किया गया, जिसमें योगासन, प्राणायाम, लोहे के सरिये गले व आंख से मोडना, हाथ की नाडी को रोकना, पीतल की थाली को हाथों से फाड़ना, हथेली पर काच पीसना, लोहे की मोटी जजीर तोड़ना, काच पर लेटकर छाती पर पत्थर तुड़वाना आदि मुख्य रहे। अन्त में ब्र० ओमदर्शन ने कहा कि मेरी साधना में मेरे छोटे भाई सहदेव सहारन का विशेष योगदान है। प्रदर्शन के पश्चात् श्री शिवचरणदास आर्य ने अपने भाषण में उपस्थित महानुभावों का आह्वान किया कि आप अपने बच्चों को स्वस्थ तथा चरित्रवान् बनाने के लिये आर्य वीरदल की शाखाओं मे भेजिये। रात्रि ९ बजे ब्र० ओमदर्शन की अध्यक्षता में नवयुवकों की एक बैठक हुई, जिसमें ब्रह्मचारी जी ने आर्य वीरदल का चुनाव करके निम्नलिखित अधिकारी मनोनीत किये—

प्रधान—सर्वश्री जयप्रकाश आर्य, मन्त्री—शिवचरणदास आर्य, कोषाध्यक्ष—डा० राजपाल आर्य, बौद्धिकाध्यक्ष—ब्र० वचनपाल योगाचार्य, लेखानिरीक्षक—ब्र० पवनकुमार आर्य।

अन्त में मनोनीत सदस्यों द्वारा आर्य वीरदल के कार्य में तेजी लाने का संकल्प लिया गया। सारे कार्यक्रम की व्यवस्था उत्साही कार्यकर्त्ता शिवचरणदास आर्य ने की। सभा को १५१) दान दिया गया। कुल मिलाकर कार्यक्रम बहुत प्रभावशाली रहा।

—डा० राजपाल आर्य

आचार्य विष्णुमित्र को भावभीनी श्रद्धांजलि

कन्या गुरुकुल खानपुर, जि० सोनीपत के कुलपति आचार्य विष्णुमित्र जी का १७ दिसम्बर को हृदयगति बन्द हो जाने से स्वर्गवास हो गया था। २९ दिसम्बर को कन्या गुरुकुल खानपुर के प्रांगण में उनकी स्मृति में शोकसभा का आयोजन गुरुकुल महासभा के प्रधान श्री जगजीतसिंह जी मलिक की अध्यक्षता में किया गया, जिसमें कन्या गुरुकुल की छात्राओं, अध्यापिकाओं के अतिरिक्त बाहर से भी हजारों नर-नारियों ने भाग लिया।

सभा की ओर से श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती सभा के उपप्रधान म० भरतसिंह जी, सभा उपदेशक ब्र० महेन्द्रसिंह शास्त्री तथा कार्यालयाध्यक्ष श्री केदारसिंह आर्य, जिला वेदप्रचार मण्डल सोनीपत के अध्यक्ष श्री सूरजमल आर्य सहित २८ दिसम्बर को प्रात. १०.३० बजे आचार्य विष्णुमित्र जी के गृह निवास गोहाना गये। वहां शोक संतप्त परिवार से शोक संवेदना प्रकट की तथा उसके पश्चात् कन्या गुरुकुल की शोकसभा में सम्मिलित हुए। यज्ञ की कार्यवाही के पश्चात् श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने दिवंगत विद्वान् की आत्मा को शांति प्रदान करने की प्रार्थना की तथा उनके वियोग से दुःखी आर्यमहानुभावों तथा गुरुकुल परिवार के समस्त सदस्यों को उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा की। आपने प्रस्ताव प्रस्तुत किया कि उन्होंने अपने जीवन के अन्तिम दिनों में जिस महाभारत ग्रन्थ को हिन्दी में लिखा है, उसे तथा उनकी अन्य पुस्तकों का प्रकाशन करके उन्हें रचनात्मक श्रद्धांजलि दी जाये।

श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के इस प्रस्ताव का समर्थन निम्नलिखित महानुभावों ने आचार्य विष्णुमित्र जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए किया—सर्वश्री धर्मचन्द शास्त्री, भद्रसेन शास्त्री, बेगराज शास्त्री, सोमदत्त आर्य मन्त्री वैदिक सत्संग सभा रोहतक, अनुरुद्ध शास्त्री, जयसिंह एडवोकेट रोहतक, नारायणसिंह शास्त्री, बलदेवसिंह शास्त्री, धर्मवीर मलिक बीधल, सूरजमल सांगवान एडवोकेट, म० भरतसिंह वानप्रस्थी सभा उपप्रधान, सुखदेव शास्त्री सभा उपदेशक, सत्यदेव शास्त्री, हृदयराम मलिक, महेश्वरसिंह शास्त्री, हरिलाल वैद्य, इन्द्रसिंह मलिक एडवोकेट, किताबसिंह विधायक, बहन गुणवती, जगन्नाथ वैद्य, स्वामी कर्मपाल, जगजीतसिंह मलिक प्रधान गुरुकुल महासभा, धर्मवीर शास्त्री मन्त्री गुरुकुल महासभा, बहन सुभाषिणी आचार्या, चौ० शेरसिंह कुलपति, भलेराम दादा गठवालाखाप आदि।

इस अवसर पर स्वर्गीय आचार्य विष्णुमित्र जी के उस प्रवचन का टेपरिकार्ड सुनाया गया जो कि उन्होंने कुछ दिन पूर्व यज्ञ समिति खानपुर ग्राम के वार्षिक समारोह पर दिया था। इस प्रकार उनकी मधुर तथा प्रभावशाली आवाज को सुनकर श्रोतागणों की आंखों में आंसू बहने लग गये। सभी अनुभव कर रहे थे कि इस प्रकार की सरल भाषा में उनके हृदयग्राही प्रवचन भविष्य में सुनने को नहीं मिल सकेंगे। श्री कपिलदेव शास्त्री ने श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती से अनुरोध किया कि आचार्य विष्णुमित्र जी के ग्रन्थों को छपवाने के लिए उपस्थित नर-नारियों से अपील करें ताकि उनके नाम से प्रकाशन विभाग शीघ्र स्थापित हो सके। अतः श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने अपील करते हुए कहा कि श्री आचार्य जी ने महाभारत ग्रंथ लिखकर हरयाणा के इतिहास को अमर कर दिया है। क्योंकि महाभारत का इतिहास हरयाणा का इतिहास है। अतः उनके श्रद्धालु उनके ग्रन्थ छपवाने के लिए अधिक से अधिक धनराशि दान में देकर सच्ची श्रद्धांजलि देवें। उन्होंने स्वयं भी ११००० रु० संग्रह करके देने की घोषणा की। इस प्रकार उसी समय लगभग ५० हजार के वचन लिखवाये गये।

—सभामन्त्री

श्रीमती लक्ष्मी देवी की शोकसभा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के पूर्व प्रधान श्री दलीपसिंह आर्य की धर्मपत्नी की शोकसभा का आयोजन उनके निवास स्थान आर्य निवास श्रद्धानन्द मार्ग पानीपत में २८ दिसम्बर को दोपहर पश्चात् ३ बजे हवन-यज्ञ के साथ आरम्भ हुई। यज्ञ आर्यसमाज पानीपत के पुरोहित ने बहुत ही प्रभावशाली ढंग से सम्पन्न करवाया। यजमान श्री दलीपसिंह आर्य के सुपुत्र श्री सुरेन्द्र जी आर्य थे। इस अवसर पर उनके रिश्तेदारों के अतिरिक्त नगर के गणमान्य व्यक्ति भारी संख्या में उपस्थित थे। यज्ञ के पश्चात् प्रो० वेदसुमन जी ने आर्य संस्थाओं से आये हुए शोक प्रस्तावों को पढ़कर सुनाया। आर्य केन्द्रीय सभा पानीपत के मन्त्री श्री चमनलाल जी ने पानीपत के नरनारियों की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करने की प्रार्थना की। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से सभामन्त्री आचार्य वेदव्रत जी शास्त्री ने भी शोक संतप्त परिवार को उनके वियोग में दुःख सहन करने एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा की।

दानदाताओं को शुभ सूचना

दानदाताओं को यह जानकर हर्ष होगा कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा तथा इसके अधीन आर्य शिक्षण संस्थाओं एवं सर्वहितकारी आदि को आयकर विभाग हरयाणा के आयुक्त महोदय ने अपने पत्र क्रमसंख्या न० २२८/(२१-ए)/७९-८०/पी आर. ओ./३०१५१-९१० दिनांक ९-१२-१९८६ को यु/एस ८०-जी आयकर एक्ट १९६१ के अन्तर्गत "आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ, रोहतक" को दान करने वाले दानी महानुभावों को आयकर में छूट प्रदान करदी है।

अतः दानी महानुभाव आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा तथा इसके अधीन चल रही आर्य शिक्षण संस्थाओं आदि को अपनी शुभ कमाई से दान भेजकर पुण्य तथा यश के भागी बनें।

वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

आर्यसमाज होली मोहल्ला करनाल के आपसी मतभेद समाप्त

गतवर्ष से आर्यसमाज होली मोहल्ला और आर० डी० कन्या हाई स्कूल के मामलों को लेकर आर्यसमाज होली मोहल्ला में आपसी बड़े मतभेद और खिचाव पैदा हो गया था और नौबत यहां तक आई कि कचहरियों के दरवाजे खटखटाने पड़े। इस तनाव से करनाल नगर में बड़ी चर्चाएं चलती रहीं और आर्यसमाज होली मोहल्ला के अधिकारियों और सदस्यों को काफी कड़वी-मिट्ठी बातें सुननी पड़ीं।

अन्तरंग सभा की बैठक में आर्यसमाज होली मोहल्ला का विवादास्पद मामला ३०-११-८६ को अन्तरंग की बैठक में आया और सर्वसम्मति से आपसी मतभेदों को समाप्त करने के लिए मुझे और डा० रणजीतसिंह जी को आदेश मिले। इस सन्दर्भ में दो-तीन बार मैं करनाल गया और वहां के अधिकारियों और सदस्यों से इस बारे में बातें कीं और अपने ढंग से उनको समझाया। मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि मेरे सुझावों और बातों को आर्यसमाज होली मोहल्ला के दोनों पक्षों के सदस्यों ने आदर दिया और सुझावों को स्वीकार किया और अन्ततोगत्वा कचहरी में जो मुकदमा चल रहा था, वह १२-१२-८६ को बिना किसी पूर्व शर्त के वापिस ले लिया गया और इस प्रकार से आर्यसमाज होली मोहल्ला के और आर० डी० कन्या हाई स्कूल के समस्त विवाद समाप्त हो गये। जितने भी सदस्यों से मैं मिल पाया, उन सभी ने मुझे पूर्ण विश्वास दिलाया कि भविष्य में वह सब मिलकर आर्यसमाज का कार्य बड़ी लगन और निष्ठा से करेंगे।

मैं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से आर्यसमाज होली मोहल्ला और आर० डी० कन्या हाई स्कूल के सभी अधिकारियों एवं सदस्यों को बधाई और हार्दिक धन्यवाद करता हूं कि उन्होंने कई वर्षों से चले आ रहे आपसी मतभेदों को समाप्त करके, एकजुट होकर आर्यसमाज का कार्य करने का विश्वास दिलाया है और आर्यसमाज को बदनामी से बचाया है। इस कार्य में सभी सदस्यों ने मुझे सहयोग दिया, उनका सभा की ओर से मैं आभार प्रकट करता हूं।

म० भरतसिंह सभा वरिष्ठ उपप्रधान

सम्पादक के नाम पत्र

सर्वहितकारी की सराहना

सर्वहितकारी बहुत अच्छा आ रहा है। पढ़ने से आनन्द आता है। अब आपने लेख भी बढ़ा दिये हैं। सदर्थ धन्यवाद "सन्ध्या पढ़ने से लाभ नहीं करने से होता है" लेख बहुत अच्छा लगा। आपने अपने हरयाणा में आर्यसमाज के प्रचार की धूम मचा रखी है। भगवान् आपको और ज्यादा से ज्यादा प्रेरणा दे। हमारे उत्तरप्रदेश में इतना प्रचार नहीं, जितना आप अपने हरयाणा में कर रहे हैं। आपने तो हरयाणा को आइना बना दिया है। नशाबन्दी व गोहत्या के विषय में आपके कार्य सराहनीय हैं। मैं आपके सर्वहितकारी के कम से कम ५ सदस्य बनवाकर जल्दी भेजूंगा।

आत्माराम श्रीचन्द आर्य, चौक बाजार, कैराना

२—आर्य प्रतिनिधि सभा के साप्ताहिक समाचारपत्र का मुख्य पृष्ठ से लेकर अन्तिम पृष्ठ तक मैं अध्ययन करता हूं। इसके द्वारा सभा वैदिकधर्म के प्रचार का विशेष कार्यक्रम जनता तक पहुंचा रही है।

अवसर आने पर यह समाचारपत्र दैनिक रूप में प्रकाशित होगा। ऐसी मैं कामना करता हूं। परमात्मा इस कार्य में सभा को सफलता प्रदान करे।

कमलसिंह शास्त्री
वैदिक कन्या पाठशाला हुसनगढ़, जि० हिसार

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह सलाहकार समिति की बैठक में सुझाव

भारत सरकार के गृहमन्त्रालय के स्वतन्त्रता सैनिक सम्मान योजना के आर्यसमाज प्रकोष्ठ की सलाहकार समिति की बैठक लोकनायक भवन में १२ दिसम्बर, १९८६ को स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में हुई। इसमें ६ मनोनीत सदस्य एवं एक पर्यवेक्षक सलाहकार भी उपस्थित थे। इस बैठक में आवेदनपत्र भेजने की तारीख बढ़ाने और भविष्य में व्यापक सूचनायें देने की आवश्यकता पर सदस्यों ने बल दिया, और यह मांग की कि केन्द्र सरकार द्वारा पेंशन दिये जाने का आधार भोगी हुई सजा नहीं, अपितु न्यायालय द्वारा दी गई सजा मानी जाये। एक यह भी सुझाव था कि १९८० की योजना के तहत नहीं, अपितु १९७२ की योजना के अनुसार तब से ही पेंशन दी जावे। आवेदनकर्त्ता के आवेदन के पश्चात् निधन होने पर उनकी विधवाओं को विशेष आधार पर जल्द ही पेंशन स्वीकृत की जानी चाहिए। एक सुझाव यह भी रखा गया कि वर्तमान पश्चिम पाकिस्तान और बंगला देश तथा फीजी, बर्मा और स्याम से सत्याग्रह में भाग लेनेवालों की अवधि यात्रा के प्रारम्भ से मानी जाये। प्रयुक्त सचिव श्री अरुणकुमार जी ने सदस्यों को विश्वास दिलाया कि १९८२ की योजना के ढांचे में उपलब्ध प्रावधानों का मामले निबटाते समय ध्यान रखा जावेगा।

—ब्रह्मदत्त स्नातक अव० प्रेस एवं जनसम्पर्क सलाहकार।

मोरमाजरा जि० करनाल में नशाबन्दी प्रचार

आर्यसमाज मोरमाजरा, जि० करनाल में स्वामी रुद्रवेश जी की भजनमण्डली ने गतसप्ताह तीन दिन तक नशाबन्दी प्रचार किया। ग्राम के सरपंच श्री सूबेसिंह, नम्बरदार टीकाराम आदि ने प्रचार-कार्य में पूरा सहयोग दिया। प्रातः यज्ञ पर अनेक व्यक्तियों ने यज्ञोपवीत धारण करके शराब आदि का सेवन न करने की प्रतिज्ञा की। मन्त्री आर्यसमाज

शुद्धि समाचार

सिमडेगा अनुमण्डलान्तर्गत (गुमला) श्री रामरेखा धाम में कार्तिक पूर्णमासी के शुभ अवसर पर १७-११-८६ को श्री रजिना असारी पिता श्री रुस्तम असारी, ग्राम पाजेया, थाना पालकोट, जि० गुमला की शुद्धि करके नया नाम श्री रजनीकुमारी रखा गया।

तत्पश्चात् श्री छत्रपालसिंह पोर्जेगा के साथ विवाह करा दिया गया। वार्षिक मेले में उपस्थित हजारों नरनारियों ने आशीर्वाद देते हुए हर्षोल्लास के नारे लगाये। उक्त संस्कार श्री देशपाल दीक्षित आर्य प्रचारक ने कराया। —महन्त श्री रामरेखा धाम

मुक्तक

बनावट तो बनावट है, हकीकत हो नहीं सकती।
किसी के काम न आए वह हिकमत हो नहीं सकती।
हजारों नफरतें पैदा हों जिसके आजमाने से।
उसे कहने को कुछ कहिए, महब्बत हो नहीं सकती॥

जरा दिल में सोचें, अगर आप चाहें।
कभी बन्द न हों तरक्की की राहें।
रहो प्रेम से, प्यार से 'नाज' मिलकर।
महब्बतभरी हों, तुम्हारी निगाहें॥
'नाज' सोनीपती

सर्वहितकारी के ग्राहक महानुभावों से निवेदन

सर्वहितकारी के ग्राहक महानुभावों ने समाचारपत्रों में पढ़ा होगा कि डाक विभाग ने डाक से भेजे जानेवाले समाचारपत्रों पर ५ पैसे के स्थान पर १५ पैसे की टिकटें लगाने का निर्णय किया है। इस प्रकार सर्वहितकारी पर भी ५ पैसे के स्थान पर अब १५ पैसे की टिकट प्रति सप्ताह लगानी पड़ेगी। इस प्रकार वर्षभर में ४८ अंकों पर १० पैसे अधिक टिकट लगाने से ४८० पैसे डाक व्यय बढ़ गया है। अतः विवश होकर सर्वहितकारी का वार्षिक शुल्क २०) के स्थान पर आगामी वर्ष १९८७ से २५) करना पड़ा है।

अतः सर्वहितकारी के ग्राहक महानुभावों से निवेदन है कि सर्वहितकारी का वार्षिक शुल्क २५) भेजने की कृपा करें।

—व्यवस्थापक सर्वहितकारी

गोरक्षा महासम्मेलन पर आर्यवीरों का प्रशंसनीय सेवा-कार्य

आर्य वेदप्रचार मण्डल मेवात के तत्वाधान में गोरक्षा महासम्मेलन बड़े ही उत्साह से ७ दिसम्बर को फिरोजपुर झिरका, जि० गुड़गांव में मनाया गया। जिसमें राजस्थान, उत्तरप्रदेश तथा हरयाणा के कोने-कोने से आर्य लोगों ने भाग लिया। इस महासम्मेलन को सफल बनाने में जहां वेदप्रचार मण्डल के अधिकारियों ने कार्य किया, वहां आर्य वीर-दल के सैनिकों ने भी बड़ी लगन एवं जोश से दिन-रात एक करके उत्साह वर्धक कार्य किया। गुड़गांव मण्डल के मण्डलपति श्री सत्येन्द्र जी शास्त्री ने पूरी निष्ठा से १५ दिन लगातार मेवात के सारे क्षेत्र का दौरा करके जनजागरण अभियान चलाया और आर्यवीरों को सेवाकार्य के लिए तैयार किया। जहां मालब, नगीना, भादस तथा फिरोजपुर झिरका के सैकड़ों आर्यवीर इस सेवाकार्य में जुटे, वहां पलवल, फरीदाबाद, गुड़गांव तथा रोहतक से भी श्री जगदीश मित्र मण्डलपति के नेतृत्व में २० आर्यवीरों ने भाग लिया। आर्यवीर मुख्य सड़कों पर 'ओ३म्' के झण्डे लेकर लोगों का मार्गदर्शन कर रहे थे।

पूर्ण वेशभूषा में सजधज कर आर्यवीरों एवं आर्य वीरांगनाओं ने ध्वजारोहण में भाग लेकर अपना प्रदर्शन किया। सम्मेलन पर पधारे सभी विद्वानों की सुरक्षा आर्यवीर कर रहे थे। भोजन एवं जलपान की सुन्दर व्यवस्था ने सभी को प्रभावित किया। सभी बाहर से पधारे लोगों ने आर्य वीरदल की सेवा की पूरी-पूरी प्रशंसा की।

—वेदप्रकाश आर्य
महामन्त्री आर्य वीरदल, हरयाणा

हैदराबाद आर्य सत्यग्रहियों को आवश्यक सूचना

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में सम्मिलित होनेवाले जिन सत्याग्रहियों के प्रार्थना-पत्र गृहमन्त्रालय, लोकनायक भवन नई दिल्ली में नहीं पहुंचे हैं, उनको ३१ जनवरी, १९८७ तक अपने प्रार्थना-पत्र फार्मों पर हिदायतों के अनुसार भेज देने चाहियें। यह निर्णय इस सम्बन्ध में भारत सरकार द्वारा गठित समिति ने १२ दिसम्बर, १९८६ को अपनी पहली बैठक (लोकनायक भवन) में लिया। अतः सत्याग्रही अथवा उनके आश्रित तुरन्त सभा कार्यालय रोहतक पधार कर अपने आवेदन-पत्र भरवाकर भेजकर इस सुविधा से लाभ उठावें।

—प्रो० शेरसिंह
प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

महात्मा प्रभु आश्रित महाराज की जन्म शताब्दी

स्वर्गीय पूज्य महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में वैदिक भक्ति साधन आश्रम आर्यनगर, रोहतक के तत्वाधान में १०१ कुण्डों पर यजुर्वेद ब्रह्मपारायणयज्ञ अथवा राष्ट्रभृतयज्ञ १५ फरवरी, ८७ से २२ फरवरी, ८७ तक महात्मा दयानन्द जी सचालक तपोवनाश्रम देहरादून व रोहतक के ब्रह्मत्व में कराया जावेगा।

१९-२०-२१ फरवरी को क्रमशः वेद सम्मेलन, यज्ञ सम्मेलन व राष्ट्ररक्षा सम्मेलन भी होंगे। जिनमें आर्य जगत् के उच्चकोटि के विद्वान् विचार देंगे।

२१ फरवरी को प्रातः यज्ञ उपरांत इच्छुक महानुभावों को वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा दी जावेगी। इच्छुक महात्मा दयानन्द जी से सम्पर्क करें।

२२ फरवरी, ८७ को ९।। बजे पूर्णाहुति के उपरांत श्रद्धांजलियां दी जावेंगी और अन्त में ऋषिलंगर की सेवा भी होगी। यज्ञप्रेमी भाग लेकर धर्म लाभ उठावें।

भोजन व निवास की व्यवस्था आश्रम द्वारा निःशुल्क होगी। अपने लिए ऋतु अनुकूल वस्त्र व बिस्तर अवश्य लावें। यज्ञ में भाग लेनेवालों के लिये यज्ञ समय पीत वस्त्र धोती, कुर्ता, ब्लोज पहनने होंगे।

—प्रशांत मुनि
मन्त्री वैदिक भक्ति साधन आश्रम आर्यनगर, रोहतक

एक शाकाहारी धावक की चुनौती

सहारनपुर, २१ दिसम्बर (गौतम) : स्थानीय तार घर में कार्यरत ८१ वर्षीय पूर्ण शाकाहारी धावक श्री किशनसिंह चौहान ने धूम्रपान करनेवाले धावकों को चुनौती दी है कि वे २० किलोमीटर की पैदल चाल अथवा दौड़ में पछाड़ सकने में समर्थ हैं। उल्लेखनीय है कि अब तक वे उनकी चुनौती को स्वीकार करनेवाले ऐसे ३ धावकों को हरा चुके हैं और अब फिर वे २६ जनवरी, ८७ को सहारनपुर में यह अनोखी प्रतियोगिता आयोजित कर रहे हैं। उनकी चुनौती स्वीकार करनेवाला कोई भी व्यक्ति उन्हें अपना नाम भेज सकता है। शर्त यह है कि उसे हारने पर कोर्ट अनुबन्ध के अनुसार आजीवन धूम्रपान का त्याग करना होगा। यदि वह विजयी रहा तो उसे आने-जाने का किराया तथा सौ रुपये पुरस्कार के रूप में दिये जायेंगे।

तोताहेड़ी सिलारपुर का उत्सव

दिनांक २०-२१ नवम्बर को तोताहेड़ी सिलारपुर, जि० महेन्द्रगढ़ का उत्सव और २२-२३ नवम्बर, १९८६ को आर्यसमाज मिर्जापुर बाछोद के उत्सव सम्पन्न हुए। हजारों के जनसमूह के बीच पं० चिरंजीलाल जी आ० प्र० नि० सभा हरयाणा के प्रभावशाली भजन हुए। २५१) आर्यसमाज तोताहेड़ी सिलारपुर और ३००) आ० स० मिर्जापुर बाछोद ने सभा को दान दिया। प० चिरंजीलाल जी के प्रभाव से सदा के लिए मांग की।

—ताराचन्द आर्य

आर्यसमाज मुलाना जि० अम्बाला का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज मुलाना, जि० अम्बाला का वार्षिक उत्सव दिनाक १८ १९ २० दिसम्बर को बडी धूमधाम के साथ मनाया गया। इस शुभ अवसर पर स्वामी धर्मानन्द परिव्राजक, प० वचनपाल विद्यावाचस्पति के वेद विषयक सारगभित व्याख्यान हुए। इसके अतिरिक्त आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रसिद्ध भजनोपदेशक प० चिरजीलाल रामायणी, प० विद्याभूषण विद्यामार्तण्ड, प० बनारसीलाल 'मधुर' की भजनमण्डलियों द्वारा भजनों के माध्यम मे बड़ा ही रोचक कायक्रम रखा गया।

दिनाक २०-१२-८६ को रात्रि १० बजे आर्य वीरदल हरयाणा के ब्रह्मचारी ओमदर्शन योगाचार्य द्वारा योगशक्ति का प्रदर्शन किया गया। जिसमें योगासन, लोहे के सरिये गले व आख स मोडना, हाथ की नाडी को रोकना, हथेली पर कांच पीसना पीतल की थाली को हाथों मे फाड़ना, लोहे की मोटी जजीर तोडना, कांच पर लेटकर छाती पर पत्थर तुड़वाना आदि मुख्य रहे। अन्त मे आर्य वीरदल बराडा के सचालक श्री शिवचरणदास आर्य ने उपस्थित महानुभावों को प्रेरणा देते हुए कहा कि यदि आप चाहते हैं हमारे बच्चे अच्छे स्वास्थ्य वाले हों तो उन्हे आर्य वीरदल की शाखाओं मे भेजिये। सभा को ४०.) दान दिया गया। कुल मिलाकर कार्यक्रम बहुत प्रभावशाली रहा।

डा० योगेन्द्रपाल आर्य प्रधान आर्यसमाज मुलाना

आचार्य विष्णुमित्र जी के निधन पर शोक प्रस्ताव

दिनांक १७ दिसम्बर, १९८६ को श्री वैद्य धर्मपाल जी की अध्यक्षता में श्री वैद्य धर्मपाल यज्ञ समिति खानपुर कला, जि० सोनीपत की बैठक हुई। जिसमें श्री विष्णुमित्र जी विद्यामार्तण्ड के आकस्मिक निधन पर सदस्यों ने गहरा दुःख व्यक्त किया। उन्हे श्रद्धाजलि अपित करते हुए सर्वश्री जसवन्तसिंह, जगन्नाथ ने उन्हें एक महान् समाजसेवक, विद्वान् एवं उच्चकोटि का वक्ता बताते हुए उनकी आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमात्मा से प्राथना की। उपप्रधान श्री धर्मभानु जी ने कहा कि श्री विष्णुमित्र जी, श्री वैद्य धर्मपाल यज्ञ समिति के मुख्य प्रवचनकर्ता रहे हैं। उनका अभाव हमे सदा अखरता रहेगा। प्रधान श्री वैद्य धर्मपाल जी ने सभी सदस्यों की भावना से सहमति व्यक्त करते हुए कहा "प्रभु दिवगत आत्मा को शांति प्रदान करे।" दिवगत आत्मा की शांति के लिए तथा शोक सतप्त परिवार को सात्वना हेतु प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया।

आर्यसमाज मिर्जापुर बाछौद का उत्सव

आर्यसमाज मिर्जापुर बाछौद जि० महेन्द्रगढ का आर्यसम्मेलन ता० २२-२३ नवम्बर, १९८६ को बडे उत्साह के साथ मनाया गया, जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के महाशय चिरजीलाल के सत्य उपदेशों का आये हुए लोगो पर अच्छा प्रभाव पड़ा एव लोगो की आर्यसमाज के प्रति आस्था बढ़ी। —विश्वम्भरदास मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

हरद्वार (सहारनपुर उ० प्र०)
भारत सरकार द्वारा
RTK 49

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सर्वहितकारी
रोहतक
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभा मन्त्री

वर्ष १४, अङ्क ८ १४ जनवरी, १९८७ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क

सभा शताब्दी समारोह के आयोजन का स्वागत

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वरिष्ठ तथा वयोवृद्ध महोपदेशक पं० शांतिप्रकाश जी शास्त्रार्थ महारथी ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा किये जारहे आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापना शताब्दी समारोह के आयोजन का स्वागत करते हुए श्री केदारसिंह आर्य के नाम पत्र में लिखा है—

आर्य प्रतिनिधि सभा की शताब्दी का समाचार पढ़कर जान में जान आगई। एक प्रकार से स्फूर्ति की लहर दौड़ गई है, क्योंकि हरयाणा प्रदेश भारत की रीढ़ की हड्डी है और आर्यसमाज इस सारे भारत शरीर का रक्षक है। इस प्रकार हरयाणा ही भारत राष्ट्र का सच्चा प्रहरी है। पूर्व भी था होगा और है।

आर्यसमाज ने हरयाणा को भारत का सुदृढ़ दुर्ग बना दिया है। यह दुर्ग ही सदैव से दिल्ली राजधानी का रक्षक बना चला आया है। किन्तु शोक है कि इस दुर्ग में मेवात एक नासूर बन चुका है। इस शताब्दी की सबसे बड़ी सफलता होगी कि इस नासूर का यथार्थ इलाज करके सैंकड़ों कार्यकर्त्ता जुटाकर मेवात को पुनः वैदिकधर्म पर आरूढ़ करके सैंकड़ों पुरोहितों को मेवात के युवकों में आर्यत्व लाने का संकल्पवान् बनाया जाये।

हरयाणा में सैंकड़ों संस्कृतज्ञ विद्वान् और कार्यकर्त्ता पूज्य स्वामी ओमानन्द जी के झण्डे तले मेवात को अपने प्राचीनधर्म में लौटाकर राष्ट्र-रक्षा के कार्य को दृढ़ बना दिया जाये। भला हो आपका जो आपने ऐसा शुभ समाचार भेजा। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। रोहतक में सभा को बड़े-बडे विद्वानों का सहयोग प्राप्त है, सभा अधिकारी भी विद्वान् हैं। पू० पं० सुदर्शनदेव जी भी वहां ही हैं। अतः आर्यों का यह सुदृढ़ दुर्ग हरयाणा को सुदृढ़ बनाकर भारत की आर्यजाति तथा संसार में आर्य धर्म को सुदृढ़ता प्रदान करने में सक्षम है। यह शुभ कार्य अवश्य होना चाहिए।

—शांतिप्रकाश

म० नं० १६३ ए/११ सुभाष नगर, गुडगांव

पुनर्मिलन संस्कार सम्पन्न



शुद्धि-यज्ञ कराते हुए श्री सत्येन्द्रप्रकाश शास्त्री, दायें मन्त्री श्री शिवचरण आर्य एवं बायें श्री श्यामलाल आर्य, सामने श्री रामचन्द्र आर्य दिखाई दे रहे हैं।

आर्यसमाज फिरोजपुर झिरका (गुडगांव) में १८-१२-८६ को प्रातः ११ बजे श्री सत्येन्द्रप्रकाश शास्त्री मण्डलपति आर्य वीरदल गुडगांव मण्डल ने शुद्धि-यज्ञ सम्पन्न कराया, जिसमें कामां राजस्थान के रहीम खां को शुद्ध करके रामचन्द्र नाम रखा।

ध्यान रहे रामचन्द्र लगभग दो मास पूर्व मेवों के दबाव एवं प्रलोभनों में आकर मुसलमान बन गया था किन्तु बाद में स्थानीय कार्यकर्त्ताओं के समझाने से उसने पुनः हिन्दू बनने की इच्छा व्यक्त की। इस शुद्धि संस्कार में फिरोजपुर झिरका के लगभग एक सौ प्रतिष्ठित व्यक्ति उपस्थित थे।

शास्त्री जी ने समस्त जनसमूह का आह्वान करते हुए कहा कि बड़े खेद की बात है कि यदि हिन्दुस्तान में हिन्दू डरता है तो क्या वह समुद्र में जाकर निर्भीक रहेगा? महाराणा प्रताप ने घास की रोटी खाकर अपने धर्म की रक्षा की थी, किन्तु आप लोगों को तो कोई आर्थिक अभाव भी नहीं है। श्री सत्येन्द्रप्रकाश शास्त्री ने बताया कि आज जो यह मेव धर्मान्धता में बौखला कर हमारे अल्पसंख्यक भाइयों को गुमराह करके विधर्मी बनाने का षड्यन्त्र रचते हैं इन्हें किसी कीमत पर बख्शा नहीं जायेगा। औरंगजेब के प्रलोभनों एवं दबाव में आकर जिन कायरों एवं नपुसकों ने धर्मपरिवर्तित कर लिया था आज वही साम्प्रदायिकता की अग्नि सुलगा रहे हैं। जबकि इन्हें अपनी भूल-सुधार कर वैदिकधर्म को अपनाना चाहिए। हमारा दरवाजा सदैव खुला हुआ है। यदि गौतम और राम की सन्तान हम से पुनर्मिलन करना चाहें तो हम सदैव उनका स्वागत करेंगे।

अन्त में वयोवृद्ध बाबा श्री भजनलाल जी आर्य ने श्री रामचन्द्र आर्य को गर्म वस्त्र एवं आर्थिक सहयोग भी आर्य वेदप्रचार मण्डल की ओर से दिया तथा भविष्य में भी यथासम्भव सहायता की घोषणा की।

—शिवचरण आर्य

कोषाध्यक्ष आर्य वेदप्रचार मण्डल मेवात, फिरोजपुर झिरका

सभा स्थापना शताब्दी समारोह को सफल करने के लिए आर्यनेताओं की अपील

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की स्थापना सन् १८८६ में अमृतसर में हुई थी। उस समय पंजाब, हरयाणा, दिल्ली, हिमाचल तथा जम्मू काश्मीर राज्यों में इसी सभा के माध्यम से आर्यसमाज तथा समाज-सुधार के कार्य और प्रचार होता था। गत १०० वर्षों में आर्यसमाज ने हैदराबाद आर्य सत्याग्रह, शुद्धि आंदोलन, हिन्दी रक्षा आंदोलन, गोरक्षा आदोलन समालखा तथा कुण्डली में गोहत्या उन्मूलन आदि आंदोलन चलाये हैं, जिनसे आर्यसमाज का प्रभाव जन-जन पर पड़ा है।

इन सभी सामाजिक कार्यों में हरयाणा की जनता ने बढ-चढ़कर भाग लिया है। इस समय प्रदेश में ५० के लगभग गुरुकुल, आर्य विद्यालय तथा अन्य आर्य संस्थायें आर्यसमाज के कार्य में रत हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से गत ३ वर्ष से शराब तथा दहेज आदि सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध एक अभियान चलाया जारहा है।

हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से पंजाब, हिमाचल, जम्मू काश्मीर तथा दिल्ली की आर्य प्रतिनिधि सभाओं के सहयोग से २२ से २४ मई तक रोहतक में सभा स्थापना शताब्दी समारोह धूमधाम से मनाया जारहा है। इसमें भारत के प्रमुख आर्यनेताओं तथा विद्वानों को आमन्त्रित किया गया है। इस अवसर पर गत १०० वर्षों के कार्यों का सिंहावलोकन तथा आगामी १०० वर्षों के लिए भावी कार्यक्रम की योजना बनाई जायेगी। आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के लिए अनेक सम्मेलन आयोजित किये जायेंगे। एक भव्य स्मारिका में सभा का संक्षिप्त इतिहास प्रकाशित किया जायेगा। प्रदेश में १०० नवीन आर्यसमाज स्थापित किये जायेंगे।

इन सभी योजनाओं को सफल करने के लिए सभा ने ७ लाख रुपये की आर्यजनता से अपील की है। इस उद्देश्य के लिए ५, १०, ५०, १००, २५०, ५०० तथा १००० रु० की रसीदें छपवाई जारही हैं। अतः आर्यसमाजों, आर्यसंस्थाओं तथा दानी महानुभावों से हमारा अनुरोध है कि वे सभा कार्यालय से धनसंग्रह करने के लिए अधिक से अधिक रसीद बुकें मंगवाकर अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें।

सभा के अधिकारी सारे हरयाणा का भ्रमण करके आर्य कार्यकर्त्ताओं की बैठकों में सम्मिलित होकर जनसम्पर्क करेंगे। अतः सभी आर्यसमाज तहसील तथा जिलास्तर की बैठकों का आयोजन अपनी सुविधानुसार करके सभा को सूचित करें और शताब्दी समारोह को सफल करने के लिए तन, मन तथा धन से सहयोग करके सभा के संघटन को सुदृढ़ करें, जिससे आगामी १०० वर्षों में वेद तथा ऋषि दयानन्द का दिव्य सन्देश जन-जन तक पहुंचाया जा सके।

निवेदक

ओमानन्द सरस्वती	प्रो० शेरसिंह	बद्रीप्रसाद आर्य
प्रधान	प्रधान	कोषाध्यक्ष
परोपकारिणी सभा	आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा	
		रघुवीरसिंह
वेदव्रत शास्त्री		संयोजक
मन्त्री		शताब्दी समारोह

दानदाताओं को शुभ सूचना

दानदाताओं को यह जानकर हर्ष होगा कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा तथा इसके अधीन आर्य शिक्षण संस्थाओं एवं सर्वहितकारी आदि को आयकर विभाग हरयाणा के आयुक्त महोदय ने अपने पत्र क्रमसंख्या न० २२८/(२१-ए)/७९-८०/पी आर. ओ./३०१५१-६१० दिनांक ९-१२-१९८६ को यु/एस ८०-जी आयकर एक्ट १९६१ के अन्तर्गत "आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ, रोहतक" को दान करने वाले दानी महानुभावों को आयकर में छूट प्रदान करदी है।

अतः दानी महानुभाव आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा तथा इसके अधीन चल रही आर्य शिक्षण संस्थाओं आदि को अपनी शुभ कमाई से दान भेजकर पुण्य तथा यश के भागी बनें।

वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

सर्वहितकारी के ग्राहक महानुभावों से निवेदन

सर्वहितकारी के ग्राहक महानुभावों ने समाचारपत्रों में पढ़ा होगा कि डाक विभाग ने डाक से भेजे जानेवाले समाचारपत्रों पर ५ पैसे के स्थान पर १५ पैसे की टिकटें लगाने का निर्णय किया है। इस प्रकार सर्वहितकारी पर भी ५ पैसे के स्थान पर अब १५ पैसे की टिकट प्रति सप्ताह लगानी पड़ेगी। इस प्रकार वर्षभर में ४८ अंकों पर १० पैसे अधिक टिकट लगाने से ४८० पैसे डाक व्यय बढ़ गया है। अतः विवश होकर सर्वहितकारी का वार्षिक शुल्क २०) के स्थान पर २५) करना पड़ा है।

अतः सर्वहितकारी के ग्राहक महानुभावों से निवेदन है कि सर्वहितकारी का वार्षिक शुल्क २५) भेजने की कृपा करें।

—व्यवस्थापक सर्वहितकारी

हैदराबाद आर्य सत्यग्रहियों को आवश्यक सूचना

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में सम्मिलित होनेवाले जिन सत्याग्रहियों के प्रार्थना-पत्र गृहमन्त्रालय, लोकनायक भवन नई दिल्ली में नहीं पहुंचे हैं, उनको ३१ जनवरी, १९८७ तक अपने प्रार्थना-पत्र फार्मों पर हिदायतों के अनुसार भेज देने चाहियें। यह निर्णय इस सम्बन्ध में भारत सरकार द्वारा गठित समिति ने १२ दिसम्बर, १९८६ की अपनी पहली बैठक (लोकनायक भवन) में लिया। अतः सत्याग्रही अथवा उनके आश्रित तुरन्त सभा कार्यालय रोहतक पधार कर अपने आवेदन-पत्र भरवाकर भेजकर इस सुविधा से लाभ उठावें।

—प्रो० शेरसिंह
प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

आचार्य विष्णुमित्र जी के निधन पर शोक प्रस्ताव

प्रभावशाली वेदोपदेशक आचार्य विष्णुमित्र जी के निधन पर कन्या गुरुकुल नरेला तथा अनेक आर्यसमाजों की ओर से शोक प्रस्ताव पारित करते हुए उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की गई तथा उनके परिवार एवं कन्या गुरुकुल खानपुर, गुरुकुल भैंसवाल परिवार को इस वियोग पर धैर्य धारण करने तथा उनके आदर्शों पर चलने की प्रेरणा की गई।

—वैद्य कर्मवीर

राष्ट्रभाषा के प्रचार और प्रसार प्रसंग में—

सम्पादकीय

भारत की स्वतन्त्रता का यह चालीसवां वर्ष चल रहा है। स्वतन्त्र भारत में उत्पन्न बालक बालिकायें आज प्रौढ हो चुके हैं। आज के प्रशासन में स्वतन्त्र भारत में उत्पन्न हुए इन्हीं नौजवानों का अधिक योगदान है। परसों की बात है। मैं एक सरकारी प्रतिष्ठान में कार्यवश बैठा था। मेरा परिचित नवयुवक लिपिक अपनी कार्यवाही अंग्रेजी में ही लिख रहा था। मैंने उससे पूछा......—सिंह जी ! आपको हिन्दी लिखनी नहीं आती अथवा अंग्रेजी में लिखना अनिवार्य है ? उस युवक ने शर्मिन्दा होते हुए कहा—हिन्दी तो मुझे अंग्रेजी से अच्छी आती है किन्तु यहां अंग्रेजी में ही लिखने की परिपाटी चल रही है।

सरकारी कार्यालयों में ऊपर के अधिकारी यदि चाहें और राष्ट्रभाषा हिन्दी में कार्य करने करवाने में गौरव अनुभव करें तो बहुत शीघ्रता से प्रशासनिक कार्यों में सर्वत्र हिन्दी को अपनाया जा सकता है। लकीर के फकीर क्लर्क खानापूर्ति करके अपनी ड्यूटी पूरी करने के अतिरिक्त राष्ट्र अथवा राष्ट्रभाषा के प्रति अपना उत्तरदायित्व नहीं समझते। उनको प्यार से समझाने की आवश्यकता है। सरकारी कार्यालयों के अंग्रेजी में छपे फार्मों को हिन्दी में छपवाया जावे। टंकण मशीन (टाइपराइटर) हिन्दी के बदलवाये जावें तो बहुत शीघ्र सफलता मिल सकती है।

मैं यहां महात्मा गांधी के कुछ वाक्य उद्धृत करता हूं। हमारे प्रशासकों को उनसे कुछ प्रेरणा मिलेगी।

"लड़कियों को इसलिये अंग्रेजी पढ़ाई जाती है कि इन्हें अच्छा वर मिल सकेगा। मैं ऐसी कई मिसालें जानता हूं, जिनमें स्त्रियां इसलिए अंग्रेजी पढ़ना चाहती हैं कि अंग्रेजों के साथ अंग्रेजी में बोल सकें। मैंने ऐसे कितने ही पति देखे हैं जिनकी स्त्रियां उनके साथ या उनके दोस्तों के साथ अंग्रेजी में न बोल सकें तो उन्हें दुःख होता है। मैं ऐसे कुटुम्बों को भी जानता हूं जिनमें अंग्रेजी भाषा को मातृभाषा बना लिया जाता है। इस बुराई ने समाज में इतना घर कर लिया है कि बहुत से उदाहरणों में शिक्षा का अर्थ, अंग्रेजी भाषा के ज्ञान के सिवा और कुछ होता नहीं। मेरे ख्याल से तो ये सब हमारी गुलामी और गिरावट की निशानियां हैं। आज जिस तरह देश की भाषाओं की उपेक्षा की जाती है और उसके विद्वान् व लेखकों को रोटी के लाले पड़ रहे हैं, वह मुझ से देखा नहीं जाता। मां-बाप अपने बच्चों को और पति अपनी स्त्री को, अपनी भाषा छोड़कर अंग्रेजी में पत्र लिखें तो वह मुझ से कैसे बर्दास्त हो सकता है?"

गत सप्ताह ३ जनवरी, १९८७ को आर्य प्रतिनिधि सभा की बैठक में उपस्थित न हो सकने के लिए हमारे गुरुकुल के एक अधिकारी ने मुझे अंग्रेजी में पत्र लिखा है। जब अंग्रेजों के विशाल साम्राज्य में कभी सूर्यास्त नहीं होता था तब सवा सौ वर्ष पूर्व गुजरात में उत्पन्न हुए महर्षि दयानन्द ने स्वभाषा, स्वदेशी वस्तु और स्वराज्य का उद्घोष किया था। आर्यभाषा (हिन्दी) को अपने भाषण और लेखन में अपनाया था। पंजाब में उत्पन्न बैरिस्टर मुन्शीराम ने अंग्रेजों के राज्य में गुरुकुल स्थापित करके हिन्दी और संस्कृत के माध्यम से उच्च शिक्षा का प्रबन्ध किया और सैकड़ों सुयोग्य विद्वान् स्नातक राष्ट्र के लिए समर्पित किये। आज उन्हीं गुरुकुलों में प्रथम श्रेणी से अंग्रेजी पढ़ाई जाती है और वहां के अधिकारी गुलामी की निशानी अंग्रेजी भाषा में पत्र लिखने में गौरव अनुभव करें तो इससे अधिक आर्यों के मानसिक पतन वा दासता का और क्या उदाहरण हो सकता है? स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती (प्रिंसिपल लक्ष्मीदत्त दीक्षित) का दिसम्बर, ८६ में आर्य मर्यादा में "नाम श्रद्धानन्द का और काम मैकाले का" लेख छपा है। स्वामी जी ने बहुत ही यथार्थ लिखा है।

वैसे तो प्रायः सभी आर्यों ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के शिक्षा सिद्धान्तों की अवहेलना की है किन्तु डी० ए० वी० संस्थाओं ने तो मैकाले को भी मात दे दी है। जो कार्य लार्ड मैकाले की नीति अंग्रेजी राज्य में नहीं कर सकी, वह कार्य आज स्वराज्य में डी० ए० वी० संस्थायें कर रही हैं। मैं डी० ए० वी० प्रबन्ध कमेटी के अधिकारियों से प्रार्थना करूंगा कि वे आंखें बन्द करके अन्धकारपूर्ण भविष्य में भारतीय नागरिकों को न धकेलें और अपने अतीत की ओर निहारें। महात्मा हंसराज और गुरुदत्त विद्यार्थी सदृश पूर्वजों के विचारों का सम्मान करें।

विश्वविद्यालयों के कार्यों में राष्ट्र-भाषा हिन्दी के प्रयोग के लिये सभा की ओर से पत्र लिखे थे। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से उत्तर मिला है कि "कुल सचिव के आदेशानुसार कार्यालय में प्राप्त किये गये हिन्दी के पत्रों का उत्तर हिन्दी में दिया जायेगा तथा इसके अतिरिक्त जहां कहीं हिन्दी में पत्राचार अथवा कागज/फाइल की कार्यवाही सम्भव है की जायेगी।"

हरयाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार से उत्तर मिला है कि "हमारे विश्वविद्यालय के क्रीड़ा महाविद्यालय में पाठ्यक्रम हिन्दी तथा अंग्रेजी में है। विद्यार्थी दोनों भाषाओं में से किसी एक में उत्तर दे सकते हैं। उनके प्रश्न-पत्र भी दोनों भाषाओं में तैयार किये जाते हैं।"

अन्य महाविद्यालयों में अभी तक हिन्दी का विकास कम होने के कारण हिन्दी लागू करने में कई वर्ष लगने का विचार रखते है। पुनरपि "हिन्दी को पूरा-पूरा सम्मान देने के आपके अनुरोध का पूरा-पूरा ख्याल किया जा रहा है।"

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से अभी तक कोई उत्तर नहीं मिला है। उसे पुनः पत्र लिखकर स्मरण करवाया जायेगा।

हरयाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड भिवानी के निदेशक ने लिखा है—"राष्ट्र-भाषा के प्रचार-प्रसार के सम्बन्ध में आपकी अभिरुचि एवं प्रयत्न सर्वथा श्लाघ्य एवं प्रशंसनीय है। आपको यह जानकर अति हर्ष होगा कि हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड का ८०% कार्य हिन्दी भाषा में सम्पन्न होता है। शेष कार्य भी हिन्दी में ही हो, इस दिशा में निरन्तर सचेष्ट प्रयत्न किये जा रहे हैं। समय-समय पर आपके सुझावों का सम्मान किया जायेगा।"

मैं रोहतक और हिसार विश्वविद्यालयों तथा हरयाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड भिवानी के अधिकारियों का धन्यवाद करता हूं और आशा रखता हूं कि वे राष्ट्र-भाषा को पूर्णतया अपनाकर राष्ट्रभक्ति का परिचय देंगे और स्वतन्त्र भारत के नागरिकों को अंग्रेजी भाषा में कार्य करने के लिए बाधित न करके राष्ट्र-भाषा में कार्य करने की प्रेरणा देंगे।

—वेदव्रत शास्त्री

आओ ! उत्तरायण चलें !

लेo—सुरेशकुमार शास्त्री एमo एo सभा उपदेशक

विश्व के सभी मानवसमूहों, सम्प्रदायों, जातियों और राष्ट्रों के कुछ ऐसे विशेष निश्चित दिन हैं जिनके माध्यम से अपने शुभ मनोभावों के द्योतनार्थ विशेष कृत्य करते हुए पाये जाते हैं। यद्यपि इन विशेष नियत दिनों के अवसरों, ऋतुओं, नामों, संख्याओं और न्यूनता वा अधिकता में बड़ा अन्तर पाया जाता है और उन पर उत्पन्न मनोभावों तथा उनके प्रदर्शन प्रकारों अथवा कृत्यों में भी भारी भेद दृष्टिगोचर होता है, पर उनकी सर्वत्र किसी न किसी रूप में विद्यमानता मानव प्रकृति की एक मौलिक प्रवृत्ति का परिचय देती है। यदि मानुषी प्रकृति की इस मौलिक प्रवृत्ति पर दीर्घदृष्टि से विचार किया जाये, तो प्रतीत होगा कि मनुष्यमात्र मे सर्वत्र यह प्रवृत्ति पाई जाती है कि वह सदा एक रस हो न बना रहे। वह नित्य प्रतिदिन जो कुछ काम वा व्यवसाय करता रहता है, उसमें ही सदा न जुता रहे, प्रत्युत कभी-कभार विश्राम सुख का भी अनुभव किया करे और अपने हृदयोल्लास का प्रकाश करे। मनुष्य की इस प्रवृत्ति की प्रेरणा से सभी मानव सम्प्रदायों और जातियों में इन विशेष नियत दिवसों का प्रचलन हुआ। जिनको पर्व, उत्सव, त्यौहार (तिथि वार), ईद, जश्न, होली डे आदि विविध नामों से पुकारा जाता है। इनके माध्यम से मनुष्य शोक-मुक्त होकर आह्लाद का अनुभव करता है।

सब भाषाओं की आदिजननी देववाणी में 'पर्व' शब्द की व्युत्पत्ति प्रसिद्ध अमरकोष के टीकाकार, विख्यात वैयाकरण कौमुदीकार श्रीमद् भट्टोजी दीक्षित के प्रपौत्र श्री भानुजी दीक्षित के मत में "पर्व-पूरणे" धातु से निम्नलिखितानुसार निष्पन्न होता है—

"पर्वति पूरयति जनानानन्देवेति पर्व, पर्व पूरणे भ्वादिः परस्मैपदी सेट् ततो बाहुलकात्कनिन्।"

'पर्व' शब्द संस्कृत कोष में निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

पर्व स्यादुत्सवे ग्रन्थौ प्रस्तावे विषुवादिषु।
दर्शप्रतिपदोः सन्धौ स्यात्तिथेः पञ्चकान्तरे॥ धरणीकोषः

अतः "पर्व" उसको कहते हैं कि जो मनुष्य के अन्दर पूर्णता एवं आनन्द का संचार करे। पर्व शब्द का एक अर्थ 'जोड़' भी होता है जिन के कारण शरीर का सौष्ठव भी बना रहता है और शरीर की गति भी सुचारु रहती है। हमारे शरीर की सुचारु गति के साथ, हमारे मानस की गति भी सुचारु बनाकर सूर्य की भांति उत्तरायण में प्रवेश करें तो आइये मकर संक्रांति के इस पावनपर्व की वास्तविकता को समझने का प्रयास करें। इस पर्व के विषय में हिन्दी के किसी कवि ने लिखा है—

बीते शिशिर हेमन्त का, हुआ परम प्राधान्य।
तेल, तूल, तपन का, सब जग में है मान्य॥

जितने काल में पृथिवी सूर्य के चारों ओर परिक्रमा पूरी करती है, उसको एक "सौर वर्ष" कहते हैं और कुछ लम्बी वर्तुलाकार जिस परिधि पर पृथिवी परिभ्रमण करती है उसको क्रांतिवृत्त कहते हैं। ज्योतिषियों द्वारा इस क्रांतिवृत्त के १२ भाग कल्पित किये हुए हैं और उन १२ भागों के नाम उन-उन स्थानों पर आकाशस्थ नक्षत्रपुञ्जों से मिलकर बनी हुई कुछ मिलती-जुलती आकृतिवाले पदार्थों के नाम पर रख लिए गये हैं। यथा—१. मेष, २. वृष, ३ मिथुन, ४ कर्क, ५ सिंह, ६. कन्या, ७ तुला, ८. वृश्चिक, ९ धनु, १० मकर, ११ कुम्भ, १२. मीन। प्रत्येक भाग वा आकृति 'राशि' कहलाती है जब पृथिवी एक राशि से दूसरी में संक्रमण करती है तो उसको "संक्रांति" कहते हैं। लोक में उपचार से पृथिवी के संक्रमण को सूर्य का संक्रमण कहने लगे हैं। छः मास तक सूर्य क्रांतिवृत्त से उत्तर की ओर उदय होता रहता है और छः मास तक दक्षिण की ओर निकलता रहता है। प्रत्येक षण्मास की अवधि का नाम 'अयन' है। सूर्य के उत्तर की ओर उदय की अवधि को 'उत्तरायण' और दक्षिण की ओर उदय होने की अवधि को 'दक्षिणायन' कहते हैं। जब सूर्य उत्तरायण से उदय होता है, दिन बढ़ता और रात्रि घटती जाती है तथा जब दक्षिणायन से उदय होता है तो दिन घटता और रात्रि बढ़ती रहती है। सूर्य की मकर राशि की संक्रांति से उत्तरायण और कर्कसंक्रांति से दक्षिणायन प्रारम्भ होता है। सूर्य के प्रकाशाधिक्य के कारण उत्तरायण विशेष महत्त्वशाली माना जाता है। अत एव उत्तरायण के आरम्भ दिवस मकर की संक्रांति को भी अधिक महत्त्व दिया जाता है और स्मरणातीत चिरकाल से उस पर पर्व मनाया जाता है। वैसे यह पर्व आलंकारिक दृष्टि से अन्धकार से प्रकाश की ओर बढ़ने की दिशा प्रस्तुत करता है।

मकर संक्रांति का पर्व भारतवर्ष के प्रत्येक प्रांत में बड़े हर्षोल्लास से मनाया जाता है, सर्वत्र शीतातिशय के निवारण के उपचार प्रचलित है।

वैद्यक शास्त्र में शीत के प्रतिकार तिल, तैल, तूल (रूई) बतलाये हैं। जिसमें तिल सबसे मुख्य है। शायद इसीलिए पुराणों में इस पर्व के सब कृत्यों में तिलों के प्रयोग का विशेष माहात्म्य गाया गया है और उनको पापनाशक कहा गया है। किसी पुराण का निम्नलिखित वचन प्रसिद्ध है—

तिलस्नायी तिलोद्वर्ती तिलहोमी तिलोदकी।
तिलभुक् तिलदाता च षट्तिलाः पापनाशनाः॥

अर्थात् तिलमिश्रित जल से स्नान, तिल का उबटन, तिल का हवन, तिल का जल, तिल का भोजन और तिल का दान, ये छः तिल के प्रयोग पापनाशक हैं।

मकर संक्रांति के अवसर पर शीत अपने यौवन पर होता है जनावास, जंगल, बन, पर्वत, सर्वत्र शीत का साम्राज्य होता है। किसी कवि ने भी इस विषय पर कहा है—"रात्रौ जानु दिवाभानुः" रात्रि में जंघा और दिन में सूर्य यह उक्ति दोनों पर आजकल पूर्णतया चरितार्थ होती है। इस पर्व पर दीनों को शीत निवारणार्थ कम्बल और घृत दान करने की प्रथा भी दृष्टिगोचर होती है। क्योंकि 'कम्बलवन्तं न बाधते शीतम्' की श्लिष्ट उक्ति संस्कृत में प्रसिद्ध है। घृत को भी वैद्यक में ओज और तेज बढ़ानेवाला तथा अग्निदीपक कहा है। आर्य पर्वों पर दान जो धर्म का एक स्कन्ध है, अवश्यमेव ही कर्त्तव्य है और—

"देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्विकं स्मृतम्"
(गीता अo १७ श्लोक २०)

अर्थात्—देश, काल और पात्र के अनुसार ही दिया हुआ दान 'सात्विक' कहलाता है तथा—

दरिद्रान्भर कौन्तेय मा प्रयच्छेश्वरे धनम्।

अर्थात् हे अर्जुन ! दरिद्रों का पालन करो, धनियों को धन मत दो। मकर संक्रांति के पहले दिन लोहड़ी का त्यौहार मनाने की रीति है। इस अवसर पर स्थान-स्थान पर होली के अग्नियां प्रज्वलित की जाती हैं। उसमें कई जगह अग्नि में तपे हुए चने जमीन पर पटक-पटक कर आनन्द मनाया जाता है।

इसी पर्व के साथ एक विशेष कथा का भी प्रचलन है कि महाभारत के प्रसिद्ध योद्धा भीष्म पितामह जिस समय शरशय्या पर मरणासन्न पड़े थे तो उन्होंने यह पूछा था कि सूर्य इस समय कौन से अयन में है, तब समीप खड़े लोगों ने बताया कि सूर्य इस समय दक्षिणायन में है तो भीष्म पितामह ने कहा कि जब सूर्य उत्तरायण में आ जायेगा, तब मैं अपने शरीर को छोड़ूंगा। इसका कारण भी यही है कि दक्षिणायन में सूर्य उदय होते ही अस्ताचल के गमन की तैयारियां आरम्भ कर देता है और रात्रि सुरसा राक्षसी के समान अपनी देह को बढ़ाती ही रहती है। अर्थात् ये दक्षिणायन अन्धकार का या नरक का प्रतीक है और उत्तरायण प्रकाश अर्थात् स्वर्ग का प्रतीक है। इसीलिए मुमुक्षु भीष्म का यह कहना सर्वथा ठीक है, मैं अन्धकार में अपनी इहलीला समाप्त नहीं करूंगा।

आर्यो ! आज हमारा लगभग जीवन अन्धकार से युक्त है। अतः इस लेख के माध्यम से मैं आपसे निवेदन यह करना चाहता हूं कि हम इस पर्व को अपने जीवन का प्रकाश पर्व के रूप में मनायें तथा अज्ञानता एवं मिथ्या जीवन से हटकर सज्ज्ञान एवं सत्यता को अपनाकर प्रकाश पुञ्ज सूर्य के साथ आओ ! मिलकर उत्तरायण चलें।

तहसील सोनीपत तथा पानीपत के आर्य कार्यकर्त्ताओं की बैठकें सम्पन्न

सभा शताब्दी समारोह की तैयारी के लिए सर्वत्र उत्साह की लहर

(केदारसिंह आर्य द्वारा)

आर्य प्रतिनिधि सभा का स्थापना शताब्दी समारोह मनाने की तैयारी करने के लिए ११ जनवरी रविवार को प्रातः ११ बजे आर्यसमाज नगर सोनीपत तथा २ बजे आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत में तहसीलभर के आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं की बैठकें आयोजित की गई थीं।

आर्यसमाज सोनीपत नगर के साप्ताहिक सत्संग में सभा के भजनोपदेशक पं० मुन्शीलाल जी ने ईश्वर तथा राष्ट्रभक्ति के गीतों के पश्चात् आर्यसमाज के प्रधान बा० वेदप्रकाश जी एडवोकेट की अध्यक्षता में कार्यकर्त्ताओं की बैठक प्रातः ११ बजे आरम्भ हुई। इस अवसर पर सभा के प्रधान माननीय प्रो० शेरसिंह, सभा कोषाध्यक्ष श्री बद्रीप्रसाद आर्य, सभामन्त्री आचार्य वेदव्रत शास्त्री, वेदप्रचाराधिष्ठाता एवं शताब्दी समारोह के संयोजक बा० रघुबीरसिंह, सभा के उपदेशक पं० सुरेशकुमार शास्त्री, ब० महेन्द्रसिंह शास्त्री पधारे और स्थानीय आर्यसमाजों एव तहसील सोनीपत के ग्रामीण आर्यसमाजों के अधिकारी भी उपस्थित थे।

सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह ने कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज से १०० वर्ष पूर्व १८८६ में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की स्थापना हुई थी। उस समय पंजाब सभा का कार्यक्षेत्र दिल्ली तक था। हरयाणा पंजाब में ही सम्मिलित होने के कारण इसी सभा का अंग था। पंजाब सभा के माध्यम से आर्यसमाज ने वेदप्रचार के साथ-साथ हैदराबाद सत्याग्रह, हिन्दी-रक्षा आंदोलन, गोरक्षा आंदोलन आदि करके तथा गुरुकुलों एवं आर्य कन्या विद्यालयों की स्थापना करके भारतीय इतिहास को एक नया मोड़ प्रदान किया था। आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं ने स्वाधीनता संग्राम में भी भारी संख्या में भाग लिया था। हरयाणा की आर्यजनता इन कार्यों में अग्रणी रही है।

प्रो० साहब ने कार्यकर्त्ताओं का आह्वान करते हुए कहा कि आज पुनः आर्यसमाज को राष्ट्र-रक्षा तथा समाज-सुधार के कार्यों में आगे आना चाहिए। पंजाब में उग्रवादी तत्त्व पाकिस्तान, चीन तथा अमेरिका आदि देशों की सहायता से तोड़-फोड़ की गतिविधियां दिन-प्रतिदिन तेज कर रहे हैं और निर्दोष नर-नारियों की हत्यायें करके खालिस्तान बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। पंथक कमेटी ने प्रस्ताव कर दिया है कि पाकिस्तान जब भी भारत पर आक्रमण करेगा तो सिख पाकिस्तान की मदद करेंगे। अतः भारत पाकिस्तान का युद्ध हरयाणा की सीमा पर होगा, वैसे भी भारत के ५ हजार वर्ष के इतिहास में विदेशियों के सारे युद्ध हरयाणा की धरती पर हुए हैं। हरयाणा सदा देश की सुरक्षा चौकी रही है। अतः हमें राष्ट्र-रक्षा के लिए बड़े से बड़ा बलिदान करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

सभा प्रधान जी ने नशाबन्दी लागू करने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि शराब के सेवन करने की आदतें बढ़ जाने से हरयाणा बर्बाद होने लग रहा है। जहां हरयाणा पहले घी, दूध, दही खाने के लिए प्रसिद्ध था, आज यहां घर-घर में शराब पहुँच चुकी है। सम्भवतः कोई ऐसा परिवार रह गया हो जिस घर में कोई भी शराब न पीता हो। अपने खून पसीने की कमाई को नवयुवक शराब को प्याली में नष्ट करने लग गये हैं। शराबियों के कारण हमारी बहु-बेटियों की इज्जत भी सुरक्षित नहीं रहती। सभा ने गत ३-४ वर्षों से इस बुराई को समाप्त करने के लिए हरयाणा में नशाबन्दी अभियान चला रखा है। पंचायतों से शराबबन्दी प्रस्ताव करवाकर सरकार को भिजवाये जाते हैं। जिन ग्राम पंचायतों के प्रस्ताव की अनदेखी करके शराब के ठेके खोल दिये जाते हैं वहां आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं द्वारा धरणा देकर ठेकों को बन्द करवाया जाता है। गतवर्ष ६५ ठेकों को बन्द करवाया गया।

सभा शताब्दी समारोह के अवसर पर इस वर्ष १०० ठेकों को बन्द करवाना चाहती है। आपने बताया कि प्रधानमन्त्री को पत्र लिखकर मांग की गई है कि भूतपूर्व सैनिकों को रियायती दर पर शराब खरीदने के लाईसेंस रद्द करें, क्योंकि इस प्रकार जिन ग्रामों में ठेके बन्द हो जाते हैं वहां भूतपूर्व सैनिकों द्वारा शराब की बिक्री होती है। भारत सरकार को इन भूतपूर्व सैनिकों को शराब के स्थान पर सस्ते रेट पर वस्त्र, खाद आदि खरीदने की सुविधायें दी जायें।

आर्य कार्यकर्त्ताओं से सभा प्रधान जी ने इन रचनात्मक कार्यों तथा शताब्दी समारोह को सफल करने के लिए तन, मन तथा धन से सहयोग करने की अपील करते हुए आशा व्यक्त की कि आर्यसमाज शताब्दी समारोह को सफल करने के लिए धन, अन्न तथा जनसंग्रह करेंगे।

सभा प्रधान जी की इस अपील का आर्यसमाज के सभी कार्यकर्त्ताओं ने स्वागत किया और शीघ्र ही तहसील सोनीपत के सभी आर्यसमाजों के अधिकारियों की एक बैठक बुलाकर तैयारी की जायेगी।

इसी प्रकार ११ जनवरी को ही तहसील पानीपत के आर्यसमाजों के कार्यकर्त्ताओं की बैठक दोपहर बाद २ बजे आर्य विद्यालय पानीपत में सम्पन्न हुई। सभा प्रधान जी ने सोनीपत की बैठक की भांति शताब्दी समारोह की आवश्यकता तथा उसे सफल करने के लिए कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित किया। सभा मन्त्री आचार्य वेदव्रत शास्त्री तथा सभा कोषाध्यक्ष श्री बद्रीप्रसाद आर्य ने भी शराबबन्दी तथा शताब्दी समारोह को सफल करने की अपील की। सभी आर्य कार्यकर्त्ताओं ने सभा की योजना का स्वागत किया। सभा पूर्वप्रधान बा० दलीपसिंह आर्य के संरक्षण में तहसील के आर्यसमाजों के प्रधान तथा मन्त्रियों की एक समिति का गठन किया गया। जिसके प्रधान श्री रामानन्द जी सिंहल तथा संयोजक प्रिंसिपल लाभसिंह जी को मनोनीत किया गया। यहां भी शीघ्र ही तहसील के आर्यसमाजों की बैठक बुलाकर कार्य आरम्भ कर दिया जायेगा।

तहसील करनाल तथा जि० कुरुक्षेत्र के आर्यसमाजों की बैठक

आर्य प्रतिनिधि सभा के शताब्दी समारोह की तैयारी के लिए तहसील करनाल के आर्यसमाजों की बैठक दिनांक १८ जनवरी, ८७ रविवार को प्रातः ११ बजे आर्यसमाज होली मोहल्ला करनाल तथा जि. कुरुक्षेत्र के आर्यसमाजों की बैठक १८ जनवरी, ८७ को ही दोपहर बाद २-३० बजे आर्यसमाज वेद भवन कुरुक्षेत्र में होगी। इन बैठकों में सभा के अधिकारी कार्यकर्त्ताओं से समारोह को सफल करने के लिए विचार विमर्श करेंगे।

अतः आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं तथा अधिकारियों से निवेदन है कि सुविधानुसार इन बैठकों में पधारें।

वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

आर्यविद्या परिषद् हरयाणा की बैठक

आर्यविद्या परिषद् हरयाणा की साधारण सभा की बैठक आर्यसमाज होली मोहल्ला करनाल में दिनांक १८ जनवरी रविवार को दोपहर १२ बजे होनी निश्चित हुई है। इस बैठक में हरयाणा के आर्य विद्यालयों की प्रगति के सम्बन्ध में विचार होगा।

—प्रिंसिपल लाभसिंह प्रस्तोता

आर्यसमाज अकालगढ़ जि० जींद का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री अजीतसिंह पुनिया, उपप्रधान—जोरासिंह पुनियां, उमेदसिंह सुपुत्र गोबाराम, मन्त्री—सूरजमल, उपमन्त्री—सत्यवीरसिंह, पुस्तकाध्यक्ष—उमेदसिंह सुपुत्र रामचन्द्र।

आर्यसमाज गांधरा जि० रोहतक का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री टेकचन्द, उपप्रधान—रणबीरसिंह मु० अध्यापक, मांगेराम, मन्त्री—कप्तानसिंह आर्य, उपमन्त्री—करतारसिंह, कोषाध्यक्ष—ओमकुमार, पुस्तकाध्यक्ष—घनश्यामसिंह।

जिला हिसार के सात ग्रामों में शराबबन्दी प्रचार की धूम

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्वधान में दिनांक १९-१२-८६ से २६-१२-८६ तक महान् देशभक्त प० रामप्रसाद बिस्मिल तथा स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस के उपलक्ष में जिला हिसार के निम्न गांवों मे शराबबन्दी सप्ताह मनाया गया। ज्ञातव्य है कि एक-दो गांव को छोड़कर शेष गांवों में ५० वर्ष बाद आर्यसमाज का प्रचार हुआ है। फिर भी कड़कती हुई सर्दी के बावजूद भी लोगों ने प्रचार में बड़ी श्रद्धा से भाग लिया। यह इलाका पैदावार का होते हुए भी शराब, जुवे तथा दहेज की बीमारी से बुरी तरह ग्रस्त है। लोग शराब से बिल्कुल तबाह हो चुके हैं। कार्यक्रम इस प्रकार रहा—

दड़ोली—दिनांक १९-१२-८६ रात्रि को ८ से ११-३० बजे तक वेद का प्रचार हुआ, जिसमें स्वामी सर्वदानन्द जी, सभा उपदेशक क्रातिकारी जी, महाशय सग्रामसिह जी ने मनुष्य के कर्त्तव्य, पं० रामप्रसाद बिस्मिल के जीवन पर प्रकाश तथा शराबबन्दी बारे विस्तार से विचार रखे। पं० जयपालसिह आर्य की भजनमण्डली के शराब विरोधी शिक्षाप्रद भजन हुए। प्रातःकाल यज्ञ पर चार खुखार शराबियों ने शराब न पीने का व्रत लिया। दो ने जनेऊ धारण किये। इस कार्यक्रम में श्री बलवन्तसिह गोदारा, महेन्द्रसिह, हरदन का विशेष सहयोग रहा।

चूलीकला व खुर्द—२०-१२-८६ को रात्रि में वेद का प्रचार हुआ, जिसमें उपरोक्त विद्वानों ने शराब से होनेवाले, नुकसान से लोगो को अवगत कराया। श्री रामकिशन व मालाराम सहू का विशेष सहयोग रहा।

चुली बागड़यान—२१-१२-८६ को रात्रि को गांव में वेदप्रचार का आयोजन किया गया, जिसमें महाशय संग्रामसिह व मैंने लोगो को शराबबन्दी बारे तथा आर्यसमाज का स्वतन्त्रता में योगदान बारे विचार रखे। पं० जयपाल जी के शराब व दहेज बारे शिक्षाप्रद भजन हुए। प्रात.काल हवन किया गया, जिसमें तीन खुखार शराबियों ने शराब छोड़ी। चार सज्जनों ने जनेऊ धारण किये। इस काय मे श्री हजारीलाल आय, हरलाल हिटलर, मगतराम सहू, मनफूल भादू, ओम्प्रकाश साध का विशेष सहयोग रहा।

खाबड़ा कलां व खुर्द—२२-१२-८६ को रात्रि में वेदप्रचार हुआ, जिसमें उपरोक्त विद्वानो ने शराबबन्दी, दहेजबन्दी व सभा के काय पर विस्तार से विचार रखे। प्रातःकाल हवन किया गया। दो ने शराब न पीने का व्रत लिया। तीन ने जनेऊ धारण किये। श्री हरफूलसिह पूर्व सरपंच, प० बनवारीलाल, केदारनाथ सेठ, अमीलाल सागा, जोवन सहाग, बिजेसिह सरपच, रामकिशन आय, मा० रामजीलाल गोदारा, रामकुमार चायल आदि का विशेष सहयोग रहा। यह पुराना आर्यसमाजा गाव है। लोगों ने बताया कि हमारे गांव में ४२ वर्ष बाद आर्यसमाज का प्रचार हुआ है। प्रचार मे सैकड़ों नर-नारियो ने बड़े उत्साह से भाग लिया। लोगों की माग से यहां तीन सभाओं का कार्यक्रम हुआ। लोगो ने श्रद्धा से सभा को दान भी दिया।

ढाबो कलां—२३-१२-८६ की रात्रि को उपरोक्त विद्वानों ने शराबबन्दी के अलावा आयसमाज क्या है, क्या चाहता है तथा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के जीवन पर प्रकाश डाला। प० जी के शिक्षाप्रद समाज-सुधार के भजन हुए। प्रातःकाल सामूहिक जगह पर यज्ञ किया गया। तीन सज्जनो ने जनेऊ धारण किये तथा एक ने बीड़ी न पीने का व्रत लिया। इस कार्यक्रम में श्री हेतराम पहलवान, रणजीतसिह बेनीवाल, सोहनलाल सरपंच, रवीन्द्रकुमार आदि का विशेष सहयोग रहा।

जांडवाला बागड़—२४-१२-८६ रात्रि को वेदप्रचार का आयोजन किया गया। उपरोक्त विद्वानों ने शराब से होनेवाले नुकसान, नवयुवकों का फर्ज व क्रातिकारियों के जीवन पर प्रकाश डाला। लेखक ने गांव में जो शराब का ठेका है उसे बन्द कराने बारे नवयुवकों व पंचायतों को प्रेरित किया। सरपच साहब ने नशाबन्दी प्रस्ताव पास कर दिया। प्रातःकाल यज्ञ पर १० नवयुवकों ने जनेऊ धारण किये। दो ने बीड़ी हुक्का न पीने का व्रत लिया। एक ने शराब न पीने का व्रत लिया। इसके अतिरिक्त प्रचार से प्रभावित होकर श्री नन्दलाल सुपुत्र गोकल ने डोरी, गण्डे, तबीज, झाड़े व पूछा करना आदि बुराइयों को छोड़ने की प्रतिज्ञा सभा में की, जो कई वर्षों से इस कार्य को करता आरहा था। प्रचार में काफी नर-नारियों ने भाग लिया। लोगों ने श्रद्धा से सभा को दान दिया। श्री रामकुमार साहरण, चुन्नीलाल पूर्व सरपंच, मनफूल सरपंच, धनीराम पंच, टोडरमल आर्य, मगनीराम पंच, ओम्प्रकाश आर्य, महेन्द्रसिह, सुदर्शन, हरदत्त व ग्राम विकास युवा मण्डल के प्रधान श्री युद्धवीरसिह आर्य का विशेष सहयोग रहा।

दुईयां—२५-१२-८६ को दोपहर बाद वेदप्रचार का कार्यक्रम हुआ। उपरोक्त विद्वानों ने शराबबन्दी बारे विस्तार से विचार रखे। गांव के नवयुवकों को सगठित होकर गांव मे अवैध रूप से कट्टे न पड़ने देने के लिये प्रेरित किया। प्रातःकाल हवन किया। चार ने जनेऊ लिये। दो ने हुक्का व बीड़ी न पीने का व्रत लिया। श्री हरफूल महलान, रावताराम कसमा, अमीलाल सरपंच, बनवारीलाल साहरण, महासिह आर्य का विशेष सहयोग रहा। इस तरह सभी गावो में कार्य प्रभावशाली व सराहनीय रहा। इस सारे कायक्रम में पंडित जी के साथी श्री राजबीर आय ढोलकवादक तथा सत्यवीर आर्य चिमटावादक का कार्यक्रम विशेष रहा। इस सारे गाव के कार्यक्रम का सचालन एवं सयोजन श्री सग्रामसिह आर्य ने किया। सभा को नशाबन्दी बारे ७०० रु० दान प्राप्त हुआ।

अत्तरसिह आर्य क्रांतिकारी सभा उपदेशक

यज्ञोपवीत संस्कार

बहुत ही हर्ष का विषय है कि दिनांक ८-१२-८६ को ग्राम पाल्हावास, जि० महेन्द्रगढ़ में श्री गणेशीलाल जी वर्मा के पौत्र चि० हेमन्त प्रताप आर्य सुपुत्र श्री रामप्रताप आर्य का उसके जन्मदिवस पर १० वर्ष की आयु होने पर यज्ञोपवीत संस्कार वैदिकरीति से बड़े उल्लास के साथ किया गया। उपनयन संस्कार आर्ष कन्या गुरुकुल नरेला की आचार्या ब्रह्मचारिणी सुमित्रा जी व्याकरणाचार्य द्वारा करवाया गया। यज्ञ के ब्रह्मा पद पर महर्षि के वीर सैनिक श्री जीवानन्दार्य नैष्ठिक ब्रह्मचारी गुरुकुल झज्जर शोभायमान थे। यज्ञोपरांत ब्रह्मचारिणी सुमित्रा जी एवं महर्षि के वीर सैनिक द्वारा यज्ञोपवीत की महिमा व अनिवार्यता पर सुन्दर एव सारगर्भित प्रवचन हुआ एव ब्र० हेमन्त प्रताप को शुभ आशीर्वाद दिया गया।

आर्यसमाज सफीदों जि० जींद का चुनाव

प्रधान— सर्वश्री डा० गणेशदास, उपप्रधान—सत्यनारायण, मन्त्री—ओम्प्रकाश, उपमन्त्री—ब्रह्मप्रकाश, कोषाध्यक्ष—खजांचीलाल, सहायक कोषाध्यक्ष—किशनदास, पुस्तकाध्यक्ष—फूलचन्द आर्य, प्रचारमन्त्री—परमानन्द।

सभामन्त्री का संक्षिप्त परिचय



नाम—श्री वेदव्रत शास्त्री (५४ वर्ष)
पिता का नाम—श्री ज्ञानाराम जी
माता का नाम-श्रीमती जमनादेवी जी
जन्म तिथि—मार्गशीर्ष शुक्ला १२ संवत् १९८९ वि० (४ दिसम्बर १९३२ ई०)
जन्मस्थान-घासीकावास (अजीतपुरा) डा० नूनियां गोठड़ा, थाना पिलानी, तहसील चिड़ावा, जिला झुंझनू (राज०)
वर्तमान पता—आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, गोहाना मार्ग, रोहतक-१२४००१
प्राथमिक शिक्षा—ओजटू तथा बख्तावरपुरा के स्कूलों में।
गुरुकुल झज्जर में प्रवेश—१ जनवरी, १९४६ ई०।

अखिल भारतीय आर्यकुमार परिषद् अजमेर से उत्तीर्ण परीक्षायें

१. सिद्धांत रत्न	१९४९ ई०
२. सिद्धांत भास्कर	१९५० ई०
३ सिद्धांत शास्त्री	१९५१ ई०
४ सिद्धांत वाचस्पति	१९५२ ई०
५. साहित्य सरोज	१९५४ ई० (सर्वप्रथम)

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर से उत्तीर्ण परीक्षायें—

१ व्याकरणाचार्य	१९५२ ई०
२ साहित्याचार्य	१९५३ ई०
३ निरुक्ताचार्य	१९५४ ई०
४. दर्शनाचार्य	१९५६ ई०
५ आयुर्वेदाचार्य	१९६० ई०

(प्रथम श्रेणी में रजिस्टर्ड चिकित्सक संख्या १४१६)

हिन्द होम्योपैथिक कालेज सोनीपत से उत्तीर्ण परीक्षायें—

१. एम० डी० एच०	१९६० ई०
२ एम० एस-सी०	१९६० ई०

स्वाध्यायमण्डल किल्ला पारडी, सूरत से उत्तीर्ण परीक्षायें-

१ संस्कृत विशारद	१९५२ ई०
२ उपनिषदलङ्कार	१९५३ ई०
३ गीतालङ्कार	१९५५ ई०
४. वेदाचार्य	१९५६ ई०

उपदेशक महाविद्यालय (लाहौर) यमुनानगर से उत्तीर्ण परीक्षा

१. सिद्धांत शिरोमणि	१९५८ ई०

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर से उत्तीर्ण परीक्षा—

१ विद्याभास्कर	१९६६ ई०

पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ से उत्तीर्ण परीक्षायें—

१ विशारद (जून) १९५८ ई० प्रथम श्रेणी (सर्वप्रथम)
२ शास्त्री (नवम्बर) १९५८ ई० प्रथम श्रेणी (सर्वप्रथम)
३ व्याकरणाचार्य (जून) १९६१ ई० (प्रथम खण्ड)

१९५२ से १९६४ तक महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर में सहायक मुख्याधिष्ठाता एवं आचार्य के पद पर कार्य किया। १९५३ से १९६४ तक "सुधारक" हिन्दी मासिक पत्र के व्यवस्थापक और सम्पादक रहे। पाणिनीय व्याकरण के विश्वविख्यात "पातञ्जल व्याकरण महाभाष्य" का प्रदीप और उद्द्योत टीकाओं सहित शुद्ध सम्पादन किया और इसे 'विमर्श' नामक टिप्पणी से विभूषित किया।

'आसनों के व्यायाम' और 'वेद विमर्श' पुस्तकें लिखी। 'ब्रह्मर्षि विरजानन्द-चरितम्' और 'गुरुकुल-शतकम्' काव्य ग्रन्थों का हिन्दी में अनुवाद किया। छन्दःशास्त्रम्, काव्यालङ्कारसूत्राणि, व्याकरणकारिका प्रकाश, वेद प्रवेश, बलिदान आदि अनेक ग्रन्थ सम्पादन करके छपवाये। सुधारक, आर्य, आर्योदय, वेंकटेश्वर समाचारपत्र, आर्यमित्र आदि समाचारपत्रों में अनेक सामयिक लेख लिखकर छपवाये। व्याकरण और वेद विषय के अनेक गुरुकुलों के परीक्षक भी रहे।

२३ जून, १९६४ ई० को ३१ वर्ष की आयु में पाणिग्रहणोपरांत गृहस्थाश्रम में प्रवेश किया। जुलाई, १९६६ ई० में रोहतक में 'आचार्य प्रिंटिंग प्रेस' के नाम से निजी व्यवसाय प्रारम्भ किया। आज यह प्रेस हरयाणा के बड़े प्रेसों में गिना जाता है और शुद्ध तथा सुन्दर छपाई के लिये प्रसिद्ध है। हिन्दी, संस्कृत भाषा ग्रन्थों के मुद्रण का यहां विशेष प्रबन्ध है।

"आचार्य प्रकाशन" के नाम से इनका अपना प्रकाशन विभाग है। इसके द्वारा पं० बस्तीराम जी आर्योपदेशक, चौ० ईश्वरसिंह गहलोत, स्वामी नित्यानन्द, स्वामी केवलानन्द, पृथ्वीसिंह बेधड़क, चौ० तेजसिंह आदि की भजनों की पुस्तकें, महर्षि दयानन्द सरस्वती के लघुग्रंथ और चिकित्सा तथा आर्यसिद्धांतों पर ५० पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

१९८२ से "आचार्य टाइप फाउण्डरी" चालू की है। इसमें हिन्दी और अंग्रेजी का टाइप बनाया जाता है। गत अनेक वर्षों से रोहतक प्रिंटिंग प्रेस मालिक यूनियन के प्रधान हैं। श्रीमद्दयानन्दार्षविद्यापीठ के पुस्तकाध्यक्ष तथा महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर के मन्त्री हैं।

१९५७ से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बद्ध रहे हैं। आपने नवम्बर, १९७३ में 'सर्वहितकारी' हिन्दी साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया। पंजाब सभा के विभाजनोपरांत यह आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का मुख्य साप्ताहिक पत्र बन गया। आप आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रारम्भ से ही अन्तरंग सदस्य, उपमन्त्री, उपप्रधान, कोषाध्यक्ष आदि के रूप में सहयोगी रहे हैं। विगत १३ वर्षों से सर्वहितकारी का सम्पादन कर रहे हैं। इस वर्ष आपको आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का मन्त्री चुना गया है। आप अत्यन्त उद्यमी और कुशल प्रबन्धक वा प्रशासक हैं।

आपकी पत्नी श्रीमती सुवीरा देवी जी कन्या गुरुकुल नरेला की स्नातिका हैं। आर्य विद्यासभा हरयाणा की सदस्या हैं। आपके ४ पुत्र हैं। विनोदकुमार और विजयकुमार प्रेस संचालन में सहयोगी हैं और विक्रमसिंह तथा विवेकानन्द महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर में पढ़ रहे हैं।

—सुदर्शनदेव आचार्य

पीलूखेड़ा मण्डी में शराब मांस विरोधी प्रचार में सफलता

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के निर्देशन में दिसम्बर मास में शराब के ठेकों के विरुद्ध ग्राम पचायतों द्वारा प्रस्ताव करवाकर भिजवाने का अभियान चलाया गया। इसके अन्तर्गत गुरुकुल कालवा, जि० जींद के आचार्य बलदेव जी तथा उनके सहयोगियों ने अपने मण्डल के लगभग १५ ग्रामों की पंचायतों से शराबबन्दी प्रस्ताव करवाकर हरयाणा सरकार को भेजे। पीलूखेड़ा मण्डी में कुछ दिनों से मांस तथा अण्डों की रेहड़ियां लगने लग गई थी। जिसके कारण वातावरण दूषित बन गया था।

आचार्य बलदेव जी की प्रेरणा से ४ जनवरी रविवार को पीलूखेड़ा मण्डी में स्वामी कर्मपाल जी की अध्यक्षता में कालवा बारहे की एक पंचायत का आयोजन किया गया। जिसमें निकट के ग्रामो से प्रमुख कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। इस अवसर पर वानप्रस्थो जगतमुनि जी, स्वामी योगानन्द जी, श्री तेलुराम जी प्रधान आर्यसमाज कालवा आदि ने शराब तथा मास के सेवन के विरुद्ध अपने विचार प्रस्तुत किये तथा ग्रामीण जनता को सावधान किया कि यदि शराब मास के बढ़ते हुए प्रचार को रोका न गया तो सभी को बर्बादी का सामना करना पड़ेगा और हरयाणा की प्राचीन संस्कृति नष्ट हो जायेगी। आर्यसमाज के इस सन्देश का ग्रामीण जनता तथा पीलूखेड़ा निवासियों ने स्वागत किया तथा निश्चय किया कि अण्डों की रेहड़ी लगानेवाले भविष्य में अण्डे नही बेचेंगे।

श्री अजीतकुमार आर्य को मातृशोक

पलवल : श्री अजीतकुमार आर्य उपसंचालक आर्य वीरदल हरयाणा की पूज्य माता श्रीमती गार्गी देवी का देहावसान मगलवार दिनांक २३-१२-८६ को सायं ५ बजे लोकनायक जयप्रकाश नारायण अस्पताल नई दिल्ली में होगया। वह गत ५ दिनों से पक्षाघात से पीड़ित थी।

श्रीमती गार्गी देवी स्वर्गीय श्री जयपाल आर्य गन्नौर निवासी की धर्मपत्नी थी। जिन्होंने सन् १९३८ में हैदराबाद सत्याग्रह में भाग लिया था तथा उन्हें भारत सरकार ने हाल ही में स्वतन्त्रता सेनानी घोषित किया है।

सोनीपत में उनकी मृत्यु पर आयोजित शांति यज्ञ में आर्यसमाज गन्नौर शहर, गन्नौर मण्डी एवं सोनीपत की आर्यसमाजों ने शोकप्रस्ताव प्रस्तुत किये। श्री चन्द्रसेन जी वैदिक मिश्नरी, श्री जयमुनि शास्त्री एवं अन्य अनेक आर्यसमाजी नेताओं ने उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की तथा इसे आर्यसमाज की अपूरणीय क्षति बताया।

श्रीमती गार्गी देवी यज्ञप्रेमी एव धार्मिक आर्य विचारों वाली महिला थीं। वह अपने पीछे तीन पुत्र तथा एक पुत्री को शोकमग्न छोड़ गई हैं। भगवान् उनकी आत्मा को शांति एवं सद्गति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य एवं शक्ति प्रदान करे। —सत्यपाल आर्य

प्रधान दयानन्द प्राकृतिक चिकित्सालय
सोहना मार्ग, पलवल

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस,
रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

पंजाब सरकार द्वारा ... /०-23207/73 प्रचि० क्र० P/RTK 49 फोन ३८१२



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभा मन्त्री सह सम्पादक—डा० सुधीर

वर्ष १४, अङ्क ६ २१ जनवरी, १९८७ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम ॥

(अथर्ववेद १२, १, ६२)

वेद के इस पवित्र मन्त्र में अपनी जन्मभूमि, मातृभूमि पर बलिदान होने की तत्परता का उल्लेख है। मन्त्र में कहा है—हे मातृभूमि हम सब तेरे पुत्र तेरे सामने उपस्थित खड़े हैं। तेरे पवित्र अन्न, जल, फल, फूल, दूध, घी आदि अनेक पौष्टिक पदार्थ, औषधियों और वनस्पतियों का सेवन करके यह शरीर सब प्रकार से स्वास्थ्य और बल को प्राप्त कर सका है। तेरी पवित्र मिट्टी में हम खेल-खेलकर बड़े हुए हैं। अतः हमारा रोम-रोम हे माता तेरा ऋणी है। इस ऋण को हे माता! हम तुझ पर बलिदान देकर ही उतार सकते हैं। हे मातृभूमि हमें अपना आशीर्वाद प्रदान करो, तुझ से उत्पन्न तेरे सभी समीपवर्ती पदार्थ तथा प्रदेश हमारे लिए नीरोग और क्षय रहित हों। हम सब दीर्घ आयु को प्राप्त करें और सब अपना कर्त्तव्यपालन करते हुए निरन्तर जागृत रहकर तेरे लिए बलिदान देनेवाले हों।

किसी देश की उत्थान की योजनायें भी तभी सफल होती है, जब कर्त्तव्यनिष्ठ और अलोलुप देशभक्तों द्वारा संचालित होती हैं। इसके विपरीत धन का अपव्यय समय और शक्ति की बर्बादी के सिवाय कुछ भी नही होता। राष्ट्र के कर्णधारों की सफलता भी इसी में है कि वे अपने पवित्र, त्यागमय और सरल जीवन का उदाहरण प्रस्तुत कर राष्ट्र के नागरिकों को हृष्ट-पुष्ट कर्त्तव्यपरायण एवं सुखी बना दे। राष्ट्र के कर्णधारों का व्यवहार बिना किसी भेदभाव के आदर्श जीवन को प्रस्तुत करनेवाला हो, तभी राष्ट्र में राष्ट्रीयता के भाव का उदय होता है। सबके मन में "जननी जन्मभूमिश्च स्वार्गादपि गरीयसी" की उच्चतम भावना का जागरण राष्ट्र की उन्नति का एकमात्र उपाय है।

यह अपना गणतन्त्र दिवस यथापूर्व राष्ट्रीय उल्लास के साथ मनायेंगे। अपने देश का ४० वर्ष का एक लम्बा समय स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद व्यतीत होगया और देखते ही देखते स्वतन्त्रता की अर्धशताब्दी के क्षण हमारे समक्ष उपस्थित होंगे। हमारे लिए यह सब हर्ष और गर्व की बात है।

भौतिक दृष्टि से, विज्ञान और तकनीकी प्रगति की दृष्टि से हम बहुत आगे बढ़े हैं। औद्योगिक क्षेत्र में भी हमने अनेक मानदण्ड स्थापित किये हैं। तीव्रता से बढ़ती हुई जनसंख्या और उससे उत्पन्न नवीन समस्याओं का भी हमने निराकरण करने का प्रयास किया है। शिक्षा के क्षेत्र में भी विकास अवश्य हुआ है। हमारी सैनिक शक्ति भी पहले से कई गुना अधिक बढ़ गई है। हमने सफलतापूर्वक देश पर होनेवाले आक्रमणों का भी सामना किया है। परन्तु जो कुछ हम प्राप्त कर पाये हैं वह सब समय और बढ़ती हुई जनसंख्या की दृष्टि से अभी भी अंशमात्र है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद मानव मूल्यों का तीव्रता से हनन हुआ है। यह अत्यन्त दुःख का विषय है।

गणतन्त्र दिवस की वेला हमें गम्भीरता से आत्मनिरीक्षण करने का अवसर प्रदान करती है। इस दृष्टि से राष्ट्र के अस्तित्व और अस्मिता की रक्षा का चिन्तन करना आवश्यक है। ऐसे कौन से व्यवधान हैं जो राष्ट्र की उन्नति में बाधा उत्पन्न कर रहे हैं। हमारी राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के लिए खतरा बन गये हैं। निष्पक्ष होकर यदि हम ... करेंगे तो निश्चित रूप से इस परिणाम पर अवश्य पहुंचेंगे कि जो भी समस्यायें आज हमारी राष्ट्रीय शक्ति को कमजोर कर रही हैं। उनको हमने ही अपनी अदूरदर्शिता, स्वार्थ तथा लोलुपवृत्ति के कारण व्यक्तिगत तथा दलीय हितों में राजनैतिक लाभ प्राप्त करने की इच्छा से जन्म दिया है। यह सब समस्यायें मकड़ी के शरीर से उत्पन्न जाल की तरह हमारी ही स्वार्थवृत्ति का परिणाम हैं। उस जाल में अपने को फंसा हुआ देखकर अब एक दूसरे पर उसका दोषारोपण करके अपने दायित्व से मुक्ति पाने के लिए हम आतुर हो रहे हैं।

किसी भी गणतन्त्रीय देश में जहां बहुदलीय राजनैतिक व्यवस्था के अन्तर्गत शासन चलता है, सत्ता की प्राप्ति और शक्ति का व्यक्तिगत या दलीय लाभ के लिए उपभोग स्वाभाविक बात है। राजनीति में भाग लेनेवाले लोग देवोवृत्ति के होंगे, ऐसी आशा करना व्यर्थ है। परन्तु गणतन्त्र में राष्ट्रीय अस्मिता और अस्तित्व को दांव पर लगाकर यदि नीति निर्धारण होता है तो इससे अधिक भयावह कुछ भी नही हो सकता।

हमारे देश में आतंकवाद, क्षेत्रवाद, भाषावाद, जातिवाद और साम्प्रदायिकता का जो भूत राष्ट्र के हितों को निगलने के लिए तीव्रता से अपना मुंह फैलाये हमारी एकता और अखण्डता को निगलने के लिए आगे बढ रहा है, इनका कारण तो तलाश करना ही चाहिए। इसका कारण है—अवसरवादी, समझौतावादी और तुष्टिकरण की नीति।

इसका उत्तरदायित्व इस देश के कर्णधारों पर है। एक शायर की पंक्तियां यहां बिल्कुल ठीक प्रकार से स्थिति का स्पष्टीकरण करती हैं—

थपेड़े मौजे दरिया के तो साहिल तक तरा लाए,
किनारों का भरोसा था किनारे हमको ले डूबे।
हमें यह गर्दिशे दौरां डुबोती गैर मुमकिन था,
सहारा देनेवालों के सहारे हम को ले डूबे॥

किसी भी समस्या पर राष्ट्रीय दृष्टिकोण से विचार नहीं किया जाता। सदैव दलीय और व्यक्तिगतहित सर्वोपरि रहता है।

चुनाव की प्रक्रिया सारी समस्याओं की जड़ है। परन्तु चुनाव गणतन्त्र व्यवस्था का एक आवश्यक अंग है। जनसाधारण अपने प्रतिनिधियों को इसी प्रक्रिया के द्वारा शासन की बागडोर सौंपता है, परन्तु उसमें आज व्यक्ति के चरित्र और योग्यताओं को नहीं आंका जाता, अपितु यह युद्ध दलीय शक्तियों का निर्माण करता है। उसमें सत्ता की शक्ति, पैसे की शक्ति और आतंकित करने की शक्ति निर्णायक बन जाती है। इसके परिणामस्वरूप अनेक योग्य और चरित्रवान् व्यक्ति प्रतिनिधि रूप में संसद और विधान सभाओं की दीर्घाओं में पहुंचने से वंचित रह जाते हैं। कुछ प्रभावशाली लोग गणतन्त्र के नाम पर दलीय तन्त्र को थोपने में सफल हो जाते हैं।

जब तक मतों की राजनीति इस देश पर हावी रहेगी, मानव मूल्यों का निरन्तर हनन होगा और उससे साम्प्रदायिकता, जातिवाद, भाषावाद, क्षेत्रीयवाद और आतंकवाद की समस्यायें निरन्तर जन्म लेती रहेंगी। सत्ता से शक्ति और शक्ति से फिर सत्ता की प्राप्ति का यह कभी न समाप्त होनेवाला क्रम चलता रहेगा।

अल्पमत के नाम पर हमारे संविधान में कई प्रकार की सुविधायें और संरक्षण प्राप्त हैं। सत्ता के दलाल उसका आश्रय लेकर विभिन्न जातियों और धार्मिक विश्वास के लोगों में विसंगठन उत्पन्न करने के मौके से चूकते नहीं और किसी न किसी रूप में षड्यन्त्र निरन्तर चलता है। इसमें निरीह जनसाधारण का रक्त बहता है, बच्चे अनाथ होते हैं, मातायें बहनें वैधव्य का अभिशाप भोगती हैं और उनकी लाशों पर राजनीति नग्न नृत्य करती हुई भी सहानुभूति का मुखौटा बनाये रखती है।

यह खूब क्या है, यह जीश्त क्या है, जहा की असली सिरीश्त क्या है।
बड़ा मजा हो तमाम चेहरे अगर कोई बेनकाब करदे॥

घृणा और द्वेष की अग्नि की लपटों पर इस देश के राजनीतिज्ञ अपनी रोटियां सेकते हैं। कितना घिनौना खेल है यह। जनसाधारण सुख और शांति की नींद सोना चाहता है, परन्तु राजनीति अब सेवा का अवसर नहीं एक व्यवसाय है और इसी के अपवित्र गर्भ में सारे षड्यन्त्रों का काल स्याओं का जन्मदाता है। इसी के अपवित्र गर्भ में ... धन के सहारे रचना होती है। काश! अभाव, अन्याय और अनभिज्ञता से पिसता हुआ इस देश का जनमानस इस मूलकारण को समझ पाता।

चुनावों में जिन लोगों को विभिन्न दलों द्वारा प्रत्याशी के रूप में खड़ा किया जाता है, वहां यह अवश्य देखा जाता है कि इस क्षेत्र के लोगों में किस जाति का बाहुल्य है, उसी जातिविशेष का प्रत्याशी जो आर्थिक रूप से सम्पन्न हो खड़ा किया जाता है। उसकी योग्यता का मुख्य मानदण्ड जातिविशेष रहता है। इसका उदाहरण देने की आवश्यकता नहीं है, आंकड़े सब प्रमाण प्रस्तुत करने में सक्षम हैं।

शिक्षा और सेवा के नाम पर इस देश में धर्मान्तरण का भी दौर चलता है।

मुफ़लसी हिज्जे लताफत को मिटा देती है।
भूख आदाब के साचे में नहीं ढल सकती॥

अभावग्रस्त मानव ही धर्मान्तरण का शिकार होता है। धर्मान्तरण उसकी राष्ट्रीय चिन्तनधारा को बदल देता है। जो आपसी संघर्ष का एक कारण बनती है और इतिहास इस बात का साक्षी है कि जहां भी एक वर्ग विशेष का बहुमत होता है वहां वह क्षेत्रीय आधार पर अलगाव की बात सोचना प्रारम्भ कर देता है और फिर आतंकवाद के द्वारा हिंसा का आश्रय लेकर हर प्रकार से राष्ट्र का अहित करता है। यह सब धर्मनिरपेक्षता के हमारे आधारभूत सिद्धांत की आड में होता है। हम राजनैतिक लाभ के लिए इस मूलभूत कारण की उपेक्षा कर देते हैं। हम देश की राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के लिए जितना अधिक साम्प्रदायिकता और आतंकवाद को कोसते हैं, उससे कहीं अधिक तीव्रता से वह बढ़ता है। आखिर कहीं तो हमारी कार्यपद्धति में, नीति में कमी है, उसका गम्भीरता से हम चिन्तन और विश्लेषण क्यों नहीं करते?

धार्मिक सहिष्णुता तो लगभग समाप्तप्राय है। एक धर्म या सम्प्रदाय के लोग दूसरे के प्रति द्वेष और आक्रामक वृत्ति के आदी होगये हैं। धार्मिक उन्माद जब राष्ट्रीयहित से ऊपर रहता है तो साम्प्रदायिक दंगे होते हैं। यह दंगे कहां? और क्यों होते हैं? ईमानदारी से इसका कारण तो तलाश करें।

भारत में विभिन्न धार्मिक विश्वासों, जातियों, भाषा-भाषियों, सांस्कृतिक परम्पराओं और सभ्यताओं के अनुसार अपना जीवन जीनेवाले लोग रहते हैं। जब तक राष्ट्र के हित में सब अपने-अपने निजी स्वार्थों का बलिदान नहीं करें। जब तक विशेष सुविधाओं का प्रलोभन अल्पमत या जाति के आधार पर बना रहेगा, जब तक सबको समान नागरिक संहिता से शासित करने की नीति पर हम नहीं चलेंगे। हमारी सारी समस्यायें ज्यों की त्यों बनी रहेंगी। राष्ट्र एक, प्रत्येक नागरिक की राष्ट्रीयता का आधार एक, फिर जाति, धर्म या सम्प्रदाय के आधार पर अलग-अलग संहिताओं और विधानों की व्यवस्था क्यों? समान नागरिक संहिता एकमात्र हल है। इसमें किसी को किसी अवसर पर छूट देना हमारी राजनैतिक नीयत पर सन्देह उत्पन्न करेगा। केवल संस्थाओं के राष्ट्रीयकरण की नहीं, विचारों के राष्ट्रीयकरण की आवश्यकता है। उसी से हम अपने संविधान, राष्ट्रीयगान, राष्ट्रीयध्वज और राष्ट्र का सम्मान करना सीखेंगे। राष्ट्र को अपनी जन्मभूमि और मातृभूमि स्वीकार कर, निजी स्वार्थों से ऊपर उठकर विचारना प्रारम्भ तो करें, तभी हम बलिदान हो जाने की भावना से ओतप्रोत हो जायेंगे। वेद इसी बलिदान की प्रेरणा देते हैं।

—प्रेमचन्द श्रीधर एम०ए०, एम०फिल०

हैदराबाद आर्य सत्याग्रहियों को आवश्यक सूचना

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में सम्मिलित होवेवाले जिन सत्याग्रहियों के प्रार्थना-पत्र गृहमन्त्रालय, लोकनायक भवन नई दिल्ली सम्बन्ध में भारत सरकार द्वारा गठित समिति ने १२ ... १९८६ को अपनी पहली बैठक (लोकनायक भवन) में लिया। अतः सत्याग्रही अथवा उनके आश्रित तुरन्त सभा कार्यालय रोहतक पधार कर अपने आवेदन-पत्र भरवाकर भेजकर इस सुविधा से लाभ उठावें।

—प्रो० शेरसिंह
प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक



देसाई आयोग के समक्ष हरयाणा का दावा

मान्यवर देसाई जी,

मैं पहिले भी आपको पत्र लिखना चाहता था परन्तु आपका अस्तित्व ही शक में पड़ गया था, इसलिये आपको पत्र लिखना आवश्यक नहीं समझा। अब क्योंकि भारत सरकार ने निर्णय किया है कि आपका आयोग रहेगा, इसलिये मैं तथाकथित पंजाब समझौते तथा मथ्यू और वेंकट रमैया आयोगों के सम्बन्ध आपके समक्ष रखना चाहूंगा। मैं आशा करता हूं कि आप निष्पक्ष होकर विचार करेंगे और आपके द्वारा उपेक्षित पक्ष को न्याय मिलेगा।

कृपया श्रीमती इन्दिरा गांधी के २९ जनवरी, १९७० के फैसले की धारा ५ और पंजाब समझौते की धारा ७.२ पर ध्यान दें। पहिले दस्तावेज के अनुसार हरयाणा को स्पष्ट रूप से फाजिल्का अबोहर का इलाका दिया गया था परन्तु दूसरे दस्तावेज के द्वारा सीधा न देकर, वही काम एक आयोग के द्वारा करवाया जाना था। यदि हम धारा ७.२ के प्रथम और अन्तिम वाक्यों को पढें तो साफ हो जायेगा कि चण्डीगढ़ के बदले में हरयाणा को फाजिल्का अबोहर का इलाका ही दिया जा सकता है। न्यायमूर्ति मैथ्यू ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है—

"आयोग का विचार है कि हरयाणा की सीमाओं के साथ के फाजिल्का अबोहर क्षेत्र को छोड़कर दूसरे इलाकों के दावे का फैसला धारा ७.४ के अनुसार नियुक्त आयोग करेगा। यह आयोग तो २९ जनवरी, १९७० के फैसले की धारा ५ के अनुसार हरयाणा को दिये जानेवाले हिन्दी-भाषी गांवों पर ही विचार करेगा, जो श्रीमती इन्दिरा गांधी ने अपने फैसले में हरयाणा को देने का निर्णय किया था।"

मैंने वेंकट रमैया आयोग की रिपोर्ट नहीं पढ़ी है, परन्तु समाचार-पत्रों में जो छपा है उससे मैथ्यू आयोग के ऊपर लिखे विचारों की पुष्टि होती है। करीब ३० गांव जो १९६१ और १९८१ की जनगणनाओं के अनुसार हिन्दी-भाषी थे, उनके सम्बन्ध में वेंकट रमैया आयोग ने कहा कि ये गांव तो हरयाणा को धारा ७.४ के तहत बनाये गये आयोग के द्वारा मिल ही जायेंगे, परन्तु इनको धारा ७.२ के तहत चण्डीगढ़ के बदले में नहीं दिया जा सकता, क्योंकि दोनों धाराओं में दिये जानेवाले गांव एक दूसरे से अलग होने चाहियें।

अब क्योंकि देसाई आयोग को पुनर्जीवित करने की बात चल पडी है, इसलिये हरयाणा रक्षावाहिनी के अध्यक्ष के नाते २० जुलाई, १९८६ को जो पत्र प्रो० शेरसिंह ने लिखा था, वह पाठकों तक पहुँचाने के लिए हिन्दी अनुवाद छाप रहे हैं।—सम्पादक

प्रधानमन्त्री तथा सन्त लौंगोवाल अच्छी तरह जानते थे कि फाजिल्क अबोहर के हिन्दी-भाषी गांव हरयाणा की सीमा से जुड़े हुए नहीं हैं, क्योंकि कन्दूखेड़ा गांव १९६१ में भी पंजाबी भाषी था। इसीलिये श्रीमती इन्दिरा गांधी ने यह गांव हरयाणा को न देकर केवल एक फर्लांग चौड़ा रास्ता भर दिया था। अकालियों ने वैसे तो १९५६ में इस गांव को हिन्दी-भाषी मान लिया था और १९६६ में यह मान लिया था कि यदि दो गांव या उनसे कम गांव १० से अधिक गांव के बीच में पड़ते से रुकावट पैदा होती है तो वे १० से अधिक गांव इन दो या उससे कम गांव समेत देने पड़ेंगे। परन्तु स० स्वर्णसिंह ने इसे न मानकर केवल रास्ता देने की बात मानी, जबकि हमने पूरा गांव देने के लिये कहा था।

यह बिलकुल स्पष्ट है कि फाजिल्का अबोहर के हिन्दी-भाषी ग्रामों का हरयाणा की सीमाओं से न जुड़ना ही उनको धारा ७.४ के तहत दिये जानेवाले सीमा से जुड़े हुए ग्रामों से अलग करता है। कन्दूखेड़ा गांव ने यह भूमिका निभाई है, इसलिये यह गांव मैथ्यू आयोग द्वारा पहचान किये गये फाजिल्का अबोहर क्षेत्र के हिन्दी-भाषी ग्रामों को हरयाणा को दिये जाने में रुकावट नहीं बनता, बल्कि सहायक बनता है। मैं हैरान हूं कि इतने स्पष्ट तथ्य को भी मैथ्यू तथा वेंकट रमैया आयोगों ने अपने विचारों की उपज है, उन्होंने साफ-साफ कहने में हिचकिचाहट क्यों की।

आज चाहे अकाली कुछ कहें, परन्तु इस तथ्य को कोई नहीं झुठला सकता कि सन्त लोंगोवाल को यह पता था कि हरयाणा को फाजिल्का अबोहर के गांव ही दिये जाने हैं। पंजाब समझौते पर हस्ताक्षर करने के २० दिन बाद १३ अगस्त, १९८५ को फिरोजपुर जिले के वकीलों की सभा में उन्होंने कहा कि अबोहर के साथ ५५ गांव हरयाणा को देने पड़ेंगे। यह समाचार १४ अगस्त, १९८५ के दैनिक ट्रिब्यून और टाइम्स आफ इण्डिया में छपे और किसी ने उसका खण्डन नहीं किया। फाजिल्का अबोहर, फिरोजपुर जिले में ही पड़ते हैं, यह बात बहुत महत्त्वपूर्ण है।

न्यायमूर्ति वेंकट रमैया ने चण्डीगढ के बदले में हरयाणा को दिये जानेवाले ७०,००० एकड़ क्षेत्रफल के गांव देने की बात कही है। इसके लिये उन्होंने कोई तर्क नहीं दिया। वे जानते थे कि समझौते की धाराओं ७.२ और ७.४ के रहते वे हरयाणा को फाजिल्का अबोहर के इलावा और कोई गांव नहीं दे सकते। मैथ्यू आयोग की कठिनाई का हल न सूझने पर उन्होंने कुछ न देने की बजाये हरयाणा की क्षतिपूर्ति के लिए अपनी सीमाओं से हटकर अपने सुझाव दिये। वे जानते थे कि चण्डीगढ हिन्दी भाषी होने के नाते हरयाणा को मिलना चाहिये और यदि वह पंजाब को दिया जाना है तो क्षतिपूर्ति करनी पड़ेगी।

अकाली कानूनी अथारिटी की जगह आयोग बनाने के हक में थे। भारत सरकार ने उनकी बात मान ली और गांव छांटने की शर्तें जो मैथ्यू और वेंकट रमैया आयोगों की थीं मान ली, परन्तु ४५,००० एकड़ क्षेत्रफल के गांव जो वेंकट रमैया ने चण्डीगढ़ के बदले में हरयाणा को देने से इन्कार किया, उन पर अकालियों के सुझाव पर भी नया आयोग विचार कर सकता है, केवल इतनी बात मानी।

आपका आयोग भी पंजाब समझौते की धारा ७.२ के तहत बनाया गया है, जिसके तहत पहिले दो आयोग बनाये थे। आप केवल ७०,००० एकड़ क्षेत्रफल के गांव पर ही विचार कर सकते हैं, मैं ऐसा नहीं मानता। वेंकट रमैया आयोग ने तो उचन्ती बात कह डाली ७०,००० एकड़ की बात हदीस नहीं है। मैथ्यू आयोग के द्वारा बताये गये हिन्दी भाषी गांव का क्षेत्रफल तो ३५०,००० एकड़ बनता है।

जुड़ा होने की शर्त—यह समझने की बात है कि पंजाब समझौते की धारा ७.२ और धारा ७.४ दोनों में एक ही शर्त रखी है और साथ ही यह भी कहा कि दोनों के तहत पहचान किये हुए गांव एक दूसरे से अलग होने चाहियें। यह तभी सम्भव है जब यह शर्त पहचाने हुए गांवों के आपस में एक दूसरे से जुड़े होने की हो न कि हरयाणा की सीमा से। ७.४ के तहत तो सीमा समायोजन का काम, इसलिए वे गांव हरयाणा की सीमा से जुड़े हुए होने चाहिये। यदि ७.२ के तहत पहचाने हुए गांव भी हरयाणा की सीमा से जुड़े हुए हो तो ७.४ वाले गांव से अलग कैसे हो सकते हैं। यदि सीमा से जुड़े गांव तो ७.४ के तहत सीमा समायोजन में वैसे ही हरयाणा को मिलेंगे, फिर ७.२ के तहत हरयाणा को चण्डीगढ़ के बदले में क्या मिला? मैथ्यू की व्याख्या के अनुसार तो यही बात हो जाती है जो पंजाब समझौते की भाषा और उसके भावों के विपरीत है।

मेरी दलील जिसको काटा नहीं जा सकता, यह प्रमाणित करती है कि मैथ्यू आयोग द्वारा पहचान किये हुए फाजिल्का अबोहर के गांव ही हरयाणा को चण्डीगढ़ के बदले में दिये जा सकते हैं।

मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि आप पंजाब समझौते के एक-एक शब्द को मेरे सुझावों के प्रकाश में ध्यान से पढ़ें, ताकि जब पंजाब तथा हरयाणा के प्रतिनिधि आपके समक्ष अपने विचार रखें तो आप शीघ्र न्याय संगत निर्णय ले सकें।

सेवा में,
न्यायमूर्ति डी० ए० देसाई
अध्यक्ष विधि आयोग, नई दिल्ली

—आपका
शेरसिंह

आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापना शताब्दी समारोह—

जि. करनाल तथा कुरुक्षेत्र के आर्यसमाजों की बैठकों में भारी उत्साह

(केदारसिंह आर्य द्वारा)

रोहतक १९ जनवरी। १८ जनवरी, ८७ रविवार को आर्यसमाज होली मोहल्ला करनाल में साप्ताहिक सत्संग के पश्चात् सभा के भजनोपदेशक पं० समेरसिंह आर्य के प्रभावशाली गीत हुए। प्रातः ११ बजे सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी, उपप्रधान महाशय भरतसिंह जो, मन्त्री आचार्य वेदव्रत शास्त्री, मा० बद्रीप्रसाद आर्य कोषाध्यक्ष, समारोह संयोजक बाबू रघुवीरसिंह तथा आर्यविद्या परिषद् हरयाणा के प्रस्तोता प्रिंसिपल लाभसिंह जी के आर्यसमाज मन्दिर में पधारने पर आर्यसमाज के उपस्थित कार्यकर्ताओं ने अपने नेताओं का स्नेहपूर्वक स्वागत किया।

कार्यकर्त्ता बैठक का शुभारम्भ करते हुए सभामन्त्री आचार्य वेदव्रत जी शास्त्री ने आर्यसमाज होली मोहल्ला करनाल को स्थापित हुए १०० वर्ष पूर्ण होने पर प्रसन्नता प्रकट करते हुए २२ से २४ मई, ८७ को समारोह को सफल करने की अपील की। आर्यसमाज होली मोहल्ला के सभी सदस्यों तथा जि० करनाल के अन्य आर्यसमाजों को शताब्दी समारोह को मनाने में तन, मन तथा धन से पूरा सहयोग करना चाहिए।

सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह ने आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं को आर्यसमाज के विगत १०० वर्ष के शानदार इतिहास का वर्णन करते हुए कहा कि राष्ट्र को स्वतन्त्र कराने में आर्यसमाज ने महत्त्वपूर्ण योगदान किया है। राष्ट्र-रक्षा कार्यों में भी सबसे अधिक आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं ने बलिदान दिया है। आज पुनः पंजाब के उग्रवादी तत्त्व पाकिस्तान, अमेरिका, चीन तथा अरब देशों की आर्थिक सहायता तथा हथियार लेकर तोड़-फोड़ करके खालिस्तान बनाकर भारत के टुकड़े करना चाहते हैं। पाकिस्तान के साथ युद्ध होने की अवस्था में पंजाब के उग्रवादी उसका साथ देंगे। अतः भारत पाक युद्ध का स्थान हरयाणा ही हो सकता है। अतः हमें पूर्व की भांति राष्ट्र-रक्षा कार्यों में अग्रणी पंक्ति में खड़ा होने की तैयारी करनी होगी।

प्रो० साहब ने शताब्दी समारोह के अवसर पर ठोस कार्यक्रम की चर्चा करते हुए कहा कि समारोह के अवसर पर कम से कम १०० ग्राम पंचायतों की ओर से पास किये गये शराबबन्दी के प्रस्तावों को प्रस्तुत करते हुए हरयाणा सरकार से पूर्ण नशाबन्दी करने की मांग की जायेगी। युवक शराब पीने के आदी होते जारहे हैं। अब युद्ध विज्ञान से बने नये-नये हथियारों से होगा। तलवार आदि का युद्ध समाप्त हो चुका है। अब वही नवयुवक सैनिक सफलतापूर्वक युद्ध लड़ सकेगा, जो कि शराब के नशे से दूर होगा। शराब के नशे में मदहोश सैनिक शत्रु का मुकाबला नहीं कर सकेगा। आज युद्ध को मशीनों का बटन दबाने पर लाखों नर-नारी बमवर्षक वायुयानों से मर सकते हैं। हमारे सैनिकों को राडार द्वारा सूचना मिलने पर दो मिनट में अपने वायुयान को आकाश में उड़ाकर, शत्रु के वायुयान का मुँहतोड़ उत्तर देना होगा। शराबी सैनिक का नशा बहुत देर से उतरता है। तब तक शत्रु के वायुयान राष्ट्र की सीमा में घुसकर तबाही मचा सकते हैं। अतः भारत सरकार को सेना में भी पूर्ण नशाबन्दी करनी चाहिए।

सभा ने यह निश्चय किया है कि प्रत्येक जिले से एक लाख नर-नारियों से शराबबन्दी के लिए हस्ताक्षर करवाकर सरकार को भेजे जायें। इन रचनात्मक कार्यों में सफल होने पर हरयाणा को सभा अन्य प्रांतों के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत कर सकेगी। सभा के कोषाध्यक्ष मा० बद्रीप्रसाद जी ने सभाप्रधान जी को इन रचनात्मक योजनाओं को सफल करने के लिए अपील करते हुए कार्यकर्त्ताओं का आह्वान किया कि जिस प्रकार हरयाणा अन्य बातों में आगे रहता है उसी प्रकार राष्ट्र रक्षा तथा शराबबन्दी आंदोलन में भी आगे रहना चाहिए। सभा कोषाध्यक्ष जी की इस अपील पर आर्यसमाज के वयोवृद्ध आर्य नेता ला० अनन्तराम जी ने समारोह के लिए अपनी ओर से एक हजार रुपये देने की घोषणा की। इसी प्रकार आर्यसमाज के नवयुवक मन्त्री श्री यशवन्तसिंह ने अपने सभी सदस्यों की ओर से सभाप्रधान जी को विश्वास दिलाया कि सभा को सभी जिलों से अधिक अन्न, धन आदि दिया जायेगा। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए जि० करनाल में शताब्दी समारोह की तैयारी के लिए उप-समिति का ला० अनन्तराम जी को संरक्षक तथा श्री यशवन्तसिंह आर्य को संयोजक मनोनीत किया है। जिला करनाल के सभी आर्यसमाजों के अधिकारियों को सदस्य बनाया गया है। समिति का गठन आगामी बैठक में करके तैयारी आरम्भ की जायेगी।

करनाल के पश्चात् दोपहर बाद ३ बजे इसी प्रकार की बैठक आर्यसमाज वेद भवन निकट वैदिकधाम (हरयाणा सभा मार्केट) कुरुक्षेत्र में सम्पन्न हुई। इस बैठक में भी सभा अधिकारियों ने शताब्दी समारोह को सफल करने के लिए जिले के आर्यसमाजों से अपील की। सभी ने सभा को तन, मन तथा धन से सहयोग देने का वचन दिया और तैयारी के लिए श्री कृष्णलाल वधवा को उपसमिति का संरक्षक तथा मा० बोरूराम आर्य को संयोजक एवं डा० मुल्तर जी को सहसंयोजक मनोनीत किया गया। जिला कुरुक्षेत्र के सभी आर्यसमाजों तथा आर्य संस्थाओं के अधिकारियों की एक बैठक बुलाकर समिति का पूरा गठन करके तैयारी की जायेगी। श्री कृष्णलाल वधवा ने सभाप्रधान जी को विश्वास दिलाया कि जिला कुरुक्षेत्र समारोह के लिए सब जिलों से अधिक अन्न, चावल, आलू तथा घी संग्रह करके भेजेगा। श्री बोरूराम जी ने सभाप्रधान जी से मांग की कि पंजाब सभा के पूर्व मुख्य कार्यालय गुरुदत्त भवन लाहौर (पाकिस्तान) की यात्रा करने की सुविधा के लिए विदेश मन्त्रालय से सम्पर्क करें।

पंजाब समझौते की दाल में पानी तो नहीं दिया जारहा ?

प्रो० शेरसिंह अध्यक्ष हरयाणा रक्षावाहिनी

भारत सरकार द्वारा केन्द्रीय मण्डल के तीन सदस्यों की एक समिति गठित की गई है, जिसके अध्यक्ष श्री पी. वी. नरसिंह राव होंगे और सदस्य स बूटासिंह और श्री अर्जुनसिंह। इस समिति ने सरकार ने बरनाला और बलवन्तसिंह से बात करली हैं। देखते हैं वे लोग हरयाणा के प्रतिनिधियों से कब बात करते हैं। अकालियों ने सीधी कार्यवाही की धमकी देकर समझौते पर अमल के लिए भारत सरकार को फिर से तत्परता दिखाने के लिए मजबूर किया है। उनकी इच्छा तो यह है कि इस दबाव में वे अपनी अनुचित बातें मनवालें।

इस तथ्य पर पता नहीं क्यों ध्यान नहीं जाता कि अकाली ही समझौते पर अमल करने में सबसे बड़ी रुकावट हैं। जब समझौते में यह स्पष्ट लिखा है कि आयोगों को फैसला बिना फेरबदल के वैसे का वैसा दोनों पक्षों को मानना पड़ेगा, फिर अकालियों की आना-कानी कैसी और फिर उनकी आना-कानी और मनमानी के कारण समझौते की दाल में पानी क्यों ?

समझौते में स्पष्ट लिखा था कि सतलुज यमुना लिंक नहर का निर्माण पंजाब १५ अगस्त, १९८६ तक करेगा। पंजाब की सरकार ने ही उसमें रुकावटें डालीं, बनाने की बात तो दूर रही। पंजाब सरकार की नीयत नहर बनाने की नहीं, फिर भारत सरकार की ओर से उस काम को अपने हाथ में लेने से आनाकानी क्यों।

सभा शताब्दी समारोह की तैयारी के लिए

बहादुरगढ़ तथा नारनौल में बैठकें

आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापना शताब्दी समारोह की तैयारी के लिए २५ जनवरी रविवार को दोपहर बाद ३ बजे बहादुरगढ़ क्षेत्र के आर्यसमाजों के कार्यकर्त्ताओं की बैठक आर्यसमाज मन्दिर बहादुरगढ़ मण्डी में तथा १ फरवरी रविवार को प्रातः ११ बजे आर्यसमाज मन्दिर नारनौल में रखी गई हैं। इसमें सभा के अधिकारी कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करेंगे। अतः बहादुरगढ़ तथा नारनौल क्षेत्र के आर्यसमाजों के कार्यकर्त्ताओं से अनुरोध है कि वे अपने साथियों सहित इन बैठकों में यथा समय पधार कर अपना सुझाव तथा सहयोग प्रदान करें।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर नशाबन्दी सम्मेलनों के समाचार

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के निर्देशानुसार इस बार स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस, नशाबन्दी दिवस के रूप में सारे हरयाणा में मनाया गया। हिसार, कैथल, नरवाना, जींद, माडल टाउन सोनीपत, गुड़गांव, रोहतक आदि के समाचार गत अंक में प्रकाशित हुए हैं। कुछ और स्थानों से समाचार निम्न प्रकार प्रकाशनार्थ प्राप्त हुए हैं-

१–आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत, जि० करनाल की ओर से नशाबन्दी दिवस आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के प्रांगण में २३ दिसम्बर को सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी की अध्यक्षता में मनाया गया। इस अवसर पर छात्रों ने भाषण प्रतियोगिता तथा श्लोकोच्चारण में भाग लिया। सभा प्रधान जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में आर्य कार्यकर्त्ताओं को स्वामी श्रद्धानन्द जी के दिखाये मार्ग पर चलने का अनुरोध किया तथा प्रदेश से शराब जैसी सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध पूरी शक्ति के साथ कार्य करने का परामर्श दिया। आर्यसमाज के प्रधान श्री रामानन्द जी तथा स्कूल के प्रधानाचार्य श्री लाभसिंह ने सभा प्रधान जी का पानीपत पधारने के लिए आभार प्रदर्शित किया।

२—आर्य केन्द्रीय सभा करनाल की ओर से १९ दिसम्बर को आर्यसमाज दयालपुरा में श्री रामप्रसाद बिस्मिल तथा २१ दिसम्बर को आर्यसमाज होली मोहल्ला में स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस मनाते हुए हरयाणा प्रदेश में नशाबन्दी लागू करने की मांग की गई। पं० ओम्प्रकाश जी आर्य तथा श्री नरदेव शास्त्री आदि आर्यनेताओं के व्याख्यान हुए।

३—आर्यसमाज समालखा मण्डी में २३ दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस तथा नशाबन्दी दिवस मनाया गया। स्वामी धर्मानन्द जी मन्त्री शुद्धि सभा तथा अन्य विद्वानों के प्रवचन हुए।

४—आर्यसमाज शांति नगर सोनीपत में २३ दिसम्बर को नशाबन्दी दिवस पर आर्यसमाज मन्दिर के निकट शराब के ठेके को समाप्त करने का प्रस्ताव किया गया।

५—आर्यसमाज सेक्टर ७ फरीदाबाद में २३ दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस धूमधाम से मनाया गया। आर्यसमाज के प्रधान सर्वश्री लखपतराय, अमरनाथ जेतली, हरवंशलाल आनन्द, नरेन्द्र मलिक तथा श्रीमती मलिक, वीरेन्द्र आहूजा आदि के प्रवचन तथा गीत स्वामी जी के जीवन पर हुए।

नामकरण संस्कार पर दान

दिनांक ६ जनवरी को प्रातः ९ बजे बा० उदमीराम जी एडवोकेट नारनौल के पौत्र श्री राजेन्द्रकुमार के पुत्र का नामकरण संस्कार वेद हरिश्चन्द्र आर्य ने वैदिकरीति के अनुसार करवाया। इस शुभावसर पर सभा के भजनोपदेशक पं० मुरारीलाल बेचैन के मनोहर भजन हुए। इस उपलक्ष में सभा को वेदप्रचार के लिए ५१) आर्यसमाज नारनौल को दान दिये गये। —ताराचन्द आर्य

संयोजक जि० महेन्द्रगढ़ वेदप्रचार समिति

शराबखोरी, मांसखोरी, चरित्रहीनता एवं अश्लीलता के विरुद्ध—

२५ जनवरी, ८७ को आर्य वीरदल च० दादरी की ओर से विशाल जलूस

सार्वदेशिक आर्य वीरदल च० दादरी की ओर से उपरोक्त बुराइयों के विरुद्ध विशाल जलूस निकाला जा रहा है। इस अवसर पर उपमण्डल अधिकारी को एक ज्ञापन दिया जायेगा, जिसमें सरकार को यह चेतावनी दी जायेगी कि वह शराब जैसी भयानक बुराई को आर्थिक मुद्दा बनाकर जनता के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ न करे। अगर इन बातों की ओर शीघ्र ध्यान नहीं दिया गया तो आर्य वीरदल सत्याग्रह करेगा।

—ब्र० संजयदेव बौद्धिकाध्यक्ष, हरयाणा आर्य वीरदल

मेवात में गोरक्षा समस्या

इस समय मेवात क्षेत्र के मुस्लिम गांवों में भारी तादाद में गोहत्या हो रही है। शायद इतनी गोहत्या कभी नहीं हुई होगी। कानूनन जुर्म है हरयाणा में। लेकिन इस क्षेत्र में लाखों गौ प्रतिमाह मारी जा रही हैं। यह कलंक हरयाणावासियों को लग रहा है। इस कलंक को दूर करने के कुछ सुझाव हैं—

मेवात क्षेत्र के थाना प्रबन्धकों को सख्त आदेश दिये जावें कि गोहत्यारों की कड़ी निगरानी करें और बुलाकर धमकायें। मुस्लिम गांव के मुखियाओं को बुलाकर कहा जावे कि गांव में गोहत्या होगी तो तुम जुम्मेदार होंगे। गो-हत्यारों की सूचना पुलिस को दी जावे।

जो ट्रक मुर्दाखाने में जाते हैं उन्हें पुलिस बार्डर पर चैक करे। जो खाल कतल की जाती है, उसको गर्दन के नीचे गले में कतल का निशान हो, इस प्रकार की खालों पर प्रतिबन्ध लगवायें। मुर्दा-मवेशियों के गोदामों पर पुलिस छापा मारकर कतल की हुई गोवंश की खालों पर मुकदमा दर्ज करे।

राजस्थान से गोवंश चोरी छिपे हरयाणा लाकर कतल किया जाता है। जिस व्यक्ति के पास सौ गोवंश हैं, चारा छप्पर का कोई प्रबन्ध नहीं है। केवल खाल के लिए भूखे-प्यासे मारे जाते हैं। ऐसी गौवों की तलाश की जावे और उन्हें पुलिस द्वारा गोशाला में भेजा जावे। आशा है आप इस सन्दर्भ में मुख्यमन्त्री हरयाणा को लिखकर, गोरक्षा में सहयोग देकर कृतार्थ करें।

पं. सुन्दरलाल आर्य

श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ का अर्धशताब्दी समारोह

गुरुकुल पदपुरी का अर्धशताब्दी समारोह १३-१४-१५ फरवरी, १९८७ शुक्रवार, शनिवार, रविवार को बड़े हर्ष और उल्लास के साथ होने जा रहा है। जिसमें सम्पूर्ण भारत के सुप्रसिद्ध विद्वान्, भजनोपदेशक, संन्यासी एवं नेतागण पधार रहे हैं। १ फरवरी से १५ फरवरी तक ऋग्वेद पारायण महायज्ञ चलेगा। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा संस्कृत भाषण, व्यायाम, योगासन, लाठी, मुग्दर, भाला, मल्लखम्भ, सरिया मोड़ना, कांच पीसना, चलती कार रोकना आदि का प्रदर्शन किया जायेगा। अतः आप सभी वेदानुयायी धर्मप्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि इस उत्सव में अपने इष्ट मित्रों के साथ पधार कर हमें अनुगृहीत करें।

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती मुख्याधिष्ठाता

कासण्डी में शोक सभा

२८-१२-८६ को आर्यसमाज मन्दिर कासण्डी, जिला सोनीपत में आर्यसमाज के सदस्यों की एक सभा हुई, जिसमें स्वर्गीय पूज्य आचार्य विष्णुमित्र जी विद्यामार्तण्ड के देहावसान पर हार्दिक शोक प्रकट किया गया। उनको श्रद्धांजलि अर्पित की गई। ईश्वर से प्रार्थना की गई कि उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे और उनके परिवार को उनके वियोग से हुए दुःख को सहन करने की क्षमता प्रदान करे।

—रामदत्त शास्त्री

मन्त्री आर्यसमाज कासण्डी, तह० गोहाना, जि० सोनीपत

शुद्धि समाचार

सिमडेगा अनुमण्डल अन्तर्गत श्री रामरेखा धाम में २५-१२-८६ को श्री देशपाल दीक्षित के पौरोहित्य एवं तत्वावधान में श्री पौनिना सोरेंग पिता जोहन सोरेंग, ग्राम ताराबोगा, थाना बोलबा की शुद्धि की गई। नया नाम पार्वती कुमारी रखा गया। तत्पश्चात् श्री कुमुर्सिंह पिता श्री अर्जुनसिंह ग्राम सिमडेगा के साथ विवाह करा दिया गया। उक्त वर-वधू को सभी ने आशीर्वाद दिया।

—देशपाल दीक्षित

सावधान हो जाओ प्रहरी

टेक—आज देश को होगया खतरा, अपने ही कुछ बन्दों से।
सावधान हो जाओ प्रहरी, इन घर के जयचन्दों से।।

देशद्रोही क्या जानें, किस विधि आजादी आई थी।
कितनों ने अपने जीवन की, इस पर बली चढ़ाई थी।
बलिदानों के बलबूते पर, स्वतन्त्रतायें पाई थीं।
देशभक्तों ने इसी हेतु, जेलों में भरी तबाई थी।।
सचेत रहना पहरेदारो, खालिस्तानी इन दरिन्द्रों से। आज……

गुरुद्वारों के किले बना दिये, सन्तों के कमाल देख लो।
पराये धन से होगये पागल, सिहों के ये लाल देख लो।
अनहोनी घट रहो घटनायें, जलते पंजाब का हाल देख लो।
देश को खण्डित करनेवालो, धूर्तों की चाल देख लो।।
जिनसे सहारे की आशा थी, धक्के लग रहे उन्हीं कधों से……

राष्ट्रद्रोही लोग देश में, सभी जगह मिल जाते हैं।
सम्प्रदाय, आपसी झगड़े, यही दुष्ट करवाते हैं।
तस्कर, डाकू, चोर, लुटेरे, लूट-लूटकर खाते हैं।
व्यापारी, नौकर, सरकारी, भ्रष्टाचार फैलाते हैं।।
आज नहीं फुरसत लोगों को, दो नम्बर के धन्धों से……

भले आदमी दुःखी आज और लफ्फाड़ों के ठाठ देखे।
एम०ए०, बी०ए० फिरें भटकते, मिडल फेल सम्राट् देखे।
लेने के कुछ और देने के कुछ, न्यारे-न्यारे बाट देखे।
सच्चाई ना रही धूम, गंगा जमना के घाट देखे।।
गुण्डागर्दी बढ़ी देश में, ढीलेढाले प्रतिबन्धों से……

आतंक और अलगाववाद की, काली घटा आज छाई।
शत्रु देशों की इसके अन्दर भारी है साजिश पाई।
जिनको है कुछ प्यार देश से, मिल बैठो सारे भाई।
हिन्दू, मुसलमा, सिख, पारसी, जैन बुद्ध और ईसाई।।
एक दिन पड़े निपटना यात्री, इन राक्षस मतिमन्दों से……

विनीत : मांगेराम यात्री
शिक्षक वैदिक कन्या पाठशाला हुसनगढ़, उकलाना मण्डी (हिसार)

नशाबन्दी अभियान की सराहना

नशाबन्दी विशेषांक पढ़कर मन प्रसन्न होगया। इसी तरह से नशाबन्दी का कार्य चलता रहे तो एक दिन अवश्यमेव भारतवर्ष का सुधार हो सकता है। प्रभु आप लोगों को शक्ति दे, जिससे यह नशाबन्दी विशेषांक जन-जन के हाथों में पहुंच कर लोगों का कल्याण हो और "दूध दही का खाना" की उक्ति प्रसिद्ध हो।

—पं० इन्द्रमणि शास्त्री
सिद्धांत भूषण आर्यसमाज शाहबाद मारकण्डा,
जि० कुरुक्षेत्र (हर०)

सम्पादक के नाम पत्र

श्री राजसिंह आर्य (राज आर्य फिल्मज) द्वारा निर्मित की गई फिल्म 'अनोखा इन्सान' के विरोध में

श्रीमान् जी,

हाल ही में दिनांक १२-१२-१९८६ को उद्घाटित हुई फिल्म 'अनोखा इन्सान' जो कि दिल्ली व गाजियाबाद के सिनेमा घरों में दिखाई जारही है, के अन्दर आर्यसमाज (स्वामी दयानन्द सरस्वती जी) के सिद्धांतों के साथ खिलवाड़ की गई है। फिल्म में अर्ध नग्न नायिका, नायिका तथा नायक का आलिंगन, चुम्बन डिस्को डांस (पश्चिमी सभ्यता) तथा प्यार मोहब्बत के व्यर्थ गानों से भरी पड़ी है। जो कि आर्यसमाज की शिक्षायें कम और सिद्धांतों के विरुद्ध ज्यादा जाती है। सब कुछ मिलाकर आजकल सिनेमा घरों में दिखाई जारही फिल्मों से कहीं ज्यादा अश्लीलता देखी जा सकती है। फिल्म का प्रारम्भ स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के चित्र के साथ लिखे गायत्री मन्त्र से आकर बनी प्रकाशपुञ्ज द्वारा 'राज आर्य फिल्म' से होता हुआ अश्लील नृत्य, शराब पीते लोग, बलात्कार इत्यादि के दृश्य भी फिल्म में मौजूद है। यदि फिल्म भी देखने का मौका न मिले तो नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर प्लेट फार्म न. २ पर लगे फिल्म के अश्लील पोस्टर की विज्ञापन नं. २ व ५ पो. यू. १९२६ को आगामी दिनांक २०-४-८७ तक देखा जा सकता है, जिसके अन्दर राजसिंह आर्य का "अनोखा इन्सान" 'ओ३म्' राज आर्य फिल्म की भेंट के नीचे अर्धनग्न नायिका को मुस्कराते हुए नायक के साथ देखा जा सकता है।

अतः मानव उत्थान संस्थान आर्यसमाज मन्दिर, औरंगाबाद मित्रौल, जि. फरीदाबाद आपसे अनुरोध करता है कि इस फिल्म को अविलम्ब बन्द कराया जाये अथवा इसमें से स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के चित्र, गायत्री मन्त्र, 'ओ३म्' आर्य जैसे पावन शब्दो, उच्चारणों एवं पोस्टरो पर लिखे हुए को हटाया जाये। जिससे कि आर्यसमाज का इतिहास बेदाग रह सके।

श्यामसिंह आर्य
अध्यक्ष मानव उत्थान संस्थान, औरंगाबाद

दिनांक १३-१२-१९८६

वैदिक प्रचार यात्रा

ब्र० आर्य नरेश जी वैदिक प्रवक्ता ने चण्डीगढ, करनाल, माछरा शक्ति साधना आश्रम, रोहतक अम्बारा, आर्डिनेन्स फैक्ट्री, सिखों महा-सम्मेलन जरी पटका, रामदास पेठ (नागपुर) जमनापार, शक्ति नगर, जवाहर नगर, जंगपुरा विस्तार, उत्तम नगर, राजेन्द्र नगर, राजौरी गार्डन, पश्चिम विहार, अशोक विहार, त्रिनगर, जनकपुरी (दिल्ली), आर्यसमाज राजगढ़, सोलन तथा उद्गीथ साधना स्थली (हिमाचल) आदि स्थानों पर वैदिक डंका बजाया और दो परिवारों ने हर रोज यज्ञ करने का सकल्प लिया। नौजवानों को इनसे ब्रह्मचर्य तथा संयमी रहने के गूढ रहस्यों की प्रेरणा मिली।

अनिलसिंह आर्य, उद्गीथ भवन, चण्डीगढ़ (यू.टी.)

एकमात्र मार्ग—अंग्रेजी माध्यम के विकल्प की समाप्ति

—डा० मोती बाबू

(राजभाषा के रूप में, विशेषत: विधि के क्षेत्र में हिन्दी के प्रचार और प्रसार के लिए डा० मोती बाबू का नाम पर्याप्त अधिक प्रसिद्ध है। वे भारत सरकार के विधि मन्त्रालय के अन्तर्गत राजभाषा विधायी आयोग के सचिव रह चुके हैं। अब सेवा-निवृत्त होने के बाद भी विधि (कानून) सम्बन्धी पत्रिका और पुस्तकों का प्रकाशन अवैतनिक रूप में कर रहे हैं। आप भारत सरकार के विधि मन्त्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति के सम्मानित सदस्य भी हैं। आशा है पाठकगण इनके विचारों को कार्यरूप देने के लिए प्रयत्न करेंगे। —सम्पादक)

स्वतन्त्रता प्राप्ति के तुरन्त बाद राष्ट्रभाषा हिन्दी को राजकाज में उसका उचित स्थान देने का प्रयास प्रारम्भ होगया। संविधान ने उसे संघ की राजभाषा घोषित किया। अनेक राज्यों ने अपने-अपने अधिनियम पारित करके उसे राजभाषा के रूप में अंगीकार किया। विभिन्न उच्च न्यायालयों में हिन्दी के प्रयोग की अनुमति दी गई। हिन्दी के पक्ष में अनेक आदेश पारित किये गये और स्थान-स्थान पर तथा समय-[illegible] है और आज भी स्थिति यह है कि हिन्दी भाषी राज्यों तक में राजकाज की प्रमुख भाषा अंग्रेजी है। निस्संदेह हिन्दी ने यत्र तत्र प्रगति की है, किन्तु अंग्रेजी की प्रगति कहीं अधिक है। उसका एक कारण तो यह है कि अंग्रेजी शासन से स्वतन्त्र होकर भी हम दासता की मनोवृत्ति से मुक्त नहीं हो पाये हैं और अंग्रेजी की उच्चता अब भी हमारे मन में घर किये हुए है, किन्तु उससे भी बड़ा कारण है हिन्दी-विषय नीति की एक मूलभूत त्रुटि।

आदर्शवादिता का अपना महत्त्व है, किन्तु संसार का कार्य प्राय: उपयोगितावाद के अनुसार होता है। अंग्रेजी का भारत में प्रचार-प्रसार उसकी उपयोगिता के कारण ही हुआ। सामान्यतौर पर अंग्रेजों ने अंग्रेजी का प्रयोग अनिवार्य नहीं किया, किन्तु उसकी उपयोगिता को बढ़ाया जिससे भारतीय स्वेच्छा से उधर आकर्षित होगये। शासकों की भाषा होने के नाते विशिष्टता उससे जुड़ी हुई थी। परिणामस्वरूप अंग्रेजी शासन द्वारा दिया गया भारतीय भाषाओं के प्रयोग का विकल्प व्यर्थ होगया और अंग्रेजी फैलती गई। इसके विपरीत जब भारतीय भाषाओं को राजकाज में उचित स्थान देने का निर्णय किया गया तो इस बात का प्रयत्न नहीं किया गया कि भारतीय भाषाओं की व्यावहारिक उपयोगिता अंग्रेजी से अधिक की जाये। आज भी स्थिति यह है कि हिन्दी भाषी राज्यों तक में हिन्दी की अपेक्षा अंग्रेजी अधिक उपयोगी है। अंग्रेजी के माध्यम से शिक्षा की व्यापक व्यवस्था सारे भारत में है। यदि माध्यम के रूप में अंग्रेजी को अपनाया जाता है तो सारे भारत में केन्द्र या राज्य की किसी भी प्रतियोगितात्मक परीक्षा में व्यक्ति बैठ सकता है, बहुत बड़ी संख्या ऐसी परीक्षाओं की है जिनमें हिन्दी या किसी भारतीय भाषा के माध्यम के रूप में प्रयोग का विकल्प नहीं है। अंग्रेजी में आवश्यक साहित्य कहीं अधिक उपलब्ध होता है। हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की स्थिति ठीक इसके विपरीत है।

किसी भी हिन्दी-भाषी राज्य का उदाहरण ले लीजिए, वहां की सभी प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं में अंग्रेजी में प्रयोग का विकल्प है। कुछ परीक्षाओं में हिन्दी का विकल्प या तो है नहीं, या है तो नाममात्र का। कहने को तो कानून हिन्दी में बनते हैं, किन्तु वस्तुत: प्रारूपण (ड्राफ्टिंग) अंग्रेजी में होता है, जिसके कारण अंग्रेजी में पारगत विधिज्ञ हिन्दी-भाषी राज्यों तक के विधि विभागों के लिए आवश्यक हैं और उच्च स्थानों पर वहीं रहते हैं, जबकि हिन्दी का काम करनेवालों का स्तर अपेक्षाकृत नीचा रहता है। उच्च न्यायालयों तक में हिन्दी के प्रयोग की अनुमति है किन्तु यह प्रयोग होता केवल अपवाद के रूप में है। सारे कानून अंग्रेजी में उपलब्ध हैं। किसी हिन्दी-भाषी राज्य के सारे अधिनियम कहीं भी प्रयत्न करने पर भी हिन्दी में उपलब्ध नहीं हैं। किसी भी हिन्दी भाषी राज्य में कोई सम्पूर्ण हिन्दी विधि पत्रिका नहीं निकलती है, यद्यपि अंग्रेजी निर्णय पत्रिका सभी निकालते हैं। निजी क्षेत्र में हिन्दी में मानक प्रकाशन नगण्य हैं, क्योंकि उनका उपयोग न होने के कारण उनकी मांग नहीं है। विभिन्न सरकारें हिन्दी के प्रकाशनों की जो योजनायें बनाती हैं वे या तो कार्यान्वित नहीं होतीं या यदि कार्यान्वित होती हैं तो इतनी मंथर गति से कि उनकी उपयोगिता और प्रभावकारिता दोनों ही समाप्त हो जाती हैं।

यदि हम वास्तव में हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को राजकाज में उनका उचित स्थान देना चाहते हैं तो यह कार्य तब तक नहीं हो सकता जब तक अंग्रेजी का विकल्प समाप्त नहीं किया जाता, भले ही वह क्रमश: समाप्त किया जाये। उदाहरण के लिए उत्तरप्रदेश न्यायिक सेवा के लिए ली जानेवाली प्रतियोगितात्मक परीक्षा को ही लीजिये। उसमें अंग्रेजी, हिन्दी दोनों माध्यमों का विकल्प प्राप्त है। अंग्रेजी वाले को पढ़ने की सुविधायें अधिक हैं और हिन्दी की पुस्तकों का आश्रय लिए बिना भी प्रतियोगी सफल हो सकता है। किन्तु केवल हिन्दी की पुस्तकों का आश्रय लेकर कोई इस प्रतियोगिता में सफल होने की [illegible] है।

जब प्रतियोगिता में सफल होकर नियुक्त होनेवाले मुंसिफ या मजिस्ट्रेट को हिन्दी में कार्य करना अनिवार्य है तो अंग्रेजी माध्यम से प्रतियोगिता में बैठने की छूट किस लिए? यदि हिन्दी भाषी राज्यों की विभिन्न सेवाओं के लिये ली जानेवाली प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं में अंग्रेजी माध्यम का विकल्प समाप्त कर दिया जाये तो यह स्वाभाविक है कि इन सेवाओं में आने के इच्छुक व्यक्ति हिन्दी का अपेक्षित ज्ञान प्राप्त करेंगे तथा उसके अभ्यस्त होंगे और नियुक्ति हो जाने के बाद हिन्दी में कार्य करना उनके लिए अधिक सरल और स्वाभाविक होगा। अंग्रेजी माध्यम से आनेवाले व्यक्तियों की स्थिति एवं मनोवृत्ति इसके ठीक विपरीत होती है। जब भी वे हिन्दी का प्रयोग करते हैं तो विवश होकर ही करते हैं।

वैसे भी यह पुराना सिद्धांत है कि बड़े पेड़ की छाया में छोटा पेड़ नहीं पनप सकता। इसी प्रकार अंग्रेजी का विकल्प रहते हुए भारतीय भाषायें यथेष्ट प्रगति नहीं कर सकतीं। अंग्रेजी का विकल्प समाप्त करना होगा, भले ही धीरे-धीरे किया जाये। तभी भारतीय भाषाओं की उपयोगिता बढ़ेगी और लोग उनकी ओर स्वत: आकृष्ट होंगे।

अंग्रेजी का विकल्प समाप्त करने के विरुद्ध पहला तर्क यह हो सकता है कि फिर अपेक्षित स्तर के व्यक्ति नहीं मिलेंगे। यह तर्क भ्रांतिपूर्ण है। यदि अंग्रेजी का विकल्प नहीं रह जायेगा तो मेधावी व्यक्ति स्वत: भारतीय भाषाओं की ओर आकर्षित होंगे। प्राय: ये वे व्यक्ति होंगे जिन्होंने विदेशी भाषा के ज्ञान अर्जन में अनावश्यक समय व्यय करने की अपेक्षा वास्तविक ज्ञान अर्जित करने में अधिक समय दिया होगा। अत: वे और भी अधिक योग्य साबित होंगे। फिर क्या यह मानकर चलना उचित है कि अंग्रेजी के माध्यम के बिना उपयुक्त व्यक्ति नहीं मिलेंगे? तब हिन्दी प्रचार का ढोंग किस लिए?

दूसरा तर्क यह दिया जा सकता है कि विभिन्न राज्यों की अपनी-अपनी भाषाओं के माध्यम से प्रतियोगितायें करने पर प्रतियोगितायें सभी भारतीयों के लिए खुली नहीं रहेंगी। किसी भी प्रतियोगिता में उपयुक्त व्यक्ति ही चुने जाने का दावा कर सकता है। यदि नियुक्ति के बाद भारतीय भाषा में कार्य करने की आवश्यकता है तो कोई कारण नहीं है कि वह नियुक्ति के पूर्व उस भाषा का ज्ञान अर्जित करके उसके माध्यम से कार्य करने की दक्षता का परिचय न दे। जब एक विदेशी भाषा में पारंगतता प्राप्त की जा सकती है तब अपने देश की भाषा में क्यों नहीं? यही नहीं, विभिन्न भाषाओं के वास्तविक प्रयोग में आने पर एक ओर तो इन भाषाओं का ज्ञान और फैलेगा तथा दूसरी ओर ये भाषायें परस्पर आदान-प्रदान करके एक दूसरे के अधिक निकट आयेंगी, जिससे भारत की भावात्मक एकता को बल मिलेगा।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

शोक प्रस्ताव

कन्या गुरुकुल पंचगांव सब कुलवासियों, ब्रह्मचारियों, अध्यापिकाओं तथा कर्मचारियों की सभा यह जानकर बहुत शोकाकुल हुई कि गुरुकुल के प्रधान सेठ श्री बनवारीलाल आर्य के बड़े भाई सेठ श्री गोविन्दराम जी आर्य प्रधान आर्यसमाज देवराला निवासी की धर्मपत्नी श्रीमती मेवा देवी जी का ८१ वर्ष की आयु में ११ दिसम्बर, ८६ को स्वर्गवास होगया। आप अत्यन्त मिलनसार, सहृदय, चतुरगृहिणी आदर्श आर्य महिला थी। अतिथियों की सेवा में सदा तत्पर रहती थीं।

यह गुरुकुल की सभा उनके वियोग में दुःख प्रकट करती है। साथ में परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करती है उन्हें सद्गति प्रदान करे तथा परिवारजनों को इनके वियोग के दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

१८ दिसम्बर को उनके गृह पर शांतिकरण-यज्ञ किया गया तथा उन्हें श्रद्धांजलि प्रदान की गई। —भरतसिंह शास्त्री

२—आर्य वीरदल हरयाणा के अधिकारियों की बैठक आर्यसमाज बड़ा बाजार, पानीपत में ४-१-८७ रविवार को सम्पन्न हुई। जिसमें श्री अजीतकुमार जी (उपसंचालक) की माता श्रीमती गार्गीदेवी की मृत्यु [illegible] पारित किया गया। परमात्मा उन्हें सद्गति प्रदान करे तथा परिवार को वियोग सहन करने की शक्ति देवे।

वेदप्रकाश आर्य मन्त्री आर्य वीरदल, हरयाणा

(पृष्ठ ७ का शेष)

तीसरी आपत्ति भारतीय भाषाओं में अपेक्षित साहित्य की कमी की हो सकती है। आवश्यकता सृजन की जननी है। अभी साहित्य की कमी इस कारण है कि उसकी मांग कम है। यदि मांग बढ़ेगी तो सृजन स्वतः हो जायेगा। स्वयं अंग्रेजी भाषा का इतिहास इस स्थिति को स्पष्ट करता है।

अतः आवश्यकता इस बात की है कि अंग्रेजी का मोह छोड़कर हम उसके विकल्प को समाप्त करके हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को ही माध्यम के रूप में रखें। हिन्दी भाषी राज्यों में भर्ती केवल हिन्दी माध्यम से हो, केन्द्र में हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के माध्यम से और अन्य राज्यों में उनकी अपनी-अपनी राजभाषा तथा हिन्दी के माध्यम से हो। अंग्रेजी का हमारा बनाया हुआ महत्त्व घट जाने पर देश में भाषाई स्थिति स्वाभाविक रूप में पनपेगी।

परिवर्तन में कठिनाई स्वाभाविक है, किन्तु उस कठिनाई से डरकर कोई परिवर्तन नहीं किया जा सकता।

—सी-६० ई पार्क, लखनऊ

शराब मानव-समाज का शत्रु है
इससे अवश्य बचें।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 राज० न० P/RTK 49 फोन ४८१२ ६,०८,२३,०८७



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभा मन्त्री सह-सम्पादक—डा० यज्ञवीर

वर्ष १४, अङ्क १० २८ जनवरी, १९८७ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश मे ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

मानवदेह में जीव का परमलक्ष्य

शान्तिप्रकाश उपदेशक, १८३ ए ११ सुभाष नगर, गुडगांव (हरयाणा.

कितनी विचित्र बात है कि शरीर में जीव का स्थान कौन-सा है या मैं जीवात्मा अपने शरीर में कहां निवास कर रहा हूं ? इसकी स्पष्ट अनुभूति प्राणी नहीं कर पारहा। बडे-बडे बुद्धिमान् विद्वान् चक्कर खारहे हैं। अतः परमात्मप्रदत्त वेदज्ञान की शरण लेनी पडती है।

परमात्मा सर्वत्र, सर्वव्यापी, सर्वान्तर्यामी है। यह आस्तिक ससार मानता और वेद शास्त्र भी इसी का प्रतिपादन करते हैं।

शास्त्र में ईश्वर को "परात्परतः परः" कहा है। अर्थात् प्रकृति परमाणु तथा जीव से भी अधिक सूक्ष्म बताया है।

ईश्वर सर्वव्यापक है। जीव एकदेशी है। ईश्वर एक और जीव अनेक, किन्तु असख्य हैं। जीवों की गिनती ईश्वरीय ज्ञान का विषय तो है किन्तु जीवमात्र इससे अनभिज्ञ है।

मुक्त जीव सर्वत्र विचर सकते हैं किन्तु वे भी जीवमात्र के कर्मफल की व्यवस्था नही कर सकते। यह विषय तो केवल ईश्वर द्वारा उपगम्य है। अतः ईश्वर ही सबका अधिष्ठाता सर्वान्तर्यामी है। वेद में ही तो लिखा है कि—

संख्याता अस्य निमिषो जनानाम्।

परमात्मा ने तो जीवमात्र के शरीरों तथा उनके निमेषोन्मेषो को भी गिन रखा है। अतः भगवान् की महिमा अपरम्पार है। समस्त कोटानुकोट सृष्टियों के जीव मिलकर भी भगवान् की महिमा का पारावार नहीं पा सकते।

हां, मोक्षप्राप्ति के लिए जितने ज्ञान-कर्मोपासना की आवश्यकता है, वह वेदों के द्वारा परमात्मप्रदत्त है, जिसे जन्मजन्मांतरों में अवगाहन करके जीव मुक्ति का अधिकारी बन सकता है।

मोक्षप्राप्ति के लिए ईश्वर दर्शन की आवश्यकता है। यह आत्मा के द्वारा ज्ञानचक्षु से सम्भव है। शास्त्र में लिखा है कि—

वेदश्चक्षुः सनातनम्। मनुः

वेद ईश्वरीय ज्ञान होने से नित्य अर्थात् सनातन है, वेद ही सच्चा ज्ञानचक्षु है।

सर्वज्ञानमयो हि सः। मनु०

वेद ही सर्वज्ञानमय है। अतः मुक्तिप्राप्ति के लिये वैदिक ज्ञान प्राप्ति की अनिवार्यता है। क्योंकि—ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः।

सत्यज्ञान के बिना मुक्तिप्राप्ति सम्भव नहीं। सुषुप्ति अवस्था में शरीर के अन्दर आत्मा को पूर्ण विश्राम मिलता है और शरीर की थकावट दूर हो जाती है।

समाधि में आत्मा की एकाग्रता एकीभूय होकर ईश्वर दर्शन में सहायक सिद्ध होती है। मोक्षावस्थाप्राप्ति के अनन्तर सर्वथा भवभय का उच्छेद हो जाता है, यह आत्मा की पूर्णकामना का प्रापक है।

नास्ति पर इति मानी पुनः पुनर्वशमापद्यते मे।

यही लोक है, पर नहीं। अतः खाओ पियो मौज उड़ाओ—ऐसा माननेवाले लोग पौनःपुन्येन मृत्यु का ग्रास बनकर घोर अन्धकूप में गिरते हैं।

अतः उत्थान के लिए धर्म, कर्म, पुरुषार्थ पराक्रम की आवश्यकता है। योगयुक्तात्मा ही ध्येयप्राप्ति में सक्षम हो सकता है।

योगः कर्मसु कौशलम्। गीता

योगाभ्यास ही कर्मकुशल बनाकर जीव को उन्नति प्राप्त करा सकता है, यह सर्वशास्त्रों का निचोड़ है।

धारणाद्धर्म इत्याहुः धर्मो धारयते प्रजाः।

धारण करने से ही धर्म की सिद्धि सम्भव है। अतः जीवनपर्यन्त धर्म-सिद्धि के लिये प्रयत्नशील रहना ही सर्वश्रेष्ठता है। मनुजी ने धर्म के दस लक्षण वर्णित किये हैं—

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेय शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥

१ धैर्यधारण, २. क्षमाशीलता, ३. मन को वश में रखना, ४. चोरी त्याग, ५ पवित्रता, ६ इन्द्रिय दमन, ७. बुद्धिपूर्वक कर्म प्रवृत्ति, ८, विद्योपार्जन, ९ सत्य, १०. अहिंसा। यह दस धर्मलक्षण मनु जी ने बताये हैं।

इन सब उपायों से धार्मिक जीवन धारण करते हुए उत्तरोत्तर धर्म की सिद्धि करता हुआ मनुष्य स्वजीवन सफल करे तो आगामी जीवनों में उत्तरोत्तर सफलता प्राप्ति के साथ ही ईश्वरानुग्रह से अत्यन्त दु:ख निवृत्ति होकर भवभय भजन सम्भव है अन्यथा नही।

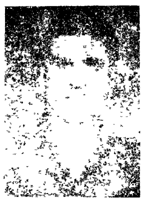
नशाबन्दी विशेषांक की सफलता

'सर्वहितकारी' का नशाबन्दी विशेषांक प्राप्त हुआ। वास्तव मे विशेषांक सुन्दर एवं आकर्षक था। सभी लेख शिक्षाप्रद एव पठनीय थे। इसमें सम्पादकीय लेख का तो अपना अलग ही महत्त्व रहा। नशाबन्दी के सम्बन्ध में काफी कुछ प्रकाश डाला गया है। इस पत्र के विशेषांकों की बड़ी धूम रहती है। यह विशेषांक भी अपनी उसी शान के अनुरूप निकला है। इस पत्र के सभी विशेषांक काफी उपयोगी सिद्ध हुए हैं तथा पूरे आर्यजगत् ने इनकी भूरि-भूरि प्रशसा की है। इस विशेषांक की भी सफलता के लिए बधाई।

—रामकुमार आर्य
पुस्तकाध्यक्ष आर्यसमाज दुल्लागढ, सोनीपत

आएंगे ख़त अरब से, उनमें लिखा यह होगा ?

प्रस्तुतकर्त्ता—सुखदेव शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा



रामकुमार भारद्वाज

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने महाबलिदान से पहले १८८३ में आर्यसमाज के २३ व्यक्तियों के नाम अपना स्वीकार पत्र (वसीयत नामा) लिखा था, जिसमें उन्होंने आदेश दिया था कि मेरी सम्पत्ति का कुछ भाग देश देशांतर में व द्वीप-द्वीपान्तर में वेदप्रचारार्थ लगाया जावे, उसके लिए विद्वानों की नियुक्ति की जाये। इस आदेश को मानकर अनेकों वैदिक विद्वान् प्रचारक देशांतर में प्रचारार्थ अनेकों देशों में गये, उन्होंने वहां जाकर वेदप्रचार की धूम मचादी। महर्षि जी ने स्वयं ही १८७७ में श्याम जी कृष्ण वर्मा को प्रचारार्थ विदेशों में भेजा। श्याम जी ने विदेश जाकर भारतीय संस्कृति के प्रचारार्थ बहुत ही सराहनीय कार्य किये। भारत की स्वतन्त्रता के लिए भी उन्होंने स्विटजर लेण्ड, इग्लैण्ड आदि देशों में जाकर बहुत ही कार्य किया। अनेकों स्वतन्त्रता सेनानियों की अपनी ओर से रुपयों से भी सहायता की। उनके निवास के लिए "इण्डिया हाउस" की स्थापना की। समय पाकर "इण्डिया हाउस" क्रांतिकारियों की शरणस्थली, रणस्थली बन गया था। वीर सावरकर, मदनलाल धींगड़ा आदि वीरों ने कर्जन वायली की हत्या करके भारतीयों का बदला लिया था। ये सब श्याम जी की ही देन थे।

इसके अतिरिक्त अन्य अनेकों देशों में भी आर्यवीर पहुंचे। दक्षिण अफ्रीका, मुम्बासा आदि में श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी अनेक बार गये। १९०५ मे भाई परमानन्द भी अफ्रीका में प्रचारार्थ गये थे। श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी की आज्ञा से ही पं० रुचिराम जी ने सात वर्ष तक अरब में वैदिकधर्म का प्रचार किया। किन्तु उस समय अरब देश इतना कट्टर-पंथी देश न था, जितना की अब। उस समय अरब में वेदप्रचार की पूरी छूट थी। पण्डित रुचिराम जी द्वारा लिखित पुस्तक 'अरब में सात साल' से इस बात का पता लगता है। अरब उस समय इतना समृद्ध भी न था। ये बातें १९४७ से पहले की हैं। इतना पैट्रोल नहीं बिकता था। तेल के कुये उस समय निर्मित नहीं हुए थे। अशिक्षा, मूर्खता बहुत ही अधिक थी। किन्तु इस समय तो अरब देश बहुत ही आगे बढ़ गये है। पैट्रोडालर के भण्डार भर गये हैं। अब तो अरब के शेखों की "शेखचिल्ली" की कहानी न रहकर अरबपति बन गये हैं। वैसे तो अरब के ४० मुस्लिम देशों की आर्थिक अवस्था उन्नति के शिखर पर पहुंच गई है। कुछ शिक्षा का भी प्रचार होगया है। मजहब के प्रति भी अब पहले से अधिक जागरूक होगये हैं। इस्लाम के लिए बहुत अधिक कठिन कानून बनाये गये हैं। कुरान के अतिरिक्त वहां अब कोई भी धार्मिक ग्रन्थ नही पढ़ा जा सकता। कोई विदेशी भी वहां कुरान के अलावा "गीता" अथवा "बाईबल" भी नहीं पढ़ सकता। यदि कोई ऐसा करता हुआ पकड़ा जाये तो उसे मौत की सजा भी दी जा सकती है। देशनिकाला भी हो सकता है।

ऐसा ही एक समाचार आपने पिछले दिनों अनेक दैनिक समाचार-पत्रों में पढ़ा भी होगा।

श्री रामकुमार जी भारद्वाज एक ऐसे ही आर्य नवयुवक हैं जो बहुत ही लग्नशील हैं। वे फरवरी, १९८६ में "डल्ला कम्पनी में भरती होकर अरब के "रियाद" नगर में पहुंचे। इस कम्पनी में पाच हजार मजदूर काम करते थे। श्री भारद्वाज यहां 'इन्जीनियर' के पद पर नियुक्त होकर गये थे। इस कम्पनी की सीमा फौजी छावनी में पड़ती थी। यहां अरब की सेना के कमांडर का मुख्यालय भी था।

रामकुमार भारद्वाज इससे पहले दिल्ली में ही नौकरी करते थे। आर्यसमाज के सत्संगों में जाते थे। जब उनका अवसर अरब जाने का आया तो उन्होंने अरब में भी वैदिकधर्म का प्रचार करने के लिए २२ सत्यार्थप्रकाश, जिनमें कुछेक उर्दू भाषा के भी थे, साथ लिए। सौ संध्या की पुस्तकें साथ लीं। सौ झण्डे ओम् के भी साथ लिये, कुछ पुस्तकें गीता की भी ली। उनकी बड़ी इच्छा थी कि अरब में जाकर पांच हजार लोगों को सत्यार्थप्रकाश सुनाकर उन्हें वैदिक संध्या सिखलाकर ओ३म् के झण्डे की कसम उठाकर, गीता के ऊपर हाथ रखवाकर वहां प्रचार करूंगा। वहां आर्यसमाज मन्दिर की भी स्थापना करूंगा। अरब पहुंचने पर उन्होंने अपनी ड्यूटी से अवकाश पाने पर यह कार्य आरम्भ कर दिया। कुछ दिनों में इनके प्रभाव में अनेक भारतीय मजदूर आगये। दोनों समय अपने निवास पर ही सध्या आदि कराने लगे। सत्यार्थप्रकाश का पाठ भी होने लगा। अपने कमरे मे ओ३म् के झण्डे भी लगा दिये। इस प्रकार अपने साथियों में इनका प्रभाव बढ़ने लगा। गायत्री का पाठ तथा अन्य वैदिक सध्या के मन्त्रों का उच्चारण पुस्तकों में पढकर करने लगे। इस प्रकार ड्यूटी पर से आने के बाद यह कार्यक्रम दोनों समय होने लगा।

एक दिन रविवार छुट्टी का दिन था। सभी साथी बैठकर आरती भजन कर रहे थे। सत्यार्थप्रकाश का पाठ हो चुका था। उन्हीं की कम्पनी का एक साथी फैज मुहम्मद हैदराबादी भी वहां आया और उस ने सत्यार्थप्रकाश उर्दू का मांगा, भारद्वाज ने उसे दे दिया। फैज मुहम्मद हैदराबाद, आंध्रप्रदेश, भारत का रहने वाला था। वह आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द तथा सत्यार्थप्रकाश के विषय में पूरी जानकारी रखता था, क्योंकि हैदराबाद में आर्यसमाज का प्रचार बहुत ही अधिक है। वहां आर्यसमाज ने १९३९ में सत्याग्रह भी किया था। फैज मुहम्मद ने वह सत्यार्थप्रकाश ले जाकर सेना के कम्पनी कमांडर को दिखलाया और उसे १४वें समुल्लास के बारे में कुरान पर लिखी महर्षि दयानन्द की समीक्षायें दिखलाई। साथ ही कुरान की आयतों के बारे में लिखी टिप्पणियां देखकर कमांडर बहुत ही नाराज हुआ। फैज मुहम्मद ने भी उसे भड़काने में कोई कमी न छोड़ी। आर्यसमाज को काफिर बताया गया। अरब में आये रामकुमार भारद्वाज को भी काफिरों का नेता बताया। फैज मुहम्मद ने कमांडर से कहा कि यह तो काबे में ही कुफ्र होगया है। अत: इन्हें सजा दी जाये।

फैज मुहम्मद ने कमांडर को १४वें समुल्लास के अनेक स्थल पढकर भी सुनाये। वह इस सारे कांड का गवाह भी बनने के लिए तैयार हो गया। रात्रि को कमांडर का आदेश पाकर एक फौजी टुकड़ी सब हथियारों से लैस होकर रामकुमार भारद्वाज के निवास पर पहुंची, दरवाजा खटखटाया, दरवाजा खोल दिया गया। उन्होंने उसी समय रामकुमार को हथकड़ी बेड़ियों में जकड़ा और वहीं पर उसे पीटना शुरु किया। उसे पावों से लेकर सिर तक डण्डों से इतना पीटा कि वह बेहोश होकर गिर पड़ा। साथ ही उसके दो साथियों ब्रह्मदत्त व धर्मवीर को भी गिरफ्तार किया गया, उन्हें भी बहुत ही पीटा, इन्हें ले जाकर अलग-अलग हवालातों में बन्द कर दिया गया। वहां की हवालात भी बहुत गन्दी तथा तंग होती हैं। उनमें आदमी सीधा नहीं खड़ा हो सकता, वहीं पर टटी पेशाब करना पड़ता है। बहुत बदबू हो जाती उसमें। रोटी भी खाने के लिए नहीं दी गई। मुर्गे का मांस दिया गया। मांस खाने से इन्कार करने पर डबल रोटी सड़ी हुई दी गई। थोड़ी बहुत भूख मिटाने के लिए खानी पड़ती थी। स्नान के लिए एक महीने तक भी पानी न दिया गया, एक लोटा पानी पीने व हाथ धोने के लिए दिया जाता था। उसी से कमीज का पल्ला भिगोकर शरीर पर मसल लिया जाता था। इस प्रकार एक माह तक हवालात में रहते हुए बिताना पड़ा। एक दिन हवालात के रक्षक अरबी सिपाही ने मुसलमान होने के लिए कहा तो भारद्वाज ने उत्तर दिया कि तुम्हारे मजहब में क्या खासीयत है कि मैं पवित्र वैदिकधर्म छोड़कर मुसलमान बन जाऊं ? मेरा सिर तो काटा जासकता है किन्तु वैदिकधर्म नहीं छोड़ सकता। इस केस की चर्चा सारी ही डल्ला कम्पनी तथा रियाद के प्रत्येक दफ्तर में फैल गई।

(क्रमशः)

सम्पादकीय

पंजाब समझौते पर प्रधानमन्त्री की खरी-खरी बातें

२० जनवरी, ८७ के प्रेस सम्मेलन में प्रधानमन्त्री ने पंजाब समझौते पर कुछ खरी-खरी बातें कहीं। बातें वही थी जो मैंने देसाई आयोग के समक्ष अपने २० जुलाई के पत्र में लिखी थीं और उसकी प्रति अगले दिन ही प्रधानमन्त्री को भेज दी थी। मैंने उसमें दो मुख्य बातें लिखी थीं—

१—पंजाब समझौते की धारा ७.२ के अन्तिम वाक्य में स्पष्ट लिखा है कि चण्डीगढ़ के बदले में हरयाणा को दिये जानेवाले गांव सीमा समायोजन के लिए धारा ७.४ के अधीन आयोग के द्वारा हरयाणा को दिये जानेवाले ग्रामों से बिल्कुल अलग होंगे। इसका अर्थ यह हुआ कि जो गांव हरयाणा की सीमा से जुड़े हुए हैं और हिन्दी-भाषी हैं, वे गांव तो सीमा समायोजन के लिए धारा ७.४ के अधीन हरयाणा को मिलेंगे ही। हरयाणा को चण्डीगढ़ के बदले में दिये जानेवाले गांव सीमा समायोजन के तहत दिये जानेवाले गांव से अलग तभी हो सकेंगे, जब वे हिन्दी-भाषी गांव सीमा से जुड़े हुए न हों। इसीलिये पंजाबी भाषी कन्दूखेड़ा गांव फाजिल्का अबोहर के हिन्दी भाषी ग्रामों को हरयाणा की सीमा से जुड़ने में बाधक होकर उन हिन्दी भाषी ग्रामों को चण्डीगढ़ के बदले में दिये जाने में सहायक हो जाता है। यदि कन्दूखेड़ा हिन्दी भाषी होता तो ८५ हिन्दी भाषी गांव हरयाणा को सीमा समायोजन की धारा ७.४ के तहत वैसे ही मिल जाते। उस हालत में ये गांव हरयाणा को चण्डीगढ़ के बदले में नहीं दिये जा सकते थे।

पंजाब समझौते में इतना स्पष्ट प्रावधान होने पर भी मैथ्यू आयोग तथा भारत सरकार को यह बात क्यों नहीं सूझी, यह हैरानी की बात है। मैथ्यू आयोग की रिपोर्ट के बाद एकदम फाजिल्का अबोहर के गांव हरयाणा को दे देने चाहियें थे। वेंकट रमैया आयोग का गठन बेमाइने था। इसीलिये हरयाणा रक्षावाहिनी ने उस आयोग से असहयोग किया था।

२—धारा ७.२ और धारा ७४ दोनों के लिये वही तीन शर्तें (क) ग्राम को ईकाई माना जाये, (ख) भाषाई समानता हो और (ग) सस्पर्शता (जुड़े हुए हों) बिल्कुल एक समान हैं। शर्तें बिल्कुल एक और पहिचान किये जानेवाले गांव अलग-अलग होने चाहिये। ऊपर से देखने में यह बात अटपटी लगती है। परन्तु थोड़ा गहराई से सोचने पर समान शर्तें एकदम सार्थक हैं। यदि गांव जुड़े हुए हों का अर्थ "हरयाणा की सीमा से जुड़े हुए" नहीं बल्कि "आपस में जुड़े हुए" लगा लें तो गुत्थी सुलझ जाती है। धारा ७.२ में इनका उद्देश्य यह बना कि वे गांव आपस में जुड़े हुए होने चाहियें, हरयाणा की सीमा से नहीं। धारा ७.४ में इन का उद्देश्य हरयाणा की सीमा से जुड़े हुए होना इसलिये जरूरी होगा, क्योंकि यह धारा है ही सीमा समायोजन के लिये।

इस छोटी-सी बात को न समझ कर मैथ्यू आयोग ने बेकार की समस्या खड़ी करदी है। अकालियों ने इसका लाभ उठाया और फाजिल्का अबोहर के ८५ गांव हरयाणा को देने से साफ इन्कार कर दिया।

प्रधानमन्त्री ने मेरा पत्र मिलने के बाद इस प्रश्न पर गहराई से सोचा है यह स्पष्ट है। इसलिये उन्होंने अपने प्रेस सम्मेलन में इन दोनों बातों का संक्षेप में उल्लेख किया है।

श्री सुरजीतसिंह बरनाला पुराने वकील हैं, वे यह समझ गये कि किसी भी जानकार आदमी के पास प्रधानमन्त्री के इस वक्तव्य का कोई जवाब नहीं है। भारत सरकार ने मैथ्यू आयोग की रिपोर्ट के तुरन्त बाद ऐसी बात न सोची और न कही, इसलिये बरनाला साहब अपने ऊपर दोष न लेकर भारत सरकार को ही दोषी ठहरा रहे हैं। परन्तु इस वक्तव्य का अर्थ यही निकलता है कि चण्डीगढ़ के बदले में हरयाणा को केवल फाजिल्का अबोहर के मैथ्यू आयोग द्वारा घोषित ८५ गांव ही दिये जा सकते हैं। इसका कोई विकल्प नहीं हो सकता।

न्यायमूर्ति वेंकट रमैया ने इस बात को समझ लिया था, इसीलिये कि उन्होंने ४५,००० क्षेत्रफल के पहिचाने हुए हिन्दी भाषी गांव चण्डीगढ़ के बदले में देने से इन्कार कर दिया, क्योंकि वे गाव तो हरयाणा को धारा ७.४ के तहत वैसे ही मिल जायेंगे, फिर चण्डीगढ़ के बदले में क्या मिला। ७०,००० एकड़ क्षेत्रफल के गाव दिये जाने की बात के पीछे कोई तर्क नहीं है। उचन्ती बात कहने की बजाये उनको अपनी मजबूरी बताते हुए स्पष्ट कह देना चाहिये था कि ७.२ के तहत केवल फाजिल्का अबोहर के गांव ही दिये जा सकते हैं।

क्षत्रीय मसले को अब नासमझी के कारण पैदा हुई उलझनों से निकाल कर पंजाब समझौते की भाषा और भावना के अनुरूप चण्डीगढ़ के बदले हरयाणा को फाजिल्का अबोहर के हिन्दी भाषी गांव दे देने चाहिये।

रावी व्यास के पानी के बटवारे के बारे में इराडी न्यायाधिकरण की रिपोर्ट की प्रतीक्षा है। इस न्यायाधिकरण के निर्णय को कानूनीतौर पर कोई चुनौती नहीं दी जा सकती, उच्चतम न्यायालय के पास भी इसकी अपील नहीं हो सकती। परन्तु पानी का बटवारा होने के बाद भी जब तक लिंक नहर न बने, हरयाणा को पानी नहीं मिल सकता। इसलिये प्रधानमन्त्री ने ठीक ही कहा कि पंजाब सरकार ने अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं किया। पंजाब की अकाली सरकार सन्त लोंगोवाल के अनुयाइयों की सरकार है और उसे समझौते की धारा १० के अनुसार लिंक नहर को १५ अगस्त, ८६ तक पूरा करना चाहिये था। १६ महीने में उन्होंने एक तिहाई काम ही पूरा किया है। श्री बरनाला ने तो पिछले वर्ष विधान सभा में यहां तक कह दिया था कि हरयाणा को देने के लिये जब फालतू पानी ही नहीं तो लिंक नहर बनाने की क्या जरूरत है। काम करने की नीयत ही न हो तो जैसा काम हुआ है वैसा ही होगा। बरनाला इस दोष से कैसे मुक्त हो सकते हैं?

बरनाला और उनकी सरकार और अकालीदल स्वयं पंजाब समझौते के अमल में बाधक बनकर खड़े हैं और दोष लगा रहे हैं भारत सरकार पर और हरयाणा पर। हरयाणा के चुनावों का बहाना मिल गया है उनको भारत सरकार और हरयाणा पर बरसने के लिये। यदि चुनाव न हों तो क्या हरयाणा को न्याय नहीं मिलना चाहिये?

चुनावों को पंजाब समझौते के अमल के साथ घसीटना शरारत है। देखने की बात तो केवल यह है कि हरयाणा का दावा न्याय संगत है या नहीं। हरयाणा तो पंजाब के समझौते में शामिल न होते हुए भी उसी समझौते पर उसकी भाषा और भावना के अनुरूप अमल हो जाये तो राष्ट्र की एकता अखण्डता और शांति के लिये कीमत देकर भी सन्तोष करने को तैयार है। हरयाणा की जनता के सयम की सभी देशप्रेमियों को दाद देनी चाहिये।

—प्रो० शेरसिंह
अध्यक्ष हरयाणा रक्षावाहिनी

तमिलनाडू में फिर शराबबन्दी

तमिलनाडू की जनता शराबबन्दी की हमेशा मांग करती रही है। वहां बहुत वर्षों तक शराबबन्दी रही। अन्नाद्रमुक (रामचन्द्रन) की सरकार ने १९८१ में शराब खोल दी। पिछले ५ वर्षों में जनता की मांग इतनी तेज हो गई कि १ जनवरी, १९८७ से वहा की सरकार को फिर से शराबबन्दी करनी पड़ी। देसी शराब के सब ठेके तो बन्द कर दिये परन्तु अभी अंग्रेजी शराब शहरों में बिकती रहेगी। इसके विरोध में भी सारे प्रदेश में जोरदार आवाज उठ रही है। वहां की सरकार पर भ्रष्टाचार का आरोप लगाया जारहा है। वहां की सरकार अब अगला कदम क्या उठायेगी, इसकी प्रतीक्षा करनी चाहिए।

आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापना शताब्दी समारोह—

बहादरगढ़ के आर्यों द्वारा सफल करने का निश्चय

(केदारसिंह आर्य द्वारा)

बहादुरगढ़ २५ जनवरी। आज यहां आर्यसमाज मन्दिर के प्रांगण में बहादुरगढ क्षेत्र के आर्यसमाज के अधिकारियों तथा प्रमुख आर्य कार्यकर्त्ताओं की एक बैठक दोपहर बाद ३ बजे सभा के पूर्व कोषाध्यक्ष श्री रामकृष्ण जी आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की स्थापना शताब्दी समारोह की चर्चा आरम्भ करते हुए सभा महोपदेशक प सुखदेव शास्त्री ने पजाब सभा के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जब महर्षि दयानन्द जी आर्यसमाज का प्रचार करने के लिए पंजाब पधारे थे, उस समय सिख भाइयों ने भी उनका स्वागत किया था। सरदार विक्रमसिंह जालन्धर ने उनके निवास का प्रबन्ध अपनी कोठी पर किया था और सरदार भक्तसिंह जी के दादा, पिता तथा चाचा ने तो आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के लिए पूर्ण सहयोग दिया था। इसी प्रकार स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, जिनका जन्म भी एक सिख परिवार में हुआ था, ने तो पंजाब के अतिरिक्त सारे भारत में हो नहीं, अफ्रीका आदि देशों की यात्रा करके वैदिकधर्म प्रचार का महान् कार्य किया। परन्तु आज के पथभ्रष्ट सिख भाई उग्रवाद तथा आतंकवाद के चक्र में फंस गये हैं। उन द्वारा हिंसा का बनाया गया वातावरण ही आज पंजाब सभा की शताब्दी पंजाब की धरती पर मनाने में बाधक बन गया है। अतः आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने यह शताब्दी वीर भूमि हरयाणा की धरती पर मनाने का कार्यभार सम्भाला है। पंजाब सभा की स्थापना के समय हरयाणा भी पंजाब में सम्मिलित था। शताब्दी समारोह के संयोजक श्री रघुवीरसिंह जी ने इस समारोह को सम्मिलित रूप से मनाने में सहयोग करने हेतु पंजाब, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश तथा जम्मू काश्मीर की प्रांतीय सभाओं को पत्र लिखे हैं। आशा है इस प्रकार शताब्दी समारोह पूरे उत्साह और उमंग के साथ मनाया जायेगा।

सभा के कोषाध्यक्ष श्री बद्रीप्रसाद आर्य ने बहादुरगढ़ क्षेत्र के सभी आर्य कार्यकर्त्ताओं को समारोह को सफल करने के लिए तन, मन तथा धन से अपील करते हुए कहा कि सभा का १०० वर्ष का इतिहास शानदार रहा है। अतः उसी परम्परा को चालू रखने के लिए हमें अपनी युवा-पीढ़ी को आर्य बनाकर तैयारी करनी है। आज का युवक विदेशी सभ्यता की ओर आकर्षित होकर वैदिक सभ्यता को भूलता जारहा है। प्रत्येक ग्राम में आर्यसमाज की स्थापना करके वैदिकधर्म का प्रचार-प्रसार करना हमारा मुख्य उद्देश्य है। सभी आर्यों के सहयोग से हम इस महान् कार्य को सफल करने के लिए तन, मन तथा धन की सहायता की याचना करते हैं।

सभामन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री ने बैठक में उपस्थित आर्य कार्यकर्ताओं को आह्वान किया कि समय आगया है कि सभी मतभेद भुलाकर सभा शताब्दी समारोह को सफल करने के कार्य में जुट जायें। आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के लिए योग्य तथा प्रभावशाली उपदेशकों की कमी हो रही है। बढ़ती हुई मंहगाई तथा सीमित साधनों के कारण हम अपने उपदेशकों को उतना वेतन नहीं दे पारहे, जितना देना चाहिए। अतः गुरुकुलों तथा उपदेशक विद्यालयों के स्नातक अच्छा वेतन तथा सुविधा प्राप्त करने के लिए सरकारी सेवा में जारहे हैं। अतः इस शताब्दी समारोह के अवसर पर ७ लाख रुपया संग्रह करने की योजना बनाई गई है। उससे वेदप्रचार के लिए स्थिरनिधि बनाकर योग्य उपदेशकों की कमी पूरी करनी हैं। तभी हम प्रत्येक ग्राम तथा नगरों के कोने-कोने में वैदिकधर्म के प्रचार का प्रबन्ध कर सकेंगे। अतः सभी आर्यों को उदारतापूर्वक सहयोग देकर आर्यसमाज के भविष्य को उज्जवल करने में अपना योगदान करना चाहिए।

इस अवसर पर आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ के संचालक स्वामी धर्ममुनि ने शताब्दी समारोह की सफलता की कामना करते हुए सभा अधिकारियों को पूर्ण सहयोग करने का संकल्प किया और आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं को जनता के परोपकारी कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेने की प्रेरणा की।

अन्त में सभाप्रधान माननीय प्रो० शेरसिंह ने शताब्दी समारोह की रूप-रेखा बताते हुए कहा कि आर्यसमाज कोई सम्प्रदाय नहीं है, अपितु एक आंदोलन है। आर्यसमाज अपने जन्मकाल से ही सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध आंदोलन करता रहा है। गुरुकुल तथा कन्या विद्यालयों की स्थापना, हैदराबाद सत्याग्रह, शुद्धि गोरक्षा आंदोलन, हिन्दी रक्षा आंदोलन, समालखा एवं कुण्डली में कसाई खाने बन्द करवाने और भारत को स्वाधीन करवाने के लिए किये गये संघर्ष भारत के इतिहास में सदा स्मरण रखे जायेंगे। आर्य प्रतिनिधि सभा ने १०० वर्ष के कार्यकाल में वेद के प्रचार तथा प्रसार कार्य में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हरयाणा सभा पंजाब सभा का हो एक अंग है। गत ३-४ वर्षों से इस सभा की ओर से प्रदेश में शराबबन्दी आंदोलन चलाया जारहा है। शराब एवं दहेज जैसी सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध हम पूरी शक्ति के साथ संघर्ष कर रहे हैं। हमारी योजना है कि शताब्दी समारोह के अवसर पर १०० ग्रामों से शराब के ठेकों को समाप्त करवाया जाये और १०० नवीन आर्यसमाजों की स्थापना करके आर्यसमाज के संघटन को सुदृढ़ किया जाये। आर्यसमाज के प्रचारकों ने समाज-सुधार कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लिया है।

अतः आर्यजनता शताब्दी समारोह को सफल करने के लिए तन, मन तथा धन से सहयोग करें। आर्यसमाज बहादुरगढ़ के अधिकारियों ने सभाप्रधान जी को तन, मन तथा धन से सहयोग करने का वचन दिया। तहसील बहादुरगढ़ के आर्यसमाजों के प्रधानों के अतिरिक्त एक समिति का भी गठन किया गया, जिसमें स्वामी धर्ममुनि जी को संरक्षक, श्री रामकृष्ण जी को प्रधान तथा श्री शम्भुदयाल जी को सयोजक मनोनीत किया गया। ला० श्यामसुन्दर जी प्रधान कन्या गुरुकुल लोवाकलां ने भी आश्वासन दिया कि वे गुरुकुल की ओर से पूर्ण सहयोग देंगे।

शताब्दी समारोह की तैयारी के लिए नारनौल तथा गुड़गांव में बैठकें

आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना शताब्दी की तैयारी के लिए १ फरवरी रविवार को प्रातः ११ बजे आर्यसमाज मन्दिर निकट सब्जी मण्डी नारनौल तथा ७ फरवरी शनिवार को दोपहर बाद २ बजे आर्यसमाज जैकमपुरा, गुड़गांव छावनी में आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं की बैठकों का आयोजन किया गया है, जिसमें सभा के अधिकारीगण शताब्दी समारोह को सफल करने के लिए आर्यसमाज के अधिकारियों से विचार-विमर्श करेंगे। अतः जि० महेन्द्रगढ़ के कार्यकर्त्ता १ फरवरी को नारनौल तथा जि० गुड़गांव के कार्यकर्त्ता ७ फरवरी को गुड़गांव में अपना सुझाव तथा सहयोग देने के लिए पधारें।

वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

फरवरी के प्रथम सप्ताह में वार्षिक उत्सव

गुरुकुल फतेहाबाद जि० हिसार	१-२ फरवरी
आर्यसमाज नारनौल जि० महेन्द्रगढ़	१ ,,
,, माजरा दूबलधन जि० रोहतक	४ से ८ ,,
,, जांडवाला बागड जि० हिसार	५-६ ,,
,, कवारी जि० हिसार	८-९ ,,
,, खटकड़ कलां जि० जींद	६-७-८ ,,
,, मालकोश जि० भिवानी	६-७-८ ,,
,, कन्या गुरुकुल खानपुर कलां जि० सोनीपत	७-८ ,,

—रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता

जि० महेन्द्रगढ़ के आर्य कार्यकर्त्ता बैठक के प्रस्ताव

४ जनवरी को जि० महेन्द्रगढ़ के आर्यसमाज के अधिकारियों तथा कार्यकर्त्ताओं की एक बैठक आर्यसमाज मन्दिर नारनौल के प्रांगण में बा० उदमीराम एडवोकेट की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

इस अवसर पर सभा के उपप्रधान महाशय भरतसिंह जी ने बैठक का उद्घाटन करते हुए कार्यकर्त्ताओं को शराब तथा दहेजबन्दी लागू करने के लिए सभा को सहयोग देने का आह्वान किया। अन्य आर्य कार्यकर्त्ताओं ने भी अपने-अपने विचार प्रस्तुत किये। विचार-विमर्श के पश्चात् निम्नलिखित प्रस्ताव पास किये गये—

१—१५ फरवरी तक नारनौल, रेवाड़ी, बावल तथा महेन्द्रगढ़ में सभा के सहयोग से नशाबन्दी सम्मेलन आयोजित किये जायें।

२—हरयाणा के मुख्यमन्त्री से अनुरोध किया गया कि किला रोड नारनौल में जो दो शराब की दूकानें हैं, वहां आगामी वर्ष के लिए नये ठेके न उठाये जायें, क्योंकि इनके निकट आर्यसमाज मन्दिर, महिला महाविद्यालय, धर्मशाला तथा हरिजन बस्ती है। यदि ठेका न उठाया गया तो आर्यसमाज कार्यकर्त्ता सत्याग्रह करने पर विवश होंगे।

३—श्री रामकुमार भारद्वाज द्वारा सत्यार्थप्रकाश का प्रचार करने पर सऊदी अरब सरकार ने उन्हें जो कठोर यातनायें दी हैं, उसकी निन्दा की गई।

४—महर्षि दयानन्द हरयाणा प्रदेश के केवल रेवाड़ी में ही पधारे थे। उन्होंने राव मानसिंह की छतरी में ठहरकर ११ दिन वेदप्रचार किया था, उस स्थान पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा वानप्रस्थाश्रम अथवा उपदेशक विद्यालय की स्थापना करने के लिए, उस स्थान की प्राप्ति के लिए प्रयत्न किया जाये।

५—जि० महेन्द्रगढ़ में वेदप्रचार समिति स्थापित करके आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सहयोग से सौ नवीन आर्यसमाज स्थापित किये जायें। इस कार्य के लिए सभा की एक भजनमण्डली की नियुक्ति की जाये। समिति का संयोजक महाशय ताराचन्द आर्य को मनोनीत किया गया।

महाशय धर्मपाल जी सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित

नई दिल्ली, १८ जनवरी ८७। दिल्ली की दो सौ आर्यसमाजों तथा शिक्षण संस्थाओं के संगठन आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य का वार्षिक साधारण अधिवेशन (चुनाव) आज मध्याह्न ३ बजे आर्यसमाज मन्दिर हनुमान रोड में सम्पन्न हुआ, जिसमें दिल्ली के आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। चुनाव बड़ा ही शांतिपूर्वक तथा सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। चुनाव में सर्वसम्मति से महाशय धर्मपाल जी प्रधान तथा श्री राजेन्द्र दुर्गा जी महामन्त्री निर्वाचित हुए। बाकी कार्यकारिणी तथा अन्तरंग सभा के गठन करने का अधिकार भी उपर्युक्त दोनों महानुभावों को सौंपा गया। निर्वाचन की कार्यवाही सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माननीय प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती ने उपस्थित सदस्यों को सम्बोधित करते हुए कहा कि देश की वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए हमें देश की एकता और अखण्डता के लिए मिलकर कार्य करना है। 	राजेन्द्र दुर्गा महामन्त्री

अम्बाला छावनी में शांति-यज्ञ सम्पन्न

वैदिक प्रचार मण्डल ७२-बी गोविन्द नगर की ओर से खुले मैदान में शांति-यज्ञ बड़े उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर ओजस्वी वक्ता पं० देवव्रत जी के विचारों तथा पं० प्रेमदत्त जी के भजनों को उपस्थित भाई बहनों ने बड़े ध्यान से सुना। समारोह के अध्यक्ष श्री प्रदीप कासनी, प्रशासक नगर पालिका ने मण्डल को इस आयोजन पर बधाई देते हुए युवकों को धर्म में तथा राष्ट्र के कार्यों में हिस्सा लेने की प्रेरणा दी।

मन्त्री महोदय ने इस अवसर पर प्रशासक महोदय को सत्यार्थप्रकाश भेंट किया तथा इसे पढ़ने का आग्रह भी किया। जिसे प्रशासक जी ने पढ़ने का आश्वासन दिया तथा कहा कि मण्डल को मेरा सहयोग बराबर मिलता रहेगा। मन्त्री ने मण्डल की रूपरेखा बताते हुए मण्डल के सदस्य बनकर देशधर्म की एकता एवं वैदिक संस्कृति के प्रचार में मण्डल को सहयोग देने का आग्रह किया। इस अवसर पर सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि इसमें सिख परिवारों व सनातनी परिवारों ने हिस्सा लिया तथा कार्यक्रम की सराहना की।

मण्डल प्रत्येक रविवार को ३ बजे से ५ बजे सायं किसी न किसी परिवार में पारिवारिक सत्संग का आयोजन करता है।

—वेदमित्र हापुड़ वाले

गणतन्त्र दिवस पर—

अमर रहे गणतन्त्र हमारा

राधेश्याम आर्य

हिमगिरि से ले हिन्द जलधि तक, छा जाये चेतना सुवासित।
भारत के प्रांगण से भागे, बिस्तृत जो अन्याय-ग्रसित।
पाखण्डों के गढ़ पर फिर से चले अभय हों तीव्र दुधारा।
अमर रहे गणतन्त्र हमारा ॥

मानवता के तत्त्व सिसकते हुए, धरा पर हों आश्वस्त।
दानवता का अहसास सब भू का हो पतनोन्मुख पस्त।
वेदज्ञान की दिव्य गंग में अमृत-पान करे जग सारा।
अमर रहे गणतन्त्र हमारा ॥

सत्य-सनातन धर्म सुवैदिक, वेदों का फैले धरती पर।
सभ्य सुसंस्कृत श्रेष्ठ बनें सब-वसुधा के वासी नारी-नर।
'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का गूंजे अविरल भू पर नारा।
अमर रहे गणतन्त्र हमारा ॥

बढ़ें सुपथ पर निर्भय होकर, ऋषि-मुनियों के हम अनुयायी।
ज्योतिष्मान् करें मानव-मन, फटे स्वार्थ-लिप्सा की काई।
सुखी तथा समृद्ध-गुणी हो, भारत यह प्राणों से प्यारा।
अमर रहे गणतन्त्र हमारा ॥

मदिरा छोड़ो

मदिरा छोड़ो पति हमारे, भूखे बालक कितने प्यारे।

थारे हाथ में रह जाम है, थारी दिन में रह शाम है।
अब रहा नहीं सम्मान है, तोर धरा निरर्थक कमान है।
मदिरा छोड़ दो पुष्प खिलेंगे, फिर जीवन के देखो नजारे।१

मदिरा का प्याला मुख से लागजा, अपने घर की फाग त्यागजा।
फिर तो मरण का राग लागजा, अच्छे कुल में दाग लागजा।
गया सम्मान फेर न पावे, सब जग वाले बन जा खारे।२

हाथ जोड़ जाऊं बलिहारी, नार पति में ना कबहारी।
जीवनभर सेवा करूं थारी, अब तो मदद करो गिरधारी।
अबला रोई बीच सभा में, देखो कैसे चीर उघारे।३

मदिरा छोड़ दो भाग जाग जा, टोटा घर से आज भाग जा।
थारे सर पर धरी पाग जा, मेरा सावन अग्नि लागजा।
नशा बुरा यह कब छूटे, श्रीराम रह-रह के विचारे।४

—श्रीराम खटाणा

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
स्नातकों के पंजीकरण हेतु सूचना

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की शिष्ट परिषद् तथा शिक्षा-पटल के लिए स्नातक प्रतिनिधियों के निर्वाचन हेतु अधोहस्ताक्षरी गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के उन स्नातकों से पंजीकरण हेतु प्रार्थना-पत्र आमन्त्रित करता है, जिन्हें इस विश्वविद्यालय से स्नातक, स्नातकोत्तर अथवा पी-एच० डी० उपाधि प्राप्त किये ५ वर्ष हो चुके हों।

अत: वर्ष १९८२ तक उपाधि प्राप्त महानुभाव निम्न प्रपत्र अपने पंजीकरण हेतु शुल्क ५ रुपये, सदस्यता शुल्क (वार्षिक) २ रुपये तथा सदस्यता शुल्क (आजीवन) २५ रुपये मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट अथवा पोस्टल आर्डर सहित विज्ञापन की तिथि से एक माह के अन्दर अधोहस्ताक्षरी के नाम प्रेषित करें। उक्त शुल्क अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में नकद भी जमा कराया जा सकता है।

—कुलसचिव

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
पंजीकृत स्नातक/स्नातिका के रूप में पंजीकरण हेतु प्रार्थना-पत्र

१. नाम
२. पिता का नाम
३. विश्वविद्यालय पंजीकरण सं०
४. उच्चतम उपाधि जो गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से प्राप्त की हो।
५. उक्त उपाधि प्राप्त करने का वर्ष
६. अनुक्रमांक जिससे उक्त उपाधि प्राप्त की
७. मनीआर्डर, पोस्टल आर्डर, बैंक ड्राफ्ट अथवा नकद जमा किये गये धन का विवरण जिसके द्वारा वांछित शुल्क जमा किया गया।
८. वर्तमान पता व्यावसायिक विवरण सहित

मैं····· यह प्रमाणित करता हूं कि उपर्युक्त तथ्य सत्य हैं। अत: मैं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पंजीकृत स्नातक के रूप में पंजीकरण हेतु प्रार्थना करता हूं।

स्थान — हस्ताक्षर
दिनांक — पता

जि० महेन्द्रगढ़ में वेदप्रचार की धूम

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भजनोपदेशक ने जि० महेन्द्रगढ के आर्यसमाजों में ६ जनवरी को नारनौल में नामकरण संस्कार पर ५१), ७ जनवरी को भुगारका में ९२), ८ जनवरी को नंगली में २०), उसी दिन आर्यसमाज तथा राजकीय विद्यालय भुगारका में १९२), १० जनवरी को सिलारपुर तोताहेड़ी में ६५), ११ जनवरी को मिर्जापुर बाच्छोद में १०१), १४ जनवरी को १०१) तथा सैनी स्कूल नारनौल से २०) सभा के लिए वेदप्रचार करके प्राप्त किये हैं।

म० ताराचन्द आर्य

आर्यसमाज सदर बाजार दिल्ली शताब्दी समारोह

आर्यसमाज सदर बाजार दिल्ली, आगामी अप्रैल मास सन् १९८७ में अपना शताब्दी समारोह एवं स्मारिका (इतिहास) का विमोचन करने जा रहा है।

सभी आर्य संन्यासीगण; शास्त्रार्थ, महारथी, आर्य विद्वानों एवं भजनोपदेशकों से साग्रह निवेदन है कि उपरोक्त आर्यसमाज से सम्बन्धित जिन किसी भी महानुभावों के पास संस्मरण हों, वे कृपया फरवरी मास सन् १९८७ तक मन्त्री जी आर्यसमाज सदर बाजार, दिल्ली के पास भेजने का कष्ट करें।

पाचक की आवश्यकता

गुरुकुल आर्यनगर डा० कुरडी, जि. हिसार को एक पाचक (रसोइया) की तुरन्त आवश्यकता है, इच्छुक तुरन्त मिले।

—आचार्य गुरुकुल आर्यनगर, जि० हिसार

मोटर साइकिलों पर विश्व को शांति सन्देश देनेवाले हरयाणवी आर्य युवक



चार भारतीय आर्य युवक जो कि हरयाणा के रोहतक शहर के रहने वाले हैं इस समय विश्व को शांति सन्देश देने के लिए मोटर साइकिलों पर देश विदेश का भ्रमण कर रहे हैं। भारत की राजधानी नई दिल्ली से २ जुलाई, १९८६ को मोटर साइकिलों पर निकले ये चार युवक हैं—१ डा. अरविन्द लोहान सुपुत्र डा रणजीतसिंह जो कि मेडीसन के डाक्टर हैं। २. श्री शमशेरसिंह बेरी जो कि रोहतक विश्वविद्यालय में खेल निदेशक हैं। ३ श्री वीरेन्द्रसिंह छिकारा सु श्री प्रतापसिंह छिकारा एक इन्जीनियर हैं तथा ४. श्री यशवीर दलाल सु. श्री देवेन्द्रसिंह एक बैंक अधिकारी हैं।

अब तक ये चारों युवक मिश्र, सीरिया, साइप्रस, यूनान, इटली, रूस, पूर्वी जर्मनी, पश्चिम जर्मनी, डेनमार्क, स्वीडन, नीदरलैंड, बेल्जियम, स्वीटजरलैंड और ब्रिटेन का दौरा कर चुके हैं और इन दिनों अमेरिका में हैं। अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन पहुँचने पर भारतीय राजदूत श्री पी. के कौल ने उनके स्वागतार्थ एक समारोह का भी आयोजन किया। इसी समारोह में इन शांति सेनानियों ने अपने अनुभवों के बारे में बताया। अपने मोटर साइकिलों पर विश्व शांति सम्बन्धित सन्देशों की चिपकियां लगाये हुए इन आर्य युवकों का हर देश में गर्मजोशी से स्वागत हुआ है। उन्हीं के कथनानुसार हर देश में इसी कार्य करनेवाले गुट हैं और हर देश के लोगों ने उन्हें काफी सहयोग दिया है।

अभी इन युवकों का वापिस भारत आने से पहले जापान, कोरिया, हांगकांग और सिंगापुर भी जाने का कार्यक्रम है। ये चारों युवक पिजन्ज इन्टर नेशनल क्लब (रजि०) रोहतक से सम्बन्धित हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का बिक्री हेतु वैदिक साहित्य

क्र०	पुस्तकों का नाम	मूल्य
१.	दी वेदाज (अंग्रेजीभाषा में)—स्वामी भूमानन्द जी	१-००
२.	दी प्रिंसिपल्ज आफ आर्यसमाज –पं० चमूपति एम०ए०	१-५०
३.	जीवन ज्योति (वेदमन्त्रों की व्याख्या)—पं० चमूपति एम०ए०	३-००
४.	निहारिकावाद और उपनिषद्—पं० चमूपति एम०ए०	०-५०
५.	आर्यसमाज की विचारमाला—पं० क्षितीशकुमार वेदालंकार	१-००
६.	निजाम की जेल में—लेखक पं० क्षितीश	२०-००
७.	ईसाइयों की प्रचार प्रणाली—पं० जगत्कुमार शास्त्री	००-१०
८.	आर्यसमाज और अस्पृश्यता निवारण–पं. ओम्प्रकाश त्यागी	००-५०
९.	बलिदान जयन्ती स्मृति ग्रंथ (आर्य शहीदों का परिचय)	४-५०
१०.	ईश्वर की सत्ता—डा० रणजीतसिंह	१-००
११.	हरयाणा के आर्यसमाज का इतिहास—डा० रणजीतसिंह	५-००
१२.	धर्म-प्रवेशिका —डा० रणजीतसिंह	३-००
१३.	धर्म-भूषण ,,	५-००
१४.	पंजाब का आर्यसमाज —प्रि० रामचन्द्र जावेद	२-००
१५.	आदर्श धातु रूपावली —महावीर आजाद शास्त्री	२-००
१६.	वैदिक उपासना पद्धति—डा० सुदर्शनदेव आचार्य	३-००
१७.	स्मारिका (हरयाणा प्रांतीय आर्यसमाज शताब्दी समारोह)	१-००
१८.	मूर्तिपूजा —सम्पादक पं० जगदेवसिंह सिद्धांती	००-५०
१९.	वेदस्वरूप निर्णय ,,	००-७५
२०.	वेदाविर्भाव ,,	१-००
२१.	वेदभाष्य पद्धति ,,	१-००
२२.	ईसाई पादरियों की आर्यसमाज को चुनौती–स्वा० दर्शनानन्द	०-१०
२३.	गोकरुणानिधि—स्वामी दयानन्द सरस्वती	०-२०
२४.	सत्यार्थप्रकाश ,,	६-००
२५.	महर्षि दयानन्द आत्मकथा ,,	०-५०
२६.	हमारा फाजिल्का —योगेन्द्रपाल	१-००
२७.	बड़ —स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती	१-५०
२८.	वीर हेमू ,,	००-७५
२९.	पीपल ,,	१-५०
३०.	मिर्च ,,	१-५०
३१.	श्लीपद वा हाथीपांव की चिकित्सा ,,	०-२०
३२.	बिच्छू विष चिकित्सा ,,	०-५०
३३.	लवण ,,	१-२५
३४.	विदेशों में मैंने क्या देखा ,,	२-५०
३५.	नैरोबी यात्रा ,,	१-५०
३६.	ब्रह्मचर्य साधन ९-११ ,,	१०-००
३७.	,, १-२ ,,	१-००
३८.	,, ३ ,,	१-००
३९.	,, ४ ,,	६-५०
४०.	,, ५ ,,	२-००
४१.	,, ६ ,,	३-००
४२.	,, ७-८ ,,	२-००
४३.	,, ९ ,,	३-००
४४.	,, १० ,,	१-५०
४५.	,, ११ ,,	२-००
४६.	हल्दी ,,	१-५०
४७.	नीम ,,	१-२५
४८.	पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय—प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु	१-५०
४९.	नास्तिक मत समीक्षा—पं० हरिदेव सर्राफ	००-१५
५०.	विश्व को आर्यसमाज का सन्देश—महात्मा वेदभिक्षु जी	००-२५

प्राप्ति स्थान

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

राष्ट्रीय पर्वों तथा संविधान का अपमान करनेवालों को भारतीय नागरिकता से पृथक् किया जाये

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने भारत के प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी जी से यह मांग की है कि श्री सैय्यद शाहबुद्दीन तथा उनके अन्य सहयोगी जिन मुस्लिम नेताओं ने मुसलमानों को गणतन्त्र दिवस के बहिष्कार का फतवा दिया है, उनके विरुद्ध कठोर कानूनी कार्यवाही तथा उनकी लोकसभा की सदस्यता समाप्त की जानी चाहिए। श्री तिवारी ने कहा कि भारत की एकता एवं अखण्डता को बनाये रखने के लिए आवश्यक होगया है कि क्षेत्रवाद, जातिवाद, भाषा व धर्म के नाम पर जो शक्तियां भारत को विभाजित करना चाहती हैं, उनके विरुद्ध आर्यसमाज जनजागरण अभियान प्रारम्भ करेगा। पंजाब, बंगाल, आसाम और कश्मीर में धर्म, जाति और भाषा के नाम पर भारत को खण्डित करने का जो कुचक्र चल रहा है उसे आर्यजन कभी सफल नहीं होने देंगे। साथ ही जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर तथा अन्य नेताओं से मांग की है कि श्री शाहबुद्दीन जैसे लोगों को पार्टी से तुरन्त निकाला जाये, अन्यथा जनता पार्टी के नेताओं का घिराव किया जायेगा।

भवदीय : मनमोहन तिवारी मन्त्री

हैदराबाद आर्य सत्याग्रहियों को आवश्यक सूचना

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में सम्मिलित होनेवाले जिन सत्याग्रहियों के प्रार्थना-पत्र गृहमन्त्रालय, लोकनायक भवन नई दिल्ली में नहीं पहुंचे हैं, उनका ३१ जनवरी, १९८७ तक अपने प्रार्थना-पत्र फार्मों पर हिदायतों के अनुसार भेज देने चाहियें। यह निर्णय इस सम्बन्ध में भारत सरकार द्वारा गठित समिति ने १२ दिसम्बर, १९८६ को अपनी पहली बैठक (लोकनायक भवन) में लिया। अतः सत्याग्रही अथवा उनके आश्रित तुरन्त सभा कार्यालय रोहतक पधार कर अपने आवेदन-पत्र भरवाकर भेजकर इस सुविधा से लाभ उठावें।

—प्रो० शेरसिंह
प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

आर्यसमाज सिरसा का प्रस्ताव

११-१-८७ को आर्यसमाज सिरसा मे गोवंश रक्षा हेतु निम्नांकित प्रस्ताव पास किया गया—

आर्यसमाज सिरसा यह मांग करता है कि "कृषि प्रधान भारत में किसी भी उम्र के गाय बैल न कटें। इसके लिए भारत सरकार केन्द्रीय कानून लागू करे और गोमांस का निर्यात पूर्णतया बन्द करे।"

यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से दोनों हाथ उठाकर ओ३म् ध्वनि के साथ पास किया गया तथा यह भी प्रण किया आज उपवास भी रखा जाये। —सत्यपाल मन्त्री, आर्यसमाज सिरसा

शोक प्रस्ताव

श्रीमती रामचन्द्री देवी (धर्मपत्नी श्री आत्माराम जी सैनी) का आकस्मिक निधन दिनांक २९-१२-८६ को होगया। जिनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिकरीतिनुसार श्री बलवीरसिंह जी आर्य द्वारा कराया गया। दिनांक ३१-१२-८६ से ७-१-८७ तक प्रातः ८-३० बजे से ९-३० बजे तक दैनिक यज्ञ, दोपहर बाद २-३० बजे से ३-३० बजे तक और रात्रि ८-३० से १०-३० बजे तक कथा व भजन श्री बलदेव जी आर्य द्वारा होते रहे। दिनांक ८-१-८७ को प्रातः १० बजे से १२ बजे तक दिवगत आत्मा की शांति हेतु हवन रस्म पगड़ी पं. विश्वमित्र जी स आचार्य दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार तथा श्री बलदेव जी आर्य सिरसा द्वारा कराया गया। इस अवसर पर श्री आत्माराम जी सनी द्वारा निम्नांकित दान आर्य संस्थाओं को दिया गया—

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार १०१), आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा रोहतक १०१), आर्यसमाज सिरसा २१), आर्य सैकण्डरी स्कूल सिरसा ५१), सैनी सभा सिरसा २१), गऊशाला सिरसा २१), आर्य प्राईमरी स्कूल सिरसा ११)। —सत्यपाल मन्त्री

आचार्य हरिश्चन्द्र जी दिवंगत

गुरुकुल भैंसवाल के पूर्व आचार्य हरिश्चन्द्र जी का ८० वर्ष की आयु में १७ जनवरी को प्रातः ४ बजे हृदयगति बन्द होने के कारण स्वर्गवास होगया। आपने हैदराबाद सत्याग्रह में एक जत्थे का नेतृत्व करके जेल-यात्रा की थी। आपने सारी आयु गुरुकुल, आर्य विद्यालयों तथा आर्यसमाज की सेवा की। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे। —सभामन्त्री

माता यशोदा देवी का निधन

वेदवाणी के सम्पादक विख्यात वैदिक विद्वान् श्री पण्डित युधिष्ठिर जी मीमांसक की धर्मपत्नी श्रीमती यशोदा देवी का निधन ११ जनवरी, ८७ को होगया। स्वर्गीय माता जी की अवस्था ७० वर्ष से अधिक थी और वे कैंसर रोग से ग्रस्त थी। १३ जनवरी, ८७ को आर्यसमाज करोल बाग में शोक सभा हुई और पाणिनि महाविद्यालय, बहालगढ़ (सोनीपत) में विशेष यज्ञ के पश्चात् उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 राज० न० P/RTK 49

सृष्टि सवत् १,९६,०८,५३,०८७



ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभा मन्त्री

सह-सम्पादक—डा० यज्ञवीर

वर्ष १४, अङ्क ११ ७ फरवरी, १९८७ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

प्रभु-स्तवन

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक अध्यक्ष वैदिक संस्थान नजीबाबाद (उ०प्र०)

स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव ।
सचस्वा नः स्वस्तये । ऋ० १।१।९ ।।

वेदों में अग्नि शब्द का प्रयोग अत्यधिक हुआ है। ऋग्वेद का तो प्रारम्भ ही अग्नि शब्द से हुआ है तथा उसके प्रथम सूक्त का नाम ही अग्नि सूक्त है, प्रस्तुत मन्त्र उक्त सूक्त का ही है। वेद के अन्य शब्दों की भांति अग्नि शब्द के अनेक अर्थों में से एक अर्थ ईश्वर भी है। प्रस्तुत मन्त्र में अग्नि शब्द से ईश्वर ही को सम्बोधित किया गया है।

'अग्रणी भवति' आगे चलनेवाला होता है वा 'अग्रे-अग्रे नयति' जो आगे-आगे अर्थात् आगे और आगे निरन्तर तथा उत्तरोत्तर आगे ही आगे ले जाता है, आगे ले जानेवाला होता है, वह अग्नि कहाता है।

परमात्मदेव सत्यमेव अग्रणी हैं, हैं न—'ईशा वास्यमिदं सर्वम्' इदं सर्वं ईशा वास्यम्' इस सम्पूर्ण में ईश्वर का वास है। सम्पूर्ण क्या ? सर्वं किम् ? किं इदम् सर्वम् ? यह सम्पूर्ण क्या है ? समस्त जगत्, विश्व ब्रह्मांड यत्किञ्च जगत्यां जगत् जगति पर, पृथिवी पर वा जगति अर्थात् सृष्टि में 'यत्किञ्च' जो कुछ भी 'जगत् गतिशील है। इस संसार में जो कुछ भी है और वह सब जिस-जिस प्रकार की भी गतिविधि में स्थित है, उस सम्पूर्ण में ईश्वर बसा हुआ है।

है कोई ऐसा स्थान जहां ईश्वर न हो ? जब प्रत्येक स्थान पर वह है और आपके पहुँचने से पहले ही उपस्थित है तो हुआ न अग्रणी। आदि सृष्टि में ही उस प्रभु ने ऋत को, शाश्वत सत्य को, ऋत के भण्डार शाश्वत सत्य के कोष वेद को मानव के हितार्थ, उसके बढ़ने, उन्नत होने के लिए आदिकाल के महामानव चार ऋषियों के हृदय में प्रकट कर दिया। इसी कारण से वह आगे उन्नति की ओर ले जानेवाला है।

"अञ्चु गति पूजनयोः" (अग, अगि, इण) यह गत्यर्थक धातु हैं, इनसे अग्नि शब्द बनता है। गतेस्त्रयोऽर्थाः ज्ञानं गमनं और प्राप्ति तथा पूजनं नाम है सत्कार का। "योऽञ्चति अच्यते ऽत्यञ्चत्येति वा सोऽयमग्निः" जो ज्ञानस्वरूप, सर्वत्र जानने, प्राप्त होने और पूजा करने योग्य है, वह परमेश्वर अग्नि है। सामान्यतया यदि विचार किया जाये तो यह कहा जा सकता है कि जिस प्रकार भौतिक अग्नि स्वयं प्रकाशित होने से संसार को प्रकाशित करता है और यथाप्रकाश में, प्रकाश के द्वारा समस्त पदार्थों का ज्ञान होता है, तथैव परमात्मा अपने प्रकाश से प्रकाशित है अर्थात् स्वयं प्रकाशस्वरूप है, ज्ञानस्वरूप है और सारे संसार का ज्ञानदाता, प्रकाशप्रदाता होने से अग्नि है। वही पूजा करने, आराधना, उपासना करने के योग्य है।

(सः) वह, वह प्रभु, वही ज्ञान का भण्डार और ज्ञानदाता अग्निस्वरूप प्रभु भक्त भगवान् को पुकार रहे हैं। वह अपने एकमात्र और सर्वोत्तम आश्रयदाता पर विश्वास रखते हैं। भक्तों का आलम्बन उनका आश्रय हो ही कौन सकता है ? उस प्रभु के अतिरिक्त। यदि कोई अन्य सहायक होता तो वह भी प्रभु कृपा से हो। परमात्मा के सहस्रों हाथ हैं, उसके हाथ हमारे हाथों जैसे नहीं होते। उसके हाथ तो उस परम कृपालु परमात्मदेव की कृपा के ही हाथ होते हैं। वह स्वयं शरीर धारण कर हाथ-पैर वाला बनकर सहायता करने नहीं आता, अपितु अपनी सर्वव्यापक शक्ति द्वारा अन्तः प्रेरणा करके मानवों को ही सहायक बना देता है। अनेक बार प्रत्यक्ष देखा जाता है कि जो मनुष्य अत्यन्त क्रूर स्वभाव के होते हैं। वह भी किसी व्यक्ति विशेष के लिए अत्यन्त कृपालु व दयालु बन जाते हैं। उनके भी पाषाण हृदय मोम बन जाते हैं, पिघल जाते हैं। अनेक बार तो महाशत्रुता रखते हुए कुटिल स्वभाव के व्यक्ति भी अपने प्रतिद्वन्द्वी के प्रति भी अकस्मात् दयार्द्र होते पाये जाते हैं। अत्यन्त क्रूर तथा हिंसक स्वभाववाले पशु भेड़ियों को स्व-स्वभाव के विरुद्ध मानव शिशुओं का पालन करते हुए पाया गया है। यह सब उस परम पावन प्रभु की परम कृपा ही तो है। इसी कृपा की आशा से प्रभु के इस परम कृपालु स्वभाव के विश्वास पर ही तो वैदिकभक्तों ने प्रभु को पुकारा है। उन्होंने कहा है, हे प्रभो ! आप अपने ज्ञान भण्डार और ज्ञानदाता होने से अग्नि स्वरूप हो, हम आपसे आपके शरणागत होकर यह याचना करते हैं कि आप (नः) हमारे लिये (सूनवे पिता इव) पुत्र के लिए पिता जैसे—ठीक इसी प्रकार (सूपायनः भव) सुख के लिए पदार्थों की प्राप्ति करानेवाले हो जाये।

पुत्रों के लिए पिता अपना सब कुछ अर्पित कर देता है। अर्पित ही नहीं करता, अपितु पिता का सब कुछ होता ही पुत्र के लिए है। पिता का तो जीवन मरण सभी कुछ सन्तान के लिए होता है। पिता स्वयं को आपत्ति में डालकर भी पुत्र के लिए, पुत्र की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए, पुत्र के पालन और पोषण के लिए धन कमाता है। पिता ही जो ठहरा 'पा रक्षणे'—'पा' धातु से पिता शब्द बनता है। 'पा' धातु का अर्थ है पालन और रक्षण करनेवाला। महर्षि यास्क के शब्दों में "पालयिता पोषयिता रक्षयिता वा" पालन पोषण और रक्षण करने से पिता कहलाता है। पुत्र के पालन तथा रक्षणार्थ पिता सम्पूर्ण शक्ति से सर्वात्मना संलग्न होकर साधन-संग्रह करता है। पिता की इच्छा होती है कि चाहे कितने ही कष्ट भोगने पड़ें किन्तु उसकी सन्तान सुखी रहे। वह स्वय रूखी-सूखी खाकर फटे कपड़ों में रहते हुए भी सन्तुष्ट रहता है, किन्तु पुत्र को अच्छे से अच्छे तथा सुन्दर से सुन्दर और मूल्यवान् से मूल्यवान् वस्त्र पहनाकर स्व-सौभाग्य को सराहता और प्रसन्नता से फूला नहीं समाता है। कितनी उच्च और पवित्र है यह भावना जो उस व्यक्ति में होती है, जिसे पिता शब्द से पुकारा जाता है। पिता शब्द परमात्मा के लिए ठीक ही प्रयुक्त हुआ है। वैदिकभक्तों की कामना है कि ऐसी ही भावना प्रभु की भी हमारे प्रति हो।

भक्तों की कामना उचित ही है, उन्होंने इतने सुन्दर शब्दों में अपनी कामना व्यक्त की है कि जिनसे सुन्दर शब्द दूसरे नहीं हो सकते। प्रभु तो स्वयं ही पिता है। एक, दो, दस, बीस अथवा किसी वर्ग विशेष के नहीं, अपितु सारे संसार के, विश्व जगत् के और केवल मानवमात्र के ही नहीं,

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आएंगे ख़त अरब से, उनमें लिखा यह होगा ?

प्रस्तुतकर्त्ता—सुखदेव शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

गतांक से आगे—

हैदराबादी मुसलमान मजदूर बहुत ही खुश थे। सभी गवाह बनने के लिए तैयार होगये थे। इस प्रकार एक महीने तक कठोर यातनायें हवालात में देते रहे। ब्रह्मदत्त व धर्मवीर को कम दोषी मानने तथा रामकुमार द्वारा सारा केस अपने ऊपर लेने के कारण उन दोनों को मुक्त कर दिया गया।

एक महीने तक हवालात में रहने के बाद अगली पेशी बड़ी अदालत में लगी, वहां पर मजिस्ट्रेट अरबी व अंग्रेजी ही जानता था। उसने दुभाषिया के द्वारा सारा केस सुना और उधर कमांडर के द्वारा दायर केस भी सुना। रामकुमार के बयान हुए। रामकुमार ने बयान देते हुए कहा कि मैं कम्पनी में नौकरी करने आया हूं, अपना धर्म छोड़ने नहीं आया, कम्पनी की नौकरी की शर्तों में यह नहीं लिखा था कि अरब में जाकर कोई भी व्यक्ति अपने धर्म का पालन न करके कुरान पर ही ईमान लायेगा। अत: मैंने व्यक्तिगत समय में अपने निवास पर रहते हुए ही अपने धर्म का पालन किया है, जो कि बहुत जरूरी है। अत: मैं दोषी नहीं ठहराया जा सकता। धर्म का आत्मा से सम्बन्ध है। अत: तुम मेरी गर्दन तो काट सकते हो, किन्तु मेरी आत्मा को नहीं काट सकते। मेरी आत्मा अमर है, सत्यार्थप्रकाश अमर है, मेरा वैदिकधर्म अमर है, तुम्हें जो स्वीकार हो करो।

मजिस्ट्रेट ने दुभाषिया से पूछा—सत्यार्थप्रकाश क्या है? उसने उत्तर दिया—"दिस बुक आफ वर्ल्ड हिस्ट्री आफ दी रिलिजस" अर्थात् यह किताब सभी संसार के मजहबों की हिस्ट्री है। मजिस्ट्रेट ने फिर पूछा—इण्डियन गवर्नमेंट की इस पुस्तक के बारे में क्या राय है? दुभाषिया ने कहा—यह पुस्तक भारत सरकार की ओर से सभी पुस्तकालयों के लिए स्वीकृत है? इन बातों को सुनकर मजिस्ट्रेट कुछ देर तक सोचता रहा। फिर उसने रामकुमार को 'कतलगाह' में भेजने का आदेश दे दिया। सभी मौलवी मुल्लाओं से सलाह करली गई। मुल्लाओं ने फतवा दिया कि कुरान शरीफ के खिलाफ बोलने वालों के लिए कुरान में कतल का ही हुकम दिया गया है। वैसे भी यहां अरब में शरीयत का ही राज्य है। अत: कतल ही होना चाहिए।

रामकुमार को दिन में ही "वधस्थल" पर ले जाया गया। जेल के पहरेदार ने कहा—इस्लाम कबूल करलो, छोड़ दिये जाओगे। रामकुमार ने उत्तर दिया—यह कोई तुम नई सलाह नहीं दे रहे हो, इससे पहले भी भारत में राज्य करते हुए स्यालकोट के एक नन्हे से बालक हकीकतराय को भी तुम्हारे पूर्वजों ने यही सलाह दी थी। लाहौर की कचहरी में नाजिर साहब ने कहा था—

हकीकत है नाम तेरा, नहीं समझा हकीकत को।
सरासर चल रहा उल्टा, छोड़ रहे तरीकत को।
कुफ्र को छोड़ दे, और पाक करले अपनी नीयत को।
गुनाह धुल जायेंगे सारे, मान अहकामे शरीयत को।
यहां और आकबत दोनों जहां सुर्खरु होगा।
नहीं तो समझ ले ये तलवार होगी और तू होगा।

हकीकत ने अदालत में ही उत्तर देते हुए कहा था—

तुम्हारे पास खंजर है, यहां है आत्मिक शक्ति।
तुम्हारे पास जन्नत है, यहां है ओ३म् की भक्ति।
ये वो दिल हैं, जिस दिल में ज्योति ईश्वर की है जगती।
करो तुम लाख कोशिश जोंक पत्थर पर नहीं लगती।
तुम्हें इतनी तो ताकत है कि सिर को मेरे कटवा दो।
बहादुर तुमको मैं जानूं, धर्म मेरा जो छुड़वा दो।

तुम जेल के अन्दर पहरा देते रहो, मुझे कुछ भी उपदेश देने की जरूरत न कीजिये। रियाद (अरब) के जेल के अन्दर रहते हुए रामकुमार गायत्री का जाप करते रहे। उन्होंने मृत्यु को निश्चित रूप से आई जानकर ईश्वर को याद करना जारी रखा, उन्होंने यह भी सोचा कि विदेश में मर जाने से मुझे कोई भी न जान सकेगा, मेरी मृत्यु उस सुगन्धित फूल जैसी होगी जो किसी ऊंचे पर्वत पर खिलकर स्वयं ही मुरझा कर नष्ट हो जाता है। यदि यह शहादत मुझे मुस्लिम राज्य में भारत में मिल जाती तो अनेकों लोग मेरे बलिदान से प्रेरणा प्राप्त करते? इतना होते हुए उनके किसी साथी ने अरब स्थित भारतीय राजदूत को भी कार्यवाही करने के लिए पत्र लिखा, किन्तु कोई भी प्रयत्न इस दिशा में भारतीय राजदूत की ओर से न किया गया। साथ ही भारत में प्रधान मन्त्री राजीव गांधी व सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को भी पत्र लिखे गये। माननीय आनन्दबोध जी राजीव गांधी से इस विषय में मिले। राजीव जी ने विदेश मन्त्री को कार्यवाही करने के लिए लिखा। स्वामी आनन्दबोध जी ने भी विदेश मन्त्रालय को कार्यवाही करने के लिए पत्र लिखा। विदेशमन्त्रालय से उत्तर मिला कि अरब सरकार का ऐसा ही कानून है। इस उत्तर से निराश होकर सार्वदेशिक सभा ने १४ जनवरी को अरब सरकार के भारत स्थित दूतावास पर प्रदर्शन करने का निश्चय किया। आनन्दबोध जी ने फिर राजीव जी से मुलाकात की। इन प्रयत्नों से पुन: अरब सरकार से सम्पर्क किया गया। उधर रामकुमार को कतल करने की तैयारी करली गई थी। उन्हें साधारण जेल से हटाकर कालकोठड़ी में बन्द कर दिया था। जहां सरकार का कतल का कानून था, वहां रामकुमार का धर्म भी इजाजत नहीं देता था धर्म छोड़ने की। इधर भारत सरकार तथा सार्वदेशिक सभा के प्रधान के प्रयत्न से एक रात अचानक लगभग रात के एक बजे एक फौजी दस्ता जेल पहुंचा, रामकुमार की आंखों पर पट्टी बांधकर जेल से निकाल कर उन्हें अड्डे पर पहुंचा दिया और उन्हें हवाई जहाज में बैठाकर अरब से निष्कासित कर दिया।

इस प्रकार रामकुमार भारद्वाज मुक्त होकर भारत पहुंचे। विशेष कर हमें इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि रामकुमार भारद्वाज ग्राम शाहपुर, जिला जींद, हरयाणा के निवासी हैं। जब भारद्वाज भारत में आगये तो प्रो० शेरसिंह जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा उनसे सम्पर्क करने के लिए (श्री सुखदेव शास्त्री को) आदेश दिया कि भारद्वाज का पता लगाया जाये, मैंने शाहपुर जिला जींद जाकर सम्पर्क किया। श्री आनन्दबोध जी के आदेश पर उन्हें २५ दिसम्बर १९८६ को श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर लाल किले के सामने भारी उत्सव में सम्मानित किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा भी मई में होनेवाले प्रतिनिधि सभा के शताब्दी समारोह में रामकुमार भारद्वाज को सम्मानित करेगी।

हरयाणा में प्रतिनिधि सभा शताब्दी समारोह

पं० शांतिप्रकाश, पूर्व वेदप्रचाराधिष्ठाता आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

महर्षि दयानन्द सरस्वती गुरु वृजानन्द जी महाराज की आज्ञा से वैदिकधर्म प्रचार में संलग्न हुए तो वैदिकधर्म प्रचार को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए प्रांत-प्रांत में आर्य प्रतिनिधि सभाओं की स्थापना भी होती चली गई।

लाहौर पंजाब की राजधानी थी। आंगल शासन में दिल्ली, हरयाणा, बलोचिस्तान, फरंटियर का भूभाग पंजाब में समझा जाता था तथा सिंध भी। महर्षि जी पंजाब में सबसे पूर्व लुधियाना पधारे। जो अलखधारी जी का नगर था। अलखधारी जी ने लिखा था कि जिस भी व्यक्ति को वैदिकधर्म पर संदेह हो, या कोई शंका हो तो वह महर्षि दयानन्द सरस्वती की शरण में आकर शंका समाधान कर सकता है। इसकी मुराद अवश्य पूरी होगी। वह शंका निवृत्त होकर ऋषि दयानन्द से अवश्य अनुगृहीत होगा।

पं० लेखराम सैदपुर जिला जेहलम के निवासी पेशावर में अपने चाचा प० गंडाराम के साथ रहते और वहीं पर सरकारी सर्विस में संलग्न थे। उनकी धार्मिक पिपासा शांत न होने के कारण उन्होंने गुरुवाणी पढ़ी, कुरान पढ़ा। अन्ततः वह मुसलमानों के निकट होने की धुन में थे कि कुलियात अलखधारी में पढ़ा कि जिस किसी को भी अपने धर्म पर संदेह हो, वह महर्षि दयानन्द सरस्वती से मिलकर शंका समाधान करा सकता है। प० लेखराम ने यह पढ़ा और सरकार से अवकाश लेकर अजमेर आकर ऋषि दयानन्द से मिले। शंका समाधान के अनन्तर पं० लेखराम ऋषि के होगये। महर्षि जी ने अष्टाध्यायी दी और शंका निवृत्त होकर पेशावर लौटे तथा समाज की स्थापना करदी, जिसके वे स्वयं प्रधान थे।

इधर जब महर्षि जी लुधियाना पधारे तो पंचनद की भूमि ऋषि दयानन्द के वैदिकनाद से गुञ्जायमान हो उठी।

बम्बई में सरदार विक्रमसिंह ने महर्षि जी के व्याख्यान सुने थे। वह अपनी दो घोड़ों की बग्घी पर व्याख्यान सुनने आते थे। एक दिन ऋषि जी से ब्रह्मचर्य का बल दिखाने की प्रार्थना की तो ऋषिवर ने उत्तर दिया कि किसी अवसर पर आपकी इच्छापूर्ति करदी जायेगी। सरदार जी दो घोड़ों की बग्घी पर जाने लगे तो कोचवान ने घोड़ों को चाबुक लगाये, किन्तु घोड़े पूर्ण बल लगाकर भी बग्घी न खींच सके। कोचवान चाबुक लगा रहा था। घोड़े भी सरपट दौड़ जाना चाह रहे थे, किन्तु बग्घी हिलजुल कर आगे न बढ़ सकी, तब सरदार विक्रमसिंह ने पीछे मुड़कर देखा तो आश्चर्यचकित हो उठे कि महर्षि दयानन्द सरस्वती लंगोटधारी ने बग्घी को पीछे से हाथों से पकड़ कर रोक रखा था।

सरदार जी प्रसन्न मुद्रा में कहने लगे कि आपके ब्रह्मचर्य का बल देख लिया और प्रार्थना की कि जब आप पंजाब पधारें तो जालन्धर में अवश्य मेरी कोठी पर निवास करें। महर्षि जी ने उनकी इच्छा भी पूर्ण की और लुधियाना प्रचार के अनन्तर जालन्धर पधारे। वहीं सरदार जी की कोठी पर प्रचार का क्रम जारी हुआ। वहीं एक शास्त्रार्थ भी हुआ। मुसलमानों ने ही ऋषिवर की विजय का लोहा माना। वह कोठी अब आर्यसमाज मन्दिर है।

ऋषि जी कोई डेढ़ वर्ष पंजाब में रहे। लुधियाना, जालन्धर, अमृतसर, गुरदासपुर, लाहौर, गुजरवाला, वजीराबाद, गुजरात, जेहलम, रावलपिण्डी और मुलतान पधारे। इन सब स्थानों पर आर्यसमाज की स्थापना होती चली गई।

लाहौर विद्या का केन्द्र था। पं० गुरुदत्तादि योग्य युवक आर्यसमाज के झण्डे के तले एकत्र होगये। इधर जालन्धर में महात्मा मुन्शीराम जी ने अपनी शानदार कोठी तक आर्यसमाज को दान में दे दी। जालन्धर में कन्या महाविद्यालय की नींव भी रखी गई। देवराज जी का सहयोग महात्मा मुन्शीराम जी को निरन्तर प्राप्त रहा। इन दोनों ने जनता के विरोध को कठोरता से सहन करते हुए आर्यसमाज को चार चांद लगा दिये।

लाहौर में प० गुरुदत्त जी के सतत प्रयत्नों से आर्यसमाज की आधार शिला रखी गई। कालांतर में वहीं लाहौर में सभा कार्यालय भी बना। इसी बीच दो सभाओं का आयोजन हुआ। एक सभा कार्यालय आर्यसमाज अनारकली और दूसरी ओर सभा कार्यालय गुरुदत्त भवन के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

प० लेखराम, महात्मा मुन्शीराम सभा प्रधान के प्राचीन वैदिकधर्म के प्रचार में ऐसे जुटे कि अन्ततः पवित्र वैदिकधर्म पर बलिदान होगये। प० लेखराम के साथ ही अनेक शहीदों ने अपने रक्त से वैदिकधर्म की नींव को सुदृढ़ किया।

हरयाणा ने १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम में सबसे अधिक बलिदान देकर आंगल सरकार की नींव हिलाकर रख दी। इस तप, त्याग के बदले आंगल सरकार ने हरयाणा की बोटी-बोटी नोच डाली और नगरों तथा ग्रामों को भिन्न-भिन्न रियासतों में बांट दिया।

वीरता प्रधान हरयाणा महर्षि दयानन्द के वैदिक नाद के तत्वाधान में फिर आगे बढ़ा और भारत राष्ट्र का सरमौर बनकर गुरुकुलों और वैदिक पाठशालाओं की उच्च शृंखला के साथ हिमालय के उच्च शिखरों का साम्मुख्य करने लगा।

आज ऋषि के वैदिक विचारों का सर्वोच्च स्थान किसी प्रदेश को दिया जाये तो वह हरयाणा है जहां गुरुकुलों और वैदिक पाठशालाओं का जाल बिछा हुआ है।

आचार्यप्रवर स्वामी ओमानन्द जी महाराज हरयाणा के सुदृढ सर्वोच्च स्तम्भ हैं। स्वर्गीय श्री सिद्धांती जी और उनके सहयोगी श्री पं. रघुवीरसिंह शास्त्री हरयाणा की बलि दे दी, पर अपना सर्वस्व न्यौछावर कर गये।

सहस्रों पाठशालायें, आर्य स्कूल तथा अनेकानेक गुरुकुल, पुत्री पाठशालायें तथा कन्या गुरुकुल इस आर्य भूमि की शान हैं।

हरयाणा को एक नासूर भी कष्टदायक है और वह है मेवात मेवराजपूत आर्यजाति की भूल तथा मेवात के ग्रामीण हिन्दुओं की संकीर्णता से यह इलाका हमारे देखते-देखते स्वतन्त्र भारत में विधर्मियों की गोद में चला गया।

इसे वापिस लौटाना यह आज की गुंजार है। हरयाणा शताब्दी इस गुजार को सुने और मेरी पुकार या गुहार को स्वीकारे तो मेवात का बेड़ा पार है। पू० स्वामी ओमानन्द जी महाराज तथा उनकी सहस्रों की शिष्य मण्डली और उनके इशारे पर बलि देने हारे हरयाणा के सहस्रों वीर योद्धा इस धर्मयुद्ध में कूदकर मेवात को ठीक करदे तो सचमुच हरयाणा भारत का त्राता, मुक्तिदाता बनकर चमत्कृत होगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के पूर्व प्रधान—

श्री स्वामी सत्यानन्द जी सरस्वती का स्वर्गवास

आर्यजगत् को यह जानकर दुःख होगा कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान तथा दयानन्दमठ दीनानगर मोहल्ला जालन्धर के संस्थापक श्री स्वामी सत्यानन्द जी सरस्वती (पूर्व आचार्य रामदेव जी) का उधमपुर (जम्मू) में २२ जनवरी, ८७ को स्वर्गवास होगया। आपने श्री स्वामी आत्मानन्द जी से सन्यास आश्रम में प्रवेश करके सभा द्वारा संचालित दयानन्द उपदेशक विद्यालय एवं आश्रम यमुनानगर का भी संचालन किया था। आपने गुरुकुल जेहलम (पाकिस्तान) की भी १९३२ में स्थापना की थी। सन् १९३८ के हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में ७८ व्यक्तियों के साथ सत्याग्रह का नेतृत्व किया था। आपने हिन्दी रक्षा तथा गोरक्षा आंदोलन में भी प्रमुख भूमिका निभाई थी।

२२-१-८७ को २ बजे वैदिक साधनाश्रम यमुनानगर में इन्हें श्रद्धांजलि दी गई। परमात्मा से प्रार्थना है कि इनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापना शताब्दी समारोह—

महेन्द्रगढ़ क्षेत्र आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं में उत्साह की लहर

नारनौल। फरवरी (श्री केदारसिंह आर्य द्वारा) आज यहां आर्यसमाज मन्दिर सधीवाडा के प्रांगण में आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापना शताब्दी समारोह की तैयारी के लिए जि० महेन्द्रगढ़ के आर्यसमाज के अधिकारियों तथा कार्यकर्त्ताओं का सम्मेलन श्री हनुमानप्रसाद संघी एडवोकेट की अध्यक्षता में बाद दोपहर २ बजे सभा के भजनोपदेशक प. मुरारीलाल बेचैन के भजनों के साथ आरम्भ हुआ।

सभा के महोपदेशक प० सुखदेव शास्त्री ने उपस्थित आर्य नर-नारियों को अपने जोशीले भाषण में कहा कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने अपने १०० वर्ष के कार्यकाल में स्वामी श्रद्धानन्द जी, स्वामी वेदानन्द जी, स्वामी आत्मानन्द जी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, पं० गुरुदत्त विद्यार्थी, प० लेखराम आर्य मुसाफिर, प० बुद्धदेव विद्यालंकार, (स्वामी समर्पणानन्द), पं० मन्सारा‍म, पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति, प. समरसिंह, पं० रामस्वरूप शात, प० रघुवीरसिंह शास्त्री, महाशय कृष्ण जी, महात्मा आनन्द भिक्षु, पं० शिवकुमार शास्त्री, प० जगदेवसिंह सिद्धांती, आचार्य विष्णुमित्र आदि चोटी के नेता तथा उपदेशक राष्ट्र को दिये हैं।

आज भी स्वामी सर्वानन्द जी, स्वामी ओमानन्द जी, स्वामी वेदानन्द जी, स्वामी रामेश्वरानन्द जी, स्वामी आनन्दबोध जी, स्वामी विद्यानन्द जी, प्रो० शेरसिंह जी, स्वामी जीवनानन्द, स्वामी सुमेधानन्द, श्री वीरेन्द्र, श्री योगेन्द्रपाल शास्त्री आदि आर्यनेता सभा का मार्गदर्शन कर रहे हैं।

पंजाब सभा के पूर्व वेदप्रचाराधिष्ठाता पं० शांतिप्रकाश शास्त्रार्थ महारथी, प० शिवकुमार शास्त्री जैसे राष्ट्रीयस्तर के महोपदेशक आदि ऋषि दयानन्द का सन्देश फैलाने के लिए ८० वर्ष की आयु में भी दिन रात प्रचार कार्य में रत है। अत: आर्यजनता को सभा शताब्दी समारोह मनाकर अपने शानदार इतिहास की जानकारी भारत की जनता को देने की तैयारी करनी चाहिए। इस समारोह के अवसर पर विभिन्न सभाओं के भविष्य को उज्ज्वल बनाने पर विचार करेंगे।

आर्य वीरदल पाटौदी के संचालक मा० खजानसिंह आर्य ने शताब्दी समारोह का स्वागत करते हुए कहा कि पाटौदी क्षेत्र से आर्य वीरदल के १०० सैनिक साइकलों पर यात्रा करके ग्राम-ग्राम में ऋषि का सन्देश सुनाते हुए रोहतक पहुँचेंगे। शिक्षण शिविर लगाकर युवकों को आर्यसमाज के रंग में रंगने का प्रयत्न किया जायेगा।

सभा के कोषाध्यक्ष मा० बद्रीप्रसाद आर्य ने इस अवसर पर आर्यसमाजों के अधिकारियों से सहयोग देने की अपील करते हुए कहा कि सभा शताब्दी की सफलता के लिए तन, मन तथा धन देने की आवश्यकता है। ग्राम-ग्राम में वेद सन्देश पहुंचाने हेतु सैकड़ों उपदेशकों की मांग है। योग्य तथा प्रभावशाली उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों को अच्छा वेतन देकर ही नियुक्त किया जा सकेगा। हरयाणा सभा के कार्यालय में, विशाल वैदिक पुस्तकालय, अतिथिशाला, सभागार, भोजनालय आदि के निर्माण पर लाखों रुपये खर्च करने होंगे। अत: प्रत्येक आर्य नर-नारी को इस कार्य में अपना योगदान करना चाहिए।

सभामन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री ने अपने व्याख्यान में आर्यों को झंझोड़ते हुए कहा कि हम कड़वी बातें भी सुनने की सहनशक्ति रखें। आर्य शब्द का अर्थ है श्रेष्ठ, सदाचारी, धर्मात्मा, प्रगतिशील व्यक्ति तथा आर्यसमाज श्रेष्ठ व्यक्तियों के समूह को कहते हैं। परन्तु आज आर्यों में कमजोरी आने लग गई है। आर्यों के बच्चे आर्य न बनकर अनार्य बनते जारहे हैं। आर्यसमाज का उद्देश्य सामाजिक बुराइयों को दूर करना है। अत: हमें सबसे पहले अपनी त्रुटियों को दूर करके अन्य पड़ोसियों की त्रुटियां छुड़ाने का यत्न करना होगा। कथनी और करनी में अन्तर नहीं होना चाहिए। आर्यसमाजों तथा आर्यसंस्थाओं में आर्यों की नियुक्तियां करनी चाहिये। परन्तु आज आर्य विद्यालयों में आर्य बहुत कम दिखाई देते हैं। इसी कारण विद्यालयों में बच्चे आर्य के स्थान पर अनार्य बन रहे हैं।

श्री फूलचन्द शास्त्री ने सभामन्त्री जी के सुझाव का समर्थन करते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति संस्कृत भाषा से जुड़ी है। परन्तु नई शिक्षा-नीति में संस्कृत की उपेक्षा की जारही है। आपने प्रो० शेरसिंह जी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा कि उन्होंने केन्द्र में शिक्षामन्त्री के काल में संस्कृत अध्यापकों को अंग्रेजी भाषा के बी० ए० अध्यापकों के समान वेतनमान स्वीकार करवाकर महान् कार्य किया था।

आचार्य विश्वपाल शास्त्री ने अपने व्याख्यान में आर्यों को परामर्श दिया कि वे ऋषि दयानन्द द्वारा लिखित ऐतिहासिक ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश पढ़कर मार्गदर्शन प्राप्त करें। अपने बच्चों को गुरुकुलों में शिक्षा दिलाकर आर्य बनावें।

आर्यसमाज नारनौल के मन्त्री श्री बलवीरसिंह एडवोकेट ने सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह का स्वागत करते हुए कहा कि सरदार प्रतापसिंह कैरो ने इनकी योग्यता का लोहा मानते हुए अपने मन्त्रीमण्डल में उप-मुख्यमन्त्री बनाया था, परन्तु कैरो द्वारा पंजाबी भाषा को हरयाणा की जनता पर बलात् लादने पर मन्त्रीमण्डल से त्याग-पत्र देकर हिन्दी-रक्षा आंदोलन में कूदकर जेलयात्रा की थी। आपने ही अपने मन्त्रीकाल में जि० रोहतक में शराबबन्दी लागू करवाकर अनुकरणीय कार्य किया था, परन्तु अन्य मन्त्रियों ने इनका इस महान् कार्य में उस समय साथ नहीं दिया। मैं नारनौल क्षेत्र को आर्यजनता की ओर से इन्हें विश्वास दिलाता हूं कि शताब्दी समारोह को सफल करने के लिए तन, मन, धन तथा जन से पूरी शक्ति के साथ सहयोग दिया जायेगा।

श्री हनुमानप्रसाद संघी एडवोकेट ने भी प्रधान जी को विश्वास दिलाया कि सभा के आदेशानुसार हम आज से ही तैयारी में जुट जायेंगे। प्रो० शेरसिंह सभा प्रधान ने आर्यजनता द्वारा स्नेहपूर्ण स्वागत करने का धन्यवाद करते हुए कहा कि आर्यसमाज ने अपने जन्मकाल से ही बुराइयों के उन्मूलन के लिए आन्दोलन किये हैं। अत: आर्यसमाज सम्प्रदाय न होकर समाज-सुधार करने के लिए एक आंदोलन है और पूर्व की भांति इस आंदोलन को चालू रखने में पूरी शक्ति लगादी जायेगी।

आपने राष्ट्र की वर्तमान परिस्थितियों की चर्चा करते हुए कहा कि आज भारत पाकिस्तान की सेनायें पंजाब की सीमाओं पर आमने-सामने खड़ी हैं। अमेरिका पाकिस्तान को मोहरा बनाकर भारत के पुन: टुकड़े करना चाहता है। उग्रवादियों को गुरिल्ला युद्ध की ट्रेनिंग देकर पाकिस्तान पंजाब में निर्दोष नर नारियों की हत्यायें प्रतिदिन करा रहा है। पंथक कमेटी के प्रस्तावानुसार भारत पाक युद्ध होने पर महान् गुरुओं के बिगड़े हुए शिष्य (सिख) पाकिस्तान का साथ देने की तैयारी में हैं। अत: हरयाणा भूमि में ही युद्ध का मुकाबला होगा। आर्यसमाज ने पूर्व भी स्वतन्त्रता संग्राम में सबसे अधिक भाग लिया था। अत: अब पुन: राष्ट्र की रक्षा की तैयारी हमें करनी है। भारत की सेनायें संसार की सबसे अधिक शक्तिशाली सेनाओं में मानी जाती हैं। परन्तु हमें अन्दर के शत्रुओं से सावधान रहना है। आपने रहस्योद्घाटन करते हुए कहा कि आर्यसमाज से प्रभावित सिखों ने ही स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लिया है। अकाली सिखों ने सदा भारत से गद्दारी की है। गुरुओं ने गौ तथा ब्राह्मणों की रक्षा के लिए बलिदान दिये थे, परन्तु आज के बिगड़े हुए उनके शिष्य (सिख उग्रवादी) मन्दिरों में गोमांस फकते हैं तथा ब्राह्मणों की हत्यायें कर रहे हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के शताब्दी समारोह का उल्लेख करते हुए सभाप्रधान जी ने कहा कि लखनऊ में लाखों आर्य नर-नारियों ने एक स्वर के साथ राष्ट्र-रक्षा तथा समाज-सुधार करने का संकल्प दोहराया था। अत: प्रतिनिधि सभा का शताब्दी समारोह हरयाणा को वीरभूमि में करके अपने विशाल संगठन का परिचय देना है और राष्ट्र

(शेष पृष्ठ ५ पर)

आर्य प्रतिनिधि सभा की शताब्दी सफल करने के लिए—

सभा अधिकारियों का हरयाणा में तूफानी भ्रमण

आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापना शताब्दी समारोह को सफल करने के लिए सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह, उपप्रधान म० भरतसिंह, मन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री, कोषाध्यक्ष मा० बद्रीप्रसाद आर्य तथा शताब्दी समारोह में संयोजक बा० रघुवीरसिंह आदि आर्य नेता हरयाणा के आर्यसमाजों के अधिकारियों तथा कार्यकर्त्ताओं से सम्पर्क तथा विचार-विमर्श हेतु निम्नलिखित स्थानों का तूफानी भ्रमण कर रहे हैं—

आर्यसमाज चरखी दादरी जि० भिवानी ११ फरवरी प्रात: ११ बजे
- ,, घण्टाघर भिवानी ११ फरवरी दोपहर बाद ३ बजे
- ,, कन्या गुरुकुल मोरमाजरा जि० करनाल १३ फरवरी रात्रि ८ बजे
- ,, लाडवा जि० कुरुक्षेत्र १४ फरवरी प्रात: ९ बजे
- ,, रेलवे रोड यमुनानगर जि० अम्बाला १४ फरवरी दोपहर १२ बजे।
- ,, महर्षि दयानन्द मार्ग कबाड़ी बाजार अम्बाला छावनी १४ फरवरी दोपहर बाद ३-३० बजे
- ,, जींद शहर २१ फरवरी को प्रात: १० बजे

सभा कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक २१ फरवरी दोपहर बाद २ बजे
आर्यसमाज वल्लबगढ जि० फरीदाबाद २२ फरवरी प्रात: ११ बजे
- ,, हांसी जि० हिसार २५ फरवरी प्रात ११ बजे
- ,, हिसार २५ फरवरी दोपहर बाद १ बजे
- ,, अबोहर २६ फरवरी प्रात: १० बजे
- ,, सिरसा २६ फरवरी दोपहर बाद २ बजे
- ,, नेहरू ग्राउण्ड फरीदाबाद शहर २७ फरवरी दोपहर बाद ३ बजे

गुरुकुल महाविद्यालय झज्जर जि० रोहतक १ मार्च

—केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष

आवश्यक बैठक

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह १९३८-३९ के हरयाणा के सत्याग्रहियों की एक आवश्यक बैठक ता० १४-२-८७ को दिन के ११ बजे दयानन्दमठ रोहतक में होगी। आपसे निवेदन है कि आप ठीक समय पर पधारकर अनुगृहीत करें।

निवेदक : महाशय भरतसिंह वानप्रस्थी
हैदराबाद आर्य सत्याग्रह स्वतन्त्रता सेनानी

(पृष्ठ ४ का शेष)

द्रोहियों को चुनौती देनी है कि राष्ट्र को पुन: खण्डित करनेवालों के षड्यन्त्र को विफल करने के लिए उनके विरुद्ध जनमत तैयार करना है। यह जनमत निरन्तर प्रचार करने तथा विशाल शोभायात्रा, विशाल सम्मेलन आदि करके ही तैयार होगा। सभा के अधिकारी हरयाणा के अतिरिक्त चण्डीगढ़ तथा अबोहर फाजिल्का क्षेत्रों का भी भ्रमण करने का कार्यक्रम तैयार कर रहे हैं।

आपने आर्यजनता से सभा द्वारा चलाये गये शराबबन्दी आंदोलन में सहयोग करने का अनुरोध करते हुए कहा कि ग्रामीण पंचायतों से शराबबन्दी प्रस्ताव तथा नगरों से शराबबन्दी हस्ताक्षर करवाने के ठोस कार्य में आज से ही जुट जायें। शराबी मन्त्रियों, विधायकों तथा अधिकारियों के विरुद्ध अपनी आवाज बुलन्द करें। हरयाणा में नशाबन्दी के लिए वातावरण तैयार करने में सहयोग करें। सभा के सुरीले भजनोपदेशक पं० समेरसिंह तथा बहन कृष्णा देवी ने अपने गीतों से जनता को प्रभावित किया। सम्मेलन के अन्त में बा० उदमीराम एडवोकेट ने नारनौल पधारने पर सभा अधिकारियों का धन्यवाद किया। सभा को ६०० रुपये प्रदान किये।

हरयाणा के आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से गतवर्षों से शराबबन्दी अभियान चलाया जारहा है। इसके परिणामस्वरूप हरयाणा विधान सभा के गत अधिवेशन में नशाबन्दी लागू करने की मांग की गई थी। हरयाणा के मुख्यमन्त्री ने भी नरवाना में आयोजित नशाबन्दी सम्मेलन में नशाबन्दी कार्य में सहयोग करने का वचन दिया था। पंचायतों से प्रस्ताव भी समय पर भिजवाये गये हैं।

अत: २१ फरवरी शनिवार को हरयाणा के आर्यसमाज के अधिकारी तथा कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि अपने जिले के उपायुक्त कार्यालय में पूर्ण शराबबन्दी लागू करने के लिए सैकड़ों की संख्या में उपस्थित होकर ज्ञापन देवें।

—सभामन्त्री

आर्य पुरोहितों की आवश्यकता

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को आर्यसमाजों में नियुक्त करने के लिए आर्य पुरोहितों की आवश्यकता है। सेवा-निवृत गुरुकुलों के स्नातकों और अध्यापकों को प्राथमिकता दी जायेगी। वैदिकरीति के अनुसार ग्रामों में संस्कार कराने, सत्संगों में यज्ञ तथा प्रवचन करने का अनुभव रखनेवाले महानुभाव अपनी योग्यता, अनुभव, आयु आदि के प्रमाण-पत्रों सहित अपने आवेदन-पत्र निम्न पते पर भेजें। दक्षिणा योग्यता तथा अनुभव और कार्य के आधार पर दी जायेगी।

—वेदव्रत शास्त्री
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

मुन्शी की आवश्यकता

एक आर्य नवयुवक जिसका लेख बहुत अच्छा तथा साफ होना आवश्यक है, मुन्शी के कार्य करने में रुचि हो। इच्छुक महानुभाव निम्न पते पर सम्पर्क करें।

—राममेहर एडवोकेट
सोनीपत रोड, रोहतक : फोन २६५६

फरवरी मास में आर्यसमाजों के उत्सव

कन्या गुरुकुल मोरमाजरा	१३ से १५ फरवरी
गुरुकुल गदपुरी जि० फरीदाबाद	१३ से १५ ,,
आर्यसमाज औरंगाबाद मितरोल जि० फरीदाबाद	१३ से १५ ,,

शोक समाचार

१—श्री सोहनलाल आर्य मिस्त्री रोहतक की धर्मपत्नी श्रीमती जयदेवी जी का गतमास स्वर्गवास होगया। उनकी आयु ६० वर्ष के लगभग थी। वे यज्ञप्रेमी थीं। प्रतिदिन अपने पति जी के साथ दयानन्दमठ की यज्ञशाला में यज्ञ करती थीं। आर्यसमाज के कार्यों में सदा सहयोग भी करती थीं।

२—बा० उदमीराम जी एडवोकेट नारनौल के छोटे भाई श्री लालचन्द जी का ६५ वर्ष की आयु में जोशीमठ में निधन होगया। वे वहां व्यापार का कार्य करते हुए आर्यसमाज तथा समाज-सुधार के कार्यों में रुचि रखते थे।

३—ग्राम लाढौत, जि० रोहतक के सुप्रसिद्ध आर्यसमाजी तथा दानवीर श्री हरिसिंह जी का ३१ जनवरी, ८७ को ९५ वर्ष की आयु में निधन होगया। आपने झज्जर, नरेला तथा मटिण्डू गुरुकुलों में उदारतापूर्वक दान दिया। उनके सुपुत्र श्री हरिदत्त जी शास्त्री गुरुकुल मटिण्डू के आचार्य हैं।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति प्रदान करे।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

आशुलिपिकों की नियुक्ति

देखने में आरहा है कि अनेक सरकारी कार्यालयों तथा निगमों आदि के द्वारा हिन्दी भाषी क्षेत्र के लिए भी काफी संख्या में केवल अंग्रेजी के आशुलिपिक तथा अंग्रेजी के टाइपिस्ट नियुक्त किये जारहे हैं। उदाहरण के लिए हाल ही में रेलवे रिक्रुटमैंट बोर्ड, इलाहाबाद द्वारा ५० अंग्रेजी के आशुलिपिकों के पदों के लिए विज्ञापन प्रकाशित हुआ है। ओरियण्टल इन्स्योरेन्स कम्पनी लिमिटेड, नई दिल्ली द्वारा १२६ अंग्रेजी के टाइपिस्टों तथा अंग्रेजी आशुलिपिकों के पदों के लिए एक विज्ञापन प्रकाशित कराया गया है। नेशनल इन्स्योरेन्स कम्पनी लिमिटेड, नई दिल्ली ने भी २०६ अंग्रेजी के टाइपिस्टों के लिए विज्ञापन प्रकाशित कराया है। इन तीनों विज्ञापनों के विषय में केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् की ओर से सम्बन्धित केन्द्रीय सरकार के मन्त्रियों तथा सचिवों, राजभाषा विभाग और संसदीय राजभाषा समिति को पत्र लिखे गये हैं। ऐसे ही बहुत से पत्र पहले भी लिखे जाते रहे हैं। किन्तु इस विषय में अभी तक आशानुकूल सफलता नहीं मिली है।

२—मार्च, १९७६ में भारत सरकार के राजभाषा विभाग ने ऐसे आदेश जारी किये थे कि हिन्दी भाषी क्षेत्र में न्यून से न्यून २५-२५ प्रतिशत हिन्दी के ही आशुलिपिक रखे जायें और इस प्रतिशत को धीरे-धीरे बढ़ाया जाये। उसके पश्चात् जून, १९७६ में राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा नियमावली जारी करदी गई थी। अब हिन्दी के प्रयोग सबंधी वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार हिन्दी भाषी क्षेत्र में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में लगभग शत-प्रतिशत कार्य हिन्दी में किया जाना जरूरी है। अब अनेक कार्यालयों के अधिकारी अपनी ओर से हिन्दी में काम करना और कराना चाहते हैं, किन्तु हिन्दी के टाइपिस्टों और हिन्दी के आशुलिपिकों के अभाव में उनके लिए ऐसा करना कठिन होता है। उधर भर्ती के समय केवल अंग्रेजी के आशुलिपिक तथा टाइपिस्ट रख लिये जाते हैं। इस प्रकार एक दुष्चक्र चलता रहता है, जिसे तोड़ा जाना जरूरी है।

३—लगभग १८ वर्ष की अवस्था में एक आशुलिपिक टाइपिस्ट नियुक्त हो जाता है। इस प्रकार अंग्रेजी के आशुलिपिकों तथा टाइपिस्टों के रखे जाने से आगामी ४० वर्ष (उनकी सेवा नियुक्ति का समय) तक हिन्दी के प्रयोग के कार्य में बाधा हो जाती है।

४—हिन्दी भाषी क्षेत्र में स्थित केन्द्रीय कार्यालयों में अंग्रेजी के आशुलिपिक तथा अंग्रेजी के टाइपिस्ट पहले से ही पर्याप्त संख्या में हैं। अतः जो कार्य अंग्रेजी में किया जाना जरूरी है, वह उनकी सहायता से किया जा सकता है। हिन्दी भाषी क्षेत्र में भी बड़ी संख्या में अंग्रेजी के आशुलिपिकों तथा टाइपिस्टों के रखे जाते रहने से हिन्दी क्षेत्र में हिन्दी में शत-प्रतिशत पत्राचार की आशा रखना बालू से तेल निकालने के समान है। अत: यह आवश्यक है कि हिन्दी क्षेत्र में हिन्दी के ही आशुलिपिक और टाइपिस्ट रखे जाने के लिए विशेष प्रयत्न किये जायें और अनेक संस्थाओं और व्यक्तियों द्वारा सम्बन्धित अधिकारियों को पत्र भेजे जायें। हिन्दी सलाहकार समितियों, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों और राजभाषा कार्यान्वयन समितियों में भी इस मामले को उठाया जाये।

५—अत: भारत सरकार अथवा राज्य सरकार के हिन्दी भाषी क्षेत्र में स्थित कार्यालयों में अथवा उनके उपक्रमों में अंग्रेजी के आशुलिपिकों और अंग्रेजी के टाइपिस्टों की मांग सम्बन्धी यदि कोई विज्ञापन देखें तो कृपया सम्बन्धित अधिकारियों को पत्र भिजवा दिया करें तथा उसकी प्रति केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्, एक्स वाई-६८, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-११००२३ को भी भिजवा दिया करें।

—डा० सूरजपाल शर्मा
महामन्त्री केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्,
एक्स० वाई-६८, सरोजनी नगर, नई दिल्ली-११००२३

गोनियाना मण्डी में मकर सक्रांति पर यज्ञ

मकर सक्रांति पर्व पर श्री जगदीशराय जी मन्त्री आर्यसमाज गोनियाना मण्डी ने अपने परिवार में श्री ओम्प्रकाश जी आर्य वानप्रस्थी अधिष्ठाता, आर्य वानप्रस्थ आश्रम भटिण्डा को बुलाकर अपने घर यज्ञ कराया और इस अवसर पर श्री जगदीशराम जी ने एक बोरी गेहूं आर्य वानप्रस्थ आश्रम भटिण्डा को दान दी। इसी दिन श्री ज्ञानचन्द जी सुपुत्र श्री रामजादास जी गोनियाना ने अपने नये मकान में गृह-प्रवेश संस्कार पर हवन-यज्ञ किया और २१) आर्य वानप्रस्थ आश्रम को दान दिया।

किला मोहल्ला सुधार सभा रोहतक का वार्षिक समारोह

१३ जनवरी : प्रति वर्ष की तरह इस सभा की ओर से मोहल्ला निवासियों के लिए खेलों का आयोजन किया गया। इसमें क्रिकेट, बैडमिण्टन, कैरम बोर्ड, म्यूजिकल चेयर रेस आदि में काफी हर्षोल्लास पाया गया। इसके फलस्वरूप मोहल्ला निवासियों में आपसी मेलजोल, भाईचारा, अनुशासन एवं अच्छे नागरिक बनने की भावना उत्तेजित हुई। इस अवसर पर लोहड़ी का त्यौहार भी बड़ी धूमधाम से मनाया गया। जिसमें सैकड़ों मोहल्ला निवासी एवं अन्य नागरिक सम्मिलित हुए। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री आर० एस० चौधरी एच० सी० एस०, प्रशासक महोदय नगर पालिका रोहतक ने विजेताओं को पुरस्कार वितरित किये। उन्होंने इस सभा के कार्यों की सराहना की और शुभ कामनायें दीं।

यमुनानगर में वेदप्रचार सप्ताह

आर्यसमाज छोटा माडल टाउन का वेदप्रचार सप्ताह दिनांक १-१२-८६ से ७-१२-८६ तक बड़े समारोह से मनाया गया, जिसमें प० रणवीरसिंह जी शास्त्री का प्रतिदिन वेद उपदेश तथा हरिश्चन्द्र और राजबल की भजनमण्डलियों के भजन उपदेश हुए। लोगों ने बड़ी श्रद्धा और प्रेम से भाग लिया। समाज की ओर से सभा को ४७०) वेदप्रचार दिया गया। यमुनानगर की सभी समाजों ने इसमें भाग लिया।

—वैद्य गेन्दाराम मन्त्री

अब तू जल्दी जाग बन्दे

अब तू जल्दी जाग बन्दे और विषयों ने त्याग बन्दे।
छोड़ गन्दे राग बन्दे तुम्हें देश बचाना है॥ टेक

उस वसन से क्या लाभ जो तन को हानि पहुँचाता है।
अग्नि प्रवेश हो जाने पर फिर आलू-सा भुन जाता है।
अब फैशन को त्याग बन्दे करे क्यों यौवन बर्बाद बन्दे।
सभी विषयों को त्याग बन्दे जो जीवन सफल बनाना है॥१

नौजवानी सफल बनाकर देश को ऊंचा उठाओ।
गन्दे नावल छोड़ 'सत्यार्थप्रकाश' को उठाओ।
त्याग सिनेमा सांग बन्दे मद्य, मांस और भांग बन्दे।
चाय का ये जाम बन्दे छोड़ना और छुड़वाना है॥२

चोर, जार, रिश्वतखोर, गऊ घातक अन्याई को।
सफाई कर इन दुष्टों को मत मार निज भाई को।
छोड़ जलन और द्वेष को महान् बनाओ देश को।
ऋषि के सन्देश को घर-घर में पहुंचाना है॥३

उठ जाओ वीरो रणधीरो समय की पुकार सुनो।
दीन जनता को दुष्ट मारें उनकी हाहाकार सुनो।
मिटा दुष्टों का निशान अब कुछ तो करलो ध्यान अब।
'बलवन्तसिंह' का व्याख्यान अब 'कर्मचन्द' सबको समझाना है॥४

—श्री बलवन्तसिंह आर्य ठसका, नारायणगढ़, अम्बाला

(पृष्ठ १ का शेष)

अपितु प्राणि मात्र के। पिता ही हो, सो बात भी नहीं, वह तो पिताओं के भी पिता हैं, तब फिर उन जैसे पावन देव के लिए 'सूनवे पिता इव' पुत्र के लिए पिता जैसे शब्दों का प्रयोग अत्युत्तम और सार्थक है। हो भी क्यों नहीं—वैदिकभक्तों के द्वारा प्रभु से प्रार्थना करते समय इसी प्रकार के शब्दों का प्रयोग शोभा देता है।

प्रभु से मांग है कि आप पिता की भांति (सूपायन भव) सुख के हेतु पदार्थों की प्राप्ति करानेवाले होवो। परमात्मा तो समस्त संसार के स्वामी हैं। संसार की समस्त सम्पत्ति उन्हीं की है। वह लक्ष्मीपति हैं, लक्ष्मीपति, लक्ष्मी अर्थात् सम्पत्ति के स्वामी। जब समस्त सम्पत्ति के स्वामी प्रभु हैं तो मांगें किससे और क्या देगा कोई ? जब किसी का अपना है ही कुछ नहीं, सब उस प्रभु का ही है। जब सब उसी के दर के भिखारी हैं तो सांसारिक लोगों से, दुनियादारों से क्या मांगे ?

मंगतों से क्या मांगना ? भिखारी के द्वार पर अलख जगाने से क्या लाभ ? वैदिकभक्त उसी द्वार पर, उस लक्ष्मीपति के ही द्वार पर मांगते हैं, क्योंकि वह जानते हैं कि वही सच्चा दाता है, देता है और न लेने की पवित्र भावना से देता है। उसे चाहिए भी क्या ? उसके तो भण्डार भरपूर हैं। उसकी सम्पत्ति उसके धन का कोष, उसका भण्डार तो अक्षय है—अक्षय जो कभी क्षय को, क्षरण को, विनाश को प्राप्त नहीं होता। विनाश ही क्या ? उसमें तो कमी भी कमी नहीं आती। सुख के हेतु समस्त पदार्थ, समस्त सुख-साधन, सुखभोग रूप, समस्त सामग्री उसके भण्डारों में भरी पड़ी है।

(न: स्वस्तये सचस्व) हमारा कल्याण के लिए मेल कराइये। बड़े पते की बात कही है वैदिकभक्तों ने। चाहे कितनी भी सुख सामग्री पास हो, चाहे सम्पत्ति के भण्डार भरे हों, किन्तु बिना मेल के कल्याण नहीं हो सकता। सदा सर्वदा भय का साम्राज्य बना ही रहता है। अनेकता, वैर-विरोध सदैव कष्टप्रद ही होता है। अत एव मेल का होना अत्यावश्यक है। मेल संसार के सारे सुखों का हेतु, संसार की समस्त भोज्य सामग्री से भी बढ़कर है। अतः भक्तों ने अन्य सुख-साधनों के साथ-साथ मेल कराने की भी मांग प्रस्तुत की है। यदि मेल कराने की मांग इस प्रार्थना में सम्मिलित न होती तो प्रार्थना ही अधूरी रह जाती। यही तो है वेद का वेदत्व और यही है वैदिकभक्त की उत्कृष्टता।

वाह रे वैदिकभक्तो ! प्रार्थना क्या है ? अमूल्य मोतियों की लड़ी है। हे ज्ञानस्वरूप प्रभो ! जिस प्रकार पिता पुत्र के प्रति सुख के साधनों को जुटाता है, उसी प्रकार आप भी हमको समस्त सुख के हेतु पदार्थ प्राप्त कराइये तथा हमारा परस्पर मेल कराइये अर्थात् हम पर ऐसी कृपा कीजिए कि हम सदैव मेल-मिलापपूर्वक रहते हुए सांसारिक सुख समृद्धि का उपयोग करते रहें।

हे तेजरूप भगवन्, हमको तेजस्वी करदो।
अग्निस्वरूप तुम हो, हममें प्रकाश भरदो।
जैसे निकट में रहकर, पालन पिता है करता।
तुम भी उसी के सदृश, रक्षण हमारा करदो।
'न: स्वस्तये सचस्व', करवा के मेल हम में।
कल्याणकारी भगवन्, कल्याण सबका करदो।
हे ईश ! यह विनय है, तुमसे हमारी हरदम।
अपने सभी गुणों को, हममें भी नाथ भरदो॥

शुभ विवाह

दिनांक २०-१२-८६ को श्री दलीपसिंह जी आर्य संस्कृत विभाग हरयाणा के भूतपूर्व निदेशक रोहतक निवासी के सुपुत्र श्री चन्द्रशेखर जी आर्य एवं महेन्द्रसिंह मलहान की सुपुत्री सुनीता आर्या नगर झज्जर का शुभ विवाह संस्कार महाशय बुद्धराम जी आर्य गुरुकुल झज्जर ने वैदिकरीति से सम्पन्न कराया। श्री दलीपसिंह जी के समस्त परिवार ने भाग लेकर मन्त्र पाठ किया। वर-वधू की ओर से दो सौ रुपये की राशि गुरुकुल झज्जर को प्रदान की गई। पश्चात् महाशय बुद्धराम जी ने वर-वधू को व्याख्या सहित समझाकर आशीर्वाद दिया।

आर्यसमाज बेरी का वार्षिक चुनाव

अध्यक्ष—सर्वश्री सूबेदार अखेराम, उपाध्यक्ष—रिसालदार मेजर लालचन्द वीरचक्र, मन्त्री—सूबेदार रामकिशन, उपमन्त्री—सूबेदार हरिसिंह, कोषाध्यक्ष—मा० रणधीरसिंह, पुस्तकाध्यक्ष—हवलदार रतनसिंह, लेखानिरीक्षक—दलपतसिंह।

शराबियो चेतो ! क्यों अपने पूर्वजों के नाम पर धब्बा लगाते हो ?

१. शराब पीना पाप है, शराब पिलाना महापाप है।
२. जो शराब पीता है वह अपने बच्चों का खून पीता है।
३. शराब से करलो किनारा, वरना जीवन है अंधियारा।
४. अनेक दुर्गुणों की जननी मदिरा है।
५. शराब की आय का लोभ पतन की ओर ले जानेवाला है।
६. शराब की आदत संयमशक्ति को तोड़ देती है।
७. शराब की लानत गरीबी को बढ़ाती है।
८. समुद्र की अपेक्षा शराब ने अधिक मानवों को डुबाया है।
९. गरीब की आदमनी शराब में बह जाती है।
१०. शराब को बुलावा, गरीबी को बढ़ावा।
११. शराब के विष से पीलिया रोग हो जाता है।
१२. शराबी का व्यावहारिक ज्ञान लुप्त हो जाता है।
१३. शराब के प्रभाव से जिगर में घाव हो जाता है और उसकी अचानक मृत्यु हो जाती है।
१४. व्यसन मुक्त समाज ही उन्नत हो सकता है।
१५. शराब खराब है, शराब से सर्वनाश होता है।
१६. व्यसन की कमाई से जनकल्याण के काम दूषित होंगे।
१७. नशा न नर को चाहिये, नशा नरक की खान है।
१८. नशाबन्दी राष्ट्र-धर्म है।
१९. जो डूबे हैं विलासों में न उभरे जिन्दगानी में।
हजारों बह गये इन बोतलों के बन्द पानी में ॥
२०. न कर बर्बाद अपनी जिन्दगी बोतल के दिवाने।
वो काटेगा बुढ़ापे में जो बोयेगा जवानी में।
२१ ऐ शराब तूने अक्सर कोमों को खाके छोड़ा।
जिस घर में सिर उठाया उसको मिटाके छोड़ा।
२२. राजा के राज छीने शाहों के ताज छीने।
गर्दनकशों को अक्सर नीचा दिखा के छोड़ा।
२३ अफीम, गांजा, भांग, चरस मादक पोस्त शराब।
हे मित्रो देखो ध्यान से हैं सारे नशे खराब।
२४. शराब पीना छोड़ दो, शराब छोड़कर लोग महान् बनते हैं।
२५. महर्षि दयानन्द जी भी सत्यार्थप्रकाश में लिखते हैं कि मद्यपान, मांसादि का ग्रहण कदापि न करें।

—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी सभा उपदेशक

आर्यसमाज लूखी, महेन्द्रगढ़ का चुनाव

प्रधान–सर्वश्री तिरखाराम, उपप्रधान–सूबेदार रामस्वरूप, मन्त्री–महीपाल, उपमन्त्री–गणपतसिंह, कोषाध्यक्ष–जगदेवसिंह, उप-कोषाध्यक्ष श्रीनिवास, पुस्तकाध्यक्ष—विक्रमसिंह, प्रचारमन्त्री—सदाराम, रामदेव शास्त्री, मुरधर जी।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 राज० नं०

८१२ सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,०८७



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभा मन्त्री

सह-सम्पादक—डा० यज्ञवीर

वर्ष १४, अङ्क १२ १४ फरवरी, १९८७ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

आर्य प्रतिनिधि सभा का शताब्दी समारोह क्यों ?

(१८८५ से १९८५ तक का संक्षिप्त विवरण)

प्रस्तुतकर्ता—सुखदेव शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा

पृष्ठभूमि—युगप्रवर्तक, आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने सद् गुरुवर ब्रह्मर्षि दण्डी स्वामी विरजानन्द जी से वेदोद्धार एवं देशोद्धार की दीक्षा लेकर सन् १८६३ में कार्यक्षेत्र में उतरे थे। १८८३ में उनका महाबलिदान हुआ। इस प्रकार उन्हें कुल २० वर्ष काम करने को मिले। इन बीस वर्षों में भी पहले बारह वर्ष उन्होंने उस कार्य में लगाये जो एक माली किसी नये पौधे के लगाने से पहले भूमि की तैयारी में लगाता है। १८७५ में उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना की और इस पवित्र कार्य का शुभारम्भ बम्बई से किया।

महर्षि दयानन्द पंजाब में १८७७ में पधारे। लुधियाना पहला वह स्थान है जिसे ३१ मार्च, १८७७ को महर्षि ने अपने चरणों से पवित्र किया। उन्होंने १८ दिन यहां वैदिकधर्म का प्रचार किया और यहां से वे लाहौर पधारे। लाहौर पधारने पर १८७७ में महर्षि ने दो महत्त्वपूर्ण कार्य किये। लाहौर में आर्यसमाज की स्थापना से पहले बम्बई में निर्मित आर्यसमाज के नियमों को अन्तिम संक्षिप्त रूप दिया। आप आर्य भाई यह तो जानते ही होंगे कि बम्बई में बनाये गये आर्यसमाज के नियमों की संख्या पहले २८ थी। यहां उन पर पूर्ण विचार विनिमय हुआ और आर्यसमाज के वर्तमान दस नियमों का निर्णय पंजाब की तत्कालीन राजधानी लाहौर में हुआ। इस दृष्टि से आर्यसमाज के मूलाधार नियमों के अन्तिम रूप में निश्चित होने का गौरव पंजाब को प्राप्त है।

दूसरा कार्य १८७७ में महर्षि ने विदेश में वैदिकधर्म का प्रचार करने के लिए श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा को विदेशों में भेजा। उन्होंने विदेश जाकर अनेक कार्य वैदिकधर्म के प्रचारार्थ तथा देश की स्वाधीनता प्राप्ति के लिए किये। यह सभी जानते ही हैं।

लाहौर के पश्चात् महर्षि अमृतसर, गुरुदासपुर, फिरोजपुर, जालन्धर, रावलपिंडी, जेहलम, गुजरांवाला, वजीराबाद, मुलतान और अम्बाला में पधारे। इसके पश्चात् रिवाड़ी में भी आये। यह सम्पूर्ण यात्रा उन्होंने एक ही दौरे में की, जो पंजाब में उनका पहला और अंतिम दौरा था। वह लगभग डेढ़ वर्ष पंजाब में रहे। पंजाब में आने से पहले ही उनकी प्रसिद्धि पहुंच चुकी थी। मुन्शी कन्हैयालाल अलखधारी जो अपने समय के प्रसिद्ध व्यक्ति थे, अपने लेखों और ग्रन्थों में महर्षि की भरपूर प्रशंसा किया करते थे। महर्षि को वे भारत के २४ करोड़ लोगों के लिए एकमात्र नेता मानते थे। उनके लेखों का यह प्रभाव हुआ कि प्राय: पढ़े-लिखे लोग महर्षि के नाम से परिचित होगये थे और मुन्शी जी की प्रेरणा से महर्षि के ग्रंथों का अध्ययन भी करने लगे थे।

जिस समय वे पंजाब में पधारे, उस समय भारत में लार्ड लिटन वायसराय थे और महारानी विक्टोरिया के दिल्ली दरबार की प्रतिक्रिया सर्वत्र ताजा थी। राज्य की स्थिरता के कारण सब तरफ ईसाईयत के कदम जमने की सामग्री एकत्रित हो रही थी। इसलिए महर्षि की पहली मुठभेड़ ईसाइयों से हुई। ईसाई पादरी जो पंजाब में हिन्दुधर्म की पकी खेती को दोनों हाथों से लूटना चाहते थे, महर्षि दयानन्द के आगमन के कारण अपने उद्देश्य में सफल न हो सके।

ईसाइयों के अतिरिक्त कुछ पढ़े-लिखे लोगों में ब्रह्मसमाज का भी प्रभाव था, उनकी स्थिति भी कुछ ईसाइयों जैसी ही थी। वे भी महर्षि की कड़ी आलोचना का मुकाबला न कर सके।

हिन्दुओं में बहुमत पौराणिकों का था, जो महर्षि के समीप न फटकते थे। सम्भवत: इसी कारण उन्हें लाहौर में डा० रहीम खां की कोठी, अमृतसर में मियां जानमुहम्मद की कोठी और दूसरी बार लाहौर पधारने पर नवाब रजाअली खां के उद्यान में अपना डेरा लगाना पड़ा। इतना ही नहीं, अमृतसर में पौराणिकों ने प्रचार में महर्षि पर पत्थर बरसाये, जिनसे उनके मस्तक से खून बहने लगा। महर्षि ने खून को रुमाल से पूंछते हुए कहा—आज मुझ पर पत्थर बरसते हैं, एक समय ऐसा आयेगा कि मुझ पर फूलों की वर्षा होगी। पंजाब के ही गुजरात नामक स्थान पर भी उन पर ईंटों की भारी वर्षा की गई और वजीराबाद में तो स्थिति इससे भी भयानक थी।

इस पर भी महर्षि पीछे कब हटनेवाले थे। वे जहां भी पधारे वहां वहां आर्यसमाज की स्थापना होती चली गई। इसमें सच्चाई यह है कि जितने अल्पकाल में जितनी अधिक सफलता उन्हें पंजाब में प्राप्त हुई, उतनी शायद ही किसी प्रांत में हुई हो। कारण यह है कि पंजाबियों का हृदय और मस्तिष्क शीघ्र प्रभावित होता है और उस पर अमल करने में भी उन्हें बहुत समय नहीं लगता। सच तो यह है कि दूसरे प्रदेशों के लोग जितनी देर में सोचते हैं, उतनी देर में पंजाबी कुछ न कुछ कर गुजरते हैं। निश्चय ही इससे उत्तम कार्यक्षेत्र उन्हें कहां मिल सकता था। इसलिए पंजाब में बहुत ही अल्पकाल में उन्हें अत्यन्त गौरवपूर्ण सफलता प्राप्त हुई।

पंजाब में उनकी शीघ्र सफलता का दूसरा कारण उनका अपना तेजस्वी व्यक्तित्व था। वह जहां भी ठहरे, जिस स्थिति में रहे, सत्य कहने से कभी न रुके। लाहौर में डा० रहीम खां की कोठी और नवाब नवाजिशअली खां के बंगले में महर्षि ने इस्लाम का खण्डन किया। जालन्धर में सरदार राजा विक्रमसिंह और सरदार सुचेतसिंह के यहां उन्होंने अमृतसर के दरबार साहब के सम्बन्ध में अपनी सम्मति देने में तनिक भी लाग-लपेट से काम नहीं लिया। गुरुदासपुर में अंग्रेज इन्जीनियर काक साहब जब उनके भाषण में आये तो उन्होंने अंग्रेजों की आलोचना करते हुए यहां तक कह दिया कि यह लोग हमारी सभ्यता, संस्कृति एवं भाषा बिगाड़ रहे हैं। (क्रमशः

२८ जनवरी को जिनका जन्मदिवस था—

आर्यगौरव लाला लाजपतराय

—ब्र० संजयदेव, सभा उपदेशक

महान् आर्यनेता लाला लाजपतराय जी के विचारों, कार्यों एवं अपूर्व बलिदान को आज के परिप्रेक्ष्य में हम देखें तो ज्ञात होता कि उन्होंने अपने सभी कर्त्तव्य केवल तात्कालिक समस्याओं के समाधान हेतु ही नहीं किये थे, बल्कि उनके मानस में एक ऐसे आदर्श राष्ट्र के निर्माण की कल्पना थी, जिसका एकमात्र उद्देश्य भारत को स्वाधीन राष्ट्रों की प्रथम श्रेणी में बिठाना था। इसी के लिए वे सन् १८८८ से १९२७ तक बीच के ४० वर्षों में बड़ी निष्ठा एवं उत्साह से स्वाधीनता संग्राम में संघर्षरत रहे।

सन् १८६५ में जन्मे लालाजी अरबी, फारसी, उर्दू, अंग्रेजी के विद्वान् बनकर धारावाहिक व्याख्यान देने लग गये थे। वकालत के पेशे से आपने इतना धन कमाया था कि पिता लाला राधाकृष्ण और माता गुलाब देवी जी को आर्थिक सम्पन्न बनाकर निश्चिन्तता से धार्मिक साहित्य के अध्ययन करने में लगा दिया था। लाहौर के उच्च कोटि के प्रसिद्ध वकीलों में आपकी गणना थोड़े ही समय में होने लग गई थी। यह आपके सादगी, सरलता, सत्यता, प्रभावकारी वक्तृता और तीव्र बुद्धि के बल से मुकदमे की वास्तविकता को शीघ्र ही जान लेने की तत्परता के कारण थे।

लालाजी इसी समय आर्यसमाज की सेवा में आये और अपनी आय का अधिकांश भाग इसी की उन्नति में लगाने लगे। आपने ही लाहौर की प्रसिद्ध शिक्षण संस्था का नाम बदल कर "दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कालेज" रखा था। दीन, हीन एवं अभावग्रस्तजनों की सेवा, सहायता सेवा-सुश्रूषा में लालाजी अपने धन का सदुपयोग मुक्तहस्त से करने में सुख मानते थे। जिससे आज हमें यही शिक्षा लेनी है कि जहां पर भी ऐसे लोगों को देखें, अपना आवश्यक कार्य छोड़कर पहले उनकी सेवा करें। कांगड़ा में भूचाल से पीड़ित लोगों की लालाजी ने अपूर्व त्यागमय सेवा की थी।

किन्तु ये सब करते रहने पर भी आप राजनैतिक क्षेत्र में बढ़ने लगे थे। सन् १८८८ में राष्ट्रीय महासभा से सम्बन्धित होने के पश्चात् आप उच्चकोटि के प्रसिद्ध नेताओं में पहुंच गये। उस समय देश को स्वतन्त्र कराने हेतु लोकमान्य तिलक उग्रपन्थ का नेतृत्व कर रहे थे और उदार-पंथ की बागडोर गोपालकृष्ण गोखले के कुशल हाथों में थी। लालाजी का झुकाव उग्रपंथ की ओर होगया था। इस विषय पर आपके जोशीले एवं धारावाहिक भाषणों का जनता पर जादू-सा असर हुआ। लालाजी का मत था कि स्वदेश प्रेम की शिक्षा अपनी सरल भाषा में दी जानी चाहिए। डा० पट्टाभिसीतारमैया ने 'कांग्रेस का इतिहास' नामक पुस्तक में लिखा है कि "देश के राजनीतिक क्षितिज पर गांधी जी के आने से ३० वर्ष पूर्व ही कांग्रेस अधिवेशन में लालाजी ने हिन्दी में भाषण देकर बता दिया था कि कांग्रेस को जन-भाषा का सहारा लेना चाहिए।" अपनी इस बात को चरितार्थ करने के लिए उन्होंने समय का सदुपयोग करते हुए अंग्रेजी पुस्तकों का हिन्दी, उर्दू में अनुवाद किया था।

सन् १९०३-४ तक लालाजी राजनीतिक क्षेत्र में नये थे। लार्ड कर्जन ने सन् १९०५ में बंगाल को दो भागों में बांट दिया। इससे बंगाल ही क्या सारे भारत में विद्रोह की आग भड़क उठी। इस समय लालाजी अंग्रेजी वस्तुओं के बहिष्कार के कार्य में जी-जान से जुट गये और लोकमान्य तिलक तथा विपिन चन्द्रपाल का आपने खूब साथ दिया। इन तीनों के अतुल प्रभाव से प्रभावित होकर जनता ने "लाल, पाल, बाल" वाक्य का निर्माण किया।

लाला लाजपतराय जी को एक आर्डिनेंस में गिरफ्तार करके, बिना मुकदमा चलाये, मांडले जेल में भेज दिये गये थे। देश की मांग को दमन नीति से ठुकराते हुए अंग्रेजी शासन की इस ज्यादती से भारत ही नहीं, ब्रिटेन के स्वाधीनता प्रेमी अखबारों तथा रेदरफोर्ड ने काफी निन्दा की थी। लालाजी तो देश-प्रेम को लिए हुए किसी भी प्रबल शक्ति के सामने झुकना जानते ही नहीं थे, अन्त में शासन को ही झुकना पड़ा। जेल ही में लालाजी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'मेरे निष्कासन की कहानी' की रचना की थी। जेल से छूटते ही लालाजी ने एक अंग्रेजी अखबार पर मान-हानि का दावा किया और उसमें विजय स्वरूप जो क्षति-पूर्ति का धन मिला, उसे आपने दान में देकर अपूर्व त्याग का परिचय दिया था।

इसके बाद लालाजी ने सारे भारत का दौरा करके अपने जोशीले भाषणों से जन-जन में देश-प्रेम की ज्योति जलाई। फिर १९१३ में जापान और अमेरिका जाकर सन् १९१९ तक वहां भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम सम्बन्धी साहित्य का सृजन कर उसका प्रचार-प्रसार करते रहे। 'यंग इण्डिया' आपकी उसी समय की प्रसिद्ध पुस्तक है। कहना नहीं होगा कि आप वहां साहित्य लेखन द्वारा ही अपनी जीविका चलाते थे।

सन् १९२० में आपने भारत आकर कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता की। बाद में लालाजी ने अंग्रेजी शिक्षालयों का बहिष्कार करते हुए लाहौर में 'नेशनल कांग्रेस' तथा 'तिलक स्कूल आफ पालिटिक्स' की स्थापना करवाई और 'तिलक स्वराज्य कोष' के लिए अपने प्रभाव से केवल १० दिन में लगभग ९ लाख रुपया एकत्रित किया।

इधर अछूतोद्धार, स्त्री-शिक्षा, नारी-पर्दा प्रथा और बालविवाह जैसी रूढिगत समाज-संहारी प्रथाओं के हटाने के निमित्त लालाजी ने बहुत काम किया। सन् १९२४ में आपने आर्यसमाज के छठे नियम 'संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना' को ध्यान में रखते हुए मानव-मानव में समानता और प्रेम के सिद्धांत को लेकर एक 'अखिल भारतीय अछूतोद्धार कमेटी' की स्थापना करवाई थी।

मानव समानता के अपने सिद्धांत को चरितार्थ करने में लालाजी लगे ही हुए थे, किन्तु उधर राजनीतिक क्षेत्र में भी उनका पूरा सहयोग चल रहा था। सन् १९१४ के यूरोपीय युद्ध में भारतीय सहायता न दिये जाने की सर्वप्रथम स्पष्ट घोषणा लालाजी ने ही की थी। बाद के अत्याचारों और दमन के विरोध में देश की विद्रोह अग्नि इतनी धधक गई थी कि इसको शांत करने आये हुए साइमन कमीशन को लालाजी के नेतृत्व में ३० अक्तूबर, १९२८ को लाहौर स्टेशन पर अपार भीड़ ने काले झण्डे दिखाते हुए उसके लौट जाने के गगनभेदी नारे लगाये। पुलिस की लाठियां बरसने लगीं। विशेषकर लाला जी के देशभक्ति के दृढ़ शरीर पर। किन्तु लालाजी का तन और मन तो मानो भारतीयों को स्वतन्त्र कराने एवं सुखी बनाने के निमित्त ही निर्मित हुआ था। नेता कष्टों से घबराते कहां हैं ?

अस्पताल को घेरे हुए क्रोधित जनसमूह लालाजी का इशारा पाते पर भयंकर रक्तपात करने को उतावला हो रहा था। किन्तु अहिंसा एवं शाश्वत शांति के अजर, अमर दूत लालाजी ने मरहम पट्टी से शरीर जकड़ा होने पर भी जनता के सामने आकर कहा—"मेरे शरीर पर पड़ी हुई एक-एक लाठी अंग्रेजी साम्राज्य के विनाश के लिए कफन की कील साबित होगी।" १५ अगस्त, १९४७ को लालाजी की भविष्यवाणी सत्य साबित हुई।

मां भारती के लाडले लाला लाजपतराय जैसे विजयी वीर, आजादी की धुन के पक्के, राष्ट्र-सेवा में प्राणोत्सर्ग करनेवाले, कर्मठ, निस्पृही, विद्वान्, उदार, त्यागी, पर दुःख भंजक, आर्यसमाज के दीवाने नरपुंगव बार-बार जन्म नहीं लेते। भारत का सौभाग्य है कि उसे लालाजी जैसा देशोद्धारक योद्धा मिला था, जो मरकर भी अमर है। महात्मा गांधी ने भी कहा था—"लाला लाजपतराय जैसे व्यक्ति की मौत उस समय तक नहीं हो सकती, जब तक आकाश पर सूर्य चमकता रहेगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापना शताब्दी समारोह—

जिला गुड़गांव के आर्यसमाजों द्वारा सभा को तन, मन तथा धन से सहयोग देने का आश्वासन

गुड़गांव ७ फरवरी, ८७ (केदारसिंह आर्य द्वारा) स्थानीय आर्य-समाज मन्दिर जेकमपुरा में आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापना शताब्दी समारोह की तैयारी के लिए जि० गुड़गांव के आर्यसमाजों तथा संस्थाओं के अधिकारियों तथा कार्यकर्त्ताओं की बैठक दोपहर बाद सभा के पूर्व उपप्रधान श्री भीमसेन जी दीवान की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर सभा के कोषाध्यक्ष मा० बद्रीप्रसाद जो आर्य ने उपस्थित आर्य नर-नारियों को शताब्दी समारोह को सफल करने की अपील करते हुए कहा कि सभा को स्थापित हुए १०१ वर्ष पूरे होगये हैं। हमारा १०० वर्ष का इतिहास शानदार रहा है। अतः हमें आगामी १०० वर्ष के लिए सभा के भविष्य को और अधिक प्रभावशाली बनाना है। समारोह हरयाणा प्रदेश के मध्य स्थान रोहतक में मनाने में सभा को सुविधा रहेगी। रोहतक मे हरयाणा के चारों ओर से बस तथा रेल आती हैं। रोहतक आर्यसमाज का पुराना गढ़ है। हैदराबाद आर्य सत्याग्रह, हिन्दी रक्षा सत्याग्रह आदि का केन्द्र रोहतक रहा है। समारोह में लाखों आर्य नर-नारियों के अवास तथा भोजन आदि की अच्छी व्यवस्था करनी है। सभा को वेदप्रचार हरयाणा के कोने-कोने में करने के लिए एक प्रचार-वाहन सभा कार्यालय के साथ ऋषिलंगर, एक विशाल वैदिक पुस्तकालय, सभा आदि करने हेतु सभागार आदि के लिए १० लाख रुपये की आवश्यकता है। प्रत्येक जिले में वेदप्रचार समितियों का गठन करके एक-एक योग्य उपदेशक तथा प्रभावशाली भजनमण्डलियां भी नियुक्त करनी है। अतः जिला गुडगाव के आर्य नर-नारियों ने सभा को एक लाख रुपया तथा १०० मन अन्न तथा १० हजार आर्य नर-नारी रोहतक भेजने हैं। समारोह को सफल करने के लिए सभी का सहयोग लेने हम गुडगांव आये हैं। आर्यसमाज के भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए आज से ही तयारी में जुट जावे।

दीवान भीमसेन जी ने जिला गुडगांव के आर्यसमाजों तथा संस्थाओं की ओर से सभा अधिकारियों का स्वागत करते हुए विश्वास दिलाया कि पूर्व की भांति हम सभा की शताब्दी को सफल करने के लिए तन, मन, धन तथा जन से पूरा सहयोग करगे। आर्यसमाज का प्रत्येक कार्य-कर्त्ता इस महान् यज्ञ में अपनी-अपनी आहुति अवश्य डालेगा।

सभामन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री ने आर्यसमाज के विगत इतिहास की चर्चा करते हुए कहा कि ऋषि दयानन्द के पश्चात् उनके शिष्यों तथा श्रद्धालुओं ने उनके वेदप्रचार तथा समाज-सुधार के कार्य को चालू रखा। यद्यपि उनकी संख्या उस समय कम थी, परन्तु उन्होंने जो महान् कार्य किये है, वे इतिहास में सदा स्मरण रहेंगे। भारतवर्ष की जनसंख्या बढ़ जाने से आर्यों की भी संख्या बढ़नी चाहिए थी, परन्तु आज आर्यसमाज के उत्सवों, सत्संगों आदि में पूर्व की अपेक्षा उपस्थिति कम होती जारही है। ऋषि दयानन्द की स्मृति मे दयानन्द विद्यालयों की स्थापना की गई थी। प्रारम्भकाल में इन विद्यालयो के अध्यापक आर्यसमाज के प्रचार कार्य में सहयोग करते थे, परन्तु आज इन विद्यालयों में आर्य अध्यापकों की कमी है। यही अवस्था आर्य विद्यालयों की हो रही है। इन विद्यालयों से पढ़कर निकलने वाले छात्र आर्य के स्थान पर अनार्य बनकर निकलते है। हमने आर्यसमाज के उस पुराने नियम को भुला दिया है, जिसके अनुसार आर्य विद्यालयों मे आर्य विचारों के ही अध्यापक तथा कर्मचारी रखने चाहियें। आर्य विद्यालयों तथा आर्यसमाजों में अनार्य घुसकर झगड़े करवाते रहते हैं। इस प्रकार सारा समय व्यर्थ के झगड़ों मे बर्बाद होता है। आर्यों की सन्तान आर्य नहीं बन रही। स्वामी श्रद्धानन्द ने इसी भावना से गुरुकुलों की स्थापना की थी। गुरुकुलों के स्नातकों ने प्रत्येक क्षेत्र में अपना नाम चमकाया है। अतः हमे अपनी सन्तान को गुरुकुलो में पढ़ाकर आर्य तथा विद्वान् बनाना चाहिये। धन के स्थान पर विद्या को प्राथमिकता देनी चाहिए। आपने दूरदर्शन के कार्यक्रम चित्राहार को संज्ञा चरित्र-हरण से करते हुए कहा कि सरकार को गन्दे गीतों तथा चित्रों के स्थान पर चरित्र की शिक्षा देनी चाहिए, अन्यथा हमारी भावी-पीढ़ी और अधिक चरित्रहीन बनेगी। सभा को उच्चकोटि के विद्वान् तथा पुरोहित तैयार करने के लिए आपके सहयोग की आवश्यकता है। प्रचार की मांग बढ रही है, परन्तु आदर्श प्रचारकों का अभाव होता जारहा है। शताब्दी समारोह पर इन सभी समस्याओं का समाधान करने का यत्न किया जायेगा।

गुरुकुल देहरादून की स्नातिका तथा प० बुद्धदेव विद्यालंकार की सुपुत्री पंडिता प्रभातशोभा ने इस अवसर पर व्याख्यान देते हुए कहा कि आर्यसमाज के प्रचार एवं प्रसार कार्य के लिए हमें मातृशक्ति के सहयोग की आवश्यकता है। परिवारों में त्रुटियां मातायें आसानी से दूर कर सकती है। आज विज्ञान का युग है। अतः हमें अपने प्राचीन वैदिक साहित्य का स्वाध्याय करके अपने प्रचार कार्यक्रम का मेल विज्ञान से मिलाना होगा। दूरदर्शन पर यदि अच्छे कार्यक्रम दिखाये जायें तो उनका अच्छा प्रभाव पड सकता है। आपने १९८३ में अजमेर में महर्षि दयानन्द की स्मृति में आयोजित शताब्दी समारोह की चर्चा करते हुए कहा कि वहां आठ लाख से अधिक आर्य नर-नारियों ने पहुँचकर अपने गुरु को श्रद्धांजलि दी थी और अपने विशाल संघटन व अनुशासन का शानदार परिचय दिया था। पुलिस की रिपोर्ट के अनुसार इतनी बड़ी हाजरी में किसी प्रकार की गड़बड़ी न होना आर्यों के लिए गौरव की बात है। हमे इसी प्रकार रोहतक में होनेवाली आर्य प्रतिनिधि सभा की शताब्दी में सम्मिलित होकर अपने इतिहास को शानदार बनाना चाहिए। आर्यों को अपने पूर्वजों के पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा देते हुए कहा कि मेरे दादा जी ने स्वामी दयानन्द जी तथा मेरे ससुर जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी की प्रेरणा से आर्यसमाज के महान् कार्यों में योगदान किया। अतः हमें अपने गुरुकुलों तथा आर्य विद्यालयों मे आचार्य (आचरण का रक्षक तथा शिक्षक) के पदों पर आर्य विद्वानो को ही रखना चाहिए।

आर्यसमाज फिरोजपुर झिरका के प्रधान श्री भजनलाल आर्य ने सुझाव दिया कि अपनी सन्तान को आर्य बनाने के लिए पारिवारिक सत्संग तथा आर्य वीरदल के शिक्षण शिविरों का आयोजन करें। प्रो० प्रभुदयाल आर्य ने मेवात मे गोरक्षा तथा हरे रामा हरे कृष्णा द्वारा बनाये जारहे आश्रम की चर्चा करते हुए कहा कि आर्यसमाज के नेताओं को हमारा मार्गदर्शन करना चाहिए।

सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह ने अस्वस्थ होने के कारण अपने संक्षिप्त भाषण मे आर्यों को संघटित रहने का आह्वान किया। पंजाब में पृथक सरकार चल रही है। मुख्यग्रंथी मुख्यमन्त्री को अपने आदेश (हुकमनामे) देकर भयभीत कर रहे हैं। गतवर्ष दरबार साहब में अपराधियो को पकड़ने के लिए पुलिस भेजने के आरोप में सरदार बरनाला ने झूठे बर्तन तथा जूते साफ करके मुख्यमन्त्री पद की गरिमा को कम तो किया ही था और उग्रवादियो का साहस बढाया था। वही पुराना इतिहास मुख्य ग्रन्थी पुनः दोहराना चाहते हैं। महान् गुरुओं के शिष्य राष्ट्रद्रोही गतिविधियों में लगे हैं। आर्यसमाज से प्रभावित सिखों ने सदा राष्ट्रभक्ति का परिचय दिया है, परन्तु आज उग्रवादी महान् राष्ट्रभक्त सरदार भगतसिंह की बहन तथा उनकी भानजी पर प्राणलेवा आक्रमण करके गद्दारी कर रहे हैं। पाकिस्तान भारत के टुकड़े करने के लिए उग्रवादियों को प्रशिक्षण देकर पंजाब में भेज रहा है। अतः आर्यसमाज को अपनी विशाल संघटन शक्ति का परिचय देने के लिए सभा शताब्दी समारोह के अवसर पर संसार को दिखाना होगा कि आर्यसमाज ने जिस प्रकार भारत को स्वतन्त्रता दिलाने के लिए सबसे अगली पंक्ति में खड़ा होकर कार्य किया था, उसी प्रकार अब भी राष्ट्र की अखण्डता की रक्षा के लिए तैयारी करनी है। भारत की सेना सीमा पर तथा आर्यों की सेना राष्ट्र के अन्दर साम्प्रदायिक शक्तियों का डटकर मुकाबला करेगी।

(शेष पृष्ठ ५ पर)

चरखी दादरी तथा भिवानी में सभा शताब्दी की तैयारी के लिए बैठकें

११ फरवरी, ८७ को प्रातः १२ बजे आर्यसमाज मन्दिर चरखी दादरी तथा दोपहर बाद ३ बजे आर्यसमाज मन्दिर घण्टाघर भिवानी में आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापना शताब्दी सम्मेलन करने के सम्बन्ध में आर्यसमाज के अधिकारियों तथा कार्यकर्त्ताओं की बैठकें उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हुई।

चरखी दादरी की बैठक की श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने अध्यक्षता की। बैठक का सभारम्भ करते हुए सभा कोषाध्यक्ष मा० बद्रीप्रसाद जी आर्य ने शताब्दी समारोह को सफल करने की अपील की और बताया कि शताब्दी समारोह के प्रबन्ध, सभा भवन को पूरा करने के लिए एक विशाल वैदिक पुस्तकालय, ऋषिलंगर, अतिथिशाला, सभा के अधिवेशनों के लिए एक बड़ा हाल, एक प्रचार वाहन तथा स्मारिका जिसमें सभाओं का गत सौ वर्षों का संक्षिप्त इतिहास प्रकाशन आदि कार्यों के लिए १० लाख रुपयों का बजट बनाया गया है। सभा के प्रचार कार्यों का विस्तार करने के लिए उच्चकोटि के उपदेशक तथा प्रभावशाली भजनोपदेशकों की आवश्यकता है। इस महान् कार्य को पूरा करने के लिए सभी आर्यों के सहयोग की आवश्यकता है।

सभामन्त्री श्री वेदव्रत जी शास्त्री ने शताब्दी समारोह की रूपरेखा बताते हुए कहा कि सभा ने आर्यसमाज का प्रचार ग्राम-ग्राम तक पहुँचाने के लिए, २० ग्रामों के लिए एक-एक योग्य पुरोहित रखने की योजना बनाई है। इस प्रकार ग्रामों में वैदिक संस्कार तथा वार्षिक उत्सव आदि करवाने में सुविधा रहेगी। उपदेशक तथा पुरोहितों की कमी पूरी करने के लिए उपदेशक विद्यालय की भी स्थापना करना आवश्यक होगया है। शताब्दी समारोह के अवसर पर १०० नवीन आर्यसमाज स्थापित करके तथा सौ ग्राम पंचायतों से शराबबन्दी प्रस्ताव करवाने का यत्न किया जारहा है। समारोह पर जितनी अधिक उपस्थिति होगी, उतनी ही जनता को आर्यसमाज की जानकारी मिल सकेगी। आर्यसमाज के नियम के अनुसार प्रत्येक आर्य सभासद को अपनी आय का शतांश (१००वा भाग) अपने आर्यसमाज को सदस्यता के रूप में देना चाहिए, ताकि आर्यसमाज के कोष में बढोतरी हो और सभा को भी दशांश की राशि अधिक मिल सके। समारोह के अवसर पर शराबबन्दी तथा आर्यसमाज के सिद्धांतों पर साहित्य प्रकाशित किया जायेगा और सम्मेलन आदि करके आर्यसमाज की विचारधारा का प्रसार किया जायेगा।

इस अवसर पर श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने आर्यसमाज के अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे अधिक से अधिक ग्रामों में नवीन आर्यसमाज स्थापित करें। इस प्रकार आर्यसमाज का संगठन और अधिक सुदृढ होगा और शताब्दी पर नये आर्यसमाज के सदस्यों द्वारा जहां धन मिलेगा, वहां नशाबन्दी आंदोलन को सफल करने के लिए उन का सहयोग भी मिलेगा। समारोह को सफल करने के लिए प्रत्येक आर्य नर-नारी यदि ५-५ रुपये भी संग्रह करके सभा को भेज तो लाखों रुपये संग्रह होने में देर नही लगेगी। धनधान्य से सम्पन्न आर्य १०१ तथा १००० रु० तक भी आसानी से देकर इस यज्ञ में अपनी आहुति डालकर यश के भागीदार बनें। हमें ऋषि दयानन्द का सन्देश जन-जन तक पहुँचाने के लिए गतवर्षों की भांति पदयात्रा भी करनी चाहिए। सर्वत्र आर्यसमाज के प्रचार की माग है। ग्रामों में भी आर्यसमाज मन्दिरों का निर्माण करके प्रचार का स्थायी केन्द्र बनाना होगा। औषधालय आदि की स्थापना करके हमें रोगियों की सेवा करके तथा आर्यसमाज का साहित्य देकर उन्हें आर्यसमाज की ओर आकर्षित किया जा सकता है। समारोह के अवसर पर यज्ञ पर मूले जाटों को यज्ञोपवीत देकर तथा उनके साथ रिश्ते-नाते जोड़कर उन्हें अपनाना चाहिए और हमारे जो नवयुवक शराब, मांस आदि के नशों में फस गये हैं, उन्हें भी यज्ञ पर प्रतिज्ञायें करवाकर आर्य बनाने का यत्न करना आवश्यक है। सभा की ओर से स्मारिका भी छापी जारही है, जिसमें वैदिक सिद्धांतों पर उच्चकोटि के विद्वानों के लेख तथा आर्यसमाज का १०० वर्ष का इतिहास भी छपना चाहिए, ताकि आगे आनेवाली पीढ़ी उससे प्रेरणा ले सके। आपने अन्त में चरखी दादरी के आर्यों से अनुरोध किया कि वे समारोह को सफल करने के कार्य में आज से ही जुट जायें।

सभा के वेदप्रचाराधिष्ठाता एवं समारोह के संयोजक श्री रघुवीरसिंह ने श्री स्वामी जी महाराज का धन्यवाद करते हुए कहा कि आपके ही मार्गदर्शन में सभा के अधिकारी समारोह को सफल करने के लिए दिन-रात कार्य कर रहे हैं और करते रहेंगे। श्री स्वामी जी के प्रत्येक आदेश का पालन किया जायेगा।

इसी प्रकार सर्वश्री आचार्य ऋषिपाल, मनुदेव जी शास्त्री, डा० रामनारायण चावला, सत्यनारायण जी आर्य, डा विजयकुमार जी तथा धर्मपाल शास्त्री ने श्री स्वामी जी के आह्वान का स्वागत किया और विश्वास दिलाया कि वे शीघ्र ही आर्यसमाजों की बैठक करके समिति का गठन करेंगे और समारोह को सफल करने के लिए अन्न धन तथा जनसंग्रह के कार्य में जुट जायेंगे।

आर्यसमाज घण्टाघर भिवानी में बैठक

११ फरवरी को ही दोपहर बाद ३ बजे शताब्दी समारोह की तैयारी के लिए एक बैठक आर्यसमाज भिवानी के वयोवृद्ध तथा विद्वान् नेता पं० फूलचन्द जी शर्मा निडर की अध्यक्षता में आरम्भ हुई। इस अवसर पर सभा के उपदेशक ब्र० महेन्द्रसिंह शास्त्री ने शताब्दी समारोह की तैयारी में जुट जाने का आह्वान करते हुए कहा कि जिस प्रकार हरयाणा की जनता ने अजमेर में शताब्दी समारोह को तन, मन, धन, अन्न तथा जन से सहयोग दिया था, उसी प्रकार हरयाणा में सभा की शताब्दी को सफल करने में कोई कसर नहीं रखनी चाहिए। रोहतक मध्य में स्थित है, अतः चारों ओर से आर्यजनता पहुंच कर अपने विशाल संघटन का परिचय तथा शक्ति प्रदर्शन कर सकती है।

सभा के मन्त्री सर्वश्री वेदव्रत जी शास्त्री, कोषाध्यक्ष बद्रीप्रसाद आर्य, सभा के पूर्व मन्त्री प्रो० सत्यवीर शास्त्री, संयोजक रघुवीरसिंह, गणपतसिंह आर्य मन्त्री जिला प्रतिनिधि सभा भिवानी, रामफल दलाल नाथुवास, ओमप्रकाश बहलवाले, ओमप्रकाश गोयल ने सभा शताब्दी समारोह के आयोजन को सफल करने पर अपने विचार प्रस्तुत किये। अन्त में श्रीमती सत्यवती आर्या ने ऋषि दयानन्द की महिमा पर गीत सुनाकर सबको गद्-गद् कर दिया। पं० फूलचन्द जी शर्मा निडर ने सभा के अधिकारियों का स्वागत तथा धन्यवाद करते हुए समारोह को सफल करने का आश्वासन दिया। बैठक में उन्हें ही सर्वसम्मति से तैयारी को समिति का संरक्षक मनोनीत किया गया।

देश तिल-तिल जल रहा है

पंजाब दिल्ली व देश के अनेक भागों में मानव व मानवता की हत्यायें आये दिन आम बढ़ रही है। जो सर्वथा बन्द होनी चाहिएं। ऐसे निर्दोष व्यक्ति हत्याओं के विरोध में देश के अनेक भागों में संवेदना सभायें २६-२७-२८ दिसम्बर को की गई। जिला हिसार में सर्वोदय नेता भगत रामेश्वरदास, भूदान मण्डल के महासचिव श्री रामस्वरूप, आर्य समाज के नेता व शराबन्दी समिति के प्रधान श्री अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी ने निरन्तर गांधी अध्ययन केन्द्र में तीन दिवसीय उपवास रखा। बन्शीधर आर्य, श्री संग्रामसिंह आर्य, परमानन्द आर्य, पं० लक्ष्मीचन्द, दयानन्द जिंदल व अनेक सामाजिक कार्यकर्त्ताओं ने एक दिवस का उपवास रखकर अपने राष्ट्र व दिवंगत आत्माओं के लिये संवेदना व्यक्त की।

२८ दिसम्बर, ८६ को सायं ५ बजे श्री बलवन्तराय तायल द्वारा रस पिलाने पर व्रत तोड़ा गया तथा सरकार से बेगुनाह लोगों के कत्ले-आम को रोकने के लिए तुरन्त उचित कार्यवाही करने की मांग को दोहराया।

—सुरेश शर्मा हिसार

उग्रवाद उवाच

धोती टोपी यमुना पार, यहां रहेंगे सब सरदार।
कहते हैं हम बारम्बार, वरना सहो खड्ग की मार।
पंजाबी हम सबकी बोली, अंग्रेजी उसकी हमजोली।
आये जो हिन्दी की टोली, उसको मारेंगे हम गोली।
सिर्फ ये मुस्लिम भाई-भाई, हिन्दू कौम कहां से आई।
साथ हमारे पाकिस्तान, लेके रहेंगे खालिस्तान।

भारत भक्त उवाच

देश के दुश्मन जो गद्दार, बांधे फिरते जो तलवार।
जन-जन की है यही पुकार, चले जायें भारत के पार।
जो हैं पाकिस्तान के यार, बने हुए देश पर भार।
करे देशहित शीश निछार, कहते हैं उसको सरदार।
अत्याचार रहे जो ढाई, जग में फैला रहे बुराई।
जिनके दिल में खपत समाई, करते हैं वे पाप कमाई।
नानक पंथी सिख ईसाई, यहां के मुस्लिम हिन्दू भाई।
दुःख में सबके रहें सहाई, उग्रवाद की करें सफाई।
मांग रहे जो खालिस्तान, वे हैं यवनों की सन्तान।
नहीं बटेगा हिन्दुस्तान, देशभक्तों की यही पहचान।
चले जायें वे पापिस्तान, ननकाना जहां पद स्थान।
वहां बनालें खालिस्तान, तब उन्हें जानें वीर महान्।
जो यहां चला रहे हैं गोली, खेल रहे हैं खून की होली।
अधमजनों की है वो टोली, गन्दी होगई उनकी चोली।
एक रहे हम एक रहेंगे, मिलकर सारे यही कहेंगे।
सन्तों के सन्देश गहेंगे, देश विभाजन नहीं सहेंगे।
तोड़-फोड़ जो यहां करेंगे; बिना मौत वे सभी मरेंगे।
निर्भय होकर हम विचरेंगे, भारत-मां के कष्ट हरेंगे।

सी० आर० शर्मा शास्त्री नई दिल्ली-६५

सर्वहितकारी का ऋषिबोधांक

गतवर्षों की भांति इस बार भी ऋषिबोध दिवस के अवसर पर सर्वहितकारी का २१ फरवरी का अंक ऋषिबोधांक के रूप में प्रकाशित किया जायेगा।

—व्यवस्थापक

(पृष्ठ ३ का शेष)

शताब्दी समारोह के कार्यक्रम की रूपरेखा बताते हुए आपने कहा कि हरयाणा की वीरभूमि पर हमें एकत्रित होकर विशाल शोभा-यात्रा, वेद, राष्ट्र-रक्षा गोरक्षा, आर्य वीरदल आदि सम्मेलनों में रचनात्मक कार्यक्रम तैयार करने हैं। ग्रामों से शराब के ठेके बन्द करवाने के लिए आर्यसमाज के कार्यकर्ता दिन-रात कार्य में जुटे हुए हैं। नगरों में भी शराबबन्दी के लिए हस्ताक्षर अभियान चालू किया जायेगा। नवीन आर्यसमाजों की स्थापना करके समाज-सुधार के कार्यों का विस्तार किया जायेगा। वेदप्रचार समितियों का गठन करके आर्यसमाज के संघटन को सुदृढ़ करने के लिए पुरोहितों की नियुक्ति की जायेगी। शताब्दी समारोह के अवसर पर हरयाणा के चारों ओर से वेदप्रचार यात्राओं का आयोजन भी किया जायेगा।

बैठक के अन्त में आर्य वेदप्रचार मण्डल मेवात के प्रधान श्री सत्यपाल आर्य को गुडगांव में शताब्दी की तयारी के लिए प्रधान मनोनीत करके शेष कार्यकारिणी के गठन करने का भी उन्हें अधिकार दिया गया। आर्यसमाज जेकमपुरा के प्रधान श्री सुखदेव जी ने सभी आर्य नर-नारियों का स्वागत तथा सभा अधिकारियों का गुडगांव पधारने पर आभार प्रदर्शित किया।

हम मतवालों में आन मिलो रे कोई हिम्मत वाला।

आज से १११ वर्ष पूर्व संसार के सर्वाधिक क्रांतिकारी संन्यासी स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा गुंजाये वैदिक नाद से भारतभर में धार्मिक पाखण्ड, सामाजिक अन्याय और आर्थिक विषमता के अन्धकार में हलचल मचादी थी। आर्यसमाज के माध्यम से उसी दिव्य वैदिक पथ का अनुसरण करते हुए अनेकों अमर हुतात्मायें धर्म और राष्ट्र-रक्षा की यज्ञवेदी पर अपना सर्वस्व होम कर मानवता के कल्याण का कार्य करती रही हैं और कर रही हैं, फिर मानव मन अज्ञानता एवं स्वार्थवश धार्मिक पाखण्ड तथा सामाजिक अन्याय और आर्थिक विषमता से उभरने नहीं देता। लोकतन्त्र के नाम पर पनपता वंशतन्त्र, साम्प्रदायिकता जाति-प्रथा, प्रांतीयता, बन्धुआ मजदूरी और विश्व में अणु परमाणु और हथियारों की होड़ से बढ़ता प्रदूषण तथा रंगभेद की रीति नीति मानवता के लिए भयकर खतरा बनते जा रहे हैं। इन भारी आशंकाओं से बचने का एकमात्र उपाय महर्षि द्वारा निर्धारित वैदिक मार्ग ही हो सकता है, ऐसा हमारा विश्वास है।

अतः हमने विचार किया है कि गतवर्षों की भांति इस वर्ष और अधिक तैयारी से एक विशाल जनजागरण यात्रा का आयोजन किया जाये। इससे पूर्व इस प्रकार की यात्रायें फतेहपुर से कुरुक्षेत्र तथा कैथल से करनाल आर्यसमाज के प्रचार की दिशा में महत्त्वपूर्ण रही हैं। अब जबकि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का शताब्दी समारोह रोहतक में आयोजित कर रही है तो इस अवसर पर पंजाब की सीमा से चलकर नरवाना, जींद, जुलाना के देहात से होती हुई एक विशाल जनजागरण यात्रा का आयोजन मई के द्वितीय सप्ताह में किया जा रहा है, जिसमें शताब्दी वर्ष के प्रतीक १०१ आर्यवीर भजन-मण्डलियों सहित गांव में प्रचार-यात्रा करते हुए १० दिन में रोहतक पहुँचेंगे। अतः यदि आप भी इस महत्त्वपूर्ण राष्ट्रोपयोगी कार्य में भाग लेना चाहते हैं तो आज ही से तैयारी आरम्भ कर हमें सूचित करें।

उमेदसिंह	वेदप्रकाश आर्य	धर्मदेव विद्यार्थी
संचालक	मन्त्री	अधिष्ठाता

आर्य वीरदल गुडगांव मण्डल का गठन

(वर्ष १९८६-८७)

संरक्षक—सर्वश्री स्वामी अमरानन्द मेवात केसरी, स्वामी शांतानन्द सरस्वती, आचार्य सत्यप्रिय आर्य, कार्यवाहक मण्डलपति—सुभाषचन्द्र सिंघला, बौद्धिकाध्यक्ष—वीरेन्द्रसिंह राणा, मन्त्री—नानकचन्द आर्य, उपमन्त्री—शिवदत्त आर्य, श्यामकुमार आर्य, कोषाध्यक्ष—नरदेव आर्य, लेखानिरीक्षक—भजनलाल आर्य, प्रचारमन्त्री—मंगलदेव आर्य, शाखा-निरीक्षक—रामरत्न आर्य, व्यायामशिक्षक—अनिलकुमार आर्य।

: उप-मण्डलपति :

सर्वश्री लाजपत आर्य गुडगांव क्षेत्र	नरेन्द्रकुमार सोहना क्षेत्र
कृष्णकुमार आर्य, नूह क्षेत्र	सुरेन्द्रकुमार पुनाहना क्षेत्र
बलराज सेठी फिरोजपुर झिरका क्षेत्र	

: विशेष समिति :

सर्वश्री सत्येन्द्रप्रकाश शास्त्री, वीरेन्द्रसिंह राणा, मूलचन्द आर्य, सुभाषचन्द सिंघला, नरदेव आर्य।

—सत्येन्द्रप्रकाश शास्त्री मण्डलपति

शराब मानव-समाज की शत्रु है

इससे अवश्य बचें।

सात जिलों के आर्यों की आवश्यक बैठक

आर्यजगत् के सर्वमान्य नेता श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज अध्यक्ष वैदिक यतिमण्डल के आदेशानुसार गुरुकुल झज्जर, जि० रोहतक के वार्षिक उत्सव पर १ मार्च, १९८७ रविवार को दोपहर पश्चात् ४ बजे एक अत्यन्त आवश्यक बैठक का आयोजन किया गया है।

१. जिला रोहतक, २. सोनीपत, ३. जीन्द, ४. भिवानी, ५. महेन्द्रगढ़, ६. गुड़गाव, ७. फरीदाबाद के समस्त आर्यसमाजों तथा आर्य संस्थाओं के अधिकारियों एवं सक्रिय कार्यकर्ताओं से नम्र निवेदन है कि वे १ मार्च को गुरुकुल झज्जर में प्रत्येकावस्था में पधारकर पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी का आर्यसमाज के कार्य विस्तार, वैदिकरीति के अनुसार संस्कार कराने तथा आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापना शताब्दी समारोह एवं हरयाणा में पूर्ण नशाबन्दी लागू करवाने आदि कार्यों को सफल करने का आवश्यक निर्देश प्राप्त करें। हरयाणा के शेष ५ जिलों के आर्यों की बैठक इसके पश्चात् यथावसर बुलाई जावेगी। बैठक में पधारनेवाले आर्य महानुभावों के आवास तथा भोजन की व्यवस्था गुरुकुल झज्जर की ओर से की जायेगी।

निवेदक :

ओमानन्द सरस्वती	प्रो. शेरसिंह	वेदव्रत शास्त्री
प्रधान	प्रधान	मन्त्री
परोपकारिणी सभा	आर्य प्रतिनिधि सभा	सभा हरयाणा
बद्रीप्रसाद आर्य		रघुवीरसिंह
कोषाध्यक्ष		वेदप्रचाराधिष्ठाता

हरयाणा में पूर्ण शराबबन्दी लागू करवाने के लिए जिला केन्द्रों पर २१ फरवरी को ज्ञापन दिये जायेंगे

हरयाणा में पूर्ण शराबबन्दी की मांग को लेकर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा गत दो वर्षों से अपने लक्ष्य को लेकर सफलता की ओर बढ़ रही है। आज एक राज्य दूसरे से नहीं बल्कि एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र से शराबबन्दी की मांग में आगे निकलना चाहता है। हरयाणा जैसे प्रगतिशील राज्य में इस दुर्व्यसन को शीघ्र समाप्त किया जा सकता है और यह बड़े सौभाग्य का विषय है कि दूसरे आन्दोलनों की तरह शराबबन्दी आन्दोलन आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के नेतृत्व में चल रहा है। अतः प्रत्येक आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं को चाहिए कि वे आन्दोलन में तन, मन और धन से सहयोग करें। इसी सन्दर्भ में २१ फरवरी, ८७ को सम्पूर्ण हरयाणा में जिलास्तर पर जिलाधीशों को ज्ञापन भी दिये जा रहे हैं। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आप अपने-अपने जिलों के जिलाधीश कार्यालय में पहुंच कर १२ बजे ज्ञापन देवेंगे। जिसमें हरयाणा राज्य में पूर्ण शराबबन्दी की मांग की जावेगी।

इस ज्ञापन हेतु आप जिलास्तर पर निम्नलिखित व्यक्तियों से सम्पर्क कर सकते हैं—

१. श्री महेन्द्र शास्त्री गुडगांव
२. श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री फरीदाबाद
३. सुखदेव शास्त्री रोहतक
४. श्री सत्यदेव शास्त्री सोनीपत
५. श्री सुरेश शास्त्री करनाल
६. श्री धर्मदेव विद्यार्थी कुरुक्षेत्र
७. श्री ओमकुमार आर्य जीन्द
८. अत्तरसिंह क्रांतिकारी हिसार
९. ब्र० सत्यदेव आर्य भिवानी
१०. महाशय ताराचन्द आर्य नारनौल
११. श्री वेदमित्र हापुड़वाले अम्बाला
१२ श्री बलदेवसिंह आर्य सिरसा

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

आर्यसमाजों तथा गुरुकुलों के वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज अचीना जि. भिवानी	१९ से २१ फरवरी
„ बापोली जि. करनाल	२१ से २३ „
„ सोनीपत शहर	२२ से २६ „
छोटूराम बहुतकनीक महाविद्यालय कंझावला	२१-२२ „
आर्यसमाज रेलवे रोड यमुनानगर जि. अम्बाला	२४ से २६ „
„ गुरुकुल झज्जर जि. रोहतक	२८ से १ मार्च
„ सालवन जि. करनाल	६ से ८ „
„ गुरुकुल भैसवाल जि. सोनीपत	६ से ८ „
„ आहुलाना जि. सोनीपत	६ से ८ „
„ बहुअकबरपुर जि. रोहतक	७ से ९ „
„ बूबका जि. कुरुक्षेत्र	६ से ८ „
„ मन्धार जि. कुरुक्षेत्र	१४ से १६ „
„ अलाहर जि कुरुक्षेत्र	१६-१७ „
„ अराइया जि. करनाल	२०-२१-२२ „
„ महम जि रोहतक	२० २१-२२ „

जो आर्यसमाज अपने उत्सव रखना चाहते है, उनसे निवेदन है कि वे यथाशीघ्र सभा से तिथियां नियत करवाने का कष्ट करें, ताकि प्रबन्ध करने में सुविधा रहे।

—रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता

आर्यसमाज सांताक्रुज का उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज सांताक्रुज का ४२वां वार्षिकोत्सव १८ जनवरी से २६ जनवरी तक यजुर्वेद पारायण महायज्ञ से प्रारम्भ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा पूजनीय स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती ने यज्ञ सम्पन्न कराया। पूर्णाहुति के अवसर पर अपार जनसमूह उपस्थित था।

इस अवसर पर आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् संन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती, स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती, स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती के निरन्तर सात दिनों तक प्रवचन होते रहे तथा श्री गुलाबसिंह राघव दिल्ली के सुमधुर भजन हुए।

दिनांक २५-१-८७ को वेद सम्मेलन की अध्यक्षता प्रसिद्ध वैज्ञानिक सन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती ने की। इस अवसर पर बोलते हुए पूज्य स्वामी जी महाराज ने कहा—वेद सृष्टि के आदि का ज्ञान है, इस विषय में अभी भी बहुत-सा अनुसंधान करना बाकी है, जो अभी तक किसी ने नहीं किया। वेद में प्रत्येक वस्तु का ज्ञान बीजरूप में विद्यमान है। इसका विस्तार कैसे हो, इस विषय में विचार करना होगा। इसके लिए वेद का पढ़ना उससे सम्बन्धित ग्रन्थों का अध्ययन किये बिना वहां तक पहुंचना कदापि सम्भव नहीं है। यह काम आर्यसमाज को ही करना होगा। इसके बिना और कोई करनेवाला नहीं है।

स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती ने बताया कि वेद पढ़कर ही विश्व के रहस्य को समझा जा सकता है। जिसने बिना वेद पढ़े कुछ प्रयत्न किया है वह केवल संसार की वस्तुओं तक ही सीमित रहा है। इससे आगे क्या है, इस रहस्य को तो वेद ही बता सकता है।

इस अवसर पर श्री पं० सत्यकाम जी विद्यालंकार डा० सोमदेव जी शास्त्री आदि के भी भाषण हुए।

देसराज कालोनी पानीपत में आर्यसमाज की स्थापना

देसराज कालोनी (देवी मन्दिर के निकट) पानीपत में दिनांक ८-२-८७ रविवार को आर्यसमाज की स्थापना पानीपत के आर्यनेता श्री ला० आदित्यप्रकाश जी आर्य की अध्यक्षता में हुई।

इस अवसर पर पानीपत के आर्यसमाजों तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं के कार्यकर्त्ता उपस्थित थे।

संयोजक—जगदीशचन्द्र 'वसु'

पंजाब चण्डीगढ़ के बदले हरयाणा को मुनासिब जमीन दे : राजीव

नई दिल्ली, ५ फरवरी (भाषा)। प्रधानमन्त्री राजीव गांधी ने आज कहा कि पंजाब को चण्डीगढ़ सौंपने में कोई दिक्कत नहीं है, बशर्ते पंजाब चण्डीगढ़ के बदले मुनासिब जमीन हरयाणा को देने के लिए तैयार हो।

प्रधानमन्त्री राष्ट्रमण्डल पत्रकार संघ के सदस्यों के सवालों का जवाब दे रहे थे। ये पत्रकार आज सुबह प्रधानमन्त्री से उनके निवास पर मिले थे।

श्री गांधी ने कहा कि चण्डीगढ़ का पंजाब को हस्तांतरण कल से प्रभावी हो सकता है, लेकिन दिक्कत यह है कि पंजाब हरयाणा को पर्याप्त जमीन देने के लिए तैयार नहीं है। उन्होंने कहा कि इस पूरे मसले में 'लेन-देन' की भावना मुख्य है।

प्रधानमन्त्री ने कहा कि हम चण्डीगढ़ पंजाब को देने का वायदा कर चुके हैं, लेकिन इससे कई और शर्तें जुड़ी हुई हैं। सबसे महत्वपूर्ण शर्त है चण्डीगढ़ के बदले पंजाब अपना एक भू-भाग हरयाणा को देगा, जिसका हस्तांतरण चण्डीगढ़ के साथ ही होगा।

श्री गांधी ने कहा कि आज स्थिति यह है कि पंजाब अपना भू-भाग नहीं देना चाहता। पंजाब जिस वक्त हरयाणा को भू-भाग देने के लिए तैयार हो जायेगा, उसी वक्त हम चण्डीगढ़ पंजाब को सौंपने के लिए तैयार हैं।

उन्होंने कहा कि अगर पंजाब अपनी शर्तें पूरी नहीं करेगा, तो हम अपनी शर्तें कैसे पूरी कर पायेंगे। यह तो साफ तौर पर लेन-देन का सवाल है।

मकर संक्रांति पर्व

दिनांक १४-१-८७ को आर्यसमाज कंवारी की तरफ से मकर संक्रांति पर्व मनाया गया। प्रातः ७ बजे प्रधान जी के घर यज्ञ किया गया। प्रातः ९ बजे ग्राम बालावास में भी श्री हेतराम आर्य के घर हवन किया गया। दोनों जगह सभा उपदेशक श्री बलबीरसिंह आर्य क्रांतिकारी ने यज्ञ किया तथा पर्व के महत्व पर विस्तार से विचार रखे।

भागचन्द आर्य, मन्त्री आर्यसमाज बालावास

फेफड़ों के कैंसर जैसी जानलेवा बीमारी धूम्रपानके कारण महामारी बनती जारही है

जो दो नयी जानलेवा बीमारियां महामारियां बनती जारही हैं, वे हैं—एड्स और फेफड़ों के कैंसर की बीमारी। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू० एच० ओ०) के अनुसार, प्रतिवर्ष विश्व में दस लाख से अधिक व्यक्ति धूम्रपान-जन्य रोगों से मरते हैं और इन रोगों में फेफड़ों का कैंसर सबसे अधिक प्रचलित और प्राणघातक रोग है। इस संगठन द्वारा किये गये एक सर्वेक्षण से यह भी पता चला है कि भारत और चीन में फेफड़ों के कैंसर की बीमारी ज्यादातर १८ से २० वर्ष की आयु के युवकों को होती है।

धूम्रपान के सम्बन्ध में चिकित्सकों को एक नये खतरे का भी पता चला है और वह यह कि कार्यालय में धूम्रपान करनेवाले कर्मचारियों के कारण उनके धूम्रपान न करनेवाले सहयोगी को फेफड़ों से मृत्यु तक हो सकती है। ऐसे मामले भी प्रकाश में आये हैं, जो यह दर्शाते हैं कि धूम्रपान करनेवाले पति के कारण उसकी धूम्रपान न करनेवाली पत्नी को फेफड़ों का कैंसर होगया।

इस तथ्य की पुष्टि वाशिंगटन (अमरीका) की एक वैज्ञानिक संस्था ने भी की है। उसका कहना है 'यदि आगामी वर्षों में विश्व के धूम्रपान प्रेमियों ने धूम्रपान करना बन्द या कम नहीं किया तो इस सदी के अन्त तक फेफड़ों के कैंसर से मरनेवालों की संख्या में ५०% की वृद्धि हो जायेगी, कारण पर्यावरण को दूषित करनेवाले अन्य घातक तत्त्वों की तुलना में तम्बाकू से कहीं ज्यादा लोग मरते हैं।"

भारत में किये गये एक वैज्ञानिक सर्वेक्षण के अनुसार "बालकीय शिशुओं के जन्म के समय कम वजन का होने का मुख्य कारण गर्भवती महिलाओं की तम्बाकू खाने की आदत या ऐसे वातावरण में रहना है, जिसमें धूम्रपान किया जाता है। ऐसी महिलायें अपने बच्चों को जो दूध पिलाती हैं, उसमें भी वे १६ घातक न्यूनाधिक मात्रा में मौजूद होते हैं; जो तम्बाकू में होते हैं।

चूंकि धूम्रपान की प्रथम समस्या उग्र और घातक रूपधारण करती जारही है, अतः हमें गम्भीरता से इस पर विचार करना होगा कि वह व्यसन कहां तक सही है, जो तलबगार के अलावा उसके साथ रहने और काम करनेवाले व्यक्तियों की जान भी जोखिम में डालता है।

—बिहारीलाल मेलाराम
प्रन्यासी, बहल फेमिली ट्रस्ट, बम्बई

उठो वीरो

उठो राम के प्यारो उठो कृष्ण के दुलारो उठो जाति को जगाने के लिए।
देश को बचावे के लिए नाद वेदों का जमाने में बजाने के लिए॥

तुम हकीकत के लिए वीर हकीकत की तरह।
रहो तैयार सदा शीश कटाने के लिए॥१

वतन के तुम हो निगहबान खबरदार रहो।
आस्मां ताक में बैठा है मिटाने के लिए॥२

सोचो हिम्मत से करो काम तरीके सोचो।
अपनी बिगड़ी हुई तकदीर बनाने के लिए॥३

ना उठे योगी दयानन्द के जगाने से भी।
कौन आयेगा तुम्हें रोज जगाने के लिए॥४

खिदमते देश पर कुर्बान 'मुसाफिर' होजा।
जान जाने के लिए मौत है आने के लिए॥५

धर्म के नाम पर प्यारो तुम्हें मरना नहीं आता।
लहू से कातये तकदीर को भरना नहीं आता॥६

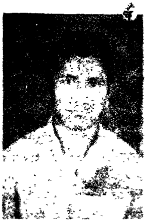
छुरी से पेट फड़वाना तुम्हें आता नहीं यारो।
हकीकत की तरह कुर्बान सर करना नहीं आता॥७

जो डूबे हैं गिलासों में ना उभरे जिन्दगानी में।
हजारों मर गये योद्धा बन्द बोतल के पानी में।

मुरारीलाल बेचैन फरीदाबाद, हरयाणा

गुमशुदा की तलाश

नाम—जयवीरसिंह



सुपुत्र—श्री मामनराम उब्बा
ग्राम—पो० कुरड़ी, जि० हिसार
रंग—सांवला
कद—५ फुट ४ इंच
आयु—१६ वर्ष

२४-१-१९८७ से घर से लापता है। बिना पते का पत्र लिखकर गया है कि "मैं अपने गुरु के साथ हजारों मील दूर विद्याध्ययन के लिए जा रहा हूँ। गुरुजी मुझे पूर्ण ब्रह्मचारी एवं संन्यास की दीक्षा दिलायेंगे।"

यदि किसी सज्जन को जयवीरसिंह का पता चले तो ऊपर लिखे पते पर सूचित करें। हम उसके कार्य में बाधा नहीं डालेंगे, अपितु सहयोग ही देंगे।

हवासिंह सु० श्री मामनराम उब्बा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस,
रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० 23207/73 रजि० नं० P/RTK 49 सृष्टि संवत् १,९६,०८,५३,०८७

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक.—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री सह सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १४ अंक १३ २१ फरवरी, १९८७ वार्षिक शुल्क ७५) एक प्रति १-००)

ऋषिबोध विशेषांक



शिव रात्रि के पूजन पर बालक मूलशंकर को ईश्वरीय ज्ञान होना

अजी एजी हमारी कौन पूछता बात। अगर नही टकारे आती फागन की शिवरात ।। टेक
फागुन की शिवरात जो टकारे में आती नही, गले का जनेऊ और सिर पर चोटी पाती नहीं।
देश के घर-घर से कभी छूआ-छूत जाती नही, दिल्ली लाल किले बीच तिरंगी लहराती नही।
विधवा देवर बनाकर के आज मगल गाती नही, रोने रोज अनाथ ·····।।१

यही थी शिवरात्रि जो यहा उदय भान हुआ, बालक दयानन्द के हृदय अन्दर ज्ञान हुआ।
उसी ज्ञान द्वारा सारे विश्व का कल्याण हुआ, ईसाई मुसलमा हिन्दू जैन का उत्थान हुआ।
मुद्दत में स्वतन्त्र जो आज हिन्दुस्तान हुआ, ऋषि की सब करामात ···।।२

हिन्दू कहने वालो आपके सब ठाठ जाते, रोड, रवे, हीर, गूजर, राजपूत, जाट जाते।
सुनारों का सोना जाता-मल्हाओं के घाट जाते, लुहारों का लोहा जाता-खातियों के काठ जाते।
पंडित जी का पतरा जाता लालाजी के बाट जाते, अगर जगन्नाथ उस दिन विष देने से नाट जाते।
तो अमेरिका फिर से भारत के सम्राट् जाते, लेकर अपनी बारात……॥३

ऐसा लीडर कौन जिसने शादी को कराया नहीं, सत्तरह बार जिन्दगी में जहर किसी ने खाया नहीं।
सच्चाई का ऐसा रस्ता किसी ने बताया नहीं. इतना सरल वेदभाष्य किसी ने कराया नहीं।
कहे पृथ्वीसिंह ऐसा लीडर आज तलक आया नहीं, क्या गांधी सुकरात……॥४

—प० तेजपाल आर्य

टेक—वेदों का डंका बजा दिया ऋषि दयानन्द ने।

सब भारतवासी सोवें थे, उन्हें हाथ पकड़ कर उठा दिया।
जो जाति के अभिमानी थे, उनको नीचा दिखा दिया।
जिनको शूद्र बतलाते थे, ब्राह्मण और क्षत्री बना दिया।
स्त्रियों को नहीं पढ़ावें थे, कन्या विद्यालय खुला दिया।
जो मुफ्ती माल उड़ावें थे, अब उनको काम पै लगा दिया।
सब ईसाई यवन घबराये, हिन्दुओं का हाजमा बढ़ा दिया।

घर-घर में डेरूं बाजें थे, भक्तों का कूदना छुड़ा दिया।
कहीं पोप बैठते बरण में, गरुड़ ठिकाने धरा दिया।
कहीं विधवा गर्भ कढ़ावें थीं, उनका पुनर्विवाह रचा दिया।
कहीं पोप मोल जप बेचें थे, अब गायत्री को जपा दिया।
सब मिलन लगे भारतवासी, इस फूट आग को बुझा दिया।
'नित्यानन्द' आल्हा गाया करते, आर्यों का भजनो बना दिया।

—स्वामी नित्यानन्द सरस्वती

❀•❀

शिवरात्रि/दयानन्द-बोधरात्रि

भारतवर्ष में शिवरात्रि का पर्व कब से मनाया जा रहा है, यह निश्चित रूप से बतलाना सम्भव नहीं है किन्तु बोधरात्रि की संज्ञा इसको माघ बदी १४ संवत् १८९४ विक्रमी (सन् १८३८ ई०) से मिली, जब शिव के उपासक औदीच्य ब्राह्मण अम्बाशंकर के १४ वर्षीय पुत्र मूलशंकर को यह बोध हुआ कि मन्दिर में रखी यह मूर्ति वह शिव नहीं है जिसकी महिमा मैंने उपवासकाल में सुनी है।

कोमलहृदय बालक का मूर्तिपूजा से विश्वास सदा के लिये हट गया और सच्चे शिव की प्राप्ति की भावना प्रबल होती गई। कुछ काल पश्चात् बहिन और चाचा के असामयिक देहावसान से उनके मन पर ऐसा आघात हुआ कि नश्वर संसार से उन्हें वैराग्य होगया। माता-पिता सम्बन्धियों ने उन का विवाह करके सांसारिक बन्धनों से बांधने का भरसक प्रयत्न किया, किन्तु बालक मूलशंकर उन बन्धनों को तोड़कर, घर परिवार छोड़कर, मृत्युञ्जय बनने के लिये चल दिया।

सिद्ध योगी महात्माओं की खोज में सिद्धपुर के मेले में पहुँचा। वहां पर पिता जी द्वारा प्रेषित व्यक्तियों द्वारा पकड़ा गया। पिता जी के डराने धमकाने पर घर वापिस आगया, किन्तु उसका मन घर परिवार के मोह से विरक्त हो चुका था। अत्यधिक प्रतिबन्धों के होते हुए भी एक दिन घर से भागने का मौका मिल ही गया। तत्पश्चात् जीवन में कभी भी लौटकर घर नहीं गया। योगियों की तलाश में देशाटन किया और गुरुवर विरजानन्द जी से व्याकरण वेदादि का ज्ञान प्राप्त करके संसार का उपकार किया।

चैत्र शुक्ला प्रतिपदा संवत् १९३२ विक्रमी (७ अप्रैल, १८७६ ई० को मुम्बई में आर्यसमाज की स्थापना करके संसार के उपकार कार्यों का विस्तार किया। वेदों का भाष्य किया। सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि आदि ग्रंथों का हिन्दी और संस्कृत भाषा में प्रणयन किया। अनेक शास्त्रार्थ किये। वाणी और लेखनी के द्वारा १९३२ से १९४० वि० तक ८ वर्षों में जितना कार्य महर्षि दयानन्द सरस्वती ने किया उतना आज तक किसी भी अन्य महापुरुष ने नहीं किया है।

संवत् १८९४ वि० (सन् १८३८ ई०) से आज संवत् २०४३ वि० (सन् १९८७ ई०) तक १४९ बोध-रात्रियां अथवा शिवरात्रियां व्यतीत हो चुकी हैं किन्तु किसी भी आर्य को वैसा बोध नहीं हो रहा है जैसा बालक मूलशंकर को हुआ था। महर्षि दयानन्द के अनुयायी आर्यजन प्रतिवर्ष फाल्गुन में शिव-रात्रि पर्व को दयानन्दबोधरात्रि के रूप में मनाते हैं। बड़े-बड़े उत्सव करते हैं, समाचारपत्रों के विशे-

षांक निकालते हैं, बड़े-बड़े ग्रंथ प्रकाशित करते हैं, महान् विद्वान् और नेताओं के भाषण भी होते हैं। यह समस्त आयोजन कुछ दिन करके हम शांत बैठ जाते हैं। हमारा यह आयोजन एक रस्म या परिपाटी मात्र बनकर रह जाता है। हम महर्षि द्वारा प्रदर्शित वेदमार्ग पर चलने के लिये अपने आपको, अपने परिवार और समाज को तैयार नहीं कर पाते।

फलं कतकवृक्षस्य यद्यप्यम्बुप्रसादकम्। न नामग्रहणादेव तस्य वारि प्रसीदति ॥

यद्यपि निर्मलीवृक्ष का फल जल को स्वच्छ करनेवाला है किन्तु उसका नाम लेनेमात्र से ही जल स्वच्छ नहीं हो जाता। उसके लिये जल स्वच्छ करने की विधि अपनानी पड़ेगी।

इसी प्रकार महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक सिद्धांत, नियम, निर्देश आदि मानवसमाज के लिये कल्याणकारी हैं किन्तु वे नाम लेने या कहने मात्र से संसार का उपकार नहीं कर सकेंगे। आवश्यकता है उन पर आचरण करने और करवाने की। उन्हें मूर्तरूप देने की। आर्यसमाज का नियम है—वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

हम सब आर्यसमाजी यह तो मानते हैं कि वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। किन्तु कितने आर्य हैं जिनके घरों में सत्यविद्याओं के पुस्तक वेद विद्यमान हैं? कितने आर्य हैं जो वेदों को पढ़ते हैं अथवा पढने की योग्यता रखते हैं? अपने पुत्र और पुत्रियों को वेद पढ़ने-पढ़ाने की प्रेरणा देते हैं? वेद पढ़ाने के लिये गुरुकुल वा विद्यालय चलाते हैं? अपनी सन्तान को वहां पढ़ने के लिये भेजते हैं?

हम सभी मानते हैं, शरीर पुष्टि के लिये दूध उत्तम पेय पदार्थ है। गाय का दूध हो तो सर्वोत्तम है। ऐसा मानने और कहने मात्र से शरीर पुष्ट नही होगा। शरीर तभी पुष्ट होगा जब हम सच्चे दिल से ऐसा मानकर दूध प्राप्त करके उसका पान करेंगे। गोदुग्ध प्राप्ति के लिये गोपालन स्वयं करेंगे और अपने पास पड़ोस में रहनेवालों को प्रेरित करके गोपालन करवायेंगे। दुग्ध उपलब्ध करवाकर दूध पीयेंगे और पिलायेंगे।

आर्यो! चेतो, सोचो और विचारो। यदि आप वास्तव में महर्षि दयानन्द के अनुयायी हैं, उनके लेख पर विश्वास करते हैं तो उनके द्वारा प्रतिपादित पठन-पाठन विधि को अपनाना चाहिये। सत्यार्थप्रकाश के तीसरे समुल्लास में और संस्कारविधि के वेदारम्भ प्रकरण में आप ध्यान से पढ़ने-पढ़ाने का प्रकार देखें और तदनुसार पढ़ने-पढ़ाने की व्यवस्था करें। १११ वर्ष पूर्व महर्षि ने यह पढ़ने-पढ़ाने का प्रकार आर्यों को बतलाया था। इस पर बहुत कम आचरण हुआ है। यही आर्यों की अवनति का मूलकारण है। किसी भी व्यक्ति, समाज, देश या राष्ट्र को शिक्षित करके ही उन्नत किया जा सकता है। शिक्षा के अभाव में कोई भी योजना सफल नहीं हो सकती।

शिक्षा के क्षेत्र में आर्यसमाज ने पर्याप्त कार्य किया है किन्तु महर्षि दयानन्द की शिक्षण पद्धति को नहीं अपनाया। आज आर्यशिक्षण संस्थाओं ने भी एक उद्योग-धन्धे का रूप धारण कर लिया है और उस उद्योग में आर्यसमाज या आर्यसमाजी प्रमुख उद्योगपति बन गये हैं। इसी भावना से आर्यशिक्षणालयों का संचालन हो रहा है और नये-नये शिक्षणालय प्रारम्भ किये जारहे हैं, जहाँ मैकाले की शिक्षण पद्धति प्रचलित है और प्रथम श्रेणी से ही अंग्रेजी पढ़ाई जाती है। आज [illegible]

आर्य का लगाकर काम मकाले का हो रहा है। "बोवें पेड़ बबूल के तो आम कहां से खायें"। कीकर के पेड़ उगाकर तो शूल कांटे ही प्राप्त करोगे, आमों का मीठा रसास्वदन करने की इच्छा रखना मूर्खता ही है।

हम तो जहां भी गये वा देखा सुना वहां के आर्यसमाजों में झगड़े का मूलकारण आर्य स्कूल पा. पाठशाला देखने सुनने में आये हैं। आर्य स्कूलों में वही सब कुछ पढ़ाया जाता है जो सरकारी स्कूलों में। एक आध घण्टी धर्म-शिक्षा के नाम से अतिरिक्त लगा देते हैं। कहीं-कहीं पर झगड़ों के कारण इन नाम के आर्य स्कूलों की सरकारी स्कूलों से भी खराब अवस्था है। डी. ए. वी. शिक्षण संस्थाओं की भी यही अवस्था है। वहां अंग्रेजी पढ़ाने की विशेष व्यवस्था की जारही है।

यदि ऐसा ही रहा तो फिर आर्यसमाज के नियमों में परिवर्तन करना पड़ेगा—अंग्रेजी साहित्य सभी विद्याओं का खजाना है। अंग्रेजी पढ़ना-पढ़ाना, रेडियो सुनना-सुनाना, टेलीविजन देखना और दिखाना सब आर्यों का परम धर्म है।

हुक्का बीड़ी सिग्रेट, चाय और शराब पीना और पिलाना हानिकारक नहीं अपितु स्वागत योग्य पदार्थ हैं।

जब कभी एक दूसरे से मिलें तब गुडमार्निंग, नमस्कार आदि शब्द उच्चारणपूर्वक हाथ मिलाकर स्वागत करना चाहिये।

महर्षि दयानन्द के निर्देशानुसार स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी दर्शनानन्द आदि महापुरुषों ने गुरुकुलों की स्थापना की थी। प्रारम्भ में गुरुकुलों ने सुयोग्य विद्वान् स्नातक तैयार किये। अब वहां पर भी पाठविधि को बदलते-बदलते स्कूल अथवा कालेज का रूप दे दिया गया है। अब नये गुरुकुल लड़के और लड़कियों के खुल रहे हैं वहां भी पाठ्यक्रम स्कूल वाला ही मिडल और मैट्रिक का चलता है। कहीं-कहीं पर विशारद, शास्त्री भी करवा देते हैं। "गुरुकुल" शब्द संस्था के साथ जोड़कर जनता से चन्दा एकत्रित किया जाता है और पढ़ाते वही हैं जो स्कूल में होता है।

मैं पूछना वा जानना चाहता हूं आर्यों से, आर्य स्कूल कालेज और गुरुकुल संचालकों से, यदि आपके यहां भी वही पढ़ाया जाता है जो सरकारी स्कूल कालेजों में पढ़ाते हैं तो फिर अलग से संस्था बनाने का क्या लाभ है? क्यों आर्यसमाज के धन का दुरुपयोग किया जारहा है? किसलिये नये-नये लघु शिक्षण उद्योग-धन्धे की इकाइयां स्थापित की जारही हैं? क्यों 'आर्य' 'गुरुकुल' और 'दयानन्द' जैसे श्रद्धेय शब्दों को बदनाम किया जारहा है? क्या चाहते हैं आप लोग?

शिवरात्रि के, दयानन्दबोधरात्रि के पावन पर्व पर गम्भीरता से चिन्तन और मनन करने की आवश्यकता है। कहीं आर्य अपने मार्ग से तो नहीं भटक गये हैं? हम अपने ध्येय अथवा उद्देश्य को तो नहीं भूल गये हैं?

—देवव्रत शास्त्री

सिख पंथ तथा पंथिक राजनीति रसातल को उभारने का सही और सूझबूझ वाला कोई प्रयास नहीं, नैतिकता रहित कोरी राजनीति

—प्रो॰ शेरसिंह अध्यक्ष, हरयाणा रक्षावाहिनी

पिछले तीन-चार सालों में "सरबत खालसा" तथा "तन्खैय्या" दो शब्द बार-बार सुनने को मिले हैं। सिख इतिहास में इन दो शब्दों की बहुत महिमा और गरिमा रही है। महिमा और गरिमा इसलिये थी कि चाहे अकाल तख्त का मुखिया कोई सन्त हो या फिर गुरुओं के सिद्धांतों में आस्था रखनेवाली संगत हो, वे जो भी निर्णय लेते थे, उनका ठोस नैतिक आधार होता था। आज न तो गुरुओं के सिद्धांतों में आस्था रखनेवाली जनता रही और न ही बाबा फूलासिंह जैसे सन्त अकाल तख्त पर विराजमान रहे। जनता में चालू लोग सिद्धांतहीन तथा मौका परस्त राजनीति में रंगे हुए हैं और वे साधारण जनता को धर्म और नैतिकता से कोसों दूर घटिया और संकीर्ण भावनायें भड़का कर अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए इस्तेमाल करते हैं। अकाल तख्त के मुखिया गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के तनखादार ही नहीं, बल्कि अव्वल दर्जे के दुनियादार वसी मालिक की खुशामद करके नौकरी पक्की करनेवाले और उनका हुकम बजाने वाले। इसीलिये आज न तो तथाकथित "सरबत खालसाओं" के निर्णयों की महिमा और गरिमा रही है और न तथाकथित अकाल तख्त के "हुकमनामों" की। दोनों में नैतिकता नाम की चीज तो ढूंढने पर भी नहीं मिलती, कोरी राजनीति ही दनदनाती दिखाई देती है।

बाबा फूलासिंह ने महाराजा रणजीतसिंह को 'तन्खैय्या' घोषित किया तो उनकी नैतिक कमजोरियों के कारण उसके पीछे कोई राजनीतिक बदले की भावना नहीं थी। महान् सन्त तथा लोकिता नैतिकता से प्रेरित हुकमनामे के सामने महाराजा को भी झुकना पड़ा। आज के हुकमनामों में नैतिकता तो है ही नहीं, केवल गुटबन्दी की घटिया राजनीति। किसी को 'तन्खैय्या" उसकी नैतिक कमजोरियों के कारण नहीं, बल्कि उसकी राजनीतिक वफादारियों के कारण बनाया जाता है। इसीलिये एक राजनीतिक धड़ा उस हुकमनामे का ढोल पीटता है तो दूसरा धड़ा उसे घटिया कहकर उस की मिट्टी पलीद करता है और 'तन्खैय्या' को सरोपे पेश करता है। यदि चलते-फिरते सफर करते बेगुनाहों को गोलियों से भूननेवालों और बैंकों तथा दुकानों को लूटनेवालों को उनके नैतिक अपराधों और बदकारियों के कारण "तनखैय्या" घोषित किया जाता तो उन हुकमनामों की महिमा और गरिमा होती। परन्तु ऐसा करने का साहस आज के मुख्य ग्रन्थियों में कहां। जो स्वयं अपनी रोजी कमाने के लिए अनैतिक काम करने के लिये तैयार रहे, वह भला कभी सन्त फूलासिंह जैसे हुकमनामे जारी कर सकता है।

श्री सुरजीतसिंह बरनाला ने ठीक ही कहा है कि मुख्य ग्रन्थी और उनके हुकमनामे तो 'कुर्सी' की लड़ाई में हथियार मात्र है, जिसे जिसका जब दाव लगे, वह चला लेता है। भला आदमी इस हथियार को साधारणतया इस्तेमाल नहीं करता है। उसके अपने खिलाफ विरोधी लोग इस्तेमाल न कर सकें, इतने में सन्तोष कर लेता है। परन्तु शरारती लोग दाव लगते पर इस हथियार को इस्तेमाल करने से नहीं चूकते। बरनाला ने इसी में सन्तोष कर लिया कि मुख्य ग्रन्थी कृपालसिंह ने बादल तोहड़ा तथा आतंकवादियों के दबाव में आकर स्वर्ण मन्दिर में पुलिस भेजने के लिये न तो कोई सजा दी और न ही उनको गद्दी को असुरक्षित होने दिया, बल्कि अकाल तख्त की प्रतिष्ठा और सिख जनता में अपनी साख जमाने के लिये पश्चाताप के रूप में जूते साफ कर डाले। परन्तु बादल तोहड़ा ने तो दाव लगते ही गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी पर कब्जा होते ही जत्थेदार कृपालसिंह की छुट्टी करदी और नये मुख्य ग्रंथी से बिना किसी नैतिक अपराध के बरनाला के विरुद्ध हुकमनामा जारी करवा दिया। बरनाला ने भी इस हुकमनामे को रद्दी की टोकरी में फेंक दिया और सिख संगत का एक देशव्यापी सम्मेलन बुलाकर उसको चुनौती दे दी। लोग चाहे उन पर छीटाकशी के लिये कहें कि यह सब उन्होंने अपनी कुर्सी बचाने के लिये किया है, परन्तु गुण्डागर्दी, अन्याय, अनैतिकता, गुरुद्रोह और राष्ट्रद्रोह के विरुद्ध उन्होंने जो कदम उठाया है वह निस्सदेह सराहनीय है।

बादल और तोहड़ा जैसे धाकड़ और अपनी महत्त्वाकांक्षा को पूरा करने के लिये नैतिक अनैतिक सब कुछ कर गुजरनेवाले राजनीतिज्ञ बरनाला के पीछे हाथ धोकर पड़ गये हैं। उनको बरनाला ने ही अपनी शराफत और कमजोरी के कारण एक हथियार स्वयं ही दे दिया। उन्होंने अपनी सरकार को पंथिक सरकार कहकर और अकाल तख्त को राष्ट्र के संविधान से भी ऊंचा दर्जा देकर अपने विरोधियों को एक पैना हथियार दे दिया। बिना किसी अपराध के जूते साफ करके, वही जूते बिना भाड़े मारने के लिये अपने विरोधियों के हाथ में दे दिये। अकाल तख्त को सिखों के धार्मिक मामलों में ही नहीं, बल्कि संविधान और राष्ट्र से भी ऊपर मानकर, बरनाला ने स्वयं ही अपने खिलाफ हुकमनामा देने के लिये अपने विरोधियों को दावत दे दी। देशद्रोहियों, गुरुद्रोहियों, समाजविरोधी तत्त्वों, कातिलों और लुटेरों के कब्जे से निकलने के लिये स्वर्ण मन्दिर में भेजी गई पुलिस के लिये 'पश्चाताप' करके फिर से उन्हीं तत्त्वों को स्वर्ण मन्दिर ही नहीं, अनेक महत्त्वपूर्ण गुरुद्वारे सौंप दिये।

गुण्डागर्दी के विरुद्ध जो साहस बरनाला ने बटोरा है, उसके लिये सारे राष्ट्र को उनका समर्थन करना चाहिये तथा सहयोग और हौंसला देना चाहिये। परन्तु बरनाला को भी अपनी पुरानी गलतियों को सुधारना चाहिये। देशद्रोही, गुण्डे और स्वार्थी तत्त्वों से गुरुद्वारों को मुक्त करवाना चाहिये। यह काम सम्मेलनों के प्रस्तावों से होनेवाला नहीं है। यह काम तो सरकार को करना होगा। गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी को भंग करके, चरित्रवान् तथा धर्म में आस्था रखनेवाले मुख्य ग्रन्थी नियुक्त करके तथा पुलिस भेजकर देशद्रोही, गुण्डे तत्त्वों को निकाल बाहर करना चाहिये। गुरुद्वारों का काम गुरुओं की शिक्षाओं पर आधारित धर्मप्रचार और नैतिक उत्थान तक सीमित करना चाहिये। राजनीति को गुरुद्वारों और तथाकथित पंथिक शिकंजों से मुक्त करके उदारमना होकर संविधान की मान्यताओं के आधार पर चलाना चाहिये। बरनाला भी ऐसा करें तो सारे राष्ट्र को उनकी पीठ ठोकनी चाहिये और हर प्रकार का समर्थन और सहयोग देना चाहिये।

परन्तु यदि बरनाला साहब तथाकथित पंथिक घेरे में अपने आपको जकड़े रखें, गुरुद्वारों को राजनीति में दखल देने दें और अपनी सीमाओं का अतिक्रमण करने दें, संकीर्णता से ऊपर न उठें और उसके कारण देशद्रोही तत्वों को सिख होने के नाते मोहम्मदअली की तरह दूसरे धर्मावलम्बियों से ऊपर मानते रहें, उनके कुकृत्यों के लिए सजा देने की बजाये उनको माफी की बात करते रहें, ऐसे तत्वों को हिम्मत के साथ कुचलने से आनाकानी करते रहें और उनकी राष्ट्रविरोधी, धर्मविरोधी तथा मानवताविरोधी गतिविधियों को उचित ठहराने के लिए पंजाब समझौते पर अमल न करने को ही उनका कारण बताते रहें, जिसके अमल में वे उनकी पार्टी ही सबसे बड़े दोषी हैं, तब तो भारत सरकार को हालत को और नहीं बिगड़ने देना चाहिये और बरनाला की छुट्टी करके इन राष्ट्रद्रोही तत्वों से खुद मजबूती से निपटना चाहिये।

समय आगया है जब बरनाला से खुलकर इस सम्बन्ध में बात की जाये और यदि वे संकीर्णता से ऊपर उठकर कमजोरी दूर करके समस्या से दो दो हाथ करने को तैयार हों तो उनको जितनी सहायता वे मांगें, उससे अधिक उनको दी जाये। यदि वे असमर्थता प्रकट करें तो या तो वे स्वयं अपनी सरकार का त्याग पत्र दें, नहीं तो भारत सरकार उनको बर्खास्त करे। सुरक्षापट्टी बनायें, गुरुद्वारों को गुण्डों से मुक्त कराये और पंजाब के हर नागरिक को सुरक्षा प्रदान करके कानून और व्यवस्था बहाल करें और राष्ट्र को अन्दर और बाहर के अपने विरोधी तत्वों के षड्यन्त्र से बचायें।

हरयाणा में पूर्ण शराबबन्दी लागू करने के लिए जिलाधीश रोहतक को ज्ञापन दिया गया

रोहतक २१ फरवरी आज जिला रोहतक के आर्यसमाजों के कार्यकर्त्ताओं ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के महोपदेशक प० सुखदेव शास्त्री के नेतृत्व में जिलाधीश रोहतक को एक ज्ञापन देकर हरयाणा राज्य में पूर्ण नशाबन्दी लागू करने की मांग की। इस शिष्टमण्डल में महात्मा छोटूराम, महात्मा दलीपसिंह, प० अर्जुनदेव जी आर्य, श्री शेरसिंह प्रिंसिपल गुगनसिंह, श्रीमती सुबीरादेवी आर्या, ब्र० विनोदकुमार आर्य, ब्र० विवेकानन्द आर्य, कप्तानसिंह, प्रधान वेदप्रचार मण्डल पाकस्मा डा० सूरजमल, पं० मुन्शीलाल भजनीक, श्री धूपसिंह सुवाना आदि सम्मिलित थे।

शिष्टमण्डल ने जिलाधीश से अनुरोध किया कि शराब के बढ़ते हुए प्रचार से भ्रष्टाचार फैल रहा है। जनता का नैतिक पतन हो रहा है। परन्तु सरकार शराब के ठेके खोलकर राजस्व की आय में वृद्धि करने के लिए शराब के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा दे रही है। ज्ञापन में भी मांग की है कि जिन ग्राम पंचायतों ने अपने ग्राम से शराब के ठेके बन्द करवाने के प्रस्ताव भेजे गये हैं, उन ग्रामों में आगामी वर्ष १९८७-८८ को ठेकों की नीलामी न की जाये।

जिलाधीश महोदय ने शिष्टमण्डल की बातें ध्यानपूर्वक सुनीं और विश्वास दिलाया कि इस ज्ञापन को उचित कार्यवाही के लिए हरयाणा सरकार को भेज दिया जायेगा।

—केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष

आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापना शताब्दी समारोह की तैयारी—

जिला जींद तथा रोहतक के कार्यकर्त्ताओं को बैठक सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापना शताब्दी समारोह की तैयारी के लिए २१ फरवरी को दोपहर १२ बजे जिला जींद के आर्यसमाजों तथा कार्यकर्त्ताओं की बैठक आर्यसमाज मन्दिर जींद शहर में सम्पन्न हुई। इसमें सभा प्रधान माननीय प्रो० शेरसिंह, पं० शोभाप्रभात विद्यालङ्कृता, सभा उपप्रधान महाशय भरतसिंह वानप्रस्थी, सभामन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री, सभा कोषाध्यक्ष श्री बद्रीप्रसाद आर्य तथा शताब्दी समारोह के संयोजक श्री रघुवीरसिंह जी ने आर्य कार्यकर्त्ताओं को समारोह में तन, मन तथा धन से सहयोग करने की अपील की। सभी आर्यसमाजों ने इस महान् कार्य में सहयोग देने का विश्वास दिलाया और समारोह को सफल करने के लिए अपने सुझाव दिये। आर्यसमाज जींद शहर की ओर से सभा भवन निर्माण हेतु ६००) सभामन्त्री को भेंट किये।

२१ फरवरी को ही दोपहर बाद २-३० बजे जि० रोहतक के आर्यसमाज के अधिकारियों तथा कार्यकर्त्ताओं की बैठक सिद्धांती भवन रोहतक में सम्पन्न हुई। बैठक में सभा के महोपदेशक श्री सुखदेव शास्त्री ने शताब्दी समारोह की आवश्यकता तथा इसे सफल करने के लिए सभी आर्यसमाजों को एकजुट होने के लिए आह्वान किया।

चौ० प्रियव्रत जी ने समारोह को सफल करने के लिए सुझाव दिया कि इस अवसर पर हमें आर्यसमाज का सन्देश घर घर पहुंचाने के लिए अधिक से अधिक सम्पर्क तथा धनसग्रह करना चाहिए। जिस ग्राम में अभी तक आर्यसमाज स्थापित नहीं है, वहां भी प्रचार करके आयसमाज की स्थापना करनी चाहिए। आपने विश्वास दिलाया कि वे २५ हजार से अधिक धनसग्रह करके सभा को पूरा सहयोग देंगे।

डा० देसराज खोरबाट ने पंजाब में आर्यसमाज के प्रचार में आनेवाली कठिनाइयों का उल्लेख किया और रोहतक में जो कि आर्यसमाज का पुराना गढ़ है, समारोह करने का स्वागत किया।

वेदप्रचार मण्डल पाकसमा के प्रधान श्री कप्तानसिंह आर्य ने भी सभा को सहयोग करने का वचन दिया। श्री रणसिंह शास्त्री, वैद्य भरतसिंह, स्वामी धर्मानन्द, ला० बद्रीप्रसाद आर्य, चौ० भरतसिंह दूबलधन, डा० सुदर्शनदेव आचार्य सभा उपमन्त्री, श्री रघुवीरसिंह, पं० शोभाप्रभात विद्यालंकृता तथा सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह ने कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करते हुए शताब्दी समारोह को सफल करने के लिए आज से ही कार्य में जुट जाने का अनुरोध किया। जिला में तहसील वार तैयारी उपसमितियों का भी गठन किया गया।

—केदारसिंह आर्य

ओ३म्   दूरभाष : ४८१२

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, सिद्धांती भवन, रोहतक

क्रमांक   तिथि २०-२-१९८७

माननीय प्रधान जी/मन्त्री जी !

सप्रेम नमस्ते ।

पूज्यपाद श्रद्धेय स्वामी सर्वानन्द जी महाराज अध्यक्ष यतिमण्डल, दीनानगर (पंजाब) के आदेशानुसार उन्हीं की अध्यक्षता में १ मार्च, १९८७ ई० रविवार को दोपहर पश्चात् गुरुकुल झज्जर में १. रोहतक, २. सोनीपत, ३ फरीदाबाद, ४. गुडगावां, ५ महेन्द्रगढ़, ६. भिवानी और ७. जींद इन सात जिलों के आर्यसमाजों के अधिकारियों एवं प्रमुख आर्यकार्यकर्त्ताओं की एक आवश्यक बैठक बुलाई गई है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सभी आर्यसमाजों के अधिकारियों और सदस्यों से निवेदन है कि वे इस बैठक में अवश्यमेव सम्मिलित होवें।

विचारणीय विषय

१—आर्यसमाज में युवक-युवतियां नहीं आरही हैं।

२—अनेक स्थानों पर समाज मन्दिर बने हुए हैं किन्तु आर्यों की शिथिलता के कारण नियमित साप्ताहिक सत्संग और वार्षिक उत्सव नहीं होते।

३—आर्यसमाजियों के पारस्परिक मन-मुटाव के कारण समाज मन्दिरों पर विरोधी कब्जा करते जारहे हैं या झगड़ा चल रहा है।

४—आर्यसमाज के सदस्य और अधिकारीगण भी अपनी आय का शतांश आर्यसमाज को नहीं देते।

५—अच्छे-अच्छे आर्य परिवारों में भी दहेज का लेन-देन प्रचलित है।

६—आर्य परिवारों में भी अभक्ष्य पदार्थ मांस अण्डा शराब सिगरेट-बीड़ी का प्रचार बढ़ रहा है।

७—अन्य प्रांतों में यह प्रसिद्ध है कि हरयाणा तो शुद्ध आर्यसमाजी प्रांत है, लेकिन यहां पर भी ब्रह्मकुमारी, राधा स्वामी, रजनीश, जय गुरुदेव, ईसाई, मुसलमान आदि मिथ्या सम्प्रदाय वा मत-मतांतरों का प्रचार बढ़ रहा है इत्यादि पर विचार-विमर्श करके आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार का कार्यक्रम बनाया जावेगा और २२, २३, २४ मई, १९८७ को रोहतक में आर्य प्रतिनिधि सभा शताब्दी सम्मेलन की तैयारी पर भी विचार किया जायेगा।

निवेदक :

ओमानन्द सरस्वती	प्रो. शेरसिंह	वेदव्रत शास्त्री	[illegible]प्रसाद आर्य	[illegible]
प्रधान	प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष	वेदप्रचाराधिष्ठाता
परोपकारिणी सभा	आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक			

शिवरात्रि के बाद माता-पुत्र का संवाद

माता—मूलशंकर फकीरी मत धार रे। तेरी याणी उमर वाणी वेद की ।।
पुत्र—मन्दिर का शिव सच्चा शिव नहीं। अम्मा बात बड़ी यह खेद की ।।
माता—बेटा धूप पडे रे धरती तपे, तेरा कुमला जायेगा गात रे।
तू मान जा मेरी बात रे, दयाराम फकीरी मत धार रे।
तेरी याणी उमर वाणी वेद की ।।१

पुत्र—अम्मा धूप पड़ो हे धरती तपो, चाहे जल जाये मेरा गात है।
पर शिव की करूंगा तलाश है, तू मत घबरा मेरी मात है ।।२

माता—बेटा सावण मास सुहावना, जब बरसेगा मूसलाधार रे।
तेरा बह जाये धूणा सांथरा, दयानन्द फकीरी मत धार रे।
तेरी याणी उमर वाणी वेद की ।।३

पुत्र—अम्मा बरसो दिन और रात है, चाहे बह जाये धूणा सांथरा।
पर मन भक्तों का ना बहे री, बस चिन्ता की यही बात है ।।४

माता—बेटा जाड़ा बड़ा है ठाड़ा रे, तेरा थर-थर कांपेगा गात रे।
तू क्यों नहीं मानता बात रे, मूलशंकर फकीरी मत धार रे।
तेरी याणी उमर वाणी वेद की ।।५

पुत्र—माता मूल जब दौड़ लगायेगा, जाड़ा दूर खड़ा लखायेगा।
है प्राणायाम मेरे साथ हे, चिन्ता की नहीं बात हे ।।६

माता—बेटा बन में मिलेंगी कहां रोटियां, तुझे बन में मिलेंगी कहां रोटियां।
और मेरे जैसी मात रे, दयाराम फकीरी मत धार रे।
तेरी याणी उमर वाणी वेद की ।।७

पुत्र—माता रोटी तो देंगे भगवान् री, मुझे रोटी देंगे प्रभुभक्त हे।
और घर-घर तेरे जैसी मात हे, पत्थर के शिव को लोग पूजते।
अम्मा बात बड़ी यह खेद की ।।८

माता—बेटा साधु बाणा क्यों धारता, तेरा कोई नहीं देंगे साथ रे।
मूलशंकर फकीरी मत धार रे, तेरी याणी उमर वाणी वेद की ।।९

(शेष पृष्ठ १० पर)

सच्चे शिव

सच्चे शिव के मिलने की आस, मन्दिर में स्वामी जागते आधी रात। टेक

चूहे निकले बिल से बेशुमार, चढ़ावा खाकर भागते आधी रात।
उसी समय हुआ था वैराग्य, चिन्ता में साधु जागते आधी रात।
मेरा प्यारा शिव तो कोई और है, घर छोड़ वन को भागे आधी रात।
मूलशंकर पाये पद निर्वाण, हृदय के धोये दाग थे आधी रात।
आप तर गये हमको गये तार, भारत के खुले भाग्य थे आधी रात।
लालसिंह के मनमें सच्चे भाव, यूं गाये सत्य के राग थे आधी रात॥

प्रेषक—सत्यवान एवं हुक्वा बाबा

(पृष्ठ ६ का शेष)

पुत्र—माता देश दुःखी बिन वेद के, मेरा देश दुःखी बिन वेद के।
और दुखिया गैया मात है, इसलिए साधु बाणा धारता।
तू मत घबरा मेरी मात हे, यह बात बड़ी है भेद की।
मन्दिर के शिव को लोग पूजते, यह बात बड़ी है अम्मा खेद की॥१०

माता—बेटा जल्दी फकीरी बाणा धार ले, अच्छा जल्दी फकीरी बाणा धार रे।
और जग से मिटाओ उत्पात रे, ओ३म् स्वस्ति ते पन्था लाडला।
और ईश्वर देंगे तेरा साथ रे॥११

माता—मूलशंकर फकीरी बाणा धार ले, दयाराम फकीरी बाणा धार रे।
और जग से मिटाओ उत्पात रे, बेटा ईश्वर देंगे तेरा साथ रे॥१२

माता—दयानन्द फकीरी बाणा धार ले, मेरे लाल फकीरी बाणा धार रे।
तेरी वाणी नहीं यह खेद की॥१३

महर्षि का वीर सैनिक—नैष्ठिक

शिवरात्रि के पवित्र अवसर पर --

दयानन्द संसार बदलने वाला था

सुखदेव शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

गुजरात प्रांत में मौरवी राज्य में टंकारा नामक छोटे से ग्राम में अम्बाशंकर नाम का एक औदीच्य ब्राह्मण रहता था। विक्रमी सवत् १८८१ के पौष मास में उसके यहां एक बालक ने जन्म लिया। उनके जन्म की अंग्रेजी तिथि १२ फरवरी, १८२४ मानी जाती है। संन्यास लेने पर इसी मूल-शंकर का नाम दयानन्द हुआ। आठवें वर्ष में मूलशकर का यज्ञोपवीत संस्कार किया गया और गायत्री, संध्या, रुद्री आदि कण्ठस्थ कराये गये। बाल्यकाल में मूलशंकर की स्मरणशक्ति अच्छी थी। एक ब्राह्मण के बालक को जैसी प्रारम्भिक शिक्षा मिलनी चाहिए वह मूलशकर को प्राप्त होती रही। १४ वर्ष की आयु तक वह यजुर्वेद संहिता कण्ठस्थ कर चुका था। व्याकरण में भी उसका प्रवेश होगया था। इतना पढ़-लिख लेने पर मूलशंकर के गुरुओं ने यह सम्मति दी कि अब वह इस योग्य होगया है कि कुलक्रमागत धार्मिक कृत्यों में भी भाग लेने लगे।

अब आगई वह शिवरात्रि--जिसने बोधरात्रि बनकर दयानन्द को बोध करा दिया था। कई रात्रि एवं दिन भी बड़े कल्याणकारी होते हैं जो जाति एव राष्ट्र के जीवन में बड़े क्रांतिकारी सिद्ध होते हैं।

१८९४ विक्रमी की माघबदी १४ को शिवरात्रि का व्रत था। सारे देश में यह पर्व प्रति उल्लास से मनाया जाता है। शिव का अर्चन होता है। अन्न न खाना और नींद न लेना दोनों ही पुण्यजनक समझते जाते हैं। साधारणजन इन्हें ही व्रत मानते हैं। शिव कोई परमात्मा नहीं, किन्तु यह तो हरयाणा के एक महान् सम्राट् थे। रोहतक खोखराकोट में इनकी राजधानी थी, जहां आजकल आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वेदप्रचार कार्यालय है। शिव महाराजा के दोनों पुत्र गणेश और कार्तिकेय यहां पर राज्य करते थे। गणेश प्रधान सेनापति थे। शिव और महारानी पार्वती देवी कश्मीर में अमरनाथ में रहते थे। मानसरोवर झील के पास भी यदाकदा भ्रमणार्थ जाया करते थे। हिमालय से उन्हें बड़ा प्यार था। प्राकृतिक छटा को देखकर दोनों ही बड़े स्वस्थ और प्रसन्न रहते थे। अमरनाथ से हरद्वार तक उनका राज्य था। उस समय हरयाणा बड़ा विशाल था। शिव पार्वती प्रजा का पुत्रवत् पालन करते थे। प्रजारक्षण के विषय में शिव पार्वती की अनेक कथा व किंवदन्तियां हरयाणा में अब तक भी प्रचलित हैं। प्रजा के लोग भी दोनों का बहुत ही अधिक सम्मान करते थे। किन्तु महाभारत के युद्ध के बाद सनातन मतावलम्बियों ने शिव पार्वती के विषय में अन्यथा आख्यान कहना आरम्भ कर दिये। शिव को जहां भोला भण्डारी कहा गया, वहां उसके लिंग की पूजा भी आरम्भ करवादी गई। अस्तु।

बालक मूलशंकर के सामने भी जब शिवरात्रि का व्रत रखने का प्रस्ताव किया गया, तब वह पहले राजी न हुआ। माता ने भी उसके पिता अम्बाशंकर को यही कहा कि अभी यह बालक है। अतः भूख और नींद को सहन न कर सकेगा। पिता के आग्रह के कारण मूलशंकर शिवरात्रि का व्रत रखने के लिए तैयार होगया। नियत समय में पुजारी और गृहस्थ लोग मन्दिर में पूजा आदि कार्यों में लग गये। पूजन शुरु होगया। घोर अंधेरी रात्रि आई, सभी सोने लगे। कुछ ही घण्टों में मन्दिर में सन्नाटा छागया। केवल भक्त बालक मूलशंकर ही ऐसा था जो जागता रहा। उसकी नजर शिव लिंग पर गड़ी हुई थी। चूहे निकले, मूर्ति के ऊपर चढ़कर अन्न सामग्री को खाने लगे। मूलशंकर ने सोचा कि जो महादेव बड़े-बड़े राक्षसों को मार गिराता है, उससे तो ये चूहे भी नहीं हटाये जाते। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। शिव कुछ भी नहीं कर सका, उन अपवित्र चूहों का। उसने सोचा, क्या यह पत्थर ही शिव है? यदि यही शिव है तो यह तो जड़ है। इसकी पूजा करने से क्या लाभ? शिव को मूर्ति की पूजा से मूलशंकर की आस्था उठ गई। उसने पिता से भी अनेक प्रश्न किये, किन्तु उनका पिता भी अनुकूल उचित न दे सका। रात्रि को बीच में ही मूर्ति-पूजा छोड़कर मूलशंकर घर पहुंचा और उसी दिन से असली शिव परमात्मा की भक्ति एवं खोज करने की ठानी।

उसके पश्चात् उसकी बहन और चाचा जी की मृत्यु से उसे संसार से वैराग्य होगया और वह ईश्वर की प्राप्ति और मृत्यु को जीतने के लिए १९ वर्ष की आयु में घर से निकल पड़ा। यह सन् १८४५ की बात है। १०-१५ वर्ष दयानन्द अनेक महात्माओं सन्तों से योग-विद्या सीखता रहा। जंगल पर्वतों में ईश्वर की खोज में घूमता रहा। इसी बीच स्वामी पूर्णानन्द जी से संन्यास दीक्षा भी ले ली थी। किन्तु १८५७ के स्वातन्त्र्य सग्राम के आ जाने से इसमें महान् सहयोग देता रहा। महारानी झांसी तांत्या टोपे, नाना भड़नवीस, अजीमुल्ला खां, रंगू बापू आदि स्वतन्त्रता सेनानियों को आशीर्वाद देकर उनका मार्गदर्शन भी करता रहा। स्वयं भी भाग लेता रहा। स्वतन्त्रता सग्राम के समाप्त होने पर १४ नवम्बर, १८६० में गुरुवर दण्डी विरजानन्द जी के पास विशेष अध्ययन के लिए मथुरा पहुंचे। गुरु जी से सभी विषयों में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करके १८६३ में गुरु दक्षिणा में अपना सर्वस्व समर्पण करके वेदोद्धार और देशोद्धार के लिए कार्यक्षेत्र में उतरे।

सुधार की प्रारम्भिक दशा १८६३ से १८६६ तक हम देखें तो पहले तीन साल तक महर्षि ने जो सुधार-कार्य किया, वह एक प्रकार से परीक्षणात्मक था। वह उस सर्वतोगामी सुधार का प्रारम्भिक पड़ाव था। जो कुछ वर्ष पीछे भारत के विशाल कार्य को प्रकम्पित कर देनेवाला था।

इन प्रारम्भिक तीन सालों में महर्षि ने सुधार उपस्थित किये, उनमें से पहला और मुख्य स्थान मूर्ति-पूजा के खण्डन का है। मूर्तिपूजा में उनका विश्वास उसी क्षण से हिल चुका था, जिस क्षण उन्होंने शिवरात्रि की अंधियारी में शिवलिंग के ऊपर चूहे को चढ़ते हुए देखा था। उस समय जो अश्रद्धा उत्पन्न हुई वह सत्संग, विद्याभ्यास और विचार से विरोधी विश्वास के रूप में परिणत होगई। मूर्तिपूजा को भ्रमात्मक मानकर परमात्मा के निराकार निर्दोष अद्वितीय स्वरूप का प्रतिपादन करना महर्षि का प्रारम्भ से ही लक्ष्य था। सुधारकों की कसौटी ईश्वर सम्बन्धी विश्वास है। कोई सुधारक या धर्मसंस्थापक उपास्यदेव का जिस स्वरूप में प्रतिपादन करता है, उसी से उसका ऊंच-नीच परखा जाता है। कोई भी धर्म-प्रचारक जनता में कोई भारी परिवर्तन नहीं उत्पन्न कर सकता, जब तक वह

उनके मूल धार्मिक विचारों को नये रंग पर नहीं मोड़ देते।

महर्षि दयानन्द के हृदय में सुधारों की भावना का प्रारम्भ मूर्ति की सत्ता में अश्रद्धा होने से हुआ था। ईश्वर सम्बन्धी अशुद्ध विचारों की जड़ में यह पहला कुठाराघात था।

अब जितना भी वे कार्य-क्षेत्र में बढते गये, विजयी होते चले गये। वैष्णव, शैव, रामानुज वल्लभ सम्प्रदाय, भागवत आदि पुराणों का भी वे जोरदार खण्डन करने लगे थे। देश में जितने भी अवैदिक मत पन्थ थे, वे उनका खण्डन करते थे।

ईसाई, मुसलमान, बौद्ध, जैनमतो का भी उन्होंने बड़ा खण्डन किया। उनके खण्डन से प्रभावित होकर ईसाई मुसलमानों ने अपने-अपने ग्रंथों में बड़े-बड़े परिवर्तन करने पड़े।

वेदों के प्राचीन भाष्यकार सायण महीधर के भाष्यों का भी उन्होंने खण्डन करके शुद्ध वेदभाष्य की रचना की।

योरोप के वेदाभाष्यकार मैक्षमूलर, ग्रीफिथ आदि की भी उन्होंने बड़ी आलोचना की।

वैदिक दर्शनों के भी अनेक आधुनिक विद्वानों ने जो गलत भाष्य किये थे, उनका भी खण्डन करके दर्शनों का ठीक समन्वय करके शुद्ध रूप से जनता के सामने रखा। भारत की पराधीनता की बेड़ी तोड़ने के लिए सर्वप्रथम स्वराज्य प्राप्ति की भावना का प्रचार सत्यार्थप्रकाश, आर्याभिविनय व वेदभाष्य के द्वारा किया।

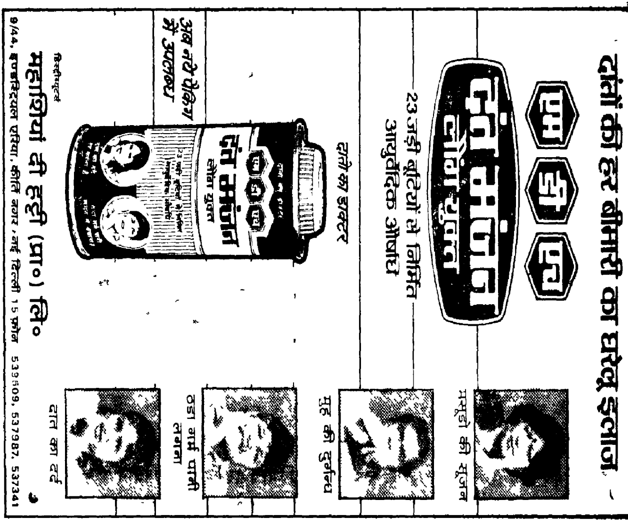
भारत की अविद्या, आलस्य, अकर्मण्यता, पराधीनता एवं दुःखों के निवारण के लिए महर्षि ने दस सूत्री कार्यक्रम आर्यसमाज के नियमों के रूप में प्रदान किया। वेद-विद्या को विज्ञान के युग में प्रतिष्ठित करने के लिए ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका और वेदभाष्य द्वारा वेद को सब विद्याओं का मूलस्रोत प्रतिपादित किया। मानवजाति को संस्कारित करने के लिए संस्कार-विधि द्वारा सोलह सस्कारों का प्रवचन किया। आध्यात्मिक उन्नति के लिए यज्ञ, सन्ध्योपासना का अधिकार सबको दिया।

अकेले महर्षि दयानन्द ने भारत को बदल कर रख दिया। उसके बाद आर्यसमाज ने जो कार्य देश के उत्थान के लिए किये, उनको मिशाल भारत के इतिहास में नहीं मिलेगी।

आज भी देश की गिरती हुई अवस्था से आर्यसमाज चिन्तित है। आर्यसमाज ही इसे दुबारा उठा सकता है और किसी मतमतांतर में अथवा किसी राजनीतिक पार्टी में इतनी शक्ति नहीं है जो इसका पुनरुद्धार कर सके।

मण्डी डबवाली में मुण्डन संस्कार

१-२-८७ दिन रविवार को प्रातः ६ बजे श्री रवीन्द्रकुमार जो सुपुत्र श्री भारत मित्र जी ने श्री ओम्प्रकाश जी आर्य वानप्रस्थी अधिष्ठाता आर्य वानप्रस्थ आश्रम गुरुकुल भटिण्डा के द्वारा वैदिकरीति से अपने पुत्र रोविनकुमार का मुण्डन संस्कार कराया। सभी उपस्थित नर-नारियों ने मिलकर सहभोज किया। इस शुभ अवसर पर श्री भारत मित्र जी ने ५०) आर्य वानप्रस्थ आश्रम भटिण्डा को दान दिये।



हरयाणा में अधिकृत विक्रेता

१. मैसर्ज परमानन्द साईंदित्तामल, भिवानी स्टैंड, रोहतक

२. ,, फूलचन्द सीताराम गांधी चौक, हिसार

३. ,, सन-अप-ट्रेडर्स सारंग रोड, सोनीपत

४. ,, हरीश एजेन्सीज ४९९/१७ गुरुद्वारा रोड, पानीपत

५. ,, भगवानदास देवकीनन्दन सर्राफा बाजार पुराना, करनाल

६. ,, घनश्यामदास सीताराम बिचला बाजार, भिवानी

७. ,, कृपाराम गोयल रुड़ी बाजार, सिरसा

८ ,, कुलवन्त पिकल स्टोर्स, शाप न० ११५, मार्किट नं० १, एन० आई० टी० फरीदाबाद

९. ,, चन्द्रप्रकाश नवीनप्रकाश ३१८/५ जेकमपुरा, गुडगांव

आर्य पुरोहितों की आवश्यकता

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को आर्यसमाजों में नियुक्त करने के लिए आर्य पुरोहितों की आवश्यकता है। सेवा-निवृत्त गुरुकुलों के स्नातकों और अध्यापकों को प्राथमिकता दी जायेगी। वैदिक-रीति के अनुसार ग्रामों में संस्कार कराने, सत्संगों में यज्ञ तथा प्रवचन करने का अनुभव रखनेवाले महानुभाव अपनी योग्यता, अनुभव, आयु आदि के प्रमाण-पत्रों सहित अपने आवेदन-पत्र निम्न पते पर भेजें। दक्षिणा योग्यता तथा अनुभव और कार्य के आधार पर दी जायेगी।

—वेदव्रत शास्त्री

मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका से

प्र०—वेदों के उत्पन्न करने में ईश्वर को क्या प्रयोजन था ?

उ०—मैं तुमसे पूछता हूं कि वेदों के उत्पन्न नहीं करने में उसको क्या प्रयोजन था ? जो तुम यह कहो कि इसका उत्तर हम नहीं जान सकते तो ठीक है, क्योंकि वेद तो ईश्वर की नित्य विद्या है, उस की उत्पत्ति या अनुत्पत्ति हो ही नहीं सकती। परन्तु हम जीव लोगों के लिए ईश्वर ने जो वेदों का प्रकाश किया है, सो उसकी हम पर परमकृपा है। जो वेदोत्पत्ति का प्रयोजन है सो आप लोग सुनें। प्र०—ईश्वर में अनन्त विद्या है वा नहीं। उ०—है। प्र०—सो उसकी विद्या किस प्रयोजन के लिये है ? उ०—अपने ही लिये, जिससे सब पदार्थों का रचना और जानना होता है। प्र०—अच्छा तो मैं आपसे पूछता हूं कि ईश्वर परोपकार को करता है वा नहीं ? उ०—ईश्वर परोपकारी है। इससे क्या आया ? इससे यह बात आती है कि विद्या जो है सो स्वार्थ और परार्थ के लिये होती है, क्योंकि विद्या का यही गुण है कि स्वार्थ और परार्थ इन दोनों को सिद्ध करना।

जो परमेश्वर अपनी विद्या का हम लोगों के लिये उपदेश न करे तो विद्या से जो परोपकार करना गुण है सो उसका नहीं रहे। इससे परमेश्वर ने अपनी वेद-विद्या का हम लोगों के लिये उपदेश करके सफलता सिद्ध करी है, क्योंकि परमेश्वर हम लोगों का माता-पिता के समान है। हम सब लोग जो उसकी प्रजा हैं, उन पर नित्य कृपादृष्टि रखता है। जैसे अपने सन्तानों के ऊपर पिता और माता सदैव करुणा को धारण करते हैं कि सब प्रकार से हमारे पुत्र सुख पावें, वैसे ही ईश्वर भी सब मनुष्यादि सृष्टि पर कृपादृष्टि सदैव रखता है, इससे ही वेदों का उपदेश हम लोगों के लिये किया है। जो परमेश्वर अपनी वेद-विद्या का उपदेश मनुष्यों के लिये न करता तो धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि किसी को यथावत् प्राप्त न होती, उसके बिना परम आनन्द भी किसी को नहीं होता। जैसे परमकृपालु ईश्वर ने प्रजा के सुख के लिये कन्द, मूल, फल और घास आदि छोटे छोटे पदार्थ रचे हैं सो ही ईश्वर सब सुखों के प्रकाश करनेवाली, सब सत्य-विद्याओं से युक्त वेद-विद्या का उपदेश भी प्रजा के सुख के लिये क्यों न करता ? क्योंकि जितने ब्रह्मांड में उत्तम पदार्थ हैं उनकी प्राप्ति से जितना सुख होता है सो सुख विद्या प्राप्ति होवे के सुख से हजारहवें अंश के भी समतुल्य नहीं हो सकता। ऐसा सर्वोत्तम विद्या पदार्थ जो वेद है उसका उपदेश परमेश्वर क्यों न करता ? इससे निश्चय करके यह जानना कि वेद ईश्वर के ही बनाये हैं।

व्यवस्थापक
पुष्करलाल आर्य वैदिक प्रचार समिति,
१२१ कोटन स्ट्रीट, कलकत्ता-७००००७

वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। ईश्वर पर आस्था रखते वाले को आर्य कहते हैं।

लो ! आगई शिवरात

लेखक—यशपाल आर्यबन्धु, आर्यनिवास चन्द्रनगर, मुरादाबाद-२४४०३२

डेढ सौ वर्ष पूर्व टंकारा के एक छोटे से शिवालय में एक छोटे से चूहे ने जो उछल-कूद मचाई थी; वह दिशाओं को एक नया दिशाबोध एक नई क्रांति दे गई। तभी कविवर सौमित्र ने कहा था कि—

"एक मूषक ने जगाया उग्र उहापोह, जन्म के संग क्रांति लाया सत्य का विद्रोह"

वस्तुतः यह घटना ऐसी थी कि जिससे समस्त दिशाओं ने एक तीव्रतर सुधारात्मक नवीन मोड़ लिया था। दिनकर का यथार्थ कथन है कि—परिवर्तन जब धीरे-धीरे आता है तो उसे सुधार कहते हैं, किन्तु वही जब तीव्रगति से पहुंच जाता है तो उसे क्रांति कहते हैं। यह घटना एक तीव्रतर परिवर्तन का कारण बनी। वस्तुतः चूहे वाली इस छोटी-सी घटना पर सुधार का जो भव्य भवन खड़ा किया गया, उसी का नाम आर्यसमाज है, जिसे एक धधकती ज्वाला का नाम दिया गया है, जो कि महर्षि दयानन्द के हृदय में प्रादुर्भूत हुई थी।

बालक मूलशंकर अपने पिता के साथ शिवालय में शिव की पूजा के लिए समुपस्थित था। धीरे-धीरे सभी सो गये, यहां तक कि मन्दिर का पुजारी भी सो गया। किन्तु वह निष्ठावान् बालक निरन्तर जागता रहा, क्योंकि उसे बताया गया था कि शिव के मन्दिर में सो जाने से शिवजी रूठ जाते हैं। अतः शिवजी न रूठें, इसी उद्देश्य से वह बालक जागता रहा। तभी एक चूहा बिल में से निकला और शिव की पिंडी पर चढ़कर मिठाई खाने लगा। बालक मूलशंकर के मनमें एक जिज्ञासा जगी कि यह कैसा शिव है कि जो अपने ऊपर से एक छोटे से चूहे को भी नहीं भगा सकता। तब उसने पिता को जगाया और अपनी शंका व्यक्त की। पिता ने झिड़क दिया कि ऐसे अनास्थाभरे शब्द नहीं कहा करते। पर सत्यान्वेषी बालक कब माननेवाला था। जब उसे पता चला कि सच्चे शिव नहीं, अपितु उसके प्रतीक मात्र हैं तो उसने निश्चय किया कि वह सच्चे शिव को खोज के रहेगा और इस प्रकार बालक मूलशंकर का जागरण एक ऐसा जागरण बन गया कि जो उसे सदा-सदा के लिए जगा गया। तभी कवि ने कहा कि—

"तुम जगे ऐसे कि फिर सोये नहीं पलभर, प्रातः लाया रातभर का जागरण ऋषिवर।"

और सत्य तो यह है कि इस जागरण के बाद वह कभी सो ही नहीं पाया। मानो—"इक तड़पीले ख्वाब की खातिर, उम्रभर जागता रहा कोई।"

महर्षि स्वयं ही नहीं जगे, जग को भी जगा गये। तभी कोटि-कोटि कण्ठ एक साथ गा उठे—"सोतों को जगा गया फिर बेदार वो मस्ताना जोगी।" और "धन्य है तुझको ऐ ऋषि, तूने हमें जगा

दिया। सो-सो के लूट रहे थे हम, तूने हमें बचा लिया।" किन्तु आज लगता है कि ऋषि के अनुयायी सो गये हैं, तभी जाति के लाल लुट रहे हैं। कोई यवन, कोई ईसाई हो रहा है। आज कहां है लेखराम ? आज कहां है श्रद्धानन्द जो शुद्धि का चक्र चलावे ?

दु:ख है जिसे राष्ट्र का पुरोहित बनकर जागना और जगाना था, वही आज आलस्य और प्रमाद की निद्रा से अभिभूत है। वरना कविवर सौमित्र को यह क्यों कहना पड़ता कि—

समय दे रहा है चुनौती पर चुनौती, देखता हूं पीये जारहे हैं लोग।
कैसा पहरा है चौकीदारों का, बाप बर्बाद किये जारहे हैं लोग॥

आज चमन लुट रहा है, वतन लुट रहा है। फिर आर्यजाति जग क्यों नहीं रही ? किन्तु वास्तविकता यह है कि—

जर्रे-जर्रे से वतन की यह सदा आती है, आर्यों होश में आओ वरना कज़ा आती है। और
नहीं चेतोगे तो मिट जाओगे ऐ ! हिन्दोस्तां वालो।
तुम्हारी दास्तां तक न रहेगी दास्तानों में॥

आज की शिवरात्रि का यही सन्देश है कि—

मिलाओ शुद्ध दिल से शुद्ध करके लख्ते जिगरों को।
तेरे नूरे नज़रों से मिन्हा होते जाते हैं॥

पता नहीं कविवर कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर की यह चेतावनी हम क्यों भूल गये कि—

वैदिक की इमारत कहीं मिसमार न हो जाये। गुलशन में कहीं देखना पुरखार न हो जाये॥
देखो तबीबो कहने ही कहने में तुम्हारे। चलता कहीं जहां से यह बीमार न हो जाये॥
जल्दी से जातपात के बन्धन को तोड़ दो। यह नुस्खे शुद्धि कहीं बेकार न हो जाये॥
उल्फत दिखाओ ऐसी अछूतों से कि कोई। ईसाई यवन बनने को तैयार न हो जाये॥

आज की शिवरात्रि का यही सन्देश है। कविवर सौमित्र के शब्दों में—

आज की शिवरात फिर सन्देश लाई है। और ऐसी रात को शत-शत बधाई है।
हर मनुज बोले, यही वर मांगता हूं मैं। आगई शिवरात तो लो जागता हूं मैं॥
शक्ति दो प्रभुवर ! कलुष सब त्यागता हूं मैं। हर शिवालय से कहे तम, भागता हूं मैं॥
कामना जागे किसी में तो यही जागे। मांगना चाहे मनुज तो बस यही मांगे॥
कोख दो तो मूलशंकर मातु जैसी दो। जन्म दो तो पुण्य भू गुजरात जैसी दो॥
प्रात: दो, ऋषिबोध के उस प्रात: जैसी दो। रात दो तो फिर उसी शिवरात जैसी दो॥

नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर

आर्यसमाज लल्लापुरा वाराणसी में दि० २५-१-८७ से १ फरवरी, ८७ तक नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर 'नेशनल इन्टीग्रेटेड मेडिकल एसोसियशन वाराणसी के सौजन्य से लगाया गया। शिविर का उद्घाटन प्रो डा. के. एन. उडप्पा भूतपूर्व निदेशक चिकित्सा विज्ञान संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी ने किया, एवं आपरेशन डा. ए. एस. के. पाठक (एम. एस.) नेत्र चिकित्सक तथा डा. आर. पी. त्रिपाठी के देख-रेख में किया गया। आर्यसमाज लल्लापुरा ने ११ मरीजों के दुग्ध, चाय, भोजन व चश्मे की व्यवस्था की। कार्यक्रम सुव्यवस्थित ढंग से सम्पन्न होगया। —बुद्धदेव आर्य

महर्षि दयानन्द और उनकी हिन्दी

स्वामी वेदानन्द वेदवागीश ११६ गौतमनगर, नई दिल्ली

आर्यजगत् में यह सर्वविदित है कि महर्षि दयानन्द का जन्म गुजरात प्रांत के काठियावाड़ में हुआ था, जहां की भाषा गुजराती थी। घर से निकलकर भी उन्होंने हिन्दी भाषा नहीं सीखी थी। पठन-पाठन में व्यवहार संस्कृत भाषा से रहा। गुरु विरजानन्द जी की पाठशाला में भी अध्ययन सस्कृत मध्य से ही करते रहे। प्रचार के क्षेत्र में रहते हुए संस्कृत मध्य से ही प्रचार कार्य किया। कलकत्ता नगर में जब वैदिक नाद गुजाने पहुंचे, तब सुहृज्जनों की प्रार्थना पर सर्वजनकल्याण की भावना को सर्वोच्च स्थान देते हुए हिन्दी अपनाने का विचार गहरा बैठ गया और हिन्दी सीखना आरम्भ किया। वेदांगों और सत्यार्थप्रकाश जैसे ग्रंथों को महर्षि ने हिन्दी भाषा से सुशोभित किया। अतः उन्होंने हिन्दी भाषा का ज्ञान बड़ी आयु में बहुत पीछे किया। अत: अनेक स्थलों पर उनकी हिन्दी हमारी हिन्दी से भिन्न जाती प्रतीत होती है और हम यह कहने का साहस बटोर लेते हैं—ऋषि जी को हिन्दी का ज्ञान न्यून है। उदाहरणार्थ—आर्यसमाज का तृतीय नियम बनाया—वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है-इस वाक्य में बहुतों ने संशोधन करके "विद्याओं की पुस्तक है, प्रकाशित कर दिया। ईश्वर स्तुति प्रार्थना के मन्त्र—यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा। यहां महर्षि ने हिन्दी में महित्वा का अर्थ किया अपने महिमा से। कुछ मनीषियों ने इसके स्थान पर लिखा—अपनी महिमा से, इस प्रकार अन्यत्र भी परिवर्तन करते जारहे हैं।

ऋषियों के ग्रंथों में मैं एक बात स्मरण कराना चाहता हूं, वह यह—महर्षि पतंजलि अष्टाध्यायी महाभाष्य में लिखते हैं--'व्याख्यानतो विशेषप्रतिपत्तिर्नहि सन्देहादलक्षणम्' पाणिनि भगवान् द्वारा निर्मित कोई भी सूत्र सन्देह कोटि में नहीं लाना चाहिये। व्याख्यान करके विशेष बोध हो जायेगा और उन द्वारा किया गया लक्षण (सूत्र) यौक्तिक रहेगा, अशुद्ध नहीं। ठीक यह ही बात महर्षि की हिन्दी पर चरितार्थ होती है। व्याख्या करके देखें कि उन द्वारा लिखित हिन्दी कहां तक ठीक है।

व्याख्यान—संस्कृत भाषा में तीन लिंग माने गये हैं—१. पुलिंग, २. नपुंसकलिंग, ३ स्त्रीलिंग। जो महानुभाव संस्कृत भाषा के विद्वान् हैं, वे विवेक कर सकते हैं कि सातों विभक्तियों में नपुंसकलिंग के रूप स्त्रीलिंग शब्द के रूपों में नहीं आते। हां, पुलिंग शब्द की पांच विभक्तियों में अवश्य आते हैं। यथा—वस्तु शब्द को ही लें। इसके प्रथमा और द्वितीया विभक्ति के रूपों में ही भेद है। शेष विभक्तियां पुल्लिंग सदृश ही हैं। जब यह बात है तब वस्तु शब्द को हम स्त्रीलिंग में क्यों प्रयुक्त करते हैं? महर्षि दयानन्द ने पुल्लिंग का आधिक्य देखकर इसे पुल्लिंग में ही प्रयोग किया है। पुस्तक शब्द भी 'वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है, पुल्लिंग में व्यवहृत हुआ है।

अब महिमा शब्द को लीजिए-कुछ हिन्दी के व्याकरणज्ञ इसे आकारांत देखकर स्त्रीलिंग बना देते

। उनको देखा-देखी भेड़चाल से स्त्रीत्व में ही इसको पहचान करते हैं। मैं ऐसे विचारकों वा अनु-कर्त्ताओं से पूछता हूँ—राजा शब्द भी आकारांत दृष्टिगोचर हो रहा है, तब मेरा वा हमारा राजा क्यों बोलते वा लिखते हैं ? 'मेरी महिमा के समान 'मेरी राजा' क्यों नहीं' ? ध्यान दीजिये—'राजा' में मूल शब्द 'राजन्' है और 'महिमा' में 'महिमन्' है। जब इन दोनों नकारान्तों में से 'राजा' शब्द पुल्लिंग हो सकता है तो 'महिमा' शब्द को पुल्लिंग उच्चारण करके लिखने में क्यों आपत्ति है ? क्या महर्षि का हिन्दीज्ञान त्रुटिवाला है ?

महर्षि दयानन्द सत्य के ग्रहण और असत्य के परित्याग में सर्वदा उद्यत रहे हैं, यह सर्वविदित है। आर्यपुरुषों को भी उन्होंने आर्यसमाज के नियमों में यही निर्देश दिया है। किन्तु हम हैं जो असत्य को छोड़ना नहीं चाहते और सत्य को छोड़ना लक्ष्य बना बैठे हैं। इसमें सामान्यजनों को मैं कुछ नहीं कहता प्रत्युत विद्वानों, लेखकों, कवियों के सामने निवेदन कर रहा हूँ। यह भूल कहां से शिक्षितवर्ग में प्रविष्ट हुई ध्यातव्य है। सभी भाषायें संस्कृत भाषा की पुत्री है। उनमें तद्भव और तत्सम शब्द भी हैं। तत्सम शब्दों को संस्कृत में प्रयुक्त शब्दों के समान ही जाना उचित है।

अंग्रेजी प्रशासन से पूर्व इस भारत पर मुगलों का लगभग ६०० वर्ष पुराना राज्य माना जाता है। उस काल में फारसी और उर्दू भाषायें प्रचुरता से चलीं। हमारे कृपालु हिन्दी के जन्मदाताओं ने उर्दू शब्द के रूपांतर किये। जैसे किताब के स्थान पर पुस्तक, रुह के स्थान पर आत्मा, हवा की जगह वायु, जीत के स्थान पर जय-विजय, हार के बदले पराजय का प्रयोग किया। भूरि-भूरि प्रशंसा के अधिकारी हैं वे साहसी विद्वान् वा कवि लेखक, जिन्होंने अपनी थाती के रूप में ऐसी शब्दराशि भेंट की। अनेक कष्ट सहते हुवे भी अविचलित बने रहे। किन्तु मैं नम्रतापूर्वक वर्तमान शिक्षितजनों से कहता हूं कि वे किताब (पुस्तक), रुह (आत्मा), हवा (वायु), जीत (विजय), हार (पराजय) शब्दों का स्त्रीलिंग में क्यों प्रयोग करते हैं। हमारे पूर्ववर्ती लेखकों का ध्यान लिंगों की ओर आकृष्ट नहीं हो पाया। कारण कुछ भी रहा हो। हमारा प्रयत्न होना चाहिए कि हम ठीक प्रकार से लिंगों का प्रयोग करें। गतानुगतिको लोकः विद्वानों को अन्धानुकरण शोभा नहीं देता। वे शिक्षक हैं उनकी शिक्षा समाज में चलेगी।

अतः सत्यता को अपनाया जावे, यही बुद्धिमत्ता है। अब विचारिये—हम ठीक हिन्दी जानते हैं वा महर्षि दयानन्द ? श्री स्वामी ओमानन्द जी आचार्य गुरुकुल झज्जर लिंगों का पूर्ण ध्यान रखते हैं।

इस लेख से आर्यजगत् को इसलिए उद्बोधन दिया है कि वे महर्षि के ग्रंथों में बिना समझे भूल निकालने लगते हैं। यदि कहीं त्रुटि दोख भी पड़ती है तो पारस्परिक विचार-विमर्श करके निर्णय लेना उत्तम है। कोई साहस करके उच्चकोटि के विद्वानों की एक समिति बनावे, जो दिशा निर्देश कर सके।

स्वामी दयानन्द जी महाराज अत्यन्त तीक्ष्णबुद्धिसम्पन्न एवं स्वोपज्ञ थे। उनका शब्दविन्यास हमारे लिए स्वर्णमय है। उन द्वारा लिखी गई हिन्दी वा संस्कृत में हम शोधन के अधिकारी नहीं हैं। हां, अपनी ओर से टिप्पणी दी जासकती है। लेखक का मूल-ग्रंथ ज्यों का त्यों बना रहना अभीष्ट है। उत्तरोत्तरकाल में पूर्ववर्ती ग्रंथों की शब्दावली का स्वारस्य बना रहेगा। हिन्दी के इतिहास क्षेत्र में यह भी एक अमूल्य निधि रहेगा।

ऋषिबोध पर्व पर आर्यों का कर्त्तव्य

(फाल्गुन बदि चतुर्दशी)

प्रात:—समस्त आर्य सज्जन तथा देवियां मन्दिर में एकत्रित होकर—

१—कुछ काल वेदपाठ करें।

२—साधारण यज्ञ किया जावे।

३—आत्मोद्धार सम्बन्धी भजन गान किये जावें।

४—ऋषि ग्रन्थों की कथा।

५—तथा आर्यधर्म के प्रचार करने का व्यक्तिगत निश्चय करें।

मध्याह्न—विशेष नगरकीर्तन किया जाये। कीर्तन अधिक से अधिक गम्भीर तथा प्रभावोत्पादक होना चाहिए। आर्य-पुरुषों, कुमारों, देवियों की टोलियां बना-बनाकर स्वय भजन गाने चाहियें। भजनों में प्रभु-भक्ति, ऋषि-महिमा, देश-प्रेम, जातीय गौरव तथा आत्म-सुधार के ही विशेष भाव होने चाहियें।

सायं—दीपमालिका के उपरांत मन्दिर में वेदोपदेश तथा ऋषि जीवन पर प्रकाश डालनेवाले व्याख्यान होने चाहियें। आज की इस ज्ञान-रजनी के अन्त में मन्दिर में शांतिपाठ करके आर्यजन अपने-अपने गृह जाकर अपने जीवन को अधिक से अधिक उच्च तथा परोपकारी बनाने का शुभ संकल्प धारण करें, इसी में इस पर्व की सफलता है। (आर्य पर्व पद्धति से साभार)

ओ३म्

आवश्यक बैठक

गुरुकुल झज्जर रोहतक के सभी आदरणीय स्नातक बन्धुओं को सूचित किया जाता है कि अपनी मातृ-संस्था गुरुकुल झज्जर के वार्षिकोत्सव २८ फरवरी, १९८७ के शुभावसर पर "स्नातक मण्डल" की अत्यावश्यक बैठक का निश्चय किया गया है।

सभी स्नातक बन्धु समय पर पधार कर कुलभूमि की शोभा बढ़ायें।

निवेदक : रणवीरसिंह शास्त्री
मन्त्री स्नातक मण्डल गुरुकुल

ऋषि-बोधोत्सव

ऋषिराज ! आज तेरा, जग गान गारहा है।
चुपचाप चारु चेरा, बन मान पारहा है ॥१

शंकर-दिवस न आता, शंकर न यदि मनाता।
शंकर न मूल पाता, जो फूल लारहा है ॥२

पितु का निर्देश माना, उपवास ठीक ठाना।
जग तात को जगाना, जग को जगा रहा है ॥३

लखि, चीन्ह चोर चूहा, उपजी कुपास आहा।
बढ़ बुद्धिबल विगूहा, विभु को बता रहा है ॥४

शिवरात्रि सत्य ही थी, शिव पात्रता सही थी।
शिव भारती मही थी जिसमें ऋषि रमा रहा है ॥५

घनघोर था घनेरा, अज्ञान था अन्धेरा।
घर घूम-घूम घेरा, श्रुति तेज अब महा है ॥६

आचार्य आर्य आवें, ऋषिबोध दिन मनावें।
"जग आर्य सब बनावें", आदेश आरहा है ॥७

बहु वेद-बोध लेवें, जन ज्ञान दान देवें।
श्रुति का सुमार्ग सेवें, उत्सव उठा रहा है ॥८

साध्वी स्त्रियां सती हों, जितकाम जन यती हों।
बस आज सब व्रती हों, व्रत दिन बता रहा है ॥९

शिव शांति पूर्ण पावें ऋषिबोध ज्ञान गावें।
व्रत, सूर्यसम मनावें कल्याण कर रहा है ॥१०

—वैदिकधर्म-विशारद, काव्यमनीषी श्री सूर्यदेव शर्मा साहित्यालंकार

महर्षि दयानन्द बोध उत्सव

आर्यसमाज भटिण्डा की ओर से हर वर्ष की तरह महर्षि दयानन्द बोध उत्सव (शिवरात्रि) २२-२-८७ से २६-२-८७ तक मनाई जावेगी। २२-२-८७ से चारों वेदों के शतक एवं गायत्री मन्त्रों द्वारा यज्ञ हुआ करेगा। २६-२-८७ को यज्ञ की पूर्ण आहुति एवं भाषण प्रतियोगिता होगी। दोपहर को प्रीति-भोज का कार्यक्रम होगा। इस यज्ञ के ब्रह्मा श्री ओम्प्रकाश जी आर्य वानप्रस्थी अधिष्ठाता आर्य वान-प्रस्थ आश्रम गुरुकुल भटिण्डा होंगे। —ओम्प्रकाश आर्य

दयानन्द

(ज्वलन्त प्रतिभा)

लेo— श्री धर्मवीर, आचार्य उपदेशक महाविद्यालय, टंकारा

आज शिवरात्रि-पर्व है। सम्पूर्ण भारत में यह पर्व अत्यन्त उल्लास और श्रद्धा से आर्यजन (सभी सम्प्रदायों के हिन्दू मात्र) मनाते हैं। आज से १४९ वर्ष पूर्व एक चौदह वर्षीय बालक व्रत-उपवास पूर्वक यह पर्व मना रहा था। उसने आज के दिन जो कुछ पाया, उसके लिए १९ वर्ष तक अथक परिश्रम किया। वह बालक महर्षि दयानन्द के रूप में आज से ११३ वर्ष पूर्व सन् १८८३ के दीपावली पर्व से क्षितिज में अपूर्व ज्योति के रूप में आज भी हमारा मार्ग-प्रदर्शन कर रहा है। श्रद्धा, तप, विद्या, निष्ठा, योग और ब्रह्मचर्य के मूर्तस्वरूप का आज के दिन स्मरण, आज की पवित्र वेला में परम कल्याणकारी है।

साधारणतया आज का संन्यासी अशिक्षा, आर्थिक विपन्नता के कारण दुःखों से छुटकारा पाने में असमर्थ हो, संन्यास ग्रहण करता है। परन्तु महर्षि दयानन्द की परिस्थितियां इससे सर्वथा विपरीत थीं। सौराष्ट्र (काठियावाड़ में मौरवी राज्य के प्रभु-सत्ता-सम्पन्न दिवान श्री करसन जी लाल जी तिवारी के घर ग्राम टंकारा में सन् १८२४ के फाल्गुन मास ※ में उज्ज्वल ज्योति के रूप में प्रादुर्भूत हुए। "होनहार बिरवान के होत चीकने पात"। बचपन में ही कठिन शास्त्र पढ लिए, यजुर्वेद कण्ठस्थ कर लिया। शिवरात्रि व्रत उपवास पूर्ण निष्ठा से किया। अर्धरात्रि तक सभी सो गये। पर बालक मूलशंकर आंखों को ठण्डे जल से धोता रहा और जागता रहा। पिता, गुरु, पुजारी जगाये गये और सो गये। पर वह ऐसा जागा कि आजन्म जागा और आजन्म ही सम्पूर्ण मानवजाति को जगाता रहा। उसने जो पाया, उससे जगत् का महान् उपकार हुआ। ईश्वर के सत्यस्वरूप को पा ही लिया।

प्यारी बहिन, हितैषी चाचा की मृत्यु के अवसर पर मृत्यु पर विजय पाने का जो संकल्प किया, उसे पूरा कर दिखाया। १७ बार विषपान कराया गया। सन् १८८३ के दीपावली पर्व के दिन उस ब्रह्मचर्य से प्रदीप्त, सुशिक्षा से सुशोभित, सुविद्या से प्रकाशित, प्रचण्ड ज्वलन्त ज्योति महर्षि दयानन्द ने मृत्यु पर विजय पाने का सुन्दर प्रभावशाली दृष्टांत प्रस्तुत किया। सायंकाल ६ बजे भूमि को गोबर से लिपवाया गया। उस पवित्र स्थान पर बैठ सस्वर, सुमधुर कण्ठ से ऋचाओं का भक्तिपूर्ण निष्ठा से समर्पित भावना से मनोहारी पाठ किया। फिर लेटे। तीन बार बोले "ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो"। वह दिव्य आत्मा इस नश्वर शरीर को छोड़कर चल दिया। उस समय उनके चेहरे पर दारुण रोग व कष्ट के चिह्न नहीं थे। अपितु स्वच्छ, सात्विक, पवित्र दिव्य आत्मा के दर्शन हुए, जिसे देखकर पं० गुरुदत्त विद्यार्थी के हृदय की समस्त आशंकायें शरदभ्र की भांति विलीन होगईं।

※वेद सविता मासिक अजमेर के दिसम्बर १९८६ के अंक में प्रकाशित समाचार के अनुसार महर्षि का जन्म भाद्रपद शुक्ला ९ है, ऐसा शोध हुआ है।

नवयुवक विद्वान् एवं जिज्ञासु मूलशंकर ने सुख सम्पन्न माता-पिता के मोह को सुख सम्पत्ति के लालच को छोड़, पर्वत की उपत्यकाओं में, बीहड़ सुनसान वनों में, हिमालय की बर्फीली चोटियों पर, हिंसक पशुओं से घिरी कन्दराओं में, ग्रामों में, नगरों में, मन्दिरों में, मेलों में जो भी विद्वान्, साधु, सन्त, महात्मा, संन्यासी मिला, उसे गुरु धारण किया। उससे जो कुछ ज्ञान, योगसाधना मिलि, उसे भूखे की तरह तुरन्त आत्मसात् किया। सैकड़ों जटिल ग्रंथ पढ़े। विभिन्न सम्प्रदायों के धर्म-ग्रंथों का गहरा अध्ययन किया। तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र, शल्यक्रिया सीखे। योगविद्या का सफल अभ्यास किया, परन्तु सन्तोष तभी मिला जब परम गुरु स्वामी विरजानन्द दण्डी के चरणों में अपूर्व निष्ठा एवं तप से गहन विद्याभ्यास किया।

योगविद्या में निष्णात, वेदविद्या से प्रदीप्त, निर्विकल्प समाधि के अभ्यस्त की समाधि हजारों वर्षों के अनन्तर टूटती है। यह दयानन्द समाधिस्थ होगया तो वेदों का उद्धार कौन करेगा? भारत को परतन्त्रता और दुःखों की अतिशयता से कौन छुड़ायेगा? दक्षिणारूप लोंग की प्याली हाथ में लिए उपस्थित निष्ठावान् शिष्य स्वामी दयानन्द से प्रज्ञाचक्षु भविष्य को गहराई तक देखनेवाले गुरु स्वामी विरजानन्द दण्डी बोले—"प्रिय दयानन्द! तुमसे भौतिक दक्षिणा नहीं चाहिए। जाओ, वेदों के उस सत्यार्थ का प्रकाश फैलाओ, जो तुमने यहां पाया है। समाधि के सात्विक घनीभूत परम आनन्द का परित्याग कर गुरु दक्षिणारूप में किये संकल्पव्रत का सम्यक् पालन अनुरूप शिष्य ने आजन्म निभाया।

अनेक ईश्वरों की उपासना, अन्धविश्वास और अशिक्षा से भ्रमित भारतवासी कुरीतियों के जाल में फंसे दारुण दुःख भोग रहे थे। अविद्या, कुशिक्षा, कुसंग, कुसंस्कार, मिथ्याभिमान से विघटित समाज और ईर्ष्या-द्वेष अविवेकी बने समाज पर अंग्रेजी शासन का दुर्दान्त अन्यायपूर्ण व्यवहार, बाल-विवाह, विधवाओं का नारकीय जीवन, नारीमात्र का क्रन्दन, मृतक-श्राद्ध वर्णव्यवस्था के नाश से भारतवासी असहाय और किंकर्त्तव्यविमूढ हो चुके थे। परस्पर द्वेष, ईर्ष्या, कलह, फूट से भारत छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त हो असंगठित हो रहा था। कूटनीतिज्ञ अंग्रेज के क्रूर पंजे दिनों-दिन मजबूत हो रहे थे। राजाओं को भोग में, शिकार में, विलास में, मद्य मांस वेश्यागमन में, बड़प्पन के झूठे जाल में फंसाकर, असहाय निर्बल, निरुत्साही और पुत्र समान प्रिय, प्रजा पर क्रूरतापूर्वक अन्याय करनेवाला अंग्रेजों ने बना दिया था।

एतद्देश-प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥

विश्व का गुरु भारत राष्ट्र की निकृष्टतम अधोगति देख निर्मोही संन्यासी दयानन्द बहुत रोया। जबकि जवानी का संसारी मूलशंकर अपनी प्यारी बहिन की मृत्यु पर दो आंसू न रोया। शेर की सन्तान के स्वाभिमान को जगाने का संकल्प किया और गुरु विरजानन्द की दूरदर्शिता को सराहा।

इस पतिततम अवस्था से उद्धार का एकमात्र सहारा एक ईश्वर है और ईश्वरोक्त सदा कल्याणकारी पवित्र वेदवाणी का सुमंगल ज्ञान। राष्ट्र को संगठित करने के लिए एक ईश्वर, एक धार्मिक ग्रन्थ वेद की स्थापना ही एकमात्र साधन है।

(क्रमशः)

आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापना शताब्दी समारोह की तैयारी—

कन्या गुरुकुल मोरमाजरा, सफीदों, लाडवा, यमुनानगर तथा अम्बाला छावनी में बैठकें सफलतापूर्वक सम्पन्न

(केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष द्वारा)

आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापना शताब्दी समारोह की तैयारी के लिए दिनांक १३-१४ फरवरी को निम्नलिखित आर्यसमाजों में सभा अधिकारियों द्वारा आयोजित कार्यकर्त्ता बैठकें सफलतापूर्वक सम्पन्न हुईं।

१. आर्यसमाज सफीदों जि० जींद

१३ फरवरी को दोपहर बाद ३ बजे सभामन्त्री श्री वेदव्रत जी शास्त्री, कोषाध्यक्ष मा० बद्रीप्रसाद आर्य, सभा स्थापना शताब्दी समारोह के संयोजक एवं वेदप्रचाराधिष्ठाता श्री रघुवीरसिंह जी, सभा उपदेशक ब्र० महेन्द्रसिंह शास्त्री आर्यसमाज मन्दिर सफीदों जि० जींद पधारे। गत २-३ वर्षों से आर्यसमाज के अधिकारियों के परस्पर मतभेद चल रहे थे। इसी कारण आर्यसमाज के प्रचार-कार्य की व्यवस्था भी न हो सकी। सभा अधिकारियों ने आर्यसमाज के दोनों पक्षों से विचार-विमर्श करके उनके मतभेद दूर किये तथा भविष्य में मिलजुल कर आर्यसमाज का कार्य करने के लिए तैयार किया। सभी अधिकारियों ने सभा अधिकारियों को कहा कि भविष्य में आर्यसमाज के हित को दृष्टि में रखते हुए संगठित होकर कार्य करेंगे और सभा शताब्दी समारोह को भी सफल करने के लिए तन, मन तथा धन से पूरा सहयोग देंगे। दो सौ रुपये उसी समय प्रदान कर दिये।

२. कन्या गुरुकुल मोरमाजरा जि० करनाल

१३ फरवरी को ही रात्रि को ८ बजे सभा अधिकारी कन्या गुरुकुल मोरमाजरा के वार्षिक उत्सव पर पधारे। गुरुकुल के अधिकारियों ने सभा अधिकारियों का हार्दिक स्वागत किया। सभा उपदेशक पं. सुखदेव शास्त्री, ब्र. महेन्द्रसिंह शास्त्री, सभामन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री तथा कोषाध्यक्ष मा. बद्रीप्रसाद आर्य के उत्सव पर व्याख्यान तथा सभा की भजनमण्डलियों पं. हरिश्चन्द्र जी, पं. चिरंजीलाल जी तथा पं. समेरसिंह जी के प्रभावशाली भजन हुए। दिन की कार्यवाही में हरयाणा सरकार के वित्तमन्त्री चौ० कटारसिंह का स्वागत करते हुए आर्य विद्या परिषद् हरयाणा के प्रस्तोता प्रिंसिपल बलबीरसिंह जी ने हरयाणा में पूर्ण शराबबन्दी लागू करने की मांग की। मन्त्री महोदय ने गुरुकुल की सहायता के लिए २० हजार रु० देने की घोषणा करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा चलाये जा रहे शराबबन्दी प्रचार की सराहना की और नियमों के अनुसार ठेके बन्द करवाने में सहयोग करने का

आश्वासन दिया। उत्सव के अन्त में गुरुकुल के मन्त्री डा० लक्ष्मणसिंह ने उत्सव के अवसर पर सभा के प्रमुख अधिकारियों, उपदेशकों तथा भजनमण्डलियों के आगमन पर आभार प्रकट करते हुए सभा शताब्दी हेतु १५००) की थैली सभामन्त्री को भेंट की। सभा अधिकारियों ने रात्रि को यहीं विश्राम किया।

३. आर्यसमाज लाडवा जि० कुरुक्षेत्र

१४ फरवरी को प्रात: १० बजे सभा के अधिकारी आर्यसमाज मन्दिर लाडवा पधारे। आर्यसमाज के अधिकारियों तथा अन्य सभासदों ने स्नेहपूर्वक स्वागत किया। सभा के पूर्व भजनोपदेशक पं. हर० लाल जी की अध्यक्षता में कार्यकर्त्ताओं की बैठक का आयोजन किया। सभा अधिकारियों ने सभा शताब्दी समारोह के कार्यक्रम पर प्रकाश डालते हुए सहयोग देने की अपील की। आर्यसमाज के अधिकारियों ने सभा शताब्दी को सफल करने में पूरा योग करने का वचन दिया। आर्यसमाज के प्रधान श्री साधुराम जी आर्य कुछ दिनों से अस्वस्थ होने के कारण इस अवसर पर बैठक में उपस्थित नहीं हो सके। अत: उनके स्वास्थ्य की जानकारी के लिए सभा अधिकारी उनके निवास पर गये तथा शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की। श्री साधुराम जी ने भी तन, मन तथा धन से सहयोग करने का विश्वास दिलाया।

४. आर्यसमाज रेलवे मार्ग यमुनानगर जि० अम्बाला

१४ फरवरी को दोपहर बाद १ बजे सभा अधिकारी आर्यसमाज रेलवे मार्ग यमुनानगर पधारे। श्री स्वामी सदानन्द जी की अध्यक्षता में आर्यसमाज के अधिकारियों तथा आर्य कार्यकर्त्ताओं की बैठक प्रारम्भ हुई। सभा उपदेशक ब्र० महेन्द्रसिंह शास्त्री, सभा कोषाध्यक्ष मा० बद्रीप्रसाद आर्य तथा सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री ने शताब्दी समारोह में सहयोग करने की प्रेरणा की। श्री रत्नचन्द आर्य, डा० सतीशकुमार बंसल मुस्तफाबाद, श्री कर्मवीर आर्य खारवन, श्री रविप्रकाश आर्य मन्त्री आर्यसमाज यमुनानगर, श्री महेन्द्रपाल जगाधरी, वैद्य रामलाल जी तथा श्री गेन्दाराम आर्य ने अपने सुझाव प्रस्तुत किये। अन्त में स्वामी सदानन्द जी ने आर्यसमाज के अधिकारियों तथा सभी आर्य कार्यकर्त्ताओं शताब्दी समारोह को सफल करने के लिए कार्य में जुट जाने का अनुरोध किया।

५. आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग अम्बाला छावनी

१४ फरवरी को ही दोपहर पश्चात् ४॥ बजे सभा अधिकारी जिला अम्बाला के प्रमुख तथा पुराने आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग कबाड़ी बाजार अम्बाला छावनी पधारे। सभा के भजनोपदेशक पं. बनारसीलाल आर्य तैयारी के लिए पूर्व पहुँचे हुए थे। आर्यसमाज के पूर्व प्रधान श्री जयप्रकाश जी की अध्यक्षता में बैठक हुई। बैठक में आर्यसमाज कच्चा बाजार, लालकुर्ती बाजार, वेदप्रचार समिति के मन्त्री श्री वेदमित्र जी तथा आर्यसमाज लण्डो के अधिकारियों ने सभा शताब्दी को सफल करने का सभा अधिकारियों को तन, मन, धन तथा जन से सहयोग देने का वचन दिया। आर्यसमाज के प्रधान जी ने सभा अधिकारियों के पधारने का स्वागत करते हुए समारोह को सफल करने में प्रत्येक प्रकार का सहयोग करने का विश्वास दिलाया।

आर्यसमाज माजरा दूबलधन का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

सभा के गणक श्री शीशराम जी सूबेदार तथा ग्राम के आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से ४ से ८ फरवरी को वार्षिक उत्सव तथा यज्ञ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। प्रो० राजपाल जी शास्त्री ने प्रभावशाली ढंग से करवाया और अनेक नवयुवकों को यज्ञ पर यज्ञोपवीत देकर शराब तथा अन्य व्यसनों से दूर रहने की प्रतिज्ञा करवाई। सभा के महोपदेशक पं० सुखदेव शास्त्री, वानप्रस्थी महावीर जी, बहिन करुणा शास्त्री आदि के व्याख्यान तथा प. ईश्वरसिंह तूफान, पं. समेरसिंह की भजनमण्डलियों के प्रभावशाली भजन हुए। गुरुकुल झज्जर के मुख्याध्यापक आचार्य विजयपाल जी ने अपने अन्य ब्रह्मचारियों के साथ आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन किया। उत्सव के समापन समारोह पर श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने सभी ग्रामवासियों को आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के लिए आर्यसमाज मन्दिर बनाने की प्रेरणा की। उनकी अपील पर मन्दिर निर्माण हेतु हजारों रुपये संग्रह हो गये। इस अवसर पर सभा को एक हजार रु० तथा गुरुकुल झज्जर को पांच सौ रुपये भेंट किये।

आर्यसमाज तथा गुरुकुलों के वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज सोनीपत शहर	२२ से २६ फरवरी
,, जुआं जि० सोनीपत (शिवरात्रि मेले पर यज्ञ तथा खेल प्रतियोगिता)	२६ फरवरी
छोटूराम बहुतकनीक महाविद्यालय कंझावला (दिल्ली)	२१-२२ ,,
आर्यसमाज रेलवे रोड यमुनानगर जि. अम्बाला	२४ से २६ ,,
गुरुकुल झज्जर जि. रोहतक	२८ से १ मार्च

१ मार्च को श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में गुरुकुल झज्जर में ही जि० रोहतक, सोनीपत, गुडगांव, फरीदाबाद, महेन्द्रगढ़ तथा भिवानी के आर्यसमाजों के अधिकारियों की विशेष बैठक का आयोजन किया गया है। अतः इन जिलों के आर्यसमाज के अधिकारी अवश्य पधारें।

कोथकलां जि. हिसार	२ से ५ मार्च
कन्या गुरुकुल लोवाकलां जि. रोहतक	७-८ ,,
आर्यसमाज सालवन जि. करनाल	६ से ८ ,,
,, आहुलाना जि. सोनीपत	६ से ८ ,,
गुरुकुल डिकाडला जि० करनाल	६ से ८ ,,
आर्यसमाज बहुअकबरपुर जि. रोहतक	८-९ ,,
गुरुकुल भैंसवाल जि. सोनीपत	६ से ८ ,,
आर्यसमाज बूबका जि. कुरुक्षेत्र	६ से ८ ,,
,, ठोल जि० कुरुक्षेत्र	१३ से १५ ,,

आर्यसमाज मन्वार जि. कुरुक्षेत्र	१४ से १६ मार्च
,, अलाहुर जि. कुरुक्षेत्र	१६-१७ ,,
,, मुवाना जि. जींद	२० से २२ ,,
,, कराइयांपुर जि. करनाल	२० से २२ ,,
,, महम जि. रोहतक	२० से २२ ,,
,, फरल जि. कुरुक्षेत्र	२४ से २६ ,,
,, कौल जि. कुरुक्षेत्र	२७ से २९ ,,
,, छानी (राजस्थान)	२८ से ३० ,,

जो आर्यसमाज अपने उत्सव रखना चाहते हैं, उनसे निवेदन है कि वे सभा से पत्र-व्यवहार करके उत्सव की तिथियां सुरक्षित करवा लेवें, ताकि उपदेशकों आदि का प्रबन्ध करने में सुविधा रहे।

—रघुवीरसिंह संयोजक

सभा शताब्दी की तैयारी के लिए बैठकों का आयोजन

आर्यसमाज जींद शहर २१ फरवरी प्रात: १० बजे
दयानन्दमठ रोहतक २१ फरवरी दोपहर बाद २ बजे
आर्यसमाज सेवासदन बल्लभगढ़ जि. फरीदाबाद २२ फरवरी दोपहर २ बजे
,, हांसी जि० हिसार २५ फरवरी प्रात. १० बजे
,, नागोरी गेट हिसार २५ फरवरी दोपहर बाद १ बजे
,, अबोहर २६ फरवरी प्रात: १० बजे
,, सिरसा २६ फरवरी दोपहर बाद २ बजे
,, गुरुकुल झज्जर जि० रोहतक १ मार्च दोपहर बाद

अन्तरंग सभा की आवश्यक बैठक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा तथा शताब्दी समारोह की तैयारी के लिए अन्न, धन, स्मारिका प्रकाशन तथा अन्य उप-समितियों की एक आवश्यक बैठक ७ मार्च शनिवार को प्रात: ११ बजे सभा कार्यालय, सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ रोहतक में होनी निश्चित हुई है। अत: सभी अन्तरंग सदस्य तथा शताब्दी समारोह की तैयारी के लिए उपसमितियों के सदस्य समय पर पधारने की कृपा करें।

सभा उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों की बैठक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सभी उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों की एक आवश्यक बैठक २ मार्च सोमवार को प्रात: १२ बजे सभा कार्यालय, सिद्धांती भवन, रोहतक में होगी। अतः सभा के उपदेशक तथा भजनोपदेशक महानुभावों से निवेदन है कि समय पर पधारें।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

ऋषि सन्देश

देसराज खीरबाट, २६० इन्दिरा कालोनी, रोहतक

सर्वहितकारी के ७ जनवरी के प्रकाशन में पं० शांतिप्रकाश जी के लेख "ओ३म् क्रतो स्मर" जिस में पं० जी ने मुक्ति विषय पर कुछ प्रकाश डाला है, इसको पूरा करने के लिए ऋषिवर देव दयानन्द जी का मुक्ति विषय में उपदेश जो उन्होंने २०-५-१८७७ को सायंकाल चांदपुर में शास्त्रार्थ के समय दिया वह और जो शकायें की गई वे और उनका स्वामी जी का समाधान लिखता हूं।

उपदेश—मुक्ति कहते हैं छूट जाने को, अर्थात् जितने दुःख हैं उन सबसे छूटकर एक सच्चिदानन्द-स्वरूप परमेश्वर को प्राप्त होकर सदा आनन्द में रहना और फिर जन्म-मरणादि दुःखसागर में न गिरना, इसी का नाम मुक्ति है।

वह किस प्रकार से होती है ?

इसका पहला साधन सत्य का आचरण है और वह सत्य आत्मा और परमात्मा की साक्षी से निश्चय करना चाहिए, जिसमें आत्मा और परमात्मा की साक्षी न हो, वह असत्य है। जैसे किसी ने चोरी की, जब वह पकड़ा गया तो उससे राजपुरुष ने पूछा कि तूने चोरी की है ? तब वह कहता है कि मैंने चोरी नहीं की, परन्तु उसका आत्मा भीतर से कह रहा है कि मैंने चोरी की है, तथा जब कोई चोरी की इच्छा करता है तब अन्तर्यामी परमेश्वर उसको बता देता है कि यह बुरी बात है, इसको तू मत कर और शंका, लज्जा और भय आदि उसके आत्मा में उत्पन्न कर देता है और जब किसी सत्य काम को करने की इच्छा करता है, तब उसके आत्मा में आनन्द उत्पन्न कर देता है कि यह काम तू कर। उस समय अपना आत्मा भी सत्य काम करने में निर्भय और प्रसन्न होता है। असत्य में नहीं। जब उसकी आज्ञा को तोड़कर बुरा काम कर लेता है तब वह मुक्ति पाने का अधिकारी किसी प्रकार से नहीं होता, उसको असुर, दुष्ट दैत्य और नीच कहते हैं। इसमें वेद का प्रमाण है—

> असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृताः।
> तांस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः॥ (यजु० अ० ४० म० ३)

अर्थात्—आत्मा का हनन करनेवाला अर्थात् जो परमेश्वर की आज्ञा तोड़ता है और अपने आत्मा के ज्ञान के विरुद्ध बोलता और मानता है, इससे उस मनुष्य का नाम असुर अर्थात् राक्षस, दुष्ट, पापी नीच आदि होता है।

मुक्ति के मिलने के साधन यह हैं—

१. सत्याचरण २. सत्यविद्या अर्थात् ईश्वरकृत वेदविद्या को यथावत् पढ़कर ज्ञान की उन्नति और सत्य का पालन यथावत् करना, ३. सत्पुरुष ज्ञानियों का संग करना, ४. योगाभ्यास करके अपने .

मंन, इन्द्रियों और आत्मा को असत्य से हटाकर, सत्य में स्थिर करना और ज्ञान को बढ़ाना, ५. ईश्वर की कृपा का यश कीर्तन करना अर्थात् उसके गुणों को कथा सुनना और विचारना, जिसका नाम स्तुति है, ६. प्रार्थना इसको कहते हैं। जैसे—हे जगदीश्वर ! हे कृपानिधे ! हे अस्मत्पित ! असत्य से हम लोगों को छुड़ा के सत्य में स्थिर करो, हे भगवन् ! मुझको अन्धकार अर्थात् अज्ञानाचरण प्रमाद आदि दुष्ट कामों से अलग करके विद्या, धर्म और श्रेष्ठ काम करने में लगा और प्रकाश रूप में मुझको सदा के लिए स्थापन कर। हे प्रभु ! मुझको जन्म-मरण रूप संसार के दु:खों से छुड़ाकर अपने कृपा कटाक्ष से अमृत अर्थात् मोक्ष को प्राप्त करा। जब सच्चे मन से अपने आत्मा, प्राण और सब सामर्थ्य से जीव परमेश्वर को भजता है तब वह करुणामय परमेश्वर उसको अपने आनन्द में स्थिर कर देता है। जैसे छोटा बालक जब घर के ऊपर से अपने माता-पिता के पास नीचे आना चाहता है, नीचे से ऊपर उन के पास जाना चाहता है तब माता-पिता अपने हजारों आवश्यक कामों को भी छोड़कर और दौड़कर अपने लड़के को उठाकर गोद में लेते हैं कि हमारा लड़का कहीं गिर पड़ेगा तो उसको चोट लगने से उसको दु:ख होगा। जैसे माता पिता अपने बच्चों को सदा सुख देने और उनको सुख में रखने की इच्छा और पुरुषार्थ सदा करते रहते हैं, वैसे ही परम कृपानिधि परमेश्वर की ओर जब कोई सच्ची आत्मा के भाव चलता है तब वह अनन्त शक्तिरूप हाथों से उस जीव को उठाकर अपनी गोद में सदा के लिए रखता है, फिर उसको किसी प्रकार दु:ख नहीं होने देता है और वह सदा आनन्द में रहता है, इत्यादि मुक्ति के साधन हैं।

अन्याय और पक्षपात के त्याग को धर्म कहते हैं अर्थात् अधर्म से किसी चीज को चाहना न करे। देखो ! सब पाप, अन्याय, अधर्म और पक्षपात से होता है। जैसे यह मौलवी साहब का बिस्तरा यदि अत्याचार और अन्याय से भी मुझको मिल जावे, इसको लेकर सुख पाऊं। इसमें अपने सुख का पक्षपात किया और मौलवी साहब के सुख और दु:ख का कुछ विचार नहीं किया। इसी प्रकार पक्षपात से सदा अधर्म होता है और उससे अपने काम को सिद्ध करना जो है, उसी को अनर्थ कहते हैं और धर्म और अर्थ से कामना करना अर्थात् अपने सुख की सिद्धि करना, इसको काम कहते हैं। अधर्म अर्थात् अनर्थ से 'काम' को सिद्ध करना, इसको कुकाम कहते हैं। इसलिए इन तीनों अर्थात् धर्म अर्थ और काम से पूर्वोक्त मोक्ष को सिद्ध करना चाहिए। इसमें यह बात है कि ईश्वर की आज्ञा का जो पालन करना है उसको धर्म कहते हैं और उसकी आज्ञा का तोड़ने को अधर्म कहते हैं। सो धर्मादि ही मुक्ति के साधन हैं, अन्य कोई नहीं और मुक्ति सत्य पुरुषार्थ से सिद्ध होती है, अन्यथा नहीं।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज—(पादरी साहब के उत्तर में) आपने जो कहा कि दु:खों से छूटना मुक्ति नहीं, परन्तु पापों से छूटना मुक्ति है, सो मेरे अभिप्राय को न समझकर यह बात कही है। मैं तो प्रथम साधन में ही सब पापों से अर्थात् असत्य कर्मों से बचना कह चुका हूं और बुरे कर्मों का फल ही दु:ख कहलाता है अर्थात् जब पाप करेगा तो दु:खों से नहीं बच सकता। इसके अतिरिक्त और साधनों में भी स्पष्ट कहा है कि असत्य और अधर्म को छोड़कर धर्म का आचरण करना मुक्ति का साधन है। यदि पादरी साहब इन बातों को समझते तो कदापि ऐसी बात न कहते। दूसरे वह जो यह कहते हैं कि ईश्वर ने आदम को पवित्र रचा था, परन्तु शैतान ने बहका कर पाप कराया तो उसकी सन्तान भी इसी कारण पापी हो गई तो यह बात ठीक नहीं है। (क्रमश:)

बढ़ो सपूतो

शिव की रात्रि पुनः है आयी, लेकर नव जागृति संदेश।
ऋषिवर दयानन्द को इसने, ही तो दिया मधुर उपदेश।

इसी पर्व पर दयानन्द के, उर में फैला था आलोक।
ज्ञान प्रभा हो उठी प्रभासित, शिवपिंडी पर मूस विलोक।

ऋषिवर ने महिमण्डल भर के, पाखण्डों को था ललकारा।
अन्ध-मतों पर, अनय रीतियों पर, निर्भय चल गया दुधारा।

नव-जागृति का, नव चेतन का, उठा प्रचण्ड प्रभूत प्रभाकर।
अंगड़ाई ले उठी धरणी फिर, वेदों का खिल गया दिवाकर।

सोती जाति जगी आर्यों की, नष्ट हुआ फिर गहन कुहासा।
भारत मां के मृदु अंचल में, जाग उठी मधुरिम शुचि आशा।

आज पुनः इस भूमण्डल पर, दानवता का नर्तन होता।
सिसक रही है भारत माता, मानवता का क्रन्दन रोता।

बढ़ो सपूतों! दयानन्द के, स्वप्नों को साकार करो।
महिमण्डल पर मानवता के, तत्त्वों का विस्तार करो॥

राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति, मुसाफिरखाना सुलतानपुर, उ०प्र०

आर्य वीरदल हिसार द्वारा वेदप्रचार

हिसार से २० किलोमीटर जाखोद खेड़ा ग्राम में माह शुद्धि १० को रामदेव पीर का बड़ा भारी मेला लगता है। धूर्त लोग भोलो-भाली जनता को बहकाते हैं। इस अवसर पर चौ० जयसिंह जी योगी की कृपा से व आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सहयोग से श्री मुन्शीराम जी भजन पार्टी द्वारा भोले-भाले लोगों को अन्धकार से प्रकाश की ओर आने की प्रेरणा दी गई। श्री जयसिंह जी योगी ने स्थायी प्रचार के उद्देश्य से रामदेव पीर के मन्दिर के साथ अपनी जगह देकर, अपनी ही लागत से आर्यसमाज मन्दिर का भी निर्माण करवा दिया है। हम उनके आभारी हैं। ऐसे लगनशील आर्यों पर ही हमें नाज है।

—सत्यकाम आर्य
जिला संचालक, सार्वदेशिक आर्य वीरदल, हिसार

आचार्य कुल-लोवाकलां का रजत-जयन्ती महोत्सव

आचार्यकुल (कन्या महाविद्यालय) लोवा कलां का पच्चीसवां रजत-जयन्ती महोत्सव ७-८ मार्च शनिवार व रविवार को बड़ी धूमधाम से मनाया जायेगा। इसमें बड़े-बड़े विद्वान्, वक्ता, संन्यासी व महोपदेशक आयेंगे। सभी आर्यपुरुष इस महोत्सव में सम्मिलित होकर धर्म लाभ उठावें।

संस्था का परिचय—यह कन्याओं की शिक्षण संस्था १५ अगस्त, १९६२ श्रावणी पर्व से प्रारम्भ की गई है। इस समय यहां पर २५० कन्यायें आचार्य, एम. ए., शास्त्री, मध्यमा, प्रथमा आदि श्रेणियों में पढ़ रही हैं। यहां से सैकड़ों कन्यायें शास्त्री, आचार्य, एम. ए. परीक्षायें उत्तीर्ण होकर अध्यापन कार्य में सरकारी विद्यालयों में सेवारत हैं। यहां पर ब्रह्मचर्याश्रम तथा आर्षग्रंथों के पठन-पाठन का क्रियात्मक अनुष्ठान होता है।

संस्था की आवश्यकता—संस्था में विद्यालय, गोशाला तथा अतिथिशाला के भवनों का अभाव है। ये सब भवन बनाने चाहियें।

—मानाचार्य सरस्वती संस्थापक संचालक

आर्यसमाज कंवारी (हिसार) का ६५वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनांक ८-९ फरवरी, १९८७ को आर्यसमाज कंवारी का वार्षिकोत्सव विधिवत् सम्पन्न हुआ। जिसमें स्वामी सर्वदानन्द, स्वामी सुमेधानन्द, स्वामी धर्मानन्द, प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु, श्री शिवराम विद्यावाचस्पति, आचार्य दयानन्द, बहन करुणा शास्त्री आदि ने वेदविद्या, नारी-शिक्षा, आर्षग्रंथों का स्वाध्याय, राष्ट्र-रक्षा, आत्मा परमात्मा धर्म क्या है। शराबबन्दी बारे विस्तार से विचार रखे। प्रो० साहब ने पंजाब में हो रही निर्दोष लोगों की हत्या बारे विस्तार से जानकारी दी। साथ में सरकार से मांग की गई कि इन हत्याओं को तुरन्त रोका जाये।

इसके अतिरिक्त श्री खेमसिंह क्रांतिकारी, पं चिरंजीलाल, महाशय नोरंगलाल के शिक्षाप्रद क्रांतिकारी भजन हुए। आर्यसमाज के प्रधान श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी के लगन व प्रेरणा से प्रातः हवन पर तीन-चार खूंखार शराबियों ने शराब न पीने का व्रत लिया तथा जनेऊ धारण किये।

—इन्द्रसिंह आर्य मन्त्री

आर्यसमाज जांडवाला बागड़ (हिसार) का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनांक ५-६ फरवरी, ८७ को आर्यसमाज जांडवाला बागड़ का द्वितीय वार्षिकोत्सव विधिवत् सम्पन्न हुआ। जिसमें स्वामी सर्वदानन्द जी, स्वामी जगतमुनि तथा अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी ने आर्यसमाज क्या है, क्या चाहता है, नवयुवकों के कर्त्तव्य, शराब व जुआबन्दी बारे तथा राष्ट्र किन हालातों से गुजर रहा है आदि पर विस्तार से विचार रखे। क्रांतिकारी जी ने गांव से शराब का ठेका बन्द कराने बारे नवयुवकों को प्रेरित किया। धरना आदि के लिए पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

इसके अतिरिक्त चौ० नत्थासिंह, पं. चिरंजीलाल एवं महाशय झाब्बेराम जी के प्रेरणाप्रद क्रांतिकारी समाज सुधार बारे भजन हुए। प्रातःकाल यज्ञ पर दस नवयुवकों ने जनेऊ धारण किये।

—युद्धवीरसिंह आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में
छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० 23207/73 राज० न० P/RTK 49



ओ३म्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभा मन्त्री

सह-सम्पादक—डा० यज्ञवीर

वर्ष १४, अङ्क १४ २८ फरवरी, १९८७ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

आर्य प्रतिनिधि सभा का शताब्दी समारोह क्यों ?

(१८८५ से १९८५ तक का संक्षिप्त विवरण)

प्रस्तुतकर्त्ता—सुखदेव शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा

गतांक से आगे—

दीर्घकाल से यहां बैठे हैं, देश का शोषण करने में लगे हैं, अब तक हमारी भाषा नहीं सीख सके हैं। इसी प्रकार जालन्धर में जब उन्हें लखनऊ के एक झगड़े का समाचार सुनाया गया और यह कहा गया कि कुछ अंग्रेजों के कतल के बदले में अगणित भारतीयों को कतल कर दिया गया है तो महर्षि ने स्पष्ट रूप से कहा था कि यह अन्याय एवं अत्याचार अंग्रेजी राज्य को ले डूबेगा।

आपकी इस निर्भीकता को सामने रखते हुए एक बार एक सज्जन ने व्याख्यान की समाप्ति पर महर्षि से प्रार्थना की कि महाराज ! आपको न कोई हिन्दू ठहरने देता है और न मुसलमान। यही स्थिति सिखों और ईसाइयों की है और फिर यदि कोई ऐसी गलती कर बैठता है तो आप उसे भी नहीं छोड़ते। हमें यह समझ में नहीं आ रहा कि यह गाड़ी कैसे चलेगी ? महर्षि हंसकर कहने लगे कि भोले भाई ? साधु के पास सत्य के अतिरिक्त और है भी क्या जो अपने उपकार करनेवाले को दे सके।

निश्चय ही पंजाबियों को निर्भीक महर्षि की यह तेजस्विता भी भागई है और वह पहले ही दर्शन में उनके होते गये। यहां तक कि जब वह पंजाब से वापिस गये तो अपने हो पीछे आर्यसमाजियों की बहुत बड़ी संख्या छोड़ गये। इस प्रकार उनकी इस सफलता को यदि अंग्रेजी के एक वाक्य में हमें कहना हो तो हम कह सकते हैं कि—"वह आये, उन्होंने देखा और विजय कर लिया"।

आर्यसमाज के इस पहले युग का यह प्रभाव हुआ कि पौराणिक जगत् में खलबली मच गई। मूर्तिपूजा के विरुद्ध एक तूफान-सा खड़ा होगया। पाखण्ड टूटने लगा, कंठियां मालायें उतरने लगीं और बड़े-बड़े तिलक मिटने लगे। कट्टरपंथी हिन्दुओं के अतिरिक्त इस्लाम और ईसाइयत जो हिन्दु धर्म पर आक्रमण करने की स्थिति में थे, आर्यसमाज के मैदान में आ जाने से एक ओर छिपकर बैठ गये। पढ़े-लिखे लोग प्रायः जो ईसाई बनने में अपनी प्रतिष्ठा समझते थे, धड़ाधड़ आर्यसमाज की शरण में आने लगे।

संक्षेप में यों कहें, जब महर्षि पंजाब में आये तो एक तूफान साथ ले आये और जब गये तो एक क्रांति की आंधी छोड़ गये। महर्षि दयानन्द मार्च १८७७ में आकर, जुलाई १८७८ में पंजाब से वापिस चले गये। इस डेढ वर्ष में वह पंजाब के केवल १२ नगरों में पहुंच सके, किन्तु यह उनका अनोखा चमत्कार समझिये कि उनकी उपस्थिति में ही इन सब स्थानों पर आर्यसमाज की स्थापना हो गई।

जब महर्षि पंजाब से चलने लगे तो एक भक्त ने प्रार्थना की कि महाराज ! आप यहां आर्यसमाज का बाग तो लगा चले हैं किन्तु आपके बाद इसकी रक्षा कौन करेगा ? महर्षि ने उसे उत्तर दिया कि इस प्रांत के लोग उत्साही और साहसी हैं, श्रद्धालु और वीर हैं, मुझे इन से बड़ी-बड़ी आशायें हैं। मैंने अपने पूरे प्रयत्न से भूमि को ठीक करके यह वैदिक उद्यान लगाया है। खाद भी इसमें पड़ गया है। वैदिक भावनाओं से इसे सींचा भी जा चुका है। अब इसके मुरझाने और कुम्हलाने की मुझे कोई चिन्ता नहीं है। यह सब कुछ होते हुए भी ऐसे सब काम भगवान् के भरोसे पर ही किये जाते हैं। इसलिए आर्यसमाज का भी भगवान् ही रक्षक है।

महर्षि की भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई। धीरे-धीरे उन १२ नगरों के आर्यसमाजों का दूसरे नगरों पर भी प्रभाव होने लगा। आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द ने हिन्दु धर्म का वैदिक स्वरूप जिस ढंग से उस काल के लोगों के सामने रखा उससे पौराणिक हिन्दुओं को आर्यसमाज के लोग क्रांतिकारी नजर आने लगे और यह दुनिया का आम दस्तूर है कि क्रांति का हर जगह स्वागत किया जाता है। इसलिये सब स्थानों पर लोग बड़े उत्साह से आर्यसमाज की ओर खींचे चले आये। परिणाम-स्वरूप पंजाब में सब ओर आर्यसमाजों की स्थापना होने लगी।

लाहौर में आर्यसमाज की स्थापना हो गई थी। आर्यसमाज के अधिवेशनों के लिए मकान किराये पर ले लिया गया था। ला० मूलराज एम ए प्रधान तथा ला० साईंदास जी मन्त्री बनाये गये थे। प्रति सप्ताह महर्षि दयानन्द के धर्मोपदेश होते थे। वैदिक सभ्यता एवं भारतीय संस्कृति के विषय में महर्षि के अनेक व्याख्यान हुए, जिनसे सारा पंजाब प्रभावित हो उठा। पंजाबी वीर आर्यसमाज के सदस्य बनने लगे। उस समय पंजाब में २९ जिले थे। सभी जिलों में आर्यसमाजों की स्थापना हो गई। वर्तमान हरयाणा प्रदेश भी पंजाब के ही अन्तर्गत था। यहां भी सर्वप्रथम अम्बाला, करनाल तथा रिवाड़ी में आर्यसमाजों की स्थापना हो गई थी। सीधे-सादे हरयाणवी लोगों पर महर्षि दयानन्द के वैदिक सिद्धांतों का गहरा प्रभाव पड़ा। इधर हरयाणा में भी आर्यसमाज की धूम मच गई।

मार्च, १८७७ में पंजाब आकर जुलाई' १८७८ में महर्षि वापिस चले गये। वापिस चले जाने के बाद भी वह पंजाब के आर्यों का नेतृत्व करते रहे। जो कोई भी समस्या सिद्धांत सम्बन्धी खड़ी हो जाती थी, पत्र-व्यवहार द्वारा महर्षि सुलझा देते थे। बड़ी-बड़ी कठिनाइयों के आ पड़ने पर आर्यजन स्वयं महर्षि के पास जाकर समाधान करा लाते थे। इस प्रकार आर्यसमाज का सुधार-कार्य बहुत ही तीव्रगति के साथ आरम्भ होगया था।

(क्रमशः)

ऋषि सन्देश

देसराज खोरवाट, २६० इन्दिरा कालोनी, रोहतक

गतांक से आगे—

आप लोग ईश्वर को सर्वशक्तिमान् मानते ही हैं, सो जब ईश्वर के बनाये आदम को शैतान ने बिगाड दिया और ईश्वर के राज्य में हस्तक्षेप कर ईश्वर की व्यवस्था को तोड़ डाला तो इससे ईश्वर सर्वशक्तिमान नहीं रह सकता। ईश्वर की बनाई हुई चीज को कोई नहीं बिगाड़ सकता। एक आदम ने पाप किया तो उसकी सन्तान पापी होगई। यह बिल्कुल बुद्धिहीन बात है। जो पाप करता है वही दुःख पाता है, दूसरा कोई नहीं पा सकता और ऐसी बात को कोई बुद्धिमान् नहीं मानेगा। इसलिए आप जो कहते हैं कि आदम ने पाप किया और उसकी सारी सन्तान पापी हुई, यह बात भी ठीक नहीं। इसके अतिरिक्त एक आदम और हव्वा से भी किसी प्रकार से इस जगत् की उत्पत्ति नहीं हो सकती और बहन भाई का विवाह होना बड़े दोष की बात है। इसलिए ऐसी व्यवस्था माननी चाहिए कि सृष्टि आदि में बहुत से स्त्री और पुरुष परमेश्वर ने उत्पन्न किये और जो यह कहा कि शैतान बहकाता है तो मेरा यह प्रश्न है कि जब शैतान ने सबको बहकाया तो शैतान को किस ने बहकाया? यदि यह कहो कि शैतान आप से आप ही बहक गया तो सब जीव भी आप से आप ही बहक गये होंगे। फिर शैतान को बहकाने वाला मानना व्यर्थ है। यदि यह कहो कि शैतान को किसी ने बहकाया है, तब तो ईश्वर के अतिरिक्त दूसरा कोई शैतान को बहकानेवाला नहीं हो सकता तो फिर जब ईश्वर ने ही सबको बहकाया, तब मुक्ति देनेवाला कोई भी आपके मत में न रहा और न मुक्ति पानेवाला। जब ईश्वर ही बहकानेवाला ठहरा तो बचानेवाला कोई भी नहीं हो सकता और यह बात ईश्वर के स्वभाव से भी विरुद्ध है, क्योंकि वह न्यायकारी और सत्य कर्मों का ही कर्त्ता है तथा अच्छे कामों ही में प्रसन्न होता है। वह किसी को दुःख देनेवाला नहीं। फिर उसके राज्य में शैतान इतनी गड़बड़ करता है, फिर भी ईश्वर उसको न दण्ड देता है, न कैद करता है। यह बात ठीक है तो इससे स्पष्ट ही ईश्वर की निर्बलता पाई जाती है और ऐसा प्रतीत होता है कि ईश्वर को ही बहकाने की इच्छा है। इसलिए यह बात ठीक नहीं और न ही शैतान कोई मनुष्य है।

जब तक शैतान को माननेवाले शैतान को मानेंगे, तब तक पाप करने से नहीं बच सकते, क्योंकि वह समझते हैं कि हम तो पापी हो नहीं। जैसा शैतान ने आदम को और उसकी जोरु को बहका के पापी बनाया, वैसा ही ईश्वर ने आदम की सन्तान के पाप के बदले में अपने इकलौते बेटे को सूली पर चढ़ा दिया। फिर हमको क्या भय है और यदि हम से कुछ पाप भी होता है तो हमारा भरोसा ईसामसीह पर है, वह स्वयं क्षमा करा देगा, क्योंकि उसने हमारे पापों के बदले में जान दी है। इसलिए ऐसी व्यवस्था माननेवाले पापों से नहीं बच सकते और जो घड़ी का दृष्टांत दिया था सो ठीक है। क्योंकि सब अपने-अपने काम में स्वतन्त्र है। परन्तु ईश्वर की आज्ञा अच्छे कामों के करने के लिए है, बुरे कामों के लिए नहीं और आपने जो यह कहा कि स्वर्ग में पहुचना मुक्ति है और शैतान के बहकाने के कारण मनुष्यों में शक्ति नहीं कि वह पापों से पवित्र रहकर मुक्ति पा सके, यह बात ठीक नहीं। क्योंकि जब मनुष्य स्वतन्त्र है और शैतान कोई मनुष्य नहीं तो स्वयं दोषों से बचकर, ईश्वर की कृपा से मुक्ति पा सकते हैं और आदम गेहूं खाने के कारण स्वर्ग से निकाला गया और यही आदम का पाप हुआ कि गेहूं खाया तो मैं आपसे पूछता हूं कि आदम ने तो गेहूं खाया और पापी होगया और स्वर्ग से निकाला गया।

आप लोग जो उस स्वर्ग की इच्छा करते हो तो क्या आप वहां सब चीज खावेंगे और सब प्रकार आनन्द करेंगे? यदि ऐसा हुआ तो फिर क्या पाप नहीं होगा और वहां से निकाले नहीं जाओगे। इससे यह बात भी ठीक नहीं हो सकती। आप लोगों ने ईश्वर को मनुष्य शासक के समान माना होगा और यह ठहराया होगा कि सर्वज्ञ नहीं। तभी तो उसके यहां साक्षी और वकील की आवश्यकता बतलाते हो, परन्तु आप के ऐसा कहने से ईश्वर की सब ईश्वरता बिगड़ जाती है। वह स्वयं सब कुछ जानता है। उसको साक्षी या वकील की कुछ आवश्यकता नहीं, वह किसी सिफारिश की आवश्यकता नहीं रखता। क्योंकि सिफारिश न जाननेवाले से की जाती है। फिर अब देखिये कि आपके कथन से ईश्वर पराधीन ठहरता है, क्योंकि बिना ईसामसीह की सिफारिश या साक्षी के वह किसी को मुक्ति नहीं दे सकता और कुछ भी नहीं जानता। इसलिए आपके कथनानुसार अल्पज्ञता ही ईश्वर में सिद्ध होती है, जिससे वह सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ किसी प्रकार नहीं हो सकता। जब वह न्यायकारी है तो किसी की सिफारिश या खुशामद से वह न्याय के विरुद्ध कभी नहीं कर सकता। यदि विरुद्ध करता है तो न्यायकारी नहीं ठहर सकता। यदि आप मनुष्य शासक की भांति ईश्वर के दरबार में भी फरिश्तों का उपस्थित रहना मानोगे तो बहुत से दोष ईश्वर में आवेंगे और इस बात से ईश्वर सर्वव्यापक नहीं रह सकता। क्योंकि यदि सर्वव्यापक है तो शरीरवाला न होना चाहिए और जो सर्वव्यापक नहीं है तो आवश्यक है शरीरवाला हो। शरीरवाला होने की दशा में उसकी शक्ति सबको घेरनेवाली नहीं हो सकती। शरीरवाला दूर की चीज का ज्ञान रखता है, परन्तु वह उसको पकड़ नहीं सकता, मार नहीं सकता इत्यादि। जो शरीरवाला होगा, वह उत्पन्न होने और मरनेवाला भी होगा। इसलिए ईश्वर किसी स्थान पर है और फरिश्ते उसका काम करते हैं। ऐसी व्यवस्था का मानना किसी प्रकार ठीक नहीं हो सकता। इससे ईश्वर सीमावाला हो जायेगा।

देखो! हम आर्य लोगों के शास्त्रों को यथावत् न पढ़ने के कारण लोगों को उलटा निश्चय हो जाता है, अर्थात् कुछ का कुछ मान लिया जाता है।

जो पादरी साहब ने कलियुग के बारे में कहा सो ठीक नहीं, क्योंकि हम आर्य लोग युगों की व्यवस्था इस प्रकार नहीं मानते। इसमें ऐतरेय ब्राह्मण का प्रमाण है—

> कलिश्शयानो भवति संजिहानस्तु द्वापरः।
> उत्तिष्ठंस्त्रेता भवति कृतं सम्पद्यते चरन्॥
> एत० पंचिका ७ कण्डिका १५

अर्थात् जो मनुष्य सर्वथा पाप करता है और नाममात्र धर्म करता है, उसे कलियुग कहते हैं। जो आधा धर्म है उसको द्वापर कहते हैं और यदि तीन हिस्से धर्म करे और एक हिस्सा पाप करे तो उसका नाम त्रेता है। यदि कोई सम्पूर्ण धर्म करता है और कुछ अधर्म नहीं करता तो उस मनुष्य का नाम सतयुग है। यह एतरेय ब्राह्मण का लेख है सो उनके जाने बिना कोई बात कह देनी कभी ठीक नहीं हो सकती। जो कोई बुरा काम करता है वह दुःख पावे से कभी नहीं बच सकता और जो कोई अच्छे काम करता है वह दुःख पावे से बच जाता है। चाहे वह आर्यावर्त का रहनेवाला हो या और किसी देश का रहनेवाला।

ईश्वर अपने काम में किसी से सहायता नहीं चाहता—ईसामसीह के बिना ही क्या ईश्वर अपनी सामर्थ्य से किसी को नहीं बचा सकता? उसको किसी पैगम्बर पर निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं है। हां! यह बात सच है कि जिस देश में शिक्षा देनेवाले धर्मात्मा उत्तम पुरुष होते हैं, उस देश के मनुष्य पापों से बच जाते हैं और उन्हीं देशों में सुख और गुणों की वृद्धि होती है। यह ही सब लोगों के सुधार का कारण है। कुछ मत के ऊपर अवलम्बित नहीं है। आर्य लोग सदा से सुधरे हुए चले आते हैं। इस समय अनेक कारणों से सत्योपदेश के कम होने से जो किसी प्रकार का बिगाड़ प्रतीत होता हो तो इससे आर्य लोगों के सनातन मत में कोई दोष नहीं आ सकता, क्योंकि सृष्टि की उत्पत्ति के समय से लेकर आज तक आर्यों का ही मत चला आता है। वह अब तक कुछ नहीं बिगड़ा। यह बात विचारने योग्य है कि जैसे अठारह सौ या तेरह सौ वर्षों के भीतर ईसाइयों और मुसलमानों के मतों में आपस के विरोध से अनेक फिरके (पंथ) होगये। यदि उनकी तुलना में एक अरब छियानवे करोड़ आठ लाख बावन हजार नौ सौ छिहत्तर वर्षों वाले आर्यों के धर्म के बिगाड़ का मुकाबला किया जावे तो आप लोगों के मत से बहुत ही

(शेष पृष्ठ ६ पर)

रोहतक में सभा शताब्दी समारोह

आगामी २२-२४ मई को रोहतक में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा अन्य प्रांतों यथा पंजाब, दिल्ली, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर की प्रतिनिधि सभाओं के सहयोग से आर्य प्रतिनिधि सभा का शताब्दी समारोह मनाने जा रही है। यह ज्ञातव्य हो कि १८८६ में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की स्थापना अमृतसर में हुई थी और उक्त सभी प्रांत इसके कार्यक्षेत्र में आते थे। इस प्रतिनिधि सभा को ही इस बात का श्रेय जाता है कि उसने आर्यसमाज को भारतव्यापी आंदोलन बनाने में महनीय भूमिका निभाई। डी० ए० वी० तथा गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति की नींव रखी तथा अनेक अवसरों पर आर्यसमाज द्वारा किये गये आंदोलनों में बढ़-चढ़कर भाग लिया। स्वतन्त्रता आंदोलन में भी इस क्षेत्र के आर्यों ने अपूर्व बलिदान एवं शौर्य का परिचय दिया और हिन्दी पत्रकारिता को दृढ़ आधार प्रदान किया।

कहा जा सकता है कि गत सौ वर्षों में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जो अब पांच भागों में (भौगोलिक स्थिति में परिवर्तन के कारण) विभाजित हो चुकी है, आर्यसमाज को एक जीवित, सशक्त, अग्रणी, जुझारू, जनप्रिय और प्रभावशाली आंदोलन के रूप में प्रतिष्ठित किया है। किन्तु दुर्भाग्य से पिछले तीन-चार दशकों अर्थात् स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् जहां अन्य आर्यसामाजिक क्षेत्रों में शिथिलता दृष्टिगोचर हो रही है वहां उक्त प्रतिनिधि सभा भी अपवाद नहीं रही। शताब्दी समारोह में इस शिथिलता पर गम्भीर विवेचन एवं इसे दूर करने का यदि सार्थक प्रयास हो तो इस शताब्दी समारोह को सफल माना जा सकेगा। अन्यथा ढोल-धमाके तो दिल्ली आदि की शताब्दियों में पहले ही बहुत बज चुके हैं, तब रोहतक में रणसिंगा फूंकने की क्या जरूरत है?

शताब्दी समारोह की एक विशेषता यह होगी कि सौ नवीन आर्यसमाज स्थापित किये जायेंगे। इसे आदर्श एवं अनुकरणीय आयोजन माना जा सकता है, लेकिन वर्तमान आर्यसमाजों की शोचनीय स्थिति एवं निराशाजनक उपलब्धियों को देखते हुए मन में एक प्रश्न उठता है कि जब वर्तमान समाजों को सही नेतृत्व नहीं मिल पा रहा तो नई समाजें स्थापित करने की औपचारिकता क्यों निभाई जा रही है? क्या उक्त ५ प्रांतों में क्रांति फूंकने के लिए वर्तमान आर्यसमाजें अपर्याप्त हैं? वर्तमान संख्या से भी कम संख्या में होते हुए इस क्षेत्र के आर्यसमाज ने हिन्दी आंदोलन के दौरान जो प्रचण्ड एवं विराट् रूप दिखाया था वह सिद्ध करता है कि आर्यसमाजों की गिनती बढ़ाने की नहीं बल्कि जो हैं उनकी गुणवत्ता, क्रियाशीलता बढ़ाने की आवश्यकता है। इसे विडम्बना ही माना जा सकता है कि आर्यसमाज के सामने जब कोई बड़ा कार्यक्रम रखा जाता है तो जन तथा धन की कोई कमी नहीं रहती। अपूर्व उत्साह एवं साहस आर्यजनों में दिखाई देता है, त्याग और बलिदान की भावना दृष्टिगोचर होती है लेकिन सामान्य स्थिति में आर्यसमाज जैसे अफीम या स्मैक खाये पड़ा रहता है। आर्यसमाज को आंदोलन नहीं वस्तुत: जीवन पद्धति माना जाता है और यदि सत्य यही है तो आर्यसमाज में सतत वेग एवं क्रियाशीलता का रहना अनिवार्य है। शताब्दी समारोह में इस समस्या का स्थायी निदान निकाला जाना चाहिए और आर्यसमाज को कोई ऐसा कार्यक्रम तैयार करना चाहिए, ऐसी पीढ़ी का निर्माण करना चाहिए और ऐसा नेतृत्व पैदा करना चाहिए कि उसमें किसी प्रकार की शिथिलता न आने पाये, वह क्षणिक आंदोलन नहीं बल्कि सतत सफल जीवन-पद्धति का पर्यायवाची सिद्ध हो।

पूर्व मनाई गई शताब्दी समारोहों में अच्छे-अच्छे प्रस्तावों पर विचार-विमर्श हुआ और उन्हें तालियों की गड़गड़ाहट के बीच पारित भी किया गया, लेकिन समारोह समापन पर इन प्रस्तावों को भी सर्व वे स्वाहा कर दिया गया। कौन कहे कि इन प्रस्तावों को प्रस्तुत तथा पारित करानेवालों को इनको याद भी है या नहीं? शताब्दी समारोह में इस प्रकार का प्रचलन अथवा रिवाज आर्यसमाज सरीखी प्रगतिशील संस्था के लिए शोभनीय नहीं माना जा सकता। आर्यसमाज चूंकि धार्मिक तथा सामाजिक संघटन है अतः झूठे वायदे करके, लुभाने स्वप्न संजोकर धर्म से और समाज से भी विश्वासघात करता है। किन्तु हमारा नैतिक एवं चारित्रिक रूप से इतना पतन हो चुका है कि ऐसी औपचारिकतायें निभाने से हमारा नेतृत्व बाज नहीं आता। इसका दुष्परिणाम यह निकल रहा है कि आर्यसमाज अपनी विश्वसनीयता खो रहा है उसके नेताओं को बड़बोला, धूर्त और दगाबाज समझा जा रहा है। हमें विश्वास है कि रोहतक का शताब्दी समारोह इस अपराधी मानसिकता का परिचय नहीं देगा। क्योंकि हरियाणवी अपनी सादगी, शराफत, नेकनीयत तथा साफगोई के लिए भारतभर में प्रसिद्ध हैं और वे जितना बोलते है उतना करके दिखाते हैं। हमारा सुझाव है कि जिन नेताओं ने पूर्व शताब्दी समारोहों में आकर्षक प्रस्ताव पारित कराये, लेकिन बाद में उन पर अमल करना आवश्यक नहीं समझा, उन नेताओं को रोहतक के शताब्दी समारोह में प्रमुखता न दी जाये। ऐसे नेता आर्यसमाज के लिए वरदान नहीं अभिशाप हैं। हरयाणा को आर्यसमाज का गढ़ माना जाता है, इस गढ़ में कोई बाह्य पदलोलुप सेंध न मार जाये, इसकी सावधानी शताब्दी समारोह के आयोजकों को रखनी होगी।

आर्यसमाज के शताब्दी समारोहों में राजनीतिक नेताओं को आमन्त्रित करने का फैशन है, जिससे कि भीड़ जुटाई जा सके। चूंकि इन राजनेताओं का आर्यसमाज की गतिविधियों से प्रत्यक्ष सम्पर्क नहीं होता और न ही आर्यसमाज उनके पांव चलता है। अत: उन्हें ऐसे समारोहों में आमन्त्रित करना विशेष अर्थ नहीं रखता। देखा यह गया है कि इन राजनेताओं का भाषण समाप्त होते ही भीड़ उखड़ने लगती है और जो लोग वक्ताओं के भाषण सुनने के इच्छुक होते हैं वे ठीक से सुन नहीं पाते। दूसरे इन राजनेताओं का व्यक्तिगत चरित्र इतना गया गुजरा होता है कि धार्मिक मंच पर उनका खड़ा होना ग्लानि उत्पन्न करता है। तीसरे आदतन वे लम्बे-चौड़े वायदे तो कर जाते हैं लेकिन उनमें से पूरा एक भी नहीं करते। चौथे अपने राजनीतिक उद्देश्यों की स्वार्थ-सिद्धि के लिए वे धार्मिक मंच का दुरुपयोग भी कर जाते हैं। एक जमाना था जब आर्यसमाज के मंचों पर या तो देशभक्त, निष्ठावान् और धार्मिक वृत्ति के राजनेताओं को आमन्त्रित किया जाता था अथवा शिरोमणि सन्यासी वहां सुशोभित हुआ करते थे। आज न तो सन्यासियों को नेतृत्व दिया जाता है और न श्रेष्ठ राजपुरुषों को ही आहूत किया जाता है। रोहतक का शताब्दी समारोह इस दिशा में नया कीर्तिमान स्थापित कर सके तो उससे आर्यसमाज को दिशाबोध मिलेगा।

(—सम्राट् से साभार)

आर्यसमाजों तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों से आवश्यक निवेदन

आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापना शताब्दी समारोह २२ से २४ मई तक रोहतक में मनाया जा रहा है। इस अवसर पर एक भव्य तथा आकर्षक स्मारिका का भी प्रकाशन किया जा रहा है। अत: सभा से सम्बन्धित आर्यसमाजों तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों से आवश्यक निवेदन है कि इस ऐतिहासिक स्मारिका में प्रकाशनार्थ अपने आर्यसमाज तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं का संक्षिप्त परिचय और वर्तमान अधिकारियों के पासपोर्ट साइज के चित्र शीघ्र सभा कार्यालय रोहतक में भेजने की कृपा करें। स्मरण रखें जिनका परिचय समय पर कार्यालय में प्राप्त नहीं हो सकेगा, उनका विवरण स्मारिका में नहीं छप सकेगा।

यदि किसी आर्यसमाज के पुस्तकालय में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का इतिहास (लेखक प० चमूपति जी एम०ए०) सुरक्षित है तो उसे भी सभा कार्यालय में भेजने का कष्ट करें। उसमें से आवश्यक सामग्री प्रकाशित करके पुस्तक तथा एक निःशुल्क स्मारिका सधन्यवाद भेज दी जायेगी। स्मारिका में प्रकाशनार्थ विज्ञापन भी भिजवाने की कृपा करें।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

दयानन्द

(ज्वलन्त प्रतिभा)

लें०—श्री धर्मवीर, आचार्य उपदेशक महाविद्यालय, टंकारा

गतांक से आगे—

बंगाल की खाड़ी से अरब सागर तक, पेशावर से विन्ध्याचल तक गंगा यमुना नर्मदा के तटवर्ती तीर्थस्थलों, छोटे-छोटे ग्रामों, बड़े-बड़े नगरों में वेद की पवित्र ऋचाओं को स्वामी दयानन्द मधुर कण्ठ से, गम्भीर स्वर में तन्मय हो गाने लगे। सत्य अर्थ के प्रकाश में जनजीवन उठ खड़ा हुआ। स्थानीय छोटे-छोटे विद्वानों को समझाया, धुरन्धर पण्डितों से शास्त्रार्थ किया। प्रकांड विद्वानों की विश्वविख्यात नगरी काशी में वेदों की दुन्दुभि बजाई। हरद्वार के कुम्भ मेले पर "पाखण्ड खण्डनी पताका" फहराई। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, केशवचन्द्र सेन आदि समाज सुधारकों ने दिल खोलकर स्वागत किया। अमेरिका के थियोसोफिस्ट कर्नल अलकाट उनसे मिलने भारत आये। जर्मनी के विद्वान् मैक्समूलर ने स्वामी जी की प्रतिभा का लोहा माना। प्रखर किरणोंवाले सूर्य के समान वेद के प्रकाश में पाप, अविद्या, अन्धविश्वास, कुरीतियों, रूढ़ियों के बादल छिटक कर दूर हट गये। निरभ्र आकाश में वेदरूपी सूर्य की ऋचारूपी किरणें चमकने लगीं। दुःख दारिद्र्य शोक त्रिविधताप दूर हुए। जन-जन सुखी और आनन्दित हुआ।

वेदोद्धारक—१९वीं शताब्दी में वेदों के नाम से बहुत गलत बातों का प्रचार हो रहा था। "वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति" कहकर यज्ञ में मूक प्राणियों की हत्या को वेद के नाम से किया जा रहा था तो भारतवासी बुद्ध ने उसे मानने से इन्कार कर दिया था। इसी प्रकार से अन्य बहुत पाखण्ड वेद के नाम से हो रहे थे। क्योंकि उन्हें पढ़ता कोई नहीं था। १—अतः स्वामी जी ने सभी को वेद पढ़ने का अधिकार दिया। स्त्रीशूद्रौ नाधीयताम् के उत्तर में यजुर्वेद की ऋचा उद्धृत की—

इमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्यांँ शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय॥

वेद 'जनेभ्यः' कहकर सन्तुष्ट नहीं हुआ। 'जन' शब्द के अन्तर्गत जिनका ग्रहण है, उन्हें स्पष्ट किया अगली पंक्ति में, अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, घर की महिलायें व भृत्य तथा अतिशूद्र। फिर कहा कि—

इमं मंत्रम् पत्नी पठेत्।
ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्॥

पढ़ी-लिखी कन्या ही मन्त्रपाठ कर सकेगी। विद्याध्ययन से ही तो ब्रह्मचर्यपूर्ण होगी। माता विदुषी होगी तो सन्तान सच्चरित्र होगी।

२—यह प्रमाणित किया कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है, स्वतः प्रमाण है, मानवमात्र को, सभी की कल्याण की भावना से ओतप्रोत है।

३—घनपाठ, जटापाठ आदि से वेदों का शुद्ध पाठ स्थापित किया।

४—वैदिक शब्दों के अर्थ व्याकरण एवं निरुक्त से निश्चित किये। यौगिक अर्थों को मान्यता दी। रूढि अर्थों का निराकरण किया।

५—वेदों के भाष्य किये जो युक्तियुक्त, विज्ञानसम्मत और सृष्टि क्रम के अनुकूल हैं।

६—वेद में सभी विद्याओं आत्मा, परमात्मा, प्रकृति, धर्म, आचरण, कर्त्तव्य कर्म, शिल्प, विज्ञान विद्युत्, ताप आदि भौतिक और रासायनिक सिद्धांतों, वायुयान आदि के निर्माण को प्रतिपादित एवं प्रकाशित किया।

इस प्रकार महर्षि दयानन्द वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् एवं उद्धर्ता हुए।

(क्रमशः)

आर्य वीरदल हरयाणा के संचालक का तूफानी दौरा

आर्य वीरदल हरयाणा के संचालक श्री उमेदसिंह शर्मा जी के नेतृत्व में दल प्रगति के पथ पर अग्रसर है। हरयाणा की युवाशक्ति को दल की शाखाओं के माध्यम से आर्यसमाज की ओर खींचने का एक अच्छा साधन है, इसी उद्देश्य को लेकर शर्मा जी व धर्मदेव जी अधिष्ठाता आर्य वीरदल हरयाणा का दौरा कर रहे हैं।

आपसे प्रार्थना है कि आप अपने क्षेत्र के सभी आर्ययुवकों को अपनी तरफ से निमन्त्रण-पत्र देकर बुलावें, ताकि आप सभी के साथ बैठकर विचार-विमर्श का मौका मिल सके।

बैठकों का कार्यक्रम

७-३-८७ रात्रि ८ से १० तक आर्यसमाज कृष्णनगर, भिवानी
८-३-८७ प्रातः १० से १२ आर्यसमाज सिरसा
८-३-८७ दोपहर २ से ४ कार्यालय सार्वदेशिक आर्य वीरदल बालसमन्द रोड, हिसार
८-३-८७ दोपहर बाद ५ से ६ आर्यसमाज हांसी

—सीताराम आर्य

अश्लील साहित्य पर रोक की मांग

रोहतक (नि०स०) हाल ही में बलजीतसिंह नहरा की अध्यक्षता में जिला रोहतक की कार्यकारिणी की एक बैठक में मांग की गई कि रेलवे स्टेशन बस स्टैंड तथा अन्य सार्वजनिक स्थानों पर बिकनेवाले अश्लील साहित्य पर रोक लगाई जावे तथा सिनेमा के अर्ध नंगे पोस्टर लगाने वालों के विरुद्ध कठोर कार्यवाही की जाये। इसके अलावा सिनेमा की टिकटों पर छात्रों को कन्सेन्शन देने, बस पास की दूरी ६० कि०मी० करने तथा छात्रों के लिए मिट्टी के तेल का कोटा निर्धारित करने की मांग की गई।

—पींग १४ से २० फरवरी, १९८७

आर्यसमाज कंवारी का वार्षिक चुनाव

प्रधान—सर्वश्री अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी, उपप्रधान—भरतसिंह आर्य, ज्ञानीराम सरपंच, महामन्त्री—इन्द्रसिंह आर्य, उपमन्त्री—डा० ओम्प्रकाश आर्य, कोषाध्यक्ष—महेन्द्रसिंह आर्य, प्रचारमन्त्री—हरिसिंह आर्य, संगठन मन्त्री—दरियासिंह आर्य।

—इन्द्रसिंह आर्य मन्त्री

आर्यसमाज रामनगर गुडगांव का चुनाव

आर्यसमाज रामनगर का वार्षिक चुनाव सर्वसम्मति से इस प्रकार हुआ—

प्रधान-भगत राजेन्द्रप्रसाद, मन्त्री-ओम्प्रकाश चुटानी, कोषाध्यक्ष-प्रेमदासकुमार।

—ओम्प्रकाश चुटानी मन्त्री

आर्यसमाज गढ़ी बीरबल का उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज गढ़ी बीरबल जिला करनाल का दूसरा वार्षिकोत्सव २४-२५-२६ जनवरी, ८७ को बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। उत्सव में निम्न महानुभावों ने भाग लिया—

सर्वश्री—स्वामी सदानन्द, स्वामी गुरुदत्त मुनि, महाशय हरलाल, पं० सूबेसिंह, चौ० नत्थासिंह, विद्याभूषण विद्यामार्तण्ड, शेरसिंह आर्य।

बहुत से लोगों एवं बच्चों के यज्ञोपवीत संस्कार हुए। सभा को २०१) वेदप्रचारार्थ प्राप्त हुए।

असभ्य नाटक के विरोध में प्रदर्शन

बम्बई महानगरी के एक दैनिक पत्र "इण्डियन एक्सप्रेस" ३० जनवरी, १९८७ में यह समाचार पढ़कर कि पृथ्वी थियेटर में इकबाल ख्वाजा द्वारा लिखित एवं निर्देशित नाटक "सेक्सपीयर की रामलीला" को दिखाया जायेगा। हिन्दू जनता में रोष फैल गया। इस नाटक में रोमियों एवं ज्यूलियट के स्थान पर रावण एवं सीता के प्रेम दृश्यों का चित्रण किया गया है।

इस समाचार को पढ़कर बम्बई शहर के हिन्दू संगठनों ने आर्य-समाज के नेता कैप्टिन देवरत्न आर्य के नेतृत्व में उचित कार्यवाही करने का निश्चय किया। सभी संगठनों की ओर से महाराष्ट्र के मुख्यमन्त्री, बम्बई के पुलिस आयुक्त, सांताक्रूज क्षेत्र के असिसटेन्ट पुलिस आयुक्त एवं पृथ्वी थियेटर के संस्थापक फिल्म अभिनेता श्री शशिकपूर को इस आशय के तार भेजे गये कि 'रोमियो एवं जूलियट' के स्थान पर रावण और सीता के प्रेम दृश्यों के चित्रण से हिन्दू भावनाओं को आघात पहुंचेगा। अतः इस नाटक के कार्यक्रम को तुरन्त रद्द किया जाये अन्यथा समस्त हिन्दू संगठन इस सांस्कृतिक आक्रमण को रोकने हेतु मोर्चा निकालेंगे।

शासन एवं नाटक के निर्देशक की ओर से कोई निर्णय न होने के कारण ३१ जनवरी, १९८७ को नाटक के प्रारम्भ होने से पूर्व ६ बजे अनेक हिन्दू संगठनों ने पृथ्वी थियेटर पर मोर्चा बन्दी की एवं किसी भी व्यक्ति को पृथ्वी थियेटर में जाने की रोक लगाई। "राम एवं सीता का अपमान नहीं सहेंगे—इकबाल ख्वाजा मुर्दाबाद" आदि के नारों को सुन-कर पृथ्वी थियेटर के आस-पास के निवासी भी उतर कर आगये। उस समय हिन्दू महासभा के अध्यक्ष श्री विक्रम सावरकर एवं कैप्टिन देवरत्न आर्य ने उपस्थित जनसमूह का आह्वान किया और बताया कि किस प्रकार विधर्मी फिल्म एवं नाटकों के माध्यम से भारतीय संस्कृति एवं हमारे आदर्श महापुरुषों एवं नारियों पर सांस्कृतिक आक्रमण कर हमारी भावीवाली सन्तति पर दुष्प्रभाव डाल रहे हैं। उन्होंने "इन्साफ की आवाज", "कलियुगी रामायण" आदि फिल्मों में भारतीय संस्कृति के विरुद्ध दृश्यों एवं गानों का विवरण दिया। रावण और भगवती सीता को रोमियो और ज्यूलियट जैसा प्रेमी बनाकर नाटक दिखाने का विवरण सुनकर स्थानीय हिन्दू जनता भी मोर्चे में शामिल होगई और मोर्चाबन्दी उग्र रूप धारण करने लगी।

पुलिस ने सुरक्षा के दृष्टिकोण से मोर्चे को पृथ्वी थियेटर तक नहीं जाने दिया एवं बाहर सड़क पर ही रोक कर रखा। अनेक नारों एवं बढ़ती हुई संख्या को देखकर नाटक के आयोजकों ने शो रद्द करने की घोषणा की एवं जिस व्यक्ति के पास टिकिट थे उन्हें रकम वापिस देने की भी घोषणा की।

परन्तु हिन्दू संगठनों का मोर्चा इससे सन्तुष्ट नहीं हुआ। उन्होंने मांग की कि नाटक के लेखक एवं निर्देशक इकबाल ख्वाजा मोर्चे के सामने आयें और क्षमा मांगें। जनता की इस उग्र मांग पर इकबाल ख्वाजा पुलिस संरक्षण में बाहर आये और उन्होंने कुरान की शपथ खाकर कहा कि भविष्य में मैं भारतीय संस्कृति के आदर्श महापुरुषों और हिन्दू देवी देवताओं पर नाटक नहीं लिखूंगा। उन्होंने यह भी कहा कि 'सेक्सपियर की रामलीला' नाटक भविष्य में कहीं भी प्रदर्शित नहीं होगा। नाटक के कलाकारों ने भी क्षमायाचना की।

इसके पश्चात् हिन्दुओं की भावनाओं को शांत करने के लिये उप-रोक्त नाटक की पांडुलिपि एवं समस्त फोटो को पेट्रोल डालकर जलाया गया और उसके पश्चात् मोर्चाबन्दी समाप्त हुई।

मोर्चे का आयोजन एवं नेतृत्व समस्त आर्यसमाजों की ओर से कैप्टिन देवरत्न आर्य ने किया। कप्टिन आर्य के नेतृत्व में ही समस्त हिन्दू संगठनों ने संयुक्त मोर्चा निकाला। मोर्चे में श्री विक्रम सावरकर के नेतृत्व में हिन्दू महासभा, श्री हरि समतानी के नेतृत्व में विश्व हिन्दू परिषद्, श्री मधुकर जयताप के नेतृत्व में शिवसेना, श्री ओमप्रकाश आर्य के नेतृत्व में आर्य वीरदल, श्री रमेश सम्भू के नेतृत्व में हिन्दू शक्ति एवं प्रदीप शास्त्री के नेतृत्व में आर्य युवक परिषद् आदि अनेक संगठनों ने भाग लिया।

इस अवसर पर हिन्दू संगठनों ने घोषणा की कि कोई भी व्यक्ति या संस्था भविष्य में किसी भी रूप में भारतीय वैदिक संस्कृति एवं हमारे महापुरुषों पर सांस्कृतिक आक्रमण करेगा तो हम डटकर मुका-बला करेंगे।

—देवरत्न आर्य उपप्रधान

गुडगांव में ईसाई भाई वैदिकधर्म में दीक्षित

दिनांक २६-१-८७ को सायं ४ बजे गांव गुडगांव (रामनाथपुर) में हवन किया गया और ईसाई भाइयों ने अपना स्वेच्छा से वैदिक (हिन्दूधर्म) पुनः ग्रहण किया और प्रतिज्ञा की कि हम वैदिकधर्म का पालन करेंगे और आर्यसमाज के प्रधान श्री उजलीराम आर्य सलखिया, महेश-राम आर्य, भीष्मदेव जी की उपस्थिति में स्वामी सेवानन्द सरस्वती महामन्त्री हिन्दू शुद्धि संरक्षणी समिति हरयाणा ने शुद्धि संस्कार कराया और अपने भाषण में कहा कि जब तक इस देश में हिन्दू हैं तो तिरंगा झण्डा रह सकता है और जब अंग्रेज भारत में राज करता था उस वक्त ये जो आदिवासी क्षेत्र हैं, उसमें कोई भी शिक्षा का केन्द्र नहीं था और न आने-जाने के साधन थे। आजादी के पश्चात् ये सारा काम किया गया है। शुद्धि समारोह में स्वामी आत्मानन्द समालखा और वानप्रस्थी चन्द्रमुनि आदि ने भाग लिया और काम धर्मसिंह आर्य और स्वामी सेवानन्द के प्रयत्नों द्वारा किया गया। शुद्धि संरक्षणी समिति की ओर से कपड़ा वितरण व प्रसाद बांटा गया।

उक्त शुद्धि कार्यक्रम में सहदेव, शिवलाल, बलराम, अयोध्याप्रसाद आर्यों की उपस्थिति थी। यह कार्यक्रम सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में किया।

सबसे बुरी शराब

खाना खराब कर दिया शराब ने।
जो कुछ कि न देखा था दिखाया शराब ने।

इज्जत के बदले जिल्लतें इसके सबब मिलीं।
मुफलिस बने, मरीज् बनाया शराब ने।

बुलबुल को तरह बाग में लेते थे बूए गुल।
सण्डास नालियों में गिराया शराब ने।

हम पीनेवाले शरबते सुन्दल थे दोस्तो।
कुत्तों का मूत हमको पिलाया शराब ने।

मैदाने जंग में थे कभी हम भी शहसवार।
कीचड़ में नालियों के गिराया शराब ने।

(कवर सुखलाल आर्य मुसाफिर रचित)

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज सैक्टर-७ फरीदाबाद की सामान्य सभा के सभी सदस्य इस संस्था के भूतपूर्व प्रधान एवं संस्थापक श्रीयुत ब्रजलाल मलिक के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हैं तथा परमपिता परमे-श्वर से दिवंगत आत्मा को शांति एवं संतप्त परिवार को इस अथाह तथा अपरिमित दुःख को सहन करने का सामर्थ्य प्रदान करने हेतु प्रार्थना करते हैं।

स्वर्गीय श्री मलिक की प्रेरणा, तप एवं उत्साह से ही इस संस्था का जन्म तथा भवन निर्माण का कार्य प्रारम्भ हुआ था। ऐसी महान् आत्मा के असीम में विलय से इस संस्था को भारी क्षति हुई है, जिसकी पूर्ति सम्भव नहीं है।

अतः उनके देहावसान से सभी आर्यबन्धुओं को अपार दुःख हुआ है।

(पृष्ठ २ का शेष)

कम हुआ है और आप लोगों में जितना सुधार है सो मत के कारण से नहीं, किन्तु पार्लियामेंट आदि के उत्तम प्रबन्ध के प्रचार से है। यदि यह प्रबन्ध न हो तो आपके मत में कुछ भी सुधार न रहे और पादरी साहब ने जो इंग्लिस्तान के दुष्ट मनुष्य का दृष्टांत मेरे साथ मिलाकर दिया सो उनकी यह वर्णनशैली उनके योग्य न थी, पर न जाने किस प्रकार से उनके मुख से यह बात भूल से निकली।

स्वामी जी मौलवी साहब के उत्तर में—

ईश्वर चाहे सो करे, ऐसा कहना ठीक नहीं, क्योंकि वह विद्यास्वरूप और सदा ठीक-ठीक न्याय करता है, किसी का पक्षपात नहीं करता, यह कहना कि जो चाहे सो करे इससे यह भी निकलता है कि ईश्वर ही बुराई भी करता होगा और उसकी इच्छा से बुराई होती है, यह कहना ईश्वर में नहीं बनता। जो कोई भी व्यक्ति मुक्ति के (योग्य) काम करता है, वह उसी को मुक्ति देता है, दूसरे को नहीं देता। क्योंकि वह अन्याय कभी नहीं करता और यदि बिना पाप या पुण्य के किये, जिसको चाहे दुःख देवे, जिसको चाहे सुख देवे तो ईश्वर में प्रमाद और अन्याय आदि दोष आते हैं सो वह कभी ऐसा काम नहीं करता। जैसे अग्नि का स्वभाव प्रकाश और जलाने का है, उसके विरुद्ध वह नहीं कर सकता। ऐसे ही ईश्वर भी अपने न्याय के स्वभाव के विरुद्ध पक्षपात से कोई व्यवस्था नहीं करता।

प्रत्येक समय का हाकिम मुक्ति के लिए परमेश्वर ही है, दूसरा कोई नहीं है। जो कोई दूसरे को हाकिम माने तो उसका मानना वृथा है और मुक्ति दूसरे के ऊपर विश्वास करने से कभी नहीं हो सकती। क्योंकि ईश्वर यदि मुक्ति देने में दूसरे के अधीन है तो वह ईश्वर ही नहीं हो सकता। ईश्वर अपने काम में किसी की सहायता इसलिए नहीं लेता कि वह सर्वशक्तिमान् है और मैं जानता हूं कि सब बुद्धिमान् लोग ऐसा ही मानते हैं। यदि मजहबी पक्षपात करके प्रकट रूप से न कहते हो तो दूसरी बात है।

परन्तु इसका मुझको बड़ा शोक है कि ईश्वर को लाशरीक (किसी की सहायता की अपेक्षा न रखनेवाला) मानते हैं और फिर पैगम्बरों को मुक्ति देने में ईश्वर के साथ शरीक (सम्मिलित या सहायक) भी करते हैं, यह बात कोई बुद्धिमान् नहीं मानेगा। इससे यह सिद्ध होता है कि परमेश्वर मुक्ति के योग्य काम करने पर धर्मात्मा मनुष्यों को मुक्ति स्वतन्त्रता से दे सकता है, इस बात में किसी की सहायता की अपेक्षा नहीं रखता। सहायता की अपेक्षा मनुष्यों को ही परस्पर होती है, ईश्वर को नहीं। न वह खुशामदी है जो खुशामद से अन्याय करे। वह तो अपने सच्चे न्याय से सदा मुक्त रहता है और अपने सच्चे प्रेम से मुक्त भक्तों को यथावत् मुक्ति देकर और सब दुःखों से बचाकर सदा के लिए आनन्द में रख लेता है, इसमें कुछ सन्देह नहीं। इति उपदेश।

(उपदेश ऋषिवर की जीवनी से लिया गया है)

पाठकगण! इस उपदेश को आपके सम्मुख रखने का यही भाव है कि हम सब इस उपदेश का मनन करके उसके अनुसार अपने जीवन को बनाने का प्रयत्न करें।

सब कुछ विदेशी है

भारत में स्वराज्य है पर सुराज है नहीं,
खानपान देशी नहीं यह भी विदेशी है,
भारतीय वेशभूषा हमको पसन्द नहीं,
रहन-सहन भी हमारा तो विदेशी है।

देशी शिक्षा-नीति नहीं धर्म से प्रीति नहीं,
अपनी राष्ट्र-भाषा नहीं भाषा भी विदेशी है,
शासन करने का ढंग भी विदेशी और,
हमारे राष्ट्र-गीत में भी भावना विदेशी है।

करने को राज्य के नेता हैं देशी मगर,
विचारधारा उनकी बिल्कुल विदेशी है,
मानसिक दासता में अब भी फंसे हैं हम,
भारत में चिकित्सा-प्रणाली भी विदेशी है।

सोने और उठने की प्रथा भी विदेशी यहां,
कहां तक कहें मूत्र त्याग भी विदेशी है,
'छाजूराम' केवल शरीर तो यह देशी है,
शेष तो लगभग सब कुछ विदेशी है।

प्रणेता—कविराज छाजूराम शर्मा शास्त्री

चुनौती

कर्त्तव्य के इस धराधाम में कुछ तो कर दिखलाओ रे।
आर्य हो तुम! जगति में सुमधुर सुरभि फैलाओ रे॥

जागता है जो जन उसका, मन भागता नहीं है।
सोता रहे पड़ा आलस में, तन्द्रा जो त्यागता नहीं है।
भाग्य उसका सो जाता है विपत्ति घोर सताती है।
विषधर काला विषयों का जो त्यागता नहीं है।

मैं रहूं न रहूं काम रह जाये कर्त्तव्य से भागता नहीं।
ऐसी बुलन्द विचारों से ला जो स्वधर्म त्यागता नहीं।
धरा पूजती है, देव आह्लाद से पुष्प वर्षाते हैं।
पिशाच रोता है धर्म छोड़कर परहानि जो त्यागता नहीं।

उनका रोना सुनकर जिनके दिल में छाया रोष न त्रास।
निरीह बेचारे मरते प्राणी फिर भी जिसको जोश न खरास।
पंगु मानवता बन बैठे जब हमदर्दी न जिनका इससे।
अभक्ष्य मांस खा पीकर सोते होगा न फिर क्योंकर नाश।

कृतघ्नता की लासानी में, जीवन सुख न आसानी में।
अपना सुख चाह डाल रहा फिर औरों का जो परेशानी में।
घर भरने की सूझी है यह घर भी है डेरा ले देख।
अन्धा विष बीज बिखेरा करता है क्यों फिर मानव नादानी में।

कर्त्तव्य मानव छोड़ चुका, इसको जीना सिखलाओ रे।
दरिन्दे का अब दामन फाड़ो फाड़ो! असली चेहरा दिखलाओ रे।

—मेधाव्रत सत्यार्थी, शिमली, भिवानी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का

बिक्री हेतु वैदिक साहित्य

क्र०	पुस्तकों का नाम	मूल्य
१.	दी वेदाज (अंग्रेजीभाषा में)—स्वामी भूमानन्द जी	१-००
२.	दी प्रिंसिपल्ज आफ आर्यसमाज —पं० चमूपति एम०ए०	१-५०
३.	जीवन ज्योति (वेदमन्त्रों की व्याख्या)—पं० चमूपति एम०ए०	३-००
४.	निहारिकावाद और उपनिषद्—पं० चमूपति एम०ए०	०-५०
५.	आर्यसमाज की विचारमाला—पं० क्षितीशकुमार वेदालंकार	१-००
६.	निजाम की जेल में—लेखक पं० क्षितीशकुमार ,,	२०-१०
७.	ईसाइयों की प्रचार प्रणाली—पं० जगत्कुमार शास्त्री	००-१०
८.	आर्यसमाज और अस्पृश्यता निवारण—पं. ओम्प्रकाश त्यागी	००-५०
९.	बलिदान जयन्ती स्मृति ग्रंथ (आर्य शहीदों का परिचय)	४-५०
१०.	ईश्वर की सत्ता—डा० रणजीतसिंह	१-००
११.	हरयाणा के आर्यसमाज का इतिहास—डा० रणजीतसिंह	५-००
१२.	धर्म-प्रवेशिका —डा० रणजीतसिंह	३-००
१३.	धर्म-भूषण ,,	५-००
१४.	पंजाब का आर्यसमाज —प्रि० रामचन्द्र जावेद	२-००
१५.	आदर्श धातु रूपावली —महावीर आजाद शास्त्री	२-००
१६.	वैदिक उपासना पद्धति—डा० सुदर्शनदेव आचार्य	३-००
१७.	स्मारिका (हरयाणा प्रांतीय आर्यसमाज शताब्दी समारोह)	१-००
१८.	मूर्तिपूजा —सम्पादक पं० जगदेवसिंह सिद्धांती	००-५०
१९.	वेदस्वरूप निर्णय ,,	००-७५
२०.	वेदाविर्भाव ,,	१-००
२१.	वेदभाष्य पद्धति ,,	१-००
२२.	ईसाई पादरियों की आर्यसमाज को चुनौती—स्वा० दर्शनानन्द	०-१०
२३.	गोकरुणानिधि—स्वामी दयानन्द सरस्वती	०-२०
२४.	सत्यार्थप्रकाश ,,	६-००
२५.	महर्षि दयानन्द आत्मकथा ,,	०-५०
२६.	हमारा फाजिल्का —योगेन्द्रपाल	१-००
२७.	बड़ —स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती	१-५०
२८.	वीर हेमू ,,	००-७५
२९.	पीपल ,,	१-५०
३०.	मिर्च ,,	१-५०
३१.	श्लीपद वा हाथीपांव की चिकित्सा ,,	०-२०
३२.	बिच्छू विष चिकित्सा ,,	०-५०
३३.	लवण ,,	१-२५
३४.	विदेशों में मैंने क्या देखा ,,	२-५०
३५.	नैरोबी यात्रा ,,	१-५०
३६.	ब्रह्मचर्य साधन ६-११ ,,	१०-००
३७.	,, १-२ ,,	१-००
३८.	,, ३ ,,	१-००
३९.	,, ४ ,,	२-५०
४०.	,, ५ ,,	२-००
४१.	,, ६ ,,	३-००
४२.	,, ७-८ ,,	२-००
४३.	,, ९ ,,	३-००
४४.	,, १० ,,	१-५०
४५.	,, ११ ,,	२-००
४६.	हल्दी ,,	१-५०
४७.	नीम ,,	१-२५
४८.	पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय—प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु	१-५०
४९.	नास्तिक मत समीक्षा—पं० हरिदेव सर्राफ	००-१५
५०.	विश्व को आर्यसमाज का सन्देश—महात्मा वेदभिक्षु जी	००-२५

प्राप्ति स्थान
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

मज़हब ही सिखाता है आपस में वैर करना

—प्रणेता—कविराज छाजूराम शर्मा शास्त्री

आपस में वैर करना मजहब ही सिखाता है।
जुल्मो सितम का रास्ता मजहब ही सिखाता है।
मजहब तो औरतों को खेती बता रहा है।
पर धर्म उनको देवी कहकर जता रहा है।
इज्जत पै हमला करना मजहब ही सिखाता है।। आपस……१

दो बीबियां हैं घर पर दो बीवी और करना।
बर्बाद पहले थे ही बर्बाद और करना।
सच है तलाक करना मजहब ही सिखाता है।। आपस……२

चित्तौड़ कह रहा है खिलजी ने क्या किया था।
बेबश हो पद्मिनी ने जौहर यहां किया था।
यों बेबशी में मरना मजहब ही सिखाता है।। आपस……३

जो बेजुबां हैं उनकी गर्दन पै छुरी रखना।
कस्साब बनके अपनी नीयत भी बुरी रखना।
पापों से नहीं डरना मजहब ही सिखाता है।। आपस……४

जो बुतपरस्त हैं उनको काफिर बताते फिरते।
काबे में खुद ही जाकर सिर को झुकाते फिरते।
सच से नकार करना मजहब ही सिखाता है।। आपस……५

रहते हों प्रेम से जो मिलकर दो भाई-भाई।
दोनों में फूट पैदा मजहब ने ही कराई।
झगड़े लड़ाई करना मजहब ही सिखाता है।। आपस……६

करके बलात् कब्जा अपनी जगह बताना।
हक छीन दूसरों के हरदम उन्हें सताना।
इन्साफ से मुकरना मजहब ही सिखाता है।। आपस……७

ईमान कहता है हम सब ही खुदा के बन्दे।
अपनी ही गलतियों से दिल के बने हैं गन्दे।
नफरत भी पैदा करना मजहब ही सिखाता है।। आपस……८

टूटे दिलों को धर्म तो आपस में जोड़ता है।
जो दिल मिले हैं उनको मजहब ही तोड़ता है।
दीवार खड़ी करना मजहब ही सिखाता है।। आपस……९

ईमान धर्म वाले हैं देशभक्त सारे।
एक दूसरे को मिलकर हैं 'छाजूराम' प्यारे।
धोखा गद्दारी करना मजहब ही सिखाता है।। आपस……१०

आर्य पुरोहितों की आवश्यकता

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को आर्यसमाजों मे नियुक्त करने के लिए आर्य पुरोहितों की आवश्यकता है। सेवा-निवृत्त गुरुकुलों के स्नातकों और अध्यापकों को प्राथमिकता दी जायेगी। वैदिकरीति के अनुसार ग्रामों में सस्कार कराने, सत्सगों में यज्ञ तथा प्रवचन करने का अनुभव रखनेवाले महानुभाव अपनी योग्यता, अनुभव, आयु आदि के प्रमाण-पत्रों सहित अपने आवेदन-पत्र निम्न पते पर भेजे। दक्षिणा योग्यता तथा अनुभव और कार्य के आधार पर दी जायेगी।

—वेदव्रत शास्त्री
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

आर्यसमाज शांतिनगर सोनीपत द्वारा श्रद्धांजलि

आर्यसमाज शांतिनगर सोनीपत में साप्ताहिक सत्संग में सर्वश्री सुशीला नासा की धर्मपत्नी के आकस्मिक निधन, आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता प्रधान तीर्थदास छाबड़ा के ससुर छत्रोलदास बत्रा के आकस्मिक निधन एवं मा० रोशनलाल मुटानी के नौजवान सुपुत्र रमेशकुमार को बिजली का करंट लगने से आकस्मिक निधन पर शोक व्यक्त किया गया। परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्माओं की शांति एवं सद्गति तथा परिवार के सदस्यों को दुःख, कष्ट व वियोग में सहनशक्ति प्रदान करने के लिए प्रार्थना की गई।

हरिचन्द स्नेही महामन्त्री

१८५७ में पहला सैनिक विद्रोह अम्बाला में हुआ था

अम्बाला, १६ फरवरी (सुमन) भाजपा के युवा सम्मेलन में युवा नेता श्री नरदेव शर्मा ने रहस्योद्घाटन किया। १८५७ में अंग्रेज सरकार के विरुद्ध भारतीय सैनिकों का पहला विद्रोह मेरठ में नहीं, अम्बाला छावनी में हुआ था। ज्ञात हो कि भारतीय इतिहास में पहले सैनिक विद्रोह का श्रेय मेरठ के सैनिक श्री मगल पांडे को दिया जाता है।

श्री शर्मा ने कहा कि अम्बाला के पुराने गजेटियर में इसका उल्लेख किया गया। उन्होंने कहा कि १८५७ की १० मई को रविवार था और उस दिन सभी अंग्रेज अधिकारी अम्बाला छावनी की चर्च में इकट्ठे थे। तभी अचानक भारतीय सैनिकों ने विद्रोह करके चर्च को चारों ओर से घेर लिया तथा अंग्रेज सरकार के विरुद्ध नारेबाजी की। बाद में अंग्रेजी सेना टुकड़ी ने आकर उन्हें घेर लिया तथा एक समझौते के उपरांत भारतीय सैनिक बैरकों में वापस गये।

(दैनिक वीरप्रताप से साभार)

शराब मानव-समाज की शत्रु है
इससे अवश्य बचें।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 राज० नं० P/RTK 49 फोन ४८१२



ओ३म्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभा मन्त्री

सह-सम्पादक—डा० ...

वर्ष १४, अङ्क १५ ७ मार्च, १९८७ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

आर्य प्रतिनिधि सभा का शताब्दी समारोह क्यों ?

(१८८५ से १९८५ तक का संक्षिप्त विवरण)

प्रस्तुतकर्ता—सुखदेव शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा

गतांक से आगे—

महर्षि का महाबलिदान

एक भारी षड्यन्त्र के कारण ३० अक्तूबर, १८८३ को महर्षि का बलिदान होगया। वे राजस्थान के जोधपुर राज्य में धर्मप्रचारार्थ गये थे। वहीं पर उन्हें दूध में विष दे दिया गया। इस महान् षड्यन्त्र में शामिल थे—वेश्या नन्हीं जान, प० पुष्करनाथ, वकील कृष्णानन्द, राज्य के चक्रांकित तथा राजा के दीवान फैजुल्ला खां, डा० अलीमर्दान खां व जगन्नाथ रसोइया तथा आंतरिक रूप से अंग्रेजी सरकार। २९ सितम्बर, १८८३ को जहर दिया गया। महर्षि को विष दिये जाने की घटना का समाचार, समाचारपत्रों द्वारा सब आर्यों को विदित होगया।

महर्षि महीनाभर मृत्यु से संघर्ष करते रहे। इधर महर्षि को जहर देने का समाचार पंजाब में भी पहुंचा। पंजाबियों को बड़ी चिन्ता हुई। उन्होंने महर्षि की सेवा के लिए तथा उनका समाचार शीघ्र ही जानने के लिए दो व्यक्तियों को अजमेर भेजा। वे थे—पं० गुरुदत्त विद्यार्थी तथा लाहौर के ला० जीवनदास। प० गुरुदत्त विद्यार्थी कालेज के विज्ञान के छात्र थे। वे आर्यसमाज के प्रभाव में तो आचुके थे, किन्तु अभी तक उनके अन्दर नास्तिकता के विचार भरे हुए थे। महर्षि दयानन्द के जीवन के अन्तिम दृश्य ने उनकी काया पलट दी। वे नास्तिक से आस्तिक बन गये। महर्षि के स्वर्ग सिधारने के पश्चात् वे अजमेर से वेदभक्त, ईश्वर विश्वासी, महर्षि दयानन्द के उत्तराधिकारी के रूप में वापस लाहौर लौटे।

महर्षि का स्मारक

१ नवम्बर, १८८३ को महर्षि दयानन्द के शोक में लाहौर में एक शोकसभा हुई। जिसमें गुरुदत्त विद्यार्थी ने महर्षि की अन्तिम दशा का मार्मिक शब्दों में वर्णन किया। सभी लोगों की आंखों में आंसू थे। विरोधी लोग समझते थे कि अब पंजाब में महर्षि का नामलेवा कोई न रहेगा। किन्तु नवम्बर को इस स्मृति सभा में कुछ ही क्षणों में स्थिति कुछ और ही होगई। गुरुदत्त जी ने महर्षि को भावभीनी श्रद्धांजलि देने के बाद प्रस्ताव रखा कि "महर्षि की स्मृति में एंग्लो वैदिक स्कूल और कालेज स्थापित किया जाये"। उपस्थित जनता ने प्रस्ताव को न केवल स्वीकृति ही दी, अपितु उसी समय आठ हजार रुपया भी इकट्ठा करके प्रस्तुत कर दिया। उसी समय शोक का स्थान उत्साह ने, निराशा का स्थान आशा ने ले लिया। परिणामस्वरूप पंजाबभर के आर्यों की यह पहली श्रद्धांजलि दयानन्द एंग्लो वैदिक कालेज के रूप में समर्पित की गई। गुरुदत्त जी का यह विचार था कि अंग्रेजी और अंग्रेजी साहित्य तथा दूसरे विज्ञान आदि विषय इसलिए पढ़ाये जावें कि क्योंकि समय के अनुसार उनकी अत्यन्त आवश्यकता है, किन्तु उनकी दृष्टि में इन सब विषयों का स्थान दूसरे नम्बर पर था। वह इन सब पर वेद और वैदिक साहित्य के प्रचार को प्राथमिकता देना चाहते थे। उनकी इन अपीलों से पंजाब के लोग यह समझने लग गये थे कि दयानन्द कालेज से वेद के प्रचारक और वैदिक संस्कृति के पुनरुद्धारक नवयुवक उत्पन्न होंगे। गुरुदत्त जी के इस महान् कार्य में हाथ बटाया एक नवयुवक ने जो उन दिनों रोहतक से आकर हिसार में वकालत करता था उसका नाम था ला० लाजपतराय। गुरुदत्त जी के भाषणों से जहां आर्यों में श्रद्धा पैदा होती थी वहां लाला जी के भाषण लोगों में उत्साह और जोश भर देते थे। श्रद्धा और उत्साह के इस मेल का यह प्रभाव हुआ कि लाखों रुपया इकट्ठा होगया। १८८५ में गुरुदत्त जी के साथ एक और आर्यसमाजी युवक ने बी०ए० पास की थी वह था ला० हंसराज। ला० हंसराज पर इस आंदोलन का यह प्रभाव पड़ा कि उन्होंने स्नातक होते ही दयानन्द कालेज को निःशुल्क सेवा के लिए अपना जीवनदान दे दिया। पहली जून १८८६ को लाहौर में दयानन्द एंग्लो वैदिक स्कूल की स्थापना करदी गई। दयानन्द कालेज की कमेटी की रजिस्ट्री हुई, जिसके सदस्यों में गुरुदत्त जी विद्यार्थी के अतिरिक्त ला० लालचन्द एम०ए०, ला० साईंदास राय मूलराज, मदनसिंह, गंगाराम, ला० लाजपतराय जी आदि प्रमुख आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता थे।

डी० ए० वी० आंदोलन पर एक दृष्टि

इसमें कोई सन्देह का स्थान नहीं है कि डी० ए० वी० कालेज की स्थापना से उस समय शिक्षा का प्रचार एवं विस्तार हुआ, उस समय सरकार के मुकाबले पर शिक्षा का विस्तार कार्य आर्यसमाज ने बहुत आगे बढाया। सारे पंजाब में विद्यालयों का जाल बिछा दिया। प्राचीन एवं अर्वाचीन शिक्षा को पाकर अनेकों स्नातक डी० ए० वी० संस्थाओं से निकले, जिन्होंने देश विदेश में आर्यसमाज का नाम ऊंचा किया। अनेकों सरकारी ऊंचे पदों पर पहुँचे। अनेकों राजनीतिक रूप से मुख्य मन्त्री, राज्यपाल आदि भी बने। विदेशों में राजदूत बने, स्वदेश में अनेकों रियासतों के दीवान बनें। अनेक हाईकोर्ट, सुप्रीमकोर्ट के जज बने, अनेकों आई० ए० एस० तथा आई० पी० एस० बनकर सरकारी नौकरियों में उच्चपदों पर नियुक्त हुए।

इतना सब कुछ होने पर भी आर्यसमाज को कोई विशेष लाभ नहीं हुआ। क्योंकि महर्षि दयानन्द की शिक्षानीति के अनुसार शिक्षा-दीक्षा न हो सकी। अफसर नौकर बनकर निकलते रहे। वेद का पठन-पाठन, भारतीय संस्कृति का अनुकरण न करके बाबू जी ही बनते रहे। महर्षि दयानन्द ने जो कहा था—"देश को मेरे जैसे हजारों दयानन्दों की आवश्यकता पड़ेगी" इसके अनुसार एक भी इस प्रकार का वेद का विद्वान् तैयार न हो सका जो वेदों का प्रचार कर सके। (क्रमशः)

विवाह मन का बन्धन या सौदेबाजी ?

—निशा व्यास

चमचमाते बर्तन, साड़ियों का ढेर, टी. वी. फ्रिज, आभूषण व अनगिनत छोटी-मोटी चीजों की प्रदर्शनी आज के वैवाहिक समारोहों की एक खास विशेषता बनती जारही है। आज से कुछ दशक पहले भी लोग विवाह के समय लड़की को दहेज देते थे, लेकिन तब उसका प्रदर्शन नहीं किया जाता था। आज तो सुबह लडकी की विदाई होनी है और रात को हर पेक चीज खोलकर बाकायदा प्रदर्शित की जाती है। मुझे तो कई बार देख-देखकर ही हैरानी होती है कि प्रेस, लेमनसेट, टोसेट जैसी चीजें बार-बार खोलकर फिर ठीक से रखने में ही कितना समय और ऊर्जा खर्च होती है और फिर इसका औचित्य भी क्या है ?

हमारे समाज में विवाह एक पवित्र बन्धन माना जाता रहा है। मंगल गीत, उल्लास, उत्साह के साथ प्रियजनों की उपस्थिति में यह कार्य सम्पन्न होता है। बेटी को अच्छा घर, वर मिले और चांद-सी बहू घर में आये, यह हर परिवार की कामना होती है। जिस कार्य से इतनी मंगल भावनायें जुड़ी रहती हैं, वही विवाह आज प्रदर्शन और सौदेबाजी बनता जा रहा है, क्या यह सोचने समझने की बात नहीं ?

आज से कुछ दशकों पहले देश की कुछ ही जातियों में दहेज-प्रथा प्रचलित थी। लोग दहेज मांगने में हिचकिचाते थे। आशा के अनुरूप दहेज नहीं मिलने पर संतोष कर लेते थे। पर आज लगभग सभी जातियां व वर्ग दहेज मांगते हैं और सीना खोलकर मांगते हैं। कम दहेज मिलने पर लड़की को सताया जाता है। मानसिक उत्पीड़न के साथ शारीरिक यातनायें भी दी जाती है और इसकी अन्तिम परिणति लड़की की हत्या या आत्म-हत्या में होती है। यदि लडकी शारीरिक रूप से मृत्यु को प्राप्त नहीं होती तो उसका अस्तित्व तो खत्म हो ही जाता है।

अक्सर दहेज को लड़की के प्रति प्रेम से परिभाषित किया जाता है। हमें अपनी लड़की से प्रेम है, इसलिए हम उसे फलां-फलां चीजे दे रहे हैं। यह प्रेम भी बड़ा अजीब होता है। लड़की ससुराल में दुःखी है, बीमार है, उसके साथ मारपीट हो रही है तब यह प्रेम सोया रहता है और जब लड़की मर जाती है तब मां-बाप हाय-हाय करते हैं, क्यों पहले से ही उनकी आंखे नहीं खुलती ? क्यों नहीं उनकी समझ में आता कि उनकी लड़की ऐसी स्थिति में मर भी सकती है ? बहुओं को जलाने या सताने की जो घटनायें सामने आरही हैं, उनमें अधिकतर प्रकरण ऐसे हैं, जिनमें शादी २५ हजार से एक लाख रुपये खर्च कर की गई। वैसे भी हमारे यहां लगभग सभी परिवार लड़की की शादी में अपनी हैसियत से अधिक ही खर्च करते हैं। लेकिन यह जो खर्च होता है, उससे लड़की को प्रत्यक्ष रूप से कोई फायदा नहीं होता। उसके हिस्से में तो चन्द जरीवाली रेशमी साड़ियां और गहने ही आते हैं, जिसे वह सास की मर्जी से पहन पाती है।

इधर लडकी की शादी से अधिकतर परिवार कर्ज में डूब जाते हैं। इसका असर उनके रोज के जीवन और छोटे भाई बहिनों की पढ़ाई पर पड़ता है। अचानक पढ़ाई छूटने या खाने-पहनने में कमी आने के कारण छोटे भाई-बहनों में बड़ी बहन के प्रति ईर्ष्या व विरक्ति की भावना जाग पड़ती है। मां-बाप भी चिड़चिड़े हो जाते हैं और एक हसते-खेलते परिवार में उदासी और अभाव घुस आते हैं। ऐसे में अगर लड़की को ससुराल में कोई कष्ट भी हो तो मां-बाप आंख मूंद लेते हैं। हमने तो अपना फर्ज पूरा किया, अब आगे उसका भाग्य जाने। यह मनोवृत्ति बड़ी घातक होती है, इससे न केवल एक परिवार का नुकसान होता है, सारे समाज में इसका असर होता है।

दहेज-प्रथा समाप्त कैसे होगी ?

दहेज के दुष्परिणामों को देखते हुए थोड़ा भी समझदार व्यक्ति यह जरूर चाहेगा कि दहेज-प्रथा पूरी तरह समाप्त हो जाये। लेकिन यह रातों-रात खत्म होनेवाली समस्या नहीं है। इसकी जड़ें समाज में गहरे तक फैल चुकी हैं और समाज में बढ़ते भौतिकवाद, मूल्यों के विघटन ने इसे घने वृक्ष के रूप में बदल दिया है। एक ओर मंहगाई बढ़ रही है, दूसरी ओर टी. वी. तरह-तरह के स्कूटरों, कपड़ों और अन्य चीजों से बाजार भरे हुए हैं। एक मध्यमवर्गीय परिवार का युवक जिन चीजों की ख्याल में ही कल्पना कर सकता है या जो चीजें उसे विज्ञापनों में लुभाती हैं, उन्हें आसानी से पाने का उसे एक ही रास्ता दिखाई देता है और वह है दहेज। यही कारण है कि अक्सर दहेज के प्रश्न पर युवक चुप्पी लगा लेते हैं या उसे मां-बाप पर छोड़ देते हैं।

यदि हम सचमुच दहेज-प्रथा खत्म करना चाहते हैं तो उसकी शुरूआत हमें अपने घर से करनी होगी। सबसे पहले जरूरी है लड़के-लड़की की परवरिश के बीच भेद खत्म करने की। जब तक हम यह नहीं करते, तब तक दूसरी सभी बड़ी-बड़ी बातें व्यर्थ हैं। हमें लडकी को शिक्षित और आत्मनिर्भर ही नहीं बनाना होगा, उसे स्वतन्त्र व्यक्ति के रूप में जीने का अधिकार भी देना होगा। दूसरी बात शादी के बाद भी लड़की के मां-बाप का घर उसका अपना घर भी होना चाहिए। मां-बाप उसे यह विश्वास दिलायें कि शादी के बाद भी वह इस घर में आ सकती है और रह सकती है।

शादी में २५-५० हजार खर्च करने की बजाय यह राशि लडकी के नाम बंक में जमा करा देनी चाहिए और ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि लड़केवाले लड़की पर उक्त राशि के लिये दबाव नहीं डाल सकें।

दरअसल दहेज-प्रथा के पीछे कितने ही प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष कारण हैं। कही लड़कियां भी चाहती हैं कि उन्हें अच्छा दहेज मिले। लेकिन इसके पीछे खास कारण है पैतृक सम्पत्ति में लड़कियों का कोई हिस्सा न मानना। जबकि कानून द्वारा उन्हें यह अधिकार प्राप्त है। मगर आवश्यकता इस बात की है कि सामाजिकस्तर पर इस कानूनी अधिकार को स्वीकार किया जाये। सीधे-सीधे कुछ कहने की बजाय हमें मामले की तह तक जाना होगा। प्रचलित धारणाओं के हर पक्ष को समझना होगा तभी बिजली की चकाचौंध से सजेधजे पांडाल से विदा हुई दुल्हन को हम आग की लपटों से बचा सकेंगे। (युगवार्ता से साभार)

हरयाणा में पूर्ण शराबबन्दी लागू करने के लिये जिलाधीश हिसार को ज्ञापन दिया गया

२१ फरवरी को जिला हिसार के आर्यसमाजों के कार्यकर्त्ताओं ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपदेशक व शराबबन्दी समिति हिसार के प्रधान श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी के नेतृत्व में जिलाधीश हिसार को ज्ञापन देकर हरयाणा में पूर्ण शराबबन्दी लागू करने की मांग की। इस शिष्टमण्डल में सर्वश्री सूबेदार हरचन्द आर्य, हवलदार मोहनलाल आर्य (बालावास), रामसिंह आर्य (धमाना), भगत रामेश्वरदास (लाडवा) संग्रामसिंह आर्य (दड़ोली), धर्मवीर शर्मा (शाहपुर), दिवानसिंह आर्य व माईलाल आर्य (बालसमन्द), सत्यकाम आर्य (हिसार), बहन राजकुमारी आर्या (हिसार) आदि प्रमुख सज्जन सम्मिलित थे।

जिलाधीश महोदय ने यह विश्वास दिलाया कि ज्ञापन को उचित कार्यवाही के लिये हरयाणा सरकार को भेज दिया जायेगा।

—इन्द्रसिंह आर्य मन्त्री आर्यसमाज कंवारी

शराब मानव-समाज की शत्रु है

इससे अवश्य बचें।

सम्पादकीय

पंजाब समझौता और बरनाला की बेतुकी दलील

स. सुरजीतसिंह बरनाला ने पिछले वर्ष अपनी सरकार को पंथिक सरकार कहा और अकाल तख्त को सर्वोपरि मानकर उसके मुख्यग्रथियों के आदेश पर 'पश्चात्ताप' रूप एक सप्ताह तक जूते साफ किये। अकाल तख्त और मुख्यग्रंथियों का दिमाग उन्होंने स्वय खराब किया और वह आज उनको भुगतना पड़ रहा है। अब लोंगोवाल में उन्होंने बड़ा सम्मेलन बुलाकर मुख्यग्रथियो को चुनौती दी है और देश की एकता तथा सविधान को रक्षा के लिये उग्रवादियों और उनके कब्जे मे आये मुख्यग्रथियों से दो-दो हाथ करने का निश्चय किया है। यदि यह केवल मुख्य मन्त्री बने रहने के लिये किया है और देश की एकता और सविधान की दुहाई, भारत सरकार तथा अन्य राजनीतिक दलों का सहारा लेने के लिये ही वक्ती तौर पर पैंतरे के रूप में दी गई है, तब तो पंजाब का मामला बहुत दिनों तक भारत के गले में अटका रहेगा। यदि साम्प्रदायिक भावनाओं से ऊपर उठकर एक राष्ट्र-सेवी के रूप में उग्रवादियों तथा अलगाववादी तत्त्वों को कुचलने का संकल्प लेकर आगे बढ़ने का निर्णय लिया है तो उग्रवाद और अलगाववाद शीघ्र दम तोड़ जायेगा।

परन्तु जिन शब्दों में वे पजाब समझौते को लागू न करने के लिये भारत सरकार को दोषो ठहराये जारहे हैं और विरोधीदलों का समर्थन यही कहकर लेना चाह रह है तथा जोधपुर जेल मे बन्द नजरबन्दो और फौजी भगोड़ो की रिहाई और पुनर्वास को बात करते चल जारहे हैं और चण्डीगढ़ के स्थानातरण की बात भी आयोगो को सिफारिशो को ताक पर रखकर मनवा लेना चाहते हैं। उससे तो लगता है कि वे वही के वही खड़े हैं और आतकवादियो के दबाव मे पथ से निष्कासन रूपी अपने बलिदान की कीमत चुका लेना चाहते हैं। अकालियों की फसलों से भागते और नित नये सौदे करने की प्रवृत्ति उनके अन्दर कूट-कूटकर भरी हुई है।

चण्डीगढ़ के बदले में हरयाणा को इलाके देने के बारे में जो बेतुकी बात उन्होने कही है, वह इसका ज्वलन्त प्रमाण है। छावनी के लिये दी गई जमीन, सतलुज यमुना लिक नहर में दी गई जमीन भी चण्डीगढ़ के बदले में दी गई बताते हैं। पजाब में तो कई छावनियां हैं, हरयाणा, राजस्थान आदि को जानेवाली और नहरे भो हैं, रेल की लाइनें भी बनी हुई हैं। देश के किसी भी काम के लिये और पजाब के विकास के लिये भी जो जमीन पूरे से भी अधिक मुआवजा देकर पजाब से ली गई है, वह सब चण्डीगढ़ के बदले में दी हुई मानी जाये। बरनाला जो बहुत बात करते हैं, समझौते पर उसकी भाषा और भावना के अनुकूल अमल करने की। फिर पढे अपने द्वारा ही लिखे गये फंसले को और वे पायेंगे कि चण्डीगढ़ के बदले में फाजिल्का अबोहर का इलाका देना पड़ेगा।

श्री बरनाला स्वय पजाब समझौते के अमल में एक बड़ी रुकावट रहे हैं, उन्होंने न तो किसी आयोग की बात मानी और न लिक नहर पर नेकनीयती से काम किया। दोषी वे स्वयं हैं और दोषारोपण करते हैं भारत सरकार पर। यह सब कुछ होते हुए भी जब वे पजाब समझौते का राग अलापते हैं और चण्डीगढ़ के बदले में हरयाणा को दिये जाने वाले क्षेत्र के बारे में बेतुकी बातें कहते रहते हैं, तब वे वास्तव में जहां एक तरफ आतंकवादियों की गतिविधियों को परोक्ष रूप से उचित ठहराने से नहीं चूकते, वहा उनके कारनामों के दबाव में अपनी अनुचित बात मनवा लेना चाहते हैं। इसीलिये यह भरोसा नहीं जम पारहा कि वे आतंकवाद और अलगाववाद को खत्म करना चाहते हैं। वे उसे जीवित रखकर उसके दबाव में अपनी अनुचित बातें मनवाकर अपनी साख जमाना चाहते हैं ताकि वे पथिक सरकार अपने नेतृत्व में चला सकें। भावनाओ में बहकर भारत सरकार और विरोधीदल उसको अपना सब प्रकार का समर्थन तो दे रहे हैं, परन्तु जिस उद्देश्य की पूर्ति के लिये वे ऐसा कर रहे हैं, श्री बरनाला का उसमें विश्वास नहीं है, वे तो केवल उसका मुखोटा लगाकर संकट से उबरना चाहते हैं। ऐसी हालत में बरनाला को बनाये रखना देश को मंहगा पड़ सकता है। बरनाला की मदद उसका हित साधने के लिये नहीं, देश का हित साधने के लिये होनी चाहिये। यदि वह नही सधता तो उसकी समय रहते छुट्टी करनी चाहिये और भारत सरकार और विरोधी दलों को मिलकर देश के हित में मजबूत कदम उठाने चाहिये, चाहे उन कदमो में बरनाला को हटाना भी शामिल हो।

—प्रो० शेरसिह अध्यक्ष हरयाणा रक्षावाहिनी

हिसार में शराबबन्दी हेतु प्रदर्शन

जिला हिसार में २७ फरवरी को शराब के ठेकों की नीलामी के विरोध में एक विशाल प्रदर्शन लगभग २०-२५ गांवों के सैंकड़ों आर्य नर-नारी एवं युवकों ने स्थानीय लघु सचिवालय के बाहर लगभग ५ घण्टे तक विरोध प्रदर्शन जारी रखा। ग्रामीण क्षेत्रों से ट्रेक्टर लेकर काफी सख्या में नर-नारी ओ३म् के झण्डे व शराब हटाओ देश बचाओ आदि बैनर लेकर उत्साह से नारे लगाते हुए पहुंचे। महिलाओं द्वारा इस गन्दी प्रथा व शराब बिक्री को भ्रष्ट सरकारी नीति के खिलाफ स्यापा भी किया गया तथा बाद में प्रदर्शनकारियों द्वारा सभा का आयोजन किया गया। जिसमें सर्वश्री अत्तरसिह आर्य, दिवानसिह आर्य (बालसमन्द), स्वामी धर्मानन्द (पानीपत), प० प्रभुदयाल प्रभाकर, संग्रामसिह आर्य (दडौली), पं० भरतलाल शर्मा (हांसी), नेकीराम प्रधान कल्याण युवा सगठन (वाडाहेडी), डी० वाई० एफ० आई० के प्रधान व मन्त्री रमेशचन्द्र, मुनि जी आर्य गुरुकुल आर्यनगर, स्वामी सन्तोषानन्द (राज०), बहन चन्द्रकला (हिसार), श्रीमती लज्जावन्ती आर्य (बालावास), माया देवी (हिसार) आदि अनेक वक्ताओं ने सभा को सम्बोधित किया। इसके इलावा सर्वश्री भगत रामेश्वरदास (लाडवा), सुबेसिह आर्य (मुकलान), बहन करुणा शास्त्री (सातरोड कलां), राजकुमार, देवन्द्र शर्मा, रामसिह, भूपसिह, सुनीलदत्त, जगदीश, रामकिशन, माईलाल आर्य, श्रीकिशन आर्य (बालसमन्द), चतरसिह, हरचन्द आर्य, मोहनलाल आर्य, निहालसिह आर्य, वीरसिह सरपच (बालावास), ज्ञानीराम सरपच, दरियासिह, हरिसिह आर्य, बिजेराम आर्य, कोरसिह (कंवारी) व अनेक महिलाओं ने इस प्रदर्शन में विशेष सहयोग दिया। महाशय नौरंगलाल (राज.) सांवतराम (बिराण) की भजनमण्डली के शिक्षाप्रद भजन हुए।

इसके अतिरिक्त क्रांतिकारी के नेतृत्व में ५ सदस्यों का शिष्टमण्डल डिप्टी एक्साईज टैक्सेशन कमिश्नर से मिला एव अनेक हस्ताक्षरित एक लिखित ज्ञापन शराबबन्दी हेतु दिया, जिसमें रेजूलेशन भेजे हुए गांव में ठेके की नीलामी न करने की माग को दोहराया गया। ये जिला हिसार में प्रथम बार है जो इस प्रकार का प्रदर्शन जिलास्तर पर क्रांतिकारी जी के प्रयास मे किया गया जो प्रभावकारी रहा।

—राजकुमार प्रधान ग्राम सुधार मण्डल, बालसमन्द

वैदिक आश्रम गूगोढ का वार्षिकोत्सव

१५ मार्च, १९८७ रविवार को स्वामी सेतानाथ जी की अध्यक्षता में मनाया जायेगा। प्रातः ८ से ११ बजे तक यज्ञ पर यज्ञोपवीत दिये जायेंगे। मनोरंजन प्रोग्राम तथा कबड्डी आदि खेल भी होंगे।

—स्वामी व्रतानन्द

आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापना शताब्दी समारोह की तैयारी—

बल्लबगढ़, हांसी, हिसार तथा झज्जर में आर्य कार्यकर्त्ताओं की बैठक सम्पन्न

(कार्यालय निज संवाददाता द्वारा)

आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापना शताब्दी समारोह जो कि मई ८७ को रोहतक में आयोजित होगा की हरयाणा के कोने-कोने में तैयारी पूरे उत्साह के वातावरण में प्रारम्भ हो गई है।

१. आर्यसमाज सेवासदन बल्लबगढ़ जि. फरीदाबाद

सभा के उपप्रधान श्री लछमनदास आर्य के संयोजन में २२ फरवरी को २ बजे जि फरीदाबाद आर्यसमाज के अधिकारियों तथा कार्यकर्त्ताओं की बैठक सम्पन्न हुई। इस अवसर पर सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह जी, सभामन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री, मा० बद्रीप्रसाद आर्य सभा कोषाध्यक्ष तथा शताब्दी समारोह के संयोजक श्री रघुवीरसिंह ने आर्य कार्यकर्त्ताओं को शताब्दी समारोह को सफल करने के लिए तन, मन, धन तथा जन से सहयोग करने का आह्वान किया और शताब्दी समारोह के कार्यक्रम पर प्रकाश डालते हुए बताया कि समारोह पर प्रमुख वैदिक विद्वानों के विद्वत्तापूर्ण लेख स्मारिका में प्रकाशित होंगे तथा वेद सम्मेलन में उनको साधारण भाषा में व्याख्या करेंगे। आर्यवीर तथा स्त्री सम्मेलन आदि करके सामाजिक सुधार के कार्यों का विस्तार किया जायेगा।

सभा के पूर्व कोषाध्यक्ष श्री कन्हैयालाल महता ने आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं को परामर्श दिया कि वे अपने-अपने आर्यसमाज को ईमानदारी से अपनी आय का शतांश (१००वां भाग) देवें। इस प्रकार आर्यसमाजों के कोष में धन की कमी नहीं रहेगी और सभा को भी अधिक से अधिक धन दिया जा सकता है। हमें छोटे-छोटे संघटनों की अपेक्षा अपनी प्रांतीय सभा को तन, मन तथा धन से पूरा सहयोग देना चाहिए। सभा के अन्तरंग सदस्य श्री राजेन्द्रसिंह पूर्व विधायक ने सभा अधिकारियों को विश्वास दिलाया कि जिला फरीदाबाद की ओर से शताब्दी समारोह में अधिक से अधिक धन तथा जन के साथ पहुँचेंगे। श्री लछमनदास आर्य ने सभा अधिकारियों का स्वागत करते हुए कहा कि हम आर्यसमाज के रचनात्मक कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेंगे। इसी प्रकार आर्यसमाज बल्लबगढ के पुरोहित, आर्यसमाज मेन बाजार बल्लबगढ के मन्त्री श्री सुरेशकुमार बड़ाणा एडवोकेट, आर्यसमाज जवाहर नगर, आर्यसमाज नई कालोनी, आर्यसमाज पलवल शहर आदि के अधिकारियों ने भी शताब्दी समारोह को सफल करने में पूरा योगदान करने का वचन दिया। श्री चन्द्रप्रकाश जी सत्यार्थी ने सभा के साप्ताहिक-पत्र सर्वहितकारी के १०० ग्राहक बनाने का संकल्प किया।

बैठक के अन्त में जिला फरीदाबाद में शताब्दी समारोह की तैयारी के लिए उपसमिति का गठन किया गया। इसमें श्री राजेन्द्रसिंह, श्री लछमनदास जी, श्री कन्हैयालाल महता तथा जिला फरीदाबाद के आर्यसमाजों के अधिकारी एवं सभा के उपदेशक पं० हरिश्चन्द्र शास्त्री आदि को मनोनीत किया गया।

२. आर्यसमाज हांसी जि० हिसार

सभा शताब्दी की तैयारी के लिए आर्यसमाज हांसी जिला हिसार में २५ फरवरी को ११ बजे बैठक हुई। सभा के उपदेशक पं० सुखदेव जी शास्त्री ने शताब्दी समारोह के कार्यक्रम पर प्रकाश डाला तथा आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना का उल्लेख करते हुए बताया कि १८८६ में आर्य प्रादेशिक तथा प्रतिनिधि सभा पंजाब एक ही थी। अतः यह समारोह प्रादेशिक सभा के सहयोग से मनाया जायेगा। डा. रणजीतसिंह जी पूर्व सभामन्त्री ने आर्यसमाज हांसी के इतिहास की चर्चा करते हुए कहा कि यहां प्रचार केन्द्र बनाकर महात्मा हंसराज, भाई परमानन्द तथा लाला लाजपतराय ने आर्यसमाज की स्थापना की थी। ग्राम मोठ में हरिजनों को कुयें पर चढ़ाने के लिये महात्मा भक्त फूलसिंह ने आमरण अनशन किया था।

सभामन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री ने आर्यसमाज हांसी के अधिकारियों से निवेदन किया कि वे अपने-अपने आर्यसमाज तथा मुख्य आर्यनेताओं का संक्षिप्त इतिहास स्मारिका में प्रकाशनार्थ भेजें। सभा के कोषाध्यक्ष मा० बद्रीप्रसाद आर्य तथा शताब्दी संयोजक श्री रघुवीरसिंह ने भी तन, मन तथा धन से सहयोग करने की अपील की। आर्यसमाज हांसी के प्रधान सर्वश्री जयकिशनदास, रणसिंह मुलतानपुर, बलवन्तसिंह सिसर, अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी, सन्तुराम सिसर आदि ने समारोह को सफल करने के लिए दिन-रात कार्य करने का आश्वासन दिया।

३. आर्यसमाज नागौरी गेट हिसार

२५ फरवरी को दो दोपहर बाद ३ बजे आर्यसमाज नागोरी गेट हिसार में बैठक सम्पन्न हुई। सभा के मन्त्री सर्वश्री वेदव्रत शास्त्री, पूर्वमन्त्री डा० रणजीतसिंह, उपमन्त्री प्रो० सत्यवीर विद्यालंकार, मा० बद्रीप्रसाद आर्य कोषाध्यक्ष, रघुवीरसिंह संयोजक समारोह ने समारोह को सफल करने की अपील करते हुए कार्यक्रम पर प्रकाश डाला।

सर्वश्री दीवानसिंह बालसमन्द, मानसिंह बुढाना, दलवीरसिंह सातरोड कलां, श्रीमती करुणा शास्त्री, बदलुराम मुकलान, सीताराम आर्य हिसार, प्रतापसिंह शास्त्री मतलोढा, पं० अत्तरसिंह आर्य सभा उपदेशक आदि सभा की शताब्दी को सफल करने के लिए कार्य में जुट जाने का आश्वासन दिया। आर्यसमाज हिसार के मन्त्री श्री राजकुमार मलहोत्रा एडवोकेट ने सभा अधिकारियों का हिसार पधारने का स्वागत करते हुए विश्वास दिलाया कि हिसार की ओर से पूरा सहयोग दिया जायेगा।

४. गुरुकुल झज्जर में आर्य कार्यकर्त्ताओं की बैठक

आर्यजगत् के वयोवृद्ध संन्यासी पूज्य श्री स्वामी सर्वानन्द जी अध्यक्ष वैदिक यतिमण्डल की अध्यक्षता में १ मार्च को दोपहर पश्चात् ३ बजे गुरुकुल में नवनिर्मित बलिदान भवन में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर सर्वश्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह, सभा मन्त्री वेदव्रत शास्त्री, सभा उपमन्त्री डा. सुदर्शनदेव आचार्य, सभा कोषाध्यक्ष रघुवीरसिंह शास्त्री, सभा के पूर्व मन्त्री डा रणजीतसिंह, प्रो. सत्यवीर शास्त्री आदि के अतिरिक्त सर्वश्री चौ० प्रियव्रत, डा योगानन्द, सभा के उपदेशक प सुखदेव शास्त्री, धर्मपाल शास्त्री च. दादरी जि. भिवानी, रणवीरसिंह शास्त्री रोहतक, सूरजमल आर्य सोनीपत, सेठ रामकृष्ण आर्य बहादुरगढ मण्डी पूर्व सभा कोषाध्यक्ष आदि आर्यनेता उपस्थित थे। बैठक में जिला रोहतक, सोनीपत, फरीदाबाद, गुड़गांव, महेन्द्रगढ तथा भिवानी के आर्यसमाजों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

सभाप्रधान प्रो शेरसिंह ने श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज को सभा की गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण बताया। श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने सभा के अधिकारियों तथा अन्य जिलों से पधारे हुए आर्यसमाज के प्रतिनिधियों को निर्देश देते हुए कहा कि आज प्रत्येक ग्राम तथा नगर में आर्यसमाज के प्रचार की मांग है, परन्तु प्रभावशाली तथा आदर्श चरित्रवाले उपदेशकों की कमी है। विचार विमर्श के पश्चात् कार्यकर्त्ताओं ने निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किये—

१. हरयाणा के प्रत्येक नगर तथा ग्राम में आर्यसमाज की स्थापना की जाये। २. आर्यसमाजी अपनी सन्तान को गुरुकुलों तथा आर्य विद्यालयों में पढ़ावें। ३. उपदेशक तथा भजनोपदेशकों को वैदिक सिद्धांतों का प्रशिक्षण देने के लिए उपदेशक विद्यालय की स्थापना की जाये। ४. प्रत्येक आर्यसमाज मन्दिर पर ओ३म् ध्वज अवश्य लगाया जाये। ५. आर्यसमाज के सभासद् ईमानदारी से अपनी आय का शतांश अवश्य देवें। ६. आर्यसमाज के नियमपूर्वक साप्ताहिक अथवा पाक्षिक सत्संग किये जायें। ७ उपदेशक भजनोपदेशक प्रचारकार्य के साथ वैदिक साहित्य भी रखें। ८. विद्यालय के अवकाश के समय शिक्षण शिविरों का आयोजन अवश्य करें। १०. महिलाओं में आर्यसमाज का प्रचार करने के लिए सभा में प्रभावशाली महिला उपदेशकों की नियुक्ति की जाये।

ईश्वर का सृष्टि बनाने का उद्देश्य


महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

परमपिता परमात्मा ने सब जीवों के सुख भोगने के लिए सृष्टि का निर्माण किया है। जीवनमुक्त और मुक्त जीव तो चक्रवर्ती राजा से भी करोड़ों, अरबों गुणा अधिक आनन्द भोगते हैं, क्योंकि जीवन मुक्त व मुक्त जीवों का सीधा सम्बन्ध परमात्मा से होता है। इसीलिए महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज ने स्पष्ट लिखा है कि जो घड़ीभर भी प्रभु की स्तुति, प्रार्थना, उपासना करता है वह पहाड़ के समान दुःख आने पर भी राई के तुल्य समझता है उसकी उन्नति निरंतर होती है और वह प्रभु के आनन्द में सदैव मग्न रहता है। परमेश्वर का स्वरूप=सच्चिदानन्द=सत्+चित्+आनन्द।

अर्थात् परमात्मा क्रियावान् है और अनन्त आनन्द का भण्डार है। वह सत्य है।

परमेश्वर की शक्ति=सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान्

परमेश्वर के गुण=दयालु (दया का भण्डार) व न्यायकारी। ईश्वर की स्तुति का अर्थ ईश्वर के गुण, दया और न्याय का चिन्तन करके अपने जीवन में अपनाना। इससे प्रभु से प्रीति बढ़ती है। यदि हम प्रभु के गुणों को जीवन में नहीं अपनाते तो स्तुति करना व्यर्थ है और समय को नष्ट करना है।

स्तुति के पश्चात् प्रार्थना इसलिए की जाती है, जिससे परमात्मा की ओर से उत्साह और सहाय मिलता है। तब अपने आप उपासना बन जाती है अर्थात ज्ञान से प्रभु से सम्बन्ध हो जाता है जिसका लाभ प्रत्यक्ष आनन्द की प्राप्ति है। जिसके पास जो वस्तु हो वह उसी से मिलती है। आनन्द का भण्डार परमपिता परमात्मा है और आनन्द उसी की उपासना से मिल सकता है जो कि ब्रह्मा से लेकर दयानन्द पर्यन्त सब ऋषि महर्षियों ने पाया है और आदि सृष्टि से जैमिनि पर्यन्त सब ऋषि महर्षि इसमें एकमत हैं। जिस वस्तु का जो गुण, कर्म, स्वभाव है वह नष्ट नहीं हो सकता और सारी सृष्टि के जीव मिलकर भी प्रभु की न्याय व्यवस्था को नहीं तोड़ सकते। न ही उसके नियमों को बदल सकते हैं। यह ऋषियों को पूर्ण निश्चय होता है। इसीलिए ऋषि दयानन्द (१) धन के लोभ से (२) अवतार घोषित जैसे पद के लोभ से (३) मृत्यु के भय से भी विचलित नहीं हुए और गुरुदत्त उनको जबकि शीशा के रूप में जो विष दिया गया था और वह कोढ के रूप में निकल रहा था उस अवस्था में भी अत्यन्त आनन्द में देखकर आस्तिक बन गये। महर्षि जी ने ईश्वर जीव प्रकृति का सत्य स्वरूप हमें बताया था और सत्य के स्थान पर असत्य के प्रचार को रोकने की चेष्टा की थी। उनमें से कुछ सत्य सिद्धांतों को यदि हम समझकर अपने जीवन में अपनालें तो हम सुखी बन सकते हैं और समस्त भूमि को स्वर्ग बनाया जा सकता है। जैसे—(१) सबका ईश्वर एक है और वह सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, सर्वव्यापक, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार और आनन्द का भण्डार है।

(२) मानवजाति एक है और मानव का धर्म मानवता है। मानवता क्या है? जैसा व्यवहार हम अपने साथ चाहते हैं वैसा व्यवहार दूसरों के साथ करें। यह मानवता सत्य और न्याय का आचरण है।

(३) न्याय का नाम धर्म है। (४) और राजा का धर्म न्याय है। (५) सबसे बड़ा धर्मराज परमात्मा है। उसके नियमों के अनुसार जो न्याय की व्यवस्था करता है वह राजा कहलाता है। इसके विपरीत व्यवस्था करनेवाला चोर, लुटेरा और डाकू है। उसकी व्यवस्था में सुख के स्थान पर दुःख होगा और उस व्यवस्था का सर्वथा विरोध करना चाहिए।

(६) गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर कार्य का विभाजन है जिसे वर्णव्यवस्था कहते हैं। यदि हम इन सिद्धांतों को जीवन में अपनाकर चलें तो हम अत्यन्त सुखी हो सकते हैं और सुख के लिए ही हम चेष्टा कर रहे हैं। अब हम दुःखी क्यों हैं? ईश्वर के नियमों के विपरीत आचरण करके और इस सबका कारण है नास्तिक पूंजीपति और राजनैतिक शक्तियों ने हमारे देश का तमाम संविधान ईश्वर के नियमों के विपरीत बना दिया है।

जैसे कि—(१) ईश्वर के स्थान पर जीव और प्रकृति के अंशों को ईश्वर मानने की छूट।

(२) मानवजाति को अनेक बनावटी जातियां मानने की छूट। (३) न्याय के स्थान पर अनेक मतों को धर्म मानने की छूट। जिसका परिणाम इन बनावटी मान्यताओं के कारण सर्वत्र दुःख भोगा जा रहा है। चारों तरफ अशांति है, क्योंकि ईश्वर नियम तोड़े नहीं जा सकते।

जैसे कि—सब सृष्टि के जीव मिलकर भी सूर्य के निकलने को नहीं रोक सकते, न ही सूर्य के प्रकाश को समाप्त कर सकते हैं। न ही मानव जाति में जो नियम बनाये हैं उनको बदल सकते हैं। इसीलिए सब मनुष्य आंख से देखते, कान से सुनते और मुख से भोजन करते हैं तथा एक जैसी बीमारियों में सब मनुष्यों का एक जैसा इलाज होता है। न मनुष्य जाति बदल कर गाय अथवा बकरी में परिवर्तित किया जा सकता है, न धर्म अर्थात् न्याय को हटाकर व्यवस्था की जा सकती है, क्योंकि यह ईश्वरीय नियम है। इसीलिए सारे संसार के कानून और न्यायालय न्याय की दुहाई देते हैं।

हां प्रभु की दो हुई शक्ति के अनुसार ही यदि हम—

१) आंख बन्द करके चलेंगे तो दुःख भोगेंगे।

२) यदि हम मनुष्य को हिन्दू, मुस्लिम, सिख आदि अनेक बनावटी मतों में विभाजित करके चलेंगे तो मानव, मानव की हत्या करेगा, जिस का परिणाम दुःख और अशांति होगा।

३) यदि अन्याययुक्त नियमों का नाम न्याय रखकर न्यायालय खोलेंगे तो अन्याय होगा, जिसका परिणाम दुःख होगा। हम ईश्वर की सृष्टि में सुख के स्थान पर दुःख भोगेंगे।

इसलिए यदि हमको सुखी बनना है तो पांच बातों को समझ लें—

१. सबका ईश्वर एक है। २. मानवजाति एक है। ३. मानव का धर्म मानवता है। ४. न्याय का नाम धर्म है। ५. राजा का धर्म न्याय है।

केवल ये बातें ही हम आचरण में ले आवेंगे तो हम सुखी बन सकते हैं। भूमि को स्वर्ग बनाया जा सकता है। ईश्वर का उद्देश्य भी सब जीवों को सुख देना है। हम सब के दुःखों का कारण ईश्वर और उसके नियमों के विपरीत अज्ञानता के कारण आचरण करना। इसलिए यह बात सत्य है कि जो लोग ईश्वर को नहीं जानते और नहीं मानते, वे मन्दमति नास्तिक दुःख सागर में डूबे ही रहते हैं और उसी को जानकर सब सुखी होते हैं। वही आनन्द का भण्डार है। ओ३म् शांति।

—कप्तानसिंह आर्य ग्राम गांधरा, जि० रोहतक

आर्यसमाज इसराणा त० पानीपत का उत्सव

आर्यसमाज इसराणा जि० करनाल का उत्सव गत मास सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सभा के उपदेशक प० सुखदेव शास्त्री, पं. समेरसिंह आर्य तथा पं. चिरजीलाल आर्य पधारे। उत्सव को सफल करने के लिए श्री महेन्द्रसिंह आर्य टेलर मास्टर, श्रीराम धीमान, श्री ईश्वरसिंह किरयाना स्टोर आदि ने पूरा सहयोग किया। सभा को ३०१) वेदप्रचारादि के दिये गये।

हरयाणा में शराब के ठेकों की नीलामी पर प्रदर्शन का कार्यक्रम

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से गत ३ वर्षों से हरयाणा में शराबबन्दी के लिए आंदोलन चलाया जारहा है। अनेक ग्राम पचायतों से समय पर प्रस्ताव करवाकर सरकार को रजिस्ट्री-पत्र द्वारा भिजवाये गये हैं। सारे हरयाणा में २१ फरवरी को स्मरण कराने हेतु जिला मुख्यालयों पर आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं ने पूर्ण शराबबन्दी लागू करने के लिए ज्ञापन दिये।

हरयाणा मे विधानसभा के चुनाव शीघ्र होनेवाले है। प्रत्याशी आपके पास वोट की भिक्षा लेने आयगे और चुनाव जीतने के लिए विभिन्न प्रकार के वायदे करके आपको अपने जाल मे फंसाने का यत्न करेंगे। अत. आपको निश्चय करना चाहिए कि उन्हीं प्रत्याशियो का समर्थन कर जो हरयाणा मे पूर्ण शराबबन्दी करवाने का वचन देवें। हरयाणा सरकार ने शराब के ठेकों की नीलामी करने का कार्यक्रम निम्न प्रकार बनाया है—नारनौल ९ मार्च, रोहतक १० मार्च, भिवानी ११ मार्च, गुड़गांव १२ मार्च, फरीदाबाद १३ मार्च।

सभा के उपदेशक, भजनोपदेशक शराब के ठेकों पर प्रदर्शन की तैयारी में डा० महेन्द्रसिंह शास्त्री के सयोजन में दिन-रात प्रचार-कार्य में रत हैं। अतः हरयाणा के सभी आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वे अन्य सामाजिक तथा धार्मिक कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से ऊपर लिखित स्थानो पर अपने-अपने जिलो के मुख्यालयों पर हजारो की सख्या मे पहुंचकर नीलामी स्थान पर प्रदर्शन करके हरयाणा में पूर्ण शराबबन्दी की माग करें तथा जिन पचायतो की ओर से प्रस्ताव भिजवा रखे हैं, उन ग्रामो मे ठेको की नीलामी रुकवाने के लिए सघर्ष करके अपनी एकता तथा शक्ति का परिचय देवे। आशा है आप इस अवसर को हाथ से न जाने देगे।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

सर्वहितकारी के स्वामित्व आदि का विवरण

फार्म ४ (नियम ८ देखिए)

१. प्रकाशन स्थान	दयानन्दमठ, रोहतक
२. प्रकाशन अवधि	साप्ताहिक
३. मुद्रक का नाम	वेदव्रत शास्त्री
क्या भारत का नागरिक है ?	है
पता	दयानन्दमठ, रोहतक
४. प्रकाशक का नाम	वेदव्रत शास्त्री
क्या भारत का नागरिक है ?	है
पता	दयानन्दमठ, रोहतक
५. सम्पादक का नाम	वेदव्रत शास्त्री
क्या भारत का नागरिक है ?	है
पता	दयानन्दमठ, रोहतक
६. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचारपत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के सांझीदार या हिस्सेदार हों।	आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

मैं वेदव्रत शास्त्री एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एव विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

प्रकाशक के हस्ताक्षर
वेदव्रत शास्त्री

दो शब्द हरयाणा सरकार से

मेधाव्रत 'सत्यार्थी' शिमली, भिवानी

हरयाणा सरकार द्वारा घोषित चौथे वेतन आयोग के परिप्रेक्ष्य में गठित कमेटी की रिपोर्ट आने से पहले विचारणीय विषयों की ओर आपके पत्र के माध्यम से सरकार का ध्यान आकृष्ट करना चाहूगा।

१—क्या जिन जे. बी. टी. या अन्य अध्यापकों अथवा कर्मचारियों का बिना सिलेक्शन ग्रेड सेवाकाल २४-२५ वर्ष होने जारहा है तथा जो अपने वर्ष दो वर्ष पहले के साथियो की तुलना मे पहले ही ५०० रुपये या इससे भी अधिक राशि वर्षों से कम ले रहे हैं, उनके साथ न्याय किया जा सकेगा ? अथवा अब इस अन्तर को और अधिक बढ़ाकर उन्हे इस अर्थयुग में निराशा से जीने को विवश होना पड़ेगा।

निश्चय ही सेवा-अवधि के लाभ के दृष्टिगत उन्हे सन्तुष्ट किया जाना चाहिए। निश्चित सेवा-अवधि मे सिलेक्शन की व्यवस्था न्याय संगत समाधान हो सकता है। १८ वर्षीय सेवा-अवधि का इस सम्बन्ध में उदाहरण भी बन चुका है।

२—प्रमुखतः शिक्षा विभाग में शिक्षास्तर को बढ़ाने की दृष्टि से क्या जो अध्यापक किसी भी वर्ग से उच्च विद्यालयों मे एम. ए. प्रथम श्रेणी तक प्राप्त करके कार्य कर रहे है, उन्हे अपनी योग्यता के अनुरूप पुरस्कृत नहीं किया जाना चाहिए। पदोन्नति के मामले में दोहरी नीति के प्रसग मे यह और अधिक प्रासंगिक हो जाता है।

संस्कृत भाषा मे अधिकारिक ज्ञान रखनेवाले बी. ए., एम. ए. अतिरिक्त योग्यता वाले संस्कृत अध्यापकों (शास्त्रियों) को भी बी. एड. पर समायोजन के अभाव मे १०+२ के प्राध्यापक पद की पदोन्नति से वंचित रखा जाना क्या दासता के संस्कारो के परिणामो के साथ-साथ योग्यता का मजाक नही है। हिन्दी संस्कृत प्राध्यापक पदो पर तो कम से कम सम्बन्धित या हर वर्ग से योग्यतम अध्यापको को ही पदोन्नत किया जाना चाहिए।

३—जे. बी. टी. या विशेषतया ओ. टी. जिसका कि पाठ्यक्रम लगभग बी. एड. वाला ही है, करने के बाद भी नियुक्त अध्यापक यदि अच्छे ढग से बी. ए., एम. ए कर लेता है तो उसे मात्र बी. एड के अभाव में अछूत क्यो मान लिया जाता है ? जबकि उसे उसकी दोहरी योग्यता के लिए पुरस्कृत किया जाना चाहिए।

आशा है इन सब बातों पर नये सिरे से, न्यायसगत ढग से सोच कर सरकार उचित निर्णय ले सकेगी। महर्षि दयानन्द वि. वि. रोहतक के शास्त्री पाठ्यक्रम पर गौर करके इस वर्ग के साथ न्याय किया जाये तो उन्हे सर्वाधिक सम्मानजनक स्थान मिलना ही चाहिये, अन्य पाठ्यक्रम भी कम नहीं हैं।

ऋषिबोध दिवस पर भाषण प्रतियोगिता

आर्य केन्द्रीय प्रतिनिधि सभा दिल्ली के तत्त्वावधान में दिल्ली के उत्तरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की भाषण प्रतियोगिता का कार्यक्रम महर्षि दयानन्द बोधोत्सव के अवसर पर आर्य आदर्श विद्यालय आदर्श नगर में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का सयोजन श्री महावीर बत्रा, विद्यालय व्यवस्थापक ने किया। सभी बच्चों को पुरस्कृत किया गया तथा प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्र छात्राओं को विशेष पुरस्कार भी दिये गये।

प्रथम पुरस्कार अनुराग सिंहल डी. ए. वी. माडल स्कूल शालीमार बाग, द्वितीय पुरस्कार सुरुचि अग्नि आर्य आदर्श विद्यालय आदर्श नगर, तृतीय पुरस्कार मोनिका दहिया नगर निगम प्राथमिक विद्यालय।

इन सभी छात्र छात्राओं को ऋषि मेला कोटला मैदान में भी पुरस्कृत किया जायेगा।

भवदीय—महावीर बत्रा

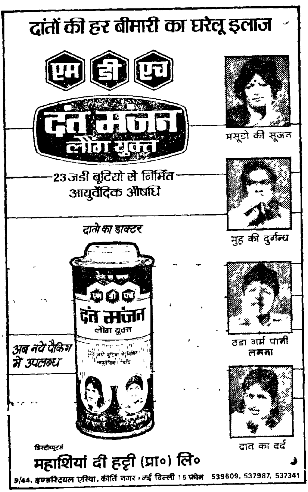
यजुर्वेद ५ अध्यायों की प्रतियोगिता

विश्व संस्कृत प्रतिष्ठानम् (हरयाणा) की ओर से तीसरी वेदमन्त्र स्मरण प्रतियोगिता जनवरी, १९८८ में होगी। स्थान और दिन बाद में बताये जायेंगे। उसी समय संस्कृत कवि सम्मेलन और सद्यः संस्कृत भाषण प्रतियोगिता भी होगी।

जिन्होंने पहली प्रतियोगिता में यजुर्वेद के कोई पांच अध्याय याद करके भाग लिया था वे इस प्रतियोगिता में कोई भी छः अध्याय नये याद करके भागी बन सकेंगे। जिन्होंने पहली में भाग नहीं लिया था वे यजुर्वेद के पहले छः अध्याय याद करके भागी बन सकेंगे।

इन आयोजनों का उद्देश्य यह है कि हरयाणा में वेदपाठी तैयार किये जायें।

—सत्यदेव वर्मा प्रधान



हरयाणा में अधिकृत विक्रेता

१ मैसर्ज परमानन्द साईंदित्तामल, भिवानी स्टैंड, रोहतक
२. „ फूलचन्द सीताराम गांधी चौक, हिसार
३. „ सन-अप-ट्रेडर्स सारंग रोड, सोनीपत
४. „ हरीश एजेन्सीज ४९९/१७ गुरुद्वारा रोड, पानीपत
५ „ भगवानदास देवकीनन्दन सर्राफा बाजार पुराना, करनाल
६. „ घनश्यामदास सीताराम बिचला बाजार, भिवानी
७. „ कृपाराम गोयल रुड़ी बाजार, सिरसा
८ „ कुलवन्त पिकल स्टोर्स, शाप नं० ११५, मार्किट नं० १, एन० आई० टी० फरीदाबाद
९. „ चन्द्रप्रकाश नवीनप्रकाश ३१८/५ जैकमपुरा, गुड़गांव

आर्यसमाजों तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों से आवश्यक निवेदन

आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापना शताब्दी समारोह २२ से २४ मई तक रोहतक में मनाया जारहा है। इस अवसर पर एक भव्य तथा आकर्षक स्मारिका का भी प्रकाशन किया जारहा है। अतः सभा से सम्बन्धित आर्यसमाजों तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों से आवश्यक निवेदन है कि इस ऐतिहासिक स्मारिका में प्रकाशनार्थ अपने आर्यसमाज तथा आर्य शिक्षणसंस्थाओं का संक्षिप्त परिचय और वर्तमान अधिकारियों के पासपोर्ट साइज के चित्र शीघ्र सभा कार्यालय रोहतक में भेजने की कृपा करें। स्मरण रखें जिनका परिचय समय पर कार्यालय में प्राप्त नहीं हो सकेगा, उनका विवरण स्मारिका में नहीं छप सकेगा।

यदि किसी आर्यसमाज के पुस्तकालय में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का इतिहास (लेखक प० चमूपति जी एम०ए०) सुरक्षित है तो उसे भी सभा कार्यालय में भेजने का कष्ट करें। उसमें से आवश्यक सामग्री प्रकाशित करके पुस्तक तथा एक निःशुल्क स्मारिका सधन्यवाद भेज दी जायेगी। स्मारिका में प्रकाशनार्थ विज्ञापन भी भिजवाने की कृपा करें।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

आर्यसमाज जींद शहर का वार्षिक चुनाव

प्रधान—सर्वश्री छबीलदास आर्य, उपप्रधान—लक्ष्मणदास, ब्रह्मराज, मन्त्री—इन्द्रदेव शास्त्री, प्रो० छोटूराम किसान कालेज जींद, उपमन्त्री—धर्मपाल, डा० रमेश वर्मा, कोषाध्यक्ष—सतनारायण, पुस्तकाध्यक्ष—ईश्वरदत्त प्रोफेसर, लेखानिरीक्षक—बिशनदास, विद्यालय प्रबन्धक—मोहन प्रभाकर।

स्त्री आर्यसमाज हिसार का वार्षिक चुनाव

प्रधाना—श्रीमती कौशल्या आर्या, मन्त्राणी—श्रीमती शांति आर्या, कोषाध्यक्ष—श्रीमती सुशीला कुमारी आर्या, संरक्षक—श्रीमती राज कुमारी आर्या।

यज्ञोपवीत महिमा

ऐ दिल जरा सम्भल जा······ ——
यज्ञोपवीत लेकर, खुद को निहारना है।
जीवन सुधारने का सकल्प धारना है।

हर झूठ की तरफ से मुह अपना फेरना है।
सच्चे व्रतों का पालन करना प्रेरणा है।
तप त्याग साधना को हरदम उभारना है।
जीवन सुधारने का·······

गायत्री जाप संध्या स्वाध्याय यज्ञ करना।
दुष्टो को सगति में हरगिज न पाव धरना।
भगवान् को कभी न दिल मे बिसारना है।
जीवन सुधारने का·······

समझो ये तीन ऋण है कधे पे तीन धागे।
जब तक है प्राण इनसे व्यक्ति कभी न भागे।
निष्कपट स्वच्छ सुन्दर जीवन गुजारना है।
जीवन सुधारने का ·······

पितरों की टहल सेवा देवों को उचित पूजा।
ऋषियों के सग जैसा कर्त्तव्य है न दूजा।
माता पिता गुरु के ऋण को उतारना है।
जीवन सुधारने का·······

नेकी के काम करके तत्काल भूल जाना।
निष्काम भाव होकर औरों के काम आना।
शिक्षा का सूत्र है यह मनमें विचारना है।
जीवन सुधारने का ·······

शुभ चिन्ह आर्यों का यज्ञोपवीत है यह।
सब श्रेष्ठ लोग पहनें ऋषियों की रीत है यह।
दुनियां में "पथिक" इसके यश को निखारना है।
जीवन सुधारने का······

आर्य पुरोहितों की आवश्यकता

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को आर्यसमाजों मे नियुक्त करने के लिए आर्य पुरोहितों की आवश्यकता है। सेवा-निवृत्त गुरुकुलों के स्नातकों और अध्यापकों को प्राथमिकता दी जायेगी। वैदिकरीति के अनुसार ग्रामों में संस्कार कराने, सत्सगों में यज्ञ तथा प्रवचन करने का अनुभव रखनेवाले महानुभाव अपनी योग्यता, अनुभव, आयु आदि के प्रमाण-पत्रों सहित अपने आवेदन-पत्र निम्न पते पर भेजें। दक्षिणा योग्यता तथा अनुभव और कार्य के आधार पर दी जायेगी।

—वेदव्रत शास्त्री
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस,
रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० 23207/73 राज० न० P/RTK 49 फोन ४८१९

ओ३म् कृण्वन्तो वि...

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभा मन्त्री सह सम्पादक—डा० प्रज्ञीर

वर्ष १४, अङ्क १७ २१ मार्च, १९८७ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

रिण्ढाणा में शराब के ठेके पर शराबबन्दी सम्मेलन व धरणा जारी

रोहतक १४ मार्च (केदारसिंह आर्य द्वारा) ग्राम रिण्ढाणा तहसील गोहाना, जि० सोनीपत में ९ मार्च से शराब के ठेके पर आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं की ओर से धरणा चालू है। इसमें जनवादी सघटन के युवक बढ़-चढ़कर भाग ले रहे हैं। स्मरण रहे ग्राम की पंचायत ने अपने ग्राम से शराब का ठेका बन्द करवाने के लिए प्रस्ताव भेज रखा था, परन्तु जि० सोनीपत के आबकारी तथा कराधान विभाग के अधिकारियों ने ७ मार्च को यहां ठेके की नीलामी करवाकर पचायत के प्रस्ताव को रद्दी की टोकरी में फेंक दिया। इसके विरोध में ग्राम के नर-नारियों ने शांतिपूर्वक प्रदर्शन किया, परन्तु पुलिस ने इन पर लाठीचार्ज करके अनेक युवकों तथा स्त्रियों को बुरी तरह से पीटा। इससे सारे ग्राम में रोष की लहर फैल गई। ग्राम के नवयुवक सरपच सर्वश्री रणधीरसिंह आर्यसमाज के मन्त्री धर्मसिंह वैद्य, जनवादी सघटन के नेता ईश्वरसिंह आदि ने अपने सहयोगियों के साथ ठेके के सामने ९ मार्च से धरणा आरम्भ कर दिया। इसमें प्रतिदिन ४० के लगभग नरनारी बैठते हैं तथा शराब खरीदनेवालों को शांतिपूवक समझाकर वापिस भेज देते हैं।

धरणे को सफल कराने के लिए आर्यसमाज के मन्त्री श्री धर्मसिंह वैद्य ने सभा को पत्र भेजकर सहयोग की मांग की। सभा की ओर से तुरन्त सभा के उपदेशक पं० अर्जुनदेव आर्य को धरणे पर भेज दिया। उन्होंने सभी से विचार-विमर्श करके १४ मार्च को वहां शराबबन्दी सम्मेलन रखवा दिया। तैयारी के लिए सभा के उपदेशक ब्र० महेन्द्रसिंह शास्त्री भी पहुंच गये और उन्होंने ग्रामीण युवकों से सम्पर्क किया। १४ मार्च को दोपहर बाद ३ बजे सभा के प्रधान माननीय प्रो० शेरसिंह, वेदप्रचाराधिष्ठाता श्री रघुवीरसिंह, सभा उपदेशक पं० सुखदेव शास्त्री तथा श्री अर्जुनदेव आर्य धरणा स्थल पर पधारे। वहां पूर्व ही स्थानीय विधायक श्री मलेराम भी उपस्थित थे। धरणे पर एकत्रित हजार के लगभग ग्रामीण नर-नारियों ने सभा प्रधान जी का गगनभेदी जयकारों के साथ स्वागत किया।

सभा उपदेशक पं० सुखदेव शास्त्री ने शराबबन्दी सम्मेलन में शराब से होनेवाली बुराइयों का उल्लेख किया तथा ग्रामीण नर-नारियों से अपने ग्राम से शराब के ठेके को बन्द करवाने के लिए एकजुट होकर तन, मन तथा धन से सहयोग करने की अपील की। आपने ग्रामीण महिलाओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि जिस ग्राम की महिलायें शराब के ठेके को बन्द करवाने में जुट जाती हैं, वहां ठेका अवश्य बन्द हो जाता है, क्योंकि महिलाओं को ही सबसे अधिक शराबी पुरुषों के अत्याचारों का सामना करना पड़ता है। सभा उपदेशक ब्र० महेन्द्रसिंह शास्त्री ने ग्रामीण युवकों को आह्वान करते हुए कहा कि यदि युवक शराब जैसी बुराइयों के विरुद्ध खड़े हो जाये तो इस प्रकार के ठेके सारे हरयाणा में बन्द हो सकते हैं। अत: युवको अब समय आगया है कि हरयाणा को बचाने के लिए ग्रामों से शराब के ठेकों (सभी बुराइयों के अड्डों) को

(शेष पृष्ठ ७ पर)

भाहु अकबरपुर के वार्षिकोत्सव पर सभा को १६००) भेंट

आर्यसमाज भाहु अकबरपुर का वार्षिकोत्सव ७ मार्च को प्रात ८ बजे सभा पुरोहित पं चन्द्ररूप द्वारा यज्ञ के साथ प्रारम्भ हुआ। सायं ५ बजे गांव में प्रभावशाली शोभायात्रा निकाली गई। यह उत्सव १० मार्च तक बडी धूमधाम के साथ अपनी सफलता की ओर अग्रसर रहा। इस अवसर पर सभा के भजनोपदेशक पं. ईश्वरसिंह तूफान, प चिरजीलाल, स्वामी राममुनि, पं. सुमेरसिह एवं श्री सहदेव बेधड़क ने ओजस्वी कार्यक्रम रखे। श्री ईश्वरसिंह तूफान ने बड़े मार्मिक शब्दों से ओतप्रोत गोमाता की करुणापूर्ण व्यथा सुनाई, जिससे श्रोताओं के मन भावविभोर होगये। पं. चिरजीलाल ने अंग्रेजों के आगमन से स्वतन्त्रता संग्राम की हृदय विदारक गाथा सुनाई, जिससे श्रोताओं में जोश-रोष हिलोरे लेने लगा। स्वामी राममुनि ने अपने प्रचार में स्त्री जाति पर पनप रही कुरीतियों पर खुलकर प्रहार किया। प. सुमेरसिह ने उधमसिंह की कथा मार्मिक शब्दों में पेश की, जिससे जनता में जोश उमड़ आया। श्री सहदेव बेधड़क ने महाराणा प्रताप व शिवाजी की वीर गाथाओं से श्रोताओं को मुग्ध कर लिया और वर्तमान राजनीतिक परिस्थितियों में आर्यसमाज का दृष्टिकोण बडे प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। प्रचार का कार्यक्रम रात्रि के २ बजे तक चलता रहा तथा आर्यसमाज मन्दिर का प्रांगण श्रोताओ से ठसाठस भरा रहा। यहां तक कि श्रोता छत पर बैठकर प्रचार सुनते रहे। इस उत्सव पर विशेषता यह थी कि श्रोताओं ने पं. सुखदेव शास्त्री एव ब्र महेन्द्र शास्त्री के विचारों को भी बड़ी उत्सुकता के साथ सुना और ग्रामवासियों ने गतवर्ष की भांति दिल खोलकर दान दिया। विशेषकर जब बाबू रघुवीरसिंह एव मन्त्री जगदेवसिंह जी ने सूबेदार बख्तावरसिंह से अध्यक्षता के लिए अनुरोध किया तो शारीरिक अस्वस्थता के कारण असमर्थता व्यक्त की। परन्तु उसके तुरन्त पश्चात् ५०१ रुपये बाबू रघुवीरसिंह जी के पास दान के रूप में भिजवा दिये। इसी प्रकार कप्तान जयसिंह के वृद्धावस्था के कारण असमर्थता प्रकट करने पर उनकी धर्मपत्नी ने १०१ रुपये प्रदान किये। इस उत्सव की सफलता का श्रेय प्रधान चौ० प्रतापसिंह, श्री जगदेव मन्त्री, मा० मोहरसिंह, पटेल शास्त्री, ब० अजीतसिंह व बाबू रघुवीरसिंह को है। प्रधान चौ० प्रतापसिंह दुर्घटनाग्रस्त होने के बावजूद उत्सव की कार्यवाही का सचालन करते रहे।

इस शुभावसर पर शताब्दी समारोह के लिए श्री जगदेवसिंह मन्त्री ने आर्यसमाज भाहु अकबरपुर की ओर से ११०० रुपये की थैली श्री बाबू रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता एवं वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को ५०० रुपये वेदप्रचार एव दशांश के रूप में उपदेशकों को कुल १६०० रुपये प्रदान किये।

आर्य प्रतिनिधि सभा का शताब्दी समारोह क्यों ?

(१८८५ से १९८५ तक का संक्षिप्त विवरण)

प्रस्तुतकर्ता—सुखदेव शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा

गतांक से आगे—

इस शिक्षा-पद्धति का विरोध अपने जीवन में ही गुरुदत्त जी ने करना आरम्भ कर दिया था। इसका मुकाबला किया स्वामी श्रद्धानन्द ने १९०२ में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना करके। यह हम यथास्थान आगे आकर चर्चा करेंगे।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की स्थापना

महर्षि के बलिदान के पश्चात् महर्षि की याद और उनकी अनुपस्थिति आर्यों को बहुत ही खटकती थी, इसी भावना से विवश होकर ही उन्होंने अपने प्रांत की सभी समाजों के एक प्रतिनिधि संगठन की भी आवश्यकता अनुभव हुई। जिससे महर्षि के मिशन की पूर्ति हो सके। जिस पर अक्तूबर १८८५ में अमृतसर आर्यसमाज के उत्सव पर पहली बार पंजाब की २० समाजों के प्रतिनिधि इकट्ठे हुए, जिन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की स्थापना का निश्चय किया और सभा के नियमों के निर्णय पर भी विचार किया गया।

उनके इस निश्चय के आधार पर अगस्त १८८६ में लाहौर में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की स्थापना होगई थी। प्रतिनिधि सभा की स्थापना का उद्देश्य वेदप्रचार और पंजाब की सभी आर्यसमाजों को एक सूत्र में पिरोना था।

इधर हरयाणा में भी १८८५ में ही दो महान् विभूतियां जन्म ले चुकी थीं, जिन्होंने अपने जीवन में वैदिकधर्म और आर्यसमाज के कार्यक्रम को तन, मन, धन से प्रगति देकर हरयाणा के आर्यसमाज के इतिहास में अपना नाम सदैव के लिए अमर कर दिया, वह थे—गुरुकुल भैंसवाल और कन्या गुरुकुल खानपुर के संस्थापक महात्मा भक्त फूलसिंह जी तथा चौधरी सर छोटूराम। महात्मा भक्त फूलसिंह जी १९४२ में बलिदान होगये और चौधरी छोटूराम पाकिस्तान के निर्माण की चिन्ता में निरन्तर विरोध करते रहने के कारण रोगी होकर १९४५ में स्वर्ग सिधार गये। पाकिस्तान के विरोध में चौधरी छोटूराम का वह पत्र ऐतिहासिक दस्तावेज है, जिसे उन्होंने गांधी जी के नाम पर लिखा था, किन्तु गांधी जी मुस्लिम साम्प्रदायिकता के नीचे इतने दब चुके थे कि वे उस पत्र पर कोई कार्यवाही भी न कर सके थे। उस समय वे हर कीमत पर मुसलमानों को सन्तुष्ट करने में ही देश का अहोभाग्य समझते थे। वे हर समय जिन्ना के सामने उसकी अनुचित मांगों को भी मानने के लिए उद्यत रहते थे, उसका परिणाम पाकिस्तान के रूप में परिणत हुआ।

इन दोनों हरयाणवी वीरों को हरयाणा के ही सन्दर्भ में आगे चर्चा करेंगे। इनके अतिरिक्त अन्य भी हरयाणा के आर्यसमाजी वीरों का संक्षिप्त विवरण लिखेंगे।

१८८६ में गुरुदत्त विद्यार्थी एम. ए. पास करके गवर्नमेंट कालेज लाहौर में विज्ञान के अध्यापक लग गये थे, किन्तु उनका कालेज से अतिरिक्त समय आर्यसमाज के ही प्रचार में अर्पण होता था। १८८९ में उन्होंने वेदों का प्रचार करने के लिए तथा विदेशी विद्वानों के द्वारा वेदों पर किये गये आक्षेपों का उत्तर देने के लिए "वैदिक मेगजीन" मासिक पत्र का भी प्रारम्भ कर दिया था। जिससे विदेशी विद्वानों में खलबली मच गई थी। उनका यह पत्र आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी लन्दन में भी जाता था। जिसे पढ़कर अंग्रेज प्रोफेसर विद्यार्थी जी की बहुत प्रशंसा करते थे। इतना सब-कुछ होते हुए उन्होंने विदेशों में वैदिकधर्म की धाक बैठा दी। इस परिश्रम का यह प्रभाव हुआ कि वे सख्त बीमार होगये और २६ वर्ष की अल्पायु में ही मार्च १८९० में स्वर्ग सिधार गये।

उनके ही महान् प्रयत्न का फल था कि १८८६ में ही दयानन्द कालेज एवं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की स्थापना हुई और म० हंसराज तथा ला० लाजपतराय जैसे आर्यरत्न आर्यसमाज की गोद में आये। इन दोनों ने ही शिक्षा के क्षेत्र में तथा राजनीतिक क्षेत्र में आर्यसमाज का नाम ऊंचा किया।

आर्यसमाज के लिए यह जहां स्वर्णकाल था वहां संकट का काल भी था। इसलिए सुधार की इस संकटपूर्ण घाटी में जहां आर्यसमाज सम्भल-सम्भल कर कदम रख रहा था, वहां आर्यसमाज में प्रवेश पाने वाले लोगों को अगणित कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। जाति और समाज के बहिष्कार की तलवार हर समय उनके सिरों पर लटकती रहती थी। आदि के आर्यसमाजी बड़े कट्टर आस्थावान् तथा निष्ठावान् थे। महर्षि के बताये मार्ग पर कमर कसकर चल पड़े थे। उन्हें जाति व समाज के बहिष्कार की कभी भी कोई परवाह न की। जालन्धर में कन्या महाविद्यालय के संस्थापक देवराज जी, जो कि आरम्भ में ही आर्यसमाज में शामिल होगये थे। उन्हें उनके पिता सालिगराम ने अपनी सम्पत्ति से ही वंचित कर दिया था। नगीना आर्यसमाज के उपप्रधान नत्थासिंह को भी घर से निकलना पड़ा था और उनके सात वर्ष के अबोध बच्चे को भी जहर दे दिया गया था।

इधर हरयाणा में भी चौधरी मातूराम, चौधरी पीरूसिंह व भक्त फूलसिंह, पं० विश्वम्भरदत्त को भी कितने कष्ट झेलने पड़े थे। जनेऊ लेने पर ही उन पर जाति बहिष्कार के कितने अत्याचार पौराणिक ब्राह्मणों द्वारा किये गये थे, यह तो आर्यसमाज के अतीतकाल के इतिहास के दस्तावेज बन गये हैं। पता नहीं ऐसे कितने धर्मवीरों ने आर्यसमाज में प्रवेश होने का क्या-क्या दण्ड भुगता होगा ? जिनके अज्ञात नाम आज तक भी इतिहास के पन्नों पर न चढ़ सके।

मानना चाहिए कि सदियों से चले आ रहे रीति-रिवाज हिन्दू जाति में इतना घर कर चुके थे कि उन्हें सहसा छोड़ना अत्यन्त कठिन काम था। हिन्दू जाति के ब्राह्मणों का बड़ा भाग इसी पाखण्ड से अपनी जीविका चलाता था। समाज पर उनका बड़ा प्रभाव था। "ब्रह्मवाक्यं जनार्दनः" कहकर उनका प्रत्येक वाक्य माननीय होता था। समाज पर उनका ही एकमात्र आधिपत्य था। वे सब यही चाहते थे कि सब कुछ पुराना ही चलता रहे। महर्षि के क्रांतिकारी समाज सुधार के कार्यक्रमों से वे घबरा जरूर गये थे। घबरा ही नहीं गये, उनमें भगदड़ भी पड़ गई थी, जब महर्षि ने १८६९ में काशी के पोपगढ़ पर जोरदार हमला किया था। पं० बस्तीराम जी के शब्दों में—

> ताकत राखें थे सन्यासी, निर्भय जाये घन्धेड़ी काशी।
> जब काशी में तम्बू ताना, बैठे पोथा खोल पुराणा।
> पूछा पाषाण क्यों पुजवाओ, और वेदों में श्राद्ध दिखाओ।
> क्यों क्षत्रियों को शूद्र बताओ, क्यों ना गायत्री सिखाओ॥

वैदिक संस्कार, वैदिक विवाह संस्कार, मृतक संस्कार का घोर विरोध होता था। वेदों के मन्त्र पढ़कर हवन करना अथवा कोई भी संस्कार करना अति कठिन था। उस समय की कपूरथला की एक घटना है कि गोविन्द सहाय आर्यसमाजी की माता का देहांत होगया था। उन्होंने वैदिकरीति से माता जी की अन्त्येष्टि का निर्णय किया था, इसका इतना विरोध बढ़ा कि हिन्दुओं ने अर्थी और संस्कार की सामग्री तक देने से इन्कार कर दिया। गोविन्द सहाय भी इतने पक्के थे कि टस से मस न हुए। उन्होंने मुसलमानों की दूकानों से सम्पूर्ण सामग्री लेकर अपनी माता का वैदिकरीति से अन्त्येष्टि संस्कार किया।

इधर हरयाणा में भी सभी सामाजिक अवसरों पर घोर पाखण्डवाद का सामना करना पड़ता था। इसकी एक घटना किसी जाट के पिता के मरने पर जो लूटपाट उस समय उस पोप ब्राह्मण ने की थी, उसका पूरा चित्र महर्षि ने अपने ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश के ११वें समुल्लास में खींचा है।

(क्रमशः)

सम्पादकीय

नव संवत्सर

चैत्र शुक्ला प्रतिपदा सवत् २०४४ विक्रमी नववर्ष सभी आर्यों अथवा भारतवासियों के लिए कल्याणकारी और समृद्धिशाली हो। सर्वहितकारी के पाठक हमारी नव-सवत्सर की शुभ कामनायें स्वीकार करें।

अंग्रेजी तिथियों के अनुसार ३० मार्च, १९८७ ई. सोमवार से नव वर्ष प्रारम्भ हो रहा है। पराधीनताकाल की मानसिकदासता अभी तक समाप्त नहीं हुई है। इसीलिये १ जनवरी से प्रारम्भ होनेवाले ईस्वी सन् के नये वर्ष का शुभकामनाओं की परिपाटी प्रचलित है। विक्रमी सवत् जो भारतीय परम्परा का द्योतक है और ईस्वी सन् से प्राचीन भी है, इसको आज का भारतीय भूलता जारहा है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने पत्र व्यवहार आदि में विक्रमी सवत् का ही उल्लेख किया है। सर्वप्रथम बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना भी चैत्र शुक्ला प्रतिपदा संवत् १९३२ वि० में की थी। इस दृष्टि से आर्यसमाज का यह ११२वां स्थापना दिवस भी है। आर्यावर्त (भारत) निवासियों को, विशेषतया महर्षि दयानन्द के अनुयायी आर्यसमाजियों को वैक्रम नव-वर्ष और आर्यसमाज स्थापना दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाना चाहिये।

हमारी प्राचीन परम्परा के अनुसार तीन सवत् प्रचलित हैं— १. सृष्टिसंवत् या वेदसवत्। २. कलिसवत् या युधिष्ठिर सवत् और ३. विक्रमसवत्। प्रथम सृष्टिसवत् में अगले दोनों सवत् भी समा जाते हैं। इस सृष्टिसवत् के विषय में कुछ लोगों को भ्रान्तियां हैं। अभी मेरे पास एक पत्र कैराना (उत्तरप्रदेश) से ला० आत्माराम व हरिश्चन्द्र आर्य का आया है। वे लिखते हैं—

"हमारे यहां लखनऊ उ०प्र० की पत्रिका (आर्यमित्र), दिल्ली की पत्रिका (आर्यजगत्) और दिल्ली की ही पत्रिका (सार्वदेशिक), जालन्धर पंजाब की (आर्यमर्यादा) इन सभी का सृष्टिसवत् १,९७,२९,४९,०८७ है और आपकी सर्वहितकारी पत्रिका में सृष्टिसवत् १,९६,०८,५३,०८७ है। क्या आपका हरियाणा ईश्वर ने १,२०,९६००० वर्ष बाद रचाया है ?

इस पत्र का जवाब सर्वहितकारी साप्ताहिक पत्रिका द्वारा ही देवे, पोस्टकार्ड द्वारा नहीं।"

ईश्वर ने हरयाणा अन्य प्रदेशों के बाद में नहीं बनाया, अपितु हरयाणा वह प्रदेश है जिसके लिये मनु ने लिखा है—

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्व स्व चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥

इस प्रदेश के अग्रजन्मा ब्राह्मण क्षत्रियादि से समस्त संसार के मानव अपने-अपने आचार व्यवहार की शिक्षा ग्रहण करें।

हम हरयाणा निवासी आर्य, महर्षि दयानन्द सरस्वती के परम श्रद्धालु हैं। उनके लेख को सर्वोत्कृष्ट प्रमाण मानते हैं। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के आठवें समुल्लास में जगत् की उत्पत्ति में एक अरब, छानवें करोड़ वर्ष व्यतीत हुए लिखा है। इसका स्पष्ट व्याख्यान ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के "वेदोत्पत्ति विषय" में लिखा है—

"इसी प्रकार से सब व्यवहार आर्य लोग बालक से वृद्ध पर्यन्त करते और जानते चले आये हैं। जैसे बहीखाते में मिती डालते हैं वैसे ही महीना और वर्ष बढ़ाते-घटाते चले जाते हैं। इसी प्रकार आर्य लोग तिथिपत्र में भी वर्ष मास और दिन आदि लिखते चले आते हैं और यही इतिहास आज पर्यन्त सब आर्यावर्त देश में एक-सा वर्तमान हो रहा है और सब पुस्तकों में इस विषय में एक ही प्रकार का लेख पाया जाता है, किसी प्रकार का इस विषय में विरोध नहीं है। इसीलिये इसको अन्यथा करने में किसी का सामर्थ्य नहीं हो सकता।"

रही बात लखनऊ, जालन्धर और दिल्ली के आर्यमित्र, आर्यमर्यादा, आर्यजगत् और सार्वदेशिक पत्रों पर अन्यथा सृष्टि संवत् छापने की। इस विषय में उनसे ही पूछा जाये तो अच्छा है। मेरे विचार से उनके दिमाग का दिवाला निकल चुका है या फिर वे महर्षि दयानन्द से भी अधिक बुद्धिमान् और विद्वान् हैं।

—वेदव्रत शास्त्री

"जिन ढूंढा तिन पाइया गहरे पानी पैठ"

पंजाब समझौते के फलितार्थ और हरयाणा के हित

—प्रो० शेरसिंह अध्यक्ष, हरयाणा रक्षावाहिनी

गतांक से आगे—

इन दोनों बातों से यह काफी स्पष्ट हो जाता है कि चण्डीगढ के बदले में हरयाणा को फाजिल्का अबोहर के गांव ही दिये जायेंगे और आयोग उन पर ही विचार कर सकेगा। १३ अगस्त, १९८५ को फिरोजपुर जिले के वकीलों की सभा में सन्त लोंगोवाल ने भी साफ कहा कि चण्डीगढ के बदले में हरयाणा को अबोहर के आस-पास के ५५ गांव देने पड़ेंगे।

मैथ्यू आयोग

इसलिये हमने अपने मनमें फैसला किया कि इस सम्बन्ध में सरकार जो आयोग बनायेगी हम उसके सामने अपना पक्ष खुलकर रखेंगे। हरयाणा रक्षावाहिनी ने अपनी बैठक में इसकी स्वीकृति दे दी। मैथ्यू आयोग का गठन हुआ और हरयाणा रक्षावाहिनी का पक्ष मैंने लिखित रूप से भी तीन बार दिया। पहली बार अपना दावा पेश करते हुए, दूसरी बार पंजाब के जवाबदावे के प्रत्युत्तर के रूप में और तीसरी बार जबानी बहस के साथ-साथ लिखित रूप से भी बहस का खुलासा। मैथ्यू आयोग को मानना पड़ा कि फाजिल्का अबोहर के क्षेत्र से बाहर वे किसी दूसरे क्षेत्र के गांव पर विचार नहीं करेंगे, क्योंकि समझौते की भाषा और भाव यही आदेश और निर्देश देते हैं। जब पंजाब के प्रतिनिधियों ने चण्डीगढ के बदले में दूसरे ११ गांव पटियाला जिले के देने की पेशकश की तो उन्होंने स्पष्ट कहा कि यह अधिकार क्षेत्र धारा ७.४ के आधीन बनाये गये आयोग का है, उनका नहीं। मैथ्यू आयोग ने १९६१ और १९८१ की जनगणनाओं में से किसी को प्रामाणिक न मानते हुए जो गांव दोनों जनगणनाओं के अनुसार हिन्दी भाषी थे, उनको तो निर्विवाद रूप से हिन्दी भाषी मान लिया, परन्तु फाजिल्का अबोहर के १०५ गांव जो १९७० में हिन्दी भाषी मानकर हरयाणा को चण्डीगढ के बदले में देने का निर्णय सन्त फतहसिंह की पेशकश पर किया था, उन गांवों में से १९६१ और १९८१ की जनगणनाओं के अनुसार जिनकी भाषा में अन्तर था, उन गांवों का नये सिरे से भाषा की दृष्टि से सर्वेक्षण तथा गणना करवाना मैथ्यू आयोग ने मान लिया। सर्वेक्षण हुआ और हिन्दी भाषी ८५ गांवों की पहिचान हो गई। बीच में १० गांव ऐसे भी मिले जो पंजाबी भाषी सिद्ध हुए, परन्तु चारों ओर से हिन्दी भाषी ग्रामों से घिरे होने के कारण स्थानान्तरण के समय वे भी ८५ हिन्दी भाषी गांवों के साथ ही हस्तांतरित होंगे।

मैथ्यू आयोग सब कुछ मानने और करने के बाद भी पंजाब के इस बेतुके राग से दब गये, क्योंकि ये ग्राम हरयाणा की सीमा से जुड़े हुए नहीं हैं, बीच में एक गांव कन्दूखेड़ा पंजाबी भाषी जो आगया। उस समय हरयाणा के मुख्यमन्त्री ने भी परोक्ष रूप से यह मान लिया कि यदि कन्दूखेड़ा हिन्दी भाषी सिद्ध न हो सके तो हरयाणा को ८५ हिन्दी भाषी गांव नहीं मिल सकेंगे। यह ठीक है कि हरयाणा की सीमा और फाजिल्का अबोहर के ८५ ग्रामों के बीच में कन्दूखेड़ा पंजाबी भाषी गांव पड़ने से धारा ७४ के आधीन ये गांव नहीं मिल सकते। परन्तु जितनी यह बात सत्य है, उतनी ही सत्य यह बात भी है कि ये गांव धारा ७.२ के आधीन हरयाणा में शामिल होने से पंजाब समझौते की भाषा और भावना के अनुसार कोई नहीं रोक सकता।

न्यायमूर्ति मैथ्यू ने धारा ७२ के अन्तिम वाक्य को ध्यान से पढा हो नहीं। वे यह तो समझ गये कि चण्डीगढ के बदले में फाजिल्का अबोहर के गांवों के अतिरिक्त दूसरे गांव नहीं दिये जा सकते, क्योंकि वे गांव तो धारा ७.४ के आधीन हरयाणा को मिलेंगे, उन गांवों को धारा ७२ के अन्तर्गत नहीं दिया जा सकता। परन्तु पता नहीं उन्होंने इस तथ्य से क्यों आखे बन्द करली कि चाहे फाजिल्का अबोहर के गांव हों या और किसी इलाके के गाव। जो गांव हरयाणा की सीमा से जुड़ जायेंगे, वे सभी गाव धारा ७४ के अन्तर्गत सीमा समायोजन में आ जायेंगे। उन्होंने इस तथ्य से भी आंखें बन्द करली कि जो गांव सीमा समायोजन में हरयाणा को मिल सकते हैं, वे गांव चण्डीगढ के बदले में नहीं दिये जा सकते, क्योंकि जिस धारा ७२ के आधीन उनके आयोग की नियुक्ति उस के अन्तिम वाक्य में यह बात स्पष्ट लिखी है। मैं तो यह मानकर चल रहा था कि यदि कन्दूखेड़ा हिन्दी भाषी सिद्ध होगया तो फाजिल्का अबोहर के गांव तो हमको सीमा समायोजन (धारा ७.४) के तहत मिल जायेंगे और चण्डीगढ के बदले में फिर हम दूसरे इलाकों की मांग करेंगे। यदि कन्दूखेड़ा पजाबी भाषी सिद्ध हुआ तो फाजिल्का अबोहर के गांव सीमा समायोजन के गांवों से अलग हो जायेंगे और धारा ७२ के तहत हरयाणा को मिल जायेंगे। इसीलिये जब मैथ्यू आयोग की रिपोर्ट आई तो मुझे आश्चर्य भी हुआ और दुःख भी। मैं स्वयं न्यायमूर्ति मैथ्यू से राममनोहर लोहिया हस्पताल में मिलने गया। वे मेरी बातों का उत्तर नहीं दे पाये और कहा कि अब तो जो होना था होगया। मैंने आपकी केवल एक बात ही तो नहीं मानी, चार बातें तो मानलीं।

वेंकट रमैया आयोग

जब भारत सरकार ने स्वयं निर्णय न लेकर वेंकट रमैया आयोग का गठन किया तो हरयाणा रक्षावाहिनी ने उसका बायकाट किया। क्यों बायकाट किया, यह बात बताने के लिये मैं न्यायमूर्ति वेंकट रमैया से भी मिला। मेरी यह मान्यता थी और उसको वेंकट रमैया आयोग ने भी स्वीकार किया कि यदि वह आयोग फाजिल्का अबोहर के क्षेत्र को हरयाणा को देने पर विचार ही नहीं कर सकता तो वह धारा ७२ के तहत हरयाणा को कुछ दे नहीं सकता। वह केवल वही गांव दे सकता है जो हरयाणा को वैसे ही धारा ७४ के तहत मिल जाने हैं। ऐसी अवस्था में उस आयोग के सामने जाने से क्या लाभ? न्यायमूर्ति वेंकट रमैया के सामने भी १९६१ और १९८१ की जनगणनाओं का विवाद आया। वे ४५,००० एकड क्षेत्रफल के करीब ३० गांव ऐसे छांट पाये जो १९६१ और १९८१ दोनों जनगणनाओं में हिन्दी भाषी थे। परन्तु उन्होंने यह भी स्पष्ट रूप में अपनी रिपोर्ट में लिख दिया कि ये गांव तो हरयाणा को सीमा समायोजन (धारा ७४) के तहत वैसे ही मिल जायेंगे. वे चण्डीगढ के बदले में नहीं दिये जा सकते। वेंकट रमैया आयोग की रिपोर्ट क्योंकि प्रकाशित नहीं हुई है, इसलिये लोगों की अनभिज्ञता का लाभ उठाकर श्री बरनाला इन गांवों को चण्डीगढ के बदले में देने की बेतुकी बात दोहराते रहते हैं। वेंकट रमैया आयोग ७०,००० एकड़ भूमि हरयाणा को देने की बात का क्या आधार मानते हैं, यह मुझे पता नहीं लगा। रिपोर्ट प्रकाशित होने पर ही लग सकेगा। आयोग के कहने पर भारत सरकार ने हरयाणा की राजधानी का सारा व्यय अपने ऊपर ले लिया, यह उस आयोग के द्वारा हरयाणा की उपलब्धि है।

देसाई आयोग

जब देसाई आयोग के गठन की बात बनी, तब पंजाब के अकाली नेताओं ने हिन्दी भाषी गांव पहिचानने के लिये वही तीन शर्तें लिखने को कहा जो मैथ्यू और वेंकट रमैया आयोगों के लिये थीं। इस बात को भारत सरकार ने मान लिया, परन्तु श्री बरनाला की इस बात को नहीं माना कि ४५,००० एकड क्षेत्र की पहिचान जो वेंकट रमैया ने की वह चण्डीगढ के बदले में देना मानलें। भारत सरकार ने यह मुद्दा भी देसाई आयोग को सौंपने का निर्णय कर दिया। अकाली भाग खड़े हुए।

(क्रमशः)

महर्षि दयानन्द सरस्वतीकृत ग्रंथों के क्रय का सुनहरा अवसर

ऋषि बोधोत्सव पर महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी

श्रीमती परोपकारिणी सभा, अजमेर

द्वारा प्रकाशित एवं महर्षि द्वारा रचित अमूल्य ग्रन्थों को अपने पुस्तकालय तथा व्यक्तिगत लाइब्रेरी हेतु खरीदें तथा आर्यसमाज सांताक्रूज बम्बई द्वारा दी जारही—

विशेष छूट का लाभ उठायें

जो संस्था या व्यक्ति श्रीमती परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित वैदिक पुस्तकालय से २००० रुपये या उससे अधिक राशि का साहित्य खरीदेगा, उसे सभा के नियमानुसार दिये जानेवाले कमीशन के अतिरिक्त शेष देय मूल्य पर १० प्रतिशत का विशेष अनुदान आर्यसमाज सांताक्रुज के उपप्रधान व परोपकारिणी सभा के वरिष्ठ सदस्य माननीय श्री ओंकारनाथ जी आर्य बम्बई के सौजन्य से दिया जायेगा।

तथा

भारत के किसी भी क्षेत्र में अपनी निकटतम शाखा तक यह साहित्य नि:शुल्क पहुंचाने की व्यवस्था भारत का सुप्रसिद्ध परिवहन इकानोमिक ट्रांसपोर्ट आर्गेनाइजेशन द्वारा परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्री गजानन्द जी आर्य के सौजन्य से की जायेगी।

वैदिक पुस्तकालय द्वारा प्रकाशित एवं स्टाक में उपलब्ध साहित्य पर यह योजना १५ अप्रैल, ८७ तक प्राप्त आदेशों पर लागू रहेगी। अपना आदेश २५ प्रतिशत राशि के बैंक ड्राफ्ट सहित शीघ्र भेजें।

"महर्षि ग्रंथों के प्रचार व प्रसार में अपना योगदान दें।"

वैदिक पुस्तकालय
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर

आर्ष गुरुकुलों में प्रवेश

विद्वान् बनने के लिये आइये और वेदप्रचार के लिये जाइए। गया समय फिर हाथ आता नहीं। गुरुकुल में पढकर कोई पछताता नहीं। जो पछताता है वह पूरा पढ पाता नहीं। आप मानो न मानो यह बात है सही। जिस प्रकार से अधूरा पानी का घड़ा छिलकता रहता है। पूरा भर जाने पर पानी नही गिरता है। ठीक इसी प्रकार से गुरुकुल में पूर्ण विद्या पा लेने पर कोई भी पश्चात्ताप नहीं करता है, अपितु सौभाग्य मनाता है।

हमतो यहां तक कह सकते हैं कि यदि कोई बालक बनना चाहे तो गुरुकुल में हीरा बन सकता है और बिगड़ना चाहे तो बिगड़ भी सकता है। परन्तु बिगड़ने के अवसर बहुत कम पाते हैं। यदि कोई बालक अधिक विद्या भी न पढ़ पाये परन्तु सदाचारी ही रह जाए तो भी वह भवसागर से पार हो जाए। इन गुरुकुलों में मार्च से मई तक प्रवेश होता है।

—जीवानन्द नैष्ठिक

आर्यसमाज कौल जि० कुरुक्षेत्र का चुनाव

प्रधान-सर्वश्री डा० ताराचन्द, उपप्रधान-कपूरचन्द वर्मा एडवोकेट मन्त्री—बलजीतसिंह, कोषाध्यक्ष—मा० प्रकाशचन्द।

आर्यसमाज सराय बहादुरनगर जि० महेन्द्रगढ़

प्रधान—सर्वश्री दुलीचन्द मिस्त्री, मन्त्री—बाबूलाल, कोषाध्यक्ष—निरंजन।

ग्राम बिराण (श्री गंगानगर) में शिवरात्रि के उपलक्ष्य में आर्य उत्सव सम्पन्न

२५-२६ फरवरी को शिवजी के मेले पर शिवरात्रि के उपलक्ष्य में वेदप्रचार का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इसमें एक विशेषता यह रही कि शिवजी के मन्दिर में पुजारी व समिति ने भादरा व बडोपल से दो मण्डलियां सत्संगियों की बुला रखी थी। मन्दिर में ही २५ फरवरी को सायंकाल पहले वेदप्रचार हुआ, जिसमें सर्वश्री स्वामी सुमेधानन्द जी, स्वामी धर्मानन्द जी, प्रत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी ने आर्यसमाज क्या है, क्या चाहता है, शिवरात्रि पूजा किसकी करनी चाहिये, व्रत व शराब से होनेवाली बुराइयों पर विस्तार से विचार रखे। प्रातःकाल यज्ञ किया गया। उस समय भी स्वामी सुमेधानन्द जी व क्रांतिकारी ने आत्मा परमात्मा व पंच महायज्ञ बारे विस्तार से बताया। रात्रि को पहले वेदप्रचार हुआ, जिसमें स्वामी सर्वदानन्द जी व स्वामी सुमेधानन्द जी ने समाज में फैली बुराइयों तथा धर्म व नारी-शिक्षा पर विचार रखे। ग्राम में पहली बार इस मेले पर आर्यसमाज के प्रचार का अच्छा प्रभाव पड़ा।

आया होली का त्यौहार

कण-कण में उल्लास जगा है,
आशाओं का सूर्य उगा है,
रूप देखकर पुण्य, प्रकृति का-
अब प्रमाद का दनुज भगा है।

मनुज-मनुज के उर आंगन में-
छाया आज असीमित प्यार।
आया होली का त्यौहार॥

खेत, बाग, वन बने सुरम्य,
लगती वसुन्धरा अब रम्य,
प्रेम-दया-ममता-समरसता-
के मृदुभाव प्रभृति प्रकम्य,

प्रकृति वधू की सुन्दरता पर-
होते कोटिक मन बलिहार।
आया होली का त्यौहार॥

पिकी पपीहे का मधु गुंजन,
करता है जन मन अनुरंजन,
मृदुल बयार बना है, निर्मम-
तूफानों का महा प्रभजन,

नव्य उषा की सौम्य रश्मियां-
बिखराती सुख-सौख्य अपार।
आया होली का त्यौहार॥

राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, मुलतानपुर (उ०प्र०)

शोक समाचार

पं० तिरखाराम जी आर्य प्रधान आर्यसमाज लूखी १ मार्च, ८७ को ६५ वर्ष की आयु में स्वर्गारोहण कर गये। पं० जी आर्यसमाज के बड़े उत्साही कार्यकर्त्ता थे। उन्होंने आर्यसमाज की बड़ी सेवा की। हम इस आकस्मिक निधन पर अपनी संवेदना प्रकट करते हैं और भगवान् से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं शोक संतप्त परिवार को इस दुःसह दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—स्वामी व्रतानन्द वैदिक आश्रम, गुगोढ

शराब मानव-समाज की शत्रु है

इससे अवश्य बचें।

आर्यसमाजों तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों से आवश्यक निवेदन

आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापना शताब्दी समारोह १५ से १७ मई तक रोहतक में मनाया जारहा है। इस अवसर पर एक भव्य तथा आकर्षक स्मारिका का भी प्रकाशन किया जारहा है। अतः सभा से सम्बन्धित आर्यसमाजों तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों से आवश्यक निवेदन है कि इस ऐतिहासिक स्मारिका में प्रकाशनार्थ अपने आर्यसमाज तथा आर्यशिक्षणसंस्थाओं का संक्षिप्त परिचय और अधिकारियों के पासपोर्ट साइज के चित्र ३१ मार्च तक सभा कार्यालय रोहतक में भेजने की कृपा करें। स्मरण रखें जिनका परिचय समय पर कार्यालय में प्राप्त नहीं हो सकेगा, उनका विवरण स्मारिका में नहीं छप सकेगा।

स्मारिका में प्रकाशनार्थ आर्यसंस्थाओं और आर्य उद्योग संस्थानों के विज्ञापन भी शीघ्र भिजवाइये।

विज्ञापन दर

१/८ पृष्ठ २५० रु०।	१/४ पृष्ठ ५०० रु०
१/२ पृष्ठ १००० रु०।	१ पृष्ठ २००० रु०

टाइटल २ पर ३००० रु०। टाइटल ३ पर ४००० रु०

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

यज्ञ-समाचार

आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता यज्ञप्रेमी मा. पूर्णसिंह आर्य, मामूरपुर नरेला, दिल्ली ने राजकीय सेवा से निवृत्त के उपलक्ष्य में अपने पौत्र नवीनकुमार के जन्मदिन के अवसर पर २० फरवरी १९८७ से २२ फरवरी तक "सामवेद-पारायण" यज्ञ" गुरुकुल झज्जर के सुयोग्य स्नातक उद्भट विद्वान् श्री यज्ञवीरसिंह शास्त्री व श्री प० देवेन्द्रनाथ जी शास्त्री के ब्रह्मत्व, व गुरुकुल गौतम नगर दिल्ली के वेदपाठी ब्रह्मचारियों द्वारा बड़ी धूम-धाम से सम्पन्न कराया। इस यज्ञ में नगर व आस-पास के गावों के प्रमुख सामाजिक कार्यकर्त्ता व धर्मप्रेमी भाइ-बहनों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। आर्य जी ने इस अवसर पर विभिन्न संस्थाओं को दिल खोलकर दान दिया—

(१) आर्यसमाज नरेला दिल्ली—२१२५-०० (२) आर्यसमाज कालोनी नेरला—११२५-०० (३) आर्ष गुरुकुल आमसेना उड़ीसा—१५०१-०० (४) गुरुकुल वेद विद्यालय गौतमनगर—११११ ०० (५) सी. आर. जेड शिक्षा संस्था सोनीपत—११०१-०० (६) डा० युद्धवीरसिंह ट्रस्ट दिल्ली—११०१-०० (७) आर्य प्र० नि० सभा हरयाणा ध० सभा.—५०१-०० (८) आर्ष कन्या गुरुकुल नरेला—१०१-०० (९) गुरुकुल झज्जर रोहतक—१०१-०० (१०) स्वामी ओमानन्द गुरुकुल झज्जर—१०१-०० (११) सर्वहितकारी साप्ताहिक—५१-०० (१२) स्वामी अमृतानन्द नरेला—५१-०० (१३) ब्रह्मा दक्षिणा —३००-०० (१४) वेदपाठी दक्षिणा—५००-००

संयोजक—रणवीरसिंह शास्त्री

आर्यसमाज शिवाजी नगर गुड़गांव का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री चन्दनसिंह आर्य, उपप्रधान-बखशीराम, जी. आर. महेंदीरत्ता, मन्त्री—कन्हैयालाल आर्य, उपमन्त्री—यशपाल, कोषाध्यक्ष—बसन्तीलाल चावला, पुस्तकाध्यक्ष—इन्द्रसैन, लेखानिरीक्षक चरणसिंह।

सभा के भजनोपदेशक पं० मुरारीलाल बेचैन द्वारा वेदप्रचार

सभा के भजनोपदेशक पं० मुरारीलाल बेचैन ने अपने अन्य साथियों श्री धर्मपाल तथा श्री राधेश्याम ने ९ मार्च को ग्राम सालौट तथा १०-११ मार्च को ग्राम कंसरेटी जि० रोहतक में प्रभावशाली भजनों द्वारा वेदप्रचार किया। सभी स्थानों पर शराब जैसी सामाजिक बुराइयों का खण्डन तथा वैदिक सिद्धांतों का मण्डन किया गया।

इससे पूर्व श्री बेचैन जी ने जिला फरीदाबाद में गुरुकुल गदपुरी, बदरपुर, ताजपुर, एतमादपुर, मोडबन्द, बल्लबगढ, ताजपुर पहाड़ी, चक्काई लेट तथा आर्यसमाज अमर भवन फरीदाबाद चरोड़ी, बदरपुर, सेहतपुर आदि में भी वेदप्रचार किया।

आचार्य चाहिये

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा के लिये आचार्य की तुरन्त आवश्यकता है। आचार्य पद के लिये ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का गहरा अध्ययन तथा दर्शन, व्याकरण व अंग्रेजी की विशेष योग्यता आवश्यक है। प्रौढ़ सज्जनों को प्राथमिकता दी जायेगी।

पता—रामनाथ सहगल मन्त्री, महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट, आर्यसमाज मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

(पृष्ठ १ का शेष)

बन्द कराने के लिए सभा के शराबबन्दी आंदोलन को पूरा सहयोग प्रदान करें।

सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह ने अपने अध्यक्षीय भाषण में उन युवकों तथा महिलाओं को बधाई दी, जिन्होंने ७ मार्च को सोनीपत में ठेकों की नीलामी के अवसर पर प्रदर्शन किया था। आपने पुलिस द्वारा इस अवसर पर लाठीचार्ज की कड़े शब्दों में निन्दा करते हुए कहा कि आज ऋषि दयानन्द और गांधी के देश में शराब विरोधी प्रदर्शनकारियों पर लाठीचार्ज करना शर्मनाक बात है। पुलिस शराब के ठेकेदारों को सहायता तथा शराब विरोधी प्रदर्शनकारियों की पिटाई करके अपनी बुद्धि का दीवाला निकाल रही है। आपने कहा कि सभा ने इस काड के जिम्मेवार पुलिस अधिकारियों के विरुद्ध कार्यवाही करने के लिए मुख्यमन्त्री को पत्र भेजा है तथा उनसे सम्पर्क करके भी इस प्रकार के ठेकों को बन्द करवाने पर बल देंगे कि जिन पंचायतों ने शराबबन्दी प्रस्ताव भेज रखे हैं उन ठेकों की नीलामी रद्द करें। ग्रामीण नवयुवकों की ओर से श्री ईश्वरसिंह ने सभाप्रधान जी का स्वागत करते हुए कहा कि हम एक अप्रैल से नया ठेका किसी भी अवस्था में नहीं खुलने देंगे। श्री भलेराम विधायक ने भी ३१ मार्च तक इस ठेके को बन्द करवाने में सहयोग करने का वचन दिया। सभा उपदेशक प० अर्जुनदेव आर्य ने इस अवसर पर "जुम जाती बात मर्द के" का गीत सुनाकर सभी को भावविभोर कर दिया।

सम्मेलन की समाप्ति पर सभाप्रधान जी ने ग्राम के सरपंच श्री रणधीरसिंह तथा धरणे पर बैठे नरनारियों को आश्वासन दिया कि सभा इस ठेके को बन्द करवाने के लिए हर सम्भव सहायता करेगी।

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज महम जि० रोहतक के भूतपूर्व प्रधान सेठ परसराम आर्य का दिनांक २-३-८७ को पांचभौतिक शरीर पूरा होगया। उनके स्वर्गवास हो जाने से आर्यसमाज महम को अत्याघात हुआ है। आर्यसमाज महम के सभी अधिकारी एवं सदस्यगण परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा को सद्गति एव शोक सतप्त परिवार को इसे महन दुःख को सहन करने की प्रार्थना करते हैं।

—मन्त्री आर्यसमाज महम

गुडगांव में शराब के ठेकों की नीलामी के विरोध में प्रदर्शन

१२ मार्च को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के महोपदेशक ब्र० महेन्द्र शास्त्री के संयोजन में शराब के ठेकों की नीलामी के विरोध में पंचायत भवन गुडगांव पर प्रदर्शन किया गया, जिसमें मुख्य रूप से आचार्य सत्यप्रिय जी मुनि तिजारा, स्वामी सिंह मुनि बादशाहपुर, पं० ईश्वरचन्द जी शास्त्री, प्रो० प्रभुदयाल यादव, श्री छत्तरसिंह जी बोहरा, ब्र० सतीशकुमार वजीराबाद, राज निर्भीक सम्पादक 'किसान की आह', ठा० धर्मसिंह अध्यक्ष बी एम. एस., श्री जितेन्द्रकुमार जी पत्रकार, ब्र० सोमदेव गुरुकुल कालवा (जींद), वैद्य श्रीचन्द, श्री धर्मवीरसिंह सरपच दौलताबाद, श्री धर्मवीर, देवेन्द्र, वीरेन्द्र माकड़ौला तथा श्री वेदप्रकाश गाडौली आदि ने प्रदर्शन में बढ़-चढ़कर भाग लिया तथा अन्य सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने सहयोग प्रदान किया। नीलामी में नाथुपुर, चौम्बा खेड़ा, दमदमा में शराब के ठेकों को वर्ष ८७-८८ के लिए बन्द कर दिया गया। परन्तु गढी हरसरु के शराब ठेके का प्रस्ताव समय पर करवाने के बाद भी उसे बन्द नही किया। ऐसा लगता है सरकार यहां दोहरी चाल से काम ले रही है। एक तरह मुख्यमन्त्री महोदय यह आश्वासन देते हैं कि शराब का ठेका बन्द करने के लिए कोई भी पंचायत प्रस्ताव पास करती है तो वह शराब का ठेका बन्द हो जावेगा। लेकिन दूसरी तरफ नौकरशाही एव सरकार प्रस्तावों को रद्दी की टोकरी में फेंक, पुन: किसान मजदूर का खून पोने के लिए नीलामी लगा देते हैं। गढी हरसरु के लोगों ने ब्र० महेन्द्र शास्त्री को शीघ्र ही धरने के लगाने हेतु आमन्त्रित किया है और इस बात के लिए जोर दिया कि हम अपने ग्राम में शराब के ठेके को किसी भी अवस्था में चलने नही देंगे।

गुरुकुल भैंसवाल कलां का सफल उत्सव

गुरुकुल भैंसवाल कलां जि० सोनीपत का ७-८ मार्च को वार्षिकोत्सव सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी कर्मपाल, श्री महेन्द्रकुमार शास्त्री, श्री प्रतापसिंह शास्त्री, प्रो० सत्यवीर विद्यालंकार सभा उपमन्त्री, सभा उपदेशक पं सुखदेव शास्त्री आदि के अतिरिक्त हरयाणा के सिचाई एवं विद्युत मन्त्री श्री शमशेरसिंह सुरजेवाला आदि नेताओं के व्याख्यान तथा श्री सत्यवीरसिंह शिष्य, चौ. ईश्वरसिंह एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की भजनमण्डलियों पं. चिरंजीलाल, पं. मुरारीलाल बेचैन के प्रभावशाली भजन हुए। इस शुभावसर पर विभिन्न दानियों की ओर से ६१ हजार रुपये गुरुकुल के लिए दान प्राप्त हुआ।

उत्सव को सफल करने के लिए गुरुकुल सभा के प्रधान श्री जगजीतसिंह मलिक, मन्त्री श्री धर्मवीर शास्त्री एवं अधिष्ठाता श्री कपिलदेव शास्त्री आदि का योगदान सराहनीय रहा।

—धर्मचन्द शास्त्री उपमन्त्री

वेदप्रचार का प्रशंसनीय कार्य

वेदोपदेशक महाविद्यालय ब्रह्मकुटी वेद मन्दिर ब्रजघाट (गाजियाबाद) के अधिष्ठाता स्वामी वेदानन्द जी 'वैदिक' ने २० से २७ फरवरी तक 'श्री अखण्ड वेदांत भवन' मवाना (मेरठ) में वेदकथा की। जिससे श्रोताओं में वैदिक सिद्धांतों के प्रति आस्था उत्पन्न हुई। पुराणों में परस्पर विरोधी बातों को सुनकर तथा शका समाधान के द्वारा आश्चर्य एव पुराणों पर अनास्था हुई। श्रोताओं पर वैदिक सिद्धांतों का अपूर्व प्रभाव पड़ा। भविष्य में भी इसी प्रकार प्रचार करने का स्वामी जी को निमन्त्रण दिया गया।

इस उल्लिखित वेदोपदेशक महाविद्यालय में ३ विद्वान् वेदप्रचारार्थ जीवन समर्पण की पवित्र भावना से कार्यरत हैं।

हरयाणा में आर्यसमाजों गुरुकुलों के वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज मुवाना जि० जींद	२० से २२ मार्च
,, अराइयांपुरा जि० करनाल	२० से २२ ,,
गुरुकुल मटिण्डू जि० सोनीपत	२० से २२ ,,
आर्यसमाज फरल जि. कुरुक्षेत्र	२४ से २६ ,,
,, घरौंडा जि करनाल	२४ से २६ ,,
,, दुजाना जि रोहतक	२७ से २६ ,,
,, रादौर जि. कुरुक्षेत्र	२५ से २६ ,,
,, कौल जि. कुरुक्षेत्र	२७ से २६ ,,
,, कारद जि. करनाल	२७ से २६ ,,
,, छानी बड़ी (राजस्थान)	२८ से ३० ,
गुरुकुल कुरुक्षेत्र	३ से ५ अप्रेल
आर्यसमाज सोहना जि गुडगांव	३ से ५ ,,
,, सातरोड कलां जि हिसार	७-८ ,,
,, नरवाना जि. जींद	१० से १२ ,,
,, माडल टाउन सोनीपत	१७ से १६ ,,
,, जेकमपुरा गुडगांव	१७ से १६ ,,
,, मिल बाजार पानीपत जि करनाल	१ से ३ मई

आर्यसमाजों तथा गुरुकुलों के अधिकारियों से नम्र निवेदन है कि मई में अपने उत्सवादि न रखें, क्योंकि मई में सभा का स्थापना शताब्दी समारोह रोहतक में मनाया जारहा है, जिसमें सभी आर्यसमाजों तथा आर्य संस्थाओं के कार्यकर्त्ताओं को सादर आमन्त्रित किया गया है।

मई के प्रथम सप्ताह में हरयाणा के चारों ओर से प्रचार यात्राओं का भी आयोजन किया गया है। जो आर्यसमाज अपने उत्सव अप्रेल मास में करना चाहते हैं, वे उनको सूचना २८ मार्च तक सभा को देने का कष्ट करें, ताकि प्रबन्ध करने में सुविधा रहे।

—रघुवीरसिंह

वेदप्रचाराधिष्ठाता एवं संयोजक शताब्दी समारोह

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में प्रवेश

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में ७ से ६ वर्ष के बालकों के प्रथम से तृतीय श्रेणी में प्रवेश १ अप्रैल से ३० अप्रेल तक। आधुनिकतम निःशुल्क आवास, शिक्षा, स्वानुशासनात्मक सुरुचिपूर्ण वातावरण में शारीरिक, बौद्धिक विकास हेतु प्रति १६ बालकों पर एक अध्यापक। हरयाणा और गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार की अष्टम एवं दशम श्रेणी की परीक्षायें।

देशी घी, दूध, फलों से पुष्ट स्वास्थ्यवर्धक भोजन। शुल्क मात्र १५० रुपये मासिक। अधिक जानकारी के लिए गुरुकुल कार्यालय से विवरणपत्रिका मंगवायें।

—प्राचार्य

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० 23207/73 रजि० न० P/R फोन ४८१६

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्



सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभा मन्त्री सह-सम्पादक—डा० यज्ञवीर

वर्ष १४, अङ्क १८ २८ मार्च, १९८७ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

दर्शनों का परिचय और उद्देश्य

पं० धर्मदेव "मनीषी" दर्शनाचार्य, गुरुकुल कालवा

शास्त्र के अनुसार दर्शन का अर्थ है—'दृश्यतेऽनेन इति दर्शनम्' जिसके द्वारा देखा जाये। क्या देखा जाये? वस्तु का तात्विक स्वरूप। इस जगत् का सच्चा स्वरूप क्या है? यह जड़ है या चेतन? इस संसार में हमारा कर्त्तव्य क्या है? जीवन को श्रेष्ठ, सुन्दर और सुखी बनाने के साधन क्या हैं? हम कौन हैं? परमात्मा की प्राप्ति कैसे हो सकती है? इन और इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर देना दर्शनों का कार्य है। यहां दर्शनों का परिचय और अन्तिम उद्देश्य मोक्षप्राप्ति के साधन प्रस्तुत किये जारहे हैं।

न्यायदर्शन का परिचय

न्यायदर्शन के आदि प्रवर्त्तक महर्षि गौतम हैं। महर्षि गौतम से पूर्व का कोई ऐसा ग्रथ नही, जिसमें तर्क प्रमाणवाद आदि का नियमबद्ध विवेचन हो। इस ग्रन्थ में पांच अध्याय हैं। प्रत्येक अध्याय में दो-दो आह्निक हैं और ५३८ सूत्र हैं। प्रथम अध्याय में उद्देश्य तथा लक्षण और अगले अध्यायों में पूर्वकथन की परीक्षा की गई है। 'न्याय' शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में होता है, परन्तु दार्शनिक साहित्य में न्याय का अर्थ है—'नीयते प्राप्यते विविक्षितार्थसिद्धिरनेन इति न्याय:' जिसके द्वारा किसी प्रतिपाद्य विषय की सिद्धि की जा सके, जिसकी सहायता से किसी निश्चित सिद्धांत पर पहुचा जा सके, उसी का नाम 'न्याय' है।

न्यायदर्शन का उद्देश्य

अरण्यगुहापुलिनादिषु योगाभ्यासोपदेश:। ४।२।४२

अरण्य, पर्वत, गुहा तथा एकांत बालुमय नदी का तीर इत्यादिकों में योग—समाधि के अभ्यास करने का योगशास्त्र में उपदेश किया है। समाधि का उत्कर्ष प्राप्त होने में जो रागादि दोषों से विघ्न होते हैं, उन्हीं को दूर करने के लिये ही अरण्य, पर्वत, गुहा तथा एकांत=निर्जन बालुकामय नदी तीर आदि देशों में योगाभ्यास करने का योगशास्त्र में उपदेश किया गया है।

तदर्थं यमनियमाभ्यामात्मसंस्कारो योगाच्चाध्यात्मविध्युपायै:। ४।२।४५

अपवर्ग के लिये योगशास्त्र में कहे हुए यम तथा नियमों से आत्मा का अधर्मनाश तथा धर्मवृद्धिरूप संस्कार और योगशास्त्र में कहे हुए तपश्चर्या प्राणायाम इत्यादि आत्मविषय के उपायों का अनुष्ठान करना चाहिये।

उस अपवर्ग की प्राप्ति के लिये योगशास्त्र में कहे हुए अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह रूप यम एवं शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय तथा ईश्वरप्रणिधान नामक नियमों से आत्मा का संस्कार करना चाहिये, अर्थात् आत्मा के सम्पूर्ण अधर्म नष्ट होकर धर्म की वृद्धि हो, ऐसा आत्मा को मुक्ति प्राप्ति की योग्यता प्राप्त होने का उपाय करना चाहिये तथा योगशास्त्र में कहे हुए तपश्चर्या प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान तथा धारणा रूप अध्यात्मविधि भी अपवर्ग प्राप्ति के लिये करनी चाहिये।

तदत्यन्तविमोक्षोऽपवर्ग:। १।१।२२

उस=दु:ख से अत्यन्त विमोक्ष=छुटकारा अपवर्ग नामक बारहवां प्रमेय पदार्थ है।

जिसके मुख्य उद्देश्य से ग्यारह आत्मा, शरीर, इन्द्रिय, अर्थ, बुद्धि, मन, प्रवृत्ति, दोष, प्रेत्यभाव, फल, दु:ख पर्यन्त प्रमेय पदार्थों का पूर्व सूत्रकार ने वर्णन किया है, वह अपवर्ग=मोक्ष द्वादशवां पदार्थ है। पूर्वोक्त गौण तथा मुख्य दु:खों से छूटना अर्थात् इसी मोक्ष में सम्पूर्ण दु:खों का उच्छेद (अत्यन्त निवृत्ति) होता है।

वैशेषिक दर्शन का परिचय

वैशेषिक दर्शन के प्रणेता महर्षि कणाद हैं। खेतों मे अन्न के कण बीनकर अपने उदर की पूर्ति करने के कारण उनका यह नाम पड़ा था। इस ग्रंथ में दस अध्याय हैं। प्रत्येक में दो-दो आह्निक हैं और सूत्रों की संख्या ३७० है। महर्षि कणाद ने भी पहले ही अध्याय में अपने दर्शन का उद्देश्य बतला दिया है। वह उद्देश्य है नि:श्रेयस अथवा मोक्ष की प्राप्ति। वैशेषिक का अर्थ है—"विशेषं पदार्थमधिकृत्य कृतं शास्त्रं वैशेषिकम्" विशेष (पृथिव्यादि परमसूक्ष्म भूततत्त्वों का नाम विशेष है) नामक पदार्थ को मूल मानकर प्रवृत्त होने के कारण इस शास्त्र का नाम वैशेषिक है।

वैशेषिक दर्शन का उद्देश्य

अभिषेचनोपवासब्रह्मचर्यगुरुकुलवासवानप्रस्थयज्ञदानप्रोक्षणदिङ्नक्षत्रमन्त्रकालनियमाश्चादृष्टाय। ६।२

मन्त्रपूर्वक सिर पर जल छिड़कना=अभिषेचन, भोजन न करना=उपवास, भूमिशयनादि ब्रह्मचारी के नियमों का पालन=ब्रह्मचर्य, साङ्गोपाङ्ग वेद पढ़ने के लिये गुरु के समीप रहना=गुरुकुलवास, गृहस्थ को त्यागकर वन मे रहकर वेदोक्त कर्म करना=वानप्रस्थ, अग्निहोत्रादि कर्म=यज्ञ, गौ आदि पदार्थों का सत्पात्रों को देना=दान, यज्ञ के स्रुवा आदि पदार्थों को जल से शुद्ध करना=प्रोक्षण, पूर्वादि दिशाओं में नियत रूप से यजमानादि का बैठना=दिक्, पुष्य आदि विहित नक्षत्रों में संस्कारादि कर्म करना=नक्षत्र, ओं भूर्भुव: स्व: द्यौरिव भूम्ना० इत्यादि मन्त्र पढ़कर अग्न्याधानादि कर्म करना=मन्त्र, उत्तरायण आदि समय विशेष में कर्म करना=काल, ये नियम अदृष्ट फल के लिये और दृष्ट फल के लिये हैं।

आत्मकर्मसु मोक्षो व्याख्यात:। ६।१७

आध्यात्मिक कर्मों के करने पर मोक्ष वेद में कहा गया है।

(क्रमश:)

आर्य प्रतिनिधि सभा का शताब्दी समारोह क्यों ?

(१८८५ से १९८५ तक का संक्षिप्त विवरण)

प्रस्तुतकर्ता—सुखदेव शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा

गतांक से आगे—

साधारण हिन्दू जनता और परिवार तथा बिरादरी से बहिष्कार का आर्यों पर यह प्रभाव पड़ा कि वे सब संगठित होगये। उनका विस्तृत परिवार बन गया।

यद्यपि उस समय कोई विधिवत् वेदप्रचार विभाग न था, सभी आर्य भाई आपस में मिलकर सभी जगह जा-जाकर अपने आप ही प्रचार किया करते थे। आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना से यह लाभ हुआ कि आर्यसमाजी संगठित होगये थे। स्वामी ईश्वरानन्द, शंकरानन्द आदि महर्षि काल के प्रचारक थे। उसी काल में ही श्री प. आर्यमुनि जी आर्य-समाज के प्रकांड पण्डित थे। उन्होंने दर्शन शास्त्रों पर भाष्य लिखकर एक नई भाष्य करने की परम्परा कायम की। इसी प्रकार सभी आर्य-समाजी घूम-घूमकर पंजाब में प्रचार कर रहे थे। स्वामी आलाराम भी उस समय बड़े प्रभावशाली उपदेशक थे, किन्तु बाद में वे भी पौराणिकों के अड्डे चढ़कर, हटकर आर्यसमाज को गालियां देने लगे, किन्तु आर्यों का वे भी फिर से मुकाबला न कर सकते थे।

इधर हरयाणा में भी पं० बस्तीराम, स्वामी भीष्म आदि अपने प्रचार से पाखण्ड गढ़ पर गोले बरसा रहे थे। डा० रामजीलाल हिसार में, चौ० नवलसिंह रोहतक में आर्यसमाज का प्रचार करते थे। प्रत्येक आर्यसमाजी उपदेशक था, क्रांति मच गई थी।

उधर पंजाब में महता अमीचन्द जो महर्षि की दया से सभी बुराई छोड़कर आर्य बने थे, अपने भक्ति रस के भजन सुनाकर नास्तिकों के भी दिल दहला दिया करते थे।

ऊपर के संक्षिप्त विवरण से यह स्पष्ट होगया है कि महर्षि के बाद उत्साही आर्यवीरों ने आर्यसमाज के कदम जमा दिये थे और उन्होंने हिन्दुओं के धार्मिक विचारों पर क्रांतिकारी प्रभाव डालने के साथ-साथ उनके सामाजिक सुधारों की ओर भी ध्यान देना आरम्भ कर दिया था। आर्यसमाज के प्रभाव से त्यौहारों और संस्कारों के रूप बदल रहे थे। विवाहों पर नाचगान समाप्त हो रहा था। बालविवाह के विरुद्ध जोर-दार आंदोलन शुरु होगया था। विधवा विवाह के साथ ही आर्यसमाज स्त्री-शिक्षा के क्षेत्र में पांव जमा चुका था। आर्यसमाज ने सत्यार्थप्रकाश के आधार पर समाज निर्माण का कार्य शुरु कर दिया था। मूर्तिपूजा का जबर्दस्त खण्डन प्रारम्भ होगया था। जिसकी शुरुआत महर्षि ने काशी से ही प्रारम्भ करदी थी। चारों तरफ कुप्रथाओं पर मारामार हो रही थी, एक तूफान-सा उठ खड़ा था। देश में ही नहीं, विदेशों में भी इसका शोर मच गया था। १८७७ में मिस्टर अल्कार व मेडम ब्लवेडेस्की यह क्रांति का शोर सुनकर सीधे अमेरिका से महर्षि से आकर मिली और उन का शिष्यत्व स्वीकार किया। अमेरिका के मिस्टर एण्ड्रूज ने भी आर्य-समाज को एक आग बताया था, जो महर्षि के हृदय में पैदा हुई थी। इधर ईसाई, मुसाई, गोसाईं, किरानी, पुरानी सब अपनी किताबों को लेकर भागे। उनके पृष्ठ पलट-पलट कर उनमें परिवर्तन करने लगे। वेदों के भाष्यकार अंग्रेज मोक्षमूलर, ग्रिफिथ, विलसन आदि भी चौकन्ने होगये थे। इस आर्यसमाजरूपी आग में सबसे बड़ी आहुति पंजाब के ही लोगों ने दी थी। सत्यार्थप्रकाश को पढ़कर साधारण-सा आर्यसमाजी भी बड़े-बड़े पन्थाइयों से शास्त्रार्थ की टक्कर लेने लगा था। शास्त्रार्थ के दंगल में कबड्डी डालकर लंगोट घुमा-घुमाकर सबको ललकारा गया था। डंके की चोट पर यह कहा जारहा था—

"नक्कारा वेदधर्म का बजता है, आये जिसका जी चाहे"। उधर पंजाब में बजवाड़ा के प. गंगाराम जी ने, जो उन दिनों पश्चिमी पंजाब के जिला मुजफ्फरगढ़ में ओवरसियर थे, एक नया शुद्धि आंदोलन शुरु किया। जिला मुजफ्फरगढ़ में उन दिनों हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच की एक जाति थी, जिसे "ओड" कहते थे। लाखों ओडों को यज्ञो-पवीत देकर आर्यसमाज में प्रविष्ट कर लिया। परिणामस्वरूप शताब्दियों के बिछुड़े भाई स्थान-स्थान पर गले मिलने लगे। हिन्दू समाज का एक पिछड़ा भाग दूसरों के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने लगा। आज से ८० साल पहले इस प्रकार का आंदोलन चलाना आर्यसमाज का ही साहसिक कार्य था। इसके पश्चात् तो इस कार्य को प० लेखराम व स्वामी श्रद्धानन्द जी ने बड़ी शक्ति के साथ प्रारम्भ किया था। यदि इस शुद्धि के कार्य में १९२४ में गांधी जी व कांग्रेस रोड़े न अटकाते तो आज पाकिस्तान न बनता। इधर हरयाणा के जिला गुडगांवा में आज मेवात में खुले रूप से गोहत्या न होती, आज मेवात मिनी पाकिस्तान का रूप न लेता। १९४७ में सब मेव मेवात छोड़कर पाकिस्तान चले जाते। सुन्दर हरयाणा सुख से बसता, यह भी गलती गांधी जी व विनोबाभावे ने की, जो मेव पाकिस्तान चले गये थे उन्हें भी वापस बुला लिया। यदि सरदार पटेल गृहमन्त्री न होते तो आज सारे हरयाणे में उत्तरप्रदेश की तरह से मुसलमान रह जाते। इसकी अधिक चर्चा आगे चलकर करेंगे।

१८९० में गुरुदत्त विद्यार्थी का व ला० साईंदास, जो अपने जीवन पर्यन्त आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान रहे, का देहांत होगया था। इन दोनों नेताओं के चले जाने पर प० लेखराम ने आर्यसमाज का काम सम्भाला। पण्डित लेखराम १८७५ में पुलिस में भरती होगये थे। आर्य-समाज से प्रभावित होकर उन्होंने १८८४ में नौकरी छोड़ दी थी। १८८२ में उन्होंने अजमेर जाकर महर्षि दयानन्द के दर्शन किये थे। महर्षि से प्रेरणा पाकर आर्यसमाज के प्रचार-कार्य में जुट गये। १८८४ से १८९७ तक केवल १३ वर्ष उन्हें आर्यसमाज का काम करने को मिले। इन १३ वर्षों में उन्होंने अपना एक-एक क्षण आर्यसमाज को अर्पण कर दिया। प्रचार, शंका समाधान, शास्त्रार्थ और अपने भोले-भाले भाइयों की धर्म-रक्षा के अतिरिक्त यह पहले व्यक्ति थे जिन्हें पहली बार आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र लिखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इन सब कामों के अतिरिक्त इस थोड़े से समय में उन्होंने आर्य-समाज की छोटी-बड़ी ३३ पुस्तकें लिखीं। १८९७ में उनके बलिदान होने के पश्चात् स्वामी श्रद्धानन्द जी ने संकलित करके "कुलियात आर्य मुसाफिर" के नाम से प्रकाशित कराया।

पं० लेखराम का उर्दू, फारसी और अरबी भाषाओं का वि[illegible] अध्ययन था। जिसके द्वारा उन्होंने इस्लाम को ठीक-ठीक समझकर आर्यसमाज द्वारा इस्लाम के खण्डन का नया आंदोलन शुरु किया और शुद्धि का चक्कर चलाकर मुसलमान बननेवाले हिन्दुओं को वापस वैदिक-धर्म में दीक्षित किया गया। निश्चय ही उस समय ये दोनों आंदोलन सर्वथा नये थे। मुसलमानों के लिए यह बात असहनीय थी। यह काल आर्यसमाज के प्रचार का काल था। आर्यसमाज के प्रायः प्रसिद्ध प्रचारक इसी काल में हुए। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने अपने वेदप्रचार विभाग की स्थापना करली थी। इस समय सभा के पास १५ उपदेशक विद्वान् वक्ता थे। स्वतन्त्ररूप से प्रचार करनेवालों की संख्या इसके अति-रिक्त थी। इसी काल में जगराव के प० कृपाराम सन्यास लेकर स्वामी दर्शनानन्द बन गये थे। स्वामी दर्शनानन्द ने आर्यसमाज का बहुत अधिक प्रचार किया। अनेकों पुस्तकें लिखीं, दर्शनों का सरल भाषा में अनुवाद किया। रोजाना एक ट्रैक्ट लिखकर ही भोजन करते थे। अपनी सारी सम्पत्ति का उस समय का लाखों रुपया गरीब निर्धन छात्रों में बांट दिया। अनेकों गुरुकुल खोले, जिनमें पढ़कर अनेक योग्य विद्वान् आर्यसमाज को मिले। साधारण हिन्दी जाननेवाले भी दर्शनानन्द ग्रंथ संग्रह पुस्तक पढकर दर्शनों के विषय में तथा वैदिक सिद्धांतों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

(क्रमशः)

"जिन ढूँढा तिन पाइया गहरे पानी पैठ"

पंजाब समझौते के फलितार्थ और हरयाणा के हित

—प्रो० शेरसिंह अध्यक्ष, हरयाणा रक्षावाहिनी

गतांक से आगे—

मैंने देसाई आयोग को एक पत्र लिखा, जिसमें धारा ७२, धारा ९.३ और आयोगों के लिये निश्चित की हुई शर्तों की खोलकर व्याख्या की और पंजाब समझौते की भाषा और भावना के अनुसार ही निर्णय करने के लिये कहा। मैथ्यू आयोग तथा वेंकट रमैया आयोग की असफलता के कारण भी लिखे और जिन तथ्यों को उन्होंने माना, उनका भी उल्लेख किया। वह पत्र समाचारपत्रों में छप चुका है। उस पत्र की प्रतिलिपि प्रधानमन्त्री को भी भेजी। प्रधानमन्त्री ने उसको ध्यान से पढ़ा और मुझे बड़ा सन्तोष हुआ जब यह पता चला कि मेरी व्याख्या को उन्होंने ठीक माना है। २० जनवरी, १९८७ के सवाददाता सम्मेलन में बोलते हुए उन्होंने उसी व्याख्या को स्पष्ट शब्दों में दोहराया। इन सब बातों का परिणाम यह निकला कि फाजिल्का अबोहर का इलाका हरयाणा को मिलने की बात जो लोग भुला बैठे थे, उनकी सोई हुई आशायें फिर जाग उठीं और चण्डीगढ़ के बदले फाजिल्का अबोहर हरयाणा को मिलने की मांग सब जगह सार्वजनिक रूप से की जाने लगी। जब तक फाजिल्का अबोहर मिल न जाये, तब तक स्थिर रूप से यह मांग मजबूती से करते रहना चाहिये, बच्चों के झूमा झूमी खेल की तरह चढ़ती उतरती नहीं रहनी चाहिये।

रावी व्यास का पानी

सन्त कबीर ने ठीक ही कहा है—समुद्र के किनारे बैठे रहने से तो मोती हाथ नहीं लगते उनको ढूंढने के लिये तो गहरे पानी में उतरना पड़ता है, गोते लगाने पड़ते हैं, तभी मोती हाथ लग पाते हैं। समझौते की धारा ९ के सम्बन्ध में भी विचारसागर में गोते लगाना शुरु किया। इस धारा के आरम्भ में ही थोड़े से मथन के बाद एक मोती हाथ लगा, वह मोती था किसान शब्द। इस धारा में लिखा था कि १ जुलाई १९८५ को जो पानी पंजाब हरयाणा और राजस्थान के किसानों ने अपने खेत में लगा लिया वह तो उसका होगया। किसान के खेत में कितना पानी लगा, इसका आंकने और कूतने का काम एक न्यायाधिकरण को सौंपा जायेगा और वही न्यायाधिकरण हिसाब लगाकर बचे हुए पानी का पंजाब और हरयाणा के बीच बंटवारा करेगा।

पंजाब के भाई तो इस खुशफहमी में थे कि क्योंकि जिन स्थलों से पंजाब हरयाणा और राजस्थान का पानी नाप कर छोड़ा जाता है, उन पर नियन्त्रण तो पजाब का है, वह जो चाहे १ जुलाई, १९८५ के दिन वहां से छोड़े हुए पानी की मात्रा अलग-अलग प्रांतों की बता दे। इस हालत में जो पानी हरयाणा में छोड़ा गया, केवल वही हरयाणा को मिलेगा, उससे अधिक नहीं। किसान शब्द जो आगया, उसने पंजाब की सारी हवा निकाल दी। किसान के खेत में जो पानी मिला, उसका एक-एक दिन का हिसाब कौन रख सकता है, वर्षा होने पर वह पानी लेने से बचता भी है। किसान को एक बून्द पानी भी मुफ्त नहीं मिलता, वह जो पानी उपयोग में लाता है, उसका पैसा सरकार को देता है। किसान ने कितने पानी का उपयोग किया, यह जलकर के रूप में दिये हुए पैसे से ही लग सकता है। रावी व्यास का पानी १९७९ में आने लगा। उससे पहिले उन नहरों पर किसानों ने कितना जलकर के रूप में दिया और १ जुलाई, १९८५ से पहिले अन्तिम बार कितना रुपया जलकर के रूप में दिया, उसी के आधार पर पानी की मात्रा जिसका उसने उपयोग किया उसका हिसाब लगाया जा सकता है। इन दोनों के अन्तर से रावी व्यास का पानी किसान ने लिया, उसका ठीक हिसाब लगेगा। बचा हुआ पानी इस प्रकार मालूम होने पर उसका बटवारा कैसे हो, इस पर भी विचार किया। यह स्पष्ट है कि बचे हुए पानी को बांटने से पहिले यह निर्णय करना होगा कि रावी व्यास के पानी में कितना हिस्सा पंजाब का होना चाहिये और कितना हरयाणा का। इस सम्बन्ध में अनेक समितियां पंजाब के इन्जीनियरों और भारत सरकार के इन्जीनियरों की काम करती रही हैं और उन सब की रिपोर्टें भारत सरकार के पास मौजूद हैं। इराडी ट्रिब्यूनल को इन सब रिपोर्टों को देखकर पहिले दोनों प्रांतों के हिस्से निश्चित करने चाहियें। ऐसा कर लेने के बाद तो बचे हुए पानी का बटवारा सरल हो जाता है। बचे हुए पानी में से किसी प्रांत को उतना ही पानी मिलना चाहिये, जितना पानी उनके हिस्से का बचा हो। यदि उस प्रदेश के किसानों ने अपने हिस्से का पूरा पानी ही ले लिया तो उसको बचे हुए पानी में से कुछ भी नहीं मिलना चाहिये।

पंजाब समझौते की धारा ९ में पानी के बटवारे का क्या सिद्धांत होगा, इसके बारे में कुछ लिखा ही नहीं। परन्तु सहजबुद्धि से कोई भी समझ सकता है कि बाकी बचे हुए पानी में से उतना ही पानी मिल सकेगा जो उसके हिस्से का बचा हुआ होगा। पंजाब के भाई ऐसे स्पष्ट सर्वमान्य सिद्धांतों को भी ताक पर रखकर बड़ा प्रदेश होने के नाते ६०% की माग कर रहे थे। वे प्रारम्भ तो यहां से करते थे कि पानी तो सारा पजाब का ही है, क्योंकि ये नदियां पंजाब की धरती से गुजरती हैं। हरयाणा को तो जो पानी मिल गया, वह भी फोकट का है। वे यह भूल जाते हैं कि इन नदियों के पानी के लिये तो भारत को ११० करोड़ रुपये पाकिस्तान को नई नहरें बनाने के लिये देना पड़ा था। अलगाव की प्रवृत्ति उनकी इतनी बढ़ गई है कि वे पानी जैसे प्राकृतिक संसाधन को भी राष्ट्र की पूंजी नहीं मानते।

खैर अब तो इराडी न्यायाधिकरण ने अपना फैसला दे दिया है। वह अभी प्रकाश में नहीं आया है, परन्तु यह स्पष्ट है कि इस न्यायाधिकरण ने भी हमारी व्याख्या को ठीक माना है और उसके आधार पर हरयाणा को न्याय दिया है।

धारा ९.३

धारा ९.३ में यह स्पष्ट लिखा है कि सतलुज यमुना लिंक नहर के निर्माण का काम १५ अगस्त, १९८६ तक पूरा कर दिया जायेगा। यह उत्तरदायित्व पजाब सरकार का था और वहां सरकार भी श्री बरनाला की थी, जिन्होंने पजाब समझौते की एक-एक धारा की भाषा निश्चित की थी। उन्होंने अपनी जिम्मेदारी को यही नहीं कि निभाया नहीं, बल्कि घर बैठे इंजीनियरों और दूसरे लोगों को वेतन और भत्ते दिये, जमीन की कीमत बढ़ा-चढ़ाकर दी। नहर की लाइन बदलने की बेतुकी मांग के कारण ४ महीने बर्बाद किये और इन सबसे बढ़कर पंजाब विधानसभा में यहां तक कह दिया कि पंजाब के पास हरयाणा को देने के लिये पानी तो बचता ही नहीं, नहर बनाने से क्या लाभ होगा। बादल के साथियों ने खुदी हुई नहर को मिट्टी से भर देने के लिये कार सेवा तक का ऐलान कर दिया। इसीलिये यह मांग उठी कि इस नहर का काम जल्दी पूरा करने के लिये भारत सरकार इस काम को अपने हाथ में ले ले। अब इराडी ट्रिब्यूनल में फैसला तो होगया, परन्तु पानी तो तभी आयेगा जब लिंक नहर बन जायेगी, नहीं तो फैसला कागजों में रखा रहेगा। भारत सरकार ने नहर के निर्माण का काम तो अपने हाथ में नहीं लिया, परन्तु नहर पर व्यय होनेवाला पूरा धन खर्च करने का ऐलान कर दिया। हरयाणा के लिये यह एक बहुत बड़ी मदद है। परन्तु पानी तो तभी मिल पायेगा जब नहर बनकर तैयार हो जाये। इसलिये आज हरयाणा की सर्वसम्मत और प्रबल मांग होनी चाहिये कि भारत सरकार अपने हाथ में इस काम को लेकर शीघ्र पूरा करे। एक महीना देर होने में हरयाणा को कम से कम १५ करोड़ रुपये की हानि होती है। श्री बरनाला ने हरयाणा के मुख्यमन्त्री को १९८७ के अन्त तक नहर पूरी करने का

(शेष पृष्ठ ८ पर)

गांधी के देश में शराब के ठेकों की भरमार

सीवन, ६ मार्च (पवन भट्ट) : राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भारत से शराब की बुराई को जड़ से मिटा देने के लिए 'नशाबन्दी' आंदोलन चलाया था और आज उसी राष्ट्रपिता गांधी जी की नामलेवा सरकार अपनी कमाई के लिए स्वयं चाहती है कि नशा फैले। इसका ताजा उदाहरण इस वर्ष सरकार द्वारा ठेकों में की गई वृद्धि से मिलता है। पहले हरयाणा में शराब देशी के ठेकों की संख्या ६५६ थी, अब यह बढ़ाकर ६७० करदी गई है। पहले अंग्रेजी शराब के ठेकों की सख्या ३२६ थी, अब यह बढ़ाकर ३४० करदी गई है। यही नहीं, सरकार ने अनौपचारिक रूप से पुलिस को आदेश भी दिये हैं कि वह सात तारीख (ठेकों की छुट्टी) को भी ठेकेदारों को शराब बेचने से न रोके और न उन्हें तंग करे।

राजीव की सलाह धूम्रपान से बचें

नई दिल्ली, १३ मार्च (भाषा)। प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी ने आज लोगों को सलाह दी कि वे धूम्रपान से बचें, क्योंकि यह स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक है।

राज्यसभा में बजट के जवाब के दौरान श्री गांधी ने कहा कि धूम्रपान विशेष रूप से सिगरेट की आदत हमारी अर्थव्यवस्था को क्षति पहुँचाती है और इस कारण चिकित्सा खर्चों में वृद्धि करनी पड़ती है। सदस्यों ने हर्षध्वनि और मेजें थपथपाकर प्रधानमन्त्री की इस सलाह का स्वागत किया।

श्री गांधी ने यह सलाह उस समय दी, जब मार्क्सवादी श्री निर्मल चटर्जी ने सिगरेट पर कर बढ़ाये जाने पर आपत्ति व्यक्त की। श्री गांधी ने हंसते हुए कहा कि श्री चटर्जी की यह आपत्ति समझ में नहीं आती, जब कि वे स्वयं सिगरेट नहीं पीते।

शाकाहारी मांसाहारियों से अधिक स्वस्थ

नयी दिल्ली, ६ मार्च (वार्ता) दिल्ली के दो युवा डाक्टरों ने ऐसा कार्ड तैयार किया है जो समस्त शाकाहारी व मांसाहारी भोजन के पोषण तत्त्वों की पूरी जानकारी देता है। बहुप्रचलित धारणा है कि मांसाहार, शाकाहार की तुलना में ज्यादा पौष्टिक तथा सस्ता होता है। लेकिन स्वास्थ्य व पोषण संस्थान, नयी दिल्ली के इन युवा वैज्ञानिकों का निष्कर्ष इसके सर्वथा विपरीत है।

डा० उमेश कपिल तथा डा० एस० सी० गुप्ता के अनुसार केवल एक पैसे में मूंगफली से उतनी ऊर्जा प्राप्त की जा सकती है, जितनी कि मछली से २० पैसे खर्च करके प्राप्त होती है। मांसाहारी को एक ग्राम प्रोटीन प्राप्त करने के लिए लगभग २१.२ पैसे खर्च करने पड़ते हैं। जब कि प्रोटीन की इतनी ही मात्रा काले चने से केवल २.६ पैसे में तथा सोयाबीन से १.६९ पैसे में प्राप्त की जा सकती है। शाकाहारी व्यक्ति मांसाहारी व्यक्ति की तुलना में स्वस्थ होते हैं तथा उन्हें दिल के रोगों व आंत में कैंसर की भी सम्भावनायें कम होती हैं।

के० जी० टी० डी० नाम के इस कार्ड को देखकर पलभर में यह पता लगाया जा सकता है कि किस आयु के व्यक्ति को दिनभर की ऊर्जा प्रोटीन, विटामिन तथा खनिजों की कितनी आवश्यकता होती है तथा उसे किस प्रकार का भोजन खाना चाहिए।

आर्यसमाज रामनगर गुड़गांव का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री राजेन्द्रप्रसाद, मन्त्री—ओमप्रकाश बुटानी, कोषाध्यक्ष—प्रेमदासकुमार।

आर्यसमाज नगीना जि० गुड़गांव

प्रधान—सर्वश्री पदमचन्द्र आर्य, उपप्रधान-रघुवीरशरण, सुभाषचन्द्र गुप्त, मन्त्री-सुनीलकुमार आर्य, उपमन्त्री-विनयकुमार, कोषाध्यक्ष चांदकुमार।

धूम्रपान के कारण महामारी

जो दो नई जानलेवा बीमारियां महामारियां बनती जारही हैं, वे हैं एड्स और फेफड़ों के कैंसर की बीमारी। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू० एच० ओ०) के अनुसार, प्रति वर्ष विश्व में दस लाख से अधिक व्यक्ति धूम्रपानजन्य रोगों से मरते हैं और इन रोगों में फेफड़ों का कैंसर सबसे अधिक प्रचलित और प्राणघातक रोग है। इस संगठन द्वारा किये गये एक सर्वेक्षण से यह भी पता चला है कि भारत और चीन में फेफड़ों के कैंसर की बीमारी ज्यादातर १८ से २० वर्ष की आयु के बच्चों को होती है।

धूम्रपान के सम्बन्ध में चिकित्सकों को एक नये खतरे का भी पता चला है और वह यह कि कार्यालय में धूम्रपान करनेवाले कर्मचारियों के कारण उनके धूम्रपान न करनेवाले सहयोगी की फेफड़ों के कैंसर से मृत्यु तक हो सकती है। ऐसे मामले भी प्रकाश में आये हैं जो यह दर्शाते हैं कि धूम्रपान करनेवाले पति के कारण उसकी धूम्रपान न करनेवाली पत्नी को फेफड़ों का कैंसर होगया।

इस तथ्य की पुष्टि वाशिंगटन (अमरीका) की एक वैज्ञानिक संस्था ने भी की है। उसका कहना है 'यदि आगामी वर्षों में विश्व के धूम्रपान प्रेमियों ने धूम्रपान करना बन्द या कम नहीं किया, तो इस सदी के अन्त तक फेफड़ों के कैंसर से मरनेवालों की सख्या में ४० प्रतिशत की वृद्धि हो जायेगी, कारण पर्यावरण को दूषित करनेवाले अन्य घातक तत्त्वों की तुलना में तम्बाकू से कहीं ज्यादा लोग मरते हैं।

भारत में किये गये एक वैज्ञानिक सर्वेक्षण के अनुसार भारतीय शिशुओं के जन्म के समय कम वजन होने का मुख्य कारण गर्भवती महिलाओं की तम्बाकू खाने की आदत या ऐसे वातावरण में रहना है, जिसमें धूम्रपान किया जाता है। ऐसी महिलायें अपने बच्चों को जो दूध पिलाती हैं, उसमें भी वे १६ घातक न्यूनाधिक मात्रा में मौजूद होते हैं जो तम्बाकू में होते हैं।

चूंकि धूम्रपान की अहम समस्या उग्र और घातक रूप धारण करती जारही है, अतः हमें गम्भीरता से इस पर विचार करना होगा कि वह व्यसन कहां तक सही है जो तलबगार के अलावा उसके साथ रहने और काम करनेवाले व्यक्तियों की जान भी जोखिम में डालता है।

—बिहारीलाल

आर्यसमाज अमर रहे

राष्ट्र संस्कृति एवं युवाशक्ति उत्थान हेतु उद्गीथ साधना स्थली (हिमाचल) के संस्थापक ब्र० आर्यनरेश द्वारा २५ जनवरी से १ मार्च तक तिकोना पार्क माडल टाउन यमुनानगर करनाल, आर्यसमाज व डा० वी० कालोनी शालीमार बाग दिल्ली, अशोक विहार, न्यू राजेन्द्रनगर, उत्तमनगर, शिवाजी एन्क्लेव, पंजाबी बाग, ईस्ट आफ कैलाश, वजेदरा, रसरत (गुजरात), भिवानी स्टैंड, रेलवे रोड, आर्यनगर (रोहतक), दयानन्द उच्चतर माध्यमिक विद्यालय टंकारा एवं आर्यसमाज पत्थरोट के स्वर्ण जयन्ती उपलक्ष्य में सामाजिक, राष्ट्रीय व धार्मिक चेतना पैदा करने के लिए अनेकों प्रवचनों, गोष्ठियों, पुस्तकों के वितरण तथा यज्ञों के माध्यम से आर्य सिद्धांतों का प्रचार किया गया। इस प्रचारयात्रा में पूर्वी शालीमार बाग के अनेकों बच्चों ने वैदिक सिद्धांतों को सीखकर प्रश्नों के ठीक-ठीक उत्तर देकर पारितोषिक प्राप्त किये। अनेकों बच्चों, युवाओं तथा अन्य लोगों ने मांस, अण्डा, शराब व चायादि छोड़ने तथा दैनिक व्यायाम, संध्या तथा यज्ञ करने का संकल्प लिया।

टंकारा में शिवरात्रि के अवसर पर ब्र० जी द्वारा गुजराती भाषा में छपी टंकारा की टंकार तथा सच्चे भगवान् के दर्शन करें। लगभग ३ हजार से भी अधिक पुस्तकों का बिना मूल्य वितरण किया गया।

शराब मानव-समाज की शत्रु है
इससे अवश्य बचें।

महात्मा हंसराज बलिदान दिवस

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, डी० ए० वी० संस्थाओं एवं समस्त आर्य संस्थाओं की ओर से सम्मिलित रूप से हर वर्ष की भांति इस वर्ष श्री महात्मा हंसराज दिवस रविवार १९ अप्रैल, १९८७ को प्रात: ९ से १ बजे तक तालकटोरा गार्डन, इण्डोर स्टेडियम नई दिल्ली में बड़े समारोह पूर्वक मनाया जायेगा।

मेरी दिल्ली व दिल्ली के निकटवर्ती क्षेत्रों की समस्त आर्यसमाजों, स्त्री आर्यसमाजों एवं शिक्षण संस्थाओं से एवं अन्य समस्त आर्य संस्थाओं से प्रार्थना है कि उस दिन अपनी आर्यसमाज का साप्ताहिक सत्संग स्थगित कर अधिकाधिक संख्या में उपर्युक्त लिखित कार्यक्रम में अवश्य सम्मिलित हों।

मुझे पूरी आशा है कि आप मेरी प्रार्थना स्वीकार कर अधिकाधिक संख्या में इस कार्यक्रम में उपस्थित होंगे। विस्तृत कार्यक्रम प्रकाशित होने पर शीघ्र भिजवा दिया जायेगा।

—रामनाथ सहगल
मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

होलिकोत्सव पर हरिजन भाइयों में प्रचार

जींद रविवार १५ मार्च। आर्यसमाज रामनगर तथा आर्य वीरदल जींद की ओर से नवशस्येष्टि पर्व (होलिकोत्सव) पर हरिजन रोड पर स्थित पाठशाला में प्रचार का आयोजन दोपहर ११ बजे से २ बजे तक हुआ। इसमें पं० चन्द्रभान जी के भजन, चौ० प्रतापसिंह अहलावत ए. ई. टी. ओ., श्री इन्द्रसिंह शास्त्री, मा० बद्रीप्रसाद आर्य, ला० छबीलदास आर्य के संक्षेप में व्याख्यान हुए। श्री सूरजभान जी ने भी सुन्दर भजन और अपने विचार रखे। हरिजन भाइयों की ओर से बड़ी दिलचस्पी और सहयोग भावना दिखाई गई। खासतौर से पहलवान शोभाराम, नम्बरदार मौजीराम, रिटायर्ड तहसीलदार कुन्दनलाल तथा अन्य युवकों ने बड़ा सहयोग दिया।

इससे पूर्व भी ६ मार्च को रात्रि ८ से १० बजे तक आर्य पथिक पं० लेखराम का ९०वां बलिदान दिवस खुले सार्वजनिक स्थान झांझ गेट पर उत्साहपूर्वक मनाया गया। आर्यसमाज रामनगर तथा आर्य वीरदल जींद की योजना है कि सभी महत्त्वपूर्ण आयोजन खुले में सार्वजनिक स्थानों पर रखे जायें। सभी का भरपूर सहयोग मिल रहा है।

जींद के आर्य परिवार में एक आदर्श विवाह

गत सप्ताह आर्यसमाज जींद शहर के एक सक्रिय सदस्य श्री सौदागरचन्द जी आर्य ने अपनी सुपुत्री शकुन्तला रानी का शुभ विवाह दिल्ली निवासी श्री श्रीकृष्ण जी (सुपुत्र श्री ओम्प्रकाश जी मल्होत्रा) के साथ बड़ी सादगी, बिना किसी आडम्बर और दहेज के शुद्ध वैदिकरीति से पं० दयाकृष्ण जी आर्य पुरोहित से सम्पन्न करवाया। इस अवसर पर आर्यसमाज जींद जंक्शन के सदस्य सदस्यायें, अन्य आर्य भाई-बहन बड़ी संख्या में मौजूद थे। नगर के जानेमाने वकील और आर्यसमाज जींद शहर के भू०पू० प्रधान चौ० देशराज पूनिया तथा श्रीमती शांति पूनिया भी आशीर्वाद देनेवालों में से थे।

—प्रो० ओम्प्रकाश आर्य, मन्त्री आर्यसमाज रामनगर, जींद

सम्पादक के नाम पत्र—

स्वामी विद्यानन्द विदेह के वेद विषयक भ्रामक विचार

स्व० विदेह जी की वेदमाता शीर्षक कोई पुस्तक इधर प्रकाशित हुई है। इसके कुछ उद्धरण या अंश आर्य पत्रों में भी प्रकाशित हुए हैं। मैं इस पुस्तक में लिखे कुछ ऐसे वाक्यों की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं, जो स्पष्टतया भ्रामक तो हैं ही स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज के मन्तव्यों के प्रतिकूल भी हैं। अच्छा होता अपने पत्रों में प्रकाशित करने से पूर्व सम्पादक इन पर यथोचित टिप्पणी देते। अब इन वाक्यों को देखिये—

वेद धर्म नहीं है। वेद तो सत्य विद्याओं का पुस्तक है।
वेद में धर्म नहीं है, सत्य है।
वेद का पढ़ना-पढ़ाना धर्म नहीं, एक कृत्य है।
मनुष्य का धर्म न वेद है न जेंद अवेस्ता
कोई भी पुस्तक मनुष्य का धर्म नहीं हो सकती।
किसी भी ग्रंथ में सत्य हो सकता है, धर्म नहीं।

उपर्युक्त वाक्यों को विचारशील पाठक पढ़कर स्वयं निर्णय लें। ये वाक्य अर्थजरतीय से हैं। स्वामी दयानन्द से इन वाक्यों का विरोध तो स्पष्ट ही है, क्योंकि महर्षि वेद को ही आर्यों का धर्म कहते हैं। वे वेद के पढ़ने-पढ़ाने को आर्यों का परम धर्म कहते हैं।

इस पुस्तक की यथार्थ समीक्षा श्री वेदव्रत शास्त्री ने सर्वहितकारी के २८ दिसम्बर के अंक में की है। पूरी पुस्तक मेरे देखने में नहीं आई, अन्यथा उस पर विस्तार से लिखता।

डा० भवानीलाल भारतीय

सिरसा में आर्य वीरदल की स्थापना

८-३-८७ को आर्यसमाज सिरसा में श्री उमेदसिंह संचालक आर्य वीरदल हरयाणा के तत्वावधान में एक बैठक हुई, जिसमें निम्न कार्यवाही सम्पन्न हुई।

आर्य वीरदल सिरसा का चुनाव

संरक्षक—सर्वश्री रणधीरसिंह सांगवान, सहसंरक्षक—नित्यानन्द, मण्डलपति—नौरंगसिंह एडवोकेट द्वारकापुरी सिरसा, नगर नायक—राजकुमार वर्मा आर्य सीनियर सैकण्ड्री स्कूल सिरसा, मन्त्री—मुनीश्वरदेव आर्य अध्यापक राजकीय उच्च विद्यालय सिरसा, शाखानायक—राजकुमार पी. टी. आई. आर्य सैकण्ड्री स्कूल सिरसा, संयोजक-सत्यपाल मन्त्री आर्यसमाज सिरसा, रामजीलाल एडवोकेट वरिष्ठ उपप्रधान, बलदेवसिंह आर्य उपप्रधान आर्यसमाज सिरसा।

श्री मनफूलसिंह जी कोर्ट कालोनी सिरसा ग्रामीण आर्य वीरदल के संयोजक थे तथा ग्रामों में आर्य वीरदल के गठन का प्रबन्ध व स्थापना करेंगे। आर्य वीरदल की शाखा १६ अप्रैल १९८७ से आर्य हायर सैकण्ड्री स्कूल में शुरु की जायेगी। शिक्षक आर्य वीरदल की ओर से १५ अप्रैल को सिरसा में पहुंच जायेगा। —सत्यपाल मन्त्री

सराय बहादुर नगर में आर्यसमाज स्थापना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भजनोपदेशक पं० मुरारीलाल बेचैन के प्रचार स्वरूप ग्राम सराय बहादुर नगर, तहसील नारनौल में आर्यसमाज की स्थापना हो गई है। वार्षिक चुनाव निम्न प्रकार हुआ—

प्रधान—सर्वश्री दुलीचन्द, मन्त्री—बाबूलाल, कोषाध्यक्ष-निरंजनलाल, प्रचारमन्त्री—सिद्धराज, उपमन्त्री—जयदयाल।

देशराज कालोनी पानीपत में आर्यसमाज की स्थापना

प्रधान—सर्वश्री इन्द्रसेन चोपड़ा, उपप्रधान—अमरसिंह सैनी, जगदीशचन्द्र वसु, उपमन्त्री—राजकुमार सैनी, कोषाध्यक्ष—ओम्प्रकाश गोयल।

पं. धर्मजीत जिज्ञासु का भव्य अभिनन्दन

दिनांक १५-३-१९८७ होली मिलन के पवित्र दिन प्रातः १० बजे आर्यसमाज मन्दिर हनुमान रोड, नई दिल्ली। अमरीका में महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक मान्यताओं के सफल व्यापक प्रचारक एवं तदर्थ अनेक आर्यसमाजों की स्थापना करनेवाले पं० धर्मजीत जिज्ञासु का भव्य अभिनन्दन किया गया। समारोह की अध्यक्षता समाज के प्रधान श्री रामसूर्ति केला ने की एवं संयोजन प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता एवं आर्यसमाज के वरिष्ठ उपप्रधान श्री सरदारीलाल वर्मा ने किया। समाज का हाल खचाखच भरा हुआ था। सरदारीलाल वर्मा ने पण्डित जी का परिचय एवं कार्यकुशलता के सम्बन्ध में उपस्थित महानुभावों को अवगत कराया। तत्पश्चात् सर्वश्री डा० महेश विद्यालंकार, डा० सत्यकेतु, प० सत्यदेव भारद्वाज, बलभद्रकुमार हूजा एवं रामलाल मलिक द्वारा पण्डित जी एवं उनके कार्य के प्रति अपने उद्गार व्यक्त किये।

अभिनन्दन समारोह के मुख्य अतिथि श्री धर्मजीत जी ने अमेरिका पाश्चात्य जगत् और पाश्चात्य संस्कृति तथा भारतीय संस्कृति, दर्शन, मान्यताओं व सिद्धांतों का अनुपम विश्लेषण करते हुए इस बात पर बल दिया कि समूचे विश्व को अपना संस्कृति, अपना जीवनदर्शन, अपनी गुरुकुलीय शिक्षा-प्रणाली तथा वैदिकधर्मपरायणता ही पुरुषार्थ चतुष्टय अर्थात् धर्मार्थ काम-मोक्ष की प्राप्ति का साधन वैज्ञानिक व मानवीय है। इसी उद्देश्य को लेकर मैं अमरीका तथा अन्य पाश्चात्य देशों में ऋषि दयानन्द वैदिकधर्म के सिद्धांतों को लेकर सर्वस्व निष्ठा, श्रद्धा के साथ प्रचार-प्रसार में लगा हूं। इसके अतिरिक्त अन्य बहुत सारे विषयों पर उन्होंने प्रकाश डाला। अन्त में अपने व्याख्यान के समापन पर आर्य-समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली तथा समस्त आगुन्तक महानुभावों का हृदय से आभार प्रकट किया तथा उस भव्य स्वागत समारोह से पुलकित होकर यही कहा कि यह मेरा सम्मान नहीं, बल्कि उस जगत् गुरुदेव दयानन्द का सम्मान है, जिसने हमको यह दिव्य दृष्टि देकर संसार को प्रकाशित करने की प्रेरणा दी है।

समारोह के अन्त में संयोजक श्री वर्मा जी ने प० जिज्ञासु के आयुष की प्राप्ति एवं स्वस्थ जीवन की कामना करते हुए उनका धन्यवाद किया तथा समारोह में उपस्थित सभी का आभार व्यक्त किया।

—जातिबन्धु भारिया, मन्त्री

'आर्यन हेरिटेज' पत्रिका को लोकप्रिय बनाने हेतु अपील

श्री दरबारीलाल संगठन सचिव, डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्तृ समिति ने सभी डी० ए० वी० संस्थाओं के संचालकों को पत्र भेजकर उनसे अनुरोध किया है कि वे अंग्रजी मासिक पत्रिका "आर्यन हेरिटेज" के अधिक से अधिक संख्या में ग्राहक बनायें। भारतीय संस्कृति, भारतीय सभ्यता, राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं, राष्ट्रीय संगठन, ग्राम विकास, पर्यावरण आदि अनेक विषयों पर मूर्धन्य और अनुभवी विद्वानों के लेख इसमें प्रकाशित किये जाते हैं। इस उपयोगी पत्रिका का वार्षिक शुल्क ६०) मात्र है।

जगन्नाथ, विशेष कार्य अधिकारी

स्नातक मण्डल गुरुकुल झज्जर का निर्वाचन

१ मार्च गुरुकुल झज्जर रोहतक के वार्षिकोत्सव के अवसर पर स्नातक मण्डल का सर्वसम्मति से वार्षिक निर्वाचन निम्न प्रकार से हुआ—

प्रधान-सर्वश्री सत्यवीरसिंह शास्त्री गढ़ी बोहर, उपप्रधान-आचार्य हरिदेव गुरुकुल गौतमनगर दिल्ली, मन्त्री—रणवीरसिंह शास्त्री बवाना दिल्ली, उपमन्त्री—सुरेन्द्रकुमार शास्त्री गुरुकुल झज्जर, कोषाध्यक्ष—चन्द्रपालसिंह राणा बवाना दिल्ली-३९।

मन्त्री स्नातक मण्डल गुरुकुल झज्जर, रोहतक

आर्यसमाजों तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों से आवश्यक निवेदन

आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापना शताब्दी समारोह १५ से १७ मई तक रोहतक में मनाया जारहा है। इस अवसर पर एक भव्य तथा आकर्षक स्मारिका का भी प्रकाशन किया जारहा है। अतः सभा से सम्बन्धित आर्यसमाजों तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों से आवश्यक निवेदन है कि इस ऐतिहासिक स्मारिका में प्रकाशनार्थ अपने आर्यसमाज तथा आर्यशिक्षणसंस्थाओं का संक्षिप्त परिचय और अधिकारियों के पासपोर्ट साइज के चित्र १३ अप्रैल तक सभा कार्यालय रोहतक में भेजने की कृपा करें। स्मरण रखें जिनका परिचय समय पर कार्यालय में प्राप्त नहीं हो सकेगा, उनका विवरण स्मारिका में नहीं छप सकेगा।

स्मारिका में प्रकाशनार्थ आर्यसंस्थाओं और आर्य उद्योग संस्थानों के विज्ञापन भी शीघ्र भिजवाइये।

विज्ञापन दर

१/८ पृष्ठ २५० रु०। १/४ पृष्ठ ५०० रु०
१/२ पृष्ठ १००० रु०। १ पृष्ठ २००० रु०
टाइटल २ पर ३००० रु०। टाइटल ३ पर ४००० रु०

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

आर्यसमाज बालू जि० जींद का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री सुरजाराम आर्य, उपप्रधान—अर्जुनदेव, मन्त्री—मनीराम आर्य, उपमन्त्री—रघुवीरसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष-ज्ञानचन्द आर्य पुस्तकाध्यक्ष—बसाउराम आर्य।



हरयाणा में आर्यसमाजों गुरुकुलों के वार्षिक उत्सव

गुरुकुल कुरुक्षेत्र	३ से ५ अप्रैल
आर्यसमाज सोहना जि. गुड़गांव	३ से ५ ,,
,, नरवाना जि. जींद	१० से १२ ,,
,, माडल टाउन सोनीपत	१७ से १९ ,,
,, जैकमपुरा गुड़गांव	१७ से १९ ,,
,, बैच बाजार पानीपत जि. करनाल	१ से ३ मई

आर्यसमाजों तथा गुरुकुलों के अधिकारियों से नम्र निवेदन है कि मई में अपने उत्सवादि न रखें, क्योंकि मई में सभा का स्थापना शताब्दी समारोह रोहतक में मनाया जा रहा है, जिसमें सभी आर्यसमाजों तथा आर्य संस्थाओं के कार्यकर्त्ताओं को सादर आमन्त्रित किया गया है।

मई के प्रथम सप्ताह में हरयाणा के चारों ओर से प्रचार यात्राओं का भी आयोजन किया गया है। जो आर्यसमाज अपने उत्सव अप्रैल मास में करना चाहते हैं, वे उनकी सूचना शीघ्रातिशीघ्र सभा को देने का कष्ट करें, ताकि प्रबन्ध करने में सुविधा रहे।

—रघुवीरसिंह

वेदप्रचाराधिष्ठाता एवं संयोजक शताब्दी समारोह

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापना शताब्दी समारोह की सफलता के लिये

आर्य नेताओं की अपील

तिथि—१५, १६, १७ मई १९८७ ई० शुक्रवार से रविवार तक

स्थान—दयानन्दमठ, रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की स्थापना सन् १८८६ में अमृतसर में हुई थी। उस समय पंजाब, हरयाणा, दिल्ली, हिमाचल तथा जम्मू काश्मीर राज्यों में इसी सभा के माध्यम से आर्यसमाज तथा समाज सुधार के कार्य और प्रचार होता था। गत १०० वर्षों में आर्यसमाज ने हैदराबाद आर्य सत्याग्रह, शुद्धि आन्दोलन, हिन्दी रक्षा आन्दोलन, गोरक्षा आन्दोलन, समालखा तथा कुण्डली में गोहत्या उन्मूलन आदि आन्दोलन चलाए हैं, जिनसे आर्यसमाज का प्रभाव जन-जन पर पड़ा है।

इन सभी सामाजिक कार्यों में हरयाणा की जनता ने बढ़-चढ़कर भाग लिया है। इस समय प्रदेश में ५० के लगभग गुरुकुल, आर्य विद्यालय तथा अन्य आर्य संस्थायें आर्यसमाज के कार्य में रत हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से गत ३ वर्ष से शराब तथा दहेज आदि सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध एक अभियान चलाया जा रहा है।

हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से पंजाब, हिमाचल, जम्मू काश्मीर तथा दिल्ली की आर्य प्रतिनिधि सभाओं के सहयोग से १५ से १७ मई तक रोहतक में सभा स्थापना शताब्दी समारोह धूमधाम से मनाया जा रहा है। इसमें भारत के प्रमुख आर्यनेताओं तथा विद्वानों को आमन्त्रित किया गया है। इस अवसर पर गत १०० वर्षों के कार्यों का सिंहावलोकन तथा आगामी १०० वर्षों के लिए भावी कार्यक्रम की योजना बनाई जाएगी। आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के लिए अनेक सम्मेलन आयोजित किये जायेंगे। एक भव्य स्मारिका में सभा का संक्षिप्त इतिहास प्रकाशित किया जायेगा। प्रदेश में १०० नवीन आर्यसमाज स्थापित किये जायेंगे।

सभा कार्यालय की चार दीवारी, पाकशाला, भोजनशाला, अतिथि निवास, उपदेशक विद्यालय और सभा भवन (विशाल हाल) निर्माणाधीन हैं।

इन सभी योजनाओं को सफल करने के लिए सभा ने २० लाख रुपयों की आर्यजनता से अपील की है। इस उद्देश्य के लिए ५, १०, ५०, १००, २५०, ५०० तथा १००० रु० की रसीदें छपवाई गई हैं। अतः आर्यसमाजों, आर्यसंस्थाओं तथा दानी महानुभावों से निवेदन है कि वे सभा कार्यालय से धन संग्रह करने के लिए अधिक से अधिक रसीद बुकें मंगवाकर अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें। सभा को दी गई दान राशि आयकर मुक्त होगी।

सभा के अधिकारी सारे हरयाणा का भ्रमण करके आर्यकार्यकर्त्ताओं की बैठकों में सम्मिलित होकर जनसम्पर्क कर रहे हैं। अतः सभी आर्यसमाज तहसील तथा जिलास्तर की बैठकों का आयोजन अपनी सुविधानुसार करें और शताब्दी समारोह को सफल करने के लिए तन, मन तथा धन से सहयोग करके सभा के संगठन को सुदृढ़ करें जिससे आगामी १०० वर्षों में वेद तथा ऋषि दयानन्द का दिव्य सन्देश जन-जन तक पहुंचाया जा सके।

निवेदक:—

ओमानन्द सरस्वती	प्रो० शेरसिंह	वेदव्रत शास्त्री	बद्रीप्रसाद आर्य	रघुवीरसिंह
प्रधान	प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष	संयोजक
परोपकारिणी सभा	आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक			शताब्दी समारोह

(पृष्ठ ४ का शेष)

आश्वासन दिया है। परन्तु क्या हम इस भरोसे मे बैठे रहें। अकालियों की मनोवृत्ति देखकर यह साफ नजर आरहा है कि वे कितना ही कहें, काम पूरा नही होगा और फिर एक साल और लगेगा, उसका नतीजा होगा दो अरब रुपये का हरयाणा को घाटा। जो दल, समिति या लोग भारत सरकार से अपने हाथ में लेकर नहर के निर्माण के लिये आग्रह नही करते वे हरयाणा के हितैषी नही हो सकते।

हरयाणा अब क्या करे ?

विचार सागर में गोते लगाये तो मोती मिले। समझौते के अन्दर ही ऐसी बाते मिल गई, जिनसे हरयाणा को न्याय मिलने का मार्ग प्रशस्त होगया। यह देखकर अकाली बौखला उठे हैं। बरनाला समेत वे सभी अब समझौते से भागना चाहते हैं, दूसरे लोग तो खुलकर कह रहे हैं। बरनाला साहब समझौते पर ठीक समय पर अमल न करने का झूठा दोष भारत सरकार पर लगाकर। दोषी वे स्वयं हैं। समझौते में ही लिखा था कि दोनों पक्ष, आयोगों और न्यायाधिकरण के फंसलों से बन्धे हुए हैं। उनको मानना पड़ेगा, भाग नही सकते। अकाली इसलिये भागना चाहते हैं कि समझौते को आधार बनाकर वे हरयाणा के अधिकारों पर छापा नहीं मार सके।

आज जब हरयाणा को चण्डीगढ़ के बदले फाजिल्का अबोहर का क्षेत्र, ३५ लाख एकड़ फुट से ज्यादा रावी व्यास का पानी मिलने का रास्ता साफ होगया। राजधानी और सतलुज यमुना लिंक नहर का सब धन व्यय करने का भार भारत सरकार ने ओढ़ लिया, तब समझौते की धारा ७ और ९ को रद्द करने की बात कहनेवाला या तो मूर्ख है या अपने राजनीतिक स्वार्थ की पूर्ति के लिये अकालियों के हाथो में खेल रहा है। यदि वह मूर्खता से यह कह रहा है तो भी हरयाणा के हितों पर कुठाराघात कर रहा है और यदि अकालियों के हाथों में अपने चुनावी स्वार्थ में अन्धा होकर हरयाणा के अधिकारों को मिलते समय खटाई में डलवा देना चाहता है तो वह हरयाणा के साथ विश्वासघात कर रहा है। हरयाणा की जनता को सावधान रहना चाहिये।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में प्रवेश

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में ७ से ९ वर्ष के बालकों के प्रथम से तृतीय श्रेणी में प्रवेश १ अप्रैल से ३० अप्रैल तक। आधुनिकतम निःशुल्क आवास, शिक्षा, स्वानुशासनात्मक सुरुचिपूर्ण वातावरण में शारीरिक, बौद्धिक विकास हेतु प्रति १३ बालकों पर एक अध्यापक। हरयाणा और गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार की अष्टम एवं दशम श्रेणी की परीक्षायें।

देशी घी, दूध, फलों से पुष्ट स्वास्थ्यवर्धक भोजन। शुल्क मात्र १५० रुपये मासिक। अधिक जानकारी के लिए गुरुकुल कार्यालय से विवरणपत्रिका मगवायें।

—प्राचार्य

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० 23207/73 रजि० न० [illegible] फोन ४८१२



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभा मन्त्री सह-सम्पादक—डा० यज्ञवीर

वर्ष १४, अङ्क १६ ७ अप्रैल, १९८७ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

सभा शताब्दी समारोह को सफल करने हेतु सभा अधिकारियों का तूफानी दौरा

१८ मार्च को प्रात: ८ बजे सभामन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री, सभा उपप्रधान म० भरतसिंह, सभा कोषाध्यक्ष मा० बद्रीप्रसाद आर्य, सभा शताब्दी समारोह के संयोजक श्री रघुवीरसिंह ने सभगणक श्री सोमराम के साथ धनसंग्रह हेतु रोहतक से बहादुरगढ़ के लिए प्रस्थान किया। आर्यसमाज बहादुरगढ के अधिकारियों से धनसंग्रह हेतु शताब्दी समारोह को रसीद बुकें देकर इस कार्यक्रम में अधिक से अधिक योगदान देने की प्रेरणा की। तत्पश्चात् सभा अधिकारियों ने ग्राम नीलोठी जि. रोहतक में आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता म० बलवन्तसिंह, वैद्य इन्द्रसिंह आदि से शताब्दी समारोह की सफलता हेतु धन, अन्न एकत्रित करने तथा समारोह में अधिक से अधिक संख्या मे पहुंचने की प्रेरणा करके खरखोदा आर्य कन्या महाविद्यालय के अधिकारियों से सम्पर्क किया और धनसग्रह के लिए रसीद बुकें देकर अधिक से अधिक सहयोग देने की प्रेरणा की। इसी प्रकार यह शिष्टमण्डल वैद्य ताराचन्द जी आर्य से भी सम्पर्क स्थापित करके सोनीपत में जिला के संयोजक श्री सत्यदेव शास्त्री के पास पहुंचा और धनसग्रह के लिए रसीद बुकें देकर, श्री पजुराम आर्य को साथ लेकर आर्यसमाज माडल टाउन सोनीपत के अधिकारियों से समारोह की सफलता हेतु पूर्ण सहयोग के लिए आश्वासन प्राप्त किया। आर्य स्कूलों के छात्र एव छात्राओं को शोभायात्रा तथा कार्यक्रमों में सम्मिलित होने के लिए आमन्त्रित किया। तत्पश्चात् यह शिष्टमण्डल पानीपत में आर्य स्कूल के अधिकारियों से शताब्दी समारोह के योगदान एवं छात्र तथा छात्राओं को समारोह में भाग लेने के लिए निमन्त्रण देकर करनाल आर्यसमाज के अधिकारियों को धनसंग्रह हेतु रसीद बुके सौंपकर पूर्ण सहयोग के लिए अनुरोध किया एवं अधिक से अधिक संख्या में समारोह में पहुंचने के लिए प्रेरणा करके शिष्टमण्डल ने कुरुक्षेत्र के लिए प्रस्थान किया। वहां रात्रि को गुरुकुल कुरुक्षेत्र में विश्राम किया। गुरुकुल के अधिकारियों ने सभा अधिकारियों का स्नेहपूर्वक सत्कार किया। जिसके लिए सभा अधिकारियों ने उनका, विशेषकर आचार्य देवव्रत जी का आभार प्रदर्शित किया।

१९ मार्च को प्रात: ६ बजे शिष्टमण्डल ने गुरुकुल से आगामी कार्यक्रम के लिए श्री कृष्णलाल जी वधवा तथा सभा के सम्पत्ति निरीक्षक श्री भगवान्‌सिंह आदि से मिलकर यमुनानगर के लिए प्रस्थान किया। यमुनानगर पहुंचकर सभा अधिकारियों ने वैद्य रामलाल, श्री धर्मवीर मलिक, श्री सुभाष आर्य प्रधान आर्यसमाज जगाधरी आदि से शताब्दी समारोह में योगदान की प्रार्थना की और पूर्ण आश्वासन के साथ अधिकारी आर्य वानप्रस्थाश्रम बराड़ा का निरीक्षण करते हुए आर्यसमाज कच्चा बाजार अम्बाला छावनी पहुँचे और लक्ष्मी देवी आर्य कन्या विद्यालय में प्रधानाचार्या श्रीमती मिथलेश एवं श्रीमती शांति देवी प्रधाना को शताब्दी समारोह में छात्राओं सहित सम्मिलित होने के लिए आमन्त्रित किया। तत्पश्चात् श्री सतीश मित्तल मैनेजर आर्य शिक्षण संस्था अम्बाला छावनी एवं प्रधाना मुस्तफाबाद आर्य कन्या विद्यालय आदि को धनसंग्रह की रसीद बुकें देकर शताब्दी समारोह में पूर्ण सहयोग करने की प्रेरणा की और शिष्टमण्डल पानीपत होता हुआ रात्रि को ११ बजे वापिस रोहतक पहुंचा।

आर्य केन्द्रीय सभा रोहतक

२२ मार्च को प्रात: ११ बजे शताब्दी समारोह संयोजक श्री रघुवीरसिंह एवं सभामन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री ने आर्य केन्द्रीय सभा रोहतक के निमन्त्रण पर वैदिक भक्ति साधन आश्रम रोहतक में बुलाई गई बैठक में भाग लिया और रोहतक के सभी आर्यसमाजों से शताब्दी समारोह में पूर्णरूप से सहयोग देने के लिए नम्र-निवेदन किया। केन्द्रीय सभा के अधिकारियों ने बडे उत्साह के साथ सहयोग देने का आश्वासन दिया। विशेषकर बैठक के प्रधान डा तुलसीराम और चौ. निहालचन्द गुगनानी मा० मेघराज, वैद्य भरतसिंह, मा० दीपचन्द, श्री देसराज, गुरुदत्त आर्य आदि ने तन, मन, धन से सहयोग देने के लिए सभी आर्यसमाजों के अधिकारियों से अनुरोध किया, जिसका सभी ने उत्साहपूर्वक अनुमोदन किया।

कन्या गुरुकुल नरेला

शताब्दी समारोह संयोजक श्री रघुवीरसिंह एवं सभामन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री २२ मार्च को दोपहर बाद ३ बजे कन्या गुरुकुल नरेला के वार्षिक उत्सव पर पहुंचकर गुरुकुल के अधिकारियों व आचार्या सुमित्रा को शताब्दी समारोह में छात्राओं सहित भाग लेने के लिए आमन्त्रित किया और इस कार्य में पूर्ण योग हेतु प्रार्थना की। तत्पश्चात् ग्राम बुवाना में श्री चन्द्रपाल राणा तथा श्री रणवीर शास्त्री आदि से सम्पर्क स्थापित करके शताब्दी समारोह की तैयारी में जुट जाने का आग्रह किया, जिसका उन्होंने प्रत्येक प्रकार के सहयोग का पूर्ण आश्वासन दिया। तत्पश्चात् रात्रि के ११ बजे स्कूटर द्वारा वापिस रोहतक पहुंचे।

फरीदाबाद

शताब्दी समारोह के संयोजक श्री रघुवीरसिंह एवं सभा के कार्यालयाध्यक्ष श्री केदारसिंह आर्य २६ मार्च को प्रात: ७ बजे रोहतक से चलकर गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ सम्बन्धी अभियोग के सिलसिले में फरीदाबाद न्यायालय होते हुए सभा के उपदेशक श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री को साथ लेकर फरीदाबाद की आर्य शिक्षण संस्थाओं का भ्रमण किया एव आर्यसमाजों तथा शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों से सम्पर्क स्थापित करके शताब्दी समारोह की सफलता हेतु धनसंग्रह आदि के लिए ५० हजार से ऊपर को राशि की रसीद बुकें वितरीत करके पूर्ण सहयोग का आश्वासन लेकर सायंकाल ६ बजे डा. योगानन्द तथा सभाप्रधान प्रो. शेरसिह को सारे कार्यक्रम की जानकारी देकर और आगामी योजना पर विचार-विमर्श करके रात्रि को ११ बजे रोहतक पहुचे। बल्लबगढ़ तथा फरीदाबाद आर्यसमाज के अधिकारियों, विशेषकर श्री कन्हैयालाल महता, श्री राजेन्द्रसिंह पूर्वविधायक एव श्री सुरेशकुमार बढाणा एडवोकेट ने उत्साहपूर्वक सहयोग देने एव समारोह में दलबल के साथ भाग लेने का आश्वासन दिया।

आर्य प्रतिनिधि सभा का शताब्दी समारोह क्यों ?

(१८८५ से १९८५ तक का संक्षिप्त विवरण)

प्रस्तुतकर्त्ता—सुखदेव शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा

गतांक से आगे—

आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् प० गणपति शर्मा व स्वामी श्रद्धानन्द भी इसी काल में हुए। प० पूर्णानन्द, भक्त रैमल, मा० आत्माराम अमृतसरी, प्रो० शिवदयालु एम० ए० और चिरंजीलाल जी आदि इसी काल की विभूतियां थीं। इन विद्वानों ने बड़ी लगन के साथ आर्यसमाज के प्रचार की धूम मचादी थी। सारे पंजाब में आर्यसमाज स्थापित होगये थे। आर्यसमाज का प्रत्येक सदस्य आर्यसमाज का प्रचारक था। महर्षि की कार्य-प्रणाली उनके सामने थी, इसलिये उनमें से हरेक भजन गाता, उपदेश व व्याख्यान देता और शास्त्रार्थ तक करने का अधिकारी समझता था। ऐसा लगता था प्रत्येक आर्यवीर सत्यार्थप्रकाश की तलवार हाथ में लेकर धर्मयुद्ध में उतर पड़ा है।

प० लेखराम के मैदान में आने से ईसाइयों और मुसलमानों मे खलबली मच गई। मुसलमानों की आशाओं पर पानी फेर दिया।

उन दिनों मिर्जा गुलाम मुहम्मद अहमद ने इस्लाम में मिर्जाई अहमदी अथवा कादियानी सम्प्रदाय की स्थापना की थी। वह अपने झूठे चमत्कारों से मुसलमानों की एक बहुत बड़ी संख्या को अपनी ओर आकर्षित करने में सफल होगये थे। उन्होंने कादियानगर में एक बहुत बडी मीनार बनवाई। वे कहते थे कि आसमान से सीधे खुदा की ओर से उन्हें इलहाम होता है। आयतें उतरती हैं, खुदा का सीधा सन्देश उन्हें प्राप्त होता है। उन्होंने सबको चैलेंज भी कर दिया था कि कोई भी आकर मुझ से मिले और चमत्कारों के बारे में जाने। पं० लेखराम ने उन्हें शास्त्रार्थ के लिए ललकारा। आमने सामने शास्त्रार्थ करने से मिर्जा डरता था। एक दिन स्वयं ही पं. लेखराम उसके निवास पर जा धमके। उसके घर पर ही जाकर उसका मुंह बन्द कर दिया। शास्त्रार्थ तो न हो सका, किन्तु मिर्जा ने आर्यसमाज के विरुद्ध "सुरमा चश्मे आर्या" पुस्तक लिखी। पं० लेखराम ने इसके जवाब में "नुस्खा खब्त अहमदिया" पुस्तक लिखी। पण्डित जी ने एक पुस्तक 'तकजीब बुराहीन अहमदिया' इससे पूर्व भी लिखी थी। अहमदियों के सम्बन्ध में लेखराम की तीसरी पुस्तक का नाम था "अबताले बुशारत अहमदिया"। इन किताबों के अलावा उन्होंने "रिसाला जहाद, हुज्जतुल इस्लाम और रद्देखिल इस्लाम" आदि कई पुस्तकें इस्लाम के सम्बन्ध में लिखी, जिससे इस्लामी संसार में हलचल मच गई। इससे अमृतसर, मिर्जापुर, इलाहाबाद, लाहौर, मेरठ और देहली में मुसलमानों ने मुकदमे दायर किये। किन्तु वह सब में ससम्मान रिहा होगये। दिल्ली का केस कप्तान डेविस की कचहरी में चला। स्वयं डेविस ने सारी पुस्तकें मंगवाकर पढ़ी, जिससे डेविस पर वह प्रभाव पडा कि उसने लेखक व प्रकाशक को बिना बुलाये मुकदमा खारिज कर दिया। १८९६ में बम्बई में मुसलमानों ने फिर मुकदमा दायर किया। वह भी खारिज होगया। इस पर मुसलमान बिगड़ गये। दिल्ली में बैठकर उनकी हत्या करने का षड्यन्त्र रचा गया और ६ मार्च, १८९७ को एक बिहारी मुसलमान शुद्ध होने के बहाने से पं० लेखराम के पास कई दिन तक रहता रहा, पण्डित जी के घर पर ही भोजन करता रहा। उसने समय पाकर पण्डित लेखराम के पेट में छुरा घोंप दिया। लेखराम धर्म पर बलिदान होगया। महर्षि दयानन्द के बलिदान के पश्चात् इस तरह का यह पहला बलिदान था। इसके बाद तो सैकड़ों आर्यवीर धर्म की वेदी पर बलिदान हुए। १८९७ के बाद स्वामी श्रद्धानन्द ने आर्यसमाज का नेतृत्व सम्भाला। वैसे तो वह लेखराम के साथ ही मिलकर आर्यसमाज का काम करते थे। किन्तु लेखराम के बाद तो उन्हीं के कन्धों पर सब भार आ पड़ा।

स्वामी श्रद्धानन्द का नेतृत्व

स्वामी श्रद्धानन्द का जन्म १८५६ में जिला जालन्धर के तलवन नामक ग्राम में हुआ था। बाल्यकाल में मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) का चरित्र अच्छा न था। वह शराब मांस का भी सेवन करते थे। किन्तु जब महर्षि बरेली पधारे तो महर्षि दयानन्द जी के व्याख्यान व दर्शन करके कृतार्थ होगये। सुप्त पवित्र संस्कार जाग उठे। आर्यसमाज में प्रवेश पागये। उन्होंने १८८८ में जालन्धर में वकालत और आर्यसमाज का काम एक साथ आरम्भ किया। १८८९ में अपना प्रसिद्ध पत्र "सद्धर्म प्रचारक" आरम्भ किया। आर्यसमाज का कार्य करते हुए थोड़े ही दिनों में वे इस योग्य होगये कि १८९२ में उन्हें आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रधान बना दिया गया। १८९७ में लेखराम जी बलिदान हो ही गये थे। उसके बाद सारा आर्यसमाज का कार्यभार स्वामी जी पर ही आ पडा था। १८९८ में उन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिवेशन में महर्षि दयानन्द की शिक्षा प्रणाली के अनुसार एक शिक्षा संस्था खोलने का प्रस्ताव रखा, जो स्वीकार होगया। १८९८ में ही उन्होंने गुरुकुल के लिए ३० हजार रुपया इकट्ठा कर लिया। गुरुकुल के प्रति आर्यसमाजियों की श्रद्धा देखिये कि अप्रैल १९०० तक उन्होंने चालीस हजार रुपया इकट्ठा कर लिया। उनकी इस सफलता पर उनका जलूस निकाला गया। उसी समय से उन्हें महात्मा मुन्शीराम कहा जाने लगा। २६ मई १९०० को प्रथम गुरुकुल गुजरांवाला में आरम्भ हुआ। उसके बाद नजीबाबाद उत्तरप्रदेश निवासी मुन्शी अमनसिंह ने गंगातट पर स्थित अपना ग्राम कांगड़ी ही दान में दे दिया। तब से उसका नाम गुरुकुल कांगड़ी पड़ गया। डी० ए० वी० कालेज से जो धब्बा आर्यसमाज को लग गया था, वह कांगड़ी गुरुकुल की स्थापना से धुल गया।

हजारों उच्चकोटि के विद्वान् महर्षि की पाठविधि को पढ़कर देश सेवार्थ निकले, गुरुकुल ने शिक्षा के क्षेत्र में मोड ही दे दिया। इसके साथ ही यह बात भी न भूलनी चाहिए कि लाखों लोगों ने करोड़ों रुपये दान दिया, किन्तु इसमें एक बहुत बड़े दान की आहुति भी डाली गई, वह थी पं० लेखराम जी की धर्मपत्नी लक्ष्मी देवी जी। पं० लेखराम जी जब सभा में उपदेशक थे, तब उन्हें ७ रुपये वेतन मिलता था। स्वामी श्रद्धानन्द जी के कहने पर उनका वेतन बढ़ाकर ११ रुपये कर दिया था। वेतन वृद्धि पर लेखराम जी बहुत नाराज हुए थे, किन्तु वे रुपये लक्ष्मी जी अलग रखती रही। गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना पर उसने वे स्वामी जी को पं० लेखराम जी के नाम पर दान में दे दिये थे। कितना बड़ा त्याग था उस समय आर्यों का। इधर स्वामी श्रद्धानन्द जी ने भी १९०२ में अपना कीमती पुस्तकालय, १९०७ में अपना सद्धर्म प्रचारक प्रेस और १९११ में अपनी अन्तिम सम्पत्ति जालन्धर की कोठी भी गुरुकुल को भेंट चढादी। यह उनके ही तप त्याग का फल था कि गुरुकुल कांगड़ी न केवल पंजाब के प्रत्युत भारतभर के आर्यों के लिए तीर्थ स्थान बन गया। अपने दोनों लड़के भी गुरुकुल की भेंट चढ़ा दिये। जब उन्होंने देखा कि गुरुकुल अब अपने पांवों पर खड़ा होगया है तो उन्होंने उसे भी ६१ वर्ष की आयु में १९१७ में सन्यास लेकर छोड़ दिया। इस प्रकार आर्यसमाज के इतिहास में यह काल आर्यसमाज का स्वर्णयुग कहलायेगा। २० वर्ष के इस लम्बे काल में आर्यसमाज ने प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति की। जहां स्वामी जी ने गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली को जन्म देकर ईसाइयत का मुकाबला किया वहां सभा के वेदप्रचार कार्य को भी समुन्नत किया। कन्या विद्यालय जालन्धर के द्वारा स्त्री-शिक्षा तथा स्त्री-सुधार के आंदोलन का सूत्रपात किया। स्वामी जी के साथ ही इधर हरयाणा में लाला लाजपतराय ने रोहतक हिसार में आर्यसमाजों की स्थापना करके बहुत काम किया। उस समय वे लाहौर में जाकर राजनीतिक आकाश में सितारे के समान चमक रहे थे कि उनका तत्कालीन नेता मुकाबला भी नहीं कर सकते थे। सारे देश में बाल-पाल लाल की ही चर्चा होती थी।

(क्रमशः)

शराबबन्दी आंदोलन के बढ़ते कदम—

हरयाणा के कोने-कोने में शराब के ठेकों पर धरणे आरम्भ

रोहतक ५ अप्रैल (केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष द्वारा) आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने गत ३ वर्ष से शराबबन्दी आंदोलन चला रखा है। ग्राम पंचायतों से प्रेरणा करके शराबबन्दी प्रस्ताव सरकार को भिजवाये जाते हैं। ठेकों की नीलामी के समय प्रदर्शन करवाकर ज्ञापन दिलवाये जाते हैं। जिन पंचायतों के प्रस्तावों की उपेक्षा करके वहां ठेकों को नीलामी की जाती है, वहां ग्रामीण जनता को ठेकों पर धरणा देने में यथासम्भव प्रत्येक प्रकार का सहयोग दिया जाता है। इसी कार्यक्रम के अन्तर्गत अप्रैल मास में निम्नलिखित स्थानों पर शराब के ठेकों पर धरणे आरम्भ हो गये हैं—

ग्राम रिण्ढाणा जि० सोनीपत

ग्राम रिण्ढाणा तहसील गोहाना जि० सोनीपत की पंचायत ने पंचायत एक्ट के अनुसार समय पर शराबबन्दी का प्रस्ताव पास करके भेज दिया था। सोनीपत में दिनांक ८ मार्च को ठेकों की नीलामी के अवसर पर ग्राम के नर-नारियों ने शांतिपूर्वक प्रदर्शन किया, परन्तु पुलिस ने शराब के ठेकेदारों के साथ मिलीभगत करके प्रदर्शनकारियों पर लाठीचार्ज किया, जिसमें महिलायें भी घायल हो गई। ग्रामवासियों ने अगले दिन से ही अपने ग्राम के ठेके पर किसान यूनियन, जनवादी तथा आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से धरणा आरम्भ कर दिया। १४ मार्च को ठेके पर शराबबन्दी सम्मेलन किया गया, जिसमें सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह जी तथा सभा के अन्य उपदेशकों के व्याख्यान हुए। ३०-३१ मार्च को सभा के उपदेशक पं० कुलवन्तराय तथा प० मुरारीलाल बेचैन ने भी शराब विरोधी प्रचार किया। इस प्रचार से ग्रामवासियों में इतनी चेतना आगई कि १ अप्रैल को नये ठेकेदार को शराब की बोतलें ठेके पर रखने का साहस नहीं हो सका। पुलिस के सहारे को भी असफल कर दिया। जब भी ठेकेदार पुलिस को साथ लेकर ट्रक में शराब की बोतलें लेकर ग्राम में प्रवेश करने का यत्न करता तो ग्राम के नरनारी अपने-अपने घरों से निकल कर सड़क पर लाठी तथा जेलियां लेकर खड़े हो जाते और शराब विरोधी जयघोष लगाकर ट्रक को वापिस जाने पर बाधित कर देते। ग्राम के सरपच श्री रणधीरसिंह तथा आर्यसमाज के मन्त्री वैद्य धर्मसिंह आर्य अपने नवयुवक साथियों के साथ निरन्तर धरणे पर बैठे हैं।

ग्राम मांडोठी जि० रोहतक

ग्राम के नवयुवक सरपंच श्री योगेन्द्रसिंह ने अपने ग्राम से समय पर शराबबन्दी प्रस्ताव सरकार को भेज दिया था, परन्तु आबकारी विभाग ने उनके प्रस्ताव की अनदेखी करके शराब के ठेके की नीलामी करवादी। इसके विरोध में ग्राम में ३० मार्च को पंचायत हुई। चौ० प्रियव्रत जी के परामर्श से ठेके पर धरणा देने का निर्णय किया गया। सभा के उपदेशक प० अर्जुनदेव आर्य सिद्धांत शास्त्री तथा प० जयपाल आर्य की भजनमण्डली ने ३१ मार्च को ठेके पर शराब विरोधी प्रचार किया। एक अप्रैल को सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह, सभा के कोषाध्यक्ष मा. बद्रीप्रसाद आर्य, सभा के वेदप्रचाराधिष्ठाता श्री रघुवीरसिंह तथा सभा गणक श्री सीसराम शराबबन्दी सम्मेलन पर पधारे। सभाप्रधान जी ने ग्रामवासियों को, धरणे पर बैठे नरनारियों को बधाई देते हुए कहा कि यदि इसी प्रकार अन्य ग्रामों में भी जागृति आजाये तो ग्रामों से शराब जैसी बीमारी समाप्त हो सकती है। ग्राम पंचायत ने ठेकेदार को ठेके के लिए स्थान देनेवालों, शराब खरीदनेवालों पर जुर्माना देने का निर्णय किया है।

४ अप्रैल को मुख्यमन्त्री की सार्वजनिक सभा में भी प्रो० शेरसिंह जी ने मुख्यमन्त्री से उन सभी ग्रामों से ठेके समाप्त करने पर बल दिया जिन पचायतों ने शराबबन्दी के प्रस्ताव सरकार को भेज रखे हैं। शराब की हानियों से ग्रामीण जनता बर्बाद हो रही है। सरकार को शराब की आमदनी का लालच नहीं करना चाहिए।

ग्राम सांघी जि० रोहतक का ठेका समाप्त

इस ग्राम की पंचायत निरन्तर ३ वर्षों से शराबबन्दी प्रस्ताव कर रही है और नीलामी के समय प्रदर्शन में भी ग्रामवासियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया है, परन्तु शराब का ठेकेदार किसी न किसी प्रकार से ठेका खोलने में सफल हो जाता है। इस वर्ष भी ग्राम के नवयुवकों तथा अन्य सामाजिक कार्यकर्ता, सभा के कार्यालय के कर्मचारियों एवं उपदेशकों के साथ मिलकर १० मार्च के प्रदर्शन में सम्मिलित हुए, परन्तु आबकारी विभाग के अधिकारियों ने इनकी आवाज की अनसुनी करके शराब के ठेके की नीलामी करवादी। ग्रामवासियों ने पंचायत करके धरणा देने का निर्णय कर लिया। सभा के उपदेशक ब्र. महेन्द्र शास्त्री ने ग्राम के युवकों को धरणे पर बैठने के लिए प्रोत्साहित किया। एक अप्रैल से धरना हवन यज्ञ के साथ आरम्भ होगया। सभा के उपदेशक पं० कुलवन्तराय आर्य, भजनोपदेशक प० मुरारीलाल बेचैन, प० जयपाल आर्य, प० भजनलाल आर्य सरपच औरंगाबाद मित्रोल जि० फरीदाबाद, प० हरिश्चन्द्र शास्त्री आदि के उपदेश तथा भजन प्रातः, दोपहर बाद तथा रात्रि को ४ अप्रैल तक होते रहे। ग्राम की पचायत ने निर्णय किया है कि ठेकेदार तथा ठेकेदार को दुकान देनेवाले का बहिष्कार तथा शराब खरीदनेवालों को जुर्माना किया जायेगा। इस प्रकार ग्रामीण जनता को एकता के कारण शराब के ठेकेदार के पाव उखड़ गये हैं। ६ अप्रैल को सामान उठाकर ठेकेदार साघी से चला गया है।

५ अप्रैल को सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह जी ने सभा के उपदेशक ब्र० महेन्द्रसिंह शास्त्री के साथ धरणे पर बैठे नर-नारियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि अब समय आगया है कि हरयाणा से शराब की लानत को समाप्त करने के लिए आपके ग्राम की भांति संघर्ष करके इतिहास को नया मोड देना है। आपने इस सघर्ष में जुटे हुए सभी कार्यकर्त्ताओं की सराहना की।

ग्राम सैंदा जि० कुरुक्षेत्र

पजाब केसरी ३-४-८७ के अनुसार ग्राम सैंदा जि० कुरुक्षेत्र १५० से अधिक महिलाओं ने शराब का ठेका उठाने के लिए धरणा दिया। इससे पूर्व पचायत ने आबकारी व कराधान विभाग को ठेका हटाने के लिए प्रस्ताव भेजा था, फिर भी ठेके की नीलामी करदी गई। यह धरणा कानून की छात्रा सांस्कृतिक पार्टी की प्रधान सुरेश कुमारी के नेतृत्व में चल रहा है।

ग्राम ईसरहेड़ी जि० रोहतक

(दैनिक ट्रिब्यून १-४-८७ के अनुसार) पजाब और हरयाणा हाई-कोर्ट ने हरयाणा सरकार को जि० रोहतक के ग्राम ईसरहेड़ी में अंग्रेजी और देशी शराब के ठेके खोलने पर प्रतिबन्ध लगाने के आदेश दिये हैं। जजों के एक बेंच ने यह फैसला ग्राम पचायत को याचिका पर दिया है। ग्राम पचायत का कहना है कि ये ठेके ग्राम के प्राईमरी स्कूल के पास खोले गये हैं। जहां ट्रक चालक आदि अन्य वाहन चालक शराब पीकर हगामा करते हैं।

ग्राम पाली जि० महेन्द्रगढ़

महेन्द्रगढ़ उपमण्डल की ग्राम पंचायत पाली ने अपने ग्राम से शराब का ठेका हटाने की मांग की है। पंचायत द्वारा पारित एक प्रस्ताव में कहा है कि उक्त ठेका बस अड्डे के पास है, जिससे गुण्डागर्दी बढ़ती है तथा ग्राम में शराब पीनेवालों की संख्या में दिन-प्रतिदिन वृद्धि हो रही है।

जीवननगर, गुरुनानकपुरा करनाल

(दैनिक पंजाब केसरी ४-४-८७) आबकारी विभाग द्वारा स्थानीय जीवननगर-गुरुनानकपुरा कालोनी करनाल के प्रवेश मार्ग पर शराब का ठेका नीलाम कर दिये जाने के कारण इस क्षेत्र के निवासियों में भारी रोष व्याप्त है। रोष प्रकट के लिए इस क्षेत्र के लोगों ने ठेका खुलने के स्थान पर गत दिवस धरणा भी दिया, जिसमें कालोनी की महिलाओं ने

(शेष पृष्ठ ४ पर)

केरल में साम्प्रदायिक शक्तियों को जनता की झाड़

केरल विधानसभा के चुनावों के परिणाम यह प्रमाणित करते हैं कि वहां की जनता में कांग्रेस की उन सौदेबाजियों के विरुद्ध भारी रोष था, जो उसने मुस्लिमलीग और ईसाइयों की केरल कांग्रेस के साथ की थी। केरल में इसी सौदेबाजी के परिणामस्वरूप दो मुस्लिम बहुल जिले बना दिये गये थे और इसी प्रकार एक जिला केरल कांग्रेस के कहने पर। माकपा के नेता श्री नम्बूदरीपाद ने उस रोष का लाभ उठाया। याद रहे कि श्री नम्बूदरीपाद ने ही पहिले पहल मुस्लिमलीग से समझौता किया था। इस बार उन्होंने चुनाव से कई महीने पहले ही यह स्पष्ट घोषणा करदी थी कि वे साम्प्रदायिक दलों से कोई समझौता नहीं करेंगे। इसका सुफल उनको शीघ्र ही मिल गया।

जम्मू कश्मीर में भी मुस्लिम एकता मोर्चे ने मुंह की खाई, क्योंकि वहां भी फारूक अब्दुल्ला ने मुस्लिम साम्प्रदायिक शक्तियों के खिलाफ झण्डा बुलन्द किया। केरल की जनता का वोट माकपा के पक्ष में न होकर साम्प्रदायिक शक्तियों के बढ़ते हुए मनोबल और सिद्धांतों का बलि देकर उनसे किये गये समझौते के विरुद्ध था। जनता का यह सम्मान राष्ट्र की एकता के हक में एक बड़े कदम के रूप में समझना चाहिये।

राजनीतिक दल यदि चुनाव जीतने के लिये सामयिक रूप से यह नीति अपनायेंगे और चुनाव जीतने के लिये समय उपयुक्त होने पर फिर साम्प्रदायिक शक्तियों से समझौता कर लेंगे, तब तो जनता अपना उत्साह खो बैठेगी और साम्प्रदायिक शक्तियां की बन आयेगी, परन्तु यदि देश के सभी दल सिद्धांत रूप से सदा के लिये यह फैसला कर लेंगे कि साम्प्रदायिक शक्तियों से किसी कीमत पर भी समझौता नहीं करना, तो वे शक्तियां दम तोड़ जायेंगी। देश की एकता को यदि सुदृढ़ करना है और उसको कभी कोई खतरा दरपेश न हो सके, यह सुनिश्चित करना है तो सभी राष्ट्रीय कहलानेवाले दलों को सम्प्रदायों और राजनीति को अलग-अलग करने का संकल्प लेना होगा। समय आगया है, जबकि सभी दलों के नेता बैठकर निर्णय लें कि सम्प्रदायों के नाम पर बने और साम्प्रदायिकता का सहारा लेनेवाले दलों की मान्यता तुरन्त समाप्त करदी जाये और आगे के लिये उन पर प्रतिबन्ध लगा दिया जावे।

—प्रो० शेरसिंह अध्यक्ष, हरयाणा रक्षावाहिनी

सभा शताब्दी समारोह के अवसर पर रचनात्मक कार्यक्रम की योजना

आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना शताब्दी समारोह १५ से १७ मई को रोहतक में धूमधाम से मनाया जारहा है। इस अवसर पर हरयाणा में पूर्ण शराबबन्दी लागू करने की मांग की जायेगी। यह समय की पुकार और रचनात्मक कार्यक्रम है। अतः इस योजना को सफल करने हेतु अपने नगर तथा ग्राम से अधिक से अधिक नर-नारियों के हस्ताक्षर करवाकर सभा को भेजने का प्रयत्न करें। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सर्वहितकारी में प्रारूप प्रकाशित किया जारहा है। आशा है आर्यसमाज तथा अन्य सामाजिक कार्यकर्त्ता इस कार्य में आज से ही जुट जायेंगे। हस्ताक्षर पत्र भेजने का पता—

—वेदव्रत शास्त्री
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा
सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

हरयाणा में पूर्ण नशाबन्दी के लिए हस्ताक्षर

सेवा में,

माननीय प्रधानमन्त्री, भारत सरकार नई-दिल्ली तथा
माननीय मुख्यमन्त्री, हरयाणा सरकार चण्डीगढ़।

भारत सरकार ने गरीबी हटाने तथा समाज कल्याण के अनेक कार्यक्रमों को गति देने के लिये २० सूत्री कार्यक्रम लागू किया है, परन्तु शराबबन्दी के कार्यक्रम को २० सूत्री कार्यक्रम में सम्मिलित नहीं किया गया, जबकि हमारे संविधान में उसका स्पष्ट उल्लेख है। यह स्वयं सिद्ध सत्य है कि शराबबन्दी और नशाबन्दी से बढ़कर समाजवादी तथा कल्याणकारी कार्यक्रम और कोई नहीं हो सकता। पूर्ण शराबबन्दी से जहां एक ओर करोड़ों गरीब किसान, मजदूर तथा अन्य छोटे कारोबार करनेवाले परिवारों, महिलाओं को गरिमापूर्ण जीवन व्यतीत करने का अवसर भी मिलेगा। हमारी मान्यता है कि बालकल्याण और महिला कल्याण का यह सर्वोत्तम कार्यक्रम है। इसलिये हम हरयाणा सरकार से अनुरोध ही नहीं आग्रह भी करते हैं कि हरयाणा प्रदेश में तुरन्त पूर्ण शराबबन्दी का आदेश देकर हरयाणा की जनता की भावनाओं का आदर करें। हम हरयाणा के नागरिक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा संचालित शराबबन्दी आंदोलन का हृदय से स्वागत करते हैं।

हस्ताक्षर……

(पृष्ठ ३ का शेष)

भी भाग लिया। कालोनी की ओर से बनाई गई जीवननगर-गुरुनानक पुरा सुधार समिति के प्रधान श्री मक्खनसिंह ने बताया कि जब तक आबकारी विभाग इस ठेके को रद्द नहीं करता, तब तक हम विरोध जारी रखेंगे। आर्यसमाज होली मोहल्ला करनाल के मन्त्री श्री जसवन्तसिंह आर्य जी अपने सहयोगियों के साथ धरणे में पूर्ण योगदान दिया।

हांसी जि० हिसार में शराब के ठेके पर धरणा

(दैनिक नभ-छोर हिसार के अनुसार) एक अप्रैल को हांसी के उमरा गेट पर नये खुले शराब के दो ठेकों को लेकर धरणा लगा रही सैकड़ों महिलाओं पर ठेकेदार के आदमियों द्वारा हमला किये जाने पर नगर में भारी तनाव बना हुआ है। महिलायें प्रातः ही शराब का ठेका खुलने से पूर्व एकत्रित होगई थीं और शराब के विरुद्ध नारे लगा रही थीं। ठेकेदार ने पुलिस को बुलवा लिया, पुलिस ने लाठीचार्ज कर दिया। इस पर नगर में रोष फैल गया और बाजार बन्द होगया। गुसाई गेट पर स्थित ठेके पर भी पुरुष तथा महिलाओं ने धरणा लगा दिया। रात्रि को नगर में एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया, जिसमें सभी दलों के कार्यकर्त्ताओं ने ठेके रद्द करने की मांग की।

२ अप्रैल को दोपहर बाद उमरा गेट पर धरणे पर बैठी महिलाओं पर ठेकेदार के कुछ गुण्डों ने हमला कर दिया, जिसमें चार महिलायें तथा दो पुरुष घायल होगये। श्री भगवानदास भाटिया तथा श्री ऋषिराम एडवोकेट को भी धमकी देकर आतंकित करने का यत्न किया। गुण्डे शामियाने, दरियां व माइक आदि उठा ले गये। सभा के उपदेशक पं० अतरसिंह आर्य हांसी के निकट के आर्यसमाजों के कार्यकर्त्ताओं से सम्पर्क करके धरणे को सफल करने के कार्य में जुट गये हैं। ५ अप्रैल को ठेका बन्द कर दिया गया।

आर्यसमाज माडल टाउन पानीपत जि० करनाल

आर्यसमाज माडल टाउन पानीपत के निकट परथी चौक पर शराब का ठेका खुलने से महिलाओं ने वहां धरणा आरम्भ कर दिया। शराब तथा सरकार विरोधी नारे लगाये। ठेके का मालिक उक्त ठेके को खोल नहीं सका और वह बन्द पड़ा है। आर्य महिलाओं का कहना है कि बस्ती में ठेका खुलने से सामाजिक वातावरण पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। महिलाओं ने इस साहसिक कार्य की स्थानीय संस्थाओं ने भूरि-भूरि प्रशंसा की है। (दैनिक नवभारत टाइम्स से)

इस प्रकार शराब के ठेके ग्रामों के अतिरिक्त शहरों में शराब के ठेकों पर धरणे आरम्भ होगये हैं। शराब के विरुद्ध जनमत तैयार हो रहा है। हिमाचल प्रदेश में भी कुछ स्थानों पर महिलाओं द्वारा शराब के ठेकों पर धरणा देने के समाचार मिले हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा को दान

श्री कर्नल सत्यपाल मलिक एवं कर्नल ओमप्रकाश मलिक गोहाना अड्डा रोहतक निवासी ने अपनी पूज्या माता श्रीमती सुशीला देवी की स्मृति में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, सिद्धांती भवन, रोहतक को एक दरी १४×१६ फुट लम्बी दान में दी। हम सभा की ओर से दानी सज्जनों का हार्दिक धन्यवाद करते हैं। —वेदव्रत शास्त्री

दर्शनों का परिचय और उद्देश्य

पं० धर्मदेव "मनीषी" दर्शनाचार्य, गुरुकुल कालवा

गतांक से आगे—

सांख्यदर्शन का परिचय

सांख्यदर्शन के रचयिता महर्षि कपिल हैं। इस ग्रंथ में छः अध्याय हैं। सूत्रों की संख्या ४५१ है और प्रक्षिप्त सूत्रों को मिलाकर ५२७ है। इस दर्शन का उद्देश्य प्रकृति और पुरुष की विवेचना करके उनके अलग-अलग स्वरूप को दिखलाना है। प्रायः गणनार्थक 'संख्या' से सांख्य शब्द की व्युत्पत्ति मानी जाती है, परन्तु इसका सुन्दरतम और वास्तविक अर्थ है विवेक ज्ञान। 'संख्या' शब्द सम्पूर्वक 'चक्षिङ् ख्यात्र्' धातु से बनता है, जिसका अर्थ है—'सम्यक् ख्यानम्' अर्थात् सम्यक् विचार। इसी को विवेक बुद्धि कहते हैं।

सांख्यदर्शन का उद्देश्य

अथ त्रिविधदुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्तपुरुषार्थः। १।१

अब तीन प्रकार के आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक दुःखों की नितांत निवृत्ति परम पुरुषार्थ—पुरुष का परम लक्ष्य—परम पुरुषत्व मानव एवं मानव जीवन की परम सफलता। मानव स्वरूपता कैवल्यानुभूति जो है, वह प्रस्तुत की जाती है।

ध्यानधारणाभ्यासवैराग्यादिभिस्तन्निरोधः। ६।२९

ध्यान धारणा प्राणायाम आसन वैराग्य यम नियम के द्वारा अभिमान का निरोध होता है।

जब मनुष्य विवेक द्वारा यह जान लेता है कि पुरुष आत्मा और परमात्मा प्रकृति से भिन्न है, तब उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है। 'ईश्वरासिद्धे' आदि सूत्रों को देखकर कुछ लोग महर्षि कपिल को नास्तिक कहते हैं, परन्तु इस सूत्र में तो उन्होंने जगत् के उपादानभूत कारण को असिद्ध बताया है। "स हि सर्ववित् सर्वकर्ता" आदि सूत्र महर्षि कपिल को परम आस्तिक बता रहे हैं।

योगदर्शन का परिचय

योगदर्शन महर्षि पतंजलि की रचना है। इस ग्रंथ के चार पाद हैं। सूत्रों की संख्या १९४ है। आकार की दृष्टि से यह दर्शनों में सबसे छोटा है, परन्तु महत्व की दृष्टि से सब दर्शनों में महान् है। योग शब्द के अर्थ अनेक हैं। योग शब्द का अर्थ जोड़ना, मिलाना भी होता है। (युजिर योगे) (युज समाधौ) से योग शब्द सिद्ध होता है। योगदर्शन में यह शब्द दोनों ही अर्थों में प्रयुक्त हुआ है।

योगदर्शन का उद्देश्य

यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानसमाधयोऽष्टावङ्गानि। २।२९

एक (यम), दूसरा (नियम), तीसरा (आसन), चौथा (प्राणायाम); पांचवां (प्रत्याहार), छठा (धारणा), सातवां (ध्यान) और आठवां (समाधि)। ये सब उपासना योग के अंग कहाते हैं और आठ अंगों का सिद्धांत रूप फल संयम है।

तत्रा हिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः। २।३०

उन आठों में से पहला 'यम' है, सो पांच प्रकार का है—एक (अहिंसा) अर्थात् सब प्रकार से सब काल में, सब प्राणियों के साथ वैर छोड़ के प्रेम प्रीति से वर्तना। दूसरा (सत्य) अर्थात् जैसा अपने ज्ञान में हो, वैसा ही सत्य बोलें, करें और मानें। तीसरा (अस्तेय) अर्थात् पदार्थ वाले की आज्ञा के बिना किसी पदार्थ की इच्छा भी न करना, इसी को चोरी त्याग कहते हैं। चौथा (ब्रह्मचर्य) अर्थात् विद्या पढने के लिये बाल्यावस्था से लेकर सर्वथा जितेन्द्रिय होना और पच्चीसवें वर्ष से लेकर अड़तालीस वर्ष पर्यन्त विवाह करना, परस्त्री वेश्या आदि का त्यागना, सदा ऋतुगामी होना, विद्या को ठीक-ठीक पढ़के सदा पढ़ाते रहना और उपस्थ इन्द्रिय का सदा नियमन करना। पांचवां (अपरिग्रह) अर्थात् विषय और अभिमानादि दोषों से रहित होना। इन पांचों का ठीक-ठीक अनुष्ठान करने से उपासना का बीज बोया जाता है।

दूसरा अंग उपासना का 'नियम' है जो कि पांच प्रकार का है—

ते तु शौचसन्तोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः। २।३२

पहिला (शौच) अर्थात् पवित्रता करनी सो भी दो प्रकार की है—एक भीतर की और दूसरी बाहर की। भीतर की शुद्धि धर्माचरण, सत्यभाषण, विद्याभ्यास, सत्संग आदि शुभ गुणों के आचरण से होती है। दूसरा (सन्तोष) जो सदा धर्मानुष्ठान से अत्यन्त पुरुषार्थ करके प्रसन्न रहना और दुःख में शोकातुर न होना। किन्तु आलस्य का नाम सन्तोष नहीं है। तीसरा (तपः) जैसे सोने को अग्नि में तपाके निर्मल कर देते हैं, वैसे ही आत्मा और मन को धर्माचरण और शुभ गुणों के आचरण रूप तप से निर्मल कर देना। चौथा (स्वाध्याय) अर्थात् मोक्ष विद्या विधायक वेदशास्त्र का पढना-पढाना और ओंकार के विचार से ईश्वर का निश्चय करना-कराना और पांचवां (ईश्वर प्रणिधान) अर्थात् सब सामर्थ्य, सब गुण, प्राण, आत्मा और मन का प्रेमभाव से आत्मादि सब द्रव्यों का ईश्वर के लिये समर्पण करना। ये पांच नियम भी उपासना का दूसरा अंग है।

तीसरा अंग—स्थिरसुखमासनम्। २।४६

अर्थात् जिसमें सुखपूर्वक शरीर और आत्मा स्थिर हो, उसको 'आसन' कहते हैं अथवा जैसी रुचि हो वैसा करें।

चौथा अंग—तस्मिन् सति श्वासप्रश्वासयोर्गतिविच्छेदः प्राणायामः। २।४९

जो वायु बाहर से भीतर को आता है उसको 'श्वास' और भीतर से बाहर जाता है उसको प्रश्वास कहते हैं। उन दोनों के जाने-आने को विचार से रोकें। नासिका को हाथ से कभी न पकड़ें, किन्तु ज्ञान से ही उनके रोकने को 'प्राणायाम' कहते हैं।

पांचवां अंग—स्वविषयासंप्रयोगे चित्तस्य स्वरूपानुकार इवेन्द्रियाणां प्रत्याहारः। २।५४

'प्रत्याहार' उसका नाम है कि जब पुरुष अपने मन को जीत लेते हैं, तब इन्द्रियों का जीतना अपने आप हो जाता है, क्योंकि मन ही इन्द्रियों का चलानेवाला है।

छठा अंग—देशबन्धश्चित्तस्य धारणा। ३।१

जब उपासना योग के पूर्वोक्त पांचों अंग सिद्ध हो जाते हैं, तब उस का छठा अंग धारणा भी यथावत् प्राप्त होती है। 'धारणा' उसको कहते हैं कि मन को चंचलता से छुडाके नाभि, हृदय, मस्तक, नासिका और जीभ के अग्रभाग आदि देशों में स्थिर करके ओंकार का जप और उसका अर्थ जो परमेश्वर है उसका विचार करना।

सातवां अंग—तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम्। ३।२

धारणा के पीछे उसी देश में ध्यान करने और आश्रय लेने के योग्य जो अन्तर्यामी व्यापक परमेश्वर है उसके प्रकाश और आनन्द में अत्यन्त विचार और प्रेमभक्ति के साथ इस प्रकार प्रवेश करना कि जैसे समुद्र के बीच में नदी प्रवेश करती है। इस समय में ईश्वर को छोड़ किसी अन्य पदार्थ का स्मरण नहीं करना, किन्तु उसी अन्तर्यामी के स्वरूप और ज्ञान में मग्न हो जाता है, इसका नाम ध्यान है।

आठवां अंग—तदेवार्थमात्रनिर्भासं स्वरूपशून्यमिव समाधिः। ३।३

इन सात अंगों का फल समाधि है—जैसे अग्नि के बीच में लोहा भी अग्निरूप हो जाता है। इसी प्रकार परमेश्वर के ज्ञान में प्रकाशमय अपने शरीर को भी भूले हुए के समान जानके आत्मा को परमेश्वर के प्रकाशस्वरूप आनन्द और ज्ञान से परिपूर्ण करने को 'समाधि' कहते है।

(क्रमशः)

हैदराबाद सत्याग्रह सम्मान पेंशन

सभाप्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती, प्रो० शेरसिंह जी व सोमनाथ जी मरवाह की गृहराज्यमन्त्री श्री चिन्तामणि पाणिग्रही से भेंट सरकार द्वारा उचित समाधान का आश्वासन

दिल्ली २० मार्च। आज ३ बजे स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के साथ प्रो० शेरसिंह, बाबू सोमनाथ एडवोकेट, गृहराज्यमन्त्री श्री चिन्तामणिक पाणिग्रही से मिले। हैदराबाद सत्याग्रह में भाग लेनेवाले सेनानियो के सम्बन्ध में गृहमन्त्रालय के अधिकारियो द्वारा की जारही लापरवाही की ओर मन्त्री महोदय का ध्यान आकृष्ट किया गया, जिससे पेंशन के अधिकारी स्वतन्त्रता सेनानियो में असन्तोष हो रहा है। लगभग एक घण्टे तक आर्यनेताओ ने अपना दृष्टिकोण रखा।

श्री पाणिग्रही ने पेंशन प्राप्त करने के अधिकारी सत्याग्रहियों के प्रति बड़ी सहानुभूति से सभी मुद्दों पर विचार करने का आश्वासन दिया। गैर सरकारी सलाहकार समिति का कार्यकाल ३१ मार्च को समाप्त हो रहा था। समिति का कार्य पूरा करने के लिये सभाप्रधान के लिखित अनुरोध पर इसे आगामी सितम्बर तक बढ़ा दिया गया।

समिति की आगामी बैठक जिसे गृहमन्त्रालय के सेल ने रोक दिया था, श्री पाणिग्रही ने २५ मार्च को बैठक बुलाकर अपनी सिफारिशें भेजने को भी स्वीकार कर लिया।

हरयाणा राजस्थान से गोधन बाहर नहीं जायेगा, गोहत्या विरोधार्थ आर्य प्रचारकों के सत्प्रयास

अखिल भारतीय गोराष्ट्र रक्षा संघर्ष समिति की ओर से आचार्य सत्यप्रिय जी के नेतृत्व में स्वा० सिंहमुनि (बादशाहपुर), स्वामी अमरानन्द जी (मेवात केसरी), श्री भगत मगतूराम, कुवरसिंह ने २१ ग्रामों की पंचायत ग्राम जोडिया त० कोटकासिम (अलवर) में तथा २० मार्च को ३१ ग्रामों की पचायत नन्दरामपुर बास त० महेन्द्रगढ़ में और २२-३-८७ को ५१ ग्रामों की पंचायत आर्यसमाज रेवाड़ी में तथा २५ मार्च को ३५ ग्रामो की पंचायत तावडू में एव २६ को सोडावास (अलवर) में पचायतो ने निर्णय किया कि कोई हिन्दु गोधन को मेव को न बेचे और राजस्थान हरयाणा से गोधन बाहर ले जानेवालों की सूचना तुरन्त पुलिस को दें और यदि पुलिस कार्यवाही में उदासीनता दिखाये तो जनसमर्थन से गोवें छुड़ाकर गोशाला आदि में भेज दी जावें और यदि गोशाला भार उठाने में असमर्थता प्रकट करे तो गउवें गोभक्त सेवकों को दे दी जावें। "जो पाले सो पोये" के नाद को ग्राम-ग्राम और डगर-डगर में गुंजारित कर दिया जाये।

—सवाददाता

विशाल जनजागरण यात्रा

बदतमीजी कर रहे हैं आज फिर भवरे चमन में,
साथियो उठो! आंधियां उठाने का जमाना आगया है।
वक्त की तकदीर स्याही से लिखी जाती नहीं,
खून में कलमें डुबाने का जमाना आगया है॥

नौजवानो,

आज राष्ट्र धू-धूकर जल रहा है, सामाजिक नैतिक मूल्यों की सरेआम धज्जियां उड़ाई जारही हैं, आपसी भाईचारे और विश्वास का स्थान अविश्वास और द्वेषभाव ने ले लिया है। धार्मिक पाखण्ड, सामाजिक अन्याय और आर्थिक विषमता के कारण साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, चरित्रहीनता, हरामखोरी का वातावरण बनता जारहा है और राष्ट्र की भावी निर्माणशक्ति युवापीढ़ी पश्चिम की चकाचौंध करनेवाली विलासपूर्ण संस्कृति में उलझकर अपनी संस्कृति, अपनी सभ्यता को भूलती जारही है, परन्तु आश्चर्य की बात है कि यह सब कुछ धर्म के नाम पर किया जारहा है। स्वार्थ के वशीभूत धर्म का मनमना अर्थ कर राष्ट्र को तोड़ने का प्रयास किया जारहा है।

ऐसी परिस्थितियों में युवाशक्ति को इन विध्वंसकारी शक्तियों से लोहा लेने के लिए आगे आना चाहिए और संगठित होकर जनता को धार्मिक पाखण्ड और अन्धविश्वास से हटाकर सत्य सनातन वैदिकधर्म का प्रचार कर समाज में फैली बुराइयों के विरुद्ध संघर्ष करना चाहिए।

इस प्रयोजन हेतु आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा मनाये जाने वाले शताब्दी वर्ष के उपलक्ष में ७ मई से १५ मई, ८७ तक एक सौ एक नौजवानों द्वारा एक विशाल जनजागरण यात्रा नरवाना से रोहतक तक निकाली जारही है। इन दिनों में अवकाश होने के कारण अधिक से अधिक युवक इस यात्रा में भाग लेकर यश एवं पुण्य के भागी बन सकते हैं। अत: आज ही धर्मदेव विद्यार्थी आर्यसमाज नरवाना जि० जींद के पते पर सम्पर्क कर, अपने निर्णय से अवगत करायें।

दिल्ली में महात्मा हंसराज दिवस रविवार १९ अप्रैल, १९८७ को

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी महात्मा हंसराज दिवस रविवार, १९ अप्रल, १९८७ को प्रात: ९ से १ बजे तक तालकटोरा गार्डन, इण्डोर स्टेडियम, नई दिल्ली में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, डी० ए० वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी तथा समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से बड़े समारोहपूर्वक मनाया जारहा है। इस समारोह की अध्यक्षता आर्यसमाज के प्रसिद्ध संन्यासी महात्मा अमर स्वामी जी महाराज करेंगे।

मेरी समस्त आर्यजनता से प्रार्थना है कि वे उक्त तिथि को थोड़ा समय निकाल कर कार्यक्रम में अवश्य सम्मिलित होने की कृपा करें। इस समारोह में आर्यसमाज के विद्वान्, प्रसिद्ध आर्यनेता तथा भारत सरकार के मन्त्री महोदय भी महात्मा हंसराज जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे।

—रामनाथ सहगल
मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

आवश्यक निवेदन

सभा शताब्दी समारोह के जिलेवार सयोजकों से निवेदन है कि वे अपने पासपोर्ट साइज के चित्र शीघ्र सभा कार्यालय में भेजने का कष्ट करें, ताकि स्मारिका में प्रकाशित हो सकें।

—संयोजक

आर्य सत्याग्रहियों का सम्मान

१५ से १७ मई, १९८७ ई० तक दयानन्दमठ, रोहतक में होने वाले आर्य प्रतिनिधि सभा शताब्दी समारोह पर आर्यसमाज के सभी सत्याग्रहियों एवं जेलयात्रियों का सम्मान किया जायेगा। उन्हें सत्याग्रह के बिल्ले दिये जायेंगे और पण्डाल में उनके बैठने के लिए पृथक् व्यवस्था की जायेगी। इस अवसर पर प्रकाशित होनेवाली "स्मारिका" में सत्याग्रहियों के नाम पूरे पते सहित प्रकाशित किये जायेंगे।

हैदराबाद आर्यसत्याग्रह, हिन्दी रक्षा सत्याग्रह, गोरक्षा सत्याग्रह, कुण्डली बूचड़खाना आंदोलन और शराबबन्दी आंदोलन में जेल जानेवाले महानुभावों से तथा इनके सम्बन्धियों से नम्र-निवेदन है कि वे सत्याग्रहियों एवं जेल-यात्रियों की नामावली पूरे पते सहित तुरन्त सभा कार्यालय दयानन्दमठ, रोहतक में भेज देवें, जिससे समुचित कार्यवाही की जा सके।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

शराब मानव-समाज की शत्रु है इससे अवश्य बचें।

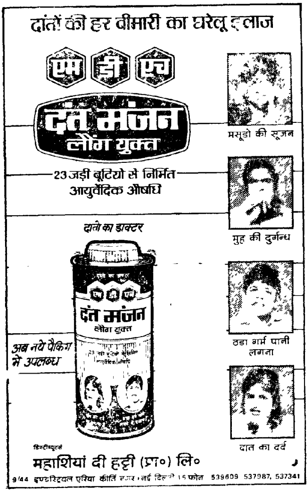
हरयाणा में आर्यसमाजों गुरुकुलों के वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज नरवाना जि. जींद	१० से १२ अप्रैल
„ माडल टाउन सोनीपत	१७ से १९ „
„ जैकमपुरा गुड़गांव	१७ से १९ „
„ मिल बाजार पानीपत जि. करनाल	१ से ३ मई

आर्यसमाजों तथा गुरुकुलों के अधिकारियों से नम्र निवेदन है कि मई में अपने उत्सवादि न रखें, क्योंकि मई में सभा का स्थापना शताब्दी समारोह रोहतक में मनाया जा रहा है, जिसमें सभी आर्यसमाजों तथा आर्य संस्थाओं के कार्यकर्त्ताओं को सादर आमन्त्रित किया गया है।

मई के प्रथम सप्ताह में हरयाणा के चारों ओर से प्रचार यात्राओं का भी आयोजन किया गया है। सभी आर्यसमाजों से नम्र निवेदन है कि वे इस प्रचार-यात्रा में सभा के उपदेशकों, भजनोपदेशकों को पूर्ण योगदान देकर शताब्दी समारोह को सफल बनावें।

—रघुवीरसिंह
वेदप्रचाराधिष्ठाता एवं संयोजक शताब्दी समारोह



हरयाणा में अधिकृत विक्रेता

१. मैसर्ज परमानन्द साईंदितामल, भिवानी स्टैंड, रोहतक
२. „ फूलचन्द सीताराम गांधी चौक, हिसार
३. „ सन-अप-ट्रेडर्स सारंग रोड, सोनीपत
४. „ हरीश एजेन्सीज ४९९/१७ गुरुद्वारा रोड, पानीपत
५. „ भगवानदास देवकीनन्दन सर्राफा बाजार पुराना, करनाल
६. „ घनश्यामदास सीताराम बिचला बाजार, भिवानी
७. „ कृपाराम गोयल रुड़ी बाजार, सिरसा
८ „ कुलवन्त पिकल स्टोर्स, शाप नं० ११५, मार्किट नं० १, एन० आई० टी० फरीदाबाद
९. „ चन्द्रप्रकाश नवीनप्रकाश ३१८/२ जैकमपुरा, गुड़गांव

सम्पादक के नाम पत्र—

शिवरात्रि विशेषांक की सफलता

'सर्वहितकारी' का शिवरात्रि विशेषांक प्राप्त हुआ। वास्तव में विशेषांक काफी सुन्दर एवं आकर्षक था। सभी लेख अच्छे तथा शिक्षाप्रद थे। सम्पादकीय लेख का तो अपना अलग ही महत्त्व रहा। इस विशेषांक में ऋषि दयानन्द सरस्वती जी के सम्बन्ध में काफी जानकारी प्राप्त हुई। इस पत्र के विशेषांकों की बड़ी धूम रहती है, यह भी अपनी उसी शान के अनुरूप था। इस विशेषांक की सफलता के लिए आप बधाई के पात्र हैं।

—रामकुमार आर्य
पुस्तकाध्यक्ष आ०स० दुल्लागढ, सोनीपत

होलिका पर्व

आर्यसमाज कंवारी की तरफ से दिनांक १५-३-८७ को सायंकाल होलिका पर्व बडी धूमधाम से मनाया गया। प्रधान जी के घर पर सायंकाल हवन किया गया। काफी संख्या में लोगों ने श्रद्धा से भाग लिया। प्रधान श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी ने होलिका के महत्त्व पर विचार रखे। साथ में लोगों से प्रार्थना की, कि अपने परिवारों में महिलाओं के पर-पुरुषों के साथ फाग की कुप्रथा को बन्द करो, शराब न पीने पर बल दिया। महाशय बिजेराम के भजन हुए, बाद में क्रांतिकारी की अध्यक्षता में मीटिंग हुई, जिसमें निम्न विषयों पर विचार किया गया—

१ सभा शताब्दी समारोह में यथासामर्थ्य सहयोग किया जाये।

२. शताब्दी स्मारिका में आर्यसमाज कंवारी का संक्षिप्त विवरण प्रकाशनार्थ भेजा जावे।

३. आर्यसमाज मन्दिर के निर्माण हेतु व चारों तरफ खाई खोदने व पौधे लगाने पर विचार किया गया।

४. आर्यसमाज के नये सदस्य बनाने पर विचार किया गया।

—इन्द्रसिंह आर्य, मन्त्री आर्यसमाज कंवारी

मा० निहालसिंह आर्य द्वारा आर्य शिक्षण संस्थाओं को दान

आर्ष गुरुकुल झज्जर यज्ञ ९-३-८६	१०१
आर्ष गुरुकुल झज्जर संरक्षता २७-५-८६	११०१
गुरुकुल कालवा जून ८६	२००
आर्यसमाज मन्दिर मकड़ौली १०-३-८६	१०१
,, रोहणा रोहतक २२-३-८६	१०१
कन्या गुरुकुल नरेला दिल्ली मार्च ८६	१०१
महर्षि दयानन्दमठ रोहतक यज्ञ भोजन नवम्बर ८६	१०१
चौ० छोटूराम कालेज कंझावला ५-१०-८६	१०१
कन्या गुरुकुल लोवाकलां रोहतक ८-१-८७	२०१
ग्राम जसौरखेड़ी चौपाल रोहतक नवम्बर ८६	२११
आर्य इतिहास पंचायत सौरम जनवरी ८६	१००
महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवाली महोत्सव यज्ञ १-११-८६	१०
आर्य वीरदल महोत्सव रोहतक अक्तूबर ८६	२५
(दो हजार चार सौ चव्वन)	२४५४

भजन पार्टी की आवश्यकता

स्वा० रामशरणदास स्थिर स्मारक निधि को एक पार्टी की आवश्यकता है, जो हिसार जिले के ग्रामीण अंचल में वेदप्रचार कर सके। वेतन योग्यतानुसार दिया जावेगा। सम्पर्क करें—

प्रधान आर्यसमाज हांसी, जि० हिसार-१२५०३३

आर्यसमाजों तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों से आवश्यक निवेदन

आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापना शताब्दी समारोह १५ से १७ मई तक रोहतक में मनाया जारहा है। इस अवसर पर एक भव्य तथा आकर्षक स्मारिका का भी प्रकाशन किया जारहा है। अतः सभा से सम्बन्धित आर्यसमाजों तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों से आवश्यक निवेदन है कि इस ऐतिहासिक स्मारिका में प्रकाशनार्थ अपने आर्यसमाज तथा आर्यशिक्षणसंस्थाओं का संक्षिप्त परिचय और अधिकारियों के पासपोर्ट साइज के चित्र १३ अप्रैल तक सभा कार्यालय रोहतक में भेजने की कृपा करें। स्मरण रखें जिनका परिचय समय पर कार्यालय में प्राप्त नहीं हो सकेगा, उनका विवरण स्मारिका में नहीं छप सकेगा।

स्मारिका में प्रकाशनार्थ आर्यसंस्थाओं और आर्य उद्योग संस्थानों के विज्ञापन भी शीघ्र भिजवाइये।

विज्ञापन दर

१/८ पृष्ठ २५० रु०।	१/४ पृष्ठ ५०० रु०
१/२ पृष्ठ १००० रु०।	१ पृष्ठ २००० रु०

टाइटल पृष्ठ दानियों के लिए सुरक्षित।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० 23207/7 ... न०

सर्वहितकारी

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभा मन्त्री

सह-सम्पादक—डा० ...

वर्ष १४, अङ्क २१ २१ अप्रैल, १९८७ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड ... प्रति ६० पैसे

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा स्थापना शताब्दी का विराट् समारोह

(पूर्व आ० प्र० स० पंजाब के त्रिशाखन के उपरांत)

१५ से १७ मई १९८७ दयानन्दमठ, सिद्धांत भवन, रोहतक

क्रांति के अग्रदूत एवं उदात्त प्रेरणाओं के महान् स्रोत युगनिर्माता महर्षि दयानन्द के सबल नेतृत्व में राष्ट्र के सांस्कृतिक उत्थान और स्वाधीनता संग्राम के क्षेत्र में जो अनुपम योगदान आर्यसमाज ने दिया, देश उसके लिए चिरऋणी रहेगा। आर्यसमाज की इस ऐतिहासिक भूमिका में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का अपना ही स्थान है। इसी पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा की क्षेत्रीय उत्तराधिकारी हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा है। पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत सिंध, पेशावर, काश्मीर, हिमाचल व दिल्ली तक फैला भारत का पश्चिमोत्तर अंचल उस समय स्वामी श्रद्धानन्द, ला० लाजपतराय, पं० लेखराम जैसे उज्ज्वल चरित्र आर्यवीरों से दीपमाला के समान जगमगाता था और आर्यसमाज की क्रांतिकारी गतिविधियों का वह प्रमुख केन्द्र था।

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (पूर्व आ० प्र० स० पंजाब के त्रिशाखन के उपरांत) की स्थापना को सौ वर्ष पूरे हो चुके। इन सौ वर्षों में इस शाखा के कार्यकलाप गौरवशाली रहे हैं। सभा के सौ वर्ष उपलब्धिपूर्वक होने के उपलक्ष में आगामी १५ से १७ मई १९८७ तक दयानन्दमठ रोहतक में एक विराट् समारोह आयोजित किया जारहा है। इस विराट् समारोह में वेद सम्मेलन, युवा सम्मेलन, मातृशक्ति सम्मेलन, स्वदेशी सम्मेलन, राष्ट्र-रक्षा सम्मेलन तथा आर्यसमाज के आंदोलनों के सेनानियों का सम्मान आर्य सम्मेलन आयोजित किये जारहे हैं। ये सम्मेलन विचार मन्थन की दृष्टि से समारोह के मुख्य आकर्षण होंगे। इनमें अपने अपने विषय के अनुसार निर्धारित समस्याओं के समाधान में आर्यसमाज की क्या भूमिका हो और कौन से ठोस कार्यक्रम चलाये जायें, यह भी तय किया जायेगा।

इस आयोजन की सफलता आर्यसमाज के सभी कार्यकर्ताओं तथा शुभचिन्तकों के सहयोग पर ही निर्भर रहेगी। हमारी यह प्रार्थना है कि आप इस शुभावसर पर अपना अमूल्य समय निकाल कर अवश्यमेव पधारें।

विशेष निर्देश

१—समारोह में पगड़ी अथवा टोपी जो भी आप पहनते हैं, वह केसरिया रंग की होनी चाहिए।

२—अपने आर्यसमाज अथवा शिक्षण संस्था का नामपट्ट सुन्दर अक्षरों में ढाई-तीन मीटर के कपड़े पर होना चाहिए।

३—जितने अधिक से अधिक हो सकें वे ओ३म्ध्वज लाठियों में लगाए हुए लेकर आने चाहिए।

४—जिस ट्रेक्टर, बस या अन्य वाहन में आप अपने ग्राम या नगर से यहां पधार, उस वाहन पर न्यून से न्यून दो बड़े ओ३म्ध्वज दोनों ओर लगाने का यत्न करें।

५—आपके जितने कार्यकर्ता, सदस्य, अधिकारी, कर्मचारी एवं छात्र-छात्राएं हों, उन सबके कन्धों पर अथवा सीने पर आपकी संस्था के बैज एवं ओ३म् बैज अवश्य होने चाहिए।

६—हैदराबाद आर्य सत्याग्रह, हिन्दी रक्षा आंदोलन, कुण्डली हत्या उन्मूलन संघर्ष, गोरक्षा शुद्धि आंदोलन एवं शराबबन्दी आदि आंदोलनों में भाग लेनेवाले सेनानियों से निवेदन है कि वे १ से १५ मई तक अपने नाम व पूरे पतों की सूची सभा कार्यालय रोहतक में भेजकर अपने बिल्ले प्राप्त कर लेवें। इन सेनानियों के लिए समारोह के मंच के पास बैठने का अलग कक्ष बनेगा।

निवेदक

ओमानन्द सरस्वती	प्रो० शेरसिंह	वेदव्रत शास्त्री	बद्रीप्रसाद	रघुवीरसिंह
प्रधान	प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष	संयोजक
परोपकारिणी सभा	आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा			शताब्दी समारोह

आर्य प्रतिनिधि सभा का शताब्दी समारोह क्यों ?

(१८८५ से १९८५ तक का संक्षिप्त विवरण)

प्रस्तुतकर्त्ता—सुखदेव शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा

गतांक से आगे—

अब तो सबको समान शिक्षा, समान सुविधायें, गुण कर्म स्वभाव अथवा योग्यता के आधार पर ही मिलनी चाहिएं। जैसे सबको समान रोजगार, समान अवसर, समान अधिकार मिलें, इससे देश आगे बढ़ेगा। इसमें हरिजनों के साथ भी कोई भेदभाव न होना चाहिए। इसमें समान अधिकार का नारा आदि में महर्षि दयानन्द ने ही दिया था। आर्यसमाज के सदस्य किसी भी व्यक्ति से घृणा व भेदभाव नहीं करते। उनके सामने सब देशवासी भारतीय हैं, जबकि वे पवित्र आर्य हों। इस दिशा में पंजाब में और हरयाणा में आर्यसमाजियों ने अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। उनके हजारों सदस्य हरिजनों में से भी हैं। अनेकों उपदेशक हैं, अनेक महान् विद्वान् हैं, अनेकों आचार्य हैं, अनेकों विधायक हैं व मन्त्री हैं। आर्यसमाज के सदस्य कोई भेदभाव नहीं करते। आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रधान व मन्त्री भी हैं। आर्यसमाज ऐसे ही पवित्र समाज की स्थापना करना चाहता है। ऐसे ही पवित्र समाज के पुनः निर्माण के लिए आर्यसमाज आगे बढ़े। इस पर सौ वर्ष के अतीत के ऊपर विचार करके नई पृष्ठभूमि तैयार करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा के शताब्दी समारोह का आयोजन १५-१६-१७ मई १९८७ को रोहतक में हो रहा है। जिसमें अनेक राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान के लिए आधार तैयार किया जायेगा। जो समस्यायें स्वाधीनता प्राप्ति के समय भी हमारे सामने चुनौती देकर खड़ी थीं, वही आज फिर भयंकर रूप धारण करके सामने मुंह बाये खड़ी हैं। जिनमें मुख्य हैं-गोहत्या, शराब, दहेज, राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा वैदिक संस्कृति की रक्षा एवं धर्म के नाम पर बढ़ती हुई साम्प्रदायिकता आदि का आर्यसमाज ने इलाज करना है। इन समस्याओं के कारण आज देश खतरे में पड़ गया है। आर्यसमाज राष्ट्रवादी संस्था है। इन समस्याओं के समाधान के लिए उसने अनेकों बार सत्याग्रह किये हैं। जनता को जागृत किया है, सावधान किया है।

जो समाज अपने अतीत के उत्कर्ष पर विचार न करके भविष्य का निर्माण करना चाहता है, वह अपना वर्तमान भी खो बैठता है।

इस प्रकार शुद्धि आंदोलन के कारण ही स्वामी श्रद्धानन्द तथा म. भक्त फूलसिंह का बलिदान हुआ था। इन बलिदानों की स्मृति को नया रूप प्रदान करने के लिए ही शताब्दी समारोह का आयोजन हो रहा है।

आर्यसमाज के अछूतोद्धार का आंदोलन जहां हिन्दू जाति के लिए अतीव लाभप्रद सिद्ध हुआ, वहां ईसाई और मुसलमान इससे बहुत ही चिढ़ उठे। उन्हें ऐसा लगा कि आर्यसमाज ने उनका शिकार उनके हाथ से छीन लिया है। क्योंकि प्रायः करके दलित भाइयों पर ही यह लोग अपने डोरे डाला करते थे और उनको बहका कर अपनी सख्या बढ़ाया करते थे। उनकी दृष्टि से उनके लिए यह बहुत बड़ी हानि थी। इसकी पूर्ति की जब कोई विधि उन्हें समझ में न आई तब उन्होंने अंग्रेज सरकार से मिलकर यह कहना शुरू कर दिया कि "आर्यसमाज राजद्रोही संस्था है" इस षड्यन्त्र से सरकार भी चौकन्नी होगई थी। अनेकों आर्यसमाजियों को जो सरकार में उच्च पदों पर थे बड़े कष्ट उठाने पड़े। आर्यसमाजी होना जोखिम का काम होगया। उनके ऊपर मुकदमे चलाये गये। एक ऐसा ही केश सन् १९०९ में रियासत पटियाला में चलाया गया। मि० वार बर्टन नाम का एक मजिस्ट्रेट था। उसने महाराजा पटियाला को सूचना देकर कहा कि आपके राज्य में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध षड्यन्त्र रचा जारहा है। महाराजा ने अभियोग की आज्ञा दे दी। ८४ आर्यसमाजियों को पकड़ करके जेल में डाल दिया गया। आर्यों ने आर्य रक्षा समिति बनाई। बड़े-बड़े वकील किये गये। गिरफ्तार आर्यसमाजियों के परिवारवालों को भी बड़े-बड़े कष्ट उठाने पड़े। उनके घरों की तलाशियां ली गई। १९१० में पंजाब के गवर्नर के आदेश से उन्हें छोड़ दिया गया। आर्यसमाज इस संकट घड़ी में घबराया नहीं, वह उस की परीक्षा का काल था। आर्यसमाज इसमें पास हुआ। इस संकटकाल में आर्यों ने जिस वीरता, निर्भीकता और संगठन का परिचय दिया, उस से न केवल पटियाला की सरकार को प्रत्युत ब्रिटिश शासन को भी ज्ञात होगया कि आर्यसमाज संघर्ष में कभी पीछे नहीं हटा, आर्यसमाज की विजय हुई, आर्यसमाज आंदोलन का नाम है। इसी प्रकार गुरुकुल कांगड़ी के विषय में भी यही भ्रांति फैलाई गई कि यहां हथियारों का निर्माण होता है। यह सन्देह अंग्रेजों को होगया था। गुरुकुल के छात्रों को हथियारों की ट्रेनिंग दी जाती है। इसका पता करने के लिए भी फोर्ड नाम का अंग्रेज गुरुकुल आया। कुछ समय के पश्चात् उस काल के गवर्नर जेम्ज मिस्टन भी गुरुकुल आये। कुछ काल के बाद तत्कालीन वायसराय लार्ड चेम्सफोर्ड भी गुरुकुल आये। परिणामस्वरूप इन सबके गुरुकुल में आने के कारण इन्हें सन्तोष होगया कि गुरुकुल में न हथियारों का स्टोर है और न क्रांतिकारियों का अड्डा।

किन्तु १९१९ में पंजाब हत्या कांड के बाद तो स्वामी श्रद्धानन्द ने भी राजनीति में पूर्ण रूप से भाग लेना शुरु कर दिया था। उनके पश्चात तो उनके गुरुकुल के स्नातकों ने भारत की आजादी के लिए बहुत ही काम किया। आर्यसमाजियों ने देश-विदेश में आजादी के लिए अनेकों बलिदान देने पड़े।

स्वामी श्रद्धानन्द ने जहां राजनीति में कार्य किया, वहां समाज सुधार का कार्य भी जोरों से किया। शिक्षा का प्रचार गुरुकुल खोलकर किया। गुरुकुलों से उच्चकोटि के विद्वान् निकले। जिन्होंने देशोद्धार किया। यह भी एक नया परीक्षण था, जिससे आर्यसमाज को इसमें पूरी सफलता मिली। इससे वैदिक संस्कृति की रक्षा हुई, यह भी अंग्रेजी राज्य का ही मुकाबला था।

इधर हरयाणा में भी स्वामी जी के आदेशानुसार गुरुकुल खोले गये। १९२० में म० भक्त फूलसिंह ने गुरुकुल भैंसवाल की स्थापना की। गुरुकुल की आधारशिला स्वामी श्रद्धानन्द ने रखी। उसके बाद तो हरयाणा में गुरुकुलों का जाल-सा बिछ गया। गुरुकुल मटिण्डू, कुरुक्षेत्र, झज्जर तथा अन्य ३५ के लगभग गुरुकुल इस समय हरयाणा में काम कर रहे हैं। गुरुकुल झज्जर व मटिण्डू तो गुरुकुल भैंसवाल से भी पहले ही खुल चुके थे। इन गुरुकुलों से आर्यसमाज को बहुत ताकत मिली। इनसे आर्यत्व की रक्षा हुई, देश बच गया। शिक्षा के क्षेत्र में भी पंजाब हरयाणा के आर्यसमाज ने जो काम किया है, उसकी उपमा नहीं मिल सकती। हरयाणा में तो आर्यसमाज का कार्य गुरुकुलों से हुआ। गुरुकुल हरयाणा के रक्षक हैं, इनसे जनता अति प्रभावित रही है।

महर्षि दयानन्द ने जिस शिक्षा-पद्धति की रचना की थी उसके आधार पर यदि आज आर्यसमाज के लोग उसे अपना लेते तो देश का कल्याण हो जाता। अंग्रेजी शिक्षा से देश गुलाम होता चला गया। आज भी नई राष्ट्रीय शिक्षा-नीति की घोषणा की गई है। यह पद्धति भी असफल हो जायेगी। इसमें राष्ट्रीय भाषा हिन्दी तथा संस्कृत को तिलांजलि दे दी गई है। नैतिक शिक्षा, धार्मिक शिक्षा को कोई स्थान नहीं दिया गया है। अतः इसकी सफलता शुरु में ही संदिग्ध होगई है। इसके निर्माणकर्त्ता पश्चिमी सभ्यता के माननेवाले हैं। वे शिक्षा के द्वारा भारतीयता की रक्षा नहीं कर सकते, वे राष्ट्र और राष्ट्रीयता में अन्तर नहीं समझते।

इधर हरयाणा में गुरुकुल झज्जर में महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित पाठविधि का पूर्ण रूप से अध्यापन कराया जाता है, जिससे अनेकों विद्वान् आर्यसमाज को मिले हैं। आचार्य ओमानन्द जी सरस्वती द्वारा इस दिशा में अनेक वर्षों से प्रयत्न किया जारहा था, वह प्रयत्न अब सफल होगया है। (क्रमशः)

श्री रघुवीरसिंह संयोजक की प्रचार-यात्रा

आर्यसमाज नारग जि० सिरमौर हिमाचल प्रदेश के वार्षिक उत्सव के निमन्त्रण पर सभा के वेदप्रचार विभाग के अधिष्ठाता एवं सभा शताब्दी समारोह के संयोजक श्री रघुवीरसिंह ने सभा के महोपदेशक पं. सुखदेव शास्त्री के साथ ९ अप्रैल को प्रात. रोहतक से प्रस्थान किया। सायंकाल लोअर बाजार शिमला तथा सोलन के आर्यसमाज तथा आर्य शिक्षण अधिकारियों से सम्पर्क करके उन्हें शताब्दी समारोह का सभा की ओर से निमन्त्रण दिया, जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार करते हुए समारोह में दलबल के साथ सम्मिलित होने का पूर्ण विश्वास दिलाया।

१० अप्रैल को हिमाचल विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष श्री बलदेवसिंह से भेंट करके उन्हें भी समारोह में पधारने के लिए आमन्त्रित किया। उन्होंने भी अपने अन्य साथियों सहित समारोह में सम्मिलित होने के लिए प्रसन्नतापूर्वक अपनी स्वीकृति दी।

११ अप्रैल को सोलन से श्री रघुवीरसिंह जी श्री सुखदेव शास्त्री के साथ आर्यसमाज नारग के उत्सव में सम्मिलित होने के लिए पहुचे। बस अड्डे पर आर्यसमाज के अधिकारियों ने इनका स्नेहपूर्ण स्वागत किया। सभा की भजनमण्डली (पं० समेरसिंह) एक दिन पूर्व ही यहां पहुंच चुकी थी। आर्यसमाज मन्दिर का हाल आर्य नरनारियों से खचाखच भरा हुआ था। प० सुखदेव शास्त्री ने इस अवसर पर प्रभावशाली भाषण दिया तथा पं० समेरसिंह ने सुरीले भजन सुनाकर समय बांध दिया। श्री रघुवीरसिंह जी ने अपने स्वागत भाषण में सभी आर्य नरनारियों का धन्यवाद करते हुए उन्हें शताब्दी समारोह में पहुंचने का निमन्त्रण दिया। श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी एवं आर्यसमाज के प्रधान ठा० कृपालसिंह तथा मन्त्री श्री विद्याधर शर्मा आदि ने सभा संयोजक महोदय को विश्वास दिलाया कि हम अपने आर्यसमाज की ओर से अधिक से अधिक नरनारियों के साथ समाज के नामपट्ट को लेकर आवेंगे। आर्यसमाज की ओर से शताब्दी समारोह हेतु एक हजार रुपये की थैली श्री रघुवीरसिंह जी को भेंट की।

१२ अप्रैल को प्रात: श्री रघुवीरसिंह जी तथा पं० सुखदेव शास्त्री आर्यसमाज कालका पधारे। वहां सभा के उपदेशक प० सुरेशकुमार जी शास्त्री के प्रयत्न से आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं की बैठक का आयोजन किया गया था। श्री संयोजक महोदय ने सभी उपस्थित आर्य नरनारियों को रोहतक में आयोजित समारोह में पधारने का निमन्त्रण दिया। आर्यसमाज के प्रधान सर्वश्री महेन्द्रपाल, पूर्वप्रधान एवं आर्य कन्या विद्यालय प्रबन्धक पूर्णचन्द, सुरेन्द्रपाल मन्त्री, ओम्प्रकाश कोषाध्यक्ष, हंसराज उपप्रधान, सतीशचन्द सूद मन्त्री रोटरी क्लब कालका एवं रणधीरसिंह आदि ने समारोह की सफलता हेतु पूर्ण योगदान करने का आश्वासन देते हुए शताब्दी समारोह हेतु २१००) की थैली भेंट की। इसके अतिरिक्त भी उन्होंने व्यक्तिगत रूप से धनसंग्रह करने का वचन दिया। आर्य कन्या विद्यालय कालका की मुख्याध्यापिका उषा खन्ना तथा उनके स्टाफ ने भी समारोह की सफलता हेतु ५००) भेंट करने का वचन दिया। श्री रघुवीरसिंह जी ने सभी आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं का हार्दिक धन्यवाद किया और आशा व्यक्त की कि कालका से अधिक से अधिक आर्य भाई बहनें रोहतक पधार कर आर्यसमाज के संगठन को सुदृढ़ करेंगे।

इसके पश्चात् १२ अप्रैल को सायंकाल को श्री रघुवीरसिंह जी तथा पं० सुरेशकुमार शास्त्री आर्यसमाज पिंजोर की बैठक में सम्मिलित हुए। आर्यसमाज के प्रधान सर्वश्री रामलाल, उपप्रधान धर्मपाल, मन्त्री प्रेमचन्द शर्मा, कोषाध्यक्ष रामगोपाल गोयल, उपमन्त्री राजेश आर्य एवं सुरेन्द्रसिंह आदि ने सभा शताब्दी समारोह को सफल करने हेतु ५०१) शीघ्र ही भेजने का वचन दिया। यह नवीन आर्यसमाज है और मन्दिर का कार्य अभी निर्माणाधीन है।

१३ अप्रैल को श्री रघुवीरसिंह जी पं० सुरेश शास्त्री के साथ कसौली मार्ग पर स्थित वेद मन्दिर परवाणु में श्री स्वामी सुरेन्द्रानन्द जी के पास पहुंचे। श्री स्वामी जी महाराज ३० वर्ष पूर्व दयानन्दमठ रोहतक में अपना प्रचार केन्द्र बनाकर वैदिकधर्म का प्रचार करते थे। उन्होंने रोहतक में शताब्दी समारोह को सफल करने के लिए अपना आशीर्वाद दिया। परवाणु के आर्यसमाज के प्रधान श्री देशराज सूद आदि से भी सम्पर्क करके समारोह के लिए सहयोग करने का अनुरोध किया। इन्होंने भी पूर्ण सहयोग एवं समर्थन करने का वचन दिया। सायंकाल को आर्यसमाज पंचकूला के अधिकारियों सर्वश्री रणवीर, धर्मपाल, सुरेन्द्रसिंह, ईश्वरसिंह आर्य हस्पताल वाले आदि से सम्पर्क किया। इन्होंने भी पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया।

१४ अप्रैल को प्रात श्री रघुवीरसिंह जी तथा पं० सुरेश शास्त्री आर्यसमाज नारायणगढ़ पधारे। सर्वश्री मा० चमनलाल, डा बेणीप्रसाद आर्य, सुन्दरलाल, किशनचन्द, रामनिरंजन, चौ० श्रीराम आदि से समारोह के लिए योगदान करने की अपील की। उन्होंने बडे उत्साह के साथ ११००) संयोजक महोदय को भेंट किये। दयानन्द आर्य विद्यालय के छात्रों सहित समारोह में सम्मिलित होने का भी आश्वासन दिया। नारायणगढ के पश्चात् आर्यसमाज बरौली के मन्त्री श्री ओम्प्रकाश जी आर्य आदि से भी सम्पर्क करके उन्हें भी समारोह के लिए सहयोग करने तथा सम्मिलित होने का निमन्त्रण दिया। उन्होंने भी तन, मन तथा धन से पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया।

सभा उपदेशक पं० सुरेशकुमार शास्त्री ने आर्यसमाज रेलवे मार्ग यमुनानगर जि० अम्बाला के प्रधान सर्वश्री चमनलाल आर्य, मन्त्री रविन्द्रकुमार, कृष्णचन्द्र आर्य, प्रेमचन्द आदि से भी सम्पर्क करके उन्हें समारोह में सहयोग करने की अपील की। सभी अधिकारियों ने अपने आर्यसमाज की ओर से ११०१) तथा अन्य कार्यों में भी तन, मन से पूर्ण सहयोग करने का वचन दिया।

आर्यसमाज तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों से निवेदन

आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापना शताब्दी समारोह के उपलक्ष में एक स्मारिका का प्रकाशन हो रहा है। आर्यसमाजों तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं का परिचय प्रकाशनार्थ मांगा गया था, परन्तु अधिकाश अधिकारियों ने समाज तथा संस्थाओं का परिचय न लिखकर अपना परिचय लिखकर भेज दिया, इस प्रकार परिचय अधूरा प्राप्त हुआ है।

जो अधिकारी अपने चित्र स्मारिका में छपवाना चाहते हैं, उनसे निवेदन है कि वे पासपोर्ट साइज में अपना ब्लाक बनवाकर भेजने का कष्ट करें। अब आनेवाले चित्रों के ब्लाक बनवाकर छापने का समय नहीं रहा।

आर्यसमाज अथवा संस्था का परिचय संक्षिप्त रूप में (स्थापना, तिथि, संस्थापकों के नाम, आर्यसमाज के आंदोलनों में भाग लेनेवालों के नाम, अन्य विशेष महत्त्वपूर्ण कार्य) साफ-साफ शब्दों में लिखकर यथाशीघ्र भेज देवें।

—सभामन्त्री

आर्यसमाज होली मोहल्ला करनाल का वार्षिक चुनाव

प्रधान—सर्वश्री मा० जसवन्तसिंह आर्य, उपप्रधान—रतनसिंह लाठर, चमनलाल बजाज, मन्त्री—हरिश्चन्द्र गुलाटी, उपमन्त्री—महाराज कृष्ण चौपड़ा, महेन्द्रसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष—प्रेमस्वरूप बजाज, प्रचार मन्त्री—सुन्दरसिंह आर्य, सम्पत्ति निरीक्षक—डा० यज्ञदत्त आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—डा० धर्मसिंह आर्य, यज्ञप्रमुख—मा० धर्मचन्द आर्य, लेखानिरीक्षक—मा० अमरसिंह मान।

सभाप्रधान तथा सभाकोषाध्यक्ष का शताब्दी प्रचारार्थ भ्रमण

प्रो० शेरसिंह जी सभाप्रधान ने सभा शताब्दी समारोह की सफलता हेतु ११ अप्रैल को आर्यसमाज घरौंडा के अधिकारियों से सम्पर्क किया तथा शताब्दी समारोह के लिए अन्न तथा धनसंग्रह हेतु रसीदें दी। उनके साथ श्रीमती प्रभात शोभा विद्यालंकृता तथा सभा उपदेशक पं० अर्जुनदेव आर्य भी थे। उसी दिन सभाप्रधान जी चण्डीगढ़ पधारे तथा वहां आवश्यक कार्य निपटाकर १२ अप्रैल को सभा कोषाध्यक्ष मा. बद्रीप्रसाद आर्य के साथ रोहतक कार्यालय पधार कर शताब्दी समारोह के लिए स्थान तथा पण्डाल आदि बनाने का निरीक्षण किया। १३-१४-१५ अप्रैल तक स्मारिका के संयोजक डा० रणजीतसिंह के साथ स्मारिका के विज्ञापनादि की प्राप्ति के लिए दिल्ली तथा गुरुकुल कांगड़ी हरद्वार का भ्रमण किया। गुरुकुल कांगड़ी में सीनेट की बैठक में भाग लिया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी को रोहतक पधारने का निमन्त्रण दिया। श्री वीरेन्द्र जी ने अपने पधारने की सहर्ष स्वीकृति प्रदान की।

१७ अप्रैल को सभाप्रधान जी ने आर्यसमाज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली में आयोजित दिल्ली के आर्यसमाजों की बैठक में सम्मिलित होकर शताब्दी समारोह को सफल करने में सहयोग करने की अपील की। दिल्ली के आर्यसमाजों तथा आर्य प्रादेशिक सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा अधिकारियों ने सभाप्रधान जी को तन, मन तथा धन से सहयोग करने का आश्वासन दिया। धनसंग्रह के लिए श्री रामलाल मलिक के संयोजन में एक समिति का गठन किया, जिसमें श्री रामनाथ जी सहगल मन्त्री आर्य प्रादेशिक सभा, श्री सूर्यदेव प्रधान दिल्ली प्रतिनिधि सभा आदि अधिकारी सम्मिलित हैं। यह भी निश्चय हुआ कि दिल्ली से विशेष बसें रोहतक शताब्दी समारोह में आयेंगी। आवश्यक सहयोग देने की तैयारी के लिए २१ अप्रैल को दोपहर बाद ५-३० बजे आर्यसमाज मन्दिर, नई दिल्ली में पुन: बैठक आयोजित की गई है।

सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह जी १७ अप्रैल की रात्रि को सभागणक श्री सीसराम के साथ सभा कार्यालय रोहतक पधारे। १८ अप्रैल को प्रात: ७ बजे शताब्दी समारोह के संयोजक एवं सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता श्री रघुवीरसिंह जी के माडल टाउन स्थित निवास पर जाकर उनके सुपुत्र के निधन पर उनके परिवार के साथ शोक संवेदना तथा सहानुभूति प्रकट की।

उसी दिन प्रात: ९-३० बजे आर्यसमाज नागौरी गेट हिसार पधारे। सभा कोषाध्यक्ष मा० बद्रीप्रसाद आर्य भी जींद से यहां पहुंच गये। जहां सभा के उपमन्त्री प्रो० सत्यवीर जी विद्यालंकार तथा आर्यसमाज के अन्य अधिकारियों से विचार-विमर्श करके २३ हजार रुपये की शताब्दी रसीदें धनसंग्रह हेतु वितरित कीं।

सभाप्रधान जी की अपील पर जिन्दल पाइप फैक्ट्री के कर्मचारी संघटन ने शताब्दी समारोह के लिए ५ हजार रुपये नकद भेंट किये। इसके पश्चात् सभा अधिकारी गुरुकुल आर्यनगर पधारे, जहां गुरुकुल के आचार्य पं० रामस्वरूप शास्त्री तथा गुरुकुल के अधिकारियों एवं अध्यापकों ने उनका हार्दिक स्वागत किया। गुरुकुल भवन तथा ब्रह्मचारियों की पढ़ाई आदि का निरीक्षण करके सन्तोष प्रकट किया। गुरुकुल की ओर से सभा अधिकारियों को विश्वास दिलाया गया कि समारोह के लिए १० बोरी अन्न गुरुकुल आर्यनगर से तथा ५० बोरी अन्न स्वामी सुमेधानन्द जी आचार्य गुरुकुल फतेहाबाद की ओर से संग्रह करके भेजा जायेगा तथा गुरुकुल के ब्रह्मचारी तथा अध्यापक समारोह में पहुंचेंगे।

उसी दिन दोपहर पश्चात् ३ बजे सभा अधिकारी आर्यसमाज मन्दिर सिरसा पधारे। वहां डा० रणधीरसिंह सागवान प्रधान आर्यसमाज एवं मन्त्री आर्य वरिष्ठ उच्च विद्यालय सिरसा की अध्यक्षता में आयोजित आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं की बैठक में भाग लिया। यहां भी शताब्दी समारोह के लिए धनसंग्रह हेतु १४८००) की रसीदें दीं। आर्यसमाज के अधिकारियों ने सभा अधिकारियों को तन, मन तथा धन से पूरा सहयोग करने का विश्वास दिलाया। प्रिं० नित्यानन्द, सेठ नन्दलाल गनेरीवाले, श्री द्वारकाप्रसाद प्रिंसिपल आर्य वरिष्ठ उच्च विद्यालय सिरसा, डा० परमानन्द, डा० कश्मीरीलाल, श्री सत्यपाल आर्य मन्त्री तथा श्री महेन्द्रपाल जी आदि बैठक में उपस्थित थे।

सिरसा से रोहतक लौटते समय सायंकाल सभाप्रधान जी ने आर्यसमाज महम के अधिकारियों से सम्पर्क किया और रात्रि को १०-३० बजे सभा कार्यालय पहुंच कर विश्राम किया।

१९ अप्रैल को नई दिल्ली में आयोजित महात्मा हंसराज जी के जन्मोत्सव में सम्मिलित होकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की तथा आर्य नर-नारियों को रोहतक शताब्दी में पहुंचने का निमन्त्रण दिया। २१ अप्रैल की रात्रि को प्रधान जी कलकत्ता के लिये प्रस्थान करेंगे, जहां २५ अप्रैल तक शताब्दी हेतु धनसंग्रह करेंगे।

सभामन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री तथा सभा उपप्रधान म० भरतसिंह के निरीक्षण में शताब्दी समारोह की तैयारी के लिये रोहतक में बाहर से आनेवाले आर्य नरनारियों हेतु आवास तथा भोजनादि की व्यवस्था कार्य में जुटे हुए हैं। सभा कार्यालय के साथ ऋषिलंगर के लिये रसोई घर, पाकशाला तथा नलकूप आदि के निर्माण का कार्य बड़ी तेजी के साथ किया जा रहा है। श्री वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री १९ अप्रैल को प्रात: आर्यसमाज माडल टाउन सोनीपत के उत्सव पर पधारे, वहां पर शिक्षा तथा आर्य संस्कृति विषय पर व्याख्यान दिया तथा सोनीपत आर्यसमाज के अधिकारियों से सम्पर्क करके शताब्दी समारोह में तन, मन तथा धन से सहयोग करने की अपील की। आर्यसमाज नगर सोनीपत के मन्त्री पं० सत्यदेव शास्त्री ने अपने वार्षिक उत्सव ८ से १० मई के अवसर पर अधिक से अधिक धनसंग्रह करके सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह को थैली भेंट करने का वचन दिया।

श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने भी गतसप्ताह आर्यसमाज नरवाना जि० जींद के उत्सव पर पधार कर वहां की आर्यसमाज तथा कन्या गुरुकुल खरल के संचालक स्वामी रत्नदेव जी महाराज से सहयोग देने का अनुरोध किया है। इस प्रकार हरयाणा के कोने-कोने में शताब्दी की तैयारी पूरे उत्साह के साथ हो रही है।

—केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष

आर्यसमाजों के अधिकारियों से आवश्यक निवेदन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से आयोजित सभा शताब्दी समारोह को सफल करने हेतु आर्यसमाजों के अधिकारियों को धनसंग्रह हेतु शताब्दी रसीदें दी गई हैं। समारोह के विज्ञापन भी डाक द्वारा भेज दिये हैं।

आशा है आर्यसमाजों ने अपने नगर तथा ग्रामों में धनसंग्रह करना आरम्भ कर दिया होगा। शताब्दी समारोह के लिये आवश्यक प्रबन्ध तथा व्यवस्था करने के लिये धन की तुरन्त आवश्यकता है। धन के अभाव में समारोह से पूर्व करनेवाले कई कार्य अधूरे पड़े हैं। अत: २२ से २६ अप्रैल तक सभा के अधिकारी आर्यसमाजों का भ्रमण करेंगे। अत: आर्यसमाजों से निवेदन है कि शताब्दी समारोह की तैयारी के लिये संग्रह की हुई राशि तैयार रखें, ताकि रसीदों द्वारा संग्रहीत जितनी राशि आपके पास है, वह जमा करवाकर समारोह की तैयारी में योगदान देवें।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

आर्यसमाज सालवन जि. करनाल का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री ओमप्रकाश आर्य, उपप्रधान—धर्मसिंह आर्य, मन्त्री राजबीर आर्य, उपमन्त्री—वेदव्रत आर्य, कोषाध्यक्ष—ब्रह्मप्रकाश आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—राजबीरसिंह।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का शताब्दी रूप में महोत्सव

भौगोलिक दृष्टि से पुराने पंजाब में आर्य प्रति. सभा की स्थापना १८८६ ई० में हुई। आज वह प्रांत पांच भागों में बट चुका है। इस प्रकार शताब्दी सभी पांचों भागों की है। सभी अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार जुटे हुए हैं।

इस शताब्दी की विशेषता सौ वर्षों का निरीक्षण करना है। पूर्व के सौ वर्षों में क्या किया, आगे के सौ वर्षों में क्या करना है? यह मुख्य उद्देश्य इस महोत्सव मनाने का है।

आर्यसमाज के कर्मठ बलिदानी पं० लेखराम जी के आदेश को सार्थक करने के लिये लेखन कार्य जोरों पर चलाना है। क्यों? लेख से जो बाद हजारों लाखों मनुष्यों में तथा अनेक जगहों में एक साथ पहुंच जाती है, वह अन्य भाषणादि से नहीं पहुंच पाती। लेख, भाषण, टी. वी. आदि से टिकाऊ भी है, यह मियादी नहीं है. स्थायी रूप में रहकर सावधान करता रहता है। अतः मेरी सभी वर्तमान प्रांतों के नेताओं से प्रार्थना है कि वे अपने तौर पर इस शताब्दी के लिए लेखन कार्य करें। विज्ञापन अपनी-अपनी तरफ से छपवा बांटें। जितने विज्ञापन अधिक बांटे जावेंगे, उतना ही उत्सव सफल रहेगा। हर जिला संगठन विशेष आर्य समाजें तथा विशेष व्यक्ति व सभी समाजें अपने अपने तौर पर विज्ञापन छपवाकर बांटें। पांचों प्रतिनिधि सभायें बड़े विज्ञापन स्वामी दयानन्द स्वामी श्रद्धानन्द, प० लेखराम, महात्मा हंसराज, गुरुदत्त विद्यार्थी, ला. लाजपतराय, वीर भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल के चित्रों के साथ अपील निकालें। ऐसे विज्ञापन बड़े-बड़े शहरों और बड़े-बड़े गांव के चौराहों पर लगाये जावें। यह कार्य युद्धस्तर पर किया जावेगा, तब आर्यसमाज का लाभ जनता को पहुँचेगा।

आज नशों का बोलबाला इतना होगया है कि किसी भी समय में नहीं था। भांति-भांति के नशे जिनका नाम तक नहीं था, आज विदेशों से तथा देश में तैयार किये जारहे हैं। शराब ने हरयाणा को विशेष रूप से दबोच लिया है। आज सरकार इसे मुख्य आय समझकर चला रही है। क्या सरकार जनता की शक्ति जो हाथों में काम करने की नहीं रही, बुद्धि को तो यह जड़ से मिटा रही है। क्या यह हानि इस आय के मुकाबले में कम है। इस पैसे का क्या बनेगा? जब आपकी जनता में कार्य-शक्ति ही नहीं रहेगी। हरयाणा में शिक्षा ठीक रूप से देनेवाले अध्यापक कुछ समय में नहीं मिलेंगे। ऐसी घातक चीज को जड़ से मिटा देना चाहिये। शराबियों को सख्त दण्ड दिये जाने चाहियें। यदि शराब रही तो आपकी इज्जत भी नहीं रहेगी। शराब पीकर आपके रक्षक भी देवियों की इज्जत लूटते हैं। क्या सरकार अपनी जनता से ऐसा ही प्यार करती है? यह कार्य आर्यसमाज ने युद्धस्तर पर करना चाहिये। इसके लिए बलिदानी जत्थे बड़े-बूढ़ों के तैयार करने चाहियें।—मा० दीपचन्द आर्य

गोमाता

उस प्रभु की वन्दना कर भाई, जिसने प्यारी गोमाता बनाई।
सुडौल मनभावनी सुन्दर मय्या, भोली-भाली मनमोहनी मय्या।
कल जो घास खाया था वन में, दुग्ध बना वह इसके थन में।
दूध दही देती मट्ठा मसका, हम न लें तो किसके बसका।

पीयूष रूपी रोटी तुझ से पाकर, पुष्ट होते हम इसको खाकर।
तव बछड़े बेल बलवान् बनते, सर्वकाम कृषि के युगों से करते।
गोबर के हम उपले बनायें, जला उनको स्वादु भोज बनायें।
मूत्र गोबर से खाद बनायें, जिससे फसलें श्रेष्ठ उगायें।

मूत्र तव औषधियों में काम आयें, अंग-अंग तेरे हमारे काम आयें।
तव हत्यारों को मय्या धूल चटाये, सब उनके मजे से कौए चटखाये।
दर्शन तव कर शांति असीम पायें, गुण तेरे मय्या हम निशदिन गायें।

—मदनलाल मानव, नारनौल

सभा शताब्दी समारोह के लिए दानदाताओं की सूची

गतांक से आगे—

स्वामी सेवानन्द जी तथा सभा के भजनोपदेशक द्वारा संग्रह

५०) देनेवाले दानी

सर्वश्री—सूरजमल सांगवान एडवोकेट गोहाना जि० सोनीपत, जोगेन्द्रपालसिंह एडवोकेट गोहाना, नारायणदास आर्य गन्नौर, बहन सावित्री देवी गन्नौर, बख्तावरसिंह आर्य गन्नौर, लछमनदास लम्बरदार ग्राम बेगा, ओम्प्रकाश आर्य गन्नौर।

२५) देनेवाले दानी

सर्वश्री—सूबेदार करतारसिंह गोहाना, रामस्वरूप गुप्त गोहाना मण्डी, डा० रणवीरसिंह गोहाना, डा० ओम्प्रकाश छिकारा गोहाना, धनपाल ठेकेदार कासण्डी, रामधारी गौड गोहाना, इन्द्रकुमार गन्नौर, डा० पशु हस्पताल गन्नौर, डा० गुप्त गन्नौर, नारायणदास गन्नौर, सन्तुराम आर्य गन्नौर, महावीरप्रसाद गन्नौर, गुप्तदान, जिलेसिंह शेखपुरा गन्नौर, रामलाल आर्य ग्राम जैसीपुरा, रूपचन्द पानची, कवलनैन आर्य गन्नौर, जगेराम रुड़की बेगा, रोशनलाल आर्य बेगा, महता पृथ्वीराज बेगा सोनीपत।

५) देनेवाले दानी

रसीद संख्या ६००१ से ६०४३ तक २१५)।

१००) देनेवाले दानी

सर्वश्री—सत्यनारायण आर्य गोहाना, शेरसिंह मलिक गोहाना, जैन गन्नौर, मन्त्री आर्यसमाज गन्नौर शहर, मन्त्री आर्यसमाज बेगा, हरिमोहन पाराशर गन्नौर, बी. एस. टी. गन्नौर, नरदेव शास्त्री करनाल, चन्द्रसेन सचदेवा मन्त्री आर्यसमाज होडल, फरीदाबाद।

२५०) मन्त्री आर्यसमाज गन्नौर शहर जि० सोनीपत।

सभा की ओर से दानी महानुभावों का हार्दिक धन्यवाद। आशा है अन्य दानी महानुभाव भी इस सूची में अपना नाम लिखवाकर यश के भागी बनेंगे।

—रघुवीरसिंह संयोजक सभा शताब्दी समारोह

शोक समाचार

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के वेदप्रचाराधिष्ठाता तथा शताब्दी समारोह के संयोजक श्री रघुवीरसिंह जी के सबसे छोटे सुपुत्र श्री यशपालसिंह एम ए का १४ अप्रैल की रात्रि को १० बजे सिविल हस्पताल रोहतक में अचानक निधन होगया। उन्हें एक दिन पूर्व ज्वरादि होने पर हस्पताल में उपचार हेतु प्रविष्ट करवाया गया था। श्री रघुवीरसिंह उसी रात्रि को १० बजे के लगभग ही हिमाचल प्रदेश में सभा के कार्यक्रम से लौटे थे। वे अपने इस लाडले सुपुत्र को जीवित अवस्था में नहीं देख सके। जिसने भी इस दुःखद समाचार को सुना, वह दंग रह गया।

१५ अप्रैल को माडल टाउन रोहतक की श्मशान भूमि में उनकी अन्त्येष्टि वैदिकरीति के अनुसार सभा के उपदेशक प० सुखदेव शास्त्री, पं० मनफूल आर्य तथा सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री ने करवाई। इस अवसर पर सभा के उपप्रधान म० भरतसिंह तथा सभा कार्यालय के कर्मचारियों के अतिरिक्त नगर के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। सभी की आंखों में आंसू देखे गये। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को सद्गति तथा शोकसतप्त परिवार को इस महान् दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

२४ अप्रैल को प्रातः १० बजे उनके निवास स्थान १६१-एल के सामने माडल टाउन रोहतक में उनकी स्मृति में यज्ञ एव शोक सभा का आयोजन किया गया है।

—केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष

पुलिस थाने में हिन्दू कन्याओं का धर्म-परिवर्तन एवं विवाह

आर्यसमाज के प्रारम्भिक काल में और उससे पूर्व भी शास्त्रार्थों का युग रहा है। जगत् गुरु शंकराचार्य ने शास्त्रार्थ कर-कर के भारत से नास्तिकता को भगाया और महर्षि दयानन्द जी ने मुसलमानों, ईसाइयों और अपने ही हिन्दू भाइयों से शास्त्रार्थ कर-कर के वैदिकधर्म का प्रचार किया। हिन्दुओं को मुसलमान और ईसाई होने से केवल बचाया ही नहीं अपितु शुद्धि का मार्ग अपनाकर अपने वैदिकधर्म से निकले हुए भाइयों को पुनः वैदिकधर्म में दीक्षित करने का अभियान चलाया। स्वतन्त्रता के पूर्व शास्त्रार्थों द्वारा समझ बूझकर लोग अपने-अपने मत को छोड़कर वैदिकधर्म को स्वीकार करते थे। आज भी यदि कोई भी व्यक्ति समझ बूझकर सिद्धांतों के आधार पर धर्म-परिवर्तन करता है तो इस पर कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिये, परन्तु यदि किसी की गरीबी का लाभ उठाकर किसी का धर्म-परिवर्तन किया जाता है तो यह आपत्तिजनक है।

आज भारत जनतांत्रिक राज्य पद्धति अपनाये हुए है। परन्तु विदेशी शक्तियां इस जनतन्त्र का भी शोषण करके इसको अपने-अपने विश्वास के अनुसार बहुमत प्राप्त करने के पूर्ण प्रयास में हैं। मुसलमान अरब देश पट्रो डालर की अथाह धनराशि भेजकर सारे देश का इस्लामीकरण करने में प्रयत्नशील हैं। ईसाई भी सारे देश में छा जाना चाहते हैं। आज का धर्म-परिवर्तन ज्ञानपूर्वक नहीं है, अपितु गरीबी अज्ञान और जातिवाद का लाभ उठाकर एक राष्ट्रीयता परिवर्तन है। जब बहुमत इस्लाम या ईसाई का हो जायेगा तो अपने आप भारत विदेशियों के हाथ बिक जायेगा।

अब तक तो पैसे के प्रलोभन में यह धर्म-परिवर्तन का कार्य होता आया, जिससे हिन्दू समाज और राष्ट्रवादी लोग बहुत चिंतित हैं परन्तु अब एक बड़ा ही रोमांचकारी हिन्दू कन्याओं के धर्म-परिवर्तन और विवाह का समाचार हैदराबाद के 'न्यूज टाइम्स' में प्रकाशित हुआ, जो कि राष्ट्रभक्त लोगों एवं सरकार की जानकारी के लिए हम दे रहे हैं—

"हैदराबाद नगर के बजाराहिल्स पुलिस स्टेशन में एक हिन्दू, एक मुसलमान और एक ईसाई लड़के से पार्वती, धमनी, कमला नामवाली तीन हिन्दू कन्याओं का विवाह समारोहपूर्वक कराया गया। पुलिस पण्डित, काजी और पादरी को बुलाकर ले आई। थाने को खूब रोशनी से सजाया गया। जलपान की व्यवस्था भी पुलिस ने की। कन्याओं के पिताओं के विरोध एवं हर प्रकार की स्थिति का सामना करने हेतु पुलिस बन्दोबस्त को मजबूत बनाया गया। यह सारा आयोजन किया उस थाने के पुलिस सब इन्सपेक्टर एम० के० अंसारी ने। हैदराबाद के पुलिस इतिहास में यह शायद पहली घटना है।"

(वर्णाश्रम पत्रक फरवरी ८७ के अंक से साभार)

इस देश के हर राष्ट्रवादी नागरिक को दुःख होगा कि पुलिस जो कि रक्षक होनी चाहिये, एक सम्प्रदायविशेष के सब इन्सपेक्टर के कारण भक्षक बन गई। पुलिस थाना ही विवाह स्थल बन गया और पुलिस के जबरदस्त आतंक के अन्तर्गत तीनों कन्याओं का जबरदस्ती धर्म-परिवर्तन करके माता-पिता की मर्जी के विरुद्ध विवाह कर दिया गया।

क्या भारत सरकार की आंखें खुलेंगी? क्या उन पुलिस कर्मियों के विरुद्ध कोई कार्यवाही होगी, जिन्होंने ऐसा जघन्य अपराध किया? क्या हिन्दू समाज चेतेगा? और इस प्रकार की दुर्घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो, इसका कोई ठोस उपाय खोजेगा। —इन्द्रराज

प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश

शराब मानव-समाज की शत्रु है
इससे अवश्य बचें।

ओ३म्

हरयाणा में पूर्ण नशाबन्दी के लिए हस्ताक्षर

सेवा में,

माननीय प्रधानमन्त्री, भारत सरकार नई-दिल्ली तथा
माननीय मुख्यमन्त्री, हरयाणा सरकार चण्डीगढ़।

भारत सरकार ने गरीबी हटाने तथा समाजकल्याण के अनेक कार्यक्रमों को गति देने के लिये २० सूत्री कार्यक्रम लागू किया है, परन्तु शराबबन्दी के कार्यक्रम को २० सूत्री कार्यक्रम में सम्मिलित नहीं किया गया, जबकि हमारे संविधान में उसका स्पष्ट उल्लेख है। यह स्वयंसिद्ध सत्य है कि शराबबन्दी और नशाबन्दी से बढ़कर समाजवादी तथा कल्याणकारी कार्यक्रम और कोई नहीं हो सकता। पूर्ण शराबबन्दी से जहां एक ओर करोड़ों गरीब किसान, मजदूर तथा अन्य छोटे कारोबार करनेवाले परिवारों की गरीबी मिटेगी वहां करोड़ों बच्चों और महिलाओं को गरिमापूर्ण जीवन व्यतीत करने का अवसर भी मिलेगा। हमारी मान्यता है कि बालकल्याण और महिला कल्याण का यह सर्वोत्तम कार्यक्रम है। इसलिये हम हरयाणा सरकार से अनुरोध ही नहीं आग्रह भी करते हैं कि हरयाणा प्रदेश में तुरन्त पूर्ण शराबबन्दी का आदेश देकर हरयाणा की जनता की भावनाओं का आदर करे। हम हरयाणा के नागरिक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा संचालित शराबबन्दी आंदोलन का हृदय से स्वागत करते हैं।

हस्ताक्षर..........

नोट—इस परिपत्र की जितनी प्रतियों की आवश्यकता हो, सभा कार्यालय को पत्र लिखकर मंगवा लेवें और हस्ताक्षर करवाकर १५ मई को सभा शताब्दी के अवसर पर रोहतक लाने का कष्ट करें, ताकि ये हस्ताक्षर परिपत्र सामूहिक रूप से सरकार के पास भेजे जा सकें।

प्रो० शेरसिंह सभाप्रधान

भगवती आर्ष कन्या गुरुकुल जसात

भगवती आर्ष कन्या गुरुकुल जसात में कन्याओं का प्रवेश प्रारम्भ होगया है। बालक और बालिकाओं को साथ-साथ पढ़ाना, उनको कुमार्ग पर ले जाना है। यदि उनको सन्मार्ग पर ले जाना चाहो तो पृथक्-पृथक् गुरुकुलों में पढ़ाओ।

२२ से २८ मई तक कन्या गुरुकुल जसात का उत्सव भी होगा। जो मिल-जुलकर आयेंगे, वे धर्म लाभ उठायेंगे। वेदप्रचार सुनकर निहाल हो जायेंगे।

विशेष जानकारी के लिए कृपया दर्शन दीजिये अथवा निम्न पते पर पत्र-व्यवहार कीजिये—

आचार्या
भगवती आर्ष कन्या गुरुकुल जसात
त० पाटौदी, जि० गुड़गांव (हर०)

संस्कृत के हितों पर कुठाराघात

कपूरथला, १३ अप्रैल—हिन्दी संस्कृत संस्था के नेता श्री शम्भुदत्त शर्मा ने एक बयान में कहा है कि पंजाब सरकार प्रदेश में संस्कृत और हिन्दी के हितों पर कुठाराघात कर रही है। संस्कृत की आसामियां खत्म की जारही हैं और इसे राज्य से निकाला जारहा है, जबकि छात्र संस्कृत पढ़ना चाहते हैं।

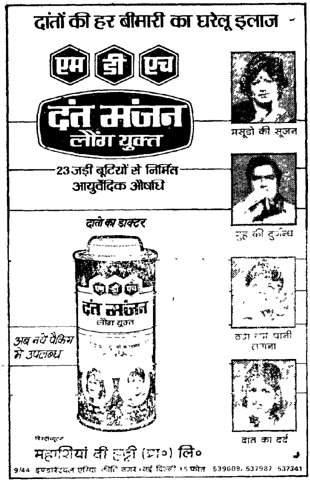
श्री शम्भुदत्त ने कहा कि घालडू (जिला पटियाला) के छात्रों की ओर से इस प्रसंग में हाईकोर्ट में रिट दाखल की गई है और भी कई स्कूलों से संस्कृत पढ़ने की इच्छा रखनेवाले छात्रों की ओर से हाईकोर्ट के द्वार खटखटाए जायेंगे। —शम्भुदत्त

आर्य सत्याग्रहियों का सम्मान

१५ से १७ मई, १९८७ ई० तक दयानन्दमठ, रोहतक में होने वाले आर्य प्रतिनिधि सभा शताब्दी समारोह पर आर्यसमाज के सभी सत्याग्रहियों एवं जेलयात्रियों का सम्मान किया जायेगा। उन्हें सत्याग्रह के बिल्ले दिये जायेंगे और पण्डाल में उनके बैठने के लिए पृथक् व्यवस्था की जायेगी। इस अवसर पर प्रकाशित होनेवाली "स्मारिका" में सत्याग्रहियों के नाम पूरे पते सहित प्रकाशित किये जायेंगे।

हैदराबाद आर्यसत्याग्रह, हिन्दी रक्षा सत्याग्रह, गोरक्षा सत्याग्रह, कुण्डली बूचड़खाना आंदोलन और शराबबन्दी आंदोलन में जेल जानेवाले महानुभावों से तथा इनके सम्बन्धियों से नम्र-निवेदन है कि वे सत्याग्रहियों एवं जेल-यात्रियों की नामावली पूरे पते सहित तुरन्त सभा कार्यालय दयानन्दमठ, रोहतक में भेज देवें, जिससे समुचित कार्यवाही की जा सके।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री



हरयाणा में अधिकृत विक्रेता

१. मैसर्ज परमानन्द साईंदित्तामल, भिवानी स्टैंड, रोहतक
२. ,, फूलचन्द सीताराम गांधी चौक, हिसार
३. ,, सन-अप-ट्रेडर्स सारंग रोड, सोनीपत
४. ,, हरीश एजेन्सीज ४६६/१७ गुरुद्वारा रोड, पानीपत
५. ,, भगवानदास देवकीनन्दन सर्राफा बाजार पुराना, करनाल
६. ,, घनश्यामदास सीताराम बिचला बाजार, भिवानी
७. ,, कृपाराम गोयल रुड़ी बाजार, सिरसा
८. ,, कुलवन्त पिकल स्टोर्स, शाप नं० ११५, मार्किट नं० १, एन० आई० टी० फरीदाबाद
९. ,, चन्द्रप्रकाश नवीनप्रकाश ३१८/३ जेकमपुरा, गुड़गांव

दयानन्द ऋषिराज तुम्हीं ने

तुम्हें दया आगार कहें, या मनुष्यता का उद्धारक,
तुमको दिव्य प्रकाश कहें, या दिव्य प्रभा के पुण्य प्रसारक,
दयानन्द ऋषिराज तुम्हीं ने, भारत को दी नवल सांत्वना-
तुम थे निश्चय ही वेदों की गरिमा के सन्देश प्रसारक।

ऋषि परम्परा का अग्रदूत, या तुम्हें कहें संस्कृति प्रहरी,
देशधर्म का रक्षक या हम, तुम्हें कहें भारत तरणी,
दयानन्द ऋषिराज तुम्हीं ने, किया महा उपकार जगत् का-
गीत तुम्हारे त्याग-तपों का, गाती गंगा कावेरी।

तेज पंज हम तुम्हें कहें, या ज्ञान-सत्य के मृदु आलोक,
तेजस्वी ओजस्वी थे तुम, विद्या बुद्धि विवेक विशोक,
दयानन्द ऋषिराज तुम्हीं ने, जन-जन का कल्याण किया-
सद्यत्नों से दिव्य तुम्हारे, वसुन्धरा हो उठी अशोक।

अपराजेय यति तुम थे या हिमगिरि से भी अधिक महान्,
राष्ट्र चेतना के स्वरूप थे, तुम थे भारत के अभिमान,
दयानन्द ऋषिराज तुम्हीं ने, शौर्य-शक्ति-संकल्प दिया-
नवजागृति का, नव्यक्रांति का, चला दिया तुमने अभियान।

नष्ट किया अबलाओं का, विधवाओं का दारुण क्रन्दन,
हुआ विशृंखलित से समाज में, नव्यचेतना का स्पन्दन,
दयानन्द ऋषिराज तुम्हीं ने, सोता राष्ट्र जगाया था-
दानवता होगई पराजित, हुआ मनुजता अभिनन्दन।

—राधेश्याम आर्य

ग्राम लुदास (हिसार) में वेदप्रचार

कई वर्षों के बाद ग्राम लुदास में वेदप्रचार का आयोजन किया गया। दिनांक ७ अप्रैल, ८७ रात्रि को सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी ने शराबबन्दी बारे अपने विचार रखे। पं० ईश्वरसिंह तूफान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के शिक्षाप्रद भजन हुए। प्रातःकाल सरपंच श्री जुगलाल के घर पर क्रांतिकारी ने हवन किया। नवयुवक वीरसिंह ने जनेऊ धारण किया तथा मांस व अण्डे न खाने का व्रत लिया, वेदप्रचार का कार्यक्रम प्रभावशाली रहा। सभा स्थापना शताब्दी समारोह में काफी संख्या में पधारने की अपील की।

—हरिसिंह आर्य शाहपुर

आर्यसमाज ग्राम न्यौली कलां (हिसार) का प्रथम उत्सव सम्पन्न

दिनांक ९-१० अप्रैल, ८७ को प्रथम बार श्री सुधनसिंह आर्य के पुरुषार्थ व लग्न से ग्राम न्यौली कलां में आर्यसमाज का उत्सव मनाया गया, जिसमें सर्वश्री स्वामी जगतमुनि, स्वामी धर्मानन्द जी, स्वामी अग्निदेव जी भीष्म, राममुनि, प्रो. ओमकुमार आर्य, सभा उपदेशक क्रांतिकारी (इन पंक्तियों के लेख) आदि ने आर्यसमाज का पुराना इतिहास व क्रांतिकारियों के जीवन पर प्रकाश डाला। धर्म क्या है, आर्यसमाज क्या चाहता है तथा शराबबन्दी एवं इससे होनेवाले नुकसान से लोगों को अवगत कराया। न्यौली से शराब का ठेका बन्द कराने हेतु नवयुवकों तथा महिलाओं को प्रेरित किया।

वेदप्रचार का असर तब प्रत्यक्ष रूप से देखने में आया, जिस समय न्यौली कलां के ही श्री रामेश्वर सोनी ने बहुत अच्छी आवाज में एक भजन सुनाया, जो कुछ ही मिनट पहले चौपाड़ में प्रचार में बीड़ी पीरहा था। लेखक ने उसे अमीचन्द तू हीरा है, लेकिन कीचड़ में पड़ा है कि बात दोहराई। तुरन्त ही श्री रामेश्वर ने बीड़ी का बण्डल व माचिस को तोड़ दिया। साथ में सभा में घोषणा की कि क्रांतिकारी ने मेरी आंखें खोल दी हैं। कभी भी जीवन में धूम्रपान न करने का व्रत लिया, लोग यह देखकर चकित रह गये। दोनों दिन प्रातःकाल यज्ञ किया गया, कई नवयुवकों ने जनेऊ धारण किये।

प. ईश्वरसिंह व महाशय झाबेराम आर्य के शिक्षाप्रद समाज-सुधार के भजन हुए। ब्र० दयानन्द जी का व्यायाम प्रदर्शन हुआ, जिसका गांव के लोगों पर अच्छा असर पड़ा। ज्ञातव्य है कि इस गांव में आर्यसमाज का पहली बार प्रचार हुआ है। लोग शराबखोरी व अन्य दुर्व्यसनों में बुरी तरह फंसे हुए हैं।

आखरी रात सरकार व ठेकेदारों की आर्यसमाज से सीधी टकराव की नीति सामने आई। जिस जगह दो दिन से जलसा हो रहा था उसी जगह कुछ लोग मिलकर हिसार से सरकारी ड्रामा पार्टी (वीडियो) ले आये, जिसके कारण गांव में टकराव होने के भय से वेदप्रचार का कार्यक्रम स्थगित करना पड़ा। उत्सव में सभी विद्वानों ने सरकार की इस चाल का विरोध किया।

अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी सभा उपदेशक

देसी शराब सस्ती, खादी टोपी महंगी

बम्बई, १२ अप्रैल : महाराष्ट्र सरकार द्वारा सभी तैयार कपड़ों पर बिक्री कर दो प्रतिशत से बढ़ाकर चार प्रतिशत करने से, राष्ट्रीयध्वज और खादी टोपी अब अधिक महंगी होगी। राज्य सरकार की नई नीति के अनुसार राष्ट्रीयध्वज और गांधी टोपी तैयार कपड़ों की श्रेणी में आते हैं।

भारतीय कपड़ा निर्यात एसोसिएशन ने सरकार की इस नीति पर तीव्र प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि एक तरफ देसी शराब से बिक्री कर हटा दिया गया है, दूसरी ओर गांधी टोपी और राष्ट्रध्वज महंगा कर दिया गया है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 रजि० नं० P/RTK 49 फोन



सर्वहितकारी

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभा मन्त्री सह-सम्पादक—डा० सुदर्शन

वर्ष १४, अङ्क २२ २८ अप्रैल, १९८७ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

सभा शताब्दी समारोह-प्रचारयात्रा

सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह जी के आदेशानुसार मैंने २१ अप्रैल को प्रातःकाल ६ बजे बस द्वारा साकेत नई दिल्ली के लिये प्रस्थान किया। मेरे साथ सभा के गणक श्री सीसराम जी तथा मेरी धर्मपत्नी श्रीमती सुधीरादेवी जी भी थी। साकेत में प्रधान जी से आवश्यक कार्य तथा विचार-विमर्श किया। भोजनोपरांत हम श्री ओम्प्रकाश आर्य की कार द्वारा आर्यसमाज मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली में दिल्ली की शताब्दी समारोह की उप-समिति की बैठक में सम्मिलित हुए। यह बैठक उप समिति के प्रधान श्री रामलाल जी की अध्यक्षता में साय ६ बजे हुई। इसमें दिल्ली प्रदेश में प्रचारार्थ आर्यसमाज मन्दिर मार्ग में उप-कार्यालय खोलकर वहां से ही दिल्ली के लिये समस्त कार्यवाही संचालन की व्यवस्था श्री रामनाथ जी सहगल, कार्यालय मन्त्री श्री रामसिंह जी आदि के द्वारा करने का निश्चय हुआ। बैठक के पश्चात् आर्यजगत् के सम्पादक श्री पं० क्षितीश वेदालंकार से मिलकर समारोह में सहयोग के लिये प्रार्थना की।

तत्पश्चात् हम श्री बलराज आर्य के पास 'के' ब्लाक में साकेत पहुंचे, वहां भोजन किया। रात्रि के ८-५० के वायुयान से सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह जी तथा श्रीमती प्रभातशोभा पण्डित ने शताब्दी समारोह के प्रचार एव धनसग्रहार्थ कलकत्ता के लिये प्रस्थान किया। ये कलकत्ता से बम्बई भी जायेंगे और २६ अप्रैल को वापिस साकेत आ जायेंगे।

रात्रि के १० बजे श्री बलराज आर्य से १०० रुपये शताब्दी समारोहार्थ दान लेकर हम सभा की गाड़ी के द्वारा ८६ एम० पी० प्लेट तीन मूर्ति में श्री राजवीर आर्य के पास पहुंचे। उन्हें समारोह में सपरिवार पधारने का निमन्त्रण देकर तथा १०० रुपये दान लेकर १२ बजे देवली गांव गये। वहा रात्रि में विश्राम किया। प्रातः नित्यकर्मों से निवृत्त होकर देवली निवासी श्री चौ० ईश्वरसिंह जी, रामपाल जी, हरपालसिंह जी गांधी आदि को शताब्दी समारोह में पधारने का निमन्त्रण दिया। चौ० ईश्वरसिंह जी तथा हरपालसिंह जी ने सौ-सौ रुपये दान में दिये। २२ अप्रैल को प्रातः ७ बजे देवली से चलकर हम सीनियर सेकंडरी स्कूल बदरपुर गये। वहा श्रीमती विभा शास्त्री को विज्ञापन आदि दिये और धनसग्रहार्थ ५०० रुपयों की रसीद बुक दी। वहां से चलकर हम चौ० राजेन्द्रसिंह जी एडवोकेट के निवास पर फरीदाबाद गये, वे घर पर नहीं मिले। तत्पश्चात् श्री के० एल० मेहता के घर नेहरु गार्डन गये, वे भी नही मिले। वहा से हम पांच भाई साबुन के मालिक ला० लछमनदास जी आर्य के पास बल्लबगढ़ पहुँचे। इन्होंने २००० रुपये स्मारिकार्थ विज्ञापन के स्वय दिये और ११०० रु. श्री ठण्डीराम जैन से और ५०० रुपये श्री भीमसेन जी विद्यालंकार से दिलवाये। इन्हें ५००० रुपयों की शताब्दी के लिये रसीद बुकें देकर हम निकटवर्ती ऐतिहासिक ग्राम सीही गये, जो श्री कृष्णभक्त सूरदास जी की जन्मभूमि है। ५०८ वर्ष पूर्व इसी स्थान पर सूरदास जी ने जन्म लिया था। इसे देखकर हम ग्राम के चौ० रामरत्न जी, महीपालसिंह जी, सावलसिंह जी, मगलसिंह जी आदि के घर आये और उन्हें समारोह के विज्ञापन देकर रोहतक पहुंचने की प्रेरणा की।

हम सीही से चलकर २ बजे पलवल अनाज मण्डी में चौ० रघुवीरसिंह जी सरपंच जनौलीवालों की दूकान 'तरुण एण्ड वरुण' पर पहुंचे। वहां मध्याह्न का भोजन विश्राम किया। उन्हें समारोह के विज्ञापन निमन्त्रण और १००० रुपयों की रसीद बुक देकर, श्री गुरमेशसिंह आर्य पटवारी के घर गये। उन्हें भी विज्ञापनों के साथ धनसग्रहार्थ एक हजार रुपयों की रसीद बुक दी। वहा से श्री धनपतराय आर्य के पास जवाहर नगर पलवल में गये। उन्हें विज्ञापन देकर श्री नत्थीसिंह जी आर्य की दूकान पर गये किन्तु पण्डित जी बारात में गये हुए थे।

पलवल से चलकर हम आर्यसमाज सोहना पहुंचे। वहां आर्यसमाज मन्दिर में आर्य महिलाओं का सत्संग हो रहा था, उन्हें विज्ञापन दिये और समारोह में पधारने का निमन्त्रण दिया। वहा से आर्यसमाज के प्रधान श्री मेघराज जी की दूकान पर जाकर उन्हें समारोह की एक हजार रुपयों की रसीदें देकर गुड़गावा के लिये प्रस्थान किया। मार्ग में आर्यसमाज मन्दिर बादशाहपुर में गये, वहां खोखो ग्राम निवासी श्री हरिदत्त जी शास्त्री मिले, जो ओरियंटल कालेज लाहौर के शास्त्री हैं। उन्हें विज्ञापन देकर समारोह में पधारने का निमन्त्रण दिया। वहां से चलकर आर्यसमाज जैकमपुरा के पुरोहित श्री ईश्वरचन्द्र जी शास्त्री से मिले। श्री सत्यपाल आर्य और दीवान भीमसेन जी बाहर जाने के कारण न मिल सके।

गुड़गावां से चलकर रात्रि ९ बजे पातली ग्राम में चौ० दयानन्द जी के घर भोजन किया और उन्हें साथियों सहित शताब्दी समारोह में पधारने के लिये निमन्त्रित किया। उन्होंने १०१ रुपये दान देते हुए रोहतक पहुंचने का वचन दिया। रात्रि के १२ बजे हम रोहतक पहुँचे।

इस प्रचारयात्रा में यद्यपि हम समयाभाव में आर्यजनों को बहुत समय नहीं दे पाये, पुनरपि जहां भी गये सर्वत्र हार्दिक स्वागत और सहयोग का आश्वासन मिला। सोहना गुड़गावां रोड पर बादशाहपुर गांव में सड़क के दाईं ओर बहुत अच्छा आर्यसमाज मन्दिर बना हुआ है। सड़क के साथ मुख्यद्वार पर ४ दूकानें बनी हुई हैं। मन्दिर बाईं ओर यज्ञशाला और दाईं ओर कुआं बना हुआ है। आगे बहुत बड़ा हाल है और उसके ऊपर भी कमरे बने हुए हैं। सबसे पीछे छोटे से बगीचे में फलदार वृक्ष और पानी के लिये हैंडपम्प भी लगा हुआ है।

हम से पहली पीढ़ी के आर्यों ने कितनी श्रद्धा से आर्यसमाज के लिये भूमि दान में देकर लाखों रुपये व्यय करके आर्यसमाज मन्दिर बनवाये थे, जिससे वेद, आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द का सन्देश देश देशांतरों में पहुंचाया जा सके। किन्तु वर्तमान पीढ़ी के कुछ स्वार्थी व्यक्ति इन समाज मन्दिरों को हड़पने के लिये गिद्धदृष्टि लगाये बैठे हैं। सभामन्त्री बनने के पश्चात् विगत कुछ महीनों में शताब्दी समारोह के प्रसग में हरयाणा के प्रमुख समाजों और स्थानों को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। जहां आर्यसमाजों के सुचारु सगठन को देखकर प्रसन्नता हुई, वहां कुछ स्थानों पर आर्यसमाज की बेकार पड़ी हुई अथवा स्वार्थी लोगों द्वारा दुरुपयोग की जाती हुई सम्पत्ति को देखकर जो दुःख अनुभव किया, वह लेखनी द्वारा वर्णन नहीं किया जा सकता। मैं सभी आर्यों से नम्र-निवेदन करता हूं कि वे स्थानीय अथवा निकटवर्ती आर्यसमाज की सम्पत्ति की सुरक्षा के लिये सभी सम्भव प्रयास करें और १५, १६, १७ मई को रोहतक पधार कर समारोह को सफल करें। —वेदव्रत शास्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा का शताब्दी समारोह क्यों ?

(१८८५ से १९८५ तक का संक्षिप्त विवरण)

प्रस्तुतकर्त्ता—सुखदेव शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा

गतांक से आगे—

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक ने महर्षि द्वारा निर्दिष्ट पाठविधि को अक्षरश: स्वीकृति दे दी। इस पाठविधि से सभी गुरुकुल लाभ उठा सकते हैं। इस कार्य में श्री राममेहर जी एडवोकेट रोहतक का सहयोग भी अत्यन्त सराहनीय रहा है। उस समय के उपकुलपति हरिद्वारीलाल जी सभासदस्य का भी प्रशसनीय सहयोग रहा है। इस आर्ष-पद्धति को स्वीकृति देकर जहां इस दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। वहां अभी उसमें महर्षि दयानन्द शोधपीठ की स्थापना भी शेष है। यज्ञशाला का निर्माण तथा महर्षि की स्मृति में प्रतिमा की स्थापना भी की जा चुकी है। यदि आर्यसमाज के नेता प्रयत्नशील रहे तो सभी अधूरे कार्य पूरे हो जायेंगे।

राजद्रोही और क्रांतिकारी आर्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती के बलिदान के पश्चात् पंजाब हरयाणा में आर्यसमाज ने जो राजनीतिक गतिविधियां प्रारम्भ की, उसमें यह प्रदेश सारे देश मे अग्रणी रहा। वैसे तो भारत के सभी देशभक्त क्रांतिकारी स्वतन्त्रता सेनानी आर्यसमाज एवं महर्षि दयानन्द के राजनीतिक कार्यक्रमों से अत्यन्त प्रभावित थे। किन्तु विशेषकर पंजाब के (हरयाणा) आर्यसमाजियों ने राजनीतिक कार्यों में तन, मन, धन देश के अर्पण करके एक कीर्तिमान स्थापित किया था। पंजाबकेसरी लाला लाजपतराय को पंजाब में जनजागरण और अंग्रेजों की शासकीय सत्ता का कड़ा विरोध करने के अपराध में १८१८ के एक पुराने राजनियम के आधीन मांडले जेल में बन्द किया गया। १९२८ में साईमन कमीशन का पंजाब में आने पर बहिष्कार करवाने के कारण लाठियों से मार पड़ने के कारण बलिदान हुआ। सरदार अजीतसिंह का भी देश निकाला हुआ। सरदार किशनसिंह, सरदार सुवर्णसिंह, सरदार भगतसिंह का सारा ही परिवार महर्षि दयानन्द से प्रेरणा प्राप्त आर्यसमाजी था। स्वामी श्रद्धानन्द, डा० सत्यपाल, म० रत्नचन्द, चौ० बुगामल, स्वामी अनुभवानन्द, प० दीनानाथ, पं० कोटूमल, ला० नारायणदास खन्ना, डा. गुरुबक्सराय, ला दुलीचन्द अम्बालवी ये सब आर्यसमाज की महान् विभूति थे। कांग्रेस के जन्म से पूर्व भैणी साहब (जि० लुधियाना), पंजाब निवासी कूका सिख सम्प्रदाय के गुरु रामसिंह जी को इस समय स्मरण न करना भारी कृतघ्नता होगी। आप भी महर्षि दयानन्द के समकालीन थे। जिन दिनों सन् १८७२-७४ में महर्षि पंजाब में प्रचार कर रहे थे, उन्हीं दिनों इन गुरुओं को ओर से पंजाब के विस्तृत क्षेत्र में देशभक्ति, पवित्र जीवन, गोभक्ति, सादगी आदि के सम्बन्ध में कार्य किया जारहा था। गोरक्षा के भाषण उन दिनों पंजाब में महर्षि दयानन्द के हो रहे थे, महर्षि जागृति पैदा कर रहे थे। गोरक्षार्थ बलिदान देने की भावना उत्पन्न कर रहे थे। सैकड़ों कूका वीर गोरक्षा के अपराध में फांसियों पर लटकाये गये थे। गुरु रामसिंह को भी निर्वासित करके ब्रह्मा में भेज दिया गया था। ये सभी महर्षि की भावनाओं से भाविन थे। इतिहास इस बात का साक्षी है, आर्यों ने सदा ही आजादी में भाग लिया था। सर्वश्री भीमसेन सच्चर, डा० गोपीचन्द भार्गव, म० देवीचन्द, ला० हंसराज, म० कृष्ण, यश जी, वीरेन्द्र, ला० जगतनारायण, रमेश ये सब आर्यसमाज की ही देन हैं। मदनलाल धींगड़ा, शहीद सुखदेव, भाई परमानन्द, भाई बालमुकन्द, रामरखी देवी, दुर्गावती, सोहनलाल पाठक, बलराज भल्ला, हरिकृष्ण, रणवीर, आनन्द स्वामी, प० इन्द्र विद्यावाचस्पति, प० हरिश्चन्द्र, यशपाल, हंसराज वायरलेस, खुदीराम, पं० जगतराम हरयाणवी, प० रामगोपाल शास्त्री, जयचन्द्र विद्यालंकार, सत्यदेव विद्यालंकार, आचार्य रामदेव, स्वामी स्वतन्त्रानन्द, अनेकों गुरुकुलों के स्नातक तथा डी० ए० वी० संस्थाओं से निकले अनेक युवक आर्यसमाज से ही प्रेरणा प्राप्त थे। महर्षि दयानन्द ही इनके प्रेरणास्रोत थे।

इधर हरयाणा में भी महर्षि दयानन्द तथा आर्यसमाज से प्रेरणा पाकर अनेक लोगों ने अपना जीवन सदैव समाज-सुधार में लगा दिया था। रिवाड़ी के राव राजा युधिष्ठिर पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने महर्षि के व्याख्यानों से प्रभावित होकर रिवाड़ी गोशाला की स्थापना की थी। प० बस्तीराम जी ऐसे पहले समाज सुधारक थे जिन्हें महर्षि के दर्शन पाकर आर्यसमाज के प्रचार की लगन लगी थी, जो पूरे १०० वर्ष तक आर्यसमाज के सुधार कार्यों का प्रचार करते रहे। भक्त फूलसिंह ऐसे पहले महात्मा थे जो पटवार को लात मारकर रिश्वत को वापस लौटाकर आर्यसमाज के प्रचारकार्य में लगे, जिन्होंने उन दिनों गुरुकुल भैंसवाल (१९२०) में तथा कन्या गुरुकुल खानपुर (१९३६) में स्थापित करके आर्यसमाज के सुधार कार्यों में तन, मन, धन से महान् सहयोग दिया और अन्त में मुसलमानों की गोलियों से बलिदान होगये। चौ० पीरुसिंह ऐसे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने अपनी जमीन देकर गुरुकुल मटिण्डू की स्थापना करके संस्कृत के प्रसार-प्रचार में महान योगदान किया। श्री पण्डित विश्वम्भरदत्त जी ऐसे पहले महान् व्यक्तित्व के धनी थे, जिन्होंने अपना सर्वस्व लगाकर गुरुकुल झज्जर की स्थापना की थी। आज के सन्दर्भ में इन चारों संस्थाओं ने अपने जीवन में आर्यसमाज को जिन व्यक्तित्वों के मूल्यों की स्थापना की, वह आर्यसमाज के इतिहास की बहुमूल्य धरोहर है। स्वामी रामेश्वरानन्द (वर्तमान में) तथा स्व० स्वामी भीष्म जी भी हरयाणा की महान् विभूतियां हैं। जिन्होंने पानीपत के मैदान में गुरुकुल घरौंडा की स्थापना की थी। गुरुकुल झज्जर के संस्थापक प० विश्वम्भरदत्त के पश्चात् अनेक वर्षों के बाद गुरुकुल की बागडोर आचार्य भगवान्देव जी (वर्तमान में) स्वामी ओमानन्द जी के हाथ में आई। तब से गुरुकुल ने सभी क्षेत्रों में महान् उन्नति की है। आर्ष पद्धति के सफल संचालक के रूप में स्वामी ओमानन्द जी ने जो कार्य किया है, वह स्वामी श्रद्धानन्द के बाद पहले महापुरुष हैं, जिन्होंने अपना सर्वस्व होमकर गुरुकुलीय आर्षपद्धति को शिखर पर चढ़ाया।

भक्त फूलसिंह के बलिदान के पश्चात् चौ० स्व० माडूसिंह व बहन सुभाषिणी जी ही वे सुदृढ़ कार्यकर्त्ता है, जिन्होंने अनेकों कन्याओं को सुशिक्षित करके नारी जागरण में आर्यसमाज के कार्यक्रम को आगे बढ़ाया है। गुरुकुल मटिण्डू के चौधरी पीरुसिंह के कार्यक्रम को जिस विद्वान् ने आगे बढ़ाया, वह थे माननीय जगदेवसिंह जी सिद्धांती। केवल मात्र गुरुकुल मटिण्डू को ही नहीं, अपितु गुरुकुल किरठल को जिस महान् व्यक्ति ने जीवन दिया, वे भी आदरणीय स्वर्गीय सिद्धांती जी ही थे। इन उपरोक्त महान् पुरुषों ने शिक्षा के प्रसार-प्रचार में जीवन होम दिया उससे कहीं अधिक वेद के प्रचार तथा आर्यसमाज के प्रत्येक आंदोलन में भाग लिया। भाग ही नहीं लिया, अपितु ये सब आर्यसमाज के आंदोलनकारी महान् अधिकारी व नेता थे। ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में जो आज आर्यसमाज का प्रचार दिखाई देता है, वे ही इसके सूत्रधार रहे हैं। आर्यसमाज का प्रत्येक आंदोलन में इन्होंने नेतृत्व किया और वे उसमें सर्वथा सफल रहे। स्व० संसदसदस्य पं० रघुवीरसिंह जी महान् विद्वान् थे। जिन्होंने जीवनभर श्री माननीय सिद्धांती जी का सहयोग करते हुए आर्यसमाज के प्रसार में महान् कार्य किया था। माननीय सिद्धांती जी आचार्य ओमानन्द जी, माननीय रघुवीरसिंह जी शास्त्री आदि के लिए सभी प्रकार की आर्य प्रचार की नीति तैयार करनेवाले वर्तमान में आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूर्व केन्द्रीय मन्त्री प्रो० शेरसिंह ने भी आर्यसमाज के प्रत्येक आंदोलन में भाग लेकर आर्यसमाज की प्रशंसनीय सेवायें की हैं।

(क्रमशः)

सभा शताब्दी समारोह के लिए दानदाताओं की सूची

गतांक से आगे—

जिन्दल पाइप फैक्ट्री कर्मचारी संघ हिसार द्वारा प्रो. शेरसिंह	५०००)
साउथ इस्टर्न रोडवेज आसफ अली मार्ग नई दिल्ली ,,	२१००
श्री ठण्डीराम जैन फरीदाबाद द्वारा ला० लछमनदास बल्लबगढ़	११००
श्री भीमसेन विद्यालंकार बल्लबगढ़	५००
मन्त्री आर्यसमाज मतलोढा जि० करनाल	३४५
आर्यसमाज सुताना जि करनाल द्वारा स्वामी सेवानन्द एवं प. जयपाल सभा भजनोपदेशक , कवी जि. करनाल	२५०
श्री नरसिंह सु. श्री शिवदयाल ग्राम बडोली जि. करनाल	१००
मन्त्री आर्यसमाज मुसलाना जि. जींद	५०
विद्यालय अध्यापकवग सुताना जि करनाल	१००
श्री जयसिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज सुताना जि. करनाल	१००
,, केदारसिंह आर्य ग्राम मतलोढा जि. करनाल	१००
,, हीरालाल फूलचन्द समालका मण्डी जि. करनाल	५०
,, कांशीराम हरदयालसिंह समालका मण्डी जि. करनाल	५०
,, झण्डू जयनारायण ,, ,, ,,	२५
,, भगवानदास आर्य मतलोढा मण्डी ,, ,,	५०
,, डा बलराज आर्य समालका ,, ,,	२५
आर्यसमाज आटा जि. करनाल के कार्यकर्ता	१५०
स्वामी स्वरूपानन्द जी वेदप्रचाराधिष्ठाता दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली	१०१

मा० बद्रीप्रसाद आर्य सभा कोषाध्यक्ष जींद द्वारा संग्रह राशि

२५०) देनेवाले दानी

सर्वश्री प्रतापसिंह ओमप्रकाश सर्राफ जींद, बनवारीलाल स्वतन्त्रता सेनानी जींद, सूरजमल आर्य सर्राफ जींद, रामकिशन सेठ जींद, डा. पी. सी सूद एव लेडी डा. मोहिनी सूद जींद, गुप्तदान जींद मण्डी, रामकिशन दास अनाज मण्डी जींद १२५)।

१००) देनेवाले दानी

सर्वश्री श्रीमती मनोरमा देवी धर्मपत्नी बद्रीप्रसाद आर्य जींद, राजेन्द्रकुमार सु. वेदप्रकाश गुप्त जींद, मुन्शीराम सर्राफ जींद, हरिमाधव सिंहल एडवोकेट जींद, प्रतापसिंह शास्त्री जींद, श्रीमती शांति देवी शांति भ्रेड जींद, मे. अमीलाल नैन एण्ड कम्पनी जींद, जसवन्तराय गुप्त एडवोकेट जींद, ललनी प्रापर्टी डीलर जींद।

२५) देनेवाले दानी

श्रीमती कौशल्या देवी प्रधान स्त्री आर्यसमाज जींद, श्रीमती द्रोपदी देवी धर्मपत्नी श्री ब्रह्मराम स्त्री आर्यसमाज जींद, श्रीमती सन्तोष कोहली स्त्री आर्यसमाज जींद, श्रीमती सरला गोयल स्त्री आर्यसमाज जींद, श्रीमती सरला पुरुषोत्तम स्त्री आर्यसमाज जींद, श्री देवीदत्तमल अमृतलाल महाशय जींद।

श्री वेदव्रत जी शास्त्री सभामन्त्री द्वारा संग्रह दानराशि

१००) देनेवाले दानी

सर्वश्री यज्ञदत्त आर्यनगर रोहतक, राजकुमार शास्त्री एम. ए. सुनारियां रोहतक, बलराज आर्य साकेत नई दिल्ली, ईश्वरसिंह देवली (दिल्ली), हरपालसिंह गांधी देवली (दिल्ली), राजवीरा आर्य देवली (दिल्ली), चन्द्रमोहन शास्त्री सम्राट् प्रेस देहली, चौ दयानन्द पातली (गुडगावां), मा निहालसिंह आर्यसमाज दिसावर खेड़ी जि रोहतक २०१)

सभी दानदाताओं को सभा की ओर से बहुत-बहुत धन्यवाद। आशा है अन्य दानी महानुभाव भी इस सूची में अपना नाम लिखवाकर पुण्य के भागी बनेंगे।

—रघुवीरसिंह संयोजक समारोह

सभा उपप्रधान म० भरतसिंह द्वारा सभा शताब्दी प्रचारार्थ भ्रमण

आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापना शताब्दी समारोह के प्रचार तथा धनसंग्रहार्थ सभा के उपप्रधान म भरतसिंह जी वानप्रस्थी तथा मा दीपचन्द जी ने २३ अप्रेल को प्रातः ८-३० बजे सभा कार्यालय से प्रस्थान किया। खेरड़ी मोड़ पर श्री बलबीरसिंह जी के निवास पर गये और उनके परिवार से अन्न तथा धनसग्रह करने की अपील की। उन्होंने सहर्ष समारोह के लिए अन्न तथा धनसग्रह करने में योगदान करने का आश्वासन दिया। ९-३० बजे आर्यसमाज बौंदकला तथा नीमड़ी जि. भिवानी के कार्यकर्त्ताओं से मिलकर समारोह में सहयोग मागा। सभी कार्यकर्त्ताओं ने विश्वास दिलाया कि हम अपने ग्रामों से अन्न तथा धनसग्रह करके सभा उपदेशक प कुलवन्तराय आर्य द्वारा भेज देंगे तथा समारोह में भी अधिक से अधिक सख्या में सम्मिलित होंगे। १०-३० बजे आर्यसमाज मन्दिर चरखी दादरी में पहुचकर डा रामनारायण चावला, डा. प्रेमानन्द जी आदि से सम्पर्क किया। उन्होंने भी शताब्दी समारोह हेतु पूर्ण सहयोग देने का वचन दिया। चरखी दादरी के पश्चात् ११-३० बजे आर्यसमाज महेन्द्रगढ़ पधारे। वहा भी अधिकारियों ने शताब्दी समारोह में अपना योगदान करना स्वीकार किया। दोपहर बाद २ बजे आर्यसमाज मन्दिर सधोवाडा नारनौल जि महेन्द्रगढ़ में आर्यसमाज के अधिकारियों की बैठक आयोजित की गई। म ताराचन्द आर्य सभा अन्तरग सदस्य ने सभा उपप्रधान जी का स्वागत करते हुए दस हजार रुपये की धनसग्रह हेतु रसीदें उत्साह पूर्वक प्राप्त की और विश्वास दिलाया कि समारोह में अधिक से अधिक नरनारियों सहित पहुचने का निमन्त्रण स्वीकार किया। उसी दिन रात्रि ७-३० बजे आर्यसमाज रेवाड़ी पहुचकर वहां के आर्यसमाज के अधिकारियों से सम्पर्क किया। उन्होंने १२००) पूर्व सभा को भेज दिये हैं और भी धनसग्रह करके समारोह मे आकर जमा करने का आश्वासन दिया।

शुभविवाह संस्कार पर सभा को दान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्वप्रधान श्री हीरासिंह जी (पूर्व कार्यकारी पार्षद दिल्ली) की सुपुत्री कु. अनीता एम ए का शुभविवाह डा. सोमवीर जी मा टा रोहतक निवासी के सुपुत्र श्री नरेन्द्र के साथ २६ मार्च को वैदिकरीति के अनुसार प. देवेन्द्रनाथ शास्त्री नरेला ने करवाया। इस शुभावसर पर सभाप्रधान प्रो. शेरसिंह, सभामन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री, सभा शताब्दी समारोह के सयोजक श्री रघुवीरसिंह, चौ. प्रियव्रत जी आर्य विद्या परिषद् के प्रस्तोता प्रि लाभसिंह, डा. योगानन्द आदि आर्यनेता उपस्थित थे। कन्या तथा वरपक्ष ने सभा शताब्दी समारोह के लिए सौ-सौ रुपये दान दिया।

—केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष

होडल से रोहतक तक पदयात्रा

हथीन, २४ अप्रेल (निस)। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा आगामी एक मई से एक पदयात्रा होडल से लेकर रोहतक तक आयोजित कर रही है। बाद में यह पदयात्रा रोहतक में हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के शताब्दी समारोह में सम्मिलित हो जायेगी।

पदयात्रा के संयोजक श्री हरिचन्द शास्त्री व श्री राजेन्द्र बोसना ने बताया कि पदयात्रा का मुख्य उद्देश्य वैदिक सिद्धांतों का प्रचार और जनजागरण कर समाज में व्याप्त छुआछूत, दहेज, शराब जैसी कुरीतियों को दूर कराना है। (नवभारत टाइम्स)

हार्दिक धन्यवाद

मेरे सुपुत्र के निधन होने पर अनेक महानुभावों ने मेरे परिवार के प्रति पत्र लिखकर अथवा मेरे निवास पर पधारकर शोक सवेदना एव सहानुभूति प्रकट की है, तदर्थ मैं सभी का आभारी हू।

—रघुवीरसिंह माडल टाउन, रोहतक

आर्य वीरदल रोहतक वार्षिकोत्सव पर भाषण प्रतियोगिता

प्रत्येक राष्ट्र एवं जाति का उत्थान उसके बच्चों एवं युवक-युवतियों के बौद्धिक, नैतिक एवं चारित्रिक निर्माण पर निर्भर करता है। इसी भावना के दृष्टिगत एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन रविवार दिनांक ३ मई, १९८७ को साय ३-३० बजे से महता भवन (स्व० देवराज सेठी के मकान के सामने) किला रोड, रोहतक में किया जारहा है। जिसमें आप अपने विद्यालय/महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं एवं परिवार सहित सादर आमन्त्रित हैं।

भाषण प्रतियोगिता के नियम निम्नलिखित होंगे —

१—विद्यालय स्तर पर दसवीं कक्षा तक के छात्र-छात्राओं की प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार अलग-अलग दिये जावेंगे जबकि महाविद्यालय स्तर पर संयुक्त रूप से केवल तीन पुरस्कार ही देय होंगे। जिसमें दसवीं कक्षा पास या अधिक योग्यता के छात्र एवं छात्रायें भाग ले सकेंगे।

२—प्रत्येक छात्र-छात्रा को केवल एक रु० प्रवेश शुल्क देना होगा, जो आर्य वीरदल के अधिकारियों के पास दिनांक ३०-४-८७ तक अवश्य पहुँच जाना चाहिए।

३—प्रत्येक विद्यालय/महाविद्यालय/संस्था की ओर से प्रत्येक वर्ग के लिए दो-दो प्रतियोगी भेजे जा सकेंगे, जिसके आधार पर विजेता टीम को चल-विजयोपहार (Running Shield) दी जायेगी, जो लगातार तीन वर्ष जीतने पर उसी विद्यालय/महाविद्यालय के पास स्थाई रूप से रहेगा।

४—प्रत्येक प्रतियोगी निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर अधिकतम ५ मिनट तक विचार रख सकेगा।

विद्यालय स्तर के विषय :—

१. आस्तिकवाद बनाम नास्तिकवाद
२. धर्म और राजनीति
३. आज का युवावर्ग किस ओर
४. ला० लाजपतराय जी और आर्यसमाज
५. महर्षि स्वामी दयानन्द एक समाज सुधारक
६. आधुनिक भारत में नैतिकता की बढ़ती गिरावट
७. यज्ञ और विज्ञान

महाविद्यालय (कालिज) स्तर के विषय :—

१. वैदिक समाजवाद
२ धर्म और विज्ञान
३. समाज एवं राष्ट्र की प्रगति के लिए ब्रह्मशक्ति एवं क्षात्रशक्ति का समन्वय अनिवार्य
४. म० हंसराज जी का शिक्षा प्रसार में योगदान
५. महर्षि दयानन्द वेदोद्धारक
६ आधुनिक विश्व में नैतिक मूल्यों का ह्रास
७. मतमतांतर राष्ट्रीय एकता में बाधक

संयोजक—आर्य वीरदल, रोहतक

शराबबन्दी गीत

पति मेरा पिये रोज शराब तूर चेहरे का झड़ा रहे।

जेवर बेचा धरती धरती मैं बच्चों संग भूखी मरती।
डरती करती नहीं जवाब तैयार पीटन न खड़ा रहे॥ १
मैंने समझा लिया बहुतेरा न कहा मानता मेरा।
चेहरा हरदम रहे बेताब, बहुत मेरी नशा से चढ़ा रहे॥ २
रहे मित्रों संग जूतम-जूते, ग्राम के लोग जगादे सूते।
कुत्ते मुंह में करें पेशाब, रोज गलियों में पड़ा रहे॥ ३
कह ताराचन्द न्यू गावे, बाहुण मेरी समझे ना समझावे।
खावे अण्डे मांस कवाब, रोज गैरों के घर बड़ा रहे॥ ४

शराबबन्दी के लिए एक सुझाव

सभा शताब्दी समारोह जैसा पुण्य के प्रचार का भारी कार्य हरयाणा प्रतिनिधि ने उठा लिया है, पर अभी तक गर्मी जनता में नहीं आई है। यह महोत्सव जनता को नई दिशा देने के लिये मनाया जारहा है। शराब जैसी लानत हरयाणा को नाश की राह पर ले जारही है। चरित्र तो भ्रष्ट होता ही है, नौजवानों की शक्ति तथा कमाई भी नष्ट हो रही है। स्त्री-समाज को इससे भारी अपमान तथा दुःख सहना पड़ता है। स्त्रियों को ही कमर कसनी पड़ेगी। आर्यसमाजों को चाहिये कि शराब की हानियों पर जो भजन हैं, वे स्त्री-समाज को सौंप दें। पढ़ी-लिखी स्त्रियां प्रण करें कि हम हर उत्सव पर शराब की बुराइयों के ही भजन गायेंगी, अन्य कोई भजन उस समय तक मुंह से नहीं बोलेंगी जब तक शराब पापिन को हरयाणा से क्या देश से न निकाल देंगी।

सभा शताब्दी के महोत्सव में स्त्रियों को अधिक से अधिक पहुँचना चाहिए। वे ऊट गाड़ी ट्रेक्टरों में शराब के विरोध में गीत गाती रोहतक १४-५-८७ को पहुंचे। इनके प्रचार से सारा हरयाणा जाग जावेगा।

आर्यसमाजों को चाहिये कि वे हर समाज से सैकड़ों स्त्रियों को प्रेरित कर महोत्सव में पहुंचायें। विशेष रूप से सभी ग्रामों के हर घर से देवियां आनी चाहियें, जब तक देवियां समाज के काम में भाग नहीं लेंगी, आर्यसमाज का उद्देश्य पूरा नहीं होगा। असल पूंजी बालक की निर्माता तो यह देवियां ही हैं। देवियों में सेवाभाव भी जागृत करें। हर आर्यसमाज को अपने समाज की तरफ से एक ऋषिलंगर चलाना चाहिए। सेवा भी इनका मुख्य कार्य था जो लोप होता जारहा है।

हमारे अधिकारी तथा अन्य अन्तरंग सदस्य भी अपनी देवियों को किसी भी मीटिंग में साथ नहीं लाते, ये आधे अंग से आते हैं, इसलिये उनका काम भी आधा ही होता है। अतः मेरा सब अधिकारियों से निवेदन है कि वे हर कार्य में देवियों को साथ लावें। ऐसा करने से उनके कार्य में चार चांद लग जावेंगे।

—दीपचन्द आर्य कासनी

ठेका हटाने के लिए महिलाओं ने मोर्चा जीता

बहादुरगढ़, २१ अप्रैल (प्रेम शर्मा) : बहादुरगढ़ में महिलाओं ने शराब के ठेके को स्कूल के सामने से हटवाने के लिए मोर्चा जीत लिया है। महिलाओं ने शराब के ठेकेदार से शपथ-पत्र ले लिया है, जिसमें ठेकेदार ने पांच मई तक का महिलाओं से समय मांगा है। ठेकेदार ने वायदा किया है कि वह पांच मई तक कहीं दुकान लेकर ठेके को वहां उठा ले जायेगा।

रेलवे रोड पर यह शराब का ठेका दो स्कूलों के बीच में पड़ता था और ठेके से स्कूल की दूरी १०० गज के अन्दर थी, जिसके खिलाफ स्थानीय जनता पार्टी के अध्यक्ष चौ० चांदसिंह ने कल से धरना दे रखा है। धरने में आज काफी संख्या में महिलाएं भी आई और उन्होंने शराब के ठेकेदार को वहां से तुरन्त ठेका हटाने की चेतावनी दी। ठेकेदार ने महिलाओं की बात तुरन्त मानली और उनसे कुछ समय मांगा, जिसे महिलाओं ने भी कबूल कर लिया। जनता पार्टी के नेताओं ने अब मुख्य राजमार्ग पर सड़क से १०० गज की दूरी के अन्दर आनेवाले ठेकों के आगे धरना देने की घोषणा की है। जो कार्य आदमी धरना देकर भी न कर पाये थे, वह काम महिलाओं ने एक ही चेतावनी में करा दिया।

आर्य केन्द्रीय सभा करनाल का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री पृथ्वीराज नागपाल एडवोकेट, उपप्रधान—महाशय रामशरण आर्य, देवदत्त बिज, महामन्त्री—ओम्प्रकाश सखदेवा, उपमन्त्री—भोपालसिंह आर्य, प्रचारमन्त्री—ओम्प्रकाश कुमार, कोषाध्यक्ष—प्रेमस्वरूप आर्य, लेखानिरीक्षक—लक्ष्मीनारायण कठपालिया।

ओ० पी० सखदेवा महामन्त्री

१० मई ८७ को संस्कृत रक्षा दिवस देशभर की धार्मिक संस्थाओं और संस्कृत विद्यालयों के संचालकों से अपील

श्रीमन्महोदय, आपको विदित है कि भारत सरकार की नई शिक्षा नीति में संस्कृत भाषा की नितांत उपेक्षा की गई है। इसका परिणाम स्पष्ट है कि भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय एकता का सर्वनाश होगा। इस वास्तविकता को ध्यान में रखकर ६ मार्च १९८७ को दिल्ली में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में संस्कृत के चुने हुए विद्वानों की बैठक प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई थी। इस अवसर पर प्रस्ताव के अतिरिक्त एक अखिल भारतीय संस्कृत रक्षा समिति का गठन श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता में किया गया है।

समिति ने सर्वसम्मति से आगामी १० मई, १९८७ को अखिल भारतीयस्तर पर संस्कृत रक्षा दिवस का आह्वान किया है। आपसे निवेदन है कि अपनी शिक्षा संस्थाओं, विद्यालयों, महाविद्यालयों, शोध संस्थान, आर्यसमाज, सनातन धर्म सभा आदि संस्थाओं में भारी संख्या में एकत्र होकर संस्कृत की रक्षा तथा इसके पठन-पाठन की व्यवस्था के लिए सकल्प करें। इस आशय का प्रस्ताव पारित कर प्रधानमन्त्री, मानव संसाधन विकास मन्त्री, शिक्षा मन्त्री भारत सरकार, समाचार-पत्रों व समाचार एजेंसियों को भेजें। एक प्रति अखिल भारतीय संस्कृत रक्षा समिति, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, रामलीला मैदान नई दिल्ली को भी भेजें। (प्रस्ताव का प्रारूप सलग्न है)।

समिति ने यह भी निर्णय लिया है कि शिक्षा पाठयक्रम में इसकी अनिवार्यता के लिए एक जोरदार हस्ताक्षर अभियान चलाया जावे। अतः आप अपने क्षेत्र में अधिक से अधिक लोगों के हस्ताक्षर कराकर, पत्रों को यहां अखिल भारतीय संस्कृत रक्षा समिति के पास भिजवाने का कष्ट करें, ताकि यहां से बड़ी भारी संख्या में इसे सरकार के सम्मुख प्रस्तुत किया जा सके।

कृपया इसके अनुसार समुचित कार्यवाही कर अनुगृहीत करें।

भवदीय—ब्रह्ममित्र अवस्थी संयोजक

पारावारिक यज्ञ व सत्संग

१४-४-८७ को पूर्णमासी के उपलक्ष्य में ग्राम नलवा निवासी सेठ मांगेराम जिन्दल के घर प्रातः ७ बजे से ६ बजे तक हवन किया। सेठ के पुत्र रमेशचन्द्र ने धर्मपत्नी सहित यजमान का पद ग्रहण किया। पं० प्रभुदयाल प्रभाकर ने पच महायज्ञ व आत्मा परमात्मा के बारे विचार रखे। यज्ञ में काफी सख्या में नरनारियों ने भाग लिया।

मध्याह्न २ से ५ बजे तक सत्सग का आयोजन किया गया, जिसमें माताओं ने काफी सख्या में भाग लिया। जिसमें स्वामी मस्तानानन्द, पं० प्रभुदयाल व मैंने मूर्तिपूजा व्यर्थ, सुखी गृहस्थ, नारी शिक्षा तथा श्री रामचन्द्र, योगिराज श्रीकृष्ण बजरगबली श्री हनुमान जी के जीवन पर संक्षिप्त विचार रखे। पं० सुलतानसिंह की भजनमण्डली के शिक्षाप्रद भजन हुए। सेठ ने हर महीने सत्संग करवाने का वचन दिया।

—अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी सभा उपदेशक

आर्य वीरदल शिविर का आयोजन

आर्य वीरदल दिल्ली की ओर से एक शिविर २२ से ३१ मई, ८७ तक का आयोजन किया है।

इसमें १६ से ३५ वर्ष के युवक भाग ले सकेंगे। अतः सभी आर्य संस्थाओं, आर्यसमाजों, आर्य स्त्री समाजों के माननीय प्रधानों, मन्त्रियों से निवेदन है कि अपनी समाज संस्था की ओर से कम से कम दो युवकों के नाम तथा १० रुपये प्रवेश शुल्क भेजकर नाम अंकित करावें।

डा० धर्मपाल, महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

श्यामसुन्दर विरमानी, महामन्त्री, आर्य वीरदल दिल्ली

१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

(पूर्व आ० प्र० स० पंजाब के विभाजन उपरांत)

द्वारा १५-१६-१७ मई १९८७ को रोहतक में आयोजित स्थापना शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में स्मारिका।

प्रिय महोदय,

यू तो अनगिनत अवसरों पर दान व सहयोग देकर हर शुभकार्य में आप हमारा हाथ बटाते रहे हैं, लेकिन आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का स्थापना शताब्दी समारोह एक अति विशिष्ट अवसर है, जिसका महत्त्व सर्वविदित है।

इस अवसर पर एक 'स्मारिका' प्रकाशित करने का निर्णय हुआ है, जिसे हम एक 'संग्रहणीय एव नित्य पठनीय ज्ञान मंजूषा का रूप देना चाहते हैं। आपसे प्रार्थना है कि अपना बडे से बडा विज्ञापन देकर इस यज्ञ को सफल बनाने की कृपा करें।

धन्यवाद सहित

विनीत

डा० रणजीतसिंह संयोजक स्मारिका

विज्ञापनार्थ आदेश-पत्र

श्री संयोजक,
शताब्दी स्मारिका समिति
दयानन्दमठ, रोहतक (हरयाणा)

प्रिय महोदय,

हमें प्रसन्नता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा आयोजित स्थापना शताब्दी समारोह की 'स्मारिका' में प्रकाशनार्थ अपने विज्ञापन का आदेश-पत्र हम आपको भेज रहे हैं। विज्ञापन का विवरण नीचे/संलग्न पृष्ठ में/ब्लाक सहित भेजा जारहा है।

पूरा पृष्ठ — आधा पृष्ठ — चौथाई पृष्ठ

शुभकामना सूक्ति

आवरण

दूसरा पृष्ठ — तीसरा पृष्ठ — अन्तिम पृष्ठ

इसी निमित्त से...बैंक का
रु०.................. ....राशिका क्रॉस्ड
चैक स०/ड्राफ्ट सं०............ ....दिनांक......................
आपके नाम का भेजा जारहा है। कृपया रसीद तुरन्त भेज दें और छपने के बाद स्मारिका की प्रति भी शीघ्र भेजने की कृपा करें।

भवदीय

विज्ञापन की दरें

(२०×३०/८ आकार)

पूरा पृष्ठ २००० — आधा पृष्ठ १०००
चौथाई ५०० — शुभकामना सूक्ति २५०

आवरण के लिए पांच हजार या इससे अधिक दान के साथ विज्ञापन देकर कृतार्थ करें।

सूचना:—

१. आयकर विमुक्ति स० २२८ (२१ ए)/७८-७९/जे अनुसार विज्ञापन राशि आयकर मुक्त है।
२. ड्राफ्ट व चैक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक के नाम से बनायें।

शराब मानव-समाज की शत्रु है
इससे अवश्य बचें।

आर्यसमाज कोल जि० कुरुक्षेत्र का उत्सव

आर्यसमाज कोल (कुरुक्षेत्र) का पांचवां वार्षिक उत्सव २७-२८-२९ मार्च ८७ को बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ, जिसमें ग्राम के नरनारियों ने प्रवचन तथा भजन सुने और जनता पर काफी प्रभाव पड़ा। उत्सव के समय पर श्री महेन्द्रसिंह शास्त्री के प्रभावशाली प्रवचन हुए तथा श्री ईश्वरसिंह तूफान और श्री रामनिवास जी की मण्डली ने अपने भजनोपदेशों से जनता पर बहुत प्रभाव डाला तथा शराब व अन्य नशीली वस्तुओं पर भी विचार रखे।

उत्सव को सफल बनाने के लिए महाशय खेमचन्द आर्य, ताराचन्द प्रधान, बलजीतसिंह मन्त्री, प्रकाशचन्द्र कोषाध्यक्ष तथा सरदार किशनसिंह सदस्य और दूसरे ग्रामीण सज्जनों ने बडे उत्साह के साथ सहयोग देकर उत्सव को सफल बनाया।

२९ मार्च ८७ को यज्ञ किया गया और इस शुभ अवसर पर ८-१० युवकों ने यज्ञोपवीत ग्रहण किया और अपनी बुरी आदतों को छोड़ने का संकल्प लिया। शास्त्री जी ने यज्ञोपवीत के लाभ बताये। तत्पश्चात् पूर्णाहुति पर रोहतक प्रतिनिधि सभा को ३९६) दान दिये।

—आर्यसमाज कोल

आर्यसमाज जींद शहर के समाचार

१—दिनांक ६-७-८ अप्रैल को रामनवमी पर्व पर आर्यसमाज की ओर से वेदप्रचार का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर श्री स्वामी दीक्षानन्द जी के प्रवचन, वेदकथा आदि तथा पं० सत्यपाल पथिक के भजनोपदेश हुए। प्रातः ८ से ११ बजे तथा रात्रि ८ से १०-३० बजे तक प्रतिदिन कार्यक्रम प्रभावशाली रहा।

२—आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापना समारोह सम्बन्धी की तैयारी के लिए आर्यसमाज के प्रधान श्री छबीलदास आर्य ने समारोह के लिए २५ बोरी अन्न संग्रह करने तथा अधिक से अधिक स्वागत समिति के सदस्य बनाने का प्रयत्न अपने अन्य साथियों के साथ कर रहे हैं। अपने आर्यसमाज की ओर से ११००) देने का प्रस्ताव भी पारित कर दिया है।

वेदपारायण महायज्ञ में यजमान

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि सभा के शताब्दी समारोह के शुभ अवसर पर दिनांक ११ मई से यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया जारहा है। जो यज्ञप्रेमी भाई सपत्नीक यजमान बनना चाहें, वह समय से पूर्व सभा कार्यालय को सूचित करदें, जिससे उनकी सुविधापूर्वक व्यवस्था की जा सके।

—सुदर्शनदेव आचार्य
संयोजक वेदपारायण महायज्ञ

रामनवमी पर विशेष

यह कैसा रामराज्य

गांधी जी के स्वप्न का यह कैसा रामराज है।
रामराज्य जैसा कोई होता नहीं काज है॥

राम के शासन में सदा सुखी सब लोग थे।
नहीं थी अकाल मौत नहीं कोई रोग थे।
चारों ओर देखो अब दुःखी सब समाज है॥ राम० १

जहां देखो लूट मार मची हाय-हाय है।
भयभीत जनता का कोई न सहाय है।
हाथ में बन्दूक जाके वही सरताज है॥ राम० २

भाषावाद जातिवाद देखो भाई भतीजावाद।
प्रांतवाद सम्प्रदायवाद और समाजवाद।
समझ में न आता कैसा लोकतन्त्र राज है॥ राम० ३

जगह-जगह भारतीय झण्डे हैं जलाये जाते।
देश के विरुद्ध षड्यन्त्र हैं चलाये जाते।
सुनता नहीं कोई देशभक्तों की आवाज है॥ राम० ४

अधर्मी पाखण्डी सब मौज यहां मना रहे।
घोर अपराधी देखो निर्भय दनदना रहे।
"छाजूराम" सज्जन कोई सुखी नहीं आज है॥ राम० ५

—छाजूराम शर्मा शास्त्री नई दिल्ली-६५

सुयोग्य आर्य पुरोहित की आवश्यकता

आर्यसमाज जींद शहर को एक सुयोग्य विवाहित अथवा प्रौढ आयु के पुरोहित की शीघ्र आवश्यकता है। प्रार्थना-पत्र मन्त्री के नाम भेजें, अथवा व्यक्तिगत सम्पर्क करें। वेतन योग्यता के अनुसार दिया जायेगा।

—प्रो० इन्द्रदेव शास्त्री मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का
बिक्री हेतु वैदिक साहित्य

क्र०	पुस्तकों का नाम	मूल्य
१.	दी वेदाज (अंग्रेजीभाषा में)—स्वामी भूमानन्द जी	१-००
२.	दी प्रिंसिपल्ज आफ आर्यसमाज - पं० चमूपति एम०ए०	१-५०
३.	जीवन ज्योति (वेदमन्त्रों की व्याख्या)—पं० चमूपति एम०ए०	३-००
४.	निहारिकावाद और उपनिषद्—पं० चमूपति एम०ए०	०-५०
५.	आर्यसमाज की विचारमाला—प० क्षितीशकुमार वेदालंकार	१-००
६.	निजाम की जेल में—लेखक प० क्षितीशकुमार ,,	२०-००
७.	ईसाइयों की प्रचार प्रणाली—पं० जगत्कुमार शास्त्री	००-१०
८.	आर्यसमाज और अस्पृश्यता निवारण-पं. ओम्प्रकाश त्यागी	००-५०
९.	बलिदान जयन्ती स्मृति ग्रथ (आर्य शहीदों का परिचय)	४-५०
१०.	ईश्वर की सत्ता—डा० रणजीतसिंह	१-००
११.	हरयाणा के आयसमाज का इतिहास—डा० रणजीतसिंह	५-००
१२	धर्म-प्रवेशिका —डा० रणजीतसिंह	३-००
१३.	धर्म-भूषण ,,	५-००
१४.	पंजाब का आर्यसमाज —प्रि० रामचन्द्र जावेद	२-००
१५.	आदर्श धातु रूपावली —महावीर आजाद शास्त्री	२-००
१६.	वैदिक उपासना पद्धति—डा० सुदर्शनदेव आचार्य	३-००
१७.	स्मारिका (हरयाणा प्रांतीय आर्यसमाज शताब्दी समारोह)	१-००
१८.	मूर्तिपूजा —सम्पादक पं० जगदेवसिंह सिद्धांती	००-५०
१९.	वेदस्वरूप निर्णय ,,	००-७५
२०.	वेदाविर्भाव ,,	१-००
२१.	वेदभाष्य पद्धति ,,	१-००
२२	ईसाई पादरियों को आर्यसमाज की चुनौती-स्वा० दर्शनानन्द	०-१०
२३.	गोकरुणानिधि—स्वामी दयानन्द सरस्वती	०-२०
२४.	सत्यार्थप्रकाश ,,	६-००
२५.	महर्षि दयानन्द आत्मकथा ,,	०-५०
२६	हमारा फाजिल्का —योगेन्द्रपाल	१-००
२७.	बड —स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती	१-५०
२८.	वीर हेमू ,,	००-७५
२९.	पीपल ,,	१-५०
३०.	मिर्च ,,	१-५०
३१	श्लीपद वा हाथीपाव की चिकित्सा ,,	०-२०
३२.	बिच्छू विष चिकित्सा ,,	०-५०
३३.	लवण ,,	१-२५
३४.	विदेशों में मैंने क्या देखा ,,	२-५०
३५.	नैरोबी यात्रा ,,	१-५०
३६.	ब्रह्मचर्य साधन ६-११ ,,	१०-००
३७.	,, १-२ ,,	१-००
३८.	,, ३ ,,	१-००
३९.	,, ४ ,,	२-५०
४०.	,, ५ ,,	२-००
४१.	,, ६ ,,	३-००
४२.	,, ७-८ ,,	२-००
४३.	,, ९ ,,	३-००
४४.	,, १० ,,	१-५०
४५.	,, ११ ,,	२-००
४६.	हल्दी ,,	१-५०
४७.	नीम ,,	१-२५
४८.	पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय—प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु	१-५०
४९.	नास्तिक मत समीक्षा—पं० हरिदेव सर्राफ	००-१५
५०.	विश्व को आर्यसमाज का सन्देश—महात्मा वेदभिक्षु जी	००-२५

प्राप्ति स्थान

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

दयानन्दमठ, सिद्धांती भवन, रोहतक।

कुण्डलिया

मनायें आर्य शताब्दी, सौ वर्षों के बाद।
आओ मिल करके करें, ऋषिराज की याद।
ऋषिराज की याद, दयानन्द देव कहाये।
मुरझाई वैदिक बगिया में, पुष्प खिलाये।
प्रिय वेद संस्कृति का, सबको सन्देश सुनायें।
चलिये रोहतक मिलकर, आर्य शताब्दी मनायें॥

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

आर्यसमाज राजपुर जि० सोनीपत का चुनाव

प्रधाना—सर्वश्री श्रीमती शांति राठी पूर्व विधायका, उपप्रधान—सुखलाल राठी, मन्त्री—बलबीरसिंह राठी, कोषाध्यक्ष—धर्मसिंह राठी, पुस्तकाध्यक्ष—सुरेश ड्राफ्टमैन, लेखानिरीक्षक—चादराम।

आर्यसमाज बिगोवा जि० भिवानी

प्रधान—सर्वश्री मा० मुख्त्यारसिंह, उपप्रधान—मा० धर्मसिंह, मन्त्री—सुरतसिंह, उपमन्त्री—ओमप्रकाश, कोषाध्यक्ष—कश्मीरसिंह।

आर्य सत्याग्रहियों का सम्मान

१५ से १७ मई, १९८७ ई० तक दयानन्दमठ, रोहतक में होने वाले आर्य प्रतिनिधि सभा शताब्दी समारोह पर आर्यसमाज के सभी सत्याग्रहियों एवं जेलयात्रियों का सम्मान किया जायेगा। उन्हें सत्याग्रह के बिल्ले दिये जायेंगे और पण्डाल में उनके बैठने के लिए पृथक् व्यवस्था की जायेगी। इस अवसर पर प्रकाशित होनेवाली "स्मारिका" में सत्याग्रहियों के नाम पूरे पते सहित प्रकाशित किये जायेंगे।

हैदराबाद आर्यसत्याग्रह, हिन्दी रक्षा सत्याग्रह, गोरक्षा सत्याग्रह, कुण्डली बूचडखाना आंदोलन और शराबबन्दी आंदोलन में जेल जानेवाले महानुभावों से तथा इनके सम्बन्धियों से नम्र-निवेदन है कि वे सत्याग्रहियों एवं जेल-यात्रियों की नामावली पूरे पते सहित तुरन्त सभा कार्यालय दयानन्दमठ, रोहतक में भेज देवें, जिससे समुचित कार्यवाही की जा सके।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

वेदाऽमृत

महिमण्डल में आज जग रही, ज्योति नवल जो ज्योतिष्मान।
ज्ञान प्रभा हो रही प्रभासित, बढ़ता प्रतिदिन नव विज्ञान।
सबसे पहले इसी देश में, फूटी थी वह कांति महान्।
ज्ञानरश्मियां जिससे लेकर, हुआ प्रकाशित पूर्ण जहान।

प्रभु ने हमें दिया वेदाऽमृत, निर्मित कर यह सृष्टि महान्।
जिसे पान कर रहे निखरते, मानव जीवन के प्रतिमान।
चतुर्वेद प्रहरी हैं जाग्रत, सत्य धर्म की संस्कृति के।
रहस्य प्रकट करनेवाले हैं, ईश्वर-जीव-समस्त प्रकृति के।

गरिमामय है उनकी आभा, शांति सफलता की दात्री।
गौरवमय है दिव्य पावनी, समरसता की गायत्री।
जहां मिली विज्ञान किरण है, इस जगतीतल के नर को।
वही-वही हैं वेद हमारे, देते ज्ञान जगत्भर को।

जिसने है निर्दिष्ट किया पथ, जिस पर बढ़ता है मनुजत्व।
जिस पर चलकर पुरुषों का है, बढ़ता सदा रहा पुरुषत्व।
जिसकी मधुर ऋचाओं से है, प्रमुदित होता अमृत-पथ।
रहते जिसके यशोगान में, महामनुज हैं अविरल रत।

वही हमारे वेद सुपावन, दिव्यालोक महान् हैं।
मानवता की गरिमा के वे, गौरव हैं, अभिमान हैं।
वेदालोक भुवन भर में यदि, हमने ना बिखराया होता।
सतत अंधेरा रहता भू पर, जगतीतल भरमाया होता।

देखो आज खोलकर आंखें, भरत-भूमि क्यों तिमिराश्रित।
कहां गया वह विश्वगुरु पद, कहां गई वह प्रभा प्रभासित।
हाहाकार मचा क्यों जग में, आती है क्यों करुण पुकार।
दानवता के पदचिह्नों का, होता जग में अधिक दुलार।

भुला दिया वेदों को हमने, इसका यही प्रमुख कारण।
इसीलिये हो रहा मनुज का, अपने हाथों आज प्रताड़न।
हरना यदि हमको धरती से, छायी है जो घोर अशांति।
फैलाना है पुनः धरा पर, निर्मल-सी वह ज्योतिःकान्ति।

तो फिर उठो! बढ़ो निर्भय हो, वेदों का पथ अपनाओ।
भूले इस महिमण्डल को, वेदों के पथ पर ले आओ।
तभी हमें अमरत्व मिलेगा, शांतिजनित पथ विमलीभूत।
सदा सफलता पद चूमेगी, मानवता से हो अभिभूत।

—राधेश्याम आर्य
विद्यावाचस्पति मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

सस्वर वेदपाठ प्रशिक्षण शिविर

इस वर्ष १५ मई से जून मास के अन्त तक १५-१५ दिनों के लिए तीन प्रशिक्षण शिविर इन्दौर में आयोजित किये जावेंगे। जो इस निमित्त प्रशिक्षणार्थ आना चाहें और यज्ञ चिकित्सा विज्ञान सीखना चाहें, वे शीघ्र ही वेद सदन महारानी रोड, इन्दौर-४५२००७ से सम्पर्क करें।

—प० वीरसेन वेदश्रमी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 फोन ४ मृष्टि संवत् १,९६,०८,५३,०८७

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सर्वहितकारी
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभा मन्त्री सह-सम्पादक—डा० सुखवीर

वर्ष १४, अङ्क २३ ७ मई, १९८७ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे



सभा शताब्दी समारोह की तैयारी के लिए सर्वत्र उत्साह

(केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष द्वारा)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (आर्य प्र० स० पंजाब के त्रिशासन के उपरान्त) की स्थापना शताब्दी समारोह की तिथियां १५ से १७ मई निकट आगई हैं। सभा कार्यालय में प्राप्त सूचनाओं के अनुसार सारे हरयाणा में आर्यसमाजों के अधिकारी, कार्यकर्त्ता अपने अन्य सहयोगियों के साथ सभा शताब्दी समारोह को सफल करने के लिए दिन-रात कार्य में जुट गये हैं।

गतसप्ताह सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत जी शास्त्री ने शताब्दी समारोह के संयोजक एवं वेदप्रचाराधिष्ठाता श्री रघुवीरसिंह जी तथा सभा के गणक श्री सोमराम जी के साथ पानीपत, घरोंडा, करनाल, नीलोखेड़ी, अम्बाला, शाहबाद, कुरुक्षेत्र, सोनीपत, खरखोदा, भिवानी तथा झज्जर आदि का भ्रमण किया। सभी स्थानों पर कार्यकर्त्ताओं में उत्साह पाया गया। आर्यसमाज होली मोहल्ला करनाल के नवनिर्वाचित प्रधान श्री जसवन्तसिंह आर्य ने अपने नगर तथा निकट के ग्रामों से संग्रह की गई राशि ११००० रुपये सभा अधिकारियों को भेंट करते हुए विश्वास दिलाया कि हम अपने सहयोगियों के साथ अन्न तथा धनसंग्रह करके सभा को शीघ्र ही भेज देंगे। करनाल के दानवीर आर्यनेता श्री अनन्तराम आर्य जिन्होंने सर्वप्रथम शताब्दी समारोह के लिए स्वयं २१०० रु. प्रदान किये हैं, के अस्वस्थ होने के कारण सभा के अधिकारी उनके स्वास्थ्य की कामना एवं आशीर्वाद प्राप्त करने के लिये उनके निवास पर गये तो उन्होंने उदारतापूर्वक पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया तथा समारोह की सफलता हेतु शुभकामनायें प्रकट कीं। इसी प्रकार अन्य आर्यसमाजों के अधिकारियों ने भी सभा अधिकारियों की प्रेरणा से अपने नगर तथा ग्राम से अधिक से अधिक सहयोग देने का वचन दिया। गुरुकुल झज्जर के स्नातक डा. सोमवीर जी ग्राम चमराड़ा जि. करनाल ने समारोह में पहुंचने का निमन्त्रण सहर्ष स्वीकार करते हुए अपनी ओर से ११००) रु. भेंट किये। भिवानी शहर के ठाकुर परिवारों सहित एक हजार रुपये समारोह के लिये प्रदान किये। झज्जर तथा भिवानी नगर से भी शताब्दी समारोह को सफल करने के लिये अनेक कार्यकर्त्ताओं ने उत्साहपूर्वक दान दिया है। दानदाताओं के नाम सर्वहितकारी के इसी अंक में प्रकाशित किये जारहे हैं। आर्यसमाज खरक कलां जि. रोहतक के प्रधान ठा. रघुवीरसिंह जी तथा मा. निहालसिंह आर्य ग्राम दिसावर खेड़ी जि. रोहतक ने स्वयं सभा कार्यालय में पधार कर ५००) तथा २००) रु. जमा करवाये हैं। म. ताराचन्द आर्य नारनौल से धनसंग्रह करके ३००० रुपये स्वयं देकर गये हैं।

सभाप्रधान माननीय प्रो. शेरसिंह जी तथा पं. प्रभातशोभा विद्यालंकृता ने भी गतसप्ताह कलकत्ता तथा बम्बई का भ्रमण करके सभा शताब्दी समारोह तथा स्मारिका में प्रकाशनार्थ विज्ञापनों के लिये ६० हजार रुपये नकद तथा वचन के रूप में संग्रह किये। सभाप्रधान जी ने दिल्ली के आर्यसमाजों तथा अन्य दानी महानुभावों से भी धनसंग्रह कर रहे हैं। सभाप्रधान जी के सुपुत्र डा. तरुणकुमार जी भी धनसंग्रह तथा अन्य प्रबन्धकार्यों में यत्नशील हैं।

गुडगांव में दीवान भीमसेन जी भी सभा की स्मारिका के लिये विज्ञापन लेनें के कार्य में दिन-रात व्यस्त हैं। जिला फरीदाबाद से सभा के अन्तरंग सदस्य श्री राजेन्द्रसिंह जी, सभा के उपदेशक पं. हरिश्चन्द्र शास्त्री, प. भजनलाल आर्य तथा अन्य आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं के साथ होडल से रोहतक तक पदयात्रा का आयोजन करके शताब्दी समारोह का प्रचार कर रहे हैं। इसी प्रकार आर्य वीरदल हरयाणा के अधिष्ठाता श्री धर्मदेव जी विद्यार्थी कन्या गुरुकुल खरल के संचालक श्री स्वामी रत्नदेव जी के नेतृत्व में मई के दूसरे सप्ताह में नरवाना से रोहतक तक प्रचार-यात्रा कर रहे हैं। श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती जहां भी पहुंचते हैं वहां आर्यसमाज के अधिकारियों को समारोह की तैयारी में जुट जानें का निर्देश करते हुए धनसंग्रह भी कर रहे हैं। हिन्दू शुद्धि सभा के संचालक श्री स्वामी सेवानन्द जी, सभा के भजनोपदेशक पं. जयपाल आर्य के साथ तथा वानप्रस्थी महावीर जी एवं म. मांगेराम जी खरमाण निवासी ग्रामों में घूम-घूमकर अन्न तथा धनसंग्रह कार्य में बहुत लगन से कार्य कर रहे हैं। अम्बाला में श्री सतीश मित्तल तथा श्री वेदमित्र हापुड़वाले धनसंग्रह के अतिरिक्त अधिक से अधिक आर्य नर-नारी रोहतक लाने की तैयारी कर रहे हैं।

सभा कोषाध्यक्ष मा. बद्रीप्रसाद जी आर्य जींद तथा अन्य स्थानों से धनसंग्रह हेतु आर्यसमाजों के कार्यकर्त्ताओं से सम्पर्क कर रहे हैं। सभा उपमन्त्री प्रो. सत्यवीर विद्यालंकार हिसार में आर्यसमाज के अधिकारियों तथा कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से धनसंग्रह में लगन से कार्य कर रहे हैं। सभा उपमन्त्री डा. सुदर्शनदेव जी आचार्य ११ मई से आरम्भ होनेवाले यजुर्वेद पारायणयज्ञ की तैयारी के अतिरिक्त स्मारिका के प्रकाशन में डा. रणजीतसिंह जी का हाथ बटा रहे हैं। सभा के पुस्तकाध्यक्ष आचार्य ऋषिपाल जी, श्री स्वामी ओमानन्द जी के आदेशानुसार चरखी दादरी के आर्यसमाजों से धनसंग्रह कार्य में समय दे रहे हैं। विशेषकर पं सुरेश शास्त्री, ब्र. महेन्द्र शास्त्री, पं. सुखदेव शास्त्री, प. अत्तरसिंह क्रांतिकारी पूरी लगन से कार्यरत हैं।

इसी प्रकार सभा के अन्य अन्तरंग सदस्य तथा सभा के सभी उपदेशक अपने-अपने क्षेत्रों में समारोह को सफल करने के लिये अन्न तथा धनसंग्रह कार्य में प्रयत्नशील हैं। हरयाणा तथा दिल्ली आदि के आर्यसमाज तथा आर्यसस्थायें पूर्ण सहयोग कर रही हैं।

आर्यसमाज भाऊ अकबरपुर जि० रोहतक के मन्त्री श्री जगदेवसिंह द्वारा २०००) रु. की राशि शताब्दी समारोह के संयोजक श्री रघुवीरसिंह जी को भेंट की और इसके अतिरिक्त वे अन्नसंग्रह भी कर रहे हैं। इस से पूर्व भी उन्होंने अपने आर्यसमाज के वार्षिक उत्सव पर १६००) रुपये सभा को भेंट किये हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा का शताब्दी समारोह क्यों ?

(१८८५ से १९८५ तक का संक्षिप्त विवरण)

आर्यसमाज का गढ़ हरयाणा-रोहतक

प्रस्तुतकर्त्ता—सुखदेव शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा

अन्तिम किस्त—

आदि सृष्टि में जब वेदों का ज्ञान आदिम चार ऋषियों के हृदय में प्रादुर्भूत हुआ, उसी समय से हरयाणा वैदिक संस्कृति एवं आर्यावर्त्तीय सभ्यता का संरक्षक एवं सजग-प्रहरी तथा सन्देशवाहक भी रहा है। महर्षि पतञ्जलि के कथनानुसार यहां ८८ हजार ऊर्ध्वरेतामूर्धन्य ऋषि हुए हैं, जो पवित्र सरस्वती के तीर पर स्थापित आश्रमों में स्थित होकर विश्व को वेदों का सन्देश देते थे। यही वह पवित्र भूमि है जहां जंगल अरण्यों में समाधिस्थ होकर महर्षियों ने मानव जीवन निर्माण करनेवाले आरण्यक ग्रंथों का प्रणयन किया था। ऋषि-मुनियों के आश्रमों में गुरुओं के चरणों में बैठकर जहां समग्र वैदिकवाङ्मय का सृजन हुआ था। ऋग्वेद के मन्त्र ८।२५।२२ में हरयाणा नाम से जिसकी चर्चा की गई है—

ऋज्रमुक्षण्यायने रजतं हरयाणे। रथं युक्तमसनाम सुषामणि ॥

मन्त्र में उक्षा शब्द निघण्टु में महद्वाची पठित है। सुषम शब्द अत्यन्त सुन्दर वस्तु के लिये प्रसिद्ध है। उसी का रूपांतर सुषामण है। ऋज्र धातु प्रसाधनार्थक है। हरयाणा-हरयाणयान—अर्थात् जिनके यान स्वभाव से सुन्दर हों, जहां पर दूर-दूर तक यातायात किया जा सकता हो, वह हरयाणा कहलाता है। इस मन्त्र मे हरयाणा की सुन्दरता पर प्रकाश पड़ता है। उक्षण्यायने शब्द से सांडों से उत्पन्न गौ-बैलों की तथा घृत-दुग्धादि का जहां प्राचुर्य हो, यह भी इस मन्त्र का भाव है। वेदों में इतिहास नहीं है, किन्तु राजर्षि मनु के अनुसार—"वेदशब्देभ्य एवादौ पृथक् संस्थाश्च निर्ममे" वेद के शब्दों के अनुसार भूमि आदि के नाम प्राचीनकाल में निर्धारित किये गये हैं।

राजर्षि मनु ने भी आदि सृष्टि में इसी देश की ओर संकेत करते हुए मनुस्मृति में लिखा था—

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥

इस देश में उत्पन्न हुए अग्रजन्मा ब्राह्मणों के चरणों में बैठकर धरती के सब मानव अपने-अपने चरित्रों की शिक्षा ग्रहण करते थे।

कवि शंकरनाथ ने भी इस विषय में लिखा है—

देश अनूप एक हरयाणा, दूध, दधि-घृत का जहं खाना।

हरयाणा की स्वर्ग के समान उपमा करते हुए संस्कृत के एक कवि ने लिखा है—

देशोऽस्ति हरयाणाख्यः पृथिव्यां स्वर्गसन्निभः।

हरयाणा की महिमा का वर्णन करते हुए संस्कृत के ही एक कवि ने कहा—

यत्र वीरा वृषस्कन्धा भीमार्जुनसमा युधि।
तरुण्यः चञ्चलापाङ्ग्यो नृत्यसंगीततत्पराः।
कृषिदक्षा धरापुत्राः कुण्डोध्न्यश्च सुधेनवः।
पुण्यभू हरयाणेयं शौर्य-सौन्दर्य-सुसंवृता ॥

अर्थात् जहां पर बैलों के कन्धों के समान बलवान् वीर हों, भीम और अर्जुन के समान युद्ध में योद्धा हों, नृत्य सगीत में तत्पर जहां चंचल तरुणियां हों, धरती के पुत्र किसान जहां कृषि-कार्य में दक्ष हों, जहां सुन्दर गौवें घड़े भर-भरकर दूध देनेवाली हों, यह पुण्यभूमि हरयाणा है, जो शूरवीरता, सौन्दर्य से संयुक्त है।

ऐसे सुन्दर प्रदेश में एक नगर है रोहतक। रोहतक नगर की प्रशंसा करते हुए महाभारत में लिखा है—

ततो बहुधान्यं रम्यं गवाढ्यं धनधान्यवत्।
कार्तिकेयस्य दयितं रोहितकमुपाद्रवत् ॥

दिग्विजय करता हुआ पाण्डव नकुल जिस समय यहां आया, उस समय रोहतक का वर्णन करते हुए महर्षि व्यास ने लिखा है कि बहुत धनधान्य से युक्त, अत्यन्त रमणीय गौवों से भरपूर धनधान्य से युक्त शिवजी के पुत्र कार्त्तिकेय के प्रिय नगर रोहतक में नकुल ने प्रवेश किया। शिवजी महाराज के दोनों पुत्रों गणेश और कार्त्तिकेय के प्रिय नगर रोहतक के उस पवित्र स्थान दयानन्दमठ में, जहां कभी सेनापति गणेश व कार्त्तिकेय की सेना की छावनी और राजधानी थी। वहीं पर १५-१६-१७ मई, १९८७ को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का शताब्दी समारोह आयोजित किया जारहा है। रोहतक नगर एक प्राचीन नगर है, उसका अपना गौरवमय प्राचीन इतिहास है। उसी खोखराकोट पर जो कभी खोखर गोत्र के वीर क्षत्रियों का सुदृढ किला था। जिसके वीर पुरुष मातंग ने कभी अनेकों बाह्य शत्रुओं को मार भगाया था। उसी पवित्र दयानन्दमठ में यह महासम्मेलन मनाया जारहा है। इस मठ की स्थापना १९४७ के पश्चात् आर्यसमाज के लौहपुरुष श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ने की थी। उसी आर्यों की छावनी दयानन्दमठ में, जिसमें बैठकर १९५७ में हिन्दी सत्याग्रह का बिगुल बजाया गया था। जिसने करोशाही को समाप्त करके रख दिया था। गुरुमुखी का जूआ उतार कर फेंक दिया गया था। आज उसी स्थान पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वेदप्रचार कार्यालय है, जिसमें बैठकर हरयाणा के हितों के विषय में संघर्ष करने के लिये विचार-विमर्श होता रहता है।

१९६८ में हरयाणा की सरकार तथा भारत सरकार ने मिलकर कुण्डली जिला रोहतक में एक बूचड़खाना खोलने की विस्तृत योजना बनाई थी। हरयाणा एक कृषि-प्रधान, निरामिषभोजी और वैदिक संस्कृति प्रधान प्रदेश है। इस प्रांत ने अन्य प्रांतों में खुलनेवाले बूचड़खानों का भी विरोध किया है। अब उसी प्रांत की शस्यश्यामला पवित्र भूमि पर सरकार बूचड़खाना खोलने जारही है। यह बूचड़खाना और कहीं नहीं आर्यसमाज के गढ़ जिला रोहतक के एक ग्राम में खोलने की योजना बनी है। इस योजना से रोहतक जिले की सारी आर्यजनता तिलमिला उठी। २५ जून, १९६८ को बूचड़खाने का घेरा डालने के लिए हजारों आर्यवीर कुण्डली पहुंच गये। लाखों लोगों ने प्रदर्शन किया। प्रदर्शन का नेतृत्व किया था आचार्य भगवान्देव जी ने। हालात बिगड़ते देखकर स्वयं मुख्यमन्त्री चौ० बन्सीलाल ने हस्तक्षेप करके बूचड़खाना बन्द करा दिया। आर्यसमाज के संगठन की विजय हुई।

इसी प्रकार गोरक्षा आंदोलन, हिन्दी आंदोलन, नशाबन्दी आंदोलन, का दयानन्दमठ प्रमुख केन्द्र रहा है। मठ से संचालित होनेवाले आंदोलन के प्रबन्धक म० भरतसिंह जी रहे हैं। इस कार्य में उनका सहयोग वैद्य भरतसिंह जी देते रहे हैं। स्वामी ओमानन्द सरस्वती इसके प्रधान रहे हैं। हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए "हरयाणा रक्षा-वाहिनी" आर्य प्रतिनिधि से सम्बन्धित होकर कार्य कर रही है। इसके अध्यक्ष हैं प्रो० शेरसिंह। नहरी पानी, अबोहर फाजिल्का के हरयाणा में मिलाने आदि के लिए प्रो० साहब ने आयोगों से मिलकर अच्छा कार्य किया है।

शिक्षा के क्षेत्र में भी आर्यसमाज ने बहुत ही कार्य किया है। आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित इस समय ३४ शिक्षण संस्थायें काम कर रही हैं। इसी प्रकार हरयाणा में इस समय ४० के लगभग गुरुकुल वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार में सराहनीय सहयोग दे रहे हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा से सम्बन्धित हजारों ग्रामों तथा नगरों के आर्यसमाज वेदप्रचार तथा समाज-सुधार के कार्य में प्रयत्नशील हैं। सभा द्वारा स्थापित वेदप्रचार विभाग इस दिशा में महान् कार्य कर रहा है। अनेकों उपदेशक तथा भजनोपदेशक कार्यकर्त्ता सारे हरयाणे में इस समय कार्य-रत हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा अपना विशाल वेदप्रचार कार्यालय का निर्माण करने में लगी हुई है। १५-१६-१७ मई, १९८७ को रोहतक में होनेवाले हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के शताब्दी महासम्मेलन में भविष्य के लिए अनेक निर्णय किये जायेंगे। जिन्हें भविष्य में कार्यान्वित करना हम सब का परम कर्तव्य है। आप सादर आमन्त्रित हैं।

सभा शताब्दी समारोह के लिए दानदाताओं की सूची

गतांक से आगे—

सर्वश्री एस. एस. कादयान ग्राम पुट्ठी जि. सोनीपत १००), राजवीरसिंह कादयान, हरलालसिंह कादयान ग्राम पुट्ठी जि. सोनीपत १००), होशियारसिंह आर्य विश्वसेवक आर्यसमाज नाहरी जि. सोनीपत संग्रह राशि २००), रघुवीरसिंह आर्य मन्त्री आर्यसमाज खरक कलां जि. रोहतक ५००), डा. सोमवीर ग्राम चमराड़ा जि. करनाल ११००), जगतसिंह नेहरु मार्ग भिवानी २५१), नारायणसिंह नेहरु रोड भिवानी २५०), कुमार मेडीकल हाल भिवानी ५१), ला० सत्यनारायण केड़िया भिवानी १५१), खानचन्द चन्द्रभान भिवानी ५१), श्रीमती कमला शास्त्री झज्जर १०१)।

१००) देनेवाले दानी

सर्वश्री सेठ मगलचन्द, बा उदमीराम एडवोकेट, रामजीलाल बोहरा, डा. मूलचन्द, मा. अयोध्याप्रसाद, वैद्य हरिश्चन्द्र आर्य, चौ. हरप्रसाद, शिवनारायण, ला. हरचन्दराम, ला. पुष्करलाल, ओम्प्रकाश गर्ग, चौ. कालीचरण, रामजीलाल, गोविन्दराम अशोककुमार, रतनलाल तायल, हरप्रसाद एण्ड सन्ज, म मोतीराम, रामनारायण चौधरी।

५०) देनेवाले दानी

सर्वश्री भूपसिंह, कृष्णकुमार, मोहनलाल गर्ग, पुरुषोत्तमदास, ब्रह्मदेव, धर्मदेव, डा. मुस्तद्दीलाल, बा. नरेन्द्र वकील, श्रीमती सुविद्या देवी, परमजीतसिंह यादव, बालमुकन्द शिवदत्तराय, म. पूर्ण भक्त, विशनदयाल, महावीरप्रसाद, ओम्प्रकाश गर्ग।

२५) देनेवाले दानी

सर्वश्री दुलीचन्द, रामशरण पंसारी, मेहरचन्द, राजेन्द्रकुमार, श्रीमती रामदेवी।

१०) देनेवाले दानी

सर्वश्री म. जयमाल आर्य बेधड़क, म. रामनिवास, नन्दलाल।

ला विशनदयाल नई मण्डी नारनौल २००), श्री कालूराम नारनौल १५०)।

२५) देनेवाले दानी

सर्वश्री डा. स्वरूपसिंह बलियाना, ला बालकृष्ण झज्जर, महावीरसिंह खरमाण, सूबेदार करतारसिंह खरमाण, रघुनाथ नई दिल्ली, बलवीरसिंह दुल्हेड़ा, बलवन्तसिंह खेड़का, मन्शाराम खेड़का, मा० भगतसिंह खरमाण, करणसिंह मुकीनपुर, कमला खरमाण ५०), रतिराम खरमाण १०१), मा. बलवीरसिंह खरमाण ५१), मांगेराम खरमाण ५१), रोहताससिंह मुकीनपुर १०१), वानप्रस्थी महावीरसिंह द्वारा १० रुपये की रसीदों से २३०), ऊपर लिखित राशि भी वानप्रस्थी महावीरसिंह जी तथा श्री मांगेराम जी खरमाण जि. रोहतक द्वारा प्राप्त हुई है।

चौ. मित्रसेन जी प्रधान उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा माडल टाउन रोहतक ११००), श्री शिवचरणदास चावला माडल टाउन रोहतक १००), आर्यसमाज काकका जि. अम्बाला २१००), डा. जयसिंह ग्राम छतेहरा जि. सोनीपत १००), श्रीमती भरतो देवी बहन बा. रघुवीरसिंह संयोजक शताब्दी समारोह १००)।

श्री जगदेवसिंह आर्य मन्त्री आर्यसमाज भाऊ अकबरपुर जि. रोहतक द्वारा संग्रह की गई दानराशि

१००) देनेवाले दानी

सर्वश्री सरदारसिंह सरपच ग्राम दादरी तोय, लक्ष्मीनारायण दादरी तोय, ओम्प्रकाश दादरी तोय, नेकीराम औरंगपुर, जबरसिंह दादरी तोय, हरिसिंह दादरी तोय, ताराचन्द दादरी तोय, ब्रह्मसिंह दादरी तोय, मांगेराम दादरी तोय, नरेशकुमार भाऊ अकबरपुर, १०) की रसीदों द्वारा भिन्न-भिन्न दानियों से ५००), ५) वाली रसीदों से भिन्न-भिन्न दानियों से ५००)।

स्वामी सेवानन्द जी एवं पं. जयपाल आर्य सभा भजनोपदेशक द्वारा संगृहीत राशि

१००) देनेवाले दानी

सर्वश्री—रामजीलाल मतलोढ़ा (करनाल), नरसिंह पवार बड़ोली (करनाल), रामफल आर्यसमाज जोणधन (करनाल), श्रीमती इन्द्र देवी प्रधान जोणधन।

५०) देनेवाले दानी

सर्वश्री मोहनलाल आर्य मतलोडा, जयवीरसिंह आर्य सुपुत्र जयपाल आर्य आसन (रोहतक), बचनाराम आर्य ईशरहेडी (कुरुक्षेत्र), मन्त्री आर्यसमाज बराड़ा जि अम्बाला १०१), मन्त्री आर्यसमाज थम्बड़ (अम्बाला। १०१), गोयल ईण्ट वर्कस बराड़ा जि अम्बाला ५१), ला. प्रेमचन्द थम्बड़ १०), ला. जगदीशचन्द थम्बड़ १०) (पं. हरिश्चन्द्र भजनोपदेशक द्वारा), महीपालसिंह फरीदाबाद १००), पोहकरसिंह चाहल मालकोश (भिवानी) ५१), अत्तरसिंह मलिक मालकोश (भिवानी) ५०), अत्तरसिंह यादव सरपंच ५०)।

२५) देनेवाले दानी

सर्वश्री विरजानन्द मालकोश, सत्यवीर मालकोश, भगवानसिंह मालकोश, महेन्द्रसिंह पवार मालकोश, अमरसिंह लम्बरदार मालकोश, सूबेदार दीपचन्द मालकोश, बा. लक्ष्मीनारायण मालकोश, विद्यालय स्टाफ मालकोश, सूबेदार डीवराज मालकोश, रामवीर आर्य नागर ग्राम भावापुर तिगांव (फरीदाबाद) द्वारा प. मुरारीलाल सभा भजनोपदेशक

५०) देनेवाले दानी

सर्वश्री देसराज आर्य नरेला, सीसराम समालखा, देवीसिंह किशनसिंह समालखा, परसराम मोतीराम समालखा, (द्वारा स्वामी सेवानन्द एवं प. जयपाल आर्य भजनोपदेशक) चमनचन्द बोहर (रोहतक) १००), सत्यवीर शास्त्री गढ़ी बोहर १००), सरतु बोहर २५), रतनसिंह देव कालोनी बोहर २५)।

१०) देनेवाले दानी

सर्वश्री नरसिंह बोहर, दीपचन्द बोहर, किशना तेजनगर रोहतक, भाना बोहर, बलवीरसिंह नान्दल गढ़ी बोहर, सूरजमल गढ़ी बोहर, रणबीर बोहर (द्वारा वानप्रस्थी महावीर जी)।

आर्यसमाज रोहणा जि. सोनीपत द्वारा श्री इन्द्रसिंह जी प्रधान १०००)।

आर्यसमाज होली मोहल्ला करनाल के अधिकारियों सर्वश्री जसवन्तसिंह आर्य प्रधान एवं संयोजक जि. करनाल, प्रेमस्वरूप बजाज कोषाध्यक्ष, डा. यज्ञदत्त वर्मा, मा. धर्मचन्द, महाराज कृष्ण चोपड़ा प्रबन्धक आर डी आर्य कन्या उच्च विद्यालय, बलदेवकृष्ण आर्य, चमनलाल बजाज, नरदेव शास्त्री, सुभाषचन्द, लालसिंह, रतनसिंह बाठर तथा जसमेरसिंह आदि ने निम्न प्रकार धनसंग्रह करके सभा अधिकारियों को भेंट किया है—

सर्वश्री अनन्तराम आर्य करनाल २१००), बलवीरसिंह मालिक चांदी कोल्ड स्टोर करनाल ११००), आराडी आर्य कन्या उच्च विद्यालय करनाल २०००), सुभाषचन्द बजाज सुपुत्र ला. शांतिस्वरूप करनाल २५०), प्रेमस्वरूप बजाज करनाल २५०), बलदेवकृष्ण आर्य मुलतान ट्रेडर्स करनाल २१०)।

सभी दानदाताओं को सभा की ओर से बहुत-बहुत धन्यवाद। आशा है अन्य दानी महानुभाव भी इस सूची मे अपना नाम लिखवाकर पुण्य के भागी बनेंगे।

—रघुवीरसिंह संयोजक समारोह

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा शताब्दी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा १५ १६ और १७ मई को रोहतक में अपनी शताब्दी मना रही है। वास्तव में यह शताब्दी तो आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की है। एक सौ वर्ष पूर्व हरयाणा पंजाब में ही शामिल था। इस समय पंजाब की जो आर्य प्रतिनिधि सभा बनाई गई थी वही हरयाणा में भी काम करती थी। १९६६ में हरयाणा एक अलग राज्य बना दिया गया और १९७५ में हरयाणा में अलग आर्य प्रतिनिधि सभा बनादी गई। उस समय से वह हरयाणा में अपना काम कर रही है। लेकिन जैसा कि मैंने ऊपर लिखा है यह है तो वही प्रतिनिधि सभा है जो एक सौ वर्ष पूर्व पंजाब में शुरु हुई थी, यदि हमारे हरयाणा के भाई उसे अपनी सभा समझकर उसकी शताब्दी मनाना चाहते हैं तो हमें उस पर कोई आपत्ति नहीं। हमारी आज स्थिति ऐसी नहीं कि हम आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की शताब्दी मना सकें। हालात बेहतर होंगे तो हम भी अपनी सभा की शताब्दी मनायेंगे और वही वास्तव में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की शताब्दी होगी। लेकिन आज हम अपने हरयाणा के भाइयों की इस खुशी में शामिल होकर उन्हें बधाई देते हैं और आशा करते हैं कि उनका यह सम्मेलन अत्यन्त सफल रहेगा। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने अपना एक शिष्टमण्डल वहां भेजने का निर्णय किया है और भी जो पंजाबी भाई वहां जा सकें, उन सबको वहां जाना चाहिए और हमें निश्चय से इस शताब्दी को सफल बनाने का प्रयास करना चाहिये। (दैनिक वीरप्रताप से साभार)

—वीरेन्द्र

यजमानों के लिए निमन्त्रण—

वेदपारायण महायज्ञ के यजमान

आर्य प्रतिनिधि सभा के शताब्दी समारोह के पावन अवसर पर दिनांक ११ मई, १९८७ से यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया जारहा है। जिसके ब्रह्मा आर्यजगत् के प्रसिद्ध संन्यासी स्वा. दीक्षानन्द सरस्वती होंगे। जो आर्य भाई इस महायज्ञ में यजमान बनने के इच्छुक हों, वे दिनांक १० मई से पूर्व सभा कार्यालय को सूचित करदें।

यजमान पुरुष के लिए धोती, स्त्री के लिये साड़ी धारण करना आवश्यक है। मद्य-मांस का सेवन और धूम्रपान आदि करना वर्जित है। महायज्ञ के समय यम और नियमों का पालन करना भी आवश्यक है।

नोट—यज्ञप्रेमी सज्जन महायज्ञ के लिये घृत-सामग्री आदि भी भेजे। —सुदर्शनदेव आचार्य

संयोजक वेदपारायण महायज्ञ

आर्य विद्यालय पानीपत का शोक प्रस्ताव

आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत जि करनाल में एक शोक सभा का आयोजन किया गया, जिसमें सभा के वेदप्रचाराधिष्ठाता एवं शताब्दी समारोह के संयोजक श्री रघुवीरसिंह जी के सुपुत्र का अकाल निधन हो जाने पर शोक प्रस्ताव पास किया गया। प्रस्ताव द्वारा ईश्वर से दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा उनके दुःखी परिवार को इस महान् दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की गई।

—प्रिंसिपल वार्यसिंह

इसी प्रकार पं. बलराज जी आर्य फिल्लौर (पंजाब), स्वामी सेवकानन्द, पं. शेरसिंह (राठौर), डा. महावीर दिल्ली, श्री रामानन्द सिंहला पानीपत, श्री भगवान्‌सिंह कुरुक्षेत्र, श्री रणवीर शास्त्री, श्री चन्द्रपाल राणा बुवाना, पं. अतरसिंह आर्य नलवा, दीवान भीमसेन गुड़गांव, पं. रणवीर शास्त्री समालखा आदि ने भी पत्र लिखकर शोक संवेदना प्रकट की है।

अन्नदाताओं से

अन्नसंग्रह की अपील

आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापना शताब्दी समारोह १५ से १७ मई के अवसर पर दयानन्दमठ रोहतक में हरयाणा के कोने-कोने तथा अन्य प्रदेशों से लाखों की संख्या में नरनारी पहुंचेंगे। हरयाणा की जनता सदा से ही अपने अतिथियों के स्वागत तथा सेवा-कार्यों में अग्रणी रही है। अतः हरयाणा के किसानों तथा अन्नदाताओं से निवेदन है कि अपनी पुरानी शानदार परम्पराओं के अनुसार शताब्दी समारोह हेतु उदारता-पूर्वक अन्न का दान करें। समारोह पर आते समय अपने ट्रेक्टरों अथवा अन्य वाहनों द्वारा रोहतक लाने की कृपा करें। यदि किसी कारणवश किसी वाहन का प्रबन्ध न हो सके तो सभा को तुरन्त पत्र लिखने का कष्ट करें ताकि उसे मंगवाने का प्रबन्ध किया जा सके। सभा की ओर से अन्नसंग्रह की रसीद बुक छपवाई गई हैं और सभा के प्रतिनिधि तथा उपदेशक अन्नसंग्रह के कार्य में ग्रामों का भ्रमण कर रहे हैं। अतः अन्न का दान करते समय रसीद प्राप्त करना न भूलें। अन्न दान की सूचना सभा के पत्र सर्वहितकारी में भी प्रकाशित की जायेगी।

आशा है दानी महानुभाव ऋषिलंगर के लिये उदारतापूर्वक अन्न भेजकर यश के भागी बनेंगे।

निवेदक

ओमानन्द सरस्वती	प्रो. शेरसिंह	वेदव्रत शास्त्री	रघुवीरसिंह
प्रधान	प्रधान	मन्त्री	संयोजक
परोपकारिणी सभा	आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा		समारोह

आर्यसमाजों से निवेदन

जिन आर्यसमाजों के पास शताब्दी समारोह के लिये धनसंग्रह की रसीदें हैं, उनसे अनुरोध है कि वे यथाशीघ्र धनसंग्रह करके रसीद बुक के साथ धनराशि सभा को भेज देवें, ताकि दानदाताओं के नाम सर्वहितकारी के आगामी अंक में प्रकाशित किये जा सकें।

—बद्रीप्रसाद आर्य कोषाध्यक्ष

शताब्दी समारोह पर पण्डाल के लिए पंखों की अपील

आर्य प्रतिनिधि सभा शताब्दी समारोह १५ से १७ मई तक दयानन्दमठ रोहतक में मनाया जारहा है। उस समय गर्मी अत्यधिक होने के कारण पण्डाल में सैकड़ों छत वाले बिजली के पंखों की आवश्यकता है।

अतः सम्पन्न परिवारों, विशेषकर रोहतक की जनता से नम्र-निवेदन है कि वे छत के पंखे नये अथवा पुराने दान में देकर पुण्य के भागी बनें। जो भाई केवल तीन दिन के लिये पंखे प्रदान कर सकेंगे, वे भी धन्यवाद के पात्र होंगे।

निवेदक

ओमानन्द सरस्वती	प्रो. शेरसिंह	वेदव्रत शास्त्री	रघुवीरसिंह
प्रधान	प्रधान	मन्त्री	संयोजक
परोपकारिणी सभा	आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा		समारोह

आर्यसमाज नांदेड का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री पा. व्यं. वैरकर, उपप्रधान-बैजनाथप्रसाद पारपल्ली, सत्यपाल राठौर, मन्त्री—प्रा. सत्यकाम पाठक, उपमन्त्री—बापूराव दाभाडे, प्रशांत बवधिया, कोषाध्यक्ष—प्रा. कुशलदेव शास्त्री, पुस्तकाध्यक्ष—रमेश टाक।

—मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की शताब्दी के उपलक्ष में

नतमस्तक सब आर्यजन करते तुम्हें प्रणाम,
अमर अजर है विश्व में दयानन्द का नाम,
दयानन्द का नाम महर्षि पदवी पाई,
भूले भटके जन-जन को राह दिखाई।

भारतवर्ष में नहीं, विश्वभर में प्रथम आर्यसमाज स्थापित होने का गौरव बम्बई नगरी को है। जहां चैत्र सुदि ५ शनिवार सम्वत् १९३२ तदनुसार १० अप्रल सन् १८७५ ई को ऋषि दयानन्द सरस्वती के द्वारा ही स्थापित हुई।

लाहौर का आर्यसमाज २८ जून, १८७७ ई. को स्थापित हुआ। कोई समय था जब कि आर्यसमाज के हाथ में पंजाब का नेतृत्व था। इसलिये आर्यसमाज के क्षेत्र में उस समय का पंजाब अब हरयाणा अपना प्रमुख स्थान रखता है। बटवारे के बाद १९६६ में हरयाणा प्रतिनिधि सभा के अलग से होने पर यह आर्यसमाज का गढ़ माना जाने लगा। क्योंकि हरयाणा वैदिक मर्यादाओं के अत्यन्त सन्निकट हैं। हरयाणा की संस्कृति का दूसरा नाम आर्य संस्कृति है। इस वैदिक परम्परा के कारण यही एक ऐसा प्रदेश है जिसके निवासी वैदिक परम्पराओं में आस्था रखते हैं। महाराज मनु ने अपनी मनुस्मृति में 'यज्ञिय' देश की जो परिभाषा दी थी कि 'काले रंग का हरिण' जहां निडर होकर विचरता है, वह देश ऋषियों की भूमि है, वह यज्ञिय देश है। यही कारण है कि यहां के युवक कभी देशरक्षा क्षेत्र से पीठ दिखाकर भागे नहीं हैं। आर्य संस्कृति (हरयाणा की संस्कृति) की सबसे बड़ी मूल-विशेषता यही है। ऋषियों की भूमि की पुष्टि इस बात से भी हो जाती है कि युग-द्रष्टा महर्षि दयानन्द सरस्वती इस प्रदेश में सर्वप्रथम १७ जुलाई, १८७८ को अम्बाला छावनी पधारे। जबकि महर्षि दयानन्द लुधियाना से रुडकी जाते हुए श्रावण व ८ सं. १९३५ को अम्बाला पधारे तथा ३ दिन अम्बाला में रहकर रुडकी को गये। ऋषि दयानन्द अम्बाला छावनी के रजमेंट बाजार में बाबू छेदीलाल जी, जो कि फारसी के विद्वान् थे उनके यहां ठहरे और उनका अनाज मण्डी में उपदेश भी हुआ। स्वामी जी के अम्बाला आगमन की चर्चा स्व दीवान अलखधारी ने भी आर्यजनों को कही थी।

अम्बाला छावनी रेलवे जं. के नाते स्वामी जी को गाड़ी बदलने की सुविधा थी। इससे स्पष्ट है कि पूज्यपाद स्वामी जी हरयाणा में प्रथम अम्बाला छावनी पधारे। गुरुवर दयानन्द के इस पत्र से स्पष्ट है कि ऋषि अम्बाला पधारे।

(पत्र के कुछ अंश)

मन्त्री और सभासद आनन्द रहो !

प्रकट हो कि हम ११ जुलाई सन् १८७८ बृहस्पतिवार को यहां से पूर्व की ओर प्रस्थान करेंगे और जालन्धर लुधियाना आदि नगरों में मिलते हुए आगे को चले जायेंगे। सम्भव है कि २-४ दिन अम्बाला ठहर जायें। (सार्वदेशिक महर्षि विशेषांक पत्र व्यवहार नवम्बर १९६९ के आधार से)।

आर्यसमाज की विविध गतिविधियों के कारण अम्बाला छावनी का नाम आर्यसमाज के इतिहास में अमर रहेगा। इस नगर में देश के बंटवारे के बाद सभा का कार्यालय यहीं बना। ऋषि के अतिरिक्त महात्मा गांधी, ला. लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मी देवी भी पधारी। इस समय इस क्षेत्र में ५ आर्यसमाज, ५ स्त्री समाज, ५ आर्य कन्या हाई स्कूल, १ आर्य कन्या महाविद्यालय, १ डी. ए. वी. हाई स्कूल, १ डी. ए वी. पब्लिक स्कूल तथा नर्सरी पाठशाला वैदिक विचारधारा फैलाने में लगी हैं।

इस उद्देश्य से परिवारों में यह विचारधारा बढ़े तथा फैले। एक वैदिक प्रचार मण्डल पिछले ४ वर्ष से पारिवारिक सत्संगों के द्वारा प्रचार कर रहा है।

आओ हम सब इस शताब्दी के अवसर पर अपने को पहचानें तथा ऋषि के स्वप्नों को साकार करने के लिये संगठित हो जायें, यही समय की पुकार है।

—वेदमित्र हापुड़वाले

विचार चाहे पुराना हो और बहुत बार पेश किया जा चुका हो, लेकिन आखिरकार वह उसका है जो बेहतरीन तरीके से पेश करे।

—लावले

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का स्थापना शताब्दी समारोह

(आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के विभाजन के उपरांत)

स्थान—दयानन्दमठ रोहतक तिथियां १५, १६, १७ मई, ८७

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा स्थापना शताब्दी समारोह हरयाणा के ऐतिहासिक स्थान दयानन्दमठ रोहतक में १५ से १७ मई, १९८७ तक आर्यजगत् के सर्वमान्य सन्यासी पूज्यपाद श्री स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में धूमधाम से मनाया जारहा है।

विशेष आकर्षण

१—११ मई से यजुर्वेद पारायण यज्ञ स्वामी दीक्षानन्द जी के निर्देशन में प्रारम्भ हो रहा है।

२—१५ मई को प्रातः ध्वजारोहण सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी के करकमलों द्वारा होगा।

३—१५ मई को दोपहर पश्चात् ३ बजे रोहतक के मुख्य-मुख्य मार्गों पर एक विशाल शोभायात्रा द्वारा आर्यसमाज की विशाल शक्ति का प्रदर्शन किया जायेगा।

४—समारोह के उपलक्ष में आर्यसमाज की उपलब्धियों पर आधारित एक स्मारिका का विमोचन किया जारहा है।

५—इस शताब्दी समारोह पर वेद सम्मेलन, स्वदेशी सम्मेलन, मातृशक्ति, युवा (व्यसन मुक्ति) सम्मेलन, राष्ट्ररक्षा सम्मेलन तथा शिवसंकल्प सम्मेलन आयोजित किया जारहा है, जिनमें आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध संन्यासी, विद्वान् तथा नेता एवं उत्तरी भारत के विख्यात भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

६—समारोह में आर्यसमाज के अनेक आंदोलनों (हैदराबाद, हिन्दी रक्षा, गोरक्षा तथा शराबबन्दी सत्याग्रह आदि) में भाग लेनेवाले आर्यवीरों का सार्वजनिक सम्मान किया जायेगा।

७—इस अवसर पर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा व्यायाम तथा योग आसनों का भव्य प्रदर्शन किया जायेगा।

सभी आर्य प्रेमियों को हम सादर आमन्त्रित करते हुए आशा रखते हैं कि वे इस शुभावसर पर सपरिवार एवं अपने साथियों सहित पधार कर आर्यसमाज के विशाल संघटन का परिचय देंगे।

निवेदक

ओमानन्द सरस्वती	प्रो. शेरसिंह	वेदव्रत शास्त्री	रघुवीरसिंह
प्रधान	प्रधान	मन्त्री	संयोजक
परोपकारिणी सभा	आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा		समारोह

शराब मानव-समाज की शत्रु है

इससे अवश्य बचें।

शिक्षा का मूलाधार राष्ट्रीय और नैतिक चरित्र

नई दिल्ली, १९ अप्रैल,

आज का शिक्षक यदि विद्यार्थी में प्रश्न करने की भावना उत्पन्न करदे तो यह समझना चाहिए कि उसने यदि पूरी नहीं तो कुछ शिक्षा तो अवश्य दे दी है। शिक्षक को सोचना होगा कि वह जो शिक्षा दे रहा है, उससे छात्र का केवल बाहरी ज्ञान ही बढ़ रहा है अथवा उसके भीतर की चेतना को भी वह जगा पाया है या नहीं?" ये शब्द आज आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की ओर से तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम में आयोजित महात्मा हंसराज दिवस के उपलक्ष्य में मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए भूतपूर्व केन्द्रीय रक्षामन्त्री श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह ने कहे। उन्होंने आगे कहा कि न्यूटन का गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत उसके स्कूल जीवन के आरम्भ में ही उसके मस्तिष्क में कौंधा था, जब उसने अपने अध्यापक से प्रश्न किया कि पेड़ से अलग होनेवाला सेब नीचे को क्यों गिरता है, ऊपर क्यों नहीं जाता? शिवलिंग पर उछल-कूद मचानेवाले चूहे को सर्वशक्तिमान् शिव क्यों नहीं मारता है? महर्षि दयानन्द के मनमें यह प्रश्न तब उठा, जब वह बालक मूलशंकर मात्र थे।

हमारी शिक्षा का मूलाधार राष्ट्रीय और नैतिक चरित्र होना चाहिये, इसके लिए शिक्षकों का चरित्रवान् होना अत्यन्त आवश्यक है। डी. ए. वी. आंदोलन के जन्मदाता महात्मा हंसराज के मन मस्तिष्क में यह बात विद्यमान थी, इसलिये उन्होंने उत्तम राष्ट्रीय और वैयक्तिक चरित्र का स्वयं अपना उदाहरण अपने सहयोगियों के सम्मुख रखा। उसी का यह परिणाम है कि आज न केवल भारतवर्ष में, अपितु समस्त विश्व में फैली हुई डी० ए० वी० संस्थायें शिक्षा के साथ-साथ राष्ट्रीय शिक्षा एवं नैतिक चरित्र का पाठ भी भूले-भटके इस मानवसमाज को देने में समर्थ हो सकी हैं।

हमें महर्षि के जीवन से अनेक शिक्षायें प्राप्त होती हैं। जहां उनकी बोधरात्रि की घटना बड़ी शिक्षाप्रद है वहां उनके निर्वाण की घटना भी हमें निर्देश देती है कि जो तुम्हें विष का प्याला प्रस्तुत करे, उसको तुम अमृत का पान कराओ। यह बात केवल महर्षि दयानन्द सरीखा महापुरुष ही कर सकता था।

इस समारोह को प्रि० कृष्णसिंह, प्रि० तिलकराज गुप्त, श्री पं. शिवकुमार जी शास्त्री, श्री वेदप्रताप वैदिक, प्रो. शेरसिंह, श्री रामचन्द्र विकल संसदसदस्य, स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती ने भी सम्बोधित करते हुए वर्तमान में डी० ए० वी० के सम्मुख उपस्थित समस्यायें, आर्यसमाज का कर्त्तव्य, शिक्षकों का दायित्व, विश्व को भारत की देन आदि-आदि विषयों पर अपने विचार व्यक्त किये। अन्त में समारोह के अध्यक्ष म. अमर स्वामी सरस्वती महाराज ने अपने आशीर्वचन द्वारा खचाखच भरे इण्डोर स्टेडियम में समागत जनसमूह को उपकृत किया।

—रामनाथ सहगल मन्त्री

हैदराबाद आर्यसत्याग्रही का स्वर्गवास

महाशय ठाकुरसिंह सुपुत्र श्री छिद्दपाल यादव ग्राम नांगल कालिया जि० महेन्द्रगढ़ (हरयाणा) का ७५ वर्ष की आयु में हृदयगति रुक जाने से गतमास स्वर्गवास होगया। वे आर्यसमाज के परम भक्त थे। आर्यसमाज सिलारपुर तोताहेड़ी की ओर से शोकसभा की और उनको श्रद्धांजलि दी तथा उनकी आत्मा को शांति दिलाने की प्रार्थना की।

—महाशय जगमालसिंह बेधड़क
प्रचारमन्त्री आर्यसमाज सिलारपुर तोताहेड़ी

आर्य कन्या पाठशाला जगाधरी का उत्सव

आर्य कन्या पाठशाला जगाधरी का ३९वां वार्षिक उत्सव बड़ी धूमधाम से १७-४-८७ को मनाया गया। उत्सव श्री गुरदयालमल जी सहगल (मालिक सतनाम मैटल वर्कस) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जिन्होंने पाठशाला की पढ़ाई की, धार्मिक शिक्षा की और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की भरपूर प्रशंसा की और कहा कि वह बच्चों का प्रोग्राम देखकर इतना प्रभावित हुए हैं कि वह अपनी पोतियों को दूसरे स्कूलों से निकाल कर आर्य कन्या पाठशाला में प्रविष्ट कर देवेंगे। उन्होंने गतवर्ष की भांति इस वर्ष भी पाठशाला को ३१००) रु० अनुदान दिया।

उत्सव के मुख्य अतिथि डा. सतपाल वर्मा (मालिक वर्मा गन हाउस) थे। उन्होंने बच्चों द्वारा प्रस्तुत नाटक 'अछूतोद्धार' पर टिप्पणी करते हुए कहा कि यह बच्चे स्वामी दयानन्द का स्वप्न साकार करते हुए प्रतीत होते हैं। उन्होंने जहां पाठशाला को ३१००) रु० का अनुदान दिया, वहां बच्चों को १०१) रु० और बच्चों को सांस्कृतिक तयारी कराने वाले अध्यापक को भी १०१) रु दिया।

इस अवसर पर श्री गीता भवन मन्दिर का सदन पूरी तरह से भरा हुआ था। सभा को स्वामी सदानन्द जी और ला. जयभगवान् जी ने भी सम्बोधित किया। आये हुए अतिथियों में सर्वश्री डा बृजमोहन गुप्ता, सतप्रकाश गर्ग, ईन्शाराम, मदनलाल, गंगाराम नरुला, शक्ति पाहुजा और ग्यानचन्द आहुजा ने उत्सव की शोभा बढ़ाई।

पाठशाला की रिपोर्ट में श्री सुभाष पाहुजा ने बताया कि पाठशाला की ५वीं कक्षा का परीक्षाफल सदा शत-प्रतिशत रहता है। उन्होंने बताया कि इस समय पाठशाला में ४०० से अधिक बच्चे हैं और स्थान का बहुत अभाव है। करतल ध्वनि के बीच उन्होंने बताया कि १२ बीघे भूमि इन्दिरा कालोनी के पास जो विश्राम पार्क ट्रस्ट को श्री चुन्नीलाल जी ने दान दी थी, ट्रस्ट ने पाठशाला को देना स्वीकार कर लिया है, जिस पर शीघ्र ही एक सुन्दर भवन और खेल का मैदान तैयार हो जावेगा। इस महान् अनुदान के लिए श्री सुभाष पाहुजा ने पाठशाला की ओर से श्री चुन्नीलाल परिवार और विश्राम पार्क ट्रस्ट के ट्रस्टीज का हार्दिक धन्यवाद किया।

श्री सत्प्रकाश मित्तल, प्रधान आर्य कन्या पाठशाला ने आये हुए अतिथियों का धन्यवाद किया और पाठशाला की १८-४-८७ की अवकाश की घोषणा की।

—सुभाष पाहुजा प्रधान

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा

प्रवेश सूचना

युग-पुरुष स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराज की जन्म एवं बोध-भूमि टंकारा में स्थित श्री म. द. स. स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित उपदेशक विद्यालय में १५ जून से १५ जुलाई तक नये ब्रह्मचारियों को प्रवेश दिया जायेगा। अतः भविष्य में उपदेशक एवं पौरोहित्य कार्य करने के इच्छुक ब्रह्मचारी १५ जून के अन्दर विद्यालय की नियमावली एवं प्रवेश फार्म मगायें। पाठ्यक्रम चार वर्ष का है।

अत्यावश्यक सूचना :—

प्रवेश के समय किसी आर्यसमाज अथवा आर्यसंस्थाओं के मन्त्री अथवा प्रधान का संस्तुति पत्र साथ लाना जरूरी है। बिना पूर्व अनुमति के किसी भी अवस्था में प्रवेश असम्भव है। विद्यालय में आवास, भोजन, शिक्षा आदि की सर्वथा निःशुल्क व्यवस्था है।

—कार्यकारी आचार्य
अरुणकुमार विदर्भीय सिद्धांताचार्य, उपदेशक महाविद्यालय
टंकारा, जि० राजकोट (सौराष्ट्र) ३६३६५०

आर्यसमाज पाड़ा मोहल्ला रोहतक का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री श्रीभगवान् आर्य, उपप्रधान—लालबहादुर, मन्त्री—कु० विजयराजे आर्या, उपमन्त्री—मनोहरलाल, कोषाध्यक्ष—मोहनलाल-कुमार, पुस्तकाध्यक्ष—श्रीमती सरोजबाला।

आर्यसमाज नलवा (हिसार) का द्वितीय वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनांक ११-१२ अप्रैल, १९८७ को सेठ पुष्करलाल आर्य व आचार्य जयदेव जी की लग्न व प्रयास से विधिवत् सम्पन्न हुआ। ज्ञातव्य है कि नलवा ग्राम पाखण्डों, शराबखोरी, जुवा आदि बुराइयों का गढ़ है। आर्यसमाज मन्दिर के इलावा पाखण्डियों के मन्दिर हैं। इस अवसर पर स्वामी मस्तानानन्द जी, पं. प्रभुदयाल प्रभाकर, प्रो. सत्यवीर मलिक (सभा उपमन्त्री), आचार्य विश्वामित्र, पं. भरतलाल शास्त्री एवं सभा उपदेशक क्रांतिकारी जी ने शराबबन्दी, मूर्तिपूजा, हवन, आश्रम व वर्ण-व्यवस्था महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर प्रकाश सुखी गृहस्थ नवयुवकों के कर्त्तव्य पर विस्तार से विचार रखे।

इसके अतिरिक्त पं. ईश्वरसिंह तूफान व पं. सुलतानसिंह की भजन मण्डलियों के शिक्षाप्रद भजन हुए। प्रातःकाल दोनों दिन हवन किया गया। कई नवयुवकों ने जनेऊ धारण किये तथा शराब न पीने का व्रत लिया।

—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी सभा उपदेशक

आर्यसमाज सदर बाजार दिल्ली शताब्दी समारोह

आर्यसमाज सदर बाजार दिल्ली का शताब्दी समारोह स्मारिका (इतिहास) विमोचन का कार्य अप्रैल मास सन् १९८७ में होना निश्चित हुआ था, किन्तु आदरणीय स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती महाराज से विचार-विमर्श होने के पश्चात् उपरोक्त कार्यक्रम आगामी अक्तूबर मास सन् १९८७ में होना निश्चित हुआ है। कृपया कार्यक्रम के समय के बदल की सूचना नोट कर लेवें।

आपके सहयोग एवं शुभकामनाओं के लिए आर्यसमाज सदर बाजार आभारी है। कृपया दृष्टि बनाये रखें। धन्यवाद।

—वैद्य इन्द्रदेव मन्त्री

पुस्तकविक्रेताओं के लिए आवश्यक सूचना

जो पुस्तक विक्रेता सभा के शताब्दी समारोह (दिनांक १५ से १७ मई) के अवसर पर अपनी दुकान लगाना चाहते हैं, वे कार्यालय से सम्पर्क करके अपनी दुकान सुरक्षित करालें। तीन दिन का किराया १५०) रु० पेशगी कार्यालय में जमा करादें।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

ये कैसेट आगामी शताब्दी समारोह में उपलब्ध होंगे।

उठो ! स्वशक्ति जगाओ

मानवता का आर्तनाद सुन उठो ! स्वशक्ति जगाओ।

रावण युग-सा आज बढ़ा है, धरती पर अति अत्याचार।
दानवता का ताण्डवनर्तन करता है चहुं हाहाकार।
सहमी-सहमी मानवता है, करती रुदन तथा चीत्कार।
बढ़ ! असुर दल, करदे अपना विश्व विजय स्वज साकार।

ऐसी भीषण बेला में, हे राम पुत्र ! तुम आओ।
निर्भय कर में धनुर्बाण ले, दानव मार गिराओ॥

एक नहीं लाखों सीतायें, प्रतिदिन यहां हरी जाती।
मां-बहनें असहाय बनीसी, लज्जा अपनी यहां लुटाती।
अबलाओं का दारुण क्रन्दन गूंज रहा है अब दिक्-दिक्।
अरे राम के वशज ! जागो, आज तुम्हें कोटिक धिक्-धिक्।

आज दिशाओं का यह निर्मम क्रन्दन उठो ! हटाओ।
निर्भय कर में धनुर्बाण ले, दानव मार गिराओ॥

आज गरीबी महंगाई का, राक्षस बढ़ता जाता।
बेकारी व्यभिचार-कुशिक्षा तथा अनीति का नाता।
लोभ मोह का, द्वन्द्व-द्वेष का, छाया चारों ओर वितान।
हाहाकार मचा है जग में, होता असुरों का सम्मान।

असुर सैन्य बढ़ रही धरा पर, उठकर उसे भगाओ।
निर्भय कर में धनुर्बाण ले, दानव मार गिराओ॥

—राधेश्याम आर्य

शोक समाचार

बड़े ही दुःख के साथ लिखना पड़ रहा है कि श्री मांगेराम आर्य गढ़वा (महेन्द्रगढ़) के १४ वर्षीय सुपुत्र ब्र० वेदप्रकाश आर्य का अचानक पेट दर्द होने से १६ अप्रैल, १९८७ को देहांत होगया। यह ब्रह्मचारी गुरुकुल वेद विद्यालय गौतमनगर (दिल्ली) में अध्ययनरत था एवं बड़ा ही होनहार था। परमपिता परमात्मा ने असमय ही इस युवक को हम से छीन लिया।

परमात्मा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करे तथा दिवंगत आत्मा को कर्म-व्यवस्था के अनुसार सद्गति प्रदान करे।

—ब्र० संजयदेव शास्त्री



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० 23207/73 पंजि० न० P/RTK 49 फोन ४८१२

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सर्वहितकारी
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र



सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभा मन्त्री सह-सम्पादक—डा० सुदर्शन

वर्ष १४, अङ्क २४ १४ मई, १९८७ वार्षिक शुल्क २५। आजीवन शुल्क [illegible] विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

१५-१६-१७ मई, १९८७ को रोहतक में हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित

विराट् शताब्दी समारोह

यजुर्वेद पारायण यज्ञ ११ मई से प्रारम्भ होगा। पूर्णाहुति १७ मई प्रातः ८-३० बजे होगी।

१५ मई—१. ध्वजारोहण एवं उद्घाटन प्रातः ८-३० बजे। २. वेद सम्मेलन प्रातः १०-३० बजे। ३. शोभायात्रा सायं ३-३० बजे। ४. स्वदेशी सम्मेलन रात्रि ८-३०।

१६ मई—१. दीक्षा ग्रहण प्रातः ८-३० बजे। २. व्यसनमुक्ति एवं युवा सम्मेलन प्रातः १० बजे। ३, मातृशक्ति सम्मेलन सायं ३-३० बजे। ४. व्यायाम प्रदर्शन सायं ६ बजे। ५. राष्ट्रीय एकता सम्मेलन रात्रि ८-३० बजे।

१७ मई—१. अभिनन्दन समारोह प्रातः ९ बजे। २. शिवसंकल्प सम्मेलन प्रातः १०-३० बजे।

आज साम्प्रदायिक तथा विघटनकारी शक्तियां, विदेशी ताकतों के सहारे से देश को अस्थिर करने में लगी लगी हैं। पंजाब में घटित हो रही देशद्रोही और हिंसक गतिविधियां देश की अखण्डता को चुनौती दे रही हैं। स्वाधीनता के बाद अंग्रेजी अंग्रेजियत और पिछलग्गुपन की मनोवृत्ति तथा मानसिक दासता बढ़ी है। देश का नवयुवक शराब तथा अन्य नशों और व्यसनों में फसता जारहा है। आर्यसमाज को पूरे संकल्प के साथ इन समस्याओं के समाधान के लिए प्रबल आंदोलन करना होगा। समाज में चारित्रिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। इन उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुये ही सम्मेलनों का आयोजन किया गया है।

इस समारोह में पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी, स्वामी आनन्दबोध जी, स्वामी सत्यप्रकाश जी, स्वामी दीक्षानन्द जी, स्वामी विवेकानन्द जी, स्वामी विद्यानन्द जी; स्वामी रामेश्वरानन्द जी, स्वामी सुमेधानन्द जी, स्वामी लक्ष्मणयति जी, पं० शिवकुमार शास्त्री, श्री रामलाल पारिख (कुलपति गुजरात विद्यापीठ), सरदार दरबारासिंह एम. पी., श्रीमती दमयन्ती, श्रीमती प्रकाशवती पण्डित, श्री प्रज्ञादेवी, प्रो. वेदव्यास, श्री वीरेन्द्र, श्री छोटूसिंह, श्री सूर्यदेव, श्री इन्द्रराज, श्री गजानन्द आर्य, श्री राजगुरु शर्मा, श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम्, श्री मनमोहन तिवारी, डा. धर्मपाल, श्री रामनाथ सहगल, श्रीमती सुभाषिणी, श्रीमती कमला वर्मा, श्री हीरानन्द आर्य एम एल. ए., श्री योगेन्द्रपाल शास्त्री इत्यादि आर्यजगत् के अनेक गणमान्य विद्वान, संन्यासी एवं नेता अपने प्रभावशाली प्रवचन एवं ओजस्वी विचार रखेंगे। उत्तर भारत के चोटी के भजनोपदेशकों का मधुर संगीतमय वेद-प्रचार भी सुनने को मिलेगा। अधिक से अधिक संख्या में पधारकर अपने संगठन और शक्ति का सबूत दें।

नोट :—

ऋषिलंगर और ठहरने का सभी के लिये पूरा प्रबन्ध किया गया है। महिलाओं के लिये विशेष प्रबन्ध किया गया है। ट्रैक्टर, बसों आदि वाहनों को ठहराने के लिये भी पर्याप्त व्यवस्था है।

निवेदक

स्वामी ओमानन्द सरस्वती	प्रो. शेरसिंह	श्री वेदव्रत शास्त्री	बद्रीप्रसाद आर्य	रघुवीरसिंह
प्रधान	प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष	संयोजक
परोपकारिणी सभा	आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा			समारोह

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का स्थापना शताब्दी समारोह

(आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के त्रिशासन के उपरांत)

स्थान—दयानन्दमठ रोहतक तिथियां १५, १६, १७ मई, ८७

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा स्थापना शताब्दी समारोह हरयाणा के ऐतिहासिक स्थान दयानन्दमठ रोहतक में १५ से १७ मई, १९८७ तक आर्यजगत् के सर्वमान्य संन्यासी पूज्यपाद श्री स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में धूमधाम से मनाया जारहा है।

विशेष आकर्षण

१—११ मई से यजुर्वेद पारायण यज्ञ स्वामी दीक्षानन्द जी के निर्देशन में प्रारम्भ हो गया है।

२—१५ मई को प्रातः ध्वजारोहण सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी के करकमलों द्वारा होगा।

३—१५ मई को दोपहर पश्चात् ३ बजे रोहतक के मुख्य-मुख्य मार्गों पर एक विशाल शोभायात्रा द्वारा आर्यसमाज को विशाल शक्ति का प्रदर्शन किया जायेगा।

४—समारोह के उपलक्ष में आर्यसमाज की उपलब्धियों पर आधारित एक स्मारिका का विमोचन किया जारहा है।

५—इस शताब्दी समारोह पर वेद सम्मेलन, स्वदेशी सम्मेलन, मातृशक्ति, युवा (व्यसन मुक्ति) सम्मेलन, राष्ट्ररक्षा सम्मेलन तथा शिव-संकल्प सम्मेलन आयोजित किये जारहे हैं, जिनमें आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध संन्यासी, विद्वान् तथा नेता एवं उत्तरी भारत के विख्यात भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

६—समारोह में आर्यसमाज के अनेक आंदोलनों (हैदराबाद, हिन्दी रक्षा, गोरक्षा तथा शराबबन्दी सत्याग्रह आदि) में भाग लेनेवाले आर्य-वीरों का सार्वजनिक सम्मान किया जायेगा।

७—इस अवसर पर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा व्यायाम तथा योग आसनों का भव्य प्रदर्शन किया जायेगा।

सभी आर्य प्रेमियों को हम सादर आमन्त्रित करते हुए आशा रखते हैं कि वे इस शुभावसर पर परिवार एवं अपने साथियों सहित पधार कर आर्यसमाज के विशाल संगठन का परिचय देंगे।

निवेदक

ओमानन्द सरस्वती	प्रो. शेरसिंह	वेदव्रत शास्त्री	रघुवीरसिंह
प्रधान	प्रधान	मन्त्री	संयोजक
परोपकारिणी सभा	आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा		समारोह

यजमानों के लिए निमन्त्रण—

वेदपारायण महायज्ञ के यजमान

आर्य प्रतिनिधि सभा के शताब्दी समारोह के पावन अवसर पर दिनांक ११ मई, १९८७ से यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन हो रहा है। जिसके ब्रह्मा आर्यजगत् के प्रसिद्ध संन्यासी स्वा. दीक्षानन्द सरस्वती हैं। जो आर्य भाई इस महायज्ञ में यजमान बनने के इच्छुक हों, वे सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

यजमान पुरुष के लिए धोती, स्त्री के लिये साड़ी धारण करना आवश्यक है। मद्य-मांस का सेवन और धूम्रपान आदि करना वर्जित है। महायज्ञ के समय यम और नियमों का पालन करना भी आवश्यक है।

नोट—यज्ञप्रेमी सज्जन महायज्ञ के लिये घृत-सामग्री आदि भी भेजें।

—सुदर्शनदेव आचार्य
संयोजक वेदपारायण महायज्ञ

अन्नदाताओं से

अन्नसंग्रह की अपील

आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापना शताब्दी समारोह १५ से १७ मई के अवसर पर दयानन्दमठ रोहतक में हरयाणा के कोने-कोने तथा अन्य प्रदेशों से लाखों की संख्या में नरनारी पहुंचेंगे। हरयाणा की जनता सदा से ही अपने अतिथियों के स्वागत तथा सेवा-कार्यों में अग्रणी रही है। अतः हरयाणा के किसानों तथा अन्नदाताओं से निवेदन है कि अपनी पुरानी शानदार परम्पराओं के अनुसार शताब्दी समारोह हेतु उदारता-पूर्वक अन्न का दान करें। समारोह पर आते समय अपने ट्रेक्टरों अथवा अन्य वाहनों द्वारा रोहतक लाने की कृपा करें। यदि किसी कारणवश किसी वाहन का प्रबन्ध न हो सके तो सभा को तुरन्त पत्र लिखने का कष्ट करें, ताकि उसे मंगवाने का प्रबन्ध किया जा सके। सभा की ओर से अन्नसंग्रह की रसीद बुक छपवाई गई हैं और सभा के प्रतिनिधि तथा उपदेशक अन्नसंग्रह के कार्य में ग्रामों का भ्रमण कर रहे हैं। अतः अन्न का दान करते समय रसीद प्राप्त करना न भूलें। अन्न दान की सूचना सभा के पत्र सर्वहितकारी में भी प्रकाशित की जायेगी।

आशा है दानी महानुभाव ऋषिलंगर के लिये उदारतापूर्वक अन्न भेजकर यश के भागी बनेंगे।

निवेदक

ओमानन्द सरस्वती	प्रो. शेरसिंह	वेदव्रत शास्त्री	रघुवीरसिंह
प्रधान	प्रधान	मन्त्री	संयोजक
परोपकारिणी सभा	आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा		समारोह

आर्यसमाजों से निवेदन

जिन आर्यसमाजों के पास शताब्दी समारोह के लिये धनसंग्रह की रसीदें हैं, उनसे अनुरोध है कि वे यथाशीघ्र धनसंग्रह करके रसीद बुक के साथ धनराशि सभा को भेज देवें, ताकि दानदाताओं के नाम सर्वहितकारी के आगामी अंक में प्रकाशित किये जा सकें।

—बद्रीप्रसाद आर्य कोषाध्यक्ष

शताब्दी समारोह पर पण्डाल के लिए पंखों की अपील

आर्य प्रतिनिधि सभा शताब्दी समारोह १५ से १७ मई तक दयानन्दमठ रोहतक में मनाया जारहा है। उस समय गर्मी अत्यधिक होने के कारण पण्डाल में सैकड़ों छत वाले बिजली के पंखों की आवश्यकता है।

अतः सम्पन्न परिवारों, विशेषकर रोहतक की जनता से नम्र-निवेदन है कि वे छत के पंखे नये अथवा पुराने दान में देकर पुण्य के भागी बनें। जो भाई केवल तीन दिन के लिये पंखे प्रदान कर सकेंगे, वे भी धन्यवाद के पात्र होंगे।

निवेदक

ओमानन्द सरस्वती	प्रो. शेरसिंह	वेदव्रत शास्त्री	रघुवीरसिंह
प्रधान	प्रधान	मन्त्री	संयोजक
परोपकारिणी सभा	आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा		समारोह

शराब मानव-समाज की शत्रु है

इससे अवश्य बचें।

आर्य प्रतिनिधि सभा शताब्दी समारोह के आयोजन पर

प्रो० शेरसिंह का प्रेस वक्तव्य

रोहतक ७ मई को (केदारसिंह आर्य द्वारा) आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रो. शेरसिंह ने आज पत्रकार सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए बताया कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की स्थापना १८८६ में अमृतसर में हुई थी। उस समय इस सभा का कार्यक्षेत्र पंजाब, दिल्ली, हिमाचल, जम्मू काश्मीर, हरयाणा राज्य भी पंजाब प्रांत का ही एक भाग था। आर्यसमाज की शिरोमणि सार्वदेशिक सभा के निर्णय के अनुसार १९७५ में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का विभाजन होगया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के माध्यम से आर्यसमाज ने हैदराबाद आर्य सत्याग्रह, शुद्धि आंदोलन, दलितोद्धार, हिन्दी रक्षा आंदोलन, गोरक्षा आंदोलन आदि चलाकर राष्ट्र में नई चेतना तथा जागृति उत्पन्न की है। उत्तरी भारत के प्राय: सभी राष्ट्रीय नेता स्वामी श्रद्धानन्द, ला. लाजपतराय, महात्मा हंसराज, सरदार भगतसिंह, स्वामी स्वतन्त्रानन्द, स्वामी आत्मानन्द, म. कृष्ण, भक्त फूलसिंह, चौ छोटूराम, भाई परमानन्द, प जगदेवसिंह सिद्धांती, प्रो. रामसिंह, पं. रघुवीरसिंह शास्त्री आदि आर्यसमाजी कर्मठ नेता थे। पंजाब सभा की ओर से गुरुकुल कांगड़ी जैसी विश्वविख्यात शिक्षण संस्था की स्थापना करके उच्चकोटि के वैदिक विद्वान्, लेखक पत्रकार, इतिहास लेखक, समाज सुधारक तथा राजनैतिक क्रांतिकारी तयार किये।

प्रो. शेरसिंह ने अपना प्रेस वक्तव्य जारी रखते हुए बताया कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का शताब्दी समारोह पंजाब की धरती पर ही मनाया जाना चाहिए था। परन्तु वहां उग्रवाद तथा हिंसा के वातावरण के कारण मनाने में अनेक प्रकार की रुकावटें हैं। उस समय हरयाणा भी पंजाब में ही सम्मिलित था। अत: हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब सभा का ही एक अंग होने के नाते यह समारोह हरयाणा के ऐतिहासिक स्थान दयानन्दमठ रोहतक में दिनांक १५-१६ १७ मई को आर्यसमाज के सर्वमान्य संन्यासी स्वामी सर्वानन्द जी महाराज दीनानगर (पंजाब) की अध्यक्षता में धूमधाम से मनाया जारहा है।

सभाप्रधान प्रो. शेरसिंह ने इस शताब्दी समारोह के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह समारोह गैर राजनैतिक होगा। इसमें पधारनेवाले प्रमुख नेता आर्यसमाजी तथा राष्ट्रवादी है। आर्य प्रतिनिधि सभाओं पंजाब, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, जम्मू काश्मीर, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, आंध्रप्रदेश, मध्यप्रदेश तथा महाराष्ट्र आदि के अधिकारियों के पधारने की स्वीकृति हमें प्राप्त हो चुकी है। इनके अतिरिक्त अनेक वैदिक विद्वान् तथा उत्तरी भारत के प्रसिद्ध उपदेशक एवं भजनोपदेशक भी पहुंच रहे हैं। प्रो. शेरसिंह ने समारोह के कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए बताया कि इस अवसर पर एक सप्ताहपूर्व यजुर्वेद पारायण महायज्ञ, १५ मई को वेद सम्मेलन, विशाल शोभायात्रा तथा स्वदेशी सम्मेलन। १६ मई को युवा एवं व्यसन मुक्ति सम्मेलन, मातृशक्ति सम्मेलन, राष्ट्रीय एकता तथा शिव-सकल्प सम्मेलन आदि महत्त्वपूर्ण सम्मेलनों का आयोजन होगा। इस समारोह पर आर्यसमाज द्वारा चलाये गये आंदोलनों में भाग लेनेवाले सत्याग्रहियों का सार्वजनिक सम्मान किया जायेगा।

एक पत्रकार के प्रश्न का उत्तर देते हुए प्रो. शेरसिंह ने पंजाब में चलाये जारहे हिंसक तथा राष्ट्र-विरोधी आंदोलन की कड़ी आलोचना करते हुए भारत सरकार से उनके विरुद्ध तुरन्त कड़ी कार्यवाही करने की मांग की, परन्तु उन द्वारा शराब, मांस आदि के विरोध में की जारही गतिविधियों का औचित्य बताते हुए उन्हें अहिंसक मार्ग अपनाने का परामर्श दिया। हरयाणा सभा के रचनात्मक कार्यों का उल्लेख करते हुए प्रो. साहब ने बताया कि हरयाणा प्रांत में नशाबन्दी कार्यक्रम चल रहा है। इसको और तेज करके एक वर्ष में सारे हरयाणे में पूर्ण नशाबन्दी लागू करवाई जायेगी। हरयाणे में वेदप्रचार तथा समाज-सुधार कार्यक्रम को सुचारु रूप देने के लिए २० ग्रामों पर एक आर्य पुरोहित की नियुक्ति की जारही है। अब तक ऐसे पाच आर्य पुरोहित कार्य पर नियुक्त किये जा चुके हैं। (शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्य प्रतिनिधि सभा की शताब्दी से लाभ उठावें

समारोह तो रोज-रोज होते हैं, जयन्तियां, शताब्दियां भी प्राय: होती रहती हैं। पर इन पर विचार कितने आदमी करते है, इसका साराश कोई नहीं निकालता। शांतिपाठ कर, मिल बैठ प्रेम तथा कुछ गफरा-तकरी में अपने अपने घर चले जाते हैं।

अभी मैं अपने एक जानकार के सुपुत्र की मृत्यु पर गया था, वहां उसके ही कार्य तथा रोग की चर्चा होती रही। वह बेचारा युवक तो अपना बालपन भी अधूरा छोड चला गया। इसी प्रकार अब इस शताब्दी में सौ सालों की चर्चा होती रहेगी, इसमें जिनकी जैसी स्मरण शक्ति है, अपनी वाणी के मसाले लगाकर कहेंगे। जो अधिक मसाले लगायेगा, उसके मसाले तालियां बजवायेंगे।

मैं तो यह समझा हूं कि जितना कार्य इस छोटी-सी जमायत ने थोड़े समय में कर दिया, उतना कार्य चारों धाम भी नही कर पाये। आदि शंकराचार्य ने परम्परा को नया और व्यावहारिक रूप देने के लिए चारों दिशाओं में चार धाम बनाये, पर वे धाम, धाम ही बनकर रह गये। महर्षि की घोषणा तो इससे बड़ी "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" की थी, पर धामों की स्थापना छोटी-छोटी इकाइयों में की। इस समाज ने परम्परा को नया मोड़ दिया। श्रीमती इन्दिरा गांधी ने कहा कि ऋषि दयानन्द न आते तो मैं इतने बड़े विशाल देश की प्रधानमन्त्री न बन सकती थी। उसी के कारण स्त्री-जाति को लक्ष्मी का स्थान मिला। रूढियां तोड ऊंच-नीच के भाव समाप्त किये। हिन्दू-धर्म जो अपनी असलियत को भूल गया था, उसे बचानेवाला आर्यसमाज ही तो बना। महामना पं. मदनमोहन मालवीय जी ने सत्यार्थप्रकाश पढने के बाद साधुओं को निमन्त्रण दे बुलाया। साधुओं को चलते समय एक-एक सत्यार्थप्रकाश दिया। एक साधु ने कहा कि यह तो नास्तिक की लिखी है और इसमें मूर्ति-पूजा का विरोध किया है। मैं इसको हाथ नही लगाऊंगा। मालवीय जी ने कहा—मैं भी मूर्तिपूजक हूं, आस्तिक हूं, पर यह आस्तिक मेरे से ही नहीं, इस युग का सबसे बड़ा आस्तिक है। साधुओं को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिये और हरदम साथ रखेंगे तो उनकी साधना पूर्ण होगी।

इस शताब्दी से पूर्व अन्धविश्वास पाखण्ड एव कुरीतियों का कूड़ा-करकट जितना था, दूर होगया है। पर अंग्रेज की देन शराब अन्य नशे सुलफा, अफीम का इतना भारी जोर पकड़ गये हैं। यदि नही सम्भाला गया तो इस देश के लाल अपनी लाली को खोकर रसातल में पहुंच जावेंगे। भले ही विदेशों के गुलाम न हों, पर पूंजीपतियो और वर्तमान के बडे नेता तथा बड़े उच्चाधिकारी इन्हें अपना गुलाम भी बनायेंगे और इनको ऐसा कर देंगे कि यह शायद ही कभी उभर सकें।

आज प लेखराम, गुरुदत्त, श्रद्धानन्द, लाजपतराय की पत रखने वाले अपने जीवन को समर्पित न कर देंगे, तब तक यह देश नहीं बचता। शताब्दी से कुछ सीखना हो वह सीख लें। पर शराब तथा अन्य नशे हरयाणा से समाप्त न हो जावें, तब तक शांतिपाठ न करें। यह सब आर्यों ने सामूहिक व्रत लेना चाहिए।

महात्मा मुन्शीराम जी की आत्मकथा हर घर में पहुँचा कर शताब्दी को सफल बनाने का प्रथम पग उठाना चाहिए। मेरी एक प्रार्थना सब आर्यों से है कि वे अपनी छोटी-बड़ी सब संस्थाओं को आर्य प्रतिनिधि सभाओं के साथ जोड़ दें। यदि ऐसा नही किया तो अब स्वार्थी युग आरहा है। सब छोटे-बड़े ट्रस्ट अपने और अपने रिस्तेदारो को बनाकर मालिक बन जावेंगे। जिस दयानन्द ने अपने घर तथा बाहर की सम्पत्तियों को लात मारी थी आज उनके ही शिष्य दूसरों की सम्पत्तियों के मालिक बन जावेंगे। यह मैंने सबके विचार हेतु लिख दिया है तथा प्रार्थना की है। मैं न तो स्वाध्यायशील हू, न स्नातक हूं, इसीलिए विचार हेतु लिखा है।

—दीपचन्द सेवा-निवृत्त अध्यापक
ग्राम पो. कासनी, Via ढाकला, जि. रोहतक

सभा शताब्दी समारोह के लिए दानदाताओं की सूची

गतांक से आगे—

आर्यसमाज बडा बाजार कलकत्ता द्वारा श्री रामचन्द्र जी पोद्दार ५०००)
डा. रणधीरसिंह सांगवान प्रधान आर्यसमाज सिरसा ११००
सेठ नन्दलाल जी गनेरीवाला प्रधान आर्य स्कूल सिरसा ११००
पं. हरिश्चन्द्र शास्त्री सभा उपदेशक द्वारा जि. फरीदाबाद से संगृहीत राशि ११००
आर्यसमाज कनीना जि. महेन्द्रगढ़ द्वारा पं. ईश्वरसिंह सभा भजनोपदेशक ५००
हिन्दू शुद्धि संरक्षण समिति के महामन्त्री स्वामी सेवानन्द जी द्वारा संग्रह ५००
मा. वेदप्रकाश आर्य साधक दयानन्दमठ रोहतक १००
महाशय भरतसिंह वानप्रस्थी सभा उपप्रधान दयानन्दमठ रोहतक १००
सू. सीसराम सभागणक ग्राम माजरा दूबलधन जि. रोहतक १००
चौ. उमेदसिंह आर्य जींद द्वारा मा. बद्रीप्रसाद सभा कोषाध्यक्ष २००
पं. हरिश्चन्द्र जींद १००
श्री जगदीशप्रसाद जींद १००
बा. दयाकृष्ण ,, १००
ला. कलीराम ,, १००
कलीराम सत्यपाल ,, १००
श्री सत्यप्रकाश आर्य जींद १००
,, फूलचन्द ,, ,, १००
चौ. देसराज एडवोकेट जींद १००
२) की रसीद बुक द्वारा संग्रह जींद ३८०
डा. अमीरसिंह प्रधान आर्यसमाज घण्टाघर भिवानी १००
डा. नरेश दलाल खाश निवासी झज्जर जि. रोहतक १००
श्री जगदीश सर्राफ हालु बाजार भिवानी १००
मन्त्री आर्यसमाज खेल बाजार पानीपत जि. करनाल ५०
श्री लखीराम हैदराबाद आर्य सत्याग्रही ग्राम लाडपुर दिल्ली-८१ ५१
पं. चन्द्रस्वरूप आर्य प्रभाकर सभा उपदेशक आ.स. मराण जि. रोह. २५
मेजर चन्द्रसिंह ग्राम खरावर जि. रोहतक १५०
श्री फूलचन्द सूरतसिंह काठमण्डी रोहतक ५०
सेठ देवकीनन्दन ग्राम मराण जि. रोहतक ५०
श्री विद्यानन्द ओवरसीयर ५०
,, चन्दगीराम ग्राम मदीना जि. रोहतक २५
पं. आनन्दप्रकाश कौशिक सु. पं. ओम्प्रकाश कौशिक ग्राम सिवाना जि. रोहतक १०१
प्रिंसिपल गुणनसिंह ग्राम मोखरा जि. रोहतक ३००
ऋषिलवर+शताब्दी १०१
स्वामी सेवानन्द सरस्वती वैदिक आश्रम कोटा खडेखला जि. गुडगांव ५०
डा. सोमवीर माडल टाउन रोहतक रिटोली निवासी १००
चौ. हीरासिंह पूर्व कायकारी पार्षद ग्राम मुखमेलपुर दिल्ली १००
चौ. धर्मसिंह राठी पूर्व विधायक माडल टाउन पानीपत जि. करनाल ५०

श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती द्वारा चरखी दादरी से संगृहीत राशि

१५०) देनेवाले दानी

सर्वश्री आचार्य ऋषिपाल, सूबेदार कवलसिंह, सत्यनारायण शर्मा, श्यामसुन्दर, मनुदेव शास्त्री, डा. प्रेमानन्द, विजय मडोकल हाल, डा. चावला, तारीफसिंह, हुकमचन्द, हरिश्चन्द्र खाम्बा, हुकमसिंह विधायक, भाई मनोहर, धर्मपाल शास्त्री, वेदपाल ठेकेदार, जगत्सिंह ठेकेदार, चन्द्रदेव शास्त्री, प्रिंसिपल बसोजा, ला. हरविलास १५५), सुकर्मपाल आर्य ५५), सुकर्मपाल के मित्र ५०), आर्य विद्यालय चरखी दादरी के छात्रगण ६०), सत्यनारायण शर्मा के परिवार के सदस्य १०)।

श्री रणधीर जी शास्त्री ग्राम आसन द्वारा संगृहीत राशि

सर्वश्री रामचन्द्र आर्य मामूरपुर पाना नरेला दिल्ली १०५), रामनारायण प्रधान ईश्वर कालोनी बवाना दिल्ली १००), वेदपाल शास्त्री ग्राम बराहणा जि. रोहतक ५०)।

पं. सुखदेव शास्त्री, पं. चन्द्रस्वरूप आर्य तथा स्वामी सेवानन्द जी द्वारा रसीद संख्या ३६५१ से ३६६६ द्वारा संगृहीत राशि ४६०)।

श्री अरुण आदर्श दिल्ली द्वारा सभा उपप्रधान श्री लक्ष्मणदास आर्य ५००
सभा भजनोपदेशक पं. समेरसिंह आर्य द्वारा १०) की रसीद बुक से संगृहीत राशि ९२०
,, ,, ,, ,, ,, ,, ५) की रसीद बुक से संगृहीत राशि ५००
श्री ओम्प्रकाश आर्य प्रधान आर्यसमाज सालवन जि. करनाल १००
मन्त्री आर्यसमाज जाजनपुर जि. कुरुक्षेत्र १००
,, ,, नारंग जि. सिरमौर (हि. प्र.) ८००
श्री सूरजाराम आर्यसमाज बालू जि. जींद १००
,, रणधीरसिंह ,, ,, ,, ,, ५०
,, रामेश्वर सुपुत्र श्री रामकला आर्यसमाज बालू जि. जींद ५०
,, बसाऊराम सुपुत्र श्री गंगाराम ,, ,, ,, ,, ५०
,, मनीराम सुपुत्र श्री रामचन्द्र ,, ,, ,, ,, १००
,, ओम्प्रकाश सुपुत्र श्री प्रभुराम ,, ,, ,, ,, ५०
,, हरिश्चन्द्र सुपुत्र श्री विशेषरदास ,, ,, ,, ,, ५०
आर्यसमाज सिरसा ११००
आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सिरसा ११००
डा. देसराज खोरबाट रोहतक द्वारा संग्रह ५) की रसीदों से १००
,, ,, ,, ,, ,, २) ,, ,, ,, १०
सूबेदार रणधीरसिंह ग्राम लाखन माजरा जि. रोहतक १००
श्री हरकिशन शास्त्री आर्यसमाज आपड़ोदा जि. रोहतक १००
,, धर्मवीर मलिक ग्राम भैंसवाल जि. सोनीपत ५०
,, केदारसिंह आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष द्वारा आर्यसमाज जूआं जि. सोनीपत १००
,, कंवलसिंह आर्य सभा भजनोपदेशक २५
,, दीपचन्द छिकारा मन्त्री आर्यसमाज ,, १०
,, हुकमचन्द निवादिया ,, १०
,, कटारसिंह ,, ,, १०
मा. रिसालसिंह ,, ,, १०
सर्वश्री चन्द्रभान ,, ५), ताराचन्द ५), दलीपसिंह नम्बरदार ५), ईश्वरसिंह ५), बलजीतसिंह सु. लहरीसिंह ५), पं. रामफल ५) ३०
श्री जोगेन्द्रसिंह आर्य आर्यसमाज भैंसवाल कलां जि. सोनीपत १०
,, ईश्वरसिंह आ. स. बाघपुर जि. रोहतक द्वारा मा. दीपचन्द आर्य १००
,, मांगेराम नम्बरदार आर्यसमाज पथनाला १००
,, सूबेसिंह ,, ,, १००
,, परसूराम ,, ,, १००
,, सूबेसिंह सरपंच ,, ,, १००
,, रामपत ,, ,, १००
,, जगबीरसिंह ,, ,, १००
,, रामफल ,, ,, १००
,, राममेहर ,, ,, १००
,, भूपसिंह ,, ,, १००
,, ओम्प्रकाश लुहान आर्यसमाज थेला पाना नारनौंद जि. हिसार द्वारा डा. रणजीतसिंह १०१

श्री लाभसिंह जी कादियान प्रिंसिपल आर्य व. मा. विद्यालय पानीपत द्वारा संगृहीत राशि

आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत के छात्रों एवं अध्यापकों द्वारा एकत्रित धन ३८५१
आदर्श चैरीटेबल ट्रस्ट पानीपत ११००

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का विशाल शताब्दी समारोह

कार्यक्रम-विवरण

स्थान—दयानन्दमठ, रोहतक

दिनांक—१५, १६, १७ मई, १९८७

समारोह अध्यक्ष—श्री स्वा० सर्वानन्द सरस्वती दयानन्दमठ दीनानगर।

वेदपारायण महायज्ञ (११ से १७ मई)

ब्रह्मा—श्री स्वा. दीक्षानन्द सरस्वती, संयोजक—डा. सुदर्शनदेव आचार्य, वेदपाठी—गुरुकुल गौतमनगर के ब्रह्मचारी।

१५-५-८७ ध्वजारोहण (८-३० बजे प्रातः)

श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक सभा।
सम्मेलन का उद्घाटन—स्वामी सर्वानन्द जी महाराज।
स्वागत भाषण—वेदव्रत शास्त्री
प्रदर्शनी का उद्घाटन—(१०-१५ बजे प्रात) श्री सूर्यदेव प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली।

अध्यक्ष—डा. सत्यकेतु विद्यालंकार।

वेद सम्मेलन (१०-३० से १२-३० बजे तक)

अध्यक्ष—श्री स्वा सत्यप्रकाश, सयोजक—डा महावीर मीमांसक, मुख्य अतिथि—आचार्य प्रियव्रत, उद्घाटन भाषण—पं. शिवकुमार शास्त्री, प्रमुख वक्ता—स्वा दीक्षानन्द सरस्वती, स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती, डा. सत्यकेतु विद्यालकार, डा. बलदेवसिंह, पं. सत्यप्रिय आचार्य, पं. राजवीर शास्त्री, ब्र. सत्यप्रिय लाडवा।

सगीत—सर्वश्री कवर वीरेन्द्र 'वीर', बेगराज, सुमेरसिंह, बलराज संगीतरत्न, नत्थासिंह।

शोभा-यात्रा (३-३० से ५-३० बजे सायं)

संयोजक—श्री रामनाथ सहगल, सह-संयोजक—श्री वेदप्रकाश, श्री उमेद शर्मा, श्री धर्मदेव विद्यार्थी।

स्वदेशी सम्मेलन (८ से ११ बजे रात्रि)

अध्यक्ष—श्री गजानन्द आर्य, मन्त्री परोपकारिणी सभा, संयोजक—प्रो. सत्यवीर शास्त्री, मुख्य अतिथि—श्री रामलाल पारिख (कुलपति गुजरात विद्यापीठ), उद्घाटन भाषण—श्री छोटूसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

प्रमुख वक्ता—सर्वश्री स्वा. विद्यानन्द, स्वा. ओमानन्द सरस्वती, योगेन्द्रपाल शास्त्री प्रधान आर्य प्र. सभा जम्मू काश्मीर, हीरानन्द आर्य, प्रो राजेन्द्र जिज्ञासु, मा बद्रीप्रसाद आर्य, कपिलदेव शास्त्री। सुरेशकुमार शास्त्री, रणवीर शास्त्री।

संगीत—चौ. नत्थासिंह, प. चिरंजीलाल।

(१६-५-१९८७)

युवा एवं व्यसन-मुक्ति सम्मेलन (९-३० से १२-३० बजे तक)

अध्यक्ष—सर्वश्री प्रो. शेरसिंह, संयोजक—डा. योगानन्द, मुख्य अतिथि—स्वा. सुमेधानन्द दयानन्दमठ चम्बा, उद्घाटन भाषण—मनमोहन तिवाड़ी मन्त्री आ. प्र. सभा उत्तर प्रदेश।

प्रमुख वक्ता—सर्वश्री धर्मपाल (मन्त्री आ. प्र सभा दिल्ली), सोहनलाल, रणवीरसिंह शास्त्री, स्वा. रत्नदेव, स्वामी कर्मपाल प्रधान सर्वखाप पंचायत, राजेन्द्रसिंह बीसला, धर्मदेव विद्यार्थी, रामस्नेही (पानीपत), सत्यवीर शास्त्री (गढ़ी बोहर), ब्र महेन्द्रसिंह शास्त्री, चन्द्रपाल राक्षा, ऋषिपाल आचार्य, रणवीरसिंह शास्त्री।

संगीत—सर्वश्री सहदेव बेधड़क, खेमचन्द, ईश्वरसिंह तूफान।

आशीर्वाद—श्री लक्ष्मणपति जी (दुर्गा भवन, रोहतक)।

मातृशक्ति सम्मेलन (३ से ६ बजे सायं)

अध्यक्षा—श्रीमती महादेवी वर्मा, सयोजिका—कु शकुन्तला देवी प्राचार्या, सहसयोजिका—श्रीमती सुवीरा देवी, मुख्य अतिथि—पद्मश्री सुभाषणी देवी आचार्या, उद्घाटन भाषण—श्रीमती प्रभातशोभा पडित।

प्रमुख वक्त्री—श्रीमती कमला वर्मा, प्रो विमला महता, किरणमयी, प्रो दमयन्ती, शकुन्तला भगवाडिया, पद्मा सचदेवा, शांति राठी, ब्र. सुमित्रा आचार्या।

सगीत—श्रीमती राजबाला, ब्र. कलावती आचार्या, वीरेन्द्र वीर, सहदेव बेधडक, खेमचद, बेगराज।

व्यायाम सम्मेलन (६ से ७ बजे सायं)

अध्यक्ष—चौ प्रियव्रत जी, संयोजक—प्रो सत्यवीर विद्यालकार, डा. देवव्रत व्यायामाचार्य, ब्र विजयपाल, गुरुकुल झज्जर तथा गुरुकुल गौतमनगर के ब्रह्मचारी और कन्या गुरुकुल नरेला की ब्रह्मचारिणी।

राष्ट्रीय एकता सम्मेलन (८ से ११ बजे रात्रि)

अध्यक्ष—सर्वश्री रामचन्द्रराव 'वन्देमातरम्' (हैदराबाद), संयोजक—प्रि लाभसिंह, मुख्य अतिथि—स दरबारासिंह सांसद, उद्घाटन भाषण—वीरेन्द्र प्रधान आ. प्र. सभा पंजाब।

प्रमुख वक्ता—श्री इन्द्रराज (प्रधान आ. प्र. सभा उत्तर प्रदेश), स्वामी सुरेन्द्रानन्द, सूर्यदेव प्रधान आर्य प्र. सभा दिल्ली, महेश्वरसिंह शास्त्री, राममेहर एडवोकेट, सुखदेव शास्त्री, पं. शांतिप्रकाश, वीरेन्द्र रत्नम् (मेरठ)।

सगीत—सर्वश्री वीरेन्द्र वीर, पं. बलराज सगीतरत्न, खेमचन्द, पं. हरिश्चन्द्र, बेगराज, सहदेव बेधड़क।

(१७-५-१९८७)

अभिनन्दन समारोह (९ से ११ बजे प्रातः)

अध्यक्ष—स्वामी सर्वानन्द जी महाराज (दीनानगर), सयोजक—महाशय भरतसिंह वानप्रस्थी, मुख्य अतिथि—स्वामी सुरेन्द्रानन्द प्रवाणु (हि. प्र)।

प्रमुख वक्ता—सर्वश्री दीवान भीमसेन गुडगांव, स्वामी सुमेधानन्द गुरुकुल फतेहाबाद, धर्मसिंह राठी पूर्वविधायक, हीरासिंह पूर्व प्रधान आर्य प्र. सभा देहली,, मा निहालसिंह आर्य, श्यामसुन्दर कत्याल, निहालचन्द गुगनानी, कृष्णकात आर्य उपदेशक।

संगीत—सर्वश्री चौ. नत्थासिंह, मुरारीलाल बेचैन, जयपाल आर्य, पं. चिरंजीलाल।

शिव-संकल्प सम्मेलन 'भावी कार्यक्रम' (११ से २ बजे तक)

अध्यक्ष—स्वामी ओमानन्द सरस्वती, संयोजक—डा रणजीतसिंह, मुख्य अतिथि—स्वा० आनन्दबोध, उद्घाटन भाषण—प्रो० शेरसिंह।

प्रमुख वक्ता—सर्वश्री वेदव्यास, राजगुरु शर्मा (मध्यप्रदेश), धर्मवीर मलिक, डा० भवानीलाल भारतीय, हरिश्चन्द्र शास्त्री।

सगीत—२ से ४ बजे तक सर्वश्री वीरेन्द्र वीर, नत्थासिंह, बेगराज, सहदेव बेधड़क, बलराज सगीतरत्न, सुमेरसिंह।

धन्यवाद और शांतिपाठ

श्री रघुवीरसिंह संयोजक शताब्दी समारोह

(पृष्ठ ४ का शेष)

श्री प्रेमचन्द आर्य पानीपत	५०
,, विजयेन्द्र ,, ,,	५०
,, अजयकुमार शास्त्री	१००
,, जोगध्यान आर्य ,,	१००
,, रत्नकुमार ,, ,,	१००
,, रामकुमार गोयल ,,	५०
,, जे. बी. गुप्ता पिटमैन कर्मशियल कालेज पानीपत	५०
,, धूपसिंह राठी प्रिंसिपल रा. व. मा. विद्यालय माण्डी	४००
,, सुरेन्द्रकुमार सिगला स्टील क्राफ्ट पानीपत	३००
सूरज बुक डिपो पानीपत	१००
डा. रवीन्द्रकुमार माडल टाउन पानीपत	१००
श्री मनफूलसिंह एम. एल. ए. असन्ध	१००
,, महेन्द्रसिंह प्रवक्ता आर्य व. मा. विद्यालय पानीपत	१००
जीवन पब्लिकेशनज देहली	१००
जगदीश मनोचा पानीपत	५०
फूलकवार अग्रवाल देहली	५०
डा. दर्शनलाल पानीपत	५०
हरिश्चन्द्र डावर पानीपत	५०
सुरेन्द्रकुमार दिनेशकुमार पानीपत	५०
देवास वूलन मिल्स प्राईवेट लिमिटिड पानीपत	१००
राधा इन्टर प्राइज पानीपत	१००
समता कर्माशयल कालेज पानीपत	१००
लालचंद पानीपत	५०
द्वारा कुलदीपसिंह कादियान राव सिवाह (करनाल)	१०००

नारनौल के दानदाताओं की सूची—

श्यामलाल रोशनलाल सैनी	१२५

१००) देनेवाले दानी

सर्वश्री—प्रेमनाथ गुप्ता एडवोकेट, देवराज आर्य, आर्य ट्रक फैक्ट्री, हनुमानप्रसाद सैनी एडवोकेट, मा. कालिराम सैनी, जयपालसिंह एडवोकेट, प. हरिराम महता एडवोकेट, पं. सत्यनारायण शर्मा एडवोकेट, जीवाराम रामचन्द्र नई मण्डी, महादेवप्रसाद बदमोराम नई मण्डी, सत्यनारायण दयाराम नई मण्डी।

५०) देनेवाले दानी

सर्वश्री—लक्ष्मीनारायण गुप्ता आजाद चौक, जगदीशप्रसाद सैनी सब्जी मण्डी, नारायणसिंह सैनी सब्जी मण्डी, गिरधारीलाल सैनी टेकपुर, मदनप्रकाश ताराचन्द नई मण्डी, रूपचन्द बजाज नई मण्डी, रंगलाल यादव एडवोकेट, रतनलाल सूरजभान नई मण्डी, मोतीराम रामचन्द्र नई मण्डी, कृष्णकुमार रूडमल नई मण्डी, सुदेशकुमार दिनेशकुमार नई मण्डी, ब्रह्मप्रकाश ताराचन्द नई मण्डी, सियाराम रामनिवास नई मण्डी, सत्यनारायण अग्रवाल नई मण्डी, बाबूलाल द्रोणाचार्य नई मण्डी, मा. छाजुराम जमालपुर, राव बलवीरसिंह गिरधरपुरा।

२५) देनेवाले दानी

सर्वश्री—बा मूलचन्द सैनी आर्यपुरा, केदारनाथ बालकिशन नई मण्डी, रामेश्वरदयाल गोविन्दराम नई मण्डी, अमरचन्द प्रकाशचन्द नई मण्डी, नन्दकिशोर गोविन्दराम नई मण्डी, ब्रह्मप्रकाश ताराचन्द नई मण्डी, गिरधरप्रसाद राजकुमार नई मण्डी, सत्यनारायण ज्ञानचन्द नई मण्डी, किशनलाल आढ़ती सब्जी मण्डी, निरंजनलाल बाबूलाल सब्जी मण्डी, विक्रमसिंह यादव नसीबपुर, किशोरीलाल सैनी सराय डसरान, चौ. ओमकारसिंह एडवोकेट, हरिमोहन एडवोकेट, हरिचन्द जेलदार थानेरा, बाबूलाल शर्मा एडवोकेट, चौ. रामचन्द्र एडवोकेट, सुभाषचन्द्र सरपंच महरमपुर, दौलतराम टोपनदास नई मण्डी, श्रीमती सावित्री देवी, मा. जीतराम आर्यपुरा, बा. मूलचन्द सैनी आर्यपुरा, बाबू रामकुमार रिटायर्ड तहसीलदार, शिवरामसिंह सुमन मुख्याध्यापक सैनी हाई स्कूल नारनौल।

मुसद्दीराम मदनलाल सैनी सिंघाना रोड १००), चौ. किशोरीलाल मूलचन्द सैनी नसीबपुर १००), मा. पुरुषोतमदास सैनी आर्यपुरा ५०), श्रीमती सत्यादेवी अध्यापिका आर्यपुरा ५०), निरंजनलाल सैनी किला रोड ५०), मा. जवाहरलाल आर्य पथिक किला रोड १००)।

२५) देनेवाले दानी

सर्वश्री—कर्णसिंह यादव छाजाका नांगल, सत्यनारायण कृष्णकुमार सब्जी मण्डी, रामनरेश हरगोविन्द आजाद चौक, टेकाराम बजाज, ईशरदास प्रधान आर्यसमाज खड़खड़, डा. हरिदेव आर्य, तनेजा मेडिकल स्टोर, डा. देवराज जी तनेजा।

१०) देनेवाले दानी

सर्वश्री—भगवानदास ताराचन्द सब्जी मण्डी, सरदार सुजानसिंह आजाद चौक, बाबूलाल कोकचा, खुबराम रामप्रोताप सैनी, रामओतार जिन्दल मिश्रवाड़ा, दीपक मेडिकल स्टोर, घासीराम बंसल खड़खड़ी, चौ. मांगेलाल टेंट हाउस, छोटूसिंह डेकेरेशन, वेदप्रकाश सैनी किला रोड, प्रभातीलाल सरपंच इमहराड़ा, नरसिंह सैनी एडवोकेट, शुभराम सैनी एडवोकेट, राजेन्द्रकुमार टाइपिस्ट, भगवतीशंकर एडवोकेट, चन्दगीराम मालड़ी, बाबू गोकलचन्द सैनी, बख्तावरसिंह एस. आई. पुलिस।

सभी दानदाताओं का सभा की ओर से बहुत-बहुत धन्यवाद। आशा है अन्य दानी महानुभाव भी इस सूची में अपना नाम लिखवाकर पुण्य के भागी बनेंगे।

—रघुवीरसिंह संयोजक समारोह

आर्यसमाजों से आवश्यक निवेदन

आर्यसमाज के अधिकारियों से निवेदन है कि शताब्दी समारोह पर आते समय अपने समाज से संगृहीत धनराशि, ऋषिलंगर के लिए अन्नादि सामग्री तथा अपने नगर से शराबबन्दी के लिए करवाये गये हस्ताक्षरों की प्रतियां अपने साथ रोहतक लाने की कृपा करें।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

(पृष्ठ ३ का शेष)

सभा कार्यालय के साथ विशाल "श्रद्धानन्द पुस्तकालय" का निर्माण किया जारहा है। हमारे पास जैसे-जैसे साधन सुविधा होती जावेगी और उपदेशक तथा पुरोहित नियुक्त किये जायेंगे। उपदेशक तैयार करने के लिए एक उपदेशक विद्यालय भी चला रहे हैं।

इस समारोह पर नारनौल, नरवाना, कालका, होडल तथा गुड़गावां इन पांच स्थानों से शताब्दी प्रचार पदयात्रा करके आर्यवीर रोहतक पहुंच रहे हैं। इस पत्रकार सम्मेलन में शताब्दी समारोह के संयोजक श्री रघुवीरसिंह तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री भी उपस्थित थे।

गुरुकुल महाविद्यालय शुक्रताल में प्रवेश प्रारम्भ

आपके प्रिय गुरुकुल महाविद्यालय शुक्रताल में एक मई से प्रवेश जारी है। यहां प्रथमा (कक्षा ६) से शास्त्री (बी. ए.) पर्यन्त सभी विषयों (संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, वेद, दर्शन आदि) की शिक्षा दी जाती है। आपका प्रिय गुरुकुल सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय बनारस से मान्यता प्राप्त है। पांचवीं पास छात्र प्रवेश के पात्र हैं। शिक्षा के साथ-साथ यहां यौगिक क्रियायें, आसन, व्यायाम तथा धार्मिक शिक्षा का भी उत्तम प्रबन्ध है। शिक्षा एवं आवास की निःशुल्क व्यवस्था है। मध्यमा व शास्त्री के योग्यतम व निर्धन छात्रों को ५० रुपये मासिक छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। यहां के आचार्यवृन्द योग्य एवं कुशल अनुभवी हैं। अत एव आप अपने बच्चों को उत्तम शिक्षा दिलाने हेतु अविलम्ब सम्पर्क करें। —आचार्य इन्द्रपाल प्रज्ञमाचार्य, गुरुकुल शुक्रताल

आदर्श विवाह सम्पन्न

आर्यसमाज शांतिनगर सोनीपत में २१ अप्रैल, ८७ को हिन्दू मंच सोनीपत के तत्वावधान में चि० धर्मपाल डेम्बला एवं आयु० रेणु सोनीपत का आदर्श विवाह वैदिकरीति से आर्यसमाज के महामन्त्री हरिचन्द स्नेही द्वारा कराया गया। विवाह सादे समारोह में हुआ तथा किसी प्रकार का कोई लेन-देन नहीं किया गया। विवाह संस्कार के पश्चात् शहीद परिवार फण्ड हेतु अपील भी की गई। शहीद परिवार फण्ड हेतु हिन्दू मंच सोनीपत १९८६ में ४१११ रुपये तथा १९८७ में ६५३१ रुपये पहले ही भेज चुका है। इसके अतिरिक्त आर्य वीरदल मण्डल सोनीपत भी अब तक विभिन्न स्रोतों से लगभग दो हजार रुपये की राशि शहीद परिवार फण्ड में जमा करा चुका है। विवाह के पश्चात् नव दम्पत्ति को सर्वश्री आशानन्द बधवा, अमरनाथ, रामगोपाल आर्य, तेजभान मस्तर, हेमराज बत्रा, ब्रह्मदत्त नारंग, हरिचन्द स्नेही एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने आशीर्वाद दिया।

हरिचन्द स्नेही
महामन्त्री आर्यसमाज शांतिनगर, सोनीपत, हरयाणा-१३१००१

पुस्तकविक्रेताओं के लिए आवश्यक सूचना

जो पुस्तक-विक्रेता सभा के शताब्दी समारोह (दिनांक १५ से १७ मई) के अवसर पर अपनी दूकान लगाना चाहते हैं, वे कार्यालय से सम्पर्क करके अपनी दुकान सुरक्षित करालें। तीन दिन का किराया १५०) रु० पेशगी कार्यालय में जमा करादें।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री



नरवाना से रोहतक तक जनजागरण पदयात्रा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा आयोजित शताब्दी समारोह के अवसर पर आर्य वीरदल हरयाणा ६ मई को नरवाना से रोहतक तक राष्ट्रीय सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध जनजागरण पदयात्रा कर रहा है।

इस यात्रा के संयोजक प्रा० धर्मदेव विद्यार्थी और अनेकों गुरुकुलों के संचालक स्वामी रत्नदेव सरस्वती के नेतृत्व में १०१ आर्यवीरों द्वारा विभिन्न गांवों में जलसे किये जायेंगे और शराब विरोधी दस हजार हस्ताक्षर कराकर सरकार से नशाबन्दी लागू करने की मांग की जायेगी और लोगों को राष्ट्र की एकता और अखण्डता के लिये कार्य करने की प्रेरणा दी जायेगी। स्थान-स्थान पर सामाजिक बुराइयों, जातपात, साम्प्रदायिकता और दहेज, शराब जैसी बुराइयों के विरोध में जनजागरण किया जायेगा। यह पदयात्रा १४ मई को रोहतक पहुंच कर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के शताब्दी समारोह में भाग लेगी, जहां हजारों व्यक्तियों द्वारा राष्ट्रहित में कार्य करने का संकल्प किया जायेगा।

ऋणी धरा है तथा गगन

वैदिक संस्कृति का जिसने फिर, वसुधा पर उद्धार किया,
कष्ट अनेकानेक सहे, पर जगती का उपकार किया,
नव्य चेतना, नव जागृति का, कण-कण में भर स्पंदन-
मध्य चक्र में फंसी तरणि मानवता की, फिर पार किया,
कालजयी ऋषि दयानन्द की, ऋणी धरा है तथा गगन।
व्रती तपस्वी के चरणों में अर्पित युग का कोटि नमन ॥

मानवता का मन्त्र दिया, वेदों की अलख जगायी,
अमा निशा की गहन तमिस्रा, तुमने यति भगायी,
जीवन की ले शक्ति अपरिमित, जगे यहां पर जन-जन-
जागो ! जागो ! आर्यजनो हे ! रट है सतत लगायी,
ज्योतिर्मान हुआ जग सारा, जाग उठा भू-कन-कन।
कालजयी ! ऋषि दयानन्द की, ऋणी धरा है तथा गगन ॥

दिया तुम्हीं ने भारत को ऋषि स्वतन्त्रता सन्देश,
सद्यत्नों से दिव्य तुम्हारे गौरव अन्वित हुआ स्वदेश,
त्याग तथा बलिदानों का पथ तुमने सहज दिखाया-
हुआ अग्रसर, भ्रमजाल को तोड़, मधुरमय देश,
दया-धर्म के, सत्य अहिंसा के खिल उठे सुमन।
कालजयी ! ऋषि दयानन्द की, ऋणी धरा है तथा गगन।

प्राची से फूटी जागृति की, नयी उषा अरुणायी,
तिमिर ज्योति की, सत्य असत्य की भीषण हुई लड़ाई,
हुआ जभी आलोक, सत्य, शुचि धर्म दिव्य वेदों का-
हमने लगी अभय हो भारत पुत्रों की तरुणायी,
देती नव-संदेश सत्य का, निकली स्वर्णिम सूर्य किरन।
कालजयी ! ऋषि दयानन्द की, ऋणी धरा है तथा गगन ॥

पावन पथ वेदों का भू पर, हुआ प्रकाम्य प्रशस्त,
तिमिराच्छादित परम्परायें हुई अभय की अस्त,
नव आशा अभिलाषाओं की, लहरी नई तरंगें-
सत्य शिवम् सुन्दरता पूरित, बही वायु अलमस्त,
पर हित में अर्पित कर डाला, जिसने तन-मन-धन।
काल जयी ! ऋषि दयानन्द की, ऋणी धरा है तथा गगन ॥
व्रत-तपस्वी के चरणों में, अर्पित युग का कोटि नमन ॥

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

आर्यसमाज धमाना (हिसार) का उत्सव सम्पन्न

२५-२६ अप्रैल, ८७ को आर्यसमाज धमाना का वार्षिकोत्सव विधि-वत् सम्पन्न हुआ, जिसमें सभा महाउपदेशक ब्र० महेन्द्रसिंह शास्त्री व श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी ने शराबबन्दी बारे, राष्ट्र की समस्याओं पर तथा नवयुवकों के कर्त्तव्य, ब्रह्मचर्य बारे विस्तार से विचार रखे। सभा स्थापना शताब्दी समारोह में तन, मन, धन से सहयोग करने की अपील की। पं. ईश्वरसिंह तूफान तथा पं. सुलतानसिंह की भजनमण्डली के शिक्षाप्रद भजन हुए। प्रातःकाल प्रतिदिन हवन किया गया। कई बच्चों ने जनेऊ धारण किये।

महाशय रामसिंह आर्य धमाना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस,
रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 रजि० नं० P/RTK 49



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री

वर्ष १४, अङ्क २५ २१ मई, १९८७ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ... एक प्रति ६० पैसे

सभा शताब्दी समारोह पर शोभायात्रा का रोमांचकारी दृश्य

(श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री द्वारा)

सम्भवत. सभा के अधिकारियों ने शोभायात्रा के इस कदर विशालता का रूप ग्रहण करने की कल्पना भी न की होगी। १४ मई को ही सायं तक हजारों नर-नारी कालका, पानीपत, नरवाना, गुडगांव विभिन्न स्थानों से आचुके थे। रातभर सूचनायें मिलती रही कि अब पाली (जोधपुर) की बस आचुकी है, भटिण्डा (पंजाब), गगानगर (राज०) से समूह के समूह आचुके हैं। जैसे ही सूर्यदेव स्वयं सारथि बने, प्रातः रश्मि रूपी लगाम को शिथिल करते हुए अपने प्रकाश पुंज से जग को आलोकित करने पधारे। उसी समय ही रोहतक नगरी के चहुंदिशा सम्बन्ध राजमार्गों से हरयाणा, पंजाब, हिमाचल, दिल्ली के विभिन्न समाजों एवं स्थानों से अपनी परम्परागत वेशभूषा में ओ३म् ध्वज हाथ में लिए पुरुष, सिर पर केसरिया पगड़ी अथवा टोपी महिलायें एवं कन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियां अपने सरल स्वभाव से विभिन्न पीत, सफेद, हरे, बादामी रंगों के वस्त्र पहने आर्यसमाज एवं देव दयानन्द के गगनभेदी नारों एवं दहेज, छूआछूत, शराबबन्दी गीतों की स्वर लहरियों से जन-मानस को झकझोड़ते हुए अपने कार, मैटाडोर, टैम्पू, बस, ट्रक, ट्रैक्टर, तांगे एवं ठेले आदि वाहनों से आ पहुँचे। शोभायात्रा का समय अपराह्न ३ बजे था, परन्तु दोपहर १२ बजे तक दयानन्दमठ ही नहीं, रोहतक नगरी का कोना-कोना आर्यों की छावनी बन चुका था।

ठीक ३ बजे स्वामी सर्वानन्द जी दयानन्दमठ दीनानगर, स्वामी ओमानन्द गुरुकुल झज्जर, स्वामी सत्यप्रकाश दिल्ली, प्रो. शेरसिंह जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, श्री सूर्यदेव जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, डा. सत्यकेतु विद्यालंकार कुलपति गुरुकुल कांगड़ी, शताब्दी संयोजक श्री रघुवीरसिंह, सभामन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री, सभा उपमन्त्री आचार्य सुदर्शनदेव, प्रो. सत्यवीर विद्यालंकार, सभा कोषाध्यक्ष श्री बद्रीप्रसाद आर्य, सभा पुस्तकाध्यक्ष आचार्य ऋषिपाल, पूर्व मन्त्री डा रणजीतसिंह, प्रो. सत्यवीर शास्त्री, सभा उपप्रधान म. भरतसिंह वानप्रस्थी आदि विभिन्न आर्य संन्यासी महात्मा, विद्वानों के साथ लगभग ५०० आर्यनेताओं के नेतृत्व की अग्रिम पंक्ति के रूप में शोभायात्रा प्रारम्भ हुई। सर्वप्रथम आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के अधिकारी उसके पीछे हरयाणा प्रदेश में फैले गुरुकुलों के ब्रह्मचारी सादे सफेद वस्त्रों में प्रायः एकरूपता लिये आर्य-समाज की गौरव-गाथा के भजन गाते हुए आर्यों के बलिदान के इतिहास के पन्ने पलट रहे थे। क्रमशः गुरुकुल आर्यनगर, गुरुकुल डिकाडला, गुरुकुल झज्जर, गुरुकुल कांगड़ी, गुरुकुल कुरुक्षेत्र, गुरुकुल भैंसवाल कलां, गुरुकुल धासेड़ा (महेन्द्रगढ़) . गुरुकुल कुम्भाखेड़ा, गुरुकुल गौतमनगर नई दिल्ली आदि के ब्रह्मचारी लाठी, भाला, तलवार से स्थान-स्थान पर जहां लोगों का मनोरंजन करते थे वहां मलखम्भ से अपने करतबों से लोगों को चकित भी कर देते थे। कन्या गुरुकुलों में लोवा कलां, जसात (गुडगांव) खानपुर कलां, खरल (जींद), नरेला, पंचगांव, भिवानी, दाधियां (अलवर) की ब्रह्मचारिणी पुरातन संस्कृति की प्रतीक ऋषि दयानन्द एवं सामाजिक बुराई के विरुद्ध, गोरक्षा के समुधर गीत गाती हुई और डम्बल लैजियम, योगासन करती हुई घोर पौराणिक कट्टरपंथी गैर आर्यसमाजियों को भी देव दयानन्द की जय-जयकार करने को विवश करती थी। प्रेसवाले स्थान-स्थान पर अपने कैमरों में आर्यों की इस बहुरथी सेना की फिल्में बना रहे थे। अब आगे आर्यों की वे संस्थाएं थीं, जिनका नाम गुरुकुल तो नहीं, परन्तु उन स्कूलों में आर्यसमाज के सिद्धांतों की स्वाभाविक शिक्षा यत्किंचित् छात्रों को दी जाती है। सर्वप्रथम श्री पालभारती बाल एवं उच्च विद्यालय, आर्य सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल सिरसा, दयानन्द सी. से. स्कूल सिरसा, दयानन्द सीनियर सै. स्कूल फरीदाबाद, पानीपत, आर्य उच्च विद्यालय रोहतक, डी ए. वी शताब्दी विद्यालय रोहतक, आर्य कन्या उच्च विद्यालय कालका, सैनी उच्च विद्यालय के हजारों छात्र-छात्रायें अपनी-अपनी वेशभूषा में बांसुरी बैंड, ड्रम, ढोल, डम्बल, लैजियम बजाते हुए समूहगान विभिन्न ध्वनों को बजाकर बरबस ब्रजनगरी वृन्दावन का दृश्य उपस्थित कर रहे थे। मानो नन्हे बच्चों के रूप में ब्रज के ग्वाले बांसुरी पर महाकवि सूरदास के पदों की तान गा रहे हों और इनके साथ ही विभिन्न प्रदेशों से आये आर्यसमाज की रीढ़ आर्य वीरदल एवं आर्य युवक रण के योद्धा की भांति हाथ में लाठी, भाला, तलवार, मुग्दर लिये आर्यों को अपने स्वत्व स्वधर्म, स्वदेश एवं संस्कृति की रक्षा के लिए उठ खड़ा होने, सशस्त्र होने एवं कृतसंकल्प होने की प्रेरणा दे रहे थे। मधुर धुनों पर गीत की ये पंक्तियां—आर्यो नींद से बेदार हो जाओ, एक चेतावनी थी हिन्दू मात्र के लिये तैयार रहने की—देश में भिण्डरावाला, लालडेंगा, हाजीमस्तान, सैय्यद शाहबुदीन, काशीराम और शेखर सेठी जैसे विदेशी एजेण्टों से क्रमशः आर्य वीरदल नारनौल, आर्य वीरदल बीवां, आर्य वीरदल दोगड़ा, अहीर एवं बीकानेर, गुरुकुल नरेला, खानपुर, लोवाकलां, डी. ए. वी. कालेज आदि, आर्य युवक दल हिसार, आर्यकुमार सभा रोहतक, आर्य युवक दल पानीपत जि. करनाल, आर्य वीरदल दिल्ली, खेड़ा खुर्द, आर्य वीरदल गुडगांव के विभिन्न कार्यक्रमों ने शोभायात्रा में चार चांद लगा दिये।

देव दयानन्द ने महिलाओं के अधिकारों की सर्वप्रथम वकालत की और यही कारण है आर्यसमाज के हर कार्यकलाप में महिलाओं ने भी बढ़-चढ़कर भाग लेती हैं। शोभायात्रा में भी महिलाओं की विभिन्न आर्यसमाज लगभग २० ठेलों में बैठकर यज्ञ, कीर्तन और गीत गाती जा रही थीं। क्रमशः महिला आर्यसमाज रोहतक, कालका, गन्नौर, शिवाजी कालोनी रोहतक, प्रेम मोहल्ला करनाल, सुण्डाना, लूखी, मकडौली, जुआं, आर्यनगर रोहतक, कलोई, नेहरु ग्राउण्ड फरीदाबाद, बाबरा मोहल्ला रोहतक की महिला आर्यसमाजों की अनुपम छवि शोभायात्रा में अलग से बनती थी। एक और आर्यसमाज महिला पाली जि. जोधपुर

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापना शताब्दी समारोह

रोहतक नगरी में वेदपारायण महायज्ञ, स्वदेशी सम्मेलन, युवा एवं व्यसन मुक्ति सम्मेलन, मातृशक्ति सम्मेलन, व्यायाम सम्मेलन, राष्ट्रीय एकता सम्मेलन, आर्य सत्याग्रहियों का अभिनन्दन समारोह तथा शिवसंकल्प सम्मेलनों में आर्यनेताओं के भाषण, स्वामी श्रद्धानन्द वैदिक पुस्तकालय की आधारशिला आदि का आयोजन

(केदारसिंह आर्य द्वारा) : आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना शताब्दी समारोह १५ से १७ मई तक दयानन्दमठ रोहतक में धूमधाम से सफलतापूर्वक सम्पन्न होगया। इस समारोह की अध्यक्षता आर्यजगत् के सर्वमान्य संन्यासी श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज अध्यक्ष वैदिक यतिमण्डल ने की। वे अस्वस्थ होते हुए भी १४ से १७ मई तक दयानन्दमठ समारोह में उपस्थित रहे। इस समारोह का शुभारम्भ ११ मई को प्रात:काल यजुर्वेद पारायण-यज्ञ से हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् श्री स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज तथा संयोजक पं. सुदर्शनदेव जी आचार्य थे। वेदपाठी गुरुकुल गौतमनगर नई दिल्ली से पधारे थे। वे श्री स्वामी जी महाराज के साथ उच्चारण बहुत ही मधुर स्वर से कर रहे थे। वेदमन्त्रों से सारा नगर गुंजायमान हो रहा था। प्रथम दिन यजमान स्वयं सभा प्रधान प्रो शेरसिंह जी, उनके सुपुत्र श्री डा तरुणकुमार जी, सभामन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुवीरादेवी आर्या, सभा कोषाध्यक्ष ला. बद्रीप्रसाद आर्य तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मनोरमादेवी आर्या, श्री गुरुदत्त आर्य तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती प्रेमवती आर्या आदि आर्य महानुभाव बने।

प्रात: ८-३० बजे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माननीय प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती ने ध्वजारोहण किया। कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर नई दिल्ली की छात्राओं ने ध्वज गीत गाया। इस अवसर पर समारोह में पधारे भारी संख्या में आर्य नर-नारी तथा सभा के अधिकारी उपस्थित थे। श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती ने आर्य-जनता को सम्बोधित करते हुए ओ३म् ध्वज के नीचे संगठित होकर आर्यसमाज के कार्यों का विस्तार करने का निर्देश दिया। इसके पश्चात् श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने विधिवत् समारोह का उद्घाटन किया तथा हरयाणा की जनता को समारोह आयोजित करने पर बधाई दी रोहतक आर्यसमाज का किला है। सभामन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री ने अपना स्वागत भाषण पढा और आगन्तुकों का स्वागत करते हुए कहा कि हरयाणा सभा को बने भी केवल १२ वर्ष हुए हैं। इससे पूर्व हम आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के ही अंग थे। पंजाब में आतंकवाद के वातावरण में समारोह नहीं मनाया जा सका। हरयाणा सभा ने पंजाब, हिमाचल, जम्मू काश्मीर तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रतिनिधियों को इस अवसर पर आमन्त्रित किया है। हम उनके आगमन का हृदय से स्वागत करते हैं।

१०.१५ बजे प्रदर्शनी का उद्घाटन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव जी ने किया। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरद्वार के कुलाधिपति डा. सत्यकेतु जी विद्यालंकार ने प्रदर्शनी समारोह की अध्यक्षता की। प्रदर्शनी में गुरुकुल कांगड़ी के वैदिक पुस्तकालय की मूल्यवान् पुस्तकें तथा आर्यसमाज नाहरी के कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री होशियारसिंह आर्य द्वारा शराब, दहेजादि के तैयार किये गये चार्ट रखे गये थे।

वेद सम्मेलन

१०-३० बजे वेद सम्मेलन श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इसके संयोजक डा. महावीर जी मीमांसक थे। इस सम्मेलन में पं. शिवकुमार जी शास्त्री पूर्व महोपदेशक पंजाब सभा, श्री स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती, डा. सत्यकेतु विद्यालंकार, डा. बलदेवसिंह हिमाचल प्रदेश विश्व विद्यालय, ब्र. सत्यप्रिय जी लाढवा, डा. योगानन्द शास्त्री दिल्ली विश्व विद्यालय, श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती तथा डा. सुदर्शनदेव जी आचार्य आदि विद्वानों के विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान हुए। सभी विद्वानों ने आर्यों से अनुरोध किया कि वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। वेद के आदेशानुसार प्रतिदिन स्वाध्याय करना चाहिए। आर्यसमाज का अधिकारी उसे बनाया जाये, जो वेदों का स्वाध्याय करता हो तथा उसके अनुसार अपना जीवन व्यतीत करता हो। वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। अत: शोध संस्थान चालू करके वेदों पर शोध करके वैज्ञानिकों को लाभ उठाना चाहिये। इस सम्मेलन में पं बेगराज जी, पं. समेरसिंह तथा श्री नत्थासिंह जी के संगीत भी हुए। वेद सम्मेलन पर सर्वसम्मति से निम्न प्रकार प्रस्ताव पारित हुए—

१—भारतीय संस्कृति की मौलिक पहचान बनाये रखने के लिए तथा राष्ट्रीय एकता के संकल्प को दृढ़ करने के लिये हमें पुनः वेदों की ओर जाना चाहिये। क्योंकि ऐतिहासिक खोजों से यह सिद्ध हो चुका है कि संसार की प्रथम पुस्तक वेद ही है। वेदों में पक्षपात रहित सार्वभौम अनादि सत्य ज्ञान सुरक्षित है। अतः हम भारत सरकार एवं प्रांतीय सरकारों से अनुरोध करते हैं कि वे अपने-अपने प्रांतों में विद्यालय स्तर से लेकर महाविद्यालय स्तर तक प्रत्येक कक्षा की संस्कृत पाठ्य पुस्तकों में वेदमन्त्रों का समुचित स्थान दें। जिससे हम मानवता के सही मूल्यों को स्थापित कर सकें।

२—इसके अतिरिक्त हम यह भी प्रस्ताव पारित करते हैं कि केन्द्र सरकार तथा प्रांतीय सरकारें अपने-अपने जिला परिषद्, विधानसभा, विधान परिषद् एवं लोकसभा के सभागारों की दीर्घाओं में अथवा सभा भवन के मुख्य द्वार पर ऋग्वेद के संगठन सूक्त के मन्त्र अंकित करवायें और इन मन्त्रों का राज-भाषा और राष्ट्र-भाषा दोनों में अनुवाद भी साथ में ही किया जाये, ऐसे करने से राष्ट्रीय एकता की भावना सुदृढ़ होगी, इसमें किसी भी प्रकार का सन्देह नहीं है।

३—समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रतिदिन राष्ट्रीय एकता एवं संगठन में सहायक वेदमन्त्रों का सभी भारतीय भाषाओं में अनुवाद प्रसारित किया जावे।

४—सार्वदेशिक, समस्त प्रांतीय सभायें एवं सम्पन्न आर्यसमाज स्थान-स्थान पर वेद के विद्यालय खोलकर वेद के पठन-पाठन की व्यवस्था करें।

५—देश-देशांतर में वेद का प्रचार करने के लिए उपदेशक विद्यालय स्थापित किये जायें और उनमें उच्चकोटि के विद्वान्, उपदेशक और भजनोपदेशक तैयार करके उन्हें देश-देशांतर में प्रचार के लिये भेजे जायें।

६—प्रत्येक ग्राम में आर्यसमाज मन्दिर की स्थापना की जाये और वैदिक संस्कारों के प्रबन्ध के लिये उनमें आर्य पुरोहितों की नियुक्ति की जाये।

७—वेद पढ़ने के इच्छुक निर्धन बुद्धिमान् छात्र-छात्राओं को वेदाध्ययन की नि:शुल्क व्यवस्था की जाये।

८—वेद की सब सत्य विद्याओं को प्रकाशित करने के लिये वैदिक शोध संस्थान स्थापित किये जायें।

९—वेद के शोध कार्य के लिये वेदनिधि स्थापित की जायें।

स्वदेशी सम्मेलन

१५ मई को रात्रि को ८ बजे स्वदेशी सम्मेलन परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्री गजानन्द जी आर्य की अध्यक्षता तथा प्रो. सत्यवीर शास्त्री के संयोजन में आरम्भ हुआ। इस सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने कहा कि जब तक अंग्रेजी भाषा की अनिवार्य पढ़ाई को समाप्त नहीं किया जाता, तब तक भारत में स्वदेशी

का प्रचार नहीं हो सकेगा। संस्कृत-भाषा को अपनाना होगा। दक्षिण भारत में हिन्दी का तो विरोध होता है परन्तु संस्कृत की पढ़ाई में उनकी रुचि है। हमारे वेदशास्त्रादि सभी संस्कृत भाषा में हैं।

श्री रामलाल पारिख कुलपति गुजरात विद्यापीठ एवं पूर्व सांसद ने मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए हरयाणा की संस्कृति को भारतीय संस्कृति बताया। आपने उन भारतीय नेताओं की आलोचना की, जो विदेशों में जाकर स्वदेशी भाषा के स्थान पर अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करते हैं। आर्यसमाज ने हिन्दी भाषा के प्रचार तथा प्रसार के लिये सराहनीय कार्य किया है। हरयाणा की जनता की भाषा, भोजन तथा वेशभूषा स्वदेशी आर्यसमाज के प्रचार के ही कारण है।

श्री स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती ने डी. ए. वी. स्कूलों में प्रथम श्रेणी से अंग्रेजी की पढ़ाई के प्रबन्ध पर दुःख प्रकट करते हुए कहा कि इन स्कूलों का नाम दयानन्द का तथा प्रचार मैकाले का है। लड़के तथा लड़कियों का टाई बांधने पर विवश किया जाना ऋषि दयानन्द के सिद्धांतों के विपरीत है। प्रो राजेन्द्र जिज्ञासु ने लालडेंगा, ईसाई नेता तथा मुसलमान नेताओं से समझौता करने की भर्त्सना की।

श्री कपिलदेव शास्त्री ने हरयाणा की आर्यजनता को संगठित होने का आह्वान करते हुए कहा कि कुरुक्षेत्र तथा पानीपत के युद्धों में हरयाणा के वीर सैनिकों ने इतिहास को नया मोड़ दिया था। अब भी राष्ट्र की एकता को खतरा है। अतः आर्यसमाज के नेताओं को मिलकर राष्ट्र का नेतृत्व प्रभावित करना चाहिये।

श्री गजानन्द आर्य ने अपने अध्यक्षीय भाषण को पढते हुए बताया कि स्वदेशी प्रेम, स्वदेशी भाषा, स्वदेशी वेशभूषा, स्वदेशी भोजन तथा स्वदेशी भक्ति को अपनाने पर ही राष्ट्र का कल्याण हो सकता है।

सभी वक्ताओं का धन्यवाद करते हुए सभाप्रधान प्रो शेरसिंह ने कहा कि आर्यसमाज के मंच से पहली बार स्वदेशी सम्मेलन का आयोजन किया गया है। जब स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गंगातट पर वैदिक संस्कृति के प्रचारार्थ गुरुकुल कांगड़ी स्थापित किया था तो महात्मा गांधी ने पं. मदनमोहन मालवीय से कहा था कि "पण्डित जी आप तो बनारस में गंगा के किनारे बैठकर तामस नदी का पानी पिला रहे है, जबकि स्वामी श्रद्धानन्द पवित्र गंगा का पानी पिला रहे हैं। क्योंकि आप अपने विद्यापीठ में अंग्रेजी भाषा तथा स्वामी जी संस्कृत भाषा सिखा रहे हैं।'

इस सम्मेलन में से निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किये गये।

१—महर्षि दयानन्द ने अपने सम्पूर्ण जीवनकाल में स्वराज्य, स्वदेश, स्वभाषा, स्ववेश, प्राचीन आर्य संस्कृति, कलाकौशल एवं प्राचीन आर्य सभ्यता को समुचित आदर देते हुए उनके विकास को राष्ट्र के आत्म सम्मान के लिये अनिवार्य समझा।

महात्मा गांधी ने स्वदेशी आंदोलन को स्वतन्त्रता की लड़ाई का महत्त्वपूर्ण मुद्दा घोषित किया, किन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् स्वदेशी की भावना मन्द होती गई और विदेशी भाषा, विदेशी संस्कृति, विदेशी तकनीक तथा विदेशी वस्तुयें भारत के जनमानस पर छागई हैं। आज चारों ओर अंग्रेजी और अंग्रेजियत का बोलबाला है। अंग्रेजी माध्यम के 'पब्लिक स्कूलों' की हर जगह भरमार है। राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित हिन्दी बनवासिनी बनादी गई है। अंग्रेजी बोलना, लिखना एवं पढ़ना ही विद्वत्ता एवं उच्च नौकरियों का प्रतीक बन गया है।

अतः यह सम्मेलन निश्चय करता है कि केन्द्रीय सरकार एवं सभी हिन्दी भाषी प्रांतीय सरकारें संविधान की रक्षा करती हुई राजभाषा हिन्दी को अपने पद पर प्रतिष्ठित करने के लिये अपना सम्पूर्ण कार्य व्यवहार तत्काल राजभाषा हिन्दी में आरम्भ करें तथा अहिन्दी भाषी प्रदेश अपनी-अपनी राजभाषाओं को प्रतिष्ठित करें। राजकीय सेवायें सभी पदों पर नियुक्ति के लिये अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करके हिन्दी एवं प्रादेशिक भाषाओं की उच्च योग्यता रखनेवाले व्यक्तियों को ही चुनें।

२—नई शिक्षा-नीति में संस्कृत को समुचित स्थान दिया जावे।

३—केन्द्रीय सरकार भारत की परिस्थितियों के अनुरूप स्वदेशी वस्तुयें एवं स्वदेशी तकनीक का विकास करे, नव-निर्माण के नाम पर अन्धाधुन्ध भोगवादी विलासी वस्तुओं एवं इस देश के वातावरण के अयोग्य विदेशी तकनीक का आयात न करें।

४—समस्त भारतवासी विशेष रूप से आर्य लोग अपने जीवन में प्राचीन आर्य सभ्यता, संस्कृति एवं जीवनशैली को अपनायें तथा अपने दैनिक व्यवहार में स्वदेशी वस्तुओं, स्ववेश एवं स्वभाषा (हिन्दी, संस्कृत) का प्रयोग करें। अपने बच्चों को हिन्दी माध्यम के विद्यालयों तथा गुरुकुलों में शिक्षा दिलवायें। (क्रमशः)

वैदिक संस्कार प्रशिक्षण शिविर

स्थान—दयानन्दमठ, रोहतक

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि दयानन्दमठ रोहतक की ओर से दिनांक २२ जून से २८ जून, १९८७ दिनांक तक एक सप्ताह का संस्कार प्रशिक्षण शिविर लगाया जारहा है, जिसमें आर्य, पुरोहित, शास्त्री, विशारद, मध्यमा, मैट्रिक (संस्कृत) परीक्षा उत्तीर्ण शिक्षार्थी भाग ले सकेंगे। आवास, सादा भोजन आदि की व्यवस्था दयानन्दमठ की ओर से होगी। ऋतु अनुकूल वस्त्र तथा संस्कार विधि और अभ्यास पुस्तिका अपने साथ लावें। प्रवेश के लिए आवेदन-पत्र अधिष्ठाता दयानन्दमठ के नाम १५ जून, १९८७ तक भेज देवें।

सुदर्शनदेव आचार्य
प्रशिक्षक

महाशय भरतसिंह
मन्त्री दयानन्दमठ, रोहतक

शोक प्रस्ताव

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के शताब्दी समारोह के संयोजक बाबू रघुवीरसिंह जी के सुपुत्र श्री यशपाल एम ए के आकस्मिक एवं दुःखद निधन पर शताब्दी समारोह का यह युवा सम्मेलन हार्दिक शोक प्रकट करता है और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि वह दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा सम्बन्धित परिवार को इस दारुण कष्ट को सहन करने का सामर्थ्य प्रदान करे।

दिनांक १६-५-८७

प्रो. शेरसिंह
प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

श्री स्वामी सर्वानन्द जी का पत्र

माननीय बा. रघुवीरसिंह जी सादर नमस्ते।

गृहस्थ का सबसे बड़ा फल तथा सम्पत्ति सन्तति है, जिससे गृहस्थाश्रम की सार्थकता भी बनती है और जिससे संसार सरिता चलती है। इतनी अमूल्य वस्तु पुत्ररत्न का वियोग माता-पिता को तो क्या समीप से जाते हुए पथिक को भी दुःख देता है। आप बड़े विद्वान् तथा धैर्यवान् है, जिससे आपने इस असामयिक पुत्र निधनजन्य दुःख के होने पर भी शताब्दी के कार्य में किसी प्रकार की ढील नहीं आने दी और निरन्तर कार्य करते रहे।

ईश्वर इस पुत्र वियोग जन्य दुःख सहने के लिए सब परिवार को आत्मिक बल प्रदान करे।

भवदीय—सर्वानन्द

इसी प्रकार श्री स्वामी ओमानन्द जी दयानन्दमठ दीनानगर, मा. तेगराम जी तथा प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु (अबोहर) ने शोक संवेदना प्रकट की है।

सभा शताब्दी समारोह के लिए दानदाताओं की सूची

गतांक से आगे—

श्री रविदत्त वर्मा सुपुत्र वैद्य नारायणदत्त करनाल	१००)
,, सुरेन्द्रकुमार उपप्रधान आर्यसमाज होली मोहल्ला करनाल	१००
,, लाजपतराय चौधरी प्रधान आर्यसमाज दयालपुरा ,,	१००
आर्यसमाज प्रवर्तन इस्टेट करनाल	२००
आर्य केन्द्रीय सभा करनाल	२५०
आर्यसमाज दयालपुरा ,,	२५०
श्री रामशरणदास आर्य प्रेमनगर करनाल	१००
,, महेन्द्रसिंह जाटों मोहल्ला ,,	१५०
,, मामचन्द सैनी ,,	५०
,, दयालसिंह लम्बरदार करनाल	५०
,, ए. एस. माडल स्कूल होली मोहल्ला करनाल	१०००
,, प्रेमपालसिंह सिंधु पत्रकार ,,	१७०
,, रणधीरसिंह ,, ,,	१७०
,, धूमचन्द सीताराम पुरानी मण्डी ,,	१००
,, लालसिंह सैनी ,,	१००
,, पृथ्वीसिंह ,,	१००
ला. रामस्वरूप एडवोकेट नावल्टी रोड ,,	५१
श्री खेमचन्द वर्मा एडवोकेट एवं श्री देवदत्त वर्मा करनाल एक बोरी गेहूँ	
,, ज्ञानचन्द कोल्ड स्टोर वाले करनाल	१००

यह धनराशि आर्यसमाज होली मोहल्ला करनाल के प्रधान श्री जसवन्तसिंह आर्य द्वारा प्राप्त हुई।

श्री अत्तरसिंह आर्य एवं आर्यसमाज हांसी के पुरोहित श्री भरतलाल जी द्वारा संगृहीत राशि २५

आर्यसमाज झज्जर रोड रोहतक	११००
श्री रणजीतसिंह आर्यसमाज नांगल साधान जि. अम्बाला	२००
,, सेवाराम ,, ,, ,, ,,	१००
आर्यसमाज प्रेमनगर करनाल	२००
,, माडल टाउन	२००
,, रामनगर करनाल	१००
श्री बाबूराम ठेकेदार बूबका जि. कुरुक्षेत्र	५०
आर्यसमाज नरवाना जि. जींद द्वारा पं. मुरारीलाल बेचैन	५२५
,, माडल टाउन सोनीपत	४००
,, सैक्टर न. ४ फरीदाबाद	२५०
,, मालकोश जि. भिवानी	४१०
श्री महिपालसिंह बैंसला मथुरा मार्ग फरीदाबाद	१००
आर्यसमाज खेल बाजार पानीपत	२५०
श्री समरवीर आर्य भाजपुर तिगांव (फरीदाबाद)	२५
मन्त्री आर्यसमाज ऋषिनगर सोनीपत	२५
सर्वश्री हरिसिंह रिण्ढाणा, आर्यसमाज सांघी, सुरेन्द्रसिंह सांघी, राजपाल फरीदाबाद, राजपाल अग्रवाल फरीदाबाद, सेठ चन्दूलाल फरीदाबाद	७०
श्री किशोरचन्द सरपंच झुड़ा हेड़ा (गुड़गांव) द्वारा श्री महेन्द्र शास्त्री	१००
,, विशनस्वरूप जैन झाड़सा ,,	१००
,, बृजलाल ,, ,,	१००
,, धर्मेन्द्रसिंह पंच ,, ,,	१००
गोल्डन उद्योग ,, ,,	१००
श्री रामवीरसिंह पंच ,, ,,	१००
,, सुभाषचन्द्र जुनेजा ठेकेदार ,,	१००
,, ओम्प्रकाश आर्य ग्राम मालकोश (भिवानी)	१००
,, उमरावसिंह रघुवीरसिंह ,, ,,	१००
आर्यसमाज वजीराबाद ,,	११०
ब्र. संजय आर्य सुपुत्र श्री रामसिंह पूठकलां (दिल्ली)	५००
आर्यसमाज माकड़ोला (गुड़गांव)	५००
श्री चतुर्भुज सरपंच माकड़ोला गुड़गांव	१००
,, छत्तरसिंह पंच झाड़सा ,,	५०
,, नत्थुराम ठेकेदार ,,	५०
मा. दलीपसिंह झाड़सा ,,	५०
श्री अमरसिंह ,, ,,	५०
,, ओम्प्रकाश पंच ,, ,,	५०
,, बल्लेराम सैनी ,, ,,	५०
,, महेन्द्रपाल पंच ,, ,,	५०
ज्वाला सर्विस स्टेशन ,, ,,	५०
आर्यसमाज बालसमन्द जि. हिसार द्वारा पं. अत्तरसिंह आर्य	१००
श्री दलबीरसिंह आर्य सातरोड कलां जि. हिसार	१००
,, नरेन्द्रसिंह आर्य माढ़यड़ ,, ,,	५०
,, विजेन्द्र आर्य सातरोड कलां ,, ,,	२५
सेठ रामनिवास आर्य बालसमन्द ,, ,,	२५
सूबेदार हरचन्द ,, बालावास ,, ,,	२५
श्री मोहनलाल ,, ,, ,, ,,	२५
,, महेन्द्रसिंह आर्य कवारी ,, ,,	२५
,, उमेदसिंह ,, ,, ,, ,,	२५
कप्तान फूलसिंह, श्री बलवन्तसिंह, श्री चतरसिंह, श्री वजीरसिंह कवारी जि. हिसार	४०
श्री दलीपसिंह बाडवा, श्री महेन्द्रसिंह धनाना ,, ,,	२०

श्री छबीलदास आर्य प्रधान, प्रो० इन्द्रदेव मन्त्री आर्यसमाज जींद शहर के सहयोग से श्री चन्द्रपाल राणा द्वारा संगृहीत राशि

श्री जगन्नाथ प्रधान जींद	२००
,, रामेश्वरदास ,,	१००
वैद्य रामचन्द ,,	१००
श्री छबीलदास आर्य प्रधान आर्यसमाज जींद	१००
डा. ब्रह्मराज उपप्रधान ,, ,,	१००
डा. रमेश वर्मा उपमन्त्री ,, ,,	१००
श्री जयकिशनदास ,,	१००
,, ठाकुरदास ,,	१००
अमित टैक्स टाईल ,,	१००
श्री लक्ष्मणदास उपप्रधान आर्यसमाज ,,	५०
,, धर्मवीर आर्य ,, ,,	५०
,, ओम्प्रकाश गुप्त ,, ,,	५०
,, मोहन प्रभाकर ,, ,,	५०
,, विजयकुमार ,, ,,	५०
,, इन्द्रदेव शास्त्री मन्त्री ,, ,,	५०
,, छाजूराम सेठ ,, ,,	५०
,, रोहितकुमार ,, ,,	५०
,, बनीसिंह ,, ,,	५०
,, बिशनदास ,, ,,	५०
आर्यसमाज जींद शहर	११००
सिद्धांती भवन निर्माण हेतु शेष राशि	४००
श्री देवराज आर्य नारनौल द्वारा महाशय ताराचन्द आर्य एवं वैद्य हरिश्चन्द्र आर्य	१००
,, हनुप्रसाद आर्य ,,	१००
,, कांतिलाल ,, ,,	१००
,, गोपालसिंह वकील नारनौल	१००
,, हरिराम ,, ,,	१००
सेठ मंगलचन्द ,,	१००

(क्रमशः)

सभी दानदाताओं को सभा की ओर से बहुत-बहुत धन्यवाद। आशा है अन्य दानी महानुभाव भी इस सूची में अपना नाम लिखवाकर पुण्य के भागी बनेंगे।

—रघुवीरसिंह संयोजक समारोह

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार
पिनकोड सं० २४९ ४०४

सूचना

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की शिष्ट परिषद् के लिये २ स्नातक तथा १ स्नातिका का निर्वाचन तथा शिक्षा-पटल के लिये ३ स्नातक प्रतिनिधियों का निर्वाचन होना है। इसके लिये अधोहस्ताक्षरी गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के उन स्नातकों से पंजीकरण हेतु प्रार्थना-पत्र आमन्त्रित करता है, जिन्हें इस विश्वविद्यालय से स्नातक, स्नातकोत्तर तथा पी-एच. डी. उपाधि प्राप्त किये ५ वर्ष हो चुके हों।

अतः वर्ष १९८२ तक उपाधि प्राप्त महानुभाव निम्न प्रपत्र अपने पंजीकरण हेतु शुल्क ५) रु., सदस्यता शुल्क २) रु. वार्षिक अथवा सदस्यता शुल्क २५) रु. (आजीवन) मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट अथवा पोस्टल आर्डर सहित दिनांक ३० जून, १९८७ तक अधोहस्ताक्षरी के नाम प्रेषित करें। उक्त शुल्क अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में नकद भी जमा कराया जा सकता है।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार — डा. वीरेन्द्र अरोड़ा
दिनांक १०-५-१९८७ — कुलसचिव

नोट—जिन स्नातकों ने वर्ष १९८७ के विज्ञापन के आधार पर आजीवन शुल्क २५) रु० जमा कराया है, उनके अतिरिक्त प्रत्येक स्नातक को जो पंजीकरण कराना चाहते हैं सदस्यता शुल्क जमा कराना होगा।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
पंजीकृत स्नातक/स्नातिका के रूप में पंजीकरण हेतु प्रार्थना-पत्र

१. नाम
२ पिता का नाम
३. विश्वविद्यालय पंजीकरण सं०
४. उच्चतम उपाधि जो गुरुकुल कांगड़ी वि० वि० से प्राप्त की हो
५ उक्त उपाधि प्राप्त करने का वर्ष
६. अनुक्रमांक जिससे उक्त उपाधि प्राप्त की
७. मनीआर्डर/पोस्टल आर्डर/बैंक ड्राफ्ट अथवा नकद जमा किये गये धन का विवरण जिसके द्वारा वांछित शुल्क जमा किया गया
८. वर्तमान पता व्यावसायिक विवरण सहित

मैं, श्री·········यह प्रमाणित करता हूं कि उपर्युक्त तथ्य सत्य हैं। अतः मैं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पंजीकृत स्नातक के रूप में पंजीकरण हेतु प्रार्थना करता हूं।

स्थान — हस्ताक्षर
तिथि — पता

आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन

आर्यसमाजों के सहयोग से सभा शताब्दी समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न होगया है। तदर्थ आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं के अधिकारियों का हार्दिक धन्यवाद।

समारोह के लिये धनसंग्रह की रसीदें तथा उन द्वारा प्राप्त धन का विवरण जिन आर्यसमाजों अथवा अन्य आर्य महानुभावों ने सभा कार्यालय को नहीं भेजा है उनसे निवेदन है कि वे अपनी रसीद बुक अथवा अपने प्राप्त धनराशि के साथ ३१ मई तक सभा कार्यालय रोहतक भेजने का कष्ट करें, ताकि शताब्दी समारोह के हिसाब को आडिट करवाया जा सके।

—रघुवीरसिंह संयोजक शताब्दी समारोह

आर्य वीरदल प्रशिक्षण शिविर

महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल कृष्णपुर (फरीदाबाद) के पावन प्रांगण में ७ जून से १६ जून, ८७ तक सार्वदेशिक आर्य वीरदल प्रशिक्षण शिविर का समायोजन किया जारहा है, जिसमें प्रशिक्षण प्रदानार्थ योग्य शिक्षकों को आमन्त्रित किया गया है। १५-१६ जून को शिविर का दीक्षांत समारोह होगा। शिविर में प्रशिक्षणार्थियों को शारीरिक उन्नति हेतु योगासन, व्यायाम तथा समाज-सेवा एवं वैदिक कर्मकांड भी शिक्षा से समलंकृत किया जायेगा।

अतः प्रशिक्षणार्थी ३१ मई तक शिविर कार्यालय महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल कृष्णपुर से शीघ्र सम्पर्क स्थापित कर अपना स्थान अवश्य सुरक्षित करालें।

—आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री
कुलपति महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल कृष्णपुर
पो० मंझना जन- फरुखाबाद (उ०प्र०)

गुरुकुल वेद मन्दिर मतानाडिग्गी फरीदाबाद में प्रवेश प्रारम्भ

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से सम्बद्ध गुरुकुल वेद मन्दिर फतेहाबाद में पांचवीं, छठी एवं सातवीं कक्षाओं के साथ ही विशारद और शास्त्री कक्षाओं में भी प्रवेश दिया जारहा है। सभी कक्षाओं में प्रवेश मात्र ३१ मई तक ही चलेंगे।

१००) रु० मासिक भोजन व्यय, १००) रु० प्रवेश शुल्क, १००) रु० सुरक्षा शुल्क। प्रारम्भिक व्यय मात्र ३००) रुपये।

—आचार्य गुरुकुल वेद मन्दिर
जी. टी. रोड फतेहाबाद हिसार (हर.)

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार में प्रवेश

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार (हरयाणा) में १ से ३१ जुलाई तक नवीन छात्रों का प्रवेश प्रारम्भ होगा। प्रवेश की योग्यता मैट्रिक उत्तीर्ण वा तत्सम योग्यता होना आवश्यक है। छात्रों को भोजन, निवास, पुस्तक, शिक्षा, साबुनादि आवश्यक वस्तुयें निःशुल्क शिक्षण दिया जाता है। अतः वैदिकधर्म के प्रचारक बनने के अभिलाषी छात्र प्रवेश के लिये आवेदन जल्दी से जल्दी कार्यालय के पते पर भेजकर स्वीकृति प्राप्त कर लेंवे। स्थान सीमित है। इसके बाद प्राप्त होनेवाले आवेदनों पर विचार नहीं किया जावेगा।

सत्यप्रिय शास्त्री एम० ए० साहित्याचार्य
आचार्य दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज सालवन के सभासद् श्री ज्वालासिंह जी का स्वर्गवास दिनांक ३०-४-८७ को होगया। जो काफी दिनों से बीमार चल रहे थे। जिनकी आयु ५५ साल की थी, जो बड़े लग्नशील व्यक्ति थे। जिन्होंने २०-२५ साल आर्यसमाज की तन, मन, धन से सेवा की।

हम सभी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि उस दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे व शोकाकुल परिवार को यह असह्य दुःख सहन करने की सामर्थ्य दे।

—ओमप्रकाश आर्य प्रधान आर्यसमाज सालवन (करनाल)

सार्वदेशिक आर्य वीरदल का व्यायाम शिक्षक प्रशिक्षण शिविर

११ से २५ जून तक गुरुकुल झज्जर जि रोहतक में डा. देवव्रत आचाय उपप्रधान सचालक के माग निर्देशन में लगाया जारहा है। इस से पूर्व शिविरो मे प्रथम श्रेणी उत्तीण आर्यवीरो को हो प्रवेश मिलेगा। प्रशिक्षणार्थी प्रवेश शुल्क ५० रुपये तथा स्थानीय आर्यसमाज या मण्डल संचालक आय वीरदल की सस्तुति साथ लावें।

आवश्यक सामान

खाकी निकर, सैंडो बनियान, ब्राउन जूते, लाठी, पेन, नोट बुक, भोजन के बतन, लोटा, काला कच्छा तथा बिस्तर आदि आवश्यक सामान साथ लावें।

मार्ग—झज्जर से रिवाड़ी वाली बस में गुरुकुल मार्ग पर उतर कर गुरुकुल पहुचे। सिलानी गेट से टैम्पो एव रिक्शा भी मिलते हैं।

आर्यसमाज मन्दिर पिंजौर निर्माण की अपील

ऐतिहासिक नगर पिंजोर जि. अम्बाला में आर्यसमाज मन्दिर में यज्ञशाला का निर्माण चल रहा है। हम सभी नगर निवासियों से विनम्र प्रार्थना करते हैं कि इस शुभ कार्य के लिये दिल खोलकर दान दें।

आर्यसमाज की कार्यकारिणी ने यह निर्णय किया है, जो भी दानी भाई बहन एक सो रुपया या इससे अधिक दान देंगे, उन सभी भाइयों व बहिनों के नाम यज्ञशाला में लगे पत्थर पर अंकित किये जायेंगे। अगर कोई भाई व बहन नकद धनराशि न देकर अपने नाम का संगमरमर का पत्थर देना चाहते हैं तो उनका दिया हुआ पत्थर भी यज्ञशाला में लगाया जायेगा।

इस शुभ कार्य के लिये दानी किस नाम से दान देना चाहते हैं, आर्यसमाज पिंजोर के प्रधान श्री ला. रामलाल जी चीफ क्लाथ हाउस पिंजोर से सम्पर्क करें। हमें आशा है कि आप सभी इस शुभ कार्य में बढ़-चढ़कर भाग लेंगे और यज्ञ में बडी से बड़ी धन की आहुति देकर दानी जिस माध्यम से भी दान करें, भगवान् उन सभी को मनोकामनायें पूर्ण करे।

—मन्त्री प्रेमचन्द शर्मा

ये कैसेट आगामी शताब्दी समारोह में उपलब्ध होंगे।

हरयाणा में अधिकृत विक्रेता

१ मेसर्ज परमानन्द साईदितामल, भिवानी स्टैंड, रोहतक
२. ,, फूलचन्द सीताराम गांधी चौक, हिसार
३. ,, सन-अप-ट्रेडर्स सारंग रोड, सोनीपत
४. ,, हरीश एजेन्सीज ४९९/१७ गुरुद्वारा रोड, पानीपत
५. ,, भगवान्‌दास देवकीनन्दन सर्राफा बाजार पुराना, करनाल
६. ,, घनश्यामदास सीताराम बिचला बाजार, भिवानी
७. ,, कृपाराम गोयल रुड़ी बाजार, सिरसा
८ ,, कुलवन्त पिकल स्टोर्स, शाप नं० ११५, मार्किट नं० १, एन० आई० टी० फरीदाबाद
९. ,, चन्द्रप्रकाश नवीनप्रकाश ३१८/५ जेकमपुरा, गुड़गांव

शराब मानव-समाज की शत्रु है

इससे अवश्य बचें।

इस जमाने में ऐसा होता है

आज तमाम देश नास्तिकता के दौर से गुजर रहा है। कहीं सांग, कहीं कम्पीटिशन, कहीं सिनेमा आदि से धन इकट्ठा किया जाता है। कहीं शराब से. लेकिन मैं आपको दो ऐसी पंचायतों के बारे में कुछ बतलाना चाहता हूं। श्री चूहड़सिंह आर्य सरपंच ग्राम पंचायत बिच्छपडी ने अपने सूझ-बूझ व सात्विक प्रवृत्ति से बहुत ही अच्छा व प्रेरणाप्रद कार्य करके आज के युग में एक आदर्श स्थापित किया है। जो अन्य पंचायतों के लिये प्रेरणाप्रद है, जो इस प्रकार से है—

श्री चूहड़सिंह आर्य सरपंच जो अपने सद्व्यवहार से अपने ग्राम में लगातार २० वर्ष से सरपंच बनता आरहा है, उसने अपने ग्राम में २० वर्ष से शराबबन्दी कर रखी है। जो लगभग १५ वर्ष तो २५ रु. जुर्माना जो शराब की हालत में गलियों में घूमता नजर आये। अब १० वर्ष से १०० रु. जुर्माना लगाया जाता है। जो पैसा दण्ड रूप में इकट्ठा होता है उसे गांव की भलाई के लिए लगाया जाता है। सरपंच की देख-रेख में गांव में शराबबन्दी विधिवत् चल रही है।

गत दिसम्बर मास में सरपंच साहब ने बिच्छपडी व सिरसौद की पंचायतों को इकट्ठा किया और सुझाव रखा कि हमें अपने गांव में दसवीं कक्षा तक अलग कन्या पाठशाला बनवानी चाहिये। सत्यार्थप्रकाश का हवाला दिया कि महर्षि दयानन्द जी भी यही चाहते थे कि लड़के व लड़कियां अलग-अलग पाठशाला में पढ़ें। सर्वसम्मति से दोनों गांवों की पंचायतों ने इस बात का समर्थन किया। बिच्छपडी की पंचायत ने चार एकड़ जमीन कन्या पाठशाला के लिये दान दी।

सरपंच श्री चूहड़सिंह आर्य ने मकरसक्रांति से एक दिन पहले लोगों को बताया कि हम तो न सांग लायेंगे, न कोई भजनमण्डली। कल मकर-सक्रांति पर्व है, जो एक धार्मिक त्यौहार है। दोनों गांव में चौकीदार से मुनादी करवादी कि कल प्रातः हवन होगा ७ बजे और ठीक ९ बजे कन्या पाठशाला के लिये नोता पड़ेगा। जो भाई खुशी से अपनी कमाई में से कन्या पाठशाला को दान देना चाहें, वह प्रातः हवन पर पहुँचकर दान दें। सरपंच साहब ने बताया जो आज के दिन शुभ कार्य में दान देगा, उसके घर में सात पीढ़ी तक टोटा नहीं आयेगा। सरपंच की बात का लोगों पर ऐसा असर हुआ। पहले बिच्छपडो गांव के लोगों ने अपनी-अपनी सामर्थ्य अनुसार तीन लाख रुपये नकद दान दिया। बाद में सिरसौद गांव के लोगों ने भी अपनी सामर्थ्य अनुसार ३॥ लाख रुपये नकद दान दिया। इस प्रकार भगवान् की कृपा व सरपंच साहब की लगन व प्रयास से ८ घण्टे में कुल ६॥ लाख रु. नकद इकट्ठा होगया। रुपया बैंक में जमा किया गया और सात दिन के बाद कन्या पाठशाला के भवन निर्माण का कार्य चालू होगया।

उपरोक्त कार्य में सरपंच श्री चूहड़सिंह आर्य बिच्छपडी तथा खेमसिंह सरपंच सिरसौद के अतिरिक्त निम्न सज्जन आदमियों का पूर्ण सहयोग है। सर्वश्री रघुनाथ पंच, अभेराम पंच, दयाकिशन शर्मा बिच्छपडी एवं घड़सीराम पंच, राजसिंह, दरियासिंह, इन्द्रसिंह वजीरसिंह पंच सिरसौद। इस प्रकार से अन्य गांवों की पंचायत भी उपरोक्त पंचायतों से प्रेरणा लेकर अपने-अपने गांव को एक आदर्श गांव बना सकती है। वास्तव में ये दोनों पंचायतें बधाई की पात्र हैं। जो इस नाजुक दौर में पश्चिमी चकाचौंद से दूर हटकर अपने ऋषि-मुनियों के बताये रास्ते पर चलकर अपनी संस्कृति की रक्षा कर रही है। अन्य पचायतों में भी ऐसा हो सकता है।

—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी
प्रधान आर्यसमाज कंवारी

हरयाणा की आर्यजनता की सेवा में अपील

आर्यसमाज पिंजौर जो अभी अपनी शैशवास्था में ही है, जिसमें एक भव्य यज्ञशाला का निर्माण चल रहा है। जो समाज अथवा व्यक्ति अपनी कीर्ति का इच्छुक हो तो वह अधिक से अधिक धन देकर अपना नाम शिला पर अंकित करवा सकता है। अतः इसके लिए अधिक से अधिक धन भेजकर पुण्य के भागी बनें तथा हमारा सहयोग करें।

निवेदक—प्रेमचन्द शर्मा
मन्त्री आर्यसमाज पिंजौर. जि अम्बाला (हर.)

अभिनन्दन समारोह

ग्राम पंचायत कंवारी एवं आर्यसमाज कंवारी जि हिसार की तरफ से २८-४-८७ को कंवारी निवासी श्री सुन्दरसिंह ढिल्लो की सुपुत्री कुमारी वैशाली ढिल्लो का अभिनन्दन किया गया। ज्ञातव्य है कि इस लड़की ने राष्ट्रीयस्तर (अखिल भारतीय होम गार्ड जुडो प्रतियोगिता) लखनऊ में ४० के. वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त कर स्वर्णपदक प्राप्त किया, इसके अतिरिक्त वैशाली राज्यस्तर जिलास्तर पर १२ स्वर्णपदक, दो कांस्यपदक, एक रजतपदक प्राप्त कर चुकी है।

इस अवसर पर वरिष्ठ खेल अधिकारी चण्डीगढ़, जिला खेल अधिकारी हिसार, प्रोफेसर एवं अन्य वक्ताओं ने अभिनन्दन समारोह में भाग लिया तथा विचार रखे। निकटवर्ती ग्रामों से हजारों की संख्या में लोगों ने भाग लिया। आशीर्वाद तथा लड़की को इनाम दिया। इस अवसर पर आर्यसमाज के प्रसिद्ध भजनीक चौ. महदेवसिंह बेधड़क के भी प्रभावशाली भजन हुए। इस सारे कार्यक्रम का संचालन एवं संयोजन आर्यसमाज कंवारी के प्रधान श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी ने किया।

—इन्द्रसिंह आर्य मन्त्री आर्यसमाज कंवारी

गृहप्रवेश समारोह सम्पन्न

२७-४-८७ को आर्यसमाज कंवारी जि हिसार के प्रधान श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी ने अपने नलवेवाले खेत में नव गृहप्रवेश समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें ग्राम कंवारी, बाल्लावास, नलवा, नलवा कालेज हा. कृ वि के प्रोफेसर एवं अध्यापकों तथा निकट की ढाणियों से सैकड़ों नरनारियों ने भाग लिया। महिलायें गीत गाती हुई हवन पर पधारीं। सर्वप्रथम ओ३म् का झण्डा मकान पर चढ़ाकर पं. भरतलाल शास्त्री ने हवन करवाया।

इसके अतिरिक्त बहन करुणा शास्त्री, प्रो जयदेव, प्रो. पी. के. सक्सेना आदि ने पंच महायज्ञ, सोलह संस्कार, सुखी गृहस्थ, ब्रह्मचर्य, नारी शिक्षा पर विस्तार से विचार रखे। पं मुलतानसिंह की मण्डली के शिक्षाप्रद भजन हुए। बाद में प्रीतिभोज का आयोजन किया गया। प्रधान जी ने सभी यज्ञ पर आये अभ्यागतों का धन्यवाद किया। कार्यक्रम बड़ा रोचक एवं प्रभावशाली रहा।

—डा. ओमप्रकाश आर्य, उपमन्त्री आर्यसमाज कंवारी

दर्शन एवं योग-प्रशिक्षण शिविर

जिस प्रकार से यह २ वर्ष का कार्यक्रम रखा गया था, उसी प्रकार का आगे ३ वर्ष का नया कार्यक्रम रखने का विचार है। जो युवक आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन करनेवाले व संस्कृत माध्यम से ६ दर्शन पढ़ने और योग-प्रशिक्षण प्राप्त करने के इच्छुक हों, वे पत्रव्यवहार करें। ब्रह्मचारियों को भोजन, वस्त्र, घी, दूध, फलादि समस्त आवश्यक साधन निःशुल्क प्रदान किये जावेंगे। कृपया आप भी इस सूचना को अन्यों तक पहुंचाने का प्रयत्न करें।

—स्वामी सत्यपति परिव्राजक
आर्यवन विकास फार्म साबर काठा (गुजरात)

(पृष्ठ १ का शेष)

(राज.) से आई महिलायें राजस्थानी वेशभूषा पहने राजस्थानी में लोक-गीत गाती शोभायात्रा बहुरंगी आयाम दे रही थी। इसके बाद नरवाना, गुडगाव के आर्यवीर जो साइकिलों से गांव-गांव प्रचार करते कई दिन में पहुंचकर अपनी विशाल साइकिल काफिले के साथ चल रहे थे।

शोभायात्रा का विशाल ठाठ मारता जलूस ज्यों-ज्यों आगे बढ़ता था त्यों-त्यों रोचकता बढ़ती जाती थी। अनेक प्रांतों से सैकड़ों आर्य-समाजों के बुजुर्ग नेता राष्ट्र एवं आर्यसमाज की भावी आशा युवक अपनी-अपनी समाज के नामपट्ट झण्डे और सिर पर केसरिया पगड़ी बांधे कदम से कदम मिलाकर चल रहे थे। इन्होंने अपने पूर्व नेताओं के नेतृत्व में प्रचण्ड इच्छा शक्ति से अनेक आंदोलनों मे विजय प्राप्त की है। आर्य वेदप्रचार मण्डल मेवात (फिरोजपुर) झिरका, नगीना, पुन्हाना, बीवा, नूह, साकरस, शुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, वैदिक भक्ति आश्रम रोहतक, साधु आश्रम गाजियाबाद, वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर, साधु आश्रम भटिण्डा, दयानन्दमठ दीनानगर, दयानन्दमठ चम्बा, आर्यसमाज सोहना। आर्यसमाज क्रमश —प्रेम मोहल्ला करनाल, नांगल (भिवानी), कालका सरावड़, राजौरी गार्डन दिल्ली, आर्यसमाज रेवाड़ी, बहादुरगढ़, पाढ़ा करनाल, काठमण्डी रोहतक, झज्जर रोड रोहतक, आर्यसमाज नारनौल, समालखा, गन्नौर, सुण्डाना, लूखी, सिवानी (भिवानी), नरेला (दिल्ली), सालवन (करनाल), बीकानेर (महेन्द्रगढ़), गांघरा, मकडौली, आर्यनगर रोहतक, किलोई, जुआं, मितरोल, औरंगाबाद, मानपुर (फरीदाबाद), सुलतानपुर (महेन्द्रगढ़), नेहरु ग्राउण्ड फरीदाबाद, ३-४ सेक्टर फरीदाबाद, पाली (जोधपुर राज), चरखी दादरी, साधु आश्रम यमुनानगर, आर्यसमाज रोहणा, सोनीपत शहर, जींद, होली मोहल्ला करनाल, सोनीपत, भाऊ अकबरपुर, आर्यसमाज भटिण्डा, गढ़ी बोहर, गुडगांव की आठ आर्यसमाज यथा जेकमपुरा, अर्जुननगर, भीमनगर, शिवाजी कालोनी, प्रतापनगर, न्यू कालोनी आदि वैचित्र्यपूर्ण झांकियो से पूरा रोहतक केसरिया रंग में रंग गया। मथुरा को कवियों ने तीन लोक से न्यारी बताया है परन्तु १५ मई, ८७ को तो रोहतक नगरी तीन लोक से न्यारी लग रही थी। शोभायात्रियों के लिये अनेक स्थानों पर फूल माला, फल, मिठाई, शरबत आदि से नगरवासियों ने गद्गद् होकर स्वागत किया। शोभायात्रा की विशालता का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि जहां शोभायात्रा का अगला छोर वैश्य कन्या महाविद्यालय के सामने था और अन्तिम छोर उस समय दयानन्दमठ के दरवाजे से निकला था। इस प्रकार आर्यों की विशाल जनशक्ति ने जहां अपनी संगठन शक्ति का परिचय दिया, वहां आर्यनेताओं के मानस को भी बुराइयों के खिलाफ आंदोलन के लिये झकझोरा है।

इस शोभायात्रा का संचालन आर्य प्रादेशिक सभा के महामन्त्री श्री रामनाथ सहगल तथा हरयाणा आर्य वीरदल के मन्त्री श्री वेदप्रकाश आर्य एवं अधिष्ठाता श्री धर्मदेव विद्यार्थी, रोहतक आर्य वीरदल के संचालक श्री जगदीश आर्य आदि कर रहे थे। शोभायात्रा को देखने के लिये मकानों की छतों पर स्त्री पुरुष तथा बच्चे खड़े थे। विभिन्न बाजारों में दुकानदार शोभायात्रियों पर फूल बरसाकर तथा मीठा शर्बत पिलाकर स्वागत कर रहे थे। सभा के महोपदेशक प. सुखदेव शास्त्री जलूस का परिचय करवाते हुए आर्यसमाज द्वारा गत १०० वर्षों के कार्यों का विवरण सुना रहे थे। सनातन धर्म सभा दुर्गा भवन तथा गुरुद्वारा बंगला साहब के अधिकारियों ने भी शोभायात्रा के नेताओं का स्नेहपूर्वक स्वागत किया। रोहतक के बुजुर्ग नर-नारी कहते सुने गये कि इतना विशाल जलूस रोहतक के इतिहास में इससे पूर्व नहीं निकला।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 रजि० न० P/RTK



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री

वर्ष १४, अङ्क २६ २८ मई, १९८७ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ...

आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापना शताब्दी समारोह पर आयोजित

युवा एवं व्यसन-मुक्ति सम्मेलन में व्यसनों से दूर रहने का आह्वान

(मा० तीर्थसिंह आर्य एव श्री केदारसिंह आर्य द्वारा)

दिनांक १६ मई, ८७ को यज्ञ की कार्यवाही के पश्चात् प्रातः ९-३० बजे युवा एवं व्यसन सम्मेलन सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी की अध्यक्षता तथा डा० योगानन्द जी शास्त्री के संयोजन में प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम श्री सहदेव बेधड़क तथा श्री ईश्वरसिंह तूफान ने अपने मनोहर भजनों द्वारा युवकों को व्यसनों से दूर रहकर आर्यसमाज के साथ कन्धे से कन्धा मिलाने का आह्वान किया।

डा० योगानन्द जी शास्त्री ने इस सम्मेलन का महत्त्व बताते हुए कहा कि चरित्रवान् तथा विद्वान् युवक गुरुकुलों में तैयार हो सकते हैं। इसी कारण श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना के पश्चात् हरयाणा में पांच गुरुकुल झज्जर, मटिण्डू, कुरुक्षेत्र, भैंसवाल कलां तथा इन्द्रप्रस्थ स्थापित किये। श्री स्वामी जी महाराज हरयाणा की जनता से बहुत प्यार करते थे। आज हरयाणा में सबसे अधिक ३३ की संख्या में गुरुकुल चल रहे हैं, जहां विद्वान् तथा चरित्रवान् युवकों को तैयार किया जारहा है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री धर्मपाल आर्य ने इस सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए हरयाणा सभा के अधिकारियों का धन्यवाद किया। हरयाणा सभा ने युवकों को आर्यसमाज की ओर आकृष्ट करने के लिए प्रदेश में जो शराबबन्दी आंदोलन चला रखा है, उससे आर्यसमाज में नई चेतना आई है। कोई भी राजनैतिक दल शराब बन्दी के लिए कार्य नहीं कर रहा, अपितु अपने चुनाव प्रचार में शराब का सहारा लेकर इस राष्ट्रघातक बुराई का प्रसार कर रहा है। आर्यसमाज को इस आंदोलन को सफल करने के लिए पूरी शक्ति लगानी होगी। यदि युवक शराब मांस जैसी बुराइयों से बच जाते हैं तो हमें शीघ्र ही सफलता मिल सकती है।

सर्वदलीय सर्वखाप पंचायत के प्रधान एवं युवा संन्यासी स्वामी कर्मपाल जी ने हरयाणा सभा द्वारा चलाये जारहे शराबबन्दी आंदोलन की सराहना करते हुए कहा कि यदि युवक व्यसनों में फंस जायेंगे तो वे अपने पूर्वजों की अमूल्य सम्पत्ति को नष्ट कर देंगे। सरकार विकास कार्यों में जितना धन खर्च करती है, वह बेकार हो जायेगा। अतः युवकों के निर्माण के कार्यों को प्राथमिकता देनी चाहिए, तभी राष्ट्र सुदृढ़ रह सकेगा। आर्यसमाज को संघटित होकर शराबबन्दी करनी चाहिए। अध्यापकों के नेता मास्टर सोहनलाल जी ने इस सम्मेलन में बोलते हुए अध्यापकों को परामर्श दिया कि वे अपने-अपने विद्यालयों में छात्रों को व्यसन छुड़ाने के लिए प्रत्येक साधन अपनाने चाहियें। गुरुकुल कुम्भाखेड़ा तथा कन्या गुरुकुल खरल के संचालक स्वामी रत्नदेव जी ने कहा आर्य नर-नारियों को अपनी सन्तानों को गुरुकुलों में पढ़ाना चाहिए, तभी वे व्यसनों से दूर रहकर राष्ट्र के आदर्श नागरिक बन सकते हैं।

सनातन धर्म सभा दुर्गा भवन रोहतक के संरक्षक स्वामी लक्ष्मणयति जी ने अपने प्रवचन में बाल्यकाल में ही बच्चों पर अच्छे संस्कार डाले जावें, ताकि वे अपने भावी जीवन में व्यसनों से बचे रह सकें। बच्चा एक कुम्हार के घड़े की भांति होता है। जैसा उसे बनाया जायेगा, बन जायेगा। आर्य वीरदल हरयाणा के अधिष्ठाता प्रा० धर्मदेव जी विद्यार्थी ने हरयाणा में युवकों के संघटन पर बल देते हुए आर्य नर-नारियों को प्रेरणा दी कि वे अपने बच्चों को आर्य वीरदल द्वारा आयोजित शिक्षण शिविरों में भेजकर उन्हें आर्य जीवन व्यतीत करने के योग्य बनाना चाहिए। शताब्दी समारोह के प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री चन्द्रपाल राणा ने विदेशी सभ्यता से दूर रहने का परामर्श देते हुए अपने साथियों का आह्वान किया कि वे अपने-अपने क्षेत्र में युवकों को वैदिक सभ्यता से परिचित करावें।

सभा के पुस्तकाध्यक्ष एवं आर्य हिन्दी महाविद्यालय के आचार्य ऋषिपाल आर्य ने संस्कृत तथा हिन्दी के अध्यापकों से निवेदन किया कि वे अपने विद्यालयों में छात्र तथा छात्राओं को दुर्व्यसनों से दूर रहने के लिये तैयार करें।

अन्त में प्रो० शेरसिंह ने अपने अध्यक्षीय भाषण में इस सम्मेलन के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अब समय आगया है कि हम राजनैतिक दल से ऊपर उठकर युवकों को संघठित करके उनके दुर्व्यसन दूर करने का पूरा प्रयास करें। आर्य वीरदल ही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा हम युवकों को प्रशिक्षण देकर उन्हें आर्यसमाज तथा राष्ट्र की नींव को सुदृढ कर सकते हैं। युवक ही राष्ट्र की एकता तथा अखण्डता की रक्षा कर सकता है। आर्यसमाज के प्रचार द्वारा ही युवकों को दुर्व्यसनों से बचाया जा सकता है। प्रत्येक नगर तथा ग्राम में आर्य वीरदल की नियमित शाखा चलनी चाहिये। सभा की ओर से इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए यथासम्भव पूरी मदद दी जायेगी।

आपने हरयाणा में शराबबन्दी आंदोलन की चर्चा करते हुए बताया कि युवकों के संघटन के कारण ग्राम मांडोठी, सांघी जि० रोहतक तथा ग्राम रिण्ढाणा जि० सोनीपत आदि में शराब के ठेके बन्द होगये हैं। शराबबन्दी के लिये ग्रामीण महिलाओं के योगदान की प्रशंसा करते हुए आपने आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं को निर्देश दिया कि जहां भी शराब के ठेके हैं, वहां महिलाओं का सहयोग एवं समर्थन प्राप्त करके धरनों का आयोजन करें। एक सप्ताह के अन्दर शराब का ठेकेदार भाग जायेगा। शराबबन्दी के लिये जनता में चेतना आरही है। आर्यसमाज को इस चेतना से लाभ उठाना चाहिये।

इस सम्मेलन में निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकार हुए—

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के शताब्दी समारोह के अवसर पर आयोजित युवा एवं व्यसनमुक्ति सम्मेलन में समुपस्थित सभी व्यक्ति सर्वसम्मति से निम्न प्रस्ताव पारित करते हैं—

१—यह सम्मेलन भारत सरकार तथा हरयाणा सरकार से अनु-

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापना शताब्दी समारोह

रोहतक नगरी में वेदपारायण महायज्ञ, स्वदेशी सम्मेलन, युवा एवं व्यसन मुक्ति सम्मेलन, मातृशक्ति सम्मेलन, व्यायाम सम्मेलन, राष्ट्रीय एकता सम्मेलन, आर्य सत्याग्रहियों का अभिनन्दन समारोह तथा शिवसंकल्प सम्मेलनों में आर्यनेताओं के भाषण, स्वामी श्रद्धानन्द वैदिक पुस्तकालय की आधारशिला आदि का आयोजन

(केदारसिंह आर्य एवं तीर्थराम पत्रकार द्वारा)

गतांक से आगे—

मातृशक्ति सम्मेलन

१५ को दोपहर पश्चात् ३ बजे कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून की आचार्या दमयन्ती कपूर की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ। इस सम्मेलन का संयोजन श्रीमती विमला महता संचालिका दयानन्द महिला महाविद्यालय फरीदाबाद ने बहुत ही प्रभावशाली ढग से किया। इस अवसर पर सभा के भजनोपदेशक श्री जयपाल आर्य ने महिलाओं के उत्थान विषयक मनोहर भजन सुनाये।

सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए श्रीमती प्रभातशोभा विद्यालकृता ने सम्मेलन की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मातृशक्ति में महिला माता, गोमाता, धरती माता तथा मातृभाषा सम्मिलित करके यह एक अत्यन्तावश्यक सम्मेलन आयोजित किया गया है। आज ये सभी मातायें सकट में हैं। परन्तु यदि ये अपनी छिपी हुई शक्ति को पहचान जायें तो इन्हे परास्त करनेवाला ससार में कोई नहीं है। आपने हरयाणा में शराब के ठेकों पर धरणा देनेवाली महिलाओं का उदाहरण देते हुए कहा कि जहां भी महिलायें मैदान में आगईं, वहां शराब का ठेका बन्द होकर रहा है। महिलाओं ने शराब से होनेवाली बुराइयों का अनुभव किया है। जब वे शराबियों के निरन्तर अत्याचार से तंग आगईं तो वे इसके विरुद्ध उठ खड़ी हुईं। घूंघट खोलकर चौपाल में चढ़ गईं और पुरुषों के साथ मिलकर संघर्ष में कूद पड़ीं। सरकार ने उनके सामने घूटने टेकने पड़े।

इसी प्रकार गोमाता पर अत्याचार बढ़ता जारहा है। गोहत्या पर प्रतिबन्ध होते पर भी गायें काटी जाती हैं। धन के लोभी गोमांस को विदेशों में भेज रहे हैं। परन्तु विदेशों में गऊ का घी भारत आरहा है। गोरक्षा आंदोलन चलाया गया, परन्तु अभी तक हमें सफलता नहीं मिली। गऊ की रक्षा सरकार ने करनी चाहिए, परन्तु सरकार गोहत्यारों से घिरी हुई है। भारत सरकार के उच्च अधिकारी गोमांस खाते हैं। वे अपने स्वार्थ के लिये गोरक्षा नहीं होने देते।

आज हमारी धरती माता पर भी विदेशी शक्तियां खतरा बन रही हैं। पाकिस्तान को खतरनाक हथियार दिये जारहे हैं। इसी प्रकार मातृभाषा हिन्दी का भी दक्षिण भारत में विरोध किया जारहा है। सरकारी पत्र व्यवहार हिन्दी के स्थान पर अंग्रेजी में करके मातृभाषा का अपमान किया जारहा है।

यह सब कुछ हमारी कमजोरियों के कारण हो रहा है। हम यदि जाग जायें और इन बुराइयों के विरुद्ध संघर्ष में कूद जायें तो मातृशक्ति की विजय निश्चित है। क्या कारण है कि शादी के थोड़े दिनों के बाद केवल लड़कियां ही जलकर मरती हैं। कोई भी लड़का जलकर मरा हो, कभी कोई समाचार पढने को नहीं मिला। अत: हमें अपनी त्रुटियों को दूर करके अपनी मातृशक्ति को पहचान करनी होगी। इस भाषण का सारांश आकाशवाणी द्वारा प्रसारण किया गया।

कन्या गुरुकुल देहरादून की छात्राओं ने संस्कृत भाषा में भाषण देकर सभी का मन्त्रमुग्ध कर दिया। श्रोताओं ने उन्हें पारितोषिक भी दिया। रोहतक की कु० सुनीता आर्या ने भी अपने ओजस्वी भाषण में मातृशक्ति पर अपने विचार प्रभावशाली ढंग से सुनाये। श्रीमती सुशीला देवी आर्या ने "बहनों देश जगाना है" मधुर गीत सुनाकर समा बांध दिया।

श्रीमती विमला महता ने सभी वक्ताओं का धन्यवाद करते हुए आशा व्यक्त की कि महिलायें अपनी शक्ति को पहचान कर सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध मैदान में उतरेंगी।

व्यायाम सम्मेलन

१६ मई को दोपहर पश्चात् ६ बजे आर्यसमाज सिरसा के प्रधान डा० रणधीरसिंह सांगवान की अध्यक्षता में व्यायाम सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसके संयोजक सभा के उपमन्त्री प्रो० सत्यवीर विद्यालंकार थे।

श्री देवव्रत जी शास्त्री आचार्य गुरुकुल कुरुक्षेत्र के निर्देशन में ब्रह्मचारियों ने अपने बैंड के साथ व्यायाम प्रदर्शन का प्रारम्भ किया। गुरुकुल झज्जर के ब्र० रामदेव आर्य ने लोहे की जंजीरें पहले झटके में ही तोड़कर आश्चर्यचकित कर दिया। ब्र० ओमदर्शन ने नाक द्वारा वायु भरकर फुटबाल के ब्लैडर तथा पीतल की थालियों को फाड़ दिया। आचार्य विजयपाल ने दो चलती कारों को अपनी ब्रह्मचर्य की शक्ति से रोक दिया। कन्या गुरुकुल नरेला की ब्रह्मचारिणियों ने भी आकर्षक योगासन दिखाये। उपस्थित नर-नारियों ने इस व्यायाम प्रदर्शन की सराहना की।

राष्ट्रीय एकता सम्मेलन

१६ मई को रात्रि को ८ बजे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती की अध्यक्षता तथा आर्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पानीपत के प्रिंसिपल लाभसिंह जी के संयोजन में राष्ट्रीय एकता सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। इस महत्त्वपूर्ण सम्मेलन में ईश्वर ने आर्यजनता की परीक्षा लेने के लिये आंधी चलादी, परन्तु मंच पर बैठे कन्या गुरुकुल खरल के संचालक स्वामी रत्नदेव जी ने आर्यनेताओं तथा पण्डाल में बैठे आर्य नर-नारियों के जनसमूह की सुरक्षा के लिए आर्य वीरदल के स्वयं सेवक शामियानों की बल्लियों को पकड़ कर बैठ गये। लगभग आधा घण्टे बाद आंधी चलती रही और आर्य नर-नारी बहुत ही धैर्य से अपनी एकता का परिचय देते रहे। किसी प्रकार की अशांति न होने दी। इस आंधी के तूफान के समय उत्तरी भारत के प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक स्वर्गीय चौ. पृथ्वीसिंह बेधड़क के पोते ने उनका ३० वर्ष पुराना गाया हुआ राष्ट्रीय एकता का गीत सुनाकर सभी को मुग्ध कर दिया।

मेरठ से पधारे श्री वीरेन्द्ररत्न ने बहुत ही प्रभावशाली शब्दों में राष्ट्र-विरोधी शक्तियों को तुरन्त कुचलने का परामर्श दिया। इस सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्रसिंह जी ने भारत सरकार से मांग करते हुए कहा कि किसी भी मूल्य पर राष्ट्रविरोधी दलों तथा नेताओं से समझौता न करें। आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं ने बड़े से बड़ा बलिदान देकर राष्ट्र को स्वतन्त्र करवाया था। अब जबकि राष्ट्रीय एकता खतरे में है, उसकी रक्षा के लिए भी आर्य नर-नारी पुन: बलिदान करने के लिए तयार हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री छोटूसिंह ने भी राष्ट्र-रक्षार्थ आर्यजनता को तैयार रहने का आह्वान किया।

श्री राममेहर एडवोकेट ने कहा कि पंजाब सभा का शताब्दी समारोह गुरुदत्त भवन रावी रोड लाहौर में मनाया जाना चाहिए था और आर्य नर-नारियों का वहां स्वागत पंजाब सभा के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी करते, परन्तु लाहौर पाकिस्तान में मिल जाने के कारण यह सुअवसर हमें न मिल सका। आजकल पंजाब में भी आतंकवाद के कारण वहां भी

समारोह न हो सका। विवश होकर रोहतक में मनाना पड़ा। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने प्रो शेरसिंह सभा प्रधान का धन्यवाद करते हुए कहा कि गतवर्ष उत्तर प्रदेश सभा की शताब्दी लखनऊ में मनाई गई थी। उस समय हमने पंजाब सभा की भी शताब्दी मनाने का परामर्श दिया था। हरयाणा सभा ने यह समारोह रोहतक में आयोजित करके हमारी इच्छा पूरी करदी है। इसी प्रकार सभी सभाओं को अपनी शताब्दी मनानी चाहिए।

सम्मेलन के विशेष अतिथि स. दरबारासिंह सांसद एवं पूर्व मुख्य मन्त्री पंजाब ने इस अवसर पर आर्यजनता को बधाई देते हुए कहा कि जिस प्रकार आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं ने आजादी की लड़ाई में संघर्ष किया था, आज भी आर्यसमाज के भाई राष्ट्र रक्षा के लिए एकता सम्मेलन करके अपना महत्त्वपूर्ण योगदान कर रहे हैं। जेलों में मेरे साथ हरयाणा के अनेक आर्यसमाजी रहे हैं।

प्रो शेरसिंह ने स. दरबारासिंह का समारोह पर पधारने पर धन्यवाद करते हुए कहा कि इन्होंने अपनी जान की बाजी लगाकर पंजाब में उग्रवाद का मुकाबला किया है। वास्तव में इन जैसे राष्ट्रवादी नेताओं की आवश्यकता है, जो कि अपने राष्ट्र को सर्वोपरि समझें और साम्प्रदायिकता से दूर रहें। आज राष्ट्र की एकता को जहां अन्दर से खतरा है, वहां विदेशी ताकतें भी भारत के टुकड़े कराने की ताक में हैं। पंजाब के अकाली तथा उग्रवादी तत्त्व विदेशों से धन तथा हथियार प्राप्त करके उनके जाल में फंसे हुए हैं। आर्यसमाज सदा राष्ट्र-रक्षक रहा है। हमें अन्दरूनी राष्ट्र घातक तत्त्वों से सावधान रहना है। अतः यह सम्मेलन करके अपनी तैयारी करनी चाहिए।

अन्त में इस सम्मेलन के अध्यक्ष श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती ने बोलते हुए कहा कि राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता को सुदृढ़ करने के लिये पाकिस्तान की सीमा के साथ-साथ ५ किलोमीटर चौड़ी सुरक्षा पट्टी बनाई जाये तथा जम्मू काश्मीर में ४१ लाख भूतपूर्व सैनिकों को बसाया जाये। पंजाब को ५ वर्ष के लिये सेना के हवाले किया जाये, ताकि वहां स्थाई रूप से शांति स्थापित हो सके। उन्होंने आर्यजनता से अपील करते हुए कहा कि आर्यसमाज की श्रेष्ठ परम्परा के अनुसार बड़े से बड़ा त्याग करने के लिये तैयार रहना चाहिये। संस्कृत को राष्ट्रीय एकता का प्रतीक बताते हुए स्वामी जी ने कहा कि इसे नई शिक्षा नीति में उचित स्थान दिया जाये।

इस सम्मेलन की संक्षिप्त कार्यवाही १७ मई को रात्रि को आकाशवाणी रोहतक से भी प्रसारित की गई।

इस सम्मेलन में निम्नलिखित प्रस्ताव पारित हुए—

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के शताब्दी समारोह में आयोजित राष्ट्रीयएकता सम्मेलन में समुपस्थित सभी व्यक्ति सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास करते हैं कि—

१—स्वतन्त्रता के ४० वर्ष बाद राष्ट्र की एकता को आज जो खतरा उत्पन्न हुआ है वह पहले कभी नहीं हुआ था। गत पांच वर्षों में अलगाववादी तथा साम्प्रदायिक शक्तियां सक्रिय होगई हैं। भारत को अस्थिर एवं इसको तोड़ने के उद्देश्य से भारतविरोधी साम्राज्यवादी ताकतें इनको हथियार, धन तथा प्रशिक्षण देकर आग में घी डाल रही हैं।

वैसे तो ये गतिविधियां देश के अन्य भागों में भी चल रही है, किंतु पंजाब को इन्होंने अपना विशेष निशाना बनाया है। पंजाब की पथिक सरकार की दोगली एवं कमजोर नीति के कारण समस्या गम्भीरतर होती गई। सन्तोष है कि भारत सरकार ने आखिर उस दोगली सरकार को भंग करके राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया है। फिर भी वहां की जनता में सुरक्षा की भावना पैदा करने के लिये अनेक कठोर कदम उठाने पड़ेंगे।

अतः इस सम्मेलन की दृष्टि में केन्द्रीय सरकार तस्करों, देशद्रोहियों तथा असामाजिक तत्त्वों के गठजोड़ को तोड़ने के लिये तत्काल भारत पाक सीमा को सील करके गुजरात से काश्मीर तक पांच मील चौड़ी सुरक्षा पट्टी का निर्माण करें। आवश्यकता पड़ने पर दूसरे प्रभावित क्षेत्रों में सेना का उपयोग किया जावे।

२—साथ ही साम्प्रदायिकता को पल्लवित एवं पुष्पित करनेवाली अल्पसंख्यकों के नाम पर विशेषाधिकार प्राप्त शिक्षण संस्थाओं को अनुशासित करने हेतु संविधान के अनुच्छेद ३० को समाप्त करें।

३—सम्प्रदाय के नाम पर बने राजनीतिक दलों ने हमारे राजनीतिक ढांचे में साम्प्रदायिकता के विष का कैंसर पैदा कर दिया है। राष्ट्र को इस विष से बचाने के लिये साम्प्रदायिक राजनीतिक दलों पर कानूनी प्रतिबन्ध लगाया जाये।

(क्रमशः)

प्रवेश सूचना

आर्ष कन्या गुरुकुल नरेला में नव-वर्ष का प्रवेश आरम्भ हो चुका है, जिसकी अन्तिम तिथि ३१ मई है। केवल भोजन व्यय के रूप में ५० रुपये मासिक लिये जाते हैं। प्रवेश के समय एक वर्ष के भोजन तथा अन्य व्यय के लिए ११०० रुपये देने होते हैं। आश्रम का जीवन सात्विक तपोमय एवं शुद्ध वातावरण है। यहां भारत के नौ प्रांतों की कन्यायें प्राचीन वेदवेदांग एवं अंग्रेजी गणित आदि आधुनिक विषयों की शिक्षा प्राप्त करती हैं। संस्था महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक (हरयाणा) से सम्बद्ध (एफिलिएटिड) है। शिक्षक वर्ग पूर्ण योग्य (क्वालिफाईड) व अनुभवी हैं। अतः कन्यायें परीक्षा परिणाम में गुणवत्ता (मेरिट) सूची में उत्तम स्थान प्राप्त कर चुकी हैं। पांचवीं कक्षा में उत्तीर्ण कन्या प्रविष्ट की जाती हैं।

आर्यग्रंथों का अध्ययन भारतीय संस्कृति में कितना महत्त्वपूर्ण है, यह जानते हुए महर्षि दयानन्द ने "वेदों का पढ़ना-पढ़ाना सुनना-सुनाना परम धर्म कहा है। अतः विशेष रूप से महर्षि दयानन्द के अनुयायी एवं भारतीय संस्कृति के प्रेमी आर्य भाई-बहनों को अपनी कन्यायें प्राचीन आर्षग्रंथों के अध्ययन हेतु इस अखिल भारतीय संस्था में प्रविष्ट करवानी चाहिये।

—वैद्य कर्मवीर आर्य

आर्य वीरदल रोहतक नगर का वार्षिकोत्सव

आर्य वीरदल आर्यकुमार सभा रोहतक नगर का ३४वां वार्षिकोत्सव दिनांक ३ से १० मई तक बड़े समारोह के साथ किला रोड पर मनाया गया, जिसमें स्वामी दीक्षानन्द, स्वामी जीवनानन्द, पं. प्रभातशोभा विद्यालंकृता, पं ओम्प्रकाश आर्य, प्रो. जयदेव, ब्रह्मचय सत्यप्रिय के सुन्दर उपदेश हुए तथा पं. आशानन्द, सतपाल मधुर तथा श्यामवीर जी राघव ने मनोहर भजन व गीत सुनाये।

दिनांक ३-५-८७ मध्याह्नोत्तर भाषण प्रतियोगिता में विद्यालय स्तर के १३ तथा महाविद्यालय स्तर के ५ प्रतियोगियों ने भाग लिया। ४-५-८७ से ७-५-८७ तक वेदकथा हुई। इसके बाद उत्सव में आर्यवीर सम्मेलन, आर्य महिला सम्मेलन, राष्ट्र-रक्षा सम्मेलन, आध्यात्मिक सम्मेलन तथा समाज-सुधार सम्मेलनों का आयोजन किया गया है। १०-५-८७ को प्रातःकाल के सत्संग के बाद ऋषिलंगर का भी आयोजन किया गया। वार्षिक उत्सव का समापन १०-५-८७ को सायं ७ बजे पारितोषिक वितरण तथा शांतिपाठ के साथ सम्पन्न हुआ।

—मुलखराज आर्य कोषाध्यक्ष

शोक प्रस्ताव

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के पूर्व उपमन्त्री पण्डित रामचन्द्र आर्य भालोट निवासी की धर्मपत्नी का ३ मई को स्वर्गवास होगया। वह आर्यसमाज के कार्यों में सहयोग करती थी।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

सभा शताब्दी समारोह के लिए दानदाताओं की सूची

गतांक से आगे—

श्री उदमीराम एडवोकेट नारनौल		१००
,, विश्वम्भरदयाल	,,	१००
,, रामजीलाल वोहरा	,,	१००
डा. मूलचन्द	,,	१००
मा. अयोध्याप्रसाद	,,	१००
वैद्य हरिश्चन्द्र आर्य	,,	१००
श्री ओम्प्रकाश नई मण्डी	,,	१००
,, बाबूराम काठ मण्डी	,,	१००
,, हरप्रकाश	,,	१००
,, पुरुषोत्तमदास गर्ग	,,	१००
मा मोतीराम	,,	१००
,, ब्रह्मदेव	,,	५०
,, धमदेव	,,	५०
,, छाजूराम	,,	५०
डा. मुसद्दीलाल	,,	५०
श्री ओम्प्रकाश गर्ग	,,	१००
,, मोहनलाल ,,	,,	५०
,, कालीचरण रामजीलाल नारनौल		१००
,, गोविन्दराम	,,	१००
,, रतनलाल तायल	,,	१००
,, रामनारायण चौधरी	,,	५०
बा. नरेन्द्रसिंह वकील	,,	५०
श्रीमती सुविधादेवी	,,	५०
श्री परमजीत यादव		५०
,, विश्वम्भरदयाल अयोध्याप्रसाद नारनौल		१५०
,, बालमुकन्द शिवदत्त	,,	५०
,, पूर्णमल भगत	,,	५०
,, विश्वम्भरदयाल	,,	५०
,, ओम्प्रकाश गर्ग	,,	५०
आर्यसमाज महेन्द्रगढ़	,,	१००
पं ब्रह्मदेव	,,	५०
पं. हरिदत्त शर्मा	,,	५०
श्री दया प्रिंटिंग प्रेस	,,	५०
,, अर्जुनलाल सर्राफ	,,	५०
,, बालकिशनलाल हनुमानप्रसाद	,,	५०
,, पूर्णचन्द हेमचन्द	,,	५०
,, रामानन्द राधेश्याम	,,	१००
,, मुखराम मदनलाल	,,	१००
,, पुरुषोत्तम आर्य	,,	५०
श्रीमती सत्यादेवी आर्या	,,	५०
सैनी टैण्ट हाउस	,,	५०
श्री जवाहर आर्य पथिक	,,	१००
,, किशोरीलाल सैनी	,,	१००
डा. बुलाराम यादव	,,	५०
श्री रामफल वीरसिंह	,,	५०
,, लक्ष्मीनारायण गुप्त	,,	५०
,, जगदीशप्रसाद सैनी	,,	५०
,, नारायण	,,	५०
,, शामलाल सैनी	,,	१००
,, गिरधारीलाल संघी	,,	५०
,, चिरंजीलाल शर्मा	,,	५०
,, प्रेमनाथ वकील	,,	१००
,, जीवनलाल रामचन्द	,,	१००
श्री मोहनलाल मदनलाल	नारनौल	५०
,, महादेव जगदीश	,,	५०
,, सन्तलाल सूरजभान	,,	५०
,, महादेवप्रसाद उदमीराम	,,	५०
,, गोपाराम रामचन्द	,,	५०
,, विशनकुमार रुडमल	,,	५०
,, सुरेशकुमार दिनेशकुमार	,,	५०
,, ब्रह्मप्रकाश ताराचन्द	,,	५०
२५) की रसीदों द्वारा	,,	३०००
१०) ,, ,, ,,	,,	१५००

नोट—सर्वहितकारी के ७ मई के अंक में नारनौल के दानियों के नाम के आगे नारनौल शब्द भूल से लिखा नहीं गया था। अतः अब पुनः ऊपर लिखित सूची प्रकाशित की गई है। नारनौल से कुल ९५००) दान प्राप्त हुआ है।

इसी प्रकार स्वामी महावीर जी द्वारा संगृहीत राशि २५०) के आगे स्वामी सेवानन्द जी का नाम भूलवश छप गया था। स्वामी महावीर जी द्वारा अन्य दान राशि ३३१ के स्थान पर २३०) भी भूल से छप गया। श्री स्वामी महावीर जी के साथ धनसंग्रह में श्री रतिराम आर्य, श्री बलवीर आर्य चक्कीवाले (दुल्हेड़ा) रहे।

श्री सुखवीरसिंह मुजफ्फरनगर (सभा कार्यालय में प्राप्त)	११
आर्यसमाज पुन्सीका जि. महेन्द्रगढ़	१०१
आर्यसमाज जलियावास जि. ,,	१०१
श्री कृष्ण ग्राम ईशापुर (दिल्ली)	१०
,, बलवीरसिंह ग्राम बाढसा जि रोहतक	१०
बहन उर्मिलारानी आर्यसमाज हसनपुर	११
प्रिंसिपल होशियारसिंह बाजीदपुर (दिल्ली)	१०१
वानप्रस्थी रामकिशन दीनानगर	५०
आर्यसमाज हांसी जि. हिसार	५००
बहन लक्ष्मीदेवी आर्या स्वतन्त्रता सेनानी रोहतक	१५१
श्रीमती ओमपति ग्राम गुमाना जि सोनीपत	११
ला. बद्रीप्रसाद आर्य सभा कोषाध्यक्ष द्वारा संगृहीत राशि	४८१-९५
आर्यसमाज जैकमपुरा गुडगांव छावनी	२०००
,, नई कालोनी ,,	१०००
,, अर्जुननगर ,,	७००
,, रामनगर ,,	७००
,, माडल टाउन ,,	७००
,, अर्बन इस्टेट श्रद्धानन्द पुरम गुडगांव	५००
,, शिवाजी नगर ,,	४००
,, दीवान भीमसैन ,,	५००
जेम्पू वैलफेयर एसोशियसन ,,	२५०
श्री ए. एन. वर्मा शंकर मार्किट नई दिल्ली	५१
आर्यसमाज शाहबाद मारकण्डा जि. कुरुक्षेत्र	१०००
,, थानेसर ,,	११००
श्री जयभगवान् नरेशकुमार सालवन जि. करनाल	२१
,, रामचन्द्र खोखराकोट रोहतक	२०
श्रीमती विमलाबाई ,,	११
श्री धर्मचन्द मोरवाल लालचन्द कालोनी रोहतक	१००
,, रणवीर शास्त्री द्वारा म. सूबेसिंह गढी बोहर जि. रोहतक	१००
,, लालचन्द नांदल ,,	१००
श्रीमती शांति राठी पूर्व विधायक द्वारा ५) की रसीदों द्वारा	५००
वानप्रस्थी महावीर ,, ,,	१७०
आचार्य बलदेव गुरुकुल महाविद्यालय कालवा जि. जींद	२००
उपनिरीक्षक पुलिस श्री बनीसिंह डबास (माजरा दूबलधन)	१००
श्री घनश्यामदास प्रधान आर्यसमाज शिवाजी कालोनी रोहतक (रसीद नं. ४२०१ से ४३०० तक)	५००
श्रीमती रक्षादेवी कृष्णा कालोनी रोहतक	२१
श्री ज्ञानीराम आर्य ग्राम महमुदपुर जि. सोनीपत द्वारा संगृहीत राशि	५००

श्री दरयावसिंह लडवाल डेरी मोहल्ला रोहतक	१०१
ला. रामकिशन आर्य बहादुरगढ मण्डी जि. रोहतक	५००
सेठ श्री किशनदास मन्त्री हरयाणा सरकार	११००
ला. रामकुमार सुपुत्र ला. शेरसिंह बाबरा रोहतक	४००
मै. डावडा फाइनैन्स कम्पनी ,,	२५०
,, दरयावसिंह वजीरसिंह काठ मण्डी ,,	५००
,, लछमनदास उदयसिंह ,, ,,	५००
श्री भगवानसिंह सभा सम्पत्ति निरीक्षक वैदिकधाम कुरुक्षेत्र	१०१
,, टेकराम आर्य ग्राम सिवाना जि. रोहतक रसीदों द्वारा	१६०
,, सुरेशकुमार शास्त्री सभा उपदेशक रसीदों द्वारा संग्रह	५००
,, नरेन्द्र आर्य ग्राम मनाना जि. करनाल	२५
मा. रामस्वरूप मन्त्री आर्यसमाज मनाना जि. करनाल	५००
आर्यसमाज समालखा मण्डी ,,	२५०
श्री प्रेमसिंह ग्राम पावटी त. पानीपत ,,	१००
श्रीमती देवकी देवी चण्डीगढ़	५०
,, विद्यावती आर्या ,,	१००
चौ. रूपचन्द एडवोकेट पंजाब हरयाणा हाईकोर्ट चण्डीगढ़	१००
श्रीमती पुष्पावती धर्मपत्नी ला. देशराज परवाणु (हि.प्र.)	१००
श्रीमती सावित्री देवी पचकूला जि. अम्बाला	५०
श्री हेमन्तराम आर्य सिरसा	२५
,, प्रदीपकुमार एवं श्री मुनीशकुमार कालका जि. अम्बाला	२५
आर्यसमाज सिहोल जि. फरीदाबाद	५१
महाशय बलवन्तसिंह आर्य ग्राम मकडौली कलां जि. रोहतक	२००
गुरुकुल आर्यनगर जि हिसार	१६००

मा० निहालसिंह आर्य तथा श्री जिलेसिंह द्वारा धनसंग्रह

श्री मोहनलाल कमरुद्दीन नगर (नांगलोई) दिल्ली	१००
,, सुखनसिंह राव ,, ,, ,,	५०
श्रीमती विमला आर्या अध्यापिका कमरुद्दीन (नांगलोई) दिल्ली	५०
श्री महासिंह प्रधान ,, ,,	५०
,, चन्द्रभान आर्य अध्यापक ,, ,,	५०
,, प्रतापसिंह ,, ,, ,, ,,	५०
,, रामकुमार ,, ,, ,,	५०
,, अत्तरसिंह ,, ,, ,,	५०
,, चत्तरसिंह ,, ,, ,,	५०
,, कर्णसिंह ,, अध्यापक ,, ,,	५०
,, हरिसिंह ,, खरहर जि. रोहतक	२५
,, सुरेन्द्रकुमार आर्य जसोर खेड़ी रोहतक	२५
,, डा कमरुद्दीन नगर (नांगलोई) दिल्ली	२५
,, समेरसिंह आर्य अध्यापक जहाजगढ़ रोहतक	२५
,, कृष्णकुमार ,, जसोर खेड़ी जि. ,,	२५
,, नेतराम ,, ग्राम मुंडका दिल्ली	२५
,, महेन्द्रसिंह पुलिस कर्मचारी कमरुद्दीन नगर (दिल्ली)	२५
,, जगतसिंह ग्राम ,, ,,	२५
मा. कपूरसिंह आर्य ग्राम जसोर खेड़ी जि. रोहतक	२५
,, जयप्रकाश ,, ,, रोहणा जि. सोनीपत	२५
म. रामकिशन आर्य नांगलोई (दिल्ली)	२५
मा. वेदप्रकाश धर्मप्रकाश आर्य अटायल जि. रोहतक	२५
श्री रामकिशन आर्य कमरुद्दीन नगर (नांगलोई) दिल्ली	२५
,, नवलसिंह ,, ,, ,, ,,	२५
,, भीमसिंह ,, ग्राम मंगोलपुर कलां ,,	२५
,, ताराचन्द ,, ,, ,, ,,	२५
,, केदारसिंह ,, ,, ,, ,,	२५
,, शिवचरण ,, ,, ,, ,,	२५
,, मा. आजादसिंह आर्य ग्राम मुडका ,,	२०
,, मा. अनूपसिंह आर्य कमरुद्दीन नगर (दिल्ली)	३०
,, मा. कर्णसिंह ,, ग्राम सांघी जि रोहतक	२०
,, सन्तराम ,, ,, नांगलोई (दिल्ली)	२०

महाशय नेकीराम आर्य बिसोहा द्वारा धनसंग्रह

श्री चन्द्रसिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज बिसोहा जि. रोहतक	१०१
श्री बुधराम आर्य मन्त्री आर्यसमाज बिसोहा	१०१
महाशय रघुवीरसिंह आर्य कोषाध्यक्ष आर्यसमाज बिसोहा जि रोह.	१०१
,, नेकीराम ,, पुस्तकाध्यक्ष ,, ,, ,,	१०१
सूबेदार रामनारायण ,, ,, ,, ,,	१०१
श्री रूपराम ,, ,, ,, ,,	१०१
,, भरतसिंह आर्यसमाज नयाबांस ,,	१०१

श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती द्वारा संगृहीत राशि

श्री समेरसिंह आर्य ग्राम स्वरूपगढ जि भिवानी	१७००
,, सत्यवीरसिंह आर्य ,, ,,	१०००
स्वामी रत्नदेव जी सवालक कन्या गुरुकुल महाविद्यालय खरल जि जींद	१०००
श्रीमद्दयानन्द वेद महाविद्यालय गौतमनगर नई दिल्ली	१०००
वैद्य बलवन्तसिंह आर्य पहलवान	१०००
श्री बलवानसिंह ,, ग्राम टिटोली जि. रोहतक	११००
सूबेदार धीरजसिंह आर्य कन्या गुरुकुल नरेला (दिल्ली)	१०००
आर्यसमाज गांवरा जि रोहतक	१०००
श्री रणसिंह सुपुत्र श्री कुंजलाल यादव	१०५
,, दुलीचन्द आर्य	१०५
श्रीमती सुनीता आर्या	१०५
श्री कपूरसिंह मलिक	१०५
,, परसराम आर्य	१०५
,, अजीतसिंह ,,	१०५
,, गुणपालसिंह वकील चरखी दादरी जि. भिवानी	१०५
,, आत्मप्रकाश आर्य	१०५
पहलवान् लखीराम आर्य सांगवान	१०५
श्री हरजीराम मुख्यध्यापक	१०५
,, अमरसिंह आर्य ढाणी	१०५
,, टेकराम प्रधान ट्रक यूनियन	१०५
,, रामप्रताप गुप्त	१०५
,, जयनारायण	१०५
,, हरिश्चन्द गौड़	१०५
,, सत्यदेव शास्त्री	१०५
,, भीमसेन आर्य	१०५
,, रामकुमार शर्मा	१०५

श्री कुलभूषण आर्य मन्त्री आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत द्वारा संगृहीत राशि

रसीद नं. ६५०१ से ६६०० तक की राशि	५००
,, ६६०१ से ६७०० ,, ,, ,,	५००
,, ६७०१ से ६८०० ,, ,, ,,	५००
,, ६८०१ से ६९०० ,, ,, ,,	५००
,, ६९०१ से ७००० ,, ,, ,,	५००
,, ७००१ से ७१०० ,, ,, ,,	५००
श्री शिवदत्त पानीपत जि करनाल	४००
आदर्श आर्य चेरिटेबल ट्रस्ट पानीपत जि. करनाल	११००
श्री देवेश आर्य पानीपत जि करनाल	१५००
,, धर्मसिंह राठी पूर्व विधायक माडल टाउन पानीपत द्वारा	४००
इलागुप्त आर्य पानीपत जि करनाल द्वारा	६००
श्री अशोककुमार पानीपत जि. करनाल	१००
लक्ष्मी किताब घर पानीपत जि. करनाल	१००
दीपक बूक्स पानीपत जि करनाल	१००
राधा इण्टर पानीपत ,,	१००
श्री सुरेन्द्र सिंगला पानीपत ,,	३००
,, अजयकुमार पानीपत ,,	१००

(क्रमशः)

सभी दानदाताओं का सभा की ओर से बहुत-बहुत धन्यवाद। आशा है अन्य दानी महानुभाव भी इस सूची में अपना नाम लिखा कर पुण्य के भागी बनेंगे।

—रघुवीरसिंह संयोजक समारोह

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का

बिक्री हेतु वैदिक साहित्य

क्र०	पुस्तकों का नाम	मूल्य
१.	दी वेदाज (अंग्रेजीभाषा में)—स्वामी भूमानन्द जी	१-००
२	दी प्रिंसिपल्ज आफ आर्यसमाज—पं० चमूपति एम०ए०	१-५०
३.	जीवन ज्योति (वेदमन्त्रों की व्याख्या)—पं० चमूपति एम०ए०	३-००
४.	निहारिकावाद और उपनिषद्—पं० चमूपति एम०ए०	०-५०
५	आर्यसमाज की विचारमाला—प० क्षितीशकुमार वेदालंकार	१-००
६.	निजाम की जेल में—लेखक प० क्षितीशकुमार ,,	२०-००
७.	ईसाइयों की प्रचार प्रणाली—पं० जगत्कुमार शास्त्री	००-१०
८.	आर्यसमाज और अस्पृश्यता निवारण—पं. ओम्प्रकाश त्यागी	००-५०
९.	बलिदान जयन्ती स्मृति ग्रंथ (आर्य शहीदों का परिचय)	४-५०
१०.	ईश्वर की सत्ता—डा० रणजीतसिंह	१-००
११.	हरयाणा के आर्यसमाज का इतिहास—डा० रणजीतसिंह	५-००
१२.	धर्म-प्रवेशिका —डा० रणजीतसिंह	३-००
१३.	धर्म-भूषण ,,	५-००
१४.	पंजाब का आर्यसमाज —प्रि० रामचन्द्र जावेद	२-००
१५.	आदर्श धातु रूपावली —महावीर आजाद शास्त्री	२-००
१६.	वैदिक उपासना पद्धति—डा० सुदर्शनदेव आचार्य	३-००
१७.	स्मारिका (हरयाणा प्रांतीय आर्यसमाज शताब्दी समारोह)	१-००
१८.	मूर्तिपूजा —सम्पादक पं० जगदेवसिंह सिद्धांती	००-५०
१९.	वेदस्वरूप निर्णय ,,	००-७५
२०.	वेदाविर्भाव ,,	१-००
२१.	वेदभाष्य पद्धति ,,	१-००
२२.	ईसाई पादरियों को आर्यसमाज की चुनौती-स्वा० दयानन्द	०-१०
२३.	गोकरुणानिधि—स्वामी दयानन्द सरस्वती	०-२०
२४.	सत्यार्थप्रकाश ,,	६-००
२५.	महर्षि दयानन्द आत्मकथा ,,	०-५०
२६.	हमारा फाजिल्का —योगेन्द्रपाल	१-००
२७.	बड़ —स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती	१-५०
२८.	वीर हेमू ,,	००-७५
२९.	पीपल ,,	१-५०
३०.	मिच ,,	१-५०
३१	श्लीपद वा हाथीपांव की चिकित्सा ,,	०-२०
३२.	बिच्छू विष चिकित्सा ,,	०-५०
३३.	लवण ,,	१-२५
३४.	विदेशों में मैंने क्या देखा ,,	२-५०
३५.	नैरोबी यात्रा ,,	१-५०
३६.	ब्रह्मचर्य साधन ६-११ ,,	१०-००
३७.	,, १-२ ,,	१-००
३८.	,, ३ ,,	१-००
३९.	,, ४ ,,	२-५०
४०.	,, ५ ,,	२-००
४१.	,, ६ ,,	३-००
४२.	,, ७-८ ,,	२-००
४३.	,, ९ ,,	३-००
४४.	,, १० ,,	१-५०
४५.	,, ११ ,,	२-००
४६.	हल्दी ,,	१-५०
४७.	नीम ,,	१-२५
४८.	पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय—प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु	१-५०
४९	नास्तिक मत समीक्षा—पं० हरिदेव सर्राफ	००-१५
५०.	विश्व को आर्यसमाज का सन्देश—महात्मा वेदभिक्षु जी	००-२५

प्राप्ति स्थान

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्दमठ, सिद्धांती भवन, रोहतक।

आदर्श विवाह संस्कार

आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री रामप्रसाद आर्य बड़ेसरा भिवानी के सुपुत्रों क्रमशः आयुष्मान् नरेन्द्र व भूपेन्द्र का शुभविवाह संस्कार बामला भिवानी निवासी श्री रघुवीरसिंह की सुपुत्री सुशीला व सविता के साथ १० मई रविवार को आर्यसमाज के प्रकांड विद्वान् श्री राजवीर जी शास्त्री द्वारा पूर्ण वैदिकरीति से सम्पन्न हुआ। विवाह समारोह को दोनों पक्षों की ओर से पूर्ण सादगी से मनाया गया। विवाह का विशेष आकर्षण शुद्ध देसी घी का प्रयोग था। दोनों ही परिवार आर्य हैं।

इसी अवसर पर श्री रामप्रसाद जी ने ७ मई से श्री आचार्य हरिदेव जी के ब्रह्मत्व मे गुरुकुल गौतमनगर के वेदपाठी ब्रह्मचारियों द्वारा अपने घर सामवेद पारायण यज्ञ कराया। जिसकी पूर्णाहुति ११ तारीख को वर-वधू के आशीर्वाद के साथ हुई। इस अवसर पर आस-पास के क्षेत्र के प्रतिष्ठित आर्य नर-नारियों ने भाग लिया। आचार्य हरिदेव, पं. मूलचन्द गौतम, मा. पूर्णसिंह आर्य, धर्मव्रत शास्त्री, आचार्य सत्यवीर शास्त्री व आचार्या सुमित्रा एम. ए. ने वर-वधू को आशीर्वाद देते हुए इस प्रकार के आदर्श विवाह की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इस अवसर पर श्री आर्य जी ने निम्न संस्थाओं को मुक्त-हस्त से दान दिया।

गुरुकुल वेद विद्यालय गौतमनगर नई दिल्ली ५०१), आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा शताब्दी समारोह १०१), आर्य कन्या गुरुकुल नरेला ५१), आर्यसमाज नरेला ५१)।

इस आयोजन की सर्वत्र चर्चा है। मैं श्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा व आर्यजगत् की ओर से श्री रामप्रसाद आर्य को इस साहस पूर्ण आयोजन के लिए बधाई देता हूं।

—रणवीरसिंह शास्त्री

गोरक्षा का सराहनीय कार्य

वध के लिये ले जारहे ८६ बछड़े-बछड़ी मुक्त कराये गये। कापाल १० मई, थाना सदर कापाल पुलिस ने छापा मारकर उत्तर प्रदेश सीमा पर यमुना नदी के घाट कुण्डा तथा मंगलौरा से ९ ट्रकों में लदे गोधन को अपने कब्जे में ले लिया। पुलिस के अनुसार इन ट्रकों में ६५ बछड़े, ४ बैल, २१ बछड़ी थी। ड्यूटी मजिस्ट्रेट ने सभी बछड़े, बैलों बछड़ियों को स्वामी गोरक्षानन्द सरस्वती घरोंडा के गोसदन की सुपुर्दी में दे दिया। पुलिस ने इन्हें ले जाये अपराधी तथा ट्रक चालक व ट्रक को अपने कब्जे में ले लिया है। (पंजाब केसरी ११ मई)

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली का चुनाव

प्रधान—श्री राममूर्ति वेला
उपप्रधान—सर्वश्री हंसराज चौपड़ा, सरदारीलाल वर्मा, रत्नलाल सहदेव
मन्त्री—श्री खैरायतीलाल भाटिया
उपमन्त्री—श्री त्रिलोकी नारायण, विरेश बुग्गा, जातिबन्धु भाटिया, अरुण वर्मा।
कोषाध्यक्ष—श्री रिपुदमन सरीन
पुस्तकाध्यक्ष—श्रीमती प्रकाशवती बुग्गा
अधिष्ठाता—श्री राजीव भाटिया

—के. एल. भाटिया मन्त्री

शोक समाचार

११-५-८७ को श्री ओम्प्रकाश पातु मिताथल जि. भिवानी वाले इस संसार से चले गये हैं। वह अपने पीछे दो पुत्र, दो पुत्रियां छोड़ गये हैं। ईश्वर से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे और इस असह्य दुःख को सहन करने की क्षमता प्रदान करे।

—कुलवन्तराय आर्य

आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन

आर्यसमाजों के सहयोग से सभा शताब्दी समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न होगया है। तदर्थ आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं के अधिकारियों का हार्दिक धन्यवाद।

समारोह के लिये धनसंग्रह की रसीदें तथा उन द्वारा प्राप्त धन का विवरण जिन आर्यसमाजों अथवा अन्य आर्य महानुभावों ने सभा कार्यालय को नहीं भेजा है उनसे निवेदन है कि वे अपनी रसीद बुक अथवा अपने प्राप्त धनराशि के साथ ३१ मई तक सभा कार्यालय रोहतक भेजने का कष्ट करें, ताकि शताब्दी समारोह के हिसाब को आडिट करवाया जा सके।

—रघुवीरसिंह संयोजक शताब्दी समारोह

ये कैसेट आगामी शताब्दी समारोह में उपलब्ध होंगे।

शराब मानव-समाज की शत्रु है
इससे अवश्य बचें।

वैदिक संस्कार प्रशिक्षण शिविर

स्थान—दयानन्दमठ, रोहतक

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि दयानन्दमठ रोहतक की ओर से दिनांक २२ जून से २८ जून, १९८७ दिनांक तक एक सप्ताह का संस्कार प्रशिक्षण शिविर लगाया जारहा है, जिसमें आर्य, पुरोहित, शास्त्री, विशारद, मध्यमा, मैट्रिक (संस्कृत) परीक्षा उत्तीर्ण शिक्षार्थी भाग ले सकेंगे। आवास, सादा भोजन आदि की व्यवस्था दयानन्दमठ की ओर से होगी। ऋतु अनुकूल वस्त्र तथा संस्कार विधि और अभ्यास पुस्तिका अपने साथ लावें। प्रवेश के लिए आवेदन-पत्र अधिष्ठाता दयानन्दमठ के नाम १५ जून, १९८७ तक भेज देवें।

सुदर्शनदेव आचार्य
प्रशिक्षक

महाशय भरतसिंह
मन्त्री दयानन्दमठ, रोहतक

(पृष्ठ १ का शेष)

रोष करता है कि भारतीय संवैधानिक नीति के अनुसार समूचे राष्ट्र में विशेषत: हरयाणा में पूर्ण नशाबन्दी लागू करें।

२—इस प्रस्ताव द्वारा हम सार्वदेशिक सभा से भी अनुरोध करते हैं कि शराबबन्दी के लिए चलाये जानेवाले आंदोलन के लिये सर्वप्रथम हरयाणा को पवित्र भूमि को चुनें।

३—केन्द्रीय तथा प्रांतीय सरकारें प्राथमिक विद्यालय स्तर से विश्वविद्यालय स्तर तक सभी कक्षाओं में नैतिक शिक्षा अनिवार्य करें तथा शिक्षण व्यवसाय में योग्य तथा चरित्रवान् व्यक्तियों को नियुक्ति करें, जिससे युवा-पीढ़ी का चरित्र-निर्माण हो।

४—राष्ट्रीय वातावरण की पवित्रता तथा युवकों से चरित्र का निर्माण तथा रक्षा के लिये भारत सरकार गन्दे चलचित्रों का प्रदर्शन बन्द करें तथा दूरदर्शन एवं आकाशवाणी द्वारा चरित्र विरोधी दृश्यों तथा गानों को बन्द करके चरित्र-निर्माण करनेवाले कार्यक्रमों का प्रदर्शन करें।

५—यह सम्मेलन सरकार से यह भी अनुरोध करता है कि युवकों में व्याप्त बेरोजगारी की समस्या तथा निराशा का समाधान करे, ताकि युवक तोड फोड के कार्यों में न अटक कर राष्ट्र के रचनात्मक कार्यों में संलग्न हों। युवाशक्ति को बनाने के लिये आर्यसमाज भी युवकों की समस्या में सक्रिय सहयोग दें, ताकि आर्य वीरदल की शक्ति बढ़े।

शिक्षा-नीति में संस्कृत के प्रति घोर अन्याय देश-व्यापी आंदोलन होगा

देहरादून, २७ अप्रैल। वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून में एक सप्ताह से चल रहे सामवेद पारायण यज्ञ तथा साधना शिविर के समापन समारोह में आज हजारों श्रोताओं की उपस्थिति में एक प्रस्ताव पारित कर नई शिक्षा-नीति में किये गये 'संस्कृत के पूर्ण बहिष्कार' पर तीव्र क्षोभ व्यक्त किया गया और सरकार को चेतावनी दी गई कि यदि उसने नीति में अविलम्ब संशोधन न किया तो देशव्यापी स्तर पर आंदोलन का उसे सामना करना पड़ेगा।

प्रस्ताव में कहा है—संस्कृत भाषा भारतीय संस्कृति की वाहिका ही नहीं, विश्व इतिहास एवं प्राचीनतम ज्ञान का भण्डार भी है। अनेक विदेशी विद्वानों ने भी इसे सब भाषाओं की जननी स्वीकार किया है। भारत राष्ट्र संसार में अपना मस्तक ऊंचा करने के लिये संस्कृत को सगर्व प्रस्तुत कर सकता था, परन्तु यह तभी सम्भव था जब वह स्वयं इसे सर्वात्मना अपनाले।

प्रस्ताव में आगे कहा गया है कि दुर्भाग्य का विषय है कि भारत सरकार की नई शिक्षा-नीति के कर्णधार स्वयं संस्कृत-भाषा और उसकी महत्ता से अनभिज्ञ हैं और उन्होंने नई शिक्षा-नीति में तो संस्कृत का एकदम बहिष्कार कर दिया है। यह बात समझ में आनेवाली नहीं है कि प्रारम्भिक कक्षाओं में विद्यार्थी को संस्कृत से दूर रखा जायेगा तो संस्कृत में एम० ए० या डाक्टरेट की कल्पना कैसे की जा सकती है।

अन्त में भारत सरकार से जोरदार मांग की गई है कि नई शिक्षा-नीति में अविलम्ब संशोधन करें और संस्कृत को पढ़ने-पढ़ाने की सुविधा प्रत्येक स्तर पर उपलब्ध करें, अन्यथा उसे देशव्यापी स्तर पर आंदोलन का सामना करना होगा।

प्रस्ताव पर वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी के उपप्रधान एवं आर्य-समाज देहरादून के प्रधान श्री यशपाल आर्य ने और आश्रम के मन्त्री श्री देवदत्त बाली ने जोरदार भाषण किये।

तपोवन के इस वार्षिक समारोह में इस बार अभूतपूर्व संख्या में जनता एकत्र हुई। श्री देवद बाली ने आगामी कार्य की योजना तथा आश्रम की आवश्यकताओं पर प्रकाश डाला।

—देवदत्त बाली पत्रकार मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 रजि० न० P/RTK 49 फोन ४६९२



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सर्वहितकारी
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री सह-सम्पादक—...

वर्ष १४, अङ्क २७ ७ जून, १९८७ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश मे ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

चौ० चरणसिंह : एक घटनापूर्ण जीवन का अन्त

देश में किसानों के नेता एवं प्रवक्ता के रूप में विख्यात श्री चरणसिंह का जन्म २३ दिसम्बर १९०२ को उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले के नूरपुर गांव में एक किसान परिवार में हुआ था। मेरठ के सरकारी हाई स्कूल से मैट्रिक करने के बाद १९२३ में वह विज्ञान के स्नातक हुए। आगरा विश्वविद्यालय से १९२५ में उन्होंने इतिहास विषय में एम. ए. किया और उसी विश्वविद्यालय से वकालत पास की, जिसके बाद श्री चरणसिंह ने गाजियाबाद कस्बे में वकालत शुरु की। वह १९२९ में मेरठ चले गये और उसी साल कांग्रेस में शामिल होकर राष्ट्रीय आंदोलन में कूद पड़े।

इसी बीच १९२५ में उनका गायत्री देवी से विवाह हुआ। वह १९३२ से १९३६ के बीच मेरठ जिला परिषद् के उपाध्यक्ष रहे। श्री चरणसिंह ने महात्मा गांधी के नेतृत्व में आजादी के आंदोलन में भाग लिया और कई बार जेल गये। वह १९३७ में पहली बार छपरौली विधानसभा (जिला) मेरठ से तत्कालीन संयुक्त प्रांत (अब उत्तर प्रदेश) की विधानसभा के सदस्य चुने गये। बाद में १९४६, १९५२, १९६२ और १९६४ में भी उन्होंने विधानसभा में इसी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया।

१९४८ में तत्कालीन मुख्यमन्त्री पण्डित गोविन्द वल्लभ पंत ने उन्हें संसदीय सचिव बनाया। बाद में वह श्री पंत की सरकार में न्याय एवं सूचना मन्त्री बने। इसके बाद वह राजस्व एवं कृषि मन्त्री बने। सन् १९५९ में उन्होंने मुख्यमन्त्री सम्पूर्णानन्द के साथ मतभेद के कारण मन्त्रिमण्डल से इस्तीफा दे दिया।

वह १९६० में श्री चन्द्रभानु गुप्त की सरकार में गृह और कृषि मन्त्री बने तथा १९६३ में श्रीमती सुचेता कृपलानी ने उन्हें कृषि और वन मन्त्री के रूप में अपने मन्त्रिमण्डल में स्थान दिया। वह १९६६ में स्थानीय स्वायत्त शासन विभाग के मन्त्री रहे।

कांग्रेस से इस्तीफा

१९६७ में जब चन्द्रभानु गुप्त पुन. उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री बने। उन्होंने श्री चरणसिंह को अपने मन्त्रिमण्डल में शामिल किया, किन्तु १८वें दिन उन्होंने मन्त्री पद से त्यागपत्र दे दिया और कांग्रेस छोड दी। उस समय उन्होंने १६ समर्थकों के साथ मिलकर जन कांग्रेस नाम की पार्टी बनाई, तथा उन्होंने और गैर कांग्रेसी विधायकों को अपनी ओर ले लिया और संयुक्त विधायक दल संविद का गठन किया। जिसमें उन

चौ० चरणसिंह स्वामी दयानन्द और महात्मा गांधी के सच्चे अनुयायी थे।



चौ० चरणसिंह जी से मेरा सम्बन्ध ५० वर्ष से अधिक रहा। स्वामी दयानन्द और महात्मा गांधी में उनकी बड़ी गहरी आस्था थी और उनके विचारों पर इन दो विभूतियों का प्रभाव रहा। वे एक पुराने स्वतन्त्रता सेनानी थे और साम्प्रदायिकता और जातिवाद के कट्टर विरोधी थे। उन्होने सब शिक्षा-संस्थाओं के नामो मे से जातियो के नाम निकलवा दिये थे। वे आतंकवाद और अलगाववाद के विरुद्ध कड़े शब्दो में निर्भीक होकर बोलते थे। देशभक्ति उनकी रग-रग में समाई हुई थी। वे किसान और मजदूर के उत्थान के लिए जीवनभर लगे रहे और समाज के ये उपेक्षित वर्ग उनको अपना मसीहा मानने लगे थे। चौ. साहब के निधन से राष्ट्र को और पिछड़े दलित और उपेक्षित वर्ग को जो हानि हुई है, निकट भविष्य मे उसकी क्षति-पूर्ति सम्भव नहीं दिख रही। भारत की राजनीति पर उनकी छाप सदा बनी रहेगी और एक महान् स्वतन्त्रता सेनानी राष्ट्रभक्त और दीन-दुःखियों के मसीहा के रूप में उनकी याद बनी रहेगी।

—प्रो. शेरसिंह, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

की जन-कांग्रेस भी शामिल थी। श्री चरणसिंह संविद के नेता चुने गये और तीन अप्रैल १९६७ में उन्होंने उत्तर प्रदेश के गैर कांग्रेसी मुख्यमन्त्री के पद की शपथ ग्रहण की। एक साल के भीतर ही संविद की वह सरकार गिर गई और राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू किया गया।

श्री चरणसिंह ने १९६८ में भारतीय क्रांति दल (भाक्रांद) गठित किया। फरवरी १९६९ में उत्तर प्रदेश में मध्यावधि चुनाव हुआ और भाक्राद ९८ स्थानों पर विजय प्राप्त कर विधानसभा में दूसरी सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभर कर सामने आया। किन्तु विपक्षी दलों में एकता नहीं हो सकी और श्री चन्द्रभानु गुप्त ने ही कांग्रेस की सरकार बनाई।

फिर कांग्रेस से तालमेल

१९६९ में कांग्रेस के विभाजन के बाद चौधरी साहब का सितारा फिर चमका और फरवरी १९७० में वह कांग्रेस के समर्थन से पुन: राज्य के मुख्यमन्त्री बनाये गये। सात महीने के भीतर ही उनकी सरकार भी गिर गई और राज्य में अक्तूबर १९७० में राष्ट्रपति शासन फिर लागू किया गया।

इसके बाद देश की राजनीति में श्रीमती इन्दिरा गांधी का प्रभाव हुआ और १९७१ में लोकसभा चुनाव में कांग्रेस के बड़े-बड़े स्तम्भ धराशायी हुए। २९ अगस्त १९७४ को कांग्रेस का विकल्प तैयार करने के प्रयासों के तहत अनेक दलों के विलय से भारतीय लोकदल पार्टी का गठन हुआ और श्री चरणसिंह इसके अध्यक्ष बने। इसमें क्रांति दल, समाजवादी दल, उत्कल कांग्रेस सहित कई दल शामिल हुए।

जून १९७५ में आपात्काल लागू होने के बाद विरोधी नेताओं के साथ उन्हें भी गिरफ्तार किया गया, पर १९७६ में उन्हें जेल से रिहा कर दिया गया।

जनता सरकार में

१९७७ में लोकसभा का चुनाव हुआ, स्वर्गीय जयप्रकाश नारायण के मार्गदर्शन से विभिन्न गैर कम्युनिस्ट पार्टियों के गठबन्धन से बनी जनता पार्टी सत्ता में आई। २४ मार्च १९७७ को प्रधानमन्त्री मोरारजी देसाई की सरकार में श्री चरणसिंह गृहमन्त्री बने। इसके बाद पार्टी के दूसरे नेताओं खासकर प्रधानमन्त्री श्री मोरारजी देसाई के साथ श्री चरणसिंह के मतभेद बढ़ने लगे और बढ़ते ही गये।

इस बीच २३ दिसम्बर १९७७ को श्री चरणसिंह के जन्मदिवस पर राजधानी में बोट क्लब पर किसानों की अभूतपूर्व और ऐतिहासिक रैली हुई, जिसमें लाखों किसानों ने भाग लिया। रैली में श्री चरणसिंह को ७० लाख रुपये की थैली भेंट की गई। इस धनराशि से उन्होंने एक ट्रस्ट बनाया तथा अंग्रेजी और हिन्दी में क्रमश: 'रियल इण्डिया' तथा 'असली भारत' के नाम से दो साप्ताहिक पत्रों का प्रकाशन शुरू किया।

प्रधानमन्त्री बने

प्रधानमन्त्री पद के लिए हुई रोमांचक रस्साकशी में श्री जगजीवन-राम पीछे रह गये और अगस्त १९७९ में चौधरी चरणसिंह कांग्रेस (इ) के समर्थन से प्रधानमन्त्री बन गये। यह आश्चर्य संयोग था कि जिस कांग्रेस के खिलाफ प्रभावी आंदोलन के बाद जनता सरकार सत्ता में आई, उसके एक वर्ग ने उसने ही मिलकर सरकार बनाई।

किन्तु शीघ्र ही कांग्रेस (इ) ने अपना समर्थन वापस ले लिया और श्री चरणसिंह की सरकार लोकसभा में अल्पमत में आगई। इस स्थिति में श्री चरणसिंह ने राष्ट्रपति नीलम संजीवरेड्डी से लोकसभा भंग करके नये चुनाव कराने की सिफारिश की। राष्ट्रपति ने उसे स्वीकार कर लिया और उन्हें नये चुनाव तक कामचलाऊ सरकार का प्रधानमन्त्री बने रहने के लिये कहा।

फिर लोकदल

इसके बाद श्री चरणसिंह ने लोकदल के नाम से फिर अलग पार्टी बनाई। जनवरी १९८० के संसदीय चुनाव में कांग्रेस (इ) भारी बहुमत से पुन: सत्ता में वापस आगई और जनता पार्टी के बड़े-बड़े स्तम्भ धराशायी हुए, पर तब भी चौधरी साहब और उनकी पत्नी गायत्री देवी दोनों लोकसभा के सदस्य निर्वाचित हुए।

इस बीच राजनीतिक उलटफेर के चलते श्री चरणसिंह ने अपनी मध्यस्थता में दलित मजदूर किसान पार्टी के नाम से एक और नयी पार्टी बनाई। वह भी अधिक दिन तक नहीं टिकी तो उन्होंने दिसम्बर १९८४ के संसदीय चुनाव की पूर्व संध्या पर फिर लोकदल को पुनर्जीवित कर दिया। आठवीं लोकसभा के चुनाव में श्री चरणसिंह विजयी रहे। उन्हें १९८६ में आंशिक लकवे के इलाज के लिये अमरीका जाना पड़ा तो कांग्रेस इ की सरकार ने उनका पूरा खर्च वहन करके परोक्ष रूप से उनकी देश के प्रति सेवाओं को ही मान्यता दी।

किसानों के मसीहा

किसानों के मसीहा श्री चरणसिंह ने जीवनभर ग्रामीण कृषक जनता के अधिकाधिक विकास और उत्थान पर जोर दिया। शहरों की विलासिता, फिजूलखर्ची और वैभव की चमक के वह हमेशा विरोधी रहे।

वह चाहते थे कि भारत के किसान अन्य विकसित देशों की तरह खेती पर कम से कम निर्भर रहें। वह ग्रामों में कुटीर उद्योगों और लघु उद्योगों को ज्यादा से ज्यादा बढ़ावा देने के पक्षधर थे। वह चाहते थे कि बड़े उद्योग केवल निर्यात के लिये स्थापित किये जायें। उत्तर प्रदेश में किसानों के हित में उन्होंने जमींदारी उन्मूलन सहित कई कानून पारित कराने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने १९६० में कृषि मन्त्री के रूप में पूरे राज्य के लिये एक-सा भूमि हदबन्दी कानून बनाया। श्री चरणसिंह को हमेशा एक ईमानदार और सख्त प्रशासक माना गया।

श्री चरणसिंह ने हमेशा सादा जीवन और उच्च विचार की नीति अपनायी। धोती, कुर्ता और सर्दियों में अचकन उनकी पोशाक रहे। वे पक्के आर्यसमाजी थे। विलासिता के आडम्बर एवं पश्चिमी संस्कृति के प्रबल विरोधी रहे।

एशियाई खेलों का उन्होंने जमकर विरोध किया था। एक लम्बे अरसे तक टेलिविजन अपने आवास पर उन्होंने यह कह नहीं आने दिया कि वह भारतीय सभ्यता और संस्कृति को प्रदूषित कर रहा है।

श्री चरणसिंह ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर अंग्रेजी और हिन्दी में कई पुस्तकें लिखीं। उदाहरण के लिये एबोलिशन आफ जमींदारी, को-आपरेटिव फार्मिंग एक्सरेटेड, पावर्टी एण्ड इट्स सेल्यूशन, पीजेंटस प्रोपराइ-टरशिप एण्ड लैंड टू वर्क्स, प्रिवेंशन आफ डिवीजन, आफ होल्डिंग्स बिलो सरटेन मिनिमम, इंडियन इकानामी . गांधीयन ब्लू प्रिंट।

पिछले कुछ दिनों से वे काफी बीमार थे और लकवे के कारण चलना-फिरना एवं बोल पाना भी मुश्किल होगया था।

इस प्रकार देश की राजनीति के एक महत्वपूर्ण, बहुचर्चित एवं विवादों से घिरे राजनेता के उतार-चढ़ावों एवं घटनापूर्ण जीवन का २९ मई १९८७ को अवसान होगया।

ऋषि दयानन्द के भक्त : चौधरी चरणसिंह

—डा. भवानीलाल भारतीय

चौधरी चरणसिंह के निधन के साथ ही गांधीवादी राजनीति के युग की समाप्ति होगई। १९०२ में जन्मे चरणसिंह अपनी युवावस्था में ही आर्यसमाज के सम्पर्क में आये और ऋषि दयानन्द के कट्टर भक्त बन गये। गाजियाबाद और मेरठ में वकालत करते समय वे आर्यसमाज में सक्रिय रूप से भाग लेते थे। उन्होंने इन नगरों के आर्यसमाजों में मन्त्री पद पर भी कार्य किया था। साप्ताहिक सत्संगों में नियमित रूप में उपस्थित होने में कभी नागा नहीं करते थे। दयानन्द के राष्ट्रवादी विचारों ने ही उन्हें देश की स्वतन्त्रता के आंदोलन में भाग लेने की प्रेरणा दी और वे महात्मा गांधी के अनुयायी बनकर राजनीति में प्रविष्ट हुए। ज्यों-ज्यों राष्ट्रीय आंदोलन में उनकी गतिविधियां बढ़ती गई, आर्य सामाजिक कार्यों के लिये समय की न्यूनता होती रही, किन्तु ऋषि दयानन्द के क्रांतिकारी सामाजिक और राष्ट्रीय विचारों के प्रति उनकी निष्ठा यथावत् बनी रही।

१९४९ से १९५२ तक वे भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् के प्रधान रहे। मैंने १९४९ में इसी परिषद् द्वारा संचालित सिद्धांत शास्त्री तथा १९५२ में सिद्धांत वाचस्पति की परीक्षायें प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। इन दोनों परीक्षाओं के प्रमाणपत्रों पर परिषद् के प्रधान चरणसिंह एम. एल. ए. के हस्ताक्षर अंकित हैं।

१९६९ में जब काशी शास्त्रार्थ का शताब्दी समारोह वाराणसी में आयोजित किया गया। उस समय चौधरी साहब उत्तर प्रदेश के मुख्य मन्त्री थे। वे स्वयं समारोह में पधारे और ऋषि को श्रद्धांजलि अर्पित की। अक्तूबर १९७९ में जब पानीपत में सत्यार्थप्रकाश शताब्दी मनाई गई, उस समय वे भारत के प्रधानमन्त्री पद पर थे। १४ अक्तूबर को जब उन्होंने इस समारोह में पदार्पण किया तो परोपकारिणी सभा की ओर से मैंने तथा सभा के स्वर्गीय मन्त्री श्रीकरणजी शारदा ने उनका माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया था। उन्हीं दिनों वे परोपकारिणी सभा के प्रधान भी थे। भारत के गृहमन्त्री के पद पर कार्य करते हुए उन्होंने ऋषि की निर्वाण शताब्दी पर केन्द्रीय सरकार की ओर से एक अच्छी राशि आर्थिक सहायता के रूप में दिलाने का भी वचन किया था, किन्तु जनता सरकार की आंतरिक उलझनों में फंसे रहने के कारण वे यह कार्य नहीं करा सके।

पानीपत के उक्त समारोह में भाषण देते हुए चौधरी साहब ने स्पष्ट कहा था कि अपने जीवन के प्रारम्भकाल से ही मैं एक निष्ठावान् आर्यसमाजी हूं। मेरी यह सदा इच्छा रही है कि मैं जहां भी रहूं, आर्यसमाज में सदा जाता रहूं। उन्होंने इस बात को स्पष्टतया माना कि राजनीति तो कीचड़ है, जिसमें वे स्वयं आपादमस्तक लिप्त हैं, तथापि ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज का गुणानुवाद करने में उन्होंने स्वयं को धन्य माना। अपने तर्कपूर्ण एवं विश्लेषणप्रधान भाषण में चौधरी साहब ने हिन्दू जाति के वर्तमान पतन के निम्न कारण बताये, जो ऋषि दयानन्द के चिन्तन के सर्वथा अनुरूप ही थे—

१—हिन्दू जाति ने संसार को मिथ्या मान लिया, यही उसके पतन का कारण बना।

२—हिन्दू जाति ने पुरुषार्थ की अपेक्षा भाग्य को महत्त्व दिया, जिससे वे बलहीन होकर पराजित हुए।

३—हिन्दू समाज में प्रचलित जातिप्रथा ने उसे दुर्बल बनाया।

अपने गृहमन्त्री काल में गुजरात यात्रा के दौरान वे समय निकाल कर स्वामी दयानन्द की जन्मभूमि टंकारा को देखने आये। महर्षि महाशय तथा स्वामी दयानन्द से सम्बन्धित अन्य स्थानों को उन्होंने भावविभोर होकर देखा तथा महर्षि स्मारक को ५ हजार रुपया भेंट किया। उन्होंने स्वामी दयानन्द को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए पुनः इस स्थान पर आने की इच्छा प्रकट की।

सुप्रसिद्ध साप्ताहिक रविवार को एक भेंट में उन्होंने कहा था कि यों तो वे गांधी, रवीन्द्रनाथ तथा अन्य अनेक महापुरुषों से प्रभावित हुए हैं, किन्तु उन्हें सच्चा प्यार तो दयानन्द से ही है।

आर्य प्रतिनिधि सभा शताब्दी समारोह पर अभूतपूर्व जनजागरण यात्रा

प्रा. धर्मदेव विद्यार्थी अधिष्ठाता आर्य वीरदल हरयाणा

जिस दिन हमें यह समाचार मिला कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा अपनी मूल सभा पंजाब प्रतिनिधि सभा के सौ वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में विशाल स्तर पर शताब्दी समारोह मना रही है, उसी दिन हमारे हृदय में इस अवसर पर वैदिक सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार एवं सामाजिक राष्ट्रीय बुराइयों के विरुद्ध जनजागरण की उमंग हिलोरें लेने लगी। प्रचार कार्य का यह एक सुन्दर अवसर था। इस अवसर का लाभ युवाशक्ति को आर्यसमाज में लाने की इच्छा भी बलवती थी। मैंने स्वामी रत्नदेव जी और आर्यसमाज नरवाना के सभासदों से विशेषत: आर्य वीरदल हरयाणा के संचालक श्री उमेदसिंह जी से चर्चा की तो सभी ने इस विचार की सराहना की। यह ठीक भी है, क्योंकि जब किसी गांव में कोई एक भजनमण्डली जाती है तो वर्तमान प्रचार युग में उसके प्रचार की ओर कम लोग ध्यान दे पाते हैं, परन्तु यदि उस गांव में सौ पचास युवक केसरिया ओ३म् ध्वज बांधकर जयघोष करते आयें तो गांव के बड़े-बूढ़ों में उत्साह की लहर दौड़ पड़ती है। इसका अनुभव हम कुरुक्षेत्र जिले में कर चुके थे, फिर भी यह क्षेत्र नया था। मन में कुछ शंका थी, परन्तु प्रभु कृपा से स्वामी रत्नदेव जी जो इस क्षेत्र में कार्यरत हैं ने इस शंका को निर्मूल सिद्ध कर दिया। यह विचार किया गया कि नरवाना से रोहतक तक एक सप्ताह की प्रचार-यात्रा निकाली जाये, जिसमें एक सौ एक नवयुवक भाग लें और शताब्दी समारोह में मिल जायें।

इस विचार को सभा प्रधान प्रो. शेरसिंह और श्री स्वामी ओमानन्द जी ने भी सराहा और हमारा उत्साह उस समय बढ़ गया। जब स्वामी रुद्रवेश, स्वामी जगतमुनि और म. भावेराम जी ने भी यात्रा में शामिल होने की स्वीकृति दी। इस अवधि में हमने अपने आर्यवीरों से सम्पर्क किया तो उन्हें भी इस यात्रा के लिए तैयार पाया। निर्णय हुआ कि ९ मई से आर्यसमाज नरवाना से जनजागरण यात्रा आरम्भ की जाये। २-३ मई को मैं तथा स्वामी रत्नदेव जी मार्ग के सभी गांवों में जहां जलसे एवं विश्राम तथा भोजन की व्यवस्था करनी थी वहां गये तो लोगों ने दिल खोलकर व्यवस्था करने का आश्वासन दिया। जो यात्रा के समय सत्य सिद्ध हुआ। पहले हमारा विचार १५ मई को रोहतक पहुँचने का था, परन्तु शताब्दी के संयोजक बाबू रघुवीरसिंह जी के सुझाव पर हमने १४ मई को रोहतक पहुंचने का कार्यक्रम बनाया और इस प्रकार यात्रा आरम्भ करने की तैयारी लगभग पूर्ण करदी, परन्तु ७-८ मई की हड़ताल और वर्षा के कारण नवयुवकों को नरवाना आने में कठिनाई आई, परन्तु उत्साही युवक साइकिलों से ही वर्षा की परवाह न कर नरवाना आ पहुंचे और ८ मई की रात्रि तक लगभग ७० नवयुवक जाजनपुर, बारना, सिरसल, कैथल, खटकड़, करसिन्धु डिड़ा, हसनगढ़ और जींद से नरवाना आगये।

आर्य वीरदल हरयाणा के अधिष्ठाता प्रा. धर्मदेव विद्यार्थी एवं संचालक उमेदसिंह का तूफानी दौरा

दिनांक		स्थान	कार्य
४ जून		कृष्णा कालोनी भिवानी	आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर
६ जून		आर्यसमाज मा. टा. पानीपत	आर्य वीरांगना शिविर
७ जून		डी. ए. वी स्कूल करनाल	आर्यवीर शिविर
८ जून		आर्यसमाज नीलोखेड़ी	आर्य वीरांगना शिविर
८ जून रात्रि	,,	थानेसर	आर्य सभासदों से बैठक
९ जून प्रातः	,,	लाडवा	आर्यों से विचार-विमर्श बैठक
,, दोपहर	,,	रादौर	,,
,, रात्रि	,,	जगाधरी	,,
१० जून प्रातः	,,	नारायणगढ़	,,

सभा शताब्दी समारोह के लिए दानदाताओं की सूची

गतांक से आगे—

श्री जोगधान गुप्त पानीपत जि. करनाल	१००
सूरज बुक डिपो „ „	१००
श्री रतनकुमार „ „	१००
„ जे. पी दिल्ली	१००
„ रामपत हुड्डा	१००
„ आर के. अरोड़ा एवं गुप्ता	१००
„ वारसिंह	१००
„ के. एस. सिन्धु एवं श्री सोहनसिंह	१००
„ के. एस. कादियान	१००
„ आर. के.	१००
„ बी. के गुप्त	१००
„ जे. एन. बजाज एवं अनिल वर्मा	१००
„ लज्जाराम	१००
„ ए. के. मुगु	१००
„ राजवीरसिंह पानीपत जि. करनाल	५०
„ ललित „ „	५०
सुनीता „ „	५०
श्री राजेश „ „	५०
„ रतन „ „	५०
„ विनोद „ „	५०
„ अजय एवं दिनेश „ „	५०
„ गौतम „ „	५०
„ पुष्पेन्द्र एवं दलीप „ „	५०
„ कृष्णकुमार „ „	५०
„ रामलक्ष्मण „ „	५०
„ हरविन्द „ „	५०
„ रवीन्द्र एवं ईश्वरसिंह पानीपत जि. करनाल	५०
„ रमेश „ „	५०
„ गोपाल कृष्ण प्रेस „ „	५०
„ कमलप्रकाश अम्बाला छावनी	५०
डा. फूलकुमार	५०
श्री रामकुमार गोयल	५०
डा. रामस्वरूप	५०
श्री जगदीश मनोचा पानीपत जि. करनाल	५०
डा. वर्धनलाल „ „	५०
श्री सुरेन्द्रकुमार विनेशकुमार	५०
ला. देवासिंह बजाज	५०
श्री रामपत विर्दिया	५०
„ प्रेमचन्द आर्य	५०
„ विजेन्द्रकुमार गुप्त	५०
„ जे. बी. गुप्त	५०

सभा उपदेशक पं० अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी द्वारा संगृहीत राशि

श्री नरेन्द्रसिंह आर्य ग्राम माईयड़ जि. हिसार	५०) पूर्व ५०)
„ विजेन्द्रसिंह आर्य ग्राम सातरोड कलां जि. हिसार	२५) पूर्व २५)

१०) दान देनेवालों की सूची रसीद नं० २७५१ से २९०० तक

सर्वश्री सोहलूराम सरकड़ी लोखा निवासी, लालचन्द आर्य, रामलाल, कंवरसिंह, बस्तीराम, रामचन्द्र, दलीपसिंह, सरूपलाल, सोहनलाल, हरिसिंह, नेकीराम, दयाराम, कंवरनाथ, मलेराम, हवासिंह, अमरसिंह, हरिराम, रिसाला, हरलाल, सूरजभान (मलिकपुर), बलबीर, मांगेराम, अभेराम, कमंदीन, रामविलास, राजेन्द्र, मांगेराम, कंवरसिंह, सुबेसिंह, हेतराम, मानसिंह, साहबेराम, शंकरलाल, फूलसिंह, हरिसिंह, कर्मसिंह, छबीला, चांदीराम, शेरसिंह, रत्नसिंह, माधसिंह, जयलाल, मामन, सूरजाराम, गोरखाराम, रामस्वरूप, छोटूराम, देवीराम, पुरखा, माईराम। कुल जोड़ ५००)

श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज की प्रेरणा से मा० टेकराम जी द्वारा संगृहीत राशि

मा. टेकराम आर्य मन्दौला	२०२
„ जयनसिंह „	१०१
श्री जगमालसिंह „	१०१
„ जोरावरसिंह „	१०१
„ कृपालसिंह „	५१
मा. कंवलसिंह „	१०१
श्री दलजीतसिंह „	१०१
„ के सुभाषचन्द्र „	१०१

उपरोक्त ८५९) की राशि मा. टेकराम जी के परिवार से ही संगृहीत की गई है।

पहलवान लेखराम मन्दौला	१०१
श्री सत्यपाल सुपुत्र ऋषि महाराज	१०१
„ मा. अमीरसिंह	१०१
„ चमनलाल	१०१
मा. पीरदान	५१
श्री रणबीर पाहेल	१०१
मा. गोपालसिंह मन्दौला	५१
श्री रघुबीरसिंह „	१०१
„ अमीरसिंह नम्बरदार मन्दौला	२५

कुल राशि १५४२

यह सब राशि ग्राम मन्दौला, त. चरखी दादरी (भिवानी) से ही संगृहीत की गई है।

सभा उपदेशक ब्र० महेन्द्रसिंह शास्त्री द्वारा संगृहीत राशि

ब्र० संजय आर्य सुपुत्र श्री रामसिंह सोलंकी पूठकलां (दिल्ली)	५००
श्री बृजलाल आर्य	२००

सभा भजनोपदेशक पं. समेरसिंह द्वारा संगृहीत राशि

मन्त्री आर्यसमाज पांगटेहड़ी जि. जींद	३००
श्री रामेश्वर सु. रामकला बालु „	५०
„ बसाउराम सु. गंगाराम „ „	५०
„ मनीराम सु. रामचन्द्र „ „	१००
„ ज्ञानचन्द आर्य मन्त्री आर्यसमाज खापड़ोदा जि. रोहतक	१००
„ ओम्प्रकाश सु. म. प्रभुराम बालु जि. जींद	५०
ला. दलीपचन्द विशेसरदास „ „	५०

(क्रमशः)

सभी दानदाताओं का सभा की ओर से बहुत-बहुत धन्यवाद। आशा है अन्य दानी महानुभाव भी इस सूची में अपना नाम लिखवाकर पुण्य के भागी बनेंगे।

—रघुबीरसिंह संयोजक समारोह

नवीन प्रवेश सूचना

श्रीमद्दयानन्द उपदेशक विद्यालय यमुनानगर (निकट शादीपुर) जि. अम्बाला, हरयाणा में नवीन प्रवेश आरम्भ है। कम से कम कक्षा आठ उत्तीर्ण छात्र सिद्धांत रत्न, सिद्धांत भूषण, सिद्धांत शिरोमणि श्रेणियों में प्रवेश हेतु श्री प्रधानाचार्य से सम्पर्क करें।

भोजन, शिक्षा, निवास सर्वथा निःशुल्क है।

—प्रधानाचार्य

आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापना शताब्दी समारोह

वानप्रस्थ दीक्षा, शुद्धि, आर्यसत्याग्रहियों का अभिनंदन कार्यक्रम

(केदारसिंह आर्य द्वारा)

पत्रांक से आगे—

आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापना शताब्दी समारोह के अन्तिम दिन १७ मई को प्रात: यजुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति के शुभावसर पर निम्नलिखित आर्य महानुभावों को वानप्रस्थाश्रम की दीक्षा श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज द्वारा दी गई। दीक्षा लेनेवालों में सभा के भजनोपदेशक एवं स्वर्गीय वानप्रस्थी रामपत जी के सुपुत्र पं. सुखदेव शास्त्री ग्राम आमन जि. रोहतक, श्री सोहनलाल ग्राम सेरला जि. भिवानी, श्री घोखाराम ग्राम सुलतानपुर जि. महेन्द्रगढ़, श्री लक्ष्मीनारायण गुड़गांव, श्री खोजराम कथूरिया गुड़गांव। इन सभी आर्य वानप्रस्थों ने यज्ञवेदी पर संकल्प किया कि शेष सारा जीवन आर्यसमाज के प्रचार एवं प्रसार कार्यों के लिये व्यतीत करेंगे। सुविधा के अनुसार किसी आर्यसमाज मन्दिर को अपना प्रचार केन्द्र बनायेंगे।

श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने इन्हें दीक्षा देते हुए उपदेश दिया कि प्रत्येक वानप्रस्थी को ऋषि दयानन्द के बताये हुए वैदिक मार्ग पर चलते हुए अपना आचरण तथा व्यवहार शुद्ध रखना चाहिये। आर्यसमाज के प्रचार के लिये हजारों संन्यासियों तथा वानप्रस्थों की आवश्यकता है। जब तक हम अपना जीवन स्वयं आदर्श नहीं बनायेंगे, तब तक हमारे उपदेश का प्रभाव किसी पर नहीं पड सकता। अत: दूसरों को उपदेश देने से पूर्व स्वयं उस पर आचरण करना होगा।

शुद्धि समारोह

इसी अवसर पर हिन्दू शुद्धि सभा हरयाणा के संचालक श्री स्वामी सेवानन्द जी आदि की प्रेरणा से निम्नलिखित नर-नारियों ने शुद्ध होकर वैदिकधर्म को स्वेच्छा से ग्रहण किया।

१. श्री रखां आयु ३० वर्ष ग्राम पाली जि. महेन्द्रगढ़ नया नाम श्री महेन्द्र

२. श्रीमती मुन्नी	२५	,,	,,	,,	,,	,,	ममता
श्री बदलू आयु	१३	,,	,,	,,	,,	,,	बलराम
,, पप्पी ,,	१०	,,	,,	,,	,,	,,	प्रेम
,, समसु ,,	१०	,,	,,	,,	,,	,,	सुरेन्द्र
,, पवनोख ,,	७	,,	,,	,,	,,	,,	पवन
,, मुम्मु ,,	१५	,,	ग्राम खाखोट जि. रोहतक			,,	मनुदेव
,, सनकु ,,	१५	,,	,,	,,	,,	,,	सुखबीर
,, जितेन्द्र ,,	१८	,,	,,	,,	,,	,,	जितेन्द्र
श्रीमती नूरी ,,	१६	,,	,,	,,	,,	,,	मीरा
श्री मुण्डा ,,	३	,,	,,	,,	,,	,,	महेश
पूनम ,,	१॥	,,	,,	,,	,,	,,	पूनम
अतुना ,,	३५	,,	,,	,,	,,	,,	कलावत

सभा की ओर से उन्हें नये वस्त्र तथा मार्ग व्ययादि देकर सम्मानित किया गया। उन्हें यह भी प्रेरणा की गई कि वे आर्यसमाज के सत्संगों में सम्मिलित होकर वैदिक सिद्धांतों की जानकारी प्राप्त करें।

शुद्धि समारोह के पश्चात् शताब्दी समारोह के अध्यक्ष पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने "श्रद्धानन्द पुस्तकालय" के विशाल भवन की आधारशिला रखी।

इस अवसर पर शताब्दी समारोह की ओर से निम्नलिखित आर्य महानुभावों को आर्यसमाज के प्रति उनकी अमूल्य सेवाओं के लिये सम्मानित किया गया—

१—आर्यजगत् की विभूति श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज प्रधान वैदिक यतिमण्डल दयानन्दमठ दीनानगर, पंजाब ११००) तथा एक शाल

२—श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती प्रधान परोपकारिणी सभा एक शाल।

३—महाशय भरतसिंह वानप्रस्थी दयानन्दमठ रोहतक एक शाल।

४—आचार्य सुदर्शनदेव बालन्द जि. रोहतक एक शाल।

५—बहन सुभाषिणी देवी आचार्या कन्या गुरुकुल खानपुर कलां जि. सोनीपत एक शाल।

६—चौ० नत्थासिंह आर्य भजनोपदेशक ग्राम बदरपुर जि. करनाल एक शाल।

आर्य सत्याग्रहियों का सार्वजनिक अभिनन्दन

१७ मई, १९८७ को प्रात: ९ बजे आर्यजगत् के सर्वमान्य वीतराग संन्यासी श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में आर्यसमाज की ओर से संचालित—

१ आर्य सत्याग्रह हैदराबाद सन् १९३८-३९, २. हिन्दी-रक्षा सत्याग्रह सन् १९५६-५७ ३. गोरक्षा सत्याग्रह सन् १९६६, ४ कुण्डली बूचड़खाना उन्मूलन सत्याग्रह सन् १९६८, ५ शराबबन्दी आंदोलन सन् १९८४ से चालू आदि में भाग लेनेवाले सत्याग्रहियों का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया।

यह बात सर्वविदित है कि आर्यसमाज के इन सत्याग्रहियों ने जिन विकट परिस्थितियों में कार्य किया है वह आर्यसमाज के इतिहास में चिरस्मरणीय रहेगा। श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने हैदराबाद आर्य सत्याग्रहियों द्वारा किये बलिदान तथा उन द्वारा सहन की गई कठोरतम यातनाओं की चर्चा करते हुए कहा कि इस सत्याग्रह में हरयाणा प्रदेश ने, जो कि उस समय पंजाब में सम्मिलित था, बहुत भारी संख्या में भाग लिया था। इनमें १८ वर्ष तक के नवयुवक भी थे। वीर सनहर्लसिंह आदि जैसे युवकों ने अपने जीवन का बलिदान दिया था। निजाम हैदराबाद के आदेशानुसार जेल में बन्द सत्याग्रहियों को खराब से खराब भोजन, वह भी थोड़ी मात्रा में दिया जाता था और उनसे टट्टी आदि उठाने तक का कार्य लिया जाता था। अनेक बार पुलिस ने सत्याग्रहियों पर लाठीचार्ज करके गम्भीर रूप से उन्हें घायल कर दिया था। उन्हें वस्त्रादि तक भी नहीं दिये जाते थे। इस ऐतिहासिक सत्याग्रह के संचालक आर्यसमाज के लौहपुरुष श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी थे। उन्हें जब पता लगा कि जेलों में सत्याग्रहियों को भोजन कम दिया जाता है तो उन्होंने स्वयं एक समय भोजन करना आरम्भ कर दिया और चारपाई के स्थान पर नीचे सोना प्रारम्भ कर दिया। वे सत्याग्रहियों की भांति जेल से बाहर रहकर उन जैसी तपस्या करते थे। इस प्रकार आर्यसमाज की सामूहिक संघटन शक्ति का प्रभाव यह हुआ कि निजाम हैदराबाद ने आर्यसमाज के समक्ष घुटने टेक दिये और सभी सत्याग्रहियों को हलवा आदि खिलाकर उनके घरों तक का जाने का मार्ग-व्यय देकर रिहा कर दिया। अपनी रियासत में आर्यसमाज के प्रचार पर जो पाबन्दी लगा रखी थी उसे हटा दिया। आर्यसमाज की इस शानदार विजय पर सभी ने आश्चर्य प्रकट किया।

सभाप्रधान प्रो. शेरसिंह जी ने समारोह में उपस्थित सत्याग्रहियों को प्रमाण-पत्र तथा माल्यार्पण करते हुए उनका सम्मान किया और उनके चित्र लिये गये। प्रो० साहब ने कहा कि इनके बलिदान को देखते हुए इस सम्मान का मूल्य कुछ भी नहीं है। सन्तोष की बात है कि भारत तथा हरयाणा सरकार ने भी अन्य स्वतन्त्रता सेनियों की भांति हैदराबाद आर्यसमाज के सत्याग्रहियों को भी सम्मान पेंशन देने की घोषणा कर रखी है। पेंशन सम्बन्धी सिफारिश करनेवाली समिति में आर्यसमाज के नेताओं को मनोनीत किया गया है। सरकार की ओर से आवश्यक जांच पड़ताल करने के पश्चात् पेंशन का शीघ्र निर्णय होने की आशा है।

हिन्दी-रक्षा आदि सत्याग्रहियों का सम्मान

सन् १९५६-५७ में पंजाबी भाषा की जबरी पढ़ाई के विरुद्ध आर्य-

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्यसमाज मन्दिर भांडवा के लिए दान प्रार्थना

लगभग 7 वर्ष तक निरन्तर धर्म-प्रचार के बाद भांडवा में आर्यसमाज की स्थापना 1979 में की गई थी। अब तक दो व्यायाम प्रशिक्षण शिविर, दो बड़े जलसे, लगभग 15 प्रचार कार्यक्रम, सैकड़ों हवन तथा बैठकें सम्पन्न हुई हैं। आर्यसमाज मन्दिर के लिये भूमि ली गई है। सन् 1985 ई० में जलसा करके शिलान्यास किया गया तथा मन्दिर हेतु धन मांगा गया। राजकीय बाधा आदि कारणों से उस जलसे का खर्च भी उस समय पूरा नहीं हुआ। धीरे-धीरे वचन प्राप्त होते गये। उत्सव व्यय की पूर्ति हुई। तत्पश्चात् जो धनराशि प्राप्त हुई वह जमा कराई गई।

इस समय मैंने अपने वचनानुसार 1100) रु० के पत्थर डलवा रखे हैं। 2454 रुपये बैंक में जमा हैं तथा 2300) रुपये के वचन शेष हैं। जून के महीने में हम मन्दिर निर्माण प्रारम्भ करके जलसा करना चाहते हैं। सब धर्मप्रेमी भाई-बहिनों से प्रार्थना है कि आर्यसमाज मन्दिर के लिये यथाशक्ति धन भेजें।

निवेदक :

धर्मपाल आर्य, 'धीर' शास्त्री मन्त्री आर्यसमाज भांडवा

पत्रालय— बाढड़ा, मण्डल भिवानी (हरयाणा)

चौ. चरणसिंह के निधन पर शोक प्रस्ताव

भारत के पूर्व प्रधानमन्त्री एवं परोपकारिणी सभा के पूर्व प्रधान चौ० चरणसिंह जी के निधन का समाचार आकाशवाणी द्वारा प्रसारित होने पर आर्यजनता में शोक की लहर दौड़ गई और आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से एक आपातकालीन बैठक में शोक प्रकट किया गया और परमात्मा से उनकी आत्मा की सद्गति तथा उनके शोक संतप्त परिवार को सान्त्वना देने की प्रार्थना की गई।

अन्त्येष्टि के अवसर पर सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह, मन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री, श्री रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता एवं श्री चन्द्रपाल राणा आदि अन्तरंग सदस्यों के अतिरिक्त सभा के उपदेशक पं. सुखदेव शास्त्री, वीरेन्द्र दहिया आदि उपस्थित थे।

शोक सन्देश

दिनांक 28-5-87 को ग्राम कवारी जि० हिसार में श्री रामपाल आर्य के पिता श्री जयराम जी का अचानक सायं 5 बजे हृदयगति बन्द होने से निधन होगया। सारा दिन खेत में हल चलाते रहे। सायंकाल घर आकर एक बैल बांध दिया, तुरन्त ही यह घटना घट गई। 56 वर्ष के श्री जयराम मोटे, तगड़े, बलिष्ठ एवं परिश्रमी किसान थे। सारे गांव में एकदम इस आकस्मिक मौत से मातम छागया।

ज्ञातव्य है कि गतवर्षों की भांति आर्यसमाज कवारी दिनांक 29-30 मई को स्व० पण्डित तालेराम आर्य की षष्ठी स्मृति मना रहा था। विद्वान् भजनीक पधार चुके थे। उपरोक्त मृत्यु से इस कार्यक्रम को रद्द करना पड़ा। प्रातःकाल चौपाड़ में पं० सुमेरसिंह जी आर्य भजनोपदेशक ने हवन किया तथा शोक सभा की गई। आर्य सदस्यों के अलावा काफी संख्या में नर-नारियों ने भाग लिया। आर्यसमाज कवारी के प्रधान श्री अत्तरसिंह आर्य ने स्व० पं० तालेराम आर्य के कार्यों व जीवन पर विचार रखे। लोगों से उनके पदचिह्नों पर चलने का आग्रह किया। दिवंगत आत्माओं को आर्यसमाज व गांव की तरफ से सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित की। भगवान् से प्रार्थना है कि शोक संतप्त परिवार को यह असह्य दुःख सहन करने की शक्ति दे। बाद में स्वामी रत्नदेव जी भी इसी अवसर पर पधार चुके थे। दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय के आचार्य सत्यप्रिय जी ने भी स्व. पं. तालेराम आर्य को लिखित में पत्र द्वारा श्रद्धांजलि दी।

—इन्द्रसिंह आर्य मन्त्री आर्यसमाज कवारी

(पृष्ठ 5 का शेष)

समाज ने हिन्दी-रक्षा सत्याग्रह श्री स्वामी आत्मानन्द जी महाराज के नेतृत्व में प्रारम्भ किया गया। इसका मुख्य कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक में था। हरयाणा क्षेत्र से लाखों नर-नारियों ने इस सत्याग्रह में भाग लिया तथा जेलें काटीं। उन दिनों पंजाब में सरदार प्रतापसिंह कैरों मुख्यमन्त्री थे। उन्होंने इस सत्याग्रह को सख्ती से कुचलने का असफल प्रयत्न किया। परन्तु आर्यसत्याग्रहियों ने उनके दमनचक्र के बावजूद साहस नहीं छोड़ा। इसका परिणाम यह हुआ कि हरयाणा पंजाब से पृथक् हिन्दी भाषी राज्य बन गया। किसी कारणवश हिन्दी रक्षा सत्याग्रहियों के पतों की पूरी सूची तैयार नहीं हो सकी। अतः इस सत्याग्रह के जितने आर्य नर-नारी उपस्थित थे उनका भी मंच पर सम्मान किया गया। पूरी सूची तैयार होने पर उन्हें भी सभा की ओर से प्रशंसा पत्र दिये जायेंगे।

इसी प्रकार बूचड़खाना उन्मूलन सत्याग्रह कुण्डली, गोरक्षा सत्याग्रह तथा शराबबन्दी आंदोलन में भाग लेनेवाले आर्य नर-नारियों के प्रति कृतज्ञता प्रकट की गई। इनकी भी सूची तैयार की जारही है। अतः आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वे अपने क्षेत्र के सत्याग्रहों में सम्मिलित होनेवाले आर्य नर-नारियों के नाम सभा को भेजने का कष्ट करें, ताकि सूची तैयार करने में सुविधा हो सके।

शिव-संकल्प सम्मेलन (भावी कार्यक्रम)

17 मई को 11 से 2 बजे तक शिव-संकल्प सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में आर्यसमाज के भावी कार्यक्रम पर प्रकाश डालते हुए सम्मेलन में उपस्थित आर्य नर-नारियों से अनुरोध किया गया कि वे अपने-अपने आर्यसमाज के संघटनों को सुदृढ़ करें। अधिक से अधिक संख्या में नये आर्य सभासद् बनाकर उन्हें आर्यसमाज के साप्ताहिक, पाक्षिक आदि सत्संगों में सम्मिलित करें और उनसे उनकी आय का 100वां भाग (शतांश) दान रूप में प्राप्त करें। इस प्रकार जहां स्थानीय आर्यसमाज की आय में वृद्धि होगी, वहां सभा को भी शतांश का दशांश अधिक प्राप्त हो सकेगा। जहां तक सम्भव हो आर्य सभासदों से दुर्व्यसनों से सर्वथा दूर रहने का संकल्प लिया जाये। प्रत्येक आर्यसमाज वर्ष में एक बार वार्षिक उत्सव अथवा वेदप्रचार का आयोजन अवश्य करे।

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये सभा की ओर से नये उपदेशक एवं पुरोहितों की सेवायें प्राप्त की गई हैं। इनका प्रचार केन्द्र ग्रामों में बनाया जारहा है, ताकि वे निकट के ग्रामों में सत्संगों आदि की व्यवस्था तथा वैदिक-पद्धति से संस्कार आदि करवा सकें।

स्वामी वेदानन्द वेदवागीश का देहांत

गुरुकुल चित्तौड़गढ़ के सुयोग्य स्नातक, वेदादि शास्त्रों के उद्भट विद्वान्, श्रीमद्दयानन्दार्ष विद्यापीठ के रजिस्ट्रार, 'सुधारक' मासिक पत्र के सम्पादक, महर्षि दयानन्द जीवन कथा, आत्मानन्द जीवन ज्योति, स्वामी आत्मानन्द जीवन चरित, स्वस्ववृत्तम्, सच्चे गुरु और पारखी, ईशोपनिषद् व्याख्या, गीता विवेक, तत्त्वबोध, सामयिक समाधान, अयमात्माणुर्वा विभुर्वा, नामरूपरूपिका, नामसिद्धिसाधक: आदि अनेक हिन्दी-संस्कृत ग्रंथों के प्रणेता स्वामी वेदानन्द जी वेदवागीश का देहांत 4 जून, 1987 ई० बृहस्पतिवार के दिन श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय 119 गौतमनगर, नई दिल्ली में होगया। उनकी अन्त्येष्टि 5 जून को मध्याह्नोत्तर 4 बजे सफदरजंग (ग्रीन पार्क) की श्मशान भूमि में वैदिकरीति से सम्पन्न हुई। गुरुकुल गौतमनगर तथा गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारी तथा अधिकारी, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मन्त्री, वेदप्रचार अधिष्ठाता, कार्यालयाध्यक्ष तथा अन्य सैकड़ों आर्य सज्जन उपस्थित थे। अन्त्येष्टि के पश्चात् स्वामी ओमानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। ईश्वर उनकी दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे।

—वेदव्रत शास्त्री

आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन

आर्यसमाजों के सहयोग से सभा शताब्दी समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न होगया है। तदर्थ आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं के अधिकारियों का हार्दिक धन्यवाद।

समारोह के लिये धनसंग्रह की रसीदें तथा उन द्वारा प्राप्त धन का विवरण जिन आर्यसमाजों अथवा अन्य आर्य महानुभावों ने सभा कार्यालय को नहीं भेजा है उनसे निवेदन है कि वे अपनी रसीद बुक अथवा उनसे प्राप्त धनराशि के साथ तुरन्त सभा कार्यालय रोहतक भेजने का कष्ट करें, ताकि शताब्दी समारोह के हिसाब को आडिट करवाया जा सके।

—रघुवीरसिंह संयोजक शताब्दी समारोह

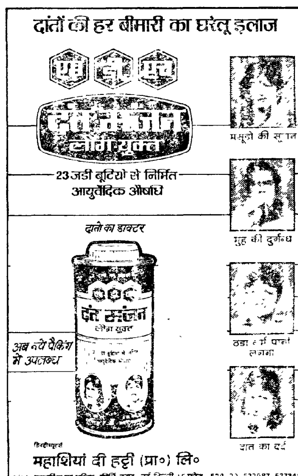
वैदिक संस्कार प्रशिक्षण शिविर

स्थान—दयानन्दमठ, रोहतक

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि दयानन्दमठ रोहतक की ओर से दिनांक २२ जून से २८ जून, १९८७ तक एक सप्ताह का संस्कार प्रशिक्षण शिविर लगाया जारहा है, जिसमें आर्य पुरोहित, शास्त्री, विशारद, मध्यमा, मैट्रिक (संस्कृत) परीक्षा उत्तीर्ण शिक्षार्थी भाग ले सकेंगे। आवास, सादा भोजन आदि की व्यवस्था दयानन्दमठ की ओर से होगी। ऋतु अनुकूल वस्त्र तथा संस्कार विधि और अभ्यास पुस्तिका अपने साथ लावें। प्रवेश के लिए आवेदन-पत्र अधिष्ठाता दयानन्दमठ के नाम १५ जून, १९८७ तक भेज देवें।

सुदर्शनदेव आचार्य
प्रशिक्षक

महाशय भरतसिंह
मन्त्री दयानन्दमठ, रोहतक



शराब मानव-समाज की शत्रु है इससे अवश्य बचें।

हरयाणा में अधिकृत विक्रेता

१ मैसर्ज परमानन्द साईंदितामल भिवाना स्टेंड, रोहतक
२. ,, फूलचन्द सीताराम गाधी चौक, हिसार
३ ,, सन-अप-ट्रेडर्स सारग रोड, सोनीपत
४ ,, हरीश एजेन्सीज ४६६/१७ गुरुद्वारा रोड, पानीपत
५ ,, भगवानदास देवकीनन्दन सर्राफा बाजार पुराना, करनाल
६ ,, घनश्यामदास सीताराम बिचला बाजार, भिवानी
७. ,, कृपाराम गोयल रुडी बाजार, सिरसा
८ ,, कुलवन्त पिकल स्टोर्स, शाप नं० ११५, मार्किट नं० १, एन० आई० टी० फरीदाबाद
९. ,, चन्द्रप्रकाश नवीनप्रकाश ३१८/५ जेकमपुरा, गुड़गाव

प्रधानमन्त्री राजीव गांधी को वृहद् विमान शास्त्र की प्रति भेंट
मेरठ व दिल्ली के दंगों को सख्ती से दबाने का आश्वासन

दिल्ली २५ मई, ८७। आज प्रातः सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के नेतृत्व में आर्यसमाज, सनातन धर्म सभा तथा शिक्षाशास्त्रियों के एक शिष्टमण्डल ने उनके निवास स्थान पर भेंट की और मेरठ तथा दिल्ली के दंगों की विस्तृत जानकारी ज्ञापन रूप में देते हुए इन दंगों को सख्ती से दबाने की मांग की। स्वामी आनन्द-बोध ने मेरठ के दंगों को पूर्व नियोजित एवं वहां विद्यमान पाकिस्तानी तत्त्वों द्वारा भड़काये जाने का आरोप लगाया और बताया कि क्षेत्रीय सांसद श्रीमती मोहसिना किदवई द्वारा पुलिस को सख्ती करने से रोकना भी इस विनाशलीला का कारण रहा है, जिसमें हिन्दुओं को अरबों रुपये की क्षति एवं सैकड़ों जानें चली गई हैं। दिल्ली में भी गत शुक्रवार को नमाज के बहाने हजारों मुसलमानों ने मस्जिदों से निकलते हुए "लूटो और आग लगाओ" का नारा लगाया और देखते-देखते आगजनी, लूट-पाट और हत्याओं का सिलसिला जारी हुआ। दिल्ली प्रशासन भी रमजान और ईद के धोखे में रहा। शिष्टमण्डल ने इन दंगों की अदालती जांच की मांग की। प्रधानमन्त्री ने आश्वासन दिया कि सरकार दंगों पर कड़ाई से काबू करेगी।

नई शिक्षा-नीति में संस्कृत की उपेक्षा पर भी स्वामी जी ने प्रधान मन्त्री का ध्यान आकृष्ट किया और कहा कि संस्कृत विश्व की सबसे प्राचीन तथा विपुल शब्द भण्डार है। इसे भारतीय शिक्षा विधान में उचित स्थान दिया जाना चाहिए। इसी के माध्यम से प्राचीन वैदिक ज्ञान और विज्ञान सुरक्षित रह सकते हैं। इस अवसर पर संस्कृत रक्षा समिति के अध्यक्ष के रूप में स्वामी जी ने प्रधानमन्त्री को एक ज्ञापन भी दिया।

इस अवसर पर श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने महर्षि भारद्वाज कृत—"वृहद् विमान शास्त्र" की एक प्रति प्रधानमन्त्री को भेंट करते हुए बताया कि आज से ११० वर्ष पूर्व जब आधुनिक विमानों का आवि-ष्कार भी नहीं हुआ था, स्वामी दयानन्द ने वैदिककाल में मनुष्य का वायुयान द्वारा आकाश में उड़ने की परिकल्पना को सत्य कहा था। तत्कालीन ब्रिटिश प्रधानमन्त्री रेमजे मेकडानेल्ड ने महर्षि दयानन्द के इस कथन का मजाक उड़ाते हुए कहा था कि—स्वामी दयानन्द ने अन्य जो कार्य किये हैं वे सभी प्रशंसनीय हैं, किन्तु मनुष्य के आकाश में पक्षी की भांति उड़नेवाली बात कोरी गप्प है। लेकिन महर्षि की उस समय की गप्प कही जानेवाली बात आज सत्य सिद्ध हो रही है। वृहद् विमान शास्त्र प्राचीन वैज्ञानिकों द्वारा आकाश में वायुयान उड़ाने का हजारों वर्ष पुराना फार्मूला है। स्वामी जी ने प्रधानमन्त्री को बताया कि भोज-पत्रों पर लिखे हुए तीन हजार श्लोकों के इस शास्त्र का स्वामी ब्रह्ममुनि जी महाराज ने हिन्दी में अनुवाद करके सार्वदेशिक सभा को सौंपा था। यह ग्रन्थ सार्वदेशिक सभा में उपलब्ध है।

प्रधानमन्त्री ने इस विज्ञान ग्रन्थ को पढ़ने का आश्वासन दिया।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
प्रचार विभाग सार्वदेशिक सभा दिल्ली

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 रजि० नं० P/RTK 49

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,०८८



ओ३म्

सर्वहितकारी

रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री सह-सम्पादक—डा० यज्ञवीर

वर्ष १४, अङ्क २८ १४ जून, १९८७ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

लोकसभा एवं विधानसभा के चुनाव में आपके मत का अधिकारी कौन ?

१७ जून को रोहतक तथा भिवानी के लोकसभा के उपचुनाव तथा हरयाणा विधानसभा की ९० सीटों के चुनावों के लिए मतदान होगा। उस समय तक सर्वहितकारी का यह अंक पाठकों तक पहुंच जायेगा। कुछ पाठकों ने जानना चाहा है कि वे इस अवसर पर किन उम्मीदवारों के पक्ष में मतदान करें। अतः पाठकों तथा आर्यजनता के मार्गदर्शन हेतु कुछ उपयोगी सुझाव देना अपना कर्त्तव्य समझता हूं।

आर्यसमाज एक धार्मिक संस्था है। परन्तु इसकी सदस्यता के लिए उन सभी वयस्क नर-नारियों के दरवाजे खुले हुए हैं जो वैदिक सिद्धांतों में आस्था रखते हैं और आर्यसमाज के नियमों के अनुसार वार्षिक चन्दा देकर सत्संगों मे २५ प्रतिशत तक उपस्थित रहते हैं, चाहे वे किसी भी राजनैतिक दल से सम्बन्धित हों। इस प्रकार आर्यसमाज के सभासदों को पूरी छूट है कि वे अपनी पसन्द के किसी भी प्रत्याशी को अपना मत देवें। आर्यसमाजी भिन्न-भिन्न राजनैतिक पार्टियों के सदस्य हैं।

आर्यसमाज अपने आरम्भिक काल से ही समाज-सुधार, स्त्री-शिक्षा, दलितोद्धार तथा सेवा-कार्यों में सदा अग्रसर रहा है। सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध पूरी शक्ति के साथ प्रचार किया है। गत ४ वर्षों से हरयाणा प्रदेश में शराबबन्दी अभियान चलाया जा रहा है। इसमें प्रायः सभी राजनैतिक दलों के सदस्यों ने सहयोग दिया है। शराब के ठेके समाप्त करवाने के लिए जो धरणे आयोजित किये गये हैं, उनमें भी सभी राजनैतिक दलों के कार्यकर्त्ता सम्मिलित हुए हैं। हिन्दी-रक्षा तथा गोरक्षा आदि आंदोलनों में भी पक्ष तथा विपक्ष दोनों तरफ के कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया था।

एक समय था जबकि लोकसभा में आर्यसमाज के नेता पं० जगदेवसिंह सिद्धांती, पं० प्रकाशवीर शास्त्री, पं० रघुवीरसिंह शास्त्री, पं० शिवकुमार शास्त्री, श्री रामगोपाल शालवाले तथा पं. ओम्प्रकाश त्यागी, स्वामी रामेश्वरानन्द जी आदि महत्त्वपूर्ण स्थान रखते थे। परन्तु आज लोकसभा में आर्यनेताओं का अभाव खटक रहा है।

वर्तमान चुनाव में जनता का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए सभी दलों ने अपने-अपने घोषणा-पत्र प्रकाशित किये हैं। आशा है सर्वहितकारी के पाठकों ने उन्हें पढ़ा होगा, परन्तु किसी भी दल ने प्रदेश से शराब की बढ़ती हुई बुराई को समाप्त करने की बात नहीं कही। अनेक प्रत्याशी अपने चुनाव प्रचार के लिये शराब का सहारा लेते हैं। अपने समर्थकों को शराब पिलाते हैं और कुछ स्वयं भी पीते हैं। परन्तु वे भूल जाते हैं कि शराब के प्रचार से जनता को हानि होगी। ग्रामीण जीवन बर्बाद होगा, नई पीढ़ी पर इसका बुरा प्रभाव पड़ेगा। चुनाव के अवसर पर जिन्हें मुफ्त की शराब पीने को मिल जायेगी, उसके बाद उन्हें शराब पीने का चस्का पड़ जाता है और बाद में जब शराब पीने की उन्हें ललक उठती है तो वे अपनी परिश्रम की कमाई से शराब पीने लग जाते हैं। अतः हम हरयाणा प्रदेश के सभी मतदाताओं को सुझाव देना चाहते हैं कि वे चाहे किसी भी राजनैतिक दल से सम्बन्धित हों।

किसी ऐसे प्रत्याशी को अपना मत (वोट) न देवें

१—जो अपने चुनाव प्रचार में शराब का सहारा लेता हो और वह स्वयं भी शराब पीता हो।

२—जिस प्रत्याशी पर भ्रष्टाचार आदि के खुले आरोप लगे हों।

३—जिसने अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए अनुचित रूप से धन बटोरा हो।

४—जिसने लोकसभा अथवा विधानसभा में सार्वजनिक हित के लिए आवाज न उठाई हो।

५—जिसका जनता से सम्पर्क न रहा हो और जनता के सुख-दुःख में सम्मिलित न हुआ हो।

किसी ऐसे प्रत्याशी को अपना मत देवें

१—जिस प्रत्याशी का जनता की भलाई का पिछला रिकार्ड शानदार रहा हो और जिसने व्यक्तिगत लाभ उठाने के स्थान पर सार्वजनिक सेवा की हो।

२—जिस प्रत्याशी ने शराबबन्दी कार्यों में जनता का मार्गदर्शन किया हो।

३—जिस प्रत्याशी ने हरयाणा के हितों की रक्षार्थ समय-समय पर अपनी आवाज बुलन्द की हो।

४—जिस प्रत्याशी ने सदा धार्मिक तथा सामाजिक कार्यों में भाग लिया हो।

५—जिसने भारतीय संस्कृति और सभ्यता के प्रचार प्रसार में योगदान दिया हो और स्वयं भी मनसा वाचा कर्मणा विशुद्ध भारतीय हो और विधानसभा तथा लोकसभा में जाकर अपने प्रदेश और देशहित में कार्य करने में समर्थ हो।

—वेदव्रत शास्त्री

आर्यसमाज साबापुर जि. अम्बाला का उत्सव

१-२-३ मई को आर्यसमाज साबापुर जि. अम्बाला का उत्सव सम्पन्न हुआ, जिसमें सभा के सर्वश्री पं. चिरंजीलाल, प. ओरपाल रजराज, प. खेलसिंह आर्य, स्वामी सदानन्द महाराज तथा कुमारी सुनीता आर्या आदि विद्वानों के भजनोपदेश हुए। जनता के ऊपर काफी प्रभाव रहा। १० नौजवानों ने यज्ञोपवीत भी लिये और सभा को ४००) रु. दान दिया।

यज्ञ में घृत आदि की बर्बादी नहीं होती

लेखक—यशपाल आर्य बन्धु, आर्य निवास, चन्द्रनगर, मुरादाबाद-२४४०३२

दिल्ली के मासिक पत्र सम्राट् के अप्रैल ८७ के अंक में आचार्य राम शास्त्री जी का एक लेख 'यज्ञ के नाम पर बर्बादी क्यों ?' शीर्षक से छपा है। हमें उक्त लेख महर्षि दयानन्द की मान्यताओं एवं भावनाओं के अनुकूल नहीं लग रहा। विचारणीय बात तो यह है कि क्या महर्षि यज्ञ में घृत आदि की बर्बादी की बात भी स्वीकारते हैं कि नहीं ? कहना होगा कि नहीं। महर्षि का निम्न लेख इसमें प्रमाण है। सत्यार्थप्रकाश तृतीय समुल्लास में महर्षि प्रश्नोत्तर रूप में लिखते हैं कि—"प्रश्न—चन्दनादि घिस के किसी को लगावे वा घृतादि खाने को देवें तो बड़ा उपकार हो। अग्नि में डाल के व्यर्थ नष्ट करना बुद्धिमानों का काम नहीं। उत्तर—जो तुम पदार्थ विद्या जानते तो कभी ऐसी बात न कहते। क्योंकि किसी द्रव्य का अभाव नहीं होता। देखो ! जहां होम होता है, वहां से दूर देश में स्थित पुरुष के नासिका से सुगन्ध का ग्रहण होता है, वैसे दुर्गन्ध का भी। इतने ही से समझ लो कि अग्नि में डाला हुआ पदार्थ सूक्ष्म होके, फैलकर वायु के साथ दूर देश में जाकर दुर्गन्ध की निवृत्ति करता है।" यज्ञ में घृतादि पदार्थ डालने से बर्बादी होती है, यह दृष्टि ही अवैज्ञानिक एवं महर्षि की मान्यताओं के सर्वथा विपरीत है। महर्षि तो यहां तक लिखते हैं कि—"जितना घृत और सुगन्धादि पदार्थ एक मनुष्य खाता है, उतने द्रव्य के होम से लाखों मनुष्यों का उपकार होता है।" (स० प्र० तृतीय) अब बतावें कि खाना आवश्यक है या हवन करना ? इस पर भी महर्षि ने खाने का कहीं निषेध नहीं किया।

आचार्य जी अपने इस लेख में लिखते हैं कि—"इस मंहगाई के समय में लाखों रुपये का घी अग्निकुण्ड में डालना कहां उचित है ? जबकि गरीब घी की एक बूंद को भी तरसते हैं।" इस पर हमारा विनम्र निवेदन है कि यदि सम्पन्न लोग घृतादि से हवन करना बन्द कर भी दें तो क्या यह घृत गरीबों के पास पहुंच जायेगा ? कदापि नहीं। अपितु जो पुण्य घृत के हवन से सम्पन्न लोग कर रहे थे, उससे भी वंचित हो जायेंगे। जहां तक घृत के मंहगे होने का प्रश्न है, गुरुकुल एटा के आचार्य डा० वागीश का निम्न उद्धरण देना उचित समझते हैं। आचार्य जी लिखते हैं कि—"हम पूछना चाहते हैं कि घी मंहगा क्यों है ? क्या परमात्मा ने कोई ऐसी व्यवस्था कर रखी है कि घी मंहगा बिके ? सीधी सी बात है कि जिस चीज का उत्पादन कम होता है और मांग अधिक होती है, वह मंहगी हो जाती है। अब से तीस-चालीस साल पहले घी इस देश के गांवों में दूध और मट्ठा बेचे नहीं जाते थे और गरीब से गरीब आदमी भी इनका भरपूर सेवन करता था। फिर अब ऐसी हालत क्यों आगई कि इस देश के लोगों के लिये दूध घी दुर्लभ होगये हैं। कहा जा सकता है कि जनसंख्या के बढ़ जाने से यह स्थिति आई है, किन्तु यह पूर्णतः सत्य नहीं है। जिस अनुपात में मनुष्यों की आबादी बढ़ी, उसी तादाद में दुधारु पशुओं की संख्या बढ़ने में क्या रुकावट थी ? जबकि पशुओं की तादाद मनुष्यों के मुकाबले अधिक तेजी से बढ़ती हैं ? एक ही कारण है कि पशु वंश की वृद्धि करने के बजाये मनुष्यों ने उनकी क्रूर हत्या करना तेज कर दिया है। पशुवंश की वृद्धि पर ध्यान दिया होता तो आज यह हालत न होती। आप डेनमार्क जाकर देखें तो पता चलेगा कि वहां सैकड़ों टन मक्खन समुद्र में फेंक दिया जाता है, या किसी भूखे देश को दे दिया जाता है, क्योंकि वहां दूध डेनमार्क के लोगों की आवश्यकता से अधिक होता है। ऐसा ही हर देश में किया जा सकता है।" (द्रष्टव्य–लेखक की हवन-यज्ञ की वैज्ञानिकता नामक पुस्तक की आचार्य वागीश द्वारा लिखी भूमिका।)

आचार्य राम शास्त्री अपने लेख में लिखते हैं कि—"लोगों ने मात्र अग्नि में वस्तुयें डालने का अर्थ ही यज्ञ मान लिया है। शेष दो अर्थों को पूर्णतया त्याग दिया है। स्वामी जी ने बलिवैश्वदेव व अतिथि यज्ञ करने को लिखा है। उसका अर्थ कोई भी विद्वान् अग्नि में इन वस्तुओं (अतिथि आदि) को डालने का अर्थ नहीं करेगा।" यह ठीक है। देवयज्ञ का अर्थ भी विद्वानों, देवों को अग्नि में डालना किसी ने नहीं किया, अपितु घृत आदि के हवन का ही अर्थ लिया है, फिर आपत्ति क्यों ? महर्षि ने भी देवयज्ञ का अर्थ "यदग्नौ हूयते स देवयज्ञः" ही किया है। अर्थात् जो अग्नि में होम किया जाता है, वह देवयज्ञ है। (द्रष्टव्य पूना प्रवचन, यज्ञ और संस्कार विषयक) पंच महायज्ञों में केवल देवयज्ञ ही एक ऐसा है, जिसमें घृतादि के हवन की बात कही गई है. या फिर बलिवैश्वदेव में पका हुआ लवण रहित अन्न को अग्नि में डालने का विधान किया है। शेष यज्ञों में तो अन्य अर्थ ही प्रायः लिये जाते हैं। ब्रह्मयज्ञ, पितृयज्ञ और अतिथियज्ञ में हवन का अर्थ कहां लिया जाता है, फिर आपत्ति क्यों ?

आचार्य जी अपने लिये लिखते हैं कि "मैं दैनिक-यज्ञ का विरोधी नहीं हूं, अपितु उसका प्रबल समर्थक हूं।" इस पर भी उन्हें शंका है कि 'घी का इस तरह फूंकना उचित है या अनुचित।" हमारा विनम्र निवेदन है कि यदि अग्नि में घृत का हवन करना घी फूंकना ही है तो दैनिक यज्ञ क्या और बृहद् यज्ञ क्या सभी में फूंकना ही होगा। महर्षि इससे सहमत नहीं, यह हम पूर्व लिख आये हैं। यदि घी को आग में डालकर फूंकना ही उद्देश्य होता तो विशेष प्रकार की वेदी बनाकर और वेद के मन्त्रों से पर्याप्त समय लगाकर क्यों फूंका जाता ? तब तो लाखों रुपये का घी बिना समय बर्बाद किये एक साथ ही उसमें फूंका जा सकता था। किन्तु महर्षि का कथन है कि—'योग्य रीति यथाविधि होम करना चाहिये। एकदम मनभर घी जला दिया वा चम्मच-चम्मच करके मनभर घृत को वर्षभर जलाते रहे तो वो होम नहीं होगा।' (पूना प्रवचन, वही) स्पष्ट है कि अग्नि में घी फूंकने का नाम देवयज्ञ नहीं। यदि ऐसा होता तो कम से कम ६ माशा और अधिक से अधिक एक छटांक की आहुति का महर्षि विधान क्यों करते ? स्पष्ट है कि हवन यज्ञ में विशेष प्रकार की वेदी, हवन कुण्ड आदि बनाकर विशेष रूप से तैयार की गई सामग्री घृत आदि से, कतिपय विशेष मन्त्रों से आहुति देने का विधान है। सत्य तो यह है कि अग्नि में घृतादि से हवन करना घी का जलाना है ही नहीं, क्योंकि उसके पीछे जो भावना है, वह घृतादि को जलाने की नहीं, अपितु संसार के उपकार करने की है। अंग्रेजी के एक विद्वान् का कथन मुझे स्मरण हो आता है कि—"The idea behind the Havna is not to burn, but to sublime." अर्थात् यज्ञ के पीछे जो भावना है, वह जलाने की नहीं अपितु शोधन करने अथवा उत्कृष्टता लाने की है। स्मरण रहे कि आज के युग में प्रदूषण एक समस्या बनकर आन खड़ा हुआ है। जितना प्रदूषण इस समय है, इतना पहले कभी नहीं रहा। फिर उसकी निवृत्ति के लिए पहले से कहीं अधिक घृतादि से हवन करने की आवश्यकता क्यों नहीं। महर्षि ने इसका कहीं विरोध नहीं किया। अपितु बृहद् यज्ञों के विधान के लिए यज्ञ कुण्ड का परिमाण अपने सुप्रसिद्ध ग्रंथ संस्कारविधि में निर्धारित किया है। महर्षि वहां लिखते हैं कि—'जो लक्ष आहुति करनी हो तो चार-चार हाथ का चारों ओर समचौरस चौकोण कुण्ड ऊपर और उतना ही गहरा और चतुर्थांश नीचे अर्थात् तले में एक-एक हाथ चौकोण लम्बा चौड़ा रहे। यह कुण्ड का परिमाण विशेष घृताहुति का है।' महर्षि एक-एक लाख घृताहुति की बात कहते हैं, पर आचार्य जी उसे अनुचित ठहराते हैं और घृतादि की बर्बादी मानते हैं। अब हम महर्षि को ठीक समझें या आचार्य राम शास्त्री को ?

अन्त में महर्षि का कथन उद्धृत करते हुए लेख को विराम देते हैं। सत्यार्थप्रकाश तृतीय समुल्लास में महर्षि लिखते हैं कि—"आर्यवर शिरोमणि महाशय ऋषि, महर्षि, राजे, महाराजे लोग बहुत-सा होम करते और कराते थे। जब तक इस होम करने का प्रचार रहा, तब तक आर्यावर्त्त देश रोगों से रहित और सुखों से पूरित था, अब भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जाये।" इतना ही नहीं, महर्षि का यह भी कथन है कि "इन दिनों होम के न्यून होने से बारम्बार वायु बिगड़ रही है, सर्वत्र विलक्षण रोग उत्पन्न होते जाते हैं।" (पूना प्रवचन, वही) और अब वायु और वृष्टि जल को बिगाड़नेवाला सब दुर्गन्ध मनुष्यों के ही निमित्त

(शेष पृष्ठ ६ पर)

स्वामी श्रद्धानन्द पुस्तकालय भवन-निर्माण की योजना

आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना शताब्दी समारोह के अवसर पर सभा कार्यालय के पास स्वामी श्रद्धानन्द पुस्तकालय भवन की आधार-शिला श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के करकमलों द्वारा रखी गई थी। सभाप्रधान प्रो. शेरसिंह की मांग पर हरयाणा सरकार ने इस पुस्तकालय के लिये ५० हजार रु. का अनुदान दिया है। आधारशिला कार्यक्रम के समय श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने इस भवन के निर्माण को पूरा करने के लिये आर्यजनता से अपील की थी। अतः उन की अपील पर उसी समय निम्नलिखित आर्यसमाजों तथा महानुभावों ने दान देने के वचन अंकित करवाये—

श्री वीरेन्द्र प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर नकद	१६१००
प्रो शेरसिंह प्रधान ,, ,, ,, हरयाणा	११०००
मा. बद्रीप्रसाद आर्य कोषा. ,, ,, ,,	११०००
,, पूर्णसिंह ,, मामूरपुर पाना नरेला (दिल्ली)	११०००
स्नातक मण्डल गुरुकुल झज्जर जि. रोहतक	११०००
मन्त्री आर्यसमाज बरहाणा ,,	११००
मा. रत्तीराम आर्य द्वारा डा. योगानन्द नेवसराय दिल्ली	११०००
मन्त्री प्रबन्धकारिणी सभा दयानन्दमठ रोहतक	५१००
श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती (हरयाणा साहित्य संस्थान की पुस्तकें)	५१००
ब्र. नन्दकिशोर आर्य (चन्दा करके देंगे)	५१००
श्री सुमेरसिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज स्वरूपगढ़ जि. भिवानी	५१००
डा. गिरधारीलाल आर्य प्रधान आर्य कन्या विद्यालय कथल जि. कुरुक्षेत्र	११००
प्रिंसिपल लाभसिंह आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत जि. करनाल	११००
वानप्रस्थी हरद्वारीलाल आर्य सिंहपुरा जि. रोहतक	११००
म. भगवान्सिंह आर्य पा.स. माजरा दूबलधन ,,	११००
प्रो. सत्यवीर विद्यालंकार सभा उपमन्त्री छाजूराम जाट कालोनी हिसार	११००
प्रो. सत्यवीर शास्त्री पूर्व सभामन्त्री ग्राम डालावास जि. भिवानी	११००
श्री वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक	११००
,, बलवान्सिंह किला जफरगढ़ जि. जींद	११००
,, राव रामचन्द्र पूर्व बी. डी. मा. टाउन रेवाड़ी जि. महेन्द्रगढ़	११००
,, ,, ,, ,, ,, ,, (चन्दा करके देंगे)	एक लाख
डा सोमवीर आर्य भक्त कालोनी ,, रोहतक	११००
श्री भरतसिंह शास्त्री गुरुकुल पचगाव जि. भिवानी	११००
आचार्य ऋषिपाल आर्य हिन्दी महाविद्यालय चरखी दादरी जि. भिवानी	११००
डा. रणजीतसिंह पूर्व सभामन्त्री अग्निहोत्री भवन मा.टा. रोहतक	११००
श्री सत्यवीरसिंह आर्य मन्त्री आर्यसमाज मदाना ,,	११००
डा. मोतीराम ,, वानप्रस्थी वेद भवन कुरुक्षेत्र	११००
श्री धर्मचन्द ,, लालचन्द कालोनी रोहतक	११००
स्वामी रत्नदेव संचालक कन्या गुरुकुल खरल जि. जींद	११००
डा. योगानन्द शास्त्री गीतांजलि नई दिल्ली	११००
मन्त्री आर्यसमाज माकड़ोला जि. गुडगांव	११००
,, ,, दहकोरा जि. रोहतक	२१००
,, राजकीय अध्यापक संघ ,,	२१००
श्री खजानसिंह एडवोकेट सरपंच ग्राम झाड़सा जि. गुडगांव	२१००
मन्त्री आर्य वेदप्रचार मेवात मण्डल	११००
श्री रणसिंह यादव खेड़ी खुमार पूर्व रेलवे स्टेशन मास्टर गुजरात	११००
,, सन्तदास वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर (हरिद्वार)	११००
वैद्य रामलाल आर्य रेलवे रोड यमुनानगर जि. अम्बाला	५००
डा. विजयकुमार ग्राम मातनहेल जि. रोहतक	११००
श्री मांगेराम आर्य प्रधान आर्यसमाज बांकनेर (दिल्ली)	११००
मिस्त्री बुधराम राजस्थान	२५१

सभी दानदाताओं से निवेदन है कि अपनी दानराशि शीघ्र भेजने की कृपा करें, ताकि पुस्तकालय भवन निर्माण का कार्य आरम्भ हो सके। —बद्रीप्रसाद आर्य सभा कोषाध्यक्ष

आर्यसमाज तिगड़ाना जि० भिवानी का उत्सव

आर्यसमाज तिगड़ाना का पांचवां वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम से लाला बनारसीदास जी की प्रधानता में २९ अप्रैल, ८७ से ३ मई, ८७ तक मनाया गया। आर्यजगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक प० शोभाराम प्रेमी, प० भरतलाल शास्त्री, स्वामी मस्तानानन्द, स्वामी सुरेशानन्द, श्री गणपतसिंह आर्य और श्री विजयकुमार जी के सारगर्भित, वैदिक, शिक्षाप्रद उपदेशों से तिगड़ाना तथा आस-पास के ग्रामवासियों ने प्रति-दिन हजारों की संख्या में आकर लाभ उठाया। प्रातः सामवेद पारायण यज्ञ पर कई बहिन भाइयों ने यज्ञोपवीत धारण किये। बुराइयों को छोड़ने और प्रतिदिन सन्ध्या करने का व्रत लिया।

प्रतिवर्ष इस आर्योत्सव के आयोजन का श्रेय प्रधान श्री बनारसी-दास जी को है, जिन्होंने 'कृण्वन्तो तिगड़ाना आर्यम्' का व्रत लिया हुआ है। --सुरेशकुमार आर्यसमाज तिगड़ाना

आर्यसमाज भोगपुर कनालसी जि. अम्बाला का उत्सव

आर्यसमाज भोगपुर कनालसी का वार्षिकोत्सव २९-३०-३१ मई को सम्पन्न हुआ, जिसमें आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् स्वामी सदानन्द जी, पं० घनश्याम प्रेमी, पं० राजबल, प० बनारसीलाल व कु० सुनीता आर्या के प्रभावशाली भजनोपदेश हुए। जिससे गांव में कई नौजवानों ने यज्ञो-पवीत लिये तथा उत्सव का बहुत प्रभाव पड़ा। सभा को २०१) रु० दान दिया।

प्रवेश सूचना

आर्य गुरुकुल होशंगाबाद में इस वर्ष १ से ३१ जुलाई तक नवीन प्रवेश किया जायेगा। प्रवेश की योग्यता पांचवीं पास विद्यार्थी होना चाहिये। यह गुरुकुल आर्य प्रतिनिधि सभा म. प्र व विदर्भ द्वारा संचा-लित किया जाता है। इस वर्ष मात्र १५ विद्यार्थियों को प्रवेश किया जायेगा। अतः प्रवेश कराने के इच्छुक शीघ्र ही सम्पर्क स्थापित करें।

—अमृतलाल शर्मा विद्यावाचस्पति

भूल-सुधार

सर्वहितकारी के २८ मई के अंक के पृष्ठ ५ के कालम २ पर शताब्दी समारोह की दान सूची में श्री धर्मसिंह राठी पूर्व विधायक माडल टाउन पानीपत का दान ४००) भूलवश प्रकाशित होगया। वास्तव में यह ४००) प्रिंसिपल धूपसिंह राठी पानीपत द्वारा प्राप्त हुए थे। श्री धर्मसिंह राठी से केवल ५०) प्राप्त हुए हैं। पानीपत से धनसंग्रह में प्रि लाभसिंह जी का योगदान अनुकरणीय रहा है।

—रघुवीरसिंह संयोजक शताब्दी समारोह

आर्य विद्या परिषद् हरयाणा द्वारा संचालित—धर्म-शिक्षा परिणाम

धर्म-प्रवेशिका

अनुक्रमांक	नाम	पिता का नाम	विद्यालय	प्राप्तांक
1017	आदर्श दुआ	श्री ज्ञानचन्द दुआ	दयानन्द माध्यमिक विद्यालय नारायणगढ़, अम्बाला	80 सर्वप्रथम
821	मीनू सहगल	,, रोशनलाल सहगल	आर्य कन्या उच्च विद्यालय कालका, अम्बाला	79 सर्वद्वितीय
1013	कुमारी अर्चना	,, ओम्प्रकाश शर्मा	दयानन्द माध्यमिक विद्यालय नारायणगढ़, अम्बाला	78 तृतीय
1031	सोनिया	,, कृष्णकुमार	,, ,, ,, ,, ,,	,, ,,
1391	सन्तोष	,, मनीराम	आर. डी. आर्य कन्या उच्च विद्यालय करनाल	,, ,,
1016	विनय गुप्ता	,, सतप्रकाश गुप्ता	दयानन्द माध्यमिक विद्यालय नारायणगढ़	77 चतुर्थ

उत्तीर्ण विद्यार्थी

689 से 704, 706 से 710, 713 से 725, 727 से 743, 745 से 751, 753, 756, 757, 759, 760, 763 से 765, 767 से 778, 780 से 782, 784 से 795, 798 से 858, 860 से 896, 898 से 901, 903 से 906, 908, 909, 911 से 914, 917 से 928, 930 से 933, 936, 937, 939, 941, 942, 944 से 948, 952, 953, 955 से 957, 959, 961, 964, 966, 968, 969, 974, 978, 979, 982, 983, 986 से 990, 992, 994, 996 से 1002, 1004 से 1054, 1056, 1058, 1061 से 1066, 1069 से 1072, 1074 से 1076, 1078 से 1082, 1084 से 1097, 1099, 1100, 1102, 1105 से 1111, 1113 से 1118, 1120 से 1124, 1127 से 1131, 1134, 1137 से 1139, 1143, 1145 से 1148, 1151 से 1153, 1155 से 1158, 1160, 1161, 1164 से 1168, 1171, 1173, 1175, 1177 से 1180, 1182, 1189, 1190, 1192, 1193, 1195 से 1197, 1199 से 1202, 1204, 1205, 1208, 1209, 1211, 1213, 1219 से 1223, 1225, 1227 से 1229, 1232, 1234 से 1236, 1238 से 1242, 1244, 1245, 1247, 1250 से 1254, 1256, 1258, 1259, 1262, 1263, 1265, 1267, 1270, 1271, 1274, 1275, 1277 से 1279, 1281 से 1285, 1287, 1289, 1291 से 1300, 1302 से 1308, 1310, 1312, 1314 से 1319, 1321, 1325, 1326 1333 से 1335, 1340, 1345, 1348 से 1351, 1353 से 1361, 1363, 1365, 1367, 1370, 1372 से 1377, 1379 से 1386, 1389, 1390, 1392 से 1416

धर्म-भूषण

अनुक्रमांक	नाम	पिता का नाम	विद्यालय	प्राप्तांक
800	आत्माराम	श्री रामकुमार	आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत	89 सर्वप्रथम
652	नीतु	,, राजकुमार	आर्य कन्या पाठशाला जगाधरी (अम्बाला)	85 द्वितीय
642	नीलम	,, अरुणकुमार	,, ,, उच्च विद्यालय कालका	84 तृतीय
918	संजीवकुमार	,, नियामतराय	,, वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत	84 तृतीय
867	रवीन्द्रकुमार	,, फतेहराम	,, ,, ,, ,, ,,	83 चतुर्थ
628	प्रदीप वधवा	,, बालकृष्ण वधवा	बाल मन्दिर दयानन्द माडर्न स्कूल, मा. टा. सोनीपत	83 चतुर्थ

उत्तीर्ण विद्यार्थी

595 से 605, 608 से 621, 623 से 662, 664, 666 से 668 670 से 672, 674, 675, 677, 680 से 683, 687 से 689, 691 से 693, 695, 696, 698, 700, 701, 704 से 706, 708 से 717, 719 से 721, 723, 725, 727, 729 से 732, 734 से 747, 750, 751, 753 से 759, 761, 765 से 768, 770 से 775, 778 से 784, 786 से 794, 796 से 813, 815, 816, 819, 820, 822, 825, 829, 831, 832, 834, 839, 841, 845 से 850, 852 से 854, 856, 861 से 870, 872 से 874, 876, 878, 885, 889, 891, 893, 894, 898, 901, 906 से 915, 917 से 933, 937 से 940, 943 से 947, 949 से 957, 959 से 969.

धर्म-निधि

अनुक्रमांक	नाम	पिता का नाम	विद्यालय	प्राप्तांक
546	गायत्री	श्री खेमचन्द	आर्य कन्या उच्च विद्यालय कालका, अम्बाला	76 सर्वप्रथम
538	ऋतु	,, विपिनचन्द	,, ,, ,, ,, ,, ,,	71 द्वितीय
540	अनुराधा	,, मनमोहनलाल गुप्ता	,, ,, ,, ,, ,, ,,	68 तृतीय
545	मन्जु	,, सोहनलाल	,, ,, ,, ,, ,, ,,	67 चतुर्थ

उत्तीर्ण विद्यार्थी

536 से 548, 550, 551, 553, 556, 559, 560, 563 से 565, 567, 569 से 571, 573, 574, 580, 582 से 584, 586 से 589, 593, 595, 598, 601, 602, 606, 609, 611, 615, 618.

—बालसिंह प्रस्तोता आर्य विद्या परिषद् हरयाणा

पोल खुल गई

आज देश के गद्दारों की पोल खुल गई।
मानवता के हत्यारों की पोल खुल गई।।

अकल के अन्धे नकली धन्धे करते हैं जो लोग।
योग योग में फंसे उसी के लिए सतत उद्योग।
छटे-छटे सब स्टारों की पोल खुल गई।
नेता के झूठे नारों की पोल खुल गई।।१

अच्छा पालन किया धर्म, बेशर्म बहाकर खून।
पाकिस्तानी बुर्का, खालिस्तानी चढ़ा जनून।
जत्थेदारों गुरुद्वारों की पोल खुल गई।
छिपे हुए सब हथियारों की पोल खुल गई।।२

देश की रक्षा के दलाल पचपन करोड़ गये चाट।
सरकारी खेड़े का बेड़ा कितना बारह बाट।
विदेश में खाते सारों की पोल खुल गई।
नकली सभी वफादारों की पोल खुल गई।।३

करें दनादन आपस में ही देता मियां अजान।
इन नादान मुसलमानों का यह ईमान कुरान।
अल्लाह के ठेकेदारों की पोल खुल गई।
अमरीका के गमख्वारों की पोल खुल गई।।४

राम जन्म भूमि को यहां मस्जिद रहे बताये।
सारे भवन आर्यों के सब नाम-निशान मिटाये।
उन अय्यारों मक्कारों की पोल खुल गई।
मस्जिद की इन मीनारों की पोल खुल गई।।५

घर-घर मटियाले चूल्हे गये राजा भोज बताये।
महा अहिंसक जैनों घी की चर्बी रहे खिलाये।
सब पाखण्ड दुराचारों की पोल खुल गई।
वेद विरोधी मतमारों की पोल खुल गई।।६

उल्टी कमर चलाकर वो तो कर गये किस्तर गोल।
बोल-मोल पर कहां रही है पिट जाते हैं ढोल।
बोल-बोल सब जयकारों की पोल खुल गई।
स्वर्णकार और मनिहारों की पोल खुल गई।।७

निर्दोषों को मारके गोली कर गये बेटा कूच।
अमरीका में जाकर छिप गये मुडाके दाढ़ी मूंछ।
पर खूंख्वारों की स्यारों की पोल खुल गई।
नीच कमीने बदकारों की पोल खुल गई।।८

रात दिनों का देखा-भाला लम्बी दाढ़ीवाला।
काला नाग दाग बन-बनकर हत्यारों को पाला।
बरनाला के भी यारों की पोल खुल गई।
कई मन्त्री बटमारों की पोल खुल गई।।९

'व्याकुल' कवि कहां तक सच है और कहां तक झूठ।
किस कल बैठे देखो अब ये बेनकेल का ऊंट।
चहुंदिशि शोर चोर बारों की पोल खुल गई।
और जोकर पहरेदारों की पोल खुल गई।।१०

—प्रकाशवीर व्याकुल आर्यसमाज नयाबांस, दिल्ली-६

धन्यवाद

१२ मार्च, ८७ को प्रातः सरकारी ड्यूटी पर जाते समय मैं मोटर साइकल दुर्घटना में घायल होकर दिल्ली हस्पतालों में उपचार के बाद घर पर आया तो बहुत से सहानुभूति पत्र आये हुए मिले। मैं उन सज्जनों का आभार प्रकट करता हूं। क्योंकि मैं व्यक्तिगत पत्र-व्यवहार करने में अब भी असमर्थ हूं।

—नाथ सोनीपत

ईसाई पादरियों का प्रलोभन विफल

मुण्डा जाति के ६०० से अधिक ईसाई हिन्दू-धर्म में प्रविष्ट

श्री स्वामी धर्मानन्द जी के प्रयत्न और प्रेरणा पर राउर केला से ७० कि०मी० दूर बगालता ग्राम पंचायत में महपड़ा ग्राम (जि. सुन्दर गढ) में १०-११ मई को यजुर्वेद पारायण महायज्ञ के अवसर पर ६०० से अधिक मुण्डा जाति के लोगों ने ईसाई धर्म छोड़कर अपने प्राचीन हिन्दू 'आर्य' धर्म को ग्रहण किया।

बहुत संघर्ष के पीछे यह शुद्धि हो पाई, जहां आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता समझा बुझाकर उन्हें तैयार करते। पीछे-पीछे ईसाई प्रचारक उन्हें फिर बहका लेते, इस प्रकार महीनों यह खेल चलता रहा। पर अन्त में आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता इस ईसाई प्रभाव को छेडने में सफल हुए।

११ मई को मुण्डा समाज के प्रमुख एवं हजारों लोगों की उपस्थिति में श्री स्वामी धर्मानन्द जी की अध्यक्षता में श्री विशिकेसन शास्त्री एवं श्री योगेन्द्र शास्त्री ने शुद्धि संस्कार कराया। आशीर्वाद प्रदान करते हुए श्री स्वामी धर्मानन्द जी ने मुण्डा जाति की वीरता एवं स्वाधीनता संग्राम में अपूर्व योगदान का वर्णन किया। सभी के नेत्रों में हर्षाश्रु भर आये। इन लोगों को तैयार करने में श्री प० देवपाल एव श्री मस्तकुमार शास्त्री का विशेष सहयोग रहा। आप दोनों का ही इस क्षेत्र में परिचय एवं प्रभाव है।

इस शुद्धि कार्यक्रम से सभी लोग बहुत उत्साहित हुए। इनमें नई चेतना की लहर फैल गई है। आशा है आगे हजारों की संख्या में शुद्धियां होंगी।

—विशिकेसन शास्त्री मन्त्री

जिला हिसार में वेदप्रचार की धूम

दिनांक २९-५-८७ को सायंकाल श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी के निवास स्थान ढाणी में वेदप्रचार का आयोजन किया गया, जिसमें स्वामी जगत्मुनि जी व महाशय झाबेराम जी के शिक्षाप्रद भजन व प्रवचन हुए। प्रातःकाल हवन किया गया। बाद में ११ से २।। बजे तक आर्यसमाज मन्दिर नलवा में सत्संग का कार्यक्रम किया गया। काफी संख्या में नर-नारियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर क्रांतिकारी जी ने भी शराबबन्दी व आर्यसमाज के कार्यों पर प्रकाश डाला। रात्रि को ग्राम बालावास में वेदप्रचार हुआ। उपरोक्त विद्वानों ने अपने-अपने ढग से प्रवचनों व भजनो द्वारा अपना कार्यक्रम रखा। विशेष महाशय झाबेराम जी ने 'कांशी के मैं रुकना पड़गा ये कौन स्वामी आग्या' भजन द्वारा सभा बांध दी। लोगों ने बड़ी श्रद्धा व शांति से वेदप्रचार सुना। प्रातःकाल श्री हेतराम आर्य के घर हवन किया। कार्यक्रम कुल मिलाकर बहुत ही रोचक एवं प्रभावशाली रहा। लोगों ने क्रांतिकारी जी से आग्रह किया कि जल्दी जल्दी विद्वानों को बुलाते रहा करो।

—वजीरसिंह आर्य, आर्यसमाज कंवारी

आदर्श विवाह

आर्ययुवक श्री हरिसिंह आर्य सभासद् आर्यसमाज भाडवा गोविन्दपुरा निवासी ने १ मई, ८७ को सम्पन्न अपने विवाह संस्कार में दान, दहेज एव अन्य पाखण्डपूर्ण रूढियों से मुक्त होकर एक अनुकरणीय आदर्श स्थापित करके साहस दिखाया है। टीका, लग्न, मिलनी आदि अवसरों पर केवल १) रुपया ही स्वीकार किया। विदाकाल में दान आदि का भी १) रु० ही लिया। अन्य कोई दहेज सम्बन्धी सामान भी उन्होंने प्राप्त नहीं किया। उल्लेखनीय है कि इस आर्य युवक का विवाह जीदराण जि. रोहतक के भूपसिंह की सुपुत्री कविता देवी हुआ है। विवाह संस्कार वैदिक विधि से धर्मपाल आर्य शास्त्री ने सम्पन्न कराया।

—धर्म शास्त्री मन्त्री

दौलताबाद गांव जि० गुडगांव में २० जून से २८ जून तक

विशाल ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण योग शिविर का आयोजन

युवा संघटन "आर्यावर्त्त युवक परिषद्" व आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्वावधान में गांव दौलताबाद (गुडगांव) के मुन्शीवाली प्याऊ में एक विशाल ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण योग शिविर का आयोजन किया जारहा है। आज देश का युवक कर्त्तव्यपरायणता, आचार संहिता, त्याग बलिदान, न्याय, संघर्ष अर्थात् भारतीय संस्कृति के रास्ते को तिलांजलि देकर पाश्चात्य गली सड़ी षड्यन्त्रकारी संस्कृति का शिकार बन पथ-भ्रष्ट होता जारहा है। आज नवयुवक जानवर की तरह स्वार्थपूर्ण, आत्मकेन्द्रित और आदर्शहीन जिन्दगी जीने के लिये मजबूर कर दिया गया है। आज युवकों के सामने जिन्हें आदर्श के नमूने के रूप में पेश किया जाता है, वे हैं सारी दुनिया के छटे हुए दगाबाज दलाल व ऐसे भाड़े के खूनियों (Mercinarics) के नमूने जिनके काले कारनामे लेखनी लिख नहीं सकती तो फिर युवकों में व्यक्ति केन्द्री मानसिकता, उद्दण्डता और खुदगर्जी की मनोभावना क्यों नहीं बढ़ेगी। आज हम एक संक्रमण काल (Transitional Phase) से गुजर रहे हैं। पुराना आदर्श सड़ चुका है, किन्तु नया क्रांतिकारी वैदिक आदर्श अभी जनता तक पहुंच नहीं पाया है। परिणामस्वरूप निराशा (Frustration) छाई हुई है, उदासीनता (Indifference) पनप रही है। लेकिन फिर भी भारत का वर्तमान समाज नवीन विचारधारा को जन्म देने के लिये आज प्रसववेदना से व्याकुल है। तभी तो महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कहा था कि "संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना"। यानि सामाजिक समस्यायें, जिनके दिल में दर्द पैदा नहीं करतीं और समाज प्रगति की भावना से जिनकी आंखों से नींद गायब नहीं हो जाती, ऐसे आदर्शवादी सुसंस्कृत (Cultured) लोगों से दूर रहें।

नवयुवको! इसलिये इस महान् ऐतिहासिक जिम्मेदारी को समझो। इसके लिये आपका योग शिविर में भाग लेना अत्यन्तावश्यक है।

इस आयोजन में कर्मयोगी श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज आचार्य गुरुकुल झज्जर, स्वामी सुधानन्द कासन, प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, आचार्य सत्यप्रिय मुनि तिजारा, स्वामी प्रेमानन्द कन्हई, आचार्य ब्र० विजयपाल गुरुकुल झज्जर, पं० ईश्वरचन्द्र शास्त्री गुडगांव, पं० रणवीर शास्त्री समालखा, श्री सुरेशकुमार शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, पं० ईश्वरसिंह तूफान, पं० चन्द्रदेव शास्त्री भजनोपदेशक, श्री बलवान्सिंह योगाचार्य साधी तथा अन्य अनेक सन्यासी, विद्वान् व भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

योग शिविर में भाग लेनेवाले प्रशिक्षणार्थी २० जून सायं को प्याऊ दौलताबाद में पहुंच जावें। प्रवेशार्थी की आयु १४ से २५ वर्ष तक हो। सभी युवक अपने साथ ऋतु अनुकूल बिस्तर, प्लेट, कटोरी, गिलास, चम्मच, लोटा, सफेद या खाकी निकर अथवा सफेद या लाल कच्छा, लंगोट, सेंडो बनियान, लाठी, (कान तक की), सफेद, खाकी व नीला जूता, सफेद जुराब अवश्य लावें।

प्रवेश शुल्क केवल मात्र २५) रु० प्रति प्रवेशार्थी तथा भोजनादि का प्रबन्ध नि:शुल्क होगा।

विशेष—२८ जून को प्रातः ८ बजे से ११ बजे तक विद्वानों के भाषण, व्यायाम प्रदर्शन, ब्र० विजयपाल जी द्वारा कार रोकना, लोहे की बेल तोड़ना, गले के नाजुक स्थान से सरिये मोड़ना, हाथों से कांच पीसना आदि प्रदर्शन किये जायेंगे।

शिविर संचालक
ब्र० महेन्द्रसिंह शास्त्री
महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

संयोजक
खजानसिंह
अध्यापक

व्यायाम शिक्षक प्रशिक्षण शिविर

द्वितीय तृतीय श्रेणी

दिनांक ११ से २५ जून १९८७ ई०

स्थान—गुरुकुल झज्जर जि० रोहतक, हरयाणा

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी ११ से २५ जून तक गुरुकुल झज्जर में सार्वदेशिक आर्य वीरदल द्वारा डा० देवव्रत आचार्य उपप्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्य वीरदल के मार्ग निर्देशन में व्यायाम शिक्षक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है। इसमें जिन्होंने दल की पाठविधि के अनुसार प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण की है अथवा जो आर्यवीर गतवर्षों से शाखा लगा रहे हैं उन्हें ही द्वितीय श्रेणी (उपव्यायाम शिक्षक) में प्रवेश मिलेगा। द्वितीय श्रेणी को तृतीय श्रेणी का प्रशिक्षण दिया जायेगा। आप सादर आमन्त्रित हैं।

आवश्यक सामान—प्रवेश शुल्क ५०) रु०, खाकी निकर, सफेद जुराब, ब्राउन जूते, काला कच्छा, लंगोट, लाठी, नोट बुक, कटोरी, लोटा, थाली, बिस्तर तथा अन्य आवश्यक सामान।

नोट—प्रथम श्रेणी का प्रमाण-पत्र साथ लावें।

शिविर का उद्घाटन ११ जून को सायं ५ बजे होगा। मार्ग झज्जर से रेवाड़ी रोड पर गुरुकुल मार्ग पर उतर कर गुरुकुल पहुंचें।

—विजयपाल आचार्य प्रधानाध्यापक गुरुकुल झज्जर

आर्यसमाज बालसमन्द (हिसार) का उत्सव सम्पन्न

दिनांक ९-१० मई, १९८७ को आर्यसमाज बालसमन्द का वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया, जिसमें आर्यजगत् के प्रकांड विद्वान् स्वामी रामेश्वरानन्द जी, स्वामी जगत्मुनि जी, बहन दयावन्ती आर्या, पं० प्रभुदयाल प्रभाकर, श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी आदि ने निम्न विषयों पर विस्तार से विचार रखे। आत्मा, परमात्मा, ईश्वर कैसा है, क्या करता है। नारी-शिक्षा, राष्ट्र-रक्षा, आज की भ्रष्ट राजनीति, दहेजबन्दी, शराबबन्दी, मूर्तिपूजा पाखण्ड तथा समाज में बढ़ रही चरित्रहीनता आदि के अलावा क्रांतिकारी जी ने ग्राम सुधार युवक समिति के नवयुवकों को धिक्कारा। साथ में पूरजोर शब्दों में कहा कि आप सब मिलकर अपने ग्राम से दो शराब के ठेकों को हटवा कर अपने गांव से इस कलंक को मिटाओ और गांव में वर्ष में दो बार हनुमान के नाम पर मेला भरता है। उस पाखण्ड व लूट-खसोट से सावधान रहने को कहा।

इसके अतिरिक्त चौ० वेदराज, चौ० नत्थासिंह, महाशय झाबेराम के प्रेरणाप्रद समाज-सुधार सम्बन्धी शिक्षाप्रद भजन हुए। प्रातःकाल हवन किया गया। लोगों को जोश-खरोश के साथ शताब्दी समारोह में पहुंचने की अपील भी की गई।

—मन्त्री आर्यसमाज बालसमन्द

(पृष्ठ २ का शेष)

से उत्पन्न होता है तो उसका शोधन का निवारण करना भी उनको योग्य है।' (ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, वेदविषय) तथा 'ब्रह्मांड में संचार करनेवाला जो वायु है, वही जीव का हेतु है। अन्तर वायु द्वारा ठीक-ठीक व्यापार होवे, इसलिये बाहर का ब्रह्मांड वायु शुद्ध रहना चाहिये। ब्रह्मांड वायु शुद्ध करने के लिये यज्ञ-कुण्ड में घृत कस्तूरी केशरादि सुगन्धित, पुष्टिकारक द्रव्यों का हवन करना चाहिये।' (पूना प्रवचन, वही) हमें तो यह शिकायत है कि लोग महर्षि के कथनानुसार घृत से केशर, कस्तूरी, चन्दन, जायफल, जावित्री आदि पदार्थ नहीं डालते और इधर आचार्य जी को यह शिकायत है कि लोग घी क्यों ही क्यों बर्बाद कर रहे हैं और इस पर भी महर्षि की दुहाई दे रहे हैं। अब क्या सही है—इसका निर्णय पाठक स्वयं करेंगे।

आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन

आर्यसमाजों के सहयोग से सभा शताब्दी समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न होगया है। तदर्थ आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं के अधिकारियों का हार्दिक धन्यवाद।

समारोह के लिये धनसंग्रह की रसीदें तथा उन द्वारा प्राप्त धन का विवरण जिन आर्यसमाजों अथवा अन्य आर्य महानुभावों ने सभा कार्यालय में नहीं भेजा है उनसे निवेदन है कि वे अपनी रसीद बुक अथवा अवशेष प्राप्त धनराशि के साथ तुरन्त सभा कार्यालय रोहतक भेजने का कष्ट करें, ताकि शताब्दी समारोह के हिसाब को आडिट करवाया जा सके।

—रघुवीरसिंह संयोजक शताब्दी समारोह

शराब मानव-समाज की शत्रु है इससे अवश्य बचें।

वैदिक संस्कार प्रशिक्षण शिविर

स्थान—दयानन्दमठ, रोहतक

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि दयानन्दमठ रोहतक की ओर से दिनांक २२ जून से २८ जून, १९८७ तक एक सप्ताह का संस्कार प्रशिक्षण शिविर लगाया जारहा है, जिसमें आर्य पुरोहित, शास्त्री, विशारद, मध्यमा, मैट्रिक (संस्कृत) परीक्षा उत्तीर्ण शिक्षार्थी भाग ले सकेंगे। आवास, सादा भोजन आदि की व्यवस्था दयानन्दमठ की ओर से होगी। ऋतु अनुकूल वस्त्र तथा संस्कार-विधि और अभ्यास पुस्तिका अपने साथ लावें। प्रवेश के लिए आवेदन-पत्र अधिष्ठाता दयानन्दमठ के नाम १५ जून, १९८७ तक भेज देवें।

सुदर्शनदेव आचार्य
प्रशिक्षक

महाशय भरतसिंह
मन्त्री दयानन्दमठ, रोहतक

नवीन प्रवेश सूचना

श्रीमद्दयानन्द उपदेशक विद्यालय यमुनानगर (निकट शादीपुर) अम्बाला, हरयाणा में शिक्षा सत्र ८७-८८ हेतु नवीन प्रवेश आरम्भ है। प्रवेश के इच्छुक कम से कम कक्षा आठ उत्तीर्ण छात्र श्री प्रधानाचार्य से पत्र व्यवहार करें।

भोजन, शिक्षा और निवास सर्वथा निःशुल्क हैं।

—यज्ञप्रिय शास्त्री प्रधानाचार्य

शोक समाचार

चौ० छोटूराम उपप्रधान आर्यसमाज क्योडक के जवान भतीजे श्री राजपाल आयु २५ वर्ष का २४-५-८७ को देहांत होगया है। दुःखी परिवार को शांति दे।

—अजमतसिंह प्रधान आर्यसमाज क्योडक

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ में योग साधना शिविर

दिनांक २७ जून से ५ जुलाई तक

इस शुभावसर पर प्रशिक्षणार्थ यौगिक क्षेत्र में सुविख्यात वेदों में योगविद्या आदि ग्रन्थों के लेखक, योगधाम आश्रम ज्वालापुर हरिद्वार के संचालक श्री स्वामी दिव्यानन्द जी 'सरस्वती' एवं तपोनिष्ठ, योगमूर्ति पूज्य श्री स्वामी प्रेमानन्द जी महाराज आचार्य संन्यास आश्रम गाजियाबाद पधार रहे हैं। साथ ही प्रशिक्षण में सहयोगी रहेंगे श्री स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी योगमार्ग के पथिक।

अतः यौगिक क्षेत्र के पथिकों के लिये सुअवसर प्राप्त है। ऋतु अनुसार बिस्तर, साधना में बैठने के लिये गद्दी, लंगोट, तौलिया, लेखनार्थ कापी-पेन आदि साथ लेकर २७ जून सायं ५ बजे इष्ट मित्रों सहित पधारें। अपने घर ही सिद्धासनादि में बैठने का अभ्यास अभी से आरम्भ करदें। भोजन तथा निवास का प्रबन्ध आश्रम की ओर से होगा।

आवश्यक निवेदन—यदि आपके पास 'योग दर्शन' और वेदों में 'योग विद्या' ग्रंथ हों तो साथ लाने का कष्ट करें। घर या कार्यालय से पूरा अवकाश लेकर आयें, शिविर मध्य छुट्टी नहीं मिलेगी। धूम्रपानादि के व्यसनियों को व्यसन त्याग प्रतिज्ञा करने पर ही प्रवेश मिलेगा। संग्रहणी, दमा, खासी, श्वास के रोगी आने का कष्ट न करें। भोजनादि विषय में एवं अन्य व्यवस्था में पूर्ण रूप से अनुशासन में रहना होगा। २७ जून से पूर्व आपका नाम आश्रम में पहुंच जाना चाहिए अन्यथा इस शुभावसर से वंचित रह जायेंगे। आश्रम दिल्ली रोड पर हरयाणा रोडवेज बस स्टाप के निकट है।

—मांगेराम आर्य प्रचारमन्त्री

आदर्श विवाह संपन्न

गत दिनों आर्यसमाज मुकलान के भूतपूर्व प्रधान श्री बदलूराम आर्य के सुपुत्र श्री राजवीर आर्य का विवाह चौ० वीरसिंह की सुपुत्री कौशल्या आर्या (ढाबी कलां) का आदर्श विवाह वैदिकरीति से विधिवत् सम्पन्न हुआ। विवाह संस्कार श्री रणवीर शास्त्री ने करवाया। केवल २५ बाराती गये। किसी भी प्रकार का दहेज नहीं लिया गया। प्रातःकाल ग्राम मुकलान (हिसार) में हवन किया गया, जिसमें स्वामी सर्वदानन्द जी तथा जिला हिसार के गणमान्य आर्य सज्जन एवं मैं भी लड़के को आशीर्वाद देने पहुंचे। वास्तव में इस दहेज रहित विवाह से अन्य नवयुवकों ने शिक्षा लेनी चाहिये।

—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी सभा उपदेशक

आर्यसमाज नरेला का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री लायकराम, उपप्रधान—प्रेमकृष्ण, मन्त्री—मा० पूर्णसिंह, उपमन्त्री—डा० धर्मवीर व राजपाल आर्य, कोषाध्यक्ष-आनन्दकुमार, सहायक कोषाध्यक्ष—सूरजभान, पुरोहित-देवेन्द्रनाथ, सहायक-पं० मूलचन्द गौतम।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 रजि० L 49 सृष्टि संवत् १,९६,०८,५३,०८७



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री सह-सम्पादक—डा० यज्ञवीर

वर्ष १४, अङ्क २९ २१ जून, १९८७ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

हरयाणा के नये विधायकों की सूची

जिला अम्बाला : १. कालका–श्री कांतिभट्ट (लो), २. नारायणगढ़–श्री जगपालसिंह (नि.), ३. सढ़ौरा—श्री भागमल (भाजपा), ४. छछरौली—मुहम्मद असलम शेर खां (कांग्रेस), ५. यमुनानगर—डा० कमला वर्मा (भाजपा), ६. जगाधरी—श्री बृजमोहन भाजपा, ७. मुलाना—श्री सूरजभान भाजपा, ८. अम्बाला छावनी—श्रीमती सुषमा स्वराज (भाजपा), ९. अम्बाला शहर—श्री शिवप्रसाद (भाजपा), १० नग्गल—श्री हरमहेन्द्रसिंह (नि.), जिला करनाल : ११. इन्द्री—श्री लछमनसिंह कम्बोज (लो), १२. नीलोखेड़ी—श्री जयसिंह (नि), १३. करनाला—चुनाव नहीं हुआ, १४. जुण्डला-(सु)—चुनाव नही हुआ, १५. घरौंडा—श्री पीरूराम (लो), १६. असंध-(सु)–श्री मनफूलसिंह (लो), १७. पानीपत श्री बलबीर पालशाह (कांग्रेस), १८. समालखा—श्री सचदेव तायल (लो), १९. नौल्था—श्री सतबीरसिंह (लो)। जिला कुरुक्षेत्र : २०. शाहबाद—श्री हरनामसिंह (कम्यु.), २१. रादौर—श्री रतनलाल (भाजपा), २२. थानेसर—श्री गुरदयालसिंह (लो), २३. पिहोवा—श्री बलबीरसिंह (लो), २४. गुहला—श्री बूटासिंह, (लो), २५. कैथल—श्री सुरेन्द्र मदान (लो), २६. पुण्डरी—श्री माखनसिंह (लो), २७. पाई—श्री हरिसिंह (लो)। जिला रोहतक : २८. हसनगढ़–श्री ओम्प्रकाश भारद्वाज (लो), २९. किलोई—श्री श्रीकृष्ण (लो), ३०. रोहतक—डा० मंगलसेन (भाजपा), ३१. महम—श्री देवीलाल (लो), ३२. कलानौर (सु)—श्री जयनारायण (भाजपा), ३३. बेरी—श्री रघबीरसिंह (लो), ३४.—साल्हावास—श्री रामनारायण (लो), ३५. झज्जर (सु)–कु० मायवी कीर्ति (नि), ३६. बादली—श्री धीरपालसिंह (लो), ३७. बहादुरगढ़—श्री मांगेराम (लो)। जिला सोनीपत। ३८. बड़ौदा (सु)—श्री कृपाराम पूनिया (लो), ३९. गोहाना—श्री किशनसिंह (लो), ४०. कैलाना—श्री वेदसिंह (लो), ४१. सोनीपत—श्री देवीदास (भाजपा), ४२. राई—श्री महासिंह (लो), ४३. रोहट—श्री महेन्द्रसिंह (लो)। जिला जींद : ४४. कलायत—श्री बनारसी (लो), ४५. नरवाना—श्री टेकचन्द (लो), ४६. उचाना कलां—श्री देसराज (लो), ४७. राजौंद—श्री दुर्गादत्त (लो), ४८. जींद—श्री परमानन्द (लो), ४९. जुलाना—श्री कुलबीरसिंह (लो), ५०. सफीदों—श्री सरदूलसिंह (नि)। जिला फरीदाबाद : ५१. फरीदाबाद—श्री कुन्दनलाल (भाजपा), ५२. मेवला महाराजपुर—श्री महेन्द्रप्रतापसिंह (कांग्रेस), ५३. बल्लभगढ़—श्री योगेशचन्द्र शर्मा (लो), ५४. पलवल—श्री सुभाषचन्द (लो), ५५. हसनपुर—श्री उदयभान (लो), ५६. हथीन—श्री भगवान् सहाय (लो)। जिला गुड़गांव : ५७. फिरोजपुर झिरका—श्री अजमत खां (लो), ५८. नूह—श्री खुरशीद अहमद (लो), ५९. तावडू—श्री तयब हुसैन (कांग्रेस), ६०. सोहना—श्री धर्मपाल (नि.), ६१. गुड़गांव—श्री सीताराम (भाजपा), ६२. पटौदी (सु)—श्री शिवलाल (लो), ६३. बाढड़ा -श्री रणसिंह (लो), ६४. दादरी—श्री हुकमसिंह (लो), ६५. मुण्ढाल—श्री वासुदेवसिंह (लो), ६६. भिवानी—मतगणना स्थगित है, ६७. तोशाम—श्री धर्मबीर (लो), ६८. लोहारू—श्री हीरानंद (लो), ६९. बवानी खेड़ा—श्री जगन्नाथ (लो)। जिला हिसार : ७०. बरवाला—श्री सुरेन्द्रसिंह (लो), ७१. नारनौंद—श्री वीरेन्द्रसिंह (लो), ७२. हांसी—श्री पी० के० चौधरी (भाजपा), ७३. भट्टू कलां—श्री सम्पतसिंह (लो), ७४. हिसार—श्री हीरासिंह (लो), ७५. घिराय—श्री आत्माराम (लो), ७६. टोहाना—श्री हरपालसिंह (कम्यु. मा), ७७. रतिया (सु)—श्री आत्मासिंह (लो), ७८. फतेहाबाद—चुनाव नही हुआ, ७९ आदमपुर—श्रीमती जसमादेवी (कांग्रेस), जिला सिरसा ८०. दड़बीकलां—श्रीमती विद्यादेवी बेनीवाल (लो), ८१. एलनाबाद—श्री भागीराम (लो), ८२. सिरसा—श्री हजारचन्द (लो), ८३. रोड़ी—श्री रणजीतसिंह (लो), ८४ डबवाली—श्री मनीराम (लो)। जिल महेन्द्रगढ ८५. बावल—श्री मनीराम (लो)। (दैनिक ट्रिब्यून से साभार)

मुख्यमन्त्री श्री देवीलाल को हार्दिक बधाई

विधानसभा के चुनाव में हरयाणा संघर्ष समिति के गठजोड़ को बहुत ही शानदार विजय मिली है। इसके लिये श्री देवीलाल जी बधाई के पात्र हैं। उन्हें आशा से अधिक स्पष्ट बहुमत प्राप्त हुआ है, जो कि आज तक किसी भी दल को नहीं मिल सका। वे हरयाणा की जनता के हित में जो भी कानून बनाना चाहें, आसानी से बना सकेंगे।

हमारी कामना है कि श्री देवीलाल जी अपने मुख्यमन्त्री काल में हरयाणा प्रदेश से भ्रष्टाचार तथा शराब की बढ़ती हुई बीमारी को समाप्त करने के लिये तत्काल कार्यवाही करें। इस बात को सभी बुद्धिजीवी अनुभव करते हैं कि यदि भ्रष्टाचार तथा शराब जैसी सामाजिक बुराइयां शीघ्र बन्द न की गई तो हरयाणा के किसान तथा मजदूर बर्बाद हो जायेंगे। सरकार भले ही कितने विकास कार्य प्रारम्भ करे, परन्तु जब तक उपरोक्त बुराइयों को तत्काल समाप्त नहीं किया जायेगा, तब तक विकास कार्य सफल नहीं हो सकेंगे। इस शुभ कार्य में सभा की ओर से पूर्ण सहयोग दिया जायेगा।

वर्षाऋतु में वेदप्रचार सप्ताह मनावें

आर्यसमाजों में प्रतिवर्ष वर्षाऋतु में (जुलाई, अगस्त तथा सितम्बर तक) वेदप्रचार सप्ताह धूमधाम से मनाया जाता है। अतः हरयाणा के आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वे अपनी सुविधा के अनुसार वेदप्रचार सप्ताह की तिथियां निश्चित करके सभा को सूचित करें, ताकि सभा की ओर से उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों का कार्यक्रम बनाया जा सके। श्रावणी उपाक्रम के दिनों में सभी आर्यसमाजों की मांग पर प्रबन्ध कर सकना कठिन होगा। अतः जुलाई से सितम्बर तक हरयाणा में निरन्तर वेदप्रचार सप्ताह का आयोजन किया जायेगा। जिन आर्यसमाजों की मांग पहले आयेगी, उन आर्यसमाजों का प्रबन्ध पहले किया जायेगा।

—रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता

हरयाणा के आर्यसमाजों के अधिकारियों की सेवा में आवश्यक परिपत्र

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की वार्षिक साधारण सभा (चुनाव) शीघ्र होने वाला है। इस वर्ष आर्यसमाजों द्वारा सभा के लिए नये प्रतिनिधि चुने जायेंगे, उनका कार्यकाल ३ वर्ष के लिए होगा।

अतः हरयाणा सभा से सम्बन्धित आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि अपने आर्यसमाज के नियम उपनियमों के अनुसार शीघ्र वार्षिक चुनाव करें तथा उस अवसर पर सभा के लिए अपने प्रतिनिधियों का भी निर्वाचन कर लेवें। जिन आर्यसमाजों ने अपने वार्षिक चुनाव पूर्व कर लिये हैं, उनसे निवेदन है कि वे पुनः साधारण सभा बुलाकर नियमानुसार प्रतिनिधि चुन लेवें। अन्तरंग सभा के प्रस्तावानुसार साधारण सभा के लिये अपने आर्य सभासदों को कम से कम १५ दिन का विज्ञापन देने का कष्ट करें।

आर्यसमाजों की सुविधा के लिए चुनाव विषयक आर्यसमाज के आवश्यक नियम उपनियम प्रकाशित किये जारहे हैं—

आर्य सभासद ४-(क) जिनका नाम किसी आर्यसमाज में सदाचार पूर्वक दो वर्ष तक अंकित रहा हो और वह अपनी आय का शतांश (१००वां) मासिक वा वार्षिक अथवा २५०) वार्षिक वा अधिक धन समाज को देता रहा हो और जिसकी उपस्थिति साप्ताहिक सत्संगों में कम से कम २५ प्रतिशत तक हो तो वह आर्य सभासद माना जा सकता है।

अन्तरंग सभा किसी विशेष हेतु से चन्दा न दे सकने अथवा शतांश से न्यून देनेवाले को आर्य सभासद बना सकती है। परन्तु उनकी संख्या उक्त आर्य सभासदों की संख्या के ५ प्रतिशत तक हो सकती है और अंश पूर्णांक माना जायेगा। आर्य संस्थाओं को (चाहे वे आर्यसमाज के अन्तर्गत हों या न हों) धन देना शतांश न होगा।

विशेष अवस्थाओं में अन्तरंग सभा किसी व्यक्ति के लिये उपस्थिति के नियम को शिथिल कर सकती है, परन्तु उनकी संख्या ५ प्रतिशत से अधिक न होगी।

(ग) सम्मति देने का अधिकार केवल आर्य सभासदों को होगा। अन्तरंग सभा प्रतिवर्ष ऐसे आर्य सभासदों के नाम निर्वाचन से एक मास पूर्व रजिस्टर में अंकित करेगी और ऐसे सदस्यों की सूची आर्यसमाज मन्दिर में तुरन्त लगादी जावेगी।

सभा के लिए प्रतिनिधि निर्वाचन के नियम

१—प्रत्येक आर्यसमाज जो आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के साथ कम से कम एक वर्ष से सम्बन्धित हो और प्राप्तव्य दशांश तथा वेदप्रचार के लिये प्रतिवर्ष कम से कम ५१), तीन प्रतिनिधियों के लिए ७५), पांच प्रतिनिधियों तक तथा पांच से अधिक प्रतिनिधियों के लिए १०१) देता हो, को अधिकार प्राप्त होगा कि वह अपने प्रथम १० सभासदों पर एक प्रतिनिधि तथा शेष २० आर्य सभासदों पर एक-एक प्रतिनिधि (जिनकी आयु २१ वर्ष से कम न हो) नियुक्त करे। (जिनके नाम उस आर्यसमाज की पंजिका में प्रतिनिधि या प्रतिनिधियों की नियुक्ति की तिथि से पूर्व वर्षभर अंकित रहे हों और यदि वे शुल्क देनेवाले सभासद् हों तो उन्होंने वर्ष में पूरे १२ मासों का शुल्क आर्यसमाज के उपनियम स० ४ के अनुसार दिया हो)।

आर्यसमाज द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों की संख्या का तृतीयांश इस सभा के साथ सम्बन्ध किसी आर्यसमाज के आर्य सभासदों से भी चुना जा सकता है।

अतः आर्यसमाजों से निवेदन है कि वे यथाशीघ्र ऊपर लिखित नियमों के अनुसार साधारण सभा करके सभा के प्रतिनिधियों का चुनाव कर लेवें। सभा कार्यालय से शीघ्र ही प्रतिनिधि फार्म सम्बन्धित आर्यसमाजों को भेजे जारहे हैं। उन्हें भरकर प्राप्तव्य वेदप्रचार, दशांश तथा सर्वहितकारी के शुल्क के साथ सभा को भेज देवें, ताकि सभा नियमानुसार उन्हें स्वीकार कर सके।

प्रतिनिधियों के चुनाव कार्य में किसी प्रकार के मार्गदर्शन तथा सहयोग की आवश्यकता हो तो सभा को पत्र लिखने का कष्ट करें।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

हरयाणा की नई सरकार जनता के फैसलों का आदर करे और हरयाणा की हस्ती को कायम रखे

—प्रो० शेरसिंह अध्यक्ष हरयाणा रक्षावाहिनी

हरयाणा रक्षावाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह २० जून को दोपहर बाद २ बजे पं० गोविन्द वल्लभपन्त हस्पताल नई दिल्ली में हरयाणा के नये मुख्यमन्त्री चौ० देवीलाल से मिले और उन्हें मुख्यमन्त्री बनने पर हार्दिक बधाई दी और शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की। उनके साथ बातचीत के समय कहा कि आपके दल को भारी बहुमत मिलने से आया राम गया राम का कलंक हरयाणा से मिट गया है। इस प्रकार हरयाणा की हस्ती उभर कर सामने आगई है।

प्रो० साहब ने श्री देवीलाल से अनुरोध किया कि वे जनता की आशाओं को पूर्ण करें और अबोहर फाजिल्का के हिन्दी भाषी क्षेत्र को हरयाणा में मिलाने, सतलुज ब्यास लिंक नहर के निर्माण कार्य को तुरन्त पूर्ण करके किसानों के खेतों तक पानी पहुंचावें और हरयाणा में पूर्ण शराबबन्दी लागू करके किसान तथा मजदूरों को बर्बाद होने से बचावें। इस कार्य में हरयाणा रक्षावाहिनी की ओर से आपकी सरकार को पूर्ण सहयोग दिया जायेगा। मैं प्रारम्भ से ही हरयाणा की हस्ती को बनाने तथा इसके हितों की रक्षा कार्य में प्रयास करता रहा हूं और भविष्य में भी करता रहूंगा। मैं आशा करता हूं कि आप प्रदेश से भ्रष्टाचार तथा शराब की लानत समाप्त करके हरयाणा की हस्ती को कायम रखेंगे और अकालियों के किसी भी प्रकार के दबाव के सामने नहीं झुकेंगे। जनता की भावनाओं का आदर करते हुए आप तत्काल उचित पग उठावेंगे।

आप जनता की इन आशाओं को कहां तक पूरा कर सकेंगे, यह आपके प्रयासों पर निर्भर करती है।

हरयाणा की अब पंजाब के बराबर शक्ति स्पष्ट दिखाई दे रही है और हरयाणा की जनता जागरूक है और अपने हितों पर आंच न आने देगी।

प्रो० शेरसिंह ने चौ० देवीलाल को परामर्श देते हुए कहा कि हरयाणा के हितों की रक्षा को ध्यान में रखते हुए अकालियों के साथ किसी भी दबाव में आकर समझौता न करें।

अन्तरंग सभा तथा हरयाणा रक्षावाहिनी की बैठकें

सभा शताब्दी समारोह के प्रस्तावानुसार उन पर कार्यवाही करने तथा शराबबन्दी अभियान की प्रगति आदि विषयों पर विचार करने के लिये अन्तरंग की बैठक ५ जुलाई को प्रातः १० बजे एवं हरयाणा रक्षावाहिनी की बैठक भी उसी दिन दोपहर बाद २ बजे दयानन्दमठ रोहतक में बुलाई गई है।

हैदराबाद में वैदिक वृष्टि महायज्ञ का आयोजन भारत सरकार से पर्यावरण जांच दल भेजने की मांग

हैदराबाद १० मई। अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद २७ द्वारा हैदराबाद नगर में पेयजल के भीषण संकट के निवारण हेतु वैदिक वृष्टि महायज्ञ का पवित्र आयोजन ११ जून से १४ जून, १९८७ तक किया गया।

वैज्ञानिक आधार पर विशेष सुविधा व विशेष सामग्री द्वारा किये जा रहे इस महायज्ञ के प्रत्यक्ष परिणामों का मूल्यांकन करने हेतु भारत सरकार के पर्यावरण विभाग के केन्द्रीय मन्त्री श्री भजनलाल से मांग की गई कि वे विशेष दल भेजकर यज्ञ के परिणामों का उचित मूल्यांकन करवायें।

प्रतिष्ठान के अधिष्ठाता आचार्य वेदभूषण ने दावा किया है कि वैदिक यज्ञ विज्ञान अत्यन्त महत्वपूर्ण विज्ञान है, जिससे अनेक लोकमंगल के कार्य सिद्ध किये जा सकते हैं।

हैदराबाद के अखिल भारतीय औद्योगिक प्रदर्शनी के विराट् प्रांगण में एक साथ "सौ मंडप व सौ कुण्ड" प्रज्वलित कर यह वैदिक वृष्टि महायज्ञ सम्पन्न हुआ।

—आचार्य वेदभूषण

अधिष्ठाता अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद-२७

आर्यसमाज सबीलपुर जाटान जि० अम्बाला का वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज सबीलपुर जाटान का वार्षिक उत्सव २२-२३-२४ मई को सम्पन्न हुआ। जिसमें आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध संन्यासी सर्वश्री स्वामी निर्मलानन्द, स्वामी सदानन्द सरस्वती, स्वामी धर्मानन्द, स्वामी विश्वात्म बोधानन्द भारती, स्वामी यतिमुनि और विचित्रानन्द, गुरुदत्त मुनि, पं. शिवसिंह, पं. हरलाल, पं. रमेशचन्द, पं. चिरंजीलाल इत्यादि महानुभावों ने जोर-शोर से प्रचार किया। जलसे का कार्यक्रम बड़े उत्साह से नौजवानों के द्वारा सम्पन्न करवाया गया एवं यज्ञोपवीत आर्यवीरों वीरांगनाओं ने धारण किये। आर्यसमाज का वार्षिक चुनाव किया गया, जिसमें नौजवानों का गठन किया गया, जिसमें २०० रु० पं. चिरंजीलाल द्वारा सभा को वार्षिक वेदप्रचार दशांश आदि दिया गया।

वार्षिक चुनाव

प्रधान—सर्वश्री वीरेन्द्रकुमार आर्य, उपप्रधान—बलदेवसिंह आर्य, मन्त्री—जगमालसिंह आर्य, उपमन्त्री—देवकुमार आर्य, कोषाध्यक्ष—नन्दकिशोर आर्य, लेखानिरीक्षक—गुरदेवसिंह आर्य, संयोजक—फूलचन्द आर्य, प्रचारमन्त्री—नरेशकुमार आर्य।



सभा शताब्दी समारोह के प्रचारार्थ आर्ययुवकों ने होडल से सोहना गुडगांव तक पदयात्रा की। इस यात्रा के संयोजक, सभा के उपदेशक श्री सुखचन्द्र शास्त्री तथा उनके सहयोगी चित्र में दिखाई दे रहे हैं।

सभा शताब्दी समारोह पर अन्न दान सूची

प्रि. लाभसिंह ग्राम सिवाह जि. करनाल	२ बोरी
श्री जगतसिंह शास्त्री ग्राम हथवाला जि. करनाल	२ ,,
मा. धारासिंह ग्राम सिवाह ,,	५० किलो
श्री महासिंह हैडमास्टर पानीपत ,,	२ बोरी
,, वेदप्रकाश कादयान हैडमास्टर पानीपत ,,	१ ,,
ग्राम सिवाह से प्रि. लाभसिंह द्वारा मिश्रित	१ ,,
मन्त्री आर्यसमाज बालू जि. जींद	१० मन
श्री अजमतसिंह प्रधान आर्यसमाज कयोडक जि. कुरुक्षेत्र द्वारा	२ बोरी
मन्त्री आर्यसमाज फतेहपुर जि. कुरुक्षेत्र	२ कट्टे चावल
द्वारा श्री मुन्शीराम आर्य ग्राम आकूपुर जि. रोहतक	१० मन ३० किलो
,, ,, इन्द्राज आर्य एवं श्री समन्दसिंह आर्य ग्राम खेड़का जि. रोहतक	१५ मन
,, ,, बलवीरसिंह आर्य चक्कीवाले ग्राम दुल्हेड़ा ,,	१८ मन ३० कि.
श्री धर्मसिंह आर्य जूआं जि. सोनीपत	१ क्विटल
श्रीमती सत्यवती आर्या जूआं ,,	१ ,,
श्री दीपचन्द आर्य ,, ,,	१ मन
,, दलीपसिंह ,, प्रधान ,, ,,	१ ,,
,, कंवलसिंह ,, भजनोपदेशक जूआं जि. सोनीपत	२० किलो
,, श्रीपाल सु. श्री मूलेराम ,, ,,	१० ,,
,, दलीपसिंह नम्बरदार ,, ,,	१० ,,
,, मीरसिंह धीरका ,, ,,	१० ,,
,, बलजीतसिंह ,, ,,	१० ,,
,, केदारसिंह आर्य ,, ,,	२० ,,
मिश्रित अन्नसंग्रह द्वारा श्री कंवलसिंह आर्य	७५ ,,
श्री यशपाल आर्य मन्त्री आर्यसमाज ठोल जि. कुरुक्षेत्र	१० बोरी
आर्यसमाज शाहबाद मारकण्डा, थानेसर, लाडवा, इस्माईलाबाद, जि कुरुक्षेत्र आदि से	५५ ,,
स्वामी महावीर द्वारा भिन्न-भिन्न स्थानों से अन्नसंग्रह	५० मन
म. फतेहसिंह भण्डारी गुरुकुल झज्जर द्वारा	५ बोरी
मा. चन्द्रभानु ग्राम जहाजगढ़ जि. रोहतक	२ ,,
आर्यसमाज झज्जर ,,	४ ,,
म. दरयावसिंह आर्य ग्राम रोहणा जि. सोनीपत द्वारा	३६ मन
श्री चन्द्रपाल राणा तथा आर्यसमाज जींद द्वारा	४४ ,,
आर्यसमाज होली मोहल्ला करनाल द्वारा	२९ ,,
गुरुकुल आर्यनगर तथा फतेहाबाद ,,	४२ ,,
श्री रामफल आर्यसमाज सुण्डाना जि. रोहतक	२॥ किलो देसी घी
म बलवन्तसिंह आर्य ग्राम मकड़ौली ,,	१ बोरी
श्री रत्तनसिंह आर्य द्वारा ग्राम खुर्मपुर जि. सोनीपत	२ बोरी चना
मा. उमेदसिंह ,, ग्राम नाहरी ,,	१ ,, ,,

—सभामन्त्री

आर्यसमाज ललापुरा वाराणसी का निर्वाचन

प्रधान—कमलजीत, उपप्रधान—प्रेमचन्द आर्य, मेवालाल आर्य; मन्त्री—रामगोपाल आर्य, उपमन्त्री—सत्यप्रकाश आर्य, ज्वालाप्रसाद आर्य, कोषाध्यक्ष—बुद्धदेव आर्य, प्रचारमन्त्री—लक्ष्मीनारायण मदनलाल; पुस्तकाध्यक्ष—रामबाबू आर्य, आय-व्यय निरीक्षक—जगतनारायण मौर्य

आर्यसमाज सुलतानपुर (उत्तरप्रदेश)

अध्यक्ष—सर्वश्री रामकृष्ण, मन्त्री—राधेश्याम आर्य एडवोकेट, कोषाध्यक्ष—अमर बहादुरसिंह।

आर्यों से—?

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज की स्थापना वेदों के प्रचार व प्रसार तथा वैदिक मान्यताओं की स्थापनार्थ की थी। स्वामी जी जब अपने गुरु का आशीर्वाद लेकर कर्मक्षेत्र में उतरे तो उस समय सारी परिस्थितियां स्वामी जी के प्रतिकूल थीं। स्वामी जी अकेले झंझावातों से संघर्ष करते हुए, टक्कर लेते हुए युग की प्रबल धारा को मोड़ते रहे और इतिहास इस बात का साक्षी है कि स्वामी जी ने अपने अपराजेय व्यक्तित्व तथा अजेय साहस के बल पर अपना उद्देश्य प्राप्त किया और समय व इतिहास के पृष्ठों पर एक अमिटरेख अंकित करदी। स्वामी जी के आर्यसमाज ने अन्यान्य क्षेत्रों के अभूतपूर्व सफलतायें प्राप्त की और धार्मिक व राष्ट्रीय पुनः जागरण का बिगुल बजाकर स्वाधीनता का पथ प्रशस्त किया।

आज हमारे समाज, राष्ट्र तथा मानवता के समक्ष एक अभूतपूर्व संकट उपस्थित होगया है। मानवता पतन व पराजय के पुलिनों पर खड़ी है। ऐसी विषम परिस्थिति में आर्यसमाज व आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं का दायित्व और अधिक बढ़ जाता है। लेकिन दुःख के साथ लिखना पड़ रहा है कि आज हम निश्चित रूप से कर्त्तव्यच्युत होगये हैं। आज हम केवल कहने के लिये आर्य हैं, करने के लिए नहीं। आज दयानन्द के सैनिक भी समय की धारा के साथ बह रहे हैं, जबकि उन्हें समय की धारा को मोड़ने का दायित्व सौंपा गया था। आज हम देख रहे हैं कि महर्षि के सारे स्वप्न धू-धूकर जल रहे हैं और हम महर्षि के अनुयायी उसे और अधिक हवा दे रहे हैं। आज हमें यह सोचना होगा कि कौन-सी ऐसी बात थी जिससे कि अकेले महर्षि दयानन्द के उपदेशों ने सारे महीमण्डल पर क्रांति की ज्योति जलादी और आज आर्यसमाज के हजारों सन्यासी, उपदेशकों, भजनोपदेशकों का सारा उपदेश व्यर्थ जारहा है? आज हमें अपना अन्तर टटोलना होगा। यदि महर्षि दयानन्द के प्रति हमारे हृदय में तनिक भी श्रद्धा व कृतज्ञता के भाव हैं तो हमें अपनी कथनी व करनी का अन्तर मिटाना ही होगा। आज हमारे समक्ष भयंकर चुनौतियां मुंह बायें खड़ी हैं और हम गहरी निद्रा में सो रहे हैं। आज हम मन्दिरों व विद्यालयों को अपने स्वार्थों से जोड़कर लड़ रहे हैं और हम यह भूल ही गये हैं कि हमें क्या करना था?

आइये! महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज के कार्यों को पूरा करने के लिए हम अपना सर्वस्व बलिदान करने का संकल्प लें।

—राधेश्याम आर्य

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक निर्वाचन

प्रधान—सर्वश्री दौलतराम चड्ढा, उपप्रधान—आर्यमुनि वानप्रस्थी, भगवन्तसिंह कपूर, केशवराव होल्कीर, मन्त्री—हरिश्चन्द्र गुरुजी, उपमन्त्री—प्रा. सत्यकाम पाठक, सोमरत्न आर्य, दिगम्बरराव वानप्रस्थी, कोषाध्यक्ष—दौलतराव गिरवलकर, पुस्तकाध्यक्ष—प्रा. विजयकुमार शिंदे, वेदप्रचार अधिष्ठाता—पं. गणेशदेव आर्य, आर्य वीरदल अधिष्ठाता—रामचन्द्र गरड।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस,
रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 रजि० न० P/RTK 49 फं

टे प्रबंध १,६६,०८,५३,०८३



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री

सह-सम्पादक—डा० यज्ञवीर

वर्ष १४, अङ्क ३१ ७ जुलाई, १९८७ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ५० पैसे

बलिवैश्वदेवयज्ञ का वैज्ञानिक स्वरूप

आचार्य यज्ञदेव आर्य द्वारा डा० वेदप्रकाश जी, ४६८ ब्रह्मपुरी, मेरठ (उ०प्र०)

आर्यों में प्रचलित पंचमहायज्ञों में बलिवैश्वदेवयज्ञ को मानव जीवन में विशिष्ट स्थान है, तभी तो यह प्राचीन परम्परा आर्यों से लेकर अनार्यों तक में किसी न किसी रूप में आज भी विद्यमान है। आधुनिक वैज्ञानिक विवेचना भी इसे पुष्ट करती है। मनु का आदेश है कि—

यदन्नं पक्वमक्षारलवणं तेनैव बलिवैश्वदेव कर्म कार्यम्।

जो लवण क्षार विहीन भोजन बनाया गया है, उसी का बलिवैश्व देव कर्म में प्रयोग करना चाहिए।

जो गृहस्थ बिना पूर्वोक्त बलिवैश्वदेवयज्ञ खाते हैं वे पापयुक्त भोजन करते हैं, अतः पापी हैं। क्योंकि बिना उपरोक्त यज्ञ के भोजन शुद्ध नहीं होता। उसमें दिव्य गुण पैदा करने हेतु ब० वै० देवयज्ञ करना चाहिए। इसमें प्रमाण—

वैश्वदेवस्य सिद्धस्य गृह्येऽग्नौ विधिपूर्वकम्।
आभ्यः कुर्याद्देवताभ्यो ब्राह्मणो होममन्वहम्॥
मनु० अ० ३। ८४॥

पाकशाला में सिद्ध (लवण, क्षार और अम्ल रहित) अन्न भात आदि द्वारा उसको दिव्य गुणों से युक्त करने हेतु होम करें।

निम्न दश मन्त्रों द्वारा हवि देने का विधान है—

अग्नये स्वाहा। सोमाय स्वाहा।......स्विष्टकृते स्वाहा।

उपर्युक्त मन्त्रों से मानो हम देवपूजा ही कर रहे हैं। ईश्वर जिसकी सत्ता में हम सर्वप्रकारेण सर्वपदार्थों का उपभोग करते हुए सुखपूर्वक जीते हैं, उसका स्मरण करना, उसका पूजन सत्कार करना, अपनी पवित्र कमाई की प्रथम कौर को अपने अन्नदाता को स्मरण कर, देवों के मुख प्रज्वलित अग्नि में आहुत करना एक विशिष्ट परिपाटी आर्यों को वेद से मिली। यदि हम स्वयं से प्रश्न करें कि जिन पदार्थों का हम नित्य सेवन करते हैं, क्या वे हमारे हैं? उत्तर आता है कदापि नहीं। हम तो उसके भोक्ता मात्र हैं। इसका स्वामी तो जगत्पिता ईश्वर है। फिर जिसका है उसको देने में क्या संकोच। वस्तुतः लेना देना तो कुछ भी नहीं। हम परोक्ष में अपने ही कर्मक्षेत्र में बीज बो रहे हैं, जिसके पकने पर हमें ही काटना व उपभोग करना कई गुणा बढ़ाकर। इसके साथ ही साथ हम अपने हृदयों को प्रेम, भक्ति, श्रद्धा, उदारता आदि अनेक सद्गुणों से आप्लावित कर रहे हैं। ऐसा करते हुए अपने चरित्र को उज्ज्वल करते हुए अपना व्यवहार उत्तम बनाते हैं—यज्ञ इसकी सर्वोत्तम विधि है जैसे लोक में भी जो अपने माता-पिता का ऋण स्वीकार नहीं करता तो श्रेष्ठ-जनों में वह कृतघ्न कहलाता है। ठीक उसी प्रकार पिता के भी पिता, जिसने आलौकिक पदार्थ हमें प्रयोगार्थ दिये हैं, उसका ऋण न मानना तो महाकृतघ्नता है, मूर्खता है।

"जो परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना नहीं करता वह कृतघ्न और महामूर्ख भी होता है। क्योंकि जिस परमात्मा ने इस जगत् के सब पदार्थ जीवों के सुखार्थ दे रखे हैं उसका गुण भूल जाना ईश्वर ही को न मानना कृतघ्नता और मूर्खता है।" (सत्यार्थ प्र० ७ समु०)

दूसरे रूप में भोजन के प्रथम भाग का अग्नि में आहुति देना विषाक्त भोजन की सर्वप्रसिद्ध परीक्षा है। रसायन शास्त्र के पढ़ने-पढ़ाने वाले जानते हैं कि किस प्रकार अपरिचित तत्त्वों के मिश्रण से अज्ञात तत्त्वों को ज्वाला परीक्षण करके पहिचान लिया जाता है कि मिश्रण में ये-ये तत्त्व विद्यमान हैं। ज्वाला परीक्षण में टंगस्टन जैसी उच्च द्रवांक धातु के महीन तार को वलयाकार बनाकर मिश्रण के साथ ज्वाला में रखते हैं। यदि ज्वाला के सामान्य रंग से भिन्न रंग पाया जाये तो वह पूर्व ज्ञान द्वारा ज्ञात हो जाता है कि मिश्रण में कोबाल्ट है, निकिल है या कापर आदि-आदि कोई तत्त्व विद्यमान है, पश्चात् निश्चित परीक्षण करके विद्यार्थी लिख देता है कि इस मिश्रण में निम्न पदार्थ विद्यमान हैं।

इसी अग्नि परीक्षा का बड़ा रोचक वर्णन महर्षि सुश्रुत ने किया है। प्रायः विषाक्त अन्न अग्नि में हरी नीली लौ के साथ जलता है, जो निश्चय करने हेतु पर्याप्त है कि भोजन विषाक्त एवं त्याज्य है। यदि ज्वाला सामान्य रंग के साथ जलती रहे तो भोजन शुद्ध एवं भक्षणीय माना जाता है। सुश्रुत ने राजवैद्य को ज्वाला परीक्षण द्वारा राजा के भोजन की नित्य परीक्षा करने की विधि बताई है—

हुतभुक् तेन चान्नेन भृशं चटचटायते।
मयूरकण्ठप्रतिमो जायते चापि दुःसहः॥ सुश्रुत:

विषाक्त अन्न को जाज्वल्यमान अग्नि में आहुत करने से अग्नि में चट-चट शब्द बहुत होता है। ज्वाला का रंग मयूरकण्ठ के सदृश होता है, इसका तेज असह्य होता है।

भिन्नार्चिस्तीक्ष्ण धूमश्च न चिराच्चोपशाम्यति।
सुश्रुत संहिता १।२६।३०

और ज्वाला फटी-फटी-सी धूम में तीक्ष्णता रहती है, ज्वाला जल्दी बुझ जाती है।

बलिदान विभाग में—जैसे बलिवैश्वदेव शब्द ही सिद्ध करता है, वह बलि जो सबको विस्तृत रूप से बाँटी जाये और देवताओं का पूजन, दो ही विभाग हैं। अर्थात् वेदोक्त परम्परा से जो देने के योग्य हैं उनको देना।

ओं सानुगायेन्द्राय नमः। सानुगाय वरुणाय नमः आदि। संस्का० वि०

उपरोक्त मन्त्रों से ईश्वर के ही गुणों का व्याख्यान करते हुए पन्द्रह भागों में पत्तों पर विभक्त करके रखें। भोजन वही लवणक्षारहीन होना चाहिए। यदि कोई अतिथि आ जावे तो उसको श्रद्धापूर्वक दे देवें या अग्नि में आहुत कर देवें। ऐसा विधान महर्षि दयानन्द सरस्वती ने संस्कार विधि के गृहस्थ प्रकरण में किया है। (क्रमशः)

राष्ट्र व धर्म-रक्षा अभियान दल की उत्तराखण्ड यात्रा

—स्वामी वेदमुनि परिव्राजक अध्यक्ष वैदिक संस्थान नजीबाबाद (उ०प्र०)

गतांक से आगे—

मास्टर सुरेश जी वहां मांस और शराब के विरुद्ध भी प्रचार करते हैं। धर्म-प्रचार तो उन्होंने अपने कार्यक्रम का अनिवार्य अंग बना रखा है। उनके इन सुधार-कार्यों और धर्म प्रचार के कारण लोग उन्हें "गुरु जी" कहकर पुकारते हैं। केवल उनके विद्यार्थी ही ऐसा कहते हों सो बात नहीं। वहां के वृद्धजन तथा अध्यापक भी उन्हें 'गुरु जी' ही कहते हैं।

११ मई को प्रातःकाल जब हमारा दल टिहरी जाने को तैयार हो रहा था तो मास्टर जी कमरे में आये और भावुकतापूर्ण मुखाकृति बनाते हुए बोले—"मैं रिवाज पूरा कर रहा हूं।" यह कहकर उन्होंने जेब में हाथ डाला। मैंने लेने से इन्कार किया, किन्तु मास्टर जी बार-बार यही कहते थे कि "मैं रिवाज पूरा कर रहा हूं।" मैंने उन्हें प्रबल और स्पष्ट शब्दों में ना की और उनसे कहा कि "आपने यही क्या कम किया है कि पूरे पांच दिन से चार व्यक्तियों के आतिथ्य का पूरा व्यय भार वहन कर रहे हैं। मुझे तो बेटा इसकी कल्पना भी नहीं थी, मैं पूरी व्यवस्था करके ही चला था। आपकी साधारण आय है।"

मास्टर जी की भावुकतापूर्ण मुद्रा, उनके द्रवीभूत होते नेत्र और अवरुद्ध होता कण्ठ मुझे प्रभावित करके ही रहा और अन्ततोगत्वा उनकी संख्या में स्वल्प, किन्तु मूल्य में अतीव श्रद्धोपेत गरिमामय भेंट मुझे स्वीकार करनी ही पड़ी। प्राईमरी का अध्यापक, ग्राम में ट्यूशनों की आय नहीं, पार्वत्य क्षेत्र की मंहगाई, किराये का कमरा और वर्ष में अनेक बार 'स्व-गृह' सहारनपुर जनपद, आने जाने का मार्ग-व्यय, समय-समय पर साहित्य मंगाकर वितरण करना और फिर इस अवसर पर चार व्यक्तियों का आतिथ्य व्यय कम नहीं है। मास्टर सुरेश के प्रति मन से शुभकामनायें निकलती हैं। वह सचमुच स्तुत्य, अभिनन्दनीय और आशीर्वादार्ह है। उसने जरोला का बिना किराये का आवास छोड़कर नित्य ही प्रातः सायं ६ किलोमीटर की उतराई चढ़ाई की पैदल यात्रा स्वीकार की, किन्तु अपनी सुधारवादी प्रचार भावना को मूर्तरूप देने के लिये जामणीखाल में किराये का कमरा लेकर रहना स्वीकार किया।

११ मई को प्रातः ८ बजे हमारा दल टिरी के लिये चल दिया। १० बजे हम लोग टिहरी पहुंचे। केवल २० किलोमीटर की यात्रा बस ने दो घण्टे में पूरी की। पर्वतीय तंग मार्ग, सड़क भी अभी कच्ची ही है। टिहरी से ८-१० किलोमीटर पहले एक बार तो बस का पिछला दांया पहिया सड़क के किनारे के खिसकने से खड्ड में जाने लगा था। यात्रियों की मुखाकृतियां भी भावी अनिष्ट चिन्तन में डूबने लगी थीं, किन्तु पहिया थोड़ा सम्भला और फिर खिसका तो पूर्णतया मृत्यु दृष्टिगोचर होने लगी थी, किन्तु प्रभु को ऐसा स्वीकार नहीं था, उसी क्षण पहिया पुनः सड़क पर चढ़ गया और बस के सभी यात्री आबाल वृद्ध एक दूसरे की ओर देखकर मुस्कराने लगे।

टिहरी नगर से पहले टिहरी बांध परियोजना की कालोनी मिली और तत्पश्चात् ठीक दस बजे हमारी बस टिहरी नगर के बस अड्डे पर जा पहुंची। सामान के लिये दो कुली लिये और हम लोग सामान उठवाकर श्री महावीरप्रसाद गैरोला एडवोकेट के श्रीगृह की खोज में चल दिये। तभी एक ने आकर पूछा "आप नजीबाबाद से आये हैं। मैंने हां" कहा और वह हमें लेकर बस अड्डे के निकट ही 'रीवर-व्यू' होटल में पहुंचाया। वहां पर हमारे लिये दूसरी मंजिल में कमरा नं० ३ और ४ पहले ही सुरक्षित कराये हुए थे। हमें वहां ठहरा कर स्वल्पाहार हमारी इच्छानुसार हमें कराया गया तथा मध्याह्न में भोजन श्री गैरोला जी के श्रीगृह पर हुआ। वर्षा प्रातःकाल से हो ही रही थी, जब बस से उतरे थे तब भी हो रही थी और जब भोजनार्थ गये तब भी मेघ मण्डल वर्षा करने में प्राणपण से जुटा था।

मध्याह्नोत्तर वर्षा बन्द हुई। ठीक पांच बजे आर्यसमाज मन्दिर में सभा प्रारम्भ हुई। उपस्थिति यद्यपि थोड़ी ही थी, किन्तु नगर के प्रतिष्ठित, शिक्षित राजकीय अधिकारी आदि उपस्थित थे। दो घण्टे कार्यक्रम चला। उस सभा के श्रोता जो प्रभाव लेकर गये, वह हमारे लिये न केवल सन्तोष, अपितु अत्यन्त प्रशंसा का विषय है। उस दिन सभा चलते भी वर्षा होती रही और अगले दिन १२ मई को भी पूरे दिन वर्षा होती रही। वर्षा होते रहने तथा सायंकाल वर्षा प्रबल होने के कारण उस दिन सभा नहीं हो सकी। अगली रात्रि पूरी रात वर्षा रही तथा पहले की अपेक्षा और भी वेग से होती रही। १३ मई को भी प्रातः से ही वर्षा हो रही थी और मानसून से सम्पूर्ण आकाश मण्डल तो आच्छादित था ही, नीचे से मानसून घने धुयें की भांति उठ-उठकर आकाश में और घना होता जारहा था। हमें उस दिन उत्तरकाशी जाना था। विचार आया कि यदि वहां भी इसी प्रकार वर्षा हो रही है तो उत्तर काशी की ओर आनेवाली बसों के ड्राइवरों-कण्डक्टरों से पूछने पर पता लगा कि वर्षा की यही दशा वहां भी है। सोचा कि उत्तरकाशी और भटवारी का कार्यक्रम स्थगित कर, श्रीनगर और पौड़ी चला जाये। उधर की जानकारी करने पर पता चला कि वर्षा की यही दशा उधर भी है। हमारे सामने वापस लौटने के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं था। आगे जायें और वर्षा की अधिकता के कारण न तो सभा हो सके और न साहित्य वितरण तथा जन-सम्पर्क भी न हो तो वहां पड़े रहने का कोई लाभ नहीं था।

श्री महावीरप्रसाद जी गैरोला एडवोकेट जब आये, तब तक हम लोग प्रातराश से निवृत्त होकर वापसी के लिये तैयार हो चुके थे। उनसे वार्तालाप हुआ और आगे के समाचार सुनकर उन्होंने भी हमारा समर्थन किया। हम तुरन्त ही बस अड्डे पर पहुंचे और ९ बजे बस द्वारा यात्रा प्रारम्भ करदी। लगभग १ बजे हम हरिद्वार बस अड्डे पर पहुंच गये तथा हरिद्वार से ट्रेन द्वारा सायंकाल ५ बजे नजीबाबाद आगये।

कार्यक्रम स्थगन की सभी स्थानों को सूचना दे दी गई। अब वर्षाकालोपरांत अक्तूबर मास में जाने का कार्यक्रम निश्चित कर दिया गया है। आर्यसमाज के उस क्षेत्र में प्रचार से भारत की यह सीमायें निश्चित रूपेण सुरक्षित होंगी, कारण कि इससे अपने लोगों की पारस्परिक छूआ-छूत दूर होकर ईसाइयत का मार्ग अवरुद्ध होगा।

हमारी इस यात्रा से उस क्षेत्र के लोगों में सत्यार्थप्रकाश के प्रति रुचि उत्पन्न हुई है। अभी २१ मई को जामणीखाल से···जो हम वितरित करके आये हैं, उन सभी पुस्तकों की पांच-पांच प्रतियों की मांग के साथ ही सत्यार्थप्रकाश की भी पांच प्रतियों के लिये श्री मास्टर सुरेश शर्मा का हमें लिखना पड़ा और हमने उसी डाक-पार्सल द्वारा पुस्तकें भेज दीं।

हरयाणा रक्षावाहिनी की बैठक ५-७-८७ को पारित प्रस्ताव

अकाली सदा से ही अपने वायदों से मुकरते रहे हैं। उन्होंने सदा ही अपने किये हुए समझौतों, व्यवस्थाओं और निर्णयों को तोडा है। उन्होंने अक्तूबर १९५६ में फाजिल्का और अबोहर को हिन्दी भाषी क्षेत्र माना था और सम्बन्धित परिपत्रों पर हस्ताक्षर भी किये थे, परन्तु १९६६ में वे तुरन्त ही इस अपने द्वारा हस्तारित फैसले से भी मुकर गये कि अबोहर और फाजिल्का हिन्दी भाषी क्षेत्र हैं और उन्होंने शाह कमीशन के सामने अपने ही फैसले का विरोध किया। फिर १९७० में अकाली इस बात से सहमत होगये कि यदि चण्डीगढ़ पंजाब को दिया जाता है तो अबोहर फाजिल्का हिन्दी क्षेत्र हरयाणा को दे दिया जाये तो उन्हें कोई आपत्ति नहीं होगी। तत्काल प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने सन्त फतेहसिंह को यह बात स्वीकार करली। इस खुशी में अकालियों ने दीवाली मनाई। कुछ समय के पश्चात् उन्होंने अबोहर और फाजिल्का के क्षेत्र देने से इन्कार कर दिया और १९८० में उन्होंने चण्डीगढ़ तथा अबोहर फाजिल्का दोनों पर अपना दावा प्रस्तुत कर दिया। १९७६ में जब हरयाणा और पंजाब का रावी और व्यास के पानी के भागों के बारे में घोषणा हुई तो पंजाब सरकार ने एक करोड़ रुपया हरयाणा सरकार से सतलुज यमुना लिंक नहर बनाने के लिये स्वीकार कर लिया और फिर जब पंजाब में अकालियों की सरकार बनी तो तत्काल मुख्यमन्त्री श्री प्रकाशसिंह बादल ने हरयाणा से एक करोड़ रुपया और हरयाणा सरकार से लिया।

जुलाई १९८५ में तथाकथित पंजाब समझौते के अन्तर्गत १९७० के सीमा सम्बन्धी तथा १९७६ के रावी व्यास पानी सम्बन्धी फसले दोबारा पुनः विचार के लिए उठाये गये। यह सब कुछ हरयाणा के लोगों की इच्छा के विरुद्ध हुआ था। अतः उन्होंने इसे अस्वीकार कर दिया था। इस समझौते के अन्तर्गत चण्डीगढ के बदले में हरयाणा को कौन-सा क्षेत्र दिया जाये, इसका निर्णय एक कमीशन ने करना था और रावी व्यास के पानी सम्बन्धी फैसला ट्रिब्यूनल को सौंपा जाना था। जिसकी व्यवस्था पंजाब समझौते की धारा ७.२ तथा ९.२ में दी गई है और यह भी लिखा है कि इनके फैसले अकाली तथा केन्द्रीय सरकार दोनों के लिए मान्य, दोनों के लिए अनिवार्य होंगे। अकालियों ने इस समझौते को लागू करवाने के लिए पूरे प्रयत्न किये और पानी के क्षेत्र सम्बन्धी ट्रिब्यूनल तथा कमीशन बनाये गये। इनकी रिपोर्टें प्रस्तुत हुईं परन्तु अकालियों ने ही दोनों रिपोर्टों को अस्वीकार कर दिया, जो कि उनके द्वारा किये गये पंजाब समझौते के विरुद्ध है। क्योंकि समझौते के अनुसार इन रिपोर्टों को उनके लिए मानना जरूरी था। अकाली सदा से अपनी प्रतिज्ञाओं से फिरते रहे हैं। समझ में नहीं आता, जो विपक्ष दल अकालियों को समर्थन देते रहे हैं, कितनी बार इन सारे मसलों पर दोबारा विचार करते रहेंगे, ताकि अकालियों की सहमति ली जाये।

इन समस्याओं पर अकाली पक्ष के किसी भी ग्रुप से बात करने का अर्थ होगा, सारे मसलों को दोबारा छेड़ना। यह सब कुछ करने से हरयाणा का पक्ष कमजोर होगा और हरयाणा का अहित होगा। अकालियों द्वारा पंजाब समझौते का स्वयं विरोध करना और इन समस्याओं पर पुनः विचार करने का उद्देश्य सतलुज व्यास लिंक नहर को बनाने के कार्य में देरी करना है। इस नहर के बनने में एक दिन की देरी होने से हरयाणा का लगभग ५० लाख दैनिक नुकसान हो रहा है। इसका अर्थ यह है कि हरयाणा को प्रतिवर्ष लगभग २०० करोड़ रु० की हानि हो रही है। यदि १९७६ में ही इस नहर के बनने का कार्य प्रारम्भ होगया होता तो १९७९ तक यह पूरा हो जाता, परन्तु ८ वर्ष की देरी से हरयाणा को लगभग १६ सौ करोड़ रु० की हानि उठानी पड़ी है।

हरयाणा रक्षावाहिनी केन्द्रीय सरकार राष्ट्रीय दलों और क्षेत्रीय राजनैतिक दलों से अनुरोध करती है कि १९७० और १९७६ के फैसलों को लागू कराने के लिए तुरन्त पग उठावें, ताकि हरयाणा को न्याय मिल सके। अकालियों ने पूर्व ही १९८५ के पंजाब समझौते को मानने से स्वयं इन्कार कर दिया है। अतः इन समस्याओं को दोबारा छेड़ने से कोई लाभ नहीं होगा। क्योंकि अकाली समस्याओं के समाधान में रुचि नहीं रखते। वे तो केवल मामले को लटकाये रखना चाहते हैं, जो कि हरयाणा तथा राष्ट्र के हित में नहीं है। अकालियों को खुश करने की नीति के कारण और समस्याओं के टालमटोल करने के कारण गत १७ वर्ष से एक एम० ए० एफ० पानी पाकिस्तान को बहकर व्यर्थ चला जाता है। सिंध रावी समझौता १९६० के अनुसार मार्च १९७० के बाद रावी तथा व्यास के पानी की एक बूंद भी पाकिस्तान को नहीं जानी चाहती थी। हमारे देश की विरोधी तथा शासक दल के नेता कब तक सूखे हरयाणा की कीमत पर पाकिस्तान को पानी देते रहेंगे। अतः केन्द्रीय सरकार को चाहिए कि तुरन्त १९७० तथा १९७६ के क्षेत्र तथा पानी सम्बन्धी फैसलों को लागू करे।

—प्रो० शेरसिंह अध्यक्ष हरयाणा रक्षावाहिनी

प्रवेश सूचना

कन्या गुरुकुल विद्यापीठ पंचगांव में प्रवेश चल रहा है। इस वर्ष से आर्ष पाठविधि से महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से शास्त्री कराया जाता है।

अपनी पुत्री को सुशील, सुयोग्य, सदाचारी बनाने के लिये कन्या गुरुकुल में प्रविष्ट करायें।

गुरुकुल का वातावरण शुद्ध सात्विक है, सादा रहन है, सब गुरुकुलों से कम व्यय है। प्रवेश शुल्क ५०) है। फिर प्रति मास ५०) भोजन व्यय के देने होते हैं। गुरुकुल को योग्य स्नातिकायें में अध्यापिकायें हैं।

जो दसवीं पास अविवाहित कन्या प्रचारक करना चाहे, उसका भी प्रबन्ध है। वह भी गुरुकुल में प्रविष्ट हो सकती है। अन्य जानकारी के लिये सम्पर्क करें—

भरतसिंह शास्त्री
अधिष्ठाता कन्या गुरुकुल विद्यापीठ पंचगांव
डा० गोपी बाढड़ा, जि० भिवानी (हर०)

बहरे तबोल

लेखक—सहदेव आर्य, आदर्शनगर जींद

देश जाति धर्म के लिए जो पुरुष,
जिन्दगी में कभी काम आया नहीं।
और गलत मार्ग चल भूल करता रहा,
वेद अनुसार जीवन बनाया नहीं॥
दीन हीनों की सेवा करी ना कभी,
दर्द दखितों का हरगिज बटाया नहीं।
तो बताओ क्या उसने मेरे साथियो,
व्यर्थ अपना ये जीवन गंवाया नहीं।
भूल पर भूल की भूल खुद को गया,
भूलकर भी कभी ओ३म् ध्याया नहीं।
भूल सब कुछ गया पर मेरे दोस्तो,
छल कपट को तो बिल्कुल भुलाया नहीं।
और संसार साधन को ही सुख समझ,
कर कुकृत्यों से खुद को हटाया नहीं।
तो बताओ क्या उसने मेरे साथियो,
व्यर्थ अपना ये जीवन गवाया नहीं।
धर्म का त्याग तो हां 'बड़ी' बात थी,
देश सेवा में भी मन लगाया नहीं।
और गरीबों अनाथों अछूतों को भी,
प्यार से हाथ साहस बन्धाया नहीं।
और कमाया बहुत धन मगर पाप से,
धर्म का धन कभी भी कमाया नहीं।
तो बताओ क्या उसने मेरे दोस्तो,
व्यर्थ अपना ये जीवन गवाया नहीं॥

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग के महत्त्वपूर्ण निश्चय

हिन्दी संस्कृत बचाओ, अंग्रेजी हटाओ तथा शराबबन्दी के लिए आंदोलन चलाया जायेगा

हिन्दी सत्याग्रहियों को भी स्वतन्त्रता सेनानियों की भांति पेंशन तथा सम्मान देने की मांग

रोहतक ५ जुलाई (केदारसिंह आर्य द्वारा) दयानन्दमठ रोहतक में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की बैठक सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह की अध्यक्षता में हुई, जिसमें हरयाणाभर से प्रमुख आर्य नेता उपस्थित थे। बैठक में महत्त्वपूर्ण निम्नलिखित निश्चय सवसम्मति से किये गये—

१. दिवंगत आर्य महानुभावों को श्रद्धांजलियां

भूतपूर्व प्रधानमन्त्री चौ० चरणसिंह, श्री स्वामी वेदानन्द जी वेदवागीश प्रस्तोता श्रीमद्दयानन्द आर्ष विद्यापीठ गुरुकुल झज्जर, वानप्रस्थी सहदेव ग्राम बोहर का सुपुत्र तथा मा० पूर्णसिंह आर्य नरेला के सुपुत्र आदि आर्य महानुभावों के निधन पर शोक प्रकट करते हुए उन्हें श्रद्धांजलियां अर्पित की गईं।

२. आर्य वीरदल हरयाणा को सुदृढ़ किया जायेगा

आर्य वीरदल हरयाणा के अधिष्ठाता प्रा० धर्मदेव विद्यार्थी के प्रस्ताव पर प्रत्येक गुरुकुल तथा आर्य विद्यालयों में आर्य वीरदल की शाखायें लगाने का निश्चय किया गया। युवकों को आर्य वीरदल का प्रशिक्षण देने के लिये एक योग्य एवं प्रभावशाली शिक्षक को नियुक्त करके आर्यसमाज के सिद्धांतों का प्रचार एवं प्रसार किया जायेगा। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सभा ने आर्य वीरदल हेतु २५ हजार की निधि स्थापित की गई है। हरयाणा के आर्यसमाजों के अधिकारियों से अनुरोध किया गया है कि वे वार्षिक चुनाव करते समय अन्य अधिकारियों के साथ अपने समाज के लिए अधिष्ठाता आर्य वीरदल का भी चुनाव करें और आर्य वीरदल की निधि स्थापित करें।

३. हिन्दी संस्कृत बचाओ, अंग्रेजी हटाओ तथा शराबबन्दी के लिए आंदोलन होगा

केन्द्रीय तथा राज्य सरकार हिन्दी तथा संस्कृत भाषा की निरन्तर उपेक्षा कर रही है। नगरों के अतिरिक्त ग्रामों में भी पब्लिक स्कूल खोले जारहे हैं, जहां पहली कक्षा से अंग्रेजी भाषा पढ़ाई जाती है। हिन्दी तथा संस्कृत की पढ़ाई की ओर ध्यान नहीं दिया जाता। जबकि हमारे धार्मिक ग्रन्थ हिन्दी तथा संस्कृत भाषा में हैं। संस्कृत के ज्ञान बिना संस्कृति की रक्षा नहीं हो सकती। अंग्रेजी के बढ़ते हुए प्रचार से भारतीय संस्कृति, सभ्यता का ह्रास हो रहा है। अंग्रेजी पढे लिखे अधिकतर नवयुवक शराब मांस आदि का प्रयोग करते हैं। कोई एकआध परिवार ऐसा होगा, जिसमें शराब का सेवन नहीं होता; विवाह आदि अवसरों पर शराब पीकर तथा झगड़ा करके नाचा जाता है। शराब के बढते हुए प्रयोग से किसान मजदूर अपनी खून पसीने की कमाई शराब में बर्बाद कर रहे हैं। बड़े-बड़े सरकारी अधिकारी शराब की रिश्वत लिये बिना कार्य नहीं करते। इस प्रकार भ्रष्टाचार बढ़ रहा है।

अतः सभा ने निर्णय किया है कि सरकार को १५ अगस्त तक ज्ञापन देकर हिन्दी संस्कृत की रक्षा हेतु मांग की जाये कि सरकारी नौकरी उन्हीं को दी जाये, जो कि हिन्दी के स्नातक हों, जिन्हें राष्ट्र-भाषा का ज्ञान न हो, उसे सरकार को नौकरी करने का अधिकार नहीं देना चाहिए। गुरुकुलों को भी अन्य स्कूलों की भांति पूरा अनुदान दिया जाये। स्कूलों में अंग्रजी की अनिवार्य पढ़ाई समाप्त की जाये। हिन्दी रक्षा सत्याग्रहियों को भी स्वतन्त्रता सेनानियों की भांति पेंशन तथा सम्मान दिया जाये। क्योंकि हिन्दी सत्याग्रह भी एक राष्ट्रीय आंदोलन था। हिन्दी राष्ट्र-भाषा है। हरयाणा सरकार के एक्ट के अनुसार जो ग्रामीण पचायतें सितम्बर मास तक प्रस्ताव पास करके सरकार को भेज देवें, उन ग्रामों में शराब के ठेके न खोले जायें। यदि सरकार अपने ही बनाये हुए कानून का पालन नहीं करती तो सभा की ओर से सारे हरयाणा में शराब के ठेकों पर धरने दिये जायेंगे।

सरकार ने यदि सभा की न्यायोचित तथा जनता की भलाई की ये मांगें न मानी तो २ अक्तूबर से आंदोलन चलाया जायेगा।

इस आंदोलन की तैयारी के लिए आर्यजगत् के त्यागी तपस्वी संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में एक समिति का गठन निम्न प्रकार किया गया है—

१. स्वामी ओमानन्द सरस्वती—सर्वाधिकारी
२. प्रो. शेरसिंह सभाप्रधान—संयोजक
३. श्री वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री—सह-सयोजक
४. महाशय भरतसिंह सभा उपप्रधान—कोषाध्यक्ष
५. श्री धर्मसिंह राठी पूर्व विधायक पानीपत (करनाल)—सदस्य
६. श्री राममेहर एडवोकेट रोहतक ,,
७ श्री रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता ,,
८. महाशय ताराचन्द आर्य नारनौल जि० महेन्द्रगढ़ ,,
९. डा. रणजीतसिंह नारनौंद जि० हिसार ,,
१०. प्रो० सत्यवीर विद्यालंकार हिसार ,,
११. आचार्य सत्यप्रिय एम० ए० ,, ,,
१२. ,, ऋषिपाल च० दादरी, जि० भिवानी ,,
१३. प्रिंसिपल गुगनसिंह रोहतक ,,
१४. स्वामी सदानन्द यमुनानगर जि० अम्बाला ,,
१५. स्वामी विज्ञानन्द ,, ,, ,,
१६. श्री वीरसिंह आर्य चबूतरों ,, ,,
१७. श्री रूबेलसिंह आर्य प्रचारक ,, ,,
१८. श्री कर्मवीर आर्य खारवन ,, ,,
१९. श्री जोगेन्द्रसिंह आर्य रादौर जि० कुरुक्षेत्र ,,
२०. श्री सत्यकाम ,, ,, ,, ,,
२१. श्री सिहराम आर्य करनाल ,, ,,

समिति की आगामी बैठक में विचार-विमर्श करके अन्य सदस्यों को भी मनोनीत किया जायेगा।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

आदर्श विवाह

महाशय रुद्रसिंह जो बोहर निवासी के पुत्र सूबेदार भवनचन्द्र की पुत्री यशोदा का आदर्श विवाह श्री मांगेराम जी खरमाण निवासी के पुत्र सत्यवीरसिंह के साथ २९ मई, १९८७ को बिना किसी दहेज के सम्पन्न हुआ। केवल ५ बाराती आये। कन्या पक्ष ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को दान दिया गया। सुरेश शास्त्री

शोक समाचार

नलवा वाले सेठ पुरुषलाल आर्य के भतीजे श्री रामबिलास आर्य का ६-६-८७ को अचानक हृदयगति रुक जाने से देहांत होगया। वे ५८ वर्ष के थे। उनका प्रतिदिन नियमपूर्वक श्रद्धा से संध्या हवन करना मुख्य था। सेवाभाव व दान देने में उदार हृदय थे। अभी कुछ दिन पहले आर्यसमाज नलवा में भी दो वं० का कमरा जिसका निर्माण जारी है उन्हीं की ही देन है। हम सभी को ईश्वर से प्रार्थना है कि उसकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा उसके परिवारजनों को यह असह्य दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—भरतसिंह आर्य कोषाधिकारी

शराबबन्दी के लिए कुछ उपयोगी सुझाव

—मा० दीपचन्द आर्य, कासनी, जि० रोहतक

शराबबन्दी पर आर्य प्रतिनिधि सभा क्रांतिकारी पग उठा रही है। इस सम्बध में मैं सभा के कर्मचारियों तथा अधिकारियों का हृदय से धन्यवाद करता हूं तथा यथोचित सहयोग भी देने का वचन देता हूं।

हरयाणा प्रांत में विशेष रूप से रोहतक, सोनीपत, जींद, भिवानी में शराबियों का अधिक जोर है। युवकों को रोकने वाला आज गांव में एक व्यक्ति भी नहीं है, सबकी जबान खिच गई है। बुरे-भले की पहचान जाती रही। एक दिन वह था कि आदमी बुरे थे, चोर लफंगे भी थे, पर उनकी हिम्मत पंचायत में बैठने की नहीं होती थी। प्राय: वह पंचायत में अपनी ही ग्लानी के कारण नहीं आते थे, कोई जाता था तो चुपचाप बैठा सुनता रहता था। पर आज वही पचायत मालिक हैं, उन्हें रोकने वाले उनकी मदद करते हैं। गांव में कोई परिवार मार्ग पर चल उन्नति करता है तो उसे गांव के यह बेकार समय व्यतीत करनेवाले, तास खेलने वाले तंग करते हैं। उसकी बुराई भांति-भांति के ढंग से करते हैं। ऐसे घरों में अपने साथी भेज, अपनी बुराई की जड़ बोकर आते हैं। उनके घर विवाह उत्सवों पर या अन्य प्रसन्नचित्त अवसरों पर सहयोग के नाम पर बुरे कर्म करवाते हैं। उससे नाजायज खर्च कराके उसे अपने चुंगल में फसा लेते हैं। इस प्रकार यह बिमारी बढ़ती जारही है।

आप इस रोकथाम के लिए गांव-गांव में सदस्य बनावें, जो जन-सभायें न कर व्यक्तिगत युवकों से मिलें, वृद्धों से मिलें उन्हें सुझाव दें कि वे शराब छुड़ाकर अपने कुल, ग्राम तथा क्षेत्र का मान बढ़ावें।

शराब, तम्बाकू अन्य नशों की हानियां प्रत्येक परिवार में जा-जाकर समझावें। जो युवक राज कर्मचारी शराब सुलफा पीते हैं उनसे स्वयं भी कहें, उसके माता-पिता से कहें कि वे अपने बालक को, अपने खानदान की शाख को काटने के स्थान पर, सींचने को कहें।

२—वे सदस्य उन लोगों का विरोध करें जो गांव में शराब लाकर बेचते हैं। उनकी रिपोर्ट थाने में करें, गांव में उसके इस घृणित पेशे (कार्य) की निंदा करें। ऐसे आदमियों के बालकों के रिस्ते न होने दें।

वयोवृद्ध फौजी जो परमिट की शराब लाकर बेचते हैं उन्हें समझायें कि बुढ़ापे में यह घृणित कार्य कर अपना बुढ़ापा न बिगाड़ें। ऐसे धन से आपका अगला जन्म बिगड़ेगा। ऐसे आदमियों के परमिट कैंसिल करने हेतु भी सम्बन्धित अधिकारियों को लिखें। गांव में उनके विरुद्ध घृणा कर प्रचार करें। उनकी इस कमाई की वेश्यावृत्ति से तुलना करें।

३—गांव में अभद्र और अमानवीय व्यवहार करनेवाले बेकार युवक जो ताश खेलने के अतिरिक्त घर में कोई कार्य नहीं करते, उनका विरोध करें। यह आदमी अपने तौर पर विवाह उत्सवों में अपने-अपने घरों में चौधर जमा बान-बनवारों में भद्दे गाने, नाच करवाते हैं, गली-गली में साथ होकर स्वयं नाचते हैं और नाचनेवालों को प्रोत्साहित करते हैं। ऐसे युवकों की बुराई करनी चाहिये। जिनके घर विवाह है, उन्हें समझाना चाहिये कि आप अपनी ही बहन-बेटियों के सामने नाचकर कुल-मर्यादा को मिट्टी में मिला रहे हो।

४—गांव में छोटे बच्चे सामूहिक स्थानों पर बसों, टैम्पुओं से लटकते रहते हैं, रेत-मिट्टी फैंकते रहते हैं, ऐसे बच्चों को रोकना चाहिये। स्कूल अध्यापकों तथा उनके माता-पिता को उनके घृणित कामों से सूचित करना चाहिये। ऐसे बच्चों को बेकार युवक प्रोत्साहित करते हैं।

५—१७ से २७ वर्ष के युवकों को घर के कामों में रुचि लेने को कहना चाहिये। घरों में बिमारी यहीं से उत्पन्न होती है। ऐसे बेकार घूमनेवाले युवक का रोजगार लग जाता है तो वह अपनी कमाई को शराब सुलफे में लगाता है। गांव में ऐसे युवकों को सम्भाला जावे।

इस प्रकार के सदस्य गांव-गांव में बनें तो कण्ट्रोल हो सकता है। घर-घर में सम्पर्क कर, इस अग्नि को बुझाना होगा। जो इस अग्नि को लगाने आते हैं उनसे अपनी सन्तान को बचाना होगा।

जब तक हाथ में काम मुंह में राम नहीं होगा, हरयाणा नहीं बचेगा। हरयाणा को आर्यसमाज ही बचा सकता है। युवकों से भी मेरी प्रार्थना है कि वे स्वयं भी विचारें, विचार उन्हें सुपथ पर लायेगा, कुल-मर्यादा का ध्यान रखें। हमारा क्षेत्र कमाकर खानेवाला क्षेत्र रहा है। आप अपने हाथों से कमायें और उस कमाई की रक्षा करें। पेट-पट्टी बांधकर पालनेवाले अपने माता-पिता के सामने अपने कुल को मिट्टी में न मिलावें। विचार कर खावें-पीवें, अपने बुजर्गों के पास ही बैठें, उनके चरण रात्रि में अवश्य दबाया करें। उनसे उनके अनुभव का लाभ उठावें।

दयानन्द महिला महाविद्यालय फरीदाबाद को पार्क पुनः मिला

दयानन्द महिला महाविद्यालय फरीदाबाद की छात्राओं के खेलने के लिए हरयाणा सरकार ने स्थानीय बस अड्डे के साथ चिल्ड्रन पार्क दिया था और इसका कब्जा दयानन्द महिला महाविद्यालय के पास था, परन्तु राजनैतिक दबाव के कारण यह भूमि एक ट्रस्ट को देने की योजना बन गई। इस अन्याय के विरुद्ध दयानन्द शिक्षा-संस्थान के प्रधान श्री कन्हैयालाल महता ने अपने सहयोगियों के साथ भूख हड़ताल आरम्भ करदी। आर्यसमाज के क्षेत्र में रोष फैलने लगा।

डा० मंगलसैन विधायक के प्रयत्न से हरयाणा के नये मुख्यमन्त्री श्री देवीलाल ने इस भूमि को दयानन्द संस्थान के पास ही रहने का आश्वासन दे दिया। इस पर १४ दिन की भूख हड़ताल समाप्त होगई और एक सार्वजनिक सभा में डा० मगलसैन तथा सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने श्री महता जी की तपस्या तथा लगन की सराहना करते हुए भूमि पुन: दयानन्द संस्थान को मिलने पर प्रसन्नता प्रकट की।

आवश्यकता है

आर्य हिन्दी संस्कृत महाविद्यालय चरखी दादरी में शास्त्री कक्षाओं को व्याकरण पढ़ाने के लिये अध्यापक/अध्यापिका की आवश्यकता है।

योग्यता—शास्त्री+एम० ए० संस्कृत अथवा आचार्य।

वेतन—राजकीय नियमानुसार।

साक्षात्कार—१५ जुलाई सुबह १० बजे विद्यालय के कार्यालय में होगा। प्रमाण-पत्र साथ लावें।

ऋषिपाल आचार्य
आर्य हिन्दी महाविद्यालय चरखी दादरी (भिवानी)

प्रवेश सूचना

ब्रह्मकुटी वेद मन्दिर व्रजघाट में वेदोपदेशक विद्यालय सुचारु रूप से चल रहा है। इसमें सौम्य, शिष्ट, अनुशासनप्रिय प्रतिभाशाली तथा आजीवन वैदिकधर्म प्रचार करने के इच्छुक कम से कम १०वीं कक्षा उत्तीर्ण १५ से २२ वर्ष तक की आयु के युवक प्रवेश के लिये आमन्त्रित हैं। निम्न पते पर शीघ्र पत्र-व्यवहार करें—

—स्वामी वेदानन्द
ब्रह्मकुटी वेद मन्दिर, व्रजघाट, जि० गाजियाबाद

शराब मानव-समाज की शत्रु है

इससे अवश्य बचें।

प्राच्य व्याकरण शास्त्र के प्रचार में—

महर्षि दयानन्द का योगदान

गुरुकुल झज्जर के सुयोग्य स्नातक श्री राजकुमार शास्त्री, व्याकरणाचार्य, एम० ए. ने पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ की पी-एच. डी. उपाधि के लिये उक्त शोध-प्रबन्ध दिसम्बर, १९८६ में प्रस्तुत किया था।

राजकुमार जी ने मौलिक शोध प्रबन्ध डा० भवानीलाल भारतीय प्रोफेसर एवं अध्यक्ष महर्षि दयानन्द वैदिक अनुसंधान पीठ, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ के निदेशन में लिखा है। पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ में संस्कृत विभाग के रीडर डा० धनराज शर्मा भी इस शोध-कार्य में मार्गदर्शक रहे हैं।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध डा० राजकुमार ने सात अध्यायों में पूरा किया है। इसके प्रथम अध्याय में व्याकरण शास्त्र के उद्भव एवं विकास, व्याकरण शास्त्र के प्राचीन प्रवक्ता, महाभाष्य के टीकाकार, अष्टाध्यायी के वृत्तिकार और प्रक्रिया ग्रन्थों के लेखकों का वर्णन किया है। द्वितीय अध्याय में पाणिनीय व्याकरण की विशेषताओं को दर्शाते हुए आचार्य पाणिनि के गुणानुवादक १६ विद्वानों का संक्षिप्त परिचय लिखा है। तृतीय अध्याय में पाणिनीय व्याकरण के पुनरुद्धारक स्वामी विरजानन्द और महर्षि दयानन्द के जीवन की प्रमुख घटनाओं का उल्लेख है। चतुर्थ अध्याय में महर्षि दयानन्द की व्याकरण सम्बन्धी रचनाओं का वर्णन, महर्षि दयानन्द की शिक्षा-नीति, पठन-पाठन विधि का प्रकार, आर्ष पाठविधि की मान्यता और गुरुकुलों का नामावली दी गई है। पंचम अध्याय में पाणिनीय सूत्रों का महर्षिकृत विशिष्ट व्याख्यान, सूत्र स्वरूप भेद विचार और काशिका वृत्ति के सूत्रार्थ की समीक्षा की गई है। षष्ठ अध्याय में महर्षि दयानन्द के विशिष्ट पद-प्रयोगों की समीक्षा की गई है और सप्तम अध्याय में महर्षि दयानन्द द्वारा वैयाकरण सिद्धांत कौमुदी की समीक्षा का सोदाहरण विवेचन किया है।

संस्कृत व्याकरण शास्त्र के प्रचार में महर्षि दयानन्द के योगदान का प्रतिपादन प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में भली-भांति किया गया है। यदि इसे पुस्तक रूप में प्रकाशित कर दिया जावे तो व्याकरण पढ़नेवाले छात्र और अध्यापक भी लाभान्वित हो सकते हैं।

महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य पर देश-विदेश के अनेक विद्वानों ने बहुत कुछ लिखा है। महर्षि दयानन्द को वर्तमान युग में वेदोद्धारक माना जाता है। वेदों की रक्षा और वेदार्थ को समझने के लिये ६ वेदांगों में व्याकरण प्रधान अंग है। महर्षि पतंजलि ने भी महाभाष्य में लिखा है—"प्रधानं च षट्स्वङ्गेषु व्याकरणम्। प्रधाने च कृतो यत्नः फलवान् भवति।" इस प्रधान वेदांग व्याकरण के प्रचार के लिये महर्षि दयानन्द सरस्वती ने क्या कुछ किया, इसका समीक्षात्मक उल्लेख इस शोध-प्रबन्ध में उपलब्ध है। इस सफल प्रयास के लिये लेखक बधाई का पात्र है।

—वेदव्रत शास्त्री

आवश्यकता

गुरुकुल आर्यनगर हिसार में एक ऐसे संस्कृत अध्यापक की आवश्यकता है, जो गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की विद्याधिकारी तथा शास्त्री कक्षाओं को संस्कृत साहित्य एवं व्याकरण अधिकारपूर्वक पढ़ाने में समर्थ हो। इसके अतिरिक्त एक फोरव्हीलर ड्राईवर, सेवक तथा संरक्षक की भी आवश्यकता है। सेवा-मुक्त आर्य विचारधारा के प्रार्थी को प्राथमिकता दी जायेगी। वेतन योग्यतानुसार दिया जायेगा। प्रार्थी महानुभाव निम्नलिखित पते पर पत्र-व्यवहार करें अथवा मिलें।

गुरुकुल हिसार शहर से पांच कि०मी० की दूरी पर बालसमन्द मार्ग के निकट नहर के किनारे स्थित है। गुरुकुल में पहुंचने के लिए बालसमन्द रोड के पांचवें कि०मी० पर लोकल बस द्वारा नहर के पुल पर उतरें।

आचार्य
गुरुकुल आर्यनगर, पो० आर्यनगर, जि० हिसार (हर०)

स्वामी दयानन्द सरस्वती की अनमोल सूक्तियां

संगठन—जिस संगठन में अधर्म से धर्म, असत्य से सत्य सब सदस्यों के देखते हुए मारा जाता है वहां सब मृतक के समान है। मानों उनमें कोई भी नहीं जीता।

उन्नति—प्रत्येक को अपनी उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये।

भलाई—जो मनुष्य जगत् की जितनी भलाई करेगा, उसको उतना ही ईश्वर की व्यवस्था से सुख प्राप्त होगा।

प्रेम—परमात्मा प्रार्थना का नहीं, प्रेम का भूखा है।

सत्य—जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना 'सत्य' कहाता है।

अनिवार्य धर्म—सत्य के ग्रहण करने और असत्य के त्यागने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।

अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।

अर्थ—अर्थ वह है जो कि धर्म ही से प्राप्त किया जाये और जो अधर्म से सिद्ध होता है उसको अनर्थ कहते हैं।

काम—काम वह है कि जो धर्म और अर्थ से प्राप्त किया जाये।

व्यवहार—सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिये।

मनुष्य और पशु—१. जैसे पशु बलवान् होकर निर्बल को दुःख देते और मार भी डालते हैं। जब मनुष्य शरीर पाकर वैसा ही कर्म करते हैं तो वे मनुष्य स्वभाव-युक्त नहीं, किन्तु पशुवत् हैं।

२—जो बलवान् होकर निर्बलों की रक्षा करता है, वही मनुष्य कहलाता है और जो स्वार्थवश होकर परहानि मात्र करता है, वह जानो पशुओं का भी बड़ा भाई है।

संकलनकर्ता—वेदमित्र हापुड़वाले
७२-बी गोविन्दनगर, अम्बाला कैंट (हर०)

आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं से आवश्यक निवेदन-

हरयाणा में शराब के प्रचार का विस्तार हो रहा है, जिससे किसान मजदूर इस बुराई में फंसकर बर्बाद हो रहे हैं। सभा की ओर से प्रतिवर्ष ग्राम पंचायतों को प्रेरणा करके शराबबन्दी प्रस्ताव करवाकर सितम्बर मास तक हरयाणा सरकार को भिजवाये जाते हैं। जिन पंचायतों के प्रस्ताव समय पर सरकार को पहुंच जाते हैं, पंचायत एक्ट के अनुसार वहां आगामी वर्ष ठेका नहीं उठाया जा सकता।

अतः आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं तथा अधिकारियों से निवेदन है कि वे अपने-अपने क्षेत्र की पंचायतों को प्रेरणा करके सितम्बर मास तक प्रस्ताव पास करवाकर सरकार को भिजवाने का पूरा प्रयत्न करें। आपके योगदान से अनेक ग्रामों में शराब के ठेके बन्द हो सकते हैं। प्रस्ताव का प्रारूप निम्नलिखित है—

नशाबन्दी प्रस्ताव

माननीय मुख्यमन्त्री जी,
हरयाणा चण्डीगढ़।

हमारे ग्राम.................... ....जिला.................... ..पंचायत ने अपनी बैठक दिनांक में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया है—

"यह ग्रामसभा (पंचायत) शराब पीने की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को ग्राम्य जीवन के लिए बहुत घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। गांव में अनाचार, अशांति और अपराध फैलते हैं। धन का भी भारी विनाश होता है। ऐसी अवस्था में हरयाणा सरकार की शराबबन्दी नीति का स्वागत करते हुए यह पंचायत मांग करती है कि हमारे क्षेत्र में चालू शराब की दूकान तुरन्त बन्द करदी जाये और भविष्य में कदापि यहां शराब का ठेका खोलने की अनुमति न दी जाये, ताकि उक्त बुराइयों से ग्राम्य जीवन की रक्षा हो सके।"

आशा है आप पंचायत की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यहां की शराब की दूकान को बन्द करने के लिए आवश्यक पग शीघ्र उठाने की कृपा करेंगे।

सरपंच तथा पंचों के हस्ताक्षर

इस प्रस्ताव की प्रतिलिपियां—

१. प्रधानमन्त्री, भारत सरकार, नई दिल्ली।
२. मन्त्री आबकारी एवं कराधान हरयाणा, चण्डीगढ़।
३. आबकारी एवं कराधान आयुक्त हरयाणा, चण्डीगढ़।
४. उप आबकारी एवं कराधान आयुक्त जिला.........
५. जिलाधीश ....
६. मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक के पते पर सितम्बर मास तक रजिस्ट्री डाक द्वारा भेजने का कष्ट करें।

सभामन्त्री

शराबबन्दी आंदोलन में सहयोग करें

पिछले तीन वर्षों से आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा और उसके प्रधान के नाते मैं स्वयं तथा मेरे साथी शराबबन्दी के अभियान में लग रहे हैं। इस आंदोलन को चलाने के लिए अनेक शराब के ठेकों पर धरने भी लगाने पड़े और वे सभी सफल हुए। इस आंदोलन के फलस्वरूप ५० से अधिक ठेके बन्द हुए।

हम यह अनुभव करते हैं कि किसान मजदूर और दूसरे कमाऊ लोग शराब की लत के कारण अपना ही सर्वनाश करने पर तुले हुए हैं। हमारे अभियान से एक नई चेतना युवकों, महिलाओं और सभी लोगों में आई है और वे इस लानत से छुटकारा चाहते हैं। जुलाई, अगस्त और सितम्बर के महीनों में हम इस अभियान को पूरे हरयाणा में चलाना चाहते हैं और हरयाणा की पवित्र भूमि को इस दुर्व्यसन से मुक्त करवाना चाहते हैं। मैं आशा करता हूं कि इस आंदोलन में हमें आपका हर प्रकार का सहयोग मिलेगा। कार्यक्रम की सूचना हर ठीक समय पर आपको भेज देंगे। —प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

वर्षाऋतु में वेदप्रचार सप्ताह मनावें

आर्यसमाजों में प्रतिवर्ष वर्षाऋतु में (जुलाई, अगस्त तथा सितम्बर तक) वेदप्रचार सप्ताह धूमधाम से मनाया जाता है। अतः हरयाणा के आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वे अपनी सुविधा के अनुसार वेदप्रचार सप्ताह की तिथियां निश्चित करके सभा को सूचित करें, ताकि सभा की ओर से उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों का कार्यक्रम बनाया जा सके। श्रावणी उपाकर्म के दिनों में सभी आर्यसमाजों की मांग पर प्रबन्ध कर सकना कठिन होगा। अतः जुलाई से सितम्बर तक हरयाणा में निरन्तर वेदप्रचार सप्ताह का आयोजन किया जायेगा। जिन आर्यसमाजों की मांग पहले आयेगी, उन आर्यसमाजों का प्रबन्ध पहले किया जायेगा।

—रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता

हरयाणा में अधिकृत विक्रेता

१ मैसर्ज परमानन्द साईंदितामल, भिवानी स्टैंड, रोहतक
२. „ फूलचन्द सीताराम गांधी चौक, हिसार
३. „ सन-अप-ट्रेडर्स सारंग रोड, सोनीपत
४. „ सुरेश एजेन्सीज ४९९/१७ गुरुद्वारा रोड, पानीपत
५. „ भगवान्दास देवकीनन्दन सर्राफा बाजार पुराना, करनाल
६. „ घनश्यामदास सीताराम बिचला बाजार, भिवानी
७. „ कृपाराम गोयल रुड़ी बाजार, सिरसा
८ „ कुलवन्त पिकल स्टोर्स, शाप न० ११५, मार्किट नं० १, एन० आई० टी० फरीदाबाद
९. „ चन्द्रप्रकाश नवीनप्रकाश ३१८/१ जेकमपुरा, गुडगांव

वैदिकधर्म प्रचारक

तर्ज—(हरयाणा)

वैदिकधर्म प्रचारक तुझको है शतबार बधाई।
मृतकों में दी जान डाल और बुड्ढों में तरुणाई॥

सोई हुई बेसुध जनता को आकर तू ही जगाता।
विपदाओं के तूफानों से निर्भय हो टकराता॥
पाखण्डों के गढ़ को ढाता सत्य मार्ग दर्शाता।
दयानन्द ऋषिवर का तू घर-घर सन्देश सुनाता॥
सूरज सम अज्ञान तिमिर की तूने रात हटाई॥ १

सुना वीर रस युवकों का तू रक्त गर्म कर देता।
कायर सुस्त निकम्मों में भी चेतनता भर देता॥
मधुर सुधामय वाणी से तू मन सबका हर लेता।
तेरे दम से बने अनेकों नेता वीर विजेता॥
आर्यसमाज वाटिका सुरभित सुमनों से सरसाई॥ २

देश विदेश नगर गांवों में वैदिक नाद बजाया।
कठ तेरे गोली व जेल फांसी से ना घबराया॥
बन्धु विधर्मी हुए शुद्ध करके फिर आर्य बनाया।
यथाशक्ति तूने ऋषि का पावन आदेश निभाया॥
वरना तू न प्रचार कोटि जन रहते यवन ईसाई॥ ३

घूम रहे हैं आज सहस्रों जग में आर्य प्रचारक।
वानप्रस्थ संन्यासी जनजीवन उद्धारक तारक॥
तजकर प्रिय परिजन प्रचार संलग्न सुविप्र विचारक।
महोपदेशक, भजनोपदेशक सुकवि विविध गुणधारक॥
देश-विदेशों जा-जाकर ओ३म् ध्वजा फहराई॥ ४

वैदिकधर्म प्रचारक जग में धर्म-प्रचार किये जा।
ऋषि सम अमृत पिला और को, खुद विष घूंट पिये जा॥
आर्यसमाजोन्नति हित तन मन सर्वस्व दिये जा।
कहे 'स्वरूपानन्द' ईश का तू आधार लिये जा॥
आर्यजगत् में होगी तेरी निश्चय कीर्ति बड़ाई॥ ५

ले०—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती
अधिष्ठाता वेदप्रचार १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस,
रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73   पंजि० नं० P



ओ३म्   कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री

वर्ष १४, अङ्क ३२ १४ जुलाई, १९८७ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

बलिवैश्वदेवयज्ञ का वैज्ञानिक स्वरूप

आचार्य यज्ञदेव आर्य द्वारा डा० वेदप्रकाश जी, ४६८ ब्रह्मपुरी, मेरठ (उ०प्र०)

गतांक से आगे—

लवणान्न क्षारान्न का निषेध इसलिए किया प्रतीत होता है, क्योंकि इस प्रकार का अन्न श्रद्धा प्रेम का प्रतीक नहीं तथा अग्नि में भी चट-चट ध्वनि करता तथा देर तक जल पाता है। इससे बननेवाली सूक्ष्म वायु (सुगन्ध) भी उतनी लाभप्रद नहीं होती तथा तीक्ष्णता के कारण विकार उत्पन्न कर सकती है।

वैदिक पद्धति काल में भी मातायें घर में भोजन का प्रथम ग्रास अग्नि में देकर गो-ग्रास अलग रखकर भोजन परोसती हैं। विवाहादि उत्सवों में भी भोजन का कुछ अंश (मिष्ठान्न) अग्नि में डालते हैं, जिस को उनकी भाषा में 'भट्ठी जिमाना' कहते हैं।

पूर्व काल में मातायें भोजन बनाकर घर के द्वार पर खड़ी होकर प्रतीक्षा करती थीं कि कोई ब्राह्मण, संन्यासी, ब्रह्मचारी आये और भिक्षा प्राप्त करे तब हमारा यह भोजन पवित्र हो जावे।

कुत्ते, बिल्लियों, कौवों को भी घरों से भोजन अवश्य दिया जाता है जो बलिवैश्वदेवयज्ञ का ही विकृत रूप है।

शुनां च पतितानां च श्वपचां पापरोगिणाम्।
वायसानां कृमीणां च शनकैर्निर्वपेद् भुवि॥
मनु० अ० ३।९२

पश्चात् घृत सहित लवणान्न लेकर कुत्ता, पतित, चांडाल पापरोगी, काक और कृमि इन छः नामों से छः भाग पृथिवी पर धरें। वे छः भाग जिस-जिस के नाम हैं, उस-उस को दे देना चाहिए।

इस श्रेणी में घरेलू उपकारी पशुओं, पतितों आदि का विधान ऋषियों ने किया है। अब इन पर पृथक्-पृथक् विचार करते हैं—

१. कुत्ता—कुत्ते का मानव के साथ पोषवत् सम्बन्ध है। वह घर का अवैतनिक सेवक है, चौकीदार है। चार अंगुल भर का टुकड़ा पाकर भी सन्तोष कर लेता है। अपने स्वामी के घर की सुरक्षा में सदैव तत्पर रहता है। स्वामी भक्ति में वह स्वामी हेतु प्राण तक देने को तत्पर रहता है। कई भावुक लोग उसको 'बिन झोली का फकीर' भी कहते हैं। दूसरी ओर यह पतित भी है। गन्दा खाद्य अखाद्य सब खा जाता है। जो व्यक्ति असन्तोषी निर्लज्ज बकवादी होते हैं उनको समाज कुत्ते की ही संज्ञा देता है। कुत्ता चाटुकारिता में भी प्रसिद्ध है। एक टुकड़े के लिए पेट दिखाकर पैरों में लोटकर अनेकों क्रियायें दिखाकर प्रसन्न करना चाहता है।

२ पतित—पतित व्यक्ति या पशु वह है जो किसी हीन कार्य करने के फलस्वरूप दण्ड भोग रहा है। निकृष्ट प्रकृति के कारण इधर-उधर मारा-मारा फिरता है। उनका छूत है उसको भी भोजांश देने पर ही उसकी कुदृष्टि से बचा जा सकता है। एक घटना में एक बलात्कारी पुरुष को एक विचित्र दण्ड दिया गया कि उसकी मूलेन्द्री का छेदन करके खोपड़ी के पात्र में भिक्षाटन करने का आदेश। आर्य राजा लोग चोरों दुष्टों को हस्त पैर छेदन करने का भी दण्ड देते थे। अतः ऐसे पतितों को खिलाकर खाना उचित है।

३. चांडाल—जो अत्यन्त भयंकर कार्य करनेवाले, हत्यारे मांसादि के निमित्त पशुओं को मारनेवाले तथा फांसी गृह पर फांसी देने का दण्ड देनेवाले भी प्रथम अन्न के योग्य हैं।

४. पापरोगी—बहुत से ऐसे रोग हैं जो पापों के फलस्वरूप होते हैं। सुश्रुत में कुष्ठ रोग का हेतु पाप कर्म बतलाया है—

ब्रह्म स्त्री सज्जनवध परस्वहरणादिभिः।
कर्मभिः पापरोगस्य प्राहुः कुष्ठस्य सम्भवम्॥
सुश्रुत नि० ६।३०

ब्राह्मण, स्त्री, सज्जन की हत्या करनेवाला तथा दूसरे के धन के हरनेवाले को यह पापरोग कुष्ठ होता है।

५. कौआ—कौआ भी निकृष्ट प्रकृति का प्राणी है। चालाकी धूर्तता और चोरी में यह प्रसिद्ध है। अतः इसकी दृष्टि भी अच्छी नहीं मानी जाती। उपकार रूप में गले-सड़े पदार्थों तथा मृत पशुओं का भक्षण कर शुद्धि करता है। अतः इसको भी तृप्त कर भोजन करना चाहिये।

६. कृमि—कृमियों में चींटियों आदि का विधान है। इनका भी अंश पृथक् कर भोजन करना चाहिए। शल्यक्रिया उपरांत रोगी के घाव की रक्षा हेतु कौवे आदि जीवों के लिए बलिदान करना आयुर्वेद में भी स्थान-स्थान पर वर्णन है।

बहुत से ब्राह्मण आज भी मार्ग चलता हुआ भोजन नहीं करते। क्योंकि उस पर कुत्ते, कौवे, कोढी, पतितों का दृष्टिपात होने से वह आहार अभक्षणीय मानते हैं। ऐसा नहीं कि उनकी दृष्टि से निकलकर कोई विषैला पदार्थ भोजन को विषाक्त कर देता है, परन्तु भक्षक पर एक अदृश्य मनोवैज्ञानिक प्रभाव अवश्य पड़ता है अर्थात् जैसे कोई सहृदय पुरुष कुत्ते को सम्मुख पाकर जो सामने कड़ी दृष्टि से भोजन की ओर देख रहा है, भूखा है, बार-बार लार गिराता है या कोई पीड़ित हाहाकार कर रहा हो या कहीं भयंकर अग्नि कांड जैसा दृश्य हो जाये, बचाव-बचाव की ध्वनि आ रही हो तो स्यात् कोई सज्जन पुरुष भूखा होते हुए भी भोजन न ... सके क्या कोई उसके हाथ से भोजन छीन रहा होता है? नहीं! एक भाव भोक्ता की मनःस्थिति को प्रभावित करता है। यदि वह इसकी उपेक्षा कर खाता है तो वह भोजन शरीर हेतु हानिकारक अर्थात् रोगोत्पादक होता है। इसलिए महर्षि चरक इष्ट देश और इष्ट उपकरणों सहित भोजन करने की सलाह आरोग्याभिलाषी को देते हैं—

"इष्टे देशे इष्टसर्वोपकरणं चाश्नीयात्; इष्टे हि देशे भुञ्जानानो

नानिष्टदेशजन्मनां विघातकरैर्भावैर्मनोविघातं प्राप्नोति; यथेष्टैः सर्वोपकरणैः, तस्मादिष्टे देशे तथेष्टसर्वोपकरणं चाश्नीयात्" चरक सूत्रस्थानम्

मनोनुकूल स्थान पर बैठकर भोजन करना चाहिए। चूंकि अनिष्ट स्थान पर भोजन करने से मन को आघात करनेवाले भाव प्राप्त होते हैं। सब पात्र, वस्त्रादि उपकरण मनोनुकूल स्वच्छ होने चाहियें। मलीन वस्त्र, पात्रादि से मन की प्रसन्नता सम्भव नहीं। मन के मलीन होने से स्वास्थ्य अच्छा नहीं बनता।

इसी विज्ञान को ध्यान में रखते हुए आर्य भोजनशाला एकांत शांत सुन्दर वाटिका के मध्य में तथा आच्छादित करते थे। यह दृष्टि दोष से बचने का ही वैज्ञानिक उपक्रम था।

पशु-पक्षियों के पालने का लाभ अन्य भी है। इनका मानव जीवन में निश्चित स्थान भी है। जैसे घर में मयूर, बन्दर, बिल्ली हो तो सर्प का भय नहीं रहता। चूंकि ये सर्प को मार डालते हैं। अनेक पशु-पक्षी कृषि उपयोगी तथा आर्थिक दृष्टि से भी उपयोगी हैं।

सुश्रुत में भगवान् धन्वन्तरि ने राजा को आवश्यक लाभकारी पशु-पक्षियों का पालन करने की सलाह दी है। क्योंकि एक तो इनसे घर की शोभा बढ़ती है, दूसरे ये विष से राजा की रक्षा करते हैं।

नृपभक्तादबलिं न्यस्तं सविषं भक्षयन्ति ये।
तत्रैव ते विनश्यन्ति मक्षिकावायसादयः॥
२८। सुश्रुत कल्प० १।२८

राजा के भोजन से दी गई बलि मक्खी कौवे आदि जो खाते हैं वे शीघ्र ही मर जाते हैं।

चकोरस्याक्षिवैराग्यं जायते क्षिप्रमेव तु। सुश्रुत कल्प०

विषैले अन्न को खाकर चकोर पक्षी की आँख की लाली तुरन्त समाप्त हो जाती है।

दृष्ट्वान्नं विषसंसृष्टं म्रियन्ते जीवजीवकाः।
कोकिलास्वरवैकृत्यं क्रौञ्चस्तु मदमृच्छति॥
सु० कल्प० १।३१

विषाक्त अन्न को मात्र देखकर जीव-जीवक नामक प्राणी शीघ्र मर जाता है। कोयल का स्वर बिगड़ जाता है। क्रौञ्च नामक पक्षी को मद् नशा चढ़ जाता है।

हृष्येन्मयूर उद्विग्नः क्रोशतः शुकसारिके।
हंसः क्ष्वेडति चात्यर्थं भृङ्गराजस्तु कूजति॥
सु० कल्प० १।३२

मोर हृष्ट एवं उद्विग्न (चंचल) हो जाता है। तोता और मैना चिल्लाते हैं। भृङ्गराज नामक पक्षी कूजता है।

पृषतो विसृजत्यश्रुं विष्ठां मुञ्चति मर्कटः।
सन्निकृष्टस्ततः कुर्याद्राज्ञस्तान् मृगपक्षिणः॥
सु० कल्प० १।३३

वेश्मनोऽथ विभूषार्थं रक्षार्थं चात्मनः सदा।

चितल हिरण आंसू बहाता है, बन्दर का मल निकल जाता है। इसलिए राजा पशु-पक्षियों को घर में अवश्य पाले। इनसे घर में शोभा होने के साथ-साथ अपनी भी रक्षा होती है।

इस प्रकार सिद्ध होता है आर्यों में प्रचलित बलिवैश्वदेवयज्ञ पूर्णतया वैज्ञानिक है।

योग प्रशिक्षण शिविर नवीन योजना

हमने यहां ६ में से ५ दर्शनों (योग सांख्य वैशेषिक न्याय वेदांत) का अध्यापन कार्य पूरा कर लिया है। जिनमें से तीन दर्शनों की लिखित व मौखिक परीक्षा हो चुकी है तथा वेदांत व न्याय दर्शन की परीक्षा ली जारही है, तत्पश्चात् छठे मीमांसा दर्शन का अध्यापन प्रारम्भ होगा। ब्रह्मचारियों का प्रत्येक प्रकार से सूक्ष्म परीक्षण करने के पश्चात् मैं यह कह सकता हूं कि इन से अनेक ब्रह्मचारी वर्तमान में पांचों दर्शनों को ऋषि शैली से पढ़ाने, योग प्रशिक्षण देने तथा वेदप्रचार करने में समर्थ होगये हैं।

मेरा ऐसा विश्वास है कि ऋषिप्रणीत ६ दर्शनों के अध्यापन से वैदिक सिद्धांतों का परिज्ञान कराकर तथा योगसाधना द्वारा उस ज्ञान को व्यावहारिक रूप देकर शीघ्र ही युवा, त्यागी, तपस्वी, निष्काम सेवी आदर्श दार्शनिक विद्वानों का निर्माण किया जा सकता है जो देश विदेश के प्रबुद्ध वर्ग में वैदिकधर्म का अच्छी प्रकार से प्रचार कर सकें, जिनके अभाव में यह कार्य शिथिल पड़ गया है।

इसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हमारा यह परीक्षण अब तक के परिणामों के आधार पर सफल रहा है। इन सुपरिणामों को देखते हुये, इस सत्र की समाप्ति के पश्चात् हमने १० ब्रह्मचारियों का द्वितीय सत्र चलाने का निर्णय किया है, जिसके लिए आर्यवन विकास फार्म के मान्य अधिकारियों ने आवास व भोजन के प्रबन्ध का दायित्व लेकर हमें अनुगृहीत किया है। शेष वस्त्र पुस्तकादि आवश्यक साधनों का प्रबन्ध अनेक सज्जन मिलकर करेंगे। अगले सत्र के नवीन ब्रह्मचारियों को दर्शनादि ग्रन्थों को पढ़ाने तथा योग प्रशिक्षण देने का कार्य मैं और वर्तमान सत्र के ब्रह्मचारी मिलकर करेंगे।

इस प्रथम शिविर के छहों दर्शनों की समाप्ति के पश्चात् ही नवीन त्रैवार्षिक शिविर के लिए ब्रह्मचारियों को प्रवेश दिया जायेगा। नवीन सत्र के प्रारम्भ की घोषणा अगले वर्ष के प्रारम्भ अर्थात् चैत्र शुक्ला १ विक्रम संवत् २०४५ तक कर देंगे।

प्रवेशार्थी में निम्न योग्यतायें अपेक्षित हैं—

१—योगाभ्यास व छः दर्शनों के अध्ययन में रुचि हो।

२—आजीवन ब्रह्मचारी रहने की प्रतिज्ञा से युक्त हो।

३—निष्कामभाव से सेवा करने का संकल्प वाला हो।

४—समर्पित भावना से युक्त, पूर्ण अनुशासन में रहनेवाला तथा वैदिक मान्यताओं को माननेवाला हो।

५—यम नियम का श्रद्धापूर्वक पालन करनेवाला हो।

६—संस्कृत भाषा का विशेष ज्ञान रखनेवाला हो, (अष्टाध्यायी महाभाष्य क्रम से पठित ब्रह्मचारियों को प्राथमिकता दी जायेगी)

७—घर से या स्वजनों के साथ सांसारिक सम्बन्ध न हों।

८—न्यूनतम अवस्था १८ वर्ष हो।

शिविरार्थियों को भोजन वस्त्रादि आवश्यक साधनों की सुविधा निशुल्क रूप में प्राप्त होगी। प्रवेश लेनेवाले शिविरार्थियों का तीन मास तक बौद्धिक, आध्यात्मिक तथा व्यावहारिक परीक्षण होगा। पूर्ण अनुशासन में रहनेवाले को ही शिविर में रखा जायेगा।

भवदीय—स्वामी सत्यपति

फतेहाबाद बस हत्याकांड की पुनरावृत्ति रोकने हेतु अपराधियों को कड़ा दण्ड दिया जाये —प्रो० शेरसिंह

७ जुलाई की रात्रि को फतेहाबाद जि० हिसार के ग्राम दरियापुर में उग्रवादियों द्वारा दो बसों को रोक कर ३२ यात्रियों की कायरता पूर्ण निर्मम हत्या किये जाने का समाचार जानने पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की कार्यकारिणी ने एक शोक प्रस्ताव पास करते हुए भारत तथा हरयाणा सरकारों से मांग की है कि इस प्रकार की दुखद घटना की पुनरावृत्ति रोकने के लिये अपराधियों को कड़े से कड़ा दण्ड दिया जाये।

सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह, उपप्रधान म० भरतसिंह, मन्त्री श्री देवव्रत शास्त्री, उपमन्त्री प्रो० सत्यवीरसिंह विद्यालंकार तथा सभा के वेदप्रचाराधिष्ठाता श्री रघुवीरसिंह ने एक संयुक्त वक्तव्य में उग्रवादियों द्वारा लालडू (पंजाब) तथा दरियापुर (फतेहाबाद) में एक ही समुदाय के यात्रियों की बसों में की गई हत्याओं की घोर निंदा और शोक सतप्त परिवारों के प्रति संवेदना प्रकट की है।

दरियापुर की घटना में ११ घायल यात्रियों को मेडिकल हस्पताल रोहतक में प्रविष्ट करवाया गया है। जिन घायलों के परिवार वाले सूचना न मिलने के कारण मेडीकल में नहीं आ सके उनके पतों की जानकारी प्राप्त करके सभा ने उनके परिवारों को फोन द्वारा सूचना दी और उनके पहुँचने तक सभा के प्रचारक श्री सुमेरसिंह आर्य तथा श्री कंवलसिंह ने मेडीकल में उनके पास रहकर उनकी देखभाल तथा सेवा की।

सभा अधिकारियों ने स्वयं भी रोहतक मेडीकल, हिसार तथा फतेहाबाद के हस्पतालों में जाकर वहां उपचाराधीन बस यात्रियो के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की तथा उनके प्रति सहानुभूति प्रकट की।

रोहतक, हिसार तथा फतेहाबाद का भ्रमण करने के पश्चात् सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह ने दिनांक १० जुलाई को सिद्धांती भवन रोहतक में आयोजित एक पत्रकार सम्मेलन में रोहतक के पत्रकारों को सम्बोधित करते हुए कहा कि लालडू तथा दरियापुर में हुई बस यात्रियों की हत्या का कारण विदेशी शक्तियों द्वारा उग्रवादियों को आर्थिक सहायता तथा हथियारों की ट्रेनिंग आदि देना है। ये शक्तियां राष्ट्र के टुकड़े करना चाहती हैं। अम्बाला से डबवाली तक पंजाब की सीमा पर कड़ी निगरानी रखने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि संदिग्ध व्यक्तियों को हिरासत में लेकर उनकी राष्ट्र-विरोधी गतिविधियों की जांच पड़ताल करके उग्रवादियों की सहायता करने तथा उन्हें पनाह देनेवालों को दण्ड दिया जाये।

सभाप्रधान जी ने १० जुलाई की रात्रि को आकाशवाणी रोहतक तथा दिल्ली केन्द्रों से एक भेंट वार्ता प्रसारित करते हुए हरयाणावासियों को राष्ट्र-द्रोहियों से सावधान रहने तथा साम्प्रदायिक सद्भावना बनाये रखने की अपील की और हरयाणा के नेताओं को सुझाव दिया कि वे परस्पर विरोधी वक्तव्य न देवें और दलगत राजनीति से दूर रहते हुए उग्रवादियों के इरादों को विफल करने में योगदान करें।

आकाशवाणी से सुनिये

सभा के महोपदेशक पं० सुखदेव शास्त्री की आकाशवाणी रोहतक केन्द्र से दिनांक ३० जुलाई को रात्रि ७ बजे "राष्ट्र का उच्च चरित्र कैसे बने" विषय पर वार्ता सुनिये।

श्रीमती प्रभातशोभा पण्डित विदेश यात्रा पर



पं० प्रभातशोभा विद्यालङ्कृता विश्वधर्म सम्मेलन में ७ सदस्यों के एक शिष्टमण्डल के साथ हिन्दूधर्म का प्रतिनिधित्व करने के लिये २४ जुलाई को विदेश-यात्रा पर जारही हैं। शिष्टमण्डल में हिन्दू(वैदिकधर्म) के अतिरिक्त अन्य मतमतांतरो के विद्वान् भी सम्मिलित हैं।

प० प्रभातशोभा जो कार्यक्रम के अनुसार ३० जुलाई से ७ अगस्त तक केलेफोरनिया की राजधानी सानफ्रांसिसको में तथा अमेरिका के न्यूयार्क नगर में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में हिन्दू (वैदिक) धर्म का प्रतिनिधित्व करेंगी।

स्मरण रहे पं० प्रभातशोभा गुरुकुल देहरादून की स्नातिका, पं० बुद्धदेव विद्यालंकार की सुपुत्री तथा सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह की धर्मपत्नी हैं।

बात ऐसे बनी

मेरे भाई को शराब पीने की बुरी लत थी। हम जब भी उसे समझाते तो वह कह देता, मैं शराब तो छोड़ना चाहता हूं, लेकिन शराब मुझे नहीं छोडती। शराब मेरी नस-नस में उतर गई है। उसने मुझे अपनी जंजीरों में जकड रखा है।

जब यह बात मैंने अपने एक मित्र को बताई तो उसने कहा, अपने भाई को मेरे घर भेज देना।

अगले दिन जब मेरे भाई ने उस मित्र के घर जाकर उसे पुकारा तो उसने अन्दर ही से जवाब दिया, कैसे बाहर आऊं भाई, खम्बे ने मुझे जकड़ रखा है?

मेरा भाई अन्दर गया। उसने देखा कि मेरे मित्र के दोनों हाथ खम्बे से सटे हुए थे। मेरे भाई ने खीजकर कहा, छोड़ दीजिए उसे।

मित्र ने तुरन्त खम्बे को छोड़ दिया और मेरे भाई से पूछा, मैंने खम्बे को जकड़ रखा था या खम्बे ने मुझे?

मेरे भाई ने जवाब दिया, तुमने खम्बे को जकड़ रखा था।

तब मेरे मित्र ने थोड़ा गम देखकर चोट की, शराब ने तुम्हें जकड़ रखा है या तुमने शराब को जकड रखा है?

अब मेरे भाई का चेहरा देखने लायक था। उस दिन के बाद उसने शराब से तौबा करली।

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज मन्दिर जींद शहर में दिनांक ५ जुलाई रविवार को एक शोक सभा हुई। इसमें उपस्थित समस्त नर-नारियों ने चौधरी भलेसिंह सुनार का हृदयगति रुकने के कारण आकस्मिक निधन पर उनकी दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति हेतु तथा शोक संतप्त परिवार को इस असह्य शोक-वेदना को सहन करने की शक्ति प्रदान करने के लिये दो मिनट का मौनव्रत धारण करके परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की।

माननीय श्री भलेसिंह जिला जींद के गणमान्य आर्यसमाजी, समाज सेवक तथा धार्मिक विचारों से ओतप्रोत व्यक्ति थे। प्रतिदिन घर पर संध्या हवन करते थे। हैदराबाद सत्याग्रह में जिला जींद के जत्थे में गये थे। अनेकों गुरुकुलों को अपनी पुनीत कमाई से दान दिया। समय-समय पर आर्यसमाज का प्रचार कराते थे। जीवन बड़ा सादा तथा सरल था। इनके आकस्मिक निधन का दु:खद समाचार सुनकर समस्त जींद वासियों को बड़ा आघात लगा। इनका अन्त्येष्टि संस्कार वैदिक रीति से किया गया।

—प्रो० इन्द्रदेव शास्त्री मन्त्री

क्या हम संस्कृत की उपेक्षा कर सकते हैं ?

—पुखराज

हमारे विश्वविद्यालयों की क्या हालत हो चुकी है इसका अनुमान दिल्ली विश्वविद्यालय के बढ़िया समझे जानेवाले अनेक कालेजों के नये छात्रों को दाखिला देने की शर्तों से लगाया जा सकता है। इन कालेजों से कहा है कि वे दाखिले के इच्छुक छात्रों के पिछले वर्ष के अंक देखते समय संस्कृत या कृषि जैसे विषयों के अंकों की गिनती नहीं करेंगे। यानी ये दोनों विषय उनके लिए कोई खास महत्त्व नहीं रखते। यह फैसला करनेवाले लोग भी शिक्षक ही हैं, क्योंकि उन्हीं की समितियां दाखिले के नियमों को बनाती और लागू करती हैं। अपने यह नियम बनाते समय उन्होंने याद नहीं किया कि अपने स्कूल-कालेजों में हम छात्रों को लगातार यही पढ़ाते रहते हैं कि भारत एक कृषि प्रधान देश है और संस्कृत यहां की गौरवशाली परम्परा की वाहक रही है और आज भी उसी में हमारे ज्ञान और विज्ञान की सारी परम्परा सुरक्षित है।

हमारे इन शिक्षकों का नाता देश की परिस्थितियों और देश के संस्कार से टूट न गया होता तो क्या वे इस तरह का बेहूदा फैसला कर सकते थे। हांलाकि यह इन शिक्षकों का ही दोष नहीं है। हमारी पूरी शिक्षा व्यवस्था में अपने परम्परागत ज्ञान-विज्ञान और अपने देश की सामान्य खूबियों और कमजोरियों के बारे में व्यापक अज्ञान भरा हुआ है। इस अज्ञान को दूर करना तो और बात है, इसे वे अपने आधुनिक होने की विशेषतायें ही समझते रहते हैं। केन्द्र सरकार ने हमारी जो नई शिक्षा-नीति बनाई है उसमें कितनी सुगमता से संस्कृत की उपेक्षा करदी गई है। अगर शिक्षा के हमारे इस पूरे तन्त्र का भारत की प्रवृत्तियों, परम्पराओं और उसकी दार्शनिक मान्यताओं से कोई सरोकार रहा होता तो इस तरह की हरकत किसी भी तरह सम्भव नहीं थी।

पाठ्यक्रमों से संस्कृत को हटाने की ऐसी हिम्मत अंग्रेज शासक भी नहीं कर सके थे। वे यहां के लोगों का संस्कृत के प्रति लगाव अच्छी तरह समझते थे। इसीलिए उन्होंने एंग्लो संस्कृत कालेज खोलकर अपने आपको संस्कृत का सबसे बड़ा हिमायती घोषित किया था। यह और बात है कि बाद में इन्हीं कालेजों के एंग्लो संस्कृत विभागों को संस्कृत की पढ़ाई खत्म करने एवं अंग्रेजी भाषा एवं पश्चिमी शास्त्रों के प्रचार के लिए इस्तेमाल किया गया।

संस्कृत के प्रति सरकार एवं विश्वविद्यालयों के मौजूदा रवैए के पीछे अंग्रेज शासकों एवं पश्चिमी प्राच्यविदों की नीतियों एवं अवधारणाओं का काफी हाथ है। इन प्राच्यविदों ने संस्कृत को ब्राह्मणों एवं उच्च वर्ग की भाषा घोषित कर शेष भारतीय समाज को उससे अलग दिखाने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। इसी तरह की कोशिश पाली और प्राकृत भाषाओं को संस्कृत से अलग करने एवं भारतीय समाज को हिन्दू बौद्ध एवं जैन सम्प्रदायों में बटा दिखला कर भी की गई थी। इन अवधारणाओं का इतना अधिक प्रचार किया गया है कि आधुनिक शिक्षा प्राप्त लोगों को संस्कृत, पाली एवं प्राकृत भाषाओं या हिन्दू-बौद्ध एवं जैनों को एक साझी संस्कृति का अंग समझने में दिक्कत होती है। इन्हीं के कारण अरुणाचल के पूर्व मुख्यमन्त्री प्रेम थुंगन बौद्ध मन्दिरों के लिए गुरुद्वारा अधिनियम की तर्ज पर अलग कानून बनाने एवं पाली के लिए अलग राष्ट्रीय बोर्ड कायम करने की मांग करते हैं।

पाली एवं प्राकृत भाषाओं के अध्ययन एवं प्रसार के लिए अलग से प्रयास या मांग करने की जरूरत नहीं रहनी चाहिए। हमारे इतिहास लेखकों ने अलबरूनी को काफी उद्धृत किया है। वे एक विदेशी की निगाह से ही भारत को देख रहे थे इसलिए अपने पूर्वाग्रहों से मुक्त नहीं हो सकते थे। पर अलबरूनी द्वारा संस्कृत, पाली एवं प्राकृत भाषाओं के बारे में दर्ज तथ्यों के अनुसार उस समय हिन्दुस्तान में संस्कृत के दो रूप प्रचलित थे—(१) पांडित्य एवं साहित्य की भाषा के रूप में, (२) प्राकृत भाषाओं के रूप में। अलबरूनी के अनुसार ये प्राकृत भाषायें कभी भी संस्कृत से अलग नहीं समझी जाती थीं।

आजादी के बाद बम्बई एवं पश्चिम बंगाल राज्यों में माध्यमिक स्तर पर संस्कृत की जगह पाली एवं अर्धमागधी भाषायें पढ़ाई जाने लगी थीं। शिक्षा में इस तरह के गड़बड़ झाले के बीज अंग्रेज शासक बो गये थे। परन्तु पीएल वैद्य, नलिनाक्षदत्त एवं हीरालाल जैन जैसे जाने-माने पाली और प्राकृत के विद्वानों ने स्कूलों में संस्कृत के स्थान पर इन भाषाओं की पढ़ाई के खिलाफ राय जाहिर की थी। उनके अनुसार संस्कृत भाषा एवं व्याकरण के बिना पाली एवं प्राकृत भाषाओं का ज्ञान असम्भव है। इसलिए इन भाषाओं के अध्ययन के लिए संस्कृत का पढ़ना बहुत जरूरी है।

भारतीय धर्म दर्शन एवं संस्कृति के मूल तत्त्वों को समझने, उनके अनुरूप शील संस्कार एवं आचार ढालने के लिए जहां स्कूली छात्रों का संस्कृत पढ़ना बेहद जरूरी है वहीं ऊंची कक्षाओं में पाली एवं प्राकृत भाषाओं की शिक्षा के बगैर भारतीय विचारों को समग्रता से समझना असम्भव है। राष्ट्रीय संस्कृत बोर्ड में पाली एवं प्राकृत भाषाओं को शामिल करने पर किसी को एतराज नहीं होना चाहिए। परन्तु सरकार ने संस्कृत के प्रसार के लिए जिन संस्थाओं की स्थापना की है, वे ही कागजी संस्थायें मात्र बनकर रह गई हैं। बेहतर होता यदि प्रेम थुंगन पाली के लिये अलग बोर्ड कायम करने की मांग करने के बजाये संस्कृत की मौजूदा संस्थाओं के काम की सालाना रपट मांगते। उन्हें पता चलता कि इन संस्थाओं की सालों से कोई बैठक नहीं हुई है, जबकि इन संस्थाओं में केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री से लेकर राज्य शिक्षा मन्त्रियों एवं अनेक गणमान्य विद्वानों के नाम शामिल हैं।

सरकार एवं विश्वविद्यालयों द्वारा संस्कृत की इस कदर उपेक्षा कतई बर्दाश्त नहीं की जा सकती। पूरी दुनिया में चीनी भाषा के अलावा किसी अन्य भाषा को संस्कृत जितनी सुदीर्घ एवं अविच्छिन्न परम्परा को हासिल करने का गौरव प्राप्त नहीं है। यूनान एवं रोम को ईसाइयत से पिटना पड़ा। मिस्र एवं बेबीलोन को भी भाषा एवं धर्म दोनों के क्षेत्र में टूटन झेलनी पड़ी. परन्तु हिन्दुस्तान में लम्बे विदेशी शासन के बावजूद संस्कृत के माध्यम से भाषा एवं धर्म की अटूट परम्परा कायम रही। जिस तरह संस्कृत आम भारतीयों के संस्कारों में रची-बसी है वैसी स्थिति शायद ही संसार की किसी जुबान की हो। पाली, प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषायें हमेशा संस्कृत के साथ-साथ आगे बढ़ती रही हैं। इन भाषाओं के विकास में संस्कृत ने कभी कोई रुकावट नहीं डाली। अलबत्ता इन भाषाओं के संवर्धन में ही संस्कृत ने मदद की है। यहां तक कि भारतीय परम्परा इन भाषाओं को संस्कृत से अलग नहीं मानती। संस्कृत वांङ्मय की अभिवृद्धि में बौद्धों एवं जैनों का कोई कम योगदान नहीं रहा है। बौद्ध-संस्कृत साहित्य का कलेवर पाली-साहित्य से कम नहीं है। बौद्ध धर्म, दर्शन काव्य एवं कथा साहित्य के ऊंचे से ऊंचे ग्रंथ आपको संस्कृत में लिखे मिल जायेंगे। नागार्जुन, दिङ्नाग एवं धर्मकीर्ति जैसे बौद्ध आचार्यों की मेधा ने संस्कृत भाषा के जरिए ही अभिव्यक्ति प्राप्त की थी। जैनाचार्यों के तर्कशास्त्र, व्याकरण, कोश एवं पुराण ग्रन्थ संस्कृत ही में लिखे गये थे। बौद्धों के पाली ग्रन्थ एवं जैनों द्वारा रचित प्राकृत एवं अपभ्रंश ग्रंथ के चिन्तन के लिहाज से किसी भी तरह संस्कृत वाङ्मय से अलग नहीं किये जा सकते। यहां तक कि तिब्बत, चीन, जापान और उत्तर पूर्वी एशिया के भागों में संस्कृत भाषा के जरिए ही बौद्ध धर्म का प्रसार हुआ था।

संस्कृत यदि सम्प्रदाय-विशेष की जुबान होती तो इसके विद्वानों का अरब देशों में भव्य स्वागत नहीं होता। संस्कृत के ग्रंथों को अरबी में अनुदित नहीं किया जाता। चीन के सैकड़ों भिक्षु संस्कृत नहीं पढ़ते। बंगाल के मुसलमान आयुर्वेद का अध्ययन नहीं करते और न ही विदेशों से भारत आनेवाले यात्री संस्कृत भाषा के अनुसार अपना नाम बदलते। पढ़े-लिखे लोगों में भले ही संस्कृत की ग्रीक एवं लैटिन भाषाओं से तुलना करने की प्रवृत्ति पाई जाती है, परन्तु संस्कृत इन भाषाओं की तरह केवल महाकाव्यीय जुबान ही नहीं है। भारतीय समाज में एक ओर वेदों

एवं दूसरी ओर रामायण, महाभारत एवं पुराणों के द्वारा हमेशा अतीत, अनागत एवं वर्तमान में तालमेल बनाये रखा है। श्रुत और धर्म के नैतिक एवं दिव्य ताने-बाने से अपने आदर्शों को गढ़ा है। विभिन्न उपासना एवं पूजा-पद्धतियों के रहते हुए संस्कृत भाषा के माध्यम से समन्वय बनाये रखा है। प्रकृति, प्रत्यय और उपसर्गों से निष्पन्न संस्कृत भाषा का स्वरूप ही समन्वय का परिचायक है। ईश्वर को अलग-अलग नामों से पूजने एवं उसके सामने अपना सर्वस्व समर्पण कर देने के भाव संस्कृत स्तोत्र साहित्य में बहुतायत से मिल जायेंगे। भारतीय भाषाओं पर इसका काफी असर पड़ा है। प्रसिद्ध जैन साधु सहजानन्द वर्णी की 'जिन शिव ईश्वर ब्रह्मा राम, बुद्ध वीर हरि जिसके नाम' जैसी रचनाओं पर इस तरह के स्तोत्रसाहित्य का असर आसानी से देखा जा सकता है।

आधुनिक विद्वान् और राजनेता भले ही दक्षिण भारतीय भाषाओं को द्रविड़ परिवार के अन्तर्गत शामिल करते हुए उन्हें संस्कृत से अलग दिखाने की कोशिश करते हों, भाषाई अलगाव को चाहे जितनी हवा क्यों न दी जाती हो, परन्तु दक्षिण के पुराने लोगों को इस तरह का अलगाव कतई मन्जूर न था। 'तोलकप्पियम्' नामक तमिल के प्राचीन व्याकरण टीकाकार शिवज्ञान मुनिवर के अनुसार संस्कृत पढे बगैर तमिल का स्वरूप ठीक से नहीं समझा जा सकता है। पुराने संगम ग्रंथों की तमिल में संस्कृत भाषा के शब्द बहुतायत से मिलते हैं। तेलुगू का व्याकरण 'आंध्र शब्द चिंतामणि' संस्कृत ही में लिखा गया था। मलयालम की 'मणि-प्रवाल' शैली की रचनायें संस्कृत एवं मलयालम के मिले जुले रूप में लिखी गई हैं। यही शैली तमिल की भी वैष्णव धर्म रचनाओं में पाई जाती है।

दक्षिण भारत के लोगों ने संस्कृत वाङ्मय की समृद्धि में भरपूर योगदान दिया है। वेदों एवं उपनिषदों का मौजूदा स्वरूप दक्षिण भारत के लोगों की वजह से ही सुरक्षित रहा है। वेदों को समझने का एकमात्र आधार सायण-भाष्य भी दक्षिण की देन है। महाकवि भारवि, धर्मसूत्रों के रचयिता आपस्तंब एवं व्याकरण कात्यायन दक्षिण प्रांत ही के निवासी थे। संस्कृत वाङ्मय में दक्षिण को बहुत ऊंची निगाह से देखा गया है। काव्य में वैदर्भी रीति और नाटकों में दाक्षिणात्य प्रवृत्ति की काफी तारीफ की गई है। संस्कृत ग्रंथों को दक्षिण भारतीय भाषाओं में सुरक्षित रखा गया था। दण्डी के 'काव्यादर्श' के तमिल, कन्नड़ एवं सिंहली भाषाओं के संस्करणों का काफी प्रसार रहा है। पूरे भारत में धार्मिक चेतना का शंख फूंकने वाले चाहे कुमारिल भट्ट हों या शंकर, रामानुज हों या आनन्दतीर्थ, वल्लभाचार्य हों या निम्बार्क-दक्षिण भारत की धरती पर अवतरित हुए थे।

आजादी के आंदोलन के कर्णधारों को भारतीय समाज के लिए संस्कृत का महत्त्व अच्छी तरह मालूम था। कांग्रेस में पश्चिमी विचारधारा से प्रभावित लोग महर्षि अरविंद, लोकमान्य तिलक एवं महात्मा गांधी की 'भगवद्गीता' की व्याख्याओं का असर नहीं नकार सकते थे। गांधी जी तो हमेशा भगवद्गीता को अपना आदर्श मानते थे। वे हर हिन्दू के लिए संस्कृत पढ़ना लाजिमी मानते थे। उसके अनुसार अनुवाद मूल संस्कृत का स्थान कभी भी नहीं ले सकता है। वे गायत्री मन्त्र या ईशावास्योपनिषद् के मन्त्रों का किसी अन्य भाषा में अनुवाद असम्भव मानते थे।

भाखड़ा नांगल जैसे बांधों को मन्दिरों की संज्ञा देनेवाले जवाहरलाल नेहरू भी हिन्दुस्तान में संस्कृत के महत्त्व को अस्वीकार नहीं कर सकते थे। उनका कहना था 'यदि मुझ से पूछा जाये कि भारत का सब से बड़ा खजाना क्या है, उसकी कौन-सी सबसे उम्दा विरासत है, तो मेरा बेहिचक जवाब होगा—संस्कृत भाषा, उसका साहित्य और वह सब कुछ जो इसमें शामिल है। जब तक यह विरासत जीवित है और भारत के लोगों को प्रभावित करती है तब तक भारत की आत्मा जीवित है।'

उम्मीद करनी चाहिए कि मौजूदा सरकार भारत की आत्मा को नष्ट नहीं होने देगी। उसे देर-सबेर आजादी के उन सेनानियों की याद आएगी, जिन्होंने भारत की आजादी के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया था। फिलहाल उन लोगों की स्मृति धुंधली पड़ सकती है, परन्तु देश की मौजूदा समस्याओं का हल भी आजादी की लड़ाई में उठाये गये मुद्दों को नकार कर नहीं ढूंढा जा सकता। भाषा विवाद के नाम पर स्कूलों कालेजों में अंग्रेजी का वर्चस्व बनाये रखना कहां तक जायज है? इसी तरह आधुनिकता के नाम पर पश्चिमी शास्त्रों की पढाई का क्या औचित्य है? तथाकथित आधुनिकता एवं पश्चिमी विचारों की कलई अब काफी खुल चुकी है। लूट एवं शोषण के इस तन्त्र ने एशियाई, अफ्रीकी एवं लेटिन अमेरिकी देशों में कहर बरपाया है। इस तन्त्र से मुक्ति पाकर ही हिन्दुस्तान सही मायने में आजाद हो सकता है।

मौजूदा लोकसभा अध्यक्ष बलराम जाखड़ ने हाल ही में राजस्थान संस्कृत अकादमी के वार्षिक सम्मेलन में बोलते हुए देश की एकता और अखण्डता के लिए प्रत्येक छात्र को अनिवार्य रूप से संस्कृत पढने की सलाह दी थी। भारत की आत्मा के लिए न सही, इसकी एकता और अखण्डता के लिए ही सरकार को संस्कृत के प्रति अपना रवैया बदलना चाहिए। आखिर इसी नारे के सहारे ही वह सत्ता में आई है।

(जनसत्ता १०-७-८७ से साभार)

आर्यसमाज और आर्य संस्थाओं के अधिकारियों से निवेदन

वर्तमान युग में राष्ट्र एवं समाज की बदलती परिस्थितियों में भारतीय (वैदिक) संस्कृति की रक्षा के लिए यह आवश्यक है कि नवयुवकों को पथ-भ्रष्ट होने से बचाकर धर्म एवं राष्ट्र-रक्षा हेतु प्रेरित करें। ब्राह्म एवं क्षात्र बल के प्रशिक्षण हेतु एवं आर्यसमाज में नया रक्त लाने के लिए समाज की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में स्वामी श्रद्धानन्द एवं महात्मा हंसराज जैसे त्यागी तपस्वियों द्वारा संस्थापित सार्वदेशिक आर्य वीरदल कार्यरत है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने भी नवयुवकों को वैदिकधर्म में दीक्षित करने और आर्यसमाज की सेवा करने के लिए आर्य वीरदल हरयाणा के सहयोग का निर्णय किया है। इसके लिये सभा की ओर से प्रा० धर्मदेव विद्यार्थी को आर्य वीरदल का प्रांतीय अधिष्ठाता बनाया गया है। सभा इस परिपत्र द्वारा सभी आर्य शिक्षण संस्थाओं के प्रधानाचार्यों और आर्यसमाज के अधिकारियों को निर्देश देती है कि अपनी संस्थाओं में आर्य वीरदल की शाखा का गठन करें तथा इस कार्य में श्री धर्मदेव विद्यार्थी अधिष्ठाता, श्री उमेदसिंह संचालक और श्री वेदप्रकाश मन्त्री आदि अधिकारियों का पूर्ण सहयोग कर, प्रदेशभर में आर्य वीरदल के रूप में एक वैदिक संस्कारों से ओतप्रोत युवा संगठन के निर्माण में सहयोग देवें।

निवेदक

स्वामी ओमानन्द सरस्वती — प्रो० शेरसिंह

प्रवेश सूचना

आर्य हिन्दी संस्कृत महाविद्यालय चरखी दादरी (भिवानी) जो महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बन्धित है, ३७ वर्ष से हिन्दी एवं संस्कृत की लगातार सेवा कर रहा है, में हिन्दी की प्रभाकर एवं संस्कृत की विशारद व शास्त्री कक्षाओं का प्रवेश १ जुलाई, १९८७ से प्रारम्भ है।

१—छात्र/छात्राओं को अलग-अलग पढाया जाता है।
२—छात्राओं के लिये छात्रावास का पूर्ण प्रबन्ध है।

भवदीय—ऋषिपाल आर्य
आचार्य आर्य हिन्दी महाविद्यालय चरखी दादरी (भिवानी)

शराब मानव-समाज की शत्रु है
इससे अवश्य बचें।

दौलताबाद (गुडगांव) का योग शिविर सम्पन्न

२० से २८ जून तक ब्रह्मचर्य योग प्रशिक्षण शिविर गांव दौलताबाद में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के महोपदेशक श्री महेन्द्र शास्त्री के संचालन में लगाया गया। व्यायामाचार्य बलवान्सिंह योगी ने नौजवानों को सफल प्रशिक्षण दिया। शिविर में लगभग ४० युवकों ने भाग लिया। लगातार ८ दिन तक श्री महेन्द्र शास्त्री, श्री ईश्वरचन्द्र शास्त्री एवं हरिश्चन्द्र शास्त्री, स्वामी प्रेमानन्द जी ने अपने भाषणों में आर्यसमाज के सिद्धांतों से नौजवानों को जानकारी देकर गिरती हुई परिस्थिति में सजग किया तथा पं० ईश्वरसिंह तूफान ने ३ दिन लगातार गांव में कथा के द्वारा आर्यसमाज का प्रचार किया। चौ० धर्मवीरसिंह सरपच ने रात दिन एक करके आर्थिक मदद व हर प्रकार के प्रबन्ध में बढ़-चढ़कर भाग लिया। इस कार्यक्रम में विशेषकर सारे गांव ने सभी प्रकार से मदद की।

२८ जून को प्रातः जब हवन पर स्वामी ओमानन्द जी महाराज का शुभ आगमन हुआ तो कार्यक्रम में चार चांद लग गये। उसी समय स्वामी जी महाराज का विद्वत्तापूर्ण भाषण हुआ। इसके बाद पूज्य स्वामी जी की अध्यक्षता में ६-३० बजे अन्तिम कार्यवाही प्रारम्भ हुई। सबसे प्रथम प० ईश्वरसिंह तूफान ने भजनों के माध्यम से सुन्दर कार्यक्रम पेश किया। उनके बाद मुख्यवक्ता के रूप में पं० रणवीर जी शास्त्री का ओजस्वी भाषण हुआ। उसके अनन्तर नौजवानों का कार्यक्रम दिखाया गया। उसके बाद आर्यसमाज के मूर्धन्य सन्यासी व कर्मयोगी स्वामी ओमानन्द जी महाराज का युवकों के नाम उद्बोधन हुआ। बाद मे ब्र० विजयपाल जी आचार्य गुरुकुल झज्जर ने अपनी शक्ति का प्रदर्शन करके गांववालों की हजारों की भीड़ को आश्चर्य में डाल दिया। अन्त में महेन्द्र शास्त्री ने बाहर से आये विद्वानों और गांववालों का धन्यवाद किया।

संयोजक—खजानसिंह अध्यापक

सम्पादक के नाम पत्र

सर्वहितकारी २८ जून का अंक ३० का लेख "धृवेन द्यावापृथिवी पूर्येथाम्" यशपाल आर्यबन्धु द्वारा लिखित लेख को पढ़ा, बहुत ही अच्छा लगा। इस लेख द्वारा समस्त आर्यजगत् को यज्ञ करने की बहुत प्रेरणा मिलती है। अगर इस तरह के लेख हर बार अंक में छपते रहे तो इससे समस्त आर्य पुरुषों को बहुत ही लाभ होगा। लेकिन ऐसे प्रभावशाली लेख कभी-कभी ही पढ़ने को मिल पाते हैं। इस लेख को लिखने के लिये "यशपाल आर्यबन्धु" को बहुत-बहुत धन्यवाद। जिसने इतना सुन्दर लेख देकर समस्त आर्यों को प्रभावित किया।

—शिवचरणदास आर्य
मेम्बर आर्यसमाज बराड़ा (अम्बाला)

शिविर सम्पन्न

महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल कृष्णपुर (फरुखाबाद) के प्रांगण में ७ जून से १६ जून, ८७ तक सार्वदेशिक आर्य वीरदल प्रशिक्षण शिविर का अति हर्षोल्लास के साथ समायोजन किया गया।

शिविर काल में श्री ब्र० सुरेन्द्रसिंह जी आर्य 'आजाद' द्वारा आर्यवीरों को अनुशासित रहने की शिक्षा एवं योगासन, प्राणायाम तथा शारीरिक व्यायामादि का शिक्षण प्रदान किया गया। शिविर में ४० आर्यवीरों ने वैदिकधर्म, संस्कृति इतिहास की रक्षा तथा दल की परिमार्यों का प्राणपण से परिपालन करने का दृढ़-सकल्प लिया।

श्री बालदिवाकर जी हंस प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्य वीरदल दिल्ली तथा श्री डा० बालकृष्ण जी आर्य प्रांतीय संचालक सार्वदेशिक आर्य वीरदल बिन्दकी (फतेहपुर) के आशीर्वादात्मक सुमधुर वचनों द्वारा शिविर का समापन किया गया।

सार्वदेशिक आर्य वीरदल का शिक्षण शिविर सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य वीरदल द्वारा ११ से २५ जून तक उपप्रधान संचालक डा० देवव्रत आचार्य की अध्यक्षता में उप-व्यायाम शिक्षक (द्वितीय श्रेणी) का शिविर लगाया गया। जिसमें विभिन्न प्रांतों से १० आर्यवीर १५ दिन तक शारीरिक एव बौद्धिक प्रशिक्षण प्राप्त करते रहे।

शिविर का दीक्षांत समारोह २५ जून को धूमधाम से मनाया गया। प्रातःकाल दीक्षा एवं शपथ समारोह का कार्यक्रम प्रधान संचालक श्री पं० बालदिवाकर जी हंस की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। व्यायाम सम्मेलन की अध्यक्षता उपमण्डल अधिकारी झज्जर ने की। इसी भांति मध्याह्न में पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र वितरण तथा दीक्षांत भाषण सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए। उन्होंने कहा कि यदि आर्यसमाज को बचाना है तो प्रत्येक ग्राम नगर में आर्य वीरदल की स्थापना करनी आवश्यक है। सार्वदेशिक सभा आर्य वीरदल को पूर्ण सहयोग देती रहेगी।

श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने भी युवकों को शारीरिक, बौद्धिक एव आत्मिक उन्नति करके महर्षि स्वामी दयानन्द जी के सन्देश को जन-जन तक पहुंचाने का आह्वान किया। श्री उमेद शर्मा संचालक आर्य वीरदल हरयाणा एव श्री धर्मदेव विद्यार्थी अधिष्ठाता, श्री स्वामी रत्नदेव जी ने भी देश की वर्तमान स्थिति में आर्यवीरों का क्या कर्त्तव्य है, यह बतलाते हुए आर्यवीरों को अज्ञान, अन्याय, अभाव के विरुद्ध संघर्ष करने के संकल्प को दोहराया। इस शिविर में हरयाणा प्रांत के ४, राजस्थान के ४, उत्तरप्रदेश के ६, महाराष्ट्र के ३, गुजरात के २, दिल्ली के २, गुरुकुल झज्जर का १। कुल २२ आर्यवीरों को उप-व्यायाम शिक्षक की उपाधि से विभूषित किया गया। शिविर को सफल बनाने के लिए आचार्य विजयपाल जी प्रधानाध्यापक गुरुकुल झज्जर, श्री प्रदीपकुमार जी शास्त्री तथा अन्य गुरुकुल के कर्मचारियों ने पूर्ण सहयोग किया।

—रामदेव शास्त्री गुरुकुल झज्जर

शराब का ठेका न उठाया तो आंदोलन तेज होगा

कुरुक्षेत्र, ११ जुलाई (कृष्ण धमीजा): जिला कुरुक्षेत्र के मोर सैयदां गांव में महिला सांस्कृतिक संघ के नेतृत्व में प्रथम अप्रैल, ८७ से चल रहे शराब के ठेके के विरोध में धरना अभी भी जारी है। यह जानकारी देते हुए संघ की एक प्रवक्ता कु० सुदेश कुमारी ने एक प्रेस बयान में बताया कि १७ जून के बाद सरकार द्वारा ठेके की दुकान पर धरने वाले खुलवा देने से महिला संघ में गहरा रोष पाया जारहा है। संघ ने कहा है कि उन्हें पुलिस की ओर से धमकी दी गई है कि यदि धरना न उठाया गया तो बुरा होगा। कु० सुदेश ने अपने बयान में सरकार को चेतावनी दी है कि यदि ठेका न उठाया गया तो आंदोलन तेज कर दिया जायेगा तथा झूठे वायदे करनेवाली सरकार को बेनकाब किया जायेगा। कु० सुदेश ने कहा कि एक विधायक ने चुनावों से पूर्व ठेका हटाने का वायदा भी किया था और दो-तीन बार धरने पर भी वह विधायक बैठा था, परन्तु चुनाव जीतने के बाद अब वह विधायक चुप क्यों बैठा है।

(पंजाब केसरी १२-७-८७)

छोटा नागपुर आर्यसमाज रांची का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री पं० जयमंगल शर्मा रांची, उपप्रधान—रामेश्वरप्रसाद जायसवाल हजारी बाग, वीरेन्द्रकुमार शर्मा गुर्मा, मन्त्री—दयाराम पोद्दार रांची, सहमन्त्री—रामकुमार शर्मा जमशेदपुर, पं० गोविन्दप्रसाद आर्य 'विद्यावारिधि' रांची, कोषाध्यक्ष—शोभाराम सैनी रांची।

आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं से आवश्यक निवेदन

हरयाणा में शराब के प्रचार का विस्तार हो रहा है, जिससे किसान मजदूर इस बुराई में फंसकर बर्बाद हो रहे हैं। सभा की ओर से प्रतिवर्ष ग्राम पंचायतों को प्रेरणा करके शराबबन्दी प्रस्ताव करवाकर सितम्बर मास तक हरयाणा सरकार को भिजवाये जाते हैं। जिन पंचायतों के प्रस्ताव समय पर सरकार को पहुंच जाते हैं, पंचायत एक्ट के अनुसार वहां आगामी वर्ष ठेका नहीं उठाया जा सकता।

अतः आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं तथा अधिकारियों से निवेदन है कि वे अपने-अपने क्षेत्र की पंचायतों को प्रेरणा करके सितम्बर मास तक प्रस्ताव पास करवाकर सरकार को भिजवाने का पूरा प्रयत्न करें। आपके योगदान से अनेक ग्रामों में शराब के ठेके बन्द हो सकते हैं। प्रस्ताव का प्रारूप निम्नलिखित है—

नशाबन्दी प्रस्ताव

माननीय मुख्यमन्त्री जी,
हरयाणा चण्डीगढ़।

हमारे ग्राम············जिला·················पंचायत ने अपनी बैठक दिनांक में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया है—

"यह ग्रामसभा (पंचायत) शराब पीने की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को ग्राम्य जीवन के लिए बहुत घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। गांव में अनाचार, अशांति और अपराध फैलते हैं। धन का भी भारी विनाश होता है। ऐसी अवस्था में हरयाणा सरकार की शराबबन्दी नीति का स्वागत करते हुए यह पंचायत मांग करती है कि हमारे क्षेत्र में चालू शराब की दुकान तुरन्त बन्द करदी जावे और भविष्य में कदापि यहां शराब का ठेका खोलने की अनुमति न दी जाये, ताकि उक्त बुराइयों से ग्राम्य जीवन की रक्षा हो सके।"

आशा है आप पंचायत की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यहां की शराब की दूकान को बन्द करने के लिए आवश्यक पग शीघ्र उठाने की कृपा करेंगे।

सरपंच तथा पंचों के हस्ताक्षर

इस प्रस्ताव की प्रतिलिपियां—

१. प्रधानमन्त्री, भारत सरकार, नई दिल्ली।
२. मन्त्री आबकारी एवं कराधान हरयाणा, चण्डीगढ़।
३. आबकारी एवं कराधान आयुक्त हरयाणा, चण्डीगढ़।
४. उप आबकारी एवं कराधान आयुक्त जिला······
५ जिलाधीश··········
६. मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक के पते पर सितम्बर मास तक रजिस्ट्री डाक द्वारा भेजने का कष्ट करें।

सभामन्त्री

शराबबन्दी आंदोलन में सहयोग करें

पिछले तीन वर्षों से आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा और उसके प्रधान के नाते मैं स्वयं तथा मेरे साथी शराबबन्दी के अभियान में लग रहे हैं। इस आंदोलन को चलाने के लिए अनेक शराब के ठेकों पर धरने भी लगाने पड़े और वे सभी सफल हुए। इस आंदोलन के फलस्वरूप ५० से अधिक ठेके बन्द हुए।

हम यह अनुभव करते हैं कि किसान मजदूर और दूसरे कमाऊ लोग शराब की लत के कारण अपना ही सर्वनाश करने पर तुले हुए हैं। हमारे अभियान से एक नई चेतना युवकों, महिलाओं और सभी लोगों में आई है और वे इस आफत से छुटकारा चाहते हैं। जुलाई, अगस्त और सितम्बर के महीनों में हम इस अभियान को पूरे हरयाणा में चलाना चाहते हैं और हरयाणा की पवित्र भूमि को इस दुर्व्यसन से मुक्त करवाना चाहते हैं। मैं आशा करता हूं कि इस आंदोलन में हमें आपका हर प्रकार का सहयोग मिलेगा। कार्यक्रम की सूचना हम ठीक समय पर आपको भेज देंगे। —प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

वर्षाऋतु में वेदप्रचार सप्ताह मनावें

आर्यसमाजों में प्रतिवर्ष वर्षाऋतु में (जुलाई, अगस्त तथा सितम्बर तक) वेदप्रचार सप्ताह धूमधाम से मनाया जाता है। अतः हरयाणा के आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वे अपनी सुविधा के अनुसार वेदप्रचार सप्ताह की तिथियां निश्चित करके सभा को सूचित करें, ताकि सभा की ओर से उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों का कार्यक्रम बनाया जा सके। श्रावणी उपाकर्म के दिनों में सभी आर्यसमाजों की मांग पर प्रबन्ध कर सकना कठिन होगा। अतः जुलाई से सितम्बर तक हरयाणा में निरन्तर वेदप्रचार सप्ताह का आयोजन किया जायेगा। जिन आर्यसमाजों की मांग पहले आयेगी, उन आर्यसमाजों का प्रबन्ध पहले किया जायेगा।

—रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता

पुस्तक-समीक्षा

क्या हमने कभी सोचा है ?

लेखक—बिशनस्वरूप गोयल

प्राप्ति स्थान—वैचारिक विकल्प प्रकाशन
३३१४, बैंक स्ट्रीट, करोलबाग, नई दिल्ली

आकार—२०×३०/१६ पृष्ठ १०० मूल्य १० रुपये

श्री बिशनस्वरूप गोयल ने इस पुस्तक में निम्नलिखित ६ विषयों पर विचार किया है—

१. धर्म और मजहब में क्या अन्तर है ?
२. ईश्वर और भगवान् में क्या अन्तर है ?
३. नेता और शासक में क्या अन्तर है ?
४. कार्यपालिका और न्यायपालिका के संघर्ष में पिसता हमारा संविधान।
५. क्या संविधान को पुन. बनाने की आवश्यकता है ?
६. हिन्दुओ अब तो चेतो !

गोयल जी ने धर्म और मजहब का अन्तर बहुत ही प्रभावशाली ढंग से युक्तिप्रमाणपूर्वक प्रतिपादित किया है। अंग्रेजों ने 'रिलीजन' शब्द का अर्थ 'धर्म' करके बड़ी कूटनीति चलाई है और यही भारतीयों को परस्पर धर्म के नाम पर लड़ाने का कारण बनी। हमारी राजनीति अथवा हमारा संविधान धर्म-निरपेक्ष तो हो ही नहीं सकता। इसे मजहब या सम्प्रदाय निरपेक्ष कहना चाहिये।

मजहब मानवजाति को तोड़ता है और धर्म मानवजाति को जोड़ता है। उर्दू के शायर इकबाल ने सभी बुद्धि-जीवियों को गुमराह कर दिया है और हम मजहबी दंगों और गणतन्त्र दिवस सदृश राष्ट्रीय पर्वों पर बड़े गर्व से गाते हैं—

"मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना" गोयल जी ने अपनी पुस्तक के पृष्ठ ७ पर सिद्ध किया है कि—

"मजहब ही सिखाता है आपस में बैर रखना"

हमारा सुझाव है कि प्रत्येक विचारशील बुद्धिजीवी देशभक्त भारतीय स्त्री-पुरुष इस पुस्तक को पढ़े और विचार करे।

—वेदव्रत शास्त्री

राजार्य सभा

यदि आर्यों की राज्य सभा होती तो हरयाणा में "आर्य राज्य" होता। आर्य सभी राजनीतिक दलों में बटे हैं। उन्हें एक सूत्र में बंधना चाहिये। एक ही राजार्य सभा हो, वही चुनाव लड़े। फिर वही अन्य दलों से सन्धिविग्रह करे।

—वीरेन्द्र मुनि आचार्य
अध्यक्ष विश्व वेद परिषद् वेदभवन
सी-८१७ महानगर, लखनऊ-२२६००६

आर्य पुरोहित की आवश्यकता

आर्यसमाज नथवा जि० हिसार के लिए एक पुरोहित की आवश्यकता है। वैदिक संस्कार तथा सत्संग कराने में दक्ष होना चाहिए। इच्छुक महानुभाव प० अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी से सम्पर्क करें अथवा पत्र-व्यवहार करें।

—पुष्करलाल आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस,
रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत-सरकार-द्वारा रजि० नं० 23207/73 रजि० न० P/RTK 49

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र



सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री

सह-सम्पादक—डा० [illegible]

वर्ष १४, अङ्क ३३ २१ जुलाई, १९८७ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

दर्शनों का परिचय—

उद्देश्य और विशेषता (२)

(पं० धर्मदेव "मनीषी" दर्शनाचार्य, गुरुकुल कालवा)

मीमांसा दर्शन का परिचय

मीमांसा दर्शन के प्रवर्तक महर्षि जैमिनि हैं। इस ग्रन्थ में बारह अध्याय हैं, जिसमें साठ पाद हैं। सूत्रों की संख्या २७३१ है। इस प्रकार आकार में यह दर्शन सबसे बड़ा है। अन्य पांचों दर्शन एक ओर और अकेला मीमांसा एक ओर होने पर भी मीमांसा दर्शन का पलड़ा भारी है।

मीमांसा दर्शन का उद्देश्य

पुरुषार्थैकसिद्धत्वात्तस्य तस्याधिकारः स्यात्॥ ६।२।१

मनुष्य का उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चार फलों की सिद्धि है। इसके लिये प्रत्येक वर्णवाले को अपने-अपने अधिकारानुसार प्रयत्न करना चाहिये।

मीमांसा दर्शन का जिज्ञास्य विषय धर्म है। धर्म का ज्ञान वेदाध्ययन से होता है, क्योंकि धर्म के विषय में केवल वेद ही प्रमाण है। धर्म अथवा वेदार्थ विषय विचार को मीमांसा कहते हैं। इस दर्शन में यज्ञों की दार्शनिक दृष्टि से व्याख्या की गई है। कुछ लोगों का विचार है कि मीमांसा में यज्ञों में पशुहिंसा का उल्लेख है, परन्तु यह धारणा सर्वथा भ्रांत है। मीमांसा में पशुओं का वध नहीं, पशुओं के दान का उल्लेख है। मीमांसा वेद को सर्वोपरि मानता है। जब वेद में मांस-भक्षण और पशु-हिंसा का निषेध है तब महर्षि जैमिनि उसका समर्थन कैसे कर सकते थे।

वेदांत दर्शन का परिचय

वेदांत दर्शन के प्रवर्त्तक महर्षि व्यास हैं। इस दर्शन में चार अध्याय हैं। प्रत्येक अध्याय में चार-चार पाद हैं। सूत्रों की संख्या ५५५ है। इस दर्शन का उद्देश्य वेद के परम तात्पर्य परमात्मा के बतलाने में है। ब्रह्म के साक्षात्कार से ही स्थिर शांति और परम आनन्द मोक्ष की प्राप्ति होती है। वेदांत शब्द का अर्थ है—"वेदस्य अन्तः अन्तिमो भाग इति वेदांतः" वेद के अन्तिम भाग (उपनिषदों) का नाम वेदांत है। उपनिषद् ही वेद के अन्तिम सिद्धांत को खोलती है। इसलिये वेदांत दर्शन भारतीय अध्यात्म शास्त्र का मुकुटमणि माना जाता है। उपनिषदों के ज्ञान को व्यवस्था में लाने के लिये ही इस दर्शन का निर्माण हुआ है।

वेदांत दर्शन का उद्देश्य

शमदमाद्युपेतः स्यात्तथापि तु तद्विधेस्तदङ्गतया तेषामवश्यानुष्ठेयत्वात्॥ ३।४।२७

चाहे विद्यादि शमदमादि साधन सम्पन्न भी हो तो भी उन यज्ञादि का विधान विद्यार्थी की विद्या का अंग होने से उन यज्ञ दान तप के अवश्य अनुष्ठान करने योग्य होने से।

कैसा स्पष्ट कर्म का विधान है कि चाहे विद्यार्थी शमदमादि साधन सम्पन्न भी हो तो भी वेद की आज्ञा यही है कि सब कोई कर्म का अनुष्ठान अवश्य करें। अत एव यज्ञादि कर्म विद्या के अंग हैं।

संपद्याविर्भावः स्वेन शब्दात्॥ ४।४।१

ब्रह्म को पाकर अपने स्वरूप से प्रकट होना है, क्योंकि स्वेन—अपने स्वरूप से, इस शब्द से।

"परं ज्योतिरुपसंपद्य स्वेन रूपेणाभिनिष्पद्यते।" इस वचन में कहा है कि परम ज्योतिः—परमात्मा के पास जाकर अपने स्वरूप से सम्पन्न हो जाता है, इसमें स्वेन—अपने स्वरूप से यह स्वेन शब्द है। इससे पाया जाता है कि मुक्ति में जीवात्मा के स्वरूप का ब्रह्म में लय नहीं हो जाता, प्रत्युत उसका शुद्ध चिन्मात्र स्वरूप बना रहता है। हां अन्य देह अन्तःकरण आदि के बन्धन छूट जाते हैं।

ब्राह्मेण जैमिनिरुपन्यासादिभ्यः॥ ४।४।५

जैमिनि मुनि कहते हैं कि ब्रह्म सम्बन्धी आनन्द से आनन्दित होता है, क्योंकि शास्त्रों में ऐसे उपन्यासादि पाये जाते हैं।

सत्यकामः सत्यसंकल्पः॥ छांदोग्य० ८।७।१

स तत्र पर्येति जक्षन् क्रीडन् रममाणः॥ ८।१२।३

तस्य सर्वेषु लोकेषु कामाचारो भवति॥ ७।२५

मुक्त पुरुष को सत्यकाम, सत्यसंकल्पादि ब्रह्मानन्द मिलता है। मुक्ति में आनन्द का भोग और क्रीडा है। मुक्ति में सर्वत्र अव्याहत गति है।

बस जैसे ब्रह्म आत्मक्रीडा, आत्मरति, अव्याहत गति है वैसे जीव को भी ब्रह्मप्राप्ति से ये ऐश्वर्य प्राप्त होते हैं।

भारतीय दर्शनों की विशेषता

भारतीय दर्शनों की सबसे बड़ी विशेषता उनका व्यावहारिक पक्ष है। उनका उद्देश्य है—नाना प्रकार के दुःखों से पीड़ित मनुष्यों को राग द्वेष और अविद्या से छुड़ाकर मोक्ष की प्राप्ति करा देना।

भारतीय दर्शन की दूसरी विशेषता है—आशावाद। दुःखमय वर्तमान से असन्तोष हुए बिना सुखमय भविष्य की कल्पना दुराशामात्र ही है। इस जगत् पर दृष्टिपात करने पर विवेकीजन इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि यह संसार नितांत दुःखमय है। इस दुःख का कारण द्रष्टा और दृश्य का संयोग है, इस दुःख को दूर करना है और दुःख को दूर करने के लिये मार्ग खोजना है। इस प्रकार भारतीय दर्शन वर्तमान दशा से असन्तोष प्रकट कर उसके सुधारने का प्रयत्न करता है।

भारतीय दर्शन की तीसरी विशेषता है—नैतिक व्यवस्था में विश्वास। मनुष्य जो कर्म करता है उनका लोप नहीं होता, अपितु उन कर्मों से एक 'अपूर्व' की सृष्टि होती है। यही अपूर्व फलोत्पत्ति का प्रधान कारण है। न्याय-वैशेषिक में इसी 'अपूर्व' को अदृष्ट की संज्ञा दी है।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्य शिक्षण संस्थाओं का परिचय

श्री महाशय मनसाराम त्यागी ने अपनी १४ एकड़ भूमि कन्या गुरुकुल पंचगांव बनाने के लिये दान दी। आप पंचगांव ग्राम के निवासी थे। आप आर्य प्रचारक भी थे। भजनों के द्वारा प्रचार किया करते थे।

आपके साथी चौ० महताबसिंह जी पंचगांव निवासी तथा श्री मंगलाराम जी पटेल डालवास निवासी थे। तीनों ही मिलकर कार्य करते थे। तीनों ही जेलों में भी साथ रहे।

आप तीनों का सम्पर्क आचार्य भगवान्देव (वर्तमान स्वामी ओमानन्द जी) से हुआ। उनके सम्पर्क में आने से आपके विचारों में परिवर्तन आया तथा कन्याओं की शिक्षा की तरफ ध्यान गया। इन्हीं विचारों में ओतप्रोत होकर म० मनसाराम जी त्यागी ने अपनी सम्पूर्ण भूमि कन्याओं की शिक्षा के लिये दान करदी।

पुन एक कमेटी बनाकर कन्या गुरुकुल खोलने का निश्चय कर लिया। पूर्व कुछ छप्पर के मकान बनाकर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को पत्र लिखा कि कन्या गुरुकुल का संचालन करने के लिये भरतसिंह शास्त्री सि० भू० को भेज दे।

सभा ने इनकी प्रार्थना पर भरतसिंह शास्त्री सि० भू० को गुरुकुल भेज दिया। आपने अगस्त १९४८ ई० में यहां पर पहुंच कर गुरुकुल संचालन के लिये प्रयत्न किया। एक अध्यापिका को लाकर तथा ब्रह्मचारिणियों का प्रवेश कर पढाई प्रारम्भ करदी। गुरुकुल सुचारु रूप से चलने लगा। उस समय यह प्रदेश केवल वर्षा पर ही निर्भर था। दुर्भिक्ष पड़ते रहते थे। धन आने का कोई विशेष स्रोत न था। इसी बात को विचार कर शास्त्री जी ने यह गुरुकुल आर्य प्रतिनिधि सभा को सौंपने का निश्चय किया और आर्य प्रतिनिधि सभा से लिखा-पढ़ी की। सभा उस समय साठ हजार रुपये देने के लिये तैयार होगई। गुरुकुल की रजिस्ट्री सभा के नाम कराने को लिखा, परन्तु गुरुकुल की कमेटी इसके लिये तैयार न हुई। गुरुकुल की आर्थिक अवस्था भी कुछ न थी। इसी विरोधस्वरूप आप १९५५ ई० में गुरुकुल छोड़कर चले गये और गुरुकुल बन्द होगया।

गुरुकुल के बन्द होने का आर्य लोगों के हृदय में दुःख था। पुनः मंगलराम पटेल आदि ने प्रदेश के प्रमुख लोगों की एक बैठक फरवरी १९७८ ई० को बाढड़ा में की। इसमें गुरुकुल को पुनः चलाने का निश्चय किया।

जुलाई १९७८ से पढ़ाई प्रारम्भ करदी। उधर सदस्य बनाकर वैदिक शिक्षा समिति बनाकर उसे सरकार से पंजीकृत कराया गया। प्रभु की कृपा से तथा श्री हरिश्चन्द्र जी आर्य बेराणवासी की प्रेरणा से सेठ बनवारीलाल जी आर्य देवराला भी सदस्य बने। वैदिक शिक्षा समिति के अधिकारी तथा अन्तरग सदस्य निम्न बनाकर पंजीकृत कराया—

१. श्री सेठ बनवारीलाल आर्य देवराला प्रधान
२. „ सुमेरसिंह डालावास उपप्रधान
३. „ हरिसिंह प्रभाकर गोपी मन्त्री
४. „ जयलालसिंह मास्टर पंचगांव कोषाध्यक्ष
५. „ मुलतानसिंह आर्य काकड़ौली सरदारा पुस्तकाध्यक्ष
६. „ सावित्री देवी एडवोकेट उमरवास अन्तरग सदस्य
७. „ सूबेसिंह सन्त चांदवास „
८. „ मंगलाराम पटेल डालावास „
९. „ हरिश्चन्द्र बेराण „
१०. „ धर्मपाल शास्त्री धांधवा „
११. „ दरियावसिंह एडवोकेट गोपी „
१२. „ मा. लच्छीराम बाढ़ड़ा „
१३. „ कर्णसिंह हंसावास कलां „
१४. „ सूरजभान रुदड़ोल „
१५. „ गोरुराम बाढ़ड़ा „
१६. „ धर्मरक्षपाल चांदवास „
१७. „ नानकचन्द सावरपुर „

यह गुरुकुल गांवों से दूर रमणीक स्थान पर बसा हुआ है। गुरुकुल का अपना कुआ है, जिसमें मोटर लगी हुई है। जिसके द्वारा अपने फव्वारों के द्वारा कृषि की सिंचाई होती है तथा पीने स्नान आदि का उत्तम प्रबन्ध है।

इसके अतिरिक्त आटा पीसने की चक्की तथा गौवों के लिये चारा काटने की मशीन लगी हुई है।

इस समय गुरुकुल में ८० ब्रह्मचारिणी विद्या अध्ययन कर रही है। जिनका छात्रावास में उत्तम प्रबन्ध है।

ब्रह्मचारिणियों के संरक्षकों से केवल ५०) रुपये मासिक भोजन शुल्क लिया जाता है। शेष सब व्यय गुरुकुल ही करता है। शिक्षा निःशुल्क दी जाती है।

इस समय तीन अध्यापिकायें कार्य कर रही हैं—

१—श्री किताबो देवी एम० ए०, बी० एड०

२—श्री शकुन्तला आर्या स्नातिका कन्या गुरुकुल नरेला शास्त्री, आचार्य तथा एम० ए०।

३—श्री प्रभावती मैट्रिक प्रभाकर तथा शास्त्री।

ये तीनों मिलकर गुरुकुल का सचालन ठीक प्रकार से कर रही हैं। नये सत्र से अन्य अध्यापिकायें रखने का प्रयत्न है।

भरतसिंह शास्त्री कमेटी की प्रार्थना पर गुरुकुल में अधिष्ठाता के रूप में आगये हैं। गुरुकुल का सारा प्रबन्ध सुचारु रूप से चलने लगा है।

श्री नानकचन्द जी कुलपति गुरुकुल के प्रबन्ध में प्रारम्भ से पूर्ण मनोयोग से कार्य कर रहे हैं। अब अधिक समय गुरुकुल के लिये देने का निश्चय किया है।

अधिष्ठाता—वैदिक शिक्षा समिति
कन्या गुरुकुल विद्यापीठ पंचगांव (भिवानी)

हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन

सभा के मुख-पत्र सर्वहितकारी के गतांकों में हरयाणा के आर्यसमाजों से वेदप्रचार सप्ताहों का आयोजन करने तथा अपने क्षेत्र की ग्रामीण पंचायतों को प्रेरणा करके शराबबन्दी प्रस्ताव करवाकर सितम्बर मास तक हरयाणा सरकार को भिजवाने का अनुरोध किया जारहा है, परन्तु आर्यसमाजों के अधिकारियों ने अभी तक इस महत्त्वपूर्ण कार्य की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना तथा सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।" आर्यसमाज के नियम का हमें पालन करने का पूर्ण प्रयत्न करना चाहिए। वर्षा ऋतु में वेदों का स्वाध्याय करने का शुभावसर होता है। अत: आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि अपनी सुविधा के अनुसार वेदप्रचार सप्ताह की तिथियां निश्चित करके सभा को शीघ्र ही सूचित करें, ताकि सभा की ओर से उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों के कार्यक्रम बनाकर आपके यहां वेदप्रचारार्थ भेज सकें। इस समय सभा के वेदप्रचार विभाग में पं० सुखदेव शास्त्री, पं. सुरेशकुमार शास्त्री, ब्र. महेन्द्र शास्त्री, पं० हरिश्चन्द्र शास्त्री, पं० ईश्वरचन्द्र शास्त्री तथा पं० कृष्णकान्त आर्य (पूर्व ईसाई प्रचारक) आदि उपदेशक वेद कथाओं पर प्रवचन करने हेतु तथा पं. बनारसीलाल, पं० हरिश्चन्द्र, पं० चिरञ्जीलाल, पं० ईश्वरसिंह तूफान, पं० समेरसिंह, पं० जयपाल, पं० मुरारीलाल बेचैन भजनोपदेशक निरन्तर वेदप्रचार कर रहे हैं।

सूर्य ग्रहण मेला कुरुक्षेत्र पर वेदप्रचार का आयोजन

इस वर्ष सूर्यग्रहण २३ सितम्बर को होगा। इस अवसर पर कुरुक्षेत्र में बहुत बड़ा मेला लगता है, जहां कई लाख की संख्या में नर नारी यहां के सरोवरों में स्नान करने के लिए धार्मिक भावना से श्रद्धापूर्वक आते हैं। अनेक मतमतान्तर वाले उपस्थित जनसमूह पर अपने मतों का प्रभाव डालने के लिए अपने प्रचार शिविर लगाते हैं। यहां सभा का अपना एक स्थान है, जहां महर्षि दयानन्द वैदिकधाम का निर्माण किया गया है। दुकानों के अतिरिक्त एक यज्ञशाला का निर्माण चल रहा है। अत: सभा ने निश्चय किया है कि मेले के अवसर पर वैदिकधर्म प्रचारार्थ एक सप्ताह का शिविर लगाया जाये। सप्ताहभर प्रतिदिन यज्ञ, सत्संग होगा। वैदिक साहित्य का प्रचार तथा प्रसार भी किया जायेगा।

आर्यसमाजों के अधिकारियों से नम्र-निवेदन है कि इस कार्य में सभा को तन, मन तथा धन से सहयोग करें। सभा के उपदेशक मेला प्रचार के लिए धनसंग्रह हेतु आपके पास पधारेंगे, उनके द्वारा अपने आर्यसमाज की ओर से अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग प्रदान करें।

शराबबन्दी के प्रस्ताव सितम्बर तक भिजवायें

जैसा कि पूर्व सूचना प्रकाशित की जा चुकी है कि हरयाणा पंचायत एक्ट के अनुसार जिन पंचायतों के प्रस्ताव सितम्बर मास तक हरयाणा सरकार को पहुंच जायेंगे, उन ग्रामों में आगामी वर्ष से शराब के ठेकों की नीलामी नहीं हो सकती। इस विषय में शराबबन्दी के प्रस्ताव का प्रारूप सर्वहितकारी में एक मास से प्रकाशित किया जारहा है।

आर्यसमाजों के अधिकारियों तथा कार्यकर्त्ताओं से हमारा निवेदन है कि वे अपने निकट की ग्राम पंचायतों से शराबबन्दी के प्रस्ताव पारित करवाने की प्रेरणा करें तथा उसकी प्रति हरयाणा सरकार को अवश्य भिजवायें तथा उसकी एक प्रति सभा को भी भेज दें, जिससे इस सम्बन्ध में सभा की ओर से सहयोग दिया जा सके। यह एक रचनात्मक कार्य है। शराब की बढ़ती हुई दुर्व्यसन का हरयाणा राज्य से समाप्त करना है। इसके बिना सारे विकास के कार्य अर्थहीन हो जायेंगे और हमारी भारतीय सभ्यता भी खतरे में पड़ जायेगी।

सभा के लिए नये प्रतिनिधियों का निर्वाचन

सभा के गत प्रतिनिधियों का कार्यकाल समाप्त हो चुका है। अत: इस वर्ष सभा का जो वार्षिक चुनाव होगा, उसमे नये प्रतिनिधि भाग लेंगे। प्रतिनिधियों के चुनाव सम्बन्धी आवश्यक निर्देश सभा के पत्र सर्वहितकारी मे प्रकाशित कर दिये गये हैं और आर्यसमाजो को डाक द्वारा भी प्रतिनिधि फार्म तथा परिपत्र भेजा जारहा है। अत: आर्यसमाजों से निवेदन है कि आर्यसमाज के नियम, उपनियमों के अनुसार अपनी साधारण सभा की बैठक में योग्य तथा लगनशील प्रतिनिधियों का चुनाव करके, प्रतिनिधि फार्म के साथ प्राप्तव्य वेदप्रचार, दशांश तथा सर्वहितकारी का वार्षिक शुल्क सभा को भेज देवें। इस कार्य में यदि सभा के मार्गदर्शन की आवश्यकता हो तो तुरन्त सभा को पत्र लिखें, ताकि किसी उपदेशक का कार्यक्रम बनाया जाये। सभा के संघटन को सुदृढ करने के लिए आर्यसमाजों का सहयोग आवश्यक है।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

रुग्णवाहिका का उद्घाटन

आर्यसमाज सांताक्रुज १९७५ से रुग्णवाहिका द्वारा जनसाधारण की सेवा कर रहा है। दिनांक १३ ६ ८७ को बम्बई के महापौर डा० रमेश य० प्रभु ने आर्यसमाज की नवीन रुग्णवाहिका का उद्घाटन किया।

इस अवसर पर बम्बई की समस्त आर्यसमाजों के प्रधान एवं विशिष्ट आर्यबन्धुओं द्वारा श्री रमेश य० प्रभु का बम्बई महानगर के महापौर बनने पर पुष्पमालाओं द्वारा स्वागत किया। वेदमन्त्रों के साथ सभा की कार्यवाही प्रारम्भ हुई। महापौर ने नारियल तोड़कर नवीन रुग्णवाहिका का उद्घाटन किया। महामन्त्री कैप्टिन देवरत्न आर्य ने महापौर के परिचय के साथ आर्यसमाज की धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों से जनसाधारण का परिचय कराया। श्री चन्द्रभान मल्होत्रा ने रुग्णवाहिका की सेवाओं के प्रति प्रकाश डाला।

इस अवसर पर वेद वेदांग पुरस्कार विजेता आचार्य पं० विश्वनाथ जी विद्यामार्तण्ड का अभिनन्दन पत्र भी पढ़ा गया।

माननीय महापौर डा० रमेश य० प्रभु ने अपने भाषण में कहा—यह देश संकट की घड़ियों से गुजर रहा है। सन् १९४७ में जिन्होंने देश के टुकड़े किये थे, वे शक्तियां पुन: सक्रिय और सुदृढ़ होकर देश में अराजकता फैला रही हैं। देश की रक्षा का एकमात्र उपाय है कि सारे हिन्दू एक सूत्र में बन्ध जायें। महापौर ने बड़े जोरदार शब्दों में कहा और इस बात का आह्वान किया कि देश में समान कानून व्यवस्था लागू होनी चाहिये। अल्पसंख्यकों को विशेष अधिकार देकर सरकार हिन्दू जाति पर कुठाराघात कर रही है। मैं आर्यसमाज से हिन्दू जाति की अपेक्षा करता हूं। साम्प्रदायिक शक्तियां भारत की एकता को समाप्त करना चाहती हैं। यदि हम एक होकर नहीं चलेंगे तो यह असामाजिक तत्त्व देश के टुकड़े कराकर ही रहेंगे। हमें इनका मुकाबला करने के लिए तैयार होना चाहिये।

महामन्त्री कैप्टिन आर्य ने कहा—देश को चारों ओर से दुश्मनों ने घेरा हुआ है। यह साम्प्रदायिक दंगे देश का विभाजन करने का सुनियोजित षड्यन्त्र है। हमें देश की एकता बनाये रखने के लिए सदा तैयार रहना चाहिये।

आर्यसमाज के प्रधान श्री देवेन्द्रकुमार कपूर एवं आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री ओंकारनाथ आर्य ने आगन्तुकों का स्वागत एवं धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया।

—कैप्टिन देवरत्न आर्य महामन्त्री

दु:खी देवी माता को बचाओ

आप अच्छी तरह जानते हैं कि धरती माता पर जो कुरीतियां हो रही हैं अर्थात् दहेज, शराब, बलात्कार इत्यादि, जो किसी जातपात को नहीं देखते, उनका निपटारा करने के लिए सारा उत्तरदायित्व स्त्री जाति पर ही होता है। इन कुरीतियों को दूर करने के लिए मेरे कुछ विचार निम्नलिखित हैं। इसके साथ आप भी अपने सुझाव भेजकर कृतार्थ करें—

१—गृहस्थी जीवन प्रेम पैदा करने का होता है न कि धन दौलत कमाने का। इसलिए शादी बिलकुल सादा ढंग से होनी चाहिए अर्थात् टीका, चुन्नी चढ़ाना आदि छोड़कर, बारात में अधिक से अधिक २५ आदमी करके और वह भी दिन की बारात की जाये, जिससे रात को गुण्डागर्दी से बचने के साथ-साथ बिजली भी बचेगी, जो उद्योगों तथा खेतों में पैदावार बढ़ाने के काम आ सकेगी।

२—जहां तक दहेज लेने देने का प्रश्न है, वह तो माता-पिता देते ही हैं। लेकिन दहेज मांगनेवाले लोभी व्यक्ति का विरोध किया जाये। क्योंकि जो व्यक्ति दहेज का लोभ करता है, वह उस विवाहिता युवती से प्रेम नहीं कर सकता। इसके अतिरिक्त लड़की के माता-पिता भी अपनी सामर्थ्य से अधिक देकर लड़के को लोभी न बनायें।

३—अन्तरजातीय विवाह कराने का प्रचार किया जाये, जिससे एक दूसरी जाति के खून मिलने से भेदभाव तथा जातिवाद समाप्त होकर एकता के भाव पैदा होंगे।

४—विवाह से पहले दोनों परिवार लड़के वाले तथा लड़की वाले एक दूसरे के घरों की जांच कर लेवें, मगर शादी के बाद छोड़ने की रस्म न डालें, ताकि लड़की की प्रतिष्ठा पर आंच न आये। क्योंकि शादी करने के बाद लड़की को छोड़ना एक बहुत बड़ा अन्याय है।

५—शराब, सिगरेट तथा नशीले पदार्थ का प्रयोग करनेवाले को भी समझाने-बुझाने का प्रयत्न किया जाये। इससे मान-सम्मान घटता है, इससे कैंसर इत्यादि की बिमारियां भी फैलती हैं। मादक पदार्थों के प्रयोग से बहू-बेटी का अन्तर महसूस नहीं होता और प्रेम भावना खत्म होती है। इसका सेवन न करने से सब प्रकार की बुराइयों से बचा जा सकता है।

६—प्राय: यह देखा जाता है कि कुछ लोग देर रात गये तक लाउडस्पीकर का प्रयोग करते रहते हैं, जिससे एकांत में उपासना करने वाले, दिन में काम करके थके हुए मजदूर और बिमार व्यक्तियों तथा विद्यार्थियों की पढाई में विघ्न पड़ने से इन लोगों को हानि पहुँचती है।

७—गहने आभूषण आदि बनाने से इनके चोरी होने तथा नारी की इज्जत लुटने का भय रहता है। इनकी बजाय यदि डाकखाने से बचत बॉंड खरीदे जायें तो धन बढ़ भी जायेगा तथा सुरक्षित भी रहेगा और इसे देश की उन्नति के लिए काम में लाया जा सकेगा। यह भी एक प्रकार की देश सेवा है।

८—ईश्वर ने सब मनुष्यों को संसार में एक-सा बनाकर भेजा है, अर्थात् सब मनुष्य पांच तत्त्व के बनाये हुए हैं, जो कि हर एक में विद्यमान हैं। लेकिन मनुष्य ने अपने स्वार्थ के लिए अलग-अलग जातियां बनाली हैं। इसका अभिप्राय यह हुआ कि हम ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध चलकर नास्तिक बनते जारहे हैं। हमें इससे बचना चाहिए।

९—स्त्री-जाति दिखावे की वस्तुओं का अधिक प्रयोग करती है—जैसे हार-शृंगार के लिए बाजारी वस्तुयें पाउडर, क्रीम आदि। इससे एक तो आकर्षण पैदा होने से गुण्डागर्दी बढ़ती है, दूसरा इससे गन्दी चीजों के कीटाणु एक दूसरे के चुम्बन से अन्दर जाने से बिमारियां पैदा होती हैं। इनकी बजाय घी, तेल आदि का प्रयोग करके शरीर को सुन्दर बनाया जा सकता है।

मैं आप सब पढ़नेवालों से नम्रतापूर्वक हाथ जोड़कर प्रार्थना करती हूं। विशेषकर युवती बहनों से कि वह इन सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए बड़े प्रेम से तथा नम्रतापूर्वक समाज की सेवा करने के लिए मैदान में आयें।

ऊपर लिखित विचारों के अतिरिक्त और कोई सुझाव हो तो वह मुझे लिखकर कृतार्थ करें। आपका धन्यवाद होगा।

आपकी बहन
निर्मला कस्तूरिया C/o श्री ज्ञानचन्द चौबड़ा
५४२, जगदीश कालोनी, रोहतक-१२४००१

भोरसैंदा जि० कुरुक्षेत्र में शराब के ठेके पर सभा के अधिकारियों द्वारा सत्याग्रहियों से भेंट

ग्राम भोरसैंदा जि० कुरुक्षेत्र में एक अप्रेल से शराब के ठेके पर महिला सांस्कृतिक संघ द्वारा धरणा जारी है। आस-पास के ८-१० ग्राम के निवासी भी इस ठेके को बन्द करवाने के लिए पूरा प्रयत्न कर रहे हैं। शराब की बिक्री प्राय: बन्द है परन्तु चोरी छिपे ठेकेदार रात्रि को अवैध रूप से शराब की बोतलों की बिक्री करता है।

इस धरणे का निरीक्षण करने के लिए सभा कोषाध्यक्ष मा० बद्रीप्रसाद आर्य, वेदप्रचाराधिष्ठाता श्री रघुवीरसिंह, सभा सम्पत्ति निरीक्षक श्री भगवानसिंह, सभा उपदेशक पं० सुरेश शास्त्री तथा कार्यालयाध्यक्ष श्री केदारसिंह आर्य १६ जुलाई को गये। वहां ग्राम के सरपंच तथा अन्य धरणे के कार्यकर्त्ताओं, विशेषकर धरणा संचालक कु० सुदेशकुमारी जो कि कानून की छात्रा है से भेंट की और धरणे को सफल करने के लिए सभा की ओर से प्रत्येक प्रकार का सहयोग देने का आश्वासन दिया। कु० सुदेश ने बताया कि "हम तब तक धरणा जारी रखेंगी, जब तक ठेकेदार अपनी बोतलों को उठाकर नहीं ले जाता।" उन्होंने सभा के मार्गदर्शन एवं सहयोग के लिए धन्यवाद किया।

ईसाइयों के गढ़ जसपुर क्षेत्र में शुद्धि चक्र चला

२३ मई से २५ मई, ८७ तक मध्यप्रदेश के देवगढ़ (सरगुजा) एवं लैलूंगा (रामगढ़) में वेदपारायण महायज्ञ एव शुद्धि यज्ञ का आयोजन समारोह के साथ माता कौशल्या देवी प्रधाना आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इन दोनों स्थानों पर ६५० से अधिक उरांव जाति के आदिवासी जो ईसाइयत को ग्रहण कर चुके थे, वे पुन: हिन्दू (आर्य) धर्म में दीक्षित हुए। इन समारोहों से प्रभावित होकर और हजारों ईसाई भी तैयार होगये।

इस कार्यक्रम का आयोजन श्री स्वामी धर्मानन्द जी प्रधान उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा की प्रेरणा एवं प्रयत्न से हुआ। इस अवसर पर श्री स्वामी के साथ श्री त्रिशिकेशन शास्त्री, श्री पं० देशपाल, श्री सेवकराम जी आदि विद्वान् भी उपस्थित रहे। परन्तु गांव क्षेत्र के आर्यबन्धुओं का सहयोग एवं प्रयत्न इस कार्य में अति प्रशंसनीय रहा।

—त्रिशिकेशन शास्त्री
उप कार्यालय मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्कल

आर्य विद्वानों से निवेदन

प्रतिवर्ष की भांति श्रावणी पर्व पर सर्वहितकारी का वेदप्रचार विशेषांक ७ अगस्त को प्रकाशित किया जायेगा। अत: आर्य विद्वानों से निवेदन है कि इस विशेषांक के लिए अपने लेख तथा कवितायें साफ-साफ शब्दों में लिखकर १ अगस्त तक भेजने की कृपा करें।

—सम्पादक

आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री रामानन्द सिहल, उपप्रधान—मेघराज आर्य, मन्त्री—कुलभूषण आर्य, उपमन्त्री—रामसोहन आर्य, प्रचारमन्त्री—ठाकुरदास बत्रा, कोषाध्यक्ष—राजकुमार, पुस्तकाध्यक्ष—सुशीलकुमार सिंहल।

गोहत्या बन्दी के लिए भ्रमण

सेठ जमनालाल बजाज के भतीजे राधाकृष्ण बजाज २३ जुलाई को भारतीय संस्कृति की आधार 'गोमाता' की रक्षा की ओर ध्यान दिलाने हेतु हरयाणा, २३ जुलाई को सोनीपत के कुण्डली गांव से हरयाणा में प्रवेश करेंगे।

हरयाणा प्रदेश सर्वोदय मण्डल स्वाध्याय आश्रम पट्टीकल्याण ने एक परिपत्र जारी किया है। इसमें कहा गया है कि भारत ऋषियों, तपस्वियों और विद्वानों का देश रहा है। उन्हीं मनीषियों ने वैदिक काल से लगातार महावीर, बुद्ध, शंकराचार्य, दयानन्द, विवेकानन्द, गांधी और विनोबा भावे तक सभी ने एक स्वर से गोवंश को सबसे उत्तम पशु और गो दुग्ध को सर्वश्रेष्ठ आहार माना है। हमारे साहित्य में गाय की भूरि-भूरि प्रशंसा है। आर्यों के राज्य में कभी गऊ हत्या नहीं हुई। ऋषियों ने गाय को माता और मानव परिवार का अभिन्न अंग माना है।

परिपत्र में कहा गया है कि आज हमारा दुर्भाग्य है कि स्वतन्त्र भारत में अंग्रेजों और मुसलमानों के समय से सौ गुणा अधिक हत्या होने लगी है। इतना ही नहीं यह दिनों-दिन बढ़ती जारही है। यही हाल रहा तो थोड़े दिनों में देश से गोवंश बिल्कुल लुप्त हो जायेगा।

हरयाणा राज्य गोशाला संघ के अध्यक्ष श्री रामगोपाल एडवोकेट व महासचिव श्री देशराज वर्मा ने सभी गोभक्तों, गोसेवकों, महाजनों, गोशालाओं, सज्जनों, कलाकारों, पत्रकारों तथा साहित्यकारों से अपील की है कि वे इस पवित्र कार्य में सहयोग प्रदान करें।

राष्ट्रभाषा (हिन्दी) के सम्बन्ध में विद्वानों के विचार

संकलनकर्ता—वेदमित्र हापुड़वाले, अम्बाला कैंट

हिन्दी के द्वारा ही सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है। —स्वामी दयानन्द

हिन्दी पढ़ना और पढ़ाना हमारा कर्त्तव्य है, उसे हम सबको अपनाना है। —लालबहादुर शास्त्री

देश के सबसे बड़े भू-भाग में बोली जानेवाली हिन्दी ही राष्ट्रभाषा पद की अधिकारिणी है। —नेताजी सुभाष

राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिये आवश्यक है। —बापू

राज्य का काम अंग्रेजी में चलाना, जनता पर एक बोझ लादना है। —काका कालेलकर

हिन्दी की होड़ किसी प्रांतीय भाषा से नहीं, अंग्रेजी के साथ है। —डा० राजेन्द्रप्रसाद

हिन्दी देश की सबसे बड़े हिस्से में बोली जाती है। हमें इस भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार करना ही चाहिये। —रवीन्द्रनाथ

हिन्दी अब सारे भारत की राष्ट्रभाषा बन गई है। हमें उस पर गर्व होना चाहिये। —सरदार पटेल

मेरे देश में हिन्दी की इज्जत न हो, यह मैं नहीं सह सकता। —विनोबा भावे

कोई राष्ट्र अपनी भाषा को छोड़कर राष्ट्र नहीं कहला सकता। भाषा की रक्षा सीमाओं की रक्षा से भी जरूरी है। —थामिस डेविस

भारत में हिन्दी भाषा ही राष्ट्रभाषा का स्थान ले सकती है। —डा० ग्रियर्सन

भारत सरकार की संस्कृत के विरुद्ध नीति का विरोध

गत दिनों विश्व वेद परिषद् के वार्षिक साधारण अधिवेशन में निम्न प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुआ—

१—भारत सरकार की नई शिक्षा नीति १९८६ में भारत की प्राचीनतम भाषा एवं ज्ञान विज्ञान की भण्डार संस्कृत को केवल विश्व विद्यालय के पाठ्यक्रम में है। वैकल्पिक विषय के रूप में स्वीकार करके उसे नीचे की कक्षाओं के पाठ्यक्रम से निकाल दिया गया है, जिसका परिणाम भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीय एकता एवं भारतीय सम्पदा का विनाश होना है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान की धारा ३४३ जिसके अनुसार भारतीय संघ की राजभाषा हिन्दी एवं लिपि देवनागरी स्वीकार की गई है और धारा ३५१ के अनुसार राजभाषा के शुद्ध भण्डार को समृद्ध बनाने के लिए संस्कृत को मुख्य स्रोत स्वीकार किया गया है। की भावना को ध्यान में रखते हुए ये सभा भारत सरकार से जोरदार मांग करती है कि सम्पूर्ण भारत में माध्यमिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम में संस्कृत को अनिवार्य भाषा के रूप में अध्यापन की व्यवस्था की जाये, जिससे भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय सम्पदा की रक्षा हो सके।

२—संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा है और क्लासीकल भाषाओं में सर्वाधिक विकसित है। यह लैटिन ग्रीक आदि भाषाओं के समान केवल संग्रहालय की भाषा न होकर आज के युग में भी जनसाधारण के व्यवहार में आरही है। जिसका प्रयोग सम्पूर्ण भारत में तो २१ प्रतिशत से भी अधिक है।

३—आज भी भारत वर्ष में ७०-८० संस्कृत पत्र-पत्रिकायें प्रकाशित हो रही हैं, इनमें से ३५ प्रतिशत पत्रिकाओं को तो भारत सरकार अनुदान भी दे रही है।

४—आज भी हमारे अनेक विश्वविद्यालयों में संस्कृत भाषा के माध्यम से शिक्षा दी जारही है। सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी, कामेश्वरसिंह वि० वि० दरभंगा, पुरी, संस्कृत वि० वि० राज्य संस्था नई दिल्ली, लालबहादुर शास्त्री विद्यापीठ दिल्ली, इन विश्व विद्यालयों से सम्बद्ध कालेजों में संस्कृत भाषा के माध्यम से ही शिक्षा दी जाती है। जिनकी संख्या हजारों है और पढ़नेवाले छात्रों की लाखों।

५—विश्वभर के शिक्षाविदों और वैज्ञानिकों ने स्वीकार किया है कि कम्प्यूटर विज्ञान के लिए संस्कृत भाषा सर्वोत्तम है।

६—कुछ उच्च न्यायालयों (हाईकोर्ट) में आज भी न्यायाधीश संस्कृत में ही अपना निर्णय देते हैं।

७—पूरे भारतवर्ष और यूरोप अमेरिका आदि में हिन्दुओं के सभी संस्कार संस्कृत भाषा में ही होते हैं।

अतः यह सभा भारत सरकार से मांग करती है कि वह संस्कृत को अनिवार्य रूप से माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक पाठ्यक्रम में स्थान देने की घोषणा करने की कृपा अनुग्रह आगामी ३० जुलाई, १९८७ तक करदे। अन्यथा हमें इसके लिए अपना सर्वस्व समर्पित करते हुए आंदोलन करने पर विवश होना पड़ेगा।

—आशुराम आर्य
महामन्त्री विश्व वेद परिषद् चण्डीगढ़।

आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री ओंकारनाथ आर्य, उपप्रधान—गणपतराय आर्य, सखाभाई पटेल, कैप्टिन देवरत्न आर्य, मन्त्री—धर्मवीर गुलाटी, उपमन्त्री—मेघराज गुप्ता, राजेन्द्रनाथ पांडे, कल्याण भाई वैलाणी, कोषाध्यक्ष—कस्तूरीलाल मदान।

(पृष्ठ १ का शेष)

भारतीय दर्शन की चौथी विशेषता है—कर्म सिद्धांत। मनुष्य जो भी कर्म करता है उसका नाश कभी नहीं होता तथा जिस फल को हम भोग रहे हैं वह पूर्वजन्म में किये हुए का ही फल है। कर्म सिद्धांत को स्वीकार कर मनुष्य जहां एक ओर पाप करने से बच जाता है, वहां दूसरी ओर शुभ कर्मों के अनुष्ठान से आगामी जीवन उज्ज्वल, दिव्य एवं महान् बना सकता है।

भारतीय दर्शन की पांचवी विशेषता है—मोक्ष मार्ग का निर्देश। संसार में बन्धन का कारण है अविद्या। अविद्या से बन्धन होता है और ज्ञान से मुक्ति। जीवन यापन के दो मार्ग हैं—प्रेय और श्रेय। मनुष्य प्रायः आपाततः रमणीय पदार्थों की ओर आकृष्ट होकर संसार में प्रवृत्त होता है। इस प्रवृत्ति का मूल कारण है—राग और द्वेष। यह प्रेय मार्ग मनुष्य को अधोगति का कारण है। श्रेय मार्ग मनुष्य के मंगल का मूल है। दर्शनकार इस मंगल मार्ग पर आरूढ़ होने के लिये यम-नियम आदि अष्टांग योग का विधान करते हैं। मनुष्य को जसे भी हो, इस संसार के उच्छेद के लिये त्रिविध तापों से छूटने के लिए, ब्रह्म की प्राप्ति के लिये महान् प्रयत्न एवं पुरुषार्थ करना चाहिए।

भारतीय दर्शन की खोज का विषय रहा है 'आत्मा'। उपनिषदों में घोषणा में कहा है—'आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः'। अरे वह आत्मा ही जानने योग्य, दर्शन करने योग्य है। बृहदारण्यक उपनिषद् २।४ में एक प्रसिद्ध कथा है। जब दार्शनिक शिरोमणि याज्ञवल्क्य गृहस्थाश्रम का परित्याग कर सन्यास में प्रविष्ट होने लगे, तब उन्होंने अपनी भार्या मैत्रेयी को बुलाकर कहा—मैं इस गृहस्थाश्रम में पड़े रहना नहीं चाहता, मैं परलोक साधन करना चाहता हूं। आओ मैं कात्यायनी और तुम्हारे लिये अपने धन का विभाजन करदूं।" याज्ञवल्क्य की बात सुनकर विदुषी मैत्रेयी ने पूछा—'यदि यह सारी पृथिवी धन-धान्य से परिपूर्ण होकर मेरी हो जाये तो 'कथं तेनामृता स्याम्' क्या मैं उससे अमरत्व को प्राप्त कर सकूंगी? महर्षि ने उत्तर दिया—जसे साधन सम्पन्न व्यक्ति सुख चैन से जीवन निर्वाह करते हैं, वसा ही तुम्हारा जीवन भी हो जायेगा। 'अमृतत्वस्य तु न आशा अस्ति वित्तेन' धन धान्य से अमरत्व पाने की तो तनिक भी आशा नहीं है। तब मैत्रेयी ने कहा—'येनाहं नामृता स्यां किमहं तेन कुर्याम्' जिस धन से अमरत्व को प्राप्त नहीं हो सकती, उसे लेकर क्या करूंगी। इस उत्तर को सुनकर दार्शनिक शिरोमणि याज्ञवल्क्य ने मैत्रेयी को जो आध्यात्मिक उपदेश दिया, वह भारतीय धर्म तथा दर्शन के इतिहास में सदा अमर रहेगा। उन्होंने कहा—

"पति-पति के लिये प्यारा नहीं होता, अपितु आत्मा के लिये। पत्नि-पत्नि के लिये प्रिय नहीं है, प्रत्युत आत्मा के लिये। पुत्र-पुत्र के लिये प्यारे नहीं होते, अपितु आत्मा के लिये प्रिय होते हैं। संसार की समस्त वस्तुयें उनके लिये प्रिय नहीं होती, अपितु आत्मा के लिये प्रिय होती हैं। अतः सबसे प्रिय वस्तु आत्मा है—

आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यो मैत्रेय्यात्मनो वा अरे दर्शनेन श्रवणेन मत्या विज्ञानेनेदं सर्वं विदितम् ॥

"मैत्रेयी! उस आत्मा का ही दर्शन करना चाहिये, श्रवण करना चाहिये, मनन करना चाहिये और निदिध्यासन (निरन्तर ध्यान) करना चाहिये, क्योंकि आत्मा के दर्शन, श्रवण, मनन तथा विज्ञान से सब कुछ जाना जा सकता है।"

आत्मतत्त्व का श्रवण करना चाहिये, श्रुतिवाक्यों से मनन करना चाहिये और तार्किक युक्तियों से निदिध्यासन करना चाहिये' योग प्रतिपादित उपायों से।

भारतीय दर्शनों को दो भागों में विभाजित किया गया है—आस्तिक और नास्तिक। चार्वाक, जैन और बौद्ध ये तीनों नास्तिक दर्शन हैं। न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग पूर्व मीमांसा और वेदांत ये छः आस्तिक दर्शन हैं।

दर्शन कब लिखे गये, इस प्रश्न का उत्तर देना कठिन है। दर्शनकारों ने इस विषय में कोई लिखित प्रमाण नहीं छोड़ा है, परन्तु एक बात सुनिश्चित है कि सभी दर्शन ऋषियों द्वारा प्रणीत हैं और ऋषियों का युग महाभारत तक अविच्छिन्न रहा है। अतः दर्शन महाभारत से पूर्व और महाभारत काल के आस-पास लिखे गये। इस प्रकार दर्शनों का समय आज से कम से कम पांच हजार वर्ष पूर्व है। पाश्चात्य लेखकों द्वारा निर्दिष्टकाल सर्वथा भ्रामक तथ्यों से दूर और युक्ति-शून्य है।

आर्यसमाज सातरोड़ कलां में वेदप्रचार सम्पन्न

दिनांक २० जून से २६ जून, १९८७ तक आर्यसमाज सातरोड़ कलां जि० हिसार में वेदप्रचार का कार्य क्रांतिकारी के प्रयत्न से सम्पन्न हुआ। जिसमें पहले चार दिनों में स्वामी जगत्मुनि, स्वामी सर्वदानन्द, स्वामी रामानन्द, महाशय भाबेराम जी एवं सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी जी के शिक्षाप्रद उपदेश व भजन हुए। दिनांक २४ जून को प्रो० ओमकुमार आर्य, स्वामी मस्तानानन्द जी के अतिरिक्त तीन भजन मण्डलियां एकदम आ पहुंचीं, जिसमें महाशय खेमसिंह, पं० चन्द्रभान, प० जयपालसिंह थी। वेदप्रचार का कार्यक्रम श्री दलबीर आर्य एवं श्रीमती करुणा शास्त्री के घर चार दिवारी के अन्दर हुआ।

इसके अतिरिक्त श्री नेपालसिंह फौजी, श्री कर्मवीर तथा श्री देवेन्द्रसिंह आर्य के घर पर अलग-अलग तारीखों में प्रातःकाल हवन किया गया। फौजी ने शराब न पीने व मांस न खाने का दृढ़ व्रत लिया। उपरोक्त सभी यजमानों ने जनेऊ धारण किये। आखरी दिन २६ जून को क्रांतिकारी के अथक प्रयास से चार दिवारी से बाहर गांव में एक चौक में वेदप्रचार किया गया। प्रचार में काफी संख्या में नर-नारियों ने भाग लिया। पं० जयपालसिंह ने शराब व दहेज विरोधी भजनों से सभा बांध दी। महाशय खेमसिंह ने भी राजा सूरजमल के इतिहास को रखकर नवयुवकों में जान डाल दी। अन्य उपरोक्त सभी विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से विचार रखे। शराब व दहेज से सदा दूर रहने पर विशेष बल दिया। कार्यक्रम कुल मिलाकर सफल रहा।

—सुरेन्द्रसिंह आर्य सातरोड़ कलां

वेदप्रचार यात्रा

हमारी ११ दिन की प्रचार-यात्रा स्वामी सर्वानन्द जी महाराज द्वारा प्रदत्त नूतन सायंकाल से १८-५-८७ से लेकर २८-५-८७ तक उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के आने-जाने उपदेशक पं० सुभाषचन्द्र शास्त्री एवं गुरुकुल आमसेना के प्राध्यापक चन्द्रशेखर शास्त्री ने उड़ीसा क्षेत्र के अन्दर ११ दिन तक प्रचार-यात्रा में रत रहे।

ग्रीष्म की प्रखर तेज को सहते हुए तथा १६२ कि०मी० साईकिल द्वारा घूमते-घूमते १८ गांवों में वेदों का सन्देश घर-घर पहुंचाये। नये आर्यसमाजों का निर्माण भी किया।

—चन्द्रशेखर शास्त्री अध्यापक गुरुकुल आमसेना

आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं से आवश्यक निवेदन

हरयाणा में शराब के प्रचार का विस्तार हो रहा है, जिससे किसान मज़दूर इस बुराई में फंसकर बर्बाद हो रहे हैं। सभा की ओर से प्रतिवर्ष ग्राम पंचायतों को प्रेरणा करके शराबबन्दी प्रस्ताव करवाकर सितम्बर मास तक हरयाणा सरकार को भिजवाये जाते हैं। जिन पंचायतों के प्रस्ताव समय पर सरकार को पहुंच जाते हैं, पंचायत एक्ट के अनुसार वहां आगामी वर्ष ठेका नहीं उठाया जा सकता।

अतः आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं तथा अधिकारियों से निवेदन है कि वे अपने-अपने क्षेत्र की पंचायतों को प्रेरणा करके सितम्बर मास तक प्रस्ताव पास करवाकर सरकार को भिजवाने का पूरा प्रयत्न करें। आपके योगदान से अनेक ग्रामों में शराब के ठेके बन्द हो सकते हैं। प्रस्ताव का प्रारूप निम्नलिखित है—

नशाबन्दी प्रस्ताव

माननीय मुख्यमन्त्री जी,
हरयाणा चण्डीगढ़।

हमारे ग्राम............जिला..................पंचायत ने अपनी बैठक दिनांक में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया है—

"यह ग्रामसभा (पचायत) शराब पीने की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को ग्राम्य जीवन के लिए बहुत घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। गांव में अनाचार, अशांति और अपराध फैलते हैं। धन का भी भारी विनाश होता है। ऐसी अवस्था में हरयाणा सरकार की शराबबन्दी नीति का स्वागत करते हुए यह पंचायत मांग करती है कि हमारे क्षेत्र में चालू शराब की दूकान तुरन्त बन्द करदी जाये और भविष्य में कदापि यहां शराब का ठेका खोलने की अनुमति न दी जाये, ताकि उक्त बुराइयों से ग्राम्य जीवन की रक्षा हो सके।"

आशा है आप पंचायत की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यहां की शराब की दूकान को बन्द करने के लिए आवश्यक पग शीघ्र उठाने की कृपा करेंगे।

सरपंच तथा पंचों के हस्ताक्षर

इस प्रस्ताव की प्रतिलिपियां—

१. प्रधानमन्त्री, भारत सरकार, नई दिल्ली।
२. मन्त्री आबकारी एवं कराधान हरयाणा, चण्डीगढ़।
३. आबकारी एवं कराधान आयुक्त हरयाणा, चण्डीगढ़।
४. उप आबकारी एवं कराधान आयुक्त जिला ......
५. जिलाधीश ....
६. मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक के पते पर सितम्बर मास तक रजिस्ट्री डाक द्वारा भेजने का कष्ट करें।

सभामन्त्री

शराबबन्दी आंदोलन में सहयोग करें

पिछले तीन वर्षों से आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा और उसके प्रधान के नाते मैं स्वयं तथा मेरे साथी शराबबन्दी के अभियान में लग रहे हैं। इस आंदोलन को चलाने के लिए अनेक शराब के ठेकों पर धरने भी लगाने पड़े और वे सभी सफल हुए। इस आंदोलन के फलस्वरूप ५० से अधिक ठेके बन्द हुए।

हम यह अनुभव करते हैं कि किसान मजदूर और दूसरे कमाऊ लोग शराब की लत के कारण अपना ही सर्वनाश करने पर तुले हुए हैं। हमारे अभियान से एक नई चेतना युवकों, महिलाओं और सभी लोगों में आई है और वे इस लानत से छुटकारा चाहते हैं। जुलाई, अगस्त और सितम्बर के महीनों में हम इस अभियान को पूरे हरयाणा में चलाना चाहते हैं और हरयाणा की पवित्र भूमि को इस दुर्व्यसन से मुक्त करवाना चाहते हैं। मैं आशा करता हूं कि इस आंदोलन में हमें आपका हर प्रकार का सहयोग मिलेगा। कार्यक्रम की सूचना हर ठीक समय पर आपको भेज देंगे। —प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

वर्षाऋतु में वेदप्रचार सप्ताह मनावें

आर्यसमाजों में प्रतिवर्ष वर्षाऋतु में (जुलाई, अगस्त तथा सितम्बर तक) वेदप्रचार सप्ताह धूमधाम से मनाया जाता है। अतः हरयाणा के आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वे अपनी सुविधा के अनुसार वेदप्रचार सप्ताह की तिथियां निश्चित करके सभा को सूचित करें, ताकि सभा की ओर से उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों का कार्यक्रम बनाया जा सके। श्रावणी उपाकर्म के दिनों में सभी आर्यसमाजों की मांग पर प्रबन्ध कर सकना कठिन होगा। अतः जुलाई से सितम्बर तक हरयाणा में निरन्तर वेदप्रचार सप्ताह का आयोजन किया जायेगा। जिन आर्यसमाजों की मांग पहले आयेगी, उन आर्यसमाजों का प्रबन्ध पहले किया जायेगा।

—रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता

वैदिक संस्कार प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

महर्षि दयानन्द ने संस्कार विधि में आर्यों के लिए १६ संस्कारों का विधान किया है। दिनांक २१ जून से २८ जून, १९८७ तक श्रीमद् दयानन्द मठ रोहतक के तत्वावधान में एक वैदिक संस्कार प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया। इसके संयोजक आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता महाशय भरतसिंह जी हैं। आर्यजगत् के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डा० सुदर्शनदेव आचार्य ने एक सप्ताह तक १५ जिज्ञासु शिक्षार्थियों को वैदिक संध्या, अग्निहोत्र, यज्ञवेदी का निर्माण, ऋत्विजों का लक्षण तथा उनके कार्य, यज्ञपात्र, संस्कार की परिभाषा, संस्कारों का महत्त्व, प्रचलित संस्कार विधि तथा महर्षि दयानन्द का मत, जिज्ञासुओं को कर्मकांड विषयक शंकाओं का समाधान और शुद्ध मन्त्रपाठ के अतिरिक्त नामकरण, चूडाकर्म (मुण्डन), उपयन और विवाह इन चार संस्कारों का प्रशिक्षण दिया। श्री पं० सुरेश शास्त्री के भी प्रवचन हुए। प्रथम दिन ब्र० सुधीरकुमार का उपनयन संस्कार किया गया।

शिविर का शुभारम्भ श्री वेदव्रत शास्त्री मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने यज्ञ का दीपक जलाकर किया और उन्होंने पूर्णाहुति के अवसर पर भी शिक्षार्थियों को वेद का स्वाध्याय करने की प्रेरणा दी। श्री महाशय भरतसिंह जी ने आरम्भ में आशीर्वाद दिया तथा अन्त में पं० जयदयाल जी के उदाहरण से संस्कार प्रशिक्षण के महत्त्व पर प्रकाश डाला। श्री रघुवीरसिंह जी वेदप्रचाराधिष्ठाता ने सभा की ओर से इस प्रकार के महत्त्वपूर्ण शिविरों के आयोजन का आश्वासन दिया। शिविर में आये शिक्षार्थियों को प्रमाण-पत्र भी दिये गये। यह शिविर सभी प्रकार से सफल रहा।

—अर्जुनदेव आर्य
व्यवस्थापक वैदिक संस्कार प्रशिक्षण शिविर

शोक समाचार

मेरी माता जी का ७-७-८७ को देहांत होगया है। उनकी शोकसभा १७-७-८७ दिन शुक्रवार प्रातः १० बजे होनी निश्चित हुई है।

प्रधान
आर्यसमाज, पो० होली मोहल्ला,
करनाल

जसवन्तसिंह आर्य
सु० हुकमसिंह पाटान वाली गली,
करनाल



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73   रजि० नं० P
सृष्टि संवत् १,९६,०८,५३,०८८



ओ३म्   कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सर्वहितकारी
रोहतक
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री   सह-सम्पादक—डा० यज्ञवीर

वर्ष १४, अङ्क ३४ २८ जुलाई, १९८७   वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

हवन में मंत्रोच्चारण क्यों ?

लेखक—यशपाल आर्यबंधु, आर्य निवास, चन्द्र नगर, मुरादाबाद

आर्य मर्यादा साप्ताहिक के ५ जुलाई ८७ के अङ्क में श्रीयुत अनिल कुमार गुप्ता का एक लेख "मंत्रोच्चारण क्यों करें" शीर्षक से छपा है। अपने इस लेख में लेखक महोदय ने आधुनिक दृष्टिकोण से यज्ञ में मंत्रोच्चारण की उपयोगिता दर्शाई है। मंत्रोच्चारण से स्वास्थ्य पर बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ता है। किन्तु मंत्रोच्चारण के केवल भौतिक लाभ ही नहीं हैं, आध्यात्मिक लाभ भी हैं। प्रस्तुत लेख में हम एतद् विषयक महर्षि दयानन्द के विचार प्रस्तुत कर रहे हैं ताकि इसके आध्यात्मिक लाभों को भी पाठक अच्छी तरह जान सकें।

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के वेद विषय में प्रश्नोत्तर रूप में महर्षि लिखते हैं कि—

"प्रश्न—होम करने का जो प्रयोजन है सो तो केवल होम से ही सिद्ध होता है, फिर वहां वेदमन्त्रों के पढ़ने का क्या काम है ?

उत्तर—उनके पढ़ने का प्रयोजन कुछ और ही है।

प्रश्न—वह क्या है ?

उत्तर—जैसे हाथ से होम करते, आंख से देखते और त्वचा से स्पर्श करते हैं, वैसे ही वाणी से वेदमन्त्रों को भी पढ़ते हैं। क्योंकि उनके पढ़ने से वेदों की रक्षा, ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना होती है। तथा होम से जो-जो फल होते हैं, उनका स्मरण भी होता है। वेदमन्त्रों के बारम्बार पाठ करने से वे कण्ठस्थ भी रहते हैं, और ईश्वर का होना भी विदित होता है व कोई नास्तिक न हो जाय, क्योंकि ईश्वर की प्रार्थनापूर्वक ही सब कर्मों का प्रारम्भ करना होता है। सो वेदमन्त्रों के उच्चारण से यज्ञ में तो उसकी प्रार्थना सर्वत्र होती है। इस लिये सब उत्तम कर्म वेदमन्त्रों से ही करना उचित है।

इसी प्रकार महर्षि ने अपने सुप्रसिद्ध ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश में भी इस विषय में लिखा है कि—

"प्रश्न—मंत्र पढ़ के होम करने का क्या प्रयोजन है ?

उत्तर—मन्त्रों में वह व्याख्यान है कि जिससे होम करने के लाभ विदित हो जायें और मंत्रों की आवृत्ति होने से कण्ठस्थ रहें। वेद पुस्तकों का पठन-पाठन और रक्षा भी होवे।"

पूना के सुविख्यात प्रवचनों में भी यज्ञ और संस्कार विषयक सातवें प्रवचन में महर्षि ने यह चर्चा उठाई है। वहां एतद् विषयक शंका निम्न शब्दों में की गई है—कोई कोई ऐसी शंका करें कि वायु शुद्धयर्थ यदि हवन है तो उसमें वेदमंत्रों के पठन की क्या आवश्यकता है ? इसका समाधान महर्षि ने इस प्रकार किया है—"इसका उत्तर यह है कि दो काम यदि एक ही समय में हो सकते हों तो उन्हें करना चाहिये, ऐसा उद्देश्य कर प्राचीन आर्य लोगों ने जब हाथों को होमादिक द्रव्यों की व्यवस्था करने में लगाया तब मुंह खाली न रहे, परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना मुंह से होती रहे, इसलिये पहिले के ऋषि लोग वेद मंत्र कहते थे और ब्राह्मण लोगों ने कण्ठस्थ वेद आज तक किया, इसी लिये वेद-विद्या भी अबलों बनी रही है। फिर यह भी था कि वेद पाठ करने से परमेश्वर की भक्ति होती थी जिससे विचार-शक्ति भी उत्पन्न होती थी। दूसरा ऐसा भी विचार है कि जो हाथों में प्रयोग होता है, उसके जो मन्त्र उस समय कहे जाते हैं उनमें कुछ भी सम्बन्ध नहीं रहता, इससे मन्त्रोच्चार कर्म के उद्देश्य से नहीं होता, किन्तु परमेश्वर की स्तुति मुंह से होती रहे, यही प्रधान उद्देश्य है और कोई-कोई मंत्र ऐसे भी हैं जिनमें होम के लाभ कहे गये हैं। साराश यह है कि वेद मन्त्रों को कहने से वेद की रक्षा ही मुख्य प्रयोजन है।" इतना ही नहीं महर्षि का तो यहां तक कथन है कि—"मुख्य तत्त्व से वेदमन्त्र के पठन से ईश्वर का सत्कार होता है, इस लिए प्राचीन आर्य लोगों ने होम के स्थल में मन्त्रों की योजना की है, इसी तरह यज्ञशाला को देवायतन अथवा देवालय कहा है।" (वही)

यज्ञ में वेदमंत्रों का ही पाठ क्यों हो ?

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में महर्षि ने एक प्रश्न उठाया है कि—"यज्ञ में वेदमन्त्रों को छोड़ के दूसरे का पाठ करें तो क्या दोष है ?" और फिर उसका समाधान इन शब्दों में किया है—"अन्य के पाठ में यह प्रयोजन सिद्ध नहीं हो सकता। ईश्वर के वचन से जो सत्य प्रयोजन सिद्ध होता है, सो अन्य के वचन से कभी नहीं हो सकता। क्योंकि जैसा ईश्वर का वचन सर्वथा भ्रान्तिरहित सत्य होता है, वैसा अन्य का नहीं। और जो कोई वेदों के अनुकूल अर्थात् आत्मा की शुद्धि, आप्त पुरुषों के ग्रंथों का बोध और उनकी शिक्षा से वेदों को यथावत् जान के कहता है, उसका भी वचन सत्य ही होता है। और जो केवल अपनी बुद्धि से कहता है, वह ठीक-ठीक नहीं हो सकता। इससे यह निश्चय है कि जहां-जहां सत्य दीखना और सुनने में आता है, वहां-वहां वेदों में से ही फैला है, और जो-जो मिथ्या है, सो-सो वेद से नहीं, किन्तु जीवों की ही कल्पना से प्रसिद्ध हुआ है। क्योंकि ईश्वरोक्त ग्रंथ से सत्य प्रयोजन सिद्ध होता है, सो दूसरे से कभी नहीं हो सकता।

इस प्रकार यज्ञ में वेदमंत्रों के उच्चारण से अनेकानेक लाभ अत: श्रद्धापूर्वक यज्ञ में वेदमंत्रों का उच्चारण करना ही चाहिये।

इत्योम् शम् ।।

वार्षिक चुनाव आर्यसमाज आसन जि० रोहतक

प्रधान—श्री धारेसिंह सुपुत्र श्री प्रीतसिंह
उप „ श्री सरूपलाल सुपुत्र श्री चन्दगीराम
मन्त्री—जयदेवसिंह सुपुत्र श्री नेकीराम
उप „ रामकरण सुपुत्र श्री जयपालसिंह
कोषाध्यक्ष—सूरजमल सुपुत्र श्री लखीराम

कहीं आप चर्बी तो नहीं खा रहे हैं ?

—मुजफ्फर हुसैन

इस बात की आपके पास क्या गारन्टी है कि आप जो खा रहे हैं वह एकदम शुद्ध घी है। देशी घी मिलना तो बहुत दूर अब तो असली वनस्पति घी भी नहीं मिलता। शुद्ध तेल एक बार आपको उपलब्ध हो सकता है किन्तु घी कदापि नहीं। तो प्रश्न यह उठता है कि घी में किस चीज की मिलावट करते होंगे ? इसका उत्तर है पशु की चर्बी। बाजार में जिस प्रकार मांस, चमड़े, हड्डी और सींग का व्यापार होता है, उसी प्रकार बहुत बड़े पैमाने में चर्बी का व्यापार भी होता है।

यूरोप और अमेरिका में तो मक्खन इतनी बड़ी मात्रा में उपलब्ध है कि वहां मिलावट का प्रश्न ही नहीं खड़ा होता। किन्तु एशिया और अफ्रीका में दूध की तंगी है। इसलिए शुद्ध घी मिलना एक बड़ी भारी समस्या है। चर्बी दो प्रकार की होती है—पीली और सफेद। बैल चर्बी पीली होती है और भैंस की सफेद। इसलिए घी की मिलावट में भैंस की चर्बी का उपयोग होता है। जब चर्बी को पानी में खूब धोया जाता है, तब उसमें रवेदार कण उभर आते हैं जो अच्छे घी में होते हैं। फिर सुगन्ध के लिए उसमें घी जैसी सुगन्ध वाला एसेंस डाल दिया जाता है, डिब्बे अथवा हंडिया का मुंह खुलते ही असली घी की सुगन्ध महकने लगती है जिससे खरीददार को शत प्रतिशत यह विश्वास हो जाता है कि यह असली घी है।

सफेद चर्बी के भाव अधिक होते हैं किन्तु पीली के कम। इसलिए अब रसायन की सहायता से बैल की चर्बी को सफेद बनाने में कोई कठिनाई उपस्थित नहीं होती। ऐसा अनुमान है कि एक भैंस में से औसतन २५ किलो चर्बी निकलती है जबकि बैल में से १६ किलो। सुअर तो चर्बी का घर माना जाता है किन्तु भारत में चर्बी का धन्धा करने वाले अधिकांश मुस्लिम हैं अतएव सुअर की चर्बी के उपयोग का प्रश्न ही नहीं उठता।

अमेरिका में तो पोलसन डाबी है जिसके बलबूते पर शोगन जीते हैं। इन दिनों वहां मक्खन का इतना स्टाक जमा हो गया है कि भाव गिर जाने का डर है। सरकारी कोल्ड स्टोरेज में इतनी जगह नहीं है कि अब और अधिक मक्खन जमा किया जा सके। परन्तु हमारे देश में ऐसी कोई लाबी कम से कम आने वाले ५० वर्षों में तो नहीं बन सकती।

चर्बी का औद्योगिक उपयोग :

मुर्दा जानवरों से प्राप्त चर्बी का अधिकांश उपयोग साबुन बनाने में होता। महंगे और मूल्यवान साबुन खोपरे के तेल से बनते हैं किन्तु कपड़े धोने के साबुन में जानवरों की चर्बी का उपयोग होता है। मुर्दा जानवरों की कुल चर्बी का ६० प्रतिशत साबुन के कारखानों में चला जाता है। मरे हुए जानवरों की चर्बी की दुर्गन्ध समाप्त करने के लिए कडुवे तेल का उपयोग किया जाता है। यह कोई सरसों का कडुवा तेल नहीं बल्कि कडुवी बादाम का कडुवा तेल होता है। मुर्दा जानवर की चर्बी औसतन ८ रु० किलो मिल जाती है। इसमें बैल की पीली चर्बी भी चल जाती है। विदेशी साबुनों में सुअर की चर्बी अधिक काम में लाई जाती है। बम्बई में साबुन वाले प्रतिदिन औसतन ८०० किलो चर्बी खरीदते हैं।

औद्योगिक क्षेत्र में चर्बी का सबसे बड़ा उपयोग कपड़ा मिल में होता है। टैक्सटाइल मिलें दुनिया की समस्त चर्बी का ७५ प्रतिशत भाग उपयोग करती हैं। कपड़े को ब्लिच करने में चर्बी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कच्ची चर्बी को पहले रिफाइनरी में भेज कर रिफाइन किया जाता है। इसके पश्चात् उसमें कुछ रसायन मिलाए जाते हैं और फिर लकड़ी के ड्रम में पैक कर दिया जाता है। कुछ दिनों पश्चात् ड्रम खोलकर चर्बी निकाली जाती है और ब्लिच करने वाले विभाग में ब्लिचिंग के लिए भेज दी जाती है।

चर्बी का उपयोग होड़ी के पर्दे पर किया जाता है। नाव या होडियां जो पर्दा बांधकर समुद्र में चलाई जाती है, उनके पर्दे में दो या तीन वर्ष में चर्बी लगाने का काम किया जाता है। यह चर्बी नाव के लकड़े को सड़ने और गलने से बचाती है। लकड़ियां जोड़ते समय जो दरारें हो जाती हैं, उनमें भी चर्बी को भर दिया जाता है जो लोहे के समान जम कर सख्त हो जाती है। चर्बी की परत का एक लाभ यह होता है कि नाव पानी पर तेजी से फिसलती है जिसके कारण पतवार चलाने वाले को नाव खेने में अधिक कठिनाई नहीं होती। लोग मोम का प्रयोग भी करते हैं मगर वह चर्बी की अपेक्षा महंगा पड़ता है। अमरीका में हर घर में कार की तरह नाव रखने का भी रिवाज है। पिकनिक के समय हर अमरीकी अपनी कार पर नाव ले जाता है। नदी का किनारा या समुद्र का छोर मिलते ही वह तुरन्त नाव पानी में डाल देते हैं। थोड़े समय के अन्तर से उसका मालिक उस पर चर्बी लगाना नहीं भूलता। अब सागर में चलने वाली लांच के पर्दे पर बम्बई से केरल तक के तटवर्ती इलाकों में चर्बी लगाने का काम बड़े पैमाने पर होता है।

चर्बी का स्वभाव कभी नहीं बदलता :

महाराष्ट्र के जाने माने निष्णात श्री नूरुद्दीन रहमतुल्ला चरनिया ने अफसोस व्यक्त करते हुए कहा कि हमारा देश पशुओं के मामले में सारी दुनिया में मशहूर रहा है। कन्हैया के इस देश में बेचारे पशुओं के आहार पर कोई ध्यान नहीं देता। इसलिए उनके शरीर में चर्बी का प्रमाण विदेशी जानवरों की तुलना में २२ प्रतिशत ही होता है। श्री चरनिया ने चर्बी तैयार करने की विधि बतलाते हुए कहा कि पहले इसे बड़े कढ़ाव में एक से डेढ़ घण्टे तक खूब पकाया जाता है। पक जाने पर चर्बी तेल के रूप में आ जाती है। ठण्डी होते ही वह पुनः जम जाती है। चर्बी को किसी के साथ भी मिलाइये या गर्म कीजिए वह ठण्डी होने पर तुरन्त ही अपनी असली स्थिति में आ जाती है। यानि उसके जम जाने का स्वभाव अटल है।

कुछ लोगों को यह शंका होती है कि बाजार में बिकने वाला नमकीन चर्बी में तला जाता है किन्तु यह भ्रम बेबुनियाद है। यदि ऐसा होता तो चिवड़े, सेव दाल अथवा अन्य नमकीन वस्तुओं पर चर्बी जमी हुई दिखलाई पड़ती किन्तु हां अनेक प्रकार की नमकीन बिस्किट में चर्बी के उपयोग को नकारा नहीं जा सकता।

बेकरी के धन्धे में चर्बी का प्रयोग होना एक जानी मानी बात है। बेकरी वाले आधा तेल और आधी चर्बी का मिला जुला उपयोग करते हैं। होटलों में बिकने वाली वस्तुओं में भी चर्बी का उपयोग तेल के स्थान पर होता है, मांसाहारी होटलों में तो चर्बी कोई भी वस्तु पकाने के लिए आवश्यक अंग बन गई है।

बम्बई स्थित नल बाजार की अली भाई, उमर स्ट्रीट में वालभाई अली भाई नामक फर्म चर्बी के धन्धे में पिछले ७० वर्ष से विश्वसनीय फर्म मानी जाती है किन्तु रिफाइनरी के क्षेत्र में आस्ट्रेलो ट्रेडिंग कम्पनी प्रख्यात है। अंग्रेजी में चर्बी को टेलो कहा जाता है और भारत के आयात आस्ट्रेलिया से होता है। अतएव इन दोनों नामों को मिलाकर सम्भवतः अपनी कम्पनी का नाम का धन्धा करने वाले मालिकों आस्ट्रेलो ट्रेडिंग रख लिया है। बम्बई के ही मझगांव क्षेत्र में अंजीरवाड़ी नामक स्थान पर एक दारुवाला एण्ड कम्पनी है। इस समय इसके मालिक एक खोजा बन्धु हैं किन्तु किसी समय दारुवाला नामक पारसी सज्जन थे। चर्बी का ९० प्रतिशत व्यापार खोजी बन्धु ही करते हैं।

१६ किलो के भरे चर्बी के डिब्बे में लोहे की छड़ डाल कर असलियत का पता लगा लिया जाता है। सफेद चर्बी के पीछे पीली चर्बी मसाला और पत्थर से लगाकर वजन बढ़ाने के लिए कुछ भी डाल देना एक अत्यन्त साधारण बात है। लोहे की ये छड़ सारी पोल खोल देती है।

चर्बी का तेल निकल जाने के पश्चात् जो वस्तु शेष रह जाती है उसे चुन्नी कहा जाता है। इस चुन्नी को लोग गुड़ के साथ बड़े मजे से खाते हैं। चुन्नी १२ रु० किलो बिकती है जानवर अपने शरीर की एक-एक वस्तु से मानव की सेवा करता है किन्तु मानव उसकी हत्या के अतिरिक्त कुछ नहीं करता।

(गोकुल जयपुर से साभार)

सूखाग्रस्त क्षेत्रों में सरकार तुरन्त राहत कार्य करे —प्रो० शेरसिंह

प्रो० प्रतिनिधि सभा हरयाणा एवं रक्षावाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने हरयाणा में अकाल पड़ने की सम्भावना पर गहरी चिन्ता प्रकट की है। ८० वर्ष के इतिहास में ऐसा भयंकर अकाल नहीं पड़ा। श्रावण मास जो कि वर्षा का महीना कहा जाता है सूखा बीतने वाला लगता है। वर्षा न होने से फसलें बर्बाद हो गई हैं। पशुओं के लिए हरे चारे की कमी के कारण पशुधन का जीवन भी खतरे में पड़ गया है। तालाबों में पीने तक का पानी समाप्त हो गया है। इस सूखे का प्रभाव किसानों, मजदूरों तथा छोटे दुकानदारों पर पड़ रहा है। निरन्तर बढ़ती हुई महगाई के कारण पूर्व ही आर्थिक व्यवस्था ग्रस्त व्यस्त हो रही है।

प्रो० शेरसिंह ने किसान तथा मजदूरों को सुझाव दिया है कि वे विवाह आदि अवसरों पर फिजूलखर्ची बन्द कर देव और शराब आदि व्यसनों को तिलांजलि देकर अपनी खून पसीने की कमाई का सदुपयोग करें।

आपने हरयाणा के आर्यसमाजों को निर्देश देते हुए कहा है कि वे आर्यसमाज मन्दिरों तथा ग्रामों की चोपालों में वृष्टियज्ञों का विशेष आयोजन करें।

भारत तथा हरयाणा सरकार से प्रो० शेरसिंह ने अनुरोध किया है कि इन संकटकालीन परिस्थितियों में अकालपीड़ित जनता को अधिक से अधिक राहत सामग्री के वितरण की तुरन्त व्यवस्था करे। नलकूपों को चलाने हेतु २४ घण्टे बिजली दी जाये तथा नहरों में भी अधिक से अधिक पानी छोड़ा जाये। सूखे तालाबों को पानी से भर कर पशुधन की रक्षा करे।

श्री कपिलदेव शास्त्री हैफेड के अध्यक्ष मनोनीत

आर्य नेता तथा पत्रकार श्री कपिलदेव शास्त्री को मुख्यमन्त्री श्री देवीलाल ने हैफेड का अध्यक्ष मनोनीत किया है। श्री शास्त्री ने २३ जुलाई को अपना कार्य भार सम्भाल लिया है। उनके इस महत्त्वपूर्ण पद पर मनोनयन पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अधिकारियों ने हार्दिक बधाई दी है और इस कार्य में उनकी सफलता के लिए कामना की है।

श्री कपिलदेव शास्त्री सभा के पूर्व उपमन्त्री तथा आर्य विद्या सभा हरयाणा के सदस्य और गुरुकुल भैंसवाल कलां में मुख्याधिष्ठाता हैं।

—सभा मन्त्री

आचार्यकुल लोवा कलां जि० रोहतक का जन्मदिवस महोत्सव

आचार्यकुल (कन्या महाविद्यालय) लोवा कलां का २६वां जन्म-दिवस महोत्सव ९ अगस्त १९८७ रविवार, श्रावणी पर्व पर बड़ी धूमधाम से मनाया जावेगा। उत्सव में बड़े-बड़े विद्वान्, संन्यासी उपदेशक पधारेंगे। सभी सज्जन सम्मिलित होकर धर्मलाभ प्राप्त करें।

(१) नया प्रवेश प्रारम्भ है। ६ वर्ष से ऊपर की आयु की कन्याओं को प्रविष्ट किया जाता है। (२) २०१) प्रवेश शुल्क तथा ७२०) रुपये का वार्षिक भोजन व्यय लिया जाता है। (३) प्रथमा, मध्यमा, शास्त्री, आचार्य, संस्कृत एम० ए० की परीक्षाएं कराई जाती हैं।

मानाचार्य सरस्वती
संस्थापक एवं अध्यापक

सर्वहितकारी का आगामी अंक

वेद प्रचार विशेषांक

९ अगस्त को रक्षा बन्धन का पर्व है। अतः इस शुभावसर पर सर्वहितकारी का आगामी अंक वेद प्रचार विशेषांक प्रकाशित किया जायेगा। यह अंक वेद प्रचार के लिए बहुत उपयोगी होगा। जो आर्य समाज तथा संस्थाएं इसकी प्रतियां अधिक मगवानी चाहती हों वे तुरन्त पत्र लिखकर सूचित करें। —सम्पादक

हरयाणा के आर्यसमाजों से आवश्यक निवेदन

१. सभा से सम्बन्धित आर्यसमाजों से निवेदन है कि वे साधारण सभा करके वार्षिक चुनाव में आगामी वर्ष के लिए अधिकारी तथा ३ वर्षों के लिए सभा के लिए प्रतिनिधियों का फार्म भर कर प्राप्तव्य वेद प्रचार दशांश तथा सर्वहितकारी का शुल्क सभा को भेज देवें। यदि प्रचार की आवश्यकता हो तो पत्र लिखकर सूचित करें ताकि समय पर प्रबन्ध हो सके।

२ आर्यसमाज अपने क्षेत्र की ग्रामीण पचायतों से शराब बन्दी के प्रस्ताव करवाकर ३० सितम्बर से पूर्व रजिस्ट्री पत्र से हरयाणा सरकार को भिजवावें और प्रस्ताव की प्रतिलिपि सभा के पास भी भिजवायें ताकि शराब बन्दी के कार्य में सहायता की जा सके। सभा मन्त्री

वार्षिक चुनाव आर्यसमाज चबूतरों जि० अम्बाला

१. प्रधान—हंसराज आर्य, २ उपप्रधान—जयराम आर्य, ३. मंत्री—मामचन्द आर्य, ४ उपमन्त्री—वीरसिंह आर्य, ५. कोषाध्यक्ष—श्यामलाल आर्य, ६ प्रचारमन्त्री—महेन्द्रसिंह, ७. निरीक्षक—कृष्णलाल आर्य, ८. पुस्तकालय—करनैलसिंह आर्य।

आर्यसमाज कुबेरनगर अहमदाबाद का चुनाव

प्रधान श्री रामनदास आर्य, उपप्रधान—श्री सुगनामल आर्य एवं माधवदास प्रेमचन्द, मन्त्री श्री टी जे टिडवाणी, उपमन्त्री—श्री राजेन्द्र वासवानी, खजाची—श्री सुन्दरदास। तीन सदस्य कार्यकारिणी सभा पर लिये गये।

—मन्त्री आर्यसमाज, कुबेरनगर

शोक समाचार

बाजोदपुर (दिल्ली) निवासी प्रिंसिपल होशियारसिंह के भाई मुख्याध्यापक दरियावसिंह जी के सुपुत्र शक्तिसिंह (बी. एस-सी. छात्र) का निधन १७-७-८७ को बस दुर्घटना में चण्डीगढ़ में हो गया।

ऐसी ही दुखद घटना मा० पूर्णसिंह आर्य नरेला निवासी के सुपुत्र नरेन्द्रसिंह की है। यह ३० वर्षीय होनहार युवक अचानक पेट दर्द के कारण १ जून को स्वर्गवासी होगया। इसके पीछे विधवा पत्नी और एक शिशु भी है।

ईश्वर दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं शोकसन्तप्त परिवार तथा सम्बन्धी मित्रों को दारुण दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—वेदव्रत शास्त्री

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज पानीपत की यह विशेष बैठक श्री ओमप्रकाश जी सिंगला मैनेजर आर्य कालिज व श्री रामानन्द जी सिंगला प्रधान आर्यसमाज के छोटे भाई श्री विश्वनाथ जी सिंगला के आकस्मिक निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति व सद्गति प्रदान करे और सब परिवार जनों को यह महान् दुःख सहने की शक्ति दे।

मन्त्री, आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत

भौर सैयदा ठेका शराब बन्द करो

आखिर सरकार लोगों को शराबी बनाने पर इस हद तक क्यों तुली है ?
क्या इसके पास जन-कल्याण का यही एकमात्र रास्ता बचा है ?
ऐसे घातक कल्याण मार्ग का डटकर विरोध करो।

कुरुक्षेत्र जिला के गांव भोर सैयदा में ठेका शराब के विरोध में सैकड़ों स्त्री-पुरुषों द्वारा १ अप्रैल, १९८७ से ही लगातार धरना जारी है. ठेका बन्द किये जाने के समर्थन में हजारों व्यक्तियों ने अपने हस्ताक्षर-अंगूठे करके सरकार को पेश किए हैं। आस पास के ८-१० गांव भी ठेका उठवाने में सक्रिय भाग ले रहे हैं, इन गांवों से रोजाना स्त्री-पुरुष धरने में शामिल हो रहे हैं, आने-जाने वाले यात्री भी धरने के उद्देश्य की सराहना करते हैं तथा अपने-अपने ढग से ठेका बन्द किए जाने की भावनाएं व्यक्त करके जाते हैं, धरना शुरु होने के बाद गांव के काफी व्यक्तियों ने शराब न पीने का संकल्प भी लिया है और आज तक एक भी व्यक्ति ठेके से शराब लेते नहीं देखा गया, इससे गांव का माहौल पहले से काफी बदल गया है। और इस सारी स्थिति की सरकार व शासन को पूरी खबर है। शराब बन्दी के लिए सरकार ने जो दिखावटी कानून बनाए हैं उनका इस्तेमाल हम कर चुके हैं तथा सरकार का ध्यान संविधान के अनुच्छेद ४७ की ओर भी दिला चुके हैं जिसके तहत संविधान निर्माताओं ने देश भर में पूर्ण शराब बन्दी का सरकारी संकल्प निर्धारित किया था। आजादी आन्दोलन के इतिहास की याद दिला चुके हैं कि जब महात्मा गांधी ने अंग्रेजों से देश भर में पूर्ण शराबबन्दी की मांग की थी और केवल मांग ही नहीं गांधी-इरविन समझौते की एक महत्त्वपूर्ण शर्त भी बनाई गई थी। मगर इस सब कुछ के बावजूद भी सरकार गुण्डागर्दी व बर्बादी के इस अड्डे ठेके शराब को गांव में कायम रखने की अपनी ज़िद पर अड़ी हुई है। शराब के भ्रष्ट धन्धे से माया बटोरने वाली सरकार, ठेकेदार व इनके टुकड़खोरों और दलालों का कहना है कि जो लोग ठेके का विरोध कर रहे हैं उनको चाहिए कि वे पहले जाकर लोगों को समझाएं कि वे शराब पीना छोड़ दें और जब सब लोग पीना छोड़ देंगे तो ठेके अपने आप ही बन्द हो जायेंगे। उससे पहले सरकार की शराब नीति व ठेकों का विरोध करना तो फिजूल बात है। कैसी बेशर्मी है कि अपने निहित व्यापारिक स्वार्थ में इस हद तक नंगी व बेहूदा दलील देने में भी लुटेरे नहीं हिचकते। यही दलील तो गोरे हुक्मरानों से महात्मा गांधी को सुननी पड़ी थी। जब उन्होंने देश में पूर्ण शराब बन्दी की मांग की थी। आज उसी निकृष्ट दलील का सहारा अंग्रेजों के उत्तराधिकारी महात्मा गांधी के ही चेले-चपटे काले हुक्मरान ले रहे हैं। और यही दलील तो दी थी टोबा दानाशिर (हिसार) के रण्डीखानों की उस ठेकेदारनी और उसके दलालों ने जब महिला सांस्कृतिक संगठन ने गन्दगी भरे उस माहौल को बदलने का जेहाद छेड़ा था। ठेकेदारनी ने कहा था कि आन्दोलनकारियों को चाहिये कि वे वेश्यालयों का विरोध करने की बजाए पहले उन कामुक ग्राहकों का मन बदलें जो उनके पास पैसा लेकर आते हैं। यदि उनका मन बदल जाएगा तो रण्डीखाने तो अपने आप ही बन्द हो जायेंगे। हाल ही में ऐसा एक जवाब संसद के अन्दर भारत के प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी जी ने तब दिया जब उन्हीं की पार्टी के सांसद ने टी० वी० पर आधी रात को दिखाई जाने वाली वयसक फिल्म पर आपत्ति करते हुए सवाल पूछा था जिसके जवाब में राजीव जी ने कहा था कि यदि किसी सज्जन को फिल्म पर ऐतराज है तो वह टी.वी. देखना बन्द कर सकता है जिसका साफ मतलब है कि गन्दगी व गुण्डागर्दी के प्रचार-प्रसार का सरकारी इरादा अटल है। यदि किसी सज्जन को सरकार के इस इरादे के मुताबिक अपने आपको ढालने में दिक्कत है तो सरकार उसमें क्या कर सकती है। इनके लिये बेशर्मी की हद आखिर कहां है मालूम नहीं।

शराब के ठेके खोले जाने की सरकार की दूसरी दलील लोगों की सेहत का फिकर है, सरकार का कहना है कि यदि ठेका बन्द कर दिया गया तो लोग कच्ची शराब पीने लगेंगे जो उनकी सेहत को तबाह करके रख देगी इसलिए सरकार का जन कल्याणकारी होने के नाते फर्ज बनता है कि वो अपने नागरिकों की सेहत की रक्षा के लिए सेहतमंद शराब के ठेके खोले और शायद सरकार लोगों की सेहत के ख्याल से ही हर साल ठेकों व उनके बिकने वाली बोतलों का कोटा बढ़ा देती है और इस साल तो सरकार लोगों की सेहत की चिन्ता में इतनी डूब चुकी है कि नई शराब नीति पास करनी पड़ी। जिसके तहत हर व्यक्ति को १२ १२ बोतलें हर वक्त अपने झोले में डालकर घूमने की छूट देनी पड़ी। कैसी निर्लज्जता है ! कच्ची शराब की लत छुड़वाने का कैसा अजीब तरीका है। क्या यह सरकार जवाब देगी कि अफीमचियों का देश कहकर पुकारे जाने वाले चीन के लोगों को अफीम की लत से मुक्ति कैसे मिली थी। क्या इसी भांति सुविधायें प्रदान करने के रास्ते या इससे उलट ? आने वाले समय में हो सकता है कि सरकार इसी दलील के सहारे यौन अपराधियों की बीमारियों से चिन्तित होकर सरकारी वेश्या गृहों के लाईसेंस भी जारी करने लगे जिससे जन-कल्याण कार्यों के लिये और भी काफी मात्रा में धन इकट्ठा हो सकेगा जो सरकार की ठेकों के पक्ष में तीसरी दलील है। सरकारी आफिसरों से लेकर मन्त्री महोदय श्री प्यारासिंह जी तक ने इसी दलील को ही धरने पर बैठे लोगों के गले उतारने की कोशिश की। मन्त्री जी ने कहा कि ठेकों से सरकार के पास धन इकट्ठा होता है जिसको कि सरकार जन-कल्याण कार्यों पर खर्च करती है और यदि आमदनी का ये जरिया बन्द हो गया तो कल्याण कार्य कैसे हो सकेगा। धरने पर बैठी महिलाओं ने जब उनसे कहा कि ये धन तो सरकार के मन्त्रियों की पिकनिकों, टूरों और पंचों-सरपंचों के मौज-मेले व मटरगश्तियों पर खर्च होता है जो कि शासक पार्टी के चुनावी स्वार्थ की साजिश है। तो क्या इसी को ही सरकार जनकल्याण कार्य का नाम देती है ? महिलाओं ने आगे कहा कि जनों के लिए न तो हस्पतालों में दवाइयां हैं न शिक्षा का उचित प्रबन्ध, न रोजगार के कोई अवसर और न ही मर्यादापूर्ण जिन्दगी जीने का कोई जरिया। फिर उन्होंने मन्त्री महोदय से कहा कि मनुष्यों को हर प्रकार से बर्बाद करते हुए पशु के स्तर तक गिराने के बदले ही यदि सरकार के पास कल्याण करने का मार्ग बचा है तो हम ऐसे कल्याण से तोबा करते हैं और फिर हाथ जोड़कर कहा कि मेहरबानी करके आप हमारे कल्याण की फिकर छोड़ दीजिये हम इसी में अपना कल्याण समझते हैं। इसपर मन्त्री जी बिना कुछ कहे चले गए। सरकारी खजाना बढ़ाने की सरकार को बहुत फिकर है लेकिन आज इस बात की पूरी पोल खुल चुकी है कि सरकारी खजाना कैसे और कहां लुटाया जाता है। जग जाहिर हो चुका है कि शासक पार्टी देश की सुरक्षा तक को ताक पर रखकर तोपों, पनडुब्बियों व वर्दियों की सौदेबाजी में भी किस प्रकार अपने चाटुकारों व दलालों को रातों रात करोड़पति व अरबपति बनाने में लगी हुई है और ठेका बन्द करने में ६ लाख रुपये के सरकारी घाटे की फिकर दिखा रही है। कितने थोथे हैं सरकारी धन को लोक हित में खर्च करने के दावे।

स्पष्ट है कि सरकार की लोकहित की उपरोक्त सभी दलीलें धोखाधड़ी पूर्ण व जनविरोधी हैं। ठेके शराब चलाने का न तो इसका मकसद जन कल्याण करने का है न ही लोगों की सेहत की ही इसको कोई चिन्ता है यदि ऐसी बात होती तो हमारे सरकारी कहे जाने वाले हस्पतालों व स्कूलों की दशा इतनी दयनीय न होती जिनसे आम आदमी का सरासर विश्वास ही उठ चुका है। असल में सरकार का

(शेष पृष्ठ ५ पर)

जीवन में उतारने वाली बातें :

पढ़ो, सोचो और करो

संकलन कर्ता : वेदमित्र हापुड़ वाले, ७२-बी गोविन्दनगर अ./कैंट

(१)	सत्यं वद।	सच बोलो।
(२)	धर्मं चर।	धार्मिक जीवन बिताओ।
(३)	स्वाध्यायात् मा प्रमद।	अभ्यास में प्रमाद न करो।
(४)	सत्यान्न प्रमदितव्यम्।	सत्य के काम में ढिलाई न करो।
(५)	धर्मान्न प्रमदितव्यम्।	धर्म का काम मत छोड़ो।
(६)	मातृदेवो भव।	माता को देवतुल्य मानो।
(७)	पितृदेवो भव।	पिता को देवतुल्य मानो।
(८)	आचार्य देवो भव।	गुरु को देवतुल्य मानो।
(९)	अतिथिदेवो भव।	अतिथि को देव तुल्य मानो।
(१०)	श्रद्धया देयम्।	श्रद्धा पूवक दान दो।
(११)	अश्रद्धया अदेयम्।	अश्रद्धा से दान मत करो।
(१२)	संविदा देयम्।	दयापूर्वक दान करो।
(१३)	श्रिया देयम्।	खूब दान करो।
(१४)	भूत्यै न प्रमदितव्यम्।	विश्व की उन्नति के काम में प्रमाद न करो।

भारत सरकार यज्ञ पर अनुसन्धान कराएगी

केन्द्रीय मंत्री श्री भजनलाल का आश्वासन

हैदराबाद में सफल वृष्टि महायज्ञ का आयोजन कर आचार्य वेदभूषण ने नई दिल्ली की यात्रा की तथा २३ जून ८७ को आपने भारत सरकार के पर्यावरण एवं वनमंत्री श्री भजनलाल जी से उनके निवास स्थान पर विशेष भेंट की।

आचार्य वेदभूषण ने विश्व में निरन्तर बढ़ते हुए प्रदूषण पर चिन्ता व्यक्त करते हुए माननीय मंत्री महोदय से आग्रह किया कि—वे अपने वैज्ञानिकों द्वारा यज्ञ पर विशेष अनुसन्धान कराएं।

क्योंकि-वैदिक साहित्य में यज्ञ से प्रदूषण नष्ट करने की बात सर्वत्र कही गई है।

माननीय पर्यावरण मंत्री ने आचार्य वेदभूषण के विचारों को बड़े ध्यान से सुना और कहा कि—आपकी बातचीत में वजन है। हम यज्ञ पर अनुसन्धान कराने का कार्य अवश्य करेंगे।

आपने आचार्य वेदभूषण को यह भी आश्वासन दिया कि—यदि हैदराबाद में पुन: यज्ञ का आयोजन होगा तो हम वैज्ञानिकों का विशेष दल भी भेजेंगे जो यज्ञ द्वारा पर्यावरण पर डाले जाने प्रभाव का अध्ययन करेंगे।

संभावना है कि—अगस्त मास में पुन: एक बार हैदराबाद में वृष्टि महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है।

हैदराबाद में वृष्टि महायज्ञ की पूर्ण सफलता

विगत चार वर्षों से हैदराबाद नगर में वर्षा का अभाव चल रहा था। पीने के लिए पानी के संकट ने भयंकर रूप ले लिया था। रेलवे के टैंकरों द्वारा प्रतिदिन तीन लाख बीस हजार रुपए व्यय करके वो क्षेप पानी की मंगाई जा रही थी।

अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान के अधिष्ठाता आचार्य वेदभूषण को अन्त:प्रेरणा हुई कि—वैदिक वृष्टि महायज्ञ का आयोजन करो। इस प्रेरणा से आपने अपना दो मास के लिए मसूरी जाने का कार्यक्रम रद्द कर दिया और रेल्वे टिकट भी लौटा दिया और वैज्ञानिक आधार पर वृष्टि महायज्ञ के आयोजन में जुट गए।

११ जून ८७ से १४ जून तक हैदराबाद के प्रदर्शनी प्रांगण में एक सौ कुण्डों में गोघृत तथा विशेष प्रकार की शुद्ध हवन सामग्री से भरपूर स्वाहाकार किया गया। यज्ञ के प्रथम दिन ही आधे घण्टे तक जोरदार वर्षा हुई। दूसरे दिन भी तेज वर्षा हुई तथा १४ जून ८७ के दिन रात में नौ बजे पूर्णाहुति का कार्यक्रम समाप्त हुआ और साढे नौ बजे मूसलाधार वर्षा हुई।

तब से अब तक हैदराबाद नगर में भरपूर वर्षा हो रही है। आचार्य वेदभूषण का मत है कि—प्रदूषण की मात्रा के पर्यावरण में बढ जाने से प्रकृति अस्वस्थ हो जाती है। यज्ञ पर्यावरण के प्रदूषण को नष्ट करने का श्रेष्ठतम वैज्ञानिक उपाय है।

हैदराबाद के वैदिक वृष्टि महायज्ञ में छ सौ किलो घृत का स्वाहाकार किया गया। आन्ध्र प्रदेश डेरी डेवलपमेंट कारपोरेशन की चित्तूर शाखा से गाय का घी प्राप्त किया गया था। शुद्ध हवन सामग्री जिसमें वर्षा कराने वाली वनौषधियों का मिश्रण किया गया था। एक हजार किलो हवन सामग्री तथा डेढ सौ क्विंटल आम व पीपल की लकड़ी जलाई गई।

कैर की लकड़ी व बिल्व फल भी जलाने से वर्षा की संप्राप्ति होती है। बिल्व फल के कोई २५ बोरे जलाए गए।

इस महायज्ञ से हमारी आस्था यज्ञ के प्रति और बढ़ गई है। जहां कहीं वर्षा का अभाव हो वहां पर विराट् महायज्ञ का आयोजन किया जाना चाहिए। अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद-२७ ऐसे आयोजन में सहयोग देने के लिए समुद्यत है।

ग्राम माईयड़ हिसार में वेदप्रचार सम्पन्न

दिनांक १७, १८, १९ जुलाई १९८७ को श्री रणवीरसिंह आर्य की लगन व उत्साह से ग्राम माईयड में वेदप्रचार का कार्यक्रम विधिवत् सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी सर्वदानन्द जी सरस्वती व मैंने आर्यसमाज क्या चाहता है, आर्यसमाज का देश की आजादी में योगदान, धर्म क्या है, हमारा क्या कर्त्तव्य है, तथा शराबबन्दी व दहेज बन्दी बारे विस्तार से विचार रखे। इसके अतिरिक्त पं० विश्वजीलाल व स्वामी देवानन्द जी ने क्रान्तिकारियों का इतिहास व समाज में फैली बुराइयों बारे शिक्षाप्रद प्रेरणादायक भजन रखे। एक रोज श्री रणवीरसिंह आर्य के घर पारिवारिक यज्ञ तथा शेष दिनों चौपाड़ में प्रात:काल हवन किया गया। इस अवसर पर दो खुंखार शराबी श्री बलदेवसिंह व श्री नरेन्द्रसिंह जी ने शराब न पीने का व्रत लिया। तीन नवयुवकों ने जनेऊ धारण किए। एक ने बीड़ी न पीने की प्रतिज्ञा की। बाद में कुछ नवयुवकों ने अपने ग्राम से शराब का गोदाम व अवैध शराब की बिक्री बन्द करवाने की घोषणा की। पंचायत ने भी गोदाम को उठाने बारे प्रस्ताव पास कर दिया है। इस तरह से कुल मिलाकर वेदप्रचार सफल रहा। सभा को २७६ रु० दान दिया।

—अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी, सभा उपदेशक

(पृष्ठ ४ का शेष)

असली मकसद लूट-खसोट की वर्तमान पूंजीवादी व्यवस्था को टिकाए रखने का है जिस मतलब के लिए लोगों को हर तरह से कमजोर कर देना लुटेरी जमात के लिये जरूरी है। इसलिये आज पूंजीवाद की दलाल सरकारें लोगों को T. V. सिनेमा और गन्दे नग्न साहित्य के माध्यम से अश्लीलता के गढ़े में, नई शिक्षा नीति के माध्यम से अशिक्षा के अन्ध महासागर में और चालाकीपूर्ण तरीकों से शराब आदि की कुटेवों में फसाकर पतन के घोर गर्त में धकेलना चाहती हैं ताकि उनकी इन्सानियत मर जाए, उनका चरित्र चौपट होकर रह जाए, उनकी रीढ की हड्डी टूट जाए और उनमें जुल्म शोषण के खिलाफ मनुष्य की तरह तनकर सीधा खड़ा होने की हिम्मत ही शेष न बचे जिससे कि जालिम उनको अपने डण्डे से चाहे जैसे मर्जी हांक सकें। महिला सांस्कृतिक संघ सरकार की इस घृणित साजिश का डटकर मुकाबला करने के लिए कृतसंकल्प है और तमाम भाई बहनों और बुजुर्गों और माताओं से अपील है कि वे भेडियों व उनके दलालों की दलीलों से चौकन्ने रहें व ठेका शराब विरोधी इस आन्दोलन में सक्रिय हिस्सा लें तथा आन्दोलन को मजबूती देने में हर मुमकिन मदद करें और सरकार से कड़े शब्दों में हमारा कहना है कि वो गुण्डागर्दी के इस अड्डे को बन्द करे हम किसी भी कीमत पर इसका अपने गांव में कायम रहना स्वीकार नही करेंगे।

सुदेशकुमारी
महिला सांस्कृतिक संघ भौरसैयदा जि० कुरुक्षेत्र

ऋषि सन्देश

विषय—अग्निहोत्र में इस बात पर श्रद्धा रखता हूं कि ऋषिवर देव दयानन्द जी ने जो सत्यार्थप्रकाश या ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में जो कुछ लिखा वह सब कुछ वेद के आधार पर है और सत्य है, केवल मैं ही नहीं सब आर्य सज्जन इस को स्वीकार करते हैं।

७ नवम्बर के सर्वहितकारी के प्रकाशन में जो लेख यज्ञ-हवन के विषय में छपा है कुछ ठीक नहीं है, क्योंकि ऋषिवर ने हवन के लाभ जहां लिखे हैं वहां केवल जलवायु को ही शुद्ध करना लिखा है।

इस विषय में जो ऋषिवर ने सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे और चौथे समुल्लास में लिखा है उसको मैं शब्दोशब्द यहां लिखता हूं, पाठकगण स्वयं इस विषय में विचार करें।

सत्यार्थ प्रकाश स० तीसरा—

प्रश्न— होम से क्या उपकार होता है?

उत्तर—सब लोग जानते हैं कि दुर्गन्धयुक्त वायु और जल से रोग, रोग से प्राणियों को दुःख, और सुगन्धित वायु और जल से आरोग्य और रोग के नष्ट होने से सुख प्राप्त होता है।

प्रश्न—चन्दनादि घिस के किसी को लगावें वा घृतादि खाने को देवें तो बड़ा उपकार हो। अग्नि में डाल के व्यर्थ नष्ट करना बुद्धिमानों का काम नहीं।

उत्तर—जो तुम पदार्थविद्या जानते होते तो कभी ऐसी बात न कहते। क्योंकि किसी द्रव्य का अभाव नहीं होता। देखो! जहां होम होता है वहां से दूर देश में स्थित पुरुष के नासिका से सुगन्ध का ग्रहण होता है वैसे दुर्गन्ध का भी। इतने ही से समझ लो अग्नि में डाला हुआ पदार्थ सूक्ष्म होके फैल जाता है और वायु के साथ दूर देश में जाकर दुर्गन्ध की निवृत्ति करता है।

प्रश्न—जब ऐसा ही है तो केशर, कस्तूरी, सुगन्धित, पुष्प और अतर आदि के घर में रखने से सुगन्धित वायु होकर सुखकारक होगा।

उत्तर—उस सुगन्ध का वह सामर्थ्य नहीं है कि गृहस्थ वायु को बाहर निकाल कर शुद्ध वायु को प्रवेश करा सके क्योंकि उस में भेदक शक्ति नहीं है और अग्नि ही का सामर्थ्य है कि उस वायु और दुर्गन्धयुक्त पदार्थों को छिन्न भिन्न और हल्का करके बाहर निकाल कर पवित्र वायु को प्रवेश करा देता है।

प्रश्न—तो मन्त्र पढ़ के होम करने का क्या प्रयोजन है?

उत्तर—मन्त्रों में वह व्याख्यान है कि जिस से होम करने के लाभ विदित हो जावें और मन्त्रों की आवृत्ति होने से कण्ठस्थ रहें। वेदपुस्तकों का पठन-पाठन और रक्षा भी होवे।

प्रश्न—क्या इसे होम करने के बिना पाप होता है?

उत्तर—हां! क्योंकि जिस मनुष्य के शरीर से जितना दुर्गन्ध उत्पन्न होके वायु और जल को बिगाड़ कर रोगोत्पत्ति का निमित्त होने से प्राणियों को दुःख प्राप्त करता है उतना ही पाप उस मनुष्य को होता है। इसलिए उस पाप के निवारणार्थ उतना सुगन्ध वा उससे अधिक वायु और जल में फैलाना चाहिए और खिलाने पिलाने से उसी एक व्यक्ति को सुखविशेष होता है। जितना घृत और सुगन्ध आदि पदार्थ एक मनुष्य खाता है उतने द्रव्य के होम से लाखों मनुष्यों का उपकार होता है, परन्तु मनुष्य लोग घृतादि उत्तम पदार्थ न खावें तो उनके शरीर और आत्मा के बल की उन्नति न हो सके, इस से अच्छे पदार्थ खिलाना-पिलाना भी चाहिए, परन्तु उस से होम अधिक करना उचित है इस लिए होम का करना अत्यावश्यक है।

प्रश्न—प्रत्येक मनुष्य कितनी आहुति करे और एक आहुति का कितना परिमाण है?

उत्तर—प्रत्येक मनुष्य को सोलह-सोलह आहुति और छः छः माशे घृतादि एक-एक आहुति का परिमाण न्यून से न्यून चाहिए और जो इस से अधिक करे तो बहुत अच्छा है। इसलिए आर्यवरशिरोमणि महाशय ऋषि महर्षि, राजे महाराजे लोग बहुत सा होम करते और कराते थे। जब तक इस होम करने का प्रचार रहा तब तक आर्यावर्त देश रोगों से रहित और सुखों से पूरित था। अब भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जावे।

चौथा समुल्लास—जो संध्या सन्ध्याकाल में होम होता है वह हुत-द्रव्य प्रातःकाल तक वायु शुद्धि द्वारा सुखकारी होता है। जो अग्नि में प्रातः प्रातःकाल में होम किया जाता है वह वह हुतद्रव्य सायंकाल पर्यन्त वायु के शुद्धि द्वारा बल बुद्धि और आरोग्यकारक होता है।

इस लिए दिन और रात्रि के सन्धि में अर्थात् सूर्योदय और अस्त समय में परमेश्वर का ध्यान और अग्निहोत्र अवश्य करना चाहिए, और जो ये दोनों काम सायं और प्रातःकाल न करे उसको सज्जन लोग सब द्विजों से बाहर निकाल देवें अर्थात् उसे शूद्रवत् समझें।

पाठक गण—यह मैंने जो सत्यार्थप्रकाश से लिखा है इस से सिद्ध होता है कि होम करने से जल वायु की शुद्धि ही अभीष्ट है।

—कोई कहता है हवन यज्ञ से स्वर्ग की प्राप्ति है।
कोई कहता है मनोकामना पूरी होती है।
कोई कहता है हवन से पुत्र की प्राप्ति होती है।
और कोई हवन के द्वारा उपासना बताते हैं।
इस के विषय में दूसरे ग्रन्थों के प्रमाण देते हैं।
अग्निहोत्र की अग्नि स्वर्ग साधक नहीं।

कठोपनिषद् प्रथमावल्ली—नचिकेता का दूसरा वर—स्वर्ग साधक अग्नि क्या है?

अब नचिकेता दूसरा वर मांगता है—स्वर्ग लोक में किसी प्रकार का भय नहीं है, न वहां मृत्यु है, न जरावस्था—इन दो ही से तो मनुष्य डरता है, वहां मृत्यु से भी भय नहीं वृद्धावस्था से भी भय नहीं। स्वर्ग लोक में भूख प्यास इन दोनों प्रवाहों को तर लेते हैं, इन्हीं से ऊपर उठ जाते हैं, शोक पीछे रह जाता है, आनन्द ही आनन्द रह जाता है।

हे यमाचार्य! आप उस स्वर्ग प्राप्त करने वाली अग्नि को जानते हैं। हे मृत्यु! मैं श्रद्धा-पूर्वक पूछता हूं, आप मुझे उसका उपदेश दें। जो स्वर्ग लोक में जाते हैं उन्हें अमृतत्व-अमरता प्राप्त होती है इसलिए स्वर्ग-साधक-अग्नि का आप उपदेश दीजिए। द्वितीय वर से मैं यही मांगता हूं। यमाचार्य बोले हे नचिकेता! मैं उस स्वर्ग साधक अग्नि को जानता हूं। मैं कहूंगा तू समझ। उसके द्वारा अनन्त लोकों की प्राप्ति होती है, उन लोकों को वह आधार है। परन्तु हां, यह समझ ले कि वह अग्नि गुहा में निहित है—उसका जानना-समझना एक रहस्य को समझने के समान है।

यमाचार्य ने नचिकेता को लोक की, अर्थात् स्वर्ग लोक की साधक उस आदि अग्नि का उपदेश दिया—नचिकेता ने भी आचार्य ने जो कुछ कहा था वह ठीक-ठीक वैसा ही सुना दिया। नचिकेता की इस कुशाग्र-बुद्धि को देखकर आचार्य बहुत सन्तुष्ट हुए और उन्होंने कहा—

महात्मा यम अत्यन्त प्रसन्न होकर नचिकेता को कहने लगे—आज तुझे एक और वर देता हूं। यह अग्नि तेरे ही नाम से प्रसिद्ध होगी। ले अनेक रत्नों वाली माला को ग्रहण कर। यह कह कर आचार्य ने स्वर्ग साधक अग्नि का नाम नाचिकेत अग्नि रख दिया और उसे एक माला दी।

जो त्रि-नाचिकेत अग्नि की ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ इन तीन आश्रमों में उपासना करेगा, वह तीनों सन्धियों में से गुजर कर तीनों कर्मों को कर के जन्म और मृत्यु को तर जाएगा। ये तीन सन्धि और कर्म क्या हैं? जब ब्रह्मचारी गृहस्थ में प्रवेश करता है तो इन दोनों आश्रमों के बीच की सन्धि से गुजरता है, जब गृहस्थी वानप्रस्थ में प्रवेश करता है तब गृहस्थ तथा वानप्रस्थ की सन्धि में से गुजरता है, जब वानप्रस्थ से संन्यास में प्रवेश करता है तब वानप्रस्थ तथा संन्यास की सन्धि से गुजरता है। इन तीन सन्धियों में से गुजरना, इन्हें पार कर जाना ही तीन कर्म हैं। जो इन तीन सन्धियों में से नहीं गुजरता वह किसी न किसी एक आश्रम में अटक जाता है। ... (क्रमशः)

पोंगपंथियों के प्रहार से आर्यसमाज सावधान रहे

लेखक—प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु' वेद सदन अबोहर-१५२११५

कुछ वर्ष पूर्व महात्मा आर्य भिक्षु जी आर्य युवक समाज अबोहर के निमन्त्रण पर अबोहर पधारे। मण्डी में हमने उनका प्रचार करवाया। उन्होंने आकर हमसे अनुरोध किया कि रोहतक से श्री भारती जी भजनीक को भी बुला लो। मैंने कहा मैं हरयाणा के भजनोपदेशकों को जानता हूं परन्तु कोई भारती तो नहीं देखा सुना। महात्मा जी ने कहा श्री नन्दलाल जी को तार दें वह भेज देंगे। अम्बाला मोहल्ला समाज के श्री नन्दलाल जी ने एक व्यक्ति को भेज दिया। उसे आते ही पता चला कि जहां हमारा प्रचार होता वहां एक पौराणिक सेठ पौराणिक भजनीकों को बुलाकर कई बार कीर्तन करवाते हैं। भारती महोदय ने एक दिन हमारे कार्यक्रम में ही गोपियों वाले का राग छेड़ दिया। आर्य भिक्षु जी महाराज ने उसे अगले दिन कह दिया कि हमारी सभा में वैदिक धर्म का ही प्रचार होगा। भारती जी ने हमसे आने जाने का मार्ग व्यय व अपनी फीस बटोर ली और अगले दिन से उसी स्थान पर पौराणिक रूप में प्रकट होकर खुलकर पोंगा प्रचार किया। मैंने यह सब कुछ नन्दलाल जी को बता दिया फिर भी मूर्ख आर्यसमाजी उसे बुलाते रहे और पापी पेट के लिए वह समाजों में आता रहा। एक बार अम्बाला आर्यसमाज रेलवे रोड में वह बोलने लगा तो मैंने खड़े होकर आर्यों को उसकी वास्तविकता बता दी। किसीने मेरी न सुनी परन्तु वह वहां ऐसा शुभकर्म कर गया कि बुलाने वाला बंधु ही बाद में पछताता रहा। 'जिज्ञासु जी ठीक ही कहते थे' यह उसने बार-बार कहा।

आर्यसमाज टोहाना ने अपना उत्सव करवाया। कई विद्वान् गये। अबोहर से ईश्वर वन्दना की बजाए पौराणिक 'सरस्वती वन्दना' के गाने बनाने वाले 'वीणापाणि, हंस वाहिनी' की रट लगाने वाले श्री पं० मोहन लाल मनीषी भी गये। इन्होंने वहां के मन्त्री जी से आर्यजगत् में अपना विज्ञापन निकलवा दिया कि टोहाना में 'मनीषी नाइट' मनाई गई।

आर्यसमाज प्रभु की वेद-वाणी के प्रचार के लिए है किसी व्यक्ति के प्रचार के लिए नहीं। यह नया शोशा 'नाइट' का कैसे चल पड़ा। यह सब अपने धन्धे का विज्ञापन है। रात को जो इधर-उधर के अनापशनाप राजनीति के चटपटे, गाने सुना दे उसी के नाम पर नाइट बन जाती है।

नकुड़ में वेद-प्रचार सप्ताह पर दो दिन गाने सुनाकर वहां के नौजवान मन्त्री को बहकाकर फिर मोहन लाल जी ने वेद प्रचार सप्ताह को 'मनीषी नाइट' कहकर एक पत्र में विज्ञापन बाजी की जब कि समाज का विज्ञापन वेद प्रचार सप्ताह का था। वहां मोहन लाल जी ने यह भी कहा कृष्ण गोपनियों के मटके इसलिए फोड़ते थे ताकि पड़ोसी शत्रु राज्य में वे दूध न बेचें। वहां दूध बेचेंगी तो शत्रु बलवान बनेगा। ऐसी ही सफाई गोपनियों के वस्त्र उतारने की दी। मैंने वहीं ला० लाजपतराय जी की पुस्तक का प्रमाण देकर इस गप्प का कुछ निराकरण किया। अधिक कहता तो आर्यसमाज की वेदी का उपहास उड़ाया। इस व्यक्ति को यह भी पता नहीं कि तब भारत में दूध बिकता ही नहीं था। गो वध नहीं होता था दूध की कमी न थी। इस लिए पड़ोसी राज्य में गोपनियों ने दूध क्या बेचना था।

पता चला है कि अब एक आर्यसमाज को पं० मोहन लाल जी ने लिखा है कि मुझे पांच सौ रुपये दो और सारे नगर में मुनादी करो कि मनीषी नाइट मनाई जावेगी तब मैं आऊंगा। जो व्यक्ति रामलीला वालों से, विश्व हिन्दू परिषद् से, संघ वालों से, सनातन धर्म सभा से जा जाकर कहे कि 'असुर' शब्द के अर्थ (जो ऋषि ने किए हैं) वे तुम्हारे धर्म पर आक्रमण है। तुम इस पर तूफान खड़ा करो। वही व्यक्ति आर्य समाज को पापी पेट के लिए अपनी कमाई का साधन बनावे तथा पत्रों में अपनी विज्ञापन बाजी के लिए वेद प्रचार का घात करे। उसके लिए हम क्या कहें। आर्यो सावधान!

हिन्दी बोलने पर चांटे

हिन्दी भाषी राज्य मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स क्षेत्र में चलने वाले अंग्रेजी माध्यम के स्कूल 'कारमेल' में हिन्दी बोलने पर छोटी-छोटी मासूम, लड़कियों को शिक्षिकाओं द्वारा चांटे मारे जाते हैं और अमानुषिक यातनाएं देकर हिन्दी के खिलाफ छोटे-छोटे बच्चों के दिमाग में जहर भरा जाता है। वैसे तो पिछले कुछ सालों से भोपाल में अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों की बाढ़ सी आ गई है; जिनसे 'दून संस्कृति' का जहर छात्रों की रगों में भी फैल रहा है। इधर स्पेन की सहायता से चलने वाले कैंपियन स्कूल ने अंग्रेजी के प्रसार के साथ साथ धर्मांतरण का खेल भी बड़ी सफाई से खेला है। एक ओर गैर ईसाइयों को भारी फीस वसूल करके लूटा जाता है तो धर्मपरिवर्तन करने वालों को भारी छूट दी जाती है। यहां पर भी हिन्दी बोलने वाले छात्रों को शारीरिक और मानसिक यातनाएं देकर अपमानित किया जाता है।

राज्य के मुख्यमन्त्री हिन्दी के प्रसार की बड़ी-बड़ी बातें जरूर करते हैं पर नाक के नीचे भोपाल में अंग्रेजी किन-किन हथकंडों से फैलाई जा रही है इसे रोकने के लिए वे क्या हकीकत में कुछ करेंगे? क्या कारमेल स्कूल की उस शिक्षिका से जवाब तलब किया जाएगा जिसने मातृभाषा के बारे में नफरत भरे ये शब्द कहे—"हिन्दी बोलने वाली लड़कियों के मुंह से मैले की बदबू आती है।"

राजीव परदेशी, गविंद पुरा, भोपाल

(जनसत्ता से २४-७-८७)

दाखला

प्राज्ञ विशारद, शास्त्री श्रेणियों के लिए ३१ जुलाई १९८७ तक प्रवेश खुला है। तीस रुपये मासिक पर भोजन, दूध, छात्रावास की सुविधा के साथ ही हिन्दी टाईपिंग व संगीत सिखाने का प्रबन्ध।
प्रवेश योग्यता कम से कम मैट्रिक पास।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार की विद्याधिकारी (मैट्रिक अंग्रेजी सहित सभी विषय) में क्रमशः प्रवेश के लिए न्यूनतम योग्यता—कक्षा पांच पास। सम्पर्क करें।

आचार्य—श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय,
करतारपुर, जि० जालन्धर (पंजाब)

नेता कौन हो सकता है

—स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

नेता कौन हो सकता है?—वेद उत्तर देता है कि जिसमें नीचे लिखे गुण न हों, उसे नेता बनने का साहस न करना चाहिए।

प्रथम नेता में सब सौम्य गुणों का विकास होना चाहिए जिसका स्वभाव सरल नहीं, जो विपत्तियों को प्रसन्नतापूर्वक सहन नहीं कर सकता, जिसे कष्ट उसके उच्चासन से डिगा सकता है, वह नेता होने के योग्य नहीं।

लोक-संग्रह का कार्य वही कर सकता है, जो कर्मवीर हो। नेता का धर्म यही नहीं कि वह कर्मवीर हो, किन्तु उसका यह भी कर्त्तव्य है कि कर्महीन पुरुषों को कर्मशील बनाकर उसे सब कर्मवीरों से भी आगे चलने वाला होना चाहिए अर्थात् कर्मवीरों में भी उत्तम कर्मवीर होना चाहिए, फिर उन कर्मों का प्रयोग बुद्धिपूर्वक होना चाहिए।

अपने जीवन के बड़े भाग को बुद्धि की स्वच्छता में लगाने से नेता भी अग्रणी बन सकता है। इस बुद्धि की स्वच्छता के लिए सब विद्याओं का तत्त्वज्ञान होना भी नेता के लिए आवश्यक है। विद्या और तप से आत्मा शुद्ध होती है और मानव परोपकार वृत्ति मे निमग्न होकर कर्म-फल की आकांक्षा से मुक्ति हो जाता है।

नेता उस समय ऊपर उठता है—जब वह कर्म फल की आकांक्षा त्याग देता है, तब वह जनसाधारण पर सुखों की वृष्टि करता है। वे कीर्ति की परवाह नहीं करते, कीर्ति उनके पीछे भागती फिरती है। यह प्रशंसित कीर्ति नेता के काम में सहायक होती है, क्योंकि उसकी उज्ज्वल कीर्ति सुनकर आत्मिक और मानसिक भूख-पिपासा के प्यासे लोग उसकी शरण लेते हैं और सृष्टि में सुख का राज्य लाते हैं।

संसार के नेताओं को इस वेदाज्ञा का मन-वचन-कर्म द्वारा पालन करना चाहिए और यदि उनका जीवन तदनुसार नहीं है तो अपने किए हुए कर्मों के प्रायश्चित्त के लिए एकान्त में बैठना चाहिए।

'मुक्ति सोपान' से

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 पंजि० नं० P RTK 49



ओ३म् सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

वर्ष १४, अङ्क ३६ १४ अगस्त, १९८७ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष में

सुराज्य स्वराज्य का स्थानापन्न नहीं हो सकता

—लेखक यशपाल आर्यबन्धु, आर्य निवास, चन्द्र नगर, मुरादाबाद-२४४००२

कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित, अपने और पराये का पक्षपातशून्य प्रजा पर पिता-माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है। (महर्षि दयानन्द सरस्वती)

सत्यार्थप्रकाश से उद्धृत महर्षि दयानन्द के उपरोक्त वाक्य को बार-बार और ध्यानपूर्वक पढ़ने से महर्षि दयानन्द की राजनीतिक सूझ-बूझ, परिपक्वता और दूरदर्शिता का पता चलता है। महर्षि दयानन्द सुराज्य अर्थात् उत्तम राज्य के प्रबल पक्षपाती थे। उत्तम राज्य के संस्थापनार्थ महर्षि ने अपने अमर ज्ञान कोष सत्यार्थ प्रकाश में एक स्वतन्त्र अध्याय (समुल्लास) लिखा है। अपने इसी छठे समुल्लास में महर्षि उत्तम राज्य और राजा का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि "जिस राजा के राज्य में न चोर, न परस्त्रीगामी, न दुष्ट वचन का बोलने-हारा, न साहसिक डाकू और न दण्डघ्न अर्थात् राजा की आज्ञा का भंग करने वाला है, वह राजा (और राज्य) अतीव श्रेष्ठ है।" इतना ही नहीं महर्षि यहां तक लिखते हैं कि "राजा-प्रजा को अपने सन्तान के सदृश सुख देवे और प्रजा अपने पिता सदृश राजा और राजपुरुषों को जाने। यह बात ठीक है कि राजाओं के राजा किसान आदि परिश्रम करने वाले हैं और राजा उनका रक्षक है। जो प्रजा न हो तो राजा किसका? और राजा न हो तो प्रजा किस की कहलावें? दोनों अपने-अपने काम में स्वतन्त्र और मिले हुए प्रीतियुक्त काम में परतन्त्र रहें। प्रजा की साधारण सम्मति के विरुद्ध राजा वा राजपुरुष न हों, राजा की आज्ञा के विरुद्ध राजपुरुष वा प्रजा न चले।" भला इससे सुन्दर सुराज्य की कोई क्या कल्पना कर सकता है? किन्तु यह किस लिए? महर्षि के ही शब्दों में—"जो प्रजा से स्वतंत्र स्वाधीन राजवर्ग रहे तो राज्य में प्रवेश करके प्रजा का नाश किया किया करें। जिस लिये अकेला राजा स्वाधीन वा उन्मत्त होके प्रजा का नाशक होता है अर्थात् वह राजा प्रजा को खाये जाता है इसलिये किसी एक को राज्य में स्वाधीन न करना चाहिये। जैसे सिंह वा मांसाहारी हृष्ट-पुष्ट पशु को मार कर खा लेते हैं, वैसे स्वतन्त्र राजा प्रजा का नाश करता है अर्थात् किसी को अपने से अधिक न होने देता श्रीमान् को लूट खसूट अन्याय से दण्ड लेके अपना प्रयोजन पूरा करेगा। महर्षि ने राज की सुन्दर व्यवस्था के लिए तीन सभाओं का भी विधान किया है। तात्पर्य यह कि उत्तम राज्य की जो परिकल्पना की जा सकती है उस सबका विधान महर्षि ने अपने इस ग्रन्थ में कर दिया है। इस पर भी महर्षि ने सुराज्य को स्वराज्य पर वरीयता कभी प्रदान नहीं की।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी से भारत को हथिया लेने के पश्चात् महा-रानी विक्टोरिया की ओर से एक विज्ञप्ति भारतवासियों में बांटी गई। जिसमें कहा गया था कि—"अब ईस्ट इण्डिया कम्पनी के हाथ से शासन हमने ले लिया है। अब प्रजा के साथ पक्षपात-रहित, न्याययुक्त, माता-पिता के समान दयापूर्ण शासन होगा।" भारतीय जनता जो कम्पनी के शासन से बहुत उत्पीडित थी, इस विज्ञप्ति से प्रसन्न हो गई। यह स्वाभाविक भी था। उसने शान्ति की सांस ली और प्रभु को धन्यवाद देने लगी। मुसलमानों ने तो अपने सर्वमान्य नेता सर सैयद अहमद खां के नेतृत्व में सर्वथा घुटने ही टेक दिये थे। हिन्दू भी किसी से कम नहीं थे। उन्होंने भी महारानी की प्रशंसा में विरदाव-लियां गानी प्रारम्भ कर दीं। यहां तक कि उसे त्रिजटा का अवतार तक घोषित कर दिया। चारों ओर अंग्रेजी शासन और महारानी की जय जयकार होने लगी। सभी सन्तुष्ट थे सभी शान्त थे किन्तु यदि कोई असन्तुष्ट था, कोई व्याकुल और परेशान था तो एक अकेला ऋषि दयानन्द था। वे इसे स्वतंत्रता प्राप्ति के मार्ग में बड़ी बाधा मानते थे। अतः वे इसका प्रतिकार करने को उतावले हो रहे थे। वे भारत-वासियों को अंग्रेजों की इस कुचाल से सावधान करना चाहते थे और इसके लिए उपयुक्त अवसर की टोह में थे। अन्ततः वह अवसर भी प्रभु कृपा से प्राप्त हो गया, तब जबकि महर्षि सत्यार्थप्रकाश की रचना करने लगे।

उस समय जब स्वराज्य की बात करना मृत्यु को आमंत्रित करना था, महर्षि ने अपने अमर ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश में सबल शब्दों और समवेत स्वर में उद्घोष किया था कि कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत-मतान्तर के आग्रह रहित, अपने पराये का पक्षपातशून्य प्रजा पर पिता-माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है। पाठक विचारें कि क्या उपरोक्त शब्द विक्टोरिया की उपर्युक्त विज्ञप्ति का अक्षरशः प्रतिवाद नहीं? दुर्दान्त अंग्रेजी शासन में भी महारानी की विज्ञप्ति के उत्तर का साहस जुटा पाना महर्षि सरीखे किसी महामानव का ही काम हो सकता है।

हैनरी कैम्पबेल बैनरमैन से वर्षों पूर्व महर्षि ने सुस्पष्ट घोषणा की थी कि सुराज्य स्वराज्य का स्थानापन्न नहीं हो सकता। यद्यपि ब्रिटेन के सुप्रसिद्ध राजनीतिज्ञ जान स्टुअर्ट मिल अपनी पुस्तक 'दी लिबर्टी' में यह भाव व्यक्त कर चुके थे कि सुराज्य कभी स्वराज्य का स्थान नहीं ले सकता, तथापि महर्षि दयानन्द आंग्ल भाषा से अनभिज्ञ होने तथा अपना प्रेरणास्रोत स्वदेशीय होने के कारण मिल से उधार लिये विचार व्यक्त नहीं कर रहे हैं, अपितु अपनी प्रखर प्रज्ञा के आधार पर तथा उत्कट स्वदेशी भावनाओं से प्रेरित होकर महारानी विक्टोरिया की उक्त विज्ञप्ति का प्रतिवाद करने को अत्यन्त आतुर प्रतीत हो रहे थे।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आकाशवाणी रोहतक द्वारा प्रसारित भाषण

क्या वेद मन्त्रों तथा यज्ञ से वर्षा हो सकती है ?

वार्त्ताकार—सुखदेव शास्त्री, महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा, रोहतक

सृष्टि के आदिकाल से ही वैदिक विचारधारा में यज्ञों का बहुत ही महत्त्व माना जाता है। सृष्टि रचना के साथ ही जब वेद ज्ञान का प्रकाश ऋषियों के हृदयों में प्रकाशित हुआ। उन्हीं वेद ज्ञान की उच्च मर्यादाओं एवं परम्पराओं तथा जीवनदायक उपदेशों के आधार पर ही मनुष्य जीवन की आधारशिला रक्खी गई। क्योंकि आदि सृष्टि में यदि ईश्वर मनुष्यों के ज्ञान का विधान न करता तो संसार का कार्य किस प्रकार से चल सकता था। वेद की शिक्षा व्यक्ति, समाज, राष्ट्र की सर्वाङ्गीण उन्नति एवं विकास के लिए तथा इहलौकिक कार्यसिद्धि और पारलौकिक परमार्थ एवं मोक्ष की प्राप्ति के लिए सर्वोत्तम सिद्ध हुई। सारा विश्व वेद ज्ञान से आलोकित था। उसकी शिक्षाओं से प्रभावित था। स्वार्थ का परित्याग करके लोक कल्याण की भावना से सभी जन कार्य किया करते थे। जिन कार्यकलापों एवं गुणों से विश्व का कल्याण होता था, उनका अन्वेषण वेद द्वारा करके सांसारिक जीवन में व्यवहार द्वारा उनका प्रचलन किया जाता था।

उसी समय ही ऋषियों, महर्षियों एवं विश्व के वैदिक विद्वानों ने वेदमन्त्रों के आधार पर ही लोक कल्याण की भावना से प्रेरित होकर यज्ञ की वैज्ञानिक पद्धति का आविष्कार किया। यज्ञ वैदिक प्रक्रिया है, उसमें घी सामग्री समिधाओं का ऋतु के अनुसार चयन किया गया। विविध अवस्थाओं में यज्ञ द्वारा वैयक्तिक तथा सामाजिक रोगों को दूर करने के लिए, हवन के द्वारा ही रोग के कीटाणुओं को नष्ट करने के लिए यज्ञ की चिकित्सा पद्धति का भी निर्माण किया गया। आयुर्वेद की जड़ी-बूटियों का वेद के आधार पर परीक्षण करके बड़े से बड़े तपेदिक, क्षयरोग आदि का निदान-इलाज किया गया। यज्ञ के द्वारा वायु शुद्ध होती है, रोग के कीटाणुओं का नाश होता है, इन दो लाभों के अलावा इसका तीसरा लाभ अनावृष्टि के समय वृष्टि की कमी को दूर करने के उपायों पर भी अन्वेषण किया गया। वह अन्वेषण था—वेदमन्त्रों द्वारा स्वाहाकार करके वर्षा सम्बन्धी घृत सामग्री-समिधाओं द्वारा यज्ञ करके उसी मन्त्र के तद्गत देवता का आह्वान अर्थात् मन्त्रगत विषय विज्ञान का स्मरण करके तुरन्त इन्द्र देवता को प्रसन्न करके वर्षा बरसाना होता था। उन वैदिक ऋषियों महर्षियों ने समाधिस्थ होकर वेद विचार करके यह निश्चय किया कि—

घी के अणु वर्षा बरसाने में अपूर्व साधन हैं। क्योंकि पानी और घी दो ऐसे पदार्थ हैं, जो सर्दी में जम जाते हैं और गर्मी में पिघल जाते हैं। जिस सर्दी में पानी नहीं जमता, उसमें घी जम जाता है। हवन में जब घी के अणु सूक्ष्म होकर ऊपर चढ़ते हैं तो वायु में डोलने वाले बादलों के तल के पास ही पहुंचकर स्वयं जम जाने से उनको भी जमाने और बरसाने का काम देते हैं। पश्चिम के वैज्ञानिक कहते हैं कि "बादलों के नीचे के भाग—अर्थात् तल—में यदि कृत्रिम रीति से सर्दी पहुंचाई जा सके, तो बादल बरस सकता है।" अमेरिका ने इस विषय में खोज आरम्भ की है, और कृत्रिम वर्षा करने में सफलता भी कुछ प्राप्त की है। किन्तु अभी तक वे कृत्रिम वर्षा का सन्तुलन रखने में सफल नहीं हो सके हैं।

इसका अभिप्राय हुआ कि यज्ञ के द्वारा घी के परमाणु जब आसमान में चढ़कर बादलों के तले में पहुँचते हैं तब वहां की ठण्ड के कारण वे जम जाते हैं। घी के परमाणुओं के जमने के कारण उनके साथ सम्पर्क में आने वाले बादलों के वाष्प (भाप) के कण भी घी के ठण्डे परमाणुओं की वजह से भाप की जगह पानी बन जाते हैं, और बरस पड़ते हैं। आसमान में हर समय भाप के रूप में पानी रहता ही है, यज्ञ द्वारा आसमान में चढ़ने वाले घी के परमाणु घी होने के कारण वहां की ठण्ड से जम जाते हैं और साथ लगी सारी वाष्प को ठण्डा कर देते हैं। वाष्प के ठण्डा होने का अर्थ है—पानी बरस पड़ना, इस प्रकार यह यज्ञ की वैज्ञानिक प्रक्रिया वर्षा लाने में सहायक होती है। यह यज्ञ सम्बन्धी वैदिक विज्ञान ही कभी सारे संसार में प्रचलित था।

इस प्रकार मन्त्रों से तथा यज्ञों से घी-सामग्री-समिधा आदि के उचित प्रयोग एवं उपयोग से वर्षा बरसाने, रोगनाशक औषधियों के भाग को सामग्री समिधा के रूप में प्रयोग करके रोगाविष्ट वातावरण को शुद्ध करके अग्नि में आहुति डालने की प्रथा सारे संसार में पाई जाती है। प्लूटार्क वैज्ञानिक का कहना है कि आग से वायु शुद्ध होती है। प्रो० मोक्षमूलर कहते हैं कि यज्ञ से वायु प्रदूषण दूर होता है, यज्ञ की परिपाटी शताब्दी पूर्व स्काटलैण्ड में पाई जाती है। महामारी को दूर करने के लिए आयरलैण्ड और दक्षिणी अमेरिका में भी अग्नि में हवन करने की प्रथा थी। जापान में होम को घोम कहते हैं और मन्दिरों में सुगन्धित द्रव्य जलाते हैं। जर्मनी में भी ऐसा ही होता है। पारसियों के धर्म मन्दिरों में से हवन की सुगन्ध हर समय उठा करती है। संसार भर में सुगन्धित पदार्थों को अग्नि में डालना उन लोगों के अनुभव तथा अन्वेषण पर आधारित है।

यज्ञों के विषय में खोज करने के लिए आज जर्मनी व अमेरिका आदि में अग्निहोत्र युनिवर्सिटियां खुल गई हैं। जो द्रव्य पदार्थ अग्नि में जलाने से रोगनाशक, वायुशोधक, वर्षा नियन्त्रक माने जाते हैं उन पर विद्वानों की खोज जारी है।

हमारे भारतवर्ष में तो आज से लाखों वर्ष पूर्व इस विषय में बड़ा अन्वेषण हो चुका है। ऋषियों ने दैनिक जीवन से लेकर अन्त्येष्टि पर्यन्त प्रत्येक संस्कार में यज्ञ का विधान किया है। दैनिक पांच यज्ञों के करने का आदेश दिया है। यज्ञ के अर्थ वे बहुत ही व्यापक रूप में लेते थे। किन्तु महर्षि याज्ञवल्क्य के अनुसार "यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म" प्रत्येक श्रेष्ठ कार्य को यज्ञ नाम से पुकारा जाता है। इन्हीं महर्षि याज्ञवल्क्य ने अपने अनुपम ग्रन्थ शतपथ में वृष्टियज्ञ के विषय में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा—

"अग्नेर्वै धूमो जायते, धूमात् अभ्रं, अभ्रात् वृष्टिरग्नेर्वा एता जायन्ते। अर्थात् जो हवन के द्रव्य अग्नि में डाले जाते हैं, उनसे धुवां और भाप उत्पन्न होते हैं, क्योंकि अग्नि का यही स्वभाव है कि पदार्थों में प्रवेश करके उनको छिन्न-भिन्न कर देता है, फिर वे हल्के होकर वायु के साथ ऊपर आकाश में चढ़ जाते हैं। उनमें जितना जल का अंश है वह भाप कहलाता है और जो शुष्क है वह पृथ्वी का भाग है इन दोनों के योग का नाम धूम है। जब वे परमाणु मेघमण्डल में वायु के आधार से रहते हैं। वे परस्पर मिलकर बादल होकर उनसे वृष्टि, वृष्टि से औषधि, औषधियों से अन्न, अन्न से धातु, धातुओं से शरीर और शरीर से कर्म बनता है। इस महा वैज्ञानिक महर्षि याज्ञवल्क्य ने वृष्टि यज्ञ के विषय में यह अन्वेषण किया है।

इसी प्रकार राजर्षि मनु भी अपनी खोज के आधार पर आज से अरबों वर्ष पहले लिखते हैं—

अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यक् आदित्यमुपतिष्ठति।
आदित्यात् जायते वृष्टिः, वृष्टेरन्नं ततः प्रजाः॥

अर्थात् अग्नि में डाली हुई घृत सामग्री समिधा आदि की आहुति सम्यक् प्रकार से सूर्य के पास वायु द्वारा पहुंचती है, सूर्य से बादल बनने पर वृष्टि होती है। वृष्टि से अन्न, अन्न से प्रजा का जीवन चलता है।

इसी प्रकार योगिराज श्रीकृष्ण भी अपने अन्वेषण के आधार पर गीता में लिखते हैं—

(शेष पृष्ठ ७ पर)

शराबबन्दी और अकाल

प्रो० शेरसिंह

आज देश के २५१ जिलों में भीषण अकाल है और हरयाणा प्रदेश तो पूरे का पूरा सूखे और अकाल की चपेट में है। हजारों गांवों में पशुओं के लिए ही नहीं, मनुष्यों के पीने के लिए भी पानी नहीं। चारे का भाव एक रुपया किलो हो गया है। इसीलिये आज पशु की कोई कीमत नहीं रही, उसको खरीदने के लिये कोई तैयार नहीं, मुफ्त लेने को भी शायद ही कोई तैयार हो। खरीफ की फसल, बारानी इलाकों में ही नहीं, जहां नहर और ट्यूबवैलों का पानी है वहां भी बहुत कम फसल बच पायेगी। इस अवस्था में किसी प्रकार का ऋण लोगों से वसूल नहीं किया जा सकता, चाहे वह माफी की सीमा में आ गया हो या बाहर। भारत सरकार और राज्य सरकार दोनों को मिलकर इस अकाल की भयंकर स्थिति से जनता और उनके पशुधन को उबारना चाहिये। सरकारी इमदाद के कामों के साथ साथ सस्ते दामों पर चारे और अन्न का प्रबन्ध करना चाहिये। जहां पीने का पानी उपलब्ध नहीं है, वहां किसी प्रकार भी पानी पहुंचाना चाहिये, चाहे नहरों और ट्यूबवैलों से वहां से खोदकर वहां पानी ले जाया जाये, या टैंकरों से पहुंचाया जाये। लोगों की और उनके पशुधन के जीवन की रक्षा करना केन्द्रीय और प्रान्तीय सरकारों की जिम्मेदारी है और उनको अपनी जिम्मेदारी का अहसास करते हुए तुरन्त प्रभावी कदम उठाने चाहियें।

दुःख की बात है कि इस भीषण अकाल से पीडित गरीब किसान और मजदूर ग्राम भी शराब की बोतलें खरीदते हैं और पीते हैं। शराब की दुकान खोलकर लोगों की मेहनत की कमाई को उनसे छीनना, उनकी जेब कुतरना ही कहा जायेगा। आज जब मनुष्य और पशु दाने दाने और तिनके तिनके के मोहताज हैं तब शराब बेचकर पैसा कमाने में कोई नैतिकता है क्या? अकाल पीड़ितों को एक हाथ से सहायता देना और वही दूसरे हाथ से शराब बेचकर वह पैसा वापिस लेने की नीयत रखना क्या जनता के साथ क्रूर मजाक नहीं है? क्या सरकार को कम से कम जब तक लोग अकाल से पीड़ित हैं, शराब की दुकानें बन्द नहीं कर देनी चाहिये?

हम तो चाहते हैं शराब के ठेके गांवों तथा शहरों से हमेशा के लिये समाप्त करदें। ऐसा करने से प्राकृतिक विपदाओं का मुकाबला करने की क्षमता लोगों में पैदा हो सकेगी और सरकार की थोड़ी मदद मिलने पर भी लोग आपत्ति का सफलता से मुकाबला कर सकेंगे।

समय आ गया है कि हरयाणा की जनता जागे, और अपने, अपने बच्चों तथा परिवार, प्रदेश और राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य के लिये शराब जैसी लानत से सदा सदा के लिये छुटकारा पा ले। जनता संगठित होकर सरकार को इस बात के लिये बाध्य करे कि वह शराब बन्दी पूर्ण रूप से हरयाणा प्रदेश में लागू कर दे।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस भयंकर विपत्ति से उबरने के लिये, हरयाणा की जनता अपनी जेब के बचे खुचे पैसों की सुरक्षा करेगी, और शराब के व्यापारियों (दुर्भाग्य से आज उसमें हमारी सरकारें भी शामिल हैं) के हाथों अपनी जेब नहीं कटने देगी।

अन्तर्जातीय विवाह संस्कार

गत जुलाई माह में आर्यसमाज मन्दिर, जीन्द शहर में जयदेव लखनपाल सुपुत्र श्री जमनादास लखनपाल, चक्रवर्ती सुपुत्री श्री हरिगोपाल चक्रवर्ती का अन्तर्जातीय विवाह संस्कार वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। इसमें लड़की के भाई-भावज समस्त परिवार उपस्थित था। वे इस वैदिक पद्धति से विवाह सस्कार को देखकर अति प्रसन्न हुए। इस समय दोनों पक्षों की ओर से आर्यसमाज को एक सौ एक रुपये दान रूप में दिये गये।

—प्रो० इन्द्रदेव, मन्त्री।

अकालतख्त और अकाली दल पीछा छुड़ाने लगे

—प्रो० शेरसिंह, अध्यक्ष हरयाणा रक्षा वाहिनी

पिछले सप्ताह अमृतसर स्वर्ण मन्दिर में अकाल तख्त के जत्थेदार ने एक सम्मेलन बुलाया। अकाल तख्त और अकाली दल चाहते थे कि वे अकाली दल और सिख संगतों से फैसला करवाने और सिखों की ओर से वे अपना सर्वसम्मत मन्तव्य लेकर भारत सरकार से बढ़ते हुए उग्रवाद को रोकने के नाम पर अपनी सब बातें मनवा ले। अकाली दल के नेता तो उसमें बोलने का साहस ही नहीं कर सके, अकाल तख्त के जत्थेदार प्रो० दर्शन सिंह रागी ने उत्तर भारत में एक स्वायत्तता प्राप्त प्रदेश (जिसमें सिखों की चमक उभरे) सिखों को देने की मांग की। उग्रवादियों ने उनकी कोई बात मानने से इन्कार करते हुए खालिस्तान की मांग पर डटे रहने का संकल्प पारित किया। प्रो० दर्शन सिंह रागी परिवार सहित लम्बी छुट्टी पर अपने गांव में चले गये।

उन्होंने अपना पल्ला झाड़ लिया और उनका अनुसरण करते हुए संयुक्त अकाली दल ने भी सिखों के मामले में दखल न देने का फैसला कर लिया। अभी यह नहीं कहा जा सकता कि उन्होंने ये कदम सरकार पर दबाव डालने के लिये उठाये हैं जिससे कभी सौदे की बात चले तो अपनी शर्तों पर समझौता करा लेवें, या उन्होंने उग्रवादियों के सामने हथियार डाल दिये हैं।

अकालियों के ये हथकण्डे खेल सिख सम्प्रदाय को अपने सम्प्रदाय सम्बंधी कुछ मांगों के लिये ही नहीं, वे चण्डीगढ के बदले हरयाणा को दिये जाने वाले फाजिल्का, अबोहर के इलाकों तथा पानी के बटवारे के मामलों में भी, इसी दबाव में मनमाने ढंग से अपनी बात मनवा लेना चाहते हैं।

भारत सरकार को यह बात स्पष्ट करनी पड़ेगी कि जहाँ तक इलाकों के लेनदेन से और रावी ब्यास के पानी के बटवारे का सवाल है, वह हरयाणा के साथ पूर्ण रूप से न्याय करके ही हल किया जा सकता है, इन बातों का अकालियों की दूसरी बातों से कोई सम्बन्ध नहीं है। जहां तक उग्रवाद को रोकने और एक समुदाय के लोगों की या देश प्रेमी सिखों की दिन दहाड़े रोजाना होने वाली हत्याओं को रोकने की बात है, उस मामले पर भारत सरकार को पूरी तैयारी के साथ मजबूत कदम उठाने होंगे, सुरक्षा पट्टी का निर्णय करना होगा और बिना झिझक के सेना का भी इस्तेमाल करना होगा। अकालियों के किसी भी गुट, चाहे सिरफिरे युवक हों या और कोई गुट से बात करने पर विचार तभी किया जाना चाहिये जब उनके मन में बात करने की उतनी ही अटूट इच्छा जाग उठे, जितनी सरकार के मन में है। आज के वातावरण में वार्ता की चर्चा चलना ही उग्रवादियों के हौसले बढ़ायेगी और समस्या अधिक से अधिक पेचीदा होती चली जायेगी।

वर्षेष्टि महायज्ञ सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा ३ से ६ अगस्त, ८७ तक सिद्धान्ती भवन के एक कमरे में जिसकी छत अभी तक नहीं दी गई है, वर्षेष्टि महायज्ञ ईश्वर की महान् कृपा से सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ है। ३ अगस्त को प्रात ६-५० पर इस महायज्ञ का शुभारम्भ स्वामी योगानन्द जी द्वारा हुआ। यज्ञ में ब्रह्मा का स्थान यज्ञ योग ज्योति के सम्पादक पं० विद्याव्रत जी शास्त्री ने ग्रहण किया। इस अवसर पर सभा के उपप्रधान म० भरतसिंह जी, सभा मन्त्री श्री वेदव्रत जी शास्त्री सभा के वेदप्रचार विभाग के अधिष्ठाता श्री रघुवीरसिंह आदि अधिकारी तथा सभा के उपदेशक एवं भजनोपदेशक उपस्थित थे। यज्ञ का संयोजन सभा उपदेशक पं० अर्जुनदेव आर्य सिद्धान्त शास्त्री ने बहुत ही लगन के साथ किया। पं० विद्याव्रत जी शास्त्री ने बहुत ही प्रभावशाली ढंग से वृष्टि यज्ञ के मन्त्रों का उच्चारण मधुर भाषा में किया। वैदिक मन्त्रों का सरल भाषा में अर्थ करके ईश्वर से शीघ्र वर्षा करने की प्रार्थना प्रतिदिन करवाते थे। ईश्वर की महान् कृपा से ६ अगस्त को दोपहर बाद रोहतक तथा हरयाणा के अनेक स्थानों पर हल्की वर्षा (बोछार) करके वर्षा का शुभ संकेत हुआ। ३, ४ मास से गर्मी के प्रकोप से कुछ राहत मिली। इस प्रकार यज्ञ करने वालों का उत्साह बढ़ा।

इसी प्रकार वर्षेष्टि यज्ञों का आयोजन आर्यजगत् के त्यागी तपस्वी सन्यासी श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने झज्जर, चरखी दादरी, स्वरूपगढ तथा निदाना (चौबीसी) आदि में करवाया। फिरोजपुर झिरका जि० गुडगांव, जीन्द, माडल टाउन पानीपत आदि स्थानों पर भी वर्षेष्टि यज्ञ सम्पन्न होने के समाचार सभा कार्यालय में प्राप्त हुए हैं।

९ अगस्त को श्रावणी तथा रक्षाबन्धन का पर्व भी प्रायः सभी आर्यसमाजों में उत्साह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर विशेषयज्ञों का आयोजन करके वर्षा करने की प्रार्थना की गई। इसी दिन पूर्ण स्वतन्त्रता की घोषणा करने की ४०वी वर्षगांठ भी सरकारी स्तर पर मनाई गई। ९ अगस्त को ही श्रावणमास की पूर्णिमा भी थी। रोहतक में ९ अगस्त को महायज्ञ की पूर्णाहुति में भाग लेने के लिए सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी भी दिल्ली से पधारे। इससे पूर्व दो बार श्री स्वामी ओमानन्द जी भी मार्गदर्शन करने रोहतक पधारे। वैदिक संन्यास आश्रम गाजियाबाद के अधिष्ठाता श्री स्वामी प्रेमानन्द जी महाराज ने भी स्वयं रोहतक यज्ञ में पधारकर यज्ञ के कार्यकर्त्ताओं को अपना आशीर्वाद दिया। परम-पिता परमात्मा की कृपा से ९ अगस्त को दोपहर बाद ६ बजे दिल्ली के चारों ओर एक घण्टे तक वर्षा हुई।

इस प्रकार वर्षेष्टि महायज्ञ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस यज्ञ को सफल करने के लिए रोहतक के आर्य नर-नारियों तथा सभा के उपदेशक प० सुखदेव शास्त्री, पं० महेन्द्रसिंह शास्त्री, प० सुरेशकुमार शास्त्री, पं कुलवन्तराय आर्य, पं० धर्मवीर विद्यावाचस्पति तथा सभा के भजनोपदेशक पं० जयपाल आर्य, पं० सीताराम आर्य, पं० ईश्वरसिंह तूफान, पं० मुरारीलाल बेचैन तथा स्वामी देवानन्द जी आदि ने यज्ञ में भाग लिया। आकाशवाणी के रोहतक केन्द्र से शनिवार को ८ बजे रात्रि को 'हरयाणा दर्शन' के कार्यक्रम में यज्ञ की कार्यवाही को प्रसारित किया।

वृष्टि यज्ञ के लिए दान

१) सीसराम गणक, माजरा दूबलधन १३०/- २) विद्याव्रत जी शास्त्री १००/- ३) अर्जुनदेव सिद्धान्त शास्त्री १००/- ४) आचार्य वेदव्रत जी शास्त्री १००/- ५) महाशय गुरुदत्त जी १०१/- ६) प्रो० शेरसिंह १०१/- ७) डा० हरसरूप सिंह १००/- ८) सुरेन्द्र कुमार १०१/- ९) कुलवन्त राय ५१/- १०) महेश सु० बद्रीप्रसाद ३१/- ११) डा० रणधीर सिंह ३१/- १२) केदार सिंह २१/- १३) पूर्णसिंह फरमाणा २१/- १४) लालचन्द गढ़ी बोहर २०/- १५) लक्ष्मीबाई २०/- १६) सुरेश कुमार २१/- १७) महाशय भरतसिंह ११/- १८) सुरेश कुमार आचार्य प्रेस ११/- १९) वैद्य भरतसिंह ११/- २०) मा० वेदप्रकाश जी ११/- २१) गुप्त दान १०/- २२) नरेन्द्र १०/- २३) गुप्तदान १०/- २४) मा० राम प्रकाश १०/- २५) ब्र० वेदव्रत १०/- २६) गुप्तदान १०/- २७) डा० सरूपसिंह बलियाणा १०/- २८) मगनाराम ५/- २९) शिशपाल ढोलक वादक ५/- ३०) लक्ष्मी जी ५/- ३१) एक किलो सामग्री तथा ५/- ३२) मा० रणजीत सिंह ५/- ३३) हवासिंह की माताजी ५/-।

आर्यसमाज मित्रोल ओरंगाबाद जि० फरीदाबाद में वेदप्रचार सप्ताह सम्पन्न

२५ से ३१ जुलाई तक वेदप्रचार सप्ताह में श्री स्वामी प्रेमानन्द जी के वेदप्रवचन तथा पं० शोभाराम प्रेमी, पं० भजनलाल आर्य तथा स्वामी देवानन्द जी के भजन हुए। इस अवसर पर प्रातः यज्ञ पर अनेक नवयुवकों ने यज्ञोपवीत धारण किया तथा आर्यसमाज के कार्यों में सहयोग करने का व्रत लिया।

—मन्त्री

दर्शनाचार्य पं० उदयवीर जी शास्त्री को पक्षाघात

सुविख्यात आर्य विद्वान् एवं अमर शहीद सरदार भगतसिंह के गुरु सांख्ययोगाचार्य पं० उदयवीर जी शास्त्री को आज जवाहर लाल नेहरु अस्पताल, अजमेर में पक्षाघात के कारण भर्ती कराया गया है। माननीय शास्त्री जी की आयु इस समय ९३ वर्ष की है। वे कुछ समय से पक्षाघातग्रस्त हुई अपनी धर्मपत्नी सहित अजमेर में आकर स्वकन्या श्रीमती उषाजी के यहां आकर रह रहे थे। ऐसी अवस्था में भी उनका स्वास्थ्य अनुकरणीय चल रहा था। अकस्मात् दिनांक ४-८-१९८७ को प्रातःकाल संध्या करते समय उन्हें पैरों में सुन-सुन मालूम हुई और फिर दायें भाग में संज्ञाशून्यता अनुभव की। तत्काल उक्त अस्पताल में भर्ती कराया गया। इलाज जारी है। उनके दौहित्र उनकी सेवा कर रहे हैं। रुग्णता का समाचार मिलते ही स्थानीय परोपकारिणी सभा के सदस्य उनका कुशलक्षेम पूछने पहुँचे। ऐसे मूर्धन्य विद्वान् के इस प्रकार रुग्ण हो जाने से समस्त आर्यजगत् व इष्ट मित्रों को दुःख पहुँचना स्वाभाविक है। परमेश्वर शीघ्र उन्हें नीरोगता प्रदान करें।

भवदीय :

धर्मवीर सम्पादक परोपकारी, अजमेर

श्यामलाल स्मारक आर्य शिक्षण संस्था उदगीर (महाराष्ट्र)

श्यामलाल स्मारक आर्य शिक्षण संस्था, उदगीर (महाराष्ट्र) द्वारा संचालित श्यामलाल अभियांत्रिको महाविद्यालय (मराठवाडा विश्व विद्यालय औरंगाबाद से संलग्न) तथा श्यामलाल तन्त्र निकेतन (महाराष्ट्र शासन द्वारा मान्य) गत ४ वर्षों से सुचारु रूप से कार्यरत है।

विशुद्ध वैदिक विचारधारा को लेकर समस्त भारत में तन्त्र शिक्षा के क्षेत्र में यह एकमात्र आर्य शिक्षण संस्था है।

हमारी हार्दिक अभिलाषा है कि वैदिक विचारों से प्रेरित परिवारों के छात्र, छात्रायें तथा अन्य भी इस इंजिनीयरिंग कॉलेज व पॉलिटेक्निक में प्रवेश लें।

इस संदर्भ में आप व्यक्तिगत सम्पर्क ३१ अगस्त, ८७ तक कॉलेज कार्यालय, उदगीर में स्थापित करें।

डिग्री कोर्स के विषय	डिप्लोमा के विषय
कन्स्ट्रक्शन इजीनियरिंग	कन्स्ट्रक्शन टेक्नॉलॉजी [Civil]
प्रॉडक्शन ,,	प्रॉडक्शन [Mech]
एलॉक्ट्रॉनिक्स ,,	डेरी इन्जीनियरिंग
	फूड टेक्नॉलॉजी

रक्षा बन्धन एवं श्रावणी पर्व

प्रति वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी श्रावणी पर्व एवं रक्षा बन्धन का पर्व ९ अगस्त को गुरुकुल झज्जर की भव्ययज्ञशाला में मनाया गया। इस अवसर पर गुरुकुल वासियों के अतिरिक्त निकट के आर्यसमाजों के कार्यकर्त्ता भी उपस्थित थे। श्री स्वामी ओ३मानन्द की अध्यक्षता में यज्ञ के पश्चात् नये यज्ञोपवीत धारण करवाये गये। सभा के भजनोपदेशक स्वामी देवानन्द जी ने ९ अगस्त को वेद प्रचार की महिमा के गीत सुनाये। श्री स्वामी ओमानन्द जी ने उपस्थित आर्यजनों को प्रतिदिन वेद का स्वाध्याय तथा यज्ञ करने की प्रेरणा की। इस अवसर पर सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह ने भी आर्य नर नारियों को वेद प्रचार कार्यों में सहयोग एवं शराब बन्दी आन्दोलन को सफल करने के लिए पंचायतों से सितम्बर मास में पूर्व प्रस्ताव करवाकर सरकार को भेजने का अनुरोध किया। राष्ट्र रक्षा हेतु राष्ट्र में शत्रुओं से सावधान रहने के लिए सचेत किया।

—केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष

स्वतंत्रता का दिवस महान्

—राधेश्याम आर्य

अमर रहे युग-युग तक पावन,
स्वतंत्रता का दिवस महान्।
यह भारत माता का गौरव,
यह है भारत का अभिमान।

इसी स्वतंत्रता की वेदी पर,
दिये शहीदों ने बलिदान।
भगत, सुभाष ने, सावरकर ने,
रखा था माता की आन।

दयानन्द जैसे ऋषियों ने,
इसके हित ही अलख जगाया।
पुनर्जागरण किया राष्ट्र का,
स्वतंत्रता का बिगुल बजाया।

किए समर्पित सब कुछ अपना,
लाखों मां के अमर सपूत।
गांधी, तिलक, गोखले, मोती,
बने स्वतंत्रता के ये दूत।

उसी सुपावन स्वतंत्रता पर,
संकट के घन छाए हैं।
उग्रवाद-आतंकवाद के,
बादल ही घिर आए हैं।

आपस का है बढ़ा वैमनस्य,
आपस में सब लड़ते हैं।
भाई के हत्यारे बनकर,
भाई-भाई मरते हैं।

किंकर्त्तव्यविमूढ बना है,
आज देश का यह शासन।
चकनाचूर हुआ है सहसा-
समस्त राष्ट्र का आज प्रशासन।

आज राष्ट्र की अखण्डता भी,
संकट से है ग्रस्त हुई।
भारत की धरती पापों से,
अनाचार से त्रस्त हुई।

स्वतंत्रता की रक्षा का है,
भार हमारे कंधों पर।
मातृभूमि की पूर्ण सुरक्षा-
टिकी हमारे कंधों पर।

आओ! वीर सपूतो! आओ!!
पावन ले लें हम संकल्प।
मातृभूमि के लिए हमारा
सब कुछ अर्पित, यही विकल्प॥

हा ! स्वामी वेदानन्द जी वेदवागीश

दिनांक ७-५-८७ के "सर्वहितकारी" एवं २८-६-८७ के "सार्वदेशिक साप्ताहिक" में पूज्य स्वामी वेदानन्द जी वेदवागीश महाराज के शरीर त्याग का समाचार जानकर बहुत दुःख हुआ। स्वामी जी आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वानों में एक थे। वे न केवल वेद, व्याकरण एवं निरुक्त आदि अनेक शास्त्रों के उच्चकोटि के विद्वान् थे अपितु एक सच्चे व पहुँचे हुए उपासक योगाभ्यासी भी थे। उन्होंने सारा जीवन आर्यसमाज के लिये सुयोग्य विद्वान् तैयार करने में लगा दिया। वे श्री गुरुकुल चित्तौड़गढ़ के सर्वप्रथम स्नातक थे। स्नातक बनने के बाद वे श्री गुरुकुल चित्तौड़गढ़, उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर, गुरुकुल महाविद्यालय झज्जर आदि संस्थाओं में उच्च पदों पर रहते हुए लगातार कई-कई वर्षों तक महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित आर्ष प्रणाली का पूर्ण सहृदयता एवं विद्वत्ता से अध्यापन करते रहे। उन्होंने आत्मानन्द जीवन ज्योति, सच्चे गुरु और पारखी स्वस्थवृत्तम्, अयमात्माणुर्वा, विमुर्वा, गीताविवेकः, तत्त्वबोध, सामयिक समाधान, नामरूपरूपिका, नामसिद्धिसाधकः आदि ग्रन्थ रचकर सत्साहित्य की भी सेवा की है। वे गुरुकुल झज्जर से प्रकाशित होने वाले मासिक पत्र सुधारक के कई वर्षों तक सम्पादक रहे। स्वामी जी के जीवन की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है कि उन्होंने २० वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित आर्षप्रणाली के प्रचार-प्रसार के लिये श्रीमद्दयानन्दार्ष विद्यापीठ की स्थापना में अपना सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण योगदान किया। इस विद्यापीठ के माध्यम से हजारों छात्र-छात्राएं शास्त्री, आचार्य परीक्षाएं उत्तीर्ण कर प्रतिष्ठित पदों पर कार्यरत हैं। आज इस विद्यापीठ से अनेक गुरुकुल सम्बद्ध हैं तथा यह विद्यापीठ महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बद्ध है। इस महत्त्वपूर्ण कार्य को करके स्वामी जी ने महर्षि स्वामी दयानन्द की गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की प्रासंगिकता को साकार रूप दिया जिसके लिये आर्यजगत् सदा उनका ऋणी रहेगा। मैं अपना सौभाग्य मानता हूँ कि मुझे ऐसे उच्चकोटि के गुरु से दो अक्षर सीखने का अवसर मिला। किन्तु साथ ही मेरा दुर्भाग्य भी रहा कि मैं उनके अन्तिम दर्शन तक नहीं कर सका, ईश्वर का विधान प्रबल है, जैसा वह चाहता है वैसा ही होता है। गुरुवर के चरणों में अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए कहना चाहता हूं कि आज उनका अभाव न केवल आर्यसमाज की अपूरणीय क्षति है अपितु सारे संस्कृतजगत् की बहुत बड़ी हानि है। हम उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि तभी दे सकते हैं जब हम अपने और दूसरों के अधिक से अधिक बच्चों व बच्चियों को उपदेशक विद्यालयों एवं गुरुकुलों में भेजकर उन्हें विद्वान् बनायेंगे तथा संस्कृत के प्रचार प्रसार में अपने जीवन को लगा दंगे। स्वामीजी के सैकड़ों शिष्य हैं जो वैदिक धर्म और संस्कृत-संस्कृति के प्रचार में लगे हुए हैं। स्वामी जी जीवन के अन्तिम तीन वर्ष गुरुकुल गौतम नगर, नयी दिल्ली में रहे।

प्रकाशचन्द्र वेदालङ्कार, व्याख्याता
केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ
जयपुर—१.

श्रावणी उपाकर्म पर वेद प्रचार-आयोजन

आर्यसमाज मन्दिर जीन्द शहर में ६, ७, ८, ९ अगस्त को वेद प्रचार के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उसमें गुरुकुल कुरुक्षेत्र के आचार्य श्री देवव्रत जी मुख्य वेद-कथा वाचक थे। श्री सहदेव जी बेधड़क एवं श्री रामरख जी भजनोपदेशक ने अपने मधुर भजनों के माध्यम से कार्यक्रम को सफल बनाने में पूर्ण योगदान दिया। श्रद्धेय आचार्य देवव्रत जी ने वैदिक सार्वभौम यज्ञ-सिद्धान्तों, गृहस्थाश्रम धर्म तथा अन्य सामाजिक जीवनोपयोगी वेदोपदेशों द्वारा अमृतवर्षा की। समस्त आर्यों ने इस कार्यक्रम में बढ़ चढ़कर भाग लिया।

—प्रो० इन्द्रदेव शास्त्री,
मन्त्री आर्यसमाज जीन्द शहर।

नित यज्ञ करो

प्रस्तुतकर्ता—मुरारीलाल बेचैन

मन का अश्व संभाल, लाल नित यज्ञ करो
ऋषियों का आदेश पाल, नित यज्ञ करो

यज्ञ जिन्दगी को जीने के योग्य बना देता है
सब उपकरणों को अपने उपभोग्य बना देता है
दान देवपूजा संगतिकरण है मर्म यज्ञ का
सब को सब का भाग मिले ये ही है धर्म यज्ञ का
हंस-हंस समिधा डाल-डाल नित यज्ञ करो
ऋषियों का आदेश पाल नित यज्ञ करो

अग्निदेव के मुख में जो कुछ भी पदार्थ जाता है
भेद भाव के बिना हर इक प्राणी उसको पाता है
वातावरण सुगन्धित होता मन प्रसन्न होता है
हंसते हैं पर्जन्य धरा पर खूब अन्न होता है
वसुधा हो खुशहाल-लाल नित यज्ञ करो
ऋषियों का आदेश पाल नित यज्ञ करो

यज्ञ कवच है सदा पाप विफल करता है
यज्ञ देव सकल्प हृदय का सदा सफल करता है
मन के मानसरोवर का तल जल निर्मल होता है
यज्ञ करो तो हर इक आंसू गंगाजल होता है
लौट जाये कंकाल-काल नित यज्ञ करो
ऋषियों का आदेश पाल, नित यज्ञ करो

बुद्धिविधायक का शांतिप्रदायक गायक नायक शुभका
मेधम प्रज्ञा पोषक, नाशक दुर्मति और अशुभ का
है सन्निहित कल्पना इसमें सौ समाजवादों की
जलती है होलिका इसी में सारे अवसादों की
कभी नियम मत टाल-टाल नित यज्ञ करो
ऋषियों का आदेश पाल नित यज्ञ करो

अपने नेताओं से मुझ को सिर्फ यही कहना है
यज्ञ करे यदि दोष प्रदूषण जरा नहीं रहना है
हर समस्या का निदान है केवल एक यज्ञ से
हो प्रसन्न भगवान् यहां पर निश्चय एक यज्ञ से
क्यों होते बेहाल-हाल नित यज्ञ करो
ऋषियों का आदेश पाल नित यज्ञ करो

यज्ञ किए कुत्सित कुबुद्धि झट से प्रबुद्ध होती है
मन का दर्पण निर्मल हो आत्मा शुद्ध होती है
मावस भी पूनम बनती सिसकी सरगम होती है
मरघट भी पनघट होता फिर आंख नानम होती है
कटे जाल जंजाल-नित यज्ञ करो
ऋषियों का आदेश पाल नित यज्ञ करो

अण-अण कण-कण में क्षण-क्षण नित यज्ञ हुआ करता है
जर्रा जर्रा यजमानों के लिए दुआ करता है
सृष्टि नियम से बंधी मनीषी नित्य यज्ञ करती है
दुनिया की खाली झोली वरदानों से भरती है
हल हों सभी सवाल लाल नित यज्ञ करो
ऋषियों को आदेश पाल नित यज्ञ करो

शानदार परीक्षा परिणाम

दयानन्द मिडल स्कूल, नरायणगढ़, जि० अम्बाला का आठवीं कक्षा का परिणाम। 93% रहा, इसी स्कूल की कु० मीनाक्षी कालड़ा नारायणगढ़ उपमण्डल में सर्वप्रथम रही।

—प्रबन्धक

(पृष्ठ २ का शेष)

यज्ञात् भवति पर्जन्यः, पर्जन्यात् अन्नसम्भवः ।
अन्नाद् भवन्ति भूतानि, यज्ञः कर्मसमुद्भवः ॥

अर्थात् यज्ञ से बादल होते हैं, बादल से वर्षा, वर्षा से अन्न पैदा होता है। अन्न से प्राणियों का जीवन होता है। यज्ञ सत्कर्मों से होता है।

इसी प्रकार आधुनिक युग में यज्ञों के पुनः प्रणेता महर्षि दयानन्द सरस्वती भी जिन्होंने नष्ट हुई यज्ञ प्रणाली को पुनरुज्जीवित किया था उन्होंने भी अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में हवन की वैज्ञानिकता पर होम होता है वहां से दूर देश में स्थित पुरुष के नासिका से सुगन्ध का ग्रहण होता है वैसे दुर्गन्ध का भी। यज्ञिय अग्नि का यह सामर्थ्य है कि—वह वायु और दुर्गन्धयुक्त पदार्थों को छिन्न-भिन्न और हल्का करके बाहर निकालकर पवित्र वायु का प्रवेश कर देता है। महर्षि दयानन्द भारतीय इतिहास को स्मरण करते हुए कहते हैं—इसीलिए आर्यवर शिरोमणि महाशय ऋषि, महर्षि, राजे महाराजे लोग बहुत सा होम करते और कराते थे। जब तक इस होम करने का प्रचार रहा, तब तक आर्यावर्त्त देश रोगों से रहित और सुखों से पूरित था। अब भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जाए।

महर्षि दयानन्द ने प्रत्येक व्यक्ति के लिए सिर्फ अपने घर में ही यज्ञ करने की बात नहीं कही, किन्तु सार्वजनिक यज्ञ करने की भी बात कही है। जब घर-घर में नित्य यज्ञ हों और सामूहिक रूप में बड़े-बड़े यज्ञ हों, तब आध्यात्मिक वातावरण ही पवित्र नहीं होता किन्तु सम्पूर्ण देश का भौतिक वातावरण भी शुद्ध पवित्र वायु से भर जाता है। यज्ञ में जो घृत-सामग्री-समिधा आदि डाली जाती हैं उन पर विचार करने से वर्षा अवश्यमेव होती है।

वर्षा यज्ञ की सामग्री—यह होनी चाहिए। १- गूगल, २- चन्दन ३- चिरायता, ४- कुटकी, ५-ब्राह्मी, ६- चित्रक, ७- बच, ८-पीली सरसों, ९- इन्द्रजौ, १०-तालमखाना, ११-बड़ी इलायची, १२-खजूर, १३-केला, १४- बादाम, १५- अखरोट, १६- बड़ी मुनक्का, १७- भोज पत्र, १८-दूर्वा, १९- धमासा, २०- पंचकंटकारियाँ, २१-कालाबासा, २२-अमरबेल, २३- गिलोय, २४- अपामार्ग, २५- गुड़, २६-शहद, २७-काले तिल, २८- तेल गोला, इस सामग्री को ठीक अनुपात में याज्ञिक अपने सामने बनवाकर हिसाब से यज्ञ करे तो अवश्यमेव वर्षा होगी। ये सारी चीजें १९७१ में और १९८६ में अनुभव की गई हैं। घी शुद्ध गाय का अथवा भैंस का लेना चाहिए। चावल पकाकर, दूध व दही भी सामग्री में डालना चाहिए। सामग्री में घी डालकर उसे ठीक कर लेना चाहिए, समिधा-बड, पीपल-आम, जांटी, ढाक, गूलर की लेकर करकी लकड़ी की अधिकता रखनी चाहिए। करकी लकड़ी यज्ञ में डालने से अवश्य वर्षा होती है। भारतीय पदार्थवेत्ता वैज्ञानिकों ने भी इस लकड़ी पर अन्वेषण किया है। उन्होंने खोज करने पर पता लगाया कि यदि इस की राख को भी आकाश में बिखेर दिया जाय तो भी वर्षा की सम्भावना बढ़ जाती है ओक्सीजन गैस पैदा होगी।

इस प्रकार यज्ञ वेदी, यज्ञ सामग्री, यज्ञ समिधा आदि के तैयार कर लेने पर वेदों के विद्वान् वेदों के वृष्टियज्ञ के मन्त्रों से देवता का आह्वान करे, इन्द्र देव प्रसन्न होकर वर्षा करेंगे। वेद मन्त्रों के उच्चारण से आकाश में स्वर लहरी आ जाएंगी। उनसे सारा वातावरण मधुरित प्रेरित, प्रभावित होकर वायु मण्डल में मेघ घुमड़ कर वर्षा करेंगे। वेद मन्त्रों से भावना और प्रेरणा से प्रत्येक के जीवन में उत्साह का स्पन्दन होगा। चारों ओर रिमझिम करके वर्षा बरसेगी।

हम परमात्मा से प्रार्थना करेंगे—

काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी शस्यशालिनी।
देशोयं क्षोभरहितो मानवाः सन्तु निर्भयाः ॥

अर्थात् ठीक समय पर बादल बरसे, पृथ्वी अन्न फल वाली हो, सारे देश दुःख रहित हो, सभी मनुष्य निर्भय हों। सर्वे भवन्तु सुखिनः।

यज्ञ-महिमा

प्रस्तुतकर्त्ता:—मुरारीलाल बेचैन

होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से,
जल्दी प्रसन्न होते हैं भगवान् यज्ञ से।
ऋषियों ने ऊंचा माना है स्थान यज्ञ का।
भगवान् का यह यज्ञ है भगवान् यज्ञ का।
जाता है देव लोक में इन्सान यज्ञ से ॥१॥

जो कुछ भी डालो यज्ञ में, है याते अग्निदेव।
इक-इक के बदले सौ-सौ दिलाते हैं अग्निदेव।
बादल बनाकर पानी भी बरसाते अग्निदेव।
पैदा अनाज करते हैं भगवान् यज्ञ से ॥२॥

होता है कन्यादान भी इसी ही के सामने।
पूजा है इसको कृष्ण ने भगवान् राम ने।
शक्ति व तेज है भरा इस शुद्ध नाम से।
मिलता है राज कीर्ति सन्तान यज्ञ से ॥३॥

इसका पुजारी कोई पराजित नहीं होता।
इसके पुजारी को कभी भी भय नहीं होता।
होती हैं सारी मुश्किलें आसान यज्ञ से।
जल्दी प्रसन्न होते हैं, भगवान् यज्ञ से ॥४॥

चाहे अमीर है, कोई चाहे गरीब है।
जो नित्य यज्ञ करता वही खुशनसीब है।
उपकारी मनुष्य बनता है महान् यज्ञ से।
जल्दी प्रसन्न होते हैं भगवान् यज्ञ से ॥५॥

आर्यसमाज खरावर जि० रोहतक में वेदप्रचार

३० जुलाई से २ अगस्त तक सभा के भजनोपदेशक पं० ईश्वरसिंह तूफान ने ग्राम खरावर में भजनों द्वारा वेदप्रचार किया। ग्राम के नर नारी भारी संख्या में पहुच कर प्रचार का लाभ उठाते रहे। भजनों द्वारा शराब तथा दहेज आदि सामाजिक बुराइयों का खण्डन किया गया। श्री सज्जनसिंह प्रधान, चौ० बलबीरसिंह लम्बरदार, श्री दयाचन्द आर्य मन्त्री, श्री रखेराम मलिक तथा डा० राजसिंह आर्य ने प्रचार को सफल करने में पूरा योगदान किया।

(पृष्ठ १ का शेष)

उस समय स्वदेशीय राज्य अथवा स्वराज्य की बात कहना कि जब देश राजनीतिक दृष्टि से नितान्त अपरिपक्व था, महर्षि की राजनीतिक परिपक्वता तथा उत्कट राष्ट्रीयता का ही द्योतक कहा जायेगा। वस्तुतः महर्षि बहुविध गुणों से युक्त परकीय शासन को स्वराज्य की तुलना में स्वल्प महत्त्व भी नहीं देते। यह उनकी अद्भुत क्रान्तदर्शिता है। महर्षि के इस वाक्य से यह सिद्ध होता है कि वे भले ही राजनीतिक न हों, पर वे राजनीतिक चिन्तक अवश्य थे। उनका चिन्तन आधुनिक चिन्तकों से किसी भी दशा में न्यून नहीं था। जिस समय देश के सभी अग्रगण्य नेता अंग्रेजी शासन को एक वरदान बता रहे थे, दयानन्द ही एक अकेला नेता ऐसा महापुरुष था जो स्वराज्य के स्वर भारतवासियों में फूंक रहा था। स्पष्ट है कि सुराज्य की महत्ता को स्वीकारते हुए भी जहां तक स्वराज्य का प्रश्न है, उसे सुराज्य से श्रेष्ठ एवं उत्कृट मानते हैं। उनकी दृष्टि में सुराज्य स्वराज्य का स्थानापन्न नहीं हो सकता। यदि सुराज्य और स्वराज्य में किसी एक को वरीयता देनी हो तो महर्षि स्वराज्य को वरीयता देंगे, सुराज्य को नहीं। सुराज्य अच्छी वस्तु है किन्तु स्वराज्य उससे भी अच्छी वस्तु है। काश! हम महर्षि की भावना को समझ पायें।

मौजूदा समस्याएं सुलझाने में वैदिक संस्कृति मदद दे सकती है–राव

नई दिल्ली, १० अगस्त (भाषा)। मानव संसाधन विकास मंत्री पी वी नरसिह राव ने आज वैदिक, संस्कृति के उन मूल्यों को अपनाए जाने पर बल दिया, जिनसे मौजूदा समस्याओं के समाधान में मदद मिले और देश की नैतिक और भौतिक उन्नति का रास्ता साफ हो।

उन्होंने कहा कि वेदों में लिखा ज्ञान यदि हमारी शिक्षा नीति के बुनियादी मकसदों को पूरा करने में सहायक हो तो उसे अपनाने में शिक्षाविदो को सकोच नहीं होना चाहिए। 'वास्तव में वेद विद्या जनमानस को प्रेरित करने का बहुत असरदार जरिया है।

श्री राय आज यहां भारत सरकार द्वारा स्थापित "राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान' का उद्घाटन कर रहे थे। उन्होंने घोषणा की कि सातवीं पंचवर्षीय योजना में वैदिक अनुसंधान पर डेढ़ करोड़ रुपए खर्च होंगे। उन्होंने आशा जताई कि औद्योगिक घरानो और निजी प्रतिष्ठानों का उदार सहयोग भी इस पवित्र काम के लिए मिलेगा।

श्री राव ने कहा कि इस प्रतिष्ठान में कोई सरकारी दखल या बंधन नही होगा। सरकार इस पर उतना ही नियत्रण रखेगी, जितना इसके संचालन के हित में जरूरी है।

श्री राव ने कहा कि वेदों को पढे बिना उनका बखान करने वाले लोग वास्तव मे वैदिक सस्कृति का अहित कर रहे हैं। वेदो के बारे में कुछ बोलने से पहले उन्हें जानना समझना जरूरी है। भारत सरकार की कल्पना का वैदिक अनुसंधान एक मौलिक कार्यक्रम है जिसकी अपनी विशेषता होगी। उन्होंने विद्वानों को सुझाव दिया कि वे वेद विद्या को अपनी संस्कृति, अपनी सूझबूझ के अनुरूप मौलिक रूप से सुलभ करें। यह काम पश्चिमी विद्वानों के अध्ययन से प्रभावित नहीं होना चाहिए। वेदों के साथ-साथ कुरान और बाइबिल की प्रेरणादायक बाते भी हम ग्रहण करेंगे।

शिक्षा संस्कृति राज्यमंत्री कृष्णा साही ने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि भारतीय संस्कृति और सभ्यता का आधार वेद है। चारो वेद मानव जीवन की उन्नति की चार सीढ़ियां हैं।

स्वामी दयानन्द और महर्षि अरविंद की याद करते हुए श्रीमती साही ने कहा कि आधुनिक काल में वैदिक ज्ञान को सर्वसुलभ बनाने में इन दो महापुरुषों का विशेष योगदान रहा। (जनसत्ता ११-८-८७)

आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज कोट जि० रोहतक

प्रधान—श्री रतनसिंह, उपप्रधान–श्री दलीपसिंह, मन्त्री–श्री दलीपसिंह, कोषाध्यक्ष–श्री रतनसिह।

आर्यसमाज पंचकूला जि० अम्बाला

प्रधान—श्री रणवीर आर्य, उपप्रधान–श्री आर. पी. कश्यप, श्री सतीश कुमार कुलश्रेष्ठ, मन्त्री–श्री जयदेव आहूजा, कोषाध्यक्ष–श्री जागीरी-लाल शर्मा।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 रजि० न० P/RTK

ओ३म् विश्वमार्यम्
सर्वहितकारी रोहतक
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र



सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री

सह-सम्पादक—डा० सुदर्शन

वर्ष १४, अङ्क ३७ २१ अगस्त, १९८७ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

प्रभु-स्तवन

—वेदमुनि परिव्राजक, अध्यक्ष वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उ० प्र०)

आ हि ष्मा सूनवे पितापिर्यजत्यापये ।
सखा सख्ये वरेण्यः ॥ ऋ० १।२६।३ ॥

भगवान् के तथा हमारे अनेक प्रकार के सम्बन्ध हैं। इस मन्त्र में उनमें से केवल तीन सम्बन्धों का वर्णन किया गया है। वर्णन भी सीधे शब्दों में नहीं अपितु प्रकारान्तर से उदाहरण देकर, उपमा-अलंकार में।

कई महानुभाव ऐसे प्रसंगों पर कहा करते हैं कि वेद की भाषा सीधी क्यों नहीं होती ? सीधे शब्दों में वेदों में किसी बात को क्यों नहीं कहा गया होता ? घुमा फिराकर प्रकारान्तर से, अलंकारों द्वारा क्यों कहा गया होता है ? समाधान इसका यह है कि एक तो वेद कवितामय है, चाहे वह पद्य काव्य (छन्दबद्ध) हो या गद्य वाक्य। दूसरे थोड़े शब्दों में बहुत प्रकार की बातें कहने के लिये यह आवश्यक है कि अलंकारों का प्रयोग किया जाय। सीधी भाषा में यह सम्भव नहीं कि थोड़े शब्दों में बहुत रहस्य भर दिये जायें। मानव जीवन के लिए उपयोगी समस्त ज्ञान-विज्ञान यदि अलङ्कारिक रूप से न कहकर सीधे शब्दों में कहा जाता तो जो चारों वेदों के बीस सहस्र मन्त्र हैं, वे सम्भवतः संख्या की दृष्टि से इतने हो जाते कि उनके पुस्तक एक छकड़े का बोझ बन जाते। तीसरी बात यह है कि अलकारों से भाषा सुरुचिपूर्ण, आकर्षक बन जाती है। जिस बात को मस्तिष्क सीधे प्रकार ग्रहण नहीं कर पाता वह उदाहरण के द्वारा, उपमा के द्वारा भली-भांति समझी जा सकती है। सब लोग ऋषि तो होते नहीं तथा यह सम्भव भी नहीं कि सब ऋषि हो जायें, जो वेद को समाधिस्थ होकर समझ लें।

संसार में अधिकता तो सर्वसाधारण की होती है और सर्वसाधारण के लिए यह आवश्यक है कि उन्हें उपमाओं के द्वारा, उदाहरण तथा दृष्टान्त देकर बात को हृदयङ्गम कराया जाय। वेद केवल ऋषियों के लिये ही हो, सो बात भी नहीं। वेद का ज्ञान तो प्रभु ने मानवमात्र के लिये दिया है जैसा कि स्वयं वेद के शब्दों में ही वह कृपालु पिता कह रहे हैं "यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय" अर्थात् मेरी यह कल्याणकारिणी वाणी जनमात्र, मनुष्यमात्र के लिये है—चाहे वह ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, स्त्री, शूद्र तथा अतिशूद्र कोई भी हो। उपर्युक्त विवेचन इस प्रकार का विचार रखने वाले महानुभावों की सन्तुष्टि के लिये पर्याप्त है।

मन्त्र गत उदाहरण पिता-पुत्र, बन्धु-बन्धु तथा मित्र-मित्र के पारस्परिक सम्बन्धों के हैं अर्थात् परमात्मा हमारा पिता है और हम उसके पुत्र, वह हमारा बन्धु है और हम उसके बन्धु तथा वह हमारा मित्र है और हम उसके मित्र। इस प्रकार के भाव पिता-पुत्र, बन्धु-बन्धु तथा मित्र-मित्र की उपमा देकर प्रदर्शित किया गया है। तीनों ही सम्बन्ध इस प्रकार के हैं, जिनमें अत्यन्त निकटता होती है और वह भी क्रमशः प्रथम से दूसरे तथा दूसरे से तीसरे में उत्तरोत्तर अधिक अर्थात् जितनी निकटता पिता-पुत्र में होती है, उससे अधिक भाई-भाई में होती है तथा मित्र-मित्र में और भी अधिक।

पिता के समक्ष अपनी सब मांगो को प्रस्तुत करने का अधिकार रखते हुए भी कुछ को रहस्य बनाकर रखना पसन्द किया जाता है और कई बातें पिता की अपेक्षा भाई से कहने में कम सकोच से काम लिया जाता है किन्तु मित्र से बिल्कुल संकोच नहीं होता। यदि संकोच होवे तो मित्र किस बात के अर्थात् मित्रों के मध्य में सकोच और गोपनीयता बरती जाती है तो समझ लीजिये मित्रता है ही नहीं—केवल साधारण सा मेल-जोल है।

तीनों सम्बन्धों में इतना मौलिक भेद होते हुए भी तीनों ही अत्यन्त हितकारक सम्बन्ध हैं। जहां केवल एक ही सम्बन्ध हो, वहीं हित साधन में कोई कमी नहीं रखी जानी चाहिये—फिर जहां एक साथ तीन सम्बन्ध हों, वह भी उपर्युक्त तीनों सम्बन्ध—वहां कमी उठा रखने का प्रश्न हो क्या ? सभी जानते हैं कि पिता अपनी सन्तानों के लिए कोई कमी नहीं उठा रखता, उसकी सारी सम्पत्ति की स्वामिनी उसकी सन्तान होती है और वह प्रत्येक प्रकरेण स्व-सन्तान का पालन करता है। करे नहीं तो फिर पिता नहीं रहता, घोषणा भले ही स्वपितृत्व की करता फिरे। 'पा' रक्षणे धातु से पिता शब्द बनता है अर्थात् पालन और रक्षण करने वाला। जो पालन व रक्षण न करे, वह पिता किस प्रकार से हो सकता है ? पिता के रूप में कुछ और भले ही हो।

परमात्मा हमारा सचमुच ही पिता है, वह हमारा प्रत्येक प्रकार से पालन और रक्षण कर रहा है। हमारे जीवन के पालन तथा रक्षण के लिए प्रत्येक प्रकार की उपयोगी सामग्री, समस्त आवश्यक वस्तुए वह प्रदान कर रहा है। चाहे हम कितने ही कृतघ्न हो जाये, उसका ध्यान करना भूल जाये, चाहे उसे हो भूल जाये अथवा चाहे 'अहोरात्र' उसे अपशब्द निकालते रहें किन्तु वह कृपालु प्रभु, वह पिता अपनी कृपा बराबर हम पर बनाए रखता है। उसकी कृपा का हस्त हमारे पालन तथा रक्षणार्थ प्रत्येक समय हमारे सिर पर रहता है। वह हमारा पिता है—सच्चे अर्थों में 'पिता' अत हम उसका चयन करते हैं, वह है ही चयनीय, वरणीय।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

"हटो विदेशी पादरियो तुम ! छोड़ो मधुमय देश हमारा"

राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति मुसाफिरखाना सुलतानपुर (उ. प्र.)

भारत की पावन संस्कृति को—
जड़ से अरे ! मिटाने वालो !
दिव्य देश की गौरव-गरिमा,
भू पर अरे ! घटाने वालो !
झूठी तर्क हीन बातों को,
सच्ची, अरे ! बताने वालो !
भ्रष्टपथों पर चल खुद को,
ईसा-शिष्य कहाने वालो !
तुमने भारत की निर्धनता—
का कटु लाभ उठाया है।
मानवतापूरित संस्कृति को,
तुमने गलत बताया है।
सात समुद्रों दूर निवासी !
क्या उत्पात मचाया है ?
भौतिकता से प्रबल शत्रु को,
धरती पर फैलाया है।
तुम क्या जानो भारत की,
संस्कृति है कितनी दिव्य महान्।
जिस पर चल कर सदा निखरते,
मानव जीवन के प्रतिमान।
अपौरुषेय आवृत्त जिस पर हैं,
वेदों के मंगलमय गान।
स्मृतियां आधारशिला हैं,
जिनकी शुचिर समन्वित ज्ञान।
मानवता का जहां सदा से,
होता आया है नर्तन।
देवों का होता आया है,
जहां सदा ही अभिनन्दन।
आदिकाल से सत्य शक्ति का,
होता जहां मधुर वन्दन।
वहीं मचा रखा है तुमने,
हाय महा यह कटु क्रंदन।
ऋषि-मुनियों की पुण्य भूमि—
पर, तुम असत्य फैलाते।
चांदी के टुकड़ों का लालच—
देकर हो फुसलाते।
धन के बल पर भोले भाले—
लोगों को बहकाते।
सच्चे पथ से दूर हटा कर,
भ्रष्ट मार्ग दिखलाते।
गिरिजन-हरिजन-दीनजनों को,
लोभ आदि दिखलाते।
तोड़ एकता सूत्र हमारे,
दम्भ-द्वेष बिखराते।
वेदों की पावन धरती पर,
झूठी बाइबिल की बातें।
गलत गपोड़े बता मनुजता—
पर करते हो प्रतिघातें।
दयानन्द के सैनिक जागे,
जागा राम कृष्ण का वंश।
वीर शिवा-संतानें जागीं,
जाग उठा राणा का अंश।
भारत की संस्कृति का कण—
कण है, हमको प्राणों से प्यारा।
ईसा के चेलो तुम छोड़ो,
अब यह मधुमय देश हमारा ॥

सामयिक चेतावनी

प्रणेता—कविराज छाजूराम शर्मा शास्त्री, नयी दिल्ली—६५

पिछली भूलों से हुआ भारत देश गुलाम।
राज्य चक्रवर्ती गयो बिगड़े सारे काम ॥
बिगड़े सारे काम नाम के हैं स्वतन्त्र हम।
आर्य राज्य के बिना किन्तु यों हैं परतन्त्र हम ॥
स्वतन्त्रता यह भी खतरे में पड़ी हुई है।
साम्प्रदायिकता मार्ग में अड़ी हुई है ॥
स्वतन्त्रता की बलि वेदी पर कौन चढ़ेगा।
कहै कवि "छाजूराम" आर्यदल वीर चढ़ेगा ॥
दयानन्द ने वेद के कहे वचन अनमोल।
पौराणिक पाखण्ड की सभी पोल दी खोल ॥
सभी पोल दी खोल आर्य हमको बतलाया।
हिन्दू नहीं तुम नाम तुम्हें क्योंकर यह भाया ॥
सभी पूर्वज आर्य तुम्हारे कहलाते थे।
करते सन्ध्या-यज्ञ ईश के गुण गाते थे ॥
लेकिन उसकी जगह पूजते हो तुम पत्थर।
कहै कवि "छाजूराम" झुकाते हो जड़ को सर ॥
जड़पूजा से देश को हुई बहुत सी हानि।
जो सब देशों में कभी था रत्नों की खानि ॥
था रत्नों की खानि अन्नदाता था सबका।
कहलाता था गुरु विश्व में भारत सबका ॥
फूट अविद्या ने इसको परतन्त्र कराया।
दयानन्द स्वामी ने इसे स्वतन्त्र कराया ॥
आर्यो ! जो नहीं बना संगठन आज तुम्हारा।
"छाजूराम" जीने का नहीं फिर और सहारा ॥
आज आसुरी दल यहां बढ़ता जाता नित्य।
हिंसा का सर्वत्र ही हो रहा ताण्डव नृत्य ॥
हो रहा ताण्डव नृत्य लुट रहे बैंक खजाने।
अभी देश में आग उठो अब इसे बुझाने ॥
मंडरा रहे विदेशी गिद्ध हैं भारत भू पर।
करना चाहें फिर अधिकार हमारे ऊपर ॥
होने पाये फिर न दुबारा भूल पुरानी।
कर नहीं पाये "छाजूराम" दुश्मन मनमानी ॥

शोक समाचार

सभा के उपदेशक श्री कुलवन्तराय जी ग्राम नीमड़ी निवासी की पुत्री का देहान्त २-८-८७ को हो गया। वह अपने पीछे एक ढाई वर्ष पुत्री छोड़ गई है। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शान्ति और शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य प्रदान करे।

—सभा मन्त्री

सम्पादकीय

प्राचीन भारत में गाय

प्राचीन भारत में मनुष्य कम थे और गायें अत्यधिक थीं। परन्तु आधुनिक भारत में इस से विपरीत ही दृश्य दिखाई दे रहा है मनुष्य अधिक और गायें कम। इस का कारण गोपालन के स्थान में गोवध हो रहा है। पहले सभी मनुष्य यथाशक्ति गोपालन करते थे और जो बड़े-बड़े राजा महाराजा थे वे सहस्रों एवं लाखों की संख्या में गायें रखते और पालते थे। स्वयं भगवान् कृष्ण बाल्यावस्था में गोपाल बनकर गायें चराते थे। इतना ही नहीं उन्होंने बड़े होकर यह भी कहा "कृषिगोरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम्" (गीता) अर्थात् गोरक्षा करना वैश्य का स्वाभाविक कर्म है। यही भगवान् मनु ने अपनी स्मृति में कहा है।

चक्रवर्ती सम्राट् युधिष्ठिर के विषय में महाभारत मे लिखा है कि उनके पास आठ लाख गायें थी। घटना इस प्रकार है—जब पाण्डवों के वनवास के बारह वर्ष व्यतीत हो गये तब वे एक वर्ष अज्ञात वास करने के लिए राजा विराट की राजधानी में गये। तब सहदेव ने राजा विराट के पूछने पर कहा कि महाराज युधिष्ठिर पाण्डवों में सबसे बड़े थे, उनके आठ सौ हजार (आठ लाख) गायें थीं, उनके सौ-सौ एवं सहस्र-सहस्र गायों के वर्ग थे, मैं उन सब का स्वामी और संख्या करने वाला था, इसीलिए राजा ने मुझे 'तन्तिपाल' का पद दिया था। भूत भविष्य और वर्तमान सब संख्या को मैं जानता हूं। चारों ओर दस-दस योजन (चार कोस=एक योजन) तक की गायों को जान सकता हूं। मैं उन उपायों को भी जानता हूं जिनसे गायों की शीघ्र वृद्धि हो और गायों के रोगों की चिकित्सा भी मैं जानता हूं तथा उन श्रेष्ठ गुणों वाले वृषभों (सांडों) को भी जानता हूं जिनके मूत्र को सूंघने से (अपि बन्ध्या प्रसूते) बन्ध्या स्त्री को भी सन्तान की प्राप्ति हो जाती है।

यह सुनकर राजा विराट ने कहा कि हमारे यहां एक वर्ण वाली एक लाख गायें हैं हम उन सब को आपको सौंपते है।

(महाभारत बिराटपर्व)

राजा महाराजा यज्ञ आदि की दक्षिणा में रुपया पैसा न देकर सहस्रों गायें ही ऋषि मुनियों को देते थे। बृहदारण्यकोपनिषद् में आता है—

विदेह महाराज जनक ने बहुदक्षिण (अश्वमेध या राजसूय) यज्ञ किया। वहाँ कुरु और पाञ्चाल (पञ्जाब) देश के ब्राह्मण एकत्रित हुए, तब महाराज जनक को जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि इन ब्राह्मणों में सबसे अधिक ब्रह्मज्ञानी कौन है। इस हेतु विदेहाधिपति महाराज जनक ने एक हजार गायें गोशाला में रोक दीं, प्रत्येक गाय के दोनों सींगों पर दश दश पाद (स्वर्ण के एक पल का चतुर्थ भाग) स्वर्ण बन्धा हुआ था।

उन एकत्रित हुए ब्राह्मणों से महाराज जनक ने कहा कि हे ब्राह्मणो! आप लोगों में जो सब से अधिक ब्रह्मज्ञानी हो वह इन गायों को ले जावे। परन्तु उन ब्राह्मणों में से किसी ने भी गाय ले जाने का साहस न किया, तब महर्षि याज्ञवल्क्य ने अपने ब्रह्मचारी सामश्रवा से कहा कि इन गायों को ले जावो। ब्र० सामश्रवा उन गायों को ले गया। यह देख कर सब ब्राह्मण क्रुद्ध हो गये कि यह क्या, हम लोगों के होते हुए भी कोई अपने को ब्रह्मिष्ठ (सबसे अधिक ब्रह्मज्ञानी) कह सकता है। तब राजा जनक के होता अश्वल ने पूछा कि हे याज्ञवल्क्य! क्या हम लोगो में आप ही सबसे अधिक ब्रह्मवेत्ता हैं? महर्षि याज्ञवल्क्य ने उत्तर दिया कि ब्रह्मज्ञानी को तो हम नमस्कार करते हैं, हम तो गायों की कामना करनेवाले हैं। अर्थात् गायें हमें प्रिय हैं अत: हम ले जा रहे हैं। इसके पश्चात् होता अश्वल आदि आठ ब्राह्मणों ने जिन में एक गार्गी भी है, आध्यात्मिक गूढतत्त्वों के विषय में प्रश्न पूछे, किन्तु महर्षि याज्ञवल्क्य ने उन सबका उत्तर दे दिया।

अष्टाध्यायी के व्याख्यानभूत पातञ्जल महाभाष्य जो कि व्याकरण शास्त्र का सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थ है, उस में महर्षि पतञ्जलि ने प्रसंगवश गाय पर पर्याप्त लिखा है। वे महाभाष्य के आरम्भ में ही गो शब्द से शब्दानुशासन करते हैं—"अथ शब्दानुशासनम्। केषां शब्दानाम्? लौकिकानां वैदिकानाञ्च। तत्र लौकिकास्तावद् गौरश्व पुरुषो हस्ती" इत्यादि।

यहाँ पर लौकिक शब्दों का उदाहरण देते हुए सर्वप्रथम परम पूजनीया गोमाता का ही उल्लेख किया है। यही नहीं, शब्दोपदेश और अपशब्दोपदेश के निर्णय में तथा शब्दों के अपभ्रंश बतलाते हुए भी गौ शब्द को ही चुना है। अन्य असंख्य शब्दों की विद्यमानता में भी सर्वत्र गौ शब्द का ही ग्रहण उसकी प्रियता तथा श्रेष्ठता को दिखा रहा है। अन्य भी सैंकड़ों उदाहरण तत्तत्स्थल पर महाभाष्य में दिये हैं। मैं यहां पर स्थालीपुलाकन्याय से दो चार उदाहरण उद्धृत करता हूं। यथा—"गोषु दुह्यमानासु प्रस्थितो दुग्धास्वागत" (२।३।३७)। "स्वस्ति गोभ्यः" २।३।२२)। "माषेभ्यो गा वारयति" (१।२।२७) "गोमन्ति ब्राह्मणकुलानि" (७।१।७२) इत्यादि।

गोमय से वृश्चिकोत्पत्ति

महाभाष्य में एक उदाहरण आता है—"गोमयाद् वृश्चिको जायते" (१।४।३०) अर्थात् गाय के गोबर से बिच्छू उत्पन्न होता है। गोमय का अर्थ गाय का गोबर ही हो सकता है अन्य भैंस आदि का नहीं। गोमय शब्द की व्युत्पत्ति "गोश्च पुरीषे" सूत्र से पुरीषाभिधेय में 'गो' शब्द से 'मयट्' प्रत्यय करने से होती है 'गोः पुरीषं गोमयम्' अर्थात् गाय का पुरीष (मल) गोमय। अत: भैंस के पुरीष को व्याकरणानुसार गोमय (गोबर) नहीं कहा जा सकता।

गोलोमों से दूर्वोत्पत्ति

महाभाष्य में एक और उदाहरण है—"गोलोमाऽविलोमभ्यो दूर्वा जायन्ते" गाय और भेड के रोमों से दूर्वा (दूब=प्रसिद्ध घास) उत्पन्न होती है। इसका अर्थ यह हुआ कि जिस प्रदेश में गायें और भेडें अधिक विचरती हैं या रहती हैं उस प्रदेश में दूर्वा भी अधिक होगी। दूर्वा को गाय प्रसन्न होकर खाती है और इस से गाय का दूध भी बढ़ता है।

दूध घी के लिए अच्छी गाय

महाभाष्य में एक उदाहरण है—"कृष्णा गवां सम्पन्नक्षीरतमा" (२।३।४२) काली गाय, गायों में सम्पन्नक्षीरतम अर्थात् अधिक दूध वाली होती है।

महाभाष्य के टीकाकार श्री कयट ने लिखा है—"श्वेता गाव आज्याय दुहन्ति" श्वेतरंग की गायें घी के लिये दोही जाती हैं। इस का अभिप्राय यह हुआ कि काली गाय का दूध गुणों की दृष्टि से या मात्रा में अधिक होता है और श्वेत गाय के दूध मे घी अधिक होता है या वह गुणों की दृष्टि से श्रेष्ठ होता है। गाय के दूध के विषय में महर्षि धन्वन्तरि जी महाराज ने लिखा है—"गवां सितानां वातघ्नं कृष्णानां पित्तनाशनम्" अर्थात् श्वेत गायों का दूध वातनाशक तथा काली गायों का दूध पित्तनाशक होता है। विद्वान् महानुभाव इस विषय पर और अधिक विचार करें।

धनवान् कौन ?

आप कहेंगे कि यह भी कोई विचारणीय विषय है, इसे तो सभी जानते हैं यह सर्व-प्रसिद्ध शब्द है "धनमस्याऽस्मिन् वाऽस्ति स धनवान्" जिसके पास धन है वही धनवान् है। पाठकवृन्द! आज के युग में मनुष्य यही नहीं समझते कि धन क्या है? आज अर्थ युग है, रुपये पैसे का युग है अतः सामान्यतया रुपये पैसे को ही धन समझ बैठे हैं और उसी के उपार्जन के लिये अन्धे हो रहे हैं। किसी प्रकार से रुपया मिल जाये, चाहे धर्म से या अधर्म से, इसको कोई चिन्ता नहीं। या यों कहना अनुचित न होगा कि आजकल तो "टका धर्मः टका कर्म टका हि परमं पदम्"। जिस के पास रुपया है वही माननीय कुलीन विद्वान् और भाग्यवान् समझा जाता है और सभी उसके पीछे पीछे फिरते हैं। 'अर्थस्य पुरुषो दासः" के अनुसार लोग रुपये वालों के दास बने हुए हैं। क्या वही देश या मनुष्य धनवान् है जिसके पास रुपया है? नहीं, यदि ऐसा ही होता तो बङ्गाल में रुपयों के होते हुए भी अकालपीडितों को रुपयों के बराबर तोलकर भी अन्न प्राप्त नहीं हुआ। ये कागज और सिक्के धरे ही रह गये।

प्राचीन भारत में रुपये का अधिक माग्य न था, उस समय के धनवान् कौन थे, इस विषय में महाभाष्य मे एक वाक्य आता है— "भोगवानयं देश इत्यु[illegible] यस्मिन् गावः सस्यानि च वर्तन्ते" (५।१।९)। अर्थात् वही देश भोगवान (धनवान) है जिसमे गाय और खेती विद्यमान हैं। भोग शब्द का अर्थ ('भोगो धनमुच्यते' कयट) धन है।

प्राचीन भारत में गाय का अत्यधिक मान था और इसी को सर्वश्रेष्ठ धन माना जाता था। इसीलिये महर्षि च्यवन ने राजा नहुष से कहा था—"गोभिस्तुल्यं न पश्यामि धनं किञ्चिदिहाच्युत" अर्थात् हे राजेन्द्र ! मुझे इस संसार में गायों के तुल्य अन्य कोई धन दिखाई नही देता।

क्या गायें बेची जाती थीं ?

जिस प्रकार आजकल गाये बेची जाती हैं इस प्रकार प्राचीन भारत में गाये नही बेची जाती थीं। प्रायः बैल ही बेचे जाते थे। आजकल तो गाय ही क्यों गोजन्य बछडा बछडी घी दूध आदि सभी का विक्रय होता है। पुरातन समय में दूध बेचनेवाले की 'दुग्धविक्रयी' कहकर निन्दा करते थे। प्राचीन समय की क्या, इसी समय की एक घटना मुझे याद है। सम्वत् १९९५ तथा १९९६ विक्रमी में लगातार दो वर्ष तक भयङ्कर अकाल पड़ा था। उस समय मैं था तो छोटा-सा ही किन्तु मुझे याद है मेरे पिता जी कभी-कभी जब रुपयों की अत्यधिक आवश्यकता होती थी तब दूध बेचने के लिये गांव से शहर में ले जाते थे। वे लज्जा वश दुग्धपात्र को भलीभान्ति वस्त्र में बांधकर ले जाते थे कि कोई देखेगा तो क्या कहेगा कि "चौधरी दूध बेचने जा रहा है"।

हां, प्रकृत विषय गायों के विक्रय का था। महाभाष्य में आता है—"गाव उत्कालितपुंस्का वाहाय च विक्रयाय च स्त्रिय एवावशिष्यन्ते" (१।२।७२) अर्थात् पुंस्त्वनिकाले हुए बैल ही वाहन (भारवहन) और विक्रय के लिए होते थे, गाये नही। इसकी टीका करते हुए नागेशभट्ट लिखते हैं—"प्रायेण बलीवर्दा एव वाह्यन्ते विक्रीयन्ते च" प्राय बैलों से ही भार वहन किया जाता है तथा बैल ही बेचे जाते हैं। महाभाष्य में गौ शब्द गाय और बैल दोनों के लिए समान रूप से प्रयुक्त हुआ है। वैसे भी गौ शब्द उभयलिङ्ग है।

हमारे पूर्वज गायों को बेचते किस मूल्य से, वे तो इन्हें अमूल्य सम्पत्ति समझते थे। महर्षि च्यवन की एक प्राचीन ऐतिहासिक घटना भीष्म पितामह ने महाराज युधिष्ठिर को गायो का महत्त्व बतलाते हुए सुनाई थी। घटना इस प्रकार है—

महर्षि च्यवन जलकल्प कर रहे थे। एक दिन मछली मारने वालों ने नदी में जाल बिछाकर मछलियों को बाहर निकाला, साथ ही महर्षि च्यवन भी समाधि लगाये हुए खिंच आये। मछलियों के साथ महर्षि को देखकर मछुवे भयभीत हो गये और चरण स्पर्श कर प्रणाम किया। इधर उधर हिलने से महर्षि च्यवन की समाधि खुल गई। बहुत से मत्स्यों को जल के बिना तडपता देख महर्षि को दया आ गई। उन्होने मछुओं से कहा "यदि ये मछलियां जीवित रहेंगी तो मैं जीवित रहूँगा अन्यथा मैं भी इनके साथ प्राण त्याग दूँगा।" महर्षि की इस बात को सुनकर मछुवे महाराज नहुष के पास गये और सम्पूर्ण वृत्तान्त कह सुनाया। मुनि के प्राणों को संकट में जान महाराजा नहुष तत्काल पुरोहित तथा मन्त्रियों सहित महर्षि च्यवन के पास गये और हाथ जोडकर कहा कि कहो महाराज क्या सेवा करू ? महर्षि च्यवन ने कहा कि आज इन मछुओ ने बडा भारी परिश्रम किया है अतः इनको मेरा और मछलियों का मूल्य चुका दीजिये।

राजा नहुष ने तुरन्त ही पुरोहित को एक सहस्र स्वर्णमुद्रा मछुओं को देने के लिये कहा। इस पर महर्षि च्यवन बोले—'एक सहस्र स्वर्ण मुद्रा मेरा उचित मूल्य नहीं है, आप विचार कर इन्हें उचित मूल्य दें।

इस पर राजा ने एक लाख स्वर्ण मुद्रा देने को कहा, फिर आधा राज्य, अन्त में अपना सारा राज्य देने के लिये कहा, किन्तु महर्षि प्रसन्न न हुए, उन्होने कहा—"एक लाख स्वर्णमुद्रा, आधा राज्य या सम्पूर्ण राज्य मेरा उचित मूल्य नही है, आप ऋषियों से परामर्श कर मेरा उचित मूल्य दीजिये।" राजा नहुष अति दुःखित हुए और उन्होने ऋषियो से पूछा तब एक ऋषि ने बतलाया कि महाराज ! ब्राह्मण सब वर्णों में उत्तम हैं अतः उनका कोई मूल्य नहीं आंका जा सकता। ठीक इसी प्रकार गायों का भी कोई मूल्य नहीं लगाया जा सकता। अतः आप इनके मूल्य में एक गाय दे दें।

राजा नहुष ने ऐसा ही किया। वे महर्षि च्यवन के पास जाकर बोले—महर्षे ! मैंने आपको एक गाय देकर खरीद लिया है, मैंने आपका यही उचित मूल्य समझा है, अब आप उठने की कृपा कीजिये। महर्षि च्यवन ने कहा—

उत्तिष्ठाम्येष राजेन्द्र ! सम्यक्क्रीतोऽस्मितेऽनघ।
गोभिस्तुल्यं न पश्यामि धन किञ्चिदिहाच्युत ॥

अर्थात् हे राजेन्द्र ! अब मैं उठता हूं, आपने उचित मूल्य देकर मुझे खरीद लिया है। मुझे इस संसार में गायों के तुल्य अन्य कोई धन दिखाई नहीं देता।

सृष्टि के आदि में ईश्वरीय ज्ञान वेद से लेकर समस्त वैदिक वाङ्मय और लौकिक साहित्य में गो-महिमा सर्वत्र विद्यमान है। मानव के लिये मा के पश्चात् गाय ही सर्वश्रेष्ठ पोषक आहार देनेवाली है। ऐसे परोपकारी सर्वविधकल्याणकारी पशु की रक्षा और संवर्धन में ही मानवमात्र का कल्याण निहित है।

—वेदव्रत शास्त्री

राष्ट्र रक्षा की समस्या का समाधान

—प्रेषक बुद्धराम आर्य, शिल्पशास्त्री (गुरुकुल झज्जर)

टेक— निज देश की रक्षा को, नव जवान चाहिये।

कलो— दिन रात असुर कर रहे हत्याये हानियां।
होती समाप्त हैं न दुःखों की कहानियां।
मिटती सुहागिनों की भाग्य की निशानियां।
आयेगी काम कब ये जवानो ! जवानियां।
होना हृदय में कुछ तो स्वाभिमान चाहिये।
निज देश की रक्षा को नवजवान चाहिये ॥१॥
दुष्टों की दुष्टता कभी जिसको नहीं खले।
रोंदता हो शीश जिसका शत्रु पांव के तले।
बन दास और के सदा सकेत पर चलें।
सच जानो ऐसे मर्द से तो मुर्दे भी भले।
सूरत भी ऐसे की तो देखनी न चाहिये।
निज देश की रक्षा को नवजवान चाहिये ॥२॥
रह जायेगी पडी ये नोट रुपयों की थैली।
रह जायेगी गडी ये चांदी सोने की ढेली।
रह जायेगी खड़ी ये नई हाट हवेली।
जायेगी नहीं साथ कभी एक अधेली।
जीते जी करना हाथ से कुछ दान चाहिये।
निज देश की रक्षा को नवजवान चाहिये ॥३॥
सुनते ही हृदय ज्वालामुखी से भडक उठें।
तन जायें सीने बन्ध कवच के तडक उठें।
भुजदण्ड प्रबल मारे जोश के फड़क उठें।
बदकार वैरियों के कलेजे धड़क उठें।
कवि को सुनाना ऐसा अग्निगान चाहिये।
निज देश की रक्षा को नवजवान चाहिए ॥४॥
ज्ञानी को यही स्वर्ग है आनन्द है दूना।
अज्ञानी को संसार ही है नर्क नमूना।
रस्सी समझ के सर्प को हाथ से न छूना।
धोखे में दही के कहीं खा लेना न चूना।
खोटे खरे की कुछ यहां पहिचान चाहिये।
निज देश की रक्षा को, नवजवान चाहिये ॥५॥
साधन पवित्र जिसका लक्ष्य भी पवित्र हो।
दुष्टों का जो कि काल सज्जनों का मित्र हो।
व्यसनों से दूर जिसका कि उज्ज्वल चरित्र हो।
गति जिसकी धर्म, राजनीति में विचित्र हो।
नेता "प्रकाश" ऐसा गुणनिधान चाहिये।
राष्ट्र रक्षक बुद्धिधर का ज्ञान चाहिये ॥६॥

श्रीकृष्ण-जिसे हमने समझा ही नहीं

लेखक—यशपाल आर्यबंधु, आर्य निवास, चन्द्र नगर, मुरादाबाद-२४४०३२.

मानवमात्र का यह स्वभाव है कि वह अपने महापुरुषों को प्राय: समझ नहीं पाता। और यदि समझने का प्रयत्न भी करता है तो उसमें भी प्राय वह भूल ही करता है। संसार भर के महापुरुषों के भाग्य में कुछ ऐसी गडबड हुई है, कि लोग उन्हें समझने में भूल ही करते रहे हैं। योगेश्वर श्रीकृष्ण इसका अपवाद नहीं हैं। उन्हें भी ससार ने समझने में बडी भूल की है। इसी के परिणाम स्वरूप उस महामानव के अति पावन, अति उज्ज्वल स्वरूप को उसने विकृत कर प्रस्तुत किया है। जिस महामानव का चरित्र महाभारत में अति उज्ज्वल, अति पावन एवं सर्वगुण-सम्पन्न महापुरुष के रूप में चित्रित किया गया है, उसी को अभागी हिन्दू जाति के कर्णधारों ने पुराणों में तथा अन्य अनेकों ग्रंथों एवं काव्यों में अति विकृत, अति घिनौने रूप में प्रस्तुत किया है। और विडम्बना यह है कि यह विकृत चरित्र इतना प्रचारित हो चुका है कि यदि कोई उसका वास्तविक सही स्वरूप प्रस्तुत करे भी तो लोग सहसा उसे मानने के लिए तैयार नहीं।

अब लोग योगेश्वर श्रीकृष्ण को क्या समझने लगे हैं? बाबू बंकिम चन्द्र चटोपाध्याय के शब्दों में—"यही कि वे बचपन में चोर थे—दूध, दही, मक्खन, चुरा कर खाया करते थे, युवावस्था में व्यभिचारी थे, और उन्होंने बहुतेरी गोपियों के पातिव्रत्य धर्म को नष्ट किया, प्रौढावस्था में वंचक और शठ थे—उन्होंने धोखा देकर द्रोणादि के प्राण लिये। ·········क्या इसी का नाम भगवच्चरित्र है। (कृष्ण चरित्र, पृष्ठ २)

श्रीकृष्ण को लौकिक धरातल से हटाकर अलौकिक पृष्ठभूमि पर खड़ा किया जाना और उसके सहज मानवीय स्वरूप को विस्मृत कर उसे अप्राकृतिक रूप में प्रस्तुत करना ही श्रीकृष्ण चरित्र की प्रथम विकृति है। डा० भवानीलाल भारतीय का यथार्थ कथन है कि—"जब कृष्ण को ईश्वर मानकर उसके अवतार की उपासना देश में प्रचलित हुई तो कृष्णोपासना के आधार पर अनेक सम्प्रदाय स्थापित हो गये।" (श्रीकृष्ण चरित, पृष्ठ १०) डा० भारतीय आगे लिखते हैं कि—"इन सम्प्रदायों के जन्म से पूर्व तक कृष्ण आदर्श चरित्रवान् परम सात्विक आचार-सम्पन्न और प्रतिभाशाली महापुरुष समझे जाते थे। परन्तु तांत्रिक साधना के प्रचार के कारण वैष्णव सम्प्रदायों में भी वासनामूलक श्रृंगार का मिश्रण होने लगा। महाभारत के कृष्ण जहां मर्यादापोषक, संयमी और सत्वगुण-सम्पन्न हैं, वहां पुराणों, काव्य ग्रंथों एवं अन्य साम्प्रदायिक ग्रंथों में उनके जीवन को अत्यन्त विलासपूर्ण स्थल वासनायुक्त और रोमाण्टिक बनाने का प्रयत्न किया गया है। भागवत और ब्रह्मवैवर्त जैसे पुराणों, जयदेव के गीत—गोविन्द जैसे काव्यों और गोपाल सहस्रनाम जैसे स्तोत्रों में सर्वत्र कृष्ण के परदारागामी स्वरूप का चित्रण किया गया है। गोपाल कामिनीजार: चौरजार-शिखामणि जैसी उक्तियां इन्हीं ग्रंथों की हैं। भागवत में परदारागमन के संकेत स्पष्ट हैं जिनके कारण राजा परीक्षित को कृष्ण के चरित्र के के विषय में शंका होती है, परन्तु शुकदेव जी, समर्थ व्यक्ति की समर्थता की दुहाई देकर ही अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ बैठते हैं। ब्रह्मवैवर्त पुराण में राधा का समावेश करा कर विकृति के इस पहलु की ओर भी उभाड़ दिया गया है। वहां राधा कृष्ण के सम्भोग का जो कुत्सित वर्णन मिलता है, उसे देखकर लज्जा भी लज्जित होती है।" द्रष्टव्य—(श्रीकृष्ण चरित, पृष्ठ १०-११)

आश्चर्य और दुःख का विषय तो यह है कि धर्मग्रंथ मानी जाने वाली पुस्तकों का जब यह हाल है तो अन्य पुस्तकों का क्या हाल होगा, फिर विद्यापति और चण्डीदास सरीखे व्यक्तियों को खुल खेलने से कौन रोक सकता है, वस्तुत: भागवत आदि पुराणों में श्रीकृष्ण सरीखे निर्दोष व्यक्तित्व पर जो मिथ्या लाञ्छन लगाये गये हैं, वे उन-उन ग्रंथों के लेखकों की अपनी ही कुत्सित भावनाओं के ही द्योतक कहे जा सकते हैं। यह इसलिए कि योगेश्वर श्रीकृष्ण का चरित्र इतना उज्ज्वल, इतना पावन है, कि उसपर कोई लाञ्छन लगाया हो नहीं जा सकता।

आधुनिक युग में महर्षि प्रथम महामानव थे कि जिन्होंने उच्च स्वर में यह उद्घोष किया कि—"देखो! श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरणपर्य्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो, ऐसा नहीं लिखा। और इस भागवतवाले ने अनुचित मनमाने दोष लगाये हैं। दूध, दही, मक्खन आदि की चोरी और कुब्जादासी से समागम, परस्त्रियों से रासमण्डल, क्रीडा आदि मिथ्या दोष श्री कृष्ण जी में लगाये हैं। इसको पढ़-पढा, सुन-सुना के अन्य मत वाले श्री कृष्ण जी की बहुत सी निन्दा करते हैं। जो यह भागवत न होता तो श्री कृष्ण जी के सदृश महात्माओं की झूठी निन्दा क्योंकर होती।" (एकादश समुल्लास)

जहां तक महाभारत का प्रश्न है, उसमें गोपी प्रसंग की कहीं कोई चर्चा दिखाई नही देती। इस सम्बन्ध में स्वनामधन्य पण्डित चमूपति जी लिखते हैं कि—"महाभारत में गोपी-प्रेम की गंध भी नहीं। और तो और किसी प्रसंग में कृष्ण की रासलीला या गान का वर्णन नहीं। यहां तक कि महाभारतकार ने कृष्ण के होटों से वंसी तक न छुवाने की कसम खा ली है। महाभारत का कृष्ण चक्रधर है, गदाधर है, असिधर है मुरलीधर नही।" (द्रष्टव्य—योगेश्वर कृष्ण, पृष्ठ २६-२७) अत यही कहा जा सकता है कि श्रीकृष्ण जी का वास्तविक चरित्र वही है जो महाभारत में वर्णन किया गया है। हमें उसी चरित्र का ही पाठ करना एवं अनुकरण करना चाहिए। यदि तात्त्विक दृष्टि से देखा जाय तो सम्पूर्ण महाभारत ही श्रीकृष्ण जी की गौरव गाथा गा रही है। यदि उसमें से श्री कृष्ण को हटा दे तो फिर महाभारत में शेष रह ही क्या जाता है, महाभारत में उन्हें सर्वपूज्य, श्रेष्ठतम महामानव के रूप में चित्रित किया गया है। ऐसा उत्तम जिसके लिए बंकिम बाबू को कहना पडा था कि—"ऐसा सर्वगुणान्वित और सर्व पाप रहित आदर्श चरित्र और कहीं नही है, न किसी देश के इतिहास में और न किसी काव्य में।"

महाभारत के अध्ययन से हमें श्री कृष्ण जी के चरित्र में आर्य-जीवन का सर्वांगीण विकास दिखाई देता है। जीवन का ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं है, जिसमें उन्हें सफलता न मिली हो। वे एक आदर्श विद्यार्थी हैं, एक आदर्श गृहस्थी हैं, एक आदर्श राजनीतिज्ञ हैं, एक आदर्श राजा है, एक आदर्श योद्धा हैं, एक आदर्श मित्र हैं, एक आदर्श योगी हैं। वह कौनसा गुण है जो माहाभारत के कृष्ण में दृष्टिगोचर नही होता। आज भारत को महाभारत के कृष्ण की आवश्यकता है, पुराणों के कृष्ण की नहीं। ऐसे कृष्ण की जो चक्रधर हो, गदाधर हो, असिधर हो, मुरलीधर नहीं। उस कृष्ण की जो व्यामोह में पड़े अर्जुन को उसके कर्तव्य की याद दिला सके। वह कृष्ण जो जागृति का शंख फूंक सके और दे सके एक नया उद्बोधन इस सोये हुए राष्ट्र को। आज ऐसे ही कृष्ण की आवश्यकता है भारतवर्ष को।

आर्य स्पेशल ट्रेन

स्पेशल ट्रेन दिनांक २५-१०-१९८७ को चलकर गुड़गांव, रिवाड़ी, अलवर, जयपुर, अजमेर, (पुष्कर) चित्तौड़ गढ़ (चित्तौड़ किला), नीमच मन्दसौर, रतलाम, उज्जैन, इन्दौर, मऊ कैन्ट, खण्डवा, अकोला, पूर्णियां, औरंगाबाद (अजन्ता अलोरा केव) जालना, नान्देड़, निजामाबाद, सिकन्द्राबाद, (हैदराबाद) महबूब नगर, गन्तोकल, वासकोडीगामा, मडगाम, पंजम (गोवा) हुबली, मैसूर (वृन्दावन, गार्डन) बेंगलौर, त्रिचनापल्ली, मदुरई, त्रिवेन्द्रम, (कन्याकुमारी) रामेश्वरम, पांडीचेरी, मद्रास, त्रुपति, विजयवाड़ा, राजमुन्द्री, वाल्टेर, जगन्नाथपुरी, भुवनेश्वर, हावड़ा, (कलकत्ता) धनबाद, गया, पटना, मुगलसराय, वाराणसी, इलाहाबाद (प्रयाग), कानपुर, शिकोहाबाद, आगरा, मथुरा से होती हुई १७ नवम्बर १९८७ की प्रातः नई दिल्ली वापस लौट आयेगी।

नोटः—जिस-जिस स्थान पर स्पेशल ट्रेन ठहरेगी, उस-उस स्थान की आर्यसमाजें एवं संस्थायें आपका स्वागत करेंगी। विद्वान् एवं भजनोपदेशक इस गाड़ी के साथ होंगे।

विभिन्न श्रेणियों के नीचे दिए गये किराये में रेलों, बसों और खाने एवं प्रातः की चाय, आवास आदि का व्यय शामिल है।

फर्स्ट क्लास ५५००/- रु० पूरी बर्थ II क्लास २५००/- रु० सोने की सीट। (१) मार्ग व्यय में ऐतिहासिक स्थान जो देखने योग्य होंगे, बसों का व्यय सभा की ओर से होगा। इसमें भोजन व बसों का व्यय शामिल है।

इसके अतिरिक्त कोई भी यात्रा सम्बन्धी उचित जानकारी प्राप्त करना चाहें तो श्री रामलाल मलिक १५२/७८ रामजस रोड, करोल बाग, नई दिल्ली-५ फोन ५७२२५१० से प्राप्त करें।

नोट—इस स्पेशल ट्रेन में रेलवे पास होल्डर व L. T. C. जा सकेंगे यदि वह अपना पास बड़ोदा हाउस, उत्तर रेलवे दफ्तर, दिल्ली-१ से आज्ञा ले आयें। फर्स्ट क्लास के पास होल्डर को केवल १०००/- रु०, सैकेंड क्लास को ८५०/- रु० खाने चाय बस आदि का देना होगा।

नोट—सीट बुक कराने की अन्तिम तिथि ३-१०-१९८७ है यदि इससे पहले सीटें बुक हो जायेंगी तो उनका बाद में आने वाला रु० वापस कर दिया जायेगा।

ऐसी बात हो गई

('नाज़' सोनीपती)

ऐसी कुछ अब के सूरते हालात हो गई।
"हर मोड़ पर कोई न कोई घात हो गई॥"
विज्ञान युग में ज्ञान को भी मात हो गई।
बादल घिरे नहीं मगर बरसात हो गई॥
होनी नहीं थी बात, जो वह बात हो गई।
अचरज यह है कि दिन में काली रात हो गई॥
अफ़सोस कर रहा मैं हाथ मल के रह गया।
यह मेरी भूल थी कि अब प्रभात हो गई॥
दानव ही दानव पाओगे मानव के वेष में।
मानव की मानवता कहीं अज्ञात हो गई॥
गेहूं के साथ घुण भी पिस गए हैं बेशुमार।
माया के साथ काया भस्मसात् हो गई॥
रिश्वत, ब्लैक, तस्करी, डाकाज़नी, फसाद।
भारत में भ्रष्टाचार की बहुतात हो गई॥
बन्दे भी खुद खुदा हैं बने राम कृष्ण भी।
क्योंकर जुदा-जुदा, खुदा की जात हो गई॥
घटनाएँ घट रही हैं नित नई जहाँ में "नाज़"।
कुछ बन सकी न बात ऐसी बात हो गई॥

(पृष्ठ १ का शेष)

'भाई सा जग में मीत नहीं' अर्थात् बन्धु जैसा संसार में कोई मित्र नहीं, यह प्रसिद्ध लोकोक्ति है किन्तु फिर भी संसार में बन्धुओं को परस्पर शत्रु होते देखा जाता है। लोक में बन्धु के बन्धु का शत्रु होने का कारण है अज्ञानावस्था, ज्ञान की कमी, अल्पज्ञता। परन्तु परमात्मा तो सर्वज्ञ है—वहां अल्पज्ञता का क्या काम? अतः परमात्मा के शत्रु होने का प्रश्न तो उत्पन्न ही नहीं होता। वह तो सर्वदेव बन्धु है—क्योंकि न वह अल्पज्ञ है और न उसका कोई स्वार्थ है।

मित्रता का सम्बन्ध भी वास्तव में बड़ा विचित्र सम्बन्ध होता है। मित्र, मित्र के लिए सगे सम्बन्धियों से भी सम्बन्ध विच्छेद कर लेते हैं। परिवारस्थ जनों से तंग आने पर लोग अपने दुःखों को अपने मित्रों के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं। कितना पवित्र होता है यह सम्बन्ध? कल्पना तो कीजिये। यही सम्बन्ध है हमारा और परमात्मा का। यही तो कारण है कि प्रत्येक आपत्ति के समय संसार का चाहे कोई भी सम्बन्धी हमारा साथी न हो परन्तु वह परम पावन प्रभु हमारा सहायक होता है। यदि हम थोड़ा भी धैर्यपूर्वक ध्यान दें—तो हमें ज्ञात हो जाय कि प्रत्येक आपत्ति के समय उस प्रभु की मित्रता का हाथ हमारी सहायता के लिए किस प्रकार समुद्यत रहता है, अतएव वेद कहता है:—

(पिता) पिता (सूनवे) पुत्र को [जिस प्रकार अपना सब कुछ] (आयजति) देता है। (आपिः आपये) बन्धु, बन्धु को [तथा] (सखा सख्ये) मित्र, मित्र को [उसी प्रकार है!] (वरेण्यः) वरण करने योग्य, वरणीय परमात्मन्! (हि) निश्चयपूर्वक (स्म) [हमें तू भी सब कुछ दे रहा] है।

जैसे पिता सहायक, हरदम रहे हमारा।
त्यों नाथ तुम भी हमको, देते सदा सहारा॥
ज्यों बन्धु काम बन्धु के आता है जगत् में।
त्यों जग के बन्धु तू भी, हित कर रहा हमारा।
ज्यों मित्र, मित्र को दुख-क्लेशों में हो सहायक।
त्यों मित्र विश्व भर के, देता हमें सहारा॥

भजन

तर्ज—दिल के अरमां ....

हे—प्रभु दुनियाँ में यह क्या हो रहा।
जिसको देखो वो खुदा यहाँ हो रहा॥ टेक॥
नाम योगिराज अपना धर लिया।
ज्ञान से अनभिज्ञ बिल्कुल हो रहा॥१॥
आता-जाता जिसको कुछ भी है नहीं।
वह भी देखो आज लीडर हो रहा॥२॥
धर्म-कर्म और शर्म बिल्कुल है नहीं।
बड़ा बेशर्म आज जन हो रहा॥३॥
कैसे भाइयो! देख मेरा एक हो।
जब कतल भाई से भाई हो रहा॥४॥
इधर कोठी की सजावट हो रही।
उधर भूख से तंग बालक रो रहा॥५॥
कहते हैं पर करते कुछ भी हैं नहीं।
जनता का उपहास यहाँ अब हो रहा॥६॥
वीरों का यहाँ से सफाया हो गया।
स्यारों का अब वास यहाँ पर हो रहा॥७॥
यत्र-तत्र सर्वत्र भ्रष्टाचार है।
उदास "आल्हा" इसलिये अब हो रहा॥८॥
रचियता—ब्र० ओमप्रकाश "आल्हा" (मथुरा)

दण्डी स्वामी

'नाज़' सोनीपती

खोल दीं आँखें, ज़माने में, ज़माने भर की।
बे असर कौन था वह राह दिखाने वाला॥
धन्य है धन्य है, मथुरा का वह अलाग फ़कीर।
मूलशंकर को दयानन्द बनानेवाला॥

अण्डा खाइए; हृदय-रोग बुलाइए

—डॉ० योगेश कुमार-अरोड़ा

१९८५ के नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाले अमेरिका के हृदय-रोग विशेषज्ञ, डॉ० माइकल एस० ब्राउन तथा डॉ० जोसेफ एल० गोल्डस्टीन, जिनको हृदय-रोग की खोज पर विश्व का सर्वोत्तम पुरस्कार मिला, जिसकी राशि २,२५,००० डालर है। नोबेल पुरस्कार के ८४ वर्षीय इतिहास में यह राशि सबसे अधिक है। आप दोनों हृदय-रोग से बचने के लिए मांसाहार तथा अण्डे का सेवन न करने की सलाह देते हैं।

अमेरिका में पचास प्रतिशत मौतें सिर्फ हृदय-रोग के कारण होती हैं। नोबेल पुरस्कार के संयोजकों ने बताया कि डॉ० माइकल एस० ब्राउन तथा जोसेफ एल० गोल्डस्टीन दोनों अमेरिकन डॉक्टरों की आश्चर्यजनक खोज से अब इस रोग पर काबू पाया जा सकेगा। इनकी खोज के अनुसार हृदय-रोग वंशानुगत तथा खानपान पर निर्भर करता है। इनके अनुसार यह रोग बच्चों को बचपन से शुरु हो जाता है, पर इसका पता काफी देर बाद चलता है। अब तक वर्षों से चली आ रही यह धारणा कि बच्चों को अण्डा खाने से नुकसान नहीं होता, विपरीत निकली। भले ही वे ऊपर से हृष्ट-पुष्ट दिखाई दें परन्तु अन्दर से हृदय रोग ग्रस्त हो जाते हैं। खोज के अनुसार प्रत्येक मानव के शरीर में कोलस्ट्रोन नामक एक तत्त्व उत्पन्न होता है; यह भोजन द्वारा भी शरीर को प्राप्त होता है। यह तत्त्व वनस्पतियों में नहीं के बराबर होता है। पर मांस, अण्डों तथा जानवरों में प्राप्त वसा में प्रचुर मात्रा में होता है। इस तत्त्व से शरीर में सेल मेम्बरीन तथा हारमोन्स बनते हैं। यह तत्त्व शरीर के लिए आवश्यक भी है। लेकिन अगर यह कालस्टेरोल रक्त वाहिनी में जमना शुरु हो जाता है तो रक्त प्रवाह में बाधा डालता है। यह धीरे-धीरे जमते-जमते इतना अधिक हो जाता है कि रक्त प्रवाह रुक जाता है और हृदय काम करना बन्द कर देता है, इसे 'हार्ट अटैक' कहते हैं। अगर मस्तिष्क में रक्त न जा पाए तो उसे स्टोक कहते हैं। यही पदार्थ मूत्राशय में पथरी का रूप धारण करता है।

नई खोज के अनुसार रक्त में पाए जाने वाले पदार्थ 'लोडेंसिटि लिपोप्रोटीन या एल० डी० एल० है जो कोलस्ट्रोल को रक्त में अपने साथ प्रवाहित करता है। शरीर में जिगर तथा अन्य भागों के सेलों में एक पदार्थ है जिसको रिस्पटर कहते हैं, वह एल० डी० एल० तथा कोलस्ट्रोल को रक्त में से विलीन कर लेता है, जिसके परिणामस्वरूप रक्त प्रवाह में कोई बाधा नहीं आती है। इन वैज्ञानिकों के अनुसार जो व्यक्ति मांसाहार तथा अण्डे खाते हैं उनके शरीर में रिस्पेटरों की संख्या में कमी हो जाती है। इसकी कमी में रक्त के अन्दर कोलस्ट्रोल की मात्रा अधिक हो जाती है। अधिक मात्रा होने से यह रक्त-वाहिनियों में जमना शुरु हो जाता है तथा हृदय-रोग शुरु हो जाता है।

कोलस्टेरोल अण्डों में सबसे अधिक मात्रा में पाया जाता है जिसके परिणामस्वरूप चर्म रोग भी हो जाते हैं। अण्डे से कुछ लोगों को एलर्जी भी हो जाती है। कुछ दिन पूर्व इण्डियन काउंसिल ऑफ एग्रीकलचर रिसर्च द्वारा किए गए सर्वेक्षण से पता चला कि फल, सब्जियां, अण्डे तथा मांस में डी० डी० टी० के अंश पाए गए। अण्डो में डी० डी० टी० का अंश अधिक मात्रा में होता है, क्योंकि पोल्ट्री फार्म में मुर्गियों को महामारी से बचाने के लिए डी० डी० टी० आदि दवाइयों का खूब धड़ल्ले से इस्तेमाल होता है। परिणामस्वरूप अण्डे खाने वाले लोगों के पेट में इन दवाइयों के अंश आ जाते है। यहां तक कि स्त्रियों के दुग्ध में डी० डी० टी० आदि के अंश पाए गए। इन दवाइयों के भयंकर परिणाम हो सकते हैं। अमेरिका आदि देशों में डी० डी० टी० पर रोक लगी हुई है पर हमारे देश में इस पर खुली छूट है।

अब तक अण्डो को सुपाच्य समझा जाता था; क्योंकि यह प्रयोग जानवरों पर किए जाते थे। कुछ वैज्ञानिकों ने जब इनका प्रयोग मनुष्यों पर किया तब पाया गया कि अण्डे सुपाच्य नही होते हैं। वैसे भी अण्डे के छिल्के पर लगभग १५००० सूक्ष्म छिद्र होते है जो कि सूक्ष्मदर्शी के द्वारा देखे जा सकते हैं। इनके द्वारा कई जीवाणु अण्डे में प्रवेश कर जाते हैं जो अण्डे को खराब कर देते हैं। आपने अण्डों के समूह से बदबू आती तो महसूस की होगी, वैसे भी अण्डे आठ डिग्री संल्सियस के तापमान पर खराब होने शुरु हो जाते हैं। इनको रखने के लिए भारत में इतना तापमान रखना कठिन बात है। आजकल विदेशों में अण्डे आदि न खाने की राय दी जा रही है। (दयानन्द सन्देश से)

कन्या गुरुकुल जसात में प्रवेश

आर्य कन्या गुरुकुल जसात, जिला गुड़गावां, (नजदीक नूरगढ़) में कन्याओं का प्रवेश हो रहा है। कोई भाई बहन अपनी कन्या को प्रविष्ट कराना चाहे, तो शीघ्र गुरुकुल की आचार्या से सम्पर्क करें।

—आचार्या
कन्या गुरुकुल जसात

आवश्यकता

आवश्यकता है एक व्यायाम शिक्षक की। जो हरयाणवी भाषा जानता हो और कुछ आर्य वीरों को बौद्धिक भी दे सके। तुरन्त मिलें अपने खर्चे पर या पत्र व्यवाहर करें। —संजय मारवाडी

मन्त्री आर्य वीर दल बालसमन्द रोड़, हिसार

हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

१. मैसर्ज परमानन्द साईंदितामल, भिवानी स्टैंड, रोहतक
२. " फूलचन्द सीताराम गांधी चौक, हिसार
३. " सन-अप-ट्रेडर्स सारंग रोड, सोनीपत
४. " हरीश एजेन्सीज ४६६/१७ गुरुद्वारा रोड, पानीपत
५ " भगवानदास देवकीनन्दन सर्राफा बाजार पुराना, करनाल
६. " घनश्यामदास सीताराम त्रिचला बाजार, भिवानी
७. " कृपाराम गोयल रुड़ी बाजार, सिरसा
८. " कुलवन्त पिकल स्टोर्स शाप न० ११५, मार्किट न० १, एन० आई० टी० फरीदाबाद
९. " चन्द्रप्रकाश नवीनप्रकाश ३१८/५ जेकमपुरा, गुड़गांव

योगिराज श्री कृष्णचन्द्र

ले० स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती—अधिष्ठाता वेद प्रचार

योगिराज श्री कृष्ण का, जीवन चरित्र पवित्र।
बारम्बार निहारिये, यह मन भावन चित्र॥
यह मन भावन चित्र, मित्र जब मिले सुदामा।
छाती लिये लगाय करी स्वागत की साभा॥
सब विधि से सत्कार प्यार करके बैठाये।
देख दीन की दशा अश्रु नयनन भरलाये॥
ऐसे महा मानव उपकारी का गुण गाओ।
उनके जन्मोत्सव पर मिलकर यज्ञ कराओ॥
कौन कहे कि कन्हैया, पक्का माखन चोर।
बडी भूल करते रहें, बुद्धि के कमजोर॥
बुद्धि के कमजोर शोर यह खूब मचाया।
राधा के संग श्री कृष्ण ने विवाह कराया॥
गोपीन के संग नृत्य किया और मन बहलाया।
काम वासना उनके पास जरा नही ठहरी॥
गीता के रचंया मोहन की सूझ बूझ थी गहरी।

वार्षिक चुनाव सम्पन्न

आर्यसमाज तिमारपुर के वार्षिक चुनाव में श्री भीमसिंह—प्रधान, श्री जगदीश लाल दुग्गल व श्री चन्दनसिंह—उप प्रधान, श्री रामेश्वर दास—मन्त्री, श्री विमल कान्त शर्मा व श्री महावीरसिंह—उपमन्त्री, श्री आनन्द प्रकाश गुप्ता—कोषाध्यक्ष तथा श्री वेद प्रकाश—पुस्तकालय अध्यक्ष सर्वसम्पति से निर्वाचित हुए। विमल कान्त शर्मा

अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ

डी० ए० वी० एलूमनी डायरेक्ट्री

दो वर्षों से जिसकी प्रतीक्षा थी वह अमूल्य संदर्भ ग्रंथ छप गया है। इसमें डी०ए०वी० संस्थाओं के संस्थापकों, संचालकों और उसके लिए त्याग और दान करने वाली विभूतियों तथा डी०ए०वी० संस्थाओं के उन प्रतिभावान विद्यार्थियों के जो अब विभिन्न उच्च पदों पर और उद्योगों आदि में कार्यरत हैं जीवन परिचय छपे हैं।

एक हजार पृष्ठों के दो भागों में सचित्र, सुन्दर, बढ़िया कागज पर अंग्रेजी में छपे उत्तम, सजिल्द ग्रंथ का मूल्य केवल १५० रुपये मात्र है। यह ऐसा ग्रंथ है जिसकी प्रतियां प्रत्येक आर्यसमाज में, शिक्षण संस्था में और निजी एवं सार्वजनिक पुस्तकालय में रखनी जानी आवश्यक है।

इसे डी०ए०वी० कॉलिज प्रबन्धकर्त्री समिति के कार्यालय, चित्रगुप्त रोड, नई दिल्ली से प्राप्त किया जा सकता है।

डाक से मंगाने वालों को डाक व्यय तथा पैकिंग चार्जेज सहित २०० रुपये मनीआर्डर अथवा बैंक ड्राफ्ट अथवा चैक डी०ए०वी० कॉलिज प्रबन्धकर्तृ समिति, चित्रगुप्त रोड, नई दिल्ली के नाम भेजना चाहिए।

दरबारी लाल
संगठन सचिव

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 पंजि० नं० P/RTK 49



कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री   सह-सम्पादक—डा० यशवीर

वर्ष १४, अङ्क ३८ २८ अगस्त, १९८७ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

सिद्धान्त चर्चा—

कर्म स्वतन्त्रता बनाम ईश्वर की मरजी

लेखक—यशपाल आर्यबंधु, आर्य निवास, चन्द्र नगर, मुरादाबाद-२४४०३२

आर्यसमाज की यह सुनिश्चित मान्यता है कि जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है और फल भोगने में ईश्वर की व्यवस्था से परतन्त्र है और यह भी कि ईश्वर फल कर्मानुसार ही देता है, अपनी ओर से नहीं। ईश्वर सृष्टि के आदि में मनुष्यमात्र के लिए अपना ज्ञान वेद के रूप में प्रकाशित करता है, जिससे जीवों को कर्तव्याकर्तव्य, विधि-निषेध आदि का सम्यक् ज्ञान हो जाये। साथ में यह भी जता दिया कि प्रत्येक शुभाशुभ कर्म का फल अवश्यमेव भोगना पड़ेगा। बिना भोगे इन से छुटकारा नहीं। कहना न होगा कि शुभ कर्मों से फल में सुख और अशुभ कर्मों के फल में दुख भोगना ही पड़ता है। वह चाहे तुरन्त हो चाहे कालान्तर अथवा जन्म-जन्मान्तर में, पर भोगना अवश्य पड़ता है। अब आगे जीवों की स्वतन्त्र इच्छा पर है कि वे कैसे कर्म करते हैं क्योंकि वे कर्म करने में पूर्ण स्वतन्त्र हैं। ईश्वर उन्हें हठात् शुभ कर्म करने से रोकता नहीं और शुभ कर्म बलात् करवाता नहीं। हां भय, शंका, लज्जा द्वारा अशुभ कर्म करने से रोकने का संकेत अवश्य कर देता है और उत्साह, प्रसन्नता और आनन्द आदि के संकेतों द्वारा शुभ कर्म करने को उत्साहित कर देता है। इस पर भी हम ईश्वर के इन संकेतों की अवहेलना कर अशुभ कर्म भी कर ही दिया करते हैं। आत्मा में उठने वाले यह संकेत जीव की ओर से न होकर परमेश्वर की ओर से हैं, ऐसी महर्षि दयानन्द की मान्यता है। यद्यपि ईश्वर भय, शंका, लज्जा आदि के द्वारा हमें बता देता है कि हम अशुभ कर्म करने जा रहे हैं तथापि अपनी स्वतन्त्रता के कारण हम उन संकेतों की अवहेलना कर दिया करते हैं। इससे भी यही सिद्ध होता है कि जीव कर्म करने में स्वतन्त्र हैं। स्वतन्त्र वह होता है कि जो सब कर्मों को स्वेच्छा से सम्पादित करने में सक्षम हो और जिसके आधीन कर्म करने के सब साधन हों अर्थात् जिसके आधीन शरीर, प्राण, इन्द्रिय और अन्तःकरण हों इसी को स्वतन्त्र कर्त्ता कहते हैं। महर्षि दयानन्द की ऐसी ही मान्यता है। यह बात व्यावहारिक भी है और तर्कसंगत भी। जीव तभी तो कर्मफल भोगने के लिए उत्तरदायी है कि जब वह स्वतन्त्रतता से कोई कर्म करता है। यदि उसे कर्म करने की स्वतन्त्रता ही न हो तो फिर उससे तो वह कर्म हठात् और बलात् कराये गये हैं—ऐसा ही मानना पड़ेगा और इस अवस्था में वह उन कर्मों के लिये दोषी ही क्यों ठहराया जाएगा? अतः स्पष्ट है कि परमात्मा ने विधि विशेष अर्थात् कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य का बोध करा दिया और फिर साक्षी बनकर उसके स्वतन्त्रतापूर्वक किये गये कर्मों को देखने लगा और तदनुसार फल की व्यवस्था करने लगा। किन्तु ऐसे लोगों की कमी नहीं जो जीव को स्वतन्त्र कर्त्ता के रूप में मानने को उद्यत नहीं। आइये! उनके तर्कों को देखें और उनकी पड़ताल करें।

मुद्दई लाख बुरा चाहे तो क्या होता है।
वही होता है जो मन्जूरे-खुदा होता है॥ और
तेरी इच्छा के बिना हे प्रभु मंगल मूल।
पत्ता तक हिलता नहीं, खिले न कोई फूल॥

ऐसी और इस प्रकार की अन्य मान्यतायें समाज में सर्वत्र फैली हुई हैं एवं बद्धमूल भी हो चुकी हैं। पर हैं यह वास्तविकता से कोसों दूर। क्योंकि इच्छा तो जीवों में होती है, ईश्वर में नहीं। वह इच्छाओं से परे है। अतः ईश्वर में इस प्रकार की मान्यतायें नहीं घटती। फिर जहां तक ईश्वर की इच्छा का प्रश्न है। पंडित गंगाप्रसाद उपाध्याय ठीक ही लिखते हैं कि—पत्ता हिले न हिले, झूठे की जीभ तो बिना ईश्वर की इच्छा के हिल जाती है। यदि ईश्वर की इच्छा से ही झूठा झूठ बोलता है, तो उसको झूठ बोलने का पाप क्यों लगे?

संसार में ऐसे लोगों की भी कमी नहीं कि जो अपने कुकर्मों के लिए ईश्वर को दोषी ठहराने में भी नहीं हिचकते। उनका कुछ इस प्रकार का कथन है कि—'यऽत्रो हं भवान् यंत्री ममदोषो न विद्यते।' अर्थात् मैं तो यंत्र हूं और आप यन्त्री हैं फिर जो कुछ भी मेरे हाथों से हो रहा है उसके करने में मेरा क्या दोष है? मैं तो तेरे हाथ की कठपुतली हूं। मेरे कर का तार तो तेरे कर में है। शायद इसी लिए तुझे करतार कहते हैं। इतना ही नहीं, यह तो यहां तक कह देते हैं कि—करे करावे आपे आप, मानुष के नही कुछ भी हाथ। और मीर तकी 'मीर' के शब्दों में—

नाहक हम दीवानों पर तुहमत है खुद मुख्तारी की।
जो कुछ करे सो आप करें, हमें अबस बदनाम किया॥

एक अन्य कवि का भी कथन है कि—पत्ता भी गर हिलता है तो उसकी रजा से, फिर बन्दा गुनहगार है मालूम नहीं क्यों?

यह है नियतिवाद में आकण्ठ डूबी अवैदिक मान्यता। आश्चर्य तो तब होता है कि जब हम योगी अरविन्द और निवासाचारी जैसे विद्वानों और मनीषियों को भी इसी प्रवाह में बहता हुआ देखते हैं। अरविन्द की एतद्विषयक विचारधारा को उद्धृत करते हुए आर्यजगत् के विद्वान् संन्यासी श्री स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक 'तत्त्वमसि' में लिखते हैं कि—"कुछ लोगों का कहना है कि 'हम तो मात्र एक यन्त्र हैं, यन्त्री अर्थात् यन्त्र से काम लेने वाला तो परमात्मा है। जैसे कठपुतली का तार दूसरे के हाथ में होता है—उसी के तार हिलाने से कठपुतली नाचती है, उसी प्रकार हमारी डोर तो भगवान् के हाथों में है, जैसे वह नचाता है वैसे ही हम नाचते हैं। इसलिए अपने किसी भी कर्म के लिये हम उत्तरदायी नहीं हैं।" इस नियतिवाद की धारणा ने बड़े-बड़े

विद्वानों को चकित कर दिया है। अरविन्द घोष जैसे ऋषिकल्प विद्वान् भी लिख बैठे—'तुम पहले अपने आपको परमात्मा का हथियार समझो। तलवार यह नहीं पूछती कि मुझे किसको मारना है। तीर यह जानना नहीं चाहता कि मुझे किसकी छाती में जाकर लगना है। यह निश्चय करना तलवार चलाने वाले या तीर फेंकने वाले का काम है। तुम अपने आपको आंधी में उड़ने वाला पत्ता समझो, लड़ने वाले के हाथ में पकड़ी तलवार या तीर समझो।" (तत्त्वमसि, पृष्ठ 145) इस पर टिप्पणी करते हुए श्री स्वामी जी आगे लिखते हैं कि—"जीव को कर्म करने की स्वतन्त्रता का निषेध होने पर उसे कर्म-फल भोगने के लिए विवश नहीं किया जा सकता। कर्त्ता ही भोक्ता है, यह न्यायसंगत है। यदि जीवात्मा में स्वतन्त्र कर्तृत्व नहीं होगा तो उसमें भोक्तृत्व भी नहीं होगा। कर्मस्वातंत्र्य के मौलिक अधिकार से वंचित होकर यदि जीव परमात्मा की अधीनता में रहकर सब काम उसकी इच्छानुसार करने को बाध्य होगा तो पाप-पुण्य के फल का भागी भी परमात्मा ही होगा, जीवात्मा नहीं। मेरे भीतर बैठी कोई शक्ति मुझसे जो चाहती है, कराती है कि सिद्धान्त को स्वीकार करके यदि यह मान लिया जाए कि अपराध करने या न करने में मनुष्य स्वतन्त्र नहीं है, अपितु जैसा परमात्मा चाहता है, वैसा उसे करना पड़ता है, तो किसी भी मनुष्य को किसी अपराध के लिए दण्डित नहीं किया जा सकता। किसी की हत्या हो जाने पर हत्या करने वाले मनुष्य को फांसी लगती है, हत्या मे साधनभूत शस्त्र को नहीं। शासन के आदेश में अपराधी को फासी देने वाले जल्लाद को कभी हत्या का अपराधी नहीं माना जाता।" (वही पृष्ठ १४५-१४६)

स्पष्ट है कि कर्त्ता होने से ही हम भोक्ता हैं। यदि कर्त्ता नहीं तो भोक्ता भी नहीं हो सकता। पता नहीं अरविन्द जैसे मनीषी इस सत्य को समझने में कैसे चूक गए। अब निवासाचारी की बात देखिये। जिसे डा० वेदप्रकाश गुप्त ने अपने शोध प्रबन्ध 'दयानन्द दर्शन' में उद्धृत किया है—वह यह है कि अपने कर्मों को भगवान् द्वारा निश्चित समझो और उसी को उसका कर्त्ता जानो। डा० गुप्त इस मान्यता के खण्डन में तर्कपूर्ण विवेचन उपस्थित करते हुए लिखते हैं कि 'कुछ धर्मज्ञ पण्डितों का कहना है कि ससार का सारा व्यापार परमात्मा की इच्छा से होता है। उसकी इच्छा के विरुद्ध एक पत्ता भी नहीं हिल सकता। नियतिवाद की धारणा ने जनसाधारण के साथ-साथ अनेक विद्वानों पर भी अपनी छाप जमाई हुई है। श्री निवासाचारी जैसे विद्वान् गीता में भी नियतिवाद के सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हैं कि परमात्मा को कर्त्ता समझो तथा सारे काम उसी के द्वारा पूर्व नियोजित हैं।' परन्तु इस प्रसग में यह विचारना अनिवार्य है कि एक बार कर्मों को परमात्मा द्वारा निश्चित किया जाना मान लेने पर कर्म करने में जीव को स्वतन्त्र कहना केवल शब्द जंजाल-मात्र है।

दूसरी ओर जब हम कतिपय इस बात का खण्डन करते हुए पाते हैं तो अपार सन्तोष भी होता है। कल्याण के भूतपूर्व सम्पादक तथा 'कर्मयोग का तत्त्व' नामक पुस्तक के लेखक श्री जयदयाल जी गोयन्दका अपनी इसी पुस्तक में लिखते हैं कि—"क्रियमाण कर्म में मनुष्य ईश्वर के नियमों से बंधा होने पर भी क्रिया सम्पन्न करने में प्रायः स्वतन्त्र है। नियमों का पालन करना, न करना उसके अधिकार में है। इसी से उसे फल भोग के लिये भी बाध्य होना पड़ता है। यदि कोई यह कहे कि हमारे द्वारा जो अच्छे-बुरे कर्म हो रहे हैं, सो सब ईश्वरेच्छा या प्रारब्ध से होते हैं तो उसका ऐसा कहना भ्रमात्मक है, पुण्य-पाप कराने में ईश्वर या प्रारब्ध को हेतु मानने से प्रधानतः चार दोष आते हैं, जो निर्विकार, निरपेक्ष, समदर्शी, दयालु, न्यायकारी और उदासीन ईश्वर के लिए सर्वथा अनुपयुक्त हैं। (१) जब ईश्वर या प्रारब्ध ही बुरे कर्म कराते हैं तो विधि निषेध बतलाने वाले शास्त्रों की क्या आवश्यकता है। विधि-निषेध वाक्यों का उल्लंघन कर मनमाना यथेच्छाचार करने वाले पापपरायण व्यक्ति यह अनायास कह सकते हैं कि हम तो प्रारब्ध के नियन्ता ईश्वर की प्रेरणा से ही ऐसा कर रहे हैं। अत एव ईश्वर पर शास्त्र-हनन का दोष आता है। (२) जब ईश्वर ही सब प्रकार के कर्म करवाता है, तब उन कर्मों का फल सुख-दुःख हमें क्यों होना चाहिये? जो ईश्वर कर्म करवाता है, उसे ही फलभोग का दायित्व भी स्वीकार करना चाहिये। ऐसा न करके वह ईश्वर अपना दोष दूसरों पर डालने के लए दोषी ठहरता है। (३) ईश्वर के न्यायकारी और दयालु होने में दोष आता है क्योंकि कोई भी न्यायकर्त्ता पाप के दण्ड विधान में पुनः पाप करने की व्यवस्था नहीं दे सकता। यदि पाप करने की व्यवस्था कर दी तो फिर पापियों के लिए दण्ड की व्यवस्था करना अन्याय सिद्ध होता है एवं यदि ईश्वर ही पाप करवाता है—पाप में हेतु बनता है और फिर दण्ड देता है, तब तो वह अन्यायी होने के साथ ही निर्दयी भी बनता है। (४) ईश्वर ही सब पापों के लिए पुनः पाप करने का विधान करता है, तब जीव के कभी पापों से मुक्त होने का तो कोई उपाय ही नहीं रह जाता। पाप का फल पाप उसका फल पुनः पाप—इस तरह जो पाप में ही प्रवृत्त रहने के लिये बाध्य होता है, जिससे एक तो अनवस्था का दोष और दूसरे ईश्वर जीवों को पाप बंधन में रखना चाहता है, यह दोष आया है। अतः यह मानना उचित नहीं कि ईश्वर पाप-पुण्य करवाते हैं, पापकर्म के लिये तो ईश्वर की कभी प्रेरणा ही नहीं होती, पुण्य के लिये—सत्कर्मों के लिए ईश्वर का आदेश है, परन्तु उसका पालन करना, न करना या विपरीत करना हमारे अधिकार में है। पृष्ठ 71 से 73) इसी प्रकार के भाव पूज्य स्वामी विद्यानन्द जी ने भी लिखे हैं। यथा - "यदि यह भाव भी लिया जाए कि संसार का समस्त व्यापार परमात्मा की इच्छा से होता है और मनुष्य जो कुछ करता है, उसी की प्रेरणा से करता है तो उसका अर्थ होगा कि पहले पाप कराने वाला और फिर उसके कारण दण्ड देने वाला परमात्मा ही है। ऐसा परमात्मा न केवल अन्यायकारी अपितु निर्दयी भी सिद्ध होगा।' (तत्त्वमसि, पृष्ठ १४६) अतः यह यह मान्यता कि हमारे द्वारा अच्छे या बुरे कर्मों का वास्तविक कर्त्ता ईश्वर है, अव्यावहारिक, वेद-विरुद्ध अतः मिथ्या है।

अब रही दूसरी मान्यता कि भले ही कर्मों के कर्त्ता हम हों, पर ईश्वर की मर्जी के बिना हम कुछ नहीं कर सकते। तो यह भी सर्वथा मिथ्या है क्योंकि ईश्वर की मरजी तो हमें नित्य प्रत्येक कर्म करते समय आत्मा में उठने वाले संकेतों भय, शंका, लज्जा आदि के रूप में पता चलता रहता है, फिर भी हम उसकी अवहेलना कर देते हैं और पाप कर बैठते हैं। वैसे सब कुछ ईश्वर की मर्जी से होता है, इसके मुख्य रूप से मानने वाले मुसलमान और ईसाई हैं। चांदापुर के मेले में मौलवी मुहम्मद कासिम के उत्तर में महर्षि ने कहा था कि—"यह कहना कि ईश्वर जो चाहे सो करे, इससे यह भी निकलता है कि ईश्वर ही बुराई भी कराता होगा और उसी की इच्छा से बुराई होती है, यह कहना ईश्वर में नहीं चलता।" मुसलमान, ईसाई आदि यह भी कह दिया करते हैं कि वैसे तो सब कुछ खुदा की मरजी से ही होता है, पर कुकर्म हम शैतान के बहकाने पर ही करते हैं। इस पर महर्षि का तर्क है कि क्या शैतान का बहकाना खुदा की मर्जी से होता है या नहीं? ऐसा मानने वाले मुसलमानों और ईसाइयों से हमारा एक विनम्र प्रश्न है—वह यह कि यदि आपके सिद्धान्तानुसार सभी कुछ खुदा की मरजी से ही होता है, तो महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने सत्यार्थप्रकाश इस्लाम और ईसाइयत का जो खण्डन किया है—क्या वह खुदा की मरजी से नहीं हुआ? यदि कहो नहीं तो तुम्हारा सिद्धान्त झूठा और यही हो तो खुदा की मरजी जानकर सत्य मत स्वीकार क्यों नहीं कर लेते? स्पष्ट है कि यह सब मिथ्या बातें वेद विरुद्ध होने से सर्वथा त्याज्य हैं केवल यही सत्य सिद्धान्त है कि जीव कर्म करने में स्वतन्त्र और फल भोगने में ईश्वर की व्यवस्था से परतन्त्र है।

इत्योम् शम्

—※—

सम्पादकीय

हुक्का छोड़ो और हवन करो

हमारे देश का नाम आर्यावर्त है। इस की सीमा का वर्णन संसार के सर्वप्रथम सम्राट् मनु ने अपनी स्मृति में किया है जिसे महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी सत्यार्थप्रकाश में उद्धृत किया है। इस आर्यावर्त देश के निवासी सभी सज्जन स्त्री पुरुष आर्य हैं। कालक्रम से आर्यावर्त को भारतवर्ष, हिन्दुस्तान और इण्डिया भी कहा गया और यहां के निवासी आर्य अज्ञानान्धकारावृत काल में अपने आपको हिन्दू समझ बैठे। उन हिन्दुओं में से कुछ मुसलमान ईसाई बना दिये गये और बहुत से जैन बौद्ध सिख आदि सम्प्रदायों में विभक्त होकर अपने आपको हिन्दुओं से पृथक् समझने लगे। बचे खुचे हिन्दू भी वेदज्ञान के अभाव में सहस्रों सम्प्रदायों में बिखर गये। विदेशी लोगों ने अपनी राज्यसत्ता को बनाये रखने के लिये आर्यों को हिन्दू बतलाकर बाहर से आकर आक्रमणकारी सिद्ध करने का प्रयत्न किया।

उन्नीसवीं शताब्दी में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यों में नवचेतना का संचार किया। वेदों का भाष्य किया। आर्यों के सच्चे स्वरूप को दर्शाया और युक्ति प्रमाण पूर्वक सिद्ध किया तुम हिन्दू नहीं आर्य हो। आर्यो! तुम्हारा चक्रवर्ती राज्य सारे संसार में रहा है और आज तुम आर्यावर्त में भी पराधीन हो।

आर्यों को संगठित किया और उस संगठन का नाम धरा "आर्यसमाज"। इस सगठन के १० नियम तथा उद्देश्य निर्धारित किये और सत्यार्थप्रकाश आर्यभाषा में लिखकर सक्षेप में वेद शास्त्रों के सिद्धान्त सर्वसाधारण के लिये सुलभ बना दिये। सत्यार्थप्रकाश के अन्त में स्वमन्तव्यामन्तव्य का प्रकाश किया और "आर्योद्देश्य रत्न माला" के रूप में सेकड़ों अमूल्य रत्नों की माला बनाकर दी।

दुर्भाग्य है इस देशवासियों का। पहले परतन्त्रता काल में अंग्रेजों ने जो शिक्षा पद्धति अपने दफ्तरों मे क्लर्क या नौकर तैयार करने के लिये बनाई थी वही स्वतन्त्रता के ४० वर्ष पश्चात् भी चल रही है और शिक्षित बेरोजगारों की सख्या बढा रही है। इस शिक्षा पद्धति मे आर्य संस्कृति, सभ्यता, वेश-भूषा, भोजन, रहन-सहन की कोई शिक्षा नही दी जाती। वेदादि शास्त्रों का पठनपाठन तो क्या, इन का नाम लेना भी धर्मनिरपेक्षता में बाधक समझा जा रहा है।

ऐसी व्यवस्था में "स्वाध्याय" ही एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा हम स्वयं अपनी योग्यता के अनुसार ऋषि दयानन्द द्वारा लिखित सत्यार्थप्रकाश, संस्कारविधि, आर्याभिविनय, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, वेदभाष्य और वैदिक वाङ्मय का अध्ययन कर सकते हैं।

स्वाध्याय के आधार पर आर्यसमाज के प्रथम युग में अनेक प्रकाण्ड पण्डित तैयार हुये, जिन्होंने बड़े-बड़े दिग्गजविद्वानों को शास्त्रार्थ में परास्त करके वैदिक मान्यताओं का प्रचार और प्रसार किया। अनेक उच्चकोटि के ग्रन्थ लिखे, दर्शनों और उपनिषदों के भाष्य किये और साथ-साथ अपना भी कल्याण किया। योगदर्शनकार महर्षि पतञ्जलि ने लिखा है—"स्वाध्यायादिष्ट-देवतासम्प्रयोग." स्वाध्याय के द्वारा अभीष्ट सिद्धि प्राप्त की जा सकती है।

आज के आर्यों ने स्वाध्याय करना छोड़ दिया। अज्ञानता में हवन यज्ञ आदि भी छूट गये और अपना लिया "हुक्का" और साथ में "ताश" भी। इस हुक्के और तास के चस्के ने हरयाणा के आर्यों का बेड़ा गर्क कर दिया। जहां प्रतिदिन यज्ञ (हवन) करने से जल वायु अन्नादि की शुद्धि और पुष्टि होती थी और आर्य नीरोग एवं स्वस्थ रहते थे वहां इस हुक्के के दूषित विषाक्त धूएं से अपने अन्दर के फेफड़े दूषित होगये तथा बाहर के जलवायु आदि विकृत होकर अनेक रोगों की उत्पत्ति का कारण बनते हैं। आजकल की परिभाषा में जिसे प्रदूषण कहा जा रहा है उसको दूर करने का सर्वोत्तम साधन हवन हो है। प्रत्येक व्यक्ति प्रतिदिन अपानवायु, शौच आदि के द्वारा जितनी दुर्गन्धि फैलाता है उतनी या उससे अधिक सुगन्धि हवन करके अवश्य ही फैलानी चाहिये। तभी सन्तुलन बना रह सकेगा और प्राणी सुख का श्वास ले सकेंगे। इसलिये आर्यों से नम्र निवेदन है कि तास खेलना छोड़ो और स्वाध्याय करो तथा हुक्का छोड़ो और हवन करो।

—[illegible] शास्त्री

प्रथम आर्य सम्मेलन

६ सितम्बर १९८७, आर्यसमाज मन्दिर बलियाणा

सब सज्जनों को यह जानकर बड़ी प्रसन्नता होगी कि वेदप्रचार मण्डल पाकस्मा का प्रथम आर्य सम्मेलन ६ सितम्बर, १९८७ को आर्यसमाज मन्दिर बलियाणा में बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है।

प्रातः ७ बजे से ६ बजे तक यज्ञ एवं वेद प्रवचन होगा। सम्मेलन का कार्यक्रम प्रातः ११ बजे से प्रारम्भ होकर सायं ४ बजे तक वानप्रस्थी महावीर जी की अध्यक्षता में होगा। इस सम्मेलन में पाकस्मा मण्डल के सभी २० ग्रामों (पाकस्मा, बलियाणा, बोहर, भालौट, गढ़ी बोहर, किसरेटी, आसन, कंसाला, मोर खेड़ी, हुमायुपुर, गान्धरा, अटाल, नोनोंद, कलोई, खाढौत, मकड़ौली, समचाना, खेडी साध आदि) के प्रधान, मन्त्री, प्रतिनिधि, सदस्य एवं आर्य जनता भारी संख्या मे पधार रहे है।

इस सम्मेलन में आर्यसमाज के वेदप्रचार एवं हिन्दी संस्कृत के प्रचार एवं प्रसार कार्य की रूपरेखा तैयार की जाएगी एवं जनता मे फैलती हुई कुरीतियों शराब, मांस आदि की समस्याओं की रोकथाम के लिए उपयोगी पग उठाने पर विचार किया जाएगा। परोपकारिणी सभा के प्रधान पूज्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती इस सम्मेलन के मुख्य अतिथि होंगे एवं स्वामी कर्मपाल, प्रधान सर्वदलीय सर्वखाप पचायत, श्री रामानन्द सिंगला, प्रधान आर्यसमाज पानीपत, श्री कपिलदेव शास्त्री अध्यक्ष हैफेड हरयाणा, चौ० राममेहर हुड्डा एडवोकेट, बहन सुभाषिणीदेवी आचार्या कन्या गुरुकुल खानपुर, बहन सुमित्राकुमारी आचार्या कन्या गुरुकुल नरेला, हरिदेव जी आचार्य गुरुकुल गौतमनगर दिल्ली आदि इस सम्मेलन के मुख्य वक्ता होंगे। इसके अतिरिक्त आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अधिकारी, महोपदेशक एवं भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

सभी बहन भाइयों से निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में पधारकर सम्मेलन की शोभा बढ़ावें एव वेदप्रचार का लाभ उठावें।

निवेदकः—
वैद्य बलवन्तसिंह
संयोजक—आर्य सम्मेलन पाकस्मा मण्डल
बलियाणा

जन्माष्टमी पर्व

दिनांक १६-८-८७ को आर्यसमाज नलवा की तरफ से जन्माष्टमी पर्व बड़ी धूम धाम से मनाया गया। प्रात काल आर्यसमाज मन्दिर में सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी द्वारा हवन किया गया तथा बाद में क्रान्तिकारी जी ने योगिराज श्रीकृष्ण जी के जीवन पर प्रकाश डाला तथा लोगों से आग्रह किया कि राष्ट्र रक्षा अन्याय अत्याचार तथा समाज में फैली हुई बुराइयों को दूर करने का व्रत लें।

—मन्त्री आर्य समाज, नलवा

सामूहिक वृष्टियज्ञ समारोह सम्पन्न

आर्यसमाज हांसी के सौजन्य से पंचायत धर्मशाला हांसी में पूज्य स्वामी अग्निदेव जी भीष्म (हिसार) के ब्रह्मत्व में हुआ। रात को प० सत्यप्रिय जी, प्राचार्य द० ब्रा० विद्यालय हिसार एवं पं० भरतलाल शास्त्री पुरोहित आर्यसमाज हांसी की रात को वेद कथा हुई। शहर के अपार जन समूह ने श्रद्धा से भाग लिया। दिनांक ७-८-८७ को ईशकृपा से हल्की वर्षा भी हुई। हवन का कार्यक्रम दिनांक ४ अगस्त से ११ अगस्त तक चला। ७ अगस्त को हांसी में अलग से उमरा गेट पर वृष्टि यज्ञ किया गया।

इसी प्रकार जिला हिसार के अनेक गांवों में भी वृष्टि यज्ञ किये गये जैसे ग्राम खेदड़, प्रभुवाला, रामायण, सातरोड कलां, मंगाली आदि। दिनांक ७ अगस्त को मंगाली में लगभग २०, २० अंगुल वर्षा हुई। ढकलाना मण्डी में भी वृष्टि यज्ञ किया गया। अन्य स्थानों पर भी इन्द्र देवता को रिझाने के लिये यज्ञों का कार्य क्रम जारी है।

—अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी
सभा उपदेशक

वेद प्रचार विशेषांक की सफलता

"सर्वहितकारी" साप्ताहिक का वेद प्रचार विशेषांक प्राप्त हुआ। वास्तव में विशेषांक काफी सुन्दर एवं आकर्षक था। मुख पृष्ठ पर ऋषि दयानन्द जी के भव्य चित्र ने इसकी उपयोगिता और इसके महत्व को और अत्यधिक बढ़ा दिया। इसमें सभी लेख शिक्षाप्रद एवं पठनीय थे। वेद-प्रचार की दृष्टि से काफी प्रकाश डाला गया है। जिसको पढने से जीवन-निर्माण की प्रेरणा भी मिलती है। विशेषांक सभी दृष्टियों से काफी उपयोगी बन पाया है। इस पत्र के विशेषांकों की काफी धूम रहती है यह भी अपनी उसी शान के अनुरूप निकला है। "सर्वहितकारी" आर्यजगत् का वह एकमात्र पत्र है जो स्वतन्त्र एवं निष्पक्ष रूप से जनता की सेवा कर रहा है। इसके साथ-साथ वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करने एवं ऋषि दयानन्द जी के मिशन को आगे बढाने के लिए भी कृतसंकल्प है। भविष्य में भी यह पत्र इसी तरह उन्नति के पथ पर अग्रसर होता रहे। यही प्रभु से कामना है विशेषांक की सफलता के लिए बधाई।

—राम कुमार आर्य
जलधर जोशी चौहान (सोनीपत)

आर्यसमाज हांसी का चुनाव

१२ जुलाई, १९८७ को आर्यसमाज का चुनाव हुआ जिसमें सर्व सम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये।

श्री हंसराज जी आर्य प्रधान, श्री डा० रामनाथ जी आर्य उप-प्रधान, श्री विजयकुमार जी आर्य मन्त्री, श्री रामसिंह जी आर्य उप मन्त्री, श्री मा० वीरभान कोषाध्यक्ष, श्री बृजमोहन जी आर्य पुस्तकाध्यक्ष, चौ० प्रतापसिंह जी आर्य वीर दल अधिष्ठाता।

—मन्त्री विजय अग्रवाल

आर्यसमाज रामपुरा के चुनाव सम्पन्न

कोटा—आर्यसमाज रामपुरा कोटा के गत दिनों चुनाव सम्पन्न हुए जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारी एवं अन्तरंग सदस्य चुने गये।

श्री सोमेश्वर भुलियान प्रधान, वैद्य श्री भगवतीप्रसाद श्याम मन्त्री, श्री विरधीचन्द बाहेती उपप्रधान, श्री कृष्ण जी साधक उप-प्रधान, श्री गोपीवल्लभ उपप्रधान, श्रीमती रुकमणी देवी उपप्रधान, श्री रामदयाल आर्यवीर उपमन्त्री, श्री कल्याणमल जी मित्तल कोषाध्यक्ष, श्री ब्रजनन्दन मठसिहला पुस्तकालयाध्यक्ष, श्री प्रहलाद-कृष्ण भार्गव आडिटर।

अन्तरंग सदस्य:—सर्वश्री प्रभुदयाल जी, श्रीमती पुष्पा भुलियान, भगवती देवी। —मन्त्री भगवतीप्रसाद श्याम

ग्राम बलकरा (भिवानी) में वैदिक धर्म प्रचार

कल दिनाङ्क १६ अगस्त, ८७ को ग्राम बलकरा (भिवानी) में "आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा" की ओर से ब्रह्मचारी संजयदेव शास्त्री तथा सभा के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री स्वामी देवानन्द सरस्वती ने वेदप्रचार किया। पं० शीशपाल जी ने मधुर भजन गाए। शास्त्री जी ने राष्ट्र की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डाला तथा युवकों का आह्वान किया कि वे राष्ट्र रक्षा का संकल्प लें। स्वामी देवानन्द जी के भजनों का कार्यक्रम बहुत अच्छा रहा। उल्लेखनीय है कि यहां लगभग २०-२५ वर्ष के पश्चात् आर्यसमाज का प्रचार किया गया है। सब ने बड़ी शान्ति से प्रचार सुना। इस अवसर पर 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को ३४ रु० दान प्राप्त हुआ।

माननीय सरपंच श्री शिवलाल जी, श्री ताराचन्द जी, ब्र० रवीन्द्र जी तथा पं० जगराज आदि का सहयोग सराहनीय रहा।



मद्यपान नहीं विषपान !!

आज सर्वत्र सुरापान का एक सामान्य सा रिवाज चल पड़ा है। चाहे महलों में रहने वाला, वायुयान में उड़ने वाला हो या फुटपाथ पर बैठकर समय यापन करने वाला दोनों इससे अछूते नहीं रहे। हां अन्तर इतना ही है एक अपने सामर्थ्य से सौ-सौ की पीता है एक अपने देशी ठर्रे से काम चला लेता है। मद्यपान को विषपान देखकर आप अवश्य चौंके होंगे परन्तु मद्य की तुलना विष के साथ देखकर आपको आश्चर्य होगा कि मद्य को विष भी कह सकते हैं। इस विषैले रंगीन पानी में राजाओं ने अपने राज्य और सेठों ने अपने ठाठ न्यौछावर कर दिये। प्रस्तुत लेख में मद्य की तुलना विष और ओजस् से करेंगे।

विष—(परिभाषा) कोई भी तरल या ठोस पदार्थ शरीर के बाह्य या आभ्यन्तर में प्रयुक्त होकर मृत्यु या उसके समान कष्ट दे अथवा केवल अस्वस्थता कर दे वह विष है।

ओजस्—वह पदार्थ है जिससे व्याप्त होकर सब प्राणी जीवित या क्रियाशील रहते हैं। जिसके बिना प्राणी का जीवन रह ही नहीं सकता। जो प्रारम्भ में गर्भ का द्वार होता है और जिसके बिना रज और वीर्य के मिश्रण में जीव का प्रादुर्भाव ही नहीं हो सकता। जो गर्भ के रस अर्थात् प्रथमधातु का भी सार या प्रसादभूत पदार्थ है और निमित्त होते हुए हृदय में सर्वप्रथम प्रविष्ट होता है, तदनन्तर समस्त शरीर में व्याप्त हो जाता है। इसकी क्षीणता से प्राणी निस्तेज रोगी तथा नाश से मृत्यु हो जाती है। जो हृदय में रहकर शरीर का धारण करता है जो स्वयं रस का स्नेह है। जिसमें प्राण प्रतिष्ठित हैं। (आयुर्वेद)

मद्य एक आधुनिक विचार

मद्य को आधुनिक भाषा में एलकोहल कहते हैं। ये कई प्रकार के होते हैं। जैसे—अमील(Amyl Alcohal) इथिल(Ethyl) प्रोपिल (Propyl) मिथिन(Methyl) बेन्झिल(Benzyl) इत्यादि। ओषधियों में इथिल एलकोहल प्रयुक्त होता है। शुद्ध मद्य(Absolute Alcohal) कहते हैं। इसमें ९९% इथिल एलकोहल होता है। मेथिलेटिड स्प्रिट (Methylated Spirit) में ९५% इथिल एलकोहल होता है। पीने में कई प्रकार के मद्य काम में आते हैं। जिनके नाम तथा उनमें आयतानुसार प्रतिशत इथिल एलकोहल की मात्रा लिखते हैं—

मद्य का नाम	प्रतिशत इथिल एलकोहल
१. व्हिस्की (Whisky)	४०%
२. थ्रिएक्स रम (XXX RuM)	५१ से ५९%
३. जिन (Gin)	५१ से ५९%
४. ब्राण्डी (Brandey)	४० से ५०%
५ मेडेइरा (Madeira)	२२% तक
६. पोर्ट (Port)	२०% तक
७. शेरी (Sherry)	१६ से १८%
८. शेम्पेन (Champagne)	१० से १३%
९. क्लेरेट (Claret)	८ से १२%
१०. एल (Ale)	३ से ७%
११. बीयर (Beer)	१ से ३%

मद्य की घातक मात्रा—शुद्ध एलकोहल एक से ढाई छटांक
घातक काल १२ से २४ घण्टा

मद्य के उपद्रव—मुखमण्डल रक्त वर्ण का हो जाता है। मानसिक विभ्रम (Mental Confusion) होता है। भाषण-कर्महीन, अबध्य और अस्पष्ट होता है। पुतलियां प्रसारित हो जाती हैं। रोगी प्रलाप करने लगता है। शरीर की मांसपेशियां ढीली और अधिकार विहीन हो जाती हैं। रोगी चलने में लड़खड़ाता है। परावर्तन (दृष्टि क्षमता) नष्ट हो जाता है। पूर्णसंज्ञाहीनता की अवस्था आ जाती है। शरीर का तापक्रम न्यून हो जाता है। त्वचा शीतल और स्वेदयुक्त हो जाती है। श्वासावरोध होकर रोगी की मृत्यु हो जाती है। निमोनिया (Pneumonia) या फफ्फुस शोफ (Odema) के उपद्रवों से मृत्यु होने की सम्भावना होती है। नियमित पीने वालों में ये लक्षण स्थायी बन जाते हैं।

अब गुणों के आधार पर विष, मद्य व ओजस् का तुलनात्मक अध्ययन करते हैं—

विष	मद्य	ओजस्
१. लघु	लघु	गुरु
२ रूक्ष	रूक्ष	स्निग्ध
३ उष्ण	उष्ण	शीत
४. तीक्ष्ण	तीक्ष्ण	मृदु
५. सूक्ष्म	सूक्ष्म	बहल
६. आशुकारी	आशुगामी	प्रसाद
७. व्यवायी	व्यवायी	स्थिर
८. अनिर्देश्यरस	अम्ल	मधुर
९. विकासी	विकासी	श्लक्ष्ण
१०. विशद	विशद	पिच्छिल

विष में विद्यमान दशों गुण मद्य में भी पाये जाते हैं। अतः इसे विष ही माना जाता है। इनका विस्तार इस प्रकार है—

१. लघु—विष का यह गुण सरलता से चिकित्सा नहीं होने देता, कफ नष्ट करता है और शीघ्रता से पच जाता है।

२. रूक्ष—वायु को बढ़ाता है तथा कफ को नष्ट करता है।

३. उष्ण—इस गुण के कारण विष पित्त को बढ़ाता है, विषाद (दुःख), मूर्च्छा, तृष्णा (प्यास की अधिकता), स्वेद तथा दाह को उत्पन्न करता है। हृदय की गति को बढ़ा देता है। पित्त और रक्त दोनों को कुपित करता है।

४. सूक्ष्म—रक्त को दूषित करता तथा शरीर के सूक्ष्म से सूक्ष्म अवयवों में प्रविष्ट हो जाता है।

५. अनिर्देश्य रस—(जिसके रस का निर्णय न हो सके) कफ को कुपित करता है अतः शरीर से निकलना कठिन होता है और रोगी को चिरकाल तक कष्ट देता रहता है।

६. आशु—आहार रस में शीघ्र गतिशील हो जाता है और शीघ्रातिशीघ्र अपना प्रभाव दिखलाता है।

७ व्यवायी—पहले शरीर में व्याप्त हो जाता है या पहले शरीर में व्याप्त होकर पश्चात् पचता है।

८ तीक्ष्ण—हृदयादि मर्मस्थानों को नष्ट या विकृत कर डालता है। पित्तवर्धक और लेखन (छीलता है) करता है तथा वायु की गति को विकृत कर देता है कफ का नाशक भी होता है।

९. विकासी—प्राण नाशक और समस्त धातुओं को ओजस् से पृथक् करके सन्धि बन्धनों को शिथिल कर डालता है।

१०. विशद—इसकी गति दोषों में कहीं भी रुकती नहीं है।

इस प्रकार विष अपने उपर्युक्त गुणों के कारण प्राणी के शरीर को विषण्ण या खिन्न कर देना है तथा धातुओं को नष्ट भ्रष्ट और विकृत करके प्राण घातक होता है। गुणों को न्यूनाधिकता के अनुसार विषो के प्रभाव भी न्यूनाधिक होते हैं अर्थात् दो या तीन गुणों से युक्त विष अल्प विषाक्त और पूर्ण दस गुणों सहित विष सद्यः प्राणहर होता है।

इस प्रकार गुणात्मक विवेचन से सिद्ध हुआ कि मद्य एक पूर्ण विष है।

विष के विपरीत गुण ओजस् के है इस कारण वह जीवन का मूलाधार है और विष मृत्यु का हेतु है अतः मद्यादि विष ठीक ओजस् के विपरीत होने से ओजस् को नष्ट कर डालते हैं जिससे मृत्यु तक हो जाती है या व्यक्ति निस्तेज, बलहीन, वर्णहीन होकर जीता है।

जो लोग अत्यधिक मात्रा में या तीव्र मद्य, उष्ण काल में, रूक्ष अन्नपान करते हुए एवं निराहार या अल्पाहार ही मद्य पीते हैं वे मृत्यु अथवा मृत्यु सम रोगों का शीघ्र वरण करते हैं। अतः बुद्धिजीवी को चाहिए वह इस व्यसन से दूर रहे।

—आचार्य यज्ञदेव आर्य
द्वारा सु० वेदप्रकाश जी
४६८—ब्रह्मपुरी (मेरठ)

हरयाणा प्रदेश के आर्यसमाजों से निवेदन

—श्री दीपचन्द कासनी

हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा की ५, ७, ८७ को सभा में शराबन्दी हेतु प्रस्ताव पास कर युद्ध स्तर पर तीन मास काम करने की योजना बनाई थी। आज डेढ मास व्यतीत हो गया, पर शराब बन्दी के कार्य पर कोई ध्यान नही दिया गया। इस अवसर पर सभा ने २५००० रु० व्यय करके शराब बन्दो प्रचार लिखित तथा प्रचार के रूप में व्यय कर जागृति लाने का संकल्प लिया था।

आयसमाज की स्थापना जिस उद्देश्य को लेकर की थो, वह उद्देश्य छोडकर यह एक व्यापारिक संस्था बनती जा रही है। सब समाज हिसाब देखकर व्यय करती हैं। यदि योद्धाओं को ट्रेनिंग देने में हिसाब आय व्यय का रखा जावे तो एक भी योद्धा तैयार नहीं हो सकता, क्योंकि वहां तो प्रश्न ट्रेनिंग देने का है वहां आय हो ही नहीं सकती। अमेनिशन जलता है और सिपाही ट्रेण्ड होते हैं।

यही अवस्था हर आर्यसमाज की होनी चाहिये, हर समाज में एक पार्टी दिवारों पर लिखने वाली और पोस्टर चिपकाने वाली होनी चाहिये। एक पार्टी यज्ञ कर शराब के आदी युवकों को ला व्रत (संकल्प) दिलाने वाली होनी चाहिये। आर्यसमाज के तपस्वी ज्ञानी साधुओं और वैद्यों को शराब से घृणा करने वाली औषधियां बांटनी चाहिये। शराबी के परिवार में कोई ना कोई समझदार आर्य अवश्य एक रात ठहरे, और उनके परिवार को सब ऊँच नीच समझा कर शराब से घृणा पैदा करने हेतु पूर्ण शक्ति लगा देनी चाहिये।

गांव में बड़े बूढो और समझदार व्यक्तियों की एक सभा बना देनी चाहिये। वे अपने तौर पर नित्य ५, ७ घरों मे शराब की हानियां समझावे। उनके दिल में शराबी जो आदी हो गया है उसे गांव की हानि समझना चाहिये। उसके हाथ में जो मुराड़ है वह धीरे-२ सब गाव को जला देगा। आप निश्चय माने कि यह अग्नि यदि यही समाप्त न हुई तो भयंकर रूप धारण करके गाव की मान मर्यादा, बहन बेटी की इज्जत को और बुजर्गो के आदर को ले डूबेगी।

युग निर्माण योजना के नाम पर मथुरा में एक संस्था चल रही है। उनके कार्यकर्ता हर दिवार पर हर पत्थर पर अपना प्रचार लिखते फिरते हैं वे कब लिखते हैं किसी को पता नही चलता, पर कोई जगह उनके स्वर्ग लाने वाले वाक्यों से खाली नही मिलेगी।

हमारे आर्यसमाजों को अपने गांव में यह कार्य एक दम कर देना चाहिये। प्रतिनिधि सभा को चाहिये कि वह हर समाज को ऐसे लिखने वाले वाक्य अपने सर्वहितकारी पत्र द्वारा शीघ्र भिजवा दे। अपनी गाड़ी में सामग्री, घृत, समिधा ले गाव-गांव में यज्ञ करते तथा व्रत लेते चले। एक गांव पर पाव भर घृत, आधा सेर सामग्री और जितनी उचित हो समिधायें खर्च करे। इस सम्बन्ध में सभा को दानी अवश्य मिलेगे। सामग्री देने वाले महाशियां दी हट्टी वाले जैसे दानी सामग्री देकर इस कार्य को चलायेंगे। सभा को आय का ध्यान छोड़कर अपना भाग यथोचित खर्च कर देना चाहिये। शहरों में तो आर्य भाई समझदार तथा लग्नशील होते हैं। उन्हें तो एक रेहड़ी में सफेदी रख दो आदमी पोतने वाले लगा देने चाहियें। यह कार्य रात्रि को करना पड़े तो अवश्य करें। बाहर से आने वाले भाइयों की आंखें उनके इस शुभ कार्य को देख पुलकित हो जानी चाहियें।

वैदिक यति मण्डल का सम्मेलन एवं मठ का उत्सव

दयानन्द मठ चम्बा का वार्षिकोत्सव ६, ७, ८ नवम्बर १९८७ तदनुसार २१, २२, २३ कार्तिक, विक्रम सं० २०४४ को होना निश्चित हुआ है। वैदिक यति मण्डल के अध्यक्ष पूज्यपाद श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के आदेशानुसार वैदिक यति मण्डल का एक आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण सम्मेलन इसी अवसर पर दयानन्द मठ चम्बा में आयोजित किया जाएगा। माननीय यतियों को एक ओर का मार्ग व्यय भी दिया जाएगा। यति महानुभावों से विनम्र प्रार्थना है कि अपनी स्वीकृति भेजकर अनुगृहीत करें।

—स्वामी सुमेधानन्द दयानन्द मठ चम्बा (हि० प्र०)

लिखा गया सत्यार्थ प्रकाश

—राधेश्याम "आर्य" विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

मानवता से पूरित आर्यों का था भारत देश महान,
शुचि पथ पावन अनुगामी था, नहीं किसी में था अभिमान,
सर्वोत्तम संस्कृति शुचितम थी, सत्य शिवम् सुन्दर ललाम,
कर्म पथों पर बढ़ना सदा सीखा था, होकर निष्काम।

हमने ही सारे जग को दे वेदों का संदेश महान्,
पाठ पढाया मानवता का, दिया मनुष्योचित था ज्ञान,
सुख समृद्धि के मृदुल झकोरे बहते थे भारत कानन में,
शांति-सफलता के मनभावन गीत गूजते थे मन में।

समता स्रोत बहा करता था, भरतभूमि के प्रागण में,
सामवेद संगीत मधुरतम, सदा गूंजते थे आंगन में,
जगद्गुरु था देश हमारा, स्वर्णभूमि थी पुण्य धरा,
आर्यों के गौरव का गायन करती रहती वसुन्धरा।

भेदभाव का नाम नहीं था, जाति-पाँति का स्वत्व नहीं,
मानवता का महाप्रसार था, भू पर कहीं कुतत्त्व नहीं,
वर्णाश्रम की पुण्य व्यवस्था, यहां सदा से रही व्यवस्थित,
प्रेम दया ममता फैली थी, सत्य-अहिसा रही अवस्थित।

पर, परिवर्तन वेला आयी, वेद मार्ग हमने त्यागा,
मानवता पथ पुण्य हमारा, भारत की धरती से भागा,
सत्य पथों को छोड़ सभी ने, दम्भ द्वेष कटु अपनाया,
अन्यायों का बजा नगाड़ा, दानवता ने मुह बाया।

स्वार्थ-साधना में अपनी हम, ओ३म् नाम शुचि भूल गए,
भगवानो की आंधी में हम, वैदिक पथ प्रतिकूल गए,
जात-पात का दानव आया, वर्णाश्रम सब नष्ट हुआ,
भेदभाव मच गया धरा पर, स्वर्णिम देश विनष्ट हुआ।

कोटिक देव-देवियों का फिर, अर्चन होने लगा यहाँ,
भूत-प्रेत-डाकिनियों का फिर, पूजन होने लगा यहाँ,
धूर्तों ने लूटा जनता को, झूठ-फरेब अति अपनाया,
अत्याचार किए अनुचित वे, माया जाल अनन्त बिछाया।

काँप उठी भू दिव्य देश की, अश्व तथा नर-पशु बलि से,
अबलाए चीत्कार कर उठीं, यहां पिशाचों के छल से,
पतन पराजय के कूलों पर, आया अपना प्यारा देश,
दशों दिशाओं का शासक यह, खण्ड खण्ड हो गया स्वदेश।

बौद्ध जैन चार्वाक् सदृश, नास्तिक मत जन्मे भू पर,
पोप-पुरोहित-पंडाओ ने लूटा हमको ठग बन कर,
जगद्गुरु यह भारत प्यारा, सीमा पर पहुचा अवनति की,
स्वत्व मिटा कर शौर्य गवाया, अनुगामी बन कलुष बिनति की।

ऐसी भीषण वेला में ऋषि दयानन्द भारत आया,
पाठ पढ़ा कर वेदों का, आलोक धरा पर बिखराया,
अज्ञान तिमिर को दूर भगाने का उसने उद्देश्य बनाया,
बिखरा रश्मि प्रखर दिनकर की, वेदों का संदेश सुनाया।

समता-शांति-समृद्धि जिससे भारत में आए,
जो कुहराम मचा है भू पर, नष्टप्राय सब हो जाए,
अपौरुषेय वेदों का गूंजे, धरती पर मंगलमय गान,
दानवता के पद्चिन्हों का, होवे सतत शमन अवसान।

मानवता का मानव उर में, होता रहे सहर्ष विकास,
यही बताने हेतु धरा पर, लिखा गया सत्यार्थ प्रकाश,
वैदिक धर्म पुनः जाग्रत हो, महिमण्डल नभ में चमके,
ज्योतिष्मान् किरण से उसकी अवनी-अम्बर फिर दमके।

आर्यसमाज किस ओर ?

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक अध्यक्ष—वैदिक संस्थान नजीबाबाद, उ०प्र०

आर्यसमाज अपने आरम्भ काल से ही वैदिक ज्ञान प्रवाह के साथ-साथ सामयिक समस्याओं पर भी अतीव सुलझे हुए विचार प्रस्तुत करता रहा है। आर्यसमाज के विद्वानों में यह प्रतिभाएं भी प्रारंभ से रही हैं, जो विविध सामयिक समस्याओं पर तथ्यात्मक तथा व्यावहारिक विचार व सुझाव प्रस्तुत कर जनता का मार्गदर्शन कर सकें। इसका कारण यह है कि आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती कृत ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के अतिरिक्त आर्यसमाज के नियम और उद्देश्य स्वरूप दिये गये ऋषिवर के दस सूत्र भी मनीषियों के लिये सर्वाङ्ग पूर्ण विचार क्षेत्र प्रदान करते हैं।

आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संगों, वेदप्रचार सप्ताह, महर्षि दयानन्द बोध सप्ताह आदि विविध पर्वों के अवसरों तथा आर्यसमाजों के वार्षिकोत्सवों जनपदीय, प्रदेशीय और सार्वदेशिक सम्मेलनों के अवसरों पर उपस्थित समस्याओं पर विचार प्रसारण की दृष्टि से विशेष सम्मेलनों के आयोजन भी किये जाते रहे हैं।

वेद, शिक्षा, दलितोद्धार, महिला, गोरक्षा, राष्ट्रभाषा तथा राष्ट्र रक्षा सम्मेलनों को भी आर्यसमाज ने कम महत्त्व नहीं दिया। मुझे भी अपने जीवन में सैंकड़ों सम्मेलनों को अध्यक्ष, उद्घाटनकर्ता तथा वक्ता के रूप में सम्बोधित करने के अवसर मिले हैं।

पिछले कुछ समय से यह देखने में आ रहा है कि इन सम्मेलनों ....विशेषकर राष्ट्ररक्षा सम्मेलन के अवसर पर आर्यसमाजों के अधिकारी सरकारी अधिकारियों को मुख्य अतिथि के रूप में बुलाने लगे तथा आर्यसमाज के बड़े से बड़े विद्वान् वक्ता से भी बढ़कर सम्मान देने लगे हैं और अब तो स्थिति यहां तक आ गयी है कि पुलिस के अधिकारियों को प्रशासकीय अधिकारियों की भांति मंच पर सम्मानित और प्रतिष्ठित रूप में लाने लगे हैं जबकि पुलिस विभाग प्रशासन तन्त्र नहीं अपितु प्रबन्धतन्त्र है।

गत १ मार्च को उत्तर प्रदेश जौनपुर नगर आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव के अवसर पर आर्यसमाज की सर्वोच्च शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री श्री प्रो० आनन्द प्रकाश जी की अध्यक्षता में राष्ट्र-रक्षा सम्मेलन हो रहा था। मैं भी उस सभा में एक वक्ता था। मेरा भाषण हो रहा था कि सम्मेलन के मुख्य अतिथि पुलिस अधीक्षक मोहदय मंच पर पधारे। मैं उस समय शहाबुद्दीन की इस राष्ट्र-द्रोही घोषणा का उत्तर दे रहा था कि "यदि भारत के बीस करोड मुसलमान विद्रोह पर उतारू होकर सडकों पर निकल आये तो भारत की सेनायें उनका मुकाबला नहीं कर सकती।" मैंने उत्तर में कहा था कि "यदि शहाबुद्दीन के मुसलमान राष्ट्र-दोह के लिये सड़कों पर आकर भारत की सेनाओं से टकरायेंगे तो अपनी बारह लाख सेनाओं के साथ साठ करोड़ राष्ट्र-भक्त हिन्दू भी कमर कस युद्ध के लिए मैदान में निकल आयेगा।"

मेरा इतना कहना था कि पुलिस अधीक्षक महोदय ने कहा "यह क्या है ?" सम्मेलन के अध्यक्ष स्वनाम धन्य श्री प्रो० आनन्द प्रकाश जी ने कहा "मैंने तो पहले ही मना किया था।" और मन्त्री आर्यसमाज तुरन्त मेरी ओर दौड़े। मैंने उन्हें इंगित किया तथा सूत्र रूप में समझाना चाहा। मैं नहीं चाहता था कि सम्मेलन अध्यक्ष और आर्यसमाज के मन्त्री को भी एस० पी० के साथ-साथ लताड़ बताकर वातावरण को विषाक्त करूं, अतएव मैंने मंच छोड़ दिया। मेरे मंच छोड़ने पर भी जब सम्मेलनाध्यक्ष और आर्यसमाज के मन्त्री को अपने पद की गरिमा और आर्यसमाज की प्रतिष्ठा व सम्मान का ध्यान नहीं आया तब यह कहकर मैं सभा स्थल से चल दिया कि "बुला लो किसी मिरासी को, जो आप लोगों की इच्छानुसार गजल, ठप्पे, ठुमरी आदि सुनाये, जा रहा है दयानन्द का संन्यासी तुम्हारे मंच से।"

मेरे बाद श्री राजेश "पंछी" भजनोपदेशक बोले तो उन्हें भी रोक दिया और जब उन्होंने मंच छोड़ा तो सभा से बहुत लोग यह कहते हुए उठ गये कि पहले स्वामी जी को रोक दिया और अब पंछी जी को तो क्यों तो उत्सव किया था और क्यों राष्ट्र-रक्षा सम्मेलन बुलाया गया था ? उसके बाद सभाध्यक्ष और समाज के मन्त्री-प्रधान ने एस०पी० का सारगर्भित वैदिक राष्ट्रभक्ति के ओतप्रोत राष्ट्ररक्षा की भावनायें जनमानस में भरने वाला ओजस्वी भाषण सुनकर अपने कर्णकुहरों को तृप्त और जीवन को पवित्र बनाया।

गत ६ जून को बिजनौर जनपद में आर्यसमाज नागल सोती का उत्सव था। वहां के थानेदार महोदय मुझे निर्देश देने के लिए पधारे। कहने लगे आप यह मत कहना, वह मत करना, मैंने उनसे निवेदन किया कि "आप चिन्ता न करें, मैं वही कहूंगा, जो मुझे कहना चाहिए और जो मुझे कहना चाहिए, वह मैं भलीभांति समझता हूं।" जब वह बोलते ही चले गये, तब मैंने कहा कि आप अपने दायित्व और कर्तव्य के प्रति सजग रहिए, मुझे अपने दायित्व और कर्तव्य का ज्ञान है।" परन्तु वह तो दरोगा जी थे, हार मानने वाले तो थे नही। पूरे पुलिसिया प्रभाव की भाषा में बोले, "मैं यह वर्दी पहने हूं, नहीं तो बोलना मुझे भी आता है।" मैंने कहा, "आप सरकारी नौकरी में होने के साथ-साथ भारत के नागरिक भी तो हैं, उसी अधिकार से वार्तालाप कर लीजिये।" किन्तु "पय पानं भुजङ्गानां केवलं विष-वर्धनम्" दूध पीकर भी जिस प्रकार सांप में विष की ही वृद्धि होती है उसी प्रकार दरोगा जी अकड़ने लगे। फिर मैंने उन्हीं के स्वर में ही उत्तर दिया, "वर्दी उतारकर रख दीजिये और फिर वार्तालाप कीजिये। आप यह समझते हैं कि आप सरकारी नौकरी में आकर नागरिकता के दायित्व और कर्त्तव्य से मुक्त हो गये हैं और अब जो कुछ आप कहें उपदेष्टाओं और वक्ताओं को वही कहना चाहिए, यह आपको भ्रान्ति है। मुझे जो कहना है कहूंगा, आपको जो करना हो करिये।" जाते-जाते अकडकर बोले, "आप क्या करेंगे, रोटियां तो मुझे मिलेंगी।" मैंने कहा "यही है मेरा और आपका अन्तर कि आपने रोटियों के लिये नौकरी की है और मैं रोटियों को छोडकर समाज और राष्ट्र के हित में निकला हूं। आप रोटियों के चक्कर में भारतीय नागरिकता को भी मन से निकालकर उसे हेय समझकर भारत की राष्ट्रीयता का अपमान कर रहे हैं और मैं एक सच्चे राष्ट्रभक्त के नाते राष्ट्रहित में जीवन की आहुति देने को सन्नद्ध हूं।"

मध्याह्नोत्तर राष्ट्र रक्षा सम्मेलन की कार्यवाही श्री जयनारायण "अरूण" प्रधान बिजनौर गढवाल जनपदीय आर्योप प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुई। सम्मेलन के मुख्य अतिथि अतिरिक्त जिलाधिकारी भी मंच पर विराजमान थे। श्री अरुण जी ने मुझसे संक्षेप में अपनी बात कहने को कहा क्योंकि मुख्य अतिथि महोदय को सायंकाल बिजनौर में कोई मीटिंग लेनी थी। मैंने भी एक बार यह कह दिया कि मैं शीघ्र ही अपने विचारों को विराम दूंगा, क्योंकि मुख्य अतिथि महोदय को अभी अन्य कार्यक्रम में भाग लेना है। वह दोनों बार यही बोले मैं तो आज आपको सुनने ही बैठा हूं, आप आराम से अपनी पूरी बात कहिये। यह सुनकर दरोगा जी की पहले से ही ढली हुई गर्दन और नीचे को झुक गयी और जब मेरे भाषणोपरान्त मुख्य अतिथि का भाषण मेरे पूर्णतया समर्थन में हुआ तो दरोगा जी मातमी सूरत बनाये सम्भवतः मरसिया पढ रहे थे।

रात्री की सभा में जब मेरा भाषण हो रहा था तो दरोगा जी कुर्सी पर आ विराजे और आर्यसमाज के प्रधान को अपना हथियार बनाया। प्रधान जी का तो मुझे रोकने का साहस नहीं हुआ, उन्होंने एक अन्य काषाय वस्त्रधारी व्यक्ति को भेजकर मेरा भाषण बन्द करा दिया। अभी मैं केवल ५-७ मिनट ही बोल पाया था। प्रातःकाल एक उपदेशक ने मुझे बताया कि रात्री को किसी के यह कहने पर कि स्वामी जी तो प्रातःकाल चले जायेंगे, प्रधान जी ने कहा "चला जायेगा तो चला जाय, हम उत्सव ही समाप्त कर ददे।" और सचमुच प्रधान जी ने अगले दिन उत्सव समाप्त कर दिया। हुआ यह कि रात्री कालीन प्रधान जी की हरकत और मेरे भाषण के बन्द होने से अगले दिन ८-१० बच्चों के अतिरिक्त कोई श्रोता नहीं आया। हां, जो सूचनायें मेरे पास आयीं, उनके अनुसार प्रधान जी जितनी गालियां मुझे दे सकते थे, वह उन्होंने दी। एक सज्जन ने तो मुझे यहां तक

(शेष पृष्ठ ८ पर)

श्री रामेश्वर दयाल शर्मा प्रधान आर्यसमाज समालखा को पुत्र शोक

समालखा—श्री रामेश्वर दयाल शर्मा प्रधान आर्यसमाज समालखा मण्डी (करनाल) के कनिष्ठ पुत्र श्री श्याम सुन्दर शर्मा को ६ अगस्त को पूर्वार्द्ध लगभग १० बजे हरयाणा रोडवेज अम्बाला की एक बस ने कुचल दिया। २३ वर्षीय यह नवयुवक आर्यसमाज समालखा का निष्ठान् सदस्य था। आर्य वीर दल समालखा तथा आर्यसमाज समालखा द्वारा सञ्चालित प्रत्येक गतिविधि में रुचि एवं सक्रियतापूर्वक भाग लेता था। इस नवयुवक के असामयिक और आकस्मिक निधन से श्री रामेश्वर दयाल एवं उनके परिवार पर तो वज्रपात हुआ ही है, आर्यसमाज और आर्य वीर दल समालखा को भी क्षति पहुंची है। आर्यसमाज समालखा, आर्यवीर दल समालखा, आर्यसमाज मनाना एवं अन्यान्य धार्मिक तथा सामाजिक संस्थाओं ने इस युवक के असामयिक और अकस्मात् निधन पर शोक प्रस्ताव पास कर दिवंगत की सद्गति एवं शान्ति हेतु तथा श्री रामेश्वर दयाल शर्मा एवं उनके परिवार के लिये इस असह्य वेदना को सहन करने की शक्ति के लिये परम पिता परमात्मा से प्रार्थना की है।

—मन्त्री आर्यसमाज समालखा

(पृष्ठ ७ का शेष)

कहा कि उसने जो गालियां बकी हैं, वह मैं तो अपनी वाणी से उच्चारण भी नहीं कर सकता। विश्वस्त सूचना है कि प्रधान जी को किसी मकान के झगड़े में दरोगा जी की सहायता की आवश्यकता है, इस कारण उन्होंने ऐसा किया।

विचारणीय प्रश्न यह है कि यदि पुलिस अधीक्षक और थानेदारों द्वारा आर्यसमाज के मञ्च का दिशा निर्देशन और उसके कार्यक्रमों का इस प्रकार नियन्त्रण होना है तो न केवल संन्यासी अपितु कोई भी अच्छा वक्ता आर्यसमाज के मंच पर अपमानित होने और आर्यसमाज को इस प्रकार पुलिसियों द्वारा पददलित होते देखने के लिए नहीं आयेगा। नांगल सोतो के थानेदार की भांति केवल रोटी के टुकड़ों के लिये जो उपदेशक बना हो, उसकी बात दूसरी है। आर्यसमाजों के अधिकारी ही नहीं अपितु आर्यों के सर्वोच्च संगठन के उपमन्त्री तक जब पुलिस को प्रसन्न करने के लिये आर्यसमाज में अपने प्रतिष्ठित पद की गरिमा और राष्ट्ररक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता की प्रतिष्ठा को इस प्रकार पुलिस के चरणों में डालेंगे तो आर्यसमाज के संस्थापक युगप्रवर्तक जगद्गुरु महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती की आशाओं का क्या होगा? शिरोमणि सभाओं को इस विषय में निश्चय ही कुछ ठोस पग उठाने चाहियें। यदि सभायें शीघ्र ही कोई ठोस पग नहीं उठाती तो परिणाम विनाश के अतिरिक्त कुछ नहीं होगा। सभाओं का दायित्व है कि वह इस प्रकार की गतिविधियों को कठोर पग उठाकर प्रतिबन्धित करें तथा इस प्रकार आर्यसमाज के गौरव और प्रतिष्ठा को पुलिसियों के चरणों में डालकर धूलि में मिलाने वाले व्यक्तियों को बहिष्कृत कर आर्यसमाज का शोधन करें।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 K 49 - सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,०८८



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री सह-सम्पादक—डा० यज्ञवीर

वर्ष १४, अङ्क ३९ ७ सितम्बर, १९८७ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

"सत्यार्थ-प्रकाश" के प्रश्नोत्तर

[पं० धर्मदेव "मनीषी" व्याकरणाचार्य गुरुकुल कालवा]

"ओ३म्" यह ओंकार शब्द परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम है। क्योंकि इसमें जो अ उ और म् तीन अक्षर मिलकर एक 'ओ३म्' समुदाय हुआ है। इस एक नाम से परमेश्वर के बहुत नाम आ जाते हैं। जैसे—अकार से विराट्, अग्नि और विश्वादि, उकार से हिरण्यगर्भ, वायु, तैजसादि, मकार से ईश्वर, आदित्य और प्राज्ञादि नामों का वाचक और ग्राहक है। उसका ऐसा ही वेदादि सत्यशास्त्रों में स्पष्ट व्याख्यान किया है कि प्रकरणानुकूल ये सब नाम परमेश्वर ही के हैं।

प्रश्न—परमेश्वर से भिन्न अर्थों के वाचक विराट् आदि नाम क्यों नहीं ? ब्रह्माण्ड, पृथिवी आदि भूत, इन्द्रादि देवता और वैद्यकशास्त्र में शुण्ठ्यादि औषधियों के भी ये नाम हैं वा नहीं ?

उत्तर—हैं, परन्तु परमात्मा के भी हैं। (प्रथम समुल्लास)

प्रश्न—क्या जो यह संसार में राजा-प्रजा सुखी-दुःखी हो रहे हैं यह ग्रहों का फल नहीं है ?

उत्तर—नहीं, ये सब पाप-पुण्यों के फल हैं।

प्रश्न—तो क्या ज्योतिषशास्त्र झूठा है ?

उत्तर—नहीं, जो उसमें अङ्क, बीज, रेखागणित विद्या है वह सब सच्ची, जो फल की लीला है वह सब झूठी है। (द्वितीय समुल्लास)

प्रश्न क्या इस होम करने के बिना पाप होता है ?

उत्तर—हाँ, क्योंकि जिस मनुष्य के शरीर से जितना दुर्गन्ध उत्पन्न होके वायु और जल को बिगाड़कर रोगोत्पत्ति का निमित्त होने से प्राणियों को दुःख प्राप्त कराता है, उतना ही पाप उस मनुष्य को होता है। इसलिये उस पाप के निवारणार्थ उतना सुगन्ध वा उससे अधिक, वायु और जल में फैलाना चाहिये और खिलाने-पिलाने से उसी एक व्यक्ति को सुख विशेष होता है। जितना घृत और सुगन्धादि पदार्थ एक मनुष्य खाता है, उतने द्रव्य के होम से लाखों मनुष्यों का उपकार होता है। परन्तु जो मनुष्य लोग घृतादि उत्तम पदार्थ न खावें तो उनके शरीर और आत्मा के बल की उन्नति न हो सके। इससे अच्छे पदार्थ खिलाना-पिलाना भी चाहिये, परन्तु इससे होम अधिक करना उचित है। इसलिये होम का करना अत्यावश्यक है। (तृतीय समुल्लास)

प्रश्न—क्या स्त्री लोग भी वेदों को पढ़ें ?

उत्तर—अवश्य, देखो श्रौतसूत्रादि में "इमं मन्त्रं पत्नी पठेत्" अर्थात् स्त्री यज्ञ में इस मन्त्र को पढ़े। जो वेदादि शास्त्रों को न पढ़ी होवे, तो यज्ञ में स्वर सहित मन्त्रों का उच्चारण और संस्कृत भाषण कैसे कर सके ? भारतवर्ष की स्त्रियों में भूषणरूप गार्गी आदि वेदादि शास्त्रों को पढ़ के पूर्ण विदुषी हुई थीं, यह शतपथ ब्राह्मण में स्पष्ट लिखा है। (तृतीय समुल्लास)

प्रश्न—विवाह का समय और प्रकार कौन सा अच्छा है ?

उत्तर—सोलहवें वर्ष से लेकर चौबीसवें वर्ष तक कन्या और २५ पच्चीसवें वर्ष से लेके ४८वें वर्ष तक पुरुष का विवाह समय उत्तम है। [illegible] की स्त्री और तीस पैंतीस वा चालीस वर्ष के पुरुष का मध्यम, चौबीस वर्ष की स्त्री और अड़तालीस वर्ष के पुरुष का विवाह (होना) उत्तम है। जिस देश में इसी प्रकार की विधि श्रेष्ठ और ब्रह्मचर्य विद्याभ्यास अधिक होता है वह देश सुखी और जिस देश में ब्रह्मचर्य विद्याग्रहण-रहित बाल्यावस्था और अयोग्यों का विवाह होता है वह देश दुःख में डूब जाता है। क्योंकि ब्रह्मचर्य विद्या के ग्रहणपूर्वक विवाह के सुधार ही से सब बातों का सुधार और बिगड़ने से बिगाड़ हो जाता है।

(चतुर्थ समुल्लास)

प्रश्न—जो संन्यासी से अन्य साधु, वैरागी, गुसाईं, खाकी आदि हैं वे भी संन्यासाश्रम में गिने जायेंगे वा नहीं ?

उत्तर—नहीं। क्योंकि उनमें संन्यास का एक भी लक्षण नहीं। वे वेदविरुद्ध मार्ग में प्रवृत्त होकर वेद से (अधिक) अपने सम्प्रदाय के आचार्यों के वचन मानते और अपने ही मत की प्रशंसा करते, मिथ्या-प्रपंच में फँसकर अपने स्वार्थ के लिये दूसरों को अपने-अपने मत में फंसाते हैं। सुधार करना तो दूर रहा, उसके बदले में संसार को बहकाकर अधोगति को प्राप्त कराते और अपना प्रयोजन सिद्ध करते हैं। इसलिये इनको संन्यासाश्रम में नहीं गिन सकते, किन्तु ये स्वार्थाश्रमी तो पक्के हैं, इसमें कुछ सन्देह नहीं। जो स्वयं धर्म में चलकर सब संसार को चलाते हैं, जो आप और सब संसार को इस लोक अर्थात् वर्तमानजन्म में, परलोक अर्थात् दूसरे जन्म में स्वर्ग अर्थात् सुख का भोग करते-कराते हैं, वे ही धर्मात्मा संन्यासी और महात्मा हैं।

(पञ्चम समुल्लास)

प्रश्न—संस्कृत विद्या में पूरी-पूरी राजनीति है, वा अधूरी है ?

उत्तर—पूरी है। क्योंकि जो-जो भूगोल में राजनीति चली और चलेगी, वह सब संस्कृत विद्या से ली है और जिनका प्रत्यक्ष लेख नहीं है, उनके लिये—

प्रत्यहं लोकदृष्टैश्च हेतुभिः ।।मनु० ८।१।।

जो (जो) नियम राजा और प्रजा के सुखकारक और धर्मयुक्त समझें, उन-उन नियमों को पूर्ण विद्वानों की राजसभा बांधा करे। परन्तु इस पर नित्य ध्यान रखें कि जहाँ तक बन सके, वहाँ तक बाल्यावस्था में विवाह न करने देवें। युवावस्था में भी बिना प्रसन्नता के विवाह न करना-कराना और न करने देना। ब्रह्मचर्य का यथावत् सेवन करना (कराना) व्यभिचार और बहु विवाह को बन्द करें, कि जिससे शरीर आत्मा में पूर्ण बल सदा रहे। क्योंकि जो केवल आत्मा का बल, अर्थात् विद्या-ज्ञान बढ़ाये जाये और शरीर का बल न बढ़ावे, तो एक ही बलवान् पुरुष सैकड़ों ज्ञानी और विद्वानों को जीत सकता है और जो केवल शरीर का ही बल बढ़ाया जाय आत्मा का नहीं, तो भी राज्यपालन की उत्तम व्यवस्था बिना विद्या के कभी नहीं हो सकती। बिना व्यवस्था के सब आपस में ही फूट-टूट, विरोध, लड़ाई-झगड़ा करके नष्ट-भ्रष्ट हो जायें। इसलिये सर्वदा शरीर आत्मा के बल को

हिन्दी अपनाना :

सबसे ज्यादा बुद्धिमानी का काम

—देश-रत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद

"हमारे सम्पूर्ण देश के निर्माण में भाषा-विषयक अध्याय का सुदूरवर्ती प्रभाव होने वाला है। आज पहली बार हम अपने संविधान में एक भाषा को स्वीकार कर रहे हैं कि जो भारत संघ के प्रशासन की भाषा होगी और जिसे समय के अनुसार अपने आपको ढालना और विकसित करना होगा। हमने अभी देश का राजनैतिक एकीकरण सम्पन्न किया है। राजभाषा हिन्दी देश की एकता को कश्मीर से कन्याकुमारी तक अधिक सुदृढ़ बना सकेगी। मैं आशा करता हूँ कि सभी सदस्य इस निर्णय पर सन्तोष की भावना के साथ अपने घर लौटेंगे। एक भाषा मान्य कर लेने की घटना हमारे राष्ट्रीय जीवन को दिशा देने वाली और हमारी मन:स्थिति की दृष्टि से एक निर्णायक घटना है। हिन्दी हमारी केन्द्रीय भाषा हमें ज्यादा से ज्यादा निकट लाएगी।

हमने आज सबसे ज्यादा बुद्धिमानी का काम किया है और जो निर्णय हमने लिया है उससे मुझे बहुत प्रसन्नता है। मैं समझता हूं कि आने वाली पीढियां हमें इस निर्णय के लिए साधुवाद देंगी और कृतज्ञ होंगी।"

१४ सितम्बर, १९४९ ई० देश के इतिहास में एक कोश-स्तम्भ बना। इस दिन भारत की संविधान सभा ने सर्व-सम्मति से संविधान के भाषा-प्रावधानों को स्वीकार किया और हिन्दी को भारतीय संघ की राजभाषा की गरिमा प्रदान की। मुन्शी-अयंगार सूत्र के पारित हो जाने पर संविधान सभा के अध्यक्ष देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद ने सदन को बधाई देते हुए जो प्रेरणादायक उपरोक्त शब्द कहे थे वे आज भी उस उदीयमान स्वातंत्र्य का उद्घोष प्रतिध्वनित करते हैं और हमें अपने संवैधानिक दायित्वों का स्मरण कराते हैं।

कुछ लोग भले ही इन वाक्यों के महत्त्व की ओर ध्यान न दें परन्तु इतिहास इस बात का साक्षी है जिस प्रकार से भारतीय संस्कृति में सब कुछ समेटने की शक्ति है वही शक्ति हिन्दी भाषा में भी है। हिन्दी वाङ्मय के अध्ययन से स्पष्ट होगा कि हिन्दी भाषा के विकास में विविध धर्मों, विविध सम्प्रदायों, विविध भाषा भाषियों और विविध संस्कृतियों का योगदान है। समन्वय की यह साधना हिन्दी में अत्यन्त व्यापकता तथा गहराई के साथ दृष्टिगोचर होती है। यह भी कहा जा सकता है कि हिन्दी भाषा पूरे भारत की सांस्कृतिक एकता और साहित्यिक माध्यम की सशक्त कड़ी के रूप में विकसित हुई है।

—"राजभाषा-सन्देश" के वर्ष २, अंक ११, अक्तूबर १९८६ से साभार।
—"केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्, एक्स. वाई-६८, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली—११००२३ द्वारा प्रचारित।

संसदीय संकल्प को पूरा करने का संकल्प लें

लेखक—जगन्नाथ, संयोजक राजभाषा कार्य केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् एक्स वाई —६८, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-११००२३

भारतीय संविधान की व्यवस्था के अनुसार २६ जनवरी, १९६५ से हिन्दी प्रमुख राजभाषा हो गई है। अंग्रेजी का प्रचलन केवल सहभाषा के रूप में ही जारी रखने की अनुमति दी गई है। इस व्यवस्था को पूरा करने के लिए यह आवश्यक है कि भारत सरकार की सभी प्रकार की तकनीकी अथवा गैर तकनीकी सीधी भर्ती परीक्षाओं और विभागीय परीक्षाओं सभी प्रश्नपत्रों के उत्तरों में हिन्दी के प्रयोग की सुविधा दी जाए। प्रश्न-पत्र भी हिन्दी में छपें। यदि अंग्रेजी के प्रयोग की सुविधा दी जाए तो वह वैकल्पिक रूप से रहे। इसी भावना को लेकर संसद के दोनों सदनों द्वारा १९६७ में सर्वसम्मति से एक संकल्प स्वीकार किया गया था जिसे १८ जनवरी, १९६८ को गृह मंत्रालय के राजपत्र में प्रकाशित किया था। यह संकल्प स्वयं में एक प्रकार से उस समझौते के आधार पर था जिसके अनुसार १९६८ में दोनों भाषाओं को पैरा-४ के अनुसार भारत सरकार की सेवाओं या पदों के लिए भर्ती करने हेतु आवेदकों के चयन के समय हिन्दी अथवा अंग्रेजी में से किसी एक का ज्ञान अपेक्षित है। इस संकल्प के अनुसार यह भी आवश्यक है कि भारत सरकार की अखिल भारतीय उच्च सेवाओं सम्बन्धी परीक्षाओं के लिए संविधान की ८वीं वैकल्पिक माध्यम के रूप में स्वीकार किया जाए। किन्तु इस संकल्प के पारित हो जाने के लगभग दो दशक के बाद भी भारत सरकार की अनेक ऐसी परीक्षाएं हैं जिनमें न केवल अंग्रेजी एक भाषा के रूप में अनिवार्य है अपितु अन्य विषयों के प्रश्नपत्रों के उत्तर भी केवल अंग्रेजी में दिए जाने की अनिवार्यता है। देश का एक नागरिक हिन्दी अथवा अपनी मातृभाषा भी न जाने और केवल अंग्रेजी जान ले तो अंग्रेजी के सहारे भारत सरकार की लिपिक श्रेणी से लेकर उच्च स्तर तक की अनेक परीक्षाओं में भाग ले सकता है। विडम्बना यह भी है कि यदि वह केवल अंग्रेजी न जाने और विश्व भर की सभी भाषाओं का विद्वान् हो जाए तो भी वह भारत सरकार में उसके किसी अभिभावक की मृत्यु पर जो केन्द्रीय सरकार का कर्मचारी था दया के आधार पर भी लिपिक नहीं बन सकता। हमारे सामने ऐसे अनेक उदाहरण हैं कि भारत सरकार के कई कर्मचारी सेवा में रहते हुए दुर्घटना के कारण मर गए। उनकी धर्मपत्नियों अथवा बच्चों को मैट्रिक होने पर भी दया के आधार पर केवल इसीलिए क्लर्क का पद नहीं मिला क्योंकि आश्रितों ने मैट्रिक परीक्षा बिना अंग्रेजी के उत्तीर्ण की हुई थी।

आई. ए. एस. आदि उच्चकोटि की लगभग ३० परीक्षाओं में हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के वैकल्पिक प्रयोग की सुविधा देकर संघ लोक सेवा आयोग ने जो एक अच्छी शुरुआत की थी वह न जाने क्यों बीच में ही रोक दी गई है। भारतीय वन सेवा, रक्षा मंत्रालय से सम्बन्धित अनेक सेवाएं, आदि व त सी ऐसी सेवाएं हैं जिनके किसी भी प्रश्नपत्र अभी तक हिन्दी के वैकल्पिक प्रयोग की सुविधा नहीं दी गई है। लिपिक श्रेणी की परीक्षा तक में अंग्रेजी भाषा का एक अनिवार्य प्रश्नपत्र रहता है किन्तु प्रमुख राजभाषा हिन्दी का कोई भी प्रश्नपत्र न तो अनिवार्य रूप में है और न ही वैकल्पिक रूप में। अनेक संसद् सदस्यों, बुद्धिजीवियों और हिन्दी सलाहकार समितियों की बैठकों की शिफारिशों के बावजूद भी गाड़ी वहीं अटकी हुई है। इस स्थिति का भयंकर परिणाम यह हो रहा है कि हिन्दी भाषी क्षेत्रों में भी अब अंग्रेजी माध्यम के तथाकथित पब्लिक स्कूलों की मांग बढ़ती जा रही है और जिन घरानों ने पीढियों तक हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं की सेवा की है उनमें भी अब अपने बच्चों को पब्लिक स्कूलों में पढाने की होड सी लग गई है। कारण स्पष्ट है। आज की पढ़ाई "ब्रह्मविद्या" नही है जिससे मुक्ति प्राप्त की जा सके। व्यावहारिक दृष्टि से आज की पढ़ाई रोजी-रोटी के साथ जुड़ी हुई है।

अत: जिस संविधान की रक्षा की शपथ लेकर हमारे विधायक, हमारे राज अधिकारी और कर्मचारी कार्यरत हैं उसका यह तकाजा है और राष्ट्रीयता की भी यह मांग है कि संसद् द्वारा पारित संकल्प का अनुपालन सुनिश्चित किया जाए। संघ लोक सेवा आयोग को यह विटो पावर नहीं दी जा सकती कि वह हिन्दी के वैकल्पिक प्रयोग सम्बन्धी मंत्रालयों के प्रस्तावों को ठुकरा दे। आयोग का कार्य भी भारतीय संविधान की रक्षा करना है क्योंकि उसकी अपनी शक्ति और गरिमा भी इस संविधान के कारण ही है। १५ अगस्त, १९८७ को हम भारत की स्वतन्त्रता की ४०वीं वर्षगांठ मना रहे होंगे। इससे पूर्व ही सभी सम्बन्धितों को सच्चे हृदय से यह संकल्प लेना होगा कि "संसदीय संकल्प" को निष्ठापूर्वक पूरा करें। संसद् के लिए भी अपनी गरिमा की रक्षा के लिए यह आवश्यक है कि वह उसको पूरा कराकर ही दम ले।

सूखाग्रस्त इलाकों में शराब की नदियां क्यों ?

प्रो० शेरसिंह, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

देश के २६५ जिलों में सूखा के कारण करोड़ों लोगों के जीवन में एक बहुत बड़ा संकट उपस्थित हो गया है, जो प्रसिद्ध छपना के अकाल से भी बहुत भयानक है।

पिछले सप्ताह कहीं कहीं वर्षा हुई है, उससे कुछ जगहों पर पशुओं के लिये पानी जोहड़ों में होगया और कूंओं का पानी भी शायद पीने लायक हो जाये। परन्तु यह राहत तो थोड़े दिनों के लिये ही मिली है। यदि और वर्षा नहीं हुई तो पानी की समस्या जुलाई १९८८ तक भुगतनी पड़ेगी।

सूखे का प्रश्न दलगत राजनीति से ऊपर है और यह दुःखी मानव की सहायता और सेवा का मामला है। सरकार के साथ साथ स्वच्छिक संस्थाओं का भी कर्त्तव्य है कि वे भी मानव सेवा के यज्ञ में अपनी आहुति डालें। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा भी दुःखी मानव की सेवा में अपना योगदान देगी। सूखे का प्रभाव आनेवाली सर्दी और उसके पश्चात् गर्मी के मौसम तक रहेगा। हरयाणा के समस्त आयसमाजों से प्रार्थना है कि इस यज्ञ में वे भी अपनी आहुति अवश्य डालें। उसका स्वरूप क्या होगा, इसके सम्बन्ध में शीघ्र निर्णय किया जाएगा।

दुःख की बात यह है कि एक ओर तो लोगों को पीने के पानी, रोटी तथा पशुओं के लिए पीने के पानी और चारे के लाले पड़ रहे हैं, लोग बेकार बैठे हैं, न किसान के लिये खेतो का काम न मजदूरों के लिये मजदूरी का प्रबन्ध, परन्तु शराब की नदियां जरूर बह रही हैं। जिन प्रदेशों में सूखे के कारण मनुष्यों और पशुओं का जीवन खतरे में है, वहां यह भी एक बड़ी राहत होगी, यदि शराब के ठेके बन्द कर दिये जायें। इस राहत के बिना सभी राहत के कार्यक्रम बेकार हो जायेंगे। एक हाथ से लोगों को राहत देना और दूसरे हाथ से शराब के ठेके खोलकर गरीब किसान और मजदूरों की जेब से पैसे निकालना, क्या ग्रामीण जनता के साथ मजाक नहीं है। यह मजाक देश के २६५ जिलों में जनता के साथ बन्द होना चाहिये।

मैंने नये रक्षामन्त्री श्री कृष्णचन्द्र पन्त को पत्र लिखकर सेवा निवृत्त फौजी भाइयों को सस्ते दामों पर शराब मुहिया करने का गलत फैसला समाप्त करके, उनको दूसरे ढंग से मदद करने का सुझाव दिया है।

क्या दयानन्द और गांधी के देश में सूखा पीड़ित लोगों को भी सरकारें पानी न पिलाकर शराब पिलाती रहेंगी ?

हैदराबाद सत्याग्रहियों के सम्बन्ध में प्रधानमन्त्री को प्रो० शेरसिंह का पत्र

विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि हैदराबाद के आर्य सत्याग्रहियों को स्वतन्त्रता सेनानी सम्मान पेन्शन के सम्बन्ध में, प्रो० शेरसिंह ने प्रधानमन्त्री को पत्र लिखा है। उस पत्र में उन्होंने गांधी इर्विन पैक्ट से सम्बन्धित स्वतन्त्रता सेनानियों के सम्बन्ध में जो निर्णय किया गया उसको आर्य सत्याग्रहियों पर भी लागू किया जाये, क्योंकि दोनों सत्याग्रहों में समझौते के कारण सब सत्याग्रही रिहा किये गये हैं।

उन्होंने सभी आर्य सत्याग्रहियों को ताम्रपत्र देने के लिये भी लिखा है। जो सत्याग्रही जीवित नहीं रहे उनके ताम्रपत्र उनके उत्तराधिकारियों को दे दिये जायें।

अम्बाला के आर्य नेता श्री सतीश कुमार मित्तल को बधाई



श्री सतीश कुमार मित्तल एम. ए. अम्बाला सदर के वार्ड न० ५ से भाजपा टिकट पर नगरपालिका के सदस्य चुने गये हैं। आप आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग अम्बाला छावनी के उप-प्रधान, आर्य महिला महाविद्यालय, आर्य माडल स्कूल, लक्ष्मी देवी आर्य कन्या विद्यालय, दयानन्द पुत्री पाठशाला के मन्त्री पद पर कार्य कर रहे हैं।

नगरपालिका चुनाव में विजयी होने पर इन्हें सभा की ओर से हार्दिक बधाई।

सभा मन्त्री

गांव खरड़ हिसार का वेद सप्ताह सम्पन्न

दिनांक २४ से ३० अगस्त तक गांव खरड में अलग-अलग जगहों पर लगातार ७ दिन तक वेद प्रचार का कार्यक्रम श्री राममुनि जी के संयोजकत्व में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की सफलता हेतु पं० ईश्वरसिंह जी तूफान ने शिक्षाप्रद कथाये रखी तथा श्री सुखदेव जी शास्त्री व प्रतापसिंह जी शास्त्री के प्रवचन भी हुए। मनीराम जी सहरावत ने इस कार्यक्रम में विशेष सहयोग प्रदान किया।

महिलाओं ने शराबियों को पीटा

हांसी, २६ अगस्त (निस)। स्थानीय बस अड्डा पर दो, शराबियों की महिलाओ ने सैंडिलों से उस समय धुनाई कर दी जब ये शराबी इन महिलाओं पर भद्दी आवाज कस रहे थे। पहले महिलाओं ने इन्हें रोका परन्तु जब वे नहीं रुके तो तीन-चार महिलाओ ने सैंडल हाथ में लेकर इन्हें बस में पीटा फिर बस से बाहर खीचकर अच्छी धुनाई की। दोनों शराबी भाग निकले।

दैनिक ट्रिब्यून से साभार
दिनांक २७-८-८७

पंचम श्री घूडमल आर्य पुरस्कार स्वामी विद्यानन्द सरस्वती को

हिण्डोन सिटी। स्थानीय नगर आर्यसमाज हाल में ६ अगस्त से १६ अगस्त (रक्षाबन्धन से श्री कृष्ण जन्माष्टमी) तक वेद प्रचार सप्ताह के अन्तर्गत यजुर्वेद पारायण यज्ञ का सफल आयोजन स्वामी ओमानन्द जी महाराज के आचार्यत्व मे उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुवा। इस अवसर पर श्री सत्यपाल सरल के भजनोपदेश तथा प्रसिद्ध अनुसन्धानकर्ता विद्वान् प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु के प्रवचन हुये।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी के पावन पर्व पर श्री प्रहलाद कुमार आर्य द्वारा अपने पूज्य पिताजी की स्मृति में स्थापित श्री घूडमल आर्य पुरस्कार आर्यजगत् के ख्याति प्राप्त विद्वान् संन्यासी स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती को उनकी पुस्तक "वेद मीमांसा" पर सम्मान, समारोह पूर्वक विशाल उपस्थिति में दिया गया। सम्मान स्वरूप उन्हें अभिनन्दन पत्र एकशाल एवं ११०१ रुपये की राशि समर्पित की गई। समारोह का सफल सचालन डा० ओमप्रकाश वेदालंकार एम०ए०,पी-एच० डी० ने किया।

इस भव्य समारोह मे निकट के अनेकों आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया तथा स्वामी जी महाराज के नागरिक अभिनन्दन में भी भाग लिया। कार्यक्रम के अन्त मे प्रीतिभोज का आयोजन किया गया।

सचिव, श्री घूडमल आर्य पुरस्कार समिति
आर्यसमाज, हिण्डोन सिटी (राज०)

मॉरीशस के भूतपूर्व मन्त्री एवं मॉरीशस के प्रसिद्ध आर्य नेता भारत यात्रा पर

मारीशस सरकार के भूतपूर्व मन्त्री एव प्रसिद्ध आर्य नेता श्री रामनाथ जी जीथा भारत यात्रा पर आए हैं। वे मॉरीशस की एक शिरोमणि सभा आर्य सभा के कोषाध्यक्ष है तथा डी.ए वी ईस्टन कॉलेज, मॉरीशस के मैनेजर हैं। अब वह कॉलेज मैनेजिंग कमेटी, चित्रगुप्त रोड, नई दिल्ली से सबंधित हो गया है। भारत पधारने पर डी ए.वी मैनेजिंग कमेटी के अधिकारियो, कर्मचारियों तथा आर्यसमाज के सदस्यों द्वारा उनका पुष्पमालाओं से भव्य स्वागत किया गया। मैनेजिंग कमेटी के कार्यालय के गैस्ट हाउस में ही उनके रहने का प्रबन्ध किया गया है। वे भारत मे एक महीना ठहरेंगे और भारत की डी.ए.वी शिक्षण संस्थाओं का जैसे कि डी ए वी. कॉलेज, चडीगढ़, महाराजा हरिसिंह कृषि विद्यालय, नागबनी, जम्मू (तवी) तथा दिल्ली की डी.ए वी. शिक्षण सस्थाओं का निरीक्षण करेंगे। इसके अतिरिक्त वे अन्य धार्मिक एव सामाजिक सस्थाओं को विशेष रूप से देखेंगे।

—दरबारी लाल
संगठन सचिव

हरयाणा में संस्कृत के विरुद्ध षड्यन्त्र

पिछले 6 वर्षों से हरयाणा प्रदेश में संस्कृत को समाप्त करने का षड्यन्त्र कुछ निहित स्वार्थों के व्यक्ति रच रहे हैं। नई शिक्षा पद्धति 10+2 का पाठ्यक्रम देहली के पाठ्यक्रम से लिया गया है। परन्तु हरयाणा में 10+2 पद्धति में संस्कृत कोर विषय को जानबूझ कर समाप्त कर दिया गया है। जबकि देहली में अभी भी संस्कृत कोर विषय को पढाया जाता है। जो विद्यार्थी बी० ए० स्तर पर संस्कृत अनिवार्य विषय को लेना चाहते हैं तो उन्हें विवश होकर हिन्दी इलैक्टिव विषय भी लेना पड़ेगा। इस प्रकार विद्यार्थी वर्ग पर किसी भाषा का थोपना एक अविवेकपूर्ण पग है। अत: सरकार से प्रार्थना है कि संस्कृत की रक्षा के लिए कदम उठाए जाएं।

—प्रो० रत्नाराम मलिक,
महासचिव, हरयाणा संस्कृत परिषद् कैथल,

इस हिन्दी विरोध का हल क्या है ?

लेखक:—डा० कृष्णलाल, आचार्य,
संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली.

महात्मा गांधी ने कहा था कि "कोई भी देश सच्चे अर्थों में तब तक स्वतंत्र नहीं है, जब तक वह अपनी भाषा में नहीं बोलता" और "राष्ट्रभाषा की जगह एक हिन्दी ही ले सकती है, कोई दूसरी भाषा नहीं। यहीं नहीं अपितु उन्होने राष्ट्रीय एकता के लिये अपना जीवन सर्वस्व अर्पित कर दिया, उनका जय-जयकार करने वाले हम सोचे कि क्या हमने उनके दिखाये हुए मार्ग का अनुसरण किया ? क्या हम उन्हें "अपना" राष्ट्रपिता कहने के अधिकारी हैं ?

रेलें सारे भारत को जोड़ने में बहुत अधिक सहायक हैं, परन्तु यह देखकर आश्चर्य होता है कि तमिलनाडु जाने वाली और वहां से आने वाली रेल में कोई अंग्रेजी न जानने वाला व्यक्ति यात्रा करे तो उसे भूखा रहना पड सकता है क्योंकि उसमें सभी बैरे भोजन, चाय आदि अंग्रेजी में ही पूछते हैं। तमिलनाडु में रेल की टिकट खिड़की में भी हिन्दी में टिकट मांगने पर आप संकट में पड़ जायेंगे। रेल जैसी यह अखिल भारतीय सेवा इस प्रकार भारत को कैसे जोड सकती है ?

उत्तर भारत से बहुत श्रद्धापूर्वक अनपढ ग्रामीण भी बहुत संख्या में दक्षिण के तीर्थों की यात्रा करने जाते हैं। लेकिन वहां पर्यटन कराने वाली बसों में संवाहक केवल अंग्रेजी में ही सब स्थानों का परिचय देते हैं। उन श्रद्धालुओं पर दया आती है जो सहस्त्रों रुपया खर्च कर वहां जाते हैं। क्या यह उनके साथ अन्याय नहीं ? क्या इतने वर्षों के पश्चात् भी हम एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में अपनी एक भाषा का प्रयोग नहीं कर सकते ? जब अंग्रेजी जानने वाले केवल डेढ़-दो प्रतिशत ही हैं, तो उसकी लोकतंत्र में उपयोगिता ही क्या रह जाती है ? उसके प्रति अनावश्यक मोह क्यों ? क्या गांधी जी भारत का यही चित्र बनाना चाहते थे ?

अंग्रेजी मोह के घातक परिणाम

तमिलनाडु के मुख्य नगरों की दीवारों पर एक घातक वाक्य लिखा देखा "बी तमिलियन" (तमिल बनो)। पिछले दिनों तमिलनाडु के एक मंत्री ने तो यहां तक कह दिया कि हम पहले तमिल हैं, फिर भारतीय। इस प्रकार की राष्ट्रविरोधी विचारधारा हमें कहां ले जायेगी ? क्या इसी के लिए महात्मा गांधी सरीखे राष्ट्रनेताओं ने इतना त्याग किया ? क्या इसी के लिये भगतसिंह आदि ने "भारत माता की जय" बोलकर फांसी के फन्दे को चूमा था ? किन्तु आज भी पूर्णतया निराश होने की आवश्यकता नहीं क्योंकि आज भी हिन्दी के दीवाने कुछ ऐसे दाक्षिणात्य भाई हैं जो हिन्दी के समर्थन में सभा करते हैं। वे वास्तव में पूज्य हैं, राष्ट्रवादियों द्वारा सम्माननीय हैं।

हम एक होना चाहते हैं तो निश्चय ही अंग्रेजी का व्यामोह छोड़कर स्वदेशी भाषाओं को अपनाना होगा, उनका अधिकाधिक प्रयोग करना होगा।

हम यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि हमारा विरोध अन्य भारतीय भाषाओं का प्रयोग करने वालों से नहीं है, हमारा विरोध मानसिक दासता की प्रतीक अंग्रेजी से है। यदि सभी प्रदेशों के भारतीय अंग्रेजी का विरोध संगठित हो कर करें तो सभी भारतीय भाषाओं को स्वच्छन्द विचरण का अवसर मिलेगा और सबकी उन्नति होगी। अंग्रेजी की प्रभुता सब भारतीय भाषाओं को कुण्ठित कर रही है। जब किसी हिन्दी, तमिल, मराठी अथवा बंगला भाषी बच्चे को आरम्भ से अंग्रेजी घुटवाई जाती है तो उस बेचारे पर दया आती है। अब तो इस दूषित पद्धति का विस्तार छोटे नगरों और कुछ गांवों में भी बढ़ता जारहा है। इसे हमें ही रोकना होगा। किसी भी सुविचारित शिक्षा पद्धति में बच्चे की आरम्भिक शिक्षा विदेशी भाषा में देने का विधान नहीं है।

दैनिक व्यवहार में हिन्दी

हिन्दी विरोधियों के नारों का प्रभावी उत्तर भी यही है कि सभी राष्ट्र-प्रेमी प्रत्येक स्तर पर राजभाषा हिन्दी का प्रयोग करें और करायें। जहां-जहां भी संभव हो, विशेषतः हिन्दी भाषी राज्यों में शिक्षण, प्रशिक्षण, प्रशासन, न्यायालय, व्यापार, उद्योग आदि में हिन्दी का वास्तविक प्रयोग बढाए जाने और अंग्रेजी के विकल्प को हटाए जाने का निरन्तर, संगठित और सतर्कता से प्रयत्न करें।

हमें सर्वत्र तकनीकी तथा उच्च शिक्षा में और सरकारी कार्यालयों तथा उद्योग-व्यापार में नौकरियों हेतु परीक्षा के लिये अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करवानी होगी और हिन्दी का प्रयोग बढाना होगा। यह ठीक उसी प्रकार की बात है जैसे किसी रेखा को बिना मिटाये छोटा करने के लिये उसके साथ बडी रेखा खींच दी जाती है।

हिन्दी विरोध के उत्तर में हम तमिल, तेलुगू आदि का विरोध नहीं करेंगे अपितु अंग्रेजी के एकाधिपत्य को दूर करके हिन्दी का प्रयोग बढाने का संकल्प करेंगे। अपने सभी कार्य हिन्दी में करेंगे। सभी प्रकार के आवेदन पत्र फार्म हिन्दी में भरेंगे, सभी पत्रों का उत्तर हिन्दी में देंगे, रेल का आरक्षण पत्र, बैंकों के चैक आदि, डाकघर के बचत पत्र, आवेदन, बीमे के आवेदन आदि ये सब हम निष्ठापूर्वक केवल हिन्दी में भरेंगे। जहां हिन्दी के फार्म न हों, वहां हिन्दी के फार्मों की मांग करेंगे। आरम्भ करने के लिए कम से कम अपने हस्ताक्षर हिन्दी में किये जाएं। यदि बैंक में पुराना खाता अंग्रेजी हस्ताक्षरों में है तो उसे बन्द करके नया खाता हिन्दी हस्ताक्षरों से खोलें। अपने प्रिय जनों को पत्र हिन्दी में लिखें, निमन्त्रण-पत्र हिन्दी में छपवायें। जब दूसरे हिन्दीतर प्रदेशों में जायें तो वहां की कामचलाऊ भाषा सीखकर जायें। ऐसी अनेक भाषाओं की पुस्तकें उपलब्ध हैं जिन्हें आप काम चलाऊ ज्ञान के लिए यात्रा में साथ रख सकते हैं। इस प्रकार हिन्दी के बढते प्रयोग से प्रेरणा पाकर अन्य भारतीय भाषाओं का प्रयोग भी अपने आप अपने क्षेत्रों में बढेगा और उनमें निकटता बढेगी, अंग्रेजी दूर होगी तो हिन्दी-विरोध भी दूर होता जायगा। हमें दूरदर्शन पर भी अंग्रेजी के प्रयोग का विरोध करना चाहिए।

सब भाषाओं को निकट लाने के लिए समान लिपि देवनागरी अपना ली जाए तो कम से कम संस्कृत मूल के शब्द (जो सभी भाषाओं में बहुत हैं) समझने में सबको सुविधा होगी। हिन्दी प्रेमियों का यह कर्त्तव्य है कि जो हिन्दीतर भाषी उनके पास रहते हों, और मिलते-जुलते हों, उनसे अंग्रेजी में बात न करके हिन्दी में बात करें जिससे वे हिन्दी सीख सकें।

याद रखें, हिन्दी दुराग्रह या रोष तथा क्रोध प्रकट करने से नहीं आएगी। वह आएगी प्रेमाग्रह से, हिन्दी के वास्तविक व्यवहार से, सूझबूझ और परिश्रम से। हिन्दी विरोधियों से निपटने का यही एकमात्र कारगर और प्रभावी उपाय है।

पानीपत में वृष्टि महायज्ञ की सफलता

आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत के तत्त्वाधान में दिनांक २०-८-८७ से २६-८-८७ तक वृष्टि महायज्ञ आचार्य वेदभूषण जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। दिनांक २१-८-८७ को प्रातः काल यज्ञ शुरु होने से १५ मिनट पहले बूंदा-बांदी हुई। रोहतक से गाहाना तक अच्छी वर्षा हुई। इसके उपरान्त यज्ञ की २६-८-८७ को पूर्णाहुति हुई। अगले दिन तिथि २७-८-८७ को प्रातः ६बजे और १बजे सायंकाल बडे जोर की वर्षा हुई। यज्ञ की सफलता पर सभी नगर निवासियों ने प्रसन्नता व्यक्त की। यज्ञ में साढ़ेतीन क्विंटल गाय का घी, ग्यारह सौ किलो विशेष प्रकार की सामग्री, कैर, आम, पीपल, चन्दन आदि समिधाओं का प्रयोग किया गया।

स्वामी धर्मानन्द
आर्य समाज, बड़ाबजार पानीपत

हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक चुनाव शीघ्र होना है। अतः सभा से सम्बन्धित आर्यसमाज अपने वार्षिक चुनाव करके साधारण सभा में सभा के प्रतिनिधियों का निर्वाचन कर लेवें और प्रतिनिधि फार्म भर कर वेद प्रचार, दशांश तथा सर्वहितकारी के वार्षिक चन्दे के साथ यथाशीघ्र सभा कार्यालय सिद्धांती भवन रोहतक भेजने का कष्ट करे।

वार्षिक वेद प्रचार आदि कराने के लिए सभा की ओर से भजन मण्डली तथा उपदेशक का कार्यक्रम बनवाने के लिए भी सभा से पत्र-व्यवहार करें। ३० सितम्बर तक अपने तथा निकट की ग्राम पंचायत का शराब बन्दी प्रस्ताव करवाकर रजिस्ट्री (पावती) द्वारा हरयाणा सरकार को भेजकर उसकी एक प्रति सभा को भी भेज देवें।

वेदव्रत शास्त्री
सभामन्त्री

आर्यसमाज माण्डवा जि० भिवानी का चुनाव

प्रधान—श्री रामफल आर्य सैनिक, उप-प्रधान—श्री आजाद सिंह आर्य एम० ए०, मन्त्री—श्री धर्मपाल आर्य धीर शास्त्री, कोषाध्यक्ष—श्री आजादसिंह आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—श्री वीर सिंह आर्य भक्त, लेखा-निरीक्षक—श्री प्रेमसिंह आर्य।

सूचना

गुरुकुल डिकाडला हेतु एक आचार्य की आवश्यकता है। जो शास्त्री/आचार्य/संस्कृत एम० ए० हो। गुरुकुलों की व्यवस्था का अनुभव हो। वेतन आरम्भ में ५०० से १००० रु० तक यथायोग्य देंगे। शीघ्र सम्पर्क करें।

कुलपति
गुरुकुल डिकाडला
त० पानीपत (करनाल) हरियाणा

ओ३म्

सूर्यग्रहण मेला कुरुक्षेत्र पर महायज्ञ तथा वेदप्रचार

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी सूर्यग्रहण मेला के अवसर पर आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र (महर्षि दयानन्द मार्किट, वैदिक धाम) में महायज्ञ तथा वेदप्रचार का आयोजन किया जा रहा है। दिनांक १६-९-८७ से २५-९-८७ तक प्रतिदिन प्रातः ६ से ८ तथा सांय ४ से ६ तक कुरुक्षेत्र के आचार्य श्री देवव्रत जी की देख-रेख में यज्ञ तथा वेदप्रवचन का कार्यक्रम होगा तथा २१ से २४ सितम्बर तक विशाल आर्य सम्मेलन का भी आयोजन किया जा रहा है। जिसमें अनेक विद्वान्, संन्यासी, महात्मा सम्मिलित हो रहे हैं। तथा सभा के महोपदेशक और भजनोपदेशक भी पधार रहे हैं। इस सम्मेलन में समाज में फैली हुई कुरीतियों विशेषकर शराब, मांस आदि के विरुद्ध प्रचार किया जायेगा। इस अवसर पर सभा की ओर से ऋषि लंगर का भी प्रबन्ध किया जा रहा है। प्रबन्ध व्यवस्था के लिये आर्य वीरदल का पूर्ण सहयोग उपलब्ध होगा।

सभी धर्मप्रेमी सज्जनों से प्रार्थना है कि इस पुण्य कार्य में तन, मन, धन से सहयोग प्रदान कर यश और पुण्य के भागी बनें।

(प्रो० शेरसिंह)	(वेदव्रत शास्त्री)	(रघुवीरसिंह)
प्रधान	मन्त्री	वेदप्रचाराधिष्ठाता

स्वामी वेदानन्द सरस्वती का निधन

सभी को जानकर यह महान् दुःख होगा कि आर्यजगत् की महान् विभूति स्वामी वेदानन्द सरस्वती का १८ अगस्त १९८७ को हृदय गति रुक जाने से अकस्मात् निधन हो गया है, आप २१ वर्ष से वैदिक साधु आश्रम रोपड़ का संचालन कर रहे थे। आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वानों और उपदेशकों में आपका महत्त्वपूर्ण स्थान था। उनके स्वर्ग सिधार जाने से आर्यजगत् की अपूरणीय क्षति हो गई है।

ओमप्रकाश वर्मा, प्रबन्धक

शोक समाचार

ला० गंगा दयाल मलिक फर्म बंसल फाऊंडरी एण्ड इन्जीनियरिंग वर्कस समालखा मण्डी का १५-८-८७ को पानीपत से समालखा आते कार की ट्रक के साथ दुर्घटना हो जाने से निधन हो गया। जिससे समस्त नगर में शोक की लहर दौड़ गई। लाला जी बड़े समाजसेवी अनुभवी, प्रत्येक के दुःख के साथी और सर्वप्रिय व्यक्ति थे। शुद्धि के कार्य में बड़ी रुचि रखते थे।

स्वामी सेवानन्द

मनसा मण्डी में वेदप्रचार सप्ताह

आर्यसमाज मनसा मण्डी की ओर से वेद प्रचार सप्ताह २४ अगस्त से २७ अगस्त तक मनाया गया। प्रतिदिन अलग-अलग आर्य परिवारों में प्रातः ८ बजे से ९ बजे तक यज्ञ भजन एवं श्री ओम्प्रकाश जी आर्य वानप्रस्थी (आर्य वानप्रस्थ आश्रम बठिण्डा) का प्रवचन होता। दोपहर को ३॥ बजे से ५ बजे तक और रात्रि को ८ बजे से ९ बजे तक आर्यसमाज मन्दिर मानसा में श्री ओम्प्रकाश जी वानप्रस्थी के प्रवचनों से स्त्री पुरुषों ने लाभ उठाया।

डी. ए. वी स्कूल मानसा की अध्यापिकाओं ने इस वेदप्रचार सप्ताह से शिवर के रूप में आर्यसमाज के सिद्धान्तों की जानकारी प्राप्त की। निकट भविष्य में अध्यापिकाओं के लिए १५ दिन का शिविर सत्यार्थप्रकाश स्वाध्याय के लिए लगाने की योजना बनाने की सम्भावना है।

—ओम्प्रकाश आर्य

इस नरक से हमको कब छुटकारा मिलेगा

हिसार बाईपास के ऊपर गांव सातरोड खास में खुली हुई शराब की फैक्ट्री ने आस-पास के जीवन को नरक बना दिया है। पहले तो इसके अन्दर इतनी बदबू आती है कि सांस लेना भी दूभर हो जाता है। इसकी बदबू पूर्व में हिसार तक तथा पश्चिम में हांसी तक सांस लेने में कठिनाई पैदा करती है। दूसरे इसका गन्दा पानी "पश्चिमी जमुना नहर" की एक शाखा के अन्दर डाल दिया जाता है जो कि गांव के बगल में से गुजरती है। इस गन्दे पानी के पीने से पशु बीमार हो जाते हैं तथा इसके साथ ही अब नहर के पानी से सिचाई की जाती है तो इस गन्दे पानी के मिले हुए होने के कारण फसलें खराब हो जाती हैं। उनमें कई प्रकार के भयानक रोग लग जाते हैं। जो किसान पूरे वर्ष अपने पसीने से धरती को सींच कर फसल को तैयार करता है वही फसल शायद आखिरी पानी के समय गन्दे पानी के कारण पूरी की पूरी तबाह हो जाये और कितनी ही बार ऐसा हुआ भी है।

इसके अतिरिक्त कितने ही नौजवान तथा बच्चे जब सुबह-सुबह व्यायाम इत्यादि करने के लिए जाते हैं तो गन्दी हवा उन्हें लाभ पहुँचाने के बजाएं उन्हें हानि ही पहुँचाती है। जहां वे अपने स्वास्थ्य को सुधारने के लिए जाते हैं वहीं उन्हें अपने स्वास्थ्य से हाथ धोने पड़ते हैं।

इसके अन्दर काम करने वाले कर्मचारी भी शराब के आदी बन जाते हैं तथा अब तक दो व्यक्तियों की मृत्यु इसके अन्दर ज्यादा शराब पीने से हो चुकी है। इस फैक्ट्री के अन्दर ज्यादातर काम ठेकेदारों को दे दिया जाता है। ठेकेदार कम दयाहडी पर छोटे-छोटे बच्चों को काम पर लगा देते हैं। गांव में निरक्षरता के कारण माता-पिता को इतना ज्ञान नहीं होता कि वे अपने बच्चों को स्कूल में भेजें वे तो थोड़े से पैसे के लालच में उन्हें फैक्ट्री में भेज देते हैं। जिसके कारण बच्चे नादानी के कारण शराब पीने लग जाते हैं और जिस उम्र में बच्चों के हाथों में किताबें होनी चाहियें उनके हाथ में विष की बोतल आ जाती है तथा इसके साथ ही वह जुआ, चोरी इत्यादि दुर्व्यसनों में फंस जाते हैं और उनका भविष्य अन्धकारमय हो जाता है। इसके लिए सातरोड़ में तो काफी हद तक यह फैक्ट्री ही बच्चों को अनपढ़ रखने में जिम्मेदार होगी।

इस फैक्ट्री के अन्दर कितनी घपलेबाजी होती है इसका अन्दाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि श्री भजनलाल के त्यागपत्र देते ही इसके ऊपर बिजली विभाग की ओर से १ करोड ३७ लाख रुपये की चोरी का दावा किया गया है जोकि शत-प्रतिशत सही भी है। इसके अन्दर माल ढोने वाली मैटाडोरों पर एसोसियेटड डिस्टलरीज लिखे होने के कारण कोई भी अधिकारी इनको नही रोकता है। चाहे वे सवारी ढोयें या दूसरा माल ये बेदखल चलती रहती हैं।

इस फैक्ट्री में काम करने वाले कर्मचारी गांव में ही किराये पर रहते हैं तथा वे रात को देर गये तक शराब पीकर गांव में जाते हैं तथा लोग उनकी पहुंच ऊपर तक होने के कारण उन्हें कुछ कह भी नहीं सकते हैं। यदि उन्हे कुछ कह दिया जाये तो पुलिस आते देर नहीं लगती है क्योंकि वे फैक्ट्री के मालिक से जा कर अपने गुनाहों को तो छिपा लेते हैं और गांवों के प्रति मालिक को उल्टा-सीधा भडका देते हैं। मोटे तौर पर इनके कारण गांव का पूरा "वातावरण" ही खराब हो चुका है। तथा गांव गर्त में जाने को है। क्या कोई इस गांव की भी सुध लेगा।

गुरेन्द्रसिंह सहारन आर्य वीर दल
व समस्त गांव निवासी
सातरोड़ खास (हिसार)

शराब मानव के लिये जहर है—
इससे अवश्य बचें।

देहरादून में वेद-प्रचार

देहरादून २१ अगस्त। आर्यसमाज देहरादून में ९ अगस्त को श्रावणी पर्व उत्साहपूर्वक मनाया गया। विशेष यज्ञ के अनन्तर वेद की महिमा पर पं० देवदत्त बाली का सारगर्भित प्रवचन हुआ।

दिनांक १० अगस्त से १५ अगस्त तक नगर के विभिन्न क्षेत्रों में लोगों के गृहों पर प्रातःकालीन सत्संगों का आयोजन होता रहा जिनमें देव यज्ञ के अनन्तर वेद का आविर्भाव, वेद से भाषा का प्राकट्य, वेद ईश्वरीय ज्ञान है, वेदोक्त धर्म, वेद में यज्ञ, वेदोक्त पृथिवी-सूक्त आदि विषयों पर श्री यशपाल आर्य, श्री देवदत्त बाली तथा डा० श्रीमती ब्रह्मवती नारंग के भाषण हुए।

१५ अगस्त स्वतन्त्रता-दिवस पर "वेद में राष्ट्र" विषय पर श्री बाली का मार्मिक प्रवचन हुआ।

रविवार १६ अगस्त को आर्यसमाज मन्दिर में श्री कृष्णजन्माष्टमी का पर्व मनाया गया जिसमें मुख्य वक्ता पं० देवदत्त बाली ने श्री कृष्ण महाराज के पावन चरित्र पर प्रकाश डाला।

इसके अतिरिक्त न्यू फोरेस्ट में वेद प्रचार पखवाडे का आयोजन आर्यसमाज की ओर से किया गया जिसमें विभिन्न गृहों पर १५ दिनों तक सत्संगों का आयोजन किया जाता रहा। यज्ञों में पौरोहित्य श्री रमेशचन्द्र शर्मा ने किया। पखवाड़े का उद्घाटन-भाषण श्री देवदत्त बाली ने किया और समापन-भाषण श्री यशपाल आर्य का रहा। बीच के दिनों में मास्टर दलीपसिंह जी के प्रवचन चलते रहे।

वेद प्रचार की तीसरी शृंखला में राजेन्द्रनगर में सप्ताह भर का कार्यक्रम चलाया जा रहा है जिसमें मास्टर दलीपसिंह जी, श्री नैनसुख वर्मा, श्री देवदत्त बाली और पं० सत्यव्रत जी के प्रवचन हो रहे हैं।

दलीपसिंह प्रचार प्रमुख आर्यसमाज (देहरादून)

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय (हिसार)

सभी आर्य सज्जनों को यह जानकर हर्ष होगा कि उत्तरी भारत के आर्यजगत् की एकमात्र उपदेशक, प्रचारक तथा पुरोहितों का निर्माण करने वाली संस्था दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार प्रति-वर्ष निरन्तर प्रगति पथ अग्रसर है. आज से तीन वर्ष पूर्व यहां छात्रों की संख्या ३० थी, गतवर्ष बढकर ३८ होगयी थी, इस वर्ष के सत्र में संख्या ५४ हो गई है, जिसमें १५ के लग-भग छात्रों को हमने विवशता के कारण प्रवेश देने से इन्कार किया, क्यो कि इस समय संस्था में और अधिक छात्रों के लिए कमरे, तख्त, बर्तन, आदि का सर्वथा ही अभाव है। छात्रो से भोजन, निवास, पुस्तक, दूध, तेल, साबुन आदि आवश्यक वस्तुय बिना शुल्क के ही देकर उपदेशक के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। इस वर्ष हमारी संस्था में चार विदेशी छात्र भी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, जिनमें दो मारीशस के तथा दो फीजी के हैं। इस संस्था में शिक्षा प्राप्त कर उपदेशक बन हमारे स्नातक सम्पूर्ण देश में प्रचार कार्य कर रहे हैं।

१९६० से आज तक के रिकार्ड के अनुसार इस संस्था में इतने छात्र कभी नहीं रहे।

अतः मेरी समस्त आर्य जनता एवं आर्य सज्जनों से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक दानरूप में सहयोग करने की कृपा करें। जो सज्जन अन्न, सब्जी, दूध, तेल, साबुन, वस्त्र सामग्री, यज्ञ के निमित्त घृत इत्यादि जो भी दे सकते हो देने की कृपा करें। आपके इस पवित्र सहयोग से हरयाणा, पंजाब, यू०पी०, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, आन्ध्र-प्रदेश, बंगाल बिहार, उड़ीसा इत्यादि भारतीय प्रदेशों तथा विदेश से आए छात्र वैदिक सिद्धान्तों की शिक्षा ग्रहण कर वैदिक धर्म के प्रचार की ध्वजा को देश-विदेश में फहरा कर ऋषि दयानन्द सरस्वती के स्वप्नों को मूर्त रूप देने में अपने कर्तव्य का पालन कर सकें।

निवेदक :—
सत्यप्रिय शास्त्री एम०ए० साहित्याचार्य
प्राचार्य दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, (हिसार)

पंजाब से हिन्दुओं का फिर पलायन।
यदि सरकार ने ठोस कदम न उठाये तो परिणाम भयंकर होंगे।

दिल्ली २२ अगस्त:—

पंजाब की स्थिति दिन प्रतिदिन बिगड़नी जा रही है। गुप्त रूप से, हिन्दुओं को वहां से बाहर निकालने का षड्यन्त्र जारी है। प्राप्त सूचना के अनुसार अजनाला से ३०० हिन्दू परिवार अपना गांव छोड़कर सुरक्षित स्थानों पर चले गये हैं। धारीवाल तहसील के अन्तर्गत फानपुरा गांव के भी अनेक परिवार पानीपत (हरयाणा) आ चुके हैं। अन्य गांवों से भी हिन्दू परिवार इसी प्रकार अपना घर-द्वार छोडकर सुरक्षा की तलाश में अन्यत्र चले गये हैं। सारे पंजाब में आतकवाद की छाया गहरी होती जा रही है।

राष्ट्रपति शासन पर टिप्पणी करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान, स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने एक वक्तव्य में बताया कि अब स्थिति इतनी भयानक हो चुकी है कि भारत सरकार के गृह-मन्त्री श्री बूटा सिंह के परिवार के व्यक्ति भी मौत के घाट उतार दिये गये हैं। सीमान्त क्षेत्रो में भी स्थिति सरकार के हाथ से निकलती जा रही है।

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने एक विशेष पत्र प्रधान मन्त्री, श्री राजीव गाधी को लिखकर मांग की है कि पंजाब को तुरन्त सेना के हवाले किया जाये। अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर सुरक्षा पट्टी बनाने का प्रस्ताव संसद में स्वीकार हो चुका है। अत: पाकिस्तान की सीमा के साथ जैसलमेर से पंजाब और काश्मीर तक सुरक्षा पट्टी बनाई जावे और आतंकवादियो से उसी भाषा में बात की जावे, जिसे वे समझते हैं। स्वामी आनन्द बोध जी ने प्रधान मन्त्री को याद दिलाया कि गत वर्ष १६ जुलाई को आर्यसमाज का एक शिष्ट मण्डल उनसे मिला था और एक ज्ञापन दिया था जिसमें सुरक्षा पट्टी के साथ-साथ भूतपूर्व सैनिकों को बसाने की मांग की गयी थी। स्वामी जी ने बताया कि मन्त्री जी ने उस समय हमारी मांगों से पूर्ण सहमति प्रकट करते हुए पंजाब के मामले को जल्दी ही हल करने का आश्वासन दिया था। स्वामी जी ने कहा कि अब पंजाब सर्वनाश के कगार पर खड़ा है। भारत सरकार की जनता मूक दर्शक बनकर वहां हो रहे जघन्य नर-संहार को किस प्रकार सहन कर सकती है?

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने बताया कि "हम जल्दी ही देश भर के हिन्दू नेताओं को एक सर्वदलीय सभा बुलाकर इस मामले पर विचार करेंगे"। स्वामी जी ने प्रधान मन्त्री को यह भी लिखा है कि पंजाब की इस समय बिगड़ी हुई स्थिति सरकार की दुरंगी और अस्थिर नीति का ही परिणाम है और इसी से आज देश में अनेक विवाद खड़े हो रहे हैं।

— प्रचार विभाग
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73   रजि० न० P/RTK 49



ओ३म्   कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री   सह-सम्पादक—डा० यज्ञवीर

वर्ष १४, अङ्क ४० १४ सितम्बर, १९८७ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

वेद में राष्ट्र रक्षा के उपाय

[प० धर्मदेव 'मनीषी' व्याकरणाचार्य गुरुकुल कालवा]

मातृभूमि की स्वतन्त्रता को स्थिर रखने के लिये जो गुण अत्यन्त आवश्यक हैं, जिसके बिना राष्ट्र का स्वातन्त्र्य संकट में पड़ सकता है उनका निम्नलिखित मन्त्र में वर्णन किया है—

सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति ।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु ॥

(अथर्ववेद १२।१।१)

अर्थः—(सत्यम्[1]) सत्य (बृहत्[2]) महत्त्वाकांक्षा बडाई (ऋतम्[3]) नियम पालन, न्याययुक्त व्यवहार (उग्रम्[4]) उग्रता, तेजस्विता (दीक्षा[5]) दीक्षा (तप.[6]) तपस्या, तितिक्षा (ब्रह्म[7]) ब्रह्मचर्य, आत्मज्ञान (यज्ञः[8]) यज्ञ (पृथिवीम्) पृथिवी को (धारयन्ति) धारण करते हैं (सा) वह (भूतस्य) अतीत की (भव्यस्य) भावी की (पत्नी) पालन करनेवाली रक्षिका (पृथिवी) पृथिवी (नः) हमारे लिये (उरुम्) विस्तृत (लोकम्) स्थान (कृणोतु) करे।

१. सत्य—

जो वस्तु जैसी हो, उसे वैसा जानकर वैसा करना, बोलना तथा करना सत्य मानना, सत्य बोलना तथा सत्य करना कहलाता है, अर्थात् वस्तु का यथार्थ स्वरूप समझकर तदनुसार व्यवहार ही सत्य व्यवहार है। वैदिक धर्म में सत्य का आसन बहुत ऊंचा है। मनुस्मति में धर्म के दशलक्षणों में सत्य की गणना की गई है। जैसा कि—

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः ।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ॥

उपरोक्त श्लोक में धर्म के दश लक्षण कहे हैं। उनमें सत्य भी है जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वैदिक धर्म सत्य को एक महत्त्वपूर्ण स्थान देता है जैसा कि तैत्तिरीयोपनिषद् में विद्या समाप्त करने पर ब्रह्मचारी को आचार्य उपदेश देते हुये सबसे प्रथम उपदेश देता है—

सत्यं वद = तू सत्य बोला कर।
मनु महाराज ने सत्य को सर्वश्रेष्ठ बतलाया है:—
न हि सत्यात्परो धर्मो नानृतात्पातकं परम् ।

सत्य से श्रेष्ठ कोई धर्म नहीं, और झूठ से बढ़कर कोई गिरावट का कारण नहीं। धर्म=धारण करने योग्य बातें अनेक हैं, सभी उत्तम हैं भले ही सत्य से वे घटिया न हों किन्तु सत्य से श्रेष्ठ नहीं हैं, सुतरां सत्य की सर्वश्रेष्ठता सिद्ध ही है। सत्य के संबंध में ब्रह्मवादी ऋषियों ने भी घोषणा की है:—

सत्यमेव जयते नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयानः। (मुण्डको०) सत्य ही की जय होती है न कि असत्य की क्योंकि देवों का मार्ग सत्य से विस्तार पाता है। ऋग्वेद में भगवान् ने अपनी अनुपम शैली द्वारा असत्य को बन्धन का हेतु कहा है—

के ते अग्ने रिपवो बन्धनासः के पायवः सनिषन्त द्युमन्तः ।
के धासिमग्ने अनृतस्य पान्ति क आ सतो वचसः सन्ति गोपाः ॥

हे सच्चे नेता! तेरे शत्रु के लिये क्या-क्या बन्धन हैं? कौन भक्ति भाजन कीर्तिमान् रक्षक हैं? मिथ्या के बन्धन की रक्षा कौन करते हैं? सर्वथा सत्य के कौन रक्षक हैं? तनिक ध्यान से विचारिये, मिथ्या के साथ-बन्धन पद का प्रयोग मिथ्या को बन्धन का कारण बता रहा है। वेद अत्यन्त प्रबल शब्दों में सत्य की महत्ता घोषित करता हुआ कहता है—

सत्येनोत्तभिता भूमिः (अ० १४।१।१)

भूमि सत्य के सहारे थमी है। भूमि सृष्टि मात्र का उपलक्षण है। यदि इस भूमि को मातृभूमि या राष्ट्र अर्थ में लिया जाय तो भाव होगा कि राष्ट्र सत्य के सहारे थमा है। असत्य अलीक है, वह किसी का क्या अवलम्बन, सहारा, आश्रय हो सकता है। नीतिविशारदों ने भी सत्य की आवश्यकता को स्वीकार किया है.—

एवं वश्येन्द्रियः परस्त्रीद्रव्यहिंसाश्च वर्जयेत् ।
स्वप्नं लौल्यमनृतमुद्धतवेषत्वमनर्थसंयोगं च ।

(कौ० अ०) विनया० सप्तमाध्याय)

इस प्रकार जितेन्द्रिय होकर राजा पराई स्त्री, पराये द्रव्य तथा हिंसा का त्याग करे इसी प्रकार अधिक सोना=असावधनता, चञ्चलता, लोभ, लोलुपता, अनृत=झूठ, उद्धतवेष तथा अनर्थ संयोग का भी त्याग करे।

मनु महाराज ने भी राजप्रकरण में आदेश किया है:—

शुचिना सत्यसन्धेन यथाशास्त्रानुसारिणा ।
प्रणेतुं शक्यते दण्डः सुसहायेन धीमता ॥ (७।३१)

पवित्र, सत्यप्रतिज्ञ, शास्त्र के अनुसार आचरण करनेवाला, बुद्धिमान् राजा ही दण्ड=न्याय व्यवस्था का ठीक व्यवहार कर सकता है।

स्पष्ट ही राजा को सत्यप्रतिज्ञ होने का आदेश है इससे राष्ट्र में सत्य की महत्ता असंदिग्ध रूप से व्यक्त है।

२. बृहत्—

राष्ट्र रक्षा के लिये सत्य ही पर्याप्त नहीं उसकी रक्षा के लिये बृहत् की भी आवश्यकता है। बृहत् का अर्थ है महान् तथा महत्त्वाकांक्षा। अथर्ववेद के दूसरे काण्ड के ग्यारहवें सूक्त में बृहत्=महत्त्वाकांक्षा किस विध होती है, यह बताया है।

दूष्या दूषिरसि हेत्या हेतिरसि मेन्या मेनिरसि ।
आप्नुहि श्रेयांसमति समं क्राम ॥१॥

तू दुष्ट क्रिया का दूषक=विनाशक है। तू हत्यासाधनों का घातक है तू वज्र का भी वज्र है। अतः कल्याण प्राप्त कर और अपने जैसों को लांघ जा।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

देश में दंगे और प्रदेशों की मांग क्यों ?

१—कश्मीर को विशेष दर्जा देने वाली संविधान की धारा ३७० ही इन सब बातो का मूल कारण है। अलगाववाद, प्रदेशों की मांग जैसे खालिस्तान तथा गोरखालैंड आदि की प्रेरणास्रोत रही है। इसी के कारण कोई भी गैर कश्मीरी चाहे प्रधानमन्त्री ही क्यों न हो एक इन्च भूमि खरीद कर यहां नहीं रह सकता। इसी कारण आज कश्मीर घाटी एक छोटा पाकिस्तान बन चुकी है। इस अस्थाई धारा ३७० को तुरन्त समाप्त किया जाए।

२—धर्म निरपेक्ष राज्य के कारण सभी सम्प्रदायों के लिये निजी कानून समाप्त कर दिये जायें। क्या कारण है कि एक मुसलमान चार औरतें रख सकता है और एक हिन्दू को दूसरा विवाह करना अपराध है। एक मुस्लिम जज जिसके अपने घर में चार बीवी हैं वह अदालत में बैठकर एक हिन्दू को दूसरा विवाह करने पर कारावास की सजा सुनाता है। एक पंजाबी बाप के दो बेटे जिनमें एक केशधारी है वह तीन फुट की तलवार रख सकता है और दूसरा जो केश नहीं रखता उसके लिये ६ इञ्च का चाकू रखना भी अपराध है इसलिये सबके लिये समान सिविल कोड बनाया जाए।

३—आरक्षण, सरकारी आर्थिक तथा अन्य सुविधायें देने का आधार वर्ग विशेष न होकर सभी वर्गों के पिछड़े लोगों के विकास के लिये आर्थिक होना चाहिये। गांधी जी ने हिन्दू समाज के अभिन्न अंगों को हरिजन तथा अछूत के नाम पर इन्हें ये सुविधायें दिलाकर हिन्दू समाज से काट दिया ये लोग इनके लिए हिन्दू से अपनी अलग पहिचान बनाये हुए हैं।

४—धर्म निरपेक्ष देश में न कोई अल्पसंख्यक होता न बहुसंख्यक वहां सभी को समान अधिकार होते हैं। इसलिये संविधान से इन दोनो शब्दों को निकाल कर अल्पसंख्यक आयोग समाप्त कर मानव अधिकार आयोग का गठन किया जाए।

५—देश की सभी प्रादेशिक भाषाओं की लिपि देवनागरी की जाए जैसे यूरोप के देशों की विभिन्न भाषाओं की एक लिपि 'रोमन' है। अंग्रेजी के स्थान पर राज-काज की भाषा में हिन्दी का प्रयोग किया जाए और जो हिन्दी नहीं जानते उन्हें हिन्दी सीखने के लिये समय तय कर दिया जाए। देश की सम्पर्क भाषा के रूप में भी अंग्रेजी की जगह हिन्दी को दी जाए और इसे राष्ट्र भाषा का स्थान दिया जाए।

६—देश से रिश्वतखोरी, कालाधन तथा करों की चोरी को रोकने के लिये लायसेंस, कोटा, परमिट, राशन तथा कण्ट्रोल को पूरी तरह समाप्त कर दिया जाए ताकि जनता को सभी अपनी आवश्यकता की वस्तुयें लेने के लिये सरकारी कर्मचारियों पर निर्भर न रह कर उन्हें रिश्वत देने के लिये विवश न होना पड़े। इस समय आयकर देने की जो आय सीमा है वह बहुत कम है यह सीमा बढ़ा दी जाये ताकि लोग करो की चोरी न कर सकें।

इन सब को समाप्त करने के लिये देश भर में जनमत तैयार कर सरकार पर दबाव डालना होगा कि वह इन्हें कार्यरूप दे अन्यथा चाहे कोई प्रधानमन्त्री बन जाये और चाहे किसी दल की सरकार बन जाए ये समस्यायें समाप्त नहीं होंगी।

पटवारी जी संस्थान,
करोल बाग, नई दिल्ली—११०००५

मेधावी छात्र

श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय, ११७ गौतम नगर नई दिल्ली ४९ के मेधावी छात्र श्री नरदेव यजुर्वेदी आत्मज श्री सागर नायक घउरा भटा जि० सम्बलपुर (उड़ीसा) निवासी ने महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक (आर्ष विभाग) सर्वगुरुकुलीय स्नातक परीक्षा शास्त्री में सर्वोच्च अंक लेकर सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया।

आपने न केवल परीक्षा में ही सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया अपितु केवल मात्र १३ वर्ष की आयु में सम्पूर्ण 'यजुर्वेद' कण्ठस्थ कर आज जगत् में अभूतपूर्व कीर्तिमान स्थापित किया।

आचार्य—हरिदेव आचार्य
श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय, 119 गौतम नगर, नई दिल्ली

आर्य वीर महासम्मेलन २६, २७ सितम्बर १९८७ को जीन्द में

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी सार्वदेशिक आर्य वीर दल हरयाणा का प्रान्तीय महासम्मेलन हरयाणा के ऐतिहासिक नगर जीन्द में शनिवार एवं रविवार, दिनांक २६ तथा २७ सितम्बर १९८७ को सोत्साह मनाया जा रहा है जिसमें उच्च कोटि के सन्यासी, विद्वान्, भजनोपदेशक एवं संगीतकार तथा क्रान्तिकारी युवा विद्वानों को आमन्त्रित किया गया है। इस अवसर पर एक हजार आर्य वीरों का विशाल प्रदर्शन, आर्य वीर गोष्ठी तथा राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का आयोजन होगा।

देश की वर्तमान परिस्थितयों में आर्यसमाज की युवाशक्ति का सशक्त संगठन (केवल आर्य वीर दल) ही समय की पुकार है अतः समूचे भारत के आर्यसमाजो/आर्य संस्थाओं के अधिकारियों/सदस्यों अभिभावकों से प्रार्थना है कि वे उक्त सम्मेलन में तन मन धन से अपना सहयोग देकर सम्मेलन को सफल बनाएं। धन्यवाद सहित

—वेदप्रकाश आर्य मन्त्री आर्य वीर दल, (हरयाणा)

जब नौजवां तू देश के काम आयेगा

जो नौजवां तू देश के काम आयेगा।
तो ये जमाना तेरे ही गीत गायेगा॥
आयेंगे तूफान और आंधियां भी मगर।
धैर्य से जो तू उनसे टकरायेगा॥
तुमपे दुनियां दोष भी लगायेगी बहुत।
पर कोई नीच तुमको पागल बतायेगा॥
बरसेंगे पत्थर गोली और बम्ब तुम पर।
कहीं जगन्नाथ तुमको विष भी पिलायेगा॥
होगा प्रकाश जग में, दूर होगा तम फिर।
रेक बुझा दीपक जब तू जलायेगा॥
सत्य असत्य जाने जो वेद धर्म को मानें।
बलवन्त वो ही जीव मुक्ति को पायेगा॥

—बलवन्तसिंह आर्य, ठसका, नारायणगढ अम्बाला

सूखा ग्रस्त क्षेत्र में सांडों की रक्षा का दायित्व आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने ले लिया

प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

हरयाणा के कम से कम ५ जिलों में भयंकर सूखा है। वहां काफी संख्या में ऐसे गांव हैं, जिनमें मनुष्यों तथा पशुओं के लिये पीने के पानी की कमी है, और पशुओं के लिये खरीफ की फसल में जो चारे की फसल होती थी, वह या तो है ही नहीं, यदि रही है तो भी बहुत थोड़ी है। रबी की फसल का चारा तो मई के महीने में ही उपलब्ध हो सकेगा। ८ महीने तक पशुओं के लिए चारे की समस्या बहुत गम्भीर है और ज्यों-ज्यों समय बीतता जायेगा वह और भी गम्भीर होती चली जायेगी।

आर्य प्रतिनिधि हरयाणा के अधिकारियों ने सभा की ओर से सूखा राहत के काम में अपना भरसक योगदान देने का निश्चय किया है। वैसे तो बड़े पैमाने पर राहत देने की क्षमता, राज्य सरकार तथा भारत सरकार के पास ही है, स्वयंसेवी संस्थायें तो छोटे पैमार पर ही राहत का काम कर सकती हैं। उनके पास न तो अपने साधन इतने अधिक हैं और न ही जनता से ही अधिक मात्रा में वे दान ले सकती हैं, विशेष रूप से जब सरकारें भी धनी लोगों से इसी काम के लिये अपने राहत कोषों के लिये पैसे मांग रही हों।

इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए सभा ने यह निर्णय लिया है कि पशुओं की नसल में गिरावट आने से बचाने के लिये सांडों की सुरक्षा का दायित्व जनता तथा आर्यसमाजों के सहयोग से सभा अपने ऊपर ले। चारा तथा दाना आदि के लिये अन्न संग्रह करने तथा धनराशि एकत्रित करने के लिये शीघ्र ही सभा आर्यसमाजों तथा जनता से अपील करके इस काम में जुट जायेगी। इस सम्बन्ध में शीघ्र ही विस्तृत कार्यक्रम बनाकर काम आरम्भ हो जायेगा। आर्यसमाजों तथा सभी धर्म प्रेमियों से हमारी प्रार्थना है कि इस पुण्य कार्य में सभा को दिल खोल कर हर प्रकार की सहायता दें।

आखिर ठेका उठा लिया गया

कुरुक्षेत्र, १० सितम्बर (कृष्ण चमिजा) : महिला सांस्कृतिक संघ कुरुक्षेत्र की ओर से गत पांच महीने से चल रहे गांव भोर सैयदां में ठेका शराब के विरोध में चल रहे धरने के कारण सरकार ने उसे बन्द करने की घोषणा की है। संघ की अध्यक्षा कु० सुदेश का कहना है कि गत दिवस मुख्यमन्त्री चौ० देवीलाल के पिपली-आगमन पर उक्त घोषणा मुख्यमन्त्री ने की थी। संघ ने एक प्रस्ताव में शराब-विरोधी आंदोलन में मदद करने वाले गांव व इलाके के तमाम स्त्री, पुरुष व नौजवानों को आंदोलन की सफलता की बधाई दी और भविष्य में व्याप्त तमाम बुराइयों व कुरीतियों के विरुद्ध आंदोलनों में बढ़-चढ कर भाग लेने का जनता का आह्वान किया है।

—पंजाबकेसरी (११-९-८७)

संस्कृत की अवहेलना संविधान की अवहेलना

—प्रो० शेरसिंह

संस्कृत की शिक्षा को माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम से निकालकर नई शिक्षा नीति ने एक प्रकार से संविधान की अवहेलना की है।

संविधान के अनुच्छेद ३५१ मे यह स्पष्ट लिखा है कि राजभाषा के रूप में हिन्दी का स्वरूप विकसित हो और जिस शब्दावली की रचना विभिन्न विषयों की शिक्षा तथा प्रशासन के लिये की जाये उसमें अधिकतर शब्द संस्कृत से तथा थोड़े-थोड़े अन्य भाषाओं से लिये जाये। इस अनुच्छेद में यह प्रावधान इसलिये किया गया, ताकि जिस शब्दावली की रचना की जाये उसको सभी भारतीय भाषाए अपना सकें, सभी भाषाओं की शब्दावली म एक रूपता आ सके। इससे जहा एक ओर सभी भारतीय भाषाओं के बोलने वाले लोग प्रशासन की भाषा को आसानी से समझ सके और शिक्षा के क्षेत्र में यदि विद्यार्थियों को शिक्षा का माध्यम किन्ही कारणों से बदलना पड़े तो उनको कम से कम असुविधा हो। क्योंकि भारत की सभी भाषाओं मे संस्कृत मूलक शब्दों का बाहुल्य है, इसलिये संस्कृत मूल के शब्द सबको ही ग्राह्य हो सकेंगे। संस्कृत भारत को सभी भाषाओं को जोड़ने वाली कडी है, यदि वह कड़ी कमजोर हो गई या टूट गई तो भारतीय भाषाए एक दूसरी से जुडने की बजाये अलग-अलग हो जायेंगी, भारत बिखर जायेगा। यदि भारतीय भाषाओं में एकरूपता और सौमनस्य नहीं रहा तो हिन्दी तो राजभाषा या राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो नही सकेगी, अंग्रेजी सदा-सदा के लिये बनी रहेगी। जो निहित स्वार्थ अंग्रेजी को राजभाषा बनाये रखना चाहते हैं, उनका ही यह षड्यन्त्र हो सकता है। वे चतुर लोग तो हैं ही, उन्होंने ही यह सोचा होगा कि संस्कृत की अवहेलना करो, पाठ्य-क्रम में से निकाल दो, नई पीढ़ी जो संस्कृत से अनभिज्ञ होगी, वह भारतीय भाषाओं की एकरूपता के दर्शन नहीं कर सकेगी। इससे भारतीय भाषाएं धीरे-धीरे एक दूसरी से दूर होती जायेंगी, और सम्पर्क भाषा हिन्दी न होकर फिर अंग्रेजी ही सम्पर्क भाषा, और इसीलिये राजभाषा बनी रहेगी।

राष्ट्र के विभिन्न भाषाभाषी लोगों में भाषाओं के कारण आपस में दुःख बढेगा तो देश छिन्न भिन्न हो जायेगा। संविधान की भावना और उसकी भाषा तो देश की एकता और देश को भाषाओ की एकरूपता को सुदृढ करने के लिये है। यह स्पष्ट है कि संस्कृत की अवहेलना संविधान की अवहेलना होगी।

बलियाना में आर्य सम्मेलन सम्पन्न

६ सितम्बर १९८७ को प्रात: ७ बजे यज्ञ के साथ वेदप्रचार मण्डल पाकस्मा का महत्त्वपूर्ण आर्य सम्मेलन आर्यसमाज मन्दिर बलियाना में प्रारम्भ हुआ। प्रात ७ बजे १० बजे तक यज्ञ तथा वेद प्रवचन हुए। जिसमें गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारियों ने भाग लिया। जिसके पश्चात् सभा के भजनोपदेशक श्री सीताराम जी द्वारा शिक्षाप्रद भजन हुए एवं स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के प्रवचन हुए। आर्य सम्मेलन की कार्यवाही ११ बजे विधिवत् प्रारम्भ हुई। जिसमें शास्त्री सत्यवीर जी, प्रि० लाभसिंह जी, सभा के महोपदेशक महेन्द्र कुमार शास्त्री, हैफेड के चेयरमैन कपिलदेव शास्त्री, सम्मेलन के मुख्य अतिथि स्वामी ओमानन्द सरस्वती जी ने आर्यसमाज की गतिविधियों, वेदप्रचार व प्रसार पर प्रकाश डाला एव सभा के भजनोपदेशक सर्व श्री ईश्वरसिंह तूफान, सीताराम तथा प० चिरन्जीलाल ने भजनो द्वारा समाज मे फैल रही कुरीतियों का खुलकर खण्डन किया। इस सम्मेलन में मण्डल के सभी गांवों के आर्यसमाजों के अधिकारी एवं सक्रिय कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। सम्मेलन में मण्डल के वेदप्रचार को सुदृढ बनाने के लिए विचार किया गया और भारत सरकार द्वारा संस्कृत की उपेक्षा एव अंग्रेजी के प्रसार के बारे में प्रस्ताव द्वारा सरकार से अनुरोध किया गया कि अंग्रेजी की जगह हिन्दी एवं संस्कृत की शिक्षा पर अधिक ध्यान दिया जाये। अन्त मे सम्मेलन के अध्यक्ष वानप्रस्थी महावीर जी ने आने वाले महानुभावों का धन्यवाद किया और शक्ति पाठ के साथ साय ४ बजे सम्मेलन सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में श्री अमर स्वामी जी के निधन पर एक शोक प्रस्ताव भी पास किया गया। —मन्त्री

"महाभारत की युद्ध पद्धति और उसमें प्रयोग किये गये अस्त्र-शस्त्र"

श्री रणवीर शास्त्री, एम० ए०, विद्याभास्कर विद्यावाचस्पति द्वारा—आर्यसमाज समालखा मण्डी (करनाल)

यह बात तो सभी जानते हैं कि महाभारत का युद्ध एक ही कौरव-वंश के लोगों का युद्ध था, जो कुरुक्षेत्र में हुआ। कुरुक्षेत्र को युद्ध का मैदान चुनकर 'उद्योग-पर्व' के अनुसार उसमें पांच योजन स्थान लड़ने के लिये छोड़कर पश्चिम की ओर पाण्डवों ने डेरा डाल लिया और पूर्व की ओर कौरवों ने अपनी सेनाएं उतार दीं। उस समय की मान्यताओं के अनुसार श्मशान, देव-मन्दिर, ऋषियों के आश्रम और तीर्थ-स्थलों को युद्ध की लपेट में लेना दोनों पक्षों की ओर से निषिद्ध घोषितकर दिया गया। पाण्डवों की छावनी के सम्बन्ध में महाभारत में वर्णित वृत्तान्तानुसार श्री कृष्ण ने अर्जुन को साथ लेकर सारी भूमि का चक्कर लगाया तथा धृष्टद्युम्न और सात्यकि ने छावनी की पैमाइश की। हिरण्वती नदी के तट पर घाट आदि बनवाकर सेना को ठहराया गया। वहीं एक परिखा खुदवाकर समय पड़ने पर स्थिति सम्भाल लेने की दृष्टि से एक गुप्त सेना उसमें सुरक्षित करा दी गई। अपने पक्ष के सभी राजाओं को सेना को युधिष्ठिर ने अलग-अलग पर्याप्त स्थान दिया तथा युद्ध की सकल सामग्री प्रभूत मात्रा में प्रत्येक के पास पहुंचाई गई। इस पक्ष की सारी व्यवस्था का सचालन नीतिनिपुण श्री कृष्ण जी कर रहे थे।

इधर कौरव भी तो हाथ पर हाथ धरे नहीं बैठे थे। 'उद्योग-पर्व' में ही वर्णन मिलता है कि दुर्योधन ने समर-स्थल में एक नया हस्तिनापुर बसा लिया था जहां कोष, रत्न, धन-धान्य सब उपस्थित था। वणिक शिल्पी और यहां तक कि वेश्याएं और तमाशा देखने वाले लोग भी युद्ध क्षेत्र में आये थे और सबके आवास दुर्योधन ने स्वयं जा-जाकर देखे थे।

भीष्म पर्व के अनुसार युद्ध नीति के अन्तर्गत दोनों पक्षों ने गुप्त रूप से अलग-अलग सज्ञाएं (संकेत) निश्चित कर सबको बता दिया था कि इन संकेतों का प्रयोग करने वाला स्व-पक्षीय समझा जाएगा (भीष्म पर्व)। द्रुपद, विराट्, शिखण्डी, धृष्टद्युम्न, सात्यकि, चेकितान तथा भीमसेन – ये सात सेनापति पाण्डवों की सेनाओं में नियुक्त हुये तथा कृपाचार्य, द्रोणाचार्य, शल्य, जयद्रथ, (कम्बोडिया) काम्बोज नरेश सुदक्षिण, भोजराज-कृतवर्मा, अश्वत्थामा, कर्ण, भूरिश्रवा, शकुनि तथा वाल्हीक—ये ग्यारह सेनापति कौरवों की सेनाओं में नियुक्त हुये। प्रमुख योद्धाओं की पहचान उनके रथ, घोड़ों के रंग, ध्वजा, शख की ध्वनि आदि से होने की व्यवस्था भी अपने-अपने पक्ष की ओर से कर ली गई। यथा—भीष्म का छत्र, कमान घोड़े और ध्वजा सभी श्वेत थे। द्रोण के घोड़े लाल रंग के थे। युधिष्ठिर का छत्र दण्ड हाथी-दांत का और रथ सोने का था जिस पर रत्न जड़े थे। युद्ध हेतु कौरवों ने ग्यारह अक्षौहिणी सेना तथा पाण्डवों ने सात अक्षौहिणी सेना मैदान में उतारी थीं। यद्यपि यह अक्षौहिणी शब्द स्वयं महाभारत में ही विवादास्पद हो गया प्रतीत होता है। उद्योग-पर्व के १५४वें अध्याय में इसकी परिभाषा कई प्रकार से की गई है। २२वें श्लोक में एक रथ के साथ १० हाथी, १०० घोड़े और १००० योद्धा ऐसी गणना की गई जबकि २३वें श्लोक में एक रथ के साथ ५० हाथी, ५००० घोड़े और ३५००० योद्धा गिनाये गये हैं। २४वें श्लोक में एक अक्षौहिणी सेना में १०५ हाथी और उतने ही रथ गिना कर दस सेनाओं की एक पृतना तथा दस पृतनाओं की एक वाहिनी कही गई है जबकि २५वें श्लोक में सेना, वाहिनी, पृतना, ध्वजिनी, चमू और अक्षौहिणी को पर्यायवाची कहा है। इस सबसे यही प्रतीत होता है कि उस समय भी आज को तरह सेना के विविध विभाग अर्थात् Division थे जिनमें छोटे से छोटा डिवीजन १० रथों, १०५ हाथियों, १०५० घोड़ों और १०५०० पुरुषों का रहा होगा और बड़े डिवीजनों में १०५०० हाथी और उतने ही रथ रहे होंगे।

भीष्म पर्व के प्रथम अध्याय के श्लोक २७ से ३२ तक में उपलब्ध जानकारी के अनुसार युद्ध के लिये नियम निश्चित किये गये जिनका युद्ध के दौरान पालन अनिवार्य घोषित किया गया। प्रथम नियम के अन्तर्गत निश्चय किया गया कि युद्ध काल की समाप्ति के उपरान्त परस्पर प्रीति हो जाया करेगी तथा तब एक-दूसरे को छला न जायेगा। दूसरे नियम में निश्चय किया गया कि वाणी से युद्ध करने वालों (तमाशा देखने वालों या केवल शब्दों द्वारा ही किसी दल का पक्ष लेने वालों) से वाणी द्वारा ही युद्ध होगा। लड़ाई से बाहर रहने वालों का वध न किया जायेगा। तीसरे नियम के अनुसार रथी से रथी लड़ेगा, हाथी-चढ़ा हाथी चढ़े से ही लड़ेगा तथा घुड़सवार घुड़सवार से और पैदल पैदल से लड़ाई करेगा। चौथे नियम के अनुसार व्याकुल तथा जिसे विश्वास दिला दिया गया हो उस पर वार नहीं किया जायेगा।

पांचवें नियम में कहा गया कि किसी के साथ लड़ रहे, लड़ाई से विमुख शस्त्र रहित तथा कवचहीन का वध नहीं किया जायेगा तथा सूतों, धुरी पर खड़े हुओं, शस्त्र निर्माताओं, भेरी तथा शंख बजाने वालों पर भी प्रहार नहीं किया जायेगा। इतना ही नहीं, कई प्रकार के शस्त्रों के प्रयोग पर भी दोनों पक्षों की ओर से प्रतिबन्ध लगाया गया था। यथा-नालिक, छोटा तीर, जिसके शरीर में ही रह जाने का भय था, दो उल्टे कांटों वाला बाण जो शरीर के अन्दर घुस जाने पर बड़े कष्ट से बाहर निकाला जा सकता था, विषलिप्त कर्णी बाण, गौ तथा हाथी की हड्डी का बाण, संश्लिष्ट अर्थात् ऐसा बाण जिसके कई भाग हों तथा हर भाग दूसरे भाग से ढीला जुड़ा हो, सड़ा बाण तथा टेढ़ा बाण। इनके अतिरिक्त कुछ सामान्य नियम भी थे जिनके अनुसार दूत की हिंसा न केवल वर्जित हो थी बल्कि उसे अपने राजा का मुख मानकर अपने सन्देश निर्भीकता पूर्वक सुनाने की खुली छूट थी। मर रहे, संकटापन्न, निस्संतान, टूट गई ज्यावाले, मर गये घोड़ों वाले शत्रु को मारने की भी मनाही थी। घायल की चिकित्सा या तो विजयी राजा अपने ही देश में करवाकर उसे छोड़ देता अथवा उसे उसी के अपने देश में भेज देने का विधान था। युद्ध में हथियाई गई कन्या से एक वर्ष तक तो विवाह तक की बात तक भी न की जा सकती थी। लूटे गये माल का विनियोग भी एक वर्ष बाद ही हो सकता था। एक विशेष बात यह थी कि यदि लड़ रही दोनों सेनाओं के मध्य शान्ति कराने की आवश्यकता अनुभव की जाती तो एक ब्राह्मण उन युद्धरत दलों के बीच में आ जाता जिसे देखते ही योद्धा लोग रुक जाते थे। महाभारत के शान्ति पर्व में वर्णित इन युद्ध नियमों के ही प्रकाश में आजकल के युद्ध में भी विषैली गैसों आदि का प्रयोग निषिद्ध है तथा इस समय भी परिस्थितियों के अनुसार युद्ध के नियम हैं जिनके पालन की घोषणाएं भी होती हैं तथा इनके पालन न होने की शिकायत भी साथ-साथ रहती ही है, यही अवस्था महाभारत के युद्ध की भी थी। उसमें भी कई निषिद्ध शस्त्रों का प्रयोग हुआ। उदाहरणार्थ शान्ति पर्व में वर्णित 'ऋजु युद्ध' स्वयं अर्जुन ने किया जिसको पीड़ा से कोई बच न सका।

महाभारत के युद्ध में सर्वतोमुख, वज्र अथवा सूचीमुख, महाव्यूह, क्रौंच, गरुड़, अर्धचन्द्र, मकर, श्येन, मण्डल, शृंगाटक, सर्वतोभद्र, चक्र तथा सचक्र शकट आदि व्यूहों का भी प्रयोग हुआ। इनके भाग तुण्ड, मुख, नेत्र, पक्ष या पार्श्व, पृष्ठ तथा सेनाजघन थे। प्रत्येक भाग में एक अथवा अनेक मुख्य योद्धा उचित सेना सहित नियुक्त किये गये। मण्डल व्यूह युद्ध के सातवें दिन पाण्डवों ने रचा तथा सचक्र-शकट व्यूह की रचना जयद्रथ की रक्षा के लिये द्रोण ने विशेष चतुराई से की थी।

[क्रमशः]

'ओ३म्'

भयंकर सूखा अकाल पड़ने के कारण........................

हरयाणा की प्रसिद्ध नस्ल गाय और भैंस को बचाइये

दानी महानुभावों से अपील

मान्यवर महोदय,

यह तो आपको पता ही है कि सारे ही हरयाणा प्रान्त में भयंकर सूखा पड़ रहा है जिसके कारण सारी फसलें सूख गई या बोई नहीं गईं। जिससे पशुओं के चारे व दाने का बहुत ही अभाव हो गया है। इस सूखे का सबसे अधिक प्रभाव यहां के पशुओं पर पड़ रहा है। चारा व पानी के अभाव में पशु कमजोर होते जा रहे हैं। हरयाणा सदैव बहुधान्यक व गवाढ्य प्रदेश रहा है। इसलिए यहां पर पशु पालक उन्नत नस्ल के पशुओं को पालते आए हैं।

किन्तु आज भयंकर सूखा अकाल पड़ने के कारण मुर्रा भैंस, झोटे की नस्ल व हरयाणवी नस्ल की गायों व साण्डों को चारा व दाना-पानी का अभाव होने के कारण इनकी नस्ल को खतरा पैदा हो गया है।

इन्हें बचाने के लिए सभी दानी महानुभावों का परम कर्त्तव्य है। साण्डों व झोटों के लिए, जोकि सबके साझे के पशु माने जाते हैं, उनके चारा दाना के लिए अधिक से अधिक सहायता पहुंचाकर इनकी उन्नत नस्ल को बचावेंगे। वर्षा न होने के कारण खेतों में हरा घास न होने से ये दोनों ही नस्ल ग्राम की गलियों में भूखे ही मरते फिर रहे हैं। वर्षा होने पर तो ये स्वतन्त्र रूप से किसानों के खेतों में जाकर अपना पेट भर लेते थे। आज वे साधन भी इन बेचारे पशुओं को प्राप्त नहीं रहे।

अतः इस दुर्दशा को देखते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने इन उन्नत नस्ल के साण्डों व झोटों के बचाव व राहत के लिए एक समिति की नियुक्ति की है जो ग्रामों के सरपंचों व पंचों तथा सभी वर्ग के दानी महानुभावों से इनकी रक्षा के लिए तन-मन-धन से दान देने की अपील करती है। स्वयं भी इस समिति ने यह संकल्प किया है कि वह भी सभा की ओर से इन सर्वश्रेष्ठ उन्नत नस्ल के लिए चारा-दाना व पानी का प्रबन्ध करने का प्रयत्न करेगी।

हम धनी, मानी महानुभावों से अपील करते हैं कि वे भी इन पशुओं को बचाने के लिए खुले हाथ से चारा-दाना तथा धन का दान देकर कृतार्थ करेंगे। गौ आदि उपकारी पशुओं की रक्षा का व्रत निभायेंगे।

आपके सेवक.........

स्वामी ओमानन्द सरस्वती	प्रो. शेरसिंह	वेदव्रत शास्त्री	बद्रीप्रसाद	रघुवीरसिंह
प्रधान परोपकारिणी सभा	प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष	वेदप्रचाराधिष्ठाता
अजमेर	आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक। फोन ४८१२			

(पृष्ठ १ का शेष)

सक्त्योसि प्रतिसरोसि प्रत्यभिचरणोसि।
आप्नुहि श्रेयांसमति समं क्राम ॥१॥

तू प्रगति है। तू विरोधियों के सामने आने में समर्थ है तू विरोधियों पर आक्रमण करने वाला है, अतः अपने समान लोगों से आगे बढ़ और कल्याण प्राप्त कर तथा करा।

प्रति तमभिचर योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः।
आप्नुहि श्रेयांसमति समं क्राम ॥३॥

जो हम धार्मिक जनों से द्वेष करता है, वैरविरोध करता है, और तत्फलस्वरूप जिससे हम धार्मिक लोग अप्रीति करते हैं, उस पर आक्रमण करने की पहल कर। इस उपाय से तू अपने जैसों से आगे बढ़ और कल्याण कर तथा करा।

सूरिरसि वर्चोधा असि तनूपानोऽसि।
आप्नुहि श्रेयासमति सम क्राम ॥४॥

तू ज्ञानी है, तू तेजस्वी है दूसरों को तेज देने वाला है तू शरीर रक्षक है अत. तू समानों से आगे बढ़ तथा कल्याण प्राप्त कर तथा करा।

शुक्रोसि भ्राजोसि स्वरसि ज्योतिरसि।
आप्नुहि श्रेयांसमति समं क्राम ॥५॥

तू शुक्र=वीर्य्यवान् शीघ्रकारी एवं दीप्तिमय है। तू चमकाने वाला है। तू स्व=सु अस्=उत्तम स्थिति वाला है। तू ज्योति=प्रकाशस्वरूप है अत. तू समानों से आगे बढ़ और कल्याण प्राप्त कर तथा करा।

जो मनुष्य वेद की इस शिक्षा को जीवन में धारण कर लेता है, वह भगवान् से प्रार्थना करता है कि—

मूर्धाहं रयीणां मूर्धा समानानां भूयासम्।
नाभिरहं रयीणां नाभिः समानाना भूयासम् ॥अ०१६।४।१॥
मैं हितरमणीय पदार्थों में शिरमौर हूं।
अत एव मे अपने जैसों का शिरोमणि बनूं॥
मैं हित रमणीय पदार्थों का केन्द्र हूं।
अत एव मैं अपने जैसों का नाभि=केन्द्र बनूं॥

वेदोपदिष्ट उपर्युक्त भावों को मनसा, वचसा, वपुषा धारण करने वाला वीर पुरुष पूर्णरूप से निर्भय होकर कह सकता है—

अयुतोऽहमयुतो म आत्मायुत मे चक्षुरयुत मे श्रोत्र—
मयुतो मे प्राणोऽयुतो मेऽपानोऽयुतो मे व्यानोऽयुतोऽह सर्वः॥
॥अ० १८।५।१॥

मैं अयुत=दश सहस्र के तुल्य हूं। मेरा आत्मा, शरीर, मन भी अयुत है। मेरी आख अयुत है, मेरा कान अयुत है मेरा प्राण अयुत है, मेरा अपान अयुत है। मेरा व्यान अयुत है, मैं हू सारा का सारा अयुत।

जिस वीर के हृदय के भीतर दबङ्ग उमङ्ग कार्य कर रही हो, वह पूर्ण विश्वास के साथ कह सकता है कि—

अहमस्मि सहमान उत्तरो नाम भूम्याम्।
अभिषाडस्मि विश्वषाडाशामाशा विषासहिः॥अ० १२।१।५४
अश्व इव रजो दुधुवे वितान् जनान्
य आक्षियन् पृथिवी यादजायत ॥अ० १२।१।५७॥

मैं सर्वश्रेष्ठ होकर पृथिवी में राष्ट्र में शत्रुविरोध को सहन करने में समर्थ हूं। मैं सन्मुख जाकर शत्रुमर्षण कर सकता हूं। मैं विश्वषाट्=सर्वसह हू। प्रत्येक दिशा मे मैं विशेषरूप से निरन्तर शत्रुमर्षक हूं। जिस प्रकार घोटा धूली को झाड़ देता है, उसी प्रकार मैं उन सब को कंपा देता हूं जो न्याय प्राप्त इस पृथिवी=राष्ट्र सम्पत्ति को क्षीण करते हैं। मनुष्य में राष्ट्र के प्रति ममता का भाव उत्पन्न करना ही पर्याप्त नही प्रत्युत उसमें यह भावना उत्पन्न करनो चाहिये कि वह समर्थ है, समर्थ है, शक्तिशाली है।

३- ऋत=सृष्टि नियम—

सत्य को समझने और महत्त्व को पाने के लिये ऋत=सृष्टि नियम का जानना, समझना तथा तदनुकूल वर्त्तना अनिवार्य है, अतः सत्य और बृहत् के साथ ऋत का ग्रहण किया है। वेद में प्रायः सर्वत्र पहले ऋत आता है उसके पश्चात् सत्य आता है। जैसे—

'ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्' —

यहां ऋत से सत्य को पहले रखा है। इसका विशेष प्रयोजन है। सत्य और बृहत् को पृथक् न मानकर एक मान लिया जाये तो भाव होगा—सत्य महान् है। इसी प्रकार ऋत और उग्र को एक मानकर कहना पडता है कि ऋत उग्र है। पृथक्-पृथक् मानने की दशा में यह भाव है कि सत्य से महान् बनता है और ऋत से उग्र बनता है। ऋत स्वयं उग्र है विकट है। देखिये—

जैसाकि एक नीतिकार ने कहा है—

समवृत्तिरुपैतमार्दवं समये यश्च तनोति तिग्मताम्।
अधितिष्ठति लोकमोजसा स दिवस्वानिव मेदिनीपतिः॥
॥किरातार्जुनीय २।३८

तुल्य स्वभाव वाला होकर जो आवश्यकता पडने पर मृदुता तथा समय आने पर तीव्रता को धारण करता है, सूर्य समान वह राजा अपने तेज से ससार पर अधिकार करता है।

१. शरीर को देखिये, इसमें जो रुधिर बह रहा है वैज्ञानिक चिकित्सक इसमें दो प्रकार के रुधिर कणों की सत्ता बतलाते हैं एक श्वेत तथा दूसरे रक्त कण। एक प्रकार के कण रोग बीजों से युद्ध करने में तत्पर रहते हैं। ज्योंही कहीं कोई रोग बीज शरीर में प्रकट हुआ कि इन कणों ने उस पर आक्रमण किया। यदि शरीर में इन कणों की मात्रा न्यून हो जाये, तो शरीर रोगाक्रान्त हो जाता है। शरीर के अन्दर की यह क्रिया स्पष्ट निर्देश कर रही है कि आक्रमण शक्ति के बिना व्यक्ति का भी जीवन सुरक्षित नहीं रह सकता, समष्टि की तो बात ही क्या है। अतः जो समाज या राष्ट्र आक्रमण साधनों के संचय करने में प्रमाद करता है या उनसे विमुख रहता है उसके ह्रास तथा नाश में कोई सन्देह नहीं।

२. इसी प्रकार शरीर में एक और अद्‌भुत खेल हो रहा है। शरीर में जलीय अंश बहुत अधिक मात्रा में है। साथ ही अग्नि तत्त्व भी कार्य कर रहा है। जलीय अंश की न्यूनता हो जाये तो मृत्यु तक की संभावना होती है। इसी भान्ति यदि अग्नि तत्त्व घट जाये तो भी मृत्यु के दूत प्रभूत मात्रा में आते हैं। जठराग्नि कम हो जाये, तो खाया पीया उचित रीति से पचता नहीं। इससे शरीर का हित नहीं होता। शरीर की ये प्रक्रियायें बता रही हैं कि संरक्षण एवं आक्रमण सामर्थ्य, तिग्मता एवं मृदुता का आनुपातिक तुलन रखना आवश्यक रूप में अनिवार्य है।

इस प्रकार अनेक प्राकृत नियमों का उल्लेख किया जा सकता है। उन सब में विजातीय निष्कासन एव विरोधी संहार का सिद्धान्त नितान्त कार्य कर रहा दीख पड़ता है। ऋत=सृष्टि नियम से हमें सत्य का, अनुष्ठान का ज्ञान मिलता है।

विशाल यज्ञ-सत्संग समारोह एवं राष्ट्र-निर्माण सम्मेलन
(२८ सितम्बर से ४ अक्तूबर तक)

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ जि० रोहतक के इक्कीसवें स्थापना दिवस २ अक्तूबर के पुण्यावसर पर पूज्य श्री स्वामी प्रेमानन्द जी की संरक्षकता में विशाल यज्ञ-सत्संग का आयोजन अत्यन्त उत्साह के साथ किया गया है। इस शुभावसर पर २८ सितम्बर सोमवार से ४ अक्तूबर रविवार तक श्रद्धेय श्री स्वा० जीवनानन्द जी महाराज के ब्रह्मत्व में ऋग्वेद ६ से १० मण्डम तक पारायण महायज्ञ। वेदपाठ ब्र० सुभाषचन्द्र जी शास्त्री एवं ब्र० गजानन्द जी शास्त्री गुरुकुल गौतम नगर, दिल्ली द्वारा सस्वर किया जाएगा।

दैनिक कार्यक्रम प्रात: ७ से ९-३० तक सन्ध्या यज्ञ और आशीर्वाद ९-३० से १०-३० तक भजन-प्रवचन। सायं ३ से ५-३० तक यज्ञ आशीर्वाद ५-३० से ६-३० भजन व उपदेश। ४ अक्तूबर प्रात: ६-३० पूर्णाहुति, आशीर्वाद तत्पश्चात् राष्ट्र निर्माण सम्मेलन।

—सुरजभान 'भारद्वाज' (मन्त्री)
आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ

गुरुकुल आर्यनगर हिसार का महोत्सव

गुरुकुल आर्यनगर का वार्षिक महोत्सव आश्विन कृष्णा ११,१२,१३ सं २०४४ वि० तदनुसार १८, १९, २० सितम्बर १९८७ शुक्र, शनि व रविवार को बड़े समारोह से मनाया जा रहा है। यज्ञ पूर्णाहुति २० सितम्बर रविवार को प्रात: ९-३० बजे होगी। सभी गुरुकुल-हितैषी सत्संग प्रेमी सज्जन अपने परिवार एवं इष्ट मित्रों सहित निम्नलिखित कार्यक्रमों में भाग लेकर धर्म लाभ उठावें तथा उत्सव की शोभा बढ़ावें।

इस शुभावसर पर श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज, श्री स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती (योग धाम ज्वालापुर, हरिद्वार) चौ० वीरेन्द्रसिंह जी (बिजली तथा सिंचाई मन्त्री हरयाणा सरकार) प्रो० परमानन्द जी (शिक्षा मन्त्री हरयाणा सरकार) डा० सत्यवीर जी मलिक (प्राचार्य किसान कालेज जीन्द) पं० दुलीचन्द जी शर्मा वैदिक प्रवक्ता (खण्ड तथा पञ्चायत अधिकारी हिसार-२) क्रान्तिकारी श्री अतरसिंह जी (आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा) आर्यजगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं० बेगराज जी आर्य, आशुकवि पं० जयदेव जी जतोई व इनके साथी पं० प्रेम प्रकाश जी तथा वयोवृद्ध आर्य भजनोपदेशक पं० प्रभुदयाल जी आदि प्रसिद्ध संन्यासी, विद्वान्, राजनेता तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

१८ सितम्बर शुक्रवार को प्रात १० बजे से संस्कृत-भाषण तथा श्लोकोच्चारण प्रतियोगिताओं का शुभारम्भ होगा। दोपहर पश्चात् २-३० बजे अष्टाध्यायी सूत्रान्ताक्षरी प्रतियोगिता आरम्भ होगी। इन प्रतियोगिताओं में विभिन्न शिक्षा संस्थाओं के छात्र तथा छात्रायें भाग लेंगे। विजेता संस्था को चलविजयोपहार प्रदान किया जायेगा। प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय आने वाले छात्रों को पारितोषिक दिया जायेगा। इन प्रतियोगिताओं की अध्यक्षता के लिए डा० कमलाकान्त मिश्र (उप शिक्षा सलाहकार) शिक्षा मन्त्रालय भारत सरकार को सादर आमन्त्रित किया गया है।

२० सितम्बर रविवार को प्रात: १० बजे चौ० वीरेन्द्रसिंह जी (बिजली तथा सिंचाई मन्त्री हरयाणा सरकार) गुरुकुल के एक विशाल सभा भवन का शिलान्यास करेंगे तथा दोपहर पश्चात् ३ बजे प्रो० परमानन्द जी (शिक्षा मन्त्री हरयाणा सरकार) गुरुकुल के एक सुन्दर पुस्तकालय का उद्घाटन करेंगे।

कार्यक्रम:—प्रतिदिन प्रात: ७ बजे से ११ बजे तक संध्या, यज्ञ, उपदेश तथा भजन। दोपहर पश्चात् २-३० बजे से ५-३० बजे तक भजन तथा प्रवचन। रात्रि ८ बजे तक प्रवचन तथा भजन।

सूचना:—(१) गुरुकुल में पहुंचने के लिए बालसमन्द रोड पर चलने वाली लोकल बसों द्वारा पांचवे किलोमीटर पर नहर के पुल पर उतरें। (२) ऋतु अनुकूल बिस्तर साथ लावें। भोजन की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से होगी।

निवेदक:—रामस्वरूप शास्त्री आचार्य व मुख्याधिष्ठाता

वकालत के लिए अंग्रेजी की परीक्षा का प्रावधान खत्म

नई दिल्ली, ८ सितम्बर (भाषा)। बार कौंसिल आफ इंडिया ने वकालत के लिए मन्जूरी लेने में अंग्रेजी की विशेष परीक्षा के प्रावधान को समाप्त कर दिया है। इसके साथ हिंदी माध्यम से उत्तीर्ण विधि स्नातकों के लिए वकालत करने के दरवाजे खुल गए हैं।

विधि स्नातकों का पूरे देश की किसी भी स्टेट बार कौंसिल में अंग्रेजी की विशेष परीक्षा दिए बिना वकालत करने के लिए पंजीकरण हो सकेगा। बार कौंसिल आफ इंडिया ने २१ अगस्त को सभी राज्यों की बार कौंसिल को इस सम्बन्ध में निर्देश भेज दिए हैं। इस मुद्दे को लेकर गाजियाबाद निवासी पुष्पेन्द्र चौहान, बार कौंसिल आफ दिल्ली और बार कौंसिल आफ इंडिया के बीच दो वर्षों से संघर्ष चल रहा था।

श्री चौहान ने नवम्बर, १९८५ में दिल्ली में वकालत करने के लिए आवेदन किया था। आवेदन यह कह कर निरस्त कर दिया गया था कि उन्होंने हिन्दी माध्यम से विधि स्नातक किया है। इसके बाद श्री चौहान ने अनशन किया था और गिरफ्तारी दी थी।

आवश्यकता है

१. स्वामी शान्तानन्द आश्रम मरोड़ा पर एक महाशय की आवश्यकता है जो साधारण यज्ञ, संध्या आदि बच्चों को करा सके। दक्षिणा योग्यतानुसार दी जावेगी।

२. वेद-प्रचार मण्डल के अन्तर्गत ग्रामों में साईकिल पर घूम-घूम कर प्रचार कार्य कर सके। एक प्रचारक की आवश्यकता है। योग्यतानुसार दक्षिणा दी जावेगी।

पत्राचार का पता पदमचन्द्र आर्य मन्त्री आर्य वेदप्रचार मण्डल मेवात पो० नगीना (गुडगावां)

वेद पढें हम, तथा पढ़ाएं

वेद पढें हम, तथा पढ़ाएं
वेदों का हम करें प्रचार।
वेदों के पथ पर चलने को,
उद्यत जिससे हो संसार।
ऋषि-मुनियों के निर्देशों का,
जीवन में करके अनुपालन-
आर्य बनें हम तथा बनाएं-
आर्य जगति के सारे जन।
मानवता के पद चिन्हों पर,
चले निरन्तर वसुन्धरा।
मानवता के शुभ तत्त्वों से
पुष्प बने यह दिव्य धरा।
दानवता के तत्त्व सभी जो-
विस्तृत हैं भू पर अविराम;
क्षत-विक्षत हों इस धरती से,
बने धरित्री ललित ललाम।
ज्ञान-प्रदीप जले उर-उर में,
स्वर्ग सदृश हो सतत स्वदेश।
वैदिक धर्म ध्वजा लहराएं,
यही श्रावणी का सन्देश॥

राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, दिल्ली का चुनाव

पदाधिकारीगण: अध्यक्ष—श्री अनिल आर्य, कार्यकर्त्ता अध्यक्ष—श्री विश्वनाथ, वरिष्ठ उपाध्यक्ष—श्री अजय सहगल, उपाध्यक्ष—श्री महेन्द्र, महामन्त्री—श्री धर्मपाल आर्य, मन्त्री—बृजेश आर्य, उपमन्त्री—श्री राजेश "राज", कोषाध्यक्ष—श्री रणवीर सिंह, प्रधान शिक्षक—श्री विजय मोहन, क्षेत्र मन्त्री—श्री दुर्गेश आर्य, प्रचारमन्त्री—श्री नरेश पाल आर्य, बौद्धिकाध्यक्ष—श्री पं० खुशी राम, संगठन मन्त्री—श्री धर्मवीर, पुस्तकालय अध्यक्ष—श्री वीरेन्द्र आहूजा, कार्यालय मन्त्री—श्री रमेश डाबर, कार्यालय व्यवस्थापक—श्री पं० रक्षित देव आर्य, प्रेस सचिव—श्री चन्द्रमोहन आर्य।

गृह प्रवेश एवं नामकरण संस्कार

आर्यसमाज हांसी के पुरोहित श्री भरतलाल शास्त्री के यहाँ १९ जुलाई को आर्यजगत् के महोपदेशक पं० जगदीशचन्द्र जी वसु पानीपत वाले के ब्रह्मत्व में गृह प्रवेश एवं उनके बच्चे का नामकरण हुआ। इस शुभ अवसर पर स्वामी सुमेधानन्द जी, स्वामी मेधानन्द जी, पं० प्रभुदयाल जी प्रभाकर सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी ने वैदिक संस्कारों के महत्त्व को समझाया। पं० सुलतानसिंह जी भजनोपदेशक ने आशीर्वाद दिया। बाद में प्रीतिभोज का आयोजन किया गया।

—मन्त्री आर्यसमाज
हांसी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 रजि० न० P/RTK 49

सृष्टि संवत् १,९६,०८,५३,०८८



ओ३म् सर्वहितकारी विश्वमार्यम् रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री

सह-सम्पादक—डा० सुखबीर

वर्ष १४, अङ्क ४१ २१ सितम्बर १९८७ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

वेद में राष्ट्र रक्षा के उपाय

[प० धर्मदेव "मनीषी" व्याकरणाचार्य गुरुकुल कालवा]

[गतांक से आगे]

४. उग्र=उग्रता—

केवल ज्ञान ही पर्याप्त नही राष्ट्र रक्षा के लिये ज्ञान के अनुकूल अनुष्ठान भी होना आवश्यक है। यह बात ऋत के व्याख्यान प्रसङ्ग में बताई जा चुकी है। अब राष्ट्र रक्षा के लिये ऋतानुसार अनुष्ठान अर्थात् उग्रता धारण करने की प्रयोजनीयता बताने की चेष्टा करते हैं।

राष्ट्र रक्षकों को सम्बोधन करके वेद [ऋ० ७।१०९।६॥] कहता है—

सं वसवो वो नामधेयमुग्रंपश्या राष्ट्रभृतो ह्यक्षाः।
तेभ्यो व इन्दवो हविषा विधेम वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥

हे राष्ट्र रक्षा के लिये मरने मारने में तत्पर वीरो ! तुम्हारा नाम वसु है, तुम उग्रपश्य हो, राष्ट्रभृत हो, तुम सचमुच अक्ष हो। हे आनन्द विधायको, ऐसे तुम लोगों की हम त्याग, श्रद्धा से अर्चना करते हैं, तुम्हारे पुरुषार्थ से हम राष्ट्रवासी रमणीय पदार्थों, ऐश्वर्यों के स्वामी हो सकेंगे। ध्यान दीजिये इस मन्त्र में राष्ट्रभृतों=राष्ट्रपालकों को उग्रंपश्य कहा गया है। जो उग्र दिखाई दे, और जो उग्रता से देखे, उसे उग्रंपश्य कहते हैं। राष्ट्र रक्षा रूपी सत्कर्म में प्रवृत्त हुये मनुष्यों के लिये उग्रंपश्य कहना स्वाभाविक है। जो तेजस्वी नही है, उससे अन्य-जन भयभीत या आतङ्कित क्यों होने लगे। तेजोहीन को तो दूसरे दबोच लेंगे।

विजय यात्रा के लिये तैय्यार हुये सेनानी को संबोधन करके कहा जाता है—

बलविज्ञायः स्थविरः प्रवीरः सहस्वान् वाजी सहमान उग्रः।
अभिवीरो अभिषत्वा सहोजित् जैत्रमिन्द्र रथमातिष्ठ गोविदम् ॥
अ० १९।१३।२॥

हे इन्द्र=शूरवीर सेनानी ! बल का जानने वाला, स्थिर भाव वाला, परिपक्व विचारों वाला, उत्तम वीर, शक्ति सम्पन्न, वेगवान्, सहनशील, वीरों से घिरा हुआ, सत्य सामर्थ्य से भरपूर, सहनशीलता से विजय प्राप्त करने वाला उग्र होकर, भूमिप्राप्ति की अभिलाषा से जैत्र=विजयशील रथ पर चढ़।

ये समग्र गुण हों तब उग्रता लाभकारी है अन्यथा वह उग्रता=क्रूरता हो जायेगी। राज्य कर्म में वेद उग्रता को अनिवार्य मानता है। राजा को चुनाव करके प्रजा उससे कहती है—

त्वां विशो वृणतां राज्याय त्वामिमाः प्रदिशः पञ्च देवी।
वर्ष्मन् राष्ट्रस्य ककुदि श्रयस्व ततो न उग्रो विभजा वसूनि ॥
अ० ।३।४।२॥

इन सब दिशाओं विदिशाओं में रहने वाली व्यवहारकुशल मानवी प्रजायें राज्य कार्य के लिये तुझे चुनती हैं। हे नरश्रेष्ठ ! तू राष्ट्र के सिंहासन पर बैठ और उग्र होकर हमारी सम्पत्तियों का विभाजन कर। प्रजा स्वयं राजा से उग्र होने को कह रही है। अतः राजा का उग्र होना आवश्यक है। ऐसे राजा का पुरोहित ही निम्न-लिखित वचन कह सकता है—

सहमेषां राष्ट्रस्यामि समोजो वीर्यं बलम्।
वृश्चामि शत्रूणां बाहूननेन हविषाहम् ॥ अ० ३।१९।२॥

इनके राष्ट्र को मैं ही एक रूप देता हूं। इनके ओज, वीर्य, बल को मैं ही एकता प्रदान करता हूं, मैं अपने हीन शत्रुओं की भुजा को काटता हूं। ऐसे पुरोहित का यजमान क्षत्रिय ही कह सकता है कि—

अजितोऽक्षतोऽध्यष्ठां पृथिवीमहम् ॥अ० १२।१।११॥

मैं किसी प्रकार की हानि उठाये बिना, क्षत हुये बिना राष्ट्र का अधिष्ठाता बना हूं। ऐसे नेता तथा अनुयायी ही कह सकते हैं कि—

यां रक्षन्त्यस्वप्ना विश्वदानीं देवा भूमिं पृथिवीमप्रमादम्।
सा नो मधु प्रियं दुहामथो उक्षतु वर्चसा ॥ अ० १२।१।७॥

जिस विशाल राष्ट्र की सदा जागरूक विजीगिषु महामनुष्य सदा सावधानता से रक्षा करते हैं, वह राष्ट्र हमें मधुर और अभीष्ट पदार्थ देता है तथा तेजोयुक्त करता है। इस प्रकार के जागरूक विजुगीषुओं द्वारा रक्षित राष्ट्र का नेता अपने राष्ट्र को सम्बोधन करके कहता है—

यो नो द्वेषत् पृथिवी यः पृतन्याद्
योऽभिदासान्मनसा यो वधेन
तं नो भूमे रन्धय पूर्व कृत्वरि ॥

हे राष्ट्र ! जो हम से द्वेष करे, हम पर चढाई करे, जो मन से हमें दास बनाने की सोचे अथवा हथियारों के द्वारा दास बनाना चाहे, हे पहले से उपाय करने वाले राष्ट्र कर्मियो ! उसको नष्ट कर दो।

इस प्रकार वेद उग्रता का वर्णन करता है।

५. दीक्षा—

अथर्ववेद १२।५।३ में दीक्षा को रक्षा का साधन बताया गया है—

स्वधया परिहिता श्रद्धा पर्य्यूढा दीक्षया।
गुप्ता यज्ञे प्रनिष्ठिता लोको निधनम् ॥

स्वधा श्रद्धा से धारित, श्रद्धा से परिवाहित, दीक्षा से सुरक्षित, तथा यज्ञ में प्रतिष्ठित होती है तब लोक निधन होता है।

इस मन्त्र का देवता प्रतिपाद्य 'ब्रह्मगवि'=राष्ट्रवाणी है। जनवाक् की अपनी शक्ति होती है। वह परसहाय निरपेक्ष होती है अतः वेद उसे स्वधा अपनी शक्ति से धारित कहता है। जब जनमत सचमुच इतना प्रबल हो कि उसे कार्योचित होने से दूसरे की सहायता की अपेक्षा न रहे तब समझ लो कि श्रद्धा=सत्य के धारण का सामर्थ्य अर्थात् अपने वैध अधिकार प्राप्त करने का बल उसमें आ गया है। अतएव अब वह अपने उस लक्ष्य के लिये अपने आपको अर्पण करने में संवद्ध हो गया है। जहां जनता में अपने वैध एवं जन्मसिद्ध अधिकार की प्राप्ति के लिये समर्पण—तन, मन, धन, जन देशार्पण करने का भाव जाग गया वहां वह अधिकार स्वतः ही सुरक्षित हो गया। (शेष पृष्ठ ७ पर)

'ओ३म्'

भयंकर सूखा अकाल पड़ने के कारण.......................

हरयाणा की प्रसिद्ध नस्ल गाय और भैंस को बचाइये

दानी महानुभावों से अपील

मान्यवर महोदय,

यह तो आपको पता ही है कि सारे ही हरयाणा प्रान्त में भयंकर सूखा पड़ रहा है जिसके कारण सारी फसलें सूख गई या बोई नहीं गईं। जिससे पशुओं के चारे व दाने का बहुत ही अभाव हो गया है। इस सूखे का सबसे अधिक प्रभाव यहां के पशुओं पर पड़ रहा है। चारा व पानी के अभाव में पशु कमजोर होते जा रहे हैं। हरयाणा सदैव बहुधान्यक व गवाढ्य प्रदेश रहा है। इसलिए यहां पर पशु पालक उन्नत नस्ल के पशुओं को पालते आए हैं।

किन्तु आज भयंकर सूखा अकाल पड़ने के कारण मुर्रा भैंस, झोटे की नस्ल व हरयाणवी नस्ल की गायों व साण्डों को चारा व दाना-पानी का अभाव होने के कारण इनकी नस्ल को खतरा पैदा हो गया है।

इन्हें बचाने के लिए सभी दानी महानुभावों का परम कर्त्तव्य है। साण्डों व झोटों के लिए, जोकि सबके साझ के पशु माने जाते हैं, उनके चारा दाना के लिए अधिक से अधिक सहायता पहुंचाकर इनकी उन्नत नस्ल को बचावेंगे। वर्षा न होने के कारण खेतों में हरा घास न होने से ये दोनों ही नस्ल ग्राम की गलियों में भूखे ही मरते फिर रहे हैं। वर्षा होने पर तो ये स्वतन्त्र रूप से किसानों के खेतों में जाकर अपना पेट भर लेते थे। आज वे साधन भी इन बेचारे पशुओं को प्राप्त नहीं रहे।

अतः इस दुर्दशा को देखते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने इन उन्नत नस्ल के साण्डों व झोटों के बचाव व राहत के लिए एक समिति की नियुक्ति की है जो ग्रामों के सरपंचों व पंचों तथा सभी वर्ग के दानी महानुभावों से इनकी रक्षा के लिए तन-मन-धन से दान देने की अपील करती है। स्वयं भी इस समिति ने यह संकल्प किया है कि वह भी सभा की ओर से इन सर्वश्रेष्ठ उन्नत नस्ल के लिए चारा-दाना व पानी का प्रबन्ध करने का प्रयत्न करेगी।

हम धनी, मानी महानुभावों से अपील करते हैं कि वे भी इन पशुओं को बचाने के लिए खुले हाथ से चारा-दाना तथा धन का दान देकर कृतार्थ करेंगे। गौ आदि उपकारी पशुओं की रक्षा का व्रत निभायेंगे।

आपके सेवक.........

स्वामी ओमानन्द सरस्वती	प्रो. शेरसिंह	वेदव्रत शास्त्री	कालीप्रसाद	रघुवीरसिंह
प्रधान परोपकारिणी सभा	प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष	वेदप्रचाराधिष्ठाता
अजमेर	आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक। फोन ४८१२			

हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन

१. आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने सूखा पीड़ित सहायता करने का कार्यक्रम बनाया है। इसकी अपील सर्वहितकारी में प्रकाशित हो रही है। आर्यसमाजों तथा दानियों के सहयोग से ही इस समाज सेवा के कार्य में सफलता मिल सकती है। अतः आर्यसमाज अपना-अपना योगदान शीघ्र भेजें।

२. सितम्बर मास के अन्त तक ग्राम पंचायतों से शराबबन्दी के प्रस्ताव हरयाणा सरकार के पास रजिस्ट्री पावती द्वारा भेजने के लिए निवेदन किया था। सितम्बर मास व्यतीत होने वाला है। अतः आर्य-समाजों के कार्यकर्त्ताओं को चाहिए कि वे अपने निकट के ग्रामों की पंचायतों को प्रेरणा करके शराबबन्दी प्रस्ताव करवाकर ३० सितम्बर से पूर्व रजिस्ट्री पावती द्वारा हरयाणा सरकार को अवश्य भिजवा देवें ताकि उन ग्रामों में आगामी वर्ष शराब के ठेके न उठ सकें।

३. सभा का वार्षिक चुनाव शीघ्र होने वाला है। सभा की ओर से सभी सम्बन्धित आर्यसमाजों के पास डाक अथवा सभा के उपदेशकों द्वारा प्रतिनिधि फार्म भेजे जा चुके हैं। परन्तु अधिकांश आर्यसमाजों ने अभी तक इस ओर ध्यान नहीं दिया। सभा कार्यालय में अभी तक केवल २६ आर्यसमाजों के फार्म प्राप्त हुए हैं। आर्यसमाजों के अधिकारियों से अनेक बार अनुरोध किया गया है कि वे आर्यसमाज के नियम उपनियमों के अनुसार आर्य सभासदों से उनकी मासिक अथवा वार्षिक आय का शतांश (१००वा भाग) चन्दा रूप में प्राप्त करें। परन्तु आर्य-समाज आर्यसभासदों से जो कि बड़ी-बड़ी नौकरियों पर हैं, अथवा व्यापारी हैं जिनकी मासिक आय किसी भी रूप से १५००/- से कम नहीं है उनसे भी १) मासिक चन्दा प्राप्त करके असत्य का व्यवहार करते हैं। वर्तमान मँहगाई के युग में किसी की भी मासिक आय १२०/- मासिक नहीं हो सकती। अतः मेरा पुनः अनुरोध है कि जीवन की पवित्रता को बनाये रखने के लिए आर्य सभासदों से उनकी वास्तविक आय का शतांश प्राप्त करने का पूरा प्रयत्न करें। कम से कम जिन्हें सभा के लिए प्रतिनिधि चुनकर भेज रहे हैं उनसे तो शतांश अवश्य प्राप्त करें। इस प्रकार जहां आर्यसमाजों की आय बढ़ेगी वहां सभा को भी दशांश अधिक मिल सकेगा। प्रतिनिधियों का चुनाव नियमानुसार साधारण सभा में ही करें। अन्तरंग सभा को प्रतिनिधि चुनने का अधिकार नहीं है।

सभी आर्यसमाज अपने प्रदेश में आर्यसमाज का भविष्य उज्ज्वल बनाने के लिए लगनशील, योग्य तथा प्रभावशाली प्रतिनिधि चुनकर भेजें ताकि उनके योगदान से सभा उन्नत हो सके।

४ जिन आर्यसमाजों ने अभी तक अपने वार्षिक उत्सव अथवा वेदप्रचार का कार्यक्रम नहीं बनाया है, उनसे निवेदन है कि वे अक्तूबर मास में प्रचार की तिथियां निश्चित करके शीघ्र सभा को पत्र लिखकर सूचित करें ताकि सभा के उपदेशक तथा भजनोपदेशकों का प्रबन्ध करने में सुविधा हो सके। स्मरण रखें कि आर्यसमाज का मुख्य कार्य वेदप्रचार करना है। वेद के प्रचार के अभाव में शहरों तथा ग्रामों में मतमतान्तरों का प्रसार हो रहा है और कुरीतियां फैल रही हैं।

साप्ताहिक अथवा पाक्षिक सत्सगों का भी आयोजन करके उनमें अधिक से अधिक नर-नारियों को आमन्त्रित करके "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" वेद के आदेश का पालन करें।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

तपोवन में बृहद् यज्ञ एवं साधना शिविर

देहरादून, १० सितम्बर। वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून का अर्द्धवार्षिक बृहद् यज्ञ एवं साधना-शिविर ५ अक्तूबर से ११ अक्तूबर १९८७ तक आयोजित किया जाएगा।

सप्ताह भर आचार्य शिवाकान्त उपाध्याय जी के वेद-प्रवचन होंगे यजुर्वेद यज्ञ की ब्रह्मा डा० श्रीमती ब्रह्मवती नारंग विद्यालंकृता एम० ए०, पी-एच०डी० होंगी। पूरा आयोजन महात्मा दयानन्द जी वानप्रस्थ के संरक्षकत्व में होगा।

उल्लेखनीय है कि अप्रैल तथा अक्तूबर में प्रतिवर्ष होनेवाले, तपोवन के इन आयोजनों में दूरस्थ प्रदेशों से नर-नारी बड़ी संख्या में आया करते हैं। —देवदत्त बाली मंत्री, वैदिक साधन आश्रम

सूर्यग्रहण मेला कुरुक्षेत्र पर महायज्ञ तथा वेदप्रचार

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी सूर्यग्रहण मेला के अवसर पर आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र (महर्षि दयानन्द मार्किट, वैदिक धाम) में महायज्ञ तथा वेदप्रचार का आयोजन किया जा रहा है। दिनांक १६-९-८७ से २५-९-८७ तक प्रतिदिन प्रातः ६ से ८ तथा सायं ४ से ६ तक कुरुक्षेत्र के आचार्य श्री देवव्रत जी की देख-रेख में यज्ञ तथा वेदप्रवचन का कार्यक्रम होगा तथा २१ से २४ सितम्बर तक विशाल आर्य सम्मेलन का भी आयोजन किया जा रहा है। जिसमें अनेक विद्वान्, संन्यासी, महात्मा सम्मिलित हो रहे हैं। तथा सभा के महोपदेशक और भजनोपदेशक भी प्रचार रहे हैं। इस सम्मेलन में समाज में फैली हुई कुरीतियों विशेषकर शराब, मांस आदि के विरुद्ध प्रचार किया जायेगा। इस अवसर पर सभा की ओर से ऋषि लंगर का भी प्रबन्ध किया जा रहा है। प्रबन्ध व्यवस्था के लिये आर्य वीरदल का पूर्ण सहयोग उपलब्ध होगा।

सभी धर्मप्रेमी सज्जनों से प्रार्थना है कि इस पुण्य कार्य में तन, मन, धन से सहयोग प्रदान कर यश और पुण्य के भागी बनें।

(प्रो० शेरसिंह)	(वेदव्रत शास्त्री)	(रघुवीरसिंह)
प्रधान	मन्त्री	वेदप्रचाराधिष्ठाता

संस्कृत भाषा सुरक्षार्थ प्रस्ताव

आज दिनांक ६ सितम्बर १९८७ सितम्बर को वेद प्रचार मण्डल पाकस्मा स्थान बलियाणा जिला रोहतक में आयोजित यह आर्य सम्मेलन भारत सरकार की नई शिक्षा नीति में संस्कृत भाषा के प्रति घोर उपेक्षा प्रवृत्ति का घोर-विरोध करता है, जिसमें माध्यमिक शिक्षा-स्तर तक संस्कृत भाषा को अपने विद्यालयों से पूर्णतया-हटाने का निश्चय किया गया है। इस के साथ ही त्रिभाषा फार्मूला को बलात् लादने का निश्चय किया गया है।

जिस संस्कृत भाषा को विदेशी अंग्रेज शासक भी अपनी शिक्षा नीति में विशेष स्थान देता था उसे आज स्वतन्त्र भारत की सरकार ने ही शिक्षा के क्षेत्र से सर्वथा पृथक् कर दिया गया है।

संस्कृत के नष्ट होने से भारतीय संस्कृति भी नष्ट हो जाएगी। संस्कृत साहित्य नष्ट हो जाएगा वेद-उपनिषद्-गीता की संस्कृति नष्ट हो जाएगी। यह एक महान् षड्यन्त्र है, आर्यसमाज इस षड्यन्त्र को विफल करने का पूरा प्रयत्न करेगा। इसके लिए जन जागृति करेगा। यदि आवश्यकता हुई तो हिन्दी सत्याग्रह की भांति ही सत्याग्रह भी करेगा। इसके साथ ही हरयाणा सरकार तथा केन्द्रीय सरकार से भी यह सम्मेलन मांग करता है कि वह अपनी नई शिक्षा नीति मे पुनः विचार करके संस्कृत को उस का उचित स्थान दिलाए तथा अंग्रेजी की अनिवार्यता को समाप्त किया जाए।

यह सम्मेलन अपना यह दृढ़ निश्चय प्रकट करता है कि आर्यसमाज इसके लिए अपना अपना तन-मन-धन भी समर्पित करने में कोई कसर न छोड़ेगा।

"महाभारत की युद्ध पद्धति और उसमें प्रयोग किये गये अस्त्र-शस्त्र"

श्री रणवीर शास्त्री, एम० ए०, विद्याभास्कर विद्यावाचस्पति द्वारा—आर्यसमाज समालखा मण्डी (करनाल)

[गतांक से आगे]

दो प्रकार से यह युद्ध लडा गया—एक द्वन्द्व-युद्ध, दूसरा संकुल-युद्ध। द्वन्द्व युद्ध में एक वीर का सामना एक वीर ने किया तथा सकुल में सेनाएँ लडी। महाभारत में युद्ध का वृत्तान्त पढने से ज्ञात होता है कि द्वन्द्व और सकुल दोनों प्रकार के युद्ध साथ-साथ चलते रहे। मुख्य योद्धा एक ही रहते हुये भी उनको सहायता को अपने-अपने पक्षों से अनेक वीर आ उपस्थित होते रहे। भीष्म से लड तो शिखण्डी रहा था परन्तु उसे सब प्रकार की सहायता अर्जुन दे रहा था। अभिमन्यु पर छः महारथियों का वार अवैध इसलिये माना गया कि उस समय वह अकेला तथा नि:शस्त्र था। इसी प्रकार जरासन्ध और भीम के मध्य द्वन्द्व युद्ध हुआ तथा महाभारत के युद्ध की समाप्ति भी दुर्योधन और भीम के मध्य हुये द्वन्द्व युद्ध से ही हुई।

इस युद्ध की मुख्य सामग्री हाथी, घोडे, रथ और बाण तथा धनुष थे। हाथियों की विद्या गजसूत्र का अभ्यास क्षत्रिय लोग खूब कर चुके थे। 'प्राग्ज्योतिष का भगदत्त' और 'अवन्ति' के 'विन्द और अनुविन्द' हाथियों का बहुत बडा समूह अपने साथ लाये थे। मनुष्य की तरह हाथियों को भी कवच पहनाये गये जिन्हें पहने हाथी लोहे के पहाड से प्रतीत हो रहे थे। परन्तु भीमसेन ने पैदल और बिना शस्त्रों के ही इन हाथियों को कई बार व्याकुल कर युद्ध से खदेडा भी। चार घोडे जुते दो पहियों वाले रथ में योद्धा और उसके आगे सारथी बैठता था। श्रीकृष्ण और शल्य उस सारथि-विद्या के प्रवीण थे तथा सात्यकि और दुःशासन ने भी संकट के समय में इस विद्या के जौहर दिखाये थे। रथ को घुमाकर, उसे तेज चक्कर देकर तथा नीचे ऊपर उतार-चढाव देकर सारथि रथी को बचाता भी था और युद्ध में उसकी सहायता भी करता था। रथी थोडेसे शस्त्र तो इस रथ में ही रख लेता था तथा शस्त्रों का बडा भण्डार बडे-बडे रथों में उसके साथ रहता था। कर्ण जिस दिन कौरव सेना का सेनापतित्व कर रहा था उस दिन अश्वत्थामा शस्त्रास्त्र के सात रथ अपने साथ ले गया था। द्रोणपर्व में वर्णित भीम के पुत्र घटोत्कच के रथ का वर्णन इस प्रकार मिलता है—फौलाद का अत्यन्त घोर, रीछ के चमड़े से मढा हुआ, बडा ३० नल्व लम्बा (४०० हाथ का एक नल्व) आठ चक्रों वाला विशाल रथ था जिसका झण्डा ऊपर उठा हुआ था तथा झण्डे पर बड़े गिद्ध का चित्र था। इस प्रकार द्रोण पर्व में राक्षस अलम्बुष के रथ का वृत्तान्त भी मिलता है। रथ के चक्र, ईषा, युग, अक्ष, कूबर तथा अनुकर्ष आदि भागों का वर्णन भी वहीं पर हुआ है।

१८ दिन तक लड़े गये विश्व के इस सर्वाधिक घमासान महाभारत के युद्ध में प्रयुक्त शस्त्रास्त्रों का वर्णन भीष्म तथा द्रोण पर्व में विशेष रूप से किया है। यहां वर्णित क्षेपणी (गोफिया), गदा शक्ति, प्रास, असि, ऋष्टि, तोमर, परिघ, भिन्दीपाल, मुशल, कर्णी, नालीक, नाराच, शर, क्षुरप्र, शिलीमुख, चक्र, पट्टिश, कार्मुक, खड्ग, चाप, शतघ्नी, परश्वध, मुद्गर, कम्पन, वत्सदन्त, भुशुण्डी, अशनि—वज्र, लगुड, निस्त्रिंश, शूल, क्षुर, विशिख, कुन्त, भल्ल, अञ्जलिक, विपाट, पाषाण, स्थूण आदि शस्त्र तथा ब्रह्मास्त्र, ऐन्द्रास्त्र, सौरास्त्र, त्वाष्ट्रास्त्र, आग्नेयास्त्र, नागास्त्र, सौपर्णास्त्र, नारायणास्त्र तथा ब्रह्मशिरा आदि अस्त्रों का खुलकर प्रयोग इस युद्ध में हुआ। यही वे शस्त्रास्त्र थे जिनके प्रयोग द्वारा १८ दिन के इस युद्ध में ७० लाख सेना स्वाहा हो गई। जबकि विगत महायुद्धों के वर्षों तक चलने पर भी इतनी प्राणहानि नहीं हुई। इन्हीं शस्त्रास्त्रों के बल पर ही तो १७५ वर्षीय भीष्म पितामह अकेले प्रतिदिन दस हजार योद्धाओं को युद्ध में ढेर कर सायंकाल की संध्या करते थे तथा द्रोणाचार्य, कृपाचार्य और अश्वत्थामा ने भी तो इन्हीं के बल पर क्रमशः ७५ हजार, ५० हजार और ४० हजार योद्धाओं के वध का दम भरा था तथा कर्ण ने भी ५ दिन में ५ लाख योद्धाओं को यमराज का अतिथि बनाने का दावा किया था।

योद्धा स्वरक्षार्थ कवच पहनते थे जो लोहे तथा कांसे के होते थे। हाथ में ढाल रखते थे, सिर पर शिरस्त्राण, हथेली पर तलत्र और अगुलियों पर अंगुलित्र बांधते थे। ये अगुलित्र (दस्ताने) गोधा चर्ममय अर्थात् गोह के चमड़े के बने होते थे ऐसा महाभारत में कहा गया है। घोडों की छाती पर उरश्छद, कमर पर कक्षा, पूंछ पर पुच्छत्र, गले में योक्त्र तथा किसी स्थल पर आपीड रहते थे। हाथो के ऊपर परिस्तोम अर्थात् झूल होती थी जो चमडे की अथवा कपडे की होती थी। अकुशों में मणियां जड़ी रहती थीं तथा गले में घण्टे बन्धे रहते थे।

योद्धा लोग उक्त अस्त्र तथा शस्त्रों के प्रयोग से पूर्व तथा इनको प्रयोग करते समय प्रेरक ध्वनियों से खूब लाभ उठाते थे। प्रत्येक प्रमुख योद्धा का अपना शख होता था जिसकी ध्वनि शत्रु के प्रति उसका आह्वान थी। दुंदुभि तथा भेरी योद्धाओं को लडाई के लिये उकसाती थी। मृदंग, गोमुख पणव और आनक नाम के वाद्यों का भी इस युद्ध में प्रयोग किया गया। जयद्रथ वध के दिन अर्जुन को सहायतार्थ भेजे जाने वाले सात्यकि को कन्याओं से कराई गई पूजा का रक्षा बन्धन से तालमेल बैठाता सा वर्णन भी महाभारत में आया है।

यों तो युद्ध खुले मैदान में हुआ किन्तु कई युद्ध दुर्ग-युद्ध भी हुये। युद्ध के प्रसग में वर्णित पुर नाम के नगर ये दुर्ग ही प्रतीत होते हैं। झण्डे वाली, फाटकों वाली, योद्धाओं वाली, बुर्जों वाली, मन्त्रों वाली, सुरगों वाली, लोहे की कीलों वाली, गलियों वाली, अट्टालिकाओं वाली, पुरद्वारों वाली, मोर्चों वाली, ज्वालाओं तथा अलातों वाली, भेरियों, पणवों और आनकों वाली, तोमरों, अंकुशों, शतघ्नियों, भुशुण्डियों, पत्थर के गोलों तथा लोह-चर्मों वाली, तथा आग और पिघले हुये गुड से युक्त शिखरों वाली महाभारत की द्वारवती भी दुर्ग युद्ध की ही झलक दे रही है। वन पर्व तथा शान्ति पर्व में भीष्म का यह कथन कि दुर्ग में लोहे, करण्ठ भुम, अगार, दारु, शृंग, अस्थि, वेणु, मज्जा, स्नेह, वसा, क्षौद्र, औषध, शण, सर्जरस, धान्य, शस्त्र, क्षार, चर्म, स्नायु, मुञ्ज, बल्वज, दंध्वन आदि के भण्डार रखे जाने चाहिये तथा तालाब और बावलियां रोक दी जानी चाहिये, से भी उस समय की युद्ध शैली पर पर्याप्त प्रकाश पडता है।

युद्ध के दिनों को दोनों पक्षों की सेनाओं की सूची देखने से यह स्पष्ट संकेत भी मिलता है कि तत्कालीन कुछ योद्धा जातियां दोनों पक्षों में बटी हुई थी। जैसे दशार्ण और शैव्य युद्ध के प्रथम दिन ही पाण्डव पक्ष में भी दृष्टिगोचर होते हैं तथा कौरव पक्ष में भी। नारायण जिन्हें गोपाल भी कहा जाता था, पाण्डवों की ओर से भी लड रहे थे तथा कौरवों की ओर से भी। वृष्णियों की सहानुभूति भी दोनों ही ओर थी। इसके कार्यों की व्याख्या में न जाकर मुझे यही निवेदन करना है कि महाभारत का कर्ण पर्व इसको साक्षी उपस्थित कर रहा है।

अपने विषय को समेटते हुये अन्त में मुझे इतना ही कहना है कि मनुष्य का मानस धर्म की वृत्ति के लिये बना है किन्तु दुर्भाग्य है मानव की दुर्भावनाएँ इन धार्मिक वृत्तियों को सहती नहीं हैं। महाभारत का यह विनाशकारी तथा प्रलयंकर युद्ध तो आज से कोई लगभग सवा पाँच हजार वर्ष पूर्व हुआ जबकि इसके कारण इससे भी लगभग एक हजार वर्ष पूर्व उत्पन्न होने आरम्भ हो चुके थे तथा इसकी मार के दर्द इतनी लम्बी अवधि बीत जाने पर भी आज तक देश यद्यपि भूला नहीं है।

वेदकथा कार्यक्रम विधिवत् सम्पन्न

३ अगस्त से ९ अगस्त १९८७ तक सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी के अथक प्रयास व लग्न से आर्यसमाज नलवा की ओर से वेदकथा का कार्यक्रम विधिवत् सम्पन्न हुआ। सर्व श्री स्वामी चन्द्र वेश जी वेदाचार्य द्वारा वृष्टि यज्ञ किया गया तथा वेद के आधार पर राष्ट्ररक्षा, सुखी गृहस्थ, देश में बढ़ रहे अन्याय, अत्याचार, गोरक्षा, राजा कैसा हो, हमारा क्या कर्तव्य है। नारी शिक्षा कैसी हो, आत्मा क्या है, परमात्मा क्या है, पत्थरपूजा व्यर्थ, पूजा किसकी करनी चाहिये, समाज में फैली बुराइयां, शराब, मांस अण्डे आदि से होनेवाली हानि, दहेजबन्दी तथा जीवो और जीने दो आदि विषयों पर विस्तार में विचार रखे।

इसके अतिरिक्त स्वामी सर्वदानन्द जी, स्वामी सुमेधानन्द जी, स्वामी मस्तानानन्द जी, प्रो० ओमकुमार आर्य आदि विद्वानों ने भी समय-समय पर पहुंचकर अपने विचार रखे। स्वामी देवानन्द जी, पं० चिरंजीलाल जी तथा श्री खेमसिंह क्रान्तिकारी के बहुत ही रोचक प्रेरणाप्रद भजन हुवे। ईश्वर कृपा से ७ अगस्त को सांयकाल हल्की वर्षा भी हुई। लोगों की यज्ञ के प्रति श्रद्धा बढ़ी। ९ अगस्त को पूर्णिमा एवं रक्षा बन्धन के दिन आर्यसमाज मन्दिर नलवा में निर्मित यज्ञशाला जो सीताराम जिन्दल ने बनवाई थी, का उद्घाटन पूज्यपाद स्वामी चन्द्रवेश जी के करकमलों द्वारा किया गया। यज्ञ पर काफी लोगों ने जनेऊ बदले तथा डा० कृष्ण कुमार ने शराब व बीड़ी न पीने का व्रत लिया तथा जनेऊ धारण किये। इस कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु आर्यसमाज नलवा के प्रधान पुष्करलाल आर्य का आर्थिक सहयोग विशेष रहा। उपरोक्त कार्यक्रम में नलवा के अलावा निकट के ग्रामों से लोगों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। इस सारे कार्य-क्रम का संचालन एवं संयोजन क्रान्तिकारी जी ने बड़ी सूझबूझ व कुशलतापूर्वक किया। कृष्ण कुमार भाऊका व प० रामेश्वर जी ने भोजन व्यवस्था की, पं० विश्वनाथ आर्य, प० टेकचन्द जी आदि का विशेष सहयोग रहा। कार्य-क्रम कुल मिलाकर सराहनीय व सफल रहा।

मन्त्री आर्यसमाज नलवा

१२ शराबी अध्यापक निलंबित

हिसार, १५ सितम्बर (निस)। हरयाणा सरकार ने मदन हेड़ी गांव के हाई स्कूल के १२ अध्यापकों को निलम्बित कर दिया है।

इन अध्यापकों पर स्कूल के समय में ताश खेलने व शराब पीने का आरोप था। गांव की पंचायत और स्कूल के अध्यापकों ने गांव में दो गुट बना लिए थे और उनमें काफी समय से खींचातान चल रही थी।

पंचायत का आरोप है कि अध्यापकों ने स्कूल का सत्यानाश कर दिया है और परीक्षा परिणाम निराशाजनक है। दूसरी ओर हरयाणा राजकीय अध्यापक संघ के महासचिव श्री राजेन्द्रपाल मदान ने सरपंच पर मुख्याध्यापिका एव अन्य अध्यापिकाओं के साथ दुर्व्यवहार करने का आरोप लगाया है। अध्यापकों के नेता का कहना है कि जब अध्यापकों ने सरपंच की ज्यादतियों का विरोध किया तो उसने अपने राजनीतिक प्रभाव का लाभ उठाते हुए निर्दोष अध्यापकों को निलम्बित करवा दिया।

शराब बन्दी लोकतंत्र और युग की मांग

किसी राष्ट्र का मिट जाना इतना खतरनाक नहीं जितना किसी राष्ट्र का पथभ्रष्ट होकर बिगड़ जाना, अथवा व्यसनी दुराचारी बन जाता। एक बिगड़ी हुई कौम मानव-सभ्यता के विकास में बाधा बन सकती है। व्यसन किसी भी राष्ट्र को पतनोन्मुख कर सकते हैं। यह मनुष्य के साधु स्वभाव पर न केवल घृणित कलक है, बल्कि ये मनुष्य की मनुष्यता और राष्ट्र की आत्मा को मूर्छित बनाकर विषैले घुन की भांति खोखला कर देते हैं।

अब प्रश्न उठता है कि शराब बन्दी लोकतांत्रिक है या नहीं? इसका जवाब हमारी तरफ से जोरदार शब्दो में 'हाँ' देना चाहिए क्योंकि हिन्दू धर्म और इस्लाम जो भारत की ज्यादातर आबादी के धर्म हैं, शराब का निषेध करते हैं। हमे सारे भारत मे शराबबन्दी को बिगुल बजानी ही होगी। इसलिए ही नहीं की गांधी जी इस विषय में अत्यन्त आतुर थे कि मदिरा हमारे देश में क्यों फैले? हमारे संविधान ने जो निर्देशन दिया वह मखौल करने के लिए नहीं बल्कि कुछ करने के लिए कर्त्तव्य, कर्म हमारा सबका हो जाता है कि—

आ गया है कर्मयुग कुछ कर्म करना सीख लो।
मौत के का नाम मत लो पहले मरना सीख लो॥

गांधी जी ने एक बार कहा था कि—"अगर मुझे एक घण्टे के लिए भारत का तानाशाह बना दिया जाए तो पहला काम मैं यह करूंगा कि तमाम शराबखानो को बिना मुआवजा दिए ही बन्द करदूं।"

यदि आप चाहते हैं कि हमारा महान् देश हो तो हर प्रकार के व्यसनो को आप अलविदा दीजिए।

गुरेन्द्रसिह साहरण
नजदीक—देवी भवन, सातरोड खुर्द (हिसार)

करतारपुर में महात्मा प्रभु आश्रित जन्म शताब्दी

गुरु विराजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट तथा श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महा विद्यालय करतारपुर इस बार अपना वार्षिकोत्सव "महात्मा प्रभु आश्रित जी की जन्म शताब्दी" के रूप मे २० से २७ सितम्बर ८७ तक सोल्लास मना रहा है। जिसके अध्यक्ष महात्मा दयानन्द जी वानप्रस्थी को भी आमन्त्रित किया गया है।

विस्तृत कार्यक्रम शीघ्र ही प्रकाशित किया जाएगा।

भोजन एवं आवास का प्रबन्ध ट्रस्ट को ओर से होगा। कृपया बिस्तर साथ अवश्य लाए।

श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय
करतारपुर, जिला जालन्धर (पंजाब)

ग्राम मोड़ी (भिवानी) मे वैदिक धर्म प्रचार

गतमास ग्राम मोड़ी (भिवानी) में "आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा" की ओर से ब्रह्मचारी संजयदेव शास्त्री तथा सभा के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री स्वामी देवानन्द सरस्वती ने वेदप्रचार किया। पं० शीशपाल जी ने मधुर भजन गाये। शास्त्री जी का आर्यसमाज विषय पर प्रभावशाली व्याख्यान हुआ। स्वामी देवानन्द जी का भजनों का कार्यक्रम बहुत अच्छा रहा जिसका यहां की जनता पर विशेष प्रभाव पड़ा। उल्लेखनीय है कि यहां लगभग २०-२५ वर्ष के बाद आर्यसमाज का प्रचार हुआ है। काफी शोर गुल के पश्चात् सबने शान्ति से प्रचार सुना।

सरपंच रामकिशन, ग्राम पंचायत मोड़ी

आर्यसमाज रादौर जि० कुरुक्षेत्र का चुनाव

प्रधान—श्री जोगेन्द्र कुमार रावल, उपप्रधान-श्री महेन्द्रपाल आर्य, श्री रमेश कुमार, मन्त्री—श्री सत्यकाम आय, उपमन्त्री-श्री श्यामलाल, कोषाध्यक्ष श्रीमती विमला बसल, पुस्तकाध्यक्ष—श्रीमती शान्ता बंसल,

आर्यसमाज अटायल जि० रोहतक का चुनाव

प्रधान- श्री पं० दीपचन्द, मन्त्री—श्री बलजीतसिंह, कोषाध्यक्ष—श्री टेकराम, पुस्तकाध्यक्ष—श्री कर्मसिंह आर्य।

जिला हिसार के अनेक ग्रामों में वृष्टि यज्ञ सम्पन्न

गत दिनों ग्राम कंवारी, धमाना बालावास मे वर्षा न होने के कारण भयंकर अकाल की स्थिति को मध्य नजर रखते हुवे इन्द्र देवता को रिझाने के लिये सामूहिक गांव की तरफ से जोहड़ पर वृष्टि यज्ञ किए गये तथा प्रीतिभोज का भी आयोजन किया गया। दिनांक ६-८-८७ को ग्राम नलवा में भी जोहड़ पर सामूहिक गांव की तरफ से कई किलो घी का वृष्टि यज्ञ स्वामी चन्द्रवेश जी द्वारा किया। गया इसी प्रकार अन्य कई गांव में भी यज्ञ का कार्य-क्रम जारी है। लेकिन इन्द्र देवता अभी तक रिझे नहीं हैं। वर्षा की कमी के कारण चारों तरफ त्राहि-२ मची हुई है। इस के साथ-२ लोग पूरी आशा लगाये हुवे हैं कि प्रभु दयालु है। देर सवेर इन प्राणियों की पुकार सुनेगा।

अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी
सभा उपदेशक

वर्षा यज्ञ का आयोजन

श्री स्वामी सदानन्द जी की अध्यक्षता में खिजराबाद पूर्वी जिला अम्बाला में एक विशाल यज्ञ वर्षा के निमित्त कराया गया। लाला सुमेर चन्द जी गुप्ता के महान् प्रयत्नों से यह यज्ञ किया गया। जिसमें वैदिक साधन आश्रम के ब्रह्मचारी तथा रामस्वरूप शास्त्री ने वेदपाठी के रूप में शुद्ध वेद मन्त्रों का गान किया।

पूर्णाहुति से पहले ही बहुत अच्छी वर्षा हुई जिसको लोगों ने बहुत अच्छा समझा। पूर्णाहुति के समय रुवेलसिंह जी के भजन भी हुए।

४-८-८७ को यज्ञ आरम्भ करते हीं कुछ बूंदें गिरने लगीं। ५-८-८७ को आधा घण्टा अच्छी वर्षा हुई।

पूर्णाहुति के समय लोगों की बहुत बड़ी भीड़ थी। इसके लिए १५ किलो देसी घी तथा ४० किलो हवन सामग्री उपयोग में लाई गई।

—रामस्वरुप शास्त्री
वैदिक साधनाश्रम युमना नगर (अम्बाला)

आर्यसमाज नाहरी जि० सोनीपत का चुनाव

प्रधान—श्री उमरावसिह आर्य, उपप्रधान—श्री मौजीराम आर्य, श्री रघुवीरसिंह आर्य, मन्त्री—श्री रामस्वरूप आर्य, उपमन्त्री—श्री जिलेसिंह आर्य, श्री जगदीशचन्द्र आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री नीतिदेव आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—श्री रामस्वरूप आर्य।

[पृष्ठ १ का शेष]

दीक्षा का अर्थ है मुण्डवाना, यज्ञ करना कराना, उपनयन, नियम, व्रत तथा आदेश।

प्रेश रक्षा प्रकरण में इन सभी अर्थों का उपयोग होते हुये हम केवल पहले अर्थ को प्रधानता देते हैं। मुण्डन की क्रिया पर ध्यान दीजिये तो राष्ट्र कर्म में दीक्षा का उपयोग सरलता से हृदयङ्गम हो सकता है। बाल मुण्डवाने का प्रयोजन शुद्धि है। बाल हड्डी आदि का मल होने से स्वयं अपवित्र है। बालों के कारण बालों वाले स्थान में प्राय मल का पर्याप्त संचय होता है। शरीर शुद्धि के लिये उस मल को निकालना, हटाना अनिवार्य है अन्यथा फोड़ा फुन्सी आदि नाना रोगों के होने की संभावना रहती है। शुद्धि का सरल उपाय है बाल मुण्डवाना।

हमारे यहाँ ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ, संन्यास में प्रवेश करते समय सिर मुण्डवाने का नियम है। इन आश्रमों में प्रवेश करने को ब्रह्मचर्य की दीक्षा वानप्रस्थ की दीक्षा एवं संन्यास की दीक्षा कहते हैं। इन दीक्षाओं को लेते समय सिर मुण्डवाने का अभिप्राय इतना ही है कि नवप्रविविक्षु के मन में इस बात की भावना उत्पन्न करनी होती है कि इन आश्रमों की मर्यादा के विरोधी सब साधन दूर कर देने हैं। विरोधी साधनों को हटाये बिना साधक साधनों का अनुष्ठान विशेष फलप्रद नहीं होता। अतः दीक्षा का अर्थ हुआ बाधकों को हटाकर साधकों के संग्रह में लगना अर्थात् लक्ष्यसिद्धि के अतिरिक्त अन्य कार्यों से उदासीन होकर सर्वात्मना लक्ष्यसिद्धि में लगजाना। इससे राष्ट्रकार्य के लिये दीक्षा की उपयोगिता एवं आवश्यकता स्वतः स्पष्ट है।

दीक्षा के उपरिनिर्दिष्ट अर्थों में एक अर्थ व्रत है। व्रत का भी यही भाव है त्याग-पूर्वक किसी विध्यात्मक नियम का धारण। यज्ञ करने के लिये उद्यत यजमान से एक मन्त्र बुलवाया जाता है जिसमें व्रत का निर्देश सा है, उसे मनन करने की आवश्यकता है। वह मन्त्र यह है।

उग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्
इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि ॥ यजु० १।५॥

हे सबको ऊपर उठाने वाले, व्रतों की रक्षा करने वाले प्रभो! व्रत करना चाहता हूँ, आपकी दया से उसे कर सकूँ, यह मेरा व्रत सफल हो सिद्ध हो। [वह व्रत क्या है? उसके उत्तर में कहा है] मैं असत्य को त्याग कर सत्य को प्राप्त करूँ।

असत्य अभावात्मक है, निषिद्ध है अतः उसके त्याग करने की कामना की गई है। सत्य विध्यात्मक सत्स्वरूप है किसी से बाधित नहीं होता। अतः उसकी प्राप्ति की अभिलाषा की गई है।

६- तप —

तप का अर्थ है तपना, तपाना। चिन्ता और विलाप से रहित होकर अपने लक्ष्य सिद्धि के लिये शीत-उष्ण, सुख-दुख, हर्ष-शोक, आपत्-संपत्, हानि-लाभ, जय-पराजय आदि विविध परस्पर विरुद्ध द्वन्द्वों को सहने का नाम तप है।

तप का उपलक्षण कहते हुये तैत्तिरीयोपनिषत् में कहा गया है—

ऋतं तपः, सत्यं तपः, श्रुतं तपः,
शान्तं तपः दमस्तपः, शमस्तपो,
दानं तपो यज्ञस्तपो, भूर्भुवस्स्वर्ब्रह्मै-
तदुपास्व, एतत् तपः ॥ तै० उ० प्रपा० १०।८॥

ऋत तप है, सत्य तप है, श्रुत=वेदाध्ययन तप है, शान्त=शान्ति तप है, दम=मन पर संयम तप है, शम=कर्मेन्द्रियों को नियन्त्रित रखना तप है, दान देना तप है। यज्ञ तप है, सच्चिदानन्द ब्रह्म की उपासना तप है।

तप के जो उपलक्षण यहाँ वर्णित हुये हैं, उन पर विचार कीजिये, सब में कुछ न कुछ आयास का आभास अवश्य मिलता है। इस औपनिषद वचन के विश्लेषण से यही निष्कर्ष होता है कि शारीरिक, मानसिक, आत्मिक परिश्रम का नाम तप है, जीवन यात्रा के लिये परिश्रम की आवश्यकता को एक संस्कृतोक्ति में ही सुन्दरता से व्यक्त किया गया है "स्वेदं बिना नहि स्वादः" स्वेद=पसीना अर्थात् परिश्रम के बिना स्वाद=रस आनन्द नहीं है। श्रमं बिना न परिश्रमः" लोकोक्ति में भी यही बात कही गई है। वेद में इस का इन शब्दों में उपदेश किया है—

न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवाः।
परिश्रमी के बिना देव किसी के मित्र नहीं होते।

देव=दैवीशक्ति परिश्रमी की सहायता करती है। आग, हवा, पानी मिट्टी, सूर्य, अन्तरिक्ष आदि में समान ऐश्वर्य निहित है। किन्तु क्या यह ऐश्वर्य सबको सुलभ है? समुद्र में मोती होते हैं, किन्तु क्या सबको प्राप्त हैं? जो परिश्रम करता है, अग्नि आदि का यथा योग्य उपयोग करता है वह उनसे मिलने वाले ऐश्वर्य का स्वामी बनता है। समुद्र में जो मज्जन करता है गहरी डुबकी लगाता है, वह मोती लाता है। भाव यह कि परिश्रम के बिना कुछ साध्य नहीं और परिश्रम से सब कुछ साध्य है।

७ ब्रह्म—

ब्रह्म शब्द अनेकार्थवाची है। यहाँ प्रकरण के अनुसार ज्ञान विज्ञान इसका अर्थ उपयुक्त प्रतीत होता है। ज्ञान विज्ञान का महत्त्व संसार व्यवहार में अतीव स्पष्टता से सिद्ध हो रहा है। इस जगत् में जड और चेतन दो तत्त्व मुख्यतया कार्य करते प्रतीत होते हैं। अथवा यों कहा जा सकता है कि यह समस्त संसार जड़ चेतन के मेल का प्रसार है। जड़ में बहुत अधिक शक्ति है। सूर्य के ताप प्रकाश की कोई थाह ले सका? अरबों वर्षों से यह ताप प्रकाश दे रहा है किन्तु क्या इसके इस कार्य में कोई न्यूनता या त्रुटि आई? फिर इसकी आकर्षण शक्ति या चमत्कार देखिये, चन्द्र, पृथिवी, मङ्गल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, अरुण, वरुण, प्लुत, नामक ज्ञात ग्रहों को उनके परिवार विस्तार तक थामे हुये हैं। पृथिवी से इतना दूर होते हुये भी पृथिवी पर उसका अतुल प्रभाव है। अग्नि की शक्ति कितनी अद्भुत है? तनिक सा अग्नि ब्रह्माण्ड भर को भस्मसात् करने में समर्थ है। वायु का बल देखिये। कितना महान् वेग है? जहाँ-जहाँ भी प्राणि-सृष्टि है, वहाँ-वहाँ इसकी सत्ता प्राणियों के प्राणधारण का महत्त्वपूर्ण कार्य संपादन कर रही है। जल का बल भी विपुल है। जल है भी बहुत। पृथिवी से तीन चौथाई से अधिक जल है, अन्तरिक्ष में भी जल का विशाल सागर विद्यमान है। पृथिवी का सामर्थ्य सबको चकित कर देता है। कब से यह सब प्राणियों को आश्रय एवं जीवन सामग्री देती आरही है। कितनी तीव्र गति से यह अपनी धुरी-कीली पर तथा कितने वेग से सूर्य की परिक्रमा कर रही है।

किन्तु ये महाशक्ति सम्पन्न भूतजात हैं किसके लिये?

चेतन के लिये। अर्थात् चेतन इनका उपभोक्ता हुआ। स्पष्ट ही चेतन इन सबसे अधिक शक्तिशाली हुआ, चेतन में यह बल कहां से आया? चेतन की चेतना ही उसका बल है। सृष्टि पर दृष्टि डाल देखिये, जहाँ-जहाँ चेतनता की स्फूर्ति जितनी कम उतनी ही समर्थता कम है। प्रतीयमान न्यून चैतन्य वाला प्राणी अधिक चेतना सम्पन्न के वशवर्ती होता दीखता है। चेतन्यता=चैतन्य=ज्ञान एक ही पदार्थ है। उपर्युक्त उदाहरण बता रहे हैं कि जिसमें जितना ज्ञान अधिक होगा उतना ही वह अधिक शक्ति सम्पन्न होगा। मनुष्य के पास ज्ञान के साधन अधिक हैं। अतः वह समस्त प्राणियों की अपेक्षा उत्कृष्ट है। इसी उत्कर्ष के कारण ही वह गजेन्द्र- हाथी मृगेन्द्र=सिंह से महाबल प्राणियों को अपने अधीन कर उनसे यथेच्छ कार्य लेता है। ज्ञान की कितनी गरिमा है।

८ यज्ञ=अनुष्ठान—

ज्ञान का पर्यवसान अनुष्ठान में है। अनुष्ठान के बिना ज्ञान निष्प्राण है। इसी कारण वेद में ज्ञान और कर्म का एकत्र वर्णन हुआ है।

वैदिक धर्म के अनुसार जीवन यज्ञ है। जैसा कि छान्दोग्योपनिषत् में कहा है "पुरुषो वाव यज्ञः" मानव जीवन यज्ञ है। यज्ञ का मूल अर्थ समझने से मानव जीवन का यज्ञ होना अवगत हो सकता है। यज्ञ का अर्थ है—देवपूजा, संगतिकरण तथा दान। देवपूजा का अर्थ है—

दैवीशक्तियों—सूर्य, चन्द्र, अग्नि, वायु, जल, पृथिवी, वनस्पति आदि से यथायोग्य उपयोग लेना, विद्वानों का आदर सत्कार करना, शिल्पियों, कलाकारों, कलाविदों, पदार्थविद्या के पण्डितों का आदर करना। यजुर्वेद के तीसरे अध्याय में प्राय. सभी व्यवसाय गिनाये गये हैं उस अध्याय का नाम है नरमेध—नर का अर्थ है नेता, मुखिया। अर्थात् प्रत्येक व्यवसाय के मुखियों को इकट्ठा रखना। यज्ञ का दूसरा अर्थ संगतिकरण नरमेध का दूसरा मूल है। नरमेध, गोमेध, अश्वमेध,

अजमेध तथा अविमेध नामक पांच प्रसिद्ध यज्ञ है। मध्यकाल के वेदानभिज्ञ लोग उनकी हत्या का विधान मानते थे। उनके मन म अश्वमेध यज्ञ घोडे को मारने के लिये होता था। इस दृष्टि से नरमेध में भी मनुष्य हत्या होनी चाहिये किन्तु हिंसा के अति प्रबल पोषक महीधर भी नरमेध में ऐसा विधान न कर सके। यज्ञयूपों में पशुवत् सब ब्राह्मणादि को बांधने का विधान करके प्रोक्षणादि यज्ञोपयोगी सभी कर्मों का कथन करके अन्त में उन्हें लिखना पड़ा—

ततः सर्वान् ब्रह्मणादीन् यूपेभ्यो विमुच्योत्सृजति ।

तब सब ब्राह्मणादि को यज्ञ के यूपों खम्भों से छुडाकर छुट्टी दे देता है।

जिस किसी हेतु से महीधर एवं पूर्ववर्ती याज्ञिकों ने यज्ञ में पुरुषों का मारना अवैध समझा, उसी हेतु से हम यज्ञ में अश्व आदि की हत्या को अवैध मानते हैं। वेद में मनुष्य, पशु आदि की हिंसा का स्पष्ट निषेध है देखिये—

इम मा हिंसी द्विपादं पशुम्। यजु० १३।४७ ॥
इमं मा हिंसीरेकशफं पशुम्। यजु० १३।४८ ॥
घृतं दुहानमदितिजनायाग्ने मा हिंसी.। य० १३।४९ ॥
इममूर्णायु मा हिंसीः। य० १३। ५०
गां मा हिंसीः। य० १३।४३।

संगति-करण—एक चाल करने के लिये एक भाषा का होना आवश्यक है। भाव और भाषा का गहरा सम्बन्ध है। भाषा भेद के कारण भाव भेद हो जाया करता है। भावनाओं का तो क्या कहना भाषा भेद के कारण भाव बोध भी कठिन हो जाया करता है। अतः भावैक्य के लिये भाषा की एकता अपरिहार्य है भाषा की एकता के लिये भावों की एकता आवश्यक है।

यज्ञ का तीसरा अर्थ दान है। दान का भाव है अपनी किसी वस्तु पर अपना अधिकार त्याग करके उस पर दूसरे का अधिकार करा देना। यह ऐसा कार्य है जिसके बिना संसार का कार्य नहीं चल सकता। मनुष्य जब अकेला है तब जो कुछ कमाता है उसका वह अकेला स्वामी है। उसका जब विवाह हो जाता है तब अपनी कमाई का भाग अपने दूसरे साथी को देता है। न दे, तो गृहस्थी के शकट का चलना विकट हो जाये। गृहस्थ राष्ट्र की इकाईमूल है। विवाह करते समय वर और वधू दोनों बोलते हैं—

समञ्जन्तु देवाः समापो हृदयानि नौ।
स मातरिश्वा सं धाता समु देष्ट्री दधातु नौ ॥ऋ० १०।८५।४७

सम्पूर्ण देव एक सी गति करे। जैसे जल में जल मिलकर एक हो जाता है, वैसे हम दोनो के हृदय मिलकर एक हो जायें। हमारे प्राण हमारी आत्मा तथा हमारी देष्ट्री=बुद्धि हम दोनों को एक बना दे।

यज्ञ के इन अर्थों पर दृष्टि डालने से प्रतीत होता है कि यज्ञ का अनुष्ठान विशाल बुद्धि एवं अद्भुत चातुर्य तथा अतिशय माधुर्य की अपेक्षा करता है। अन्त में भगवान् से प्रार्थना करते हैं।

ओं आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽति व्याधी महारथो जायतां दोग्ध्रीर्धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठा सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥ यजु० २२।२२ ॥

यह हमारी राष्ट्रीय प्राथना है, राष्ट्र के लिये सभी उपयोगी पदार्थों की कामना है। यजमान पुत्र का सभेय होना, स्त्री का पुरन्धि होना, समय-समय पर इच्छानुसार प्रबन्ध कर सकना, क्षत्रिय का शस्त्रास्त्र सचालन कुशल होना विशेष मनन करने योग्य है। तनिक ध्यान से देखिये यह व्यक्ति की प्रार्थना नही है। यह समष्टि की प्रार्थना है। ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 रजि० न० P/RTK 49

ओ३म्

सर्वहितकारी

रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

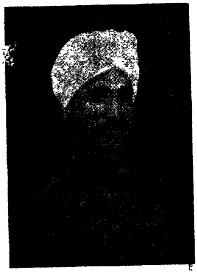
सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री

वर्ष १४, अङ्क ४२ २८ सितम्बर, १९८७ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

विजयदशमी पर ८७वें जन्मदिवस पर सम्मरण—

जन-क्षितिज के उज्ज्वल नक्षत्र–सिद्धांती जी

—प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा



सार्वजनिक जीवन में व्यक्तिगत शुचिता तथा सत्यनिष्ठा के सिद्धांती जी आदर्श प्रतीक थे। ३० वर्षों से मेरा उनके साथ निरन्तर सम्पर्क रहा और इसी निजी अनुभव के आधार पर मैं यह निस्सकोच कह सकता हूं कि उन जैसी सात्विकता, सरलता विरले ही व्यक्तियों में मिलेगी।

सन् ४६ में मैंने संयुक्त पंजाब विधानसभा का चुनाव कांग्रेस टिकट पर लड़ा। उसमें सिद्धांती जी ने अपने सब सम्बन्धों को भुलाकर केवल देशभक्ति और आर्यसमाज के दृष्टिकोण से मेरा समर्थन किया। अपने घर का तांगा लेकर वे गांव-गांव घूमे और दिन-रात एक कर दिया। उसके बाद उनके साथ मेरी घनिष्ठता निरन्तर बढ़ती चली गई और प्रायः सभी गतिविधियों में मेरे साथ उनका सहयोग रहा।

सन् ५७ में भाषा के प्रश्न पर मेरा कांग्रेस के साथ विरोध होगया और मैं सिद्धांती जी तथा आचार्य भगवान्देव जी (स्वामी ओमानन्द सरस्वती) की प्रेरणा पर हिन्दी रक्षा आंदोलन में सम्मिलित होगया। सन् १९६२ में उन्हीं के सहयोग से मैंने हरयाणा लोक समिति नामक राजनैतिक दल की स्थापना की और सिद्धांती जी इसी के टिकट पर झज्जर रिवाड़ी क्षेत्र से लोकसभा के लिए चुने गये। संसद् में भी उन्होंने सदा हरयाणा के हितों का प्रबल समर्थन किया। सन् १९६६ में 'हरयाणा राज्य' के निर्माण में भी उन्होंने एक विशिष्ट भूमिका निभाई।

हरयाणा राज्य के निर्माण के फलस्वरूप मतभेद का आधार समाप्त होने पर कुछ केन्द्रीय नेताओं के आग्रह पर मैं फिर कांग्रेस में सम्मिलित होगया। सिद्धांती जी जीवनभर कांग्रेस के आलोचक रहे हैं, परन्तु जब मैंने उनसे अनुरोध किया तो उन्होंने उसका सम्मान करते हुए सहमति दे दी और झज्जर क्षेत्र सहर्ष मेरे लिए खाली कर त्याग का परिचय दिया।

चण्डीगढ़ के प्रश्न पर उन्होंने मेरे साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर काम किया। मैं यद्यपि कांग्रेस में था और वे कांग्रेस के विरोधी हो रहे, परन्तु सब कामों में मेरा और उनका सहयोग यथावत् रहा। कोई भी समस्या या प्रश्न हो, जब मैं उनसे चर्चा करता तो बस यही कह देते थे कि मुझे सदा अपने साथ समझें केवल जो करना हो मुझे बता दिया करें।

अर्थशुचिता भी इनमें अनुकरणीय थी। हिसाब-किताब के बहुत पक्के थे। संस्थाओं के एक-एक पैसे का बहुत कृपणता के साथ देखभाल कर खर्च करते थे और उसका बहुत स्वच्छ हिसाब रखते थे। यात्रा में भी किसी के साथ जाते तो एक पैसा भी किसी का अपनी ओर न रहने देते थे और तत्काल चुका देते। रहन-सहन, विचार तथा व्यवहार में भी निश्छलता एवं सादगी से ओतप्रोत थे। सिद्धांत, मान्यता एवं अनुशासन में वे जितने कठोर थे, व्यवहार में उतने विनम्र एवं शिष्ट थे। बनावट उन्हें छू तक नहीं गई, छोटे से छोटे व्यक्ति के साथ भी उनका शिष्टाचार उच्च स्तर का रहता था। परन्तु बड़प्पन दिखाने वाले के साथ उनका साथ एकदम रूखा हो जाता था। उन्हें शिष्टाचार से ही झुकाया जा सकता था।

हरयाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश तथा राजस्थान उनके कार्य के विशेष क्षेत्र रहे हैं। इस विस्तृत क्षेत्र के ग्रामीण समाज में उन्हें विलक्षण लोकप्रियता प्राप्त थी। उनकी विद्वत्ता तथा चरित्र का सर्वत्र प्रभाव था। इस सारे क्षेत्र की धार्मिक तथा सामाजिक गतिविधियों के तो वे गत ५० वर्ष से केन्द्र ही रहे हैं। सर्वखाप पंचायत के संस्थापक और अध्यक्ष के नाते उन्होंने विवाह आदि अवसरों पर अपव्यय और अयुक्त दहेज के विरोध में जो सफल अभियान चलाया, उसकी अपनी ही छाप थी। ग्रामीण कृषक वर्ग को इन फिजूल खर्चियों से छुड़ाकर उन्होंने ठोस हित किया। उसका एक सुन्दर परिणाम यह हुआ कि इन इलाकों में लोगों ने मकान बनाने तथा शिक्षा संस्थाओं को खड़ी करने में अपने गाढ़े पसीने की कमाई का सदुपयोग किया।

हमारे देश में समाज सेवा के लिए जीवन अर्पण करनेवालों की पुरानी पीढ़ी में सिद्धांती जी जैसे इने-गिने व्यक्ति रह गये हैं। उनके चिन्तन, आचार-विचार तथा निःस्वार्थता का जो स्तर रहा, वह अब कथावशेष ही बनता जारहा है। जन-क्षितिज पर निराली शान से चमकने वाले ये नक्षत्र अब अंगुलियों पर ही गिने जा सकते हैं। हरयाणा के नवनिर्माण और आर्यसमाज के इतिहास में सिद्धांती जी की अनूठी देन स्वर्णिम अक्षरों में अंकित रहेगी। आगामी पीढ़ियों के लिये वे प्रेरणा-स्रोत रहेंगे। सिद्धांती जी जो कुछ थे, स्वयं बने थे और अपने को बनाकर उन्होंने हजारों युवकों को बनाया था। मैं सभा की ओर से श्री सिद्धांती जी को उनकी ८७वीं जयन्ती पर श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

हिन्दी दिवस के उपलक्ष में—

राष्ट्रीय एकता में हिन्दी का योगदान

लेखक—यशपाल आर्यबन्धु, आर्य निवास, चन्द्र नगर, मुरादाबाद—244032

भारत एक ऐसा देश है जहा अनेक मतमतान्तर के लोग ही नहीं रहते, विभिन्न भाषा-भाषी, लोग भी रहते हैं। यहा भाषा की समस्या कही तो राज्यो (प्रान्तों) से जुडी है तो कहीं विभिन्न धर्मावलम्बियों से। जसे एक मुसलमान चाहे वह किसी भी राज्य का रहने वाला हो, वह अपनी भाषा उर्दू ही मानता है। इसी प्रकार एक सिख चाहे वह किसी भी राज्य में रहता हो, अपनी भाषा पजाबी ही मानता है। विपरीत इसके कुछ भाषायें ऐसी हैं जो राज्यवार बटी सी हैं, जैसे तमिल, तेलगू, असमिया, बगला, उडिया, मराठी, गुजराती आदि। तात्पर्य यह कि भारत की भाषा कही तो राज्यो से जुडी है और कही सम्प्रदाय विशेष से। विभिन्न मतावलम्बो तथा विभिन्न भाषा-भाषी होते हुए भी भारत की आत्मा एक है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के एक वर्ष पूर्व डा० सुनीति कुमार चटर्जी ने कहा था कि— 'विभिन्नता रहते हुए भी भारत की आत्मा अखण्ड है। भाषा और सस्कृति के क्षेत्र में इस सत्य का प्रतीक हिन्दी है।''

हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है और राष्ट्रभाषा होने के नाते राष्ट्रीय एकता में इसका योगदान असदिग्ध है। भारत में सब से अधिक बोली एव समझी जाने वाली कोई भाषा है तो निश्चय ही वह हिन्दी ही है। यदि यह कह कि हिन्दी भारत की आत्मा है तो कोई अतिशयोक्ति नही होगी। हिन्दी भाषी क्षत्रो के अतिरिक्त भी जहा कही आप चले जाय, आपको हिन्दी बोलने तथा समझने वाले लोग मिल ही जायेंगे। और ऐसे अहिन्दी भाषा-भाषी लोगों की भी कमी नही कि जो हिन्दी भाषी क्षत्र में आकर हिन्दी भाषा के माध्यम से अपने सब कार्य-व्यवहार चला रहे हैं। भारत की राजधानी दिल्ली इसका सबसे सुन्दर उदाहरण है, जहा सभी भाषाओं के बोलने वाले लोग परस्पर प्रेम प्रीति से रह रहे हैं एव हिन्दी के माध्यम से परस्पर वार्तालाप कर लेते हैं। उदाहरण के लिए एक बगाली यदि किसी मद्रासी से बात करना चाहे तो उसे हिन्दी का सहारा लेना पडता है। इसी प्रकार एक पजाबी यदि एक असमी से बात करना चाहे तो उसे भी हिन्दी का ही सहारा लेना पडता है। स्पष्ट है कि हिन्दी जोडने वाली भाषा है तोडने वाली नहीं। यह और बात है कि राजनीतिक दावपेच में पडकर उसका यह स्वरूप विकृत कर दिया गया है।

हिन्दी भाषा के चिन्तन की अपनी यह विशेषता है कि यह प्रान्तीयता की सकीर्णता में कभी आबद्ध नहीं होती। इसके चिन्तन का स्तर और इसकी चिन्तन-धारा और क्षेत्र संकुचित नही अपितु व्यापक है। हिन्दी ने "हमारा पजाब", "हमारा बगाल", "हमारा गुजरात" आदि जैसे सकीर्ण नारे कभी नही दिए। इसका नारा "हमारा भारत" है तभी वह भारत माता की जय का घोष गुजाती है। 'जय हिन्द' इसी भाषा का ही तो नारा है, जिसे बंगला भाषा-भाषी नेता जी सुभाष चन्द्र बोस ने दिया था। पर यह नारा भारत के लिए वरदान सिद्ध हुआ। यह ऐसा नारा है कि जिसके पीछे सम्पूर्ण राष्ट्र एक होकर खडा हो जाता है। क्या यह कम बात है ? फिर हिन्दी भाषा ने पृथकतावादी दृष्टिकोण कभी नही अपनाया। यही इसकी सबसे बडी विशेषता है। राष्ट्रीय एकता मे इससे बढकर और योगदान भला क्या हो सकता है ?

किसी भी राष्ट्र की स्वतन्त्रता और राष्ट्रीय एकता का मूल कारण उस देश की राष्ट्रभाषा और सस्कृति ही हुआ करती है। इतिहास साक्षी है कि भारतीय स्वतन्त्रता का सग्राम हिन्दी के माध्यम से ही लडा गया और अब इसकी स्वतन्त्रता की रक्षा और राष्ट्रीय एकता भी इसी के माध्यम से ही सम्पादित हो सकती है। हिन्दी हमें भारत की आत्मा के साथ जोडती है यह तथ्य कई अहिन्दी भाषा-भाषी महापुरुषों ने हृदयगम कर लिया था। महर्षि दयानन्द, महात्मा गांधी, कविवर सुब्रह्मण्य भारती आदि इसमे प्रमुख थे तथा उन्होने अपने समस्त ग्रंथ आदि हिन्दी में लिखे। महर्षि दयानन्द का तो सुस्पष्ट कथन है कि—'मैंने आर्यावर्त भर मे भाषा का ऐक्य सम्पादन करने के लिए ही अपने सकल ग्रथ आर्यभाषा में लिखे और प्रकाशित किये हैं।'' वस्तुतः महर्षि-दयानन्द के नेत्र तो उस दिन की प्रतीक्षा में थे कि जब कश्मीर से कन्या कुमारी तक और अटक से कटक तक नागरी अक्षरों और हिन्दी भाषा का प्रयोग होता। दुर्भाग्य से वे ऐसा दिन न देख सके।

महर्षि दयानन्द प्रथम महामानव थे जिन्होंने हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिलाने का विधिवत् एवं संगठित प्रयत्न किया था। महर्षि ने हिन्दी को राजभाषा के पद पर आसीन होने के लिए क्या कुछ नहीं किया। और सत्य तो यह है कि राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी की परिकल्पना ही महर्षि दयानन्द के मस्तिष्क की उपज है। हण्टर कमीशन के समुख्य हिन्दी राजभाषा के लिए मैमोरियल भिजवाने का काम महर्षि दयानन्द का ही था। महर्षि दयानन्द ने आर्यभाषा हिन्दी की राजभाषा अथवा राष्ट्रभाषा के रूप में जो परिकल्पना की थी उसका साक्षात्कार करते हुए श्रीयुत क. म मुंशी ने हिन्दी को राजभाषा बनाने के पक्ष में अपना समदीय भाषण देते हुए उच्चस्वर में कहा था कि- "पचास वर्ष के लगभग हुए, मैंने स्वामी दयानन्द की शिक्षा के प्रभाव में अनुभव किया कि देश की एकता के लिए हिन्दी का राजभाषा होना आवश्यक है।'' स्पष्ट है कि श्री मुशी को हिन्दी में राष्ट्रीय एकता के दर्शन हुए थे और उन्होंने उसे प्रकट भी किया था।

महर्षि के जीवन-चरित्र में इस बात का उल्लेख है कि एक दिन पण्ड्या मोहनलाल विष्णुलाल जी ने महर्षि से पूछा था कि—"भगवन्! भारत का पूर्ण हित कब होगा ? तो महर्षि का उत्तर था कि 'एक धर्म, एक भाषा और लक्ष्य बनाये बिना भारत का पूर्ण हित और जातीय उन्नति का होना दुष्कर कार्य है। सब उन्नतियो का केन्द्र स्थान ऐक्य है। जहा भाषा, भाव और भावना में एकता आ जावे, वहा सागर मे नदियों की भाँति सारे सुख एक-एक करके प्रवेश करने लग जाते हैं। मैं चाहता हू कि देश के राजे-महाराजे अपने शासन में सुधार और संशोधन करें। अपने राज्य में धर्म, भाषा और भावों में एकता उत्पन्न कर दें फिर भारत भर में आप ही आप सुधार हो जायेगा।'' महर्षि यहा सुस्पष्ट रूप से राष्ट्रीय एकता में हिन्दी के महत्त्व को स्वीकार कर रहे हैं। वस्तुतः हिन्दी भारतीय एकता की प्रतीक है। महर्षि दयानन्द द्वारा हिन्दी भाषा को अपनाने के प्रभाव का वर्णन करते हुए डा सूर्य देव शर्मा ने लिखा था कि—'तभी से समस्त उत्तरी भारत में एक ऐसी ज्ञानगंगा प्रवाहित हुई जिसमें भारत वासियों ने अवगाहन कर विभिन्न वेदविरोधी सम्प्रदायों द्वारा प्रादुर्भूत पतनोन्मुख कलुष कालिमा धो डाली। अबाध गति से प्रवाहित इस धारा ने देश में नव चेतना, नवीन स्फूर्ति और अद्भुत जागृति की जिसके परिणामस्वरूप शताब्दियों से अज्ञाननिद्राभिभूत भारत सजग हो उठ खडा हुआ। और उसे काल पथ पर अनति-दूर ही एक भाषा और एक राष्ट्र के दिव्य दर्शन हुए।'' (देखें—आर्यसमाज और हिन्दी, पृष्ठ १२)

राष्ट्रीय एकता में हिन्दी भाषा के योगदान को महर्षि दयानन्द ने ही नहीं, महात्मा गांधी तथा देश के अन्य अनेकों बडे-बडे नेताओं ने मुक्तकण्ठ से स्वीकारा है। सन् १९३५ में इन्दौर में हुए हिन्दी साहित्य सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए महात्मा गांधी ने उद्बोधन दिया था कि "अगर हिन्दुस्तान को हमें सचमुच एक राष्ट्र बनाना है तो चाहे कोई माने या न मानें, राष्ट्रभाषा तो हिन्दी ही बन सकती है, क्योंकि जो स्थान हिन्दी को प्राप्त है, वह किसी दूसरी भाषा को कभी मिल नहीं सकता।'' महात्मा गांधी यहा एक राष्ट्र के लिए हिन्दी के महत्त्व को सुस्पष्ट शब्दो में स्वीकार रहे हैं। इसी प्रकार डा जाकिर हुसैन ने १६ ७ ६५ को भारत के उपराष्ट्रपति के रूप में कहा था कि— "हिन्दी वह धागा है, जो विभिन्न मातृ-भाषाओं रूपी फूलों को पिरोकर भारतमाता के लिए सुन्दर हार सृजन करेगा। प्रशासन के लिये देश में एक भाषा का रखना जरूरी है।...... हमें अब देश की एकता को कायम रखने के लिये हिन्दी को ही अपनाना होगा।'' (आर्यसमाज और हिन्दी, पृष्ठ ९३)

राष्ट्रीय एकता के लिए यह आवश्यक है कि हम प्रांतीयता एवं साम्प्रदायिकता की संकुचित भावनाओं से ऊपर उठें और देश के व्यापक हितों की व्यापक दृष्टि से देखते हुए हिन्दी को अपनायें, क्योंकि हिन्दी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो राष्ट्रीय एकता की भद्र-भावनाओं को उजागर करती है। सत्य कहें तो हिन्दी भारत के भाल की बिन्दी है। वह भारतीय एकता की ही प्रतीक है।

मृत्यु के पश्चात् जीव की क्या गति है ?

लेखक—जगदेवसिंह सिद्धांती शास्त्री

सभी मनुष्य इस बात को जानते है कि जीव जन्म से लेकर मृत्यु तक क्या-क्या काम करता है, परन्तु जीव मृत्यु को प्राप्त करके भविष्य में उसकी क्या गति होती है, यह बड़ी विकट समस्या है । *

इस विषय में हम प्रथम अथर्ववेद कांड ५ अनुवाक, वर्ग १, मन्त्र २ अथवा अथर्ववेद पञ्चम कांड, सूक्त १, मन्त्र २ को प्रस्तुत करते हैं ।

आ यो धर्माणि प्रथमः ससाद ततो वपूंषि कृणुषे पुरूणि ।
धास्युर्योनि प्रथम आ विवेशा यो वाचमनुदितां चिकेत ।। २

भाषा—(य) जो ईश्वर प्रभु (प्रथम.) सबका आदि कारण, सबसे श्रेष्ठ और सबसे महान् (धर्माणि, समस्त धारक शक्तियों को (आ ससाद) अपने में रखता है तत.) और पश्चात् (पुरूणि) बहुत से (वपूंषि) शरीरों को (कृणुषे) उत्पन्न करता है, वही परमात्मा आदि कारण (धास्यु) समस्त संसार को बनानेहारा (प्रथम) सबसे पूर्व अर्थात् सृष्टि के आदि मे (योनिम्) अपने योनिभूत वा ससार की योनिभूत प्रकृति में (आ विवेश) शक्तिरूप से प्रविष्ट होता है । यह वही आदि शक्ति है (य) जो (अनुदितां वाचम् बिना कही, बिना उपदेश की हुवी, ज्ञानमयी (वाचम्) वाणी को (चिकेत) स्वयं जानता है ।

बालक पक्ष में (य: धर्माणि आ ससाद) जो प्रथम विद्यमान जीव अपने शरीर धारण के कारणरूप कर्मों को प्राप्त करता है और (ततः पुरूणि वपूंषि कृणुषे) हे जीव ! उन कर्मों से तू नाना प्रकार के शरीर धारण करता है और (धास्यु. योनिं प्रथम आ विवेश) देह धारण करने की इच्छा से प्रथम गर्भ वा मातृयोनि में प्रविष्ट होता है (य: वाचम् अनुदिता चिकेत) और वहीं तू बिना उपदेश की हुवी वाणी को अपने पूर्व सस्कार से जाना करता है ।२।

१—द्वे सृतीऽअशृणवं पितृणामहं देवानामुत मर्त्यानाम् ।
ताभ्यामिदं विश्वमेजत्समेति यदन्तरा पितरं मातरं च ।।
यजुर्वेद १९।४७

पदार्थ—हे मनुष्यो (अहम्) मैं जो (पितृणाम्) पिता आदि (मर्त्यानाम्) मनुष्यो (च) और (देवानाम्) विद्वानो की (द्वे) दे गतिया (सृती) जिनमें आने-जाने अर्थात् जन्म-मरण को प्राप्त होते हैं उनको (अशृणवम्) सुनता हूं (ताभ्याम्) उन दोनों गतियों से (इदम्) यह (विश्वम्) सब जगत् (एजत्) चलायमान हुवा (समेति) अच्छे प्रकार प्राप्त होता है (उन) और (यत्) जो (पितरम्) पिता और (मातरम्) माता से (अन्तरा) पृथक् होकर दूसरे शरीर से अन्य माता-पिता को प्राप्त होता है ।

भावार्थ—दो ही जीव की गति हैं—एक माता-पिता से जन्म को प्राप्त होकर संसार में विषय सुख के भोगरूप और दूसरी विद्वानो के सङ्ग आदि से मुक्ति-सुख के भोगरूप है। इन दोनों गतियों के साथ ही सब प्राणी विचरते हैं ।

२—अपेतो यन्तु पणयोऽसुम्ना देवपीयवः । अस्य लोकः सुतावतः ।
द्युभिरहोभिरक्तुभिर्व्यक्तं यमो ददात्ववसानमस्मै ।। यजु. ३५।१

पदार्थ—जो (देवपीयवः) विद्वानों के द्वेषी (पणयः) व्यवहारी लोग दूसरों के लिये (असुम्ना) दुःखों को देते हैं वे (इतः) यहां से (अप, यन्तु) दूर जावें (लोकः) देखने योग्य (यमः) सबका नियन्ता परमात्मा (द्युभिः) प्रकाशमान (अहोभि.) दिन (अक्तुभि) और रात्रियों के साथ (अस्य) इस (सुतावतः) वेद वा विद्वानों से प्रेरित प्रशस्त कर्मोंवाले जनो के सम्बन्धी (अस्मै) इस मनुष्य के लिये (व्यक्त) प्रसिद्ध (अवसानम्) अवकाश को (ददातु) देवे ।।१

भावार्थ—जो लोग आप्त सत्यवादी धर्मात्मा विद्वानों से द्वेष करते हैं वे शीघ्र ही दुःख को प्राप्त होते हैं, जो जीव शरीर को छोड़कर जाते हैं, उनके लिये यथायोग्य अवकाश देकर उनके कर्मानुसार परमेश्वर सुख-दुःख का फल देता है ।।१

३—सविता ते शरीरेभ्य. पृथिव्या लोकमिच्छतु ।
अस्मै युज्यन्तामुस्रिया ।। यजु. ३५ २

पदार्थ—हे जीव (य:) जो (ते) तेरा (सविता) परमात्मा जिन (ते) तेरे (शरीरेभ्यः) जन्मजन्मान्तरो के शरीरो के लिये (पृथिव्याम्) अन्तरिक्ष वा भूमि में (लोकम्) कर्मों के अनुकूल सुख-दु.ख के साधन प्रापक स्थान को (इच्छतु) चाहे (तस्मै) उस तेरे लिये (उस्रिया) प्रकाशरूप किरण (युज्यन्ताम्) अर्थात् उपयोगी हों ।।२

भावार्थ—हे जीवो ! जो जगदीश्वर तुम्हारे लिये सुख चाहता है और किरणो के द्वारा लोकलोकान्तरो को पहुंचाता है वह तुम लोगो को न्यायकारी मानना चाहिये ।।२

४—वायु पुनातु सविता पुनात्वग्नेर्भ्राजसा सूर्यस्य वर्चसा ।
वि मुच्यन्तामुस्रिया ।। यजु. ३५ ३

पदार्थ—हे मनुष्यो ! तुम (वायु) पवन (अग्ने) बिजली की (भ्राजसा) दीप्ति से (सूर्यस्य) सूर्य के (वर्चसा) तेज से जिन हम लोगों को (पुनातु) पवित्र करे (सविता) सूर्य (पुनातु) पवित्र करे (उस्रिया) किरण (मुच्यन्ताम्) छोड़े ।।३

भावार्थ—जब जीव शरीरों को छोड के विद्युत् सूर्य के प्रकाश और वायु आदि को प्राप्त होकर जाते हैं और गर्भ में प्रवेश करते है तब किरण उनको छोड देती हैं ।।३

५—सविता प्रथमेऽहन्नग्निर्द्वितीये वायुस्तृतीय आदित्यश्चतुर्थे चन्द्रमा पञ्चम ऋतु षष्ठे मरुतः सप्तमे बृहस्पतिरष्टमे । मित्रो नवमे वरुणो दशम इन्द्र एकादशे विश्वे देवा द्वादशे । यजु ३९।६

पदार्थ—हे मनुष्यो ! इस जीव को (प्रथमे) शरीर छोडने के पहिले (अहन्) दिन (सविता) सूर्य (द्वितीये) दूसरे दिन (अग्नि) अग्नि (तृतीये) तीसरे (वायु) वायु (चतुर्थे) चौथे (आदित्या) महीना (पञ्चमे) पांचवें (चन्द्रमाः) चन्द्रमा (षष्ठे) छठे (ऋतुः) वसन्तादि ऋतु (सप्तमे) सातवें (मरुत) मनुष्यादि प्राणी (अष्टमे) आठवें (बृहस्पति) बड़ों का रक्षक सूत्रात्मा वायु (नवमे) नवमे में (मित्र) प्राण (दशमे) दशवें में (वरुण.) उदान (एकादशे) ग्यारहवें में (इन्द्र) बिजली और (द्वादशे) बारहवें दिन (विश्वे) सब (देवाः) दिव्य उत्तम गुण प्राप्त होते हैं ।।६

भावार्थ—हे मनुष्यो ! जब ये जीव शरीर को छोडते हैं, तब सूर्य प्रकाश आदि पदार्थों को प्राप्त होकर कुछ काल भ्रमण कर अपने कर्मों के अनुकूल गर्भाशय को प्राप्त हो, शरीर धारण कर उत्पन्न होते हैं, तभी पुण्य पापकर्मों से सुख-दुःख रूप फलों को भोगते हैं ।।६

६—अपेमं जीवा अरुधन् गृहेभ्यस्तं निर्वहत परिग्रामादित. ।
मृत्युर्यमस्यासीद्दूत. प्रचेता असून् पितृभ्यो गमयाचकार ।।
अथर्ववेद १८ कांड, सूक्त २, मन्त्र २७

भाषा—मृत्यु होने पर क्या करें सो बतलाते हैं । (जीवा.) जीवित लोग (इमम्) इस प्राण अपान से रहित मृत पुरुष को (गृहेभ्य) घरों से निकाल कर (अप अरुधन्) बाहर रखें, हे गृहस्थ जीवित पुरुषो (तम्) उस मृत शव को (इतः ग्रामात्) इस ग्राम से (परिनिर्वहत) परे दूर ले जावो (मृत्युः) मृत्यु (यमस्य) परमेश्वर का (दूत आसीत्) दूत, सन्ताप-कारी साधन है वह (प्रचेताः) उत्तम ज्ञानवान् और ज्ञानप्रद, उपदेश देने और शिक्षा प्राप्त करने का भी साधन है या जीव को कर्मफल का दण्ड देकर उसका संताप देनेहारी घटना है । वस्तुत. वह परमेश्वर (पितृभ्यः) बूढे माता-पिताओं और बुजुर्गों के भी (असून्) प्राणों को (गमयांचकार) दूर कर लेता या हरता रहा है ।।२७

(क्रमश)

श्री हरकिशनसिंह मलिक के असली हत्यारों का पता लगा



श्रीमती द्राक्षादेवी ट्रस्ट के अध्यक्ष, आर्यसमाज के प्रसिद्ध नेता, सार्वदेशिक सभा हरयाणा सभा व गुरुकुल कांगड़ी की विद्या सभा के सदस्य, दिल्ली हाईकोर्ट के भू. पू. न्यायाधीश श्री हरकिशनसिंह मलिक की निर्मम हत्या नवम्बर १९८५ में करदी गई थी। सन्देह पर उनकी धर्मबहन श्रीमती सुमित्रा देवी और उनके पुत्र श्री अशोककुमार को गिरफ्तार किया गया था। समाचारपत्रों ने उनके सम्बन्धों को नाजायज बताने की साजिश की थी।

श्री वी. एस अग्रवाल अतिरिक्त सेशन जज ने अपने विद्वत्तापूर्ण निर्णय में १४ अगस्त, १९८७ को इन दोनों अभियुक्तों को ससम्मान मुक्त कर दिया। इस समय पुलिस ने उनके असली हत्यारों का पता लगा लिया है। श्री रामकिशन एडवोकेट और प. जगतनारायण के अनुसार श्री मलिक के हत्यारे वे व्यक्ति हैं जो ट्रस्ट की सम्पत्ति को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम वसीयत करने के कारण उनसे नाराज थे। अब हत्यारो के विरुद्ध दिल्ली की सेशन कोर्ट में मुकदमा चलाया जारहा है। इस मुकदमे की पैरवी करने में सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष सीनियर एडवोकेट श्री सोमनाथ मरवाहा का निर्देशन मिलता रहा है। (आर्य सन्देश से साभार)

आर्ययुवकों की साइकिल द्वारा छः दिवसीय प्रचारयात्रा

आर्यसमाज मन्दिर नयाबांस दिल्ली-६ के तत्वावधान में २ अक्तूबर (शुक्रवार) प्रातः ८ बजे से आर्ययुवकों की छ. दिवसीय साइकिल प्रचारयात्रा का आयोजन किया जारहा है। यह यात्रा दिल्ली से प्रारम्भ होकर फरीदाबाद, बल्लबगढ, पलवल, होडल, कोसीकलां, छाताद, मथुरा होते हुए आगरा तक प्रचार करते हुए दिल्ली में समाप्त होगी। जाने के इच्छुक युवक, प्रचारक बन्धु संयोजक श्री नरेशपाल आर्य ७४२ चर्च मिशन रोड फतेहपुरी दिल्ली-६, दूरभाष २५२५०८५ से सम्पर्क करें।

पं. सेवाराम आर्य अस्पताल में

नई दिल्ली, २८ अगस्त। रघुपुरा निवासी (आगरा) पं. सेवाराम आर्य अपने घर से आकर गले के कैंसर का इलाज कराने स्थानीय सैनिक अस्पताल में दाखिल हैं। वहां उनके नीचे के होठ और मुह गले का आप्रेशन कर दिया गया है। ७२ वर्षीय पं सेवाराम अनेक वर्षों तक आर्यसमाज दीवान हाल की ग्राम प्रचार मण्डली के साथ दिल्ली, हरयाणा तथा उत्तरप्रदेश के क्षेत्रों में वैदिकधर्म का प्रचार करते रहे हैं। आप्रेशन के पश्चात् मैंने भी उनको देखा था।

ओ३म्

आर्यजगत् के महान् नेता एवं वेदों के प्रकांड विद्वान् प० जगदेवसिंह सिद्धांती शास्त्री पूर्व लोकसभा सदस्य की

८७वीं जयन्ती का निमन्त्रण-पत्र

दिनांक—२ अक्तूबर, १९८७ विजयदशमी पर्व पर

स्थान—सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

समय—प्रातः ८ बजे से १ बजे तक

कार्यक्रम—यज्ञ, आर्य भजनोपदेशकों की गायन एव छात्र-छात्राओं की भाषण प्रतियोगिता एवं श्रद्धांजलि। आप सभी सादर आमन्त्रित हैं।

—वेदव्रत शास्त्री
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

सूखा राहत संघर्ष समिति का गठन

९-९-८७ को सूखा राहत संघर्ष समिति का सर्वसम्मति से चुयन किया गया जिसमें भयंकर सूखे के चपेट में आये गाँवों की पचायत ग्राम कवारी में हुई, जिसमें कवारी, धमाना, गुंजार, भोजराज, बालावास, नलवा, रतेरा, मुजाहदपुर, उमरा, सुलतानपुर, रामायण, ढंढेर, मामनपुरा, देवल आदि गांवों की पचायतों ने भाग लिया।

राहत कार्यों के सघर्ष में सहयोग अथवा अपनी राय देने के लिए सम्पर्क करें—

प्रधान—का. पृथ्वीसिंह सुलतानपुर (उमरा), उपप्रधान—कप्तान चन्दगीराम (भोजराज), मन्त्री—श्री अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी (कंवारी), कोषाध्यक्ष—सूबेदार हरिसिंह (कंवारी)।

सक्रिय कार्यकर्त्ता

बालावास से बीरसिंह, निहालसिंह। नलवा से रामपत दहिया, महेन्द्र कश्मा। रतेरा से जगदीश सरपंच। धमाना से धमन नम्बरदार। गुजार से रामसिंह सरपंच। मुजाहदपुर से धर्मवीर, अमरसिंह, रघबीर। सुलतानपुर से बलवान् सरपंच। उमरा से सूरदारा बलवन्तसिंह आर्य। भोजराज से भालसिंह, हेतराम, जीसुख नम्बरदार। कंवारी से ज्ञानीराम, पोहलुराम, पं रामदत्त, स्योदान, पं. छबीलदास, दरियासिंह।

मुख्य उद्देश्य

१—टेल तक पानी की पूरी आपूर्ति हो।
२—सावनी की फसलों का १०० प्रतिशत मुआवजा, पशु चारे का प्रबन्ध
३—भूमिहीनों के लिए तकावी, ऋण व काम दिया जाये।
४—उपरोक्त सभी ग्रामों को पूर्ण भयंकर सूखाग्रस्त घोषित किया जाये।

दादरी क्षेत्र में वैदिकधर्म प्रचार

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपदेशक तथा भजनोपदेशक सारे हरयाणा में वैदिकधर्म प्रचार करने हेतु रात-दिन जुटे हुए हैं। इसी प्रकार ११ अगस्त से ३१ अगस्त, ८७ तक दादरी क्षेत्र में सभा के उपदेशक ब्रह्मचारी [illegible] शास्त्री तथा भजनोपदेशक स्वामी देवानंद जी ने निम्नलिखित ग्रामों में वैदिकधर्म का प्रचार किया—

१. [illegible] ११-१२ अगस्त, २. [illegible] १३-१४ अगस्त, ३. मोड़ी १६ अगस्त, ४. [illegible] १७ अगस्त, ५. [illegible] १८-१९ अगस्त, ६. [illegible] २० अगस्त, ७. [illegible] २३-२४ अगस्त, ८. [illegible] २५-२६ अगस्त, ९. कादमा २८ अगस्त, १०. [illegible] २९-३० अगस्त, ११. झोझूकलां ३१ अगस्त।

इस अवसर पर अनेक युवकों ने यज्ञोपवीत लिए एवं अपने जीवन से दुर्व्यसनों को दूर करने का संकल्प लिया। इस प्रकार यह कार्यक्रम प्रभावशाली रहा।

राजस्थान के देवराला गांव में हुए सतीकांड की आर्यसमाज द्वारा निन्दा

दिल्ली २१ सितम्बर। ४ सितम्बर, १९८७ को राजस्थान के देवराला गांव में रूपकुंवर के सती होने पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की कार्यकारिणी समिति द्वारा इस अमानवीय कांड की भर्त्सना की गई। सभा की अध्यक्षता स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने की। सभा द्वारा पारित प्रस्ताव में कहा गया कि हिन्दू समाज की इस रूढ़िवादी कुप्रथा का राजा राममोहनराय और महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भरसक विरोध किया था और सरकार ने भी एक कानून बनाकर सतीप्रथा को नारी जाति पर घोर अमानुषिक अत्याचार की संज्ञा दी थी।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा में देश के कोने-कोने से आर्यसमाज के नेता उपस्थित थे। उन्होंने सर्वसम्मति से इस अत्याचारी प्रथा को समाप्त करने के लिए देशभर के नारी संगठनों का आह्वान किया। सभा ने राजस्थान सरकार पर इस कांड में उपेक्षा-पूर्ण नीति अपनाने और अपने ही कानून की रक्षा न कर सकने पर अप्रत्यक्ष रूप से इस घोर अपराध में सहायक होने का आरोप लगाया।

राजस्थान सरकार द्वारा चुनरी महोत्सव को न रोकने पर भी सभा में आश्चर्य व्यक्त किया गया।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने प्रस्ताव को पारित करते हुए देश-भर के युवक संगठनों तथा महिलाओं से इस कुप्रथा के विरुद्ध देशव्यापी अभियान छेड़ने का निवेदन किया।

—सच्चिदानन्द शास्त्री

हरयाणा के गांव में 'सुधार' पंचायत

गोहाना, २३ सितम्बर (निस)। यहां से १८ किलोमीटर दूर गांव खडवाली में नशाबन्दी के लिए जागरूक ग्रामीणों ने स्थायी पंचायत से पृथक् एक भाईचारा पंचायत (ग्राम सुधार सभा) का गठन किया था जिसने अपने बनाये असूलों की अवज्ञा करनेवालों से ३,३०० रु जुर्माना वसूला है।

इस गांव में कोई ठेका नहीं है। शराब का सेवन कर हुडदंग मचाने वालों पर यह पंचायत १०० रु. जुर्माना करती है। बाहर से लाकर बेचनेवालों को २५० रु. और निकालने की कुचेष्टा करनेवालों को हत्थे चढ़ने पर ४०० रु. अर्थदण्ड भरना होता है। उल्लेखनीय है कि उगाही रकम का आधा सुराग देनेवालों के लिए निश्चित है।

इन ३,३०० रुपयों में से १,६५० रुपये सूचना देनेवाल को भेंट करने के बाद १,००० रु. गांव में स्थित रा. उ वि. के भवन की मरम्मत के लिये दिये गये। ६०० रु. जोहड़ भरवाने पर व्यय हुए।

इस भाईचारा पंचायत की महीने की १५ व ३० तारीख को बैठक होती है, जिसमें 'प्रगति' और 'बाधाओं' पर पूर्ण विचार-विमर्श व विश्लेषण होता है।

खडवाली से प्रेरणा पाकर सांघी, जिन्दरान और घुसकानी के ग्रामीण भी इस दिशा में आगे बढ़े हैं। —(दैनिक ट्रिब्यून)

आर्यसमाज मालकोश जि० भिवानी का शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज मालकोश के पूर्वप्रधान श्री रामस्वरूप, श्री मेहरसिंह के पुत्र श्री रखाराम, श्री कृष्णकुमार प्रधान की माता सरतोदेवी, श्री दयानन्द उपप्रधान की माता के निधन पर आर्यसमाज के सदस्यों ने शोक प्रस्ताव पारित करके दिवंगत आत्माओं को सद्गति प्रदान करने की प्रार्थना की।

तीन विद्वान् संन्यासियों के देहांत से आर्यजगत् को विशेष धक्का

नवम्बर, १९६४ ई. में रोहतक मण्डल के पाकस्मा ग्राम में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिवेशन में प. जगदेवसिंह सिद्धान्ती के स्थान पर प्रो रामसिंह जी सभाप्रधान चुने गये थे। मैं स्वयं उस चुनाव का दर्शक तथा मताधिकारी था। उसमें पाकस्मा के आर्य सज्जनों ने अधिवेशन तथा भोजन की बहुत सुन्दर व्यवस्था की थी। उसी श्रद्धा से मैं गत ६-९-८७ रविवार को पाकस्मा मण्डल के बलियाणा आर्य ग्राम के यज्ञ तथा वेदप्रचार उत्सव में गया था। श्रद्धेय स्वामी ओमानन्द के यज्ञोपदेश के पश्चात् भोजन उपरांत सर्वप्रथम उत्सव सभा में तीन आर्य विद्वान् संन्यासियों के निधन पर श्रद्धांजलि तथा शोक संवेदना प्रकट की गई। तीन संन्यासियों के आकस्मिक देहांत का सुनकर मेरे मनमें गहरी ठेस लगी।

इनमें गुरुकुल झज्जर में रहनेवाले मान्यवर स्वामी वेदानन्द वेद-वागीश तो कुछ दिन पहले ही प्राणांत कर गये थे जो गुरुकुल चित्तौड़गढ़ के मान्य स्नातक थे। स्वामी ओमानन्द जी के सहयोगी मित्र, वेद शास्त्रों के आर्ष विद्वान् और नम्र स्वभाव के साधु गुरुकुल झज्जर की शान थे। आप कन्या गुरुकुल नरेला के वार्षिक उत्सवों यज्ञों में प्रभावी वेदोपदेश करते थे। आपने १० फरवरी १९६९ ई. के 'सुधारक विशेषांक' के मासिक पत्र में 'देव पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती' नामक पुस्तक में प्रमाणों सहित महर्षि दयानन्द को १८५७ के भारत राष्ट्रीय स्वातन्त्र्य संग्राम के प्रमुख प्रणेता, संयोजक तथा सतत सक्रिय सहयोगी के रूप में प्रसिद्ध किया है। दूसरे संन्यासी स्वामी वेदानन्द जी रोपड आश्रम में रहते थे जो मीरापुर (निकट हस्तिनापुर) के निवासी बालब्रह्मचारी शांत आर्य विद्वान् उपदेशक थे। आप ग्रामों तथा नगरों में यज्ञ हवन तथा वेदकथाओं का सुन्दर कार्यक्रम चलाते थे। रोहतक के रोहणा ग्राम में तो आपका विशेष सम्मान और यज्ञ सत्संग होता था। इसी वर्ष जनवरी मास में ग्राम राणी खेड़ा (दिल्ली) में दो दिन में भी उनके साथ यज्ञ सत्संग में शामिल रहा था। आप सुन्दर स्वस्थ मोटे-तगडे थे। प्रभु ने आपको शीघ्र ही बुला लिया।

तीसरे आर्यजगत् के सुविख्यात शास्त्रार्थ महारथी वयोवृद्ध वीर गर्जनेवाले तर्कपति अमर स्वामी जी गाजियाबाद में रहते थे। आपने पंजाब, हरयाणा, दिल्ली, बुलन्द शहर आदि स्थानों में शास्त्रार्थ करके वैदिकनाद बजाया। आप विधर्मियों को गर्ज कर चुनौती देते थे। आपका जन्म ग्राम अरणिया (बुलन्द शहर) में हुआ था। आप आर्य-समाज रूपी वेद भवन के स्तम्भ थे तथा अगरा नक्षक थे। महाभारत और गीता ज्ञान पर भी आपका पूर्ण अधिकार था। आपके लिखे ११ छोटे-बड़े ग्रन्थ हैं। आपने १८ दिसम्बर, १९८० को पुरी के शंकराचार्य स्वामी निरंजनदेव तीर्थ को पुरानी सब्जी मण्डी दिल्ली में तीन बार के प्रश्नोत्तरों में भी परास्त कर दिया। मई १९८६ में आप द्वारा प्रकाशित निर्णय के तट पर भाग-२ पुस्तक ४० शास्त्रार्थों का संग्रह अति उत्तम है। इस शास्त्रार्थ संग्रह के भाग १ तथा ३ भी छपकर तैयार है। जिनसे वैदिक सिद्धांतों का परिज्ञान तथा शास्त्रार्थ का प्रभुत अनुभव बढ़ेगा। आपका अग्रज भ्राता ठा सुरतसिंह आर्य मुसाफिर भी आर्यसमाज के प्रसिद्ध भजनीक थे।

उपरोक्त तीनों आर्य संन्यासियों के निधन से हमें अनाथपन प्रतीत होने लगा। हम इनके प्रति सश्रद्धा नम्रता से सिर झुकाते हैं। परमात्मा इन तीनों महात्मा साधुओं को सद्गति प्रदान करें।

—निहालसिंह आर्य

सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह चीन के भ्रमण पर

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने २१ सितम्बर को प्रात. वायुयान द्वारा चीन के लिए प्रस्थान किया।

स्मरण रहे प्रो० शेरसिंह ने जनसख्या नियन्त्रण पर एक विधेयक का प्रारूप तैयार करके प्रधानमन्त्रो को भेजा था। चीन में इसी विषय पर एक विश्वस्तर का सम्मेलन हो रहा है। भारत का इस सम्मेलन में प्रतिनिधित्व करने तथा भारतीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करने के लिये प्रो० शेरसिंह जी एक सप्ताह तक चीन मे रहेगे।

एक आवश्यक निवेदन

आर्यजगत् के लब्धप्रतिष्ठ प्रकाशक गोविन्दराम हासानन्द नई सड़क दिल्ली के आदेशों से मैं स्वामी श्रद्धानन्द के सम्पूर्ण ग्रन्थों का सम्पादन श्रद्धानन्द ग्रन्थावली के दस खण्डो के अन्तर्गत कर रहा हूं। स्वामी जी के अधिकांश ग्रन्थ मुझे प्राप्त हो चुके हैं, किन्तु निम्न ग्रंथो की आवश्यकता है। जिन सज्जनों या आयसमाजों के पास ये ग्रन्थ हो वे कृपया रजिस्टर्ड पोस्ट से मुझे निम्न पते पर भिजवा दें। इनका उपयोग कर मैं इन्हें सुरक्षित रूप से आपको लौटा दूंगा तथा ग्रथावली का वह खण्ड भी भेंट करूंगा जिसमें आपके द्वारा प्रेषित ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है—

१. आचार अनाचार छूतछात, २. पंचमहायज्ञ विधि, ३. आर्य संगीतमाला, ४. मानवधर्म शास्त्र और राज्य व्यवस्था, ५. गढ़वाल का दुर्भिक्ष, ६ उत्तराखण्ड महिमा, ७. हिन्दुओ सावधान, ८. दि फ्यूचर आफ आर्यसमाज।

प्रार्थी
डा० भवानीलाल भारतीय, दयानन्द शोध पीठ,
पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़-१६००१४

डा. भवानीलाल भारतीय षष्टिपूर्ति स्मारिका

आर्यसमाज के प्रसिद्ध साहित्यकार, शोध विद्वान् तथा सुपरिचित लेखक डा० भवानीलाल भारतीय जून १९८८ ई० मे अपने जीवन के ६० वर्ष पूरे कर रहे हैं। इस अवसर पर डा० भवानीलाल भारतीय षष्टिपूर्ति स्मारिका का प्रकाशन किया जारहा है। वे ऋषि जीवनी साहित्य के अनथक अध्येता तथा प्रामाणिक कृतिकार है। ऋषि दयानन्द, आर्यसमाज तथा आर्य साहित्यकारो से सम्बन्धित लगभग ४ दर्जन ग्रथो का उन्होने लेखन और सम्पादन किया है। आयसमाज के पत्र-पत्रिकाओं में वे निरन्तर लिखते रहते हैं और अभी भी उनकी लेखनी अजस्र गति से प्रवाहित हो रही है। आर्यसमाज के लेखकों, सम्पादकों, पाठकों, गवेषकों तथा आर्य महानुभावो से निवेदन है कि वे इस स्मारिका के लिये लेख, सन्देश, शुभकामनाय तथा सहयोग प्रेषित कर श्री भारतीय का अभिनन्दन करें।

पत्र व्यवहार का पता
आर्यसमाज अमेठी,
उ.प्र.-२२७४०५

निवेदक
डा. ज्वलन्तकुमार शास्त्री
सम्पादक—स्मारिका

हरिजनों मे आयसमाज का प्रचार

आर्यसमाज मीतरौल औरगाबाद के माध्यम से श्री प्रमाल व बन्सीलाल बाल्मीकियो ने अपने-अपने पौत्रों के नामकरण सस्कार पर आर्यसमाज को यथाशक्ति दान देकर व्रत लिया कि हम कभी शराब व मांस का प्रयोग नहीं करेगे। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशक पं. भजनलाल आर्य ने दोनों हो परिवारों में भजनों द्वारा आशीर्वाद दिया। इसके अतिरिक्त हरिजन बस्ती में श्री हरलाल नम्बरदार ने यज्ञोपवीत धारण कर सकल्प लिया कि मैं सारी आयु आर्यसमाज और स्वामी दयानन्द के बताये हुए मार्ग पर चलूंगा।

अक्तूबर मास में आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

आर्यसमाज जैकमपुरा गुडगांव छावनी	३० सितम्बर से २ अक्तूबर	
पं० जगदेवसिंह सिद्धांती की ८७वीं जयन्ती सिद्धांती भवन, रोहतक	२	,,
,, ,, ,, ,, ,, ,, बरहाणा जि० रोहतक	३-४	,,
कन्या गुरुकुल पंचगांव जि० भिवानी	३-४	,,
चौ० माडूसिंह जयन्ती कन्या गुरुकुल खानपुर जि० सोनीपत	७	,,
आर्यसमाज शेखपुरा जि० करनाल	९-१०-११	,,
,, काठ मण्डी आर्यनगर सोनीपत	१६ से १८	,,
,, वर्कशाप जगाधरी जि० अम्बाला	१५ से २२	,,
,, गोहाना शहर जि० सोनीपत	१६ से २२	,,
,, जींद जकशन जि० जींद	१८ से २२	,,
,, होली मोहल्ला करनाल	१७ से २२	,,
गोशाला कैथल जि० कुरुक्षेत्र	२७ से ३०	,,

जो आर्यसमाज अपने यहां वार्षिक उत्सव या वेदप्रचार का कार्यक्रम रखना चाहते हों वे सभा द्वारा तिथियां स्वीकार करवाने के लिए शीघ्र पत्र व्यवहार करें, ताकि प्रबन्ध करने में सुविधा रहे।

—रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता

गोहत्या न होने देने की शपथ

गुडगांव, १५ सितम्बर (निस)। मेवात में गोहत्या पर रोक लगाने के लिये मेवात के हिन्दू व मेवो ने मिलकर तावडू में एक संयुक्त पंचायत की, जिसमें मेवात के लगभग ३ हजार लोगों ने भाग लिया।

इस पचायत में अब तक गोहत्या के जुर्माने में जिन पर मुकदमे चल रहे हैं, उन लोगों पर ५०५२ रुपये जुर्माना रखा गया। यह पैसा और पचायत मे कुछ चंदा एकत्र करके कुल रकम टिकली गोशाला को दान देने के लिये घोषणा की गई।

पचायत मे सभी लोगो ने एक स्वर से गायो की हत्या की तीव्र निंदा की व मेवात में गोहत्या न होने देने को शपथ ली।

अमर स्वामी जी को श्रद्धांजलि

सार्वदेशिक दयानन्द सन्यासी वानप्रस्थ मण्डल ज्वालापुर (हरिद्वार) के अध्यक्ष शास्त्रार्थ महारथ स्वर्गीय महात्मा अमर स्वामी का श्रद्धांजलि समारोह उक्त मण्डल के आश्रम "वेद मन्दिर" (ज्वालापुर) में दिनांक २०-९-८७ रविवार के दिन आयोजित हुआ। जिसमें सवश्री आचार्य रामप्रसाद, आचार्य रामनाथ, आचार्य बलदेव, डा० महावीर, स्वामी दिव्यानन्द, मीरा यति, वेदव्रतानन्द, शिवपूजनसिंह कुशवाह, हरिपालसिंह एडवोकेट इत्यादि १६ व्यक्तियों ने उनके जीवन पर प्रकाश डालते हुए श्रद्धांजलियां समर्पित की।

अनेक वक्ताओं ने स्वामी जी के अनेक रूपों का वर्णन किया। कवि, गायक, उपदेश तथा शास्त्रार्थों के अजेय योद्धा के रूप में वर्णन करते हुए अन्त में समारोह के अध्यक्ष तथा आश्रम के प्रधान स्वामी जगदीश्वरानन्द जी ने प्रेरणा की कि हम स्वय वेदादि शास्त्रों के सिद्धांत ज्ञाता बनकर उनके साहित्य निर्माण कार्य की पूर्ति का प्रण करें।

जीवनानन्द सरस्वती मन्त्री

आर्यसमाज मालकोश का वार्षिक चुनाव

प्रधान—सर्वश्री कृष्णकुमार, उपप्रधान—डीगराम कप्तान, मन्त्री—अमरसिंह, उपमन्त्री—सेवासिंह, कोषाध्यक्ष—पोहकरसिंह, पुस्तकाध्यक्ष—सहदेवसिंह।

शिवाजी कालोनी रोहतक में योग साधना शिविर

आर्यसमाज मन्दिर शिवाजी कालोनी, रोहतक में आर्यजगत् के उच्चकोटि के विद्वान् योगनिष्ठ वेदाचार्य श्री स्वामी श्रेयोनन्द जी महाराज वैदिक यति (अध्यक्ष वेद मन्दिर व योग संस्थान, गोरखपुर व संचालक आर्य गुरुकुल महाविद्यालय खानपुर, नारनौल) का शुभागमन हो रहा है। उनकी अध्यक्षता में योग साधना शिविर २-१०-८७ शुक्रवार से ८-१०-८७ वीरवार तक चलेगा। योगप्रेमी साधक—नर, नारियाँ व बच्चे बड़ी संख्या में भाग लेकर लाभ उठायें।

—घनश्यामदास प्रधान

पंजाब के लोहपुरुष श्री लालचन्द सभ्रवाल का निधन

पंजाब के वरिष्ठ एडवोकेट तथा लोहपुरुष श्री लालचन्द सभ्रवाल का १५ सितम्बर को जालन्धर में हृदयगति बन्द होने से निधन होगया। आप प्रातः जिला कचहरी गये और दोपहर को भोजनावकाश पर घर आये तो थोड़ी देर में इस संसार से विदा होगये।

आपका आर्यसमाज से गहरा सम्बन्ध था तथा सदा ही आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिकारियों को कानूनी सहायता दी। आपने दो-तीन बार पंजाब सभा के विरोधियों को सभा के गुरुदत्त भवन कार्यालय से उनका अवैधानिक कब्जा छुड़ाने में सभा के तत्कालीन अधिकारियों पं० जगदेवसिंह सिद्धांती, पं० रघुवीरसिंह शास्त्री, आचार्य रामदेव, प्रो० रामसिंह तथा श्री रामनाथ भल्ला को पूर्ण सहयोग दिया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का बटवारा होने पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को न्याय दिलवाने में भी निःशुल्क कानूनी सहायता दी। आपने हिन्दी रक्षा आंदोलन में भी बढ़-चढ़कर भाग लिया था। जालन्धर के आर्यसमाज श्रद्धानन्द बाजार तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं की भी सहायता करने में कभी भी पीछे नहीं रहे। आप जालन्धर से विधायक भी चुने गये थे।

इनके निधन की सूचना मिलने पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालय में सभा उपप्रधान म० भरतसिंह की अध्यक्षता में शोक सभा हुई, जिसमें दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिये ईश्वर से प्रार्थना की गई।

—केदारसिंह आर्य

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ का स्थापना समारोह

२८ सितम्बर से ३ अक्तूबर तक प्रात ७ से १०-३० बजे तक तथा सायं ३ से ६-३० बजे तक

ब्रह्मा—स्वामी जीवनानन्द जी, मुख्याधिष्ठाता, वेद मन्दिर, ज्वालापुर (हरिद्वार)।

वेदपाठी—ब्र सुभाषचन्द्र जी शास्त्री एवं ब्र गजानन्द जी शास्त्री, गुरुकुल गौतम नगर, दिल्ली।

आशीर्वादार्थ—सवश्री स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती, स्वामी मनीषानन्द सरस्वती, स्वामी जगतमुनि, स्वामी देवेन्द्रानन्द गिरि (वेदांत आश्रम), पं ईश्वरचन्द्र शास्त्री (गुडगांव), प रामाश्रय पुरोहित व पं सत्यपाल मधुर' सनोताबाय पुरोहित आदि पधार रहे हैं।

आर्य महासम्मेलन शनिवार ३ अक्तूबर साय ४ बजे से

अध्यक्ष—स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली।

मुख्य अतिथि–प्रो शेरसिंह प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा, महाशय धर्मपाल, प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य।

वक्ता—स्वामी प्रेमानन्द सरस्वती आचार्य दयानन्द संन्यास आश्रम गाजियाबाद, स्वामी जीवनानन्द (ज्वालापुर), डा धर्मपाल (महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा), प्रिंसिपल ओमप्रकाश नई दिल्ली आचार्य हरिदेव (गौतम नगर, दिल्ली)।

संयोजक—श्री [illegible] (महामन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य)।

यज्ञ की पूर्णाहुति
रविवार ४ अक्तूबर प्रात: ७ से ९ बजे तक

राष्ट्रीय एकता सम्मेलन
रविवार ४ अक्तूबर प्रात ९ से ११ बजे तक

अध्यक्ष—श्री ओमप्रकाश भारद्वाज, मन्त्री हरयाणा सरकार

वक्ता—स्वामी प्रेमानन्द सरस्वती, स्वामी [illegible], श्री [illegible] एम एल ए (बहादुरगढ़ क्षेत्र), श्री [illegible] एम. एल. ए. ([illegible] क्षेत्र), श्री ओमप्रकाश तायल (नांगलोई)।

संयोजक—ब्र० राजपाल आर्य।



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 रजि० न०

फोन ४८१२



ओ३म् कृण्वन्तो विश्व

सर्वहितकारी

रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री

सह-सम्पादक—डा० यज्ञवीर

वर्ष १४, अङ्क ४३ ७ अक्तूबर, १९८७ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

आर्यजगत् के महान् नेता एवं वेदो के प्रकाड विद्वान्—

पं० जगदेवसिंह सिद्धांती शास्त्री की ८७वीं जयन्ती सम्पन्न

(केदारसिंह आर्य कार्यालय संवाददाता द्वारा)

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी विजयदशमी पर्व पर आर्यजगत् के महान् नेता एवं वेदों के प्रकांड विद्वान् पं० जगदेवसिंह सिद्धांती शास्त्री की ८७वीं जयन्ती आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालय सिद्धांती भवन, रोहतक में सभा उपप्रधान म. भरतसिंह वानप्रस्थी की अध्यक्षता में २ अक्तूबर को प्रातः ८ से १ बजे तक मनाई गई।

यज्ञ के साथ कार्यवाही आरम्भ हुई। जयन्ती समारोह का संचालन करते हुए सभा के पूर्व मन्त्री प्रो. सत्यवीर शास्त्री ने पं. जगदेवसिंह जी सिद्धांती की जयन्ती के महत्त्व पर प्रकाश डाला और स्मरण करवाया कि श्री सिद्धांती जी ने उत्तरी भारत के लगभग सभी नगरों तथा ग्रामों में ऋषि दयानन्द के सिद्धातों का प्रचार तथा प्रसार करने के लिए सारा जीवन लगा दिया। वे सादगी तथा निडरता के प्रतीक थे। उनसे पूर्व ग्रामीण जनता केवल भजन मण्डलियों के गीतों को सुनती थी। विद्वानों के व्याख्यान सुनने की रुचि प्रारम्भ करने का श्रेय श्री सिद्धांती जी को है, जिन्होंने ग्रामीण भाषा में वेदों पर व्याख्यान देकर नर-नारियों को प्रभावित किया।

आप आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मन्त्री तथा प्रधानपद पर रहे तथा हरयाणा के आर्यों को इस विशाल संगठन में सम्मिलित किया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के गठन तथा निर्माण में आपने महत्त्वपूर्ण योगदान किया। आर्यसमाज की शानदार सेवाओं को स्मृति में ही हरयाणा सभा ने अपने भवन का नाम सिद्धांती भवन रखा।

सभा के महोपदेशक पं० सुखदेव शास्त्री ने इस बार २ अक्तूबर को ३ महापुरुषों के जन्मदिवस आने पर श्री महात्मा गांधी, श्री लाल बहादुर शास्त्री तथा श्री सिद्धांती जी उनके द्वारा किये गये शानदार कार्यों का उल्लेख किया और श्री सिद्धांती जी को एक आदर्श धार्मिक विद्वान्, समाज-सुधारक तथा राजनैतिक बताया।

डा० रणजीतसिंह पूर्व सभामन्त्री ने श्री सिद्धांती जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वे आधुनिक युग में एक ऋषि थे। उनका व्यक्तित्व बहुत ही आकर्षक था। वे उच्च विचार तथा सादा जीवन के प्रतीक थे। उनकी कथनी तथा करनी में अन्तर नहीं था। ग्रामीण जनता से उनका सीधा सम्पर्क होने के कारण उनमें बहुत लोकप्रिय थे।

सभा के उपदेशक पं० अर्जुनदेव आर्य ने आर्यसमाज के लोहपुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के साथ श्री सिद्धांती जी तथा स्वामी ओमानन्द जी (पूर्व आचार्य भगवान्देव) के साथ हरयाणा के ग्रामों में भ्रमण कार्यक्रम का उल्लेख करते हुए बताया कि हरयाणावी सैनिकों को अंग्रेजी सेना का खुलकर स्वाधीनता आंदोलन में प्रतिरोध करने को आर्य नेताओं ने तैयार किया था।

वाकस्मा वेदप्रचार मण्डल के नेता महावीर जी वानप्रस्थी ने श्री सिद्धांती जी को युग पुरुष बताते हुए कहा कि वे जिस भी क्षेत्र में रहे, वहां वैदिक सिद्धांतों पर अडिग रहे। हैदराबाद आर्य सत्याग्रह, हिन्दी रक्षा आंदोलन, गोरक्षा आंदोलन, हरयाणा निर्माण संघर्ष तथा आर्यसमाज के प्रचार को ग्राम-ग्राम तक पहुंचाने में उनके योगदान को सदा स्मरण रखा जायेगा। सभा के उपदेशक श्री सुरेश शास्त्री ने आर्यसमाज में अपने प्रवेश करने का श्रेय श्री सिद्धांती जी को दिया। ७वीं कक्षा में पढ़ते हुए श्री सिद्धांती जी का व्याख्यान सोनीपत में सुनने पर प्रभावित हुआ था। स्वामी सेवानन्द मन्त्री शुद्धि सभा ने श्री सिद्धांती जी को श्रद्धांजलि देते हुए उन्हें आर्यसमाज का महान् नेता बताया।

डा० यज्ञवीर जी ने इस अवसर पर श्री सिद्धांती जी को एक प्रकाशस्तम्भ बताते हुए उनके जीवन को आर्यसमाज का कर्णधार बताया। सभा के वेदप्रचाराधिष्ठाता श्री रघुबीरसिंह ने हिन्दी रक्षा आन्दोलन में श्री सिद्धांती जी के योगदान का उल्लेख करते हुए कहा कि वे अपने प्रत्येक साथी के सुख-दुःख में शामिल रहते थे तथा मार्गदर्शन करते थे। हमें सिद्धांती स्मारक को आर्यसमाज का प्रभावशाली प्रचार केन्द्र बनाना चाहिए। सभामन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री ने श्री सिद्धांती जी के साथ अपने सम्पर्क का उल्लेख करते हुए कहा कि मुझे उनका शिष्य होने का गौरव है। श्री स्वामी ओमानन्द जी की इच्छा है कि उनकी स्मृति को बनाये रखने के लिए उनके सभी ग्रंथों का सभा की ओर से प्रकाशन किया जाये।

सभा के उपप्रधान म० भरतसिंह ने अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री सिद्धांती जी के गुणों का गान तथा उनके ऐतिहासिक कार्यों का उल्लेख किया। इस अवसर पर पं० जयपाल आर्य, पं० ईश्वरसिंह तूफान, पं० चिरंजीलाल तथा स्वामी देवानन्द की भजन मण्डलियों ने भी अपने गीतों द्वारा श्री सिद्धांती जी को भावभीनी श्रद्धांजलि भेंट की।

आकाशवाणी रोहतक की ओर से जयन्ती समारोह का प्रसारण ३ अक्तूबर को रात्रि के हरयाणा दर्शन में किया गया।

सतीकांड की निन्दा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा २ अक्तूबर को सिद्धांती जयन्ती समारोह पर निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास हुआ—

आर्यजगत् के महान् नेता पं. जगदेवसिंह सिद्धांती के जयन्ती समारोह में उपस्थित सभी आर्य नरनारी राजस्थान के ग्राम देवराला में हुए सतीकांड की घोर निंदा करते हैं तथा राजस्थान सरकार से मांग की जाती है कि इस कांड में सम्मिलित सभी अपराधियों को कड़े से कड़ा दण्ड दिया जाये। सतीप्रथा को समाप्त करने के लिए जो सरकार द्वारा अध्यादेश जारी किया गया है, उसका स्वागत करते हुए यह सभा सरकार को विश्वास दिलाती है कि आर्यसमाज इस कुप्रथा को समाप्त करने के लिए पूरी शक्ति लगायेगा।

यह सभा शंकराचार्य द्वारा सतीप्रथा का समर्थन करने पर उनकी भर्त्सना करते हुए उन्हें शास्त्रार्थ करने का चैलेंज करती है।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

स्वामी वेदानन्द सरस्वती—एक दिव्य ज्योति पुंज

लेखक—स्वामी आनन्दवेश, संचालक गुरुकुल शुक्रताल

भारत का एक महान् संन्यासी जो १८-८-८७ को निर्वाण को प्राप्त होगया। वह अपनी धवल कीर्ति से पृथ्वी के क्षितिज पर जब तक सूर्य और चन्द्र तारे रहेंगे, तब तक एक ज्योति पुंज के रूप में सदा-सदा देदीप्यमान रहेगा। उस दिव्य संन्यासी का जगत् विख्यात नाम स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती है। आप मुजफ्फरनगर जिले के टण्ढेड़ा ग्राम में सन् १९३६ में जन्मे थे। आपके पूज्य पिता श्री चौ० जिलेसिंह जी एक प्रतिष्ठित एवं धार्मिक व्यक्ति है। चौधरी जिलेसिंह जी का परिवार प्रारम्भ से ही अपने आदर्श क्रियाकलाप से समाज तथा अपने क्षेत्र में एक विशिष्ट महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

स्वामी वेदानन्द सरस्वती जहां वेदो के प्रकांड विद्वान् थे, वहां वे प्रखरवक्ता भी थे। वे सन्त शिरोमणि थे, युवक हृदय सम्राट् थे, परम तपस्वी थे, वीतराग महात्मा थे, आदित्य ब्रह्मचारी थे, अपूर्व लेखक थे, बल के भण्डार थे, योगिराज थे और वे आर्यजगत् के प्रकाशस्तम्भ। भारत के कोने-कोने में जाकर उन्होंने वेदों का शंखनाद किया था। पंजाब, हरयाणा, दिल्ली, राजस्थान, गुजरात, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र आदि देश के सभी प्रान्तों में उन्होंने जनजागरण का बिगुल बजाया था। हर प्रान्त में उनके हजारों श्रद्धालु भक्त और शिष्य है। उनकी ओजस्वी वाणी में कुछ ऐसा जादू था कि जो भी उनका प्रवचन सुनता था, प्रभावित हुए बिना नही रह सकता था। हजारों आर्यसमाजो में उनकी वेदकथा बड़ी उत्सुकता के साथ सुनी जाती थी। गंगा स्नान के मेले पर वे प्रतिवर्ष गुरुकुल महाविद्यालय शुक्रताल की शोभा बढाते थे।

वे युवकों के मुख्य आकर्षण बिन्दु एवं प्रेरणा के स्रोत थे। पंजाब आर्य युवक परिषद् के वे वर्षों अध्यक्ष रहे। उनके आह्वान पर हजारों युवक आर्यसमाज मे बढ-चढ़कर भाग लेते थे। उनसे ही प्रभावित होकर हजारो युवक आर्यसमाज की दीक्षा से दीक्षित हुए। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब उनसे मार्ग प्रदर्शन लेती थी।

आज से २१ वर्ष पहले उन्होने रोपड़ (पंजाब) में वैदिक साधु आश्रम की स्थापना की और बड़ी कुशलता के साथ इस संस्था का अब तक संचालन किया। यह उनकी तपोस्थली है। यहां का कण-कण तप, त्याग, साधना एवं शांति का सन्देश देता है।

३०-८-८७ को उनके श्रद्धांजलि समारोह के अवसर पर उनके हजारो श्रद्धालुओ ने अपनी श्रद्धांजलियां अर्पित कीं और यह संकल्प लिया कि हम यहां स्वामी वेदानन्द जी द्वारा लगाई गई आश्रम वाटिका को मुरझाने नही देंगे। हम उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने में तन, मन, धन सब अपना न्यौछावर कर देंगे। इस अवसर पर स्वामी जी की विमल कीर्ति को चिरस्थाई रखने के लिए उनके नाम पर एक भव्य विशाल स्मारक बनाने की योजना बनाई गई है। इस स्मारक का शिलान्यास स्वामी सर्वानन्द जी महाराज दीनानगर के करकमलो द्वारा सम्पन्न हुआ। हजारो लोगों ने आश्रम के संचालन और स्वामी वेदानन्द जी के जीवन चरित्र लिखने का अधिकार स्वामी आनन्दवेश जी महाराज को सौंपा। स्वामी आनन्दवेश जी की मार्मिक अपील पर श्रद्धालु नर-नारियो ने दिल खोलकर आश्रम को योगदान देने का व्रत ग्रहण किया।

निधन के समय स्वामी जी की आयु केवल ५२ वर्ष की थी। वे भरी जवानी में दिल के अनेको अरमान साथ लेकर चले गये। स्वामी वेदानन्द जी जैसे साधु को कोई विरली माता पैदा करती है। मुजफ्फरनगर की जनता को स्वामी जी पर बड़ा गर्व था। स्वामी जी ने जहां अपने माता-पिता का नाम ऊंचा किया है वहां मुजफ्फरनगर को भी दूर-दूर तक प्रकाशित किया है। स्वामी जी के असमय में चले जाने पर आर्यजगत् की जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति निकट भविष्य में असम्भव नजर आती है। उनका चला जाना आर्यजगत् पर एक भीषण असह्य वज्रपात समझा जारहा है।

दिवंगत आत्मा के प्रति हमारी यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी कि हम उनके अधूरे कार्यों को पूरा करें और उनके पदचिह्नों पर चलकर सन्तों की परम्परा को स्थिर रखें।

महफिल में तेरे बिना आज अन्धेरा है।
लाखो चिराग जलायेंगे रोशनी के लिए ॥

मेरी चीन यात्रा—

जनसंख्या के बाढ़ को रोकने के लिये एशिया के सांसदों का सम्मेलन

—प्रो० शेरसिंह सभाप्रधान

चीन की राजधानी बेजिंग में २३ सितम्बर से २५ सितम्बर तक एशिया के २३ देशों के सांसदों का एक सम्मेलन राष्ट्र संघ के सहयोग से हुआ। इस सम्मेलन में सभी देशों के और उन देशों के सत्ताधारी तथा विरोधी दलों के सांसदों ने भाग लिया। भारत की ओर से भी कांग्रेस तथा विरोधी दलों के १८ प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। एशिया महाद्वीप में बढ़ती हुई जनसंख्या पर रोक लगाने के लिए यह दूसरा सम्मेलन था। पहिला सम्मेलन भारत में हुआ था और तीसरा सम्मेलन १९९० में थाइलेंड में होने की सम्भावना है। इस संस्था के अधिकारियों में अध्यक्ष जापान का, संयुक्त अध्यक्ष चीन का तथा महामन्त्री भारत का चुना गया। एशिया महाद्वीप में न होते हुए भी आस्ट्रेलिया भी इस सम्मेलन में सम्मिलित हुआ और कोषाध्यक्ष का पद उसको दिया गया। ५ अन्य देशों के उपाध्यक्ष बनाये गये।

विश्व की जनसंख्या अब ५ अरब हो चुकी है और उसका ५८ प्रतिशत केवल एशिया में निवास करते हैं। कुछ ही वर्षों में एशिया की जनसंख्या ३ अरब को पार कर जायेगी। एशिया, अफ्रीका और दक्षिण अमरीका में जनसंख्या तेजी से बढ रही है और यही तीनों महाद्वीप गरीबी और भूखमरी के शिकार हैं। इस सम्मेलन में मुख्य मुद्दे यही थे कि गरीब राष्ट्रों की आर्थिक और सामाजिक उन्नति कैसे हो और इन की तेजी से बढती हुई आबादी पर नियन्त्रण किस प्रकार किया जाये। एशिया में बढ़ती हुई आबादी और बेरोजगारी के कारण आबादी का शहरीकरण बढ़ता जा रहा है। लोग देहात से रोजगार की तलाश में शहरों में जाते हैं और वहां गन्दी बस्तियां बनाकर रहने लगते हैं। शहरों में बढ़ती हुई आबादी को सुविधायें देते-देते ग्रामीण जनजीवन को कम से कम सुविधाओं से भी वंचित रहते हैं और शहरों में उनका पलायन अधिक होता जाता है। ऐसा अनुमान है कि सन् २०२५ तक एशिया में शहरों की आबादी जो १० वर्ष पहिले तक केवल २० प्रतिशत थी वह ४० प्रतिशत हो जायेगी। यह आवश्यकता अनुभव की गई कि छोटे कस्बे और छोटे शहर ही बसे, उद्योग बड़े शहरों में इकट्ठे न हो, देहातों में लगाये जाये और उन जगहों पर छोटे कस्बे और शहर बन जायें। पुरुषों और महिलाओं तथा लड़के लड़कियों के बीच भेदभाव समाप्त हों, बुढ़ापे में जीवन चलाने के लिये पेंशन और मुफ्त इलाज की सुविधा सबको मिले और दो से ज्यादा बच्चे एक दम्पत्ति के द्वारा पैदा न किये जायें। आबादी की बढ़ोतरी रोकना और देहातों में शहरी जीवन जैसी ही जीवन की मौलिक जरूरतों का प्रबन्ध करना चाहिये। सब के लिये दो समय की रोटी, पीने को अच्छा साफ पानी, इलाज का प्रबन्ध, रहने के लिये मकान, शिक्षा और रोजगार आदि का समुचित प्रबन्ध हो। अपने-अपने देशों के सांसद अपनी संसदों में इस प्रकार के कानून बनवाये, अपनी-अपनी सरकारों से उन कानूनों पर सख्ती से अमल करवायें। मेरे इस प्रस्ताव को भी सब ने स्वीकार किया कि मालदार और उन्नत राष्ट्र, हथियारों की होड समाप्त करे, परमाणु अस्त्रों को समाप्त करे और ९०० अरब डालर जो वर्षभर में हथियारों पर खर्च होते हैं उनसे बचाकर कम से कम उसका चौथाई यदि गरीब देशों की उन्नति में लगाय तो गरीब राष्ट्र भी उन्नति के रास्ते पर आगे बढ़ सकते हैं और बुढापे को सम्मानपूर्वक बिताने के लिये यदि उस धन में से सुविधा मिलने लगे तथा गांव भी शहरों की तरह सब प्रकार की सुविधायें प्राप्त कर पायें तो शहरीकरण, बेरोजगारी आबादी की बाढ़, भूखमरी, निरक्षरता आदि समाप्त हो सकते हैं और सभी इन्सानों को इन्सानों जैसा जीवन जीने का मौका मिल सकता है। गरीब राष्ट्रों को भी अपनी समस्याओं को बातचीत के द्वारा हल करने का संकल्प लेना चाहिये, ताकि उनका धन हथियारों में खर्च न होकर गरीबों और देहात में बसनेवालों का जीवन अच्छा और सुखी बनाने में लगे।

अनेक विद्वानों ने अलग-अलग विषयों पर अपने निबन्ध पढे और समस्याओं की तह तक गये। तीन दिन तक खुलकर चर्चा हुई। एक-एक विषय को लेकर दिन में चार-चार बैठकें होती थी और ८ विषयों पर बैठकें होने के पश्चात् उनका निचौड़ निकालकर एक घोषणा-पत्र तैयार किया गया, जिसके आधार पर सभी राष्ट्रों के सांसद अपने-अपने राष्ट्रों की सरकारों पर अमल करने के लिए जोर देंगे। क्योंकि सभी सत्ताधारी तथा विरोधी दलों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए, इसलिये इसमें कोई विवाद की बात नही उठ सकेगी और इस दिशा में सभी राष्ट्रों में इस दिशा में कारगर कदम उठ सकेंगे।

आनेवाले लेखों में चीन में जनसंख्या के नियन्त्रण पर उठाये गये कदमों तथा वहां के जीवन की चर्चा होगी।

(क्रमशः)

श्री सिद्धांती जी की जयन्ती में गाया गया एक गीत

टेक—सिद्धांती जी का जीवन कितना प्यारा है।
धर्म कर्म पर जीवन सारा वारा है॥

जगदेव सिद्धांती जी का था जन्म का गाम बहराना।
जीवन सादा विचार भी सादे सादा रखता था बाणा।
धर्म नही हारा है॥१

पुस्तक भी इनकी देखो सिद्धांत से भरी पडी हैं।
प्रक्षिप्त थी जितनी चीजें सारी उसने रगडी हैं।
किया निस्तारा है॥२

हैदराबाद में जाकर उसने निजाम के होश उड़ाये।
हिन्दी की खातिर कैरो के थे आपने पाव डिगाये।
वहां नही हारा है॥३

आओ सब मिलकर उनकी जयन्ती को आज मनाये।
जो काम किये थे ऊंचे उनको हम भी अपनाये।
फर्ज हमारा है॥४

कहे चिरंजीलाल मत भूलो सिद्धांत आप भी जानो।
वेदों के विरुद्ध जो बातें उनको यों ही मत मानो।
ये मेरा इशारा है॥५

आर्यसमाज नाहरी जि. सोनीपत में नशाबन्दी प्रचार

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से आर्यसमाज नाहरी जि० रोहतक में १९-२० सितम्बर को पं. जयपाल आर्य की भजनमण्डली ने नशाबन्दी प्रचार बहुत ही प्रभावशाली ढंग से किया। कुछ शराबियों ने शराब पीने का खण्डन करने पर विघ्न डालने का असफल प्रयत्न किया। परन्तु श्री जयपाल ने बडे धैर्य से प्रचार जारी रखा और प्रमाण देकर शराब की बुराइयों को समझाया।

स्मरण रहे इस ग्राम में आर्यसमाज के प्रयत्न से गतवर्ष शराब का ठेका बन्द करवाया गया था।

मृत्यु के पश्चात् जीव की क्या गति है ?

लेखक—श्री जगदेवसिंह सिद्धांती, शास्त्री

गतांक से आगे—

७—अनुहूतः पुनरेहि विद्वानुदयनं पथः।
आरोहणमाक्रमणं जीवतो जीवतोयनम् ॥
(अथर्ववेद पञ्चम कांड सूक्त ३०, मन्त्र ७)

भाषा—देवमार्ग व उत्तरायण मार्ग का उपदेश करते हैं। (अनुहूतः) विद्वानों से अनुशिष्ट, शिक्षित हो होकर (पुनः) फिर भी (विद्वान्) ज्ञानी होकर हे शिष्य तू (उदयनम्) ऊपर मोक्षधाम में, उन्नति की ओर ले जानेवाले (पथः) मार्गों को (एहि) प्राप्त हो (आरोहणम्) ऊपर चढ़ना (आक्रमणम्) आगे की ओर बढ़ना, यही (जीवतः जीवतः) प्रत्येक जीवनयुक्त की (अयनम्) वास्तविक गति है ॥७

८—देवा यज्ञमृतवः कल्पयन्ति हविः पुरोडाशं स्रुचो यज्ञायुधानि।
तेभिर्याहि पथिभिर्देवयानैर्यैरीजानाः स्वर्गं यन्ति लोकम् ॥
(अथर्ववेद अष्टादश कांड, सूक्त ४, मन्त्र २)

भाषा—(देव) देव विद्वान् पुरुष और राजागण भी और (ऋतवः) ऋतुये प्राण और होतागण, दिशायें, राजसभा के सदस्य आदि (यज्ञम्) यज्ञ (कल्पयन्ति) करते हैं। उसमें (हविः) हवि=अन्न (पुरोडाशम्) 'पुरोडाश' है और (स्रुच) आहुति देने के चमस, स्रुवे और प्राण और ये लोक (यज्ञायुधानि) यज्ञ करने के आयुध, हथियार वा उपकरण के समान हैं। (तेभि) उन (देवयानैः) देवों के गमन करने योग्य (पथिभिः) मार्गों से (ईजानाः) यज्ञ द्वारा देव उपासना करनेवाले लोग (स्वर्गं लोकम्) स्वर्ग, सुखमय लोक को (यन्ति) प्राप्त होते हैं ॥२

९—अनृणा अस्मिन्ननृणाः परस्मिन् तृतीये लोके अनृणाः स्याम।
ये देवयानाः पितृयाणाश्च लोकाः सर्वान् पथो अनृणा आ क्षियेम।
(अथर्ववेद ६ काड, सूक्त ११७, मन्त्र ३)

भाषा—लौकिक और पार्थिव दोनों ऋणों की विवेचना करते हैं—हम लोग (अस्मिन्) इस (लोके) लोक में और (परस्मिन्) परलोक में और (तृतीये लोके) तीसरे लोक में भी (अनृणा) ऋणरहित (स्याम) हो जाय। (ये देवयानाः) जो देवों, विद्वानों के जीवनयापन के योग्य देवयान लोक हैं और जो (पितृयाणाः च लोकाः) पितृयाण लोक हैं (सर्वान्) उन समस्त (पथः) मार्गों में (अनृणा) ऋणरहित होकर ही (आक्षियेम) रहा करे। इस लोक के दो प्रकार के ऋण हैं—एक तो जो अधमर्ण होकर उत्तम मार्गों से स्वर्ण, रजत, धान्य वस्त्रादि लिया जाता है, दूसरा पितृऋण, देवऋण और ऋषिऋण है। यज्ञों से देवों का ऋण उतरता है, विद्यावान् पुरुष ऋषियों का 'निधिगोपा' अर्थात् खज़ानची कहाता है। प्रजाओं से पितरों का ऋण उतरता है। इससे प्रजातन्तु टूटता नहीं। मनुष्यों के घरों में अतिथि रूप से रहने और भोजन करने से मनुष्यों का ऋण होता है। घर में अतिथियों को वास देने और भोजन वस्त्र देने से मनुष्यों का ऋण चुकता है। जो इन सब कार्यों को करता है वह 'कृतकर्मा' है, उसको सब प्राप्त होता है, वह सब पर विजय प्राप्त करता है ॥३

१०—यो ब्राह्मणं देवबन्धु हिनस्ति न स पितृयाणमप्येति लोकम् ॥
(अथर्ववेद कांड ५, सूक्त १८, मन्त्र १३)

भाषा—(यः) जो (देवबन्धुम्) देव, विद्वान् और ईश्वर की दिव्य शक्तियों वा ईश्वर को बन्धु माननेवाले (ब्राह्मणम्) ब्रह्मज्ञ, ब्राह्मण को (हिनस्ति) पीड़ा देता है (सः) वह (पितृयाणं लोकम् अपि) पितृयाण लोक को भी (न एति) प्राप्त नहीं होता। दो यान हैं—देवयान और पितृयाण ॥१३

११—वायो यत्ते तपस्तेन तं प्रति तप योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः ॥१
(अथर्ववेद कांड २, सूक्त २०, मन्त्र १)

भाषा—हे (वायो) सर्वव्यापक, सबके प्रेरक, सब में सूत्र रूप से विद्यमान होकर सब के धारक! परमात्मन् (यः अस्मान् द्वेष्टि) (यं वयं द्विष्मः) जो हम से द्वेष करता है और जिसको हम द्वेष करते हैं (यत् ते तपः तेन प्रति तं तप) जो तेरा पापनिवारक पश्चात्ताप बल है उससे उसको संतापित कर ॥१

१२—वायो यत्तेऽर्चिस्तेन तं प्रत्यर्च योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः।
(अथर्ववेद कांड २, सूक्त २०, मन्त्र ३)

भाषा—हे (वायो) परमात्मन् (योऽस्मान् द्वेष्टि) जो हमसे द्वेष करता है और इसी कारण जिससे हम भी द्वेष करने लग गये हैं (यत् ते अर्चिः तेन तं प्रत्यर्च) आपकी जो ज्ञानमय दीप्ति, ज्वालामय प्रकाश है उससे उस पातकी मूढ को भी ज्ञानवान् कर जिससे वह द्वेष छोड़कर सीधे मार्ग पर आजावे ॥३

१३—यद् वो अग्निरजहादेकमङ्गं पितृलोकं गमयं जातवेदाः।
तद् व एतत् पुनरा प्याययामि साङ्गाः स्वर्गे पितरो मादयध्वम् ॥
(अथर्ववेद कांड १८, सूक्त ४, मन्त्र ६४)

भाषा—हे पूज्य पितृपुरुषो ! (यद्) यदि (जातवेदाः अग्निः) सर्वज्ञ, ज्ञानवान्, प्रभु, राजा (वः) आप लोगों को (पितृलोकम्) पिता माता के पद तक (गमयन्) पहुंचाता हुवा (एकम् अङ्गम्) तुम्हारे एक अंग, स्त्री आदि किसी सम्बन्धी को (अजहात्) त्याग करा दे, पीछे छोड दे (तद्) तो (वः) तुम्हारे (एतत्) उस अंग को मैं (पुनः आप्याययामि) पुनः पूर्ण करूं, जिससे आप लोग, हे (पितरः) पितृपद पर विराजमान पुरुषो ! आप लोग (साङ्गाः) सम्पूर्ण अगों सहित (स्वर्गे) सुखमय लोक में (मादयध्वम्) हर्ष आनन्द का लाभ करें ॥६४

१४—अपेत वीत वि च सर्पतातोऽस्मा एतं पितरो लोकमक्रन्।
अहोभिरद्भिरक्तुभिर्व्यक्तं यमो ददात्यवसानमस्मै ॥
(अथर्ववेद कांड १८, सूक्त १, मन्त्र ५५)

भाषा—(अतः) इस लोक से हे जीव ! तुम (अप इत) दूर हो जाते हो। (वि इत) नाना दिशाओं में जाते हो, (वि सर्पत च) और विविध प्रकारों से जीवनयात्रा करते हो। (पितरः) पालक, पूर्व पुरुषा लोगों ने (अस्मै) इस अपने अधिकारी के लिये ही (एतम् लोकम्) यह लोक भोगने के लिये (अक्रन्) बनाया है। (यमः) सर्वनियन्ता परमेश्वर (अहोभिः) दिनों (अद्भिः) जलों और (अक्तुभिः) रात्रियों से (वि अक्तम्) विशेषरूप से कान्तियुक्त (अवसानम्) इस भूलोक को (अस्मै) इन जीवों के निवास के लिये (ददाति) देता है ॥५५

१५—प्रसद्य भस्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्ने।
संसृज्य मातृभिष्ट्वं ज्योतिष्मान्पुनरासदः ॥
(यजुर्वेद १२।३८)

पदार्थ—हे (अग्ने) प्रकाशमान पुरुष सूर्य के समान (ज्योतिष्मान्) प्रशंसित प्रकाश से युक्त जीव तू (भस्मना) शरीर दाह के पीछे (पृथिवीम्) पृथिवी (च) अग्नि आदि और (अपः) जलों के बीच (योनिम्) देह धारण करने के कारण को (प्रसद्य) प्राप्त हो और (मातृभिः) माताओं के उदर में वास करके (पुनः) फिर (आसदः) शरीर को प्राप्त होता है ॥३८

भावार्थ—हे जीवो तुम लोग जब शरीर को छोड़ो, तब यह शरीर राख रूप करके पृथिवी आदि पांच भूतों के साथ युक्त करो। तुम और तुम्हारे आत्मा माता के शरीर में गर्भाशय में पहुंच, फिर शरीर धारण किये हुए विद्यमान होते हो ॥३८

१६—पुनर्नो असुं ददातु पुनर्द्यौर्देवी पुनरन्तरिक्षम्।
पुनर्नः सोमस्तन्वं ददातु पुनः पूषा पथ्यां३ या स्वस्तिः ॥
(ऋग्वेद मण्डल १०, सूक्त ५९, मन्त्र ७)

(क्रमशः)

पानीपत के गांवों में अवैध शराब का जोर

पानीपत २९ सितम्बर (निस)। पानीपत उपमण्डल के पूर्वी क्षेत्र में स्थित गांव बबैल, राजाखेड़ी, कुटानी, बराना, पलेड़ी, बोहली, नगला रोडान ऐसे गांव हैं जहां सूखे का असर नाममात्र के है। यहां की समस्या दूसरी ही है। वह यह है कि दारु का प्रयोग तेजी से बढ़ता जारहा है। हैरानी तो यह है कि इन गांवों में एक भी सरकारी शराब का ठेका नहीं है, फिर भी यहां शराब की कोई कमी नहीं है।

गांव के लोग अब इतने अधिक चतुर हैं कि उनकी नाक के नीचे बेशक अवैध शराब का ठेका भी चलता हो, तब भी वे कुछ बताने को तैयार नहीं हैं। इसका कारण गांव के लोग बताते हैं कि गांव में अवैध शराब विक्रेताओं को शहरी पुलिस की पूरी 'शह' होती है। इन विक्रेताओं का विरोध व इनका नाम बताने पर ये लोग बाद में उनसे तरह-तरह के बदले लेते हैं।

राजाखेड़ी के ग्रामीणों के अनुसार यहां दो व्यक्ति पुलिस की मिलीभगत से 'जहरीली शराब' बेच रहे हैं। यह लोग शराब में कई तरह की मिलावट करते हैं। कई तरह के इंजेक्शन भी इसमें मिला देते हैं। एक युवक ने बताया कि सिगरेट का फूल (जली हुई राख) भी शराब में मिलाकर पिलाई जाती रही है, जो व्यक्ति के स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक है। यहां १२ वर्ष से लेकर ३५ वष तक के अधिकाश लोग दारु के आदी होगये हैं।

गांव बबैल में तो प्रतिदिन दोपहर को निकट के शराब के ठेकेदार मोटर साइकिलों पर शराब बेचकर जाते हैं। यहां भी दो-तीन व्यक्तियों ने घरो में शराब बेचने के अवैध ठेके खोल रखे हैं। दिलचस्प बात तो यह है कि पुलिस कभी-कभार इन अवैध शराब विक्रेताओं पर छापा तो मारती है परन्तु इनका बिगड़ता कुछ नही है।

इन्द्री क्षेत्र के गांव-गांव में अवैध रूप से शराब बेचकर जनता को शराब का आदी बनाया जारहा है। इन अवैध कार्यों से जनता पर पड़ रहे कुप्रभाव को देखते हुए युवावर्ग में चिंता छाती जारही है। कई जगह तो एक-एक दो-दो रुपये की भी दारु दी जाती है।

इन्द्री ब्लाक के गांव संगोहा, कमालपुर, बीबीपुर, गढी बीरबल, चंदसमंद, ढबकोली, गढ़ी गुजरान, खेडा, छप्पर, राजपुर, जैनपुर, जोहड़-माजरा, बुढनपुर और हजोरी आदि गांवो में अवैध शराब का व्यापार बड़े धड़ल्ले से चल रहा है। कई गांवों में तो इस धंधे से लाभ उठाकर नाबालिग बच्चे भी एक-एक दो-दो रुपये की शराब पीते देखे गये।

इन्द्री क्षेत्र के युवा संगठनों ने बताया कि इस प्रकार से अवैध रूप से शराब बेचनेवालों को जब हमने यह कार्य बन्द करने के लिए कहा तो उन्होंने उत्तर दिया, दुनिया की कोई भी ताकत हमें यह कार्य करने से नहीं रोक सकती। उनका यह भी कहना है कि पुलिस भी उन पर छापा मारकर छोड़ देती है।

सुविज्ञ सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार अवैध शराब के इस धंधे को चलाने के लिए शराब के ठेकेदार, पुलिस तथा सम्बन्धित अधिकारियों को 'मासिक' देकर यह अवैध कार्य सरेआम चला रहे हैं।

इन्द्री ब्लाक के युवा संगठनों के प्रधान ने हरयाणा के मुख्यमन्त्री चौ० देवीलाल से मांग की है कि जनता पर पड़ रहे इस बुरे प्रभाव को रोकने के लिए इस अवैध शराब के धंधे पर रोक लगाई जाये और जल्दी ही इस धन्धे को बन्द नहीं किया गया तो मजबूर होकर समस्त धार्मिक व सामाजिक एव युवा सगठन इस कार्य के विरुद्ध आंदोलन पर उतर आयेंगे।

आश्चर्य तो यह है कि एक तरफ तो प्रदेश में जबरदस्त सूखा पड़ा हुआ है। किसान गांवों में पहुंचनेवाले सरकारी व्यक्तियों से 'सूखा-राहत' की मांग कर रहे हैं, परन्तु पियक्कड़ों पर सूखे का कोई असर नहीं दीखता।

ग्रामीणों का कहना है कि चौ० देवीलाल के शासन में आने के बाद जहां गांवों में बिजली, पानी व पेंशन के मनीआर्डर आने लगे हैं, परन्तु अवैध शराब के विक्रेताओं में नई सरकार से भी कोई दहशत नही है। जिस कारण ग्रामीण वातावरण एक ओर जहां दूषित हो रहा है वहीं शराब पीने के बाद हो रहे झगड़ों से गांवों में आपसी भाईचारा समाप्त हो रहा है।

(दैनिक नवभारत टाइम्स से साभार)

वैदिक पारिवारिक सत्संग सभा हिसार का प्रस्ताव

चौ० हरिसिंह जी सैनी विधायक हरयाणा विधानसभा की अध्यक्षता में ता० ४-९-८७ को सर्वसम्मति से पास हुए प्रस्ताव प्रेषित हैं—

१—आज की यह सभा हरयाणा प्रदेश में राजकीय कार्यों में सार्वजनिक अंग्रेजी प्रयोग की निन्दा करती है, क्योंकि सरकारी कार्यालयों में सर्वथा अंग्रेजी भाषा का ही प्रयोग होता है, सरकार से संबधित सभी भवनों, विश्राम गृहों तथा कार्यालयों और राजमार्गों पर सब जगह अंग्रेजी का ही प्रयोग है। इसके अतिरिक्त सरकार के मन्त्रियो एवं विधायकों के कार्यक्रमों का लेखा विषय भी अंग्रेजी भाषा में ही छपा होता है। सरकारी अधिकारी तथा मन्त्री एव विधायक सभी जन-साधारण के प्रार्थना-पत्रों पर अपने हस्ताक्षर अंग्रेजी में करके ही अपने को गौरवशाली समझते हैं। अंग्रेजी को बढावा देने के लिए हरयाणा प्रांत जैसे हिन्दी रक्षक प्रदेश में धडाधड़ अंग्रेजी माध्यम के पब्लिक स्कूल खुल रहे हैं। जिसमें दयानन्द कालेज मैनेजिंग कमेटी दिल्ली और स्वामी प्रेमानन्द जी 'भिक्षु' भी ऐसे स्कूल खोलकर अंग्रेजी को बढ़ावा दे रहे हैं। अतः अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी भाषा को ही प्रथम स्थान शिक्षा और कार्य व्यवहार में अवश्य दिया जाये। इस सम्बन्ध में हमारे पास ठोस प्रमाण मौजूद हैं।

२—आज की यह सभा आपसे सानुरोध प्रार्थना करती है कि यह सभा पिछले २० वर्षों से नगर में नैतिक एव धार्मिक प्रचार-कार्य कर रही है, परन्तु इस सभा का अपना कोई भवन नही है, जिसके लिए आप कृपा करके नगर पालिका, हिसार के द्वारा भवन निर्माण हेतु ५०० वर्ग गज भूमि प्रदान करवाने का कष्ट करें, जिससे अन्य धार्मिक सगठनों की भांति अपना सत्संग भवन बना सकें।

वैदिक पारिवारिक सत्संग सभा, हिसार

गुरुकुल शुक्रताल का महोत्सव

वैदिक योगाश्रम, शुक्रताल का २३वां वार्षिक महोत्सव आश्रम के विशाल प्रांगण में कार्तिक शुक्ला द्वादशी से पूर्णिमा तक तदनुसार २ से ५ नवम्बर, १९८७ तक भारी धूमधाम के साथ मनाया जायेगा।

निवेदक—बलदेव नैष्ठिक (स्वामी आनन्दवेश)

स्वामी दयानन्द जन्मदिवस समारोह

नई दिल्ली २ सितम्बर। आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का १६४वां जन्मदिवस प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति डा० सत्यकेतु विद्यालंकार की अध्यक्षता में राजौरी गार्डन स्थित वेद संस्थान में श्रद्धापूर्वक मनाया गया। डा० वेदव्रत 'आलोक' एवं श्री आदित्यपालसिंह आर्य द्वारा लिखित स्वामी दयानन्द जी की जीवनी "अपना जन्मचरित्र" का डा० सत्यकेतु ने विमोचन किया। इस पुस्तक में स्वामी दयानन्द के जीवन के अज्ञात पक्षों विशेषकर १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम में उनके योगदान पर तथ्यों सहित प्रकाश डाला है। आर्यजगत् साप्ताहिक-पत्र के सम्पादक तथा इस समारोह के मुख्यातिथि श्री क्षितीश वेदालंकार ने कहा कि जितना इतिहास हमें ज्ञात है वह पूर्ण नहीं है और जो कुछ हम जानते है वह अन्तिम सत्य नहीं। यही कारण है कि आगे आनेवाली पीढ़ी भी सत्य का अन्वेषण कर लेती है। श्री आदित्यपालसिंह द्वारा स्वामी दयानन्द जन्मदिवस समारोह के विषय में किया गया अन्वेषण इसका प्रमाण है। साथ ही श्री क्षितीश जी ने भी यह बताया कि महर्षि दयानन्द ने अनेकों क्रांतिकारियों को प्रोत्साहित किया, कुछ के उनके साथ सीधे सम्बन्ध भी थे। जिस प्रकार राजस्थान के केसरीसिंह बारठ का परिवार जो १८५७ की क्रांति से लेकर लगातार ३ पीढ़ियों तक स्वतन्त्रता संग्राम से जुड़ा रहा। इस सन्दर्भ में उन्होंने आगे कहा कि पं० दीनबन्धु शास्त्री द्वारा बगला में लिखी पांडुलिपियों के अनुवाद और प्रकाशन की आवश्यकता है।

उल्लेखनीय है कि स्वामी दयानन्द की जन्मतिथि भाद्रपद शुक्ला नवमी का निर्णय हाल की खोजों से हुआ है और वेद संस्थान ने गतवर्ष पहली बार इस समारोह की परम्परा डाली थी। गाजियाबाद, इलाहाबाद एवं देहरादून के अनेक आर्यसमाजों में भी इसी प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किये।

—योगेन्द्र वधवा जनप्रचार मन्त्री

केकड़ी [अजमेर] में आर्य वीरदल का उद्घाटन

केकड़ी १३ सितम्बर। स्थानीय आर्यसमाज के तत्वावधान में आर्य वीरदल की नियमित शाखा का उद्घाटन प्रांतीय संचालक श्री सत्यवीर आर्य द्वारा किया गया।

इस अवसर पर श्री आर्य ने कहा कि आज की विषम परिस्थितियों में आर्यवीरों का दायित्व बहुत बढ गया है। दल के उद्देश्य आवश्यकता व अनिवार्यता पर श्री आर्य ने खुलकर प्रकाश डाला।

१९८८ में अलवर में होनेवाले आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के शताब्दी समारोह में केकड़ी से श्री अशोक आर्य के नेतृत्व में १०० आर्यवीरों को भेजने का सकल्प आर्यसमाज के पदाधिकारियों ने किया।

अन्त में सभाप्रधान श्री गजानन्द जी तेली के आशीर्वाद एवं शांतिपाठ के साथ सभा सपन्न हुई।

कार्यक्रम के आयोजन में श्री नारायणदास जी लढ्ढा का उल्लेखनीय सहयोग रहा।

—अशोक आर्य, संचालक आर्य वीरदल केकड़ी

वेदोपदेशक विद्यालय मे प्रवेशार्थ सूचना

हाई स्कूल या इसके समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण आजीवन वेदप्रचार का संकल्प १६ से २५ वर्ष की आयु के सभ्य स्वस्थ युवक प्रवेश के लिये सम्पर्क करें। भोजन, आवास, वस्त्र आदि व्यवस्थायें सर्वथा निःशुल्क उपलब्ध हैं।

—स्वामी वेदानन्द वैदिक
वेदोपदेशक विद्यालय ब्रह्मकुटी वेद मन्दिर
ब्रजघाट, जि० गाजियाबाद (उ०प्र०)

समालखा में हिन्दी दिवस प्रतियोगिता सम्पन्न

समालखा १४ सितम्बर। आज हिन्दी दिवस के अवसर पर श्री वैश्य उच्च विद्यालय के प्रांगण में आर्य वीरदल समालखा द्वारा हिन्दी दिवस तथा शिक्षक दिवस का संयुक्त भव्य आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के दो चरण रखे गये। प्रथम चरण में क्षेत्र के तीन दर्जन माध्यमिक, उच्च तथा वरिष्ठ विद्यालयों के छात्रों की भाषण प्रतियोगिता आयोजित थी। इसके लिये निम्न विषय निश्चित किये गये थे—

१ अध्यापक ही राष्ट्र निर्माता क्यों?, २. शिक्षा शिक्षक से या पुस्तक से, ३. बसे देश में देसी भाषा, ४. आज का शिक्षक किस ओर, ५. हिन्दी राष्ट्र के माथे की बिन्दी, ६. हिन्दी को आर्यसमाज की योगदान।

इस प्रतियोगिता में १३ टीमों ने भाग लिया। राजकीय उच्च विद्यालय मनाना का छात्र रामकुमार इसमें प्रथम, वैश्य उच्च विद्यालय समालखा का छात्र विनयकुमार द्वितीय तथा वैश्य कन्या उच्च विद्यालय समालखा की छात्रा सीमा तृतीय रही।

आयोजन का दूसरा चरण और भी रचनात्मक था। इसमें समालखा क्षेत्र के सर्वोत्तम शिक्षक के रूप में श्री चन्दगीराम मुख्य अध्यापक राजकीय उच्च विद्यालय बिहौली का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया। इस अवसर पर उन्हें सम्मानार्थ शाल तथा अभिनन्दन-पत्र भेंट किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य मर्मज्ञ डा० महावीर जी एम० ए०, पी-एच० डी० अध्यक्ष संस्कृत विभाग आर्य कालेज पानीपत ने की। उनका शिक्षक, शिक्षा तथा हिन्दी के महत्त्व पर प्रवाहपूर्ण सारगर्भित भाषण हुआ। अन्त में विजेताओं को पुरस्कार वितरित किये गये। जिनकी व्यवस्था ला० श्री किशनदास एजुकेशनल ट्रस्ट समालखा मण्डी की ओर से इसके प्रबन्धक श्री ऋषिप्रकाश के सौजन्य से थी।

आर्यसमाज समालखा के संरक्षण में आर्य वीरदल के इस जागृतिपूर्ण तथा रचनात्मक कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा कस्बे में हो रही है।

—मन्त्री आर्य वीरदल समालखा, करनाल

उठो! आर्यवीरो

धरा है प्रकम्पित, गगन रो रहा है,
भरत भूमि का क्यों तरुण सो रहा है।
मिटी जारही है सुसंस्कृति हमारी,
सहम-सी गई है स्वयं भूमि प्यारी।
मनुजता डरी-सी यहां छटपटाती,
दनुजता बिहसती, उसे है डराती।

बिलखती है सीता, बिलखता है मनुजत्व,
निडर बन बढ़ा जारहा आज दनुजत्व।
पौरुष हमारा पराजित हुआ है,
संघर्ष जनहित का चित अब हुआ है।
अन्याय बढ़ता, अनय है निरन्तर,
हुआ भ्रष्ट जन-जन का है आचरण।

लज्जा है लुटती यहां नारियों की,
नहीं शील-संकोच-शुचिता है बाकी।
कहां सो रहे हैं यहां राम वंशज,
बढ़े जारहे हैं असुरों के अग्रज।
उठो [आर्यवीरो ! तुम्हें अब शपथ है,
चुनौती है आयी, खुला आज पथ है।

तुम्हें राम बनना, है हनुमान बनना,
दनुजता से, बढ़कर तुम्हें आज लड़ना।
उठो ! मातृभू को चलो सांत्वना दो,
नरक तुल्य धरती को स्वर्गिक बनादो।
दनुजता के कदमों को, छोटा करो तुम,
दलित-दीन के कष्ट बढ़कर हरो तुम।
दयानन्द के स्वप्न साकार करना,
तुम्हें आर्य बनकर, प्रशस्त पथ है करना।

—राधेश्याम आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का

बिक्री हेतु वैदिक साहित्य

क्र०	पुस्तकों का नाम	मूल्य
१.	दी वेदाज (अंग्रेजीभाषा में)—स्वामी भूमानन्द जी	१-००
२.	दी प्रिंसिपल्ज आफ आर्यसमाज पं० चमूपति एम०ए०	१-५०
३.	जीवन ज्योति (वेदमन्त्रों की व्याख्या)—पं० चमूपति एम०ए०	३-००
४.	निहारिकावाद और उपनिषद्—पं० चमूपति एम०ए०	०-५०
५.	आर्यसमाज की विचारमाला—प० क्षितीशकुमार वेदालंकार	१-००
६.	निजाम की जेल में—लेखक प० क्षितीशकुमार ,,	२०-००
७.	ईसाइयों की प्रचार प्रणाली—पं० जगत्कुमार शास्त्री	००-१०
८.	आर्यसमाज और अस्पृश्यता निवारण-पं. ओम्प्रकाश त्यागी	००-५०
९.	बलिदान जयन्ती स्मृति ग्रंथ (आर्य शहीदों का परिचय)	४-५०
१०.	ईश्वर की सत्ता—डा० रणजीतसिंह	१-००
११.	हरयाणा के आर्यसमाज का इतिहास—डा० रणजीतसिंह	५-००
१२.	धर्म-प्रवेशिका —डा० रणजीतसिंह	३-००
१३.	धर्म-भूषण ,,	५-००
१४.	पंजाब का आर्यसमाज —प्रि० रामचन्द्र जावेद	२-००
१५.	आदर्श धातु रूपावली —महावीर आजाद शास्त्री	२-००
१६.	वैदिक उपासना पद्धति—डा० सुदर्शनदेव आचार्य	३-००
१७.	स्मारिका (हरयाणा प्रांतीय आर्यसमाज शताब्दी समारोह)	१-००
१८.	मूर्तिपूजा —सम्पादक पं० जगदेवसिंह सिद्धांती	००-५०
१९.	वेदस्वरूप निर्णय ,,	००-७५
२०.	वेदाविर्भाव ,,	१-००
२१.	वेदभाष्य पद्धति ,,	१-००
२२.	ईसाई पादरियों को आर्यसमाज की चुनौती-स्वा० दर्शनानन्द	०-१०
२३.	गोकरुणानिधि—स्वामी दयानन्द सरस्वती	०-२०
२४.	सत्यार्थप्रकाश ,,	६-००
२५.	महर्षि दयानन्द आत्मकथा ,,	०-५०
२६.	हमारा फाजिल्का —योगेन्द्रपाल	१-००
२७.	बड़ --स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती	१-५०
२८.	वीर हेमू ,,	००-७५
२९.	पीपल ,,	१-५०
३०.	मिर्च ,,	१-५०
३१	श्लीपद वा हाथीपांव की चिकित्सा ,,	०-२०
३२.	बिच्छू विष चिकित्सा ,,	०-५०
३३.	लवण ,,	१-२५
३४.	विदेशों में मैंने क्या देखा ,,	२-५०
३५.	नैरोबी यात्रा ,,	१-५०
३६.	ब्रह्मचर्य साधन ९-११ ,,	१०-००
३७.	,, १-२ ,,	१-००
३८.	,, ३ ,,	१-००
३९.	,, ४ ,,	--५०
४०.	,, ५ ,,	२-००
४१.	,, ६ ,,	३-००
४२.	,, ७-८ ,,	२-००
४३.	,, ९ ,,	३-००
४४.	,, १० ,,	१-५०
४५.	,, ११ ,,	२-००
४६.	हल्दी ,,	१-५०
४७.	नीम ,,	१-२५
४८.	पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय—प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु	१-५०
४९.	नास्तिक मत समीक्षा—पं० हरिदेव सर्राफ	००-१५
५०.	विश्व को आर्यसमाज का सन्देश—महात्मा वेदभिक्षु जी	००-२५

प्राप्ति स्थान

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्दमठ, सिद्धांती भवन, रोहतक।

शुद्धि समाचार

गत मास मेरे गांव झीवरहेडी जि० सहारनपुर में हरिजन १०० परिवार सवर्ण हिन्दुओं की ज्यादती से मुसलमान बन रहे थे। मैंने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आदेशानुसार उस गाव में जाकर देखा। सारी हरिजन बस्ती बाहर के पानी से तीन वर्षों से डूबती थी। उस हालात को देखकर मैंने तथा श्री शोभाराम आर्यसमाज गंगोह ने आमरण व्रत किया। फलस्वरूप लोगो ने उस पानी को निकालने का रास्ता दे दिया। तब उन सभी पीड़ित लोगों ने वैदिकधर्म का जय-जयकार किया और उन्होंने इस्लाम धर्म स्वीकार करने का निश्चय त्याग दिया।

—सेवानन्द शुद्धि संरक्षणीय समिति

हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

१ मैसर्ज परमानन्द साईंदितामल, भिवानी स्टैंड, रोहतक
२. " फूलचन्द सीताराम गांधी चौक, हिसार
३. " सन-अप-ट्रेडर्स सारग रोड, सोनीपत
४. " हरीश एजेन्सीज ४६९/१७ गुरुद्वारा रोड, पानीपत
५. " भगवानदास देवकीनन्दन सर्राफा बाजार पुराना, करनाल
६. " घनश्यामदास सीताराम त्रिचला बाजार, भिवानी
७. " कृपाराम गोयल रुड़ी बाजार, सिरसा
८. " कुलवन्त पिकल स्टोर्स शाप न० ११५, मार्किट न० १, एन० आई० टी० फरीदाबाद
९. " चन्द्रप्रकाश नवीनप्रकाश ३१८/५ जेकमपुरा, गुड़गाव

सूर्यग्रहण पर कुरुक्षेत्र में वेदप्रचार का आयोजन

सूर्य ग्रहण के मेले के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से यजुर्वेद पारायण यज्ञ तथा वेदप्रचार का महर्षि दयानन्द स्मारक धाम के प्रांगण में विशेष आयोजन किया गया। इस सारे कार्य में श्री वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री, श्री रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता तथा श्री म. भरतसिंह वानप्रस्थी सभा उपप्रधान, श्री भगवानसिंह सभा सम्पत्ति निरीक्षक एवं श्री आचार्य देवव्रत गुरुकुल कुरुक्षेत्र आदि का विशेष सहयोग रहा।

श्री रघुवीरसिंह जी वेदप्रचाराधिष्ठाता ने श्री भगवानसिंह जी सम्पत्ति निरीक्षक को साथ लेकर सभा भजनोपदेशक श्री विद्याभूषण तथा श्री देवव्रत आचार्य गुरुकुल कुरुक्षेत्र के सहयोग से आर्यसमाज थानेसर, आर्यसमाज अम्बाला छावनी, आर्यसमाज कालका एवं आर्यसमाज शाहबाद से लगभग दो हजार की धनराशि सूर्यग्रहण के अवसर पर आर्यसमाज के प्रचार के लिए दान रूप में एकत्रित की। सितम्बर प्रातः ७ बजे से यजुर्वेद पारायण महायज्ञ श्री बाबूराम जी के ब्रह्मत्व में प्रारम्भ हुआ। यज्ञ के पश्चात् अनेक विद्वानों के प्रभावशाली प्रवचन एवं भजन होते रहे। जिसमें विशेषकर सर्वश्री रणवीर शास्त्री, सुरेश शास्त्री, महेन्द्रसिंह शास्त्री व सुखदेव शास्त्री महोपदेशक के प्रभावशाली प्रवचन होते रहे।

सभा के भजनोपदेशक श्री सीताराम आर्य, पं० चिरंजीलाल, पं० ...चन्द्र, श्री विद्याभूषण एवं श्री ईश्वरसिंह तूफान के मनोहर गीत, ...गीत, भजन होते रहे। २१-२२ सितम्बर को विशाल आर्य सम्मेलन का आयोजन किया गया, जो प्रतिदिन दोपहर २ बजे से ५ बजे तक व रात्रि को ८ से १२ बजे तक होता रहा। यजुर्वेद पारायणयज्ञ की पूर्णाहुति सूर्यग्रहण की समाप्ति पर सम्पन्न हुई। इस सारे ही कार्यक्रम में समाज में फैली हुई कुरीतियों एवं बुराइयों का जोरदार खण्डन किया गया। जिसका बहुत ही प्रभावशाली असर रहा और इसी के फलस्वरूप महर्षि दयानन्द मार्कीट के दुकानदारों ने अन्न भण्डारा आदि का प्रबन्ध करके महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया। श्री नन्दकिशोर जी ने अपनी धर्मपत्नी के साथ २१ सितम्बर को यजमान के रूप में यज्ञ में उपस्थित होकर यज्ञोपवीत ग्रहण किया और १०१ रु० की दान रूप में आहुति डाली और इस सारे ही कार्य में इनका बड़ा सहयोग रहा। जिसकी बड़ी सराहना रही।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से वैदिक साहित्य का एक स्टॉल भी लगाया गया, जिसमें सभा के कर्मचारी श्री सत्यपाल व श्री वीरेन्द्र का सराहनीय योगदान रहा।

प्रायः सूर्यग्रहण के मेले में अनेकों सनातनधर्मी तथा अन्य मतावलम्बियों के मंच लगे थे, किन्तु आर्यसमाज के मंच का अपना विशेष महत्त्व था। आर्यसमाज के प्रचार का बुद्धिजीवी जनता पर बड़ा अच्छा प्रभाव रहा।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० 23207/73 रजि० न० P/RTK 49 फोन ४८९१



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

वर्ष १४, अङ्क ४४ १४ अक्तूबर, १९८७ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१ विदे... प्रति ५० पैसे

गौ तथा भैस की सर्वोत्तम हरयाणा नसल को बचाना हरयाणा... पुनीत कर्तव्य

सारा देश जानता है कि हरयाणा नसल का गाय बछडे और बैल देशभर में मशहूर हैं। इसी प्रकार हरयाणा की मुर्रा नसल की भैंस भी देश में सर्वोत्तम है।

जिस भयंकर सूखे का मुकाबला हरयाणा के आधे से ज्यादा जिलो की जनता को करना पड रहा है यह हमारी याद में कभी भी नही करना पडा। अन्न के भण्डार तो देश में हैं परन्तु पशुओ के लिये चारे और भूसे के भण्डार नही हैं। ज्यो ज्यो समय बीत रहा है, चारा और भूसा महगा तो होता ही जारहा है उनका मिलना भी कठिन से कठिन तर होता जारहा है।

किसानो को अपनी गाय, बछडे बछडिया, बैल और भैंसो को बचाने के लाले पड रहे हैं। ऐसे भयकर सूखे और अकाल से पीडित किसान साडो (खागड और झोटे) की सुध बुध ले पायगे, यह असम्भव होता जारहा है। हम सब भली प्रकार जानते हैं कि यदि साडो की पूरी देख रेख और चराई नही हो पाई और वे कमजोर होगये या मर गये तो हरयाणा की गाय और भैंस की नसलो मे गिरावट आजायेगी और वह हरयाणा और देश के लिये बहुत बडी हानि होगी। चाहिये तो अच्छे बछडे और कटडे चुनकर उनको साड बनाने के लिये उनको भी अच्छी खुराक दी जाये, परन्तु जो साड इस समय प्रदेश की मशहूर नसलो की अभिवृद्धि मे सेवारत हैं, उनको बचाया ही न जाये बल्कि उनको पूरी खुराक देकर हृष्ट पुष्ट रखा जाये।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का ध्यान इधर गया और उसने इस दिशा मे अपने कर्त्तव्य का पालन करने का सकल्प लिया है। हमने हरयाणा सरकार और भारत सरकार से भी निवेदन किया है कि वे एक तिहाई सहायता कर। यदि १५ रु० दैनिक व्यय एक साड पर आता है तो वे ५ रु० द और हरयाणा की जनता भी एक तिहाई हिस्सा वहन करे।

हमारा अन्दाजा है कि लगभग १००० साडो की रक्षा का भार हम सबको मिलकर उठाना होगा। ५ रु० प्रति साड जनता को इकट्ठा करना है। चारा और दाना दोनो का प्रबन्ध करना है।

हरयाणा के लोग जहा भी हो हरयाणा में या बाहर उन सब की सेवा मे हम पुरजोर अपील करते हैं कि वे इस पवित्र कार्य मे दिल खोलकर मदद कर और उदारता से चारा अन्न या नकद दान द।

मण्डियो के धर्म प्रेमी सभी व्यापारी भाइयो से विशेष अपील है कि वे हरयाणा की मशहूर गाय और भैंसो की नसल की रक्षा के लिये दिल खोलकर दान द।

निवेदक

ओमानन्द सरस्वती	प्रो० शेरसिंह	वेदव्रत शास्त्री	बद्रीप्रसाद आर्य
प्रधान	प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष
परोपकारिणी सभा	आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा		

प्रिय भाई, हम दुखी मन से इसे यहां छोड रहे हैं

श्रीभगवान् वशिष्ठ द्वारा भिवानी २० सितम्बर। गत सप्ताह भिवानी, रोहतक तथा हिसार जिलो के कुछ लोग सुबह जब अपने खेतो में पहुचे थे वहा पशुओ के झुडो को चरते देख हैरान रह गये। इन पशुओ के गलो में कुछ अनाम पर्चिया भी बन्धी हुई थी।

बाद मे पता चला कि इन पशुओ को अकाल से पीडित राजस्थान के कुछ इलाको के लोग ट्रको में भरकर यहा छोड गये थे। इन पशुओ के गलो मे बन्धी पर्चिया काफी मार्मिक थी।

एक पर्ची मे लिखा था प्रिय भाई, पशु पालते हमे तीन पीढिया होगई हैं। ये हमारे साथी हैं। पर इस बार हम मजबूर हैं। सूखे का हाल यह है कि दूर-दूर तक हरा तिनका भी नही दिखाई देता। पशुओ को पानी पिलाने की बात तो दूर, हम भी दस दिन से नही नहाये हैं। तुम इसको अपना समझकर पालो। हम दुखी मन से इसको यही छोड रहे हैं। जब भी दो पैसे की आमद होगी, हम इसको ले जायेंगे। भगवान् तुम्हारा भला करे।

इस प्रकार के पत्रो अथवा पर्चियो मे पशु के मालिक या शहर गाव का कही नाम नही है। कई स्थानो पर तो ब्याहने लायक पशु भी मिले हैं। ये पशु अब ग्रामीणो के लिए समस्या बन गये हैं। सूखे के कारण खुद के उनके पशु भूखे मर रहे हैं तो इन अनचाहे मेहमानो' को वे कहा से खिलाये।

(दैनिक ट्रिब्यून २१ ९-८७)

अन्तरग सभा की बैठक की सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरग सभा की एक आवश्यक बैठक २५ अक्तूबर, ८७ को प्रात १० बजे सभा कार्यालय सिद्धाती भवन, रोहतक मे होनी निश्चित हुई है। सदस्यो से निवेदन है कि यथा समय बैठक में पधारें।

– सभामन्त्री

मेरी चीन यात्रा—

आबादी के बाढ़ को रोकने के लिये चीन की नीति

—प्रो० शेरसिंह सभाप्रधान

गतांक से आगे—

चीन की आबादी इस समय १ अरब ६ करोड़ है, जो विश्व की जनसंख्या का २२ प्रतिशत के करीब है। चीन की अर्थव्यवस्था तथा तकनीक अपेक्षातर पिछड़ी हुई है, इसलिये आबादी की समस्या उसके लिये एक बुनियादी समस्या है। भारत के लिये भी यह समस्या उतनी ही बुनियादी है, क्योंकि भारत की अर्थव्यवस्था और तकनीक भी पिछड़ी हुई है। १९४९ की चीन की क्रांति के समय वहां की जनसंख्या ५४ करोड़ थी और १९८१ में वह १ अरब को पार कर गई। १९८१-८५ छठी पचवर्षीय योजना में उस पर रोक लगी, परन्तु उसके बावजूद चीन की आबादी ३२,००० प्रतिदिन और २२ प्रति मिनट बढ़ी। चीन में ६४ प्रतिशत से अधिक, ३० वर्ष से कम आयु के लोग हैं। इनमें से आधे से ज्यादा १४ वर्ष से कम आयु के हैं। अगले १० वर्षों में वहां २ करोड़ से अधिक शादी की आयु छूलेंगे और इस प्रकार १ करोड़ से अधिक जोड़े तैयार हो जायेंगे। इस शताब्दी के अन्त तक वे अपनी आबादी १ अरब २० करोड़ के ऊपर नहीं जाने देंगे।

लड़कियों की शादी की आयु पिछले १० वर्षों में १९ वर्ष से बढ़कर २२ वर्ष होगई है। १९८५ में २ करोड़ ६५ लाख बच्चे पैदा करने की आयु के जोड़ों ने केवल एक बच्चा पैदा करने का संकल्प लिया है।

आबादी रोकने के लिये तीन निर्णय चीन ने लिये हैं—

१—देर से शादी की जाये और केवल एक बच्चा पैदा किया जाये। शहरों में विशेष कारण से ही अपवाद के रूप में दूसरे बच्चे की इजाजत होगी, वरना केवल एक बच्चा ही पैदा किया जा सकेगा। देहात में सुनियोजित ढंग से दो बच्चे पैदा करने की इजाजत रहेगी, परन्तु एक बच्चा पैदा करने के लिये लोगों को तैयार किया जायेगा। जिन इलाकों (जैसे तिब्बत सिन्क्यांग आदि) में आबादी बहुत थोड़ी है। वहां दो बच्चे पैदा करने की आम इजाजत है और खास कारणों से ३ की भी इजाजत हो सकती है। इन इलाकों की आबादी चीन की आबादी का केवल ६ प्रतिशत है।

२—इनाम और जुर्माना—जो केवल एक बच्चा पैदा करते हैं उन को शिक्षा, इलाज, मकान, छुट्टी, खेती के लिये भूमि आदि में आर्थिक सहायता तथा प्राथमिकता मिलती है। दूसरे बच्चे के पैदा होने पर ये सब सुविधायें बन्द हो जाती हैं और शिक्षा, इलाज आदि के लिये माता पिता को अपनी आय का १० प्रतिशत तक जुर्माना के तौर पर देना पड़ता है। माता-पिता पर आर्थिक बोझ बढ जाता है।

३—निरोध के लिये जो भी तरीके अपनाये जायें उनके लिये सरकार की ओर से दवाई, इलाज आप्रेशन सब प्रकार की सुविधायें मुफ्त दी जायेंगी।

प्रचार—चीन में ८० प्रतिशत लोग देहात में रहते हैं और उनमें से अधिकतर लोगों को खेती से ही रोजगार मिलता है। जमीन थोड़ी है, इसलिये आबादी अधिक बढ़ने पर जमीन और कम होगी और बढ़ी हुई आबादी के लिये रोजगार के साधन और सीमित होते जायेंगे। छोटे-छोटे कस्बों और शहरों में उद्योग धन्धों में भी थोड़े आदमी ही खप सकते हैं। लोगों को यह सब जानकारी दी जाती है और उनके जीवन का स्तर ऊंचा उठाने, उनके बच्चों की अच्छी शिक्षा और देखभाल तथा रोजगार की अच्छी सम्भावनायें और सुखी जीवन का चित्र लोगों के मन-मस्तिष्क पर अंकित किया जाता है। इस प्रचार तथा दूसरे सरकारी कदमों के कारण चीन के लोगों में जहां चेतना जागी है वहां सरकार के दृढ़ संकल्प और मजबूत कदमों के कारण जनसंख्या पर वे लोग काबू पा सकेंगे, ऐसा विश्वास जमता है।

भारत की आबादी की समस्या चीन से कम जटिल नहीं है। हमारी जनसंख्या की बढ़ोतरी की रफ्तार चीन से अधिक है और अभी तक न तो यहां के गरीब लोगों में चेतना जागी है और न ही सरकार ने पक्के इरादे से कोई ठोस और मजबूत कार्यक्रम बनाये हैं। अल्पसंख्यक बहुसंख्यक के वावेले ने मामले को और पेचीदा किया है। जनसंख्या पर रोक लगाने का प्रश्न लोगों के जीवन और जीवन में सुख के साथ जुड़ा है। यदि आबादी की बाढ़ नहीं रुकी तो सारी अर्थव्यवस्था उसमें बह जायेगी। जमीन और प्राकृतिक संसाधन तो सीमित हैं, आज जमीन एकड़ नहीं बीघे और बिस्वों पर आगई है और उद्योग धन्धों की भी एक सीमा है। हमारे देश में निरक्षरता, गरीबी, भुखमरी, बीमारियां, बेरोजगारी जिस तेजी से आबादी बढ रही है उससे कहीं अधिक तेज रफ्तार से बढ़ती जारही है। इस दिशा में हमें चीन से बहुत कुछ सीखना है। यह ठीक है कि चीन के देहातों में इक्के-दुक्के ऐसी घटनायें भी हुई हैं कि लड़का पैदा करने के लिये माता-पिता ने लड़की को मार दिया। इस बुराई से वे अपने ग्रामवासियों को बचाने में पूरी तरह संलग्न हैं और लड़के लड़की के भेद की भावना को वे जीत पायेंगे। हमारे देश में भी तो सैकड़ों साल से जिस सती की प्रथा को समाज में समाप्त कर दिया था, एक घटना ने उसे फिर जीवित कर दिया। इन बुराइयों को समाप्त करने के लिये चेतना और दण्ड का सहारा लेना पड़ेगा। ऐसी घटनाओं से हतोत्साहित नहीं होना चाहिये।

(क्रमशः)

ऋषि-निर्वाण विशेषांक

ऋषि-निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में सर्वहितकारी का आगामी अंक ऋषि-निर्वाण विशेषांक प्रकाशित होगा। —व्यवस्थापक

मृत्यु के पश्चात् जीव की क्या गति है ?

लेखक—श्री जगदेवसिंह सिद्धांती, शास्त्री

गतांक से आगे—

भाषा—पृथिवी भूमिवत् सर्वाश्रय प्रभु (नः पूषा असु ददातु) हमें पुन-पुनः जीवन प्रदान करे (देवी द्यौ) सुखदात्री, तेजोमय सूर्यवत् प्रभुशक्ति, (पुनः) हमें बार-बार प्राण दो (अन्तरिक्षम्) अन्तरिक्षवत् विशाल अन्तर्यामी प्रभु (पुन) पुन-पुनः हमें प्राण, जीवन प्रदान करता है। (सोमः) सर्वोत्पादक प्रभु (नः तन्व पुन ददातु) हमें बार-बार देह प्रदान करता है, (पूषा) सर्वपोषक प्रभु (नः पथ्याम्) हमें सत्पथ प्रदान करे (याः स्वस्ति) जो सुख कल्याण कारक हों॥७

१७—आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भमन्तः।
त रात्रीस्तिस्र उदरे बिभर्ति त जात द्रष्टुमभिसं यन्ति देवा.॥
(अथर्ववेद कांड ११, सूक्त ५।१)

भावार्थ—आचार्य ब्रह्मचारी को प्रतिज्ञापूर्वक समीप रख के तीन रात्रि पर्य्यंत गृहाश्रम के प्रकरण में उसके आत्मा के भीतर गर्भरूप विद्या स्थापन करने के लिये उसको धारण कर और उसको पूर्ण विद्वान् कर देता और जब वह पूर्ण ब्रह्मचर्य और विद्या को पूर्ण करके घर को आता है तब उसको देखने के लिये सब विद्वान् लोग सम्मुख जाकर बड़ा मान्य करते हैं॥१

१८—व्रात्य पद के दो अर्थ कोषों में किये गये (३) जिसका उपनयन समय पर नहीं हुआ वह पतित माना जाता है। अथर्ववेद कांड १५, सूक्त ११।१ तथा वह यज्ञ द्वारा पुन अपने व्रत को प्राप्त करता है। दूसरा अर्थ यह है। अथ यो व्रात्यो व्रात्यब्रुवो नाम बिभर्ति—जो व्रात्य न होता हुआ (व्रात्यब्रुव) अपने को व्रात्य बतलाता है (केवल नाम बिभर्ति) नाममात्र धारण करनेवाला अतिथि (आगच्छेत्) आजाये तो फिर (कर्षेत् एनम्) क्या उसका अनादर करे? (न च एनम् कर्षेत्) उसका अनादर न करे, अपितु उसका भी सत्कार गृहस्थ करे॥१३

१—हन्त त इद प्रवक्ष्यामि गुह्यं ब्रह्म सनातनम्।
यथा च मरण प्राप्य आत्मा भवति गौतम॥
(कठ उपनिषद् २।५ ६)

२—योनिमन्ये प्रपद्यन्ते शरीरत्वाय देहिनः।
स्थाणुमन्येऽनुसंयन्ति यथाकर्म यथाश्रुतम्॥
(कठ उपनिषद् २।५)

बड़ी प्रसन्नता से हे गौतम! मैं तुझे गुह्य=गहन सनातन=नित्य अनादि ब्रह्म का प्रवचन करूंगा। जैसे कि मृत्यु को प्राप्त करके आत्मा जीव की क्या गति होती है।

(अन्ये) कुछ जीव (योनिम्) शरीर को प्राप्त करते हैं, कुछ दूसरे जीव जैसे कर्म होते हैं और जैसे (श्रुतम्) ज्ञान होता है तदनुसार (स्थाणुम्) नित्यस्थित परमेश्वर के (अनुसयन्ति) ब्रह्म का साक्षात् करते हैं। 'स्थाणु' का अर्थ यहां ईश्वर ग्रहण किया गया है।

क—अन्य प्रमाण-स्थाणुरचलोऽय सनातन.। भगवद्गीता २।२४ अर्थात् परमात्मा स्थाणु=अत्यन्त सूक्ष्म अचल और नित्य है।

ख—स्थाणु=ईश्वर=शिव=स्थिरः=उणादिकोष=ऋषि दयानन्द।

ग—स स्थाणुः भक्तियोगसुलभ। कालिदासकृत विक्रमोर्वशीयम्। अर्थात् वह स्थाणु=नित्य ईश्वर भक्ति और योग से संप्राप्य है। प्रत्यक्ष होता है।

घ—स्थाणु=नित्य सर्वगत ईश्वर—शतपथ ब्राह्मण ३।४।२।५॥

३—तदन्तरप्रतिपत्तौ रंहति सम्परिष्वक्तः प्रश्ननिरूपणाभ्याम्॥ वेदांत दर्शन ३।१।१ अर्थात् शरीरान्तरप्राप्तौ अर्थात् पुनर्जन्मनि सूक्ष्मदेहेन संलग्नः जीवात्मा अस्मात् शरीरान्निर्गच्छति प्रश्नोत्तरनिरूपणेन।

अर्थ—शरीरान्तर की प्राप्ति पर जीवात्मा सूक्ष्म देह के साथ इस वर्त्तमान शरीर से अन्यत्र चला जाता है।

४—आतिवाहिक शरीरयुक्तस्य तस्य स बीजधर्मी ह्यपराणि देहान्तराण्यात्मनि याति॥ चरक संहिता अर्थात् अतिवह शरीरयुक्त, वह बीजरूप दूसरी देहों में अपने आत्मा के जाने पर चला जाता है। (आयुर्वेद)

५—यह पांच सूक्ष्म प्राण, पांच सूक्ष्म भूत, पांच सूक्ष्म इन्द्रियां तथा मन और बुद्धि से युक्त सतरह तत्त्वोंवाला सूक्ष्मशरीर जन्म-मरण आदि में भी जीव के साथ जाता है॥ सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ९।

६—न स्थूलमिति नियम आतिवाहिकस्यापि विद्यमानत्वात्॥
(सांख्य दर्शन ५।१०३)

स्थूल हो हो यह नियम नहीं, क्योंकि अतिवह को ले जानेवाला भी शरीर रहता है।

७—सप्तदशैक लिङ्गम्॥ सांख्य ३।९

अर्थात् सूक्ष्म शरीर अठारह तत्त्वों से युक्त होता है।

८—तद्बीजात् सृतिः॥ सांख्य ३।३

अर्थात् जीवात्मा को देहांतरों में गति उपादान रूप सूक्ष्म शरीरों में होता है।

९—व्यक्तिभेदः कर्मविशेषात्॥ सांख्य ३।१०

अर्थात् कर्मविशेष के कारण आत्माओं में समानता होने पर भी भिन्नता होती है।

१०—तदधिष्ठानाश्रये देहे तद्वादात्तद्वादः॥ सांख्य ३।११

अर्थात् आत्मा के सूक्ष्म शरीर से उसके सम्बन्ध द्वारा होता है।

११—पूर्वोत्पत्तेस्तत्कार्यत्व भोगादेकस्य नेतरस्य॥ सांख्य ३।८

अर्थात् जब सूक्ष्म शरीर से युक्त आत्मा दूसरे शरीर मे जाता है तो बीच में किसी प्रकार का बाह्य विषयों से भोग प्राप्त नहीं होता।

१२—चिदवसानो भोग। सांख्य १।१०४

अर्थात् चित् की समाप्ति ही भोग माना जाता है।

१३—पुरुषार्थं संसृतिर्लिङ्गाना सूपकारवत्॥ सांख्य ३।१६

अर्थात् लिङ्गशरीरों का गमनागमन (पुरुषार्थ) चेतन आत्मा के लिये होता है। सब करणों की गति अनादि काल से बराबर रहती है। यह भोग और अपवर्ग के लिये है। अत चेतन आत्मा के लिये करण सदा बने रहते है।

१४—तथाशेषसंस्काराधारत्वात्॥ सांख्य २।४२

अर्थात् समस्त इन्द्रिया मनको मन बुद्धि को चेतनात्मा के लिए प्रधान साधन है।

१५—करण त्रयोदशविधमवान्तरभेदात्॥ सांख्य २।३८

यहां "करण द्वादशविधमवान्तरभेदात्" यह एक दर्शनकार ने सूत्र भेद कर दिया है।

अर्थात् जीवात्मा के करण साधन तेरह अथवा १२ प्रकार के हैं।

१६—प्राणगतेश्च॥ वेदांत दर्शन ३।१।३

सूक्ष्म देह प्राणों का स्थान है, अत सूक्ष्म देह दूसरे जन्म में जाता है।

१७—अग्न्यादिगतिश्रुतेरिति चेन्न भाक्तत्वात्॥ वेदांत ३।१।४

मरणकाल मे वाक् आदि इन्द्रिया दूसरे देह की प्राप्ति में जीवात्मा के साथ चली जाती हैं।

१८—वाङ्मनसि दर्शनाच्छब्दाच्च॥ वेदांत ४।२।१

अर्थात् वाणी मन मे चली जाती है।

१९—अत एव सर्वाण्यनु॥ वेदांत ४।२।२

सारी इन्द्रियां मन में प्रविष्ट हो जाती हैं।

२०—तन्मन प्राण उत्तरात्॥ वेदांत ४।२।३

अर्थात्—मन प्राण में चला जाता है क्योंकि मन मूर्च्छित हो जाता है।

२१—सोऽध्यक्षे तदुपगमादिभ्यः ॥ वेदांत ४।२।४

अर्थात् वह तेज स्वरूप प्राणशक्ति जीवात्मा में सविष्ट हो जाती है।

२२—समुत्क्रान्त प्राणोऽनुत्क्रामति ॥ वेदांत ४।४।२
अर्थात् प्राण भी अध्यक्ष—आत्मा में प्रविष्ट हो जाता है।

२३—भूतेषु तच्छ्रुते ॥ वेदांत ४।२।५

अर्थात् श्रुति में कहा है आत्मा भूतों में सनिविष्ट हो जाता है।

२४—तानि परे तथा ह्याह ॥ वेदांत ४।२।१५

अर्थात् सूक्ष्मभूत स्थूल शरीर से निकल जाता है। वह परमात्मा में प्राप्त प्रविष्ट हो जाता है।

२५—अविभागो वचनात् ॥ वेदांत ४।२।१६

अर्थात् मुक्त पुरुष परमात्मा में भेदाभाव से अवस्थित हो जाता है।

२६—समाना चासृत्युपक्रमादमृतत्वं चानुपोष्य ॥ वेदांत ४।२।७

अर्थात् यह उत्क्रांति समान होती विद्वान् ध्यानी और साधारण सबकी प्राण निकलने से पहिले अमृतत्व मोक्ष में असंस्पृश्य होती है।

२७—तदापीतेः संसारव्यपदेशात् ॥ वेदांत ४।२।८

अर्थात् जब तक सूक्ष्म शरीर तब तक संसार रहता है, क्योंकि वह संसार इसका कारण है।

२८—तदोकोऽग्रज्वलन तत्प्रकाशितद्वारो विद्यासामर्थ्यात् तच्छेष-गत्यनुस्मृतियोगाच्च हार्दानुगृहीतः शताधिकया ॥ वेदांत ४।२।१७

वह शरीर से निकलने पर तेजोरूप सूक्ष्म शरीरवाले जीवात्मा का स्थान हृदय होता है। प्रज्वलित प्रदेश के सहित प्रद्योतित गति और अनु-स्मृति के योग से, निष्क्रमण संकल्प सम्बन्ध से १०१ हृदय की नाड़ियों मस्तिष्क से विद्वान्-उपासक शरीर से निकल जाता है।

२९—अथ यत्रैतदबलिमानं नीतो भवति तमभित आसीना आहु-र्जानासि मां जानासि मामिति। स यावदस्माच्छरीरादनुत्क्रांतो भवति तावज्जानाति ॥ छांदोग्योपनिषद् ८।६।४

एव इस प्रकार शरीर के कृशोभाव को प्राप्त होने, जब मरने को इच्छावाला होता है, उसको चारों ओर घेरे हुए सम्बन्धी कहते हैं कि यह हमें जानता है, वह जब शरीर से बाहर निकल जाता है।

३०—यत्रैतदस्माच्छरीरादुत्क्रामत्यथैतैरेव रश्मिभिरूर्ध्वमाक्रमते।
एतद्वै खलु लोकद्वारं विदुषां प्रपदनं निरोधोऽविदुषाम् ॥
(छान्दोग्योपनिषद् ८ ६ ५)

अर्थात् यह जीव जब इस शरीर से निकलता है, इसके पश्चात् इन्हीं सूर्यकिरणों के द्वारा ऊपर को आक्रांत करता है। यही निश्चय से विद्वानों का लोकद्वार प्रपदन है और अविद्वानों का निरोध हो जाता है।

३१—रश्म्यनुसारी ॥ वेदांत ४।२।१८

यह ब्रह्मोपासक विद्वान् सूर्यकिरणों का अनुसरण करता है। उनके साथ ऊपर को चला जाता है।

३२—निशि नेति चेन्न सम्बन्धस्य यावद्देहभावित्वाद् दर्शयति ॥
वेदांत ४।२।१९

अर्थात् सूर्य रश्मियों का सम्बन्ध सदा बना हुआ है। मृत्युकाल का नियम नहीं है।

३३—अतश्चायनेऽपि दक्षिणे ॥ वेदांत ४।२।२०

अर्थात् इसी भांति कृष्णपक्ष में उपासक विद्वान् का रश्मि के अनु-सारी होता है वहां भी काल की बाधा नहीं होती।

३४—अर्चिरादिना तत्प्रथितेः ॥ वेदांत दर्शन ४।३।१

अर्थात् ब्रह्मोपासक विद्वान् इस प्रकार सूर्यकिरणों का अनुसरण करते हैं।

३५—योगिनः प्रति च स्मर्यते स्मार्ते चैते ॥ वेदांत दर्शन ४।२।२१

प्राणायामभ्यासियों के लिये तो नियम कहा गया है परन्तु ब्रह्मो-पासक योगियों के लिये समय का बन्धन नहीं है।

३६—जो विद्वान् इस प्रकार संन्यास लेकर विज्ञान योगाभ्यास करके शरीर छोड़ता है वह विद्वानों ही के महिमा को प्राप्त होकर स्व-प्रकाशस्वरूप परमात्मा के संग को प्राप्त होता है और जो योग विज्ञान से रहित है सो सांसारिक दक्षिणायनरूप व्यवहार में मृत्यु को प्राप्त होता है। वह पुनः-पुनः माता-पिताओं ही के महिमा को प्राप्त होकर चन्द्रलोक के समान वृद्धिक्षय को प्राप्त होता है और जो इन दोनों ही के महिमाओं को विद्वान् ब्राह्मण अर्थात् संन्यासी जीत लेता है वह उससे परे परमात्मा के महिमा को प्राप्त होकर मुक्ति के समय पर्यन्त मोक्ष सुख को भोगता है।

(संस्कारविधि सन्यास प्रकरण ॥ महर्षि दयानन्द सरस्वती)

३७—कः स परलोक. ? सुकृतदुष्कृतयोः परिणामः ॥ मृच्छकटिक

३८—उभयव्यामोहात्तत्सिद्धेः ॥ वेदांत दर्शन ४।३।५

अर्थात् देह से उत्क्रमण के जो साधन उनका सम्मूर्च्छन-संपीडित इन्द्रियां होने पर जीव कुछ नहीं कर सकता।

३९—लोकशब्दस्त्वनुपभुञ्जानेष्वपि गन्तृषु गमयितुं शक्यते ॥
वेदांत ४।३।५

अर्थात् लोक शब्द अनुपभोग होने पर भी जानेवालों में गमन का व्यवहार हो सकता है।

४०—सम्प्रति परिमुक्तो द्वाभ्याम् ॥ सांख्य दर्शन ३।६

अर्थात् आदि सर्गकाल से प्रलयकाल तक आत्मा के साथ सूक्ष्म शरीर का सम्बन्ध बराबर बना रहता है। स्थूल शरीर बीच-बीच में बदलता रहता है।

४१—अविशेषाद्विशेषारम्भ ॥ सांख्य ३।१०
अर्थात् तन्मात्राओं=सूक्ष्मभूतों से स्थूलभूतों का आरम्भ होता है।

४२—तस्माच्छरीरस्य ॥ सांख्य ३।२
अर्थात् स्थूल भूत (विशेष) से स्थूल शरीर का आरम्भ होता है अथवा (अविशेष) सूक्ष्मभूतसमूह से सूक्ष्मशरीर का आरम्भ होता है।

४३—मातापितृजं स्थूलं प्रायश इतरन्न तथा ॥ सांख्य ३।७
अर्थात् प्राय. करके स्थूल शरीर माता-पिता के सयोग से होता है। सूक्ष्म शरीर इस प्रकार से नहीं होता।

४४—अणुपरिमाणं तत्कृतिश्रुतेः ॥ सांख्य ३।१४
अर्थात् मन अणु परिमाण=मान कुछ स्थूल है।

४५—प्रथमेऽश्रवणादिति चेन्न एव ह्युपपत्ते. । वेदांत दर्शन ३।१।५

अर्थात् उत्कृष्ट द्यौलोक नामक अग्नि में सूक्ष्मदेहवाचिजलों के शरीर नहीं सुने जाते हैं।

४६—चन्द्रादिलोकेऽप्यावृत्तिनिमित्तसद्भावात् ॥ सांख्य ६।५६

अर्थात् चन्द्र आदि लोक में प्राप्त हो जाने पर आवृत्ति रूप लौटना होता है। क्योंकि आवृत्ति का कारण अविवेक बना रहता है।

४७—यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात् कुरुतेऽर्जुन।
ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात् कुरुते तथा ॥
(भगवद्गीता अध्याय ४, श्लोक ३७)

अर्थात् हे अर्जुन ! वैसे वे ज्ञानरूप अग्नि से सब कर्म भस्म कर दिये जाते हैं। इसका अभिप्राय यह है कि भौतिक अग्नि भौतिक पदार्थों को नष्ट कर देती, परन्तु ज्ञानरूप अग्नि कर्मरूप तत्वों को नष्ट नहीं कर सकती।

४८—संयमने त्वनुभूयेतरेषामारोहावरोहौ तद्गतिदर्शनात् ॥
वेदांत दर्शन ३।१।१३

अर्थात् पृथिवी से मेघमण्डल द्युलोकस्थ यमालय कहलाता है। उसका अनुभव करके अनिष्टादि करनेवाले पुन. लौटते हैं। पृथिवी पर वापस आजाते हैं। भोग भोगने के लिये चन्द्रलोक में नहीं जाते। जो इष्टादिकारी लोग हैं वे चन्द्रलोक को कैसे लौटते हैं। यही भाव आरोह अवरोह कहा जाता है।

४९—न तृतीये तथोपलब्धेः ॥ वेदांत दर्शन ३।१।१८

अर्थात् अनिष्टकारी कीट पतङ्ग देह को ग्रहण करनेवालों का तीसरा स्थान नहीं है।

५०—तस्याभाव्यापत्तिरुपपत्तेः ॥ वेदांत दर्शन ३।१।२२

अर्थात् इष्टादिकारी लोग चन्द्रादि में अपना कर्मफल भोगकर फिर पृथिवी पर लौट आते हैं।

५१—नातिचिरेण विशेषात् ॥ वेदांत दर्शन ३।१।२३

अर्थात् इष्टादिकारिजनों को वहां बहुत समय ठहरना नहीं होता है।

५२—अन्याधिष्ठिते पूर्ववदभिलापात् ॥ वेदांत दर्शन ३।१।२४

अर्थात् वहां रहते हैं, अतः उनका वहां स्थान नहीं है। उनका वहां संसर्ग मात्र ही होता है।

५३—अशुद्धमिति चेन्न शब्दात् ॥ वेदांत ३।१।२५

यदि उनको अशुद्ध कहा जाये तो यह ठीक नहीं, क्योंकि वहां अनुशयी जीव हैं।

५४—योनेः शरीरम् ॥ वेदांत दर्शन ३।१।२७

अर्थात् वीर्य सिंचन का वह प्रयोजन नहीं है। उनको स्थान तो अब योनि द्वारा शरीर में होता है।

५५—(प्रश्न) मनुष्य का जीव पश्वादि में और पश्वादि का मनुष्य के शरीर में और स्त्री का पुरुष के और पुरुष का स्त्री के शरीर में जाता आता है वा नहीं।

उत्तर—हां, जाता आता है, जब पाप बढ़ जाता पुण्य न्यून होता है, तब मनुष्य का जीव पश्वादि नीच शरीर और जब धर्म अधिक तथा अधर्म न्यून होता है तब देव अर्थात् विद्वानों का शरीर मिलता और जब पुण्य पाप बराबर होता है, तब साधारण मनुष्य जन्म होता है। इनमें भी पाप पुण्य के उत्तम मध्यम निकृष्ट होने से मनुष्य आदि में भी उत्तम मध्यम निकृष्ट शरीरादि सामग्रीवाले होते हैं और जब अधिक पाप का फल पश्वादि शरीर में भोग लिया है पुनः पाप पुण्य के तुल्य रहने से मनुष्य शरीर में आता और पुण्य के फल भोगकर फिर भी मध्यस्थ मनुष्य के शरीर में आता है। जब शरीर से निकलता है, उसी का नाम 'मृत्यु' और शरीर के साथ संयोग होने का नाम 'जन्म' है। जब शरीर छोड़ता है तब यमालय अर्थात् आकाशस्थ वायु में रहता है। क्योंकि 'यमेन वायुना' वेद में लिखा है कि यम नाम वायु का है, गरुड पुराण का कल्पित यम नहीं। इसका विशेष खण्डन मण्डन ग्यारहवें समुल्लास में लिखेंगे। पश्चात् धर्मराज अर्थात् परमेश्वर उस जीव के पाप पुण्यानुसार जन्म देता है। वह वायु, अन्न, जल अथवा शरीर के छिद्र द्वारा दूसरे के शरीर में ईश्वर की प्रेरणा से प्रविष्ट होता है। जो प्रविष्ट होकर क्रमशः वीर्य में जा, गर्भ में स्थित हो, शरीर धारण कर, बाहर आता है। जो स्त्री के शरीर धारण करने योग्य कर्म हों तो स्त्री और पुरुष के योग्य कर्म हों तो पुरुष के शरीर में प्रवेश करता है और नपुंसक गर्भ की स्थिति समय स्त्री पुरुष से शरीर में सम्बन्ध करके रजवीर्य के बराबर होने से होता है। इसी प्रकार नाना प्रकार के जन्म-मरण में तब तक जीव पड़ा रहता है कि जब तक कर्मोपासना ज्ञान को करके मुक्ति को नहीं पाता। क्योंकि उत्तम कर्मादि करने से मनुष्यों में उत्तम जन्म और मुक्ति में महाकल्पपर्यन्त जन्म-मरण दुःखों से रहित होकर आनन्द में रहता है। [विशेष जब तक ३६००० सहस्र बार सृष्टि की उत्पत्ति स्थिति और प्रलय होता है, उसी का नाम महाकल्प कहा जाता है। (ते ब्रह्मलोकेषु परांतकाले परामृता परिमुच्यन्ति सर्वे ॥]

(सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ९)

५६—शरीरं त्यक्त्वा जीवः खल्वाकाशस्थः सन्नीश्वरस्य व्यवस्थया स्वकृतपापपुण्यानुसारेण शरीरान्तरं प्राप्नोति यावत्पूर्वशरीरं त्यक्त्वाऽऽकाशे गर्भवासे बाल्यावस्थायां वा तिष्ठति न तावदस्य किञ्चिद्विशेषविज्ञानमुपपद्यते किन्तु यथा निद्रामूर्च्छागतो जीवो वर्त्तते तथा तस्यास्य गतिरिति ॥ (ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन)

अर्थात् शरीर छोड़कर जीव आकाश में रहता हुआ ईश्वर की व्यवस्था से स्वीकृत पाप-पुण्य के अनुसार शरीरांतर को प्राप्त होता है, जब तक पूर्व शरीर को छोड़कर आकाश में वा गर्भ में वा बाल्यावस्था में रहता है, तब तक उसको कुछ विशेष विज्ञान नहीं होता। किन्तु जैसे निद्रा और मूर्च्छित अवस्था में जीव रहता है। उसकी वैसी गति रहती है।

५७—तद्यथा तृणजलायुका तृणस्यान्तं गत्वान्यमाक्रममाक्रम्यात्मानमुपसंहरत्येवमेवायमात्मेदं शरीरं निहत्याविद्यां गमयित्वान्यमाक्रममाक्रम्यात्मानमुपसंहरति तं कर्मणी समन्वारभेते पूर्वप्रज्ञा च ॥

बृहदारण्यकोपनिषद् ४।४।३

अर्थात् जैसे तृण जलायुका मलजोंक तृण के अन्त में जाकर तिनके पर आक्रमण करती हुई अपने को दूसरी ओर पहुंचाती है यह उसका उपसंहार होता है एवं अपने शरीर को हनन करके अविद्या में अपने अवयव को परले पार पहुंचा देती है। इस प्रकार बार-बार आक्रमण करके अपने को उपसंहृत कर लेती है। उसकी पूर्वप्रज्ञा और कर्म दोनों एक साथ आरम्भ कर लेते हैं।

५८—अभ्रं भूत्वा मेघो भवति मेघो भूत्वा प्रवर्षति त इह व्रीहियवा ओषधिवनस्पतयस्तिलमाषा इति जायन्तेऽतो वै खलु दुर्निष्प्रपतरं यो यो ह्यन्नमत्ति यो रेतः सिञ्चति तद्भूय एव भवति ॥

छांदोग्योपनिषद् ५।१०।६

अर्थात् सामान्य बादल बनकर मेघ होता है। मेघ होकर बरसता है। वे यहां व्रीहि, यव, औषधि, वनस्पति, तिल, उड़द उत्पन्न होते हैं। वे निश्चय से, दुःख से, प्रपतर दुःख से निःसरण होते हैं। जो-जो अन्न खाता है वह-वह वीर्य का सिंचन करता है। फिर पुनः उसका वही रूप बनता है।

५९—अर्चिरादिना तत्प्रथितेः ॥ वेदांत दर्शन ४।३।१

(अर्चिरादिना) ब्रह्मोपासकानां विदुषां शरीरादुत्क्रान्तिर्मूर्धन्यया नाड्या प्रदर्शिता, अपि च तदानीं ते रश्म्यनुसारिणो भूत्वा ब्रह्मलोकं गच्छन्तीत्युक्तम्। ते कया रीत्या गच्छन्तीत्युच्यते। अर्चिरादिना—देवयानपथे वर्तमानैरर्चिरादिभिरवलम्बनैः, तद्यथा—

तद्य इत्थं विदुर्ये चेमेऽरण्ये श्रद्धा तप इत्युपासते तेऽर्चिषमभिसम्भवन्त्यर्चिषोऽहरह्न आपूर्यमाणपक्षमापूर्यमाणपक्षाद् यान् षडुदङ्ङेति मासांस्तान् मासेभ्यः संवत्सरं संवत्सरादादित्यमादित्याच्चन्द्रमसं चन्द्रमसो विद्युतं तत्पुरुषोऽमानवः स एनान् ब्रह्म गमयत्येष देवयानः पन्था. ।

(छांदोग्योपनिषद् ५।१०।२)

स एषोऽर्चिरादिना निर्दिष्टः पथक्रमः (तत्प्रथिते) तस्य प्रसिद्धेः नैकत्र ग्रन्थभागेषु प्रतिपादनात् प्रथनाच्च राजमार्गवत् प्रायो ब्रह्मविद्भिरनुकरणीयत्वात्। तत्रैकं तु स्थलमुदाहृतमेवाथ चान्यं स्थलद्वयमपि प्रदर्श्यते—

अर्चिषमेव सम्भवन्त्यर्चिषोऽहरह्न आपूर्यमाणपक्षमापूर्यमाणपक्षाद् यान् षडुदङ्ङेति मासांस्तान् मासेभ्यः संवत्सरं संवत्सरादादित्यमादित्याच्चन्द्रमसं चन्द्रमसो विद्युतं तत्पुरुषोऽमानवः स एनान् ब्रह्म गमयत्येष देवपथो ब्रह्मपथ ॥ (छांदोग्योपनिषद् ४।१५।५)

ते य एवमेतद्विदुर्ये चामी अरण्ये श्रद्धा सत्यमुपासते तेऽर्चिरभिसम्भवन्त्यर्चिषोऽहरह्न आपूर्यमाणपक्षमापूर्यमाणपक्षात् यान् षण्मासानुदङ्ङादित्य एति मासेभ्यो देवलोकं देवलोकादादित्यमादित्याद्वैद्युतं तान् वैद्युतान् पुरुषो मानस एत्य ब्रह्मलोकान् गमयति ॥

(बृहदारण्यकोपनिषद् ६।२।१५)

अर्थात् अर्चिरादिना तत्प्रथितेः ॥ (वेदांत ४।३।१) तथा छांदोग्योपनिषद् ५।१०।२) और (बृहदारण्योपनिषद् ५।१०।१) का भाव समान है। परन्तु प्रक्रिया की शैली में भिन्नता है। इस भिन्नता का वर्णन हम आगे देते हैं। ब्रह्मोपासक विद्वानों का शरीर से उत्क्रमण मूर्धा नाडी से प्रदर्शित होता है और वह रश्मि का अनुसरण करके ब्रह्मलोक को जाती है। देवपथ में वर्त्तमान का आलम्बन होता है। जैसे—

जो इस प्रकार जानते हैं, जो ये अरण्य=वन में श्रद्धा और तप की उपासना करते हैं वे प्रतिदिन पूर्णपक्ष को ग्रहण करते हैं और पूर्णपक्ष के द्वारा ६ महीनों को लेते हैं। उन महीनों से संवत्सर=वर्ष, पुनः वर्ष से आदित्य—सूर्य और सूर्य से चन्द्रमा का, आगे चन्द्रमा से विद्युत् को वह अमानव पुरुष उनको ब्रह्म तक पहुंचा देता है। यही देवयान मार्ग है।

यह पक्ष छांदोग्योपनिषद् ५।१०।२ का है। ये मार्ग अनेक ग्रन्थों के भागों में प्रतिपादित हैं और राजमार्ग की भांति विस्तृत हैं। प्रायः ब्रह्म-

वेत्ता विद्वान् इसी मार्ग का अनुसरण करते हैं। इसके अतिरिक्त दो अन्य स्थलों का उदाहरण भी आगे लिखा जाता है। प्रतिदिन पूर्णपक्ष से ६ महीने आगे आते हैं। ६ महीनों से वर्ष, वर्ष से सूर्य, सूर्य से चन्द्रमा, चन्द्रमा से विद्युत्=बिजुली वह अमानव पुरुष उन ब्रह्मोपासको को ब्रह्म तक पहुंचा देता है। इसी देवपथ को ब्रह्म मार्ग कहा जाता है।"

(छांदोग्योपनिषद् ४।१५।४ तथा ५)

जो इस प्रकार इसको जानते हैं वे प्रतिदिन पूर्णपक्ष से जो सत्य की उपासना करते हैं वे इसी भांति पूर्णपक्ष, उससे ६ महीने, पुन. सूर्य को प्राप्त करके, पुन: देवलोक, देवलोक से सूर्य, सूर्य से विद्युत्=बिजुली लोक, पुन. उन वैद्युत लोको मानस पुरुष पहुंचता कर ब्रह्मलोको को प्राप्त कराता है। (बृहदारण्यकोपनिषद् ६।२।१५)

इस प्रकार वेदांत दर्शन ४।३।१० और छांदोग्योपनिषद् ५।१०।२ तथा बृहदारण्योपनिषद् ५।१०।१ का भाव समान है।

"यावदायुषं ब्रह्मलोक सम्पद्यते" अर्थात् जितना आयु ब्रह्म का है तब तक वह उपासक वहां ब्रह्म का आनन्द ग्रहण करता। यही मुक्ति का समय कहलाता है। मुक्ति का सुख भोगकर पुन: ससार में आता है, क्योंकि मुक्ति का समय नित्य नही है।

६०—भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसशया.।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे ॥

(मुण्डकोपनिषद् खण्ड २, मन्त्र ८)

अर्थात् जब इस जीव के हृदय की अविद्या अज्ञानरूपी कांठ कट जाती, सब संशय छिन्न होते और दुष्ट कर्म क्षय को प्राप्त होते, तभी उस परमात्मा जो कि अपनी आत्मा के भीतर और बाहर व्याप्त रहा है, इसमें निवास करता है।

ऋषि दयानन्द जी सरस्वती कहते हैं कि दुष्ट कर्म क्षय को प्राप्त होते हैं, सब नहीं। यदि सब कर्म नष्ट हो जावे तो जीव मुक्ति से लौटकर नही आवे। (सत्यार्थप्रकाश समुल्लास नवम)

६१—भोगमात्रसाम्यलिङ्गाच्च ॥ वेदांत दर्शन ४।४।२१

अर्थात् जिनका भोगमात्र समान है। जीव जगत् का व्यापार ब्रह्म के समान नही कर सकता।

६२—तदधिगम उत्तरपूर्वाघयोरश्लेषविनाशौ तद्व्यपदेशाद् ॥

वेदांत ४।१।१३

अर्थात् उपासना के अभ्यास से ब्रह्म की प्राप्ति होने पर आगे होने वाले और पूर्व किये गये क्रम से असश्लेष=अस्पर्श और विनाश हो जाते हैं। क्योंकि ब्रह्मोपासक का प्रापणीय तथा प्राप्य जीव का ज्ञान स्वच्छ हो जाता है। प्रकाशित ज्ञान से पूर्व=पिछले अघ का नाश हो जाता है।

(तद्व्यदेशात्) यथा पुष्करपलाश आपो न श्लिष्यन्त एवमेवविदि पाप कर्म न श्लिष्यते। "अशरीर वाव सन्त न प्रियाप्रिये स्पृशत:।" (छांदोग्योपनिषत् ८।१२।१) शरीरपातानन्तर ब्रह्मोपासकस्य पुण्यमपि क्षय गच्छति ॥

जैसे पुष्कर पलाशयुक्त जलो को श्लेष नही होता। इस प्रकार विद्वान् का पापकर्म नही लिपटता। शरीररहित जीव को प्रिय अप्रिय नही छूते। शरीर के पतन होने पर ब्रह्मोपासक का पुण्य भी क्षीण हो जाता है।

६३—भोगेन त्वितरे क्षपयित्वा सम्पद्यते ॥ वेदांत दर्शन ४।१।१६

जिनका फल आरम्भ हो जाता है, उन पुण्य-पाप दोनों का विनाश हो जाता है। (छादोग्योपनिषद् ६।१४।२) में कहा है "तावदेव चिर यावन्न विमोक्ष्येऽथ सम्पत्स्यते" तब तक ही चिरकाल रहता है जब तक कि जीव का मोक्ष नही हो जाता।

६४—(प्रश्न) मुक्ति के क्या साधन हैं?

उत्तर—कुछ साधन तो पहिले लिख आये हैं, किन्तु विशेष उपाय ये हैं जो मुक्ति चाहे वह जीवनमुक्त अर्थात् जिन मिथ्याभाषणादि कर्मों का फल दु:ख है उनको छोड़ देवे और सुखरूपफल को देनेवाले सत्यभाषणादि धर्माचरण अवश्य करे।

(सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ६) महर्षि दयानन्द सरस्वतीकृत ॥ इति शम्॥
दिनांक—३-१०-७८

श्री वीरेन्द्र आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधानपद से मुक्त

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली

संख्या : २३१८ दिनांक २४-९-८७

श्री वीरेन्द्र जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, गुरुदत्त भवन, कृष्णपुरा चौक, जालन्धर शहर (पंजाब)।

सादर नमस्ते।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग सभा दिनाक २० सितम्बर, १९८७ को आर्यसमाज मन्दिर दीवान हाल देहली में पारित प्रस्ताव के अनुसार सभाप्रधान को यह अधिकार दिया गया है कि वे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के त्रिशाखन सम्बन्धी आदेशो के उल्लंघन करने के जिम्मेदार व्यक्तियों को उचित दण्ड देने की व्यवस्था करें।

इस प्रस्ताव पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने के अनन्तर मैंने आपको निम्नलिखित तथ्यों पर दोषी पाया है—

१—आपने सयुक्त आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के विभाजन सम्बन्धी दिनांक २६-२७ अप्रैल, १९८७ के मूल प्रस्तावों तथा सार्वदेशिक सभा द्वारा त्रिशाखन के निर्णयों की खुली अवहेलना की है।

२—श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् द्वारा दिये गये फैसले (एवार्ड) के विरुद्ध कार्य किया है, जबकि इस निर्णय को मानने का लिखित आश्वासन दे रखा है। इतना ही नही, आपने उस फैसले को निष्प्रभावी बनाने के लिए प्रयत्न किये और इसे मानने से इन्कार भी किया है तथा आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के मन्त्री डा० धर्मपाल जी को अपने ३ सितम्बर, १९८७ के पत्र में स्पष्ट रूप से प्रकट किया है।

३—आपने न्यायालय में मुकदमे दायर करने भी बन्द नही किये।

४—आपने बराबर अनुशासनहीनतापूर्ण कार्य करके आर्यसमाज के सर्वोच्च संगठन की अवहेलना की है।

५—पंजाब सभा के त्रिशाखन सम्बन्धी प्रस्ताव पर सार्वदेशिक सभा द्वारा १० जुलाई, १९७५ को दिये गये आदेश और प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव द्वारा दिये गये निर्णय के विरुद्ध आपने आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अनुमति के बिना स्वेच्छाचारिता करते हुए हरिद्वार में हरिराम इण्टर कालेज तथा शंकर आश्रम की जमीनें बेचने का कार्यक्रम प्रारम्भ कर रखा है, जबकि त्रिशाखन के निश्चय के अनुसार पजाब, हरयाणा और दिल्ली की राजकीय सीमा से बाहर जो भी सम्पत्ति तथा सस्थाये है उन पर तीनों प्रतिनिधि सभाओं का समान अधिकार है।

६—सार्वदेशिक सभा के विगत २२ जून, १९८६ के प्रस्ताव तथा २० सितम्बर, १९८७ के प्रस्ताव की छाया में तथा उपरोक्त तथ्यों को देखते हुए आपको आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधानपद से हटाने के अतिरिक्त मेरे पास और कोई विकल्प नहीं रहा। साथ ही आप आर्यसमाज से सम्बन्धित किसी भी सस्था के चुनावी पद के लिए अयोग्य घोषित किये जाते हैं।

अत: सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा तथा सभा के विधान द्वारा प्रदत्त अधिकार से आपको आज दिनांक २४ सितम्बर, १९८७ से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (जिसका कार्यालय गुरुदत्त भवन, कृष्णपुरा चौक जालन्धर है) के प्रधानपद से मुक्त किया जाता है और आपके स्थान पर सभा के वरिष्ठ उपप्रधान सभा के आगामी चुनाव तक कार्यभार सम्भालेंगे।

आपने बार-बार हमारे अनुरोध की अवहेलना की है, अत: विवश होकर पांच वर्षों के पश्चात् उपरोक्त निर्णय लेना पड़ा।

प्रतिलिपि सूचनार्थ। भवदीय

(स्वामी आनन्दबोध सरस्वती) प्रधान

१. प्रधान एवं मन्त्री जी आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक।
२. प्रधान एवं मन्त्री जी आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली।
३. व्यवसायाध्यक्ष गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार।
४. प्रि० अर्जुनदेव जी मुख्याधिष्ठाता, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार।

तुम्हें क्या सौगात दूं

देश के सपूतो किस तरह तुम्हारा साथ दू।
भारत के शहीदो तुम्हें क्या सौगात दू॥

देखी नही तुमने बहारें, उम्र अपनी लुटादी,
बने त्याग की मूरत, अपनी खुशियां बिछादी।
न दिन तुम्हारा था, न रात थी तुम्हारी,
आजाद हो ये देश, बस ख्वाब थी तुम्हारी।
मां के लाडलो, थे किसी की आखों के काजल,
उन आंखों के आंसुओं का, क्या हिसाब दू।
भारत के शहीदो, तुम्हें क्या सौगात दू॥

हुए कुर्बान देश की रक्षा के लिये,
रहे परेशान धर्म की जज्बा को लिये।
आवाज दी तुमने अपनी है जमी, अपना हो आसमा,
गुल अपना हो खार अपनी, अपना हो गुलिस्तां।
उन सपनों का अब क्या मिसाल दूं,
भारत के शहीदो तुम्हें क्या सौगात दू।

बड़ी मुश्किलों के बाद, ये तस्वीर उभरी थी,
वादे मुखालिफों ने सारा नक्शा बदल डाला।
मांगकर खालिस्तान तुम्हें फिर से कत्ल कर डाला,
रोज जारही हैं, कितनी अर्थिया श्मशान।
उन कातिलों को मैं क्या श्राप दूं,
भारत के शहीदो तुम्हें क्या सौगात दूं।

करो टुकडे देश के, ये आवाज उठ रही है,
धर्म-निरपेक्ष की आड़ में, आजादी लुट रही है।
भाषा, सभ्यता, संस्कृति की अब दम घुट रही है,
ईसाईयत की आड में, विदेशी गुटें बढ़ रही हैं।
जो चाहता है इन विदेशियों को फाड़ दू,
भारत के शहीदो तुम्हें क्या सौगात दू।

'त्रिस्मिल' मैं आपको खुद मैं जन्म दूगा,
आर्यसमाज से ईसाईयत को निपट लूंगा।
मिटेगी भले फिर से एक बार हस्ती हमारी,
वादा रहा न डूबेगी ये किश्ती तुम्हारी।
तुम बनो प्रेरणा, मैं तुझ को प्राण दू,
अपने भविष्य का एक आर्य राष्ट्र दू।
भारत के शहीदो तुम्हे और क्या सौगात द॥

—प० कृष्णकान्त शाह
आर्योपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा

अनमोल वचन

प्रेषित—अत्तरसिंह आर्य, क्रांतिकारी सभा उपदेशक

१—बच्चे के जन्म के समय और उसके पालन-पोषण और शिक्षा-दीक्षा के लिए माता-पिता जो कष्ट उठाते हैं, जो त्याग करते हैं और जो निष्कपट भाव से हितचिन्तन करते हैं उसका बदला सौ जन्म में भी नहीं चुकाया जा सकता। —मनु

२—जो उद्योग को छोडकर भाग्य के भरोसे हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते है। वे अपने ही दुश्मन हैं और अपना जीवन व्यर्थ नष्ट कर डालते हैं। —योग वशिष्ठ

३—जिस मनुष्य में जितनी बुद्धि और समझ की कमी होती है, उतना ही वह बाहरी दिखावा और आडम्बर करता है। —एक दार्शनिक

४—उत्तम चरित्र की सुगन्ध कस्तूरी की भांति स्वत ही चारो ओर फैल जाती है। —एक सद्ग्रन्थ से

५—अगर पूजा ही करनी है तो सबसे पहले मां की पूजा (सेवा) करो। —स्वामी दयानन्द

६—मनुष्य जीवन से बढकर अमूल्य अन्य कोई वस्तु नही, क्योंकि करोड़ो मुहरों के बदले भी जीवन का अतिरिक्त एक पल भी नही मिल सकता। इसलिये इसे व्यर्थ मूर्खता में न गवाओ। —महाभारत

७—आदमी धन-दौलत या कुल से नही, दिव्य स्वभाव, उच्च विचार, भव्य आचरण और सद्गुणों से महान् होता है। —अरविन्द

८—शरीर को रोगी और दुर्बल रखना एक भारी पाप है। —सुभाषचन्द्र बोस

९—दूसरे के अवगुण खोजने मे समय बरबाद करनेवाला महामूर्ख है। —रामकृष्ण परमहस

१०—अगर देवता के समान सुखी बनना है तो अपनी इच्छाओं को कुचल दो। —सुकरात

११—चाय के एक कप मे २५ ग्राम और काफी के एक कप में १२५ ग्राम विष होता है। एक वैज्ञानिक परीक्षण

१२—परिवार नियोजन की आवश्यकता निर्विवाद है, किन्तु उसके लिए सर्वश्रेष्ठ साधन है—ब्रह्मचर्य का पालन तथा सयम। — महात्मा गांधी

(मधुर प्रकाश से साभार)

ग्राम खेड़ीजट्ट जि. रोहतक में वेदप्रचार

ग्राम खेडीजट्ट (रोहतक) में सभा के भजनोपदेशक श्री ईश्वरसिंह तूफान द्वारा दिनाक २७-२८ सितम्बर को वेदप्रचार हुआ। प्रचार में लोगों की उपस्थिति बहुत अधिक थी तथा लोगों ने प्रचार बडे उत्साह से सुना तथा समाज की तरफ से आर्य प्रतिनिधि सभा को २२६ रुपये दान दिये गये।

आनन्ददेव शास्त्री, खेडीजट्ट, रोहतक



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 रजि० नं० P RTK ४9 [illegible]

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक,—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री सह सम्पादक,—डा० [illegible]

वर्ष १४ अंक ४५ २१ अक्तूबर, १९८[illegible] वार्षिक शुल्क २५) एक प्रति [illegible]

तनेजा से

ऋषि-निर्वाण विशेषांक



ऋषि दयानन्द के उपकार

आजादी की राही बताई दयानन्द ने ॥ टेक

रहे ब्रह्मचारी, जिन्दगी सारी, विवाह न सगाई, कराई दयानन्द ने ॥ १
ईश्वर को भूले थे लोग, पत्थरों को लगाते भोग। सच्ची दैनिक-संध्या, छपाई दयानन्द ने। २
देवता तेतीस करोड, पूजते थे होडमहोड। उनसे कराई, रिहाई दयानन्द ने ॥ ३
मुर्दे ·रता ससार, भूत-प्रेत बेसुम्मार। चौकी घाल सारी, मिटाई दयानन्द ने ॥ ४
ते और ख्वाही, श्राद्ध की लुटाई। जिन्दा पितर सेवा, सिखाई दयानन्द ने ॥५
प और पुजारी, मोडे मठधारी। रहे थे लूट मचाई, हटाई दयानन्द ने ॥ ६
को भूला ससार, झूठे ग्रथ पढते नर-नार। संस्कृत विद्या, पढाई दयानन्द ने ॥ ७
या का पढाना पाप, समझ रहे थे मां-बाप। कन्या पाठशाला, खुलाई दयानन्द ने ॥ ८
गायों पर चलती कटार, गोशाला करवाई तैयार। गोकरुणानिधि, बनाई दयानन्द ने ॥ ९
विधवा करती हाहाकार, वेश्या बनती बेशुम्मार। लाज और जिंदगी, बचाई दयानद ने ॥ १०
मुसलमान ईसाई, करते थे मनचाही। शुद्धि की यह बूटी, पिलाई दयानन्द ने ॥ ११
अनाथ बच्चे रोते, रो-रो जिन्दगी खोते। उनकी सारी विपदा, मिटाई दयानन्द ने ॥ १२
बचपन की शादी, थी खाना बरबादी। ब्रह्मचर्य की रीति, चलाई दयानन्द ने ॥ १३
जिसको कहते हैं स्वराज, सबकी जो जबां पर आज। सबसे पहले आवाज उठाई दयानन्द ने ॥ १४
सत्यार्थप्रकाश में, छठे समुल्लास में। सच्ची राजनीति, दर्शाई दयानन्द ने ॥ १५
तोड दई जात-पात, हटा दई छुआछात। सारी मनुष्य जाति, मिलाई दयानन्द ने ॥ १६
बतला दिये वर्ण चार, गुण-कर्मानुसार। हटाई, छुटाई बडाई दयानन्द ने ॥ १७
वेदों की शिक्षा दी, शिक्षा दे हटादी। 'नित्यानन्द' की सारी, बुराई दयानन्द ने ॥ १८

अन्तरंग सभा की बैठक की सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की एक आवश्यक बैठक २५ अक्तूबर, ८७ को प्रात. १० बजे सभा कार्यालय सिद्धांती भवन, रोहतक में होनी निश्चित हुई है। दोपहर बाद २ बजे आर्य विद्या परिषद् की भी बैठक होगी। सदस्यो से निवेदन है कि यथा समय बैठक में पधारें।

—सभामन्त्री

सम्पादकीय—

अन्तिम दृश्य

स्थान—अजमेर, राजा भिनाय की कोठी। कार्तिक वदि अमावस्या, संवत् १६४० विक्रमी, मंगलवार (अक्तूबर, १८८३ ई० सन्)। दीपावली का दिन था। सायंकाल के ६ बजे थे। अन्धकार और प्रकाश की सन्धिवेला में दूर-दूर से आये सभी आर्यजनों को अपने पीछे खडा करने का आदेश दिया और कहा कि चारों ओर के द्वार खोल दो, ऊपर की छत के दो छोटे द्वार भी खोल दिये। वेद-मन्त्रों से तथा संस्कृत में ईश्वर की उपासना के पश्चात् भाषा मे ईश्वर गुणगान करके गायत्री मन्त्र का पाठ किया और समाधिस्थ होगये। कुछ काल पश्चात् नयन खोल कहने लगे "हे दयामय, हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर, तेरी यही इच्छा है, तेरी यही इच्छा है, तेरी इच्छा पूर्ण हो, अहा! तैने अच्छी लीला की" इतना कहकर करवट ली और श्वास को रोक कर बाहर निकाल दिया।

इस प्रकार स्वेच्छा से प्राण-त्याग का दृश्य देखकर गुरुदत्त सदृश नास्तिक भी आस्तिक बन गये। भयंकर विष के कारण सारा शरीर जर्जरित हो चुका था, असह्य वेदना शरीर में थी, मूत्र कोयले के समान काला हो चुका था, बडे-बडे डाक्टर इस अवस्था को देखकर आश्चर्यचकित थे। एक महीने की भयंकर पीडा और क्षीणता के पश्चात् भी शौच गये, अपने आप पानी लिया, हाथ धोये, दातुन की और कहा हमें पलग पर ले चलो। सभी आगन्तुक आर्यों तथा अपने शिष्यों को आशीर्वाद दिया। एक मास के घोर कष्ट के पश्चात् आज कुछ आराम अनुभव किया और स्वेच्छा से रुग्ण शरीर को छोड़कर स्वर्ग सिधार गये। ऐसी मृत्यु किसी सौभाग्यशाली को ही मिलती है। गीता के अनुसार जैसे मनुष्य पुराने वस्त्र छोडकर, नये धारण करता है, उसी प्रकार यह जीवात्मा भी पुराने जीर्ण-शीर्ण शरीर को त्यागकर नूतन देह धारण कर लेता है। ऐसी अवस्था में मृत्यु से डरने अथवा भयभीत होने की आवश्यकता नही, प्रत्युत प्रसन्नता अनुभव होनी चाहिये। जिस प्रकार नूतन वस्त्र धारण करते समय होती है। मृत्यु का भय प्राणिमात्र को केवल अज्ञान के कारण ही रहता है। जब हृदय की ग्रंथी विदीर्ण हो जाती है और सभी सशय छिन्न-भिन्न हो जाते हैं उस अवस्था में "को मोह कः शोक." मोह और शोक का कोई कारण शेष नही रह जाता। ऐसे सिद्ध पुरुषो के लिये शरीर का त्याग पुराने छोड़कर नये वस्त्र धारण करने जैसी साधारण घटना हो जाती है।

भाद्रपद शुक्ला नवमी सवत् १८८१ वि० (२ सितम्बर १८२४ ई०) बृहस्पतिवार के दिन जिस पवित्रात्मा का मूलशकर अथवा दयाराम के नाम से प्रादुर्भाव हुआ था उसने ५६ वर्ष २ मास के पश्चात् कार्तिक वदि अमावस्या सवत् १६४० वि० (३० अक्तूबर, १८८३ ई०) मगलवार को महर्षि दयानन्द सरस्वती के नाम से शरीर त्याग दिया।

इस थोडे से काल में महर्षि दयानन्द ने जो साधना की और जो अगाध पाण्डित्य प्राप्त किया, सारे भारत का भ्रमण किया, वेदज्योति का प्रचार और प्रसार किया, देश का सुधार किया, संस्कृत और आर्यभाषा मे अद्वितीय साहित्य लिखा, शास्त्रार्थ किये वह सब अनुपम और अद्वितीय है। हम सभी आर्यों को यथाशक्ति महर्षि दयानन्द द्वारा प्रदर्शित सत्यपथ पर चलते हुए अपना और समाज तथा राष्ट्र का उत्थान करना चाहिये। असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय॥

—वेदव्रत शास्त्री

उन्नीसवीं शताब्दी का महान् चमत्कार

—स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, अध्यक्ष वैदिक संस्थान नजीबाबाद (उ०प्र०)

उन्नीसवी शताब्दी का महान् चमत्कार है महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का प्रादुर्भाव। चमत्कार तो उस शताब्दी में अन्य भी अनेक हुए होंगे। न हमें सबकी जानकारी है और न हम अन्य चमत्कारों को भुठलाने का विचार रखते हैं, किन्तु यह ध्रुव सत्य है कि महर्षि दयानन्द न केवल उन्नीसवीं शताब्दी के ही, अपितु गत पांच सहस्र वर्षों के महान् चमत्कार हैं।

प्राय: चमत्कार मानवी ही होते हैं। मनुष्यों के द्वारा किये जानेवाले आविष्कारों तथा खोजों को ही चमत्कार कहा जाता है, किन्तु महर्षि दयानन्द तो अलौकिक चमत्कार है। परमपिता परमात्मा की कारीगरी उस परम पावन देव का वर्तमान युगीन आविष्कार कहो अथवा अलौकिक तथा चमत्कार—जो भी कहिये—है चमत्कार ही, महान् और अद्भुत चमत्कार। उस युग पुरुष महामानव के विषय में किसी कवि ने ठीक ही कहा है—

ऐ दयानन्द! तुझे नूरे खुदावन्द कहूं। या कपिल, कणाद, पतञ्जलि का जिगरबन्द कहूं॥

उस युग पुरुष की दार्शनिकता को जब उसकी कृतियों, वह भी विशेषकर उसके घोषणा-पत्र तथा वर्तमान युग के स्मृति-ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश में पढा जाता है तो पुराने·· ऋषि परम्परा से सम्बद्ध—·· सम्पूर्ण दर्शन-शास्त्र का साक्षात् एक ही ग्रन्थ में हो जाता है। केवल साक्षात् ही नही होता, अपितु भारतीय दर्शनों से सम्बद्ध दो प्रमुख भ्रांतियां—एक तो यह कि छहों दर्शन परस्पर विरोधी हैं—सभी भारतीय व अभारतीय वर्तमानकालिक दार्शनिकों की यह मान्यता और स्थापना धूरि धूसरित हो जाती है। दूसरी यह कि सांख्यकार कपिल नास्तिक था—एकदम समाप्त हो जाती है। आवश्यकता है केवल एक बार देव दयानन्द के इस सुप्रसिद्ध और अमर ग्रंथ को ध्यानपूर्वक पढने की।

मार्क्सवाद और दयानन्द

मार्क्स के भौतिक, अनिश्वरवादी, नास्तिक तथा भोगवादी दर्शन की तुलना में महान् आध्यात्मिक दर्शन—जिसमें आत्मिक तथा भौतिक दार्शनिक विचारधाराओं का महान् विस्मयकारी समन्वय है। उस महामानव ने वर्तमान युग मे संसार को प्रदान कर पश्चिम की घोर भोगवादी संस्कृति के सामने एक प्रकाशस्तम्भ ला खड़ा किया।

इस्लाम, ईसाइयत और दयानन्द

ईसाइयत के परमात्मा द्वारा सृष्टि निर्माण करते हुए चौथे दिन सूर्य की उत्पत्ति और इस्लाम

के खुदा द्वारा छ: दिन सृष्टि बनाकर थक जाने पर सातवे दिन अर्श अर्थात् तख्त पर विश्राम करने और इन दोनों की क्रमशः परमात्मा को चोथे और सातवे आसमान (आकाश) पर अवस्थित अविद्या-पूर्ण मान्यताओं के सम्मुख परमेश्वर की अपनी व्याप्ति के कारण सृष्टि-उत्पत्ति के नितांत वैज्ञानिक 'तर्क सम्मत' युक्तियुक्त तथा बुद्धि व विद्या से परिपूर्ण ज्ञानमय सामर्थ्य से द्वारा प्रलयकाल के महान् अन्धकार में से प्रकृतिरूपी विक्षुब्ध समुद्र को निकालकर, इस सृष्टि को प्रकट कर दिया तथा विधिवत् सूर्य, चन्द्र व वर्ष, मास, दिन आदि का निर्माण किया और अपनी प्रजा मानव आदि प्राणियों के लिए समस्त सुख के साधन अग्नि, जल, वायु आदि भी पूर्व सृष्टि के अनुसार रच दिये, तथैव अपनी व्यापक शक्तियों के द्वारा इस सम्पूर्ण सृष्टि का व्यवस्थापन व संचालन भी कर रहा है—यह सब महर्षि दयानन्द ने अपनी घोर तपस्या द्वारा सिद्ध कर दिखलाया।

परमपावन प्रभु की व्याप्ति के माध्यम से ही पैगम्बरवाद व अवतारवाद के गढों को ढाया और जड़-पूजा के स्थान पर एक निराकार, व्यापक, अजन्मा, अनादि, अनन्त परमेश्वर पूजा की स्थापना की।

मैक्समूलर और दयानन्द

जर्मन अध्यापक मैक्समूलर को ब्रिटिश सरकार का वेतनभोगी बनकर वेदभाष्य के नाम पर वैदिक मान्यताओं के विरुद्ध वेद के भ्रातियुक्त अर्थ करके भारत के ईसाईकरण के लिये वातावरण बनाने के प्रयत्न को ध्वस्त कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप मैक्समूलर को अपनी "भारत हमें क्या सिखा सकता है" पुस्तक में वेदो के विषय में अनेकेश्वरवाद अथवा बहुदेवतावाद को मान्यता के विरुद्ध ऋग्वेद के शब्द में यह स्वीकार करना पड़ा कि "एक सद्विप्रा बहुधा वदन्ति" अर्थात् उस एक ही सत्यस्वरूप परमात्मा को विद्वान् लोग बहुत नामों से पुकारते हैं और अपनी "भारतीय दर्शन के छः सिद्धांत" नामक पुस्तक में ऋग्वेद के नासदीय सूक्त को पढ़कर लिखा कि मेरी अब तक की मान्यता कि वेद ऋषियो की खोज है, भ्रांत सिद्ध हुई, क्योकि ऋग्वेद के नासदीय सूक्त में प्रलयकाल का आंखों देखा, जैसा वैज्ञानिक वर्णन है। जबकि प्रलयकाल में ऋषि ही क्या, किसी भी प्राणी की उपस्थिति सम्भव नही—उसे ऋषि आदि किसी व्यक्ति की खोज मानना उचित नही। इसे पढ़कर तो वेद का यह ज्ञान परमेश्वर की ओर से ऋषियो की ओर आता हुआ प्रतीत होता है। वर्तमान युग में महर्षि दयानन्द ने ही सबसे पहले यह घोषणा की कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है जो सृष्टि की उत्पत्ति के समय चार ऋषियो के हृदयो में उस परमावन प्रभु ने मानवो के कल्याणार्थ प्रदान किया।

नारी-जाति और महर्षि दयानन्द

बाइबिल में पाषाणवत् जड़, कुरान में पुरुषो की खेती तथा आचार्य शंकर के शब्दो में विश्वास के सर्वथा अयोग्य और नर्क का द्वार, तुलसीदास की दृष्टि मे अवगुणों को खान कहलानेवाली नारी जाति को महर्षि मनु के शब्दो में "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता" अर्थात् जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहा देवता निवास करते है, कहकर सम्मान के आसन पर बिठाया। नारी शिक्षा की दुन्दभी बजाई तथा पुरुषो के समान ही अन्य सस्कारा की भी अधिकारिणी बताया।

बालविवाह को पाप बताया तथा पूर्ण यौवनावस्था में—जब वर और कन्या सन्तानोत्पत्ति में शरीर से पूर्णतया पुष्ट होकर समर्थ हो जाये "ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्" का घोष लगाकर शास्त्रानुमोदित सिद्ध किया। उन्होंने कहा कि विवाह का मुख्य उद्देश्य सन्तानोत्पत्ति है अत एव इसी बात को लक्ष्य में रखकर लड़के-लड़की जब स्वस्थ सन्तानोत्पत्ति में समर्थ हृष्ट-पुष्ट हों, तभी विवाह करना चाहिए।

छूआछूत और ऋषिवर दयानन्द

जन्म जात्यभिमान के कारण उत्पन्न छूआछूत की उन्होने अतीव कड़ी भर्त्सना की, उसे निंदित कर्म बताया। हां, खान-पान व रहन-सहन की पवित्रता को स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम बतलाया और कर्मों से ही मानव को अच्छा व बुरा समझा जाने का समर्थन किया।

लार्ड मैकाले और देव दयानन्द

लार्ड मैकाले की वर्तमान शिक्षा-पद्धति का घोर विरोध किया तथा ऋषि परम्परानुमोदित गुरुकुलीय शिक्षा-पद्धति का पुनरुद्धार किया। सह-शिक्षा के विपरीत बालक-बालिकाओं के विद्यालयों को एक-दूसरे से चार कोश दूरी पर अवस्थित होने को उचित बताया और बालको के विद्यालय में सब कर्मचारी पुरुष हों तथा बालिकाओं के विद्यालयो में सभी कर्मचारी स्त्रियां ही रखे जाने का विधान किया तथा निर्देश किया कि बालको के विद्यालयों मे पाच वर्ष की बालिका और बालिकाओं के विद्यालयो में पाच वर्ष का लड़का भी न जाने पाये।

राष्ट्रीय स्वाधीनता व महर्षि दयानन्द

यद्यपि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सम्पूर्ण मानवजाति के हित की कामना की और वेद के शब्दो में "मनुर्भव" मनुष्य बनो के सार्वभौम तथा विश्वजनीनघोष को गुंजाया, किन्तु जिस प्रकार नारी उत्थान, समाज-सुधार आदि के अन्य क्षेत्रो को वह आंखों से ओझल न कर सके, ठीक इसी प्रकार मानवी स्वाधीनता के अधिकारो की भी उन्होंने उपेक्षा नही की। यही कारण है कि शताब्दियों से पद-दलित पराधीन आर्यजाति को जगाने के लिए भी अपनी लेखनी की नोक को आर्यजाति के अविद्या और आलस्य-ग्रस्त पराधीन शरीर में चुभाकर उसे झझोरने का प्रबल प्रयास किया। विदेशियों के उत्तम से उत्तम शासन की अपेक्षा भी अपने स्वतन्त्र और स्वाधीन राज्य को सर्वोपरि उत्तम बताया।

प्रथम बार पराधीन भारत में स्वराज्य शब्द का पवित्र उद्घोष किया। भारतीयों में स्वाभिमान जागृत करने के लिए स्वराष्ट्र, स्वभाषा, स्वसंस्कृति की घोषणा की और इसके लिए आर्य, आर्यभाषा और आर्यावर्त्त शब्दों के प्रयोग को प्रोत्साहित किया। आर्यजाति की पराधीनता युक्त घोर पतनावस्था पर उस युग-पुरुष को अर्द्धरात्रि को जागकर रोते हुए देखा गया। सम्भव है कवि ने उसी स्वाधीनता के अग्रदूत परम राष्ट्रभक्त के विषय में लिखा हो—

> एक टीस-सी दिल में उठती है, एक दर्द जिगर में होता है।
> हम रातो बैठ के रोते हैं, जब पूरा आलम सोता है॥

पास में सोता हुआ सेवक अकस्मात् जाग गया तो उनके रोने का कारण पूछने और किसी चिकित्सक को बुलाने अथवा औषधि लाने को कहने पर उस महापुरुष ने यही कहा था कि "मेरे दर्द

की दवा इन चिकित्सकों के नहीं, अपितु बत्तीस कोटि आर्यजाति के हाथों में है। यदि आर्यजाति जाग जाये और अपने कन्धों से पराधीनता का जुआ उतार कर फेंक दे तो मेरा दर्द दूर हो सकता है।"

वास्तविकता तो यह है कि मेरे जैसे अकिंचन के द्वारा यह सम्भव ही नहीं कि उस महामानव युग-पुरुष तथा युग-प्रवर्त्तक के गुणों का वर्णन करने में समर्थ हो सकूं। यह संक्षिप्त रूपेण कुछ शब्द लिख दिये हैं। यदि पाठकों को इनसे कुछ लाभ हो सके, उनका हित-साधन हो सके और वह इनसे कुछ शिक्षा ग्रहण कर सकें तो मेरा उपर्युक्त चर्चा को शब्दों में ग्रथित कर, लेखबद्ध करना सार्थक होगा। महर्षि के ग्रंथों, उनके जीवन-चरित तथा उनके विषय में विश्व के सैकडों विचारकों के दृष्टि-कोण को पढ़ लेने के पश्चात् मेरी तो यह दृढ़ धारणा और परिपक्व निश्चय है—

कहूगा पीरो पैगम्बर से, तुम रुतबे में हारे हो।
दयानन्द चौदहवी का चाद है, और तुम सब सितारे हो॥

भारत देश जगाया

ऋषि दयानन्द ने भारत मे, अविद्या का अन्धकार मिटाया।
ज्ञान दिया वेदों का घर-घर, सच्चा प्रभु का मार्ग बताया॥

झूठ, कपट, चोरी और जारी, पाप पाखण्ड बढे थे भारी।
कुरीतियों से देश तबाह था, भगवान् बने थे धूर्ताचारी।
देश-धर्म प्रभु-भक्ति का, सबको सच्चा मार्ग बताया॥

हिन्दू बने ईसाई मुसलमा, तब शुद्धि का प्रचार किया।
गले मिला भाई से भाई, ऋषि ने कितना उपकार किया।
सत्यार्थप्रकाश रचकर ऋषि ने, सत्य झूठ इसमे समझाया॥

नारी-जाति की दशा सुधारी, जो कष्ट अनेकों सहती थी।
दहेज के दानव से पीडित, जलके प्राण को खोती थी।
कुरीति सारी मिटा देश से, वेदो का था पाठ पढाया॥

छूआछूत का भूत भगाकर, दुखीजनो की करी सहाई।
विधवा अनाथ दुख पाते थे, ऋषि ने आकर करी सहाई।
'शार्दां' माने या मत माने, ऋषि ने भारत देश जगाया॥

—स्व० कवि० बनवारीलाल "शार्दां" वैद्य श्री स्वतन्त्र भारत फार्मेसी,
मानिकपुरा, नई दिल्ली-५

दीपावली का दिव्य-सन्देश

—वीरेन्द्रसिंह, सत्यवानसिंह आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती दीवाली के शुभ दिन स्वर्गवास हुए थे। महर्षि दयानन्द ने माता-पिता के प्यार-दुलार को छोड़ा। जीवन को सुखी बनानेवाली शारीरिक सुविधा की सामग्री के भण्डार को छोड़ा। महर्षि दयानन्द ने अपनी टकारा की भूमि का भी मोह मार दिया। स्थान-स्थान पर घूमा, मठ, मन्दिर देखे, जंगल छाने, नदियां पार की, गुफाये खोजी। परन्तु कहीं भी उसे जलती ज्योति नहीं मिली जिससे मन मन्दिर के बुझे दीपक को जला सके। उसने अनेको-अनेकों साधु-महात्मा मिले, उनकी शरण ली कि शायद ज्योति होगी, परन्तु जुगनू निकले। जुगनू भी कभी ज्योति जला सकता है। मन की ज्योति जलने न पाई। ज्यों-ज्यों अन्धकार बढ़ता गया, उसने भी ज्योति का पीछा न छोड़ा। आखिर वह ज्योति उसे मथुरा में मिल गई तथा उसके मन की ज्योति को जला दिया। महर्षि दयानन्द के मन की ज्योति को ऐसा जला दिया कि अब कभी भी वह बुझ नही पायेगी। समाज कभी भी महर्षि का ऋण नही चुका पायेगा। उसने अपने जीवन-काल में शूद्रों, अछूतों और स्त्री-जाति को बराबर का दर्जा दिलाकर उनको समाज में जीने का अधिकार दिलवाया। महर्षि जी ने सतीप्रथा का अन्त करवाया, जिसका शोर आजकल राजस्थान के पौराणिकों में फिर से देखने को मिल रहा है। जो कि उन्होने रूपकंवर को जबरदस्ती जला दिया। भारत की धरती अब एक ओर महर्षि की पुकार कर रही है कि महर्षि जी आओ और भारत को फिर से पौराणिकों के हाथों में आने लगा है, पाप बढ़ने लगा है, सतीप्रथा फिर से चालू होती दिखाई दे रही है, उसको दूर करो।

महर्षि जी के आने से पूर्व भारतीय संस्कृति, सभ्यता का सर्वथा नाश हो चुका था। वेदों का पठन-पाठन समाप्तप्राय. होगया था। केवल आजीविका के लिये वेदों के कुछ सूक्त पढ़े जाते थे। महर्षि जी ने आकर यह सिद्ध कर दिया कि वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। महर्षि जी के शिष्यों में गुरुदत्त विद्यार्थी स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज मुख्य थे। जिन्होने अपना सारा जीवन महर्षि के चरणों और आर्यसमाज के प्रचार के लिये लगा दिया। इन्होंने महर्षि की मृत्यु के पश्चात् आर्यसमाज के कार्यों को आगे बढ़ाया। स्वामी श्रद्धानन्द जी के पुरुषार्थ से हरयाणा प्रदेश में भी गुरुकुलों की स्थापना हुई और इन्ही गुरुकुलों से पढ़कर स्नातकों ने आर्यसमाज के प्रचार को आगे बढ़ाया। स्वामी जी के शिष्यों ने हरयाणा के शहरों व गांवों में इतना प्रचार किया कि हरयाणा प्रदेश में गुरुकुलों की सख्या सारे भारतवर्ष के बराबर है।

महर्षि जी एक दिन ज्यों ही उपदेश के लिये महलो में पहुंचे, त्यों ही महाराजा के पास से

निकलकर जारही नन्ही जान नामक वेश्या पर ऋषि की दृष्टि पड़ी। ऋषि ने तुरन्त राजा को कहा- "सिंह कुतिया के साथ नहीं रहा करते; क्षत्रिय को वेश्या के साथ नही रहना चाहिए।" वेश्या ने यह शब्द सुन लिये। वह क्रुद्ध होगई। उससे पहले काफी पौराणिक महर्षि से नाराज थे। वेश्या ने षड्यन्त्र कर ऋषि जी को विष दिलवा दिया। इस बार वे विष को शरीर से नहीं निकाल सके। उनके रोम-रोम में दुःख देनेवाले फोड़े निकल आये। ऋषि जी धैर्य से इनके कष्ट को सहते रहे। डाक्टरों से काफी इलाज करवाया, पर कोई लाभ नहीं हुआ। पापी द्वारा दिये गये विष से मृत्यु शय्या पर पड़े हुए महर्षि ने अपने सन्देश में तीन बात कही थी, जो निम्न हैं—

१—मेरे पीछे खड़े हो जाओ।
२—सब द्वार खोल दो।
३—ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो।

१) मेरे पीछे खड़े हो जाओ—महर्षि जब मौत से संघर्ष कर रहे थे और मन बना लिया था कि अब इस जर्जरित मानव चोले को बदल देना चाहिये। तभी महर्षि ने यही कहा था कि आर्यो मेरे पीछे खड़े हो जाओ। इसका भाव यह है कि वेदप्रचार के पवित्र कार्य को मैं करता रहा, अब मैं जा रहा हूं। मेरे पीछे से इसे बन्द न कर देना।

२) सब द्वार खोल दो—महर्षि जी ने अगली बात यही कही थी कि सब द्वार खोल दो। इस वाक्य के अन्दर काफी महत्त्वपूर्ण अर्थ है। सबको वैदिकधर्म में लाओ "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" वेद का सन्देश सबको समान रूप से देना चाहिए।

३) ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो—और अन्तिम सांस में ऋषिवर ने यही कहा था कि ईश्वर विश्वास को ढीला न होने देना। आर्यो अपने जीवन में भगवान् का भजन, प्रभु का प्रेम, उस अर्चनीय का अर्चन भूल न जाना। प्रभु को हर समय, हर स्थान पर और हर अवस्था में मानना और भक्ति करते रहना।

महर्षि जी ने सभी क्षेत्रों में क्रांति की थी। भारतवर्ष के निर्माण में महर्षि जी का अत्यधिक योगदान है। यदि उस समय महर्षि नही होते तो भारत का आज स्वरूप और ही होता। महर्षि ने सबसे पहले स्वतन्त्रता का नारा दिया। महर्षि जी ने कहा—अपना बुरा शासन भी विदेशी अच्छे शासन से अच्छा है। हम स्वामी जी की शिक्षा को आदर्श मानकर अज्ञान अन्धकार को नष्ट करने के लिए वेदादि शास्त्रों के पढने-पढ़ाने और सुनने-सुनाने के लिए विशेष पुरुषार्थ करना चाहिए।

असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतं गमय।

दीपावली पर इन्ही शब्दों के साथ महर्षि को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

०—०

कपालमोचन मेले पर यज्ञ तथा वेदप्रचार का आयोजन

कपालमोचन तहसील जगाधरी, जि० अम्बाला में ३ से ५ नवम्बर, १९८७ तक एक बहुत बड़ा मेला भरता है, जहां लाखों की संख्या में नर-नारी धार्मिक भावना से आते हैं। विभिन्न सम्प्रदायों की ओर से मेले पर प्रचार शिविर लगाकर अपनी ओर आकर्षित करने का यत्न किया जाता है।

इस अवसर पर प्रतिवर्ष की भांति आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से ३ से ५ नवम्बर तक यज्ञ तथा वेदप्रचार का आयोजन किया गया है। श्री स्वामी सदानन्द जी महाराज के संयोजन में सभा के उपदेशक ब्र० महेन्द्रसिंह शास्त्री, ब्र० संजयदेव शास्त्री एवं पं० सीताराम आर्य, पं. मुरारी-लाल बेचैन, पं० विद्याभूषण आर्य आदि भजनोपदेशक प्रचार कार्य करेंगे।

आर्यसमाजों तथा दानी महानुभावों से निवेदन है कि यज्ञ, वेदप्रचार तथा ऋषिलंगर हेतु अधिक से अधिक धन, अन्न, चावल, आटा, घी तथा सामग्री आदि प्रदान करके यश के भागी बनें तथा मेले में पहुंच कर धर्म-प्रचार से लाभ उठावें।

निवेदक

ओमानन्द सरस्वती	प्रो० शेरसिंह	वेदव्रत शास्त्री	रघुवीरसिंह
प्रधान	प्रधान	मन्त्री	वेदप्रचाराधिष्ठाता
परोपकारिणी सभा	आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा		

परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्वावधान में आयोजित
ऋषि-मेला १९८७

महर्षि दयानन्द सरस्वती के १०४वे निर्वाण दिवस पर ऋषि-मेला दिनांक २८ अक्तूबर से १ नवम्बर १९८७, कार्तिक शुक्ला ६ से १० सं० २०४४ वि०, बुधवार से रविवार तक आयोजित किया जारहा है।

ऋषि उद्यान स्थित यज्ञशाला में दिनांक २८ अक्तूबर, १९८७ बुधवार प्रातः ७ बजे से यजुर्वेद पारायण यज्ञ प्रारम्भ होगा। यज्ञ के ब्रह्मा वैदिक विद्वान् पं० सत्यानन्द जी वेदवागीश होंगे। वेदपाठी आर्ष गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारी होंगे।

२८ व २९ अक्तूबर को रात्रि के कार्यक्रम मोनिया इस्लामिया स्कूल के मैदान में ८ बजे से १० बजे तक होंगे।

ऋषि मेले के अवसर पर पधारनेवाले सभी अतिथियों के निवास एवं भोजन की निःशुल्क व्यवस्था ऋषि उद्यान में ही रहेगी।

निवेदक

स्वामी ओमानन्द सरस्वती प्रधान — गजानन्द आर्य मन्त्री

परोपकारिणी सभा, अजमेर

प्रखर राष्ट्रवाद का आदि प्रवक्ता—महर्षि दयानन्द सरस्वती

लेखक—यशपाल आर्यबन्धु, आर्य निवास, चन्द्रनगर, मुरादाबाद-३२

उन्नीसवीं शती भारतीय राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक पुनर्जागरण के काल से जानी जाती है। इस काल में अनेकों महापुरुषों ने जन्म लेकर भारतवर्ष में नव-जागरण का शंख फूंका था। आर्यसमाज के यशस्वी संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती उनमें अग्रणी थे। राष्ट्रीय नवजागरण का जो स्वर वे फूंक गये, उसका अपना महत्त्व है। इस पर भी दुःख इस बात का है कि उन्नीसवींशती के भारतीय राष्ट्रीय पुनर्जागरण मे उनकी जैसी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है, उसका तदनुरूप यथार्थ आकलन नहीं किया गया। हमें यह लिखने में कोई सकोच नहीं कि यदि उनकी इस क्षेत्र में इतनी महत्त्वपूर्ण भूमिका न होती तो स्यात् उनके नाम की सर्वथा उपेक्षा ही करदी जाती। पर वास्तविकता यह है कि महर्षि दयानन्द सही अर्थों और सच्चे भावों में भारतीय राष्ट्रवाद के अग्रदूत एवं स्वतन्त्रता तथा स्वदेशी आदि के मन्त्रदाता ऋषि थे। उन्हें यदि प्रखर राष्ट्रवाद का आदि प्रवक्ता कहा जाये तो कोई अति-शयोजित नही होगी। कारण कि भारतीयों में राष्ट्रीयता की भव्य भावनायें भरनेवाले वही सर्वप्रथम महामानव थे। उन्होंने ही सर्वप्रथम स्वराज्य की कल्पना की थी और स्वदेशी की भावनाओं को उजागर किया था। अतः इस सन्दर्भ में उनकी भूमिका को देखते हुए उन्हें केवल एक धर्म-संस्थापक अथवा समाज-सुधारक मात्र ही समझ लेना बहुत बड़ी भूल होगी। वे धर्म-संस्थापक अथवा समाज-सुधारक होते हुए भी मूलतः राष्ट्रवादी थे। उनका धर्म एवं समाज-सुधार आदि सभी कुछ राष्ट्रीयता की भावनाओं से ओत-प्रोत था।

महर्षि का राष्ट्रवाद

महर्षि दयानन्द राष्ट्रीयता के अग्रदूत बनकर आये थे। भारतवर्ष में प्रसुप्त राष्ट्रीयता को फिर से जगानेवाले वही प्रथम महामानव थे। महर्षि के राष्ट्रवादी विचारों में एक अपूर्व निखार अथवा प्रखरता की अद्भुत पुट थी। यही उनके राष्ट्रवाद की सर्वप्रमुख विशेषता है। उनके राष्ट्रवाद का मूलतत्त्व अपनी मातृभूमि के प्रति अगाध श्रद्धा एवं कर्त्तव्यनिष्ठा की भद्र-भावनाओं पर अवलम्बित है। आदि कवि बाल्मिकी के अनुरूप ही महर्षि दयानन्द की राष्ट्रीयता भी जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गा-दपि गरीयसी की उत्कृष्ट भावनाओं से अनुप्राणित है। इन्हीं भावों से भावित महर्षि दयानन्द ने तत्कालीन परिस्थितियों के सन्दर्भ में भारत के गौरवपूर्ण अतीत की पुनर्व्याख्या की थी और ऐसा कर अपने धार्मिक उपदेशों में राष्ट्रीयता के क्रांतिकारी सशक्त स्वर भरे थे। परिणामस्वरूप देश में सर्वत्र नवचेतना का संचार होने लगा और जागृति की एक नवीन लहर लहराने लगी। राष्ट्रवादी दयानन्द के आह्वान पर ही राष्ट्रीयता की भावनाओं से अनुप्राणित उनके अनुयायियों ने भारत में विदेशी

धार्मिक एवं सांस्कृतिक घुसपैठ का प्रबल प्रतिरोध किया था और अराष्ट्रीयता के विरुद्ध घोर संघर्ष का महाअभियान छेड़ा था।

भारत के राष्ट्रीय रंगमंच पर जब महर्षि दयानन्द ने पदार्पण किया था तो उस समय देश में सर्वत्र निराशा के घने बादल मंडरा रहे थे। शताब्दियों की विदेशी दासता के कारण देशवासी अपना जातीय स्वाभिमान एवं गौरव गरिमा ही नहीं, अपने पौरुष एवं पराक्रम को भी भूल चुके थे। सन् १८५७ की क्रांति की विफलता के पश्चात् तो राष्ट्रीय स्वाभिमान जैसी कोई वस्तु भारतवर्ष में शेष नही रही थी। उधर अंग्रेजी सरकार का फौलादी पंजा और भी अधिक मजबूत होता जारहा था। अंग्रेजी शासन की नींव को सुदृढ आधार देने के लिए लार्ड मैकाले ने एक कूटनीतिपूर्ण योजना बनाई थी, जिसके परिणामस्वरूप भारतवासी अंग्रेजी शिक्षा पाकर शारीरिक रूप से भारतीय रहते हुए भी मन और मस्तिष्क से पूर्ण अंग्रेज बन रहे थे। ईसाई पादरी इस कार्य में अंग्रेजी शासन को अपना पूरा-पूरा सहयोग दे रहे थे। अंग्रेजी शिक्षा एवं ईसाई पादरियों के कुचक्र में फंसकर भारतवासी स्वदेशीय गौरव एवं स्वजातीय स्वाभिमान को भूलने लगे थे। पाश्चात्य विज्ञानप्रदत्त नूतन आविष्कारों के देश में आगमन से रूढिवादिता पर एक और चोट लगी, जिसके फलस्वरूप भारतवासी द्रुतगति से स्वधर्म स्वसभ्यता, स्वसंस्कृति तथा स्वभाषा आदि से विमुख होते चले जारहे थे। भारतवासियों को यह पढाया जाने लगा कि उनके पूर्वज सदा से मूर्ख तथा असभ्य रहे हैं। अंग्रेजी शिक्षा से ही भारत-वासी सभ्य और विद्वान् बन सकते हैं। ऐसी भयावह स्थिति में महर्षि दयानन्द का आगमन हुआ। उन्होंने इस सारी स्थिति का अतिसूक्ष्मता से अध्ययन किया और देश को उभारने का सत्संकल्प लिया। इन परिस्थितियो में प्रसुप्त राष्ट्रीयता को जागृत करना कोई सरल कार्य नहीं था। सामान्य व्यक्ति इस ओर उद्यत भी नहीं हो सकता था। यह महर्षि दयानन्द सरीखे ही कतिपय विरले व्य-क्तित्व होते हैं कि जो ऐसा जोखिमभरा कार्य करने का साहस करते हैं। योगी अरविन्द ने उनके सम्बन्ध में ठीक ही कहा था कि वे मूलतः राष्ट्रवादी थे और वे राष्ट्रीयता को उद्दीप्त करने में सफल भी हुए।

स्वराज्य की कल्पना

भारत में अंग्रेज ईष्ट इण्डिया कम्पनी के माध्यम से व्यापार करने के लिये आये थे, किन्तु शनैः-शनैः उन्होंने यहां पांव पसारने प्रारम्भ कर दिये और फिर एक समय ऐसा भी आया कि जब कम्पनी से शासन का भार ब्रिटेन की अंग्रेजी सरकार ने हथिया लिया। कम्पनी के शासन से उत्पीड़ित भार-तीय जनता में ब्रिटिश साम्राज्ञी विक्टोरिया की एक विज्ञप्ति बांटी गई, जिसमें यह घोषणा की गई थी कि "अब इस्ट इण्डिया कम्पनी के हाथ से शासन हमने ले लिया है। अब प्रजा के साथ पक्षपात रहित, न्याययुक्त, माता-पिता के समान दयापूर्ण शासन होगा।" इस विज्ञप्ति का प्रभाव अंग्रेजों के अनुकूल पडा। भारतीय जनता इस विज्ञप्ति पर बहुत प्रसन्न हुई। सर सय्यद अहमद खां के नेतृत्व में मुसलमानों ने तो सर्वथा घुटने ही टेक दिये। हिन्दू भी नतमस्तक होने लगे। कविगण महारानी की प्रशंसा में विरुदावलियां गाने लगे। यहां तक कि उसे त्रिजटा का अवतार तक घोषित कर दिया गया। चारों ओर महारानी की जय-जयकार होने लगी। ऐसी परिस्थिति में स्वराज्य और स्वदेशी

की रही सही भावनायें भी तिरोहित होगईं। स्वाधीनता के परम उपासक क्रांतिदूत दयानन्द इससे अत्यन्त क्षुब्ध थे। वे उपयुक्त अवसर और साधन की खोज में थे कि जब देशवासियों में राष्ट्रीयता की भावनायें उद्दीप्त की जा सकें। अन्ततः सत्यार्थप्रकाश के माध्यम से महर्षि दयानन्द ने साम्राज्ञी विक्टोरिया की विज्ञप्ति का सटीक खण्डन ही नही, स्वदेश-प्रेम का अद्भुत भावनाय प्रसारित कर दिखाई।

उस समय जब स्वराज्य की बात करना मृत्यु को निमन्त्रण देना था, महर्षि ने अपने अमर ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश में बलाढ्य शब्दों और सशक्त स्वर में उद्घोष किया कि—"कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराये का पक्षपात शून्य प्रजा पर पिता-माता के समान, कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नही है।" पाठक विचारें ! कि क्या उपर्युक्त पक्तियो में महारानी विक्टोरिया की विज्ञप्ति का उत्तर निहित नही ? सभी सन्तुष्ट थे, सभी मौन थे, पर यदि कोई क्षुब्ध था तो वह देव दयानन्द ही था। किसी ने यदि महारानी की विज्ञप्ति का खण्डन किया तो राष्ट्रवादी दयानन्द ने ही किया। हैनरी कैम्पबेल बैनरमैन से वर्षों पूर्व महर्षि दयानन्द ने सुस्पष्ट घोषणा की थी कि सुराज्य स्वराज्य का स्थानापन्न नही हो सकता। यद्यपि ब्रिटेन के सुप्रसिद्ध राजनीतिज्ञ जान स्टुआर्ट मिल ने अपनी पुस्तक 'दी लिबर्टी' में यह भाव व्यक्त किये थे कि सुराज्य कभी स्वराज्य का स्थान नहीं ले सकता, तथापि महर्षि दयानन्द के मस्तिष्क में उस समय मिल की उक्त उक्ति नही, अपितु महारानी विक्टोरिया की विज्ञप्ति कौंध रही थी और वे उसका प्रबल प्रतिवाद करने को अत्यन्त आतुर थे। महर्षि दयानन्द द्वारा उस समय स्वदेशी राज्य अथवा स्वराज्य की बातें कहना कि जब देश राजनीतिक दृष्टि से नितात अपरिपक्व-सा ही था। उनकी प्रखर राष्ट्रीयता का ही द्योतक है।

स्वराज्य का प्रथम उद्घोष

उन्नीसवीं शताब्दी में स्वराज्य का उद्घोष करनेवाले महर्षि दयानन्द प्रथम स्वाधीनता-नेता महामानव थे। उन्होंने उस समय अपने ग्रन्थो में स्थान-स्थान पर स्वराज्य की चर्चा की था जब किसी ने इसकी कल्पना भी नही की था। इतना ही नही, जैसा कि नवीन शोधों से ज्ञात होता है, उन्होंने उस समय स्वराज्य शब्द का प्रयोग किया था कि जब भारत के राष्ट्रीय शब्दकोष में स्वराज्य शब्द का अभी समावेश भी नही हुआ था। महर्षि के आगमन के पूर्व किसी भी गद्य अथवा पद्य साहित्य में स्वराज्य की चर्चा देखने को नहीं मिलती। न ही जन्मभूमि अथवा राष्ट्रभक्ति पर कोई कविता या लेख ही कहीं मिलता है। फिर यह किसकी देन है ? निश्चय ही राष्ट्रीयता के आदि प्रवक्ता महर्षि दयानन्द की। स्वराज्य की भावना ही नही शब्द 'स्वराज्य' भी महर्षि दयानन्द की देन है। तभी श्रीमती एनी बीसेंट ने उन्हें "भारतीयों के लिये स्वतन्त्रता का प्रथम उद्घोषक" और लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने उन्हें 'स्वाधीनता का प्रथम सन्देशवाहक' कहा था। जबकि सुप्रसिद्ध फ्रांसीसी लेखक रोम्यां रोलां उन्हें "पुनर्जागरण का अग्रदूत" कहते हैं और योगी अरविन्द उन्हें "राष्ट्रीयता का अग्रदूत"। वस्तुत. स्वराज्य, स्वतन्त्रता, स्वदेशी तथा स्वदेशाभिमान आदि के उद्-

गाता महर्षि दयानन्द सरस्वती ही थे।

भारतीय स्वाधीनता के इतिहास का अनुशीलन करने से ज्ञात होता है कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के मंच से स्वराज्य का प्रथम उद्‌घोष दादा भाई नौरोजी ने सन् १९०६ ई० में किया था। पर इस शब्द का कुछ खुलकर प्रयोग होमरुल आंदोलन के दिनों में ही हो पाया था। "स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है" का प्रबल उद्‌घोष लोकमान्य तिलक ने सन् १९१६ ई० में लखनऊ अधिवेशन में किया था। कांग्रेस के १९२९ के लाहौर अधिवेशन में जाकर कही पूर्ण स्वराज्य प्राप्ति की बात कही गई थी। किन्तु राष्ट्रीयता के इस अग्रदूत एवं स्वतन्त्रता के मन्त्रदाता ऋषि ने सन् १८७५ ई० में ही अपने अमर ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश के माध्यम से पूर्ण स्वराज्य का उद्‌घोष कर दिया था। सत्य तो यह है कि महर्षि दयानन्द ने 'आर्यावर्त्त आर्यों के लिये" का जो सन्देश देशवासियों को दिया था वही सन् १९०६ ई० में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में 'भारत भारतीयों के लिये' के रूप में दोहराया गया।

डा० पट्टाभी सीतारमैया के शब्दों में स्वराज्य के जो स्वर १९०६ में कांग्रेस के मंच पर मुखरित हुए उसकी सम्पूर्ण योजना और कार्यक्रम आर्यसमाज के प्रवर्त्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने १८७५ ई० में ही देशवासियों को दे दी थी। यदि विचारपूर्वक देखा जाये तो इसी परिणाम पर पहुंचेंगे कि दादा भाई नौरोजी, गोखले, तिलक, गांधी और नेहरू आदि राष्ट्र-नेताओं ने स्वराज्य के उसी मन्त्र को केवल दुहरा मात्र दिया था, जिसे वर्षों पूर्व राष्ट्रीयता के आदिप्रवक्ता महर्षि दयानन्द दे गये थे। क्रांतदर्शी दयानन्द द्वारा प्रशस्त मार्ग पर ही राष्ट्रीय क्रांति का रथ आगे बढ़ने में सफल हो सका। यदि महर्षि दयानन्द स्वराज्य की भावना न दिये होते तो न जाने देश का वर्तमान स्वरूप क्या होता? पर इतना तो निश्चित ही है कि भारतीय स्वतन्त्रता का रथ शताब्दियों पीछे लुढक जाता।

स्वदेश प्रेम

जैसा कि पूर्व लिख चुके हैं, महर्षि दयानन्द का राष्ट्रवाद स्वदेश-प्रेम की भव्य भावनाओं से अनुप्राणित है। अपने देश की भूमि ही नही, महर्षि को स्वदेश की प्रत्येक वस्तु प्रिय थी। उन्हें इसके गौरवमय अतीत से असीम लगाव था और उसी के आधार पर वे इसका भविष्य निर्माण करना चाहते थे। स्वदेश के गौरवपूर्ण अतीत का आख्यान करते हुए महर्षि सत्यार्थप्रकाश में लिखते हैं कि "यह आर्यावर्त्त देश ऐसा है जिससे सदृश भूगोल में दूसरा कोई देश नही है। इसीलिये इस भूमि का नाम सुवर्णभूमि है, क्योंकि यही सुवर्णादि रत्नों को उत्पन्न करती है। …जितने भूगोल में देश हैं, वे सब इसी की प्रशंसा करते और आशा रखते हैं कि पारसमणि पत्थर सुना जाता है वह बात तो झूठी है, परन्तु आर्यावर्त्त देश ही सच्चा पारसमणि है कि जिसको लोहरूप दरिद्र विदेशी छूते के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं।" महर्षि के इस वाक्य का प्रत्येक शब्द स्वदेशगौरव की अनूठी छटा लिये हुए है। वे उन व्यक्तियों में से नहीं थे कि जो अपने देश के अतीत पर लजाते हों। उन्होंने देशवासियों को सचेत किया था कि अपने अतीत पर लजाने की कोई बात नहीं है। थोड़े से मध्यकाल को छोड़कर देश का अतीत अत्यन्त गौरवपूर्ण रहा है। देश के गौरवपूर्ण अतीत के विस्मरण के पक्ष

से वे नहीं थे। उनकी सुस्पष्ट मान्यता थी कि जो जाति अपने गौरवपूर्ण इतिहास को भुला बैठती है, उसका पराभव कोई रोक नहीं सकता। ब्राह्म समाज और प्रार्थना समाज में एतद् विषयक न्यूनताओं को देखते हुए महर्षि ने लिखा था कि—"इन लोगों में स्वदेशभक्ति बहुत न्यून है। अपने देश की प्रशंसा वा पूर्वजों की बड़ाई करनी तो दूर रहो, उसके स्थान में पेटभर निन्दा करते है।.... भला जब आर्यावर्त्त देश में उत्पन्न हुए हैं और इसी देश का अन्न जल खाया-पिया, अब भी खाते-पीते हैं, तब अपने माता-पिता, पितामहादि के मार्ग को छोड़, दूसरे विदेशमतों पर अधिक झुक जाना ब्रह्म-समाजी और प्रार्थनासमाजियों का एतद्देशस्थ संस्कृत विद्या से रहित अपने को विद्वान् प्रकाशित करना, इंगलिश भाषा पढ़के पण्डिताभिमानी होकर झटिति एक मत चलाने में प्रवृत्त होना मनुष्यों का स्थिर और वृद्धिकारक काम क्योंकर हो सकता है।" पाठकगण! महर्षि के उपर्युक्त वाक्य को बार-बार पढ़िये और विचारिये कि स्वदेश, स्वभाषा, स्वधर्म से प्रेम और अपने पूर्वजों के प्रति गौरव और अभिमान के भाव इससे अधिक भी भला कोई व्यक्त कर सकता है?

महर्षि दयानन्द भारतीयों के अतीत का स्मरण करते हुए लिखते हैं कि "इक्ष्वाकु से लेकर कौरव पांडव तक सर्वभूगोल में आर्यों का एकछत्र राज्य था, किन्तु अब अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य, प्रमाद, परस्पर के विरोध से अन्य देशों के राज्य करने की तो कथा ही क्या कहनी, किन्तु आर्यावर्त्त में भी आर्यों का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नहीं है। जो कुछ है सो भी विदेशियों के पदाक्रांत हो रहा है। कुछ थोड़े राजा स्वतन्त्र हैं। दुर्दिन जब आता है तब देश-वासियों को अनेक प्रकार का दु:ख भोगना पड़ता है।" कितनी व्यथा है महर्षि के इन शब्दों में? कौन जान सकता है उसके मनके दु:ख को? वस्तुत: वह राष्ट्र-प्रेम में दीवाना हो चुका था। पाठकगण! इतिहास के पन्नों को पलट कर देखें और विचारें कि उस समय किसी अन्य तथाकथित महापुरुष ने भी इस प्रकार के भाव कहीं भी व्यक्त किये हैं? निश्चय ही कहीं नहीं मिलेंगे। इतने पर भी बस नहीं, अत्यन्त वेदना, व्यथा और दु:ख के साथ महर्षि लिखते हैं कि—"विदेशियों के आर्यावर्त्त में राज्य होने का कारण आपस की फूट, मतभेद, ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, विद्या न पढ़ना-पढ़ाना व बाल्यावस्था में अस्वयवर विवाह, विषयासक्ति, मिथ्याभाषण आदि कुलक्षण, वेदविद्या का अप्रचार आदि कुकर्म हैं। जब आपस में भाई-भाई लड़ते हैं तभी तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है।" भारतवासियों में व्याप्त अनिष्टकारी फूट पर दु:ख तथा आक्रोश व्यक्त करते हुए महर्षि लिखते हैं कि—"आपस की फूट से कौरव-पांडव और यादवों का सत्यानाश होगया, सो तो होगया, परन्तु अब तक भी वही रोग पीछे लगा है। न जाने यह भयंकर राक्षस कभी छूटेगा व आर्यों को सब सुखों से छुड़ाकर दु:खसागर में डुबो मारेगा?" यहां आकर महर्षि का हृदय रो पड़ा है। वे इसके लिए दुर्यो-धन की अनिष्टकारी नीतियों को कोसते हुए परमात्मा से इस महाभयंकर राजरोग से छूटने की आतु-रतापूर्वक प्रार्थना करते हैं। यह है उनकी उत्कृष्ट राष्ट्रीयता।

महर्षि दयानन्द ने जहां भारत की परन्त्रता के कारणों का यथार्थ विश्लेषण किया है, वहा उस का समुचित निदान भी उस महामनीषी ने देशवासियों के सम्मुख प्रस्तुत किया था। उनके अनुसार "जब तक एक मत, एक हानि-लाभ, एक सुख-दु:ख परस्पर न माने, तब तक उन्नति होना कठिन

है।" इतना ही नहीं, महर्षि तो यहां तक लिखते हैं कि—"भिन्न-भिन्न भाषा, पृथक्-पृथक् शिक्षा, अलग-अलग व्यवहार का विरोध छूटना अति दुष्कर है। किन्तु बिना इसके छूटे परस्पर का पूरा उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना कठिन है।" भारत की दुःखद फूट को दूर करने के लिये तथा सामाजिक दृष्टि से देश को एकता के सूत्र में आबद्ध करने के लिये महर्षि जातिगत वर्गभेद को नष्ट करना चाहते थे। धार्मिक अनाचारों, सामाजिक कुप्रथाओं और मिथ्या भेदभावों को दूर कर एक सर्वमान्य तथा सबजनीन सार्वभौम धर्म की स्थापना करने का महर्षि का जो उद्देश्य था उसके पीछे भी राष्ट्रीय दृष्टिकोण ही कार्य कर रहा था। शुद्धि का आविष्कार भी राष्ट्रीय दृष्टि से ही उन्होंने किया था। उनका धर्म राष्ट्रीयता की पुट लिये हुए था। फिर महर्षि ने भारतवासियों को अकस्मात् ही स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये लड़ने को नहीं कह दिया था। क्योंकि वे उनको निर्बलताओं से भली-भांति परिचित थे। अतः सर्वप्रथम उन्होंने राष्ट्रीय एकता पर बल दिया। वस्तुतः महर्षि दयानन्द राष्ट्रीय, सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भारत का पूर्णतया एकीकरण चाहते थे। यही उनकी राष्ट्रीयता का प्रखर स्वरूप था। स्वाधीनता प्राप्ति के लिये वे इसे अत्यन्त आवश्यक समझते थे और इसी कारण इस पर अधिक बल देते थे।

स्वदेशी के प्रथम प्रेरक

बहुत कम लोग यह जानते होंगे कि भारत में स्वदेशी की भावना के जनक तथा आदि प्रेरक महर्षि दयानन्द सरस्वती ही थे। पर महर्षि दयानन्द की स्वदेशी की भावना महात्मा गांधी आदि राष्ट्र-नेताओं से सर्वथा भिन्न थी। अर्थात् वह केवल कपड़ों, वस्त्रों तथा स्वदेशीय वस्तुओं के उपभोग तक ही सीमित नहीं। अपितु रहन-सहन, खान-पीन, वेशभूषा, भाषा, धर्म, संस्कृति, विचारधारा आदि सभी कुछ मूलतः स्वदेशी था। उनका दार्शनिक आधार, उनका प्रेरणास्रोत आदि सभी कुछ अनिवार्यतः स्वदेशी ही था। साधु टी० एल० वास्वानी ने ठीक ही कहा है कि दयानन्द की देशभक्ति का आधार उसका आर्य आदर्श के लिये प्रेम था। उसकी देशभक्ति उन लोगों के समान न थी जो मुख पर भारत को रखते हैं, किन्तु अपने भोजन में, वस्त्र में, अपने विचारों में, अपने जीवन और रहन-सहन में यूरोप का आदर्श रखते हैं। स्वदेशी के प्रबल समर्थक महात्मा गांधी के राजनीतिक विचारों का मूलस्रोत स्वदेशी नहीं था, अपितु विदेशी था। पर महर्षि दयानन्द पर विदेशी प्रभाव का आक्षेप लगाने का साहस आज तक किसी ने नहीं किया। भारतीय राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के इतिहास के सूक्ष्म अध्ययन से पता चलता है कि राजा राममोहनराय से लेकर पण्डित जवाहरलाल नेहरू तक सभी राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक नेताओं पर विदेशी चिन्तन का प्रभाव न्यूनाधिक अवश्य ही दृष्टिगोचर होता है। एक अकेला व्यक्ति जो विदेशी प्रभाव से सर्वथा अछूता रहा है, वह था राष्ट्र-पुरुष दयानन्द। उन्होंने अपने राजनीतिक चिन्तन का आधार विदेशी विचारक नहीं, भारतीय आचार्यों को बनाया था। महर्षि दयानन्द का स्वदेशी का अनुराग उनके हिन्दी प्रेम के रूप में भी मुखरित हुआ था। स्वयं गुजराती भाषा-भाषी तथा संस्कृत का प्रकांड विद्वान् होते हुए भी उन्होंने अपने समस्त ग्रन्थ हिन्दी भाषा में ही लिखे। यह उनका स्वदेशीय-प्रेम ही नहीं, उत्कट राष्ट्रीयता का द्योतक है। स्वयं राष्ट्रीयता का दम्भ भरनेवाले तथा जनता द्वारा महान् राष्ट्रीय जननायक के रूप

में सम्मानित होनेवाले सभी राष्ट्र-नेताओं ने अपना सारा साहित्य आंगल भाषा में ही लिखा है। फिर चाहे वह बालगंगाधर तिलक हों या महात्मा गांधी, योगी अरविन्द हों या जवाहरलाल नेहरू। इस कसौटी पर महर्षि दयानन्द के अतिरिक्त कोई खरा नहीं उतरता। हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखने का सर्वप्रथम स्वप्न महर्षि दयानन्द ने ही देखा था। यह और बात है कि राजनीतिक दाव-पेच में वह स्वप्न अक्षरशः पूरा न हो पाया हो। पर यह सत्य है कि राष्ट्र-भाषा के रूप में हिन्दी के महत्त्व को अस्वीकारा नहीं जा सकता और महर्षि दयानन्द सर्वप्रथम महामानव थे, जिन्होंने राष्ट्रीय दृष्टिकोण को अपनाते हुए हिन्दी को राष्ट्र-भाषा के पद पर आसीन होने का उद्घोष किया था। राष्ट्रीयता और राष्ट्रभाषा का चोली-दामन का साथ है। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। इस शाश्वत सिद्धांत की ओर देशवासियों का ध्यान आकृष्ट करनेवाले क्रांतदर्शी दयानन्द प्रथम महाप्राण थे।

स्वदेशीय राष्ट्रीय शिक्षा

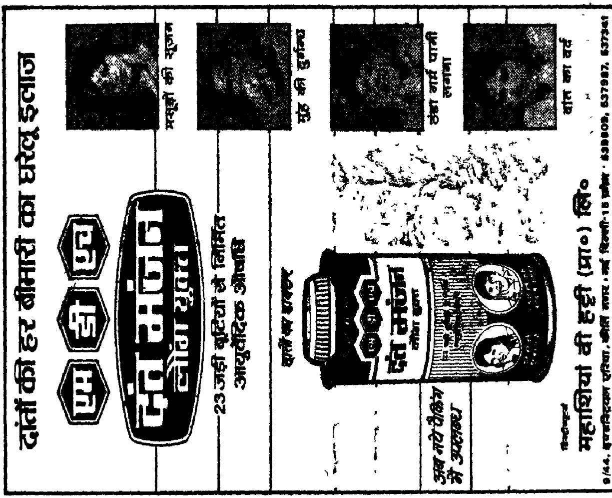
जैसा कि पूर्व लिख आये हैं, लार्ड मैकाले ने अंग्रेजी शासन की नींव को सुदृढ़ आधार प्रदान करने के लिये अंग्रेजी शिक्षा-नीति अपनाई थी। उसका उद्देश्य भारतीयों को अंग्रेजों का मानस पुत्र बना देना था अर्थात् अंग्रेजीयत के रंग में रंग देना था। महर्षि दयानन्द अंग्रेजी भाषा के अध्ययन के विरोधी नहीं थे, पर वे अंग्रेजीयत के नितांत विरोधी थे। अतः अंग्रेजी भाषा के अध्ययन का समर्थन करते हुए भी उन्होंने अंग्रेजीयत का विरोध किया और स्वदेशीय राष्ट्रीय शिक्षा की सुनियोजित नीति प्रदान की। स्वदेशी को उत्कृष्ट राष्ट्रीय भावनाओ से प्रेरित होकर महर्षि दयानन्द ने स्वदेशीय राष्ट्रीय शिक्षा योजना की जो परिकल्पना की थी, वह लार्ड मैकाले द्वारा भारतवासियों को अंग्रेज, अंग्रेजी और अंग्रेजीयत का दास बनाने की कूटनीति के विरुद्ध एक प्रबल चट्टान बनकर खड़ी होगई। परिणामस्वरूप भारत में राष्ट्रीयता की ऐसी प्रबल लहर चल पड़ी कि ससार आश्चर्य-चकित हो उठा। महर्षि दयानन्द की राष्ट्रीयता यदि चट्टान बनकर खड़ी न हुई होती तो अंग्रेजीयत की भयंकर आंधी का सामना देश नहीं कर सकता था। तात्पर्य यह कि महर्षि दयानन्द ने राष्ट्रीयता की भावनाओं को जागृत करने के लिये विभिन्न साधनों का कार्यान्वयन महर्षि दयानन्द की प्रखर राष्ट्रवादिता की सच्ची अभिव्यक्ति है। दुःख तो तब होता है कि जब उत्कृष्ट राष्ट्रीयता की इन भावनाओं की अनदेखी कर लोग उन्हें केवल एक समाज-सुधारक अथवा धर्म-संस्थापक के रूप में ही प्रस्तुत कर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं। पर वास्तविकता यह है कि महर्षि दयानन्द ने ही राष्ट्रीयता की भावनाओं को भरकर देश को प्रगतिशीलता का पथ दर्शाया था।

भ्रम-निवारण

भारत में राष्ट्रीयता के उदय के सम्बन्ध में एक बहुत बड़ी भ्रांति व्याप्त है। मैकाले के मानस-पुत्रों ने यह मिथ्या धारणा तथा महाभ्रांति फैलायी है कि भारत में राष्ट्रीय नवजागरण अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार-प्रसार से ही सम्भव हो सका है। भारतीय राष्ट्रीय पुनर्जागरण आंदोलन का नेतृत्व भी प्रायः आंगल-शिक्षा प्राप्त नेताओं के हाथ में रहने से उनके इस मिथ का तथ्यात्मक आधार अवश्य मिला है, पर हम इसे केवल अंग्रेजी शिक्षा का ही सुफल नहीं मान सकते। सत्य तो यह है कि पुन-

जागरण के लिये न तो अंग्रेजी शिक्षा की आवश्यकता थी, न अंग्रेजीयत की। उसके लिये तो एक ऐसे जन-नायक की आवश्यकता थी कि जो अपनी अन्तर्दृष्टि अथवा प्रज्ञा से देश, समाज, जाति तथा राष्ट्र में व्याप्त जड़ता, निराशा और किंकर्त्तव्यवि मूढ़ता की गहरी जड़ों पर प्रबल कुठाराघात कर सके। साथ ही उन कारणों की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में गहराई तक खोज कर सके कि जिन्होंने इस देश को इस अवस्था में ला पटका है। साथ ही अपनी विवेक-दृष्टि से उसका सम्यक् निदान प्रस्तुत कर सके कि जिससे राष्ट्र-व्यापी गतिरोध दूर होकर अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन सम्भव हो सके। महर्षि दयानन्द ऐसे ही जननायक थे, जो कि न तो अंग्रेजी शिक्षा से ही परिचित थे और न अंग्रेजीयत से प्रभावित। उन्होंने अपनी ऋतम्भरा प्रज्ञा से वेदों का मन्थन कर और उनसे राष्ट्रीयता की उत्कृष्ट भावनाओं की उद्दीप्ति पा, भारत की राष्ट्रीय जडता के कारणों की खोज की और उसका समुचित निदान प्रस्तुत किया। अतः भारतवर्ष में राष्ट्रीयता की भावनाओं को भरनेवाले महर्षि दयानन्द ऐसे महामानव थे कि जिन्हें अंग्रेजी और अंग्रेजीयत से दूर का भी वास्ता नहीं था। अंग्रेजी एवं अंग्रेजीयत से प्रभावित ब्राह्मसमाजी तथा प्रार्थनासमाजी जब अंग्रेजों के पिछलग्गू बन रहे थे उस समय महर्षि दयानन्द ने उन पर फटकार लगाते हुए सच्ची राष्ट्रीयता की भावनाओं को मुखरित किया था। अतः यह कहना कि भारत में राष्ट्रीयता की भावनाओं का उदय अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव से हुआ है, सत्यता से कोसों दूर है।

अन्त में निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि महर्षि दयानन्द भारतीय राष्ट्रीय प्रवृत्तियों और स्वाधीनता आंदोलन के आद्य प्रवर्त्तक, जनक और उद्घोषक थे। उन्होंने राष्ट्रीयता की भावनाओं को जगाकर युग की एक बहुत बड़ी आवश्यकता की पूर्ति की थी। इसके लिये भारत युगों तक उनका ऋणी रहेगा। आवश्यकता इस बात की है कि राष्ट्रीयता के प्रति उनकी बहुमूल्य दनों का यथार्थ मूल्यांकन किया जाये और उसे संसार के सम्मुख उपस्थित किया जाये। हमारा विश्वास है कि यदि हम ऐसा कर पाये तो तब निश्चय ही लोग आश्चर्य से देखेंगे कि जिस महापुरुष को उन्होंने एक कोरा धर्म-प्रचारक अथवा समाज-सुधारक मात्र मान रखा था वह वस्तुतः कितना बड़ा देशभक्त और कैसा महान् राष्ट्रवादी था। समय आयेगा लोग इस तथ्य को पहचानेंगे। सुप्रसिद्ध इतिहासकार यदुनाथ सरकार के शब्दों में "जब भारत के उत्थान का इतिहास लिखा जायेगा तो इस नंगे फकीर दयानन्द सरस्वती को उच्च स्थान दिया जायेगा।" और स्वामी सत्यानन्द जी महाराज के शब्दों में "समय आयेगा जब भारत की भावी सन्तति अपने जातीय मन्दिरों में स्वायत्त शासन की देवी का पूजन करने से पूर्व उसे पहले-पहल आहूत करनेवाले देवस्वरूप दयानन्द का प्रथम अर्चन किया करेगी।" हमारा विश्वास है कि जब कभी भी भारत की स्वतन्त्रता का निष्पक्ष वास्तविक इतिहास लिखा जायेगा तो स्वतन्त्रता के मन्त्रदाता इस ऋषि को निश्चय ही कृतज्ञतापूर्वक स्मरण किया जायेगा। कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में श्रीमती ऐनी बीसेंट ने महर्षि को इस भूमिका को देखते हुए ही तो उद्घोष किया था कि 'जब स्वराज्य मन्दिर बनेगा तो उसमें बड़े-बड़े नेताओं की मूर्तियां होंगी और सबसे ऊंची मूर्ति दयानन्द की होगी" और तब देशवासी ऊंचे स्वर और बुलन्द आवाज में प्रखर राष्ट्रवाद के आदि प्रवक्ता महर्षि दयानन्द की जय-जयकार किया करेंगे। इत्योम् शम्॥



हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

१. मेसर्ज परमानन्द साईंदितामल, भिवानी स्टैंड, रोहतक
२. " फूलचन्द सीताराम गांधी चौक, हिसार
३. " सन-अप-ट्रेडर्स सारंग रोड, सोनीपत
४. " हरीश एजेन्सीज ४११/१७ गुरुद्वारा रोड, पानीपत
५. " भगवानदास देवकीनन्दन सर्राफा बाजार पुराना, करनाल
६. " धनश्यामदास सीताराम बिचला बाजार, भिवानी
७. " कृपाराम गोयल रुड़ी बाजार, सिरसा
८. " कुलवन्त पिकल स्टोर्स शाप नं० ११५, मार्किट नं० १, एन० आई० टी० फरीदाबाद
९. " चन्द्रप्रकाश नवीनप्रकाश ३१८/५ जेकमपुरा, गुड़गांव

हरयाणा के कोने-कोने में ऋषि-निर्वाण तथा उत्सवों की धूम

आर्यसमाज काठ मण्डी आर्यनगर सोनीपत	१६ से १८ अक्तूबर
,, सेक्टर १४ सोनीपत	१६ से १८ ,,
,, कासण्डी जि० ,,	२० से २२ ,,
,, गोहाना शहर जि० सोनीपत	१६ से २२ ,,
,, जींद जंकशन जि० जींद	१८ से २२ ,,
,, होली मोहल्ला करनाल	१७ से २२ ,,
,, माडल टाउन यमुनानगर जि० अम्बाला	१७ से २२ ,,
,, पलवल शहर जि० फरीदाबाद	२२ से २५ ,,
,, सब्जी मण्डी नारनौल जि० महेन्द्रगढ़	१७ से २२ ,,
,, थानेसर जि० कुरुक्षेत्र	१९ से २२ ,,

वार्षिक उत्सवों की सूची

कुरुक्षेत्र गोशाला कैथल जि० कुरुक्षेत्र	२७ से ३० अक्तूबर
आर्यसमाज फिरोजपुर झिरका जि० गुडगांव	३१ से १ नवम्बर
,, कालरो तहसील घरोंडा जि० करनाल	६ से ८ ,,
,, बड़ा बाजार पानीपत ,, ,,	६ से ८ ,,
,, कालका जि० अम्बाला	६ से ८ ,,
,, नई कालोनी जि० गुडगांव	९ से १५ ,,
,, होडल जि० फरीदाबाद	१३ से १५ ,,
,, जवाहर नगर पलवल जि० फरीदाबाद	१३ से १५ ,,
,, रेवाड़ी जि० महेन्द्रगढ़	२७ से २९ ,,

जिन आर्यसमाजों ने अभी तक अपना वार्षिक उत्सव अथवा वार्षिक वेदप्रचार का कार्यक्रम नहीं रखा है, उनसे निवेदन है कि वे सभा से पत्र-व्यवहार करके अपनी तिथियां तथा उपदेशकों के कार्य-क्रम को सुरक्षित करा लेवें।

आर्यसमाजें प्रतिनिधि फार्म शीघ्र भेजें

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा से सम्बंधित सभी आर्यसमाजों से निवेदन है कि वे आर्यसमाज के नियम उपनियमों के अनुसार अपनी साधारण सभा की बैठक बुलाकर सभा के लिये ३ वर्ष की अवधि हेतु प्रतिनिधियों का चुनाव कर लेवें और प्राप्तव्य वेदप्रचार, दशांश तथा सर्वहितकारी के वार्षिक शुल्क के साथ प्रतिनिधि फार्म सभा को शीघ्र ही भेज देवें। सभा का वार्षिक चुनाव शीघ्र ही होने वाला है।

जिन आर्यसमाजों को अपने चुनाव आदि करवाने में कोई असुविधा हो तो वे सभा को पत्र लिखें, ताकि सभा की ओर से किसी उपदेशक को भेजा जा सके।

प्रतिनिधि फार्म देखने से ज्ञात हुआ है कि कुछ आर्यसमाजें अपने सम्पन्न तथा नौकरी आदि करनेवाले आर्य सभासदों से भी वार्षिक शुल्क केवल १२ रु० प्राप्त करते हैं। अत: ऐसे आर्य सभासदों से उनकी मासिक आय का शतांश प्राप्त करने का पूरा प्रयत्न करें।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

आर्यसमाजें चारा आना निधि संग्रह करके भेजें

आर्यसमाजें प्रतिवर्ष ऋषि-निर्वाण (दीपावली पर्व) पर अपने सभासदों से चार-चार आना संग्रह करके वेदप्रचारनिधि में भेजते हैं, ताकि सभा वेदप्रचार के कार्य को और उन्नत कर सके। वर्तमान समय में चार आना का मूल्य एक रुपया से कम नहीं। अत: आर्यसमाजें दीपावली पर प्रत्येक आर्य परिवार से एक-एक रुपया संग्रह करने का यत्न करें। आर्यसमाजो के सहयोग से ही सभा वेदप्रचार का प्रसार कर सकती हैं।

—रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता

झुंझनु में यवन नटों के ९ परिवारों को शुद्धि

दिनांक ७ अक्तूबर, १९८७ को गांव बड़बर भवाना जि० झुंझनु में हिन्दू शुद्धि संरक्षण समिति के संयोजक श्री स्वामी सेवानन्द सरस्वती और आर्यसमाज समालखा के उपदेशक श्री मणिराम जी ने प्रात: यज्ञ कराया, उसके बाद यवन नटों ने स्वेच्छा से वैदिकधर्म ग्रहण किया और हिन्दू नटों के साथ उनकी रोटी बेटी के रिश्ते भी कायम कराये गये। इस शुद्धि समारोह में गांव बडबर और जाखड़ाणां आदि के व्यक्तियों ने उत्साह से भाग लिया। उक्त नौ परिवारों के ९८ सदस्य इस अवसर पर शुद्ध हुए।

—प्रचार विभाग आर्यसमाज समालखा, करनाल

प्रकाशपथप्रदर्शक महर्षि दयानन्द

— प्रा० भद्रसेन डाक० साधु आश्रम, होशियारपुर-१४६०२१

वेद आदि सभी शास्त्रों में प्रकाश की बहुत प्रशंसा मिलती है। 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' 'ज्योतिरशीमहि' जैसे शतशः वाक्यों में प्रकाश की प्राप्ति की प्रार्थना की गई है। यह एक स्पष्ट बात है कि प्रकाश में ही व्यवहार की हर वस्तु साफ-साफ दिखाई देती है और तभी किसी कार्य को करने में सरलता रहती है। बाह्य प्रकाश की तरह जब किसी कार्य के करने का ज्ञान (प्रकाश) होता है, तभी कोई कार्य किया जा सकता है तथा उसको करके सफलता प्राप्त होती है। जिससे व्यक्ति को सन्तोष, सुख, शांति मिलती है।

प्रकाश

सचाई, अभयपन और सफलता का भी प्रतीक है, क्योंकि जब कोई किसी के साथ धोखा करता है तो वह दुखी होता है और इससे उसको हानि होती है। रस्सी में सांप सीप में चांदी का सन्देह, भ्रम या धोखा जहाँ अन्य अनेक कारणों से होता है, वहां एक कारण प्रकाश का न होना या अधूरा प्रकाश भी होता है। जैसे अस्पष्टता से सन्देह, अनिश्चय, भ्रम या धोखा होता है, ऐसे ही स्पष्ट ज्ञान न होने पर ही या पूरी बात न बता करके ही किसी को अन्धेरे में रखा जाता है। तब दूसरा धोखे में पड़कर ठगा जाता है। जैसे कि मन्त्र, तन्त्र, जन्त्र की शक्ति और शाप के प्रभाव के नाम पर दूसरों को चक्र में डालकर अपना स्वार्थ साधा जाता है।

इसीलिए ही कहते हैं कि अन्धेरे में कार्य का अभाव, भय, संशय, भ्रम बना रहता है और अन्धकार में सदा ठोकरें ही लगती हैं। जब कोई किसी के साथ अन्याय, अत्याचार या धोखे का व्यवहार करता है तो कहते हैं—क्यों अन्धेर मचा रखा है अर्थात् अन्धकार, अंधेरा, अन्धेर एक ही बात है। अन्धकार की अपेक्षा प्रकाश में हर बात, वस्तु स्पष्ट होती है और न हो तब भय, अविश्वास, भ्रम होता है। अस्पष्टता से व्यक्ति दुविधा—द्विविधा में पड़ जाता है, तब उसको कुछ स्पष्ट नहीं होता, स्पष्ट पता नहीं चलता और न ही वह तब कोई निश्चित निर्णय ले सकता है। ऐसी स्थिति में किसी बात या कार्य को सिरे चढ़ानेवाली बात तो कैसे हो सकती है। तभी तो कहते हैं—'दुविधा में दोनों गए माया मिली न राम'। अस्पष्टता, अनिश्चय की तरह की बातों से जनता भ्रम में पड़ जाती है, तब हर एक डावांडोल ही रहता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का सारा जीवन और विचार प्रकाश की तरह स्पष्ट है। महर्षि ने जनता की भलाई के लिए जीवन के प्रत्येक पक्ष पर स्पष्ट प्रकाश डालने का पूर्ण प्रयास किया। जिस से सभी को स्पष्ट, सुनिश्चित जीवनपथ का प्रकाश प्राप्त हो सके। सत्यार्थप्रकाश का नाम ही नहीं,

अपितु सारा विवेचन इस बात का गवाह है कि महर्षि ने हर पक्ष पर स्पष्ट प्रकाश डाला है। पाठक को कहीं भी दुविधा में नहीं रखा। सत्यार्थप्रकाश की भूमिका और अनुभूमिकाओं में तो महर्षि ने अपना दिल ही खोलकर रख दिया है।

संस्कृत साहित्य तथा उसके वैदिकवाङ्मय को पढ़नेवाला पाठक अनेक बार, अनेक स्थलों पर द्विविधा में पड़ जाता है। शास्त्रों की दो तरह की बातों के कारण ही जनता आज भी भ्रम में है। जैसे कि अनेक तरह के यज्ञों से प्राप्त होनेवाले फलों, चमत्कारों की चर्चा है और शास्त्रों के नाम पर अनेक घटनायें भी इस सम्बन्ध में प्रचारित हैं। परन्तु महर्षि दयानन्द ने सारे साहित्य का आलोचन करके जीवन का एक सुनिश्चित पथ दर्शाया है। जो कि जहां शास्त्रसम्मत है। वहां वह पूर्णतः युक्तियुक्त, तर्कसंगत भी है। अतः महर्षि ने प्रकाशवत एक सुसगत जीवनपथ दर्शाया है।

परिवहन के पथों की तरह जीवन के भी दो तरह के रास्ते होते हैं—संगत और असंगत। सुसंगत जीवनपथ की दृष्टि से सुरक्षासेना और पुलिस की व्यवस्था एक सुन्दर उदाहरण है। इनकी सारी व्यवस्था सुनिश्चित और संगत होती है, क्योंकि वह आधारभूत मूलभावना को सामने रखकर बनाई जाती है। इसी प्रकार महर्षि ने भी जीवन का जो सुसंगतपथ दर्शाया है वह जीवन्त और सुसंगत है।

इसका स्पष्ट-सा एक उदाहरण है—विवाह विषयक विचार। महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में इसके सम्बन्ध में विस्तारपूर्वक विवेचन किया है। इसके लिए जहां वेदादि शास्त्रों के प्रमाण दिये हैं वहां युक्ति एवं तर्क से भी विचार किया है। उदाहरण के लिये यह एक उद्धरण पर्याप्त होगा—"आठ, नौ और दसवें वर्ष पर्यन्त विवाह करना निष्फल है, क्योंकि सोलहवें वर्ष के पश्चात् चौबीसवें वर्ष पर्यन्त विवाह होने से पुरुष का वीर्य परिपक्व, शरीर बलिष्ठ, स्त्री का गर्भाशय पूरा और शरीर भी बलयुक्त होने से सन्तान उत्तम होते हैं। (पृष्ठ ७६, स्वा० वेदानन्द सम्पादित स्थूलाक्षर सत्यार्थप्रकाश)।

इसका दूसरा उदाहरण—पारस्परिक अभिवादन का लिया जा सकता है। जब एक व्यक्ति दूसरे से मिलता है तो आपस में मिलने पर स्वाभाविक रूप से आदर की भावना उभरती है। जिस से परस्पर प्रसन्नता, सम्मान और अपनापन आता है। अत एव सभी देशों, धर्मों, वर्गों में आपस के अभिवादन के लिए कोई न कोई शब्द और शारीरिक चेष्टा आदि के अनेक रूप प्रचलित हैं। एतदर्थ महर्षि दयानन्द का विचार है—'बड़ों को मान्य दे, उनके सामने उठकर जाके उच्चासन पर बैठावे, प्रथम 'नमस्ते' कहे। सत्यार्थ० २ समु०, पृ० ३६।

दिन-रात में जब-जब प्रथम मिलें वा पृथक् हों, तब-तब प्रीतिपूर्वक 'नमस्ते' एक दूसरे से करें। ४।८६

अभिवादन के लिए नमस्ते का प्रयोग अवसर के अनुरूप, तर्कसंगत, शास्त्रसम्मत और आधारभूत मूल-भावना से हर तरह मेल खाता है।

सुसंगतपन की कसौटी का तीसरा उदाहरण है—सामूहिक नाम आर्य। व्यवहार में सुविधा की दृष्टि से प्रत्येक का अपना-अपना नाम होता है। प्रत्येक का जहां अपना-अपना वैयक्तिक नाम होता है वहां सामूहिक दृष्टि से भी प्रत्येक समूह का एक नाम होता है। जिस-जिस दृष्टि से आपस में एकता

होती है उस-उस दृष्टि से एक सामूहिक नाम भी होता है। जैसे कि धर्म, राजनीति, देश की दृष्टि से सामूहिक नाम प्राप्त होते हैं। ऐसे ही वर्ण=कारोबार, यूनियन के आधार पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, फौजी, दुकानदार आदि नाम हैं। इन समूहों की तरह, इन समूहों का भी एक सामूहिक नाम होना चाहिए। महर्षि दयानन्द का सिद्धांत है कि हमारा सामूहिक नाम आर्य है, क्योंकि हमारा जितना भी मान्य साहित्य है उसमें आर्य शब्द का सर्वत्र प्रयोग मिलता है। यह प्रयोग इतना अधिक प्रभावपूर्ण, सार्वभौमिक, सार्वकालिक तथा सार्वजनिक है कि किसी भी देश का नागरिक जहां कहीं इसका प्रयोग कर सकता है। प्रयोग करनेवाले के जीवन की प्रत्येक प्रगति, आकांक्षा और भावना को आर्य शब्द पूरी तरह से अभिव्यक्त करता है। नमस्ते की तरह आर्य शब्द से भी स्पष्ट होता है कि महर्षि के निर्देश शास्त्रसम्मत और तर्कसंगत है।

इन सामान्य बातों की तरह जब हम जीवन के मूलभूत तत्त्वों के सम्बन्ध में विचार करते हैं तो पता चलता है कि महर्षि दयानन्द ने जीवन के सर्वांगीण विकास और निखार के लिए भी एक सुसंगत जीवनपथ दर्शाया है, जो कि एकेश्वरवाद, मनुष्यजाति की एकता, धर्म=अच्छे आचरण का नाम है और सभी महापुरुषों का सम्मान है। आइए ! अब जीवनपथ के आधारभूत इन मूलतत्त्वों पर कुछ संक्षिप्त-सा विचार करें।

एकेश्वरवाद

इसका अर्थ है एक ईश्वर की मान्यता। हमारे चारों ओर पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, सूर्य आदि अनेक प्राकृतिक पदार्थ हैं, जो कि हम जैसे किसी मनुष्य ने नहीं बनाये। इन प्राकृतिक पदार्थों की रचना, व्यवस्था किसी के करने से ही होती है। इनकी व्यवस्था बताती है कि इसका कोई न कोई कर्ता, धर्ता और नियामक है और वही ईश्वर है। ईश्वर के प्राकृतिक कार्य सभी स्थानों पर एक ही रूप में हो रहे हैं। तभी तो सभी स्थानों पर अन्न, फल, फूल, खनिज, धातुयें एक रूप में ही मिलती हैं। यह एक रूपता एवं समान व्यवस्था अपने उत्पादक व्यवस्थापक की एकता को ही सिद्ध करती है।

इसी प्रकार सभी प्राणियों की अपनी-अपनी शरीर रचना, अंग संस्थान और उनका कार्य एक सा ही है। प्रदेश का सामान्य-सा ही प्रभाव होता है। यह एकरूपता भी अपने कर्ता की एकता को ही सिद्ध करती है। शास्त्रों में एक जगत कर्ता, धर्ता, संहर्ता का वर्णन प्राप्त होता है। हां, वहां प्रकरण के अनुरूप उसके गुण, कर्म, स्वभाव को बताने वाले अनेक नाम आते हैं, पर उन नामो का नामी एक ही है। इसके विशेष विवेचन के लिये 'वेद की कुञ्जी—प्रथम समुल्लास' पढ़िए।

ईश्वर के एक होने से ही उसके सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी, सर्वशक्तिमान आदि गुण चरितार्थ होते हैं तथा ऐसे गुणयुक्त ईश्वर को मानने से ही उसकी कर्मफल व्यवस्था पर विश्वास जमता है। इसी विश्वास पर कोई सदा शुभ कर्मों में जुटा रहता है। भक्ति द्वारा ईश्वर के साथ अपना निकट सम्बन्ध अनुभव करने से आत्मिक शक्ति और शांति मिलती है।

मानवजाति की एकता

सभी मनुष्यों के शरीर, अंग संस्थान एवं उनका कार्य एक-सा ही है। भौगोलिक दृष्टि से रूप, रंग का बहुत कम ही अन्तर होता है। सभी के हृदयों में सुख, शांति की एक-सी ही भावना होती है।

सभी के खून का रंग लाल और आत्मा सबकी अजर-अमर ही है। अतः प्रदेश, रंग के भेद के आधार पर परस्पर भेदभाव नहीं करना चाहिये। एक मानव से दूसरे मानव में शिक्षा, योग्यता आदि के कारण ही अच्छे-बुरेपन का अन्तर होता है। मानव समाज में स्त्री-पुरुष में भी सामान्य-सा ही भेद होता है। इतने भेद से कोई ऊंचा-नीचा नहीं हो जाता। वस्तुतः ये दोनों समाज के महत्त्वपूर्ण अंग हैं और दोनों का अपना-अपना महत्त्व है। दोनों को समान रूप से एक दूसरे के सहयोग, सद्भाव की आवश्यकता होती है। एक के बिना दूसरा अधूरा है।

अतः मानवजाति की एकता, समानता के कारण सबको समान रूप से प्रगति एवं प्रगतिदायक शिक्षा, धर्म आदि का समान अवसर और अधिकार प्राप्त होना चाहिये। सबको सबसे स्नेह, सौहार्द, सहयोग का व्यवहार मिलना चाहिये। ऐसा वहीं हो सकता है, जहां सब में समानता की भावना होती है। ऐसा व्यक्ति फिर किसी से सामाजिक उच्चता-नीचता और जन्मना स्पृश्यता-अस्पृश्यता का भेद-भाव नहीं करता।

धर्म अच्छे आचरण का नाम है

प्रकाशपथ का तीसरा मूलमन्तव्य है—सदाचार, धर्म। धर्म वस्तुतः अच्छे आचरण का नाम है और आचरण को अच्छा बनाने के लिये ही धर्म की अपेक्षा है। निःसन्देह शास्त्रों में धर्म शब्द अनेक अर्थों में आता है, पर धर्म का मुख्य अर्थ है—सत्य, ईमानदारी, स्नेह, सहयोग आदि। ये वे गुण हैं, जिनको अपने स्वभाव का अंग बनाने से व्यक्ति, परिवार, समाज-सुखी, व्यवस्थित होते हैं। धर्म प्रेरणा द्वारा व्यक्ति के स्वभाव को सुन्दर बनाता है। वह व्यक्ति पर कुछ थोपता नहीं, अपितु स्व-भाव का अंग बनाता है।

जैसे सामाजिकता के नाते हमारे आपस में माता-पिता, पुत्र, भाई, बहिन, मित्र आदि के रूप में सम्बन्ध हैं। आपस के सम्बन्ध के अनुरूप आचरण करने से ही सामाजिक सम्बन्ध जहां सुन्दर बनते हैं, वहां परस्पर सहयोग, स्नेह भी मिलता है। अत एव इस व्यवहार एवं सम्बन्ध को भी धर्म कहते हैं। कर्मकांड, विश्वास, सिद्धांत, स्वभाव और आचरण आदि धर्म के अनेक अर्थ हैं। पर इनमें से 'आचारः परमो धर्मः' मनुस्मृति १, १०८ के अनुसार आचरण सबसे मुख्य अर्थ है और तभी मनु० ६, ६२ में धृति, क्षमा, संयम, सत्य आदि आचार की बातों को धर्म की पहचान बताया है। धर्म का यह आचार पक्ष ही ऐसा है, जिसके सम्बन्ध में सभी धर्म एकमत हैं तथा सभी इनको स्वीकार करते हैं। विस्तार के लिये 'सरल-सुखी जीवन' देखिये।

सभी महापुरुषों का सम्मान

संसार में समय-समय पर अनेक विशेष व्यक्ति हुए, जिन्होंने मानवजाति को सुखी विकसित बनाने के लिये सामाजिक, साहित्यिक, धार्मिक, आर्थिक, शैक्षणिक, राजनीतिक और भौतिक विज्ञान आदि के क्षेत्रों में विशेष कार्य किया। अपने समय और स्थान पर जिसने जिस भी क्षेत्र में जैसा योग-दान दिया है वह अपने योगदान के अनुरूप सभी के सम्मान का पात्र है। क्योंकि उन व्यक्तियों का योगदान ही आज के विकसित रूप को यहां तक पहुंचाने में सहयोगी बना है। जैसे कि जार्ज स्टीफेंसन द्वारा आविष्कृत इंजन आज के विकसित इंजनों के विकास में कारण बना है।

जिस महापुरुष ने जितने तप-त्यागकर जैसे-कैसे कष्ट सहकर जितनी शिक्षा, योग्यता अर्जित की तथा अपनी अर्जित योग्यता से संयमपूर्वक मानवजाति के हित का जैसा कार्य किया, वह तदनुरूप सत्कार के योग्य है। वस्तुतः जनता को जितना लाभ हुआ, यह बात जहां महत्त्व की है, वहां सेवा करनेवाले ने कितने संयम से सेवा की, यह एक विशेष महत्त्व की बात है। क्योंकि विकार के अवसर आने पर भी जो अपने आपको भ्रष्ट नहीं होने देते, वे और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हैं।

महापुरुषों द्वारा विविध क्षेत्रों में किये गये महान् कार्यों के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करनी ही चाहिये। हां, अब क्या अनुकरणीय है और क्या केवल स्मरणीय है? इसका निर्णय तो आज की विकसित परिस्थिति के अनुरूप ही होना चाहिये, न कि केवल अपनेपन के आधार पर। इसीलिये ही महर्षि ने अपनी रचनाओं में श्रीराम, कृष्ण, भोज, शिवा, ईसा, नानक आदि की उस-उस विशेष देन के कारण प्रशंसा की है। बिना किसी भी यथार्थ आधार के किसी भी महापुरुष की निन्दा करनेवालों की निन्दा की है और इसी दृष्टि से पुराणों को पसन्द नहीं किया।

इस संक्षिप्त विश्लेषण से स्वतः स्पष्ट हो जाता है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जीवन के विविध पहलुओं के सम्बन्ध में प्रकाश की तरह स्पष्ट विचार दिये हैं, न कि दुविधा भरे। महर्षि द्वारा दर्शाया गया यह प्रकाशपथ जहां शास्त्रसम्मत है, वहां तर्कसंगत भी है। देखिये यह संक्षिप्त रूप किस आर्यसमाज के सहयोग से पुस्तक बनकर पाठकों के हाथों में पहुंचता है। ❀

नमन शत बार

देवदूत हे! प्रेम प्रचारक, मानवता के हे! उद्धारक,
दया-प्रेम-सेवा की प्रतिमा-जर्जर भारत के उन्नायक।

तुमने भरा धरा के उर में, नव-चेतन की शक्ति अपार।
बापू! तुम्हें नमन शतबार॥

देश स्वतन्त्र कराया तुमने, उन्नति-पथ दिखलाया तुमने,
ऋषि-मुनियों के निर्देशितपथ पर यह राष्ट्र चलाया तुमने।

दिव्य तुम्हारे अपराजित बल से था हुआ चकित संसार।
बापू! तुम्हें नमन शतबार॥

ज्योतिपुंज तुम दिव्य ललाम, देव पुरुष निश्च्छल निष्काम,
राष्ट्र-भक्ति की रहो प्रवाहित धारा अन्तस में उद्दाम।

हुए प्रकम्पित देख तुम्हारी शक्ति धरणि के अत्याचार।
बापू! तुम्हें नमम शतबार॥

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

दिवराला का सतीकांड

है महादुखद व शर्मनाक जो कांड हुआ दिवराला में।
धर्मीघजनों ने भस्म करी, इक नारी अग्नि की ज्वाला में॥

सीकर के गांव दिवराला में, अठारह वर्षीय रूपकंवर।
क्या स्वयं जली या जलाई गई, वह अबला नारी अग्नि पर।
क्यों जलती है, क्या धर्म है यह, कोई तो हमें बता दीजे॥
किस वेद, शास्त्र में लेख है यह, कोई तो हमें दिखा दीजे।
यदि नारी धर्म यही है तो, सब विधवायें जल जावें क्या॥
जो जलकर सती नहीं होती, तो राम की तीनों मातायें।
यदि पतिव्रत धर्म यही होता, वे धर्महीन कहलायें क्या॥
अनुसूया सावित्री जैसी, जल जाती सब ही विधवायें॥
जो मुगलकाल में सती हुई वह तो इक बात निराली थी।
इस भांति उन्होंने जौहर कर, दुष्टों से लाज बचाली थी॥
कुछ बातें हैं जो सास-ससुर, विधवाओं को समझाते हैं।
जीवेगी तो दुःख भोगेगी, मर जावे तो स्वर्ग बताते हैं॥
इस भय व लालच में आकर, यह सतीकांड हो जाते हैं।
फिर मन्दिर बना व मेले लगा, पाखण्डी मौज उड़ाते हैं॥
क्या यही धर्म है नारी का, क्या उसकी यही कहानी है।
क्या 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत् देवता' यह मिथ्या वाणी है॥
क्या यही वीरता युवकों की, तलवार जो ले श्मशान खड़े।
काटो कुरीति पाखण्डों को, यदि हो तुम सच्चे वीर बड़े॥
जब बूढ़े-विधुर विवाह करते, तब तुमको आती शर्म नहीं।
क्या ऐसी बाल-विधवाओं से, विवाह करना धर्म नहीं॥
पर वेद, शास्त्र विधवाओं की, शादी करना बतलाते हैं।
वे कहते हैं जलने वाले, तो घोर नर्क में जाते हैं॥
तुम नहीं जानते धर्म है क्या, सत्य है क्या, इन्सान है क्या।
यह अन्ध प्रथायें मानते हो, सोचो तुम बुद्धिमान् हो क्या॥
यों कब तक धर्म-दहेज की खातिर, नारी जलाई जावेगी।
कूड़े-कर्कट की भांति नारी की, होली मनाई जावेगी॥
पाखण्ड, अन्धविश्वासों की, अब भी यह लीला होती है।
तो आर्यसमाज व दयानन्द को, यह तो खुली चुनौती है॥
हे समाज-सुधारक वीरजनो, इन हत्यारों को ललकारो।
अन्याय, अधर्म की शर्मनाक, इस पाप प्रथा को सहारो॥
यदि यह हत्यायें नहीं रुकीं, तो मानवता मर जावेगी।
'भास्कर' इस भीषण ज्वाला मे, यह आर्यजाति जल जावेगी॥

भगवतीप्रसाद सिद्धांत भास्कर, १४३०, पं० शिवदीन मार्ग, कृष्णपोल, जयपुर

हजारों वर्षों की गुलामी के बाद स्वतन्त्रता का बीज कब और किसने बोया

स्वतन्त्रता का बीज भारत में महर्षि दयानन्द जी ने सर्वप्रथम १८५४ में बोया था। ऋषि की जीवनी पढ़ने से पता चलता है कि १८४६ से १८५४ तक सारे भारत की तत्कालीन परिस्थितियों का अध्ययन किया और हजारो वर्षों की गुलामी को उखाड़ फेंकने की दृढ़ प्रतिज्ञा कर सार्वजनिक जीवन से लुप्त होगये। १८५४ से पहले कहां थे, क्या किया १८५७ के बाद, कहां-कहां रहे, किन्तु बीच के इन तीन सालों का जीवनी से पता नही चलता। क्योंकि इन तीन सालों में स्वतन्त्रता का बिगुल बजाने के लिये तात्यां तोपे, झांसी को रानी लक्ष्मीबाई, राव तुलाराम आदि राजाओं को ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध युद्ध के लिये तैयार करते रहे। जिसके परिणामस्वरूप अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध १८५७ का गदर हुआ। जिसे ब्रिटिश सरकार ने अपने दमन-चक्र से दबा दिया। किन्तु महर्षि द्वारा सुलगाई आग बुझ नहीं पाई। आग का शोला लोगों के दिलों में सुलगने लगा। कुछ दिनों में लिये राखरूपी काई की परद हवा में झोकों का इन्तजार करती रही।

१८५७ से १८७५ तक महर्षि ने सारे देश में विचारिक क्रांति का शंखनाद फूंका। उस क्रांति को स्थाई रूप देने के लिये १८७५ में भारत की महानगरी बम्बई में आर्यसमाज (१८५७ का बचा हुआ अग्नि का शोला) की स्थापना की। १८७६ में स्वतन्त्रता की प्रथम आवाज खुले रूप में ऋषि ने सत्यार्थप्रकाश में लिपि बधकर दिया। विदेशी राज्य चाहे कितना हो अच्छा क्यो न हो, अपने राज्य में अच्छा नहीं हो सकता। सत्यार्थप्रकाश को पढ़-पढ़कर देश के कोने-कोने से अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह की आग सुलगने लगी। इस विद्रोह से घबराकर लन्दन में गौरों की एक सभा हुई, जिसमें मि० ह्यूम ने इस विद्रोह को असफल करने को जिम्मेवारी अपने ऊपर ली। मि० ह्यूम ने बागी भारतीयों की अन्दरूनी भावना (आवाज) को सुनने के लिये भारतीयो के लिये १८८५ में (यानि आर्यसमाज की स्थापना के दस वर्ष बाद) कांग्रेस की स्थापना की, ताकि इस मंच से बुला-बुलाकर बागियो का पता लगाया जा सके और उन्हें कुछ को प्रलोभन से, पदों से या सख्ती से दबाया जा सके। कांग्रेस की स्थापना आजादी लेने के लिये नहीं, बल्कि गुलामी पर गुलामी को एक और परत चढ़ाने के लिये की गई थी। हुआ भी ऐसा ही। १८८५ से लेकर १९१४ तक प्रत्येक वार्षिक सम्मेलन के अध्यक्षीय भाषणों में ब्रिटिश सरकार की भूरि-भूरि प्रशसा की गई थी। १९१४ के बाद स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय आदि आर्यनेताओं ने मि० ह्यूम की असलियत को पहचाना और उनकी बदोलत १९१९ में महात्मा गांधी को असहयोग आंदोलन पास करना पड़ा। फिर क्या था—तांता लग गया भारत मां के आर्य सपूतों के बलिदानों का। जिसमें रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह आदि जिनके कारण गौरी चमड़ी सफेद पड़ने लगी। एक दिन वह भी बचानी मुश्किल होगई। आखिरकार १५ अगस्त, १९४७ के दिन पूंछ दबाकर भागना पड़ा।

आज हमारी जुम्मेवारी है इस आजादी को कायम रखने की। सावधान फिर न इस धरती को लाल होना पड़े। माताओं के लाल, बहनों के सिंदूर, बच्चों का दूध खुसने ना पाये। आज देश के अंदर ही देश के दुश्मन ताक लगाये बैठे हैं।

—सीताराम आर्य, हिसार

कब्र-पूजा क्यों ?

डा. वेदप्रकाश एम. ए. (हिन्दी, अर्थशास्त्र) पी-एच. डी. प्राध्यापक, हिन्दी विभाग मेरठ कालिज, मेरठ

आज चारों ओर अज्ञान एवं अन्धविश्वास बहुत बढ़ता जारहा है, क्योंकि हमने वेद और अन्य सत्य शास्त्रों का पठन-पाठन बन्द कर दिया है। यह अन्धविश्वास इतना अधिक बढ़ गया है कि आज शिक्षित-अशिक्षित अनेक नर-नारी गली, मुहल्लों, चोराहों, सड़कों पर बनाई गई कब्रों को पूज रहे हैं। प्रत्येक बृहस्पतिवार को इन कब्रो पर एक व्यक्ति आकर चादर ढक देता है और अगरबत्ती जलाकर, कब्र पर कुछ पैसे डालकर वहीं बैठ जाता है। फिर अनेक नर-नारी आकर वहां धूप-दीप जलाते हैं, मिठाई चढ़ाते हैं और अपनी मनोकामनायें पूर्ण करने की प्रार्थना करते हैं।

इन कब्रों के सम्बन्ध में इनके रखवाले अनेक कपोल-कल्पित, मीठी-मीठी एवं अन्धविश्वासपूर्ण झूठी बातें सुना-सुनाकर भोले-भाले तथा दुखियारे लोगों को बहकाकर, इन कब्रों की पूजा करने के लिये प्रेरित करते रहते हैं। इनकी बातों के भुलावे में आकर अनेक आर्य (हिन्दू) नर-नारी इन कब्रों पर जाकर हाथ जोड़कर शीश झुकाकर मनोकामना पूरी करने के लिए गिड़गिड़ाते हैं तथा चढ़ावा चढ़ाते हैं?

कुछ लोग यह कहते हैं कि "अमुक पीर पर प्रार्थना करने से हमारी मनोकामना पूर्ण होगई"।

यह कहना पूर्णतः असत्य है, क्योंकि मनोकामना तो परमपिता परमात्मा की कृपा तथा आपके उचित दिशा में परिश्रम करने से पूर्ण हुई है, किसी पीर, मजार या कब्र की कृपा से नहीं। किसी भी कब्र में ऐसी कोई शक्ति नहीं होती, जो वह किसी की पुकार सुन सके। वह तो जड़ है, निर्जीव है, चूने, मिट्टी, पत्थर का ढेर है। अतः उसमें किसी प्रकार की कोई शक्ति नहीं है। उसकी शक्ति की झूठी बातें बनाकर आपको ठगा जारहा है। कुछ निकम्मे लोगों ने अपने खाने-पीने का यह धन्धा बना लिया है और वे आपको मूर्ख बनाकर ठाठ कर रहे हैं।

भाइयो और बहिनो! आप तो उन आर्यों की सन्तान हैं, जिनका शीश केवल एक निराकार परमात्मा के आगे ही झुकता था, अन्य किसी के आगे नही। पर अब तो उन महान् आर्यों की सन्तान प्रत्येक चौराहे पर बनी इन कब्रों के आगे शीश झुकती, गिड़गिड़ाती फिरती है, धूप-दीप जलाकर उनकी पूजा करती है, उन पर चादर और मिठाई चढ़ाती है।

गंगा हमारी एक पवित्र नदी है। आप उसका जल पीते हैं और उसमें स्नान करते हैं, परन्तु उस पवित्र जल में आप बाल, हड्डियां, राख और मल-मूत्र डालते हैं। इसके विपरीत जिन कब्रों से आपको कुछ नहीं मिलता, उन पर आप फल, फूल, मिठाई और चादर चढ़ाते हैं। इससे बड़ी भूल और क्या हो सकती है?

आज इन कब्रों के स्थानों को दिन-प्रतिदिन थोड़ा-थोड़ा बढ़ाया जारहा है तथा सार्वजनिक स्थानों पर अनधिकृत-रूप से अधिकार किया जारहा है। जो कब्रें छोटी हैं उन्हें बड़ी बनाया जारहा है, जो नीची हैं उन्हें ऊंची किया जारहा है, जिन पर छत नहीं हैं उन पर पहले टीन और फिर पक्की छत डाली जारही हैं। भविष्य में ये सभी कब्रें मस्जिदों के रूप में बदल दी जायेंगी। जो आर्यों (हिन्दुओं) व शासन के सामने एक भयंकर समस्या बनकर खड़ी हो जायेंगी। शासन को चाहिये कि इन कब्रों के अनधिकृत निर्माण एवं विस्तार को तुरन्त रोके तथा अवैध रूप से बनी कब्रों को हटाये।

इस्लाम में जड़ वस्तु की पूजा का कोई विधान नहीं है। इसलिए कब्र पर धूप-दीप जलाना, फल-फूल, मिठाई व चादर चढ़ाना, उसके आगे हाथ जोड़ना, शीश झुकाना और उससे कुछ मांगना इस्लाम के विरुद्ध है। इस पर भी जड़-पूजा क्यों की जारही है?

इसका उत्तर स्पष्ट है कि कब्र-पूजा की यह कुपरम्परा आर्यों की श्रेष्ठ परम्पराओं तथा वैदिक धर्म को नष्ट करने के लिए चलाई गई है और भोले-भाले आर्य (हिन्दू) भूल से इन कब्रों को पूज रहे हैं। कब्र-पूजा से तुम्हारे तन, मन, धन और समय सब नष्ट हो रहे हैं।

सभी आर्य (हिन्दू) भाइयो और बहिनो!

१) क्या तुम्हारा अपना कोई धर्म नहीं रहा? २) क्या तुम्हारे सर्वश्रेष्ठ वैदिकधर्म में ईश्वर की कोई पूजा-पद्धति नहीं रही? ३) क्या यही तुम्हारा हिन्दुत्व और आर्यत्व है? ४) क्या तुम इसी बल पर अपने आपको संसार में सर्वश्रेष्ठ धर्म और संस्कृतिवाले कहते हो? ५) क्या तुम्हारे तथाकथित ३३ करोड़ देवी-देवता भी पूजने को कम रह गये? ६) क्या अब तुम्हारे ईश्वर में शक्ति नहीं रही, जो तुम जाने-अनजाने में मरे हुओं की कब्रों को पूजते फिरते हो?

भाइयो और बहिनो! यदि आपके जीवन में कोई दुःख है तो उसे दूर करने का उपाय हमें ऋषियों ने यह बताया है कि आप नहा-धोकर शांत और पवित्र मन से एकांत में बैठकर केवल एक निराकार परमात्मा की भक्ति (वैदिक संध्या-हवन) किया करो और प्रतिदिन कम से कम १०० बार प्रातः और १०० बार सायं गायत्री-मन्त्र का जप किया करो। कुछ ही दिनों में आपके सभी कष्ट दूर भाग जायेंगे।

यदि आप स्वयं को आर्य (हिन्दू) मानते हैं तो आप भूलकर भी कभी इन कब्रों की पूजा मत करना। इनके आगे हाथ मत जोड़ना, सिर न झुकाना, इन पर धूप-दीप मत जलाना, रुपये-पैसे, फल-फूल, मिठाई और चादर मत चढ़ाना। जिनकी ये कब्रें हैं, उन्हें भी परमेश्वर ने उत्पन्न किया था और उसी ने उन्हें मारा। आज उन मरे हुओं की कोई शक्ति शेष नहीं है।

इस संसार को बनानेवाला, इसका पालन करनेवाला और इसका संहार करनेवाला केवल एक ईश्वर है, अन्य कोई नहीं। हमारे सभी दुःखों को दूर करनेवाला तथा हमें सब सुख देनेवाला भी वही परमेश्वर है। अतः आप केवल उसी की प्रार्थना किया करो। उसका सर्वोत्तम नाम "ओ३म्" है। आप 'ओ३म्' तथा 'गायत्री-मन्त्र' का ही जप किया करो। योगिराज श्रीशिव, मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम और योगिराज श्रीकृष्ण तथा हमारे ऋषि-मुनि सभी महापुरुष प्रातः-सायं केवल 'ओ३म्' और

(शेष पृष्ठ ३० पर)

गुरुकुलों से वैदिक युग की संस्कृति जीवित

नारनौल, ४ अक्तूबर (निस)। यहां से ९ किलोमीटर दूर आर्य गुरुकुल महाविद्यालय की पांचवीं वर्षगांठ के अवसर पर वार्षिक समारोह का आयोजन किया गया। हरयाणा के जन-स्वास्थ्य मन्त्री प्रो० रामबिलास शर्मा ने समारोह की अध्यक्षता की।

इस अवसर पर श्री शर्मा ने कहा कि गुरुकुलों के माध्यम से आज भी हमारी पुरानी संस्कृति व वैदिक युग की विशेषतायें जीवित हैं। हमें हमारी पुरानी संस्कृति को जिन्दा रखने के लिए इस प्रकार की संस्थाओं को प्रोत्साहन देना चाहिए, जो हमारे पुराने आदर्शों व चारित्रिक मूल्यों को जीवित रखने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही हैं।

जन स्वास्थ्य मन्त्री ने उक्त गुरुकुल के पुस्तकालय भवन के लिए २१०० रुपये की आर्थिक सहायता देने की घोषणा की तथा गांव में पेयजल व्यवस्था के लिए एक नया नलकूप लगाने का आश्वासन दिलाया।

(नवभारत टाइम्स से साभार)

(पृष्ठ २९ का शेष)

'गायत्री-मन्त्र' का ही जप किया करते थे और वेद पढ़ते थे। आप भी ऐसा ही किया करो।

गायत्री-मन्त्र इस प्रकार है, याद कर लीजिये—

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यम्। भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥

अर्थ—'हे परमपिता परमेश्वर! आप सबके प्राणों के प्राण हैं, सब दुःखों को दूर करनेवाले, सब सुखों को देनेवाले और सब जगत् को उत्पन्न करनेवाले हो। केवल आप ही उपासना के योग्य हो, आप शुद्धस्वरूप हो, आप ही सबसे बड़े देवता हो। हम आपके इस (निराकार और सर्वव्यापक) रूप का ध्यान करते हैं। आप हमारे सब दुःखों को दूर कीजिये, हमें सब सुख दीजिये और हमारी बुद्धियों को सद्मार्ग पर चलाइये।'

आप महर्षि दयानन्द सरस्वती का अमर ग्रंथ "सत्यार्थप्रकाश" आदि ग्रन्थ तथा वैदिकधर्म रक्षा सभा, ४६८ ब्रह्मपुरी, मेरठ (उ०प्र) द्वारा प्रकाशित साहित्य पढ़कर अज्ञान, अन्धविश्वास और पाखण्ड को समाप्त कीजिये तथा प्रत्येक रविवार को अपने निकटस्थ आर्यसमाज मन्दिर में होनेवाले प्रातःकालीन सत्संग में जाकर अपना जीवन सफल बनाइये।

डा० प्रह्लादकुमार स्मारक समिति

—प्रशांत वेदालंकार उत्तरापेक्षी, डा० प्रह्लादकुमार स्मारक समिति, दिल्ली

भारतीय संस्कृति का विस्तार बहुत अधिक है। इण्डोनेशिया तथा अन्य देशों में यहां तक कि मुस्लिम देशों में भी रामायण तथा महाभारत से प्रभावित हैं। हमें वैदिक संस्कृति के प्रचार पर विशेष बल देना चाहिए। ये शब्द कार्यकारी पार्षद (शिक्षा) श्री कुलानन्द भारतीय जी के हैं। श्री भारतीय जी डा० प्रह्लादकुमार समिति द्वारा दिल्ली विश्वविद्यालय में आयोजित वैदिक व्याख्यान-माला में मुख्य अतिथिपद से अपने उद्‌गार व्यक्त कर रहे थे। उन्होंने स्नातकोत्तर वेद विकल्प के छात्रों को छात्र-वृत्तियां भी प्रदान कीं।

व्याख्यान गुरुकुल कांगड़ी के भूतपूर्व कुलाधिपति डा० सत्यकाम वर्मा का 'विश्व संस्कृतियों का उद्गम वैदिक संस्कृति' विषय पर था। डा० सत्यकाम ने अनेक देशों की यात्रा के बाद प्रत्यक्ष अनुभव के आधार पर यह बताया कि संसार में सर्वत्र किसी न किसी रूप में वैदिक संस्कृति विद्यमान है। चीन, अफ्रीका, अमरीका तथा यूरोप के देशों में किसी न किसी रूप में वैदिक देवी-देवताओं तथा वैदिक यज्ञ-पद्धति के अवशेष प्राप्त हो जाते हैं।

समारोह की अध्यक्षता प्रो० डा० व्रजमोहन चतुर्वेदी, अध्यक्ष संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्व विद्यालय ने की। उन्होंने कहा कि वस्तुत: डा० वर्मा द्वारा प्रतिपादित विषय पर बहुत अनुसंधान करने की आवश्यकता है। उन्होंने वेद व वैदिक संस्कृति की उपादेयता पर भी प्रकाश डाला।

इस अवसर पर डा० चतुर्वेदी ने वैदिक व्याख्यानमाला के द्वितीय स्तबक 'वेद व्याख्या और वैदिक विचारधारा' पुस्तक का विमोचन किया। वैदिक व्याख्यानमाला से वैदिक विद्वानों के इस समारोह में प्रतिवर्ष पढ़े जानेवाले व्याख्यानों का संग्रह रहता है।

डा० प्रशांत वेदालंकार ने बताया कि प्रख्यात वैदिक विद्वान् डा० प्रह्लादकुमार की ३२ वर्ष की अल्प आयु में ही १९७७ में मृत्यु होगई थी। प्रतिवर्ष उनके जन्मदिवस पर एक वैदिक विद्वान् का व्याख्यान कराकर उसका स्मृति पर्व मनाया जाता है। यह डा० प्रह्लादकुमार की ४२वी जयन्ती थी।

समिति के अध्यक्ष डा० सत्यदेव चौधरी ने भी वैदिक संस्कृति के प्रसार पर अपने विचार व्यक्त किये।

समिति के सचिव डा० कृष्णलाल ने 'वैदिक व्याख्यान' का आयोजन किया और श्री भारतीय जी से कहा कि नई शिक्षा-नीति में जो संकट संस्कृत पर आरहा है, वह आप दिल्ली में नहीं आने देंगे। भारतीय जी ने दिल्ली में संस्कृत अकादमी की स्थापना कराकर अपना संस्कृत प्रेम प्रकट किया है।

सभा का प्रारम्भ वैदिक मन्त्रों से हुआ और समापन के अवसर पर शांतिपाठ पढ़ा गया।

वेदों में सतीप्रथा का विधान नहीं

नई दिल्ली, ८ अक्तूबर (भाषा)। आर्यसमाज के नेता स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा है कि ऋग्वेद में सतीप्रथा का कोई विधान नहीं है। उन्होंने पुरी के शंकराचार्य निरंजनदेव तीर्थ को चुनौती दी कि वे ऋग्वेद का वह मत बतायें, जिसमें पति के मरने पर पत्नी को साथ जला देने का विधान हो।

स्वामी आनन्दबोध ने, जो कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान भी हैं, ने पुरी के शंकराचार्य के हाल के बयान को दुर्भाग्यपूर्ण बताया। बयान में सतीप्रथा के समर्थन में ऋग्वेद का हवाला दिया गया था और राजा राममोहनराय के सतीप्रथा विरोधी आंदोलन को १५८ वर्ष पहले का पाप कहा गया था।

इसके विपरीत आर्यसमाजी नेता ने सतीप्रथा को अमानुषिक अत्याचार बताया है और हिन्दू समाज के सभी संन्यासियों, सन्तों तथा धार्मिक नेताओं से इस कुप्रथा का विरोध करने की अपील की है।

(नवभारत टाइम्स से साभार)

नरवाल खाप द्वारा नशाबन्दी की शपथ

गोहाना, ३ अक्तूबर (निस)। विगत दिवस शामली (उ०प्र०) में नरवाल खाप की वार्षिक प्रसभा सम्पन्न हुई, जिसका सभापतित्व रिढ़ाणा (गोहाना) गांव के चौ० फूलसिंह ने किया। इसमें चन्द्रवीर वर्मा को सर्वसम्मति से खाप का अध्यक्ष निर्वाचित करते हुए निर्णय किया गया कि खाप मद्यपान का पूर्ण बहिष्कार करेगी और जहां कहीं किसी गांव अथवा शहर में एक भी नरवाल परिवार रहता होगा, वह अपने चहुं ओर स्थित सभी ठेकों को समाप्त करवाने के लिये जी-जान लड़ा देगा।

एक अन्य प्रस्ताव में निश्चित हुआ कि विवाहों में दहेज लेने या देनेवाले नरवालों को खाप से निष्कासित कर दिया जायेगा।

आर्यसमाज कालका में वेदप्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्यसमाज कालका का वेदप्रचार सप्ताह १३ सितम्बर से २० सितम्बर, ८७ तक सम्पन्न हुआ। सप्ताह शुभारम्भ १३ सितम्बर को नये सत्सग भवन के उद्घाटन के साथ हुआ। इसकी अध्यक्षता श्री कान्तिप्रकाश भल्ला एम० एल० ए० ने की।

सप्ताहभर सभा के महोपदेशक श्री ब्र० महेन्द्र जी शास्त्री के भाषण तथा श्री चिरंजीलाल की भजनमण्डली के भजन हुए। गुरुकुल कुरुक्षेत्र के आचार्य श्री देवव्रत ने सप्ताह का समापन किया। २० सितम्बर को प्रीतिभोज भी हुआ। सभा को प्रचारार्थ ११००) प्राप्त हुए। ❋

गौ तथा भैंस की सर्वोत्तम हरयाणा नसल को बचाना हरयाणावासियों का पुनीत कर्तव्य

सारा देश जानता है कि हरयाणा नसल की गाय बछड़े और बैल देशभर में मशहूर हैं। इसी प्रकार हरयाणा की मुर्रा नसल की भैंस भी देश में सर्वोत्तम है।

जिस भयकर सूखे का मुकाबला हरयाणा के आधे से ज्यादा जिलों की जनता को करना पड रहा है, यह हमारी याद में कभी भी नही करना पड़ा। अन्न के भण्डार तो देश मे हैं, परन्तु पशुओं के लिये चारे और भूसे के भण्डार नही हैं। ज्यो-ज्यों समय बीत रहा है, चारा और भूसा महगा तो होता हो जारहा है, उनका मिलना भी कठिन से कठिनतर होता जारहा है।

किसानों को अपनी गाय, बछडे, बछड़ियां, बैल और भैसें को बचाने के लाले पड रहे हैं। ऐसे भयकर सूखे और अकाल से पीडित किसान साडो (खागड और झोटे) की सुध-बुध ले पायगे यह असम्भव होता जारहा है। हम सब भली प्रकार जानते है कि यदि साडों की पूरी देख-रेख और चराई नही हो पाई और वे कमजोर होगये या मर गये तो हरयाणा की गाय और भैस की नसलो में गिरावट आजायेगी और वह हरयाणा और देश के लिये बहुत बडी हानि होगी। चाहिये तो अच्छे बछडे और कटडे चुनकर, उनको साड बनाने के लिये उनको भी अच्छी खुराक दी जाये, परन्तु जो साड इस समय प्रदेश की मशहूर नसलो को अभिवृद्धि में सेवारत है, उनको बचाया ही न जाये, बल्कि उनको पूरी खुराक देकर हृष्ट-पुष्ट रखा जाये।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का ध्यान इधर गया और उसने इस दिशा मे अपने कर्त्तव्य का पालन करने का सकल्प लिया है। हमने हरयाणा सरकार और भारत सरकार से भी निवेदन किया है कि वे एक तिहाई सहायता करे। यदि १५ रु० दनिक व्यय एक साड पर आता है तो वे ५ रु० द और हरयाणा की जनता भी एक तिहाई हिस्सा वहन करे।

हमारा अन्दाजा है कि लगभग १००० सांडों की रक्षा का भार हम सबको मिलकर उठाना होगा। ५ रु० प्रति साड जनता को इकट्ठा करना है। चारा और दाना दोनो का प्रबन्ध करना है।

हरयाणा के लोग जहां भी हो, हरयाणा में या बाहर, उन सब की सेवा मे हम पुरजोर अपील करते हैं कि वे इस पवित्र कार्य मे दिल खोलकर मदद करे और उदारता से चारा, अन्न या नकद दान दे।

मण्डियों के धर्म-प्रेमी सभी व्यापारी भाइयों से विशेष अपील है कि वे हरयाणा की मशहूर गाय और भैंसो की नसल की रक्षा के लिये दिल खोलकर दान द।

निवेदक

ओमानन्द सरस्वती	प्रो० शेरसिंह	वेदव्रत शास्त्री	बद्रीप्रसाद आर्य
प्रधान	प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष
परोपकारिणी सभा	आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा		

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 रजि० न० P/RTK 49

सृष्टि संवत् १,९६,०८,५३,०८८



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री

सह-सम्पादक—डा० यज्ञवीर

वर्ष १४, अङ्क ४६ २८ अक्तूबर, १९८७ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की बैठक में महत्त्वपूर्ण निश्चय—

सूखा सहायता कार्य-संचालन हेतु जिलावार उपसमितियों का गठन, कुरुक्षेत्र में श्रीमद्भगवद्गीता पर साहित्यिक गोष्ठी का आयोजन, आर्य विद्यालयों में आर्य वीरदलों की स्थापना की जायेगी।

(केदारसिंह आर्य कार्यालय संवाददाता द्वारा)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की बैठक सिद्धांती भवन, रोहतक में सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह की अध्यक्षता में २५ अक्तूबर रविवार को सम्पन्न हुई। इसमें हरयाणा के कोने-कोने से प्रमुख अंतरंग सदस्य सम्मिलित हुए।

बैठक में सर्वसम्मति से निम्न प्रकार महत्त्वपूर्ण निश्चय किये गये—

सूखा सहायता कार्य-संचालन हेतु जिलावार उपसमितियों का गठन—

इस वर्ष हरयाणा प्रदेश में भयंकर अकाल तथा सूखा पड़ने से पशु-धन को अत्यधिक हानि होने की सम्भावना है। पीने के लिए पानी तथा हरे चारे की कमी के कारण पशुओं, विशेषकर सांड तथा झोटों की नसल समाप्त होने का खतरा बढ़ रहा है। अपने-अपने पशुओं की रक्षा तो येन-केन प्रकारेण की जारही है। परन्तु सांड तथा झोटे सांझे होने के कारण उनके जीवन की रक्षा हेतु कम ध्यान दिया जारहा है। हर-याणा प्रदेश के सांड तथा झोटे सारे संसार में शक्तिशाली हैं। इसी कारण गाय तथा भैंस की इतनी अच्छी नसल विश्व के अन्य किसी राष्ट्र में नहीं मिलती।

अतः सभा ने इस गोआदि नसल की रक्षा के लिए सहायता का कार्य आरम्भ करने का निश्चय किया है। इस सम्बन्ध में भारत सरकार तथा हरयाणा सरकार से भी आर्थिक सहायता अनुदान की मांग की है तथा जनता से इसी महत्त्वपूर्ण सेवा-कार्य के लिए दान की अपील की है। सभा की अपील पर निम्न प्रकार दान प्राप्त हुआ।—

श्री आर. आनन्द नई दिल्ली २००), श्री रमेशदेव मलिक सैनिक ५०), सूबेदार सीसराम सभासदक भाजरा दूबलधन, जि. रोहतक १००), प्रो. जयसिंह मलिक आर्यसमाज प्रेमनगर, रोहतक ५००), श्री रणधीर-सिंह राठी माडल टाउन, रोहतक १०१)।

सूखा सहायता के कार्य के लिए धनसंग्रह तथा ग्रामों में पशुधन की रक्षार्थ सहायता कार्य-संचालन के लिए जिलेवार निम्नलिखित उप-समितियों का गठन किया गया—

जिला रोहतक : वानप्रस्थी महावीर, म. फतेहसिंह भण्डारी, श्री ताराचन्द आर्य कारोली, श्री भूपेन्द्रसिंह मलिक एडवोकेट, प्रो. प्रकाश-वीर विद्यालंकार। जिला सोनीपत : श्री पंजुराम आर्य सोनीपत, श्री कपिलदेव शास्त्री हैफेड अध्यक्ष। जिला हिसार : डा. रणजीतसिंह नार-नौंद, प्रो. सत्यवीर विद्यालंकार, श्री मत्तरसिंह आर्य सभा उपदेशक। जिला सिरसा : डा. रणबीरसिंह सांगवान, प्रि. दलीपसिंह, श्री सत्यपाल आर्य, श्री मनफूलसिंह आर्य। जिला गुड़गांव : श्री श्यामलाल आर्य, श्री सजानसिंह एडवोकेट झाडसा, श्री महेन्द्र शास्त्री सभा उपदेशक। जिला जींद : मा. बद्रीप्रसाद आर्य, ला. छबीलदास आर्य। जिला भिवानी : प्रो. सत्यवीर शास्त्री, श्री भरतसिंह शास्त्री। जिला फरीदाबाद : श्री राजेन्द्रसिंह, श्री सुखबीरसिंह आर्य, श्री लछमनदास आर्य, श्री कन्हैया-लाल महता, श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री सभा उपदेशक। जिला महेन्द्रगढ़ : म. ताराचन्द आर्य, म. शिवकरण लूखी, श्री रामपत कनीना। जिला कुरुक्षेत्र : डा मनोहरलाल आर्य, सेठ राममूर्ति, श्री अमरसिंह, प्रि. बीरुराम, श्री धर्मपाल सर्राफ, श्री जयपाल आर्य, श्री कृष्णकांत वधवा। जिला करनाल : श्री रामानन्द सिंगला, प्रि. लाभसिंह, मा. जसवन्तसिंह आर्य, श्री लक्ष्मणसिंह।

२. श्रीमद्भगवद्गीता पर साहित्यिक गोष्ठी का आयोजन—

हरयाणा साहित्यक अकादमी के सहयोग से गुरुकुल कुरुक्षेत्र में श्रीमद्भगवद्गीता पर साहित्यिक गोष्ठी का आयोजन करने का निश्चय किया गया है। इस गोष्ठी की तैयारी तथा स्थान एवं दिनांक का निश्चय करने के लिए प्रि० बीरुराम जी, डा० सुदर्शनदेव आचार्य, डा० रणजीतसिंह तथा प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार पर आधारित एक उप-समिति का गठन किया गया है।

३. आर्य विद्यालयों में आर्य वीरदलों की स्थापना करने का कार्यक्रम—

सभा की आर्यविद्या परिषद् की बैठक के निश्चय के अनुसार हर-याणा प्रदेश के आर्य विद्यालयों तथा गुरुकुलों में आर्य वीरदलों की स्थापना करके शाखायें चलाने का कार्यक्रम बनाया गया है। इस योजना की तैयारी के लिए शीघ्र ही सभी आर्य विद्यालयो, गुरुकुलों तथा आर्य वीरदल के अधिकारियो की एक बैठक बुलाने का निश्चय किया गया है। आर्य विद्यालयो की धार्मिक शिक्षा की परीक्षायें १६ जनवरी, ८८ को होंगी। १९८७ की परीक्षाओं में उच्च स्थान प्राप्त करनेवाले छात्र तथा छात्राओं को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर पानीपत में पारितोषिक वितरित किये जायेंगे।

४. सभा का वार्षिक अधिवेशन—

सभा के आगामी वार्षिक अधिवेशन की तिथियां तथा स्थान का निश्चय करने का अधिकार सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह को दिया गया है।

(शेष पृष्ठ २ पर)

संस्कृत में ही न्यायालयी निर्णय क्यों ?

—न्यायमूर्ति श्री बनवारीलाल यादव

प्रारम्भ से ही स्वभाव और संस्कारगत रूप से मुझे संस्कृत भाषा और भारतीयता से लगाव रहा है। संस्कृत के अध्ययन से यह बात और स्पष्ट हुई कि भारत की आत्मा की खोज के लिए देववाणी संस्कृत भाषा का मनन और अध्ययन तथा प्रचार एवं प्रसार अतिआवश्यक है। जहां तक न्यायालयीय न्याय की परम्परा का सम्बन्ध है, न्याय-पद्धति का प्रारम्भ या उद्गम सर्वप्रथम भारत में हो हुआ। एतद्विषयक प्रमाण हमें वैदिक साहित्य में मिलता है। संस्कृत साहित्य में कानून की वे बातें लिखी हुई हैं, जिन्हें भारत के आधुनिकतम कानून-नियामक गहराई से नहीं समझ पाये हैं।

संस्कृत के बहुचर्चित नाटक "मृच्छकटिकम्" में, जो अति प्राचीन ग्रंथ है, न्यायालय-सम्बन्धी कई विवरण मिलते हैं; जैसे, न्यायालय-कक्ष कितना लम्बा-चौडा था तथा उसको सफाई करनेवाले कितने सेवक थे, मुकदमा कैसे पेश होता था, न्यायाधीश को अपेक्षित तथ्य और कानून से कैसे अवगत कराया जाता था।

इस नाटक की कथा के अनुसार वसंतसेना नामक सुन्दरी वेश्या की हत्या का आरोप चारुदत्त पर लगाया जाता है। उस पर मुकदमा चलता है। पर वास्तविकता यही थी कि चारुदत्त ने हत्या नहीं की थी, फिर भी न्यायालय की गलती से उसे मृत्यु-दण्ड मिला था। जब उसे मृत्यु-दण्ड दिया जा रहा था कि उसी समय वसंतसेना स्वयं उपस्थित होगई। फलस्वरूप प्रमाणित हुआ कि वसंतसेना की हत्या हुई ही नहीं थी!

हमारे यहां तमाम स्मृतियों में कानून का विशद वर्णन मिलता है। मनुस्मृति, नारदस्मृति, कात्यायनस्मृति, गौतमस्मृति, वशिष्ठस्मृति, याज्ञवल्क्यस्मृति आदि जो सब कम से कम ढाई हजार वर्ष पूर्व की हैं, उनमें कानून को विशद व्याख्या मिलती है, जो पद्यबद्ध है।

इन स्मृतियों के अध्ययन से मुझे प्रेरणा मिली कि जिस देवभाषा में कानून की स्मृति-परम्परा है, उसे प्रचार-प्रसार अवश्य मिलना चाहिए।

हमारे यहां १० जून, १७६४ ई० को संस्कृत भाषा में लिखे गये प्राचीनतम निर्णय का प्रमाण मिलता है। शायद यह संस्कृत भाषा में लिखा गया अन्तिम निर्णय था। यह निर्णय मिथिला के न्यायाधीश सचल मिश्र ने वादी वल्ली शर्मा, प्रतिवादी जानकी शर्मा के मुकदमे का दिया था। इसका विवरण 'कलकत्ता वीकली नोट्स' (कानून) के वोल्यूम-२४, सन् १९१९ में प्रकाशित हुआ है।

१७ मई, १९८५ ई० को मैंने संस्कृत में दो निर्णय दिये। पहला भोलानाथ उपाध्याय प्रतिवादी उपसंचालक चकबन्दी, देवरिया और दूसरा लक्ष्मीनारायण प्रतिवादी उपसंचालक चकबन्दी, वाराणसी।

इसके बाद १७ अक्तूबर, १९८६ ई० को मैंने ५ निर्णय संस्कृत में दिये तथा कई आदेश भी संस्कृत में दिये। संस्कृत भाषा में कम से कम १५१ निर्णय देने का मेरा विचार है।

मैं संस्कृत में ही निर्णय क्यों देना चाहता हूं, इसलिए कि संस्कृत भाषा के विभिन्न ग्रन्थों में वर्णित बुद्धिमत्तापूर्ण न्यायालयीय पद्धति-वर्णन की परम्परा पर आधुनिकतम कानून को भारत के उपयुक्त बनाया जा सकता है। दूसरे देश की एकता-अखण्डता के लिए संस्कृत ही एक महत्वपूर्ण कड़ी है।

जब मैंने पहला निर्णय संस्कृत में दिया तो दूसरे दिन १८ मई, १९८५ ई० को देशभर के सभी प्रमुख समाचारपत्रों में यह समाचार प्रकाशित हुआ। संस्कृत में निर्णय देने के मेरे साहस पर हजारों लोगों ने बधाइयां दीं, सैंकड़ों पत्र देश के कोने-कोने से मेरे पास आये, जिसमें इस सराहनीय कार्य के लिये लोगों ने मेरी प्रशंसा की थी, विशेषकर दक्षिण भारत के लोगों ने! वहां से जो पत्र आये उसका आशय यह था कि "हम लोगों का हिन्दी से तो विरोध है, परन्तु संस्कृत से नहीं।" संस्कृत के उत्थान में उन लोगों ने अपना सहयोग देने का भी वचन दिया था। इसी ओर कुछ लोगों ने मेरी भर्त्सना भी की। उन लोगों ने कहा कि संस्कृत के जानकार कम ही लोग हैं, इसलिए संस्कृत में निर्णय देने की कोई उपयोगिता नहीं है।

लेकिन वास्तविकता यह है कि संस्कृत के उत्थान, प्रचार, प्रसार एवं प्रगति के लिए राजनीतिक प्रश्रय, वर्तमान सरकार का सहयोग तथा उस साहित्य का अर्थकरक होना आवश्यक है। यह तभी सम्भव है जब वह जन-जन तक पहुंचे।

संस्कृत को लोग प्रायः 'मातृभाषा' मानते हैं, पर मैं इसे 'देव-भाषा' मानता हूं। मैंने अपने सीमित दायरे में यह साबित भी किया है कि यह मृतभाषा नहीं, बल्कि न्यायालय के लिए सर्वाधिक उपयुक्त भाषा है।

हिन्दी जिस तरह न्यायालय की भाषा है, उसी तरह संस्कृत को भी न्यायालय की भाषा घोषित किया जाना चाहिए। इसका कारण है कि न्याय के बहुत से अंग्रेजी के शब्दों के समूह हिन्दी में मिलने कठिन हैं, किन्तु संस्कृत में प्रचुर मात्रा में हैं। उदाहरण के लिए 'जजमैंट' के लिए हिन्दी शब्द 'निर्णय' है, जबकि संस्कृत में 'न्याय' और यही इसका उचित आशय भी है।

मेरे संस्कृत में निर्णय देने के बाद कुछ याचिकायें संस्कृत में दाखिल हुईं, जिनका रूपांतर हिन्दी और अंग्रेजी में किया गया। तर्क भी संस्कृत में दिये गये। सर्वश्री हरिहरप्रसाद त्रिपाठी, हरप्रसाद त्रिपाठी और रामशंकर द्विवेदी आदि अधिवक्ताओं ने संस्कृत में ही तर्क प्रस्तुत किये।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में मैंने अपने भाषण में कहा कि संस्कृत में लिखने-समझने की अद्भुत क्षमता है, इसलिये संस्कृत ही सर्वश्रेष्ठ भाषा है। यदि कंप्यूटर पर इसका परीक्षण किया जाये तो कंप्यूटर भी इसे सर्वश्रेष्ठ प्रमाणित करेगा। मेरे इस कथन के आधार पर बम्बई में प्रयोग किया गया और यह सिद्ध हुआ कि संस्कृत भाषा कर्णप्रिय, आधुनिकतम, वैज्ञानिक एवं उच्चरित करने में सर्वश्रेष्ठ भाषा है।

इस प्रयोग के बाद मेरे उसी कथन के आधार पर अमेरिका में भी प्रयोग हुआ और यह सिद्ध हुआ कि संसार की सभी भाषाओं में संस्कृत सर्वश्रेष्ठ है, विशेष रूप से कंप्यूटर के प्रयोग के लिये।

(पृष्ठ १ का शेष)

५. दिवंगत आर्यनेताओं को श्रद्धांजलि तथा शोक प्रस्ताव—

अन्तरंग सभा की बैठक में निम्नलिखित आर्य महानुभावों के स्वर्गवास होने पर श्रद्धांजलि अर्पित की गई तथा शोक-प्रस्ताव पास किया गया। दीवान भीमसेन, हंसराज कालड़ा, श्री रणवीरसिंह अवस्था (नई कालोनी गुड़गांव), श्री धर्मसिंह पूर्व विधायक की धर्मपत्नी श्रीमती गुलाबकौर, श्री सुमेरसिंह स्वरूपगढ़ की धर्मपत्नी, महात्मा अमर स्वामी, स्वामी वेदानन्द जी वेदवागीश, स्वामी वेदानन्द जी रोपड़, श्री लालचन्द सभरवाल पूर्व विधायक जालन्धर, श्री विश्वनाथ सिंगला पानीपत, श्री शक्तिसिंह बाजीतपुर दिल्ली, श्री रामविलास आर्य नरवाना, श्री कुलवन्तराय आर्य की सुपुत्री, श्री रामस्वरूप आर्य पूर्वप्रधान आर्यसमाज मालकोष।

—सभामन्त्री

मेरी चीन यात्रा—३

चीन में क्या देखा क्या जाना ?

—प्रो० शेरसिंह सभाप्रधान

गतांक से आगे--

२२ सितम्बर को हमारे लिये अवकाश का दिन था। अगले दिन से सम्मेलन प्रारम्भ होना था। २२ सितम्बर का दिन चीन के जो लोग प्रबन्ध तथा दोभाषिये के रूप में हमारे साथ तैनात किये गये थे, उन्होंने चीन के मशहूर स्थान दिखाने के लिये निश्चित किया था। हम लोग सवेरे नाश्ता करके बस के द्वारा घूमने के लिये निकल पड़े। मेरी धर्मपत्नि श्रीमती प्रभातशोभा जी पिछले वर्ष चीन होकर आई थीं। उनके शिष्टमण्डल में तो भारत की ओर से वे अकेली थीं और शाकाहारी केवल वही थीं। इसलिये उनको खाने-पीने के मामले में तीन-चार दिन चीन में बड़ी कठिनाई रही। दूध भी नहीं मिलता था और उनका शाकाहारी कहा जानेवाला भोजन भी शुद्ध शाकाहारी नहीं होता। इसलिये वे चाय, डबल रोटी और एकाध फल पर ही अपना दिन काटती रहीं। मैं उस कठिनाई को देखते हुए कुछ खाने के लिये और दूध के पाउडर की बोतल साथ ले गया था। आजकल अमरीका तथा यूरोप के बहुत लोग पर्यटन (घूमने) के लिये चीन आते हैं। विश्व पर्यटक दिवस भी २७-२८ सितम्बर को पड़ता था। इसलिये बड़ी संख्या में अमरीका और यूरोप के लोग भी चीन में पहुंचे हुए थे। अमरीका यूरोप में तो दूध मक्खन की बहुतायत है, इसलिये अब चीन के होटलों में दूध, दलिया, मक्खन, रोटी आदि का प्रबन्ध अच्छा किया जाने लगा है। जो आशंका खाने के बारे में थी वह पूरी ठीक नहीं निकली। परन्तु यह प्रबन्ध तो बड़े होटलों में विशेष रूप से विदेशियों के लिये किया जाता है। छोटी जगहों पर इक्के-दुक्के पर्यटक के लिये नहीं किया जाता।

हम लोग तो ३० मंजिल के कुनलुन होटल में ठहरे थे। कुनलुन का अर्थ है ऊंचा पहाड। उस होटल में ठहरने का एक दिन का किराया एक हजार रुपये से अधिक है। हम तो राष्ट्रसंघ तथा सम्मेलन के आयोजकों के मेहमान थे। २२ देशों के, आस्ट्रेलिया के तथा कुछ प्रेक्षक के रूप में आये हुए यूरोप के देशों के लोग भी थे। नाश्ते में हमको दूध, दलिया, डबल रोटी, मक्खन, शहद, फल तथा फलों का रस सब कुछ मिला। यह सब कुछ नाश्ते में ही मिलता था। दोपहर और शाम के भोजन में फल और फलों के रस तथा कुछ सब्जियां डबल रोटी ही मिल सकती थी। यदि उबली हुई सब्जी न हो तो शाकाहारी के काम की नहीं। क्योंकि सब्जी, मांस आदि के पकाने का माध्यम मूंगफली का तेल और सुअर की चर्बी का सम्मिश्रण होता था। भारत के १८ प्रतिनिधियों में से ७ शाकाहारी थे और उनमें से हम दो-तीन घोर शाकाहारी थे।

पहिले हम पहुंचे चीन की दीवार देखने। यह दीवार तो विश्व के सात आश्चर्यों में से एक है। पूर्व से पश्चिम की ओर करीब सारी चौड़ाई में फैली, पहाड़ों पर चढ़ती उतरती यह दीवार छह हजार (६,०००) किलोमीटर लम्बी है। यह देश को मंगोलिया की ओर से आनेवाले हमलावरों से चीन को बचाने के लिये बनाई गई थी। जगह-जगह चौकियां बनी हुई हैं। बचाव के लिये इतनी लम्बी दीवार, इतना भारी व्यय और श्रम लगाकर बनाई, यह आश्चर्य ही है। उस समय के चीन के सम्राटों को इसके सिवाय बचाव का कोई विकल्प ही नहीं सूझा, यह भी तो एक आश्चर्य है। विश्व का यह यथार्थ में ही एक आश्चर्य तो है ही। दीवार पर कुछ दूर तक हम चढ़े, एक-दो चौकियां देखीं और वापिस उतर आये। वहां से चलकर हम लोग वहां के सम्राटों के द्वारा बनाये गये ५०० वर्ष पहिले के महल देखने गये। ये महल नीचे दब गये थे और उसकी अधिकतर मंजिलें खुदाई करके निकाली गईं। दस मंजिल जमीन के नीचे बने हुए उस दस मंजिल के महल को हमने नीचे तक जाकर देखा। सम्राटों के तख्त, विभिन्न प्रकार के साज, सामान आदि उसमें सुरक्षित थे। दोपहर के भोजन के लिये शाकाहारी भोजन का एक रेस्टोरेंट में प्रबन्ध था। हरी सब्जियां, बांस की सब्जी भी बनाई थी। भोजन पकाने के माध्यम से भय के कारण शाकाहारी लोगों ने एक उबली सब्जी और रोटी का टुकड़ा ही खाया। रास्ते में हमने मकई और ज्वार की पकी हुई फसलें काटते किसान देखे। किसानों तथा खेती का जिक्र हम अगली किस्तों में करेंगे।

२३ सितम्बर को हम लोग 'जनता हाल' नाम के विशाल भवन में गये, जिसमें अनेक हाल हैं और सबसे बड़े हाल में दस हजार कुर्सियां लगती हैं। इसी विशाल भवन में चीन की पार्लियामेंट (संसद) की बैठकें होती हैं। यह २६ करोड़ में बना हुआ विशाल भवन है। यहीं पर चीन की परेडें होती हैं और यहां का विशाल चौक (ताईमेन चौक) संसारभर में विख्यात है। इसी भवन में २३ सितम्बर को हमारे सम्मेलन का उद्घाटन चीन के प्रधानमन्त्री ने किया। चीन की पीपल्ज कांग्रेस (संसद) के अध्यक्ष भी इस समारोह में सम्मिलित हुए। इसी भवन में चीन के संसद के अध्यक्ष के साथ सब देशों के प्रतिनिधियों के फोटो लिये गये। सम्मेलन की अन्य सभी बैठकें कुनलुन होटल के एक बड़े हाल में ही होती रहीं।

चीन की संसद के अध्यक्ष की ओर से २३ सितम्बर की रात्रि को एक बड़ा भोज दिया गया। हमको बता दिया गया था कि ८ नम्बर के मेज पर शाकाहारी भोजन होगा। दो चीनी भी हमारे उस मेज पर हमारे साथ रखे गये थे। आरम्भ में तो हमको उबली हुई सब्जी की एक प्लेट मिली, परन्तु अन्दर सजी रखी सभी प्लेटों में नाना प्रकार का मांस था, कुछ सब्जियां भी पकाई हुई थी, परन्तु पकाने का माध्यम तो जो होता है वहां वही था। इतने बड़े शानदार भोज में, जिसमें सब कुछ बनाया गया था, हमारे काम का तो नहीं था, इसलिये शुद्ध शाकाहारियों के पल्ले तो वही उबली सब्जी की प्लेट और केला, सेब ही पड़े। चीन की ओर से स्वागत सत्कार की कमी नहीं थी, परन्तु शाकाहारी की परिभाषा ही अलग है, उसका क्या किया जाये।

२५ सितम्बर को दो बजे हमारा सम्मेलन का कार्य समाप्त हो गया। उसके थोड़ी देर बाद ही हम लोग वर्जित नगर देखने के लिये गये। इस स्थान का यह नाम इसलिये पड़ा, क्योंकि यहां सम्राटों के विशाल महल हैं और सम्राटों के सचिवालय भी इसी प्रांगण में होते थे। यहां अनेक भवनों में सम्राटों के परिवारों के विलास के अनेक साधन हैं, उनके दरबारों के स्थान हैं, सचिवालय के कार्यालय हैं, बाग बगीचे हैं। इन स्थानों पर साधारण जनता का जाना निषिद्ध था, वर्जित था। आज तो इन यादगारों को देखने के लिये चीन के ही नहीं, संसारभर के साधारण लोग जाते हैं, परन्तु उस समय तानाशाहों के राज्य में वहां जनसाधारण की पहुंच नहीं थी। इसी कारण जनसाधारण में रोष था और वह रोष इतना भड़का कि चीन के किसानों ने सम्राटों के इन महलों को घेर लिया और मिंगवंश के अन्तिम सम्राट् को जब भागने का कोई रास्ता नहीं मिला तो उसने महल के बगीचे में एक वृक्ष से लटक कर फांसी ले ली। वह स्थान भी हमने देखा था। उसके पश्चात् चिंगवंश के सम्राटों का राज्य होगया। तानाशाही और बादशाही चीन में १९११ में हमेशा के लिये समाप्त होगई। १९११ की क्रांति के नेता सनयात सेन ने १९११ में चीन को गणराज्य बनाया और वे उस के पहिले राष्ट्रपति बने। च्यांग काई शेक और माओत्से तुंग दोनों उनके ही शिष्य थे। च्यांग काई शेक के कुशासन को समाप्त करके १९४९ में एक बड़ी क्रांति के बाद माओत्से तुंग के नेतृत्व में चीन में साम्यवादी सरकार बनी।

(क्रमशः)

महात्मा अमर स्वामी के पावन संस्मरण

लेखक—प्रो० भवानीलाल भारतीय

महात्मा अमर स्वामी जी के निधन से आर्यसमाज के विद्वानों और शास्त्र महारथियों की एक परम्परा ही समाप्त होगई है। अपनी ९६ वर्ष की सुदीर्घ आयु में ७५-७६ वर्ष उन्होंने वैदिकधर्म के प्रचार-प्रसार में लगाये। लगभग पौन शती तक सक्रिय रहकर आर्यसमाज की सेवा करनेवाले महापुरुष विरले ही हैं। अमर स्वामी का जन्म यद्यपि क्षत्रिय कुल में हुआ था। शास्त्रार्थों में उनकी क्षत्रियसुलभ ओजस्विता तथा विरोधी पर आक्रामक भाव भी प्रकट होता था, किन्तु प्रकृत्या वे ब्राह्मण ही थे। उनके स्वभाव की सरलता, कोमलता आर्यसमाजों के छोटे से कार्यकर्त्ता से लेकर बड़े से बडे नेता के प्रति उनका सम्मान का भाव तथा गुणग्राहकता उन्हें उन तपोपूत ब्राह्मणों की श्रेणी में खड़ा कर देती थी, जो सम्मान को तो विष के तुल्य दूर ही रखते हैं, किन्तु सम्भावित अपमान को गले लगाने में उन्हें कोई संकोच नहीं होता।

१८ वर्ष की आयु में प्रवेश करते-करते ही वे लाहौर पहुंच गये और आर्य प्रादेशिक सभा में उपदेशक का कार्य करने लगे। उसके पश्चात् अपने सुदीर्घ अध्ययन, शास्त्राभ्यास और शास्त्रार्थ पारव के कारण वे आर्यसमाज के महोपदेशकों की अग्रिम पंक्ति में जा बैठे। महात्मा हंसराज जैसे मूर्धन्य नेताओं के मार्ग-दर्शन में वे सुदीर्घकाल तक प्रादेशिक सभा के माध्यम से धर्म-प्रचार करते रहे। देश विभाजन के पश्चात् लाहौर के इस ओर का भारत उनका कार्यक्षेत्र बना। समय-समय पर वे हिसार, कलकत्ता, गाजियाबाद, अरनिया आदि स्थानों को केन्द्र बनाकर विभिन्न प्रकार के धर्म-प्रचार कार्य में रत रहे। कभी उपदेशक विद्यालय के आचार्य बने, तो कभी कलकत्ता आर्यसमाज के आचार्य पद को सुशोभित किया, कभी संन्यास आश्रम गाजियाबाद को सुशोभित करते रहे। जीवन के अन्तिम वर्षों में वेद मन्दिर गाजियाबाद में रहकर साहित्य साधना की।

उन्होंने अपने जीवन में सैकडों शास्त्रार्थ किये। पौराणिक, ईसाई और मुसलमान तीनों मतों के विद्वानों से शास्त्रार्थ सभा में भिड़ने में उन्हें कभी संकोच नहीं हुआ। अपने विस्तृत शास्त्रार्थकाल के अनुभवों को उन्होंने निर्णय के तट पर शीर्षक दो बृहद् ग्रन्थों में लेखबद्ध किया है। इस ग्रंथ का तीसरा खण्ड वे तैयार कर रहे थे कि उन्हें विधाता के विधान को स्वीकार कर, परलोक प्रस्थान करना पड़ा। आशा है कि श्री लाजपतराय निर्णय के तट के तृतीय खण्ड की सामग्री को व्यवस्थित कर शीघ्र प्रकाशित करायेंगे।

अमर स्वामी उपदेशक काल में 'ठाकुर अमरसिंह आर्य पथिक' के नाम से जाने जाते थे। उन्होंने उपदेशक का प्रशिक्षण सुप्रसिद्ध प० भोजदत्त आर्य मुसाफिर के आगरा स्थित मुसाफिर विद्यालय में प्राप्त किया था। जहां पं० बिहारीलाल शास्त्री कभी उनके अध्यापक भी रहे थे। आर्य मुसाफिर पं० लेखराम की विरासत को स्वीकार करते हुए, ठा० अमरसिंह ने तहरीर (लेखन) और तकरीर (व्याख्यान) के कार्य को कभी नहीं छोड़ा। वे प्रगल्भवक्ता, शास्त्रों के अपूर्ववक्ता और सरसवाणी के धनी प्रवाचक थे। उन्होंने कविहृदय भी पाया था। उनके सरस काव्य तथा भजनों का संग्रह प्रकाशित हो चुका है। उनके द्वारा लिखे ग्रन्थों की संख्या पर्याप्त है। आर्य सिद्धांत सागर की रचना उन्होंने लाहौर रहते ही की थी और इस ग्रंथ में वैदिक सिद्धांतो की पुष्टि तथा अवैदिक मन्तव्यों के खण्डन में प्रचुर प्रमाणराशि एक ही स्थान पर जुटाई थी। शास्त्रार्थकर्त्ताओं, उपदेशकों तथा धर्म-प्रचारकों के लिये इस ग्रंथ का बड़ा महत्त्व है। खेद है कि यह उपयोगी ग्रंथ दुबारा नहीं छपा।

जीवित पितर, गीता और ऋषि दयानन्द आदि उनके अन्य उल्लेखनीय ग्रन्थ हैं। गीता के वे प्रबल पोषक थे तथा इस ग्रन्थ को (स्वल्प अंश को छोड़कर) वेदिक सिद्धांतों का परम पोषक मानते थे। रामायण तथा महाभारत के कतिपय विवादास्पद प्रश्नों का समाधान करते हुए उन्होंने कुछ महत्त्वपूर्ण ग्रंथ लिखे थे। दशहरा के दिन रावण का मारा जाना, द्रोपदी का बहुपतित्व जैसे प्रश्नों का उन्होंने विस्तृत और सतर्क समाधान किया था। उनके शास्त्रार्थों के विवरण तो आर्यसमाज के साहित्य की स्थायी निधि ही बन गये हैं। यह अच्छा रहा कि उनके जीवनकाल में ही श्री विक्रमसिंह के पुरुषार्थ से उनका अभिनन्दन ग्रंथ भी छप गया। अन्यथा आर्यसमाज में विद्वान् के निधन के पश्चात् मौखिक काव्याञ्जलि के अतिरिक्त और होता ही क्या है?

मेरा अमर स्वामी जी से लगभग ३० वर्ष पुराना सम्बन्ध था। जब वे प्रथम बार आर्यसमाज सरदारपुरा, जोधपुर के वार्षिकोत्सव में पधारे थे, तब मैं उस समाज का मन्त्री था। उन्होंने गाजियाबाद रहते हुए वेदपथ मासिक का सफल सम्पादन किया। मेरे लेख इसमें बराबर छपते थे। एक बार रतलाम और बडनगर के प्रचार कार्यक्रम में भी उनके साथ रहने का अवसर मिला। चण्डीगढ में तो अभी दो वर्ष पहले ही उनके दर्शन हुए थे। उन्होंने मेरे निवास पर आकर मुझे कृतार्थ किया था।

आर्यसमाज के इतिहास की उन्हें विशद जानकारी थी। मेरी स्वयं की इस विषय में रुचि होने के कारण उन्होंने मुझे कई पुरानी बातें बताईं और पं० विश्वबन्धु शास्त्री विषयक प्राचीन विवाद के दौरान अपनी उर्दू में लिखी पुस्तक 'विश्वबन्धु का चालीसा' मुझे अपने पुस्तकालय के लिये भेजी। जब किसी व्यक्ति ने आर्य पत्रों में यह प्रकाशित करा दिया कि महात्मा हंसराज ७५ रुपये मासिक वृत्ति डी. ए. वी. कालेज कमेटी से लेते थे, तो महात्मा जी ने इसका प्रबल प्रतिवाद किया। इस सम्बन्ध में उन्होंने मुझे भी पत्र लिखा, जो उनका मुझे लिखा अन्तिम पत्र ही था। अचानक ही वे कैंसर जैसे भयानक रोग से ग्रस्त होगये और दिन प्रतिदिन अवसान की ओर बढ़ते गये। अपने पांचभौतिक शरीर के रूप में चाहे वे हमारे बीच नहीं हैं, किन्तु उनकी यश काया सदा रहेगी। कीर्तिर्यस्य स जीवति॥

आर्यसमाज होडल का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री हेतराम गर्ग, उपप्रधान—रंगलाल, मुरारीलाल, मन्त्री—भद्रसेन सचदेवा, उपमन्त्री—पं. देवदत्त, कोषाध्यक्ष—वेदप्रकाश, संरक्षक—ठाकुरदास दीवान, मूलचन्द आर्य।

आर्य युवकों का साइकिल द्वारा छः दिवसीय प्रचार यात्रा के दिल्ली पहुंचने पर भव्य स्वागत

आर्यसमाज नयाबांस दिल्ली-६ के तत्वावधान में आयोजित आर्य युवकों की छः दिवसीय साइकिल द्वारा प्रचार-यात्रा का उद्घाटन आर्य नेता श्री रामनाथ सहगल ने २ अक्तूबर, १९८७ को प्रातः वैदिकरीति के अनुसार नारियल तोड़कर किया।

यह यात्रा दिल्ली से आरम्भ होकर फरीदाबाद, बल्लभगढ़, गुरुकुल गदपुरी, पलवल, होडल, कोसीकलां, छाता, मथुरा होते हुए आगरा तक भिन्न-भिन्न छोटे-बड़े गांव, कस्बों और शहरों में प्रचार करते हुए पहुंची और ७ अक्तूबर को सायं आर्यसमाज नयाबांस दिल्ली पर समाप्त हुई।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के रामलीला मैदान स्थित कार्यालय पर सभा की ओर से युवकों का स्वागत हुआ। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, प्रो० शेरसिंह व आर्य वीरदल के संचालक श्री बालदिवाकर हंस ने युवकों के कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए भविष्य में ऐसे कार्यक्रमों पर पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

—चन्द्रमोहन आर्य, प्रेस सचिव

भाईचारा पंचायत ने नशाबन्दी करवाई

गोहाना २३ अक्तूबर (निस)। आज यहां से १८ किलोमीटर दूर खडवाली गांव मे हरयाणा की सुपर पंचायत 'भाई चारा पंचायत' की एक विशेष प्रसभा राज्य कृषि विपणन बोर्ड के अध्यक्ष श्री महेन्द्रसिंह लाठर के मुख्यातिथ्य में सम्पन्न हुई।

श्री लाठर ने नियमित पंचायत से पृथक् गठित इस ग्राम सुधार सभा द्वारा तीन माह की अल्प अवधि में नशाबन्दी के लक्ष्य को अर्जित करने की मुक्तकंठ से श्लाघा की तथा अपील की कि वह अपने कार्यक्षेत्र को खडवाली या पड़ोसी गांवों तक सीमित रखने की बजाय सकल प्रदेश में फैलायें।

इस आदर्श पंचायत की धारणा के सृजक श्री रामरतन हुड्डा ने उपलब्धियों का ब्यौरा देते हुए बताया कि नशाबन्दी अभियान से जुर्माने के रूप में ६०००) रु० वसूले गये हैं। अब भ्रष्टाचार उन्मूलन व पारस्परिक विवादों के स्थानीय हल पर बल दिया जायेगा। इसके लिए "शराब, धूम, आपसी झगड़े बन्द, 'भाईचारा पंचायत करेगी प्रबन्ध' का उद्घोष बुलन्द किया जायेगा।

कपालमोचन मेले पर यज्ञ तथा वेदप्रचार का आयोजन

कपालमोचन तहसील जगाधरी, जि० अम्बाला में ३ से ५ नवम्बर, १९८७ तक एक बहुत बड़ा मेला भरता है, जहां लाखों की संख्या में नर-नारी धार्मिक भावना से आते हैं। विभिन्न सम्प्रदायों की ओर से मेले पर प्रचार शिविर लगाकर अपनी ओर आकर्षित करने का यत्न किया जाता है।

इस अवसर पर प्रतिवर्ष की भांति आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से ३ से ५ नवम्बर तक यज्ञ तथा वेदप्रचार का आयोजन किया गया है। श्री स्वामी सदानन्द जी महाराज के संयोजन में सभा के उपदेशक ब्र० महेन्द्रसिंह शास्त्री, ब्र० संजयदेव शास्त्री एवं पं० सीताराम आर्य, पं. मुरारीलाल बेचैन, पं० विद्याभूषण आर्य आदि भजनोपदेशक प्रचार कार्य करेंगे।

आर्यसमाजों तथा दानी महानुभावों से निवेदन है कि यज्ञ, वेदप्रचार तथा ऋषिलंगर हेतु अधिक से अधिक धन, अन्न, चावल, आटा, घी तथा सामग्री आदि प्रदान करके यश के भागी बनें तथा मेले में पहुंच कर धर्म-प्रचार से लाभ उठावें।

निवेदक

ओमानन्द सरस्वती	प्रो० शेरसिंह	वेदव्रत शास्त्री	रघुवीरसिंह
प्रधान	प्रधान	मन्त्री	वेदप्रचाराधिष्ठाता
परोपकारिणी सभा	आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा		

आर्यसमाज बुद्धिजीवी सम्मेलन

१४ अक्तूबर। आर्यसमाज की भावी रूपरेखा के निर्धारण के लिए प्रस्तावित आर्यसमाज बुद्धिजीवी सम्मेलन के संयोजक डा० प्रशांत वेदालंकार ने आज यहां बताया कि आर्यसमाज के शैथिल्य को दूर करने और उसे युगानुरूप नई दिशा प्रदान करने के लिए बुद्धिजीवी सम्मेलन की अत्यन्त आवश्यकता है। आर्यसमाज ने राष्ट्रीय उत्थान, समाज के उत्कर्ष व शिक्षा के प्रचार और प्रसार में जो क्रांति की थी, उसी प्रकार की एक दूसरी क्रांति की आज आवश्यकता बनी हुई है।

देवराला में विधवा रूपकंवर (१८) के सती होने की घटना ने आर्यजगत् को झकझोर दिया है। आज भी देश में कुछ धर्माचार्य और कुछ जातियां हैं जो इसका समर्थन करती हैं। वस्तुतः इन सब अन्धविश्वासों के विरुद्ध आर्यसमाज को फिर से आंदोलन चलाना होगा।

डा० प्रशांत वेदालंकर ने इस अवसर पर नई शिक्षा-नीति की भाषा-नीति की कटु आलोचना की। जिसके अनुसार माध्यमिक कक्षाओं से संस्कृत की शिक्षा समाप्त की जारही है। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज व अन्य संस्कृत की समर्थक सभी संस्थाओं को सरकार की इस व्यवस्था के विरुद्ध अपनी शिक्षा संस्थाओं में संस्कृत विषय अनिवार्य रखकर भारत सरकार पर दबाव डालना होगा कि वह त्रिभाषा सूत्र में संस्कृत को भी स्थान दे।

डा० प्रशांत ने बताया कि प्रस्तावित बुद्धिजीवी सम्मेलन की सम्भावित तिथियां सन् १९८८ में महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस के आस-पास निश्चित की जायेंगी। इससे पूर्व देश के विभिन्न भागों में बुद्धिजीवी सम्मेलन आयोजित कर जन-जागरण का कार्य सम्पन्न होगा। इस सम्मेलन में उन सब आर्यसमाजी बुद्धिजीवियों का सहयोग प्राप्त किया जायेगा, जो आर्यसमाजी होते हुए भी आर्यसमाज संगठन से कुछ हट गये हैं।

डा० प्रशांत वेदालंकार ने बताया कि ५१ रुपये देकर व्यक्ति इस का प्रतिनिधि बन सकता है। उन्होंने इस सम्मेलन पर ५१ हजार रुपयों की राशि के व्यय होने का अनुमान लगाया और सभी से अपील की कि वे इस राशि को एकत्र करने में सहयोग दें। इस विचार-यज्ञ में डाली गई आहुति आर्यसमाज के कार्यक्रमों में एक क्रांति ला सकती है। पुनश्च-अभी तक दिल्ली, कलकत्ता व गाजियाबाद में बुद्धिजीवी सम्मेलन की बैठकें हो चुकी हैं। ३१ अक्तूबर, ८७ को मातृमन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी की ओर से एक बैठक बड़े पैमाने पर बुद्धिजीवी सम्मेलन की आयोजित की गई है, जिसमें डा० प्रशांत के अतिरिक्त डा आनन्दप्रकाश, श्री धर्मवीर, श्री दत्तत्रेय बाबले, डा० राजेन्द्र गुप्त (दानापुर केंट पटना) आदि सम्मिलित होंगे। दिसम्बर मास में आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश में होशंगाबाद में बड़े पैमाने पर बुद्धिजीवी सम्मेलन आयोजित किया है।

—डा० प्रशांत वेदालंकार
संयोजक आर्यसमाज बुद्धिजीवी सम्मेलन,
७/२, रूपनगर, दिल्ली-११०००७

हिसार में वेदप्रचार

दिनांक ६-९-८७ को ग्राम नलवा में सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी के प्रयास से वेदप्रचार किया गया। जिसमें स्वामी जगतमुनि व महाशय झाबेराम के प्रेरणाप्रद भजन व उपदेश हुए। दिनांक ७-९-८७ को पुष्करलाल आर्य की इच्छा अनुरूप पूर्णिमा के उपलक्ष्य में आर्यसमाज मन्दिर नलवा में प्रातःकाल हवन किया गया तथा उपरोक्त विद्वानों के भजन हुए। सायंकाल क्रांतिकारी के निवास पर वेदप्रचार हुआ। जिसमें तीन किलोमीटर से चलकर कवारी से साइकिलों द्वारा नवयुवक पधारे। अन्य निकट की ढाणियों से भी काफी संख्या में नर-नारियों ने भाग लिया। ८-९-८७ को सायंकाल ग्राम धमाना में वेदप्रचार हुआ। इन विद्वानों के अतिरिक्त क्रांतिकारी जी ने लोगों को शराब से दूर रहने तथा आर्यसमाज में सम्मिलित होने बारे विचार रखे। प्रातःकाल महाशय रामसिंह जी के घर पर पारिवारिक हवन किया। इस प्रकार कार्यक्रम बड़ा ही रोचक व प्रेरणाप्रद रहा।

—इन्द्रसिंह आर्य, मन्त्री आर्यसमाज कवारी

कन्या गुरुकुल पंचगांव का ६६वा वार्षिकोत्सव सम्पन्न

१—इस महोत्सव में आर्यजगत् के प्रसिद्ध संन्यासी सर्वश्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती, स्वामी दर्शनानन्द जी तथा आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा के महोपदेशक श्री महेन्द्र सिंह जी शास्त्री ने अपने धर्मोपदेशों के द्वारा श्रोताओं को आनन्दित किया।

२—आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भजनोपदेशक सर्वश्री जयपाल, वानप्रस्थी राममुनि वैद्य तथा धर्मवीर आदि ने अपने मनोहर भजनों द्वारा जनता का मनोरंजन किया।

३—गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों ने भी अपने भाषणों, भजनों तथा अपने आसनों के व्यायाम प्रदर्शन द्वारा जनता को आकर्षित किया।

४—गुरुकुल झज्जर के ब्र० यशवीर ने नंगे गले से लोहे के सरियों को मोड़ तथा लोहे की बेल (मोटी जंजीर) को तोड़कर अपने बल का प्रदर्शन किया।

५—उत्सव के साथ ही यजुर्वेद पारायण यज्ञ किया गया।

६—हरयाणा के राजनेता श्री बनारसीदास जी गुप्ता उप-मुख्य मन्त्री भी उत्सव में पधारे। उन्होने जहा जनता को सम्बोधित किया, वहां-वहां गुरुकुल के लिये २१०००) इक्कीस हजार का अनुदान दिया तथा गुरुकुल तक पक्की सड़क बनवाने तथा गुरुकुल को वार्षिक सहायता दिलवाने का वचन दिया।

इस वर्ष भयंकर दुर्भिक्ष होने पर भी दानी महानुभावों ने ७०००) सात हजार रुपये उत्सव पर दान किया है। गुरुकुल की ओर से सन्यासीगण, भजनोपदेशको, राजनेता तथा दानी सज्जनों का धन्यवाद किया।

सतीप्रथा बन्द हो

दिनांक ११-१०-८७ को प्रातः ९ बजे आर्यसमाज जींद शहर का साप्ताहिक सत्संग प्रधान श्री छबीलदास की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इसके पश्चात् सभा का आयोजन हुआ। इसमें श्री रामधारी शास्त्री, मा० मोहनलाल, मा० बद्रीप्रसाद, वैद्य श्रीराम आदि अनेक विद्वानो व आर्यसमाज के अधिकारियो ने सतीप्रथा के विरुद्ध अपने विचार रखे। इस महासभा में 'रूपकवर सतीकाड' की भरपूर निन्दा की गई। आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओ ने शकराचार्य की इस उक्ति को निराधार बताया कि ऋग्वेद में सतीप्रथा का मण्डन है। आर्यसमाज जींद शहर ने श्री शंकराचार्य जो शास्त्रार्थ का आह्वान करते हुए सतीप्रथा को स्वतन्त्र भारत के मस्तक पर कलक बताया। आर्य सभासदों की मान्यता थी कि पति के मरने के बाद नारी ही क्यों जलाई जाती है। क्या कभी नारी के मरने के बाद कोई पुरुष भी सती हुआ है? आर्यसमाज के सदस्यों ने इस कुप्रथा के खिलाफ जेहाद छेड़ने का सकल्प लेते हुए सरकार से मांग की कि शीघ्र ही इस कुप्रथा को कानून के जरिये मिटाया जाये। यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास किया गया।

—इन्द्रदेव शास्त्री मन्त्री

नामकरण संस्कार

दिनांक १०-१०-८७ को श्री अत्तरसिंह आर्य क्रातिकारी उनके सगे भ्राता श्री सत्यवीरसिंह के लड़के का नामकरण संस्कार स्वामी मस्तानानन्द जी ने विधिवत् करवाया। प्रातःकाल हवन किया गया, दम्पति ने जनेऊ धारण किया। लड़के का नाम पवनकुमार रखा गया। इस अवसर पर क्रातिकारी जी ने संस्कार के महत्त्व पर प्रकाश डाला। श्री ताराचन्द वानप्रस्थ के शिक्षाप्रद भजन हुए। सभी विद्वानो ने बच्चे को आशीर्वाद दिया। विद्वानो का श्रद्धापूर्वक अतिथि सत्कार किया गया।

—रामेश्वरदास आर्य
उपमन्त्री आर्यसमाज नलवा, हिसार

मिटा दो अज्ञान को

उठो! आगे बढ़ो, मिटा दो अज्ञान को।

हंसा दो इस देश को, मुस्करा दो इन्सान को।
याद करो उस वचन को, कहा था जो दयानन्द ने।
आडम्बरों, पाखण्डों और नास्तिकता को छोड़ दो।
कर्म करो, सच का अध्ययन करो, झूठ को माला फेरनी छोड़ दो।
क्या होगा माला फेरने से, अगर मनके हैं उसमें।
अज्ञान के, अशिक्षा के, वहमों के, अफवाहों के।

संघर्ष करो जीवन के लिए, इन्सान बनो, जमी के लिए।
देखो खड़ा है वह दयानन्द, उजाला लिए ज्ञान का।
कह रहा है तुम से जो धरती के कण-कण में, फैलादो ज्ञान को।
हां ज्ञान वह नही जो भरा है किताबों में,
वाक्यसमूहों, शब्दसमूहो के रूप में कोरा ज्ञान।
बल्कि वह जो आत्मा में है, तेरी, मेरी, हम सब की, यथार्थ ज्ञान।

जानता है ना तू?
विशुद्ध प्रेममयी हृदय निराकार को आकार में बदलता है।
धारा को उलट देने से राधा बन जाता है।
और माला को उलट देने से लामा।
हां सच यही है।
मन को उलट देने से जीव ब्रह्मा बन जाता है,
उठ! हिम्मत कर, उलट दे खोखली प्रथाओं को।

जो धीरे-धीरे पीरही हैं, खून आदमी का।
जैसे दहेज, बाल-विवाह और संयोग।
सोच अपने विवेक से तू स्वय ही,
अंधेरो के इस महानगर में ढूंढना सयोग।
क्या एक भ्रम नही है बहुत हसीन?
उठ! मिटा दो भ्रमों को और कह दो,
सहयोग से बढ़कर संयोग नही है।

त्याग से बढ़कर पूजा नही है,
निर्माण से बढ़कर भगवान् नही है।
देश से बढ़कर धर्म नहीं है,
हां कहा था दयानन्द ने भी यही,
सपना था उसका भी यही।
हो कल्याण, हो निर्माण,
उनका भी जो दोस्त हैं।

और उनका भी, जिनके मनमें पनप रहा है नफरत का दरिया।
सोक लो अपने प्यार से, उनके नफरत के दरिया को।
और प्रार्थना करो, उस ईश्वर से जो रहित है पक्षपात से।
कि उन्हें भी अपने ज्ञान के भण्डार में से, थोड़ा-सा ज्ञान दे दो।
ताकि वे समझ सकें अज्ञान के अभिशापों को।
और उठें मिलकर मिटाने को अभिशापों को।
उनका सत्य संकल्प, हंसा दे इस देश को, मुस्करा दे इन्सान को।

—योगेन्द्र ४/७१ रमेश नगर, नई दिल्ली-११००१५

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री महाशय धर्मपाल, उपप्रधान—सरदारीलाल वर्मा, सूर्यदेव, सत्यानन्द आर्य, हरकंवल कोहली, महामन्त्री—डा० शिवकुमार शास्त्री, मन्त्री—सुरेन्द्रकुमार, रामसिंह शर्मा, ओम्प्रकाश आर्य, विमलकांत शर्मा, रामशरणदास आर्य, श्रीमती प्रकाश आर्या, कोषाध्यक्ष—ओम्प्रकाश कपूर।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का
बिक्री हेतु वैदिक साहित्य

क्र०	पुस्तकों का नाम	मूल्य
१.	दी वेदाज (अंग्रेजीभाषा में)—स्वामी भूमानन्द जी	१-००
२.	दी प्रिंसिपल्ज आफ आर्यसमाज—पं० चमूपति एम०ए०	१-५०
३.	जीवन ज्योति (वेदमन्त्रों की व्याख्या)—पं० चमूपति एम०ए०	३-००
४.	निहारिकावाद और उपनिषद्—पं० चमूपति एम०ए०	०-५०
५	आर्यसमाज की विचारमाला—पं० क्षितीशकुमार वेदालंकार	१-००
६.	निजाम की जेल में—लेखक पं० क्षितीशकुमार ,,	२०-००
७.	ईसाइयों की प्रचार प्रणाली—पं० जगत्कुमार शास्त्री	००-१०
८.	आर्यसमाज और अस्पृश्यता निवारण—पं. ओम्प्रकाश त्यागी	००-५०
९.	बलिदान जयन्ती स्मृति ग्रंथ (आर्य शहीदों का परिचय)	४-५०
१०.	ईश्वर की सत्ता—डा० रणजीतसिंह	१-००
११.	हरयाणा के आर्यसमाज का इतिहास—डा० रणजीतसिंह	५-००
१२	धर्म-प्रवेशिका —डा० रणजीतसिंह	३-००
१३.	धर्म-भूषण ,,	५-००
१४.	पंजाब का आर्यसमाज —प्रि० रामचन्द्र जावेद	२-००
१५.	आदर्श धातु रूपावली —महावीर आजाद शास्त्री	२-००
१६.	वैदिक उपासना पद्धति—डा० सुदर्शनदेव आचार्य	३-००
१७.	स्मारिका (हरयाणा प्रांतीय आर्यसमाज शताब्दी समारोह)	१-००
१८.	मूर्तिपूजा —सम्पादक पं० जगदेवसिंह सिद्धांती	००-५०
१९.	वेदस्वरूप निर्णय ,,	००-७५
२०.	वेदाविर्भाव ,,	१-००
२१.	वेदभाष्य पद्धति ,,	१-००
२२.	ईसाई पादरियों को आर्यसमाज को चुनौती—स्वा० दर्शनानन्द	०-१०
२३.	गोकरुणानिधि—स्वामी दयानन्द सरस्वती	०-२०
२४.	सत्यार्थप्रकाश ,,	१०-००
२५.	महर्षि दयानन्द आत्मकथा ,,	०-५०
२६.	हमारा फाजिल्का —योगेन्द्रपाल	१-००
२७.	बड़ —स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती	१-५०
२८.	वीर हेमू ,,	००-७५
२९.	पीपल ,,	१-५०
३०.	मिर्च ,,	१-५०
३१	श्लीपद या हाथीपांव की चिकित्सा ,,	०-२०
३२.	बिच्छू विष चिकित्सा ,,	०-५०
३३.	लवण ,,	१-२५
३४.	विदेशों में मैंने क्या देखा ,,	२-५०
३५.	नैरोबी यात्रा ,,	१-५०
३६.	ब्रह्मचर्य साधन ९-११ ,,	१०-००
३७.	,, १-२ ,,	१-००
३८.	,, ३ ,,	१-००
३९.	,, ४ ,,	२-५०
४०.	,, ५ ,,	२-००
४१.	,, ६ ,,	३-००
४२.	,, ७-८ ,,	२-००
४३.	,, ९ ,,	३-००
४४.	,, १० ,,	१-५०
४५.	,, ११ ,,	२-००
४६.	हल्दी ,,	१-५०
४७.	नीम ,,	१-२५
४८.	कर्त्तव्य दर्पण—म० नारायण स्वामी	४-००
४९.	विद्यार्थी जीवन रहस्य—म० नारायण स्वामी	२-५०
५०.	योग रहस्य ,, ,, ,,	४-५०
५१.	आर्यसमाज क्या है ? ,, ,, ,,	२-००
५२.	कथा माला ,, ,, ,,	१-२५
५३.	संस्कारविधि	६-००
५४.	वैदिकधर्म परिचय—पं० जगदेवसिंह सिद्धांती	३-५०
५५.	वैदिक यज्ञ-पद्धति—सार्वदेशिक	००-६०

प्राप्ति स्थान

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्दमठ, सिद्धांती भवन, रोहतक।

सूखा राहत संघर्ष समिति का गठन

दिनांक ९-९-८७ को ग्राम कंवारी में १४ ग्रामों की पंचायत हुई, जो इस समय अभूतपूर्व सूखे की स्थिति में है। इस विपदा से निपटने के लिये कंवारी, धमाना, भोजराज, गुजार, नलवा, बालावास, उमरा, सुलतानपुर, मुहजादपुर, रामायण ढंडेरी, देपल मामनपुरा, रतेरा आदि गांव की पंचायतों ने सर्वसम्मति से एक समिति का गठन किया। जिस में निम्न पदाधिकारी चुने गये—

प्रधान—पृथ्वीसिंह सुलतानपुर, उपप्रधान—कप्तान चन्दगीराम भोजराज, मन्त्री—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी कंवारी, कोषाध्यक्ष—सूबेदार हरिसिंह कंवारी, ज्ञानीराम सरपंच कंवारी।

—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी, सभा उपदेशक

आर्यसमाजों के वार्षिक उत्सवों की सूची

कुरुक्षेत्र गोशाला कैथल जि० कुरुक्षेत्र	२७ से ३० अक्तूबर
आर्यसमाज फिरोजपुर झिरका जि० गुडगांव	३१ से १ नवम्बर
वेदप्रचार मेला कपालमोचन, जगाधरी	१ से ५ ,,
आर्यसमाज कालरो तहसील घरोंडा जि० करनाल	६ से ८ ,,
,, बड़ा बाजार पानीपत ,, ,,	६ से ८ ,,
,, कालका जि० अम्बाला	६ से ८ ,,
,, नई कालोनी जि० गुडगांव	९ से १५ ,,
,, होडल जि० फरीदाबाद	१३ से १५ ,,
,, जवाहर नगर पलवल जि० फरीदाबाद	१३ से १५ ,,
,, रेवाड़ी जि० महेन्द्रगढ़	२७ से २९ ,,

जिन आर्यसमाजों ने अभी तक अपना वार्षिक उत्सव अथवा वार्षिक वेदप्रचार का कार्यक्रम नहीं रखा है, उनसे निवेदन है कि वे सभा से पत्र-व्यवहार करके अपनी तिथियां तथा उपदेशकों के कार्यक्रम को सुरक्षित करा लेवें।

आर्यसमाज प्रतिनिधि फार्म शीघ्र भेजें

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा से सम्बन्धित सभी आर्यसमाजों से निवेदन है कि वे आर्यसमाज के नियम उपनियमों के अनुसार अपनी साधारण सभा की बैठक बुलाकर सभा के लिये ३ वर्ष की अवधि हेतु प्रतिनिधियों का चुनाव करके भेजें और प्रान्तवार वेदप्रचार, दशांश तथा सर्वहितकारी के वार्षिक शुल्क के साथ प्रतिनिधि फार्म सभा को शीघ्र ही भेज देवें। सभा का वार्षिक चुनाव शीघ्र ही होनेवाला है।

जिन आर्यसमाजों को अपने चुनाव आदि करवाने में कोई असुविधा हो तो वे सभा को पत्र लिखें, ताकि सभा की ओर से किसी उपदेशक को भेजा जा सके।

प्रतिनिधि फार्म देखने से ज्ञात हुआ है कि कुछ आर्यसमाज अपने सम्पन्न तथा नौकरी आदि करनेवाले आर्यसभासदों से भी वार्षिक शुल्क केवल १२ रु० प्राप्त करते हैं। अतः ऐसे आर्य सभासदों से उनकी मासिक आय का शतांश प्राप्त करने का पूरा प्रयत्न करें।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

आर्यसमाज चारा आना संगृहीत राशि भेजें

आर्यसमाजों ने सभा की अपील पर दीपावली पर अपने आर्य सभासदों से चार आना निधि की राशि संगृहीत की होगी। अतः निवेदन है कि यह राशि सभी उपदेशकों अथवा धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा सभा को भेजने की कृपा करें। इस राशि का उपयोग सभा के वेदप्रचार कार्य को उन्नत करने में होता है।

—रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 रजि० न० P/RTK 49 फोन ४६८७

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र



सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री सह-सम्पादक—डा० सुधवीर

वर्ष १४ अङ्क ४७ ७ नवम्बर, १६८७ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

हैदराबाद सत्याग्रह के स्वतन्त्रता सेनानियों के सम्बन्ध में निर्णय

हाल ही में भारत सरकार के गृहमन्त्रालय से निम्नलिखित व्यक्तियों के बारे में सम्बन्धित राज्य सरकारों को लिखा गया है कि उन्हें केन्द्र के नियमों के अनुसार स्वाधीनता सेनानी सम्मान पेंशन देना सम्भव नहीं है। क्योंकि या तो उनकी निर्धारित कारावास की अवधि ५ माह से कम है अथवा कोई अन्य निर्दिष्ट कमी पाई गई है।

ऐसे व्यक्तियों के मामले सम्बन्धित राज्य सरकारों को इस आशय के साथ भेज दिये गये हैं कि राज्य सरकारों के नियमानुसार ऐसे मामलों में राज्य सरकार द्वारा सम्मान पेंशन दी जाती है। उन पर भली-भांति विचार करके यदि वे पात्र पाये जायें तो सम्बन्धित राज्य सरकारें ऐसे मामलों में पेंशन जारी करें।

निम्न ३३ व्यक्तियों की इस सूची में केवल तीन व्यक्तियों को छोड़कर शेष सब हरयाणा के निवासी हैं और उनके मामले चण्डीगढ़ में हरयाणा सरकार को भेज दिये गये हैं। मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश व बिहार के इस प्रकार के मामले भी क्रमशः भोपाल और लखनऊ व पटना भेज दिये गये हैं।

हैदराबाद सत्याग्रह सेनानी जिनको पेंशन स्वीकृत हुई है

१. सर्वश्री जगतलाल पुत्र हैयधन, ग्राम पो० किठाना, जि० जींद, हर०। २. जयलाल पुत्र बदलूराम, ग्राम पो० छारा, जि. रोहतक, हर०। ३. देशराम पुत्र उदमीराम ग्राम पो० भापड़ोदा, जि० रोहतक, हर०। ४. श्रीमती [illegible] पत्नी करता ग्राम पो० बापोली, तह० पानीपत, हर०। ५. ज्ञानीराम पुत्र फूलसिंह ग्राम पो. छाता कलां, जि० सोनीपत, हर०। ६ मंगाराम पुत्र कन्हैया ग्राम पो० भापड़ोदा, जि० रोहतक। ७. इन्द्र पुत्र अमरसिंह ग्राम पो० छारा, जि० रोहतक, हर०। ८. मातूराम पुत्र रामशरण ग्राम पो० भापड़ोदा, जि० रोहतक, हर०। ६. हरिश्चन्द्र पुत्र कन्हैयालाल पंजाबी मोहल्ला अम्बाला कैंट, हर०। १०. गीतानन्द पुत्र बाबराम ग्राम पो० किठाना, जि० जींद, हर०। ११. श्रीमती तेजो देवी पत्नी स्व० रामस्वरूप ग्राम पो० मिलकपुर, जि० हिसार, हर०। १२. पं० रामचन्द्र पुत्र बिहारीलाल मीनी आश्रम मीना बाजार मादपुर, देवघर बिहार। १३. चरणसिंह पुत्र बख्तावरसिंह ग्राम घूमूपट्टी, पो० कीरक कुरुक्षेत्र, हर०। १४. श्रीमती सुनहरी देवी पत्नी ज्ञानीराम ग्राम पो० कासन्दा, जि० सोनीपत, हर०। १५. श्रीमती खजानी देवी पत्नी सूरजभान ग्राम पो० भापड़ोदा, जि० रोहतक, हर०। १६. रिसालसिंह पुत्र सुरजनसिंह ग्राम पो० भापड़ोदा, जि० रोहतक, हर.। १७ बांगेराम पुत्र रामसिंह ग्राम पो० पाकस्मा, जि० रोहतक, हर०। १८. हनवन्तसिंह पुत्र दीवराम ग्राम पो० बालन्द, जि० रोहतक, हर०। १६. वेदानन्द पुत्र राधाकृष्ण ग्राम पो० गुरुकुल झज्जर, जि० रोहतक, हर०। २०. प्रेमदत्त-स्वरूप पुत्र महेन्द्रदत्त निवासी सेठ गली आगरा-३, उ०प्र०। २१. ब्रिजलाल पुत्र गजाराम मैसर्ज जयप्रकाश सत्यदेव आइरन मर्चेन्ट कैथल, जि० कुरुक्षेत्र, हर०। २२. हीरासिंह पुत्र रेवतियाराम ग्राम गुरियाखेड़ा, तहसील व जि० सिरसा, हर०। २३. बलवन्तसिंह पुत्र भोजराज ग्राम पो० नीलोठी, तह० बहादुरगढ़, जि० रोहतक, हर०। २४. प्रह्लादसिंह पुरोहित पुत्र भैरोंसिंह ग्राम पो० शिवगढ़, जि० रतलाम, मध्यप्रदेश। २५. हारदे पुत्र केसरी ग्राम पो० भापड़ोदा, जि० रोहतक, हर०। २६. मुन्शीराम पुत्र भोलासिंह ग्राम पो० बालन्द, जि० रोहतक, हर०। २७. जगदीश मित्र पुत्र गण्डाराम मकान नं० १३६८ माडल टाउन रोहतक, हर०। २८. श्रीमती आशा देवी पत्नी जागार ग्राम पो० सुताना, तह० पानीपत, जि० करनाल, हर०। २६. जगतराम पुत्र लालजी ग्राम पो० भैंनी सुरजन, जि० रोहतक, हर०। ३०. श्रीमती परमेश्वरी देवी पत्नी उदयराम ग्राम पो० गुरियाखेड़ा, जि० सिरसा, हर०। ३१. डा० सरूपसिंह पुत्र रामदास ग्राम पो० बलियाना, जि० रोहतक, हर०। ३२. छोटाराम पुत्र रामजीलाल ग्राम पो० कालखा, तहसील पानीपत, जि० करनाल, हर०। ३३. चन्दन नम्बरदार पुत्र रामजीलाल ग्राम पो० कालखा, तहसील पानीपत, जि० करनाल, हर०। ३४. दयाचन्द आर्य ग्राम खरावड़, जि० रोहतक। ३५ वेदप्रकाश वानप्रस्थी गुरुकुल डिकाडला, जि० करनाल तथा पं० सतीशकुमार वेदालंकार कनीना, जि० महेन्द्रगढ़ की केन्द्रीय सरकार ने पूर्व ही पेंशन देने की स्वीकृति भेज दी है।

(सार्वदेशिक १-११-८७)

राजस्थान के देवराला ग्राम में—

सतीप्रथा या स्त्री हत्याकांड ?

आलेख—सुखदेव शास्त्री "वानप्रस्थी" महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा

महाभारत के युद्ध में अनेक विद्वानों, योद्धाओं तथा हजारों ऋषि मुनियों के समाप्त हो जाने से तथा वेदों व धर्म-शास्त्रों के पठन-पाठन छूट जाने से सारे भारत में अन्धकार फैल गया। जिसके मन में जैसा आया, वैसा ही मत चलाया। अनेक मतमतांतर फैले, अनेक कुप्रथायें सामने आकर खड़ी होगईं।

उनमें से एक बहुत भयानक विनाशकारी बर्बर अत्याचार जैसी कुप्रथा सतीप्रथा भी प्रचलित होगई। ये कुप्रथायें सभी वेदों के नाम पर ही चलाई गईं। साधारण जनता की श्रद्धा वेदों पर बहुत अधिक होती थी। साधारण जनता को बहकाने के लिए वेदमन्त्रों के प्रमाण देकर सभी बुराइयों को सिद्ध किया जाता था। इस प्रकार अन्धपरम्परा चल पड़ती थी। जैसे मूर्तिपूजा, सतीप्रथा, अश्वमेध-गोमेध आदि यज्ञों में गाय तथा घोड़े मारकर आहुति देने की प्रथा भी उस समय यज्ञों में प्रचलित की गई। महाभारत के हजारों वर्षों पश्चात् भी यह भयानक प्रथा जारी रही।

बड़े दुःख की बात है कि आज भी हिन्दुओं में यह माना जारहा है कि सतीप्रथा निर्विवाद रूप से वेद-शास्त्रोक्त है। इनके पौराणिक साधु पुरी के शंकराचार्य तक भी सतीप्रथा का आज भी वेदोक्त होने का समर्थन करते हैं। ऐसा लगता है कि शंकराचार्य ने एक भी शास्त्र को कभी देखा या पढा तक भी नहीं है। जबकि सतीप्रथा की चर्चा किसी वेदशास्त्र, धर्मशास्त्र, दर्शनशास्त्र, उपनिषदों तथा मनुस्मृति आदि में नहीं की गई है। न ही ऐसा सती होने का आदेश किन्हीं गृह्यसूत्रों में अथवा आरण्यकों तथा ब्राह्मणग्रन्थों व गीता आदि में पाया जाता।

मध्यकाल में सायण-महीधर, उव्वट जैसे मक्कार भाष्यकारों ने शराब पीकर वेदों के मनमाने अर्थ करके क्या-क्या अनर्थ नहीं किये, यह उनके भाष्यों के पढ़ने से विदित होता है।

इन पौराणिक पण्डितों ने जितने अत्याचार स्त्रियों पर किये हैं, यह भारतीय इतिहास के पढ़ने से पता लगता है। सबसे पहले तो इन्होंने स्त्रियों का वेद पढ़ने का अधिकार ही छीन लिया। स्त्री और शूद्र को वेद पढ़ने का अधिकार हो नहीं ऐसा आदेश दिया। विधवाओं के पुनर्विवाह का निषेध किया गया। आद्य शंकराचार्य जैसों ने इसे नरक का द्वार बतलाया। तुलसीदास व सूरदास जैसे मध्ययुगीन हिन्दी के कवियों ने इसे 'गवार' के समान दण्डनीय बतलाया। विधवा होने पर पुनर्विवाह का निषेध किया गया। हजारों लड़कियां विधवायें होकर व्यभिचार करने लगीं। वेश्यालयों में जाकर वेश्यायें बनने लगी। लुक-छिपकर गर्भ गिराने लगी। पुनश्च रही सही कसर पूरी करदी सतीप्रथा ने। उनको सती के नाम पर जलाकर मार डालने की हत्या की प्रथा भी चलाई गई।

सतीप्रथा स्त्री के विधवा होने से जुड़ी हुई है। अतः देखना यह होगा कि वैदिक संस्कृति में विधवा का क्या स्थान था। इस विषय में कुछेक वेदमन्त्रों के प्रमाण यहां दिये जाते हैं, जिससे यह प्रमाणित हो जाये कि वैदिक काल में विधवा होना कोई दुर्भाग्य, कलंक या विपत्ति नहीं माना जाता था। विधवा के पुनर्विवाह का पूर्ण विधान था। यदि वह पुनर्विवाह न करे तब भी सयमपूर्वक जीवन बिताकर सम्मानपूर्वक समाज में रह सकती थीं। उसे अपने समान पुरुष से नियोग से सन्तानोत्पत्ति करने का भी पूर्ण अधिकार प्राप्त था। क्योंकि तब नियोग नामक प्रथा भी समाज में विवाह जितनी ही समादृत और प्रचलित थी। नियोग के अन्तर्गत निस्सन्तान विधवा या नपुंसक की पत्नी अपने देवर या उस उद्देश्य के लिए जायज किसी अन्य नजदीकी रिस्तेदार से सन्तान प्राप्त कर सकती थी।

ऋग्वेद मण्डल १०, सूक्त ४०, मन्त्र २ में एक मन्त्र देखिये—

"कुहस्विद्दोषा कुह वस्तोरश्विना" आदि के मन्त्र के दूसरे पद में—"को वां शयुत्रा विधवेव देवरं" आदि पद विचारणीय है—इस मन्त्र में अश्विनी युगल को सम्बोधित करते हुए कहा गया है कि—"तुम्हें उस तरह कौन बुलाता है, जैसे विधवा अपने देवर को बुलाती है"। इस से देवर से विवाह या नियोग का स्पष्ट संकेत मिलता है। महर्षि यास्क भी निरुक्त ३।१५ में इस मन्त्र की व्याख्या करते हुए देवर की व्युत्पत्ति करते हुए लिखते हैं—"देवरः कस्मात् ? द्वितीयो वर उच्यते" इसमें देवर को दूसरा पति माना गया है। जैसे विधवा स्त्री द्वितीय वर को नियोग आदि के विशेष-विशेष अवसरों पर ही प्राप्त करती है और गृहपत्नी पति की नित्य ही सेवा करती है। इसी प्रकार स्त्री-पुरुष को भी यह ध्यान रखना चाहिए कि कौन उनको नैमित्तिक विशेष अवसरों पर और कौन नित्य ही आदरपूर्वक बुलाता है, उसके यहां यथासमय जाना चाहिए।

इसी सम्बन्ध में ऋग्वेद मण्डल १०, सूक्त १८, मन्त्र ८ देखिये—

उदीर्ष्व नार्यभि जीवलोकं गतासुमेतमुप शेष एहि।
हस्तग्राभस्य दिधिषोस्तवेदं पत्युर्जनित्वमभि सं बभूथ॥

अर्थात् हे नारी ! तू इस मृत पति के लिए शोक करना छोड़ दे और संसार में आकर यथावत् रह। तेरे पाणिग्रहण करनेवाले पति की सन्तान को प्राप्त कर।

इसी प्रकार अथर्व कांड १८, मन्त्र १-२ भी देखिये—

इयं नारी पतिलोकं वृणाना निपद्यत उप त्वा मर्त्य प्रेतम्।
धर्मं पुराणं अनुपालयन्ती तस्यै प्रजां द्रविणं चेह धेहि॥

भाव यह है कि पति के मर जाने पर सन्तान की कामना करने वाली स्त्री धर्मानुकूल दूसरे पुरुष को पति बनाकर सन्तान व धन से उसका पालन-पोषण करे।

अपश्यं युवतिं नीयमानां जीवां मृतेभ्यः परिणीयमानाम्।

अर्थात् - मृत पुरुष के पीछे-पीछे श्मशान भूमि में जाती हुई स्त्री को मैं वापिस लौटा लाया हूं। यह शोक से व्याकुल थी, अतः इसे यहां घर पर ले आया हूं। अथर्ववेद कांड १८, सूक्त ३, मन्त्र ४ बड़े कमाल का है।

प्रजानती—अघ्ने जीवलोकं देवानां पन्थामनुसंचरन्ती।
अयं ते गोपतिस्तं जुषस्व स्वर्गं लोकमधि रोहयैनम्॥

हे अघ्ने—न मारने योग्य स्त्री। जीवलोकं प्रजानती—संसार को भली-भांति जानती हुई और देवानां पन्थां अनुसंचरन्ति—देवों के विद्वानों के मार्ग का अनुसरण करती हुई, अयं—यह जो, ते—तेरा, गोपतिः—नया पति है, तं जुषस्व—उससे प्रीति कर और इस प्रकार एनं—इस गोपति को, स्वर्ग लोकं अधिरोहय—गृहस्थ रूप स्वर्ग लोक में पहुंचा। इस मन्त्र में स्त्री को साफतौर पर न मारने योग्य लिखा है। फिर जलाकर मारने के कौन से मन्त्र हैं ?

सतीप्रथा पर किसी भी बहस के लिए अथर्ववेद का यह १८वें कांड का उद्धरण केन्द्रीय महत्त्व का है।

और अत्यन्त महत्त्वपूर्ण यह है कि वेद में मृतपति के शरीर के पास से उठकर संसार में पाणिग्रहण करनेवाले नये पति और सन्तान को प्राप्त होने का आदेश असंदिग्ध है। मृतपति के शव के साथ श्मशान जाने और शोकाच्छादित वापस लौटने के चित्र वैदिक ऋषियों के हृदय में विधवा के प्रति गहरी सहानुभूति के प्रमाण उपस्थित करते हैं।

ऋग्वेद और अथर्ववेद की ये ऋचायें बहुत ही महत्त्वपूर्ण और सतीप्रथा की सारी प्राचीन कथाओं का भ्रमजाल छिन्न-भिन्न कर देती हैं। स्त्री को जीवित जलाने का पूर्णतया निषेध करती हैं।

(क्रमशः)

मेरी चीन यात्रा—४

चीन की आर्थिक नीतियां

—प्रो० शेरसिंह सभाप्रधान

गतांक से आगे—

१९४९ में चीन में क्रांति हुई और चीन का मुख्य क्षेत्र (फार्मूसा और हांगकांग को छोड़कर) साम्यवादियों के कब्जे में आगया। लाल क्रांति के नेता माओत्से तुंग थे। बड़ी लम्बी तपस्या के बाद एक ग्रामीण क्रांतिकारी नेता के हाथ में शासन की बागडोर आई। रूस की क्रांति मजदूरों के सगठित प्रयास का नतीजा था, परन्तु चीन की क्रांति में मजदूरों से अधिक किसानों का हाथ था। स्वाभाविक था कि दोनों के चिन्तन में थोड़ा मतभेद हो और वह मतभेद रूसी नेताओं और माओत्से तुग के बीच रहा। माओत्से तुग ने उद्योग धन्धों की ओर जितना ध्यान दिया, उससे कहीं अधिक ध्यान कृषि और देहात की अर्थव्यवस्था पर दिया। माओत्से तुंग जानता था कि यदि देश को अन्न के मामले में आत्मनिर्भर नहीं बनाया तो उसका सारा सपना चूर-चूर हो जायेगा और साम्राज्यवादी ताकतें अन्न की सहायता के हथियार से उसकी सारी व्यवस्था को तारपीड़ो कर देंगे। चीन साम्राज्यवादी शक्तियों और रूस का विरोध अकेला इसीलिए झेल पाया, क्योंकि उसने पूरी शक्ति लगाकर चीन की आधी से ज्यादा भूमि के लिये सिंचाई का प्रबन्ध कर दिया। बड़ी नदियों के बहुत सारे पानी को उन्होंने नहरें, बांध आदि बनाकर खेती के लिये इस्तेमाल कर लिया। इस काम में उन्होंने चीन को सारी जनता को ही नहीं, अपनी फौज को भी लगा लिया। बड़े से बड़े सरकारी अधिकारियों और राजनेताओं को इस काम के लिये अनिवार्य रूप से अपना समय देने के लिये बाध्य कर दिया। चीन के पास खेती की भूमि भारत से कम होते हुए भी पैदावार हम से डेढ़ गुणा और दो गुणा के बराबर है। वैसे कहने को तो वे तीन गुनी बताते हैं, परन्तु गेहूं का भूसा और चावल का छिलका वगैरा भी उसमें शामिल है। साफ किये हुए गेहूं और चावल आदि की पैदावार २५ करोड और ३० करोड़ टन के बीच बैठेगी। चीन के लोग आस्ट्रेलिया को चावल भेजकर उससे दो गुणा से अधिक गेहूं वहां से ले लेते हैं।

अन्न के मामले में स्वावलम्बी होने के कारण ही संसार की दोनों महाशक्तियों के विरोध को उसने झेल लिया और अपने परिश्रम से कुछ शुरु के दस सालों में रूस के द्वारा प्राप्त अपनी तकनीक से ही वे बड़े उद्योग तथा परमाणु बम और शक्ति भी पैदा कर पाये। आज यह अवस्था है कि दोनों महाशक्तियां उसको अपने साथ मिलाने के लिये एड़ी-चोटी का जोर लगा रही हैं। पहिले अमरीका ने दोस्ती का हाथ बढ़ाया और तकनीकी व आर्थिक सहायता देना आरम्भ किया। अब रूस भी प्रयास कर रहा है चीन से सम्बन्ध बढाने के लिये और उसमे उसे कुछ सफलता भी मिल रही है। चीन अपनी कीमत पर ही दोनों से सम्बन्ध रखेगा, किसी का पिछलग्गू बनने की न उसे इच्छा है और न जरूरत।

नई अर्थ-नीति

माओत्से तुग की मृत्यु के बाद जो संघर्ष चीन की साम्यवादी पार्टी में हुआ। उसमें से श्री डंग नेता बनकर उभरे और आज सबसे शक्तिशाली नेता वही हैं। पिछले कई वर्षों से उसकी ही तूती बोल रही है। तथाकथित चण्डाल चौकड़ी को समाप्त करने के बाद और भी कई लोगों की उन्होंने छुट्टी की है और अब ऐसा लगता है कि उनकी नीति ही चीन में चलेगी। उनको इस नीति में थोड़ी-सी आजादी मिलने और बोलने, कुछ अधिक कमाने की छुट, नई से नई तकनीक बाहर के देशों से प्राप्त करना, बाहर के देशों से सहायता और कुछ उद्योगों में धन लगाने की छूट दी गई है। किसानों की कम्यून समाप्त करदी गई है, अब किसान अलग-अलग खेती कर सकेंगे, उनको ठेके पर सरकार जमीन देगी। जो औसतन सिंचाई प्राप्त २। एकड़ और बारानी ५ एकड़ के लगभग होगी। कुछ अन्न सरकार को सस्ते दामों पर देने के बाद शेष अन्न खुले बाजार में बेचने की छूट रहेगी।

इस नई अर्थ-नीति को चीरफाड़ और विश्लेषण करके गहराई में जाकर इसके विभिन्न क्षेत्रों में क्या प्रभाव पड़ेंगे और उनके क्या नतीजे निकलेंगे, यह सोचने का विषय है। मैंने इस पर चिन्तन किया है। चीन के किसानों और दूसरे साधारण लोगों से मिलने का अवसर तो नहीं मिला। इसमें भाषा एक बड़ी रुकावट थी ही, समय भी थोड़ा ही था और वहां की सरकार कितनी दूर तक छानबीन करने देती, यह भी साफ नहीं था, परन्तु जिन जानकार लोगों से भेट हुई और उनसे प्रश्नों के द्वारा जो जानकारी की गई, उसके आधार पर नतीजे सामने आयेंगे। अधूरी जानकारी के आधार पर निकाले हुए सब नतीजे तो ठीक नहीं हो सकते, परन्तु अनुभवी मनुष्य काफी हद तक सही नतीजे निकाल सकते हैं।

मैंने पूंजीवादी और साम्यवादी सभी बड़े-बड़े और छोटे देशों की यात्रा की है और वहां के जनजीवन को देखा है। मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि चाहे समानता की बात कही जाये या पूंजीवादी देशों में सामाजिक सुरक्षा की बात कही जाये। खेती का काम करनेवाले चाहे किसान हों और चाहे खेत मजदूर, उनको शहरों में या उद्योग बस्तियों में रहनेवाले मालिकों तथा मजदूरों से बहुत कम सुविधायें उपलब्ध हैं और उनका प्रभाव वहां के राजकाज में अपनी संख्या के हिसाब से बहुत कम है। रूस और चीन में भी अभी देहात में खेती करनेवालों के मकान कच्चे हैं। चीन में देहात के सन्तान से वंचित लोगों को ही अब पेंशन देने की बात शुरु की गई है और बूढ़े मा-बाप को अपने बच्चों पर ही निर्भर रहना पड़ता है। चीन में अभी तक भी देहातों में पुरुष प्रधान व्यवस्था चली आरही है, इसलिये बुढापे में लड़की देखभाल कर सकेगी, यह भरोसा न होने के कारण देहातों में लड़कियों को मारने की घटनायें हुई हैं, ताकि वे लड़का पैदा कर सकें। वहां एक बच्चा ही पैदा करने का साधारणतया नियम बन गया है। चीन में शहरों में बूढ़ों को पेंशन मिलती है। अतिरिक्त कमाई करने की छूट का लाभ देहात का आदमी नहीं ले सकता। २। एकड़ जमीन की पैदावार में से कुछ सस्ते दामों पर सरकार को देकर, अपने खाने के लिये ही बचता है और खुले बाजार में महगा अन्न बेचने की गुंजाइश भी नहीं है। फूल या जड़ी-बूटी और सब्जी से थोड़ी बहुत अतिरिक्त आमदनी किसान कर सकता है, परन्तु छोटे से जमीन के टुकड़े पर वह क्या-क्या कर सकेगा, यह समझना कठिन नहीं।

(क्रमश)

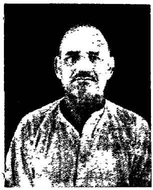


चौ० सत्यदेवसिंह जी पूर्व पुलिस अधीक्षक

आपको हरयाणा सरकार ने भ्रष्टाचार उन्मूलन समिति का मन्त्री मनोनीत किया है। आप कई वर्षों से आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रतिष्ठित अन्तरंग सदस्य है।

डाक्टर का निदान बनाम आडम्बर

—वैद्य बलवन्तसिंह आर्य, गुरुकुल झज्जर



डाक्टरी पद्धति देखने में बहुत ही महत्त्वपूर्ण मालूम होती है। रक्त, कफ, पेशाब, पाखाना, थर्मामीटर, स्टेथिस्कोप आदि क्रियाओं द्वारा रोग का निदान होता है, परन्तु कहावत वही है कि 'रातभर पीसा और मिला कुछ भी नहीं' इतनी सब जांच करने पर भी कभी-कभी निष्कर्ष नहीं निकल पाता। फिर एक्सरे मशीन का सहारा लेना पड़ता है।

प्रायः लोग कहते हैं कि वर्तमान युग में एक्सरे यन्त्र का सुन्दर आविष्कार आया है। इसके द्वारा शरीर की सारी खराबी शीशे में मुख देखने के समान दीख जाती है। फिर भी देखा जाता है कि एक्सरे की जांच के बाद भी रोग का पूर्ण रूप से निदान नहीं हो पाता, यह क्या बात है। इससे सिद्ध है कि एलोपैथिक निदान केवल ऊपरी दिखावट में ही मालूम होता है। कहना चाहिए कि जाल में फंसाने का एक ही तरीका है। जिससे रोगी अधिक समय तक भ्रम जाल में फंसा रहे और पैसे भी अधिक मिले तथा उसे यह अविश्वास भी न हो कि मेरा रोग ठीक नहीं हो रहा है अर्थात् यह भी आश्वासन देते हैं कि रोग ठीक हो रहा है और रोग की जड़ उसी प्रकार अपना अधिकार जमाये रहती हैं।

कुछ समय के लिए आप समझिये कि एक पण्डित ग्रहों की शांति के लिए पूजा-पाठ करके, भोले यजमान से दक्षिणा के रूप में रुपये, पैसे, वस्त्र, खाने-पीने की वस्तु तथा अन्य बहुमूल्य उपयोगी सामान जो चाहता है सो ले लेता है। प्रारम्भ में यजमान को संकल्प पढ़ते समय कुछ भी परेशानी नहीं होती और जब पण्डित सब कुछ ले जाता है, तब पछताना पड़ता है। फिर वही कहावत याद आती है "अब पछताये होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत" ठीक यही ढंग डाक्टर का रोगी के साथ होता है। पहले डाक्टर आता है तो सूट-बूट, आंखों पर चश्मा, पाकिट में स्टेथिस्कोप और पेटी लिए हुए बिल्कुल अपटूडेट। उसे देखकर घर के सभी लोग डर जाते हैं, किसी को बात करने का भी साहस नहीं होता। रोगी को देखा, थर्मामीटर लगाया, स्टेथिस्कोप से अगल-बगल, सीना, पीठ सब देखे। उस समय रोगी के घरवाले डाक्टर की ओर आश्चर्य से टकटकी लगाये देखते रहते हैं और उसके आदेश की प्रतीक्षा करते रहते हैं। जैसे कि यह डाक्टर भगवान् का भेजा दूत है। इस रोगी की मृत्यु या जीवन इसी के हाथ में है।

कोई यह भी पूछने का साहस नहीं कर सकता कि डाक्टर साहब इस रोगी को कौन-सा रोग है। इसी तरह कुछ समय तक यह देखने-दिखाने का ढोंग चलने के बाद आखिर होता क्या है कि डाक्टर साहब एक लम्बा पर्चा दवाइयां लिखकर भर देते हैं, जिनका मूल्य ५००-७०० रुपये होना एक सामान्य बात है। ये दवाइयां भी ऐसी होती हैं कि या तो लिखनेवाले डाक्टर साहब ही जानते हैं या दवाई बेचनेवाले हो। अन्य कोई व्यक्ति तो उसे समझ भी नहीं सकता। इससे यही समझना चाहिए कि दवा के विज्ञापन से ही डाक्टर और दवा बेचनेवाले, दवा का गुण धर्म समझते हैं, परन्तु दवा का पूरा-पूरा योग क्या है, इस बात से वे अनभिज्ञ होते हैं। अतः अब रोगी के जीवन का सवाल दवाई बनानेवाली कम्पनी पर या भगवान् भरोसे ही रहता है। खैर ! लिखी हुई दवा एक-दो दिन चलने के बाद डाक्टर साहब आदेश देते हैं कि इस रोगी के पेशाब की जांच जरूरी है। रोगी के अभिभावक कुछ साहस करके डाक्टर साहब से पूछते हैं कि आप किस समय पेशाब की जांच करेंगे। प्रश्न सुनते ही डाक्टर साहब तुरन्त उत्तर देते हैं कि मैं पेशाब की जांच नहीं करता। अमुक डाक्टर को पेशाब दिखाना पड़ेगा। अब दूसरे डाक्टर साहब को भी बुलाना आवश्यक होगया। डाक्टर ने आकर पेशाब की जांच की तथा वह भी अपनी फीस लेकर चला गया।

यहां पर एक बात विचारने की यह है कि जब एक डाक्टर का इलाज चालू है तो उन्होंने पेशाब की जांच क्यों नहीं की। क्या उन्होंने डाक्टरी के कोर्स में पेशाब के विषय में जानकारी प्राप्त नहीं की थी ? वे इस विषय से अनभिज्ञ थे। पेशाब की जांच खुद भी कर सकते थे, परन्तु यदि वे स्वयं जांच कर लेते तो दूसरे को फीस नहीं मिलती। अतः उसे भी कुछ रुपये मिल जायें। इसलिए उसके पास भेज दिये। इसका मतलब बिल्कुल साफ है कि इनके कुछ रिश्तेदारी सम्बन्ध या मित्रता थी। अतः उसे केवल पेशाब की जांच के लिए ही बैठा दिया कि इसे भी कुछ आय होती रहेगी तथा इस में से मुझे भी कुछ कमीशन मिलता रहेगा। पेशाब की रिपोर्ट देखकर डाक्टर साहब का चेहरा कुछ गम्भीर देखकर सब घरवाले घबरा जाते हैं कि कहीं पेशाब में ज्यादा गड़बड़ तो नहीं होगई है। अब डाक्टर साहब का आदेश होता है कि रोगी की टट्टी की जाँच जरूरी है और तीसरे डाक्टर का नाम लेते हैं कि यह टट्टी की जांच करेगा। अब इस डाक्टर को भी बुलाया गया और इसने भी जांच करने के १० रुपये ले लिये। रिपोर्ट के अनुसार पता चला कि पूर्ववाली सब दवाइयां बेकार सिद्ध होगई हैं। अब नई दवाई मंगवाई गई तथा कुनीन आदि के नये इन्जेक्सन चालू किये गये। तीन-चार दिन दवा चलने के बाद जब रोगी को कोई किसी प्रकार का लाभ प्रतीत नहीं हुआ तो घरवाले फिर डाक्टर के पास जाकर कहते हैं कि डाक्टर साहब ! क्या बात है अब तक कोई लाभ नहीं हो रहा है, अब क्या करना चाहिए।

डाक्टर साहब आदेश देते हैं कि अब रोगी के खून की जांच होगी। अब एक और डाक्टर बुलाया गया। फीस दी गई तथा खून की जांच हुई। परिणाम क्या निकला कि जो दवाई चल रही है वह रोगी को अनुकूल नहीं है। अब और दवाई शुरु की गई। कुछ दिन के बाद भी रोगी की हालत ज्यों की त्यों है। ज्वर बढ़ रहा है, घबराहट भी बढ़ रही है, घरवाले भी सभी चिन्तित हैं और सोचते हैं कि डाक्टर साहब तो काफी परेशानी उठाकर भी रोगी की देखभाल कर रहे हैं। यदि अब भी कोई सुधार नहीं हो रहा है तो बेचारे डाक्टर की क्या कमी है। घरवाले पुनः डाक्टर के पास जाकर पुनः आग्रह करते हैं कि बताओ हम अब क्या करें ? डाक्टर साहब ने बात को बीच ही में रोकते हुए कहा कि अभी तक रोगी के कफ की जांच नहीं हुई है, कफ की जांच जरूरी है। एक नये डाक्टर को बुलाया गया। रुपये आदि देकर कफ की जांच करवाई और जांच के पश्चात् पेनस्लीन, काम्बी आईट पटोमाइसीन आदि इन्जेक्शन शुरु किये गये। अभी तक हजारों रुपये की दवाई आचुकी है। फीस दे-देकर घर का दिवाला निकल गया है। दवाइयां इतनी आचुकी हैं कि रोगी का कमरा दवाखाने जैसा मालूम होता है। रोगी दवाई खाते-खाते परेशान हो चुका है। हां ! इतना सब कुछ होने के बाद भी कोई लाभ नहीं है। अन्त में सब प्रकार की चिकित्सा के उपरांत एक्सरा खिचवाने की सलाह दे दी गई। घरवाले सोचते हैं जब इतने रुपये खर्च हो गये तो थोड़े और सही। एक्सरे की रिपोर्ट आई, बड़ी बारीकी से फोटो की जांच की गई। घरवाले यह सुनकर खुश हैं कि रोगी टी० बी० की बीमारी से बचा हुआ है और डाक्टर साहब को ही धन्यवाद देते हैं कि इन्हीं की कृपा का फल है। परन्तु अब क्या करें। यह प्रश्न अपना आधिपत्य शुरु से अब तक कायम रखने में सफल ही है। काफी कोशिश के उपरांत भी डाक्टर साहब इसका समाधान करने में असफल ही है।

डाक्टर साहब ने रोगी की नई कुण्डली (जन्मपत्री) बनवा डाली है, परन्तु फिर भी रोगी के रोग का निदान नहीं हो पाया है। कहावत वही याद आजाती है कि 'जन्मपत्री बन गई, पर ग्रह मालूम नहीं हुए'। इस तरह से डाक्टरी निदान केवल प्रायः भ्रमपूर्ण ही देखा जाता है। केवल फैशन, फी, यन्त्र आदि के कारण पैसे कमाने का मौका मिल जाता है। जबकि आयुर्वेद पद्धति से सर्वप्रथम रोग का निदान कर लिया

(शेष पृष्ठ ५ पर)

आर्यसमाज का इतिहास

सम्पादक—डा० सत्यकेतु विद्यालंकार

सात-सात सौ से भी अधिक पृष्ठों के सात भागों में आर्यसमाज का विस्तृत इतिहास सम्पादित व प्रकाशित करने का जो कार्य हमने प्रारम्भ किया था, वह अब पूर्ण होने को है। उसके छ: भाग प्रकाशित हो चुके हैं और सातवां भाग मई, १९८८ तक छपकर तैयार हो जायेगा। यह इतिहास आर्यसमाज के विश्वकोष के समान है। जिसे सब आर्य-समाजों तथा शिक्षण संस्थाओं के पुस्तकालयों में अवश्य ही रहना चाहिये।

'इतिहास' के प्रत्येक भाग का मूल्य एक सौ रुपये (पुस्तकालय संस्करण का एक सौ पच्चीस रुपये) है, पर सातों भागों के पूरे सेट का मूल्य केवल पांच सौ रुपये रखा गया है। पहले भाग को बहुत थोड़ी-सी प्रतियां अब शेष बची हैं। अत: जो महानुभाव 'इतिहास' का पूरा सेट लेना चाहें, वे शीघ्र पांच सौ रुपये भेजने की कृपा करें। जिनके प्राप्त होते ही छ: भाग तुरन्त उनकी सेवा में भेज दिये जायेंगे और सातवां भाग मई, १९८८ में उनके पते पर पहुंचा दिया जायेगा। पहले भाग के समाप्त हो जाने पर पूरा सेट प्राप्त कर सकना सम्भव नहीं रहेगा।

आर्यबन्धुओं से यह भी प्रार्थना है कि आर्यों द्वारा जो विविध ट्रस्ट व स्थायी निधियां स्थापित हैं उनके विवरण हमें शीघ्र भिजवाने की कृपा करें, ताकि सातवें भाग में उन्हें प्रकाशित किया जा सके।

—आर्य स्वाध्याय केन्द्र
ए-१/३२, सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली-२९
फोन : ६०१५३६

ऋषि-निर्वाण दिवस पर प्रभातफेरी

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 'निर्वाण दिवस' दीपावली के दिन २२ अक्तूबर, ८७ को प्रात: पांच बजे आर्यसमाज जींद शहर के समस्त आर्य नर-नारियों ने "प्रभातफेरी" नगर की आवासीय कालोनियों और मुहल्लों में ऋषि के गुणों का स्तवन करते हुए निकाली। इस अवसर पर आर्य पाठशाला के बच्चों तथा अध्यापिकाओं ने भी बढ-चढ़कर भाग लिया। बच्चे वेदमन्त्रों का उच्चारण तथा आध्यात्मिक भजन-गीत गाते हुए श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध करते थे। प्रभातफेरी के उपरांत आर्य-समाज मन्दिर में विशेष यज्ञ हुआ। इसके पश्चात् श्रीमती मनोरमा, श्रीमती सत्यावती, श्रीमती सावित्री तथा श्रीमती कृष्णा नेहरू आदि महिलाओं ने महर्षि दयानन्द के जीवन विषयक तथा वैदिक मन्तव्यों से ओत-प्रोत, मधुर गीतों का गायन किया। तदनन्तर शांतिपाठ एवं जय-घोषों सहित आयोजन का समापन हुआ। इस अवसर पर आर्यसमाज जींद शहर की ओर से आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भोजनालय निमित्त "प्रेशर कुकर" दान रूप में प्रदान किया गया।

—प्रो० इन्द्रदेव शास्त्री, मन्त्री आर्यसमाज जींद शहर

(पृष्ठ ४ का शेष)

जाता है, फिर चिकित्सा प्रारम्भ की जाती है। बिना निदान औषधि मनुष्य को मार देती है। रोगी के हजारों रुपये व्यय होने के बाद एक कुशल वैद्य की शरण लेनी पड़ी। वैद्य जी ने नाड़ी (नब्ज), पेट, जिह्वा आदि देखकर १५ मिनट में निदान कर दिया। छाती पर क्या देखते हैं कि मोतीझारा के दाने गले से सीने के नीचे आगये हैं। वैद्य जी ने रोगी को उसी समय विश्वास दिलाया कि घबराने की कोई बात नहीं है, एक सप्ताह में ज्वर ठीक हो जायेगा। डाक्टरी के इलाज से तथा इंजेक्शनों के कारण और टेबलेट आदि खाने से यह ज्वर भयंकर रूप धारण कर चुका था। वैद्य जी ने केवल फल और दूधादि पथ्य में बताये और औषध के रूप में आयुर्वेद की साधारण-सी औषध क्वाथ दे दिया। अन्त में ऐसा हुआ कि केवल ४-५ दिन में ही रोगी सरलता से ठीक होगया। इससे पता चलता है कि आयुर्वेदिक औषधियों का सेवन ही लाभाकारी है।

ऐसे थे देव दयानन्द

रचयिता—कविराज छाजूराम शर्मा शास्त्री, नई दिल्ली

ब्रह्म की उपासना को तजि के अज्ञानी जन,
जड़ की उपासना में लिप्त मतिमन्द थे।
धर्म के नाम पर देशी और विदेशी जन,
भोली-भाली जनता को लूटते स्वच्छन्द थे॥

करते थे धूर्त यहां अविद्या का प्रचार,
वेद विद्या के द्वार चारों ओर से हो बन्द थे।
प्रमाद निद्रा से प्रसुप्त देशवासियों को,
जगाया जिन्होंने और छुड़ाये सब फन्द थे॥

जो थे सुविचारी ब्रह्मचारी तप-ज्ञान पुंज,
एक ईश उपास्य देव सच्चित्-आनन्द थे।
शास्त्रों के मर्म कर्मकांड के थे ज्ञाता और,
श्रेष्ठ गुणनिधान वेदभक्त सुखकन्द थे॥

भारत के रत्न सत्यविद्या के खान थे जो,
भव्य था विशाल भाल शोभित मुखचन्द थे।
"छाजूराम" ध्यानी महाज्ञानी उच्च योगी,
क्षमाशील दयासिन्धु ऐसे देव दयानन्द थे॥

आर्यसमाज हमारा है

नव-जागृति का रहा प्रणेता, पाखण्डों के गढ का जेता,
वेदों का पावनप्रकाश जो जगती के जन-जन को देता।
वही क्रांतिदर्शी इस युग का प्राणों से भी प्यारा है।
आर्यसमाज हमारा है॥

अन्यायों से जो लड़ता है, वेदों का प्रचार करता है।
प्रेम-दया की, मानवता की शिक्षा जगती को देता है।
वही, धरा पर खुशहाली का लगा रहा अब नारा है।
आर्यसमाज हमारा है॥

जगती के जन-श्रेष्ठ बनें, सौम्य-समृद्धि वितान तनें।
घनीभूत हों इस धरती पर सत्य-धर्म के मेघ घने।
दलितों तथा अछूतों को दे रहा सतत सहारा है।
आर्यसमाज हमारा है॥

स्वतन्त्रता का कर उद्घोष, मिटा गुलामी का सब दोष।
'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का किया धरित्री पर है घोष।
नया समाज बनायेंगे हम कण-कण ने ललकारा है।

आर्यसमाज हमारा है॥

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना सुलतानपुर, (उ०प्र०)

आर्यसमाज पूनाहाना का प्रस्ताव

गत दिनों राजस्थान के बहुचर्चित ग्राम दिवराला में 'सती' के नाम पर जो रूपकंवर नामक महिला की नृशंस हत्या की गई है, उसका सरकार सख्ती से नोटिस ले और अपराधियों को ऐसा उचित दण्ड दिया जावे जो भविष्य में इस प्रकार के बर्बर जघन्यकाड की पुनरावृत्ति न हो तथा पुरी के शंकराचार्य श्री निरंजनदेव जी तीर्थ के सती सम्बन्धी लज्जास्पद समर्थन की यह समाज घोर निन्दा करता है तथा उनसे प्रार्थना करता है कि हिन्दू समाज के माथे पर इस कलंक के टीके का समर्थन करने की बजाये आपको समयानुरूप समाज का सही मार्गदर्शन करना चाहिए। एक सर्वोच्च पीठ पर आसीन होने के नाते यह आपकी पूरी जुम्मेदारी है। यदि आप ऐसा न करेंगे तो आपको आर्यसमाज से शास्त्रार्थ के लिए तैयार रहना चाहिए।

—सुगनचन्द आर्य, मन्त्री आर्यसमाज, पूनाहाना

संस्कृत को अनिवार्य विषय बनाने की माग

हथीन (मेवात), २७ अक्तूबर (निस)। राज्य की 'देव-वाणी' परिषद् ने १०+२ पाठ्यक्रम से संस्कृत भाषा को अनिवार्य विषय के रूप में हटाने के लिए राज्य सरकार की आलोचना की है।

परिषद् के प्रधान पण्डित कृष्णविहारी शास्त्री ने एक वक्तव्य में कहा है कि सरकार को अपने निर्णय पर पुनर्विचार करना चाहिए तथा संस्कृत भाषा को अनिवार्य विषय के रूप में लागू करना चाहिए।

श्री शास्त्री ने कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से उस शर्त को हटाने का भी आग्रह किया है, जिसके तहत संस्कृत को अनिवार्य विषय के साथ हिन्दी को भी अनिवार्य घोषित किया गया है।

उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा घोषित इस आदेश के अनुसार बी० ए० तक छात्रों को तीन भाषाओं का अध्ययन करना होगा, जो कि व्यावहारिक नहीं है।

हिन्दी के पक्ष में सर्वसम्मत प्रस्ताव पारित

लदन, २८ अक्तूबर (भाषा)। पश्चिम में पहली बार आयोजित विश्व हिन्दी सम्मेलन सयुक्त राष्ट्र में हिन्दी को एक अधिकृत भाषा को मान्यता का सर्वसम्मत प्रस्ताव पारित कर यहां समाप्त होगया।

प्रस्ताव में कहा गया है कि यूनेस्को पहले ही हिदी को दुनिया में सबसे ज्यादा लोगो द्वारा बोली जानेवाली तीसरी बड़ी भाषा के रूप में मान्यता दे चुका है। सम्मेलन संयुक्त राष्ट्र दिवस के दिन गत २४ अक्तूबर को शुरु हुआ था। इसमें यह भी मांग की गई कि २४ अक्तूबर का दिन समूचे विश्व में प्रतिवर्ष हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाये। सम्मेलन ब्रिटेन के हिंदी केन्द्र द्वारा विश्व साहित्य संस्कृति संस्थान के सहयोग से आयोजित किया गया। लदन में अमरदीप के सम्पादक जे एम कौशल तथा विश्व हिदी दर्शन के सम्पादक लल्लनप्रसाद व्यास इसके महासचिव हैं।

सम्मेलन में ब्रिटेन के अलावा भारत, नीदरलैंड, जर्मनी, इटली व मारिशस के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया।

आर्यसमाजों के वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत जि० करनाल	६ से ८ नवम्बर
,, अर्जुननगर गुडगाव	६ से ८ ,,
,, होडल जि० फरीदाबाद	१३ से १५ ,,
,, जवाहर नगर पलवल जि० फरीदाबाद	१३ से १५ ,,
,, रेवाडी जि० महेन्द्रगढ	२७ से २९ ,,

जिन आर्यसमाजो के अभी तक अपने उत्सव या प्रचार की तिथियां निश्चित नहीं की हैं, वे यथाशीघ्र अपना उत्सव या वेदप्रचार का कार्यक्रम निश्चित करके शीघ्र सूचित करें, ताकि प्रबन्ध करने में सभा को सुविधा रहे।

—रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता

नामकरण संस्कार व वेदप्रचार

गुरुकुल भज्जर के भूतपूर्व मन्त्री व स्नातक यज्ञदेव शास्त्री गांव लीलोढ, जि० रोहतक के सुपुत्र देवराज के लड़के का वैदिकरीति से नामकरण संस्कार व यज्ञ हुआ। सस्कार-यज्ञ व प्रवचन स्वामी शरणानन्द जी व व्रतानन्द जी ने कराया।

इस अवसर पर ईश्वरसिंह भजनोपदेशक ने वेदप्रचार किया। लड़के का नाम नरवीर रखा गया। शास्त्री परिवार ने वेदप्रचार में ४११) भेट किये।

—सत्यदेव वैद्य, आर्यसमाज लीलोढ

हैदराबाद सत्याग्रह पेंशन

हैदराबाद सत्याग्रह १९३८-३९ के अन्तर्गत हरयाणा सरकार से सम्मान पेंशन के केसों का निबटारा करने बारे हरयाणा सरकार का पत्र सत्याग्रहियों की जानकारी के लिए प्रकाशित किया जाता है।

प्रेषक :

अध्यक्ष,
हरयाणा स्वतन्त्रता सैनिक सम्मान समिति,
हरयाणा सिविल सचिवालय, चण्डीगढ़।

सेवा में

म० भरतसिंह वानप्रस्थी, वरिष्ठ उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, एवं संयोजक हैदराबाद आर्य सत्याग्रह स्वतन्त्रता सम्मान पेंशन, पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक।

यादी क्रमांक ह०स०स०स०स०/८७/८१७

दिनांक चण्डीगढ़ २६-१०-८७

विषय : हैदराबाद सत्याग्रह के अन्तर्गत राज्य पशन के केसों का निपटान करने बारे।

उपरोक्त विषय पर आपका पत्र दिनांक १५-१०-८७, क्रमांक ६१७२ प्राप्त हुआ तथा आप द्वारा भेजे गये सुझाव मालूम हुए।

२—अभी तक हरयाणा स्वतन्त्रता सैनिक सम्मान समिति का गठन नहीं हुआ। उम्मीद है कि जल्दी ही इस समिति का गठन हो जायेगा। समिति के गठन के पश्चात् शीघ्र ही केसों का निपटान कर दिया जायेगा।

अध्यक्ष
हरयाणा स्वतन्त्रता सैनिक सम्मान समिति, चण्डीगढ़

आर्यसमाज शेखपुरा का उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज शेखपुरा निकट घरोंड़ा, जिला करनाल का ३०वां वार्षिक उत्सव दिनांक ९-१०-११ अक्तूबर को समारोहपूर्वक मनाया गया। १० तथा ११ अक्तूबर को स्वामी रामेश्वरानन्द जी आचार्य गुरुकुल घरोंडा की अध्यक्षता मे प्रातःकाल यज्ञ तथा प्रवचन हुए। बालकों को यज्ञोपवीत दिये गये। स्वामी धर्मानन्द जी ने भारतीय इतिहास की भारतीय परिवेश में खोज के लिये प्रेरित किया। स्वामी गोरक्षानन्द जी ने गोकरुणानिधि के आधार पर गोरक्षा का महत्त्व तथा वर्तमान परिस्थितियों में उसकी अनुपालना की ओर ध्यान दिलाया। मा. ओम्प्रकाश पावटीवाले, रामनिवास डीघवाले तथा महाशय खेमचन्द जी सोटेवाले ने अपने मधुर भजनोपदेशों द्वारा श्रोताओं को मोहित कर दिया।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से श्री हरिश्चन्द्र तथा सीताराम ने जनता को ऋषि के बताये मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। उत्सव का कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा। इस अवसर पर सभा को दशांश, वेदप्रचार, सर्वहितकारी के चन्दे के रूप में ५५५) की राशि भी दी गई।

—रणधीरसिंह मन्त्री आर्यसमाज शेखपुरा

आर्यसमाज मिर्जापुर बाछोद [महेन्द्रगढ़] का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री मा. छोटेलाल यादव, उपप्रधान—बाबूलाल यादव, मन्त्री—विश्वम्भरदयाल शर्मा, उपमन्त्री—रोशनलाल यादव, कोषाध्यक्ष—मा० मोरमुकटसिंह, प्रचारमन्त्री—अभ्युदयाल, संयोजक—बनवारीलाल, सह-संयोजक—मूलचन्दराव, पुस्तकाध्यक्ष—ताराचन्द।

गौ तथा भैंस की सर्वोत्तम हरयाणा नसल को बचाना हरयाणावासियों का पुनीत कर्तव्य

सारा देश जानता है कि हरयाणा नसल की गाय बछड़े और बैल देशभर में मशहूर हैं। इसी प्रकार हरयाणा की मुर्रा नसल की भैंस भी देश में सर्वोत्तम है।

जिस भयंकर सूखे का मुकाबला हरयाणा के आधे से ज्यादा जिलों की जनता को करना पड रहा है, यह हमारी याद में कभी भी नहीं करना पड़ा। अन्न के भण्डार तो देश में हैं, परन्तु पशुओं के लिये चारे और भूसे के भण्डार नहीं हैं। ज्यों-ज्यों समय बीत रहा है, चारा और भूसा महगा तो होता ही जारहा है, उनका मिलना भी कठिन से कठिनतर होता जारहा है।

किसानों को अपनी गाय, बछड़े, बछड़ियां, बैल और भैंसों को बचाने के लाले पड रहे हैं। ऐसे भयंकर सूखे और अकाल से पीडित किसान सांडों (बागड़ और झोटे) की सुध-बुध ले पायेंगे, यह असम्भव होता जारहा है। हम सब भली प्रकार जानते है कि यदि सांडों की पूरी देख-रेख और चराई नहीं हो पाई और वे कमजोर होगये या मर गये तो हरयाणा की गाय और भैंस की नसलों में गिरावट आजायेगी और वह हरयाणा और देश के लिये बहुत बडी हानि होगी। चाहिये तो अच्छे बछड़े और कटडे चुनकर, उनको सांड बनाने के लिये उनको भी अच्छी खुराक दी जाये, परन्तु जो सांड इस समय प्रदेश की मशहूर नसलों की अभिवृद्धि में सेवारत हैं, उनको बचाया ही न जाये, बल्कि उनको पूरी खुराक देकर हृष्ट-पुष्ट रखा जाये।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का ध्यान इधर गया और उसने इस दिशा में अपने कर्त्तव्य का पालन करने का संकल्प लिया है। हमने हरयाणा सरकार और भारत सरकार से भी निवेदन किया है कि वे एक तिहाई सहायता करे। यदि १५ रु० दैनिक व्यय एक सांड पर आता है तो वे ५ रु० दे और हरयाणा की जनता भी एक तिहाई हिस्सा वहन करे।

हमारा अन्दाजा है कि लगभग १००० सांडों की रक्षा का भार हम सबको मिलकर उठाना होगा। ५ रु० प्रति सांड जनता को इकट्ठा करना है। चारा और दाना दोनों का प्रबन्ध करना है।

हरयाणा के लोग जहां भी हों, हरयाणा में या बाहर, उन सब की सेवा में हम पुरजोर अपील करते हैं कि वे इस पवित्र कार्य में दिल खोलकर मदद करे और उदारता से चारा, अन्न या नकद दान दें।

मण्डियों के धर्म-प्रेमी सभी व्यापारी भाइयों से विशेष अपील है कि वे हरयाणा की मशहूर गाय और भैंसों की नसल की रक्षा के लिये दिल खोलकर दान दें।

निवेदक

ओमानन्द सरस्वती	प्रो० शेरसिंह	वेदव्रत शास्त्री	बद्रीप्रसाद आर्य
प्रधान	प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष
परोपकारिणी सभा	आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा		

वैदिक वृद्ध संन्यास आश्रम निर्माण शुभारम्भ समारोह

धर्मपुरा कालोनी यमुना नगर वैदिक वृद्ध सन्यास आश्रम निर्माण शुभारम्भ २२ नवम्बर, १९८७ रविवार प्रातः दस बजे से एक बजे तक यज्ञ, भजन, प्रवचन इत्यादि के बाद श्रीमती यश जी गुप्ता (करनाल) द्वारा किया जारहा है।

निर्माण शुभारम्भ के बाद सहभोज होगा।

अध्यक्ष—स्वामी सच्चिदानन्द

आर्य वर चाहिए

२२ वर्षीय जाट, कुलीन, कद ५ फुट ५॥ इंच, स्वस्थ, गृहकार्यदक्ष, सुन्दर, एम० ए० गणित एवं बी-एड० में अध्ययनरत सुयोग्य आर्य कन्या हेतु लम्बा, स्वस्थ, सुशिक्षित, नशे रहित, रोजगारयुक्त, सुयोग्य दिल्ली/हरयाणावासी आर्यवर चाहिए।

पूर्ण विवरण सहित लिखे या मिले—

—प्रो० सत्यवीर शास्त्री
अध्यक्ष संस्कृत विभाग राजकीय महाविद्यालय,
भिवानी, हरयाणा-१२५०२१

आर्यसमाज नारनौल जि. महेन्द्रगढ़ का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री ताराचन्द आर्य, उपप्रधान—डा० मूलचन्द, महाशय टेकचन्द, मन्त्री—शिवचरण गोयल, उपमन्त्री—मा० प्रह्लाद, कोषाध्यक्ष—अयोध्याप्रसाद, पुस्तकाध्यक्ष—वैद्य हरिश्चन्द्र आर्य।

हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

१. मैसर्ज परमानन्द साईंदितामल, भिवानी स्टैंड, रोहतक
२. ” फूलचन्द सीताराम गांधी चौक, हिसार
३. ” सन-अप-ट्रेडर्स सारंग रोड, सोनीपत
४. ” हरीश एजेन्सीज ४६६/१७ गुरुद्वारा रोड, पानीपत
५. ” भगवानदास देवकीनन्दन सर्राफा बाजार पुराना, करनाल
६. ” घनश्यामदास सीताराम बिचला बाजार, भिवानी
७. ” कृपाराम गोयल रुड़ी बाजार, सिरसा
८. ” कुलवन्त पिकल स्टोर्स शाप नं० ११५, मार्किट नं० १, एन० आई० टी० फरीदाबाद
९. ” चन्द्रप्रकाश नवीनप्रकाश ३१८/५ जेकमपुरा, गुड़गांव

संस्कृत की उपेक्षा का आरोप, पृथक् निदेशालय की मांग

कथल, २९ अक्तूबर (निस)। हरयाणा संस्कृत परिषद् ने हरयाणा के मुख्यमन्त्री चौ० देवीलाल को एक ज्ञापन दिया है। परिषद् का कहना है कि हरयाणा में संस्कृत की उपेक्षा से कालेज प्राध्यापकों व विद्यार्थियों में रोष है। मुख्यमन्त्री को दिये ज्ञापन में कहा गया है कि राज्य में १०+२ नई शिक्षा प्रणाली से संस्कृत विषय को सरकार ने खत्म कर दिया है। १०+२ नई शिक्षा प्रणाली दिल्ली पैट्रन से ही ली गई है। लेकिन सरकार ने संस्कृत का कोई विषय हरयाणा में लागू नहीं किया। इससे हजारों विद्यार्थी १०+२ स्तर पर संस्कृत विषय लेने से वंचित रह जायेंगे। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय ने भी बी० ए० स्तर पर संस्कृत विषय के साथ अनिवार्य रूप से हिन्दी विषय लेने की जो शर्त लागू की है, उससे भी संस्कृत भाषा का काफी नुकसान हुआ है।

परिषद् ने हरयाणा सरकार से ज्ञापन में यह मांग की है कि वह हरयाणा साहित्य अकादमी में संस्कृत के प्रतिनिधियों को उचित प्रतिनिधित्व दे तथा दसवी कक्षा तक संस्कृत को अनिवार्य रूप से लागू करे तथा कालेज स्तर पर सस्कृत के माध्यम से नैतिक शिक्षा लागू की जाये। उत्तरप्रदेश व राजस्थान सरकारों की तरह हरयाणा में भी एक पृथक् निर्देशालय भी स्थापित किया जाये।

परिषद् के महासचिव प्रो० रत्नाराम ने एक भेंट में बताया कि इन सभी समस्याओं पर विचार विमर्श करने के लिए नवम्बर मास में हरयाणा प्रदेश के संस्कृत प्राध्यापकों व विद्वानों का एक सम्मेलन कुरुक्षेत्र में बुलाया जारहा है, जिसमें सरकार व विश्वविद्यालय की संस्कृत विरोधी नीति के विरुद्ध रणनीति तैयार की जायेगी।

शोक-संवेदना

गुरुकुल झज्जर के सुयोग्य विद्वान् स्नातक श्री यज्ञवीरसिंह शास्त्री किसरैंटी, रोहतक निवासी के पिता श्री भीमसिंह आर्य का ७५ वर्ष की आयु में संक्षिप्त बीमारी से दिनांक ४-१०-८७ रविवार को स्वर्गवास होगया।

श्री भीमसिंह जी दादा बस्तीराम के शिष्यों में से एक थे। इसी कारण वेदप्रचार मण्डल पाकस्मा, आर्यसमाज व गुरुकुलों के प्रति श्रद्धा रखते हुए यथासम्भव सदैव सहयोग करते रहते थे। इनके निधन से विशेष वेदप्रचार मण्डल पाकस्मा को अपूर्णीय क्षति हुई है।

२—इसी प्रकार गुरुकुल झज्जर के ही वरिष्ठ स्नातक श्री धर्मव्रत जी शास्त्री हड़ौदा कलां, भिवानी के छोटे भाई श्री पृथ्वीसिंह की धर्मपत्नी श्रीमती विमला देवी का १-१०-८७ को असामयिक स्वर्गवास हो गया है। ये अपने पीछे दो अबोध बालक छोड़ गई है।

हम सब आर्यजन इनके वियोग दुःख में दुःखी हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति प्रदान करे तथा शोकसंतप्त परिवार को दुःख सहने का धीरज प्रदान करे।

—रणवीरसिंह शास्त्री
मन्त्री स्नातक मण्डल, गुरुकुल झज्जर, रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 13207/73 . . . . . . नं० P/RTK 49



कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री

सह-सम्पादक—डा० सुखदेव

वर्ष १४, अङ्क ४८ १४ नवम्बर, १९८७ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ६० पैसे

सभा द्वारा सूखाग्रस्त ग्रामों में सहायता कार्य आरम्भ

साण्डों की रक्षा हेतु एक एक हजार रुपये वितरित किये जायेंगे

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से १९ नवम्बर ८७ से सूखा ग्रस्त ग्रामों में जहां नहरों तथा नलकूपों के पानी की व्यवस्था नहीं है और भयंकर सूखा पड़ने से पशुओं के लिए हरे चारे का अभाव होने से लोग अपने पशुओं को छोड़ने पर मजबूर हो रहे हैं, उस अवस्था में साण्डों तथा झोटों को बचाने का कार्य कौन करेगा ? हरयाणा की गौ और भैंस की नसलें सारे संसार में सर्वोत्तम हैं। साण्डों को पूरा चारा तथा दाना नहीं मिला तो वे या तो जीवित ही नहीं रह सकेंगे और यदि जीवित रहे तो बेकार हो जायेंगे। यदि ऐसा हुआ तो देश की इन सर्वोत्तम नसलों में भी गिरावट आ जायेगी।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने यह निर्णय किया है कि भारत सरकार और हरयाणा सरकार का सहयोग प्राप्त करके हम इन नसलों को बचायें। अनुमान के अनुसार एक साण्ड पर १५ रुपये दैनिक चारे दाने का खर्च होगा। सभा इस धर्म के कार्य के लिए जिससे हमारी अर्थव्यवस्था में भी मदद मिलती है, सभा की ओर से एक हजार रुपये प्रति साण्ड सूखा ग्रस्त ग्रामों में देने का निश्चय किया है। इस कार्यक्रम का उद्घाटन १९ नवम्बर को तहसील झज्जर के ग्राम बरोहड़ में प्रातः १० बजे भजनों के कार्यक्रम के साथ तथा ग्राम झाड़ली में १ बजे सार्वजनिक सभाओं के आयोजन द्वारा किया जा रहा है। सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी तथा अन्य अधिकारी इन ग्रामों में पंचायत के सहयोग से एक समिति का गठन करके प्रत्येक साण्ड के लिए एक-एक हजार रुपये समिति को सौंपेंगे। समिति साण्ड तथा झोटे की देख-रेख तथा उनके लिए चारे तथा दाने की व्यवस्था का कार्य भार सम्भालेगी।

इसके पश्चात् हरयाणा के अन्य सूखा ग्रस्त ग्रामों में इसी प्रकार के आयोजन करके सभा की ओर से सहायता दी जायेगी।

इस महान् कार्य के लिए सभा ने भारत सरकार तथा हरयाणा सरकार से आर्थिक सहायता अनुदान के लिए लिखा है तथा दानियों से अपील करके धन संग्रह करना आरम्भ किया है। अभी तक जो दान प्राप्त हुआ है, उसकी सूची निम्न प्रकार है :—

भिवानी वनस्पति उद्योग २५०००, श्री जयपाल आर्य नंगला साधान जि० कुरुक्षेत्र १५००, श्री कृष्णलाल वधवा कुरुक्षेत्र १०००, श्री कन्हैयालाल महता फरीदाबाद १०००, प्रो० जयसिंह मलिक रोहतक २००, श्री जी. आर. आनन्द नई दिल्ली २००, श्री रणधीरसिंह राठी रोहतक १००, सूबेदार शीशराम माजरा दूबलधन जि० रोहतक १००, श्री रमेशचन्द्र मलिक सैनिक ५०, श्रीमती सुमित्रादेवी राणाप्रताप बाग दिल्ली ५० रु०

आशा है अन्य दानी भी इस पवित्र कार्य में सहयोग प्रदान करेंगे

वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री

मेला कपालमोचन पर वेदप्रचार तथा शराबबन्दी सम्मेलन सम्पन्न

प्रतिवर्ष की भान्ति मेला कपालमोचन जि० अम्बाला में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से ३ से ५ नवम्बर तक यज्ञ तथा वेदप्रचार शिविर का आयोजन किया गया। श्री स्वामी सदानन्द जी की देखरेख में प्रतिदिन प्रातः यज्ञ तथा दिन तथा रात्रि में भजनों द्वारा वेद प्रचार होता रहा। सभा के उपदेशक पं० महेन्द्र शास्त्री, श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री तथा भजनोपदेशक पं० सीताराम आर्य के अतिरिक्त प० हरलाल आर्य, पं० शेरसिंह आर्य आदि ने प्रचार किया। दयानन्द उपदेशक विद्यालय यमुनानगर के छात्रों ने प्रबन्ध व्यवस्था में सहयोग दिया।

४ नवम्बर को मेले में सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी भी पधारे। उन्होंने अपने भाषण में उपस्थित नर नारियों को अन्धविश्वास को छोड़कर वैदिक धर्म के अनुसार आचरण करने का परामर्श दिया और शराब, मांस, दहेज तथा सती प्रथा आदि सामाजिक बुराइयों से दूर रहकर भारतीय संस्कृति को अपनाने पर बल दिया। सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह ने ४ तथा ५ नवम्बर को पानीपत, करनाल, लाडवा, नंगला साधान, यमुनानगर, जगाधरी तथा कुरुक्षेत्र के भ्रमण में आर्यसमाज के अधिकारियों से सम्पर्क करके सूखा सहायता कार्य में सभा को सहयोग देने की प्रेरणा की। सभी स्थानों पर सभा के इस महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम की सराहना की गई।

केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष

शोक समाचार

श्री सुभाषचन्द जी आर्य सहायक भजनोपदेशक का ५ नवम्बर को मेला कपाल मोचन पर अचानक स्वर्गवास हो गया। वे मेले पर पं० सीताराम आर्य भजनोपदेशक के साथ मेले में सभा के वेदप्रचार शिविर में प्रचार कर रहे थे।

स्वामी सदानन्द जी तथा सीताराम जी ने सभा की ओर से उनके ग्राम में जाकर शोक संवेदना तथा सहानुभूति प्रकट की।

—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री

आर्यसमाज रेलवे रोड यमुनानगर जि० अम्बाला का वार्षिक चुनाव

प्रधान-महाशय मुकन्दलाल जी, उपप्रधान-श्री चमनलाल जी, मन्त्री-श्री हरिराम आर्य, उपमन्त्री-श्री बृजलाल जी, कोषाध्यक्ष-श्री विपिन कुमार जी।

राजस्थान के देवराला ग्राम में—

सतीप्रथा या स्त्री हत्याकांड ?

आलेख—सुखदेव शास्त्री "वानप्रस्थी" महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा

गतांक से आगे—

पुरी के शकराचार्य निरजनदेव तीर्थ का मत —

शकराचार्य का अलग कौन सा वेद है जो सती प्रथा का विधान करता है। वे मन्त्र उन्हें जनता के सामने रखने चाहिए, यदि वे वेदों से सती प्रथा सिद्ध न कर सकें तो उन्हें दिल्ली के रामलीला मैदान में जलकर मर जाना चाहिए। शकराचार्य जैसे ही ये लोग हैं जो वेदों में मांस खाना, शराब पीना, व्यभिचार करना आदि भी मानते हैं। छूआछूत को वेदसम्मत मानकर उसका भी समर्थन करते हैं। ऐसे लोगो को पकड़कर जीवन भर कैद में रखना चाहिए जो समाज का वातावरण बिगाड़ते हैं। भेदभाव फैलाते हैं। सती प्रथा को आज भी वेदसम्मत बताकर उसका समर्थन कर नारी जाति पर अत्याचार करने की प्रेरणा देते हैं। नारी सगठनों को भी शंकराचार्य जैसे निन्दनीय व्यक्तियो के विरुद्ध मुकदमा दायर करना चाहिए।

सतीप्रथा आत्महत्या के समान है। आत्महत्या को यजुर्वेद ४०वें अध्याय ३ मन्त्र में महान् पाप बताया गया है।

असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृता.।
तांस्ते प्रेत्यापि गच्छन्ति ये के चात्महनो जना॰।

इस मन्त्र में आत्महत्या करने वालों की गति का वर्णन किया गया है। जो अपनी आत्मा के विरुद्ध चलते हैं। अपनी आत्मा की आवाज को अनसुनी करके दबा देते हैं ऐसे लोग आत्महत्यारे होते हैं। अपरार्क का मत—सती प्रथा के विरुद्ध शायद सबसे व्यावहारिक प्रबुद्ध और मानव जाति के लिए कल्याणकारी मत है अपरार्क का जिसमें वे कहते हैं कि जीवित रहकर विधवा अपने मृत पति का भला कर सकती है। उसके साथ जलने से तो वह आत्मघातिनी ही रहेगी।

वे लिखते हैं—

अनुवर्त्तत जीवन्त न तु यायान्मृतं पतिम्।
जीवन् भर्तृहित कुर्यात् मरणात् आत्मघातिनी।

अत. यह स्पष्ट है कि वेदो से लेकर धर्मशास्त्रों तक कही पर सती प्रथा का विधान नही है।

चातुर्वर्ण्य की तरह सती प्रथा कभी भी अनिवार्य नहीं मानी गई। इसे बहुप्रचलित या समाज की व्यापक भावना कहना या मानना या तो मूर्खता है या इसे पुन: स्थापित करने का एक भयानक षड्यन्त्र है। सती प्रथा हिन्दू सभ्यता में प्रमुख तो क्या गौण स्तम्भो में भी नही गिनी जा सकती।

पिछले दो हजार वर्षों में शायद कुछ हजार विधवाएं पतियों के साथ जली होंगी और उनमें से कितनी अपनी इच्छा से जली और कितनी ढोल तांशों, शंख ध्वनि, नशे की बेहोशी, सती के जय जयकार और धूवें के बीच, चिता पर नारियल फेंक-२ कर जबर्दस्ती जलाई गई यह एक खुला सवाल है। सतीप्रथा को शुद्ध मानवीय तर्कों पर भी घृणित कार्य माना जाना चाहिए। सतीप्रथा का कारण, प्रमाण और समर्थन, शास्त्रों, संस्कृति और पुनर्जन्म में नही, बल्कि सामाजिक और अपने निजी मानसिक तथा बौद्धिक रोगों में ही खोजा जा सकता है। सती प्रथा अत्यन्त भयानक अत्याचार है। सामाजिक बर्बरता है। स्त्री व पुरुष समाज की भी कायरता है।

देश में स्त्री के लिए मृत पति के साथ सती होना कभी भी अनिवार्य न था। विधवा होकर वह पुनर्विवाह कर सकती थी और यदि वह चाहती तो नियोग से पुत्र उत्पन्न कर सकती थी। इस तरह सतीप्रथा को कभी कोई गौरव नही मिला।

ईसा से ३०० वर्ष पूर्व तक सतीप्रथा का समाज में करीब-२ नामोनिशान तक न था और शास्त्रों में उसे कोई समर्थन प्राप्त न था।

वैदिक काल के बाद

किन्तु वैदिक काल के बाद से पौराणिक पुरोहितों द्वारा स्त्रियों के वेद पठन यज्ञादि के केन्द्रीय अधिकार छीने जाने लगे। समाज में स्त्री और पुरुष के बीच असमानता, विषमता बढने लगी। स्त्री पर इतना अन्याय लाद दिया गया कि उसे शूद्रों के समकक्ष लाकर खड़ा कर दिया गया। उधर युद्ध और रण क्षेत्र में पुरुषों की मृत्यु सामान्य सी चीज बन गई थी। मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक और उत्तराधिकार-सम्बन्धी सामाजिक स्थितियां कुछ ऐसी बनी कि वैदिककाल में जो केवल मृतक के पास लेटकर वापस लौट आने का प्रतीकात्मक कृत्य था, उसमें लौट आना निकाल दिया गया और मृत शरीर के साथ जला दिया जाना एक अमानुषिक कार्य आरम्भ हो गया।

गृह्यसूत्रों व स्मृतियों में सतीप्रथा—

मनुस्मृति में जिसमें १२०० के लगभग श्लोक हैं कही पर सती का उल्लेख नहीं है।

याज्ञवल्क्य स्मृति में भी सती की कोई चर्चा नहीं है। गृह्यसूत्रों में भी विधवाओं को पति के साथ जलने पर प्रतिबन्ध है। भारद्वाज गृह्यसूत्र में भी विधवा को स्पष्ट रूप से आज्ञा दी गई है कि वह पति की मृत्यु के बाद पवित्र गृह्याग्नि को जलाए रखे। कौशिक गृह्य सूत्र भी पति की मृत्यु के बाद विधवा को उसी आचरण को सलाह देता है जिसे हम अथर्व वेद में देख आए हैं। आश्व लायन गृह्य सूत्र में भी पति के शव के पास बैठी विधवा को उठाते हुए कहा गया है कि हे स्त्री! जीवितों के संसार में उठो। धर्मशास्त्रों के कई ऐसे भी टीकाकार हैं जिन्होंने वैदिक भावना की रक्षा करते हुए सतीप्रथा की स्पष्ट शब्दों में भर्त्सना की है।

स्मृति चन्द्रिका भी सती प्रथा को पाप मानती है।

सती प्रथा कहां से चली ?—

इस से पूर्व अनेक वेद मन्त्रों श्रुति स्मृतियों व धर्म सूत्रों के प्रमाणों से यह सिद्ध हो गया है कि सतीप्रथा महाभारत से पूर्व सारे देश में प्रचलित नहीं थी। यह तो महाभारत के बाद ही प्रचलित हुई।

भारतीय जनता अन्धविश्वासी है अतः वह बहुत ही जल्दी किसी भी कुप्रथा का शिकार शीघ्र हो हो जाती है।

इसी काल में कुछ धर्म सूत्रकार ऐसे भी हुए जिन्होंने सतीप्रथा का समर्थन किया। ये हैं—

सतीप्रथा के समर्थक —

१- विष्णुधर्म सूत्र में विधवा को पति के साथ जलने का विधान किया है। विधवा या तो ब्रह्मचर्य का पालन करे या पति के साथ चिता पर जलकर मरे।

२- बृहत्हारीत कहते हैं—साध्वियो के लिए पति के साथ जल मरने के अतिरिक्त को धर्म नही है।

३- पराशर ने तो झूठ बोलने में कमाल किया है वह लिखता है—सती साढे तीन करोड़ वर्षों तक स्वर्ग में निवास करती है।

४- कल्पित व्यास स्मृति में कहा गया है कि ब्राह्मणी अपने मृत पति के साथ चिता में प्रवेश करे।

५- विधवाओं को अपने मृत पति के साथ जल मरने की सलाह १२वी सदी में रचित "मिताक्षरा" में ही मिलती है।

इस काल में विधवा का पति को सम्पत्ति में अधिकार होने के कारण भी इस प्रथा को बढ़ावा मिला है। पति की सम्पत्ति का अधिकार हनन करने के लिए पति की मृत्यु के बाद उसके दायभागी जन विधवा का सती होने के लिए प्रेरित करते हैं। दबाव डालते हैं। जबर्दस्ती करते हैं। इस प्रकार यह भी एक मुख्य कारण है इस प्रथा के प्रचलन का। उपरोक्त धर्मसूत्रों से उस समय प्रेरणा मिली है विधवा को सती होने की। ये धर्मसूत्रकार भी सतीप्रथा के प्रचलन में पूरे दोषी ठहराए जा सकते हैं। मध्यकाल में लोग इन धर्म सूत्र ग्रन्थों पर बहुत श्रद्धा रखते थे। सामाजिक व्यवहार में धर्मसूत्रों में लिखित परम्परा और का ही पालन करते थे।

—क्रमशः

मेरी चीन यात्रा—५

छोटे-छोटे कस्बे बनाने की योजना

—प्रो० शेरसिंह सभाप्रधान

गतांक से आगे—

ग्रामों की बेरोजगारी दूर करने के लिये खेती के अलावा और धन्धे भी चलाना जरूरी है। जिन लोगों को जमीन पर काम नहीं मिलता, उनको छोटे बड़े धन्धों का प्रशिक्षण देकर छोटे-छोटे कस्बों का विकास करने का कार्यक्रम बनाया है। पिछली पीढ़ी के लोग तो हर घर में अधिक संख्या में होते थे जब आबादी पर रोक नहीं थी और वे सब अब काम के लायक होते जा रहे हैं, उनको रोजगार देने के लिये यह करना जरूरी है। परन्तु अगले पांच सात वर्षों के बाद तो, मां बाप के पास एक ही बच्चा रहेगा, और वह खेती का काम छोड़कर ही दूसरे धन्धे में जा सकेगा। दस वर्ष के बाद चीन में खेती पर काम करने वाला आदमी तभी जा सकेगा, जब या तो व्यक्तियों को अधिक जमीन दे दी जाये या बड़े फार्म खोलकर सरकार मशीनों से खेती करवाये। आगे की क्या योजना है यह चीन के नेता जानें। परन्तु आने वाले समय में खेती पर काम करने वालों की संख्या कम होती जायेगी और चीन भी धीरे-२ देहात में कम और शहरों में और कस्बों में ज्यादा बसेगा। शहरीकरण वैसे तो सभी देशों में बढ़ रहा है, वहां भी बढ़ेगा। शहरों में उद्योग धन्धों में काम करने वालों को बोनस मिलता है और बिक्री आदि अधिक करने से भी कुछ आमदनी बढती है। निश्चित बात है कि शहरों में लोगों की आमदनी बढ़े। चीन में ऐसा हुआ है, और अब पतलून और बन्द गले का माओ काल का कोट ही सब नहीं पहनते, शहरों में युवक और युवतियाँ पश्चिम देशों के सूट और शर्ट आदि पहनते हैं और देहातों वाली गरीबी वहां दिखाई नहीं देती। शहरों में पुरानी बस्तियां चान्दनी चौक के साथ लगी गलियों की तरह ही हैं। उनमें गरीब लोग रहते हैं। चीन में देहातों और शहरों में गरीबी है। है। कुछ काम सरकार देती है कुछ लोग अपने आप करते हैं, चीन के लोग परिश्रमी हैं, चीजें सस्ती हैं, मकान भी सस्ते किराये पर ही सरकार देती है, इसलिये साधारण जीवन गरीबी का ही सही सबको मिल जाता है। भुखमरी नहीं है, कोई भिखारी नहीं है, कोई सड़को की पटरियों पर नहीं सोता। कच्चा पक्का छोटा सा घर ही हो सबको उपलब्ध है। आमदनी का भेदभाव तो है परन्तु बहुत अधिक नहीं है। अधिकतर लोग साईकल और बस, ट्रक या रेलगाड़ी में सफर करते हैं। निजी कारें बहुत थोड़ी हैं सरकारी गाड़ियां ही हैं जो बड़े अधिकारियों को सरकारी काम के लिये मिलती हैं। घूसखोरी देखने को तो नहीं है, शायद कहीं-कहीं होगी, परन्तु कम से कम है। बखशीश लेने देने का रिवाज बिल्कुल नहीं है। सब चीजें और सेवायें सस्ती हैं। नजर टेस्ट करने का आधा येन (हमारा २ रुपये से भी कम) लेते हैं और यदि टेस्ट किसी कारण न हो सके तो आधाधन वापिस। यह मेरा निजी अनुभव है और बखशीश देने का भारत के सभी प्रतिनिधियों का निजी अनुभव है।

ये सब चीजें तो बहुत ठीक हैं, राष्ट्र को नई तकनीक उपलब्ध कराना और आधुनिकता में किसी भी देश से मात न खाना अच्छी बातें हैं। हमारे देश में ये सब बातें हम नहीं कर पाये हैं। आधुनिकता की दौड़ में तो हम चीन के नजदीक लग सकते हैं, कहीं-कहीं उससे आगे भी हैं। परन्तु बहुत बातें हैं जो हम चीन से सीख सकते हैं और देश को उतना ही शक्तिशाली बना सकते हैं।

चीन की सारी नीति में मुझे एक ही बात अखरी। देहातों में कम्यूनों को तोड़कर ऐसा लगता है कि माओ के युग में जो प्रभाव देहात के लोगों और खेत पर काम करने वालों का था, वह खत्म हो जायेगा, क्योंकि कम्यून टूटने पर पार्टी की मशीनरी पर देहात का प्रभाव घटता जायेगा। जिन इकाइयों से चुनकर लोग जाते थे जब वह संस्थायें ही खत्म हो गई तो देहात का प्रतिनिधित्व कैसे होगा। यह प्रश्न मैंने किया परन्तु वह किसी न किसी कारण से मिल नहीं पाया। जमीन के अलग-अलग टुकड़े बांटकर जहां किसान की अपने अलग जमीन के टुकड़े की भूख को थोड़ा शान्त कर दिया, वहां उसके शासन पर प्रभाव को खत्म कर दिया। यह (Sugar Coated) कडवी गोली पर खांड का मुलम्मा चढ़ाने वाली बात लगी। वहां का किसान और देहाती क्या सोचता है यह पता नहीं लग सका। बोलने की और अभिव्यक्ति की आजादी वहां कम ही है। विश्वविद्यालय के लड़कों लड़कियों के प्रदर्शन भी जानकार लोग यही सोचते हैं कि डेंग के साथियों ने स्वयं ही करवाये हैं ताकि नई आर्थिक और राजनीतिक नीति को लागू करने में विरोधियों के कट्टरपन को नंगा करके उसे दबाया जा सके। देहात में अपने अधिकारों के लिये प्रदर्शन करने के लिये उनमें कितनी चेतना है और उसकी कितनी छूट है यह निश्चय से नहीं कहा जा सकता। परन्तु ऐसा लगता है कि चेतना और छूट दोनों की ही कमी है। —क्रमशः

चौ० राजेन्द्रसिंह थानेदार बालसमन्द का शराबन्दी एवं गुण्डा गर्दी हटाने में सहरानीय कदम

चौ० राजेन्द्रसिंह थानेदार लगभग १ महीने से तबदील होकर ग्राम बालसमन्द की चौकी में आये हैं तब से गांव में रामराज्य आ गया है। ज्ञातव्य है कि गांव में दो शराब के ठेके हैं। जुआ एवं गुण्डा-गर्दी का पूरा बोलबाला है। चौ० साहब ने आते ही कुछ शराबी व गुण्डो को लताडा जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव गांव में अब देखा जा सकता है। गांव की गलियों में कोई भी शराब पीये हुवे नही मिलेगा। कोई जुआ खेलता तथा गुण्डागर्दी करता नही मिलेगा। इस चौकी के नीचे १६ ग्राम हैं। सभी गांव के लोग थानेदार की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करते है। लेकिन दूसरी तरफ शराब का ठेकेदार बहुत नाराज है। क्योकि चौ० साहब के भय से किसी गांव मे हिम्मत नही है कि अवैध रूप से ठेकेदार की शराब बेच ले। आज इस युग में ऐसे कर्तव्यनिष्ठ, चरित्रवान् पुलिस महकमे में अधिकारी बिरले ही मिलते हैं। वास्तव में चौ० राजेन्द्रसिंह थानेदार बधाई के पात्र हैं।

—अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी प्रधान
शराबबन्दी समिति जि० हिसार

नलवा में वेदप्रचार

४-११-८७ को ग्राम नलवा में वेदप्रचार का आयोजन किया गया जिसमें सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी ने शराब व जुवे से होने वाली बुराइयो के अतिरिक्त आर्यसमाज क्या चाहता है पर विचार रखे। श्री ताराचन्द वानप्रस्थ तथा प० रामरख जी की भजन-मण्डली के शिक्षाप्रद भजन हुवे। प्रातःकाल आर्यसमाज मन्दिर नलवा में पूर्णिमा के उपलक्ष्य में हवन किया गया जिसमें स्वामी मस्तानानन्द जी तथा क्रान्तिकारी जी ने पंच महायज्ञ तथा सच्चे आर्य बनो आदि पर विचार रखे। प्रधान श्री पुष्करलाल आर्य जी द्वारा यज्ञ पर पधारे नर-नारियों को देशी घी के हलवे का प्रसाद दिया गया।

—उपमन्त्री रामेश्वरदास आर्य, आर्यसमाज, नलवा
हिसार (हरयाणा)

ऋषि निर्वाण दिवस

२२-१०-१९८७ को प्रातः दीपावली को ऋषि निर्वाणदिवस उदमीराम जी एडवोकेट की अध्यक्षता में मनाया गया। यज्ञ के ब्रह्मा पं० हरिश्चन्द्र जी महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा थे। ऋषि को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने के लिये जि० महेन्द्रगढ के डिप्टी कमिशनर, राव निहालसिंह पूर्व मंत्री हरयाणा सरकार, जैन सभा से रवि शर्मा महाराज शहर के गणमान्य व्यक्ति धार्मिक सामाजिक संस्था के पदाधिकारीयों ने स्वामी जी को अपनी भावभरी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। स्वामी देवानंद जी भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने भजनों द्वारा श्रद्धाञ्जलि दी। सभा को २२८ रुपये दान दिया।

—शिवचरण मंत्री आ० स० नारनौल

केरल में वैदिक संस्कृति के प्रचारक विद्वान का अभिनन्दन

पानीपत १० नवम्बर (निस)। स्थानीय आर्यसमाज बड़ा बाजार पिछले दस वर्षों से वार्षिकोत्सव के अवसर पर एक आर्य वैदिक विद्वान को नकद राशि, शाल व वैदिक पुस्तकें भेंट कर सम्मानित व पुरस्कृत कर रहा है। वेदों पर लेखन व वाणी से प्रचार करने वाले विद्वानों का सम्मान करने वाला हरियाणा में एकमात्र आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत ही है। इस बार आचार्य नरेन्द्र भूषण केरल निवासी को सम्मानित किया गया। श्री भूषण ने आर्यग्रंथों का ज्ञान हरियाणा से ही प्राप्त किया। वैदिक धर्म की दीक्षा लेने से पूर्व श्री भूषण मास, सिगरेट आदि का सेवन किया करते थे, परन्तु अब वे इन समस्त दुर्व्यसनों का परित्याग कर चुके हैं।

अभिनंदन के समय बताया गया कि केरल में सांप्रदायिक लोगों द्वारा उन पर तीन बार प्राण घातक हमले किए गए, परन्तु भूषण जी वैदिक प्रचार में लगे रहे तथा आज भी केरल विश्वविद्यालय की उपाधि व समस्त प्रमाण पत्रों को जलाकर रात दिन आर्यसमाज के प्रचार कार्य में जुटे हैं।

आचार्य नरेन्द्र भूषण का अनेक भाषाओं पर पूर्ण अधिकार है। संस्कृत, हिन्दी, मलयालम, अंग्रेजी तमिल, तेलुगू व कन्नड़ आदि भाषाओं में वे ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों का प्रचार कर रहे हैं। केरल सरकार द्वारा भी उन्हें 'साहित्य पुरस्कार' दिया गया। यह पुरस्कार प्राप्त करने वाले वे केरल के सबसे छोटे विद्वान् हैं।

श्री भूषण ने ऋषि दयानन्द के हिन्दी ग्रन्थों का दक्षिण भारतीय भाषाओं में अनुवाद करने का एक कीर्तिमान स्थापित किया है। पत्रकारिता के क्षेत्र में भी केरल निवासी उन्हें पत्रकार शिरोमणि कहकर सबोधित किया करते थे। आजकल भूषण जी 'आर्यनादम्' साप्ताहिक पत्रिका निकाल रहे हैं।

अभिनन्दन समारोह की अध्यक्षता कर रहे स्वामी विद्यानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज बड़ा बाजार द्वारा आर्य विद्वानों को सम्मानित करने की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि जो लोग विद्वानों को धन नहीं दे सकते, वे कम से कम सम्मान तो करें। उन्होंने कहा कि जब से आर्यसमाज ने शास्त्रार्थ व खण्डन का कार्य बन्द किया है, तब से देश में अन्धविश्वास बढ़ता जा रहा है।

उन्होंने नई शिक्षाप्रणाली के अन्तर्गत संस्कृत शिक्षा की उपेक्षा पर चिन्ता प्रकट की। आचार्य नरेन्द्रदेव ने कहा कि यह सम्मान मेरा नहीं अपितु ऋषि दयानन्द का हुआ है। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे आगे आने वाली सन्तानों के लिए जहां सम्पत्ति छोड़ने की चिन्ता में लगे रहते हैं। उन्हें उनके लिए भारतीय संस्कृति व वैदिक शिक्षा की सम्पत्ति भी छोड़नी चाहिए।

आर्यसमाज बड़ा बाजार के प्रधान रामानन्द सिंगला ने आचार्य नरेन्द्रदेव को १० हजार रुपये की थैली, पुस्तकें व अभिनन्दन-पत्र भेंट किया।

वानप्रस्थ की दीक्षा

इस आर्यसमाज के कर्मठ, विद्वान् एवं संस्थापक सदस्य श्री धर्मवीर विद्यालंकार—जिन्होंने गुरुकुल कांगड़ी हरद्वार में स० मुख्याधिष्ठाता पद पर, तदनन्तर अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय के आचार्य (प्रिंसिपल) पद पर अपनी बहुमुखी प्रतिभा से निष्ठा एवं सफलतापूर्वक कार्य किया—वे १८-१०-८७ रविवार को दयानन्दमठ, दीनानगर पंजाब में परम पूज्य सर्वानन्द जी महाराज से वानप्रस्थ की दीक्षा प्राप्त करते हुए उन्हीं के पवित्र कर-कमलों से पीतवस्त्र धारण किया। भविष्य में—(१) वेदाध्ययन करने तथा अर्थात के अध्यापन-लेखन-व्याख्यान में निरन्तर कार्य करने तथा (२) प्राप्त दक्षिणा को परोपकार में व्यय करने एवं (३) पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के आदेशों का पालन करने का संकल्प किया।

—मन्त्री

आर्यसमाज जीन्द शहर का प्रस्ताव

आर्यसमाज तथा जीन्द शहर के समस्त नरनारी जिला जीन्द के प्रशासन से निवेदन एवं प्रार्थना करते हैं कि गांवों तथा कस्बों में निर्दोष स्त्री जाति पर किए जा रहे निर्मम अत्याचारों को बढ़ने से रोका जाए। जो कोई निरपराध अबलाओं को अमानुषिक रूप से जघन्य यातनाएं देते हैं। उन पापियों विधर्मियों को कठोर दण्ड से दण्डित किया जाये, जिससे भविष्य में ऐसे घातक अपराध करने का किसी को साहस न हो सके और स्त्री जाति को समाज में पूर्ण सुरक्षा के साथ सम्मानजनक ढंग से जीवन बिताने का अधिकार मिले और "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता"—का सांस्कृतिक उद्घोष चरितार्थ रहे।

प्रो० इन्द्रदेव शास्त्री
मन्त्री–आर्यसमाज जीन्द शहर

सत्संग का कमाल

बिन विद्या के पुरुष कोई कैसे चमके ?
कोई कैसे चमके ! कोई पूछे हम से !
सत्संग का उपचार हो, बुद्धि का निखार हो।
दुर्गुण का निस्तार हो, सद्गुण का विस्तार हो।
सत्संग के कमाल से ऐसे चमके॥
वाणी में मिठास हो, सादा ही लिबास हो।
सत्य का प्रकाश हो, आत्मिक विकास हो।
सत्संग के ही रंग से ऐसे चमके॥
चोरी की न कार हो, झूठ से किनारा हो।
पाप से न प्यार हो, पापी को धिक्कार हो।
मानसिक विकास से ऐसे चमके॥
दुखियों का सहारा हो, दुष्टों का संहारा हो।
ब्रह्मचर्य धारा हो, बल का भण्डारा हो।
शारीरिक विकास से ऐसे चमके॥
बन्धुओं में मान हो, सभा में सम्मान हो।
प्रातः सायं ध्यान हो, 'हरि' का गुणगान हो।
अमृत-रस के पान से ऐसे चमके ?
बिना विद्या के पुरुष कोई कैसे चमके ?

—हरिदत्त वि० प्र०

शोक सन्देश एवं श्रद्धांजलि

हिसार क्षेत्र के ग्राम बालसमन्द निवासी श्री पं० परमेश्वरीदत्त जी आर्य का अचानक १९-१०-८७ को निधन हो गया। पं० जी ८२ वर्ष के थे। आर्यसमाज के प्रकाण्ड विद्वान्, त्यागमूर्ति, यज्ञप्रेमी थे। समाज में फैली हुई बुराइयों का वे साहस के साथ डटकर विरोध करते थे। विशेषकर छुआछूत, बालविवाह, मूर्तिपूजा, सतीप्रथा, विधवा विवाह, मांस खाना पाप, शराबखोरी आदि बुराइयों के खिलाफ लम्बे समय तक प्रचार करते रहे। ग्राम बाल समन्द में भी आर्यसमाज की स्थापना तथा आर्यसमाज महिला मण्डल का गठन गांव और आसपास में वैदिक संस्कार करवाने का श्रेय भी उन्हीं को है। महर्षि दयानन्द जी के वे सच्चे भक्त थे।

दिनांक १-११-८७ को उनके बड़े लड़के पं० देवदत्त जी आर्य ने शोक सभा का आयोजन किया, जिसमें प्रातः ९ बजे पं० सत्यप्रिय जो आचार्य (हिसार) द्वारा हवन किया गया। इस अवसर पर वानप्रस्थी श्री महावीर (गुरुकुल झज्जर), श्री अत्तरसिंह क्रांतिकारी जी के अतिरिक्त आर्यसमाज बाल समन्द के पदाधिकारी एवं इलाके के प्रमुख सज्जनों ने भाग लिया।

उनके पौत्र श्री सुनीलदत्त जी आर्य ने इस अवसर पर स्व० पं० जी के पदचिन्हों पर चलने एवं साप्ताहिक हवन करने का व्रत लिया। क्रान्तिकारी जी ने उनके कार्यक्रमों को स्थायी रखने के लिए एक स्मारिका प्रकाशित करने का सुझाव दिया। जिसे श्री देवदत्त जी ने सहर्ष स्वीकार कर लिया, और पं० सत्यप्रिय आचार्य को स्मारिका के सम्पादन का कार्य सौंप दिया। इसी अवसर पर ११००-०० रुपये दयानन्द ब्राह्म विद्यालय को दान देने का वचन दिया। बाद में शोक सभा में आए सैंकड़ों नरनारियों एवं विद्वानों का पं० श्रीदत्त जी आर्य ने धन्यवाद किया।

—मन्त्री आर्यसमाज

आर्यसमाज अपने उत्सवों की गरिमा बनाए रखें

आर्यसमाज की ये परम्परा रही है कि वो सदैव उच्चरित्र को ही अपना ध्येय मानता आया है। सच्चरित्र आर्य शब्द की पहली कसौटी एवं सीढ़ी है। जिसके बिना आर्यसमाज की सिद्धि ही नहीं होती। आर्यसमाज का पहला उद्देश्य चरित्र निर्माण है। अंग्रेजी में भी एक वाक्य है कि जिसने धन खो दिया उसने कुछ नहीं खोया, जिसने स्वास्थ्य खो दिया है समझो कुछ खो गया और जिसने अपना चरित्र खो दिया समझो सब कुछ खो गया है। अतः सब आर्यसमाजों के अधिकारियों से अनुरोध है कि वो अपने वार्षिक उत्सवों पर बुलावा देने से पहले आगन्तुक के चरित्र का मूल्यांकन अवश्य कर लिया करे ताकि आर्यसमाज का मंच कलंकित न होने पाए और कोई भला आदमी उंगली उठाकर ये न कह सके कि ये देखो ये आर्यसमाज का मच है। ऐसा ही उदाहरण हांसी आर्यसमाज ने अपने गलत फैसले को सुधार कर दिया है। भविष्य में सब आर्यसमाजों से अनुरोध है कि वो अपने मंच पर विद्वान्, चरित्रवान, और धर्मात्माओं को ही आमंत्रित करें। ताकि सदैव से चली आ रही उत्सवों की गरिमा कायम रह सके। दूसरा सर्वहितकारी में २८ अगस्त १९८७ को 'आर्यसमाज किस ओर' स्वामी वेदमुनि परिव्राजक अध्यक्ष वैदिक संस्थान नजीबाबाद (उ० प्र०) का लेख छपा है। उसमें भी एक दो आर्यसमाजों में सरकार के मन्त्री या पुलिस अध्यक्ष आदि को स्टेजों पर बुलवाकर विद्वान् सन्यासी व भजनीको को राष्ट्र रक्षा सम्मेलनों में अपने विचार देने पर रोका गया है। इससे आर्यसमाज गिर जायेगा आगे आर्यसमाज ध्यान रखे कि आर्यसमाज के विद्वान् सन्यासियों को राष्ट्ररक्षा, गोरक्षा, भ्रष्टाचार, पाखण्ड, व अन्य सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध विचार रखने चाहिये। कई समाजों में अधिकारी अपने स्वार्थों में विद्वानों को बाध्य करते है कि ऐसे मत कहना। हम सब के लिये आर्यसमाज के उत्सवों की गरिमा बनाये रखने के महर्षि दयानन्द जी के अनेक उदाहरण है। जिन्होंने अंग्रेजों की मोजुदगी में भी अनेक बार स्पष्ट शब्दों में उनकी अनेक बुराईयों का खण्डन किया है।

—अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी
प्रधान आर्यसमाज कंवारी

हम रूकना झुकना क्या जाने

हम रूकना झुकना क्या जानें।
हम बढ़ते है सीमा तानें॥
हम सैनिक वीर शहिदों के।
पर हिन्द में जिनके शीस कटे॥
हम दयानन्द के दिवाने—
हम हंसराज के चेले है।
दुख श्रद्धानन्द ने झेले हैं।
हम लेखराम के मस्ताने॥
हम हँस-हँस के दुःख झेलेंगे।
सर्वस्व धर्म पर दे देंगे।
हम वेद ज्योति के परवाने—
हम धुन अपनी के पक्के हैं।
हम कर्म वचन के सच्चे हैं।
सब दुनिया है हमको जाने—
दुःख आता है तो आने दो।
सुख जाता है तो जाने दो।
हम वीर हैं डरना क्या जाने—
हम रूकना झुकना क्या जानें।

ले० अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी सभा उपदेशक

अनमोल सीख

ले० स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती—अधिष्ठाता वेद प्रचार

। विश्वास करो।
ईश्वर, धर्म, समाज पर, करो पूर्ण विश्वास।
पाओगे यश जगत में, व्यसन न आये पास॥
। सहायता करो।
विधवा, दीन, अनाथ, भटका हुआ राहगीर।
करो सहाय अपग की, तुरन्त बंधाओ धीर॥
। दूर रहो।
झूठा, पापी, चोर से, रहो हमेशा दूर।
बचना नशेबाज से, मिले नशे मे चूर॥
। प्रेम करो।
माता, पिता, आचार्य को, करो प्रेम से याद।
उनके आशीर्वाद से, सुखी रहेगा गात॥
। निन्दा न करो।
पागल, बुध, गरीब की, निन्दा करो न आप।
करो सहायता प्रेम से, हरो सभी सन्ताप॥
। आगे बढो।
हिम्मत से और प्रेम से, लिये सचाई साथ।
आगे बढ़ते जाइये, कर कर लम्बे हाथ॥
। लड़ते रहो।
देश धर्म और मान पर, लग न जाये दाग।
लगे मित्र हित के लिये, निज स्वार्थ को त्याग॥

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह सेनानियों की स्वीकृत सूची

जिनके मामले पेंशन की स्वीकृति के लिए राज्य सरकारों को भेज दिए गए हैं।

१- श्रीमती कमलादेवी अग्रवाल पत्नी स्व० श्री रवीन्द्रप्रसाद अग्रवाल निवासी मकान नं० १९ गोविन्दनगर (देवरिया) पो० किच्छा जिला नैनीताल (उ० प्र०)

२- श्री अत्तरसिंह त्यागी पु० स्व० श्री गोविन्दसहाय ग्राम मुबारकपुरा पो० खास बाछा खेकड़ा जिला मेरठ (उ० प्र०)

३- श्रीमती धर्मादेवी पत्नी श्री माधवप्रसाद, गांधीनगर उतरौला जिला गोंडा (उ० प्र०)

४- श्री रतीराम वैद्य पुत्र स्व० श्री बलवन्तसिंह ग्राम पो० फजलपुर वाया बिनौला जिला मेरठ (उ० प्र०)

५- श्री विश्वपाल शास्त्री, पु० स्व० श्री गंगासिंह गढवार जि० बलिया (उ० प्र०)

६- श्री हरनामसिंह पुत्र श्री गोविन्दसिंह डी २८ आवास विकास इन्द्र नगर बरेली (उ० प्र०)

७- श्री रामलखन पु० स्व० श्री गोपाल गांधी नगर उतरौला जिला गोण्डा (उ० प्र०)

८- श्री विश्वनाथ शर्मा पु० स्व० श्री बद्रीप्रसाद खिरकी उतरौला जि० गोंडा (उ० प्र०)

९- श्री हाकिमसिंह पुत्र श्री लाभसिंह मकान नं० १४ गोपाल नगर नुमाइश गाह सहारनपुर (उ० प्र०)

१०- श्रीमती रामकलीदेवी पत्नी श्री बसन्तसिंह ग्राम पो० जगतपुर जि० मैनपुरी (उ० प्र०)

११- श्री चन्द्रसिंह नेगी पुत्र श्री मोहनसिंह नेगी १९९ धर्मपुरा नेगीभवन देहरादून (उ० प्र०)

१२- श्री चन्द्रमित्र पुत्र श्री हरीशंकर ग्राम पो० पूर्व करधम अलीगंज बाजार सुल्तानपुर (उ० प्र०)

१३- श्री गुलाबसिंह पुत्र श्री माधवनसिंह ग्राम पो० किशनपुरी जिला पौढ़ी गढ़वाल

१४- श्री विद्याप्रकाश गोपाल पुत्र श्री राधालाल गोपाल, गोपाल ट्रेडर्स शुगर मिल रोड मोरण्डा रोपड़ (पंजाब)

१५- श्री लभूराम पुत्र श्री तेजराम हिन्दू हाई स्कूल के सामने रामामण्डी भटिण्डा (पंजाब)

१६- श्री विश्वमित्र पुत्र तिलकराम मकान नं० २०४ रामामण्डी भटिण्डा (पंजाब)

१७- श्री आनन्द स्वरूप पुत्र हुशमत अली, न्यू बस्ती पो० रामामण्डी भटिण्डा (पंजाब)

१८- श्री केशवदेव गुप्ता पुत्र श्री रोशनलाल मकान नं० १८९८ गांधी स्ट्रीट चौक आय समाज भटिण्डा

१९- श्री पब्बू पुत्र श्री चिन्हप्पा स्वामी ग्राम हलम्ब तह० उदगीर जि० लातूर (महाराष्ट्र)

२०- श्री यशवन्त शंकर सरुना सिविल बोर्ड तह० पुसद जिला यवतमाल (महाराष्ट्र)

२१- श्री विट्ठल पुत्र बापूराव भगवत बिकवार्ड पुसद जिला यवतमाल (महाराष्ट्र)

२२- श्री उत्ताराम पुत्र बासा जी कदम टिकवार्ड पुसद जिला यवतमाल (महाराष्ट्र)

२३- श्री रघुनाथ पुत्र लखाराम वर्मा ११ मंगतराम कालोनी लालबहादुर शास्त्री मार्ग भाण्डुप बम्बई-७८

२४- श्रीरामबाबु पुत्र प्रहलाद भोपी मटकेश्वर वार्ड नरसिंह मन्दिर पुसद यवतमाल (महाराष्ट्र)

२५- श्री कसारी पुत्र ढोढा काम्बले देवी वार्ड पुसद जिला यवतमाल (महाराष्ट्र)

२६- श्री देवदत्त देवराज पुत्र बनवारीलाल २९८५ कूचा माईदास बाजार सीताराम दिल्ली

२७- श्री ब्रह्मचन्द पुत्र चन्दनदत्त शर्मा २७२/१ गली ११ भजनपुरा दिल्ली-५३

२८- श्रीमती सुगनकुंवर पत्नी स्व० जगदेवसिंह वर्मा, ५९ मदरामपुरा सिविल लाईन हाऊसिंग कालोनी जयपुर (राज०)

२९- श्री रामकिशन पुत्र हरनाथ ग्राम कुठपेट तह० कैथल जिला कुरुक्षेत्र (हरयाणा)

३०- श्री चन्द्रसेन आर्य पुत्र रोशन लाल ११/५३८ देहली रोड सोनीपत (हरयाणा)

३१- श्री वेदप्रकाश सागरमल जाजू पुत्र देवकरनदास गांव पोस्ट कनीना तह० व जिला महेन्द्रगढ़ (हरयाणा)

३२- श्री भोपाल पुत्र श्री उदमीराम ग्राम पोस्ट कुलादी जिला हिसार (हरयाणा)

३३- श्री शिवचन्द पुत्र श्री कूडाराम ग्राम पोस्ट मिरचपुर जिला हिसार (हरयाणा)

३४- श्री बेगराज पुत्र धज्जाराम गांव पोस्ट राजपुरा तह० गन्नौर जि० सोनीपत (हरयाणा)

३५- श्री छोटूलाल यशपालसिंह पुत्र किशनसहाय ग्राम पो० लूखी जि० महेन्द्रगढ (हरयाणा)

३६- श्रीमती सरूपदेवी पत्नी नेतराम गांव पो० भापड़ोदा जि० रोहतक

३७- श्री मंगतराम कोचर पुत्र ठाकुरदास २८९ महेशनगर अम्बाला कैंट (हरयाणा)

३८- श्री भीमसेन पुत्र लेखराम गांव पो० लूखी जिला महेन्द्रगढ़ (हर०)

३९- श्री वासुदेव पुत्र श्री रामसिंह ग्राम पो० गुमाना जिला रोहतक (हरयाणा)

४०- श्री कन्हैया पुत्र खुशिया ग्राम पोस्ट भापड़ौदा जिला रोहतक (हर०)

४१- श्रीमती समिधकुमारी पत्नी श्री बलदेव ३१७/१५ गली नं० ८ अमरगढ़ कालोनी कैथल (हरयाणा)

४२- श्री रिसालसिंह हर्षलसिंह पुत्र मातुराम ग्राम पो० किठाना जीन्द (हर०) (सार्वदेशिक साप्ताहिक ८ नवम्बर)

सोहना में आर्यसमाज का वेद सप्ताह सम्पन्न

सोहना जि० गुड़गांव के आर्यसमाज का वेद सप्ताह का कार्यक्रम ८ से १४ सितम्बर तक बड़ी श्रद्धा से सम्पन्न हुआ। इस समारोह में आर्य प्रतिनिधिसभा हरयाणा के महोपदेशक श्री पं० सुरेशकुमार जी शास्त्री तथा पं० मुरारीलाल जी की भजनमण्डली जिन्होंने अपने गीतों से आयजनता को प्रभावित किया।

माननीय शास्त्री जी ने तो समय की अनुकूलता और श्रोताओं की रुचि अनुसार अपने वैदिक विचार देने का प्रयास किया। उनका यह प्रयास युवकों को प्रेरणा देनेमें सफल रहा अपने प्रवचनों में पूर्वजों के उदाहरण देकर युवकों को उत्साहित किया। जिससे जनता प्रभावित हुई और शास्त्री जी प्रशंसा के पात्र बने। ये कार्यक्रम नगर के अलग-अलग परिवारों में हुआ। सभी यजमानों ने पूरा परिश्रम करके इस वेदसप्ताह को सफल बनाने में पूरा सहयोग दिया। सोहना की महिला आर्यसमाज का सहयोग सराहनीय है कि उनकी संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती गई। पूर्ण आहुति के दिन सभी यजमानों ने अपनी आहुति यज्ञकुण्ड में डाली। सप्ताह की समाप्ति पर आर्य सभा को आर्यसमाज ने ५०२/- रु० दान के रूप में सहयोग दिया। —मेघराज प्रधान आर्यसमाज सोहना

गौ तथा भैंस की सर्वोत्तम हरयाणा नसल को बचाना हरयाणावासियों का पुनीत कर्तव्य

सारा देश जानता है कि हरयाणा नसल को गाय बछडे और बैल देशभर में मशहूर हैं। इसो प्रकार हरयाणा को मुर्रा नसल की भैंस भी देश में सर्वोत्तम है।

जिस भयंकर सूखे का मुकाबला हरयाणा के आधे से ज्यादा जिलों की जनता को करना पड रहा है, यह हमारी याद में कभी भी नही करना पड़ा। अन्न के भण्डार तो देश मे हैं, परन्तु पशुओं के लिये चारे और भूसे के भण्डार नही हैं। ज्यों-ज्यों समय बीत रहा है, चारा और भूसा मंहगा तो होता हो जारहा है, उनका मिलना भी कठिन से कठिनतर होता जारहा है।

किसानों को अपनी गाय, बछड़े, बछडिया, बल और भैंसों को बचाने के लाले पड रहे हैं। ऐसे भयंकर सूखे और अकाल से पीडित किसान साडों (खागड़ और झोटे) को सुध-बुध ले पायगे, यह असम्भव होता जारहा है। हम सब भली प्रकार जानते हैं कि यदि सांडों की पूरी देख-रेख और चराई नही हो पाई और वे कमजोर होगये या मर गये तो हरयाणा की गाय और भैंस को नसलों में गिरावट आजायेगी और यह हरयाणा और देश के लिये बहुत बड़ी हानि होगी। चाहिये तो अच्छे बछड़े और कटडे चुनकर, उनको सांड बनाने के लिये उनको भी अच्छी खुराक दी जाये, परन्तु जो सांड इस समय प्रदेश की मशहूर नसलों को अभिवृद्धि में सेवारत हैं, उनको बचाया ही न जाये, बल्कि उनको पूरी खुराक देकर हृष्ट-पुष्ट रखा जाये।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का ध्यान इधर गया और उसने इस दिशा में अपने कर्त्तव्य का पालन करने का सकल्प लिया है। हमने हरयाणा सरकार और भारत सरकार से भी निवेदन किया है कि वे एक तिहाई सहायता करे। यदि १५ रु० दैनिक व्यय एक सांड पर आता है तो वे ५ रु० दे और हरयाणा की जनता भी एक तिहाई हिस्सा वहन करे।

हमारा अन्दाजा है कि लगभग १००० सांडों की रक्षा का भार हम सबको मिलकर उठाना होगा। ५ रु० प्रति सांड जनता को इकट्ठा करना है। चारा और दाना दोनों का प्रबन्ध करना है।

हरयाणा के लोग जहां भी हो, हरयाणा में या बाहर, उन सब की सेवा में हम पुरजोर अपील करते हैं कि वे इस पवित्र कार्य में दिल खोलकर मदद करें और उदारता से चारा, अन्न या नकद दान दें।

मण्डियों के धर्म-प्रेमी सभी व्यापारी भाइयों से विशेष अपील है कि वे हरयाणा की मशहूर गाय और भैंसों की नसल की रक्षा के लिये दिल खोलकर दान दें।

निवेदक

प्रो० शेरसिंह	वेदव्रत शास्त्री	बद्रीप्रसाद आर्य
प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष

आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा

जि० (हिसार) में वेदप्रचार

आर्यसमाज बालसमन्द के प्रधान श्री दिवानसिंह आर्य एव प० पनमेश्वरी दत्त जो आर्य के प्रयास दिनांक ७-१०-८७ से १२-१०-८७ तक वेद प्रचार का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसमें स्वामी जगत मुनि जी महाशय झाब्बेराम जी तथा स्वामी वेदानन्द जी की भजन मण्डली के शिक्षाप्रद भजन एवं प्रवचन हुये। ग्राम के प्रतिदिन मोहलेवार पानेवार अलग-२ प्रचार किया गया। इसी अवसर पर पं० पनमेश्वरी दत्त जी के आग्रह पर आर्यसमाज महिला मण्डल का गठन किया गया। इस प्रकार सारे ग्राम में वेदप्रचार की धूम मच गई तथा अनेक नव-युवकों ने जनेऊ धारण किये तथा शराब, मांस, बीड़ी न पीने का व्रत लिया। उपरोक्त कार्यक्रमों में भयंकर अकाल के बावजूद नर-नारियो ने बड़ी श्रद्धा से भाग लिया।

भतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी सभा उपदेशक

सर्वहितकारी का स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान विशेषांक

अमर हुतात्मा श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस २३ दिसम्बर को सारे आर्यजगत् में धूमधाम से मनाया जायेगा। इस अवसर पर सर्वहितकारी का २१ दिसम्बर का अंक स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान विशेषांक प्रकाशित होगा जिसमें आर्य विद्वानों के लेख तथा कविताए प्रकाशित होंगी।

—सम्पादक

आवश्यकता है

आर्य कन्या हाई स्कूल हांसी के लिये एक स्थायी धर्मशिक्षक की आवश्यकता है। जो कि बच्चों को वैदिक विचारों द्वारा सुज्ञान प्रदान कर सके। संस्कार कराने में निपुण हो तो और भी अच्छा है। इच्छुक सज्जन शीघ्र सम्पर्क करें। सहायता योग्यता के आधार पर प्रदान की जावेगी। पत्र व्यवहार नीचे लिखे पते पर करे।

—राजेन्द्रसिह आर्य लाला रामशरणदास वेदप्रचार स्मारक स्थिर निधि एव आर्यसमाज हांसी (जि० हिसार)

आवश्यकता है

आर्य हिन्दी महाविद्यालय चरखी दादरी में शास्त्री, प्रभाकर कक्षाओं को पढ़ाने के लिये अध्यापिकाओं की आवश्यकता है।

योग्यता शास्त्री व्याकरण विषय पढ़ाने के लिए शास्त्री+ एम. ए. संस्कृत आचार्य

अंग्रेजी पढाने के लिये · एम. ए. अंग्रेजी

प्रभाकर पढाने के लिये . प्रभाकर+एम.ए. अथवा केवल हिन्दी एम ए.

वेतन राजकीय नियमानुसार

साक्षात्कार २२ नवम्बर सुबह ११ बजे विद्यालय के कार्यालय में होगा। प्रमाण पत्र साथ लायें।

—ऋषिपाल आर्य

सूखा राहत संघर्ष समिति द्वारा जल आपूर्ति एवं पशुचारे हेतु हरयाणा सरकार से मांग

गत दिनों हांसी बुआनी खेड़ा हल्के १४ गांवों की संघर्ष समिति नें हरयाणा के मुख्यमन्त्री चौ० देवीलाल को लिखे एक खुले पत्र में नहर सुन्दर ब्रांच की टेलों पर चार मास से पानी न पहुंचने पर रोष प्रकट किया है। समिति ने आरोप लगाया है कि हम कई बार मन्त्रियों एवं अधिकारियों से मिल चुके एवं लिखित में सूचित कर चुके लेकिन अभी तक कोई ध्यान एवं कार्यवाही नहीं की। टेल से १०-१५ मीटर पीछे इसी नहर पर अच्छी फसल है। चोर किसान अवैध तरीके से पाईप डालकर, मोगे फोड़कर तथा धान व बाग के नाम से राजनैतिक प्रभाव द्वारा सरेआम दिन धोली पानी की चोरी कर रहे हैं। कोई पूछने वाला नही। टेल, भोजराज, नलवा, कंवारी, रतेरा, उमरा, खानक आदि से जुड़े इन १४ ग्रामों का पानी का हक पीछे ही खा पी लिया जाता है। समिति की चौ० साहब से मांग है कि इन चोर किसानों के खिलाफ शीघ्र अतिशीघ्र कठोर कदम उठाकर हमारा हक का पानी टेलों तक पहुचाने का कष्ट करें। खेत तो दूर रहे इन गांवों को पोने के पानी के लाले पड़ रहे हैं। लोगों में भारी रोष है।

इसके अतिरिक्त इस क्षेत्र में भयंकर सूखा पड़ा हुआ है। इस क्षेत्र को सूखा घोषित किया जावे। पशु चारे का प्रबन्ध तुरन्त किया जावे। झाड, जांटी, बूई आदि काट-काट कर चरा चुके। यहां हरियाली का नामोंनिशान मिटता जारहा है। किसान मजदूर कोड़ियों के भाव पशु बेच रहे हैं। गऊओं के झुण्ड के झुण्ड भाट ले जा रहे। सावनी की फसलों का १००% मुआवजा दिया जावे। भूमिहीनों को तकावी, ऋण व काम दिया जावे। —सचिव अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी सूखा राहत संघर्ष समिति जि० हिसार

होली मोहल्ला करनाल में वेदप्रचार सप्ताह

१७ से २२ अक्तूबर तक आर्यसमाज होली मोहल्ला करनाल में वेदप्रचार सप्ताह धूमधाम से सम्पन्न हुआ। २२ अक्तूबर को ऋषि दयानन्द निर्वाण दिवस भी मनाया गया। प्रातःकाल प्रभातफेरी निकाली गई। ऋषि निर्वाण दिवस की अध्यक्षता बहन शान्तिदेवी पूर्व विधायिका ने की।

वेद सप्ताह पर पं० ओम्प्रकाश जी आर्य पूर्व कार्यालयाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रवचन तथा पं० मुरारीलाल बेचैन भजनोपदेशक हरयाणा सभा के प्रभावशाली भजन हुए। श्री ठाकुरदास जी ने भी संगीत प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम में करनाल के सभी आर्य समाजों तथा रामेश्वरदास आर्य कन्या उच्च विद्यालय एवं आर्य नर्सरी स्कूल के स्टाफ ने भी पूर्ण सहयोग दिया।

आर्यसमाज के अधिकारियों ने १९८८ में आर्यसमाज का स्थापना शताब्दी समारोह मनाने का निश्चय किया है।

—जसवन्तसिंह आर्य मन्त्री

नामकरण संस्कार

६-११-८७ को ग्राम कवारी में सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी के सगे भ्राता श्री हरपालसिंह के पुत्र का नामकरण संस्कार स्वामी मस्तानानन्द जी ने करवाया। प्रातः १० बजे हवन किया गया, यजमान ने जनेऊ धारण किया तथा जीवन में शराब न पीने की प्रतिज्ञा की। बच्चे का नाम प्रद्युम्न रखा गया। इस अवसर पर प्रधान जी ने संस्कार एवं यज्ञ के महत्त्व तथा शराब से होने वाली बुराइयों पर प्रकाश डाला। श्री ताराचन्द वानप्रस्थ के शिक्षाप्रद भजन हुवे।

—मन्त्री इन्द्रसिंह आर्य, आर्यसमाज, कंवारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।